प्राचीन रसिक वाणी माला का छत्तीसवाँ पुष्प—

॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

॥ श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति ॥

ब्रज-साहित्य का प्रथम खण्ड

शृंगार-रस-साग

(श्री वृन्दावन के प्राचीन रसिकों की वाणियों का

श्री राधावल्लभ जी कौ वर्षोत्स

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य, गोस्वामी श्री मुकुन्दवल्लभाचार्य

महाराज बृ० प्र० की आज्ञानुसार—

बाबा तुलसीदास द्वारा प्रकाशित

संशोधित—

श्री गोवर्द्धनलाल (छुट्टनलाल) भट्ट जी महाराज द्वारा

प्रकाशक—

बाबा तुलसीदास

गोपाल भवन, मुहल्ला दुसायत

वृन्दावन (मथुरा)

श्री बसन्त पञ्चमी

सं० … २…

पृष्ठ १०३८

स

अनुक्रमणिका

निकुञ्ज-महोत्सव

नोट—पुष्टि मार्गीय मंदिरों में जो जो पद कीर्तन होते हैं, वे पद भी इसमें सम्मिलित है, अन्य मंदिरों तथा कुञ्जों में गाये जाने वाले समाज-रूप गुप्त कीर्तन के पद भी हैं

श्रीराधावल्लभ जी के मन्दिर में महोत्सव कार्यक्रम सूच

प्रातःकाल सिंगार आरती पश्चात् तथा सायंकाल सन्ध्या आरती पश्चात्

माघ सुदी ५ से वसन्त के पदों की समाज की शृङ्खला (रूप गुण कीर्तन)

पद संख्या	वसन्त के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली—		माघ सुदी ५ कौ
१	मधुरितु वृन्दावन आनन्द (नित्यहोय)	१	गो० श्री हितहरिवंश महाप्रभु जी कृत		,,
२	राधे देखि वन की बात ,,	१	,,	,,	,,
३	राधे वन विनोद वसन्त	२	गो० श्री वनचन्द्र महाप्रभुजी	कृत	,,
४	देखहु स्याम विपिन	२	गो० श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभुजी	,,	,,
५	देखौ वृन्दावन कुसुमित	२	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	,,	,,
६	श्री वृन्दावन पूजन वसन्त	३	गो० श्री कमल नैनजी महाराज	,,	,,
७	बनन न जुगल अंग अंग	३	गो० श्री कुंजलालजी महाराज	,,	,,
८	कौतुक वन कौतुक	३	गो० श्री हित हरिलालजी महाराज	,,	,,
९	दिन दुलहु मेरो लाल	४	गो० श्री रूपलालजी महाराज	,,	,,
१०	रितु बसन्त वन फूल	४	श्री सेवक(दामोदरदास)जी महाराज	,,	,,
११	कुच गडुवा जोवन	५	श्री स्वामी हरिदासजी महाराज	,,	,,
१२	देखि सखी अनि आजु	५	श्री व्यास जी महाराज	,,	,,
१३	विहरत विपिन फिरत	५	श्री नागरीदास जी महाराज	,,	,,
१४	राजै वृन्दावन श्री नव	६	श्री ध्रुवदासजी महाराज	,,	,,
१५	भाइ भरे रस चाहन	६	गो० श्री किशोरीलालजी महाराज	,,	,,

गो० श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभुजी कौ, प्राकट्य माघ सुदी ९ कौ, मंगल-बधाई।

८८ जै जै श्री हरिवंश सुवन ८५ चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत

माघ सुदी पूर्णिमा से, होरी धमारि की समाज शृङ्खला, पद गायन।

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली—	राग	तिथि
१	प्रथम यथा मति प्रणाऊँ श्री	८६	गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र	(नित्य)	माघ सु० पू०
२	ब्रज मोहन ब्रजराज कुमार	९०	चाचा श्री वृन्दावनदासजी	(होरी डाढ़ौ)	,, ,,
३	रितु बसंत सुख खेलिये हो	९२	श्री गोविंद स्वामी जी	(होरी डाढ़ौ)	,, ,,
४	रंग हो हो हो हो होरी खेलै	९४	श्रीरामरायजी महाराज	(बिहागरौ)	फा० वदी १
५	खेलत हैं हरि हो हो होरी	९५	श्रीसूरदासमदनमोहनजी	(राग गौरी)	,, ,, २
६	हो हो होरी बोलहीं नवल	९७	श्री माधुरीदास जी	(धनाश्री)	,, ,, ३
७	या गोकुल के चोहटे, रंग	९[illegible]	श्री आसकरन जी	(धनाश्री)	,, ,, ४
८	गोकुल राजकुमार, लाल	१००	श्री गदाधर भट्ट जी	(धनाश्री)	,, ,, ५
९	अति अलबेली लाड़िली	१०२	गो० श्री रूपलालजी	(धनाश्री)	,, ,, ६
१०	रूप सुभग कानन मनों	१०[illegible]	चाचा श्री वृन्दावनदासजी	(सञ्झा[illegible])	,, ,, ६
११	लाल रसिक मणि हँसि कह्यो	१०४	,,	,,	,, ,, ,,

श्री राधा वल्लभजी के मंदिर में श्री हितोत्सव कार्यक्रम की र

गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र प्रभुजी कौ प्राकट्य—वैसाख सुदी ११

उत्सव प्रारंभ—चैत्र सुदी १५ (पूनौ) से, समाज-मंगल बधाई पद गायन

पद संख्या	मङ्गल बधाई	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१	जै जै श्री हरिवंश व्यास (मङ्गल)	४२७	श्री सेवक जी महाराज कृत	चैत्रसुदी पू
२	मधुरितु माधव मास सुहाई (बधाई)	४२८	श्री कृष्णदासजी महाराज ”	
३	रसिक राग रंग सुरस प्रगट ”	४२८	श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत	
४	आनन्द आज नन्द के द्वार ”	४२८	गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र प्रभु जी कृत	
५	चलौ वृषभानु गोप के द्वार ”	४२९	” ” ” ”	”
६	आज सुहेलरा श्री व्यास ”	४२९	गो० श्री रूपलालजी महाराज	”
७	आज द्विजराज भवन रंग (असीस)	४३०	चाचा श्री वृन्दावनदासजी	”

वैसाख वदी १ से मंगल बधाई के पद गायन

वैसाख वदी २ से श्री सेवक वाणी जी की समाज

वैसाख सुदी ८ से चाव में समाज

१९२	चाव छबीली वनिता (चाव)	५८५	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत	

वैसाख सुदी १० को संध्या आरती पश्चात् समाज- मंगल बधाई

१४५	जै जै जै सुर नर मुनि (वंशावली)	५३१	श्री अति वल्लभ जी महाराज कृत	१
१९५	श्री हित रूप प्रनम्य ”	५८७	चाचा श्री वृन्दावनदास जी ..	

वैसाख सुदी ११ (एकादसी) को प्रातःकाल ४ बजे से समाज

२०८	विप्रराज बड़ ज्ञाता (दाई वरनन)	६०२	चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत	सुदी ११
१२६	फूली फूली राधा आज (बधाई)	५१२	श्री भोरी सखी जी महाराज ”	”
७६	एरी वीर बाजत बाद बधाई ”	४७५	श्री कृष्णदास जी महाराज ”	”
११६	भैया हो अद्भुत मङ्गल आज ”	५०७	श्री किशोरीदास जी महाराज ”	”

वैसाख सुदी ११ (एकादसी) कौ प्रातःकाल सिंगार आरती पश्चात् समाज

५९	रंगीलौ आज बधावौ (बधाई)	४६५	श्री सहचरी सुख जी महाराज कृत	
४०	श्री द्विजराज भवन में ”	४५८	गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत	
७०	अहो रंग फूल्यौ है रसिकनि ”	४७०	श्री सहचरी सुख जी महाराज कृत	
१७०	होहु चिरजीवी तारा (असीस)	५६६	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत	

वैसाख सुदी ११ (एकादसी) कौ संध्या आरती पश्चात समाज

१५२	महल में आज बधाई (ढाढ़ी)	५३९	श्री व्रज जीवन जी महाराज कृत	

जैष्ठ वदी १ (परवा) कौ गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र प्रभु जी कौ छठी उत्सव

२१६	श्री व्यास सुवन की छठी (छठी)	६०६	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत	
२१९	आज दसूठन री हली (दसूठन)	६०७	” ” ”	”

श्री सेवा कुंज (श्री राधारानी को महल) महोत्सव-कार्य क्रम—सूची

माघ सुदी ५ को बसंत के-पदों की शृंखला समाज पद गायन ४ बजे से

पद संख्या—वसंत के पद पंद्रह शुरू में है—पृष्ठ संख्या—	नामावली	तिथि
१ मधुरितु वृन्दावन आनन्द (पंद्रह पद) १	श्री हित हरिवंशचन्द्र महा प्रभु जी कृत	सुदी ५ को

फागुन सुदी २ से फागुन सुदी १० तक सायं काल ४ बजे होरी धमारि के पदों की समाज

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली—राग—	तिथि	
१	प्रथम यथ. मति प्रणऊँ श्री	८६	गो०श्रीहित हरिवंशचन्द्र प्रभुजी(नित्य)	फा.सु.	२
४२	हंस सुता तट केलि दम्पति	१६७	गो० श्री वनचन्द्र प्रभु जी—आसावरी	,,	,,
४३	देखहु श्री वृन्दावन मोहन	१६८	गो० श्री कृष्णचन्द्र प्रभु जी—राइसो	,,	,,
४४	मधुरितु खेलैं फाग रसिक	१६९	गो० श्री दामोदर वरमा—धनाश्री	,,	,,
४७	मदन मोद भरे खेलत होरी	१७२	गो० श्री कमलनैन जी महाराज	,,	,,
५०	चौंकि परी गोरी होरी में	१७३	गो० श्री कुंजलाल जी—कल्याण	,,	,,
५३	चाँचरि चौंर बढ़ावति	१७४	गो० श्री हरिलाल जी—काफी	,,	,,
५५	खेलत फाग सुहाग भरे	१७६	गो० श्री रूपलाल जी—काफी	,,	,,
५६	लाल लड़ैती जू खेलहीं	१७६	श्री ध्रुवदास जी—काफी	,,	,,
६३	रंग रंगीले दोऊ	१७९	गो० श्री किशोरीलाल जी	,,	,,
१९२	ब्रज कौ दिन दूलह रंग	३३३	चाचा श्री वृन्दावनदास जी—रसिया	,,	,,

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत छद्म

१८१	मेरी बाल सुनों में नन्द गाँव	२०७	(गोंदें वारी लीला)	छद्म—फागुन सुदी	३	कौ
१८२	गुनवंती चतुर चितेरा	२९९	(चितेरिन लीला)	,,	,, ४	कौ
१८३	तन सांवरी सुघर सुनारी	३०३	(सुनारिन लीला)	,,	,, ५	कौ
१८४	मिठ बोलनी नवल मनिहारी	३०८	(मनिहारी लीला)	,,	,, ६	कौ
१८५	मालिनियां पीरी आई	३११	(मालिन लीला)	,,	,, ७	कौ
१८६	कोऊ लैहै चुन्नी मेलौ	३१४	(बिसातिन लीला)	,,	,, ८	कौ
१८७	सांवल तन परम सुहाना	३१५	(दर्जिन लीला)	,,	,, ८	कौ
१८८	छवि आगरी [illegible] राम	३१६	([illegible] लीला)	,,	,, ९	कौ
१८९	गांधी कौ कुंवरि [illegible]	[illegible]	(गांधिन लीला)	,,	,, १०	कौ
१९०	[illegible]	३२०	([illegible] लीला)	,,	,, १०	कौ
१९१	तन सांवरो [illegible]	३३१	([illegible] लीला) ([illegible])	,,	,,	कौ
३८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,	,,	कौ
५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,	,,	कौ
१९२	ब्रज कौ दिन दूलह रंग	३३३	[illegible]	,,	,,	कौ

श्री रास मण्डल महोत्सव–कार्यक्रम–सूची–

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी की बैठक पर समाज हितोत्सव की मंगल बधाई

उत्सव प्रारम्भ- चैत्र सुदी पूनौ से–वैसाख सुदी ११ (एकादशी) तक शृङ्खला–पद गान

पद संख्या	मङ्गल बधाई	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१	जै जै श्री हरिवंश व्यास (मङ्गल)	४२७	श्री सेवक जी महाराज कृत	चैत्र सुदी पूनौ
२	मधुरितु माधवमास सुहाई (बधाई)	४२८	श्री कृष्णदास जी महाराज कृत ,,	,,
३	रसिक राग रंग सुरस प्रगट ,,	४२८	श्री सहचरी सुख जी महाराज ,,	,,
४	आनन्द आज नन्द के द्वार ,,	४२८	गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी	,,
५	चलौ वृषभानु गोप द्वार ,,	४२९	,, ,, ,,	,,
६	आज सुहेलरा श्री व्यास ,,	४२९	श्री रूपलाल जी महाराज कृत	,,
७	आज ब्रिज राज भवन रंग ,,	४३०	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज	,,
२५	नमो नमोजय श्रीहरिवंश (भोगके)	४१८	श्री व्यास जी महाराज कृत	,,
९	सन्ध्या भोग अली लै ,,	४२०	गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत	,,
४७	जै जै हो श्री राधे जू मैं (आरती)	४२६	श्री भगत जी महाराज कृत	,,

वैसाख वदी १ (परवा) से मङ्गल–बधाई की समाज

पद संख्या	मङ्गल बधाई	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१०	मंगल श्री हरिवंश सदा (मङ्गल)	४३०	गो० श्री सदानन्द जी महाराजकृत	वदी १ को
११	वलि वलि श्री हरिवंश ,,	४३१	श्री लालदास जी महाराज कृत	वदी २ को
१२	जैजै श्रीहरिवंश गिरा रस ,,	४३३	श्री [illegible] पुजारीजी महाराज कृत	वदी ३ को
१३	जै जै श्री हरिवंश इन्दु ,,	४३४	,, ,, ,,	वदी ४ को
१४	जै जै श्री हरिवंश सुयश ,,	४३५	श्री सहचरिसुख जी महाराज कृत	वदी ५ को
१५	राधा हरि जस जनम ,,	४३६	,, ,,	वदी ६ को
१६	आजु सुहेलरा री हेली ,,	४३७	,, ,,	वदी ७ को

श्री सेवक वाणी जी की समाज–वैसाख वदी ७ से प्रारम्भ

पद संख्या	मङ्गल बधाई	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१७	जै जै मङ्गल कुञ्ज निकुञ्ज (मङ्गल)	४३८	श्री कृष्णदासजी महाराज कृत	वदी ८ को
१८	नव निकुञ्ज में आजु ,,	४३९	श्री प्रेमदास जी ,,	वदी ९ को
१९	जै जै श्री हरिवं प्रसंस ,,	४४०	गो० श्री हित मकरन्द जी ,,	वदी १० को
२०	जय जय हित सर्वोपर ताहि ,,	४४१	चाचा श्रीवृन्दावनदासजी ,,	वदी ११ को
२१	चरन सरोज नमामि गोप्य ,,	४४३	,, ,, ,,	वदी १२ को
२२	जै जै नवल निकुञ्ज सुदेश ,,	४४४	,, ,, ,,	वदी १३ को
२३	यह मङ्गल राधा हरि मन ,,	४४५	,, ,, ,,	वदी १४ को
२४	वरस गांठि श्री व्यास सुवन ,,	४४६	,, ,, ,,	वदी १५ को
२५	जै जै श्री हरिवंश रसिक ,,	४४७	श्री चतुर सिरोमणिलाल जी-	वैसाखसुदी १ को
२६	जै जै श्री हरिवंश परमकरुणा	४४८	श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत	२ को
२७	श्री हरिवंश नाम मंगल मय	४४९	श्री स्वामी चतुर्भुज दास जी ,,	३ को

वैसाख सुदी १० कौ रात्रि में जागरण--ढाढ़ी-ढाढ़िनि

पद संख्या	मंगल बधाई	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
२८	श्री द्विज राज के हो आँगन (बधाई)	४५३	गो० श्री नवनीतलालजी महाराज	सुदी १० कौ
१२८	देखौ कैसा बना हैगा	५१४	श्री हितदासजी महाराज कृत	"
१४५	जै जै जै सुर नर मुनि (वंशावली)	५३१	श्री अति वल्लभ जी महाराज कृत	"
१६५	श्री हित रूप प्रनम्य "	५८१	बाबा श्री वृन्दावन दास जी महाराज	"

वैसाख सुदी ११ (एकादसी) कौ प्रातः काल की समाज ।

२०८	विप्रराज वड़ ज्ञाता (दाई बरनन)	६०२	बाबा श्री वृन्दावन दास जी कृत	सुदी ११
११६	भैया हो अद्भुत मंगल (बधाई)	५०७	श्री किशोरी दास जी महाराज "	"

वैसाख सुदी ११ (एकादसी) संध्या समय-समाज

५६	रंगीलौ आज बधावौ (बधाई)	४६५	श्री सहचरी सुख जी महाराज कृत	"
४०	द्विजराज भवन में रंगीली "	४५८	गो० श्री किशोरीलाल जी " "	"
१८	नव निकुञ्ज में आजु बधाई "	४३६	श्री प्रेमदास जी महाराज "	"
१८०	होहु चिरुजीवी तारा नन्द "	५६६	बाबा श्री वृन्दावनदास जी " "	"

गो० श्रीमनोहरलालजी महाराज की कुंज (श्रीविलास वंश) में समाज

फागुन वदी ११ (एकादसी) कौ दोपहर के २ बजे से महोत्सव-कार्य क्रम पद गायन

१	प्रथम यथा मति प्रणऊँ श्री	८६	गो० श्री हितहरिवंशचंद्र महाप्रभुजी कृत
३६	अहो रंग हो हो होरी	१६०	गो० श्री सुखलाल जी महाराज कृत
६१	रंग रंगीले दोऊ	१७८	गो० श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत
१६२	वृज को दिन दूलह (रसिया)	३३३	बाबा श्रीवृन्दावनदास जी महाराज कृत

श्रीमान सरोवर (श्री राधा रानी) कौ महोत्सव-कार्य क्रम-सूची

फागुन वदी ११ (एकादसी) कौ रात्रि कौ जागरण, समाज--पद गायन

पद संख्या	बसंत के पदों शृङ्खला देखौ	पृष्ठ संख्या	नामावली
१	मधुरितु वृन्दावन आनन्द न थोर	१	गो० श्रीहितहरिवंशचंद्रमहाप्रभु जी कृत

होरी धमारि के पदों की शृङ्खला समाज ।

१	प्रथम यथा मति प्रणऊँ श्री	८६	गो० श्री हितहरिवंश चंद्र महाप्रभु जी कृत
२४	श्री ललित निकुञ्ज बिहारी	१२७	श्री हित घनश्याम जी महाराज कृत
३४	श्री वृन्दावन सहज सुहावनी (वर्णा)	१२६	श्री बिहारिन दास जी महाराज कृत
७४	देखि सखी नव कुंज राजा	१८६	श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत
५५	खेलत फाग सुहाग भरे	१७६	गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत
५६	लाल लड़ैती जू खेलही	१७६	श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत
६६	आज भोर ही नंद भवन में	१८१	श्री व्यास जी महाराज कृत
३७	अहो पिय लाल लड़ैती	१६३	श्री नागरीदास जी महाराज कृत
३८	सजनी लाल फाग फल पायौ	१६४	बाबा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत
१६२	वृज कौ दिन दुलह रंग (रसिया)	३३३	" " "
१	झूलत दोऊ नवल किशोर	३ १	गो० हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कृत
६१	होरी रंग रंगीली आई	१७८	गो० किशोरीलाल जी महाराज कृत

श्री बाद ग्राम—गो० श्री हित हरिवंश चंद्र प्रभु जी को प्राकट्य स्थान

उत्सव प्रारम्भ—चैत्र वदी ४ कौ—समाज शृङ्खला—पद गायन

पद संख्या	बसंत के पदों की शृङ्खला	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१	मधुरितु वृन्दावन आनन्द (वसन्त)	१	गो० श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी	४ कौ

चैत्र वदी ५ कौ होरी धमारि के तथा होरी डोल के पद

पद संख्या	होरी धमारि के पद		पृष्ठ संख्या	नामावली		तिथि
१	प्रथम यथा मति प्रणाऊँ	(धमारि)	८९	गो० श्री हित हरिवंश चंद्र प्रभु जी	,,	५ कौ
४२	हंस सुता तट केलि दम्पति	,,	१६७	गो० श्री वनचन्द्र महाप्रभु जी	,,	,,
४३	देखहु श्री वृन्दावन मोहन	,,	१६८	गो० श्री कृष्णचंद्र महाप्रभु जी	,,	,,
४४	मधुरितु खेलैं फाग रसिक	,,	१६९	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	,,	,,
४७	मदन मोद भरे खेलत होरी	,,	१७२	गो० श्री कमल नैन जी महाराज	,,	,,
५०	चौकि परी गोरी होरी में	,,	१७३	गो० श्री कुंजलाल जी महाराज	,,	,,
५४	चाँचरि चौंप वढ़ावनि	,,	१७५	गो० श्री हरिलाल जी महाराज	,,	,,
५५	खेलत फाग सुहाग भरे	,,	१७६	गो० श्री रूपलाल जी महाराज	,,	,,
५६	लाल लड़ैती जू खेलहीं	,,	१७६	श्री ध्रुवदास जी महाराज	,,	,,
१४०	दिन डफ ताल बजावत	,,	२४३	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज	,,	,,
६६	आज भोर ही नन्द भवन	,,	१८३	श्री व्यास जी महाराज	,,	,,
६२	रंग रंगीले दोऊ नव निकुंज	,,	१७९	गो० श्री किशोरीलाल जी महाराज	,,	,,
१९२	बृज कौ दिन दूलह	(रसिया)	२३३	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज	,,	,,

होरी डोल के पद—सब रसिक महानुभावों के

१	झूलत दोऊ नवलकिशोर (होरीडोल)	३५१	गो०श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभुजी कृत	,,	
१६	जमुना पुलिन सुहावनौं रंग ,,	३५६	श्री दामोदर स्वामी जी महाराज	,,	,,

गो० श्री वनचन्द्र महाप्रभुजी कौ प्राकट्य—चैत्र वदी ६ कौ मङ्गल बधाई

१	जै जै श्रीवनचन्द्र गौर पद (मङ्गल)	३६३	चाचा श्री वृन्दावनदास जी	,,	,,	,,

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कौ प्राकट्य—वैसाख सुदी ११ (एकादशी) कौ

उत्सव प्रारम्भ—चैत्र सुदी पूर्णिमा से जैष्ठ वदी ५ तक समाज पद गायन

१	जै जै श्री हरिवंश व्यास (मङ्गल)	४२७	श्री सेवक जी महाराज कृत

नोट - श्री हितोत्सव की मङ्गल बधाई के पद संख्या १ और पृष्ठ संख्या ४२५ से आरम्भ हैं। संभव है कि उक्त सूची में कोई पद छूट गये हों या आगे पीछे गाये जाते हों सो रसिकजन यथा क्रम संशोधन करके गावैं।

श्री गदाधरभट्टजी महाराज के सेव्यस्वरूप श्रीराधामदन मोहन जी
मन्दिर को महोत्सव–कार्य–क्रम–सूची

श्री गोवर्द्धनलाल (छुट्टनलाल)भट्ट जी महाराज के यहाँ की शृंखला की

उत्सव-प्रारंभ-माघ सुदी वसंत ५ से–दोपहर के २ बजे से समाज–पद गाय

पद संख्या	वसंत के पद—	पृष्ठ संख्या—	नामावली—	ति
६२	देखौ प्यारी कुंज बिहारी (नित्य)	४२	श्री गदाधर भट्टजी महाराज कृत	–माघ सु
६३	तेरी नवल तरुनता नव	४२	” ”	”
११८	हरि रिह ब्रज युवती	५४	श्री गुसाईं विट्ठलनाथ जी महाराज कृत	
११९	श्री पंचमी परम मंगल	५५	” हरि जीवन जी महाराज	”
१०२	श्याम सुभग तन शोभत (नित्य)	४६	” कुंभनदास जी महाराज	”
११४	ललित लवंगलता परि (अष्टपदी)	५१	” जयदेव जी महाराज	”
१०१	गावत चली वसंत बधाये	४५	” चतुर्भुजदास जी महाराज	”
१४	राजैं वृन्दावन श्री नव निकुंज	६	” ध्रुवदास जी महाराज	”
१२०	नवल वसंत नवल वृन्दावन	५६	” श्रीभट्ट जी महाराज	”
१	मधुरितु वृन्दावन आनंद न	१	” हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी	”
१२२	चली है भरन गिरिधरन	५६	” नंददास जी महाराज	”
६१	वृषभानु कुंवरि खेलन	४१	” कृष्णावती जी	”
४४	राजैं वृन्दावन मधुरितु	२१	” रसिकदास जी महाराज	”
१२१	सखी नियानंद नंदन रुचिर	५६	” नंददास जी महाराज	”
२	देखि वन की बात राधे	१	” हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभुजी	”
११५	अद्भुत सुरभि समये सहजो	५२	” प्रबोधानन्द सरस्वती जी	”
१२४	आई है भरन गिरिधरन	५७	” रामराय जी महाराज	”
१६	प्रथम समाज आज वृन्दावन(भेट)	६	” हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभुजी	”
४	देखौ वृन्दावन कुसुमित वसंत	२	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	”
३	राधे वन विनोद वसंत	२	गो० श्री वनचन्द्र प्रभुजी महाराज	”
११६	मदशिखि पिच्छ मुकुर(अष्टपदी)	५३	श्री प्रबोधानन्द जी महाराज	”
१०५	देखौ वृन्दावन श्री कमल	४७	” सूरदास जी महाराज	”
१७	नवल वसंत नवल वृन्दावन (भेट)	७	” हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी	”
१८	राधेश्याम श्यामा संग विहरति	७	” गो०श्रीवनचन्द्र प्रभुजी महाराज	”
१४७	श्री वृन्दावन आनन्द न अंत	६७	श्री बिहारिनदास जी महाराज	”
१४१	चलि री मोर तें न्यारेई	६५	” स्वामी हरिदास जी महाराज	”
१२	विहरत विपिन भरत रंग	५	” नागरीदास जी महाराज	”
११	कुच गडुवा जोवन मोर	५	” स्वामी हरिदास जी महाराज	”
१४६	विहरत राज रितु वन राय	६६	” बिहारिनदास जी महाराज	”
१०८	पिय प्यारी खेलैं जमुना तीर	४६	” सूरदास जी महाराज	कृष्ण फा -सु
१०८	खेलत माधव गोपाल लाल	४६	” ”	

श्री गोवर्द्धनलाल (छुट्टनलाल) भट्ट जी महाराज के यहाँ की समाज

पद संख्या	वसन्त के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली—		तिथि
१२	देखि सखि अति आज	५	श्री व्यास जी महाराज	कृत	,,
६५	रितु बसंत में लसंत मूरति	४३	,, वल्लभ रसिक जी महाराज	,,	,,
११७	बरसीमंत रसामृत सारिणि	५४	,, प्रबोधानन्द सरस्वतीजी महाराज	,,	१२ कौ
६	दिन दूलह मेरौलाल विहारी	४	गो० श्री रूपलाल जी महाराज	,,	,,
१७४	श्री वृषभान पौरि खेलत	७६	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज	,,	,,
४२	कुंजविहारी प्यारी के संग	१५	श्री व्यास जी महाराज	,,	,,
२२	विहरत रंग मगे दोऊ लाल	८	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	,,	,,
३३	नवल निकुंज नवल वृन्दावन	१२	गो० श्री रूपलाल जी महाराज	,,	१३ कौ
६	श्री वृन्दावन पूजन वसंत	३	गो० श्री कमल नैन जी महाराज	,,	,,
५६	वृन्दावन मौरी अंब डार	२२	श्री सहचरी सुख जी महाराज	,,	,,
२३	निर्त्तत हँसत आवत लाल	६	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	,,	,,
२६	श्री वृन्दावन छवि कही जाइ	१०	गो० श्री कमल नैन जी महाराज	,,	१४ कौ
४१	वसंत खेलत विपिन विहारी	१५	श्री व्यास जी महाराज	,,	,,
५०	खेलत आज बसंत प्रिया	१६	,, दामोदर स्वामी जी महाराज	,,	,,
५३	देखौ रवनी रवन कमनी	२०	,, रसिकदासजी महाराज	,,	,,
१८४	यह वृन्दावन यह रविजा तट	८२	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महा०	,,	,,

महा सुदी १५ पूर्णमासी के दिन से होरी धमारि के पद प्रारंभ

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली		तिथि
६३	तेरी नवल तरुनता नव	४२	श्री गदाधर भट्ट जी महाराज	कृत	माह सु,१५कौ
१०२	मिलि खेलैं फाग वन में (नित्य)	२१८	,,	,,	,,
३	रितुबसंत सुखखेलिये(होरी डाडो)	६२	श्री गोविंद स्वामी जी महाराज	,,	,,
५६	लाल लडैती जू खेलहीं	१७६	,, ध्रुवदास जी महाराज	,,	,,
१३७	उत साँवरो बहु रंगन (नित्य)	२५५	,, गोकुलेश जी महाराज	,,	,,
१६६	होरीकौ रसिया निकसत(रसिया)	३३३	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज	कृत	,,
४	अहो रंग हो हो हो हो होरी खेलैं	६४	श्री रामराय जी महाराज	कृत—फा०	बदी१कौ
६	हो हो होरी बोलहीं नवल कुंवर	६७	,, माधुरीदास जी महाराज	,,	२ कौ
१००	रंग हो हो होरी खेलैं लाडिली	२१६	,, गदाधर भट्ट जी महाराज	,,	३कौ
५	खेलत है हरि हो हो होरी	६५	,, सूरदास मदनमोहन जी	,,	४कौ
८०	अरी चलि वेगि छबीली	१६०	,, नंददास जी महाराज	,,	५कौ
१०४	नवल वधू रंग भीनी प्रीतम	२२०	,, वल्लभ रसिक जी महाराज	,,	,,
१०१	देखौ री वृज वीथिन वीथिन	२१८	,, गदाधर भट्ट जी महाराज	,,	फा,बदी६कौ
६६	आज भोर ही नंद भवन	१८३	,, व्यास जी महाराज	,,	,,
४४	मधुरितु खेलै फाग रसिक	१६६	गो० श्री दामोदर वर जी महाराज	कृत	,,
१०८	धन्य धन्य नन्द जसोमति	२२६	श्री गोविंद स्वामी जी महाराज	,,	७ कौ
१३१	सुरंगी होरी खेलैं सामरों	२५०	,, छीत स्वामी जी महाराज	,,	,,
१२७	दोऊ राजत नवल किशोर अति	२४७	,, गगल प्रभु जी महाराज	,,	८ कौ

गोवर्द्धनलाल (छुट्टनलाल) भट्ट जी महाराज के यहाँ की समाज

या होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या—	नामावलि		तिथि
निकसि कुंवर खेलन चले	१०८	श्री नंददास जी महाराज	कृत	९ को
आगम सुनि रितु राज को	२३३	,, माधुरीदास जी महाराज	,,	१० को
अहो रंग हो हो हो होरी खेलैं	१६०	गो० श्री सुखलाल जी महाराज	,,	,,
(श्री)वृन्दावन चन्दलाल रंग भरे	२२७	,, रामराय जी महाराज	,,	११ को
रसिक गोपाल वृन्दावन महिया	४६	श्री मैन प्रभु जी महाराज	कृत	,,
चलि सखी देखन जाँहि कौतुक	३६७	श्री नागरीदास जी महाराज	,,	१२ को
देखि सखी बन कुंज राधालाल	१८६	श्री ध्रुवदास जी महाराज	,,	,,
श्री ललित निकुंज विहारी खेलत	११७	श्री हित घनश्याम जी महाराज	,,	१३ को
महा मोहन ढोटा साँवरो हो	२२६	श्री रामराय जी महाराज	,,	१४ को
बाघंबर ओढे साँवरो	११६	श्री माधोदास जीमहाराज	,,	,,
जोगी रंग भीना	२५४	श्री मलूकदास जी महाराज	,,	,,
ए चलि ललन भरहि मिलि	१२५	श्री व्यास जी महाराज कृत—अमावस्या		१५ को
राधा रवनी रंग भरी रंग होरी	१०७	श्री नंददासजी महाराज ,, फागुन सुदी		१ को
मोहनपरो री मेरे मोहन (रसिया)	३४२	श्री हित घनश्याम जी महाराज	कृत	,,
होरी खेलत है नव बाल	२००	श्री वल्लभ रसिक जी महाराज	,,	२ को
गोकुल राज कुमार लाल	१००	श्री गदाधर भट्ट जी महाराज	,,	३ को
चौंकि परी गोरी होरी में	१७३	गो० श्री कुंजलालजी महाराज	,,	,,
अरी चलि नवल किशोरी गोरी	१५८	श्री नंददास जी महाराज	,,	४ को
छबीली नागरी हो धन तेरो	१७८	गो० श्री रूपलाल जी महाराज	,,	,,
श्री वृन्दावन रानी राधासुन्दर	१५४	गो० श्री सदानंद जी महाराज	,,	५ को
अलक लड़ी रिझवार प्रीतम	१७८	गो० श्री रूपलाल जी महाराज	,,	,,
चलि जाँहि जहाँ हरि खेलत	१५२	श्री राघवदास जी महाराज	,,	६ को
श्रीवृन्दावन महल सुहावनों (बसा)	१४६	श्री बिहारिनदास जी महाराज	,,	७ को
मिलिआवोरी मिलि आवौ (गारी)	२१४	श्री परमानंददास जी महाराज	,,	८ को
फाग भरयो बरसानों जू	२३२	श्री माधुरीदास जी महाराज	,,	,,
ब्रज कौ दिन दूलह रंग (रसिया)	३३३	श्री चाचा वृन्दावनदास जी महाराज	,,	,,
चली है कुंवरि राधे खेलन	१६१	श्री नंददास जी महाराज कृत-फागुन सुदी		९ को
अहोपियलाल लड़ै ताकौ (भूमिका)	१६३	श्री (नागरीदास)रसिक बिहारनि रानीजी		१० को
स्यामा स्याम निकुंज महल में	१७४	गो० श्री कुंजलाल जी महाराज	कृत	,,
सकल कुंवर गोकुल के निकसे	२१५	श्री गदाधर भट्ट जी महाराज	,,	११को
निकसे है मोहनलाल खेलन	१८६	श्री नंददास जी महाराज	,,	,,
रंग हो हो हो हो होरियाँ	२३१	श्री माधुरीदास जी महाराज	,,	,,
आज बनि ठनि ब्रज खेलन फाग	१६१	श्री नंददास जी महाराज	,,	,,
रसिया	३३३	(सब महात्मा कै)	,,	,,
मेरो मन माड्या साँवरो (हेली)	२४६	श्री हित अनूप जी महाराज	,,	१२को

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१२६	या गोवर्द्धन की गैल (हेला)	२४७	श्री हित अनूप जी महाराज कृत	वदी १२ कौ
२३०	काजर वारी गोरी ग्वाल (रसिया)	३८२	श्री हित घनश्याम जी महाराज „	„
७७	रंग भरे राधालाल अति	१८८	श्री ध्रुवदास जी महाराज „	„
३०	अहो रंग हो हो होरी खेलें सकल	१४७	„ अचलदास जी महाराज „	१३ कौ
५५	खेलत फाग सुहाग भरे अनुराग	१७६	गो० श्री रूपलाल जी महाराज „	„
१०३	नवनिकुंज में होरी श्रीराधा (माँझ)	२१६	श्री वल्लभ रसिक जी महाराज „	१४ कौ
११८	ग्वालिनि सौंधें भीनी अंगिया	२२८	„ हित घनश्यामदास जी „	„
११३	गोपनके आनन्द व्रज फाग खानौं	२२६	„ जन दिग्गज जी महाराज „	१५ कौ
४६	लाल लड़ैती जू खेलहीं	१५६	„ ध्रुवदास जी महाराज „	„
१६२	रसिया—	३३३	(सब महात्माओं कै)	

चैत्र वदी १ (परवा) के दिन होरी डोल के पद (सभी रसिक महानभावों के होते हैं)

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१	प्रथम यथा मति प्रणऊँ	८६	गो० श्रीहितहरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत	वदी १
१६	जमुना पुलिन सुहावनों	३०६	श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत	„
२०	वर जमुना के तीर दोऊ	३५६	„ „ „	„

नोट—कोई तिथि घट बढ़ होने से, या रसिक भक्तों के आनन्द से कार्यक्रम में परिवर्तन भी हो सकता है।

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ कौ समाज—पद गायन

श्री स्वामी मोहनी दास जी महाराज कौ जन्म-माघ वदी ११ कौ

उत्सव प्रारंभ—माघ वदी ८ से माघ वदी १३ तक—सायंकाल ४ बजे से—समाज

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१३५	प्रथम लड़ाऊँ श्री गुरु (मङ्गला चरण)	६२	श्रीबिहारिनदास महाराज कृत	मा. व. ८ कौ
१३६	आज महा मंगल भयौ (छोटोगुरुमंगल)	६२	श्रीरसिकदेव जी „	„
१३७	आज समाज सहज „	६२	„ „	„
१३८	श्री गुरु मंगल गाय मना „	६२	श्री पीताम्बरदेव जी „	„
१३९	प्रथम जथामति श्री (बड़ोगुरुमंगल)	६३	„ कृष्णदास जी „	„
१४०	कुञ्जविहारी कौ वर (वसन्त)	६५	„ स्वामी हरिदास जी „	„
३५	निकुञ्ज विराजिये जू नव	२७८	श्री बिहारिनदास जी „	„
१४९	बिहारी तेरे नैना रूप भरे (असीस)	७०	श्री ललितमोहिनी देव जी „	„
१५०	मेरी आँखियाँ रूप के रंग (असीस)	७०	श्री ललित „ „	„
१५१	आरति आनि सहचरिन साजी (आरती)	७०	श्री भगवतरसिक जी „	„
१५२	आरति कीजै सुन्दर वर की „	७०	„ बिहारिनदास जी „	„
१४६	चलि री भीर तें न्यारेई (वसंत)	६५	श्री स्वामी हरिदास जी „	वदी ९ कौ
३६	चलौ जू कौतुक देखन जाहि	२७९	श्री बिहारिनदास जी „	„
१४२	अबकें वसंत न्यारेई खेलैं	६५	श्री स्वामी हरिदासजी „	वदी १० कौ
५०	प्यारी सहजहि मन हरि	२६५	श्री नागरीदास जी „	„
१४३	रहौ रहौ बिहारी जू मेरी	६५	श्री स्वामी हरिदासजी „	वदी ११ कौ

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ कौ, समाज–पद गायन

रात्रि में जागरण–सिद्धान्त के पद–शयन के पद–मंगला के पद

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
४७	सहेली मेरे लाल बिहारी (सहेली)	३८६	श्री बिहारिनदासजी महाराजकृत	११ कौ

माघ वदी १२ कौ प्रातःकाल

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
४८	मेरे पिय प्यारी कौ झूमिका (झूमिका)	३९३	श्री बिहारिनदासजी	”	१२ कौ

श्री स्वामी रसिक देव जी महाराज कौ–माघ सुदी वसंत ५ कौ जन्म

उत्सव प्रारंभ–माघ सुदी ५ कौ प्रातःकाल ८ बजे से समाज पद गायन

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१६५	मंगला चरण, छाटो, बड़ो गुरु मंगल	६२	(जो नित्य होय है)	माघ सुदी ५ कौ
११	कुच गडुवा जोवन मोर (पर्मार)	५	श्रीस्वामी हरिदासजी महाराज कृत	”
१४०	कुञ्ज बिहारी कौ वर (वसंत)	६५	” ” ”	”
१४१	चलि री मीर तें न्यारेई खेलें ”	६५	” ” ”	”
१४२	अब कें वसंत न्यारेई खेलें ”	६५	” ” ”	”
१४३	रही रही बिहारी जू मेरी ”	६५	” ” ”	”
१४६	विहरत राज रितु बन ”	६६	श्रीबिहारिनदासजी महाराज कृत	”
१५७	जय श्री वृन्दावन आनन्द ”	६७	” ”	”
१५६	श्री बिहारी जू खेलत वसंत ”	६८	श्री रसिकदेव जी महाराज कृत	”
१४४	सजनी नव निकुञ्ज द्रुम ”	६६	श्री वीठल विपुल जी ”	”
१४५	जुगल किशोर मेरे कुञ्ज ”	६६	” ”	”
१५६	असीस के पद —आरती के पद	७०	(रसिक महानभावों के)	”

श्री बिहारी बिहारिनि जू कौ फागुन सुदी ८ से फागुन सुदी पूर्णमासी तक

उत्सव प्रारंभ–फागुन सुदी ८ से समाज–सन्ध्या कौ ४ बजे से

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१६५	प्रथम मंगला चरण (श्रीगुरु मंगल)	६२	रसिक महात्मों के (प्रथम नित्य होय है)	८ कौ
१४०	दिन दूलह लाल बनाबत(होरी धमारि)	२५६	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत	”
१४४	होरी खेलत गिरधारी, खेलत स्याम ”	२५९	श्री बिहारिन दास जी ”	”
१४६	मेरी रसिक रंगीली नागरी ”	२६०	श्री नागरी दास जी ”	”
१४२	राधा रसिक कुञ्ज बिहारी ”	२५७	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत	सुदी ९ को
१४३	हमारो माई लाल बिहारी ”	२५७	श्री बिहारिन दास जी ”	”
१०	डोल झूलत बिहारीबिहारिन(डोल)	३५२	श्री स्वामी हरिदास जी ”	सुदी १० कौ
१४७	श्री गुरु कृपा जथामति (धमारि)	२६१	श्री नागरी दास जी ”	”
११	झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े(डोल	३५३	श्री स्वामी हरिदास जी ”	सुदी ११ कौ
३४	श्रीवृन्दावन सहज सुहावनौ (धना)	१५६	श्री बिहारिन दास जी ”	”
१२	डोल झूलत श्रीकुञ्जबिहारी (डोल)	३५३	श्री स्वामी हरिदास जी ”	सुदी १२ कौ
१४८	सब सखि मिलि झूमक (झूमिका)	२०३	श्री नागरी दास जी ”	”

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ कौ, समाज-पद गायन

पद सं०	पद	पृष्ठ संख्या	नामावलि	तिथि
१२	एक समें एकान्त वन में (डोल)	३५४	श्री स्वामी हरिदास जी	” सुदी १२ कौ
३२	रूप अनूपम मोहनी रंगराँचे (वना)	१२४	श्री नागरी दास जी महाराज	” सुदी १२ कौ
१४६	मेरी सहज रंगीली नागरी	२६४	” ”	” ”
१४	डोल झूलत दुलहिनि (डोल)	३५४	श्री स्वामी हरिदास जी	” सुदी १४ कौ
५२	चलि सखी देखन जाहि (धमारि)	२६७	श्री नागरी दास जी	” ”

फागुन सुदी १५ पूर्णमासी कौ प्रातःकाल

१०	डोलझूलतविहारीविहारिन(डोल)	३५३	श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज	फ़ुन-सुदी १५ कौ
१५०	स्यामा प्यारी कुञ्ज विहारी ”	२६५	” नागरी दास जी	” ”
१५३	एरी सखी नित्य विहारिन ”	२६७	” ललित किशोरी जी	” ”
१५६	नव कुञ्ज सदन में आजु	२६८	” भगवत रसिक जी	” ”
१५२	मतवारे री तेरे छैल	२६६	” सरस दास जी	” ”
२४२	श्री विहारी विहारिनि	२४५	श्री ललित किशोरी जी	” ”

वैसाख सुदी ३ कौ, श्री बिहारी जी महाराज कौ चरन दर्शन-प्रातःचंदन-झूलन के पद
जेष्ठ वदी २ कौ, श्री स्वामी नरहरिदेव जी महाराज कौ जन्म, प्रातः बधाई पद गायन
असाढ़ सुदी १५(गुरु पूर्णमा) कौ प्रातःकाल, समाज, सिद्धांत तथा मलार के पद गायन

श्री स्वामी विहारिन दास जू कौ जन्म-श्रावण सुदी २ कौ

उत्सव प्रारंभ--श्रावण वदी १५ (अमावस्या) से-संध्या कौ ४ बजे सें समाज

१३५	प्रथम मंगला चरण (श्री गुरु मंगल)	६२	(सब महात्मों के पद) नित्य होय है	(अमावस्या)
३५	निकुंज विराजिये जू नव	३७८	श्री विहारिनदास जी महाराज	फ़ुन ”
३६	चलौ जू कौतुक देखन जाँहि	३७६	” विहारिनदास जी महाराज	श्रावण सु० १ कौ
४६	मन मोहन भेप पलटि चले	३८६	” ”	” सु० २ कौ
४८	मेरे पिय प्यारी को झूमिका	३६३	” ”	” प्रातःकाल २ कौ

सन्ध्या के समय तीज कौ (झूलन तीज) झूलन के पद—गान-समाज (सब महात्मों के)

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कौ जन्म श्री भादों सुदी ८ कौ

उत्सव प्रारंभ--भादों सुदी २ से-समाज पद गान--सन्ध्या कौ ४ बजे से

१३५	प्रथम मंगला चरण(श्रीगुरु मंगल)	६२	सब महात्मों के पद (जोनित्यहोयहैं)	भादों सु.२
३४	श्रीवृन्दावन को री चौज मनोज	३७६	श्री विहारिनदास जी महाराज	फ़ुन ”
१३६	असीस के पद-आरती के पद	७०	सब महात्मों के—नित्य होय है	” ”
३५	निकुंज विराजिये जू नव	३७८	श्री विहारिनदास जी महाराज	” सु.३कौ
३६	चलौ जू कौतुक देखन जाहि	३७६	” ” ”	” सु.४ कौ
३७	मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊँ	३८०	” ” ”	” सु.५कौ

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ कौ समाज–पद गायन

पद सं०	पद	पृष्ठ सं०	नामावली	तिथि
५०	(ए) प्यारी सहज मन हरि लेत	३६५	श्री नागरीदासजी महाराज	कृत सु.६कौ
५३	चलि सखि देखन जाँहि	३६६	” ” ”	” सु. ७कौ
१५०	दिन डफ ताल बजावत	२५६	” स्वामी हरिदास जी महाराज	” सु. ८कौ
३४	श्रीवृन्दावनसहज सुहावनौ(बना)	१५६	” बिहारिनदास जी महाराज	” सु.८ कौ

श्री स्वामी भगवानदास जी महाराज कौ जन्म आश्विन सु० १० कौ

उत्सव प्रारंभ–आश्विन सु० ७ से समाज पद गान (रूप गुण कीर्तन)

पद सं०	पद	पृष्ठ सं०	नामावली	तिथि
१३५	प्रथम मंगलाचरण(श्रीगुरु मंगल)	६२	सब महात्मो के पद (नित्य होय है)	सुदी ७
२१	सुनि धुनि मुरली बन बाजे	३७३	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज	कृत ”
४०	श्री कुंज बिहारी हरषि बुलाई	३८१	श्री बिहारिनदास जी महाराज	” ”
१५६	असीस के पद—आरती के पद	७०	सब महात्मों के (जो नित्य होय है)	”
२२	जहाँ जहाँ चरण परत प्यारी	३७४	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज	कृत ८ कौ
४१	तू ना करि मान मनोहर लाल	३८३	” बिहारिनदास जी महाराज	” ”
२३	कुंज बिहारी नाचत नीके	३७४	” स्वामी हरिदास जी महाराज	” ६ कौ
४६	जय श्री वृन्दावन विराजै तहाँ	३६८	” नागरीदास जी महाराज	” ”
२४	प्यारी तेरी महिमा बरनी	३७४	” स्वामी हरिदास जी महाराज	” १०कौ
४२	मनुहारि करैं मनुहारि लला	३८३	” बिहारिनदास जी महाराज	” ”

श्री स्वामी सरसदेव जी महाराज कौ जन्म आश्विन सु०१५ पू० कौ

उत्सव प्रारंभ–आश्विन सु० १२ से समाज–पद गान (रूप गुण कीर्तन)

पद सं०	पद	पृष्ठ सं०	नामावली	तिथि
१३	प्रथम मंगलाचरण (श्रीगुरु मंगल)	६२	सब महात्मों के (जो नित्य होय है)	१२ कौ.
४४	रस भीनें बिहारी मन हरयौ	३८४	श्री बिहारिनदास जी महाराज	कृत ”
१५६	असीस के पद—आरती के पद	७०	सब महात्मों के (जो नित्य होय है)	”
४८	हो हो रंगीली नागरी हो रंग	३८५	श्री बिहारिनदास जी महाराज	कृत १३ कौ
५७	स्यामा नागरी हो प्रवीन सकल	३६६	” नागरीदास जी महाराज	” १४ कौ
२१	सुनिधुनि मुरली बन(रासकेपद)	२७३	” स्वामी हरिदास जी महाराज	” १५ कौ
२२	जहाँ जहाँ चरन परत ”	३७४	” ” ”	” ”
२५	यह कौन बात जो अबही ”	३७४	” ” ”	” ”
२३	कुंज बिहारी नाचत नीके ”	३७४	” ” ”	” ”
५८	निर्त्तत रस भरे रसिक बिहारी	४००	” सरसदास जी महाराज	” ”
५५	रसिक रसिकनी किशोर ”	३६८	” नागरीदास जी महाराज	” ”
२६	बनी री तेरे चार चार चुरी ”	३७४	” स्वामी हरिदास जी महाराज	” ”
२८	नव बन नव निकुंज नव ”	३७५	” बीठल विपुल जी महाराज	” ”
२९	नव निकुंज नव भूमि रंग ”	३७५	” ”	” ”
३१	रास मैं रसिक निर्त्तत रंग ”	३७५	” बिहारिनदास जी महाराज	” ”
३२	ललित गति नूपुर बजत ”	३७६	” ”	” ”
५६	माई री आजु रस मसे ”	४००	” सरसदास जी महाराज	” ”

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ कौ समाज-पद गायन

श्री स्वामी ललित किशोरीदेव महाराज जू कौ जन्म अगहन वदी ८ कौ

उत्सव प्रारम्भ अगहन वदी ५ से समाज पद गान (रूप गुण कीर्तन)

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१३५	प्रथम मङ्गलचरण(श्रीगुरुमङ्गला)	६२	सब महात्मों के (नित्य होय है)	वदी ५ कौ
२१	सुनि धुनि मुरली वन	३७३	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत	,,
४०	श्रीकुंज विहारी हरपि	३८१	,, विहारिनदास जी महाराज ,,	,,
१५६	असीस के पद—आरती के पद	७०	सब महात्मों के (जो नित्य होय है)	
२६	बनी री तेरे चार चार चुरी	३७४	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत	६ कौ
५६	जय श्री वृन्दावन विराजै तहाँ	३६८	श्री नागरीदास जी महाराज ,,	,,
२२	जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी	३७४	श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत	वदी ७ कौ
४१	तू ना करि मान मनोहर लाल	३८२	,, विहारिदास जी महाराज ,,	,,
२४	प्यारी तेरी महिमा बरनी	३७४	,, स्वामी हरिदास जी महाराज ,,	८ कौ
४२	मनुहारि करें मनुहारि लला	३८३	,, विहारिनदास जी महाराज ,,	,,

श्री स्वामी वीठल बिपुलदेव जी महाराज कौ जन्म अगहन सु० ५ कौ

उत्सव प्रारंभ—अगहन सुदी २ से—समाज पद गान (रूप गुण कीर्तन)

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
१३५	प्रथम मङ्गलचरणा(श्रीगुरुमङ्गल)	६२	सब महात्मों के (नित्य होय है)	सुदी २ कौ
४४	रस भीनें विहारी मन हरयौ	३८४	श्री विहारिनदास जी महाराज कृत	,,
१५६	असीस के पद-आरती के पद	७०	(सब महात्मों के) जो नित्य होय है	,,
४५	हो हो रंगीली नागरी हो रंग	३८५	श्री विहारिन दास जी महाराज कृत	३ कौ
५७	स्यामा नागरी हो प्रवीन	३६६	,, नागरीदास जी महाराज ,,	४ कौ
३७	मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊँ	३८०	,, विहारिनदास जी महाराज ,,	५ कौ

नोट—उत्सव प्रारंभ में प्रथम गुरु मङ्गला चरण, छोटो-बड़ो गुरु मङ्गल तथा श्री स्वामी हरिदास जी महाराज को पद—अन्त में बधाई, असीस, आरती के पद नित्य होय है !

२—प्रथम खण्ड में रितु समयानुसार पद होने के कारण, शृङ्गार के पद संपूर्ण नहीं है, सो रसिक जन क्षमा करेंगे —

३—जो जो पद इस वाणी में है उनकी सूची दी है—सूची के अतिरिक्त और भी पद समाज में गाये जाते हैं !

श्री बरसानें-श्री लाड़िली कौ महल-कौ महोत्सव-कार्य क्रम-सूची

उत्सव प्रारंभ-माघ सुद्री ५ से-वसंत के पदों का समाज-पद गायन

पद संख्या	बसन्त के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
११४	ललित लवंग लता परि (अष्टपदी)	५१	श्री जयदेव जी महाराज कृत (नित्य होय है)	
१६	प्रथम समाज आज (भेटकी) वसंत)	६	गो० श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी कौ	
१२७	नवल बसंत नवल वृन्दावन	,, ४६	श्री श्रीभट्ट जी महाराज कृत	
६	दिन दूलह मेरौ लाल बिहारी	,, ४	गो० श्री रूपलाल जी	महाराज कृत
३२	नवल निकुञ्ज नवल वृन्दावन	,, १२	,, ,,	,,
३७	खेलत बसंत दोऊ प्रिया कंत	,, १४	गो० श्री गोवर्द्धन लाल जी	,,
१२	देखि सखी आज आज बन्यौ	,, ५	श्री व्यास जी	,,
४०	खेलत आज बसन्त प्रिया	,, १८	,, दामोदर स्वामी जी	,,
७८	आज बसन्त बन्यौ वृन्दावन	,, ३४	,, प्रेमदास जी	,,
९२	देखौ प्यारी कुञ्ज बिहारी	,, ४०	,, गदाधर भट्ट जी	,,
९६	खेलि खेलि हो लड़ैती राधा	,, ४१	,, परमानन्द जी	,,
१०३	खेलि खेल हो लड़ैती राधे (बसंत)	४७	,, रामराय जी	महाराज कृत
१०२	स्याम सुभग तन शोभित (बिलावल)	४६	,, कुम्भन दास जी	,,
१२२	चली है भरनि गिरिधरन (बसन्त)	५३	,, नन्ददास जी महाराज कृत	
१२४	आई है भरन गिरधरन लाल ,,	५७	श्री रामराय जी महाराज कृत	

माघ सुदी पूर्णमासी से होरी धमारि के पदों की समाज-पद गान

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामावली	तिथि
३	रितु बसन्त सुखखेलिये (होरी काफी)	६२	श्री गोविन्द स्वामी जी महाराजकृत	पूनो १५कौ
११६	आगम सुनि रितुराज को (धमारि)	२३३	श्री माधुरी दास जी	,, फा० व० १ कौ
६	हो हो होरी बोलत नवल (धमारि)	६७	श्री माधुरीदास जी	,, ,, २ कौ
२४	श्रीललितनिकुञ्जविहारी-मानसरोवर	१०७	श्री हित घनश्याम जी	,, ,, ११ कौ
१६	बाघम्बर ओढ़े सांवरौ (जोगी रूप)	११६	,, माधोदास जी महाराज	,, ,, १४ कौ
१०६	महा मोहन ढोटा सांवरौ ,,	२२६	,, रामराय जी महाराज	,, ,, ,,
११७	नन्दगांवकौपांडे ब्रजबरसाने (धमारि)	२२६	,, नरहरि्या घनश्याम जी	,, सुदी ८ कौ
९८	आवहु री मिलि आवहु (गारी)	२२४	,, परमानन्द दास जी	,, ९ कौ
११५	अति सरस्यौ बरसानौ जू (धमार)	२३२	,, माधुरी दास जी	,, ,,
१२७	उत सांवरौ बहु रंगन (धमार)	२५५	,, गोकुलेश जी महाराज	,, ,,
१२३	गोपी नन्द राय घर फगुवा ,,	२४५	,, माधवदास जी महाराज	,, सुदी १० कौ
१२२	बरसाने को गोपी मांगन ,,	२४४	,, ,, ,,	,, ,,
७९	निकसे है मोहन लाल खेलन ,,	१८५	श्री नन्ददास जी ,,	,, सुदी ११ कौ
७	या गोकुल के चौहटे रंग ,,	६६	श्री आसकरन जी ,,	,, सुदी १२ कौ
१२६	या गोवर्द्धन की गैल ,,	२४७	श्री हित अनूप जी ,,	,, ,,
१११	सुरंगी होरी खेलैं सांवरौ ,,	२५०	,, छीत स्वामी जी ,,	,, सुदी १३ कौ
११२	गोपिनके संग रस रंग ,,	२२९	,, जन दयाल जी ,,	,, पूनो १५ कौ

श्री बरसानें—श्री लाडिली कौ महल—कौ महोत्सव—कार्य क्रम

पद संख्या	होरी धमारि के पद		पृष्ठ संख्या	नामावली
५५	खेलत फाग सुहाग भरे	”	१७६	गो० श्रीरूपलालजी महाराज ”
३६	अहो रंग हो हो हो होरी	”	१६०	गो० श्रीसुखलालजी महाराज ”
५६	लाल लड़ैती जू खेलही	”	१७६	श्री ध्रुव दास जी महाराज ”
८२	चली है कुंवरि राधे खेलन	”	१९१	” नन्द दास जी महाराज ”
१२	राधा रवनी रंग भरी रंग	”	१०७	” ” ”
१३	निकसि कुंवर खेलन चले	”	१०८	” ” ”
३५	अरी चलि नवल किशोरी	”	१५८	” ” ”
८४	रूप बावरौ नन्द महर कौ	”	१९३	” महचरी सुख जी ”
८	गोकुल राज कुँमार लाल	”	१००	” गदाधर भट्ट जी ”
१०७	सब ब्रज कुल के राय लाल	”	२२४	” गोविन्द स्वामी जी ”
४	अहोरंग हो हो हो होरी खेलैं	”	९४	” रामराय जी ”
३०	अहो रंग हो हो हो होरी खेलैं	”	१४७	” अचल दास जी ”
१३३	मोहन हो हो हो होरी, काल्हि	”	२५३	” रसखान जी ”
११९	खेलत मदन गोपाल फाग	”	२४०	” स्यामदास वृन्दावासी जी महाराज
२४९	गोरे अंग गुवालिन गोकुल	(रसिया)	३४८	” ” ” ”
२२	रूप अनूपम मोहनी, रंग राचे	(धमार)	१२४	श्री नागरी दास जी महाराज कृत
४५	मधुरितु खेलैं फाग रसिक	”	१६९	गो० श्री दामोदर वर जी ”
४९	ब्रज राज कुंवर वर खेलही	”	१७३	गो० श्री कमल नैन जी ”
५०	चौंकि परी गोरी होरी में	”	१७३	गो० श्री कुञ्जलाल जी ”
२३	ए चलि ललन भरे मिलि	”	१२५	श्री व्यास जी महाराज कृत
७५	देखि सखी नव कुञ्ज राधा	”	१८६	” ध्रुव दास जी ”
९२	कुंवरि कुवर मिलि खेलही	”	२०१	” प्रेमदास जी ”
१००	रंग हो हो होरी खेलैं लाडिली	”	२१५	” गदाधर भट्ट जी ”
१०३	नवनिकुञ्ज में होरी, श्रीराधा	(मांझ)	२१९	” वल्लभ रसिक जी ”
३८	सजनी लाल फाग फल पायौ	(धमार)	१६४	चाचा श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
१०	तलप सुभग कानन मनों	”	१०२	” ” ”
११	लाल रसिक मणि हँसि कही	”	१०४	” ” ”
१९२	वृंज कौ दिन दूलह	(रसिया)	३२३	” ” ”

चैत्र वदी १ (परवा) कौ होरी डोल के पद—सभी रसिक महानुभावों के

१	झूलत दोऊ नवलकिशोर	(होरीडोल)	२५१	गो० श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी

नोट—कुछ पद लिखने को प्राप्त न हो सके इस लिये इस ग्रन्थ में न आसके—इस रसिक जन क्षमा करेगें, समाज के पदों में जो समय लिखा गया है उसमें कोई बन्धन न रसिकों की आग्रह से कार्य कर्म अदल बदल हो सकता है।

न्दगाँव)(श्रीनन्द राय जी के महल) कौ महोत्सव कार्य-क्रम सू

प्रारंभ—माघ सुदी ५ (वसंत पंचमी) से वसंत के पदों की श्रृखला—समाज

ा—वसंत के पद	पृष्ठ संख्या—	नामावलि	तिथि
ललित लवंग लता परि (अष्टपदी)	५१	श्री जयदेव जी महाराज कृत	(नित्य होय
थम समाज आज (भेट कौ)	६	गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी के	
नवल वसंत नवल वृन्दावन (वसंत)	५६	श्री श्रीभट्ट जी महाराज	कृत
गावत चली वसंत बधायें "	४५	" चतुर्भुजदास जी महाराज	"
श्री पंचमी परम मङ्गल "	५५	" हरि जीवन जी महाराज	"
देखो प्यारी कुंजविहारी "	४२	" गदाधर भट्ट जी महाराज	"
तेरी नवल तरुणता नव "	४२	" " "	"
चलो है भरन गिरि भरन "	५३	" नन्ददास जी महाराज	"
देखो वृन्दावन कमल नैन "	४७	" सूरदास जी महाराज	"
सखी नव नंद नंदन रुचिर "	५३	" नंददास जी महाराज	"
ऐसो पत्र पठायो रितु "	४८	" सूरदास जी महाराज	"
स्याम सुभग तन शोभित "	४६	" कुंभनदास जी महाराज	"
राधे देखि बन की बात "	१	" गो०श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी "	

माघ सुदी पूर्णमासी से होरी धमारि के पदों की श्रृखला—समाज

—धमारि के पद	पृष्ठ सं०	नामावली	तिथि
रितु बसंतसुख खेलिये (धमारि)	६२	श्रीगोविंद स्वामीजी महाराजकृत	(होरी क
आगम सुनि ऋतु राज कौ "	२३२	" माधुरीदास जी महाराज "	
चलि आँखि जहाँ हरि खेलत "	१५२	" राधोदास जी महाराज "	
होरी खेलत हैं नव लाल "	२२०	" वल्लभ रसिक जी महाराज "	
राधा खेली रंग भरी रंग "	१०७	" नन्ददास जी महाराज "	
खेलत है हरि हो हो होरी "	६५	" सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत	
आई चलि नवल किशोरी "	१५८	" नन्ददास जी महाराज	"
अहो रंग हो हो होरी खेलें "	६४	" रामराय जी महाराज	"
या गोकुल के चौहटे रंग "	६६	" आस करन जी महाराज	"
चली हैं कुंवरि राधे खेलन "	१६१	" नन्ददास जी महाराज	"
रंग भरे राधा लाल अति "	१८८	" ध्रुवदास जी महाराज	"
रंग हो हो होरी खेलें लाड़िली "	२१६	" गदाधर भट्ट जी महाराज	"
अहो रंग हो हो हो होरी खेलें "	१६०	" गो० श्री सुखलाल जी महाराज	"
मिलि खेलत फाग बन में "	२१८	" श्री गदाधर भट्ट जी "	"
गोकुल राजकुमार लाल "	१००	" " गदाधर भट्ट जी "	"
हो हो होरी बोल हो नवल "	६७	" माधुरीदास जी "	"
देसाँबरो जोगीड़ा दूम	११६	" माधोदास जी महाराज	कृष्ण बदी १
मनमोहन बाटा साँवरा "	२२६	" रामराय जी महाराज	"

श्री नन्दगाँव (श्रीनन्दराय जी को महल) को महोत्सव-कार्य-क्रम

पद संख्या	होरी धमारि के पद	पृष्ठ संख्या	नामार्कन
६६	सकल कुंवर गोकुल के (धमारि)	२१५	श्रीगदाधरभट्ट जी महाराज कृत
११६	खेलत मदन गोपाल फाग "	२४०	श्रीश्यामदास कुमरवामी जी कृत
१२३	गोपी नंदराय घर फगुवा "	२४५	श्रीमाधौदासजी म० कृ० १०
९३७	अहो पिय लाल लड़ैती को "	१६३	श्री नागरीदासजी महाराज कृत
७६	निकसे है मोहन लाल "	१८६	श्री नन्ददास जी महाराज कृत
९३	निकसि कुंवर खेलन चले "	१०८	" " "
११५	अति सरस्यो बरसानो जू "	२३२	श्रीमाधुरीदास जी महाराज कृत ६
१३७	उतसांवरो बहु रंग रंगीलो "	२५५	श्री गोकुलनाथ जी महाराज कृत ६
१२२	बरसाने की गोपी मांगन "	२४४	श्रीमाधौदास जी महाराज कृत १०
१२०	माई बरसाने ते नंदगांव "	२४१	श्री मानदास जी महाराज कृत
११७	नंदगाँव को पाड़े ब्रज "	२३६	श्री नरहरिया [illegible] जी कृत
२४	श्री ललित निकुंज बिहारी "	१२७	श्रीहित [illegible] जी महाराज कृत
१	प्रथम यथा मति प्रणऊँ "	८६	गो० श्रीहितहरिवंशचंद्र महा० जी
३४	श्री वृंदावन महल सुहावनो (बना)	१५६	श्री बिहारिनदास जी महाराज कृत
८०	अरी चलि वेगि छबीली (धमार)	१६०	श्री नंददास जी महाराज कृत
१२६	या गोवर्द्धन की गैल एक "	२४७	श्री हित अनूप जी महाराज कृत
१२१	मोहन खेलत होरी बंसीवट "	२४२	श्री माधौदास जी महाराज "
१२५	मेरो मन मोह्यो सांवरे "	२४६	श्री हितअनूप जी महाराज "
१२८	तेरी मारी मरि जाऊं रे सांवरे "	१२८	श्रीकृष्ण जीवन लछीराम जी "
१३१	सुरंगी होरी खेलैं सांवरो "	२५०	श्री श्रीनागरी जी महाराज "
५६	लाल लड़ैती जू खेलही होरी "	१७६	श्री ध्रुवदास जी महाराज "
२३०	काजर वारी गोरी ग्वाल "	३४२	श्रीहित घनश्याम जी महाराज "
२३	ए चलि ललन भरहि मिलि "	११५	श्री व्यास जी महाराज "
१३४	मोहन खेलैं फाग री हौं "	२५३	" रसनायक जी महाराज "
११२	हौं कैसें जमुना जल जाऊं "	२२६	" कृष्ण ईश जी महाराज "
२५०	निर्लज गारी जिन दे रे "	३४८	" नागरिया जी महाराज "
१३६	गोरी गोरी गुजरिया भोरी "	२५६	" चतुर्भुजदास जी महाराज "
१८१	छैल छबीलो ढोटा रस "	१६४	" विट्ठल गिरधरन जी " "
१६६	होरी को रसिया निकसन (रसिया)	३३३	बाबा श्रीवृन्दावनदास जी " "
४६	ब्रजराज कुंवर वर खेलही (धमार)	१६३	गो० श्री कमल नैन जी " "
५०	चोकि परी गोरी होरी में "	१७३	गो० श्री कुंजलाल जी " "
१३३	गोपनि के आनन्द ब्रज "	२२६	श्री जन हितलाल जी " "

चैत्र बदी १ (परवा) को होरी डोल के पद—सब रसिक महानुभावों के

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामार्कन
१	झूलत दोऊ नवल किशोर (होरी डोल)	३५१	गो० श्री हितहरिवंशचंद्र जी कृत

चैत्र सुदी ११ (एकादसी) को गुलाब फूल डोल के पद सब रसिक महानुभावों के

पद संख्या	पद	पृष्ठ संख्या	नामार्कन
१	फूलनि कुंज गुलाब की	४०२	गो० श्री रूपलाल जी महाराज

पद सूची

पद–सूची

पद सूची

पद–सूची

पद सं० होरी धमारि के पद पृ०सं०

पद सूची

पद सं० होरीधमारिके पद पृष्ठ सं०

पद-सूची

पद सं० होरी धमारि के पद पृ० सं०

श्री ललित किशोरी देव जी महाराज कृत

श्री ललित मोहनी देव जी महाराज कृत

श्री भगवत रसिक जी महाराज कृत

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत

पद सं० होरी धमारि के पद पृ०सं०

होरी के रसिया

पद-सूची

पद-सूची

पद-सूची

पद--सूची

पद-सूची

वल्लभ जी की अष्टयाम सेवा

अथ सन्ध्या भोग के पद

शयन भोग के पद

रसिक नाम ध्वनि कीर्तन

रास मंडल, सेवा कुञ्ज की आरती

पद सं० श्रीहितोत्सवकीमंगलपृ०सं०

सैन समय के पद

मङ्गल बधाई

गो. श्री हितहरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत

गो० श्री सदानन्द जी महाराज कृत

गो० श्री जोरीलाल जी महाराज कृत

गो० श्री नवनीतलाल जी महाराज कृत

गो. श्री कुंजलाल जी महाराज कृत

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत

गो. श्री रूपलाल जी महाराज कृत

गो. श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत

पद सूची

पद-सूची

पद-सूची

पद सं० श्रीहितोत्सव की-पृष्ठ सं०

मङ्गल बधाई

पद सं० श्रीहितोत्सव की-पृष्ठ सं०

मङ्गल बधाई

पद सूची

अशुद्धि शुद्धि पत्रम्।

पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	भृदंग	मृदंग
६	सम	साज
२४	मूमि	भूमि
१६	मुनुनु	भुनुनु
५	हन	ह स
१७	मृकुटी	भृकुटी
८	पधायि	पधारित
२०	चर्चित	चर्चित
२०	मकअरि	मैंक करि
१३	बाठित	सीतल
७	दुमुले	दुकूले
१	•	कृष्णचन्द्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८६	१३	राध	राधा
८७	१४	प्रेफुलित	प्रफुलित
८७	२२	साधु	साधु
८८	१४	सदि	सुदी
६१	१०	नान	नाना
१००	१	धमहे	उमहे
१०४	२२	बिलपे	विलसे
१०८	१३	रसान	रसाल
१०६	१६	हँसित	हँसत
११०	७	१३	१८
११०	७	१८	१३
११२	७	भरान	भरनि

अशुद्धी शुद्धी पत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	१८	जा	जो	३८५	५	[illegible]	[illegible]
१३६	२२	सुल	सुख	३६२	२	मम	तुम
१३६	२३	सन	सत	३६२	३	पर	परै
१३७	२०	हीरी	होरी	४०५	१२	अभारन	आभरन
१४०	१६	रुख	रुख	४०८	७	घट	घूँघट
१४३	१७	तिक	कौतिक	४०६	१७	कैदुलि	कदुलि
१५२	१६	सनत	सुनत	४१४	१२	[illegible]	[illegible]
१५२	१७	मूपन	भूपन	४१४	२	पिप	पप
१६४	१७	दुलहिनि	दुलहिनि	४२८	१०	कमल नैन	[illegible]
१६५	२३	म बस	मम बस	४३३	१४	पिवन	पीवन
१६६	४	लाल	लोल	४३३	१७	स्याय	स्याम
१६६	१०	समत	समेत	४३६	१५	नाही	नाहीं
१७२	१६	नैंन नैंन	नैंन	४४२	१५	करग हैं	कर गहैं
१७३	७	खोंच	खैंचि	४४३	७	सागर	सागर
१८२	१५	ज	सरोज	४४७	२३	सिच्नासन	सिंघासन
१८३	३	६४	६८	४४८	६	वाम	धाम
१६३	१	न	वनि	४४८	१५	नाहरम लहि	नाहरमलहि
१६७	१२	वधुन	वधुन	४५६	६	बोल	बोलें
१६६	११	सखा	सुखी	४६७	५	अनन्य न	अन्यनन
१६६	२०	याव	पांव	४८६	३	[illegible]	[illegible]
२००	७	चुकी	कंचुकी	४६१	१०	[illegible]	[illegible]
२२१	१४	पेव	पेंच	५२०	१४	अनुमान	अनुमान
२४४	४	कये	किये	५२४	२	[illegible]	[illegible]
२५६	१४	यह पद भेट को नहीं है		५२८	८	भाये	मन भाये
२५७	२०	चाप	जाय	५३०	२०	मधुरिया	माधुरमा
२६१	२०	लला	लता	५३५	२	अनरागी	अनुरागी
२७४	२१	कांकन	कांनन	५३६	८	हरिवंश	हरिवंश
२८४	२०	अग्याकरी	अग्याकारी	५३८	२०	मीन न	मीनन
२६७	५	अटल	अलक	५४६	१६	वामैं	वर्मैं
२६०	२२	सुदङ्	सुदृढ़	५५२	२४	मदन	रदन
३००	१४	जाना	जानों	५६०	६	मरल	महल
३०८	६	चूरी	चूरी	५६८	२७	गाइ	गाइ कैं
३३०	१६	का	को	५७५	२	ज्याम	स्याम
३३४	१५	जुहारिया	जुहरिया	५६२	११	बिस्तारि	बिस्तरि
३७३	१३	मनमाती	मदमाती	चार	५	कय	[illegible]
३८०	६	जवती	जुवती	सात	७	दान	दास
३८४	२०	अनुराम	अनुराग	दस	२६	[illegible]	[illegible]

॥ श्रीहित राधावल्लभो जयति ॥

॥ श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति ॥

श्रृंगार रस सागर

(श्री वृन्दावन के अनन्य रसिकों की वाणियों का संग्रह)

श्री राधावल्लभजी को वर्षोत्सव

श्री वसन्तोत्सव माघ शुक्ला पंचमी से आरम्भ

गोस्वामी श्री हितहरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी के पद—राग वसन्त ॥

मधुरितु वृन्दावन आनन्द न थोर। राजत नागरी नव कुशल किशोर ॥१॥ जूथिका जुगल रूप-मंजरी रसाल। विथकित अलि मधु माधवी गुलाल ॥२॥ चम्पक बकुल कुल विविध सरोज। केतकी मेदनी मद मुदित मनोज ॥३॥ रोचक रुचिर बहै त्रिविध समीर। मुकलित नूत नदित पिक कीर ॥४॥ पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज। किसलय शयन रचित सुख पुंज॥५॥मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग। बाजत उपंग वीना वर मुख चंग ॥६॥ मृग-मद मलयज कुमकुम अबीर। बन्दन अगरसत सुरंगित चीर॥७॥ गावत सुंदरि हरि सरस धमारि। पुलकित खग मृग बहति न वारि ॥८॥ जय श्रीहित हरिवंश हंस हंसिनी समाज। ऐसैंहीं करहु मिल जुग-जुग राज ॥९॥१॥

राधे, देखि बनकी बात। रितु बसंत अनंत मुकलित, कुसुम अरु फल पात ॥१॥ वेंनु धुनि नंदलाल बोली, सुनिव क्यों अर-सात। करत कतव विलम्ब भामिनि, वृथा औसर जात ॥२॥ लाल मरकत मणि छबीलो, तुम जु कंचन गात। बनी जै श्रीहित हरिवंश जोरी, उभै गुन गन मात ३ २

गो० श्री वनचन्द्र महाप्रभुजी कृत—राधे वन विनोद वसंत। अनिल त्रिविधि सुगंधि हाटक खचित सुधा लसंत ॥१॥ विविध विकच प्रसून पल्लव नूत कोकिल कीर। निरखि दंपति मुदित निर्तत भवन वरहि अधीर ॥२॥ मत्त अलिचय गुञ्ज मधु रव पुलक खग मृग वृन्द। गान जुवति कदम्ब किंकिनि मुखर नूपुर मन्द ॥३॥ मलय सार सुगंधि चंदन चरचि जुग वर अङ्ग। जै श्री दासि वनमाली कपिश पट कुतुप अरुनिम रंग ॥४॥३॥

गो० श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभुजी कृत—देखहु स्याम विपिन जैसो लागत। उपजत सुख दुख तन मन भाजत ॥१॥ अरुन किंशुक छवि मनोहर भाँति। मानहु चन्दन डारे खेलैं तरु पाँति ॥२॥ रसाल मञ्जरी चलि सैनानि बुलावति। वल्लरिनु तजि भृङ्ग विटकुल धावति ॥३॥ भ्रमत भ्रमर चय बहु विधि गावति। मनहुं अपने सचल तनि नचावति ॥४॥ कुंज सिखिर पिक बचन सुनावत। मनु मनसिज नृप डिंडिमी बजावत ॥५॥ सौरभ पवन भुव मण्डल सुवासित। मनहु सयन उठि मदन उसासित ॥६॥ कमल कोर किहि विधि विकसात। मनहु सोवत निसि आलस जम्हात ॥७॥ तैसीय तुम्हारी छवि राधा जू सों आजति। मनु विन रितु घन दामिन में राजति ॥८॥ जै श्रीकृष्णदास हित नित्त रसना लड़ावति। याहीतें राधिका पति पद सुख पावति॥९॥४॥

गोस्वामी श्री दामोदरवरजी महाराज कृत—देखौ वृन्दावन कुसमित वसंत। नदित कीर कोकिला लसंत ॥१॥ जाइ जुही मल्ली रसाल। भ्रमत मुदित अति भृङ्ग माल ॥२॥ कल कुल केकी नव मराल। वन विरहत दोऊ रसिक लाल ॥३॥ ललितादिक

सब सखी संग । जहाँ तहाँ बाढ़ै अगनित अनङ्ग ॥ ४ ॥ प्रीति प्रेम सुख सहज अङ्ग । हँसत परस्पर भरत रंग ॥५॥डारत वंदन बहु रंग अबीर । साधि अरगजा रंगे चीर ॥६॥खेल मच्यौ अति भई भीर । उमंगि चल्यौ आनन्द नीर ॥७॥ कुञ्ज सदन चलि करत केलि ।बहु विधि बाढ़ी रति रंग बेलि॥८॥जैश्री दामोदर हित सुख सिंधु झेलि ।नितनित विलसौ भुज कण्ठ मेलि॥६॥५॥

गो० श्री कमलनैनजी महाराज कृत—श्री वृन्दावन पूजन वसंत । मनोरथ बैठे दंपति लसंत ॥ इत धुजा पताका फरहरैं । उत कदलि आदि ताहि अनुसरैं ॥१॥ इत कंचन मणि मुक्ता दुकूल । उत हेम खचित रवि तनया कूल ॥ इत नाना धुनि सुनि भई भीर । उत कोकिल पिक तहाँ नदित कीर ॥२॥ इत भाजन कुम कुम धरैं पूरि । उत पराग जुत उड़त धूरि ॥ इत पिचकारी भरत रंग । उत केसरि बहु सुबन अङ्ग ॥३॥ इत चंदन बंदन गुलाल । उत हरषत बनराज पाल ॥ अष्ट सखी वर सुषद गान । जै श्री कमल नैंन हित करत पाँन ॥४॥६॥

गो० श्रीकुंजलालजी महाराज कृत—बन तन जुगल अङ्ग-अङ्ग फूल । फूल द्रुम गन रंग रंगनि लतनि फूलनि झूल ॥१॥झूम जल में फूलबरषत हरषि जमुना कूल ॥ फूल पुञ्ज निकुञ्ज बैठे पहरि पीत दुकुल ॥२॥ कंचुकी लहँगा कनक कृत फूल सारिनु तूल ॥ फूल पाग झगारु पटुका हेम मय रस मूल ॥३॥ फूलि फूलनि रचित भूषन परस्पर अनुकूल ॥ फूल भ्रम कोऊ फूल फल गहि रहत प्रीतम भूल ॥४॥ कर फूल सौं कर फूल टारति कटि मटकि प्रतिकूल ॥ फूल हँसि हित कुञ्जलाल विलास रस समतूल ॥५॥७॥

गो० श्री हित हरिलालजी महाराज कृत—कौतुक वन कौतुक

अति मधुरितु नाना विधि दरसायौ आत कौतुक तामे मोहन सिर सखिनु बसंत बँधायौ ॥१॥ श्री राधा सजि टोल आपुने कौतुक मन्त्र उपायौ । मृग मद केसरि अतर अरगजा भाजन विविध भरायौ ॥२॥ बाजत हैं बाजे बहु भांतिनु मदन उमाह बढ़ायौ ॥ भुरमट प्रेम मच्यौ वन कुञ्जन इत उत भीज भिजायौ ॥३॥ होरी बोलत डोलत वीथिनु अबीर गुलाल उड़ायौ ॥ आज रंग सुखसागर नागर कानन गहर बढ़ायौ ॥४॥ शोभा भीर तीर रविजा के कौतुक खेल मचायौ ॥ छिरकत चीर शरीर सने रङ्ग मनहुं प्रेम रँगायौ ॥५॥ प्रथम फाग दिन मानि मोहनी सखिनु प्राण सों पायौ । जै श्री हित हरिलाल रूप रस अम्बुद राधा हरि बरसायौ ॥६॥८॥

गो० श्री रूपलालजी महाराज कृत—दिन दूलहु मेरो लाल विहारी, दुलहिनि नित्य किशोरी । प्रेम रूप आसक्ति विलोकत विवि मुख चन्द्र चकोरी ॥१॥ फवि रह्यौ मुकट चंद्रिका भूषन तन-सुख बसन विराजैं । रतनारे अनियारे लोचन रति पति कौ दल साजैं ॥२॥ भृकुटि धनुष बान अति तीछन कुटिल कटाछनि साधैं । मृदु मुसकानि विकानि बानि अलि मनमथ कौ मन बाधैं ॥३॥ फैंटनि भरे गुलाल ख्याल हित करनि कनक पिचकारी । केसरि अतर अरगजा चोवा भरत परस्पर भारी ॥४॥ ताल मृदङ्ग करनि डफ गावति अलि बसंत लै आईं । पहिराइ वनमाल लाल उर बालहि देत बधाई ॥५॥ पचरङ्ग हरषि अबीर उड़ावत नाचत मधि पिय प्यारी । जै श्री रूपलाल हित चित रंग भीनें निरषि निरषि बलिहारी ॥६॥६॥

श्री (दामोदर) सेवक श्री महाराज कृत रितु बसंत वन फूल

सुमन चित प्रसन्न नव कुञ्ज। हित दंपति रति कुशल मति चितु संचित सुख पुञ्ज॥ चितु संचित सुख पुञ्ज गुञ्ज मधुकर सुनाद धुनि॥ रुञ्ज मृदङ्ग उपंग धुञ्ज डफ झांझि ताल सुनि॥ मंजु युवती रस गान लुञ्ज इव खग तहाँ थिथकितु॥ भुञ्जत रास विलास कुञ्ज नव सखि वसंत ऋतु॥१०॥

स्वामी श्री हरिदासजी महाराज कृत—कुच गडुवा जोवन मोर कंचुकी वसन ढांपि लै राख्यौ वसन्त। गुन मंदिर रूप वगीचा में बैठी है मुख लसंत॥१॥ कोटि काम लावन्य बिहारी जाहि देखत सब दुःख नसन्त। ऐसे रसिक श्री हरिदास के स्वामी ताको भरन आई मिल हसंत॥२॥११॥

श्री व्यासजी महाराज कृत—देखि सखी अति आज बन्यौरी वृन्दाविपिन समाज। आनन्दित ब्रज लोग भोग सुख सदा श्याम कौ राज॥१॥ राधा रवन बसंत नचायौ पंचम धुनि सुनि कांन। धरनि गिरत सुर किन्नर कन्या बिथकित गगन विमान॥२॥ पुलकित कोकिल कुञ्जनि ऊपर गुञ्जत मधुकर पुञ्ज। बाजत महुवरि बैनु झांझ डफ ताल पखावज रुञ्ज॥३॥ केसरि भरि भरि लै पिचकारी छिरकत श्यामहि धाइ। छिरकि कुंवरि तूंका भरि चोवा लई कंठ लपटाय॥४॥ मुकलित विविधि विटप कुल वर्षत पावन पवन पराग। तन मन धन न्योछावर कीन्हौं निरषि व्यास बड़भाग१२

श्री नागरीदासजी महाराज कृत—विरहत विपिन फिरत रंग ढुरकी। हरखि गुलाल उड़ाय लाड़िली सम्पति कुसमा करकी॥१॥ कसूँभो सारी सौंधें भीजी ऊपर चंदन भुरकी। चोली नील ललित अञ्चल चल झलक उजागर उरकी॥२॥ मृदुल सुहास तरल दृग कुण्डल,मुख अलकावलि लरकी। श्रीनागरीदासि केलि सुख सनि-

रहे मैन ललक नही मुरकी ॥३॥१३॥

श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत—राजै वृन्दावन श्री नव निकुंज । तहाँ मधुप करत अनुराग गुञ्ज ॥१॥ गौर श्याम छवि नवल रासि । ऋतु वसंत भयो हिये हुलास ॥२॥ चन्दन वन्दन मथि सुवास । छिरकत हँसि हँसि करि विलास ॥३॥ राजैं नवल नवल सखी यूथ सङ्ग । कर एकनि वीना डफ मृदंग ॥४॥ लियें एक गुलाल सुरंग रंग । भये सुरंगित वसन सुदेस अङ्ग ॥५॥ निरतंत रसिक किशोर जोर । छवि निरखि छके चहूँ ओर मोर ॥६॥ वंशी रव सुनि श्रवन थोर । जहाँ खग कुरंग बंधे प्रेम डोर ॥७॥ कुम-कुम झलकत तन सुदेश । फबि रहे कुंचित रुचिर केश ॥८॥ हित ध्रुव निरखि अनूप वेश । कछु कहि न सकत छवि छटा लेश ॥९॥१४॥

गो० श्री किशोरीलालजी महाराज कृत—आइ भरे रस चायन खेलत राधा कान्त वसंत । प्रथम पंचमी मनसिज उद्भव वन वैभव नहीं अन्त ॥१॥ सौरभ सार भरत रंग छीटत नौतन वसन स्वसंत ॥ जै श्रीकिशोरीलाल हित रूप मिथुन रस विलसत मन हुलसंत॥१५॥

गोस्वामी श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी के भेट के पद—राग वसंत

प्रथम समाज आज वृन्दावन विहरत लाल विहारी । पंचमी नवल वसंत बँधावनि उमङ्गि चली ब्रज नारी ॥१॥ कंचन थार लिये जुवती जन मधि वृषभान दुलारी । फल दल जव नव नूत मञ्जरी कनक कलस सुभकारी ॥२॥ गावत गीत बजावत बाजे मैन. सैन उनहारी । दरस परस मन मोद बढ़ावत राजत वर छवि भारी ॥३॥ चोवा चन्दन अगर कुम कुमा भरि लीनी पिचकारी॥ छिरकत फिरत छबीली ग.तनि रंग अनूप अप.री ४

विपुल विलास हाँस रस बरसत उत प्रीतम इत प्यारी। जैश्री हित हरिवंश निरखि यह शोभा अँखियाँ टरत न टारी ॥५॥१६॥

नवल वसंत नवल वृन्दावन नवल लाल खेलैं होरी। नवसत साज नये रंग पहिरे नौतन केशरि घोरी ॥१॥ नव-नव साखि जवादि कुम कुमा अबीर भरें भरि झोरी। नई नई सखी नई छवि पावै नवल नवल बनी जोरी ॥२॥ नई सहनाइ नई डफ बाजनि नव मुरली धुनि थोरी। नवल सखी मिलि चाचरि गावत नवल राधिका गोरी ॥ ३ ॥ कालिंदी तट नौतन सोभा नवल चकोर चकोरी। जैश्री हित हरिवंश प्रेम रस क्रीड़त नवल किशोर किशोरी ॥४॥१७॥

गोस्वामी श्री वनचन्द्र महाप्रभुजी महाराज के पद--राग वसंत

राधे श्याम संग विहरंति। ऋतु वसन्त सुचारु अवनी अनिल सुभग वहंति ॥१॥ नूत पल्लव वदति कोकिल विपिन खग-जुत सोभ। कुसुम कुन्द कदम्ब केतुकी द्रुमनि षटु पद लोभ ॥२॥ लसत उन्मद मत्त निरतत रुचिर अद्भुतमोर। चकित मनमथ सरन जांचत निरखि जुगल किशोर ॥३॥ अगरसत घन चरचि कुम-कुम अङ्ग उड़त अबीर। जैश्री दासि वनमाली जुवति कृत गान विबस अधीर ॥४॥१८॥

गोस्वामी श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभुजी के पद--राग वसंत

त्वण मिह विश साखि कुंज निकेते। मंजुल किशलय शयन ममेते ॥१॥ तपन सुता वलितांतिक देशे। संचरदुज्वल जल कण लेशे ॥२॥ मृदुल पवन चल कुसुमित शाखे। मत्त सुपेशल कोकिल भाषे ॥३॥ शशि किरणाकुल रंध्र विभागे। भृङ्ग समूह

रति शीतल हासे ।५। जय श्रीकृष्णदास हित अद्भुत गीतं इद मनु वहत सुखं श्रुति पीतं ॥६॥१६॥

वसत मनो मम रुचिर किशोरे । अतिशय निविड़ जलद रुचि चोरे ॥१॥ चल दंभोज सुलोचन शोभे । भ्रू युगचलन युवति कृत लोभे ॥२॥ मणि कुण्डल प्रतिबिंबित गंडे । स्फुरित सिरसि धृत मौलि शिखण्डे ॥ ३ ॥ क्वच्चिदधर नेहित तत्व विचारे । नव गुञ्जा फल मंजुल हारे ॥४॥ कटि तटि कलित कनक परि-धाने । जगति वितत पद सरसिज माने ॥४॥ राधा मुख विधु-ललित पिपासे । कृत वृन्दावन रास विलासे ॥६॥ जै श्री कृष्ण-दास हित वर्णित सारम । गायति रसिकजनो वहु पारम॥७॥२०॥

गोस्वामी श्री दामोदरचन्द्रजी महाराज के पद—राग वसंत

मधुरित रहत विपिन सुख धाम । राजति सुन्दरि हरि पुल-कित काम ॥ मालती मल्ली माधवी धरनि करन सुवास । बकुल कुल करना कमलकुल, कुन्द कुमुद प्रकास ॥१॥ बहुत सुमन समूह पल्लव नवल सरस निकुंज । करत कोकिल कीर कलरव सखी चलि अलि गुञ्ज ॥ २ ॥ वहतमंद सुगन्ध सीतल अमुग जमुना तीर । रचित निर्मित तलप पर जुग नए मदन अधीर ॥३॥ मन्द सस्मित स्याम स्यामा युग्म मनमुख जोरि । पानि कृत्त नव लाल परसत वसन दुरवति चोरि ॥४॥ पुलकि भुज भरि गही भाँमिनि अधर पान सुकेलि । जै श्री दामोदर हित स्रह सतत विटप कंचन वेलि ॥५॥२१॥

विहरत रंग मगे दोऊ लाल । गौर स्याम सुधाम तन छवि निरखि हरखित बाल १ अरुन पीत दुकूल सोभत सहज उर

रुनक झुनक सुकिंकिनी कल पदनि नूपुर ताल । देखि दुति अति प्रान वल्लभ चरन धरत सुभाल ॥३॥ प्रिया पियसों कहत हँसि हँसि गहति कर मुख गाल । जै श्री दामोदर हितलाल लंपट परे प्रेम सुजाल ॥४॥२२॥

निर्तत हँसत आवत लाल । नवल अङ्ग सुधंग पदगति मंद मृदुल सुचाल ॥१॥ चपल ग्रीव सुनैन निर्तन चलत गज-गति ढाल । प्रिया सनमुख हरषि निरषत बदन अंस सुभाल ॥२॥ महा मनमथ रूप सागर थकित रस नव वाल । नागरी उर अङ्क भरि उर गान कृत कर ताल ॥३॥ बहुत सुख रस प्रेम पूरण जुगल अरुझे माल। जैश्री दामोदर हित परं प्रियता अङ्ग २ सुजाल॥४॥२३

नव रंग रंगी आनंद वेलि । परमलाल तमाल ऊपर लगे फल द्वै हेलि ॥१॥ लालची रस ललित मोहन अङ्ग-अङ्ग सुकेलि। जै श्री दामोदर हित प्राण विच-विच अंस बाहु सुमेलि ॥२॥२४॥

नव रितु रहत सुषद वृन्दावन । सुमन सुरङ्ग सरस अगनित तन ॥ ध्रु० ॥ अद्भुत द्रुम फल अरुन पीत । कल कुल केकी शब्द गीत ॥ कोकिल कमल भ्रमर वर कीर । हंस चलत गति मधुर धीर ॥१॥ अवनी पवन त्रिविधि सुगन्ध । निरांत ताल जुगल लियें कंध ॥ चपल सिरोध नैन गति अङ्ग । विच२ मुरली बजति सुधंग ॥२॥ बाजत ताल मृदंग संग धुनि । छिरकत हंसत भरन आँकों पुनि ॥ वदन वदन सोभा सुख सागर । लोचन तरल सरल छवि आगर ॥३॥ ललितादिक सब मानहिं मोद । वारति है तनमन दुहु कोद ॥ महा केलि कृत अधर पान । स्याम भक्त करत कल गान ॥४॥ नव निकुंज वर सुखद धाम । वन विरहत दोऊ जुगल नाम ॥ जैश्री दामोदर हित रसिक लाल अङ्ग-अङ्ग

अरुझे विमल माल ॥५॥२५॥

गोस्वामी श्री कमलनैन जी महाराज के पद—राग बसन्त

श्री वृन्दावन छवि कही न जाइ। जहाँ प्रफुलित कुसुम अनेक भाइ॥ नलिनी नलिन दुति अपार। अलिनी अलि तहाँ करैं गुञ्जार ॥१॥ कुंज धाम तहाँ रच्यौ वसंत। बैठे दंपति सुख अनंत॥ कनक मृदुल अवनी सुचार। प्रीतम प्यारी तहाँ करैं विहार ॥२॥ ललितादिक तहाँ सखी वृन्द। वदन जोति मानों कोटि इन्दु॥ प्रतिविंवत संपति विपिन जाल। लता भवन में मोर मराल ॥३॥ त्रिविधि पौन तहाँ रहैं नित्त। निरषि विहारिनि हरषि चित्त॥ खेलत गावत सरस धमार। छवि पर वारों कोटि मार ॥४॥ नाना रंग सों रंगे हैं लाल। तापर सोहैं पट गुलाल॥ आए खेलि न्हान जमुना तीर। सोहत गौर श्यामल सरीर ॥५॥ रंग वसन तजि नवल धारि। सूहे पहिरैं करि विचारि॥ विंजन भोजन करि रसाल। वीरी खात सखी लैं उगाल ॥६॥ करैं केलि आनंद कुल कांति। नूपुर किंकिनि सुर सुहांति॥ ऐसो कौतुक संतत बषान। शुक नारद निगम कहे पुरान ॥७॥ निरखि जुगल वर अति हुलास। श्री कमलनैन हित सखी पास॥ जैश्री हित-हरिवंश वर कृपा पाइ। अति रहसि वन विभव सहज गाइ॥८॥२६॥

नव वन रुचिर नवल प्रिया को जोवन वसंत। फूलि फूलि रह्यौ हाव भाव सों लोचन अलि मैमन्त॥ भृकुटी भंग चितवनि वात बस उड़त पराग हसंत। मनमथ मीत मिल्यौ विहारी वाढ्यौ मोद अनंत॥ नूपुर किंकिनि रटत झिरनागर भूषन वोल तजंत। जै श्री कमलनैन हित विहरत संतत अङ्ग अङ्ग छवि लसंत॥२७॥

यह वन देसौरी आयौ वसंत मानों कीनें सिंगार अम्बर

हरित सुअम्ब मौर भूषन धरैं पहुप अनेक सित असित सुभ्र असन बहु रङ्ग अपार ॥ कोकिल कीर कपोत केकी रव मधुप पंत वंदी जन सूत माँगध चारण तहाँ करै विचार । जैश्री कमलनैंन रितु राज काज यह कुंवरि कुंवर दोऊ श्रीबृन्दावन करैं विहार॥२८॥

ए दोऊ राजत नागरी नागर ॥ प्रफुलित कुंज भवन में क्रीड़त गांन करत पिक मोर भँवर वर ॥१॥ ललितादिक सब सखी संग मिलि लाल गुलाल उडावति भरि कर ॥ श्री कमलनैंनहित निरखि सुख दाइक धाइ आय सींचत हरिमुख पर ॥२॥२६॥

सजनी नव निकुंज कल केलि ॥ गौर स्याम तमाल लपटी सरस आनन्द वेलि ॥१॥ हरषि हरषित रसिक मोहन पाँन कृत रस झेलि ॥ श्री कमलनैंन हित छिन-छिन विरहत भुजा कंठ सु मेलि ॥ २ ॥ ३० ॥

गोस्वामी श्री रूपलालजी महाराज के पद—राग बसंत

विहरत विपिन बाग सहचरि संग लाल बाल रंग भीने । अङ्ग अंग छवि निधि सुख निधि अति प्रेम सिन्धु मन दीने ॥ भूषण वसन विविध विधि राजत अलिगन नैन सिराये । मानों शशि मनुहार करन कों नव उड़गन चलि आये ॥ फेटनि भरे गुलाल ख्याल हित करनि कनक पिचकारी । लहलहात तन चंचल अञ्चल देत परस्पर गारी ॥ अरुन पीत सित असित कुसुम नवलामी करनि विराजै । चन्द्र मुखी विवि चन्द्र उदित लखि रति पति को दल साजै ॥ चंग मृदंग उपंग ताल डफ सरस सुघर महनाई । रागनि अनुरागनि सों गावति अलि वसंत लै आई ॥ रस शंसी वंशी प्रीतम की प्रान प्रिया मुखधारी । ललित त्रिभंगी

पिय नैंन कमल अति फूले । जै श्री रूपलाल हित सहचरि गन मन भृंग भये अनुकूले ॥२१॥

यह रितु राज वसंत पंचमी मूरति वंत सुहाई । मदन महीपति की जित तित तें त्रिभुवन दई है दुहाई ॥१॥ वन उपवन वल्ली द्रुम कुंजनि कुशमा कर दरसाई । मधुर मधुर गुंजार मधुप जुत मंगल धुनि रही छाई ॥२॥ कोकिल कीर मोर पिक बानी दुन्दुभि भेरि वजाई । साज समाज साजि नव तरुनी सहचरि जन सरसाई ॥३॥ श्रीवनराज राज राजेश्वरी चरननि कों सिरनाई । कृपा दृष्टि करि नित्य विहारी विहारनि जू अपनाई ॥४॥ हिय अनुराग सुहाग झल मल्यौ रस संपति झरलाई । जैश्री रूपलाल हित केलि माधुरी लषि सखि वलि वलि जाई ॥५॥२२॥

नवल निकुंज नवल वृन्दावन नवल लाड़िली लाल । नव भूषन नव मुकट चंद्रिका नवल विराजत माल ॥ नवल राग अनुराग नवल कल मुरली शब्द रसाल । नव तरुनी इक नव वसंत लै आई नवला वाल ॥ नवल सुरनि गावति नव कर डफ फेंटनि भरे गुलाल । नवल सुगंधनि भरि पिचकारी डारति कर करि ष्याल ॥ नवल नवल गति निर्त्तति सहचरि मंडल परम रसाल । जैश्री रूपलाल हित नवल प्रेम छकि परे रूप रस जाल॥२३॥

वनि वनि वनिता भवन भवन सजि साज समाजनि आई । लषि रितु राज वसंत पंचमी बाँटति विविध वधाई ॥१॥ प्रमुदा गन मणि श्री वृषभानु कुंवरि चरननि सिर नाई । मदन महीपति केलि वेलि उर अन्तर सींच वढ़ाई ॥ २ ॥ केशरि रंग रंगीली सारी प्यारी तन पहिराई तन दुति दिपति भूषन भूषित कथि

करि संग लाई । चरन परसि उर माल बाल पहिराइ मैन मन भाई ॥४॥ चोवा चंदन बूका वंदन सरस सुगन्ध लगाई । कोटि मोहनी रूप भूप छबि छटा सकल वन छाई ॥५॥ कर डफ ताल मृदङ्ग वजावति तांननि रुचि उपजाई । लाइ गाइ फुलवारि विराजनि निरषि दृगनि सरसाई ॥६॥ चूत मौर भौंरा विधि फूलनि अलि सजि सीस चढ़ाई । जै श्री रूपलाल हित करत आरती पुष्पांजलि वरसाई ॥७॥२४॥

आई रितु वसंत मन भई उमंग । खेलैं व्रज की बाल नव लाल संग ॥टेक॥ सुन्दर वर मन मोहन सुजान । धरे अधर मुरली करैं मधुर गान ॥ सुनि मुनि मन तें टरयौ ज्ञान ध्यान । सुर गगन मगन थके रसीली तान ॥ वन पीत अरुन द्रुम कुसुम पात । फूली लता मधुप जुत अति सुहात ॥ पिक मोर कोकिला कुहु कुहात । बहै त्रिविध पवन मृदु कही न जात ॥ आई नव तरुनी साजि सजि शृङ्गार । कर कुसुम गेंद उर कुसुम हार ॥ छवि देखत परस्पर अति उदार । उड़वत गुलाल गावें रंगीली गारि ॥ चहुँ ओर अली संग करत गान । मधि मोहन प्यारी संग सुजान । लखि रूप लाल हित हिय सिरान । वारत तन मन धन कोटि मान ॥२५॥

श्री वृन्दावन वसंत बधायौ । कोकिल कीर भ्रमर पिक गावति काम नृपति आयौ ॥ लहि सुदेश जोवन दंपति तन आनंद वढ़ायौ । चूत मौर प्रफुलित द्रुम वेली सेनी साजि ल्यायौ ॥ नव तरुनी भूषन धुनि दुन्दुभि व्रज जन मन भायौ । हिय अनुराग निसान जहाँ तहाँ सोभित सरसायौ ॥ चित हुलास आलिंगन मन

सुख सागर वरसायो ॥२६॥

गोस्वामी श्री गोवर्द्धनलालजी महाराज के पद—राग वसंत

खेलत वसंत दोऊ प्रिया कंत । उर अभिलाष बाढ़त अनंत ॥१॥ चलिये प्यारी रवि तनया तीर । तहाँ वहत सुगंध समीर धीर ॥२॥ वन प्रफुलित भयौ मौरे नूत । चातक पिक बोलत है अकूत ॥३॥ निर्त्तत हैं वरही मुदित होय । गये लाल लाड़िली रहे है जोय ॥ ४ ॥ लगे संग मोहन निर्त्तत त्रिभंग । सखी वजवत है बीना मृदंग ॥५॥ जहाँ खेलत भरे अनंग रंग । तहाँ चले हरखि सों मिले संग ॥६॥ तव लता कुंज में पहुंचे जाई । एकान्त सघन फूलन सुहाइ ॥७॥ दल कुसुमान सज्या रची तीय । तापर निवसे भुज अंस दीय ॥८॥ मनमथ कौ खेल वढ्यो अपार । सुख भीजि भिजावत रंग डार ॥६॥ वजें नूपुर कटि किंकिनी संग । पिचकारिनु धार कटाक्ष भंगि ॥१०॥ अनुराग रँगे मंडित गुलाल । कुम कुमा वने सोहें वाल ॥११॥ केशरि रंग धारनि देह दोत । छायौ अवीर मुसक्यान होत ॥१२॥ यह जो सुख कापैं वरन्यौ जात । हित सखी कृपा तें उर समात ॥१३॥ रति पति मोह्यौ देखि प्रेम केलि । रसिकनुके हियमें फूली वेलि।१४। मनो वोहनी कीनी प्रथम फाग । रहे गोवर्द्धन हित रंग पाग।१५।२७

श्री (हरिराम) व्यासजी महाराज के पद—राग वसंत

खेलत वसंत कंत कामिनी मिलि हो हो बोलत डोलत फूले । सुख सागर गावत दोऊ नाचत नट नागर वंशीवट मूले ॥१॥ मौरे आमनि कोकिल कूजति फूल झूमकनि अलि कुल झूले ॥ विविधि रंग छिरकत छवि अङ्गनि भूषन भूषित चित्र दुकूले ॥२॥ पर नारी पर नाहु वाहु महि विगत लाज जोवन मद भूले व्यास

वसंत खेलत राधा प्यारी ॥ नाचति गावत वेनु वजावत अंस भुजा धरि कुंज विहारी ॥१॥ साोष जवादि कुम कुमा केसरि छिरकत मोहन झूमक सारी ॥ उड़त अबीर गुलाल परागहि गगन न दीसैं दिन भयौ भारी ॥ २ ॥ मधुकर कोकिल कूंजनि गूंजति मानों देत परस्पर गारी ॥ नख सिख अङ्ग बनी सब वनिता गावति खेलत चढ़ी अटारी ॥३॥ ताल रवाव झाँझ डफ बाजत मुदित सबै वृन्दावन नारी ॥ यह सुख देखत नैंन सिरानें व्यासहि रोंम रोंम सुख भारी ॥४॥३९॥

चलि चलि वृन्दावन वसंत आयौ। फूलत फूलनि के झोरा मारुत मकरन्द उड़ायौ ॥१॥ मधुकर कोकिल कीर केकि मिलि कोलाहल उपजायौ ॥ नाचत स्याम बजावत गावत राधा जू राग जमायौ ॥२॥ चोवा चंदन वूका वंदन लाल गुलाल उड़ायौ ॥ व्यास स्वामिनी की छबि निरखत रोंम रोंम सचु पायौ ॥३॥४०॥

वसंत खेलत बिपिन बिहारी ॥ ललित लवंग लता बिथिनि में संग बनी वृषभान दुलारी ॥१॥ सखनु ओट दै कुंवरहिं छिरकत राधा भरि पिचकारी ॥ लाल गुलाल चलावत तकि तकि कुंवरि बचावति दै हँसि तारी ॥२॥ बरसाने ते गोपी आई स्यामहिं देत कामरस गारी॥ छल करि आँको भरि काजर लै आंखि आंजि पहिरावति सारी ॥३॥ सैननि ही मन की जब पाई रुप कीनों है राधा प्यारी ॥ व्यास स्वामिनी बिहँसि मिली श्री मोहन की छबि करत न न्यारी ॥४॥४१॥

कुंज बिहारी प्यारी के संग वसंत खेलत वृन्दावन में गौर

की चोली कुम कुम रंग भीजि रही न देखियत तन में ॥ उरज उघारे से अनियारे चुभि रहे नागर के लोचन में ॥२॥ धाइ धरी आँकों भरि भामिनि हिये लसति ज्यों दामिनि घन में ॥ व्यास स्वामिनी की छवि छोटें प्रतिबिंबित मोहन आनन में ॥३॥४२॥

रितु वसंत मय मन्त कंत संग गावति कुँवरि किशोरी ॥ सुर बंधान तान सुनि मोहन रीझि कहत हो होरी ॥१॥ रंग छींट छवि अङ्ग विराजत संग जलज भाने रोरी । वीथिनि बीच कीच मची मानसरोवर केसर घोरी ॥२॥ बाजत ताल मृदंग बेनु डफ मन मुहचंग उमङ्ग न थोरी ॥ उड़त गुलाल अबीर कीर पिक बोलत मोरनि मोरी॥३। छूटी लट टूटी मालावलि बिगलित कंचुकी कटि डोरी॥व्यासस्वामिनी स्याम अङ्कभरि सुख सागर मह बोरी ।४३।

खेलत राधिका गावति बसंत ॥ मोहन संग रङ्ग मों देखत सब सोभा सुख को न अंत ॥१॥ बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ आवझ बीना बोन सुकंत ॥ चोवा चंदन बूका बंदन साथि गुलाल कुंकुमा उड़न्त ॥२॥ मौरे आम काम उपजावत गावत कोकिल मनो मैमंत । गुंजत मधुप पुंज कुंजनि पर मंजु रेनु मलयजु वहंत।३। गौर स्याम तन छींटन की छवि निरखि विमोहे कमला कंत ॥ व्यास स्वामिनी के बन विहरत आनंदित सब जीव जंत ।४।४४।

श्री कल्याण पुजारी जी के पद—राग बसंत

देखौ मधुरितु मंगल ठौर ठौर ॥ कूजत कोकिल कल मूल मौर ॥टेक॥ कुसमित कुंद कदम्ब चारु ॥ बहु सेवती चंप गुलाब सारु ॥ ये केतुकी कंज सुबास फूल ॥ बहे त्रिविधि पवन श्री यमुना कूल ॥१ आई रितु वसन्त सब सुख निधान करे

सुर करें अभंग ॥२॥ झरें पराग अति छवि की भीर ॥ वर मदन सम्पदा तरु शरीर ॥ प्यारी पियसों मिलि खेलत बसंत ॥ बाढ्यौ सुख सागर नाहि अन्त ॥३॥ सजि कसूंभी चीर शरीर चारु ॥ वर भ्रू व विलास मथि कोटि मार ॥ रँग चोवा चंदन विविध भांति ॥ देखौ गौर स्याम अङ्ग अङ्ग कांति ॥४॥ हँसि धाइ धरी पिय प्यारी अङ्क ॥ देखि फूली अली निधि पाई रंक ॥ मिलि विलसत राधा पिय प्रवीन ॥ विहसी सजनी लखि सुख नवीन ॥५॥ आनन्द अवधि कानन निकेत ॥ दृग वांछित निधि सवहिन देत ॥ सने श्री राधा पिय प्रेमपुञ्ज ॥ अलि करत केलि कल्याणकुञ्ज ॥६॥४५॥

देखौ वृन्दावन अति रति की फूल ॥ कल खेलैं जुगल जमुना के कूल ॥टेक॥ नव दल फल रंग रंग निकुञ्ज ॥ मते हैं भ्रमर रस करहि गुंज ॥ गावत केकी कोकिला पुञ्ज ॥ प्रेम मगन मन गतिन लुंज ॥१॥ रहे वसंत दिन शरद साजु ॥ यह अद्भुत रहनि रनीय आजु ॥ कुंज भवन कमनी विराजु ॥ यह सेवत सब विधि मदन राजु ॥२॥ रचे किशलय सैन सुचैन चारु ॥ मिलि विलसत राधा रवन सारु ॥ त्रिविधि पवन पोषै विहार ॥ बाढ्यौ सुख सागर अपार ॥३॥ ये श्री हरिवंश विराजमान ॥ वर संतत सब गुण गण निधान ॥ हौं मन वच क्रम जाँचौ न आन ॥ करौ निज दासीन दासी कल्यान ॥४॥४६॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज के पद—राग वसंत

नव रितु आई अति ही सुहाई । नव नव फूल फलनि सुखदाई ॥ नौतन दल नौतन द्रुम अंकुर नव मंजरी कोकिल कुहकाई ॥ नव नव कुंज सिपर कूजत शुक भ्रमत मधुप कुल रहे अरुझाई

चोवा चंदन अगर कुम कुमा ललितादिक सखी लै लै आई ॥
छिरकत रंग रह्यौ जु परस्पर चीर भीजि रहे अङ्ग लपटाई ॥
जहाँ तहाँ मोद बढ्यौ बहु दुन्दुभि प्रमुदित ह्वै ह्वै सुरनि बजाई॥
यह सुख पाँन करन दोऊ नैननि दामोदर क्यों रहे अघाई ॥४७॥

यह विधि खेलत संत निरंतर सदा वसंत उदार ॥ घर बन बैठे चलत चहूँ दिस विलसत मोद अपार ॥१॥ तन मन वचन त्रिविध विटपनि तें पाप भये पतझार ॥ हरि गुन सुनत कहत पुलकावलि नव पल्लव विस्तार ॥२॥ कृष्ण चरन जल जात अनूपम सीतल कुसुमित चार ॥ सुख मकरंद पिवत चित मधुकर नाम रटन गुंजार ॥३॥ कीरति पावन कोकिल बानी बोलत बारंबार ॥ अमल बुद्धि फूली फुलवारी सौरभ प्रेम विहार ॥४॥ अद्भुत अवसर साधु समागम निसि दिन रूप विचार ॥ आनंद वारि श्रवित नैननि तें बहत रंग की धार ॥५॥ हरि रस भीजि प्रपंच छुट्यौ सब रही न कछू संभार ॥ दामोदर हित देखत भूले सुर मुनि कौतिक हार ॥६॥४८॥

प्यारी पिय खेलत वर वसंत। उपजत दुहुं दिसि सुख अनंत। ।ध्रुव। अद्भुत शोभा गौर स्याम। लाल प्रिया उर लोलत दाम॥ उमगि उमगि अङ्ग भरति वाम। सहचरि संग कोटिक कला काम ॥१॥ सेज सुहाई अमल खेत। चलत कटाक्ष पिचक भरि हेत ॥ सनमुख भरि छवि छींट लेत। रोम रोम आनन्द देत ।२। नख प्रहार छवि कन गुलाल। राजत विवि उर टूटी माल ॥ जावक रँग रँग्यौ लाल भाल। पीक पलक रँगी ललित बाल ।३। बाजै डफ भूषन सुभाइ। बाढ्यौ सुख कछु कह्यौ न जाइ॥ सुरत रंग रहे अंग छाइ दामोदर हित सुरस गाइ ४ ४६

खेलत आजु वसंत प्रिया पिय देखि सखी रंग भीनें। दोऊ रूप उजागर नागर भूषन चारु नवीनें ॥१॥ अङ्ग अङ्ग सुभग अनङ्ग विमोहन सोहन अम्बर राजै ॥ माथैं तिलक श्रवन कुंडल कल वदन मयंक विराजै ॥२॥ नैंन मनोहर वैंन मनोहर करनि पिचक छवि पावैं। भरि भरि भजत परस्पर छवि सौं अति आनन्द बढ़ावैं ॥३॥ मृग मद चंदन केशरि भीजैं अङ्गनि पट लपटाँनें। हेरत हार छवीली छवि के विनहीं मोल विकाँनें ॥४॥ कहा कहौं निरखि सजनि मुख सोभा रंगनि चीर चुचानें। मनौं मकरन्द लै लै अम्बुज तैं डारत भृंग अघानें ॥५॥ लाल गुलाल उड़ाय प्रिया पर छवि कछु वरनी न जाई। मानौं छटा छवीली ऊपर अरुन बदरिया छाई ॥६॥ तब प्यारी चंचल गति सौं रंग प्रीतम ऊपर नायौ। मनौ नील नीरद पर दामिनि सुरस प्रेम वरषायौ ॥७॥ गहत भरत हँसि मोद बढ़ावत छवि पावत झक झोरें। दामोदर हित यह सुख साखि जन निरखि निरखि तृन तोरें ॥८॥५०॥

श्री रसिकदासजी महाराज के पद—राग वसंत

राधे तेरे तन वन वसंत आयौ ॥ आगम अंग अनंग निरषि अलि मन अनुराग जनायौ ॥१॥ वल्ली भुजा फली उरजनि फल सुमनै हाँसि-विलास ॥ वहै त्रिविधि मारुति सुखदाई वचन प्रकासित स्वास ॥२॥ रसिक विहारी कहैं प्यारी जू रितु विलसैं सचु पाइ ॥ हिलि मिलि मिले लसंत सेज पर आनन्द कह्यौ न जाइ ॥३॥५१॥

संतत कंत संग अनन्त वसंत झलमलै ॥ तरु तमाल कञ्चन लता नव फूल दल दलै ॥१॥ अलक अलि श्रेणी मुखांबुज आई चहुं दिस धाइ ॥ गंध डोरनि लगी पंकति सोभा वरनी न

जाइ ॥२॥ फूले पलास अरून रङ्ग मित अमित भई नैन ॥ नासिका शुक पिक कहैं मनों मधुरे बैन ॥३॥ सीस फूल अ्रति फूल फुलवारी अधिक छवि देत ॥ वंदनी कल गंड झलकें निराप मन हारि लेति ॥४॥ नील उत्पल माल सोभा तरनि तनया नीर॥ चक्र वाक गही वैठे दोऊ कूलनि धीर ॥५॥ लता भुज ... के निकट वहै त्रिविधि मन्द समीर ॥ अङ्ग राग पराग झलकत रंगे सुरंगित चीर ॥ ६ ॥ कदली फली जुग तरल तरनी छनी छवि अर अरी ॥ नूपुर तरैं किलकार पग वन रह्यो शब्दनि भरी ॥७॥ अवनी सु उदर सुदेश सोभित परम रम्य सुधाम ॥ काम क्रीड़ा करत माते रहत आठों जाम ॥८॥ अनुराग वंदन घमड़ि भारी धूँध मची वहु जोर ॥ नेह तेल अबीर उज्वल हांस रंग न थोर ॥९॥ नील पीत दुकूल छवि छीटैं परन सुप दीप ॥ भाग मानत आपनों जीवन जनम फल लोप ॥१०॥ इहि भांति वन तन विहरहीं दोऊ रसिक समभे रीति ॥ छहों रितु यों विलसहीं छिन छिन वढ़ावत प्रीति ॥११॥५२॥

देखौ रवनी रवन कमनी लसंत ॥ इह रितु वसंत वन छवि अनन्त ॥ध्रुव॥ लह लही लता उलही सुदेश ॥ राम्मनि लसंत दिन मनि रसेस ॥ कल फल सुर मंजरि सुदेश॥ रङ्ग रङ्ग अनंगनि किय प्रवेश ॥१॥ कुसमनि विकास विकसे विशेष ॥ सौरभ समीर आलिंगन असेष ॥ कोकिल मयूर प्रमुदित रसाल ॥मधुर मधुर धुनि शुक मराल॥२॥ मंजुल विमल मंडल रसाल ॥ खेलें तहाँ दोऊ रसिक लाल ॥ अति सुगंध रंग रंग गुलाल ॥ उड़वत कुसुम रंग छिरकि वाल ३ गावैं सुगीत कवि तान रीति ॥

सँभरि सँभरि सनमुखनि चाह ॥४॥ हँसि हँसि भरैं बहु भाँति भाइ ॥ अङ्ग अङ्ग छबि रही नैन छाइ ॥ रसिकदासि सुख रासि एह ॥ वरनत हुलास बाढ़ौ सनेह ॥५॥५३॥

राजैं श्री वृन्दावन मधुरितु विलास ॥ जहाँ रंगीलो प्रेम संपति हुलास ॥टेक॥ रंगीले भ्रमर तरु फूल पात ॥ रंगीले विहंग बोलें रंगीली जात ॥ रंगीलौ पवन रंग रंग पराग । छायौ जहाँ तहाँ रंगीलौ राग ॥१॥ रंगीले वसन भूषन अनंत । बनैं रंगीले जूथ दोउ कुंवरि कन्त ॥ रंगीली तान बाजें रंगीले भाइ ॥ रंगीली निर्त गति रंगीले चाइ ॥२॥ रंगीली नारि देत रंगीली गारि ॥ रंगीलौ चलैं रंग रंग धार ॥ रंगीलौ उड़ै रङ्ग रङ्ग अबीर ॥ रंगीले चपल चष भाव भीर ॥३॥ रंगीली भरनि उमगनि अनंग ॥ विलसै बसंत रंगीली तरंग ॥ रसिकदास रस रास येह ॥ अनुदित बाढ्यौ हिय रंगीलो नेह ॥४॥५४॥

श्री सहचरि सुख (सुख सखी) श्री महाराज के पद राग वसंत

राधे तन फूल्यौ मदन बाग ॥ हरि मधुकर कौ भयो सफल भाग ॥टेक॥ नव जलज चरन नव थलज पानि ॥ तहां जलज थलज उपमाँ न मानि ॥ जंघा कदली दीपति की रासि ॥ तहाँ होति है वन कदली की हांसि ॥१॥ दल उरग लता दुति दिपति चोज ॥ रोमावलि छवि अंकुर मनोज ॥ कल कली रूप कुच रसनि पुञ्ज ॥ तहाँ वारो सबही कली कुञ्ज ॥२॥ जुग भुज फूली जोवन विहार ॥ उज्जल कलप द्रुम ही की डार ॥ जड़ कलप वृक्ष नहीं समता जोग ॥ जब इनके होत प्रीतम को भोग ॥३॥ इतै सोन जुही सी सुभग अंग ॥ कोमल चंपक केसरि के रंग ॥ कहा सोन जुही तहां चंपक कौन ॥ केसरि ऐसी होति न

सुठौन ॥४॥ ग्रींवाँरु कण्ठ मोहनी लीक ॥ मन हरन झलक तहाँ झलकैपीक ॥ विकसै तहाँ चित्त चतुराई चैन ॥ विकसैं रागीन रंग रीझ दैन ॥५॥ बनी ठोड़ी अम्बु रस श्रवै अनन्त ॥ अनुराग बीज से लसत दंत ॥ रुचि रसन अरुन दल मोरव मूल ॥ मुस-कांनि मधुर सों वरसै फूल ॥६॥ राजै अरुन अधर बंधूक भांति ॥ तहाँ कौ बंधूक वारौं रतन पांति ॥ जहाँ सुरन अमृत नौंबरे जोग ॥ ताकी सम नहीं सुरराज भोग ॥७॥ पिंडोगनि मे झल-कत कपोल ॥ उपमा अजाँन कहै कविन टोल ॥ उनमें मदिरा मद है अचैन ॥ ए पिय कों सदा छकि मैन दैन ॥८॥ दृग खुलनि गुलाब प्रकास देति ॥ ढिग कटीलि भृकुटी कछु उपमा लेति ॥ करकस गुलाब नहीं समता होति ॥ नैननि की सी नैननि ही जोति ॥९॥ मुख कमल भोर जामिनी चंद ॥ जहाँ कमल चंद दोऊ लगत मन्द ॥ आनन समान आनन ही जानि ॥ दूसरौ और उपमां न मानि ॥ १० ॥ श्रवनंम अलक कुंचिननि केलि ॥ उलही मनों ललित सिङ्गार बेलि ॥ मिली मुकता लर बैंनी रसाल ॥ जग मगी सुजस कली मनों माल ॥११॥ गनें परत न अगनित गुन अनन्त ॥ भयौ विहरि विहारी रसिक कंत ॥ दंपति विलास हरिवंश भांन॥कछु इक सहचरि मुख कियौ गांन।५५।

वृन्दावन मौरी अम्ब डार ॥ मधि कूजत कोकिल पग अपार ॥टेक॥ रचना रोचक जमुना के कूल ॥ अमृत जल सींचे जिनके मूल ॥ वरषत रूपनि फूले विविधि फूल ॥ उपमां दम्पति हिय हरन सूल ॥१॥ नव उलही ललित लता अनंत ॥ उर लपटैं सफल भए विटप कंत मनमथ मकाम किये मही मत मन

तिन रच्यौ रुचिर बृज मांझ फाग ॥ मकरन्द बुझावत बिरह दाग ॥ सींचे जिनि फिर बृज मांझ राग ॥३॥ मानि नील कनक तन दुति उमंग ॥ दरसावति केसरि जुगल अङ्ग ॥ राते राज दंड से लसत रंग ॥ मवास मान गढ़ जिनकी जङ्ग ॥४॥ कमला कर में कमलनि के चैन ॥ मधुकर मन छकनि अनूठी दैन ॥ जिनकी कटाछि कहीपरै न वैन ॥ मनो महा मोहिनी कहैं नैन ॥५॥ इह सोसन गुलपै यहै हाल ॥ दरसाइ देति दुति में गुपाल ॥ अनमिली फसी हेली मोह जाल ॥ जे उमहि मिली तेई छकीं बाल ॥६॥ खिलीं चम्पक सौंन जुही की मेल ॥ निकसत उनि बीथिन रसिक छैल ॥ रंगनि में तिहारी दुति के फैल ॥ यो छकत स्याम सुधि रहे न गैल ॥७॥ फूले पलास कहा कहैं सुनाइ ॥ काली कलियनि कियौ कहरु आइ ॥ लियौ मान सकल ब्रज कौ चबाइ ॥ रही वेई अरु नई मुखनि छाइ ॥८॥ तुम कोमल व्है क्यों न तजत द्वंद ॥ कटीले बिरवनि को लषि अनन्द ॥ सेवती गुलाब सौरभ के कन्द ॥ उगलित मनो जग अनुराग चंद॥९॥ लाला गुल पायौ साँचौ नांम ॥ जाहि देखि बिवस भई सबै बांम ॥ दल लाल लसे हिये भये स्यांम ॥ सिंगार नेह रच्यौ सुरत धाँम ॥१०॥ माधुरी मधुर सुकुवारि बेलि ॥ अध खिलति पत्र गहेरिनि केलि ॥ तहाँ चोर महँ चर्नी चतुर खेलि ॥ भुज कंठ नाह कें बाँह मेलि ॥ ११ ॥ पोषे रहसि केतुकी सौरभ सार ॥ कह्यौ मान कुंवरि कीजे सिंगार ॥ याकै दन्त मुखिन दरसै अपार॥ विहरि है बिरह हिय बन बिहार ॥१२॥ सुनि बेलि चंबेलिनि कौ बखाँन ॥ भँवरनि कौं बिकसि रस करति दांन ॥ संजोगिनि व्है हिय करै गुमाँन ॥ मानौं हँसति अकेलौ देषि कान्ह १३

कीजै सिंगार अब यहै बात ॥ अनमिलन हितू ने कौं नाहि सुहात ॥ यह औसर रस कौ बीत्यौ जात ॥ जामें काठ हू ह्वै गये कोमल गात ॥१४॥ चहूँ ओर चैन बूभिये पीर ॥ व्है गयौ धीर चञ्चल समीर ॥ महा मोद भरी परिमल की भीर ॥ तुम बिन मोहन कौं भई है तीर ॥१५॥ सुनि रति उम्हली ललिता की सार ॥ कियौ पिय भायौ हित अति उदार ॥ लखि रसिकलाल राधे उर कौ हार ॥ सहचरि सुख वारी वार वार ॥१६॥५६॥

खेलत वसंत वन रसिक राज ॥ रस रानी रङ्गनि लियें समाज ॥टेक॥ नव भाव कुम्भ धरि चाह थाल । मधि प्रीति कली विकसीं विसाल ॥ सिंगार मौर मोदक रसाल ; लियें रूप मंजरी सबै वाल ॥१॥ फूली छवि फूलनि जोबन वाग । खिलि खिलि खुलि हाव भरें पराग ॥ आनन फूल्यौ अनूठौ सुहाग । तौननि फूल्यौ हिंडोल राग ॥२॥ केसरि तन दुति पानिप में घोरि । रङ्गे रङ्गीले छैल सिख नख तें ढोरि ॥ आलता भुलई दृग दृगनि जोरि । दुरि मुरि दरसौ मोहनि मरोरि ॥ ३ ॥ रस जल अबीर आनन्द गुलाल ॥ वंदन उमंग में रचे है लाल ॥ मारी सिंगार पहिराइ माल । हरि हँस रुचि लाए हंस चाल ॥४॥ अरुनिमाँ दृष्टि रोरी सुरङ्ग । सितता कपूर सीतल तरङ्ग । मृग मद स्यामता मिलाइ संग । भरि नैन पिचक पिय रचे अङ्ग ॥५॥ चित चंदन अति उज्वल लगाइ । पदमिनि तन सहज सुगंध छाइ ॥ चिक-नाइ चतुर लड़काइ चाइ । गोरे हिय स्याम किये छकाइ ॥६॥ दामिनि लौं दमकि दरसाइ मैंन।वरसाइ रीफ हरषौ कियौ मैंन ॥ जहाँ व्रज मोहन यौं फल्यौ चैन । करतें गिर परत न जान्यौ नैन ७ वंशीवट मोद बढ्यौ अपार मिले लोभ पुञ्ज अरु

अति उदारं ॥ ललितादिक नैंननि को अहार ॥ सहचरि सुख गावति वर विहार ॥८॥५७॥

प्रेम गुलालहि छाइ नैंन में नवल वसंत खिलावैं ॥ जोवन मौर हँसनि कुसुमावलि निरखि स्याम सुख पावैं ॥१॥ कनक कोर पिचकार धार रंग हाव भाव बरसावैं ॥ अपनैं रंग में करत आपसौं देह दसा बिसरावैं ॥२॥ लालविहारी विहरत कुंजनि राधे अङ्ग रचावैं ॥ सहचरि सुख ललितादिक अलि मिलि ललित रहसि दरसावैं ॥३॥५८॥

ल्यांई वसंत मिलि आई ललितादिक राधे संग रंग बरसैं । गाइ हिंडोल मोहक सुर छांई, सब इक दांई बरसैं ॥१॥ झोरी भरें अबीर करनि केसरि पिचकारी बोरी । गोरी करति चितनि की चोरी, सब मोहन की जोरी ॥२॥ छवि अलबेली प्रीतम बेली स्यामा सुखै सहेली । विधि रचना सब पाइनि पेली करति स्याम संग केली ॥३॥ मन हरनीं नव चंपक बरनीं अंग कटाछिनि करनी । जिनकें पद पंकजनि सुफल करी, वृन्दावन की धरनी ॥४॥ षोडस रचैं बरस षोडस की चलनि लचनि कटि षीनी । महा भाग मान्यों पिय देखत राग सुहागनि भीनी ॥५॥ जमुना तट वंशीवट चहुंदेसि अरुण अवनि सब कीनी । बेस कलिनि सी खिलति अली मानों झरत पराग नवीनी । छिरकै छैल छींट पचरंगनि ओपी उपमा भारी । मानों सिंगार जलद में फूली मनमथ की फुलवारी ॥७॥ ससरति वदन गुलाल बाल बस कर घूँघरि यौं चमकैं । रस सावन मानों हित लाली में रूप दामिनी दमकैं ॥८॥ अधर कपोल गहत मृग मद मुख सों लपटावति प्यारी । केसरि आड़ भाल वैंदी दै पिय लौं मुसकि

निहारी ॥६॥ उपमाँ भई अनूठी आनन कुंकुमागर के चरचें। हिय की रचनि उमकलि हाथनि मानौं उलटि रसिक कों अरचें॥१०॥ बुरकत चूर कपूर अंग पर लोक लीक जिनि लोपी। मनौं अभिषेक कियो नाइकता कल कीरति तन ओपी ॥११॥ कुसुम गुच्छन नव नूत मञ्जरी रचना पाग जिय मोह्यौ। मनौं रितुराज व्याह वनरा कें सीस सेहरौ सोहयौ ॥१२॥ फूलि पलास झलमलैं यौं वन लाली ललित सुहाए। सुरंग दरयाइनि के मंडप मानौं कुञ्ज महल में छाए ॥१३॥ पचरंग पिचकारिनि की अंग अंग यौं उपमां भई भारी ॥ मनहुं कसौटी पर रस लीकें रहि गईं न्यारी न्यारी ॥१४॥ रतन कमोरी सौरभ भरि करि कुंवर सीस पर ढोरी। आंखि आंजि अपनें कर प्यारी बोलनि हो हो होरी ॥१५॥ देह कटीली दुहुधा दरसी रसिक कहा कोऊ गावें। सहज सनेह रीति तिनकी रसना एक न कहि आवें ॥१६॥ फूलनि की मौरी ब्रज मोहन स्यामा सीस सिंगारी। अरस परस सरूवार माँडति छकि विकि गये रसिक निहारी ॥१७॥ देनु सिरस्त जानन न पांनि तैं चैन चतुर यौं पायो। नील पीत पट बदल उढ़ावत भयौ है अलिनि मन भायौ ॥१८॥ गठि जोरा करि सुरूग सेज पर सुरत महल पधराए। दिये दोऊ हरिवंश रसिक हिय सहचरि सुख दुलराए ॥१९॥५६॥

हेली कुञ्जनि रंग उलहयौ अनंत, मनमोहन तन फूल्यौ वसंत। मैन लपेटी रूप कलीनि नव जोवन प्रगटत खिलति खुलति छवि विविध फूल वरषत लसंत। नव किशोरता मिलि मधु बरसत कान्ह कुंवरि पियचित चिकनावत भए है सकामी महा मंत॥ सहचरि सुख वारी प्यारी तू लपटि ललना उर है सिंगार की

अति ओपैगो स्याम कंत ॥६०॥

मौरी अंब मंजरी बांधे मदन कैं मौर कुञ्ज ॥ रूप मञ्जरी खिलति वैस ल्याई नव वसंत साज स्याम कंत कौ अंग अंग फूलत रमनि पुञ्ज ॥१॥ कोकिल गान करत मंगल रति राज दल सज्यौ नेह देस पर वजत दुन्दभी डफनि गुञ्ज । छूटत पंच सर मान मवासनि लुटे सखी सुख रसिक चोर मन कटीले गर्व भये गतिन लुञ्ज ॥२॥६१॥

श्री चंद्र सखी जी महाराज के पद—राग वसंत

आयौ वसंत रितु रसन राइ ॥ बृन्दावन सब सुख रह्यौ छाय ॥टेक॥ फूले द्रुम बरन बरन सुरंग ॥ सौरभ रस माते भ्रमत भृङ्ग । बोलत कल कोकिल मधुर गान ॥ दंपति हित केलि करत बखान ॥ १ ॥ सुनि सुनि सखियनि चित बढ़्यौ चाउ । उपजायौ प्रीतम मनहि भाउ ॥ तब रसिक सिरोमनि नंदलाल । चितए प्यारी तन दृग विशाल ॥ २ ॥ अति प्रिया रूप रस गुन निधान । पिय के जिय की तब गई जान ॥ तब सब सखियनि कौं दई जनाइ । सब मौज खेल की लई बनाइ॥३॥काहू कुंकुम कपूर घोरि । काहू मौंत्रे पट लए बोरि ॥ काहू लियौ लाल गुलाल रंग । काहू बूका वंदन सुरंग रंग ॥४॥ काहू घसि चंदन अतर आनि । काहू लीन्यो अरगजा सानि ॥ काहू कंचन पिचकारी हाथ । खेलन कौं रंगीले ललन साथ ॥५॥ काहू डफ ताल मृदंग चंग । काहू बीना अधवट उपंग ॥ कोऊ गावत रस मीठी तान । कौतुक काहूपरत न वखाँन ॥६॥ सब साजि समाजै स्यामा स्याम । आये सुख पुञ्ज निकुञ्ज धाम ॥ तहाँ खेल परस्पर बढ्यौ अपार । संग्राम मजै मनौं सुभट मार ॥७॥ तन मन भीजे रस

रंग प्रेम । काहू लज्या कुल रह्यौ न नेम ॥ जहाँ चन्द सखी लखि सुख निधान छवि पर न्यौछावार करत प्रान ॥८॥६२॥

चलि खेलें री हिलि मिलि बसंत । रंग रंगीले रसिक कंत ॥टेक॥ सुन्दर वर नट नागर मोहन गोहन सब सुख लीजें । प्रेम माधुरी रूप सुधा निधि अँखियाँ झकियाँ कीजे ॥१॥ यह सुनि चलीं भली विधि सों सब सज समाजनि जोरें। विविध सिंगार हार मुक्तावलि कंचुकी केसर बोरें ॥२॥ धाइ जाइ प्रीतम के अङ्ग संग अति आनन्द बढ़ायौ । खेलत हँसत परस्पर सब मिलि सुख समूह बरसायौ ॥३॥ यह छवि निरखत देव बधूनि के धीरज रह्यौ न मन में । भाग सराहत ब्रज गोपिन कौ प्रेम मुदित भई तन में ॥४॥ या रस की महिमा को बरनैं सुर मुनि पार न पावैं । श्रीराधावल्लभ चरन रेनु हित चंद सखी गुनगावैं ।५।६३।

खेलत बसंत हरिवंश चन्द्र । प्यारी पिय निरखत आनंद ॥ प्रफुलित प्यारी लाल कुञ्ज । अति सुगन्ध सौरभ के पुञ्ज ॥१॥ नैंन भृङ्ग गुञ्जत सुवास । रूप माधुरी मधुर हाँस ॥ अङ्ग अङ्ग भूषन बजत बीन । गावति छवि सहचरि प्रेम लीन ॥२॥ निसि दिन रूप सुधा को पान । छिन न तृपित मानत सुजान ॥ मुसकनि बूंका छुटत अंग । लोचन कटाच्छ पिचकारी रंग ॥३॥ श्री प्रिया लाल कौ प्रेम रूप ॥ कियौ प्रकास तजि जगत भूप । जैश्री उदयलाल हित हैं कृपाल।चंद सखी निरखत निहाल॥४॥६४॥

श्री लालदास जी महाराज के पद—राग बसंत

खेलें राधा वल्लभ रसिक लाल । देखौ वृन्दावन फूलौ विशाल ॥ मौरे नूत ललित द्रुम लसत कांति मनो मदन नृपति

नृपति के तनें बितान ॥ बोलैं कोकिल केकी कल कपोत । मनों मदन महल में गान होत ॥२॥ जमुना जल कल कमल फूल ॥ निरखि मदन मन रह्यो भूल ॥ तरु तमाल फूलें लमात । लखि मानिनि मन मद नसात ॥३॥ मधुप मधुर धुनि करत गुञ्ज । मनों मदन बजावत लीयें रुञ्ज ॥ विपिन विविध छवि छाई आइ । अति अनुपम कछु कही न जाइ ॥ ४ ॥ सुनत चौंप चित भई अपार । करि चले विविध रंग रंग सिंगार ॥ स्यामा स्याम मन बाढ़्यौ मोद । हँसत हँसावत करि विनोद ॥५॥ बाजत डफ तार मृदंग चंग । वीना वंसी वर उपंग ॥ डारत पिय पै लै लै गुलाल । चपला सी सब सुघर बाल ॥६॥ पिय प्यारी कौ भरत रंग । भीजें बसन गसन लसे अंग अंग ॥ सखी स्यामा जू जब गहे जाइ । मानों दामिनि घन कौ घेर्यौ धाइ ॥७॥ बदन विराजत विविधि चंद । रंगे बंदन रंग सौं भरे आनन्द ॥ लाल बाल सहित निरखि संग । श्रीचन्द्र सखी रँगे प्रेम रंग ॥८॥६५॥

श्री राधे तेरे ललित अङ्ग । तिहि देखि स्याम मन रंग्यौ रंग ॥टेक॥ सुन्दर बदन सरोज विराजत राजत अलकै संग । सीस फूल तारंक श्रवन शुक नासा बेसरि मंग ॥१॥ बैना बन्यौ जराऊ जग मग जटित सुचुनी सुरंग ॥ मंद हँसन सुख सदन नैंन कल कज्जल सोभित रंग ॥२॥ केसरि खौरि कपोल कलित कल भ्रकुटी धनुष निसंग ॥ छुटत कटाच्छि सुबान बिलोकनि बेधत मदन कुरंग ॥३॥ भुज लता कोमल कर पल्लव मुन्दरी मननि तरंग । कुच कल फल अद्भुत मनों सोभित सुन्दर सरस उतङ्ग॥४॥ कटि केहरि कदली जंघा गति मथत मदन जु मतंग ॥ चारु चरन जावक रंग रंजित भूषन सजत अभंग ५ हरित कीन

खाप कौ लहँगा सारी सुही सुरङ्ग । कंचुकी केसरि के रङ्ग रङ्गित निरखति लजत अनंग ॥६॥ खेल वसंत उड़ाइ गुलालहि लसे सेज चतुरंग । श्री चंद सखी हित वाल कृष्ण लखि लाल दास दृग पंग ॥७॥६६॥

श्री कृष्णदास भावक जी के पद—राग वसंत

वन भई नई छवि कही न जाइ । नव वसंत रितु रही छाइ ॥टेक॥ नव द्रुमनि लपटी नव वेली नव फूली फुलवारी॥ नव सुर लुब्ध सरोज सुगंधनि मधुप करत गुञ्जारी ॥१॥ नव नव नृप मंजरी नवफल दल नव कोकिल कीर । नव पल्लव नव तरु हरखे मनों पहरें सुरंगित चीर॥२॥नव जोवन वन नेह सनेही नव सत अङ्गनि साज । नव जुवतिनि साथै बने सनौ दोऊ नव रस सुखद समाज ॥३॥ नव अवनी नव निर्त नई गति चलत चलित सुख जोरि । मुसकनि वंदन डारि बचावत हँसि दृग अञ्चल ओरि ॥४॥ नव रङ्गी नव अङ्गनि छीटत नैंन सुरङ्गनि पूरि । नव चितवनि तिरछी कोरनि दृग मनों मैन अंकूर ॥५॥ उलही नव वल्ली नव कुसमित कुञ्ज चले सुकुमार । जै श्री हित विनोद वल्लभ सेवत दृग कृष्णदास सुख सागर ॥६॥६७॥

प्यारी पिय नैननि कौ वसंत ॥ नव नव भाइनि फूली लसंत ॥टेक॥ फूली नवल तरुनता वेली विविधि सुवासनि अङ्ग । भ्रमत लुब्ध मधुमय गुंजत नव नित्य रसिक मन भृंग ॥१॥ सुभग सुरंग नये नव पल्लव नव फल उरज उतंग । नई नई वयस सरूप सहज तन मधुकर लये उछंग ॥२॥ नादित मनों नव भूषन रव खग मुदित बढ़ावत मोद । कृष्णदास सींचत चितवनि रस भारे पल बढत विनोद ३ ६८

श्री हित कृष्णदास जी के पद—राग वसंत

हरखि हरखि मुरि देखत दोऊ छवि फूली नैननि वसंत, बैननि बैन रसंत ॥ध्रुव॥ मोद मौर मुख मधुर मंजरी नवल नासिका कीर। पल्लव अधर अरुन मुक्ता फल हलत व स्वास समीर ॥ ताटंकनि तर मौर भ्रुमिका भँवर अलक मन लोल। ईषद हासि विकास कली रद झलकन दलनि कपोल ॥ मानें मंडल भ्रू भंग निर्त्त गति भाइने भरनि सुरंग। सैननि सुलप चलें नई ललकनि पलकनि परनि मृदंग। रस रंगी संगीतनि सूचत मैन मंगली साज। कृष्णदास हित कुञ्ज विनोदनि हौं बलि सुखद समाज ॥६९॥

जब हौं देखौं री तोहि हसंत, तापर वारौं वसंत। अरुन अधर दसननि दमकनि पर रवि की किरनि निकसंत॥ मुख सनैं मुख पर नीरज नैंन दल कपोलनि पर विकसन्त। स्वास पै सुवास नासिका पै नासा कीर वारौं मोती हलनि फलि रसंत ॥ ग्रीव पोति कपोती अनहोती कंठ कोकिला हू वचननि पिक कूजंत। सहज अंग माधुरी तरंग रंग केसरी लसंत ॥ गुलाला की ललाई लजाई लपटाई पग यातें वचि रही सरमंत। हित कृष्णदास वारौं प्रीतम के लोइनि पै लुब्ध रहे मधु मंत ॥७०॥

प्यारी जू इनि नैंननि मैं देख्यौ रूप अनूप वसंत। फूलि रह्यौ तेरौ मौ मेरौ मन मधुकर मैमंत ॥ मंजु मुखांबुज फूल भई अनुकूल किरिनि कृत हास। लसत कपोल दलनि में जलकन केसरि स्वास सुवास ॥ झलकत भाल गुलाल कनी सुबर्नी भृकु-

दृग कोर ॥ तुमहीं तहाँ सुहिलिमिलि खेलौ झेलौ रंग बढ़ाइ कृष्णदास हित हिलग हिये की समझि लिये उर लाइ ॥७१॥

तेरौ वदन सरोवर मधुर वार । भरे नैन कज्जल जलचर विहार ॥ भ्रुव भृंग नई उपजत तरंग । भरी चोंज चलै चितवनि अभङ्ग ॥१॥ मृदु मुसकनि अरुन कमल सुफूल । ताके दल कपोल अलि अलक झूल ॥ नासा मोती स्वासा सुरुंद । छवि झरति माधुरी परत बूंद ॥२॥ कूल मूल भुज कनक बेलि । फली उरज फूल भूषन सुहेलि ॥ ऐसे धरी स्याम अंसन रसाल । मनौं लसत चढ़ी नव तरु तमाल ॥३॥ परसत अंग अंगनि रंग हिलोर । सरसत अनंग की झुक झकोर ॥ भूषन रव इव खग कूजंत । हित कृष्णदास नैननि वसंत ॥४॥७२॥

देखौ व्यास सदन मधुरितु रसाल । फूली कुंवर दिन नवल बाल ॥ टेक ॥ नैंन विमल मुख फूल हास । अनुकूल किरिनि कमलनि विकास ॥ उर स्वासित सौरभ समीर । अलक भ्रमित भुव भृङ्ग भीर ॥१॥ छवि मूल भुजनि भूषन सुहेलि । फवि फूल सुकोमल कनक वेलि ॥ नव फलनि फलीं उरजनि उतंग । मनौं सुमन कलीं झमकीं सुरंग ॥२॥ फूली नूत नेह मंजरी सुवास । कूजीं पिकनि मधुर गुञ्जरी हुलास ॥ थिरकति वेशरि मुसकनि सुराग । छिरकति केशर कुशमनि पराग ॥३॥ भीने पल्लव पीत रसीत चीर । भीने अतर अरगजें अरु अबीर ॥ लीने साज सोहगी मौंज हाथ । कीने यों जु गवन सषी पवन साथ ॥४॥ आई भवन रवन कमनी कुंवारि । गावति कोकिल सुर देत वारि । निरखी नई सखियनि निहारि । दीनें सकुच आंखियनि पल पंख डारि ५ अलग लाग पग लसत भूमि मनु हंसति अरुन

भई मगन चूंमि ॥ नूपुर धुनि सुनि संगीत रीति । सोवत जागत गुन गुपत गीति ॥ ६ ॥ रूपहि नारि रचनादि सोभ । उपज करज नख नूत गोभ ॥ अगर धूप आरति संजोइ । फूली आरति बारति समोइ ॥७॥ इक भूरि मोतियनि पूरि थाल । इक देत भूर मागद मराल ॥ भनत जस सुनि श्रवननि सिरन्त । हित कृष्णदास वरननि वसंत ॥८॥७३॥

श्री कृष्णदास (गिरधर) जी के पद—राग वसंत

प्यारी नवल वन नव केलि ॥ नवल विटप तमाल उरझी माधवी नव बेलि ॥१॥ नव वसन्त हसंत द्रुम गन जरा जड़े पेलि ॥ सिखिर मिथुन विहंग कुलकत मची ठेला ठेल ॥२॥ तरनि तनया तट मनोहर मलय पवन सहेलि ॥ कृष्णदासनि नाथ गिरधर तूंहि कुंवरि नवेलि ॥३॥७४॥

भामिनि चंपे की कली । वदन पराग मधुर रस लंपट नव रंग लाल अली ॥१॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा करि जु सिंगार चली । खेलत सरस वसंत परस्पर रवि की कांति मिली॥२॥ ताल मृदङ्ग झांझ डफ वीना, बीच बीच मुरली । कृष्णदास गिरधर हिलि मिलि रंग रली ॥३॥७५॥

रितु वसंत तरु लसंत मन हसंत भामिनी कामिनी सब अङ्ग अङ्ग रमत फाग री ॥ चरचरी अति वंक ताल गावत संगीत रसाल उरप तिरप लास तांडव लेत लाग री ॥१॥ बूका वंदन गुलाल छिरकत ताकि नैंन भाल गाल मृगज लेप लाल अधर दाग री ॥ गिरधर अति सुघर राइ मेचक मुन्दरी लगाइ कंचुकी पर छाप करत अमित नागरी ।२॥ वाजत रसना मंजीर बोलत पिक

प्यारी भेटत हँसि देत तारी केलि कला हियन प्रान प्रेम आगरी ७६

श्री प्रेमदासजी महाराज के पद—राग सारंग

देखौ श्री राधे जू बन बसंत ॥ आयौ बनि ठनि छवि सों मूर्ति वंत ॥टेक॥ बोलैं कुहू कुहू कोकिल रसाल ॥ मानों मैं-ाह टेरत्ति रति की आलि ॥ मतवारे मधुप चय करैं गुंजार ॥ मानों मनमथ के दुन्दभी अपार ॥१॥ फूले कलित केवरा छवि निहार ॥ मानों मनोज के छरीदार ॥ नव नूत मञ्जरी हरित संग ॥ मानों मदन बाण पूरित निषंग ॥२॥ चलत अति रुचिर त्रिविध समीर ॥ मानों अतनु राजकौ मंत्री धीर ॥ बोलैं मधुर हंस कल ललित ठाम ॥ मानों आवत बजावत बीन काम ॥३॥ फूली कनकलता मिलि तरु तमाल ॥ मानों पुलकित मनसिज अंक बाल ॥ फूली राइ बेलि मालती चारु ॥ मानों हँसत सखी रति की उदार ॥४॥ फूले बहु विधि कमल उड़त पराग ॥ मानों कुसुम-सरा रति खेलैं फाग ॥ नाचैं केकी अति आनन्द अधीर । लखि सरस श्याम घन जमुना तीर॥५॥फूले नव किंशुक मिलि मिलत लाल ॥ मानों उर सिंगार अनुराग माल ॥ फूले अमल कमल थल गैंन गैंन ॥ मानों तव हित धरणि बिछाये नैंन ॥६॥ फूली सोंन जुही जित कित अभंग ॥ मानों प्रगटित दिशि दिशि प्रीति रंग ॥ वंजुल की कुञ्ज सुख पुञ्ज ऐंन ॥ रची मोहन किशलय दलनि सैंन ॥७॥ मुसकात बजावत वेणु स्याम ॥ गावत श्री राधा राधा नाम ॥ तब मिली कुंवरि चलि गति गयंद ॥ भयौ प्रेमदासि हित अति आनन्द ॥८॥७७॥

आजु बसंत बन्यौ वृन्दावन निरखि खेलत पिय प्यारी ॥ बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ गावत उपजावत सुख भारी १

कनक पिचकई भरे केसरि रंग छिरकत बूंद बनी तन न्यारी ॥ अगणित हेम खंभ में मानों जटित चुनी मनमथ जरियारी॥२॥ उड़त गुलाल लाल घमड़न में झमकि रहे आनन हितकारी ॥ अरुण गगन में उदय भये मानों अमित चंद छवि श्रवत सुधारी ॥ ३ ॥ प्रेम सहित धर बढ्यो अरुण रंग माधि समाज सोभा विस्तारी ॥ मनों अनुराग सरोवर में सखि फूले कंचन कञ्ज महारी ॥४॥७८॥

श्री वृन्दावन आनन्द कन्द ॥ तहाँ अनुदित सेवत मदन वृन्द ॥टेक॥ कंचन की अवनी अति अनूप॥ तामें जटित रतन बहु विविध रूप ॥ बने नील पीत सित हरित लाल ॥ रत-ननि के लहरिया वर विशाल ॥१॥ जटे अवनि कमल हीरनि के चार ॥ तापै लालन के बने अलि अपार ॥ त्यों लालनि के बने विविध कंज ॥ तापै हीरनि के बने मधुप मंजु ॥२॥ बने नील मणिन के बहु सरोज ॥ तापै कनक भृङ्ग लखि बढ़नि चोज ॥ ज्यों हेम अब्ज बने रूप सींक ॥ तापै नील मणिन के चंचरीक ॥३॥ बनै तैसेई बहु रतननि के फूल ॥ सोई जटित धरणि में रूप मूल ॥ यह कल कपूर मणि की निकुंज ॥ ताहि सेवत मधुरितु मदन पुंज ॥४॥ कहूं मर्कत मणि मय तरु तमाल ॥ तासों कनक लता लपटी रसाल ॥ कहूँ कंचन मय तरु रहे राज॥ मिलि मर्कत मणि सी लता छाज ॥५॥ काहू तरु की साखा कनक वेष ॥ ताके पत्र दिपत पन्ना के भेष ॥ मोतिन के झोरा कुसुम आइ ॥ फल मूंगा से रहे झिल मिलाइ ॥६॥ काहू अद्भुत द्रुम में अमित कांति ॥ तामें लगे आभरण विविध भांति कोऊ फूल लें रहे मधि दुकूल मेरे पिय प्यारी को

सु अनुकूल ॥ ७ ॥ फूली सोन जुही जाही अभंग ॥ फूली राइ वेलि मालती संग ॥ फूली माधविका केतुकी सुरंग॥ फूली बकुल सेवती अति उमङ्ग ॥८॥ बने रतन जटित कल आल बाल ॥ तहाँ केसरि के रंग भरे आलि ॥ तामें फूल रही कुमुदिनि की माल ॥ तापै गूंजें अलि संग अलिनी बाल ॥९॥ बने रङ्ग रङ्ग के जल नलिनी थोर ॥ छूटैं अति आनन्द सौ चहूँ ओर ॥ चलैं सीतल मंद सुगंध वाइ॥रंग रंग पराग उड़ि रहे छाइ ॥१०॥ पारावत कंचन से सुहाँइ ॥ रतननि की पैंजनी अरुण पांइ ॥ बने मुक्ता फल से चुञ्च नैंन॥पर मर्कत मणि से मधुर बैंन॥११॥ चुगैं हंस हंसनी सङ्ग पराग ॥ नाचैं जित कित केकी भरे राग ॥ कूजें कीर कोकिला भरे मोद ॥ बोलैं रङ्ग रङ्ग के खग करि विनोद ॥१२॥ बँगला की शोभा कही न जाइ ॥ मोतिन की जाली जग मगाइ ॥ राजें दंपति किशलय दलनि मैंन । खेलैं मिलि वसंत रस रूप ऐंन ॥१३॥ अति सुन्दर सरस तमाल स्याम ॥ तासों कनक लता सी लपटी भाम ॥ तामें लगे मनोहर फल उरोज ॥ दोऊ लेत सवादनि भरे मनोज ॥१४॥ फूले चरण कमल अरु कमल पान ॥ फूले नाभि कमल हृदै कमल जान ॥ फूले अमल कमल मुख स्याम गौर ॥ पीवें अलिनि नैंन अलि रस झकोर ॥१५॥ साजें पिचकारी दृग विवि किशोर ॥ भरे प्रीति रंग सों लखत कोर ॥ चलैं विशद कटाच्छनि की सु धार ॥ उड़ै हँसन अबीर सखी निहार ॥ १६ ॥ मिलि कुच की केसरि श्रम की वारि ॥ दोऊ रंगे रंगीले अति उदार ॥ बाजैं भूषण ताल मृदङ्ग चङ्ग॥गावैं श्रुति धुरि दंपति भरि अनङ्ग १७

वेसरि को मोती थरहराइ ॥ लट रुरत हार उर पर डुलाइ ॥१८॥ श्रवे वंदन श्रम जल मिलि सीमन्त ॥ रंगे चुम्बन सों कामिनी कन्त ॥ करैं परिरंभन सोइ लाग डाँट ॥ चलैं घातनि सों अप अपनें घाट ॥१९॥ ललितादिक सजनी लखि विलास ॥ वारति तन मन धन प्राण रासि ॥ यह नव निकुञ्ज को नित ही खेल ॥ यामें बढ़त परम आनन्द की बेलि ॥२०॥ जयश्री हित हरिवंश कृपा मनाइ ॥ कह्यौ महा मधुर रस प्रगट गाइ ॥ हित प्रेमदासि के यहै भाइ ॥ रह्यौ यह समाज नित चित में छाइ ॥२१॥७९॥

कोमल कंचन वेलि तमाल लाल सों खेलत आजु वसंत निरंतर लयें पराग गुलाल ॥ भरे भुजनि भुज सौरभ साखा नव पल्लव मृदु बसन आभरण फूले फूल रसाल ॥१॥ उरज अमृत फल परसत अंकुर रोमांचित भये दुहुनि विशाल ॥ प्रेमदासि हित पिय प्यारी के मोद बढ़ाइ करत विनती यों खेलिये जू नवल वाल ॥२॥८०॥

मेरी कुंवरि रंगीली रूप रासि । फूली वृन्दावन लौं करि प्रकास ॥ टेक ॥ नव नीलांवर सारी सुहात ॥ मानों कहुं दिसि रविजा जगमगात ॥ फूल्यौ विमल कमल मुख हेम रंग । मांख विलुलित लट मानों लुलित भृङ्ग ॥१॥ दृग भरे कटाक्षनि करत सोभ । मानों प्रगटित रस के रुचिर गोभ ॥ भ्रू उलहत अंकुर अमल अैन । नासा शुक कोकिल बदत बैंन ॥२॥ मधु अधर बिंव मृदु जुही हाँस । मन कुञ्ज सुगन्ध समीर स्वास ॥ फूलनि के भौंरा उर उरोज । तनु मौरयौ जोवन मथि मनोज ॥३॥ भुज बैंनी कनक सिंगार बेलि कर पल्लव रंगनि रहे भेलि

बरषावत सुन्दरि छवि पराग ।। लिये गात मराल आति रंगी राग ।। रस सींची प्रेम सहित बिसाल । तहि सेवत मधुरितु रुचिर लाल ।।५।।८१।।

खेलत वर वसंत पिय प्यारी प्राननि प्रान मिलायें। ये उनके रंग वे इनके रंग रंगे दोऊ रंग छाये ।। १ ।। ये गोरे तन सों प्रतिबिंबित छिरके केसरि ही सों । वे श्यामल तनसों प्रतिबिंबित सींचीं कस्तूरी सों ।।२।। ये उनके अनुराग भरे वर व्है रहे लाल गुलाल । वे इनके अनुराग भरत भई गुललाला सी बाल ।।३।। ये उनकी चंदन मय स्वासनि भये सुवासित मोहें । वे इनके चोवा मय स्वासनि भई सुबासित मोहे ।।४।। ये उनकी अंखियाँ पिच-कानि लखि भये नेह मय भारी । वे इनके दृग पिचक छूटत भई दुति की दुति सी न्यारी ।।५।। ये मुसकानि लखत बूका वे हँसन अबीर निहारैं । रीझि भींजि तन मन कों हारें खेलत खेलत हारैं ।।६।। रूप कला अरु हित वृति सजनी दुहुं दिसि रागनि राजैं । उनके इनके बैन मैंन मय मनों घूँघरू बाजैं ।।७।। प्रेम सहित आलि भई चित्र सी निरखि निरखि छवि जीवैं । रस रस में जो रस बाढ्यौ है ताही रस कौ पीवैं ।।८।।८२।।

रहसि रस राचे हो दंपति खेलत सरस वसंत । मृग मद केसरि तन छवि छिरकत हँसन अबीर लसंत ।। १।। रूप सनेह वृत्ति दुहुं दिसि अलि सूचत राग सैमंत ।। प्रेम सहित नूपुर धुनि वाजत वीन परम रस वंत ।।२।।८३।।

आयौ श्रीराधे जू बन ठन नटुआ सुंदर देन कों बन बसंत। होत चपल डारि तरु वल्लीनि की प्रफुलित त्रिविध समीर चलत लगि नाचत नृत्य कारी अनंत ।।१।। गावत कोकिल केकी बाजत

मुरज गुञ्जरत अन्ति हमनि की किलक मजीरा नाहिन अन्त प्रेमदासि हित अद्भुत औसर निरखहु छवि पिय सों मिलि हसंत ॥१॥८४॥

सुन्दर स्याम दुलारौ प्यारौ वृन्दाविपिन विराजै । गौर स्याम फूलनि सों फूल्यौ नित मधुरितु सों छाजै ॥ १ ॥ कनक कमल वर वदन विकासित नील कंज दृग दूजे । हँसन मंजरी पर अति मंजुल वचन कोकिला कूजे ॥२॥ चिबुक नृप फल के रस को अब नासा शुक झुक जो हैं । चलत मलय मारुत मृदु स्वासा मौरयौ आनन्द सोहै ॥३॥ प्रेम प्रसंग रोम रहैं ठाढ़ नव अंकुर विस्तारे । कंचन की कल बेलि भुजा जुग कर पल्लव रंग धारे ॥ ४ ॥ हेम रंभ ज्यों जंघ जग मगत पग गुलाब छवि छाई ॥ प्रेम सहित क्यों न होइ इते पर रसिक भंवर की नाईं॥५॥८५॥

राधे जू त्रिविधि समीर, कुंजर चढ़ि आयौ नृप रति पति मंत्री बसंत ॥ अलि गुंजनि होति डिंडिमी जुवती मान न करै कोऊ संग कंत ॥१॥ कुसुम बाण रह्यौ तानि धनुष धारि दुरगम तकत तव पिय कातर व्है धीर धरै कैसें लखि मय मंत ॥ प्रेम-दास हित हेम गिरि कुच में राख्यौ पियहि तुम हसंत ॥८६॥

प्यारी तेरौ तन आज फूल्यौ बसंत सुन्दर रूप रसाल । अरुण अधर पल्लव मुक्ता फल दसन हँसन मृदु मौर मंजरी झलकत अलक विशाल ॥१॥ नील कंज दृग भृकुटी अलि कल कुच कंचन फल भुज हेम डाल ॥ प्रेमदासि हित मधुप मौंवरो सेवत सबही काल ॥२॥८७॥

आयौ श्री राधे जू वन बसंत, फूले फूलनि के भौंरा अनंत। भूमि छबीली पर तव मगहित चितवनि रह्यौ बिछाइ कंत १ स्याम

तमालनि सों मिलि फूली कंचन बेलि अपार । तोहि कहत मानों पिय संग मिलि क्यों न फूलत अहो रंगीली नारि ॥२॥ नव किंशुकनि माल नव कलिकनि की पहिरीं झिल मिलत लाल । प्यारी क्यों न लसत प्रीतम के उर मे सहज तू रूप माल ॥३॥ त्रिविधि समीर चलत पहुपनि तें झरत पराग सु छवि निहार । मनों बसंत खेलत वल्ली अरु विटप उड़ाइ अबीर चारु ॥४॥ पी मकरंद भये मतवारे मधुप गुञ्जरत सोइ ॥ मनों मैन की फिरत दुहाई जुवति मान नहिं करै कोइ ॥५॥ मधु-माती कोइल जहाँ कुहुकत कुहू कुहू रसखान । मानों रति टेरत मनमथ कों सो ये दूति ठई छाड़ि मान ॥ ६ ॥ मुकुलित कलीं मालती मल्ली कानन महकि रही सुवास ॥ तव दरसन तें सकल खिलैंगी यहै हिये धर रहीं आस ॥७॥ मंथर गति चलि कुंवरि कुंज किशलय दल सैन विराजी आइ । श्याम राधिका मिलि सुख बाढ्यौ प्रेमदासि हित हियो सिहाइ ॥८॥८८॥

प्यारी तेरौ तन वसंत फूल्यौ रसाल ॥ कनक कमल मुख पर अलकावलि भ्रमत भ्रमर की माल ॥१॥ बेंदी बेलि लसत मोतिन की बैंना फूल सुचारु ॥ सीस फूल फल कुसुमित बेंणी फूली लता शृङ्गार ॥२॥ अरुणिम आड़ गुलाब फूल अलि बिंदु श्याम दृग कंज नील ॥ भृकुटी अंकुर मुसकनि मंजरी कोकिल कूजत जील ॥३॥ चिबुक नूत फल अधर अरुण दल सुन्दर नासा कीर ॥ श्रुति झूमक मोतिन के भौंरा सौरभ स्वास समीर ॥४॥ कंचन के बिवि ललित सदा फल कुच राजत नव रंग ॥ भुजा बेलि रसमय कर पल्लव सोभित रूप अभंग ।५ कदली कलित हेम के दोऊ जघन बने सुकुंवार चरण सु

अरविंदनि पर नूपुर भृङ्ग करत गुञ्जार ॥६॥ सुरङ्ग कंचुकी सारी पीत फव्यौ अतरौटा लाल ॥ वसन निकुञ्ज सुतन फुलवारी पियहि लखावहु वाल ॥७॥ झमकि रंगीली उर लपटानी बाढ़ी केलि अपार ॥ प्रेमदासि हित यह सुख निरखत प्राण करति बलिहार ॥८॥८६॥

खेलैं दंपति नैंननि में बसंत ॥ फूल रही फुलवार मदन की सींचत अमृत सुख अनंत ॥१॥ स्वेत अबीर गुलाल अरुणिमा चोवा अति कल स्याम ॥ छूटत मुठी मनोरथ भरि २ रंगे जुगल अभिराम ॥२॥ प्रीति पिचक अनुराग सुरंग भरि छूटत कटाछ नवीन ॥ कोरनि फेरति मुरि मुरि हेरत झेलत रसिक प्रवीन ॥३॥ गंधसार सीतलता तिनमें महा मधुर रस सार ॥ उमगि अली दोऊ गण राजत मद आसव कल चारु ॥४॥ डीठि रूप प्रीतम अरु प्यारी सुरस झूमि नृत्य कार ॥ पलक ताल-धुनि आवज ललकन गावति नित्य विहार ॥५॥ प्रेमदासि हित छवि सों झूमी प्यारी पिय भरि लई रसाल ॥ परिरंभन चुम्बन रस विलसत नवल रंगीले लाल ॥६॥६०॥

श्री कृष्णावती जी के पद—राग वसंत

वृषभानु कुंवरि खेलत वसंत । जहाँ राग रागिनी सुख अनंत ॥ टेक ॥ अरगजा कुम कुम विविधि रंग । तहाँ रतन खचित पिचकारी संग ॥१॥ जहाँ ताल मृदङ्ग बाजत निसांन । तहाँ खेलन निकसी सुख निधान ॥२॥ कंदुक नवलासिनि मची मार । जहाँ नील पीत पट नहिं संभार ॥३॥ जहाँ ललितादिक सखि करति बीच । तहाँ मृग मद साखि जवादि कीच ॥४॥ जहाँ फूल्यौ वन द्रुम बहु विधि अनन्त । तहाँ कूजत कोकिल

भंमर मंत ॥५॥ जहाँ नवल कुञ्ज में सुमन अभङ्ग । वलि कृष्णावति राधा रवन संग ॥६॥६१॥

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज के पद—राग बसंत

देखो प्यारी कुञ्ज विहारी मूरति वंत वसंत ॥ गौरी तरुणि तरुनता तन में मनसिज रस बरसंत ॥१॥ अरुन अधर नव पल्लव सोभा विहँसनि कुसुम विकास ॥ फूले विमल कमल से लोचन सूचत मन उल्लास ॥२॥ चल चूरन कुंतल अलि माला मुरली कोकिल नाद ॥ देखत गोपी जन वनराई मदन मुदित उनमाद ॥३॥ सहज सुवास स्वास मलया निल लागत सबनि सुहायौ॥ श्री राधा माधवी गदाधर प्रभु परमत मधु पायौ॥४॥६२॥

तेरी नवल तरुनता नव वसंत ॥ नव नव विलास उपजत अनंत ॥टेक॥ नव अरुन अधर पल्लव रसाल ॥ फूले विमल कमल लोचन विशाल ॥ चल भृकुटी भङ्ग भृङ्गनि की पांति ॥ मृदु हँसनि लसनि कुसुमनि की भांति ॥ १ ॥ भई प्रकट अलप रोमावलि मोर ॥ स्वासा सौरभ मलय पवन झकोर॥कल फल उरोज सुन्दर सुठांन ॥ बोलें मधुर मधुर कोकिला गांन ॥ २ ॥ देखत मोहे व्रज कुंवर राइ ॥ बाढ़्यौ मनमथ मन चौगुनो चाइ ॥ तोहि मिलि विलस्यौ चाहत है स्याम ॥ जाहि देखत लज्जित कोटि काम ॥३॥ तब चली चरन मंथर विहार ॥ बाजे झुनु झुनु नूपुर झङ्कार ॥ पुलकित गोकुल कुल पति कुमार ॥ मिलि भयौ गदाधर सुख अपार ॥४॥६३॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज के पद—राग बसंत

भयौ भर जोवन कौ वन सोभा निहारि । लता लह लहनि नेति नेति न गनत अलि लंपट दरसावत पिय सुसकत भोरी

त्यौंरो ढारि ॥१॥ केसरि भीनी झीनी ओढ़नी को अञ्चल चञ्चल अलवेली सकति न संभारि। सोंधे सनी वनी चोली तें छनी छटा लखि रीझि वाल पर लाल रह्यौ अपुन पौ हारि ॥२॥ कनक लतासों लपटि तरुनि लालन ललचाए भरत निसंक रंक अङ्क वारि। मदन राग हिंडोल झुलावत वल्लभ रसिक सहचरी गावति प्रेम विवस जानि लेति सुरत रंगै संवारि ॥३॥६४॥

रितु वसंत में लसंत मूरति दोऊ वैठे निकसि निकुंज बाग। ललित गुञ्ज मंजुल लतानि पर अलि पुञ्जनि की सुनि मुनि गुनिगुनि पुनि पुनि रस को चढ़त पाग ॥१॥ बौरे आंवनि चढ़ि चढ़ि बौरे जुग जुग व्है कुहकत कोकिल कुल रीझत सुनि कलरव विभाग। प्रफुलित गुल लाला की क्यारी, पवन लगत महकति लहकारी पिय प्यारी चष लगनि लाग ॥२॥ रंग रंग रतन सतन के कूजे जतननि गुल नरगस सों गसि गसि राषन विच राषनि मलाग। नवल लाल नव वाल परस्पर फूलि फूलि फूलनि के झौंरा राषे पेंचनि विच अलाग ॥३॥ लालन करन नरगस की डांडी अति इतराय धरत तिय उरपर अथ मनमथ उरहोतिजाग। वाला गुल लाला की वेंदी कर उचाइ धरि लाल भाल पर यों करत रंग दोऊ रम तड़ाग ॥४॥ ललिता ललित रंग रंग भीने लषि लाषि रीझी भीजी तान वजायौ है मधुर वसंत राग। रति रस झेली सवैं सहेली नव रङ्ग भीनें झीनें वागे रागे सुगल जुगल सुहाग ॥ ५ ॥ एकनि करनि बिच रंग रंग सीसी रतन पियालय लिये ससी सी हुलसीं अलि आनन्द याग। दसन अरुणाई वसन अरुणाई दसन वसन अरुणाई नई लषि पोहि लईं पिय प्रेम धाग ६ अलि संकुलित लता हलि

हलि नेति नेति कहति सीं रहनि सी थकि थाकि सिसकति दिप-वत अनङ्ग राग । आनन्द चिक दे दे आलिवेली के अधर कुसुम को अनुपम लंपट मधुप मीत सुसिकनि पराग ॥७॥ सोंधे सनी बनी चोली तें छनि छनि छवि की छटा छबीली छुवन अंत छलकयौ ऽनुराग । छलकि छलकि छलि छलि रति पति की छकनि छके लषि छिपि छिपि छिनु छिनु वल्लभ रसिक सपि चांप सभाग॥८॥९५॥

श्री परमानन्द दास जी महाराज के पद--राग वसन्त

खेलि खेलि हो लड़ैती राधा पिय के संग वसंत ॥ मदन गोपाल मनोहर मूरति मिल्यौ सांवरो कंत ॥१॥ कौन पुन्य तप कौ फल भामिनि चरन कमल अनुराग ॥ कमल नैन कमला को वल्लभ कंचन मिल्यौ सुहाग ॥ २ ॥ यह कालिन्दी यह वृन्दावन यह तरु वर की पांति ॥ परमानन्द स्वामी संग क्रीड़त द्यौस न जानैं राति ॥३॥९६॥

मोहन संग खेलनि फागु चली । चोवा चंदन अगर कुम कुमा छिरकति घोष गली ॥१॥ रितु वसंत आगम रति नायक जोवन भार भरी । देखन चली लाल गिरधर कों नन्द जू कें द्वार खरी ॥२॥ राती पीरी चोली पहिरें नौतन झूमक सारी । मुखहि तंबोल नैन भरि काजर देत सांवरी गारी ॥ ३ ॥ ताल पखावज बैन बांसुरी गावत गीत सुहाए । नवल गोपाल नवल व्रज बनिता निकसि चौहटें आए ॥४॥ देखहु आइ कृष्ण जू की लीला क्रीड़त गोकुल माहीं । कहत न बनें दास परमानंद यह सुख अनत कहाहीं ॥५॥९७॥

राधे देखि वन के चैन । भृङ्ग कोकिल शब्द सुनि सुनि प्रगट प्रमुदित मैन १ जहाँ बहत मंद सुगंध सीतल भामिनी

सुख सैंन। कौन पुन्य अगाधि को फल तू जो विलसत ऐंना॥२॥ लाल गिरधर मिल्यौ चाहत मोहन मधुरे बैंन। दास परमानन्द प्रभु हरि चारु पंकज नैंन ॥३॥६८॥

खेलत गिरधर रँग मगे रंग। गोप सखा बनि बनि आए हैं हरि हलधर के संग ॥ १ ॥ बाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ मुरली मुरज उपंग। अपनी अपनी फेंटन भरि भरि लिये गुलाल सुरंग ॥२॥ पिचकाई नीकें करि छिरकत गावत तान तरंग। उत आई व्रज वनिता बनि बनि मुक्ताफल भरि मङ्ग॥३॥ अचरा उरसि फेंट कंचुकी कसि राजत उरज उतंग। चोवा चंदन वंदन ले मिलि भरत भामते अङ्ग ॥४॥ किशोर किशोरी दोऊ मिलि विहरत इत रति उत ही अनङ्ग। परमानन्द दोऊ मिलि विलसत केलि कला जु निसंग ॥५॥६६॥

खेलत मदन गोपाल बसंत। नागर नवल रसिक चूड़ामनि सविधि राधिका कंत॥१॥नैंन नैंन प्रति चारु विलोकन वदन वदन प्रति सुन्दर हास। अङ्ग अङ्ग प्रति प्रीति निरंतर रति आगम नि सजाइ विलास ॥२॥ बाजत ताल मृदङ्ग अधोटी डफ बांसुरी कुलाहल केलि। परमानन्द स्वामी के संग मिलि नाचत गावत रंग सु रेलि ॥३॥१००॥

श्री चतुर्भुज दास जी महाराज कृत—राग बसंत

गावत चली बसंत बधाये नंदराय दरबार। बानिक बनि ठनि चोंप सोंप सों व्रज जन सब इक सार ॥१॥ अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उर हार। बैंनी सिथिल डुलत नितंबांन कहा कहों वडडे वार। मृग मद आड़ वडडे अखियाँ आँजी अञ्जन पूरि। प्रफुलित वदन हँसन दुलरावन मोहन जीवन

मूरि ॥ ३ ॥ पग जेहरि केहरि कटि किंकिनि सुनत मगन भयौ मार । घोष घोष प्रति गलिन गलिन में बिछुवन के झनकार ।४। कनक कुंभ सीसनि पर लीने मदन सिंधु ते भरि कें । ढांपे पीत वसन रस जतननि मौर मंजरी धरिकें ॥५॥ अबीर गुलाल अरगजा सौधौं विधि न जात बिस्तारी । सैंन सैंन जौनार देन कों कमलन कमलनि थारी ॥६॥ पहुंची है गृह नंद महर के वनि जुवति समुदाई । निज मंदिर तें निकसि यशोमति सुनत मन-सुखै आई ॥ ७ ॥ भई भीर भीतर भवनन में जहाँ ब्रजराज किशोर । भरत भाँवते प्रान प्रिया कों घेरि फेरि चहुं ओर ॥८॥ ब्रजरानी जब मुरि मुसिक्यानी पकरन कों जब करकीं । संग सखी लै नैंन सैंन दै बतियनि मिस उत सरकीं ॥६॥ कुंम कुंम रंग सों भरि पिचकारी छिरकें जे सुकुमारी । वरजत छींटें जात द्रगन में धनि वे पोंछन हारी ॥ १० ॥ चंदन वंदन चोवा माथ कें नील कंज लपटावें । सिथिलित अलक पाग सिथलानी वेई फिर बांधि बनावें ॥ ११ ॥ भरत निसंक भरे अँकवारी भुजन बीच भुज मेलें । उनमद ग्वाल वदत नहीं काहू झेलन खेलन रस रेलें ॥१२॥ कियौ रँग मगो ललित तृभंगी भयो ग्वालनि मन भायौ । टक झक सों लै एकही विरियां लालन कंठ लगायौ ॥१३॥ ताल मृदङ्ग लीयें श्रीदामा पहुंचे आय सहाई । हलधर सुबल तोक मधु मंगल अपनी भीर बुलाई ॥१४॥ खेल मच्यौ मनि खचित चौक में कवि पै कहा कहि आवें । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरन लाल छवि देखैं ही बनि आवें ॥१५॥१०१॥

श्री कुम्भनदास जी कृत—स्याम सुभगतन सोभित छींटें नीकी लागी चदन की मंडित सुरंग अबीर कुम कुमा अरु सुदेस

रज वंदन की ॥१॥ कुंभनदास मदन तन मन बलिहारि कीयौ नंद नंदन की ॥ गिरधर लाल रची विधि मानों जुवती जन मन फन्दन की ॥२॥१०२॥

श्री गोविन्द प्रभु जी कृत—आज बनी है रसिक राधिका बाल। मानहु मदन गज परी है ढ़ाल ॥टेक॥ चंदन चर्चित कच तिलक भाल। बिबि नैंन महावत करत ख्याल ॥ देख खुभी प्रीति सेत लाल। सचि मृदु प्रस्वेद रुचि अमित गाल ॥ १ ॥ कुच कुंभ कुंभ स्थल भल सुढ़ाल ॥ भुज दण्ड सुंड कोमल मृनाल ॥ मुषरित नूपुर रसना रसाल ॥ एई घंटा किंकिनि जाल माल ॥२॥ नंद सुवन रन फिरत मत्त ॥ तोरि संकल सकल दुरत्त ॥ कुल सर लज्जा जल निगम सेत ॥ भजत गोविन्द प्रभु मिलत हेत ॥३॥१०३॥

श्री सूरदासजी महाराज के पद–राग वसंत

राधे आजु बन्यौ वसंत ॥ मानहुं मदन विनोद विहरत नागरी नव कंत ॥ १ ॥ मिलन सनमुख पाटली पट परत मन जिहि बेलि ॥ प्रथम समागम करन मेंदिनी कचनि गुहीं सहेलि ॥ २ ॥ केतुकी कुच कलस कंचन गरें कंचुकी फसी ॥ मालती मद बलित लोचन निरषि मृदु मुख हँसी ॥ ३ ॥ विरह व्याकुल कुमुदिनी कुल भई बदन विकास ॥ पवन परिमल सहचरी पिक गान दोऊ लास ॥ ४ ॥ उत सखा चंपक चतुर कुल अति सरस कदंब तमाल ॥ मधुपनि की माला मनोहर सूर श्री गोपाल ॥५॥१०४॥

देखौ वृन्दावन श्री कमल नैंन ॥ आयौ आयौ हैं मदन गुन गुदर दैंन ॥टेक॥ नव द्रुम दल भुवन अनेक रंग प्रति

ललित लता संकुलित संग ॥ कर धरे धनुष कटि कसे निषंग ॥ मनों बने है सुभट साजे कवच अङ्ग ॥१॥ लिये सुगन्ध वाम अति मलय बात ॥ रुचि राजत विपुल विलोल पात ॥ धपि धाइ धरति छवि तुरंग गात ॥ अति तेज वसन बाने उड़ात ॥२॥ कोकिल कुञ्जर हय हंस मोर ॥ रथ मैल मिला पद चर चकोर ॥ धुज पताक तरु तार कोरे ॥ निर्झर निसान बाजें भँवर भोर॥३॥ सूरदास इमि बदति बाल ॥ आयो काम कृपन शिव क्रोध काल ॥ फिर चितय चपल लोचन विशाल ॥ अब अपनो करि थपिये गुपाल ॥४॥१०५॥

ऐसो पत्र पठायो रितु वसंत ॥ तजहु मान मानिनि तुरन्त ॥टेक॥ कागद नव दल अंब पात ॥ दोति कमल मसि भंवर गात ॥ लेखन काम के बान चाप ॥ लिखि अनंग ससि दई है छाप ॥१॥ मलया निल पत्र पढ्यो विचारि ॥ बांचत शुक पिक सुनहु नारि ॥ सूरदास क्यों बने आनि ॥ हरि भज राधे तजि अयानि ॥२॥१०६॥

देखत नव ब्रजनाथ आज अति उपजति है अनुराग । मानहुं मदन बसंत मिले दोऊ खेलत फिरत हैं फाग ॥१॥ द्रुम गन मध्य पलास मंजरी उठति अगनि की नांई । अपनें अपनै मेर मनों ए होरी हरषि लगाई ॥२॥ केकी केक कपोत अवर खग करत कुलाहल भारी । ज्यों जल ज्वालनि पास परस्पर देति दिवावति गारी ॥३॥ लीनें पहुप पराग पवन कर फिरत चहूँ दिसि धायो । रस अनरस विरहनि संजोगिनि भरि छिड़कनि करि आयो ॥४॥ नव दल कुसुम अनेक बरन बर विटपनि वेष धरे जनो रितु राजा राज सभा में हसि बहु रगनि भरे

झिल्ली झलरिनि झर-निसान डफ भरे भँवर गुञ्जार। मानहुं मदन चल्यौ जुरि वीथिनि विविधि विलास विहार॥६॥प्रफुल्लित लता जहाँ देखत अलि तहीं तहीं चलि जात। देखत विटप सबै लाजति हैं देखत गनिका गात॥७॥कुञ्ज कुञ्ज कोकिला वनी कमनीय विमल अति चढ़ीं। जमुना कूल बधू बिलज भईं अति गावति अटनि चढ़ीं ॥८॥ कहौ कहां लौं कहूँ कृपा निधि वृन्दाविपिन समाज। सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त स्याम तुम्हारे राज ॥६॥१०७॥

पिय प्यारी खेलें जमुना तीर ॥ भरि केसरि कुम कुमा अबीर ॥टेक॥ घसि मृग मद चंदन अरु गुलाल ॥ रंग भीनें अरगजा वस्त्र माल ॥ कूजित कोकिल कल हंस मोर ॥ ललितादिक स्यामा ऐक ओर ॥ १ ॥ वृन्दादिक मोहन लई जोर ॥ बाजे ताल मृदङ्ग रबाव घोर ॥ हरि हँसि कै गेंदुक दई चलाइ ॥ मुख पट दै राधे गई बचाइ ॥ २ ॥ ललिता पट मोहन गह्यौ धाइ ॥ पीतांबर मुरली लई छिनाइ ॥ हौं तौ सप्त करौं छाड़ों न तोहि ॥ श्री स्थामां जू आज्ञा दई मोंहि ॥३॥ तब निजु सहचरि आई वसीठ ॥ सुनरी ललिता तुम करौ न ढीठि ॥ पट छांड़ि देहि तू नवकिशोर॥छवि रीझि सूर त्रृन दीयौ तोरि।४।१०८।

खेलत बाल गोपाल लाल सों मुख मूंदैं मन खोलैं ॥ यों पट ओट वदन राजत मानों बिधु बादर कैं ओलैं ॥ टेक ॥ चिकने चिकुर छुटे बैंनी तें भीजें बसन में डोलैं ॥ मानों कुटुंम सहित कालिंदी काली करत कलोलैं ॥ १ ॥ बेसरि को मुकता इम राजत अति छबि देत अमोलैं ॥ मानों नूत मंजरी लै कैं कीर करत मरगोलैं ॥ २ ॥ भृकुटि कुटिल कुरंग चपल चख

[illegible]

चढ़ायौ सो लैं ॥३॥ हरषत बरषत मन मोहन मंग मौधें रंग अतोलैं । मुरि दै चलीं गवांरी गारी हो हो हो कहि होलैं ॥४॥ खेलत फागु चले बंशीवट इन्दु थकित भयौ भोलैं ॥ सूरदास प्रभु तन मन वारों वृन्दावन की कोलैं ॥५॥१०६॥

मन के मोहन ललना लाल खेलैं वसंत सरस रितु आई ॥टेक॥ ससि सुमेर तजि गयौ सिंधु दिसि रवि उत्तर दिशि आयौ ॥ अति रस भरी कोकिला बोलै विरहनि विरह जगायौ॥१॥ दिसि दिसि तें वन मोर सु बोलैं चहूँ दिसि केसू फूले॥मौरे अंब सकल द्रुम बेली मधुकर परिमल भूले ॥२॥ चोवा चंदन अगर कुम कुमा भरि छिरकत पिचकारी ॥ उड़त गुलाल मनौं दिन सों भई निसि सुरँगित उजियारी ॥ ३॥ इहि विधि होरी खेलइं दंपति वृन्दाविपिन विहारी ॥ प्रथम बसंत पंचमी पूजा सूरदास वलिहारी ॥४॥११०॥

मोहन वदन विलोकत अँखियनि उपजत है अनुराग ॥ तरनि तपत तलफत चकोर ससि पिवत पियूष पराग ॥१॥ लोचन नलिन नये राजत रस पूरे मधुकर भाग ॥ मानहुं अलि आनन्द मिले मकरन्द पीवत रितु फाग ॥२॥ भंवरी भाग भृकुटी पर चंदन बंदन बिंदु विभाग ॥ ता तकि सीप सक धनु घन मैं निरखि लज्यौ वैराग ॥ ३ ॥ कुंचित केस मयूर चंद्रिका मंडित कुसुम सु पाग ॥ मानहुँ मदन धनुष कर लीनें बरखत है वन बाग ॥४॥ अधर बिंब तें अरुन मनोहर मोहन मुरली राग ॥ मानहु सुधा पयोधि घोरि वर ब्रज पर बरषन लाग॥५॥ कुण्डल मकर कपोलनि झलकत श्रम सीकर के दाग मानहु मीन

मुसिकांवनि मोहत सुर नर नाग ।७।। श्री गोपाल रस रूप भरी ये सूर .सनेह सुहाग । मानहुं सोभा सिंधु बढ्यौ अति इनि अँखियनि के भाग ।।८।।१११।।

श्री सूरदासमदनमोहनजी महाराज के पद—राग बसंत

जोवन मौरयौ रोमावलि वल्ली यों फल फली कंचुकी वसन ढांपि लै चली बसंत पूजन ।। वरन वरन कुंज प्रफुलित री नव पल्लव द्रुम उलहे लागीं वरी कोकिला कूँजन।।१।।सकल सुगन्ध संवारि अरगजा गावति रितु राज राग चलीं ब्रज बधू जन ।। सूरदास मदन मोहन प्यारे और प्रिया सहितचाहति कुशल सदा दूजन।११२

श्री राजाराम जी कृत—प्यारी के पाइन परि कह्यौलाल चलि खेलिये वसंत ।। मान पत्र झारि करि डार प्रीति कोंप उलहंत ।१। मनोज बेलि उलहि चढ़ावति अधर नव पल्लव वचन रचन पुहुप वंत ।। तब हँसि बोली भलें जु भलें आये राजा राम प्रभु अलि मंत ।।२।।११३।।

श्री जयदेवजी महाराज के पद—राग बसंत

ललित लवंग लता परि शीलन कोमल मलय समीरे ।। मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ।।१।। विहरति हरि रिह सरस वसंते ।। नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहिजनस्य दुरंते ।।टेक।। उन्मद मदन मनोरथ पथिकवधूजन जनित विलापे ।। अलि कुल संकुल कुसुम समूह निराकुल वकुल कलापे ।।२।। मृग मद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ।। युव जन हृदय विदारण मनसिज नख-रुचि किंशुक जाले ।।३।। मदन महीपति कनक दंड रुचि केशर कुसुम

विकासे ॥ मिलित शिली मुख पाटलि पटल कृत स्मर तूण विलासे ॥४॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृत हासे ॥ विरहि निकृन्तन कुन्त मुखाकृति केतकि दंतुरि तासे॥५॥माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगंधौ ॥ मुनि मनसा मपि मोहन कारिणि तरुणा कारण बंधौ ॥ ६ ॥ स्फुरदति मुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ वृन्दावन विपिने परिसर परि गत यमुना जल पूते ॥७॥ श्री जयदेव भणित मिद मुदयति हरिचरण स्मृति सारम् ॥ सरस वसंत समय बन वर्णन मनुगत मदन विकारम् ॥८॥११४॥

श्री प्रबोधानन्द सरस्वती जी कृत अष्टपदी— वसंत श्री वृन्दावन की शोभा

अद्भुत सुरभिसमयमहजोदयमधुरलता तरु जालम् । नव मकरंद महाद्भुत परिमल मत्त विचलदलि मालम् ॥१॥ वंदे वृन्दा विपिन मसंदम् । प्रेम महा रस वेग विजृंभित मदन महोत्सव कंदम् ॥ध्रुव॥ विकसद शोकवकुल कुल चंपक माधविकाभिरनूनम् । सह निज वल्लभया व्रजनागरलून विचित्र विसूनम्॥२॥ ललित कलिंदसुता लहरी कृत मृदु मृदु शीकर वर्षम् । तुमुल रति श्रमितालसतनुवर रसिक मिथुन कृत हर्षम् ॥ ३ ॥ अद्भुत रस सरसीलसदुपदल मुकुलित कनक सरोजम् । प्राण समातुल लोचन संस्मृति कृत हरिचित्र मनोजम् ॥४॥ आम्लान कुसुम घटित मधु भाजन मंजुल कुंज कुटीरम् । राधा माधव नव रति लीला गान मुदा कुल कीरम् ॥५॥ कुसुमित मुकलित कल्पलतावृत सुरतरु कृत परिभागम् । विविध मणीवृत भूतलनि पतित नव कर्पूर परागम् ॥६॥ शिखि कुल नटन मुराचाकर्तन्चण पिक पंचम कृत शोभम् । प्रेम सुधाम्बुधि दोलित खग

पशु संग महामुनि लोभम् ॥७॥ नील तमाल वनांतरनिलयन्न कौतुकि पिच्छवतंसम् । परिमल हर मृदु मलयानिल भरकृत राधा पथ शंसम् ॥८॥ ललित कदंब तले धृत भंगिम मोहन वादन वंशम् । निरवधि निज सुख सार रसोन्मद हरिकृत परम प्रशंसम् ॥६॥ प्रिय रस मत्त सरस्वति वर्णित वृन्दावन महिमानम् । पिवत वुधाः श्रवणेन सुधारस सारमुदाकर गानम् ॥१०॥११५॥

अष्टपदी-श्री लाल जी की शोभा वर्णन--मदशिखि पिच्छ मुकुट परिलाञ्छित कुंचित कचनि कुरंबे । मुखरित वेणु हतत्र पधातिव नवनव युवति कदंबे ॥१॥ वसतु मनो मम मदन गोपाले । नव रति केलि विलास परावधि राधा सुरत रसाले ॥ध्रुव०॥कलित कलिंद सुता पुलिनोज्ज्वल कल्प महीरुह मूले । किंकणि कलरव रंजित कटि तट कोमल पीत दुकूले ॥२॥ मुरलि मनोहर मधुर तराधर घन रुचि चोर किशोरे । श्री वृषभानु कुमारी मोहन रुचि मुख चन्द्रचकोरे ॥३॥ गुञ्जाहार मकरमणि कुण्डल कंकण नूपुर शोभे । मृदु मधुरस्मित चारु विलोकन रसिकवधूकृत लोभे ॥४॥ मत्त मधुव्रत गुञ्जित रञ्जित गल दोलित वनमाले । गंधोद्वर्त्तित सुवलित सुन्दर पुलकित वाहु विशाले ॥५॥ उज्वल रत्न तिलक ललितालिकसकनक मौक्तिकनामे । शारद कोटि सुधा किरणोज्ज्वल श्रीमुख कमल विकासे ॥६॥ ग्रीवा कटि पद भंगि मनोहर नव सुकुमार शरीरे । वृन्दावन नव कुञ्ज गृहान्तर रति रण रंग सुधीरे ॥७॥ परिमल सारस केशर चंदन चर्चित तरल सदंगे । परमानन्द रसैक घनाकृति प्रहरदनंगतरंगे ॥८॥ पद नख चंद्र मणिच्छविलज्जित मनसिज कोटि समाजे । अद्भुत केलि विलास विशारद व्रज पुर नव युवराजे॥६। रसद सरस्वति वर्णित

माधव रूप सुधा रस सारे । रमयत साधुबुधा निज हृदयं भ्रमथ मुधा किम सारे ॥१०॥११६॥

अष्टपदी—श्री प्रिया जू की शोभा वर्णन—वरसीमंत रसामृत सारिणि धृत सिंदूर सुरेखाम् । श्रीवृषभानु कुलाम्बुधि संभव सुभग सुधाकर लेखाम् ॥१॥स्मरति मनो मम निरवधि राधाम् ॥ मधुपति रूप गुण श्रवणोदित सहज मनोभव बाधाम् ॥ध्रु०॥सुरुचिर कवरि विराजित कोमल परिमल मल्लि सु मालाम् । मद चल खंजन खेलन गंजन लोचन कमल विशालम् ॥२॥ मद करि राज विराजदनुत्तम मणित ललित गति भङ्गीम् । अति सुकुमार कनक नव चंपक गौर मधुर मधुराङ्गीम् ॥३॥ मणि केयूर ललित वलयावलि मंडित मृदु भुजवल्लीम् । प्रति पदमद्भुत रूप चमत्कृति मोहन युवति मतल्लीम् ॥४॥ मृदु मृदु हास ललित मुख मंडल कृतशशिबिंब विडंबाम् । किंकिणि जाल खचित पृथु सुन्दर नव रस राशि नितम्बाम् ॥५॥ चित्रित कंचुलिकास्थगितोद्भट कुचहाटक घट शोभाम् । स्फुर दरुणाधर सीधुसुधारस कृत हरि मानस लोभाम् ॥६॥ सुन्दर चिबुक विराजित मोहन मेचक बिंदु विलासाम् । सकनक रत्न खचित पृथु मौक्तिक रुचि रुचिरोज्ज्वल नासाम् ॥ ७ ॥ उज्ज्वल राग रसामृत सागर सारतनु सुख रूपाम् । निपतित माधव मुग्ध मनो मृगनाभि सुधारस कूपाम् ॥८॥ नूपुर हार मनोहर कुण्डल कृत रुचि मरुण दुकूलाम् । पथि पथि मदन मदाकुल गोकुलचन्द्र कलित पद मूलाम् ॥९॥ रसिक सरस्वति गीत महाद्भुत राधा रूप रहस्यम् । वृन्दावन रस लालसमनसामिदमुपगेयमवश्यम् ॥१०॥११७॥

श्री विट्ठलनाथजी कृत अष्टपदी—हरि रिह व्रज युवतीशत संगे

विभ्रम संभ्रम लोल विलोचन सूचित संचित भावम् कापि द्रगंचल कुवलयनिकरै रंचित तं कल रावम्। १॥ स्मित रुचि रुचिरतरानन कमल मुदीक्ष्य हरे रति कंदम् ॥चुंवति कापि नितंब वती करतल धृत चिवुक ममंदम् ॥२॥ उद्भट भाव विभावित चापल मोहन निधुवनशाली। रमयति कामपि पीन घन स्तन विलुलित नव वनमाली ॥३॥ निज परिरंभ कृतेनु द्रुतमभिवीक्ष्य हरिं सविलासम्। कामपि कापि वलादकरोदग्रे कुतुकेन हासम् ॥४॥ कामपि नीवीवंध विमोचन संभ्रम लज्जित नयनाम्। रमयति संप्रति सुमुखि वलादपि करतल धृतनिजवसनाम् ॥५॥ प्रिय परिरंभ विपुल पुलकावलि द्विगुणित सुभग शरीरा। उदगायति सखि कापिसमं हरिणा रति रणधीरा ॥६॥ विभ्रम संभ्रम गलदंचल मलयां चितमङ्गमुदारम्। पश्यति सस्मित मति विस्मित मन साधुदृशः सविकारम् ॥ ७ ॥ चलति कयापिसमं सकर ग्रह मलसतरं सविलासम्। राधे तव पूरयतु मनोरथ मुदितमिदं हरि रासम् ॥८॥११८॥

श्री हरिजीवन जी कृत—श्री पंचमी परम मङ्गल दिन मदन महोत्सव आज। वसंत वनाय चली व्रज सुन्दरि ले पूजा को साज ॥१॥ कनक कलश जल पूर पढ़त रति काम मंत्र रस मूल। तापर धरी रसाल मञ्जरी राजत पीत दुकूल ॥२॥ चोवा चंदन अगर कुंकुमा नव केसर घन सार। धूप दीप नाना निरांजन विविध भांति उपहार ॥३॥ वाजत ताल मृदङ्ग मुरलिका वीना पटह उपंग गावत राग वसंत मधुर सुर उपजत तान

गुपाल। मानों सुभग कनक कदली मधि सोभित तरुन तमाल ॥५॥ यह विधि चली रति राज वधावन सकल घोष आनन्द। हरि जीवन प्रभु गोवर्द्धन धर जय जय गोकुल चंद ॥६॥११६॥

श्री विष्णुदास जी कृत—ऋतु वसंत तरु लसंत मन हसंत कामिनी भामिनी सब अङ्ग अङ्ग रमत फाग री। चर्चरी अति विकट ताल गावत संगीत रसाल उरप तिरप लास्य तांडव लेत लागरी ॥१॥ वंदन बूका गुलाल छिरकत तकि नैंन भाल लाल गाल मृगज लेप अधर दागरी। गिरवरधर रसिक राय मेचक मुदरी लगाय कंचुकी पर छाप दीनी चकित नागरी ॥२॥बाजत रसना मंजीर कूजत पिक मोर कीर पवन भीर जमुना तीर महल बागरी। विष्णुदास प्रभु प्यारी भेटत हसि देत नारी काम कला निपट निपुन प्रेम आगरी ॥३॥१२०॥

श्री नन्ददासजी महाराज के पद—सखी नव नंद नंदन रुचिर रूप॥नवल नागरी गुन अनूप॥टेक॥नव नेह नई रुचि नव विलास। नव रूप मनोहर मंद हास॥ नव पीत वसन पहिरें त्रिभंग॥ नीलांबर सारी गौर अङ्ग॥ नव पहुपन वल्ली कुञ्ज धाम ॥ नव वृन्दावन सुख अभिराम ॥ नव नूत मञ्जरी अति विशाल ॥नव पल्लव दल मानों प्रवाल ॥ नव कोकिल कूजत अति सुहाइ ॥ तहाँ नव मलयानिल त्रिविधि बाइ ॥ जहाँ नव मंडली सखी आस पास ॥ तहाँ नव सुख निरखत नंददास ॥१२१॥

चली है भरनि गिरधरन लाल कों बनि बनि अन गन गोपीं। उबटे हैं उबटन नवल चपल तन मनहुं दामिनी ओपीं॥१। पहिरें विविध वसन सुठि भूषन करनि कनक पिचकाई। चितवनि बंक बड़ी बड़ी अँखियाँ मानहु अरग लगाई २ छिरकत

चलीं गलीं गोकुल कीं कहि न परति छवि भारी। उड़ि उड़ि चंदन बूका वंदन आरि गए अटा अटारी ॥३॥ सघनु सहित सजि साँवरे सुन्दर सुनत सनमुखे आए। मनों अम्बुज वन वास विवस कें अलि लंपट उठि धाए ॥४॥ हरि कर पिचका निरखि तियनि के लोचन छवि सों डराहीं। खंजन से उडि चले है मानहुं ढरकि मीन ह्वै जाहीं ॥५॥ पहिलें कान्ह कुंवर पिचकारी ताकि तियनि पर मेली। मानों सोंम सुधा कर सींची नवल प्रेम की बेलीं ॥६॥ दुरि मुरि भरनि वचावनि छबि सों आवनि उलटनि मोहैं। डोलनि अवीर गुलाल घुमड़ि में सो को जो देखि न मोहे ॥७॥ बिच बिच छुटत कटाच्छ कुटिल सर उचटि ऊल कोऊ लागी। मुरझि परयौ जहाँ मैंन महाभट रति भुज भरि लै भागी ॥८॥ पिय के अङ्ग अङ्ग तियनि के लोचन लुब्धे है छवि की लोभा। मानों हरि कमलनि कर पूजे बनी अनूपम सोभा ॥९॥ या होरी की अद्भुत लीला सब काहू ब्रज प्यारी। परम प्रेम को प्रगट उदो जहाँ नन्ददास वलिहारी॥१०॥१२२॥

श्री रामराइजी कृत—खेलि खेलि हो लड़ैती राधे तोकों फब्यौ है वसंत ॥ सुनि हो भामिनि दामिनि सी तें पायो स्याम घन कंत ॥१॥ जमुना तट यह श्री वृन्दावन परम अनूपम ठाँउ ॥ कुंजनि कुंजनि केलि करो ह्यां सुबस बसौ बलि जाँउ ॥२॥मदन गोपाल लाल रसिया कौ रस तैं ही लै जान्यौ ॥ अपनौ मन अरु वा मोहन कौ एक मेक करि सान्यौ ॥३॥ राजत है गुलाल घूँघरि में स्याम अङ्ग लपटानी ॥ कहें भगवान हित राम राय प्रभु यह छवि हृदै समानी ॥४॥१२३॥

प्रफुलित वन मन आनन्द उलह्यौ औसर रच्यौ है एकन्त ॥१॥ मरकत मनि छवि अङ्ग अङ्ग कौतुक वन्यौ है मनोहर कंत ॥ कुंदन की सी मूरति गोपी अभरन भरी है अनन्त ॥२॥ वरन वरन कल झूमक सारी मनों रूप हुलसंत ॥ प्रतिबिंबित सब सांवरे तन में दामिनि सी दरसंत ॥३॥ चौवा चंदन अगर कुमकुमा मनहु प्रेम वरसंत ॥ बूंदें मङ्गल की छवि पावें भीजत हैं भगवंत ॥४॥ वाजत ताल मृदङ्ग झांझ डफ मनों मेघ गरजंत ॥ कोह भगवान हित रामराय प्रभु मूरति मधुर हसंत ॥५॥१२४॥

श्री गोकुलविहारी जी के पद—गुरुजन में ठाड़े दोऊ प्रीतम सैंननि खेलें होरी ॥ नैंननि ही कहें नैंन परस्पर परम रसिक वर जोरी ॥१॥ पिचकाई दृग छींट कटाछनु डार अरुन रंग रोरी ॥ छिरकति छवि सों छैल छवीले कुंवर छवीली गोरी ॥२॥ दसनि तंवोल लसत रंग भीनी हँसि निरखति पिय ओरी ॥ मानों सुरंग गुलाल उड़ावति सुन्दर नवल किशोरी ॥३॥ छुटी अलक वदन पर राजति वरनि सकैं कवि कोरी ॥ मानहु कनक कुरी चोआ की कुंवरि सीस पर ढोरी ॥४॥ कठिन उरोजन गाढ़े कंचुकी अञ्चल ओटि अगोरी ॥ संकति कंदुक जानि रसिक पिय नैंन निमेष न मोरी ॥५॥ ललितादिक लखि पाई तबै गिरधर प्यारी की चोरी ॥ गोकुल विहारी को मुख निरखति प्रेम समुद्र झकोरी ॥६॥१२५॥

श्री श्रीभट्ट जी महाराज कृत—आयौ रितु राज वसंत हित भयौ हिय कौ ॥ अव मिलि मंगल विमली खेलौ, मान विरह गयो जिय कौ ॥टेक॥ चित में चाह उछाह वढ़ावौ सहज संग भयो पिय कौ ॥ श्री भट कूट कोप करि नागरि दीप जगयो घी कौ १२६

कान्ह नवल सब गोपी निर्त्तत एकै तून टेक नवलहिं साषि जवादि कुम कुमा नवलहिं बसन अमूल नवलहिं छीट बनी केसरि की मेटत मनमथ सूल ॥ १ ॥ नवल गुलाल उड़ै रङ्ग बूका नवल पवन के झूल ॥ नवलहिं बाजे बाजै श्री भट कालिंदी के कूल ॥२॥१२७॥

(चाचा) श्री वृन्दावनदास जी कृत–श्री गोवर्द्धन की खेल

गिरि पै सखी कौतिक देखि आज । रितुराज सदेह वन्यौ समाज ॥ टेक ॥ तरु मौरे तरुन खिलार फाग । वंदन फेंटनि कुसुमनि पराग ॥ दरसत फूले मनु खेल लाग ॥ कै प्रेम नृपति कौ रूप वाग ॥१॥ भंवरी गुञ्जत मकरंद पान । देखौ वेलि वधू कियौ करत गान ॥ झुकै पवन परसि आनन्द मानि । भरें झूमक खेल वसंत जानि ॥२॥ ना ना रंग सुमन सजें सिंगार । लपटी कंतनि उर भई हैं हार ॥ परवत पर कमनी करें विहार । यह धनि वसंत मंगल सुचार ॥३॥ तहाँ खेल रच्यौ व्रज पति कुमार । राधा नव दुलहिनि सखी लार ॥ वाजे वाजत मुदित जु खिलार । चरचें तन सरस सुगंध सार ॥४॥ रागनी राग मूरति जु वंत । आये देन जुहारी रितु वसंत ॥ मीनध्वज रचें कला अनंत । ताहि रीझि निवाजत राधा कंत ॥५॥ वंदन धूंधरि मंडित अकास । गुञ्जत अलि तहाँ लै लै सुवास ॥ गहि गहि मुख माड़ें करें हास । फूल्यौ रूप वाग सखी राजें पास ॥६॥ गिरि गोवर्द्धन कौतुक जु एह । खेलें दंपति भीजे सनेह ॥ रस केलि रचें छिप लता ग्रेह । यह भूरि भाग्य सुख सजनी लेह ॥७॥ व्रज को रस सब तें अति गरिष्ट कहा करों प्रशंस माधुर्य

मिष्ट ॥ समुझत जु रसिक भावक वलिष्ट । सेवत पद श्री हरिवंश इष्ट ॥८॥ गिरिराज भाग कहा कहों और । जाकों अति प्रिय मानत स्याम गौर । रस लीला की एकांत ठौर । होइ कहत सारदा मति जु बौरि॥९॥वृषभानु सुता सुत नंद ईश । बांधे फागु सेहरे सीस ॥ वृन्दावन हित नित दै असीस । हित रूप सुधन यह विसे बीस ॥१०॥१२८॥

श्री राधाकुण्ड कौ खेल—खेलत बसंत श्री कुंड पास । संगम लखि बाढ़ति हिय हुलास ॥ टेक ॥ गोरी गजें सर गौर तीर । सर स्याम कूल साँवल सरीर ॥ चोंपनि भरे चंदन खेल भीर । अनुराग ढांपि लियौ मनहु नीर ॥१॥ यह निरखि मन बढ़तु मोद । डारत गुलाल भरि भरि जु गोद ॥ दोऊ खेल विचक्षन करें विनोद । कौतूहल माच्यौ दुहु कोद ॥२॥ मुसकानि अधर लसें सुख मयंक । चलें धाइ लचकत जु लंक ॥ छल बल कोविद उर भरें निसंक । आनन लेपन केशरि की पंक ॥३॥ बाजै बाजे रचें छंद गीत । आगम सुखदाई मदन मीत ॥ झूमक देहिं सहज बढ़ें सप्रीत । अपनी अपनी दोऊ चहत जीत ॥४॥ बरनों बसन्त मङ्गल सुचार । सोहनी भूमि हद जहाँ विहार॥ गावौ जु रसिक जन वार वार । लह्यो श्री हरिवंश प्रसाद सार ॥५॥ तन मन उरझे नाहिं तजन ठौर । हित रूप रसिक जन सिर सु मौर ॥ अनुरागी मांचे स्याम गौर । वृन्दावन हित अस कहां और ॥६॥१२९॥

श्री मानसरोवर कौ खेल—खेलैं मान सरोवर श्री गौर स्याम । एकांत परम अभिराम धाम ॥ टेक ॥ रति पति कौ मीत आयौ बसंत द्रुम वेलिसु नव पल्लव लसंत कुसुमित भये मनों

सुख भरि हसंत । मधु गन्ध लेति षट पद भ्रमन्त ॥१॥ वारिज विकसित भये इहि जु भाइ । दंपति आगम मनु हिय सिहाइ ॥ खग नाद लेति चित कौं चुराइ । कोकिल मनु मंगल उठी गाइ ॥२॥ औसें थल ना ना रचत खेल। वृक्ष वंदन डारत सुरेल॥ ह्वै गयौ दुहूँ दल सहज मेल । माँडत हँसि हँसि वदननि फुलेल ॥३॥ मणि मंडल भये ठाड़े किशोर । सौभगता सींवा दुहूँ ओर ॥ करें निर्त्त गान बढ़्यौ सुख न थोर । सबके चित चोरत नैंन कोर ॥४॥ रोचक मारुत सर वर जु पास । मोहन धुनि थेई थेई मुख प्रकास ॥ कहा बरनौं जो सब हिय हुलास । आनन्द वृष्टि मधुरितु के रास ॥ ५ ॥ तरु वेली हल हल कें झलत फूल । मनु रीझ रीझ वारति दुकूल ॥ चैतन्य चतुर लषियत समूल । रस लीला मानत प्रान तूल ॥६॥ बहु सुलप भेद लै लै मिहात । अञ्चल चञ्चल दमकें जु गात॥ मुरली में तान लेहि अना घात। पग ठुमके मान सिर देहि लात ॥७॥ रितुराज केलि बरनी न जाइ। आनन्द रूप लायौ लदाय ॥ ताके गाहक राधा रसिक राइ । उर कोप भरत विलसत सिहाइ ॥८॥ बयौ रस बारी कामिनी कंत । कानन उपज्यौ ताकौ न अन्त ॥ विधि शिवहि आदि कवि जु गुणवन्त । कहे गरुवौ गाहिन वनतु गंत ॥९॥ रसिकनि मणि श्री हरिवंश चंद्र । रस प्रचुर कियौ जो दुरयौ छंद ॥ वृन्दावन हित अतुलित अनन्द । हित रूप प्रेम मन फस्यौ फंद ॥१०॥१२०॥

श्री सरस माधुरी जीकृत—रसिकनी कंत वसंत खिलायौ। सुरति गङ्ग स्नान कराके, नेह अङ्ग अंगु छायौ ॥ प्रेम प्रीति पहिराय वस्त्र वर अंग अनूप सजायौ अभरन आलिगन अंग अङ्गन

चुम्बन चोवा लगायो ॥ सुख आसन बैठाय भली विधि भाव भोग भुगतायौ । अधरामृत अचवाय लाड़िली रसिया रसिक रिझायौ ॥ कल कपोल मुख वीरी दीनी अतर अनंग रमायो । हिय में फूल हर्ष भुज हरवा पिय गरवा पहिरायो ॥ जग मग रूप सँजोय आरती परम प्रकाश जनायो । वंक विलोकन हेरि फेरि हँसि परमानन्द बढ़ायो ॥ श्रम कन बिंदु वदन पर सूचित शांसोदक छिरकायो ॥ सरस माधुरी रस वस करकें रसिया छकनि छकायौ ॥१३१॥

श्री कल्याण पुजारीजी कृत—देखौ रितु वसंत उछाहु । कुञ्ज नव सुख पुञ्ज वरषत मिले नागरि नाहु ॥१॥ मदन सेवत मगन जुग नित सौंज साज प्रवीन । रहत रितु कर जोरि औरनि जुगल चित आधीन ॥२॥ गौर स्याम अङ्ग गसि लसि रसिक राधा श्याम । देखि ललितादिक कली फूलति जु आठों याम ॥३॥१३२॥

अथ छोटो गुरु मंगल-मंगला चरण—प्रथम लड़ाऊ श्री गुरु वंदन करि श्री हरिदास । विपुल प्रेम निजु नेम गहि सुजस कहैं विहारिन दास ॥१॥ गुरु सेवत गोविंद मिल्यो गुरु गोविन्दै आहि । श्री विहारीदास हरिदास को जीवत है मुख चाहि ॥१३५॥

आज महा मंगल भयौ माई ॥ भई प्रगट सिरोमणि राधे यह सुख कह्यौ न जाई ॥ परम प्रीति सों विलसत दोऊ प्रेम बढ़्यौ अधिकाई ॥ श्री हरिदासी जू रसिक शिरोमणि उमगि उमगि आनन्द झर लाई ॥२॥१३६॥

आज समाज सहज मन भायौ ॥ कुंवरि किशोरी गोरी भोरी निरषि हरषि हँसि कंठ लगायो ॥१॥ अपने अपने मेल मिली सब, तान तरंगनि रंग बढायो ॥ श्री हरिदासी जू रसिक शिरोमणि तन मन वचननि हियो सिरायो २ १३७

श्री गुरु मङ्गल गाय मना ।। श्री हरिदास चरण वन्दन करि विपुल विनोद बढाय घना ।।१।। श्री विहारी विहारनि दास परम रुचिसरस मनोरथ पाय घना ।। श्री नरहरि रसिक शिरोमणि मूरत्त पीताम्बर बलि जाय जना ।।२।।१३८।।

श्री कृष्णदास जी कृत बड़ो गुरु मंगल प्रारम्भ (राग विलावल)

प्रथम जथा मति श्री गुरु चरन लडाइ हों ।। उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गाइ हौं ।। गौर स्याम सुख रासि तिन्है दुलराइ हौं ।। देहु सुमति बलि जांहु आनन्द बढाइ हौं ।। आनंद सिन्धु बढाइ छिन छिन प्रेम प्रसादहि पाइ हौं ।। जै श्री वर विहारनि दास कृपा तें हरषि मंगल गाइ हौं ।।१।। जैजै श्री हरिदास रसिक कुल मंडना ।। अनन्य नृपति श्री स्वामी सकल भय खंडना ।। रसिक कमल कुल भानु सो प्रकट उदौ कियौ ।। भ्रम तम श्रम सब नासि सबनि कौ सुख दियौ ।। दै सबनि सुख अति कृपा करि प्रकट विहार सुनाइयौ ।। जै जै श्री हरिदास रसिक मन भाइयौ ।।२।। जानि विहार गुप्त आनि भूतल प्रगट कियौ ।। कीरति जग विस्तार सो रस रसिकनि दियौ ।। निरनै करि जश गाय सौ परहित वपु धर्यौ ।। धनि धनि कहैं सब रसिक अनन्य सो वर वर्यौ ।। वर वर्यौ धनि धन्य कहि कहि छिन छिन प्रति दुलरावहीं ।। जै जै श्री हरिदास वांछित फल पावहीं ।।३।। काम केलि माधुर्य सहज रति सर्वदा।। प्रेम सुभाव सरल मति सुधा गुन नर्मदा।।विश्व सकल सुख देषि छिया करि छांड़ियौ ।। दंपति पति अभिराम अपनौ पन माड़ियौ।।मांड़ि पन अभिराम छिनछिन दंपति सहज लड़ावहीं।।देखि यह सुख रंग दोऊ मन्द मधुर सुर गावहीं ४

मन भावनौ ॥ परम सुभग श्री जमुना पुलिन मंजुल जहाँ ॥ विमल कमल कुल हंस सकल कूजित तहाँ ॥ विमल कमल कुल हंस कूजित सेवत खग मृग सुख भरे ॥ मुदित वन नव मोर निर्तत राजत अति रुचि सों खरे ॥ ५ ॥ कुसुमित कुंज रसाल लता अति सोहहीं ॥ अलि कुल कोकिल कीर कूजित मन मोहहीं ॥ त्रिविधि समीर वहत रस सुखद मनहिं लिये ॥ वसंत सरद ऋतु सेवत चित वित मनहीं दिये ॥ वसंत सरद सेवत सदा ऋतु सुख समुद्रहि को गनैं ॥ विविधि भाँतिन भूमि राजत शोभा देखत ही वनैं ॥६॥ मन्दिर नवल निकुंज सदन सेवत रहैं ॥ मणि मुक्ता फल फलित शोभा गुण को कहैं ॥ श्री कुंजविहारी विहारनि अतिशय राजहीं ॥ नित्य किशोर सहज रति सुख मय भ्राजहीं ॥ नित्य किशोर सहज सदा रति गौर श्याम तन सोहहीं ॥ कंचन तन घन दामिनि रति पति देखत छवि मन मोहहीं ॥७॥ अङ्ग सङ्ग श्री हरिदास विहार करावहीं ॥ मननि लिये अनुसार सहज दिन भावहीं ॥ सुख संपति रहे साज समयों पाय सौं गावहीं॥तान तरंग मधुर सुर राग सुनावहीं॥तान तरंग सुनाय मधुर सुर कुंवरि कुंवर सुख पावहीं ॥ रीझि रीझि श्यामानि कहि हँसि हार वसन पहिरावहीं ॥८॥ जे श्री प्रगट विहारिनि दास कृपा को वपु धरयो ॥ श्री कृष्णदास बड़ भाग सेवत नित अनुसरयौ ॥ शील सुभाव गुन आपि प्रिया प्रेमहि लहैं ॥ चित वित दै रुष लै मनहि सेवत रहैं ॥ रहैं सेवत रुप लिये नित शंक न काहू की करी ॥ जै श्री वर विहारिनि दास चरन रति शूर ज्यौं वृत ना टरी ॥९॥ और बहुत अपनाय जे मन वच क्रम करि अनुसरे मोसे पतित महा सठ तेऊ अपने करे जैसे

पारस परसि ते कंचन जानिये ॥ ऐसें किये श्री नागरी दास निश्चै उर आनियै ॥ उर आनि निश्चै जानि यह सुख चरण कमल सेऊं सदा ॥ जै श्री वर विहारिन दास प्रगट नित सिंधु सुधा रस सर्वदा ॥१०॥ मन वच क्रम करि यह यश जो नर गाइ है ॥ मन वांछित फल वेगि सदां सुख पाइ है ॥ निजु धन सर्वसु जानि उमगि दुलराइ है ॥ प्रेम लच्छना भक्ति विपुल रस पाइ है ॥ रस पाय विपुल आनन्द वाढ्यौ जनम जनम के श्रम गए॥ जै श्रीवर विहारिनदासकृपा तैं मन मनोरथ सब भये।११।१३९।

(इति श्री कृष्णदास जू कौ बड़ौ गुरु मंगल संपूर्ण ॥)

श्री स्वामी हरिदासजी महाराज के पद —राग वसंत

कुंज विहारी कौ वर वसंत चलहु न देखन जांहि ॥ नव वन नव निकुञ्ज नव पल्लव नव जुवतिनि मिलि मांहि ॥१॥ वंसी सरस मधुर धुनि सुनियति फूलो अङ्गन मांहि॥ सुनि श्री हरिदास प्रेम सौं प्रेमहि छिरकत छैल छुवांहि ॥२॥१४०॥

चलि री भीर तें न्यारेई खेलैं । कुञ्ज निकुञ्ज मंजु में झेलैं ॥ जहाँ पंछिन सहित सखी न संग कोऊ तिंहि वन चलि मिलि केलैं । श्री हरिदास के स्वामी स्वामां प्रेम परस्पर बूका वंदन मेलैं ॥१४१॥

अबकैं वसंत न्यारेई खेलैं काहू सौं मिलि खेलैं न री तेरी सौं । दुचितें होत कछू न सचु पाइयै, तू काहू सखी सौं मिलि न मेरी सौं ॥१॥ देखै जु रंग उपजैगो परस्पर, राग रागिनी के फेरा फेरी सौं । श्री हरिदास के स्वामी स्यामां कुञ्ज विहारी राग ही में रंग उपजत ऐरी सौं ॥२॥१४२॥

रहौ रहौ विहारी जू मेरी आंखिन में बूका मेलत कत अंतर

होत, मुख अवलोकनि कौं। और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहत मिसु कैं पैयाँ लागौं पन पन कौं ॥१॥ गावत खेलत जो सुख उपजत सुतो कोटिव रहै तन कौं। श्री हरिदास के स्वामी को मिलत खेलन कौ सुख कहाँ पाइयतु है ऐसौ सुख मन कौं।१४३।

श्री बीठल विपुल जी महाराज के पद—राग वसंत

सजनी नव निकुञ्ज द्रुम फूले। अलि कुल संकुल करत कुलाहल, सौरभ मन्मथ मूले॥ हरषि हिंडोरे रसिक रासि वर जुगल परस्पर झूले। श्री बीठल विपुल विनोद देखि नभ देव विमाननि भूले ॥१४४॥

जुगल किशोर मेरे कुंज बिहारी प्यारी बन बिहार विहरत नव रङ्गा॥ अरुन हरित मुकुलित द्रुम पल्लव अलि कुल गुञ्ज अनङ्ग तरङ्गा॥१॥सौंधे बहुत अबीर अरगजा खेल परस्पर छिरकत अङ्गा॥ श्री वठिल विपुल विनोद रीति रस सुख देखत ललितादिक संगा॥२॥१४५॥

श्री बिहारनिदास जी महाराज के पद—राग बसंत

विहरत राज रितु वनराइ॥ जहाँ नित उदित नव नव भाइ॥ध्रुव॥ सहज कुसुम समूह नख सिख सुन्दरी सुखदाइ। लाल अलि आसक्त सौरभ मिलि विलसि विलसाइ॥ अङ्गराग पराग रंग अङ्ग पिय पियूषै प्याइ॥ मत्त घूमत नैंन जुग वर सैंन मैंन नचाइ॥ सहज सरद वसंत रितु रति पति लियें ललचाइ॥ देखि यह सुख जिये हम सब सुख दिये समुदाइ॥ या रसहि सेवत न नीरस सरस कु कवि कहाइ॥ सब रसन कौ रस राज रस या विनु न हियौ सिराइ सुनि समझि उपदेश

विशदनि गाइ ॥१४६॥

श्री वृन्दावन आनन्द न अन्त ॥ तहां श्री स्यामां संतत वसंत ॥ध्रुव॥ सब रितु राजत रसिक संग ॥ ताके सुख दायक सब अङ्ग अङ्ग ॥ उपजत तन अनंत अनंग रंग ॥ यों विहरत अनुरागी अभंग ॥१॥ नख सिख रस श्रीमंत मंत ॥ सखीं प्रेम पुलकि कामिनी कंत ॥ घन दामिनि ज्यौं मिलि लसंत॥ दिन दिन दरसत विलसत हसंत ॥२॥ कनक लता कुसुमित रसाल ॥ ताके लोभ सु अलि साँवल तमाल ॥ जाके अधर बिंब सिंदूर भाल ॥ भई विपुल पुलक मनसा विसाल ॥ ३ ॥ ललित वलित श्रीफल विलास ॥ जाके नव जोवन मंजरी सुवास ॥ ताके अलक भृङ्ग मधु गंध लोभ ॥ अञ्चल चञ्चल चित छुवत छोभ ॥ ४ ॥ जंघ कदलि मृदु भुज मृनाल ॥ ताके नीलोत्पल लोचन गुलाल ॥ ताके चरन कमल कर कमल लाल ॥ सखी प्रान जीवनि मोहन मराल ॥५॥ रुचि रवनी कवनी किशोर ॥ जानत नहिं निशि गत भये भोर ॥ चितवत प्यारी विधु वदन ओर ॥ पिय पान करत लोचन चकोर ॥६॥ पुनि नाभि निरपि नागर गंभीर ॥ अति व्याकुल व्है बैठे अधीर ॥ पुनि नीवी बंध अवलंब श्याम ॥ सखी वचन रचन रिझवत सकाम ॥७॥ आतुर चातुर अति बड़ विनोद॥ सखी रहसि बहसि मन मदन मोद ॥ दोऊ चाहि रहे दृग दृष्टि जोर ॥ छोरत छवि कर छंद बंद निहोर ॥८॥ सुख आलिंगन चुंबन मिलाप ॥ कूजित कोकिल कोमल अलाप ॥ हार टूटि कल वलय फूटि ॥ गये कसनि कंचुकी चिकुर छूटि ॥६॥ आली वाली वर विमल वारि ॥ सेवत सींचत सुख मुख निहारि ॥ दोऊ सकत न विवस बसन सँभारि । श्री विहारिनि दासि

हँसि हँसि सिंगारि ॥१०॥१४७॥

आज वसंत खेलत देखि। विपिन बसन सुरंग भूषन विविध बरन विसेखि ॥ नैंन पुट भरि भरि प्रिया पिय आनि उर अवरेखि ॥ जै श्री वर विहारनि दासि इहिं सुख जनम जीवन लेखि ॥१४८॥

आजु वसन्त बन्यों सखी वन में। फूल सो लाल लड़ावन लाड़िली खेलत मत्त मदन में ॥ फूली लता ललितादिक देखत फूल वढ़ी तन मन में। फूल सौं दासि विहारिनि गावति फूल के सुख सदन में ॥१४६॥

सहज वसंत कामिनी कंत। नित विहरत मिलि इनहि न अन्त ॥१॥ फूले तमाल लता लपटंत। सहज सुगंध जीवन सब जंत ॥२॥ विचित्र विहारिनदासि वसंत। रस वस विपिन अङ्ग सङ्ग मैमंत ॥३॥१५०॥

नवल वृन्दावन नवल वसंत। नव द्रुम वेलि केलि नव कुञ्जनि, नवल कामिनी कंत ॥१॥ नव अलि अलक झलक नव कोकिल, नव सुर मिलि विलसंत। नव रस रसिक विहारिनि दासि के नव आनन्दहि न अन्त ॥२॥१५१॥

श्री नागरीदास जी के पद—राग वसत

सजनी देखि खेल वसंत ॥ बन्यों वन प्रसून फूले नवल कामिनि कंत ॥१॥ अरुन वसन अङ्ग अङ्ग राजत अधर पलु रस मंत ॥ नैन सुफल करिये देखि नागरि नवल सुखहि न अन्त ॥२॥१५२॥

बनें वसंत दोऊ वन में आज ॥ नवल लाल लड़ाइ प्यारी फूले उरज समाज ॥१॥ मदन मद अंग अंग प्रफुलित निरखि

ललित विराज ॥ श्रीहरिदासि विपुल विहार स्वामिनि सरस रस-मय गाज ॥२॥ नरहरी गुन गाय कुंजनि फूल फल छवि छाज ॥ फूले तन मन नवल नागरि रसिक वर सुख साज॥३॥१५३॥

श्री वृन्दावन नव नव वसंत ॥ तरु तमाल उर वेलि लपटी नवल भामिनि कंत ॥१॥ नव निकुञ्ज नव केलि कलोलनि वदन कमल अलि अलक मंत ॥ श्री हरिदासी विपुल विहार नागरि नवल पिय विलसंत ॥२॥१५४॥

नवल नवल वृन्दावन फूले ॥ नव पराग अलि लोभी झूले ॥१॥ प्रिया कनक की वेलि झेलि रहे स्याम तमाल सहज अनुकूले ॥ श्री हरिदासि विपुल विहार नागरि नवल गहे भुज मूले ॥२॥१५५॥

श्री रसिकदासजी के पद—राग वसंत

श्री विहारी जू खेलत वसंत ॥ रंग भरी सब सखी विरा-जत, राधे जू रूप लसंत ॥१॥ फूले जोवन मौर मञ्जरी अधर पांन उलहंत ॥ आयौ मदन मानों सैंन साजि कें चौंर चिकुर दुरंत ॥२॥ छूटति मूक झूक सौरभ की नैंन गुलाल उड़न्त ॥ कूजत मधुकर मंजीर कोकिला बाजे वजत अनन्त ॥३॥ मच्यौ (है) परस्पर खेल कटाच्छिन क्रीड़त भामिनि कंत ॥ श्री रसिक विहारी को सुख निरखत धीरज कौन धरंत ॥४॥१५६॥

श्री पीताम्बर देवजी कृत—बनरा बन बनरी वसंत । सखी बरात पिय स्याम कन्त ॥१॥ अरुन साज बन राज धाम । पीत फूल तन पहिरि वाम ॥२॥ अंब मौर शिर धारि मौरि । द्रुम सुछत्र पति पत्र पोरि ॥३॥ फल प्रवाल तोरन बनाय । छुवत पवन वन वरसि धाय ॥ ४ ॥ पिय प्यारी बन तन सुवास सहचरि

भ्रमरी आस पास ५ धुनि मृदंग सुरतान वीन। गति अनेक उपजै नवीन ॥६॥ गाय वसन्त रस अति अतोल। व्याह भयो चतुरा अबोल ॥७॥ कस्तूरी केसर कपूर। गंध परस को छुवत धूर ॥८॥ रिझयां वन वर वरख्यो पराग। अरुन सेत परदा सुहाग ॥९॥ सुधि न रही तन की सम्हार। सुख वसन्त वरख्यो अपार ॥१०॥ मदन मोहिनी वन प्रवेश। पीताम्बर तन सोभित सुदेश ॥११॥१५७॥

श्री ललितमोहनी देव जी के पद—राग वसंत

आयौ वसंत मदन दल साजैं दुहूँ दिसि व्है गई भीर। अबीर गुलाल उड़त नैंन सों विवस विसरि गई चीर ॥१॥ खेलत हँसत हँसावत सब मिलि, धरति नहीं मन धीर। श्री ललित मोहनी कौ सुख वाढ्यौ धन्य आज दिन वीर ॥२॥१५८॥

विहारी तेरे नैंना रूप भरे। निरषि२ प्यारी राधे कों, अनत न कहुंव टरे॥ सुख कौ सार समूह किशोरी, उमंगि२ अंकों भरे। ललित मोहनी की निज जीवन उर सों उरज अरे ॥१५९॥

मेरी अँखियाँ, रूप के रंग रंगी। मेरी अँखियाँ॥ निरखि सरूप कुंवरि राधे को याही मांझ पगी ॥छिन छिनप्रति अवलोकि माधुरी, ना सोई न जगी ॥ श्री हरिदासी जू ललित केलि मिलि याही में जग मगीं ॥१६०॥

आरती—आरति आनि सहचरिन साजी। मणि मय थार प्रेम की वाती, घृत कपूर रुचि राजी ॥ जोति जगाय नेह चितवनि मुसक्यानि लाज लजि भाजी। भगवत रसिक वारि तृण तोरत झांझ झालरी वाजी ॥१६१॥

आरती आरति कीजै सुन्दर वर की नागरि नवल निकुञ्ज

इंदु जुग अखिल ताप तम हर की ॥ नव विलास मृदु हांसि मनोहर श्रवत सुधा सुख कर की । श्री विहारिनि दासि लोचन चकोर नित्य अंस प्रिया भुज धर की॥१६२॥

श्री भगवत रसिकजी के पद—राग वसंत

नवल दोऊ आज वसंत से फूले । गोरी किशोरी के अंस दिये भुज, श्याम छिपे भुज मूले॥सहज शृङ्गार अनंग के अङ्गनि सोहत पीत दुकूले। रंग में रंग वढ़ावति लाड़ली लाल हिंडोरे से झूले ॥ यह सुख नित्य दिखावत नागरी नाहु भये अनुकूले । भगवत रसिक विलोकत यह छवि नैन कुरङ्ग से भूले ॥१६३॥

पिय प्यारी सोहत हैं वसन्त । दोऊ मदन मुदित भये सुरति अन्त ॥टेक॥ कनक लता मृदु नवल वाल। लपटी मरकत मणि पिय तमाल ॥ गौर स्याम शोभा विशाल । श्रम बूंदन अतिसैं रसाल ॥१॥ नव योवन उलहो अँग अँग। किशलय दल कर अँगुरी सुरंग ॥ परशत फल विमल उरज उतंग । मद पान करत कच कुटिल भृंग ॥२॥ विविध सुमन फूले सुवास। डोलनि मंजुल मारुत विलास ॥ बोलन कल कोकिल कीर पास। मन-सिज वश करनी मन्द हास ॥३॥ ललितादिक सींचति प्रेम वारि। छवि पान करत लोचन निहारि ॥ गावत भगवत यश अति उदार। यह नित नव तन रस वन विहार॥४॥१६४॥

श्रीरूप रसिक जी के पद—ललित नव जोवन तेरो री वाल । पल्लव अधर उरज जुग श्रीफल, फूले नैन विशाल ॥१॥ मधुकर श्याम सुगंधन लोभी वसत हिये उर माल । श्री रसिक रूप नागर नव रंगी अचवत परम रसाल ॥२॥१६५॥

अद्भुत वसंत नित्य नव निकुंज। फूले नव जोवन मौर

पुञ्ज ॥ अरुन अधर अद्भुत रसाल । पल्लव फल उर लोचन विसाल ॥ कोकिल कल वैनी अनूप । वर भामिनि दोऊ रस के भूप ॥ चरन कमल कर कमल फूल । गुंजत मत्त भंवर आनंद भूल ॥ रसिक प्रवीन प्यारी नवीन । सिखवत वजवनि गति सरस वीन ॥ अङ्ग अङ्ग औरन मिलाप । झूलो फूलो नव नव अलाप ॥ झूलत नागर नव रङ्ग मङ्ग । फिर लेहु फवी नहि चतुर अंग ॥ विहरत जुग अनुराग केलि । रसिक रूप नर-हरि महेलि ॥ श्री हरिदासी नित्य नव विनोद । विपुल विहा-रिनि दासि मोद ॥१६६॥

प्यारी तेरो जोवन ललित वसंत । लोचन पहुप उरज कल श्रीफल छवि अनुराग न अन्त ॥ कोकिल नासिका सुक दुनि सौरभ मुदित सुकंत । रसिक रूप नित्य श्री हरिदासी विपुल विहारनि संत ॥१६७॥

चाचा श्री वृन्दावन दासजी कृत मंगला चरण के पद--राग वसंत-ताल आड़

श्री व्यास सुवन कौतुक वसंत ॥ गौराङ्ग भजन मूरति लसंत ॥टेक॥ उर अमल थावरो रहित दाग ॥ जल अमी जुगल पूरित सुहाग ॥ सिंगार कलप तरु खिल्यो बाग ॥ तिहि मोद छयो वानो पराग ॥१॥ आनन नित नौतन वहति ओप ॥ अम्बुज उपमा हू करी लोप ॥ दमधा वेली पर रही छाय ॥ फल फूल भरे हिय अमित भाय ॥२॥ रस वचन रचन मंजरी नूत ॥ मंगल घट लसत सुमति अभूत ॥ अनुराग वसन ढापनि अनूप ॥ दरसायो रसिक वसंत रूप ॥३॥ अभिलाष विविधि सौरभ सुरंग ॥ भीजत तन मन रहैं नित अभङ्ग ॥ यहि विधि संतत हरिवंश चंद वृन्दावन हित गावें सुछंद ४ १६८

जहाँ श्री हरिवंश रचे वसंत ॥ वृन्दावन रविजा तट लसंत ॥टेक॥ रसना जु कोकिला रटन नेम ॥ राधा राधा निज नाम प्रेम ॥ दंपति रवि छवि रहै उदित धाम ॥ मुख अम्बुज प्रफुलित अष्टजाम ॥ १ ॥ नव वल्ली हिय वहु भाव गोभ ॥ रस छकनि रसिक जन देत सोभ ॥ उर निर्मल कंचन दिपति भूमि ॥ सौरभ महकनि रहे नेह भूमि ॥ २ ॥ तरु साखा फूलनि अंग अंग ॥ अनुराग बढ़नि भीजनि सुरङ्ग ॥ केशरि मंडित नित भक्ति भाल ॥ सने गौर स्याम मुसकनि गुलाल ॥३॥ जुगल चरित चरचत अबीर ॥ दृग फसे मिथुन तन खेल भीर ॥ वृन्दावन बलि हित रसिक भूप ॥ मन मधुप कमल पद लुब्ध रूप ॥४॥१६६॥

विवाह कौ वसंत—वरषत रंग वसंत पंचमी आजु सखी मन भायौ ॥ उत्सव मदन महा मंगल दिन भाग्य बड़े ब्रज आयौ॥१॥ नंद पौरि ठाढ़े बृज भूपन रचि शृङ्गार बनायौ ॥ उमगीं गोप वधू सब आवति गावति रंग बधायौ ॥२॥ नूत मंजरी जव फल दल लै गिरधर सीस धरायौ ॥ श्री वृषभानु कुंवरि प्रीतम कौं कुसुम हार पहिरायौ ॥३॥ मनसिज विपुल प्रताप आपनौं सब ब्रज मंडल छायौ ॥ क्रीड़त वनिता वृन्द रसिक नँद नंदन प्रेम छकायौ ॥४॥ सकल सुगंधि अङ्ग अङ्ग चरचत महा मोद उपजायौ ॥ प्रथम फागु की आजु बोंहनी हरि मोहनीनु रिझायौ ॥५॥ डफ बाँसुरी मृदंग झाँझ झालरि धुनि परम सुहायौ ॥ मीठी तांन वधूनि राग हिंडोल मोहनी गायौ ॥ ६ ॥ माची कीच अबीर अरगजा केशरि घट सिर नायौ ॥ उड़यौ गुलाल विविधि भाँतिनु कौ दिनमणि तेज छिपायौ ॥ ७ ॥ नवल दुलहिनी नव दिन

दूलह ब्रज सुख सिन्धु बढ़ायौ ॥ जशुमति परम भाग कौ उद्धव राधा हरि दरसायौ ॥८॥ कीनौ हरषि आरती रानी बहु धन वारि लुटायौ ॥ पहिल बसंत बना बरनी कौ मैया मोद मनायौ॥६। नंद दान दीनौं तब विप्रनि यह सुख महरि सुनायौ ॥ वृन्दावन हित रूप घोष सब अति लड़ रस सरसायौ ॥१०॥१७०॥

खेलत बसंत भीजे सनेह ॥ नव दुलहिनि दूलह नंद गेह ॥टेक॥ नवयुवती इत उत भई संग ॥ पिचकारी भरि कर दई रङ्ग ॥ दुहुं मननि बढ़ावति अति उमंग ॥ गावति सदेह मुनि भयौ अनंग ॥१॥ भोरे से इत उत गुनन ग्राम ॥ चातुरी सिखावति नवल भाम ॥ खेलैं खुलि बसंत श्यामा जु स्याम ॥ रितुराज बधावौ नंद धाम ॥२॥ चित चौंप बढ़ावति दुहूं ओर ॥ रंग भीजि भिजावति नव किशोर ॥ चलैं रवकि करैं अञ्चलनि छोर ॥ मुख माँड़न उद्दिम करैं न थोर ॥३॥ उड़ि गगन भई बंदन की भीर ॥ झूमिका भरत थिरकैं जु चीर ॥ घूँघटी खुलत होइ पिय अधीर ॥ अति छवि छलकति गोरे शरीर ॥४॥ प्रीतम दियौ मृग मद मुख लगाइ ॥ प्यारी कुम कुम मुख माड्यौ जु धाइ ॥ हो हो कहि सब बाजे बजाइ ॥ कर चटकि लेहिं मुरि मुरि बलाइ ॥५॥ आजु नन्द सदन कौतिक अनन्त ॥ रंग चाचरि खेलति राधा कंत ॥ रस फाग बोहनी मिलि लसंत ॥ आयौ ब्रज सुखदाई रितु बसंत ॥६॥ छिन छिन बाढ़ति दुहूं हिये लाग ॥ कहा बरनौं श्री राधा सुहाग ॥ ब्रज रानी मानति धन्य भाग ॥ जाके अजिर फूलि रह्यौ छवि कौ बाग ॥७॥ आरज गोपिन के बैठी माहिं ॥ रोहिनी कहत गहि गहि जु बांहि ॥ रानी तुम सुकृत कौ मित जु नाहिं ॥ सुत बधू झूमिका

लखि सिहाहि ॥८॥ इक देति बधाई आइ आइ ॥ मेवानि गोद लीनी भराइ ॥ इक देहिं असीस अञ्चल उचाइ ॥ इक सर्वसु वारति लाइ लाइ॥९॥वृन्दावन हित नित चित लगाइ॥ हित रूप ललित लीला सुगाइ ॥ भयौ फागु सभागौ घोष आइ ॥ आनन्द खेप लायौ लदाइ ॥१०॥१७१॥

(असीस) रस की विर्द्धि वसंत पंचमी यह मंगल दिन रूरौ ॥ बढ़ि है अधिक रंग अब कानन मचै प्रेम धमतूरौ ॥१॥ पहिरौ पट साजौ तन भूषन भरौ माँग सेंदूरौ ॥ तौ सिर तिलक फागु खेलन पिय भरि रंग लहि सुख भूरौ ॥२॥ दिपति लिलाट महा मणि तेरें सदा सुहाग जु पूरौ ॥ वृन्दावन हित रूप स्वामिनी जुग जुग अविचल चूरौ ॥३॥१७२॥

विवाह कौ वसंत—खेलन बरसाने आये स्याम ॥ पंचमी वसंत वृषभान धाम ॥ टेक ॥ रावल पति रानी भरी अनन्द ॥ आँकौ भरि लिये गोविंद चंद ॥ सौंदर्य सींव नन्दन जु नन्द ॥ इक रसना कहा बरनौं सुछंद ॥ १ ॥ राधा दुलहिनि सखियनि संजूत ॥ धरी प्रथम सीस मंजरी नूत ॥ इत उत उर प्रेम बढ्यौ अकूत ॥ हिय हिलग सनेह सु मिहीं सूत ॥ २ ॥ कौतूह रच्यौ रनवास माहिं ॥ चरचै सुगंध सखी आवैं जाहिं ॥ दूलह दुलहिनि हिय जिय सिहाहिं ॥ उड़यौ बंदन जाकी मित जु नाहिं ॥३॥ घूँ घटी मिही छवि वदन देति ॥ हँसि हँसि गुलाल कर मूँठि लेति॥ बरषति पिय पर नहिं परति खेति ॥ लाल भरत अरगजा सखि समेति ॥४॥ झूमिका भरत सुत घोष राइ ॥ तृन तोरि सहेलीं लेंइ बलाइ ॥ वारैं प्रान सुधन मंगल मनाइ देहि गारि उच्च

निकसी अङ्ग अङ्ग ॥ उपमा जु देति मति होत पंग । खेलैं गौर स्याम मन मिले संग ॥६॥ वृषभानु नृपति घरनी उदार ॥ कियौ तिलक भाल भरि रतन थार ॥ सिर सजे मेहरे कुसुम हार ॥ गठ जोरी करति सखी खिलार ॥७॥ मरुवटि मुख माँड़ति वग जोर ॥ कौतिक मनहर लियौ नव किशोर ॥ अनुरागिनि अञ्चल लेहिं छोर ॥ लखि चंद उभै भये दृग चकोर ॥८॥ बैठे दोऊ धरि भुजा अंस ॥ सिंघासन सर मनु राज हंस ॥ निज सजनी समुझति हिय की गंस ॥ करी श्री हरिवंश गिरा प्रसंस ॥६॥ वृन्दावन हित मङ्गल स्वरूप ॥ यह खेल रच्यौ अति ही अनूप ॥ वृषभानु सुता सुत नंद भूप ॥ मिलि विहरत रवि विरहा न धूप ॥१०॥१७३॥

वृषभान पौरि खेलत वसंत ॥ व्रज ईश सुवन श्री राधा कंत ॥ टेक ॥ डफ ताल झांझि महुवरि मृदङ्ग ॥ बाजैं मुरली मधुर धुनि मिली संग ॥ सुनि नव तरुनिनु मन बढ़ी उमङ्ग ॥ पट भूषन साजे अङ्ग अङ्ग ॥१॥ ललितादिक आई कुंवरि पास ॥ भाजन भरि लीने रंग सुवास ॥ निकसी प्रमुदा गन जोरि वृन्द ॥ भये मुदित निरखि गोकुल के चन्द ॥२॥ कन्दर्प कोटि मोहन स्वरूप ॥ उन सज्यौ साज खेलन अनूप ॥ बहु विधि अवीर रङ्ग पिचक हाथ ॥ छिरकत छिरकावत प्रान नाथ ॥३॥ चंदन की भीर मंड़ित सरीर ॥ वरषत घन ज्यौं कुम कुम कौ नीर ॥ ललितादिक अञ्चल दियौ जुराइ ॥ झूमक दै नाचत सुघर राइ ॥४॥ गन व्यौम विमाननि देव नारि ॥ सुख निरखि आपन-पौ रहीं हारि ॥ बोलत जै जै बानी उचार ॥ पुहुपनि वरषत कौतिक निहार ५ वृन्दावन हित बलि वेरि वेरि हित

रूप मिथुन छवि हेरि हेरि ॥ मुनि देव प्रसंसत फेरि फेरि ॥ जस कहत उमापति टेरि टेरि ॥६॥१७४॥

खेलत है बसंत पिय प्यारी कानन रंग रली है ॥ काम कटक मोरन मनु स्यामा साजि समाज चली है ॥१॥ बृन्दारण्य बन्यौ अति कौतिक औरै छवि बदली है ॥ कुसुम पराग विटप झरि पूजी राधा चरन तली है ॥२॥ कूजत हैं कोकिला दूत मनु पठ्यौ काम छली है ॥ ताकौ उद्दिम जानि अति लड़ी साजी सैंन भली है ॥३॥ बाजे गहर गंभीर गान सुनि हिय मुरछा मली है ॥ देखि परम सौभाग्य तकति रति नायक भगन गली है ।४। बंदन उड़यौं परस्पर रविजा सोभित भई थली है ॥ नाहु बाहु गहि मुख माडन अभिलाषा हिय उम्फली है ॥५॥ लाल फागु फल दैन सिखाई नागरि चतुर अली है ॥ मूंमकि भरयौ भाव सौं नागर देखत मति दहली है ॥ ६ ॥ निकट आइ पहुपांजुलि वारत बुद्धि जु प्रेम हली है ॥ बृन्दावन हित रूप भरे भुज मोहन भाग्य बली है ॥७॥१७५॥

हुलसि गुलाल भरन यौं आई ॥ पिय उर लागि बदन माड़यौं मनु दामिनि घनहि समाई ॥ १॥ किधौं रूप की बेली देखौ प्रेम जु पवन नवाई ॥ अहा कहा बाढ़ी शोभा कौतिक तमाल उरझाई ॥२॥ दियौ भाल सिंदूर कौ विंदुला ऐसी उपमा पाई॥विरवा मनु अनुराग किधौं ससि में शशि देत दिखाई॥३॥ लालहि रंग बोरि पुनि अहुरी पिय फिर रंग भिजाई ॥ बृन्दावन हित रूप सिंधु इत उत बाढ़ि सींव बहाई ॥४॥१७६॥

गौर गरूर पिचक कर सांधें ॥ धावत है प्रीतम के सन्मुख अञ्चल छोर मोर धरयौ कांधें ॥१॥ उम्फलतु रूप वदन तै आगैं

किरिनि बढ़ी पिय को मन बांधै ॥ प्रेम की बढ़नि भरनि रस रंग की वृन्दावन हित चित अराधैं ॥२॥१७७॥

श्री राधा वल्लभ खेलैं वसंत ॥ रस छाके कला रचैं अनंत ॥टेक॥ इहि हंस सुता अति रम्य तीर ॥ सजनी अनंत संग लियें भीर ॥ दमकैं तन नाना रंग चीर ॥ रचैं गान मोंहनी धुनि गंभीर॥१॥सबकें कर भाजन रंग संजूत॥ सबकें कर वर मंजरी नूत॥ खेलन उमाह सब मन अकूत ॥ रितु पति आगम मंगल अभूत।२। धरैं सिर वसंत रंग पित्रक हाथ ॥ साँवरी सहेली स्याम साथ ॥ माड़त मुख बरबस भरत बाथ ॥ देहिं ताल लजावैं रति जु नाथ ॥३॥ सब कर गुलाल उड़्यौ एक संग ॥ तरु लता अवनि भए अरुन रंग ॥ रंग भरत उलैड़नि मन उमङ्ग ॥ पट भींजि सोभ देंहिं अङ्ग अङ्ग ॥४॥ लसैं गौर भाल मृग मद कौ बिंदु ॥ रवि सुतहि अङ्क लियें मनहु इन्दु ॥ उरकत बेंनी निंदत फनिंद ॥ तन तेज करै दामिनीं निंद॥५॥ कहा वरनौं श्री स्यामा सुहाग॥ मधुरितु सुख विलसन भूर भाग ॥ पिय मुख मौंड़न की हियें लाग ॥ फूली संग सखीं मनु रूप बाग ॥६॥ खुल खेलत कमनी कुञ्ज ग्रेह ॥ उमग्यौ जु प्रेम हिय तें सदेह ॥ नागरि नागर को नवल नेह ॥ हित रूपी कौतिक रच्यौ एह ॥७॥ कानन सर सांवल गौर हंस ॥ विहरत दोऊ भुज धरे अंस ॥ श्री हरिवंश कही गुपत गंस ॥ वृन्दावन हित नित करि प्रसंस ॥८॥१७८॥

राधे श्याम संग खेलत बसंत ॥ रस अवधि विहारिनि रसिक कंत ॥टेक॥ नव तलप रुचिर वर वरन्यौ है बाग ॥मञ्जरी उदित अतिसै सुहाग ॥ मकरंद अधर मधु देत लेत ॥ फल जुगल उरज मंगल निकेत १ पूजत कर कमलनि बढ़त्ति

ओप ॥ भ्रुव भंग चढ़ति कछु प्रणय कोप ॥ जावक जुत पद पिय धरत भाल ॥ इच्छा वर दायक नवल बाल ॥२॥ छूटी अलकावलि खिसत फूल ॥ भृंगावली रही मनु लतति झूल ॥ बहु भूषन उपजत राव घोर ॥ मनु बाल हंस मिलि करत सोर॥३॥ बगरत पराग पिय सहित हास ॥ मारुत श्रम दीरघ भरत स्वास ॥ चंदन चरचत नख बनें अङ्क॥ बनी पीक लीक केशरि की पंक॥४॥ बहु चोज चाइ रंग भरत भाइ ॥ रस लोभी ताकत विविधि दाइ ॥ रस घूमत जकि थकि रहत पीय ॥ भुज भरति गाढ़ धरि लेत हीय ॥ ५ ॥ ललकत बलकत उर प्रेम पूरि ॥ दोऊ सुरति कुशल कल केलि सूर ॥ कंचुकी बंद सब भये चूर ॥ कोऊ मुरत न रस पीवत गरूर ॥ ६ ॥ छिन विवस होत छिन सावधान ॥ छिन निरखि रहत नागर सुजान ॥ छिन ढुरकि मिलत छिन करत आन ॥ छिन त्रिषित होत छिन करत पान ॥७॥ ऐसौ मदन महोत्सव नित विनोद ॥ अलि दृग रस पोषत चहूं कोद ॥ वृन्दावन हित बलि रूप रासि ॥ दरसावौ नित नित वर विलास ॥८॥१७६॥

स्यामा तन दरसति छबि अनन्त ॥ जातैं विवस रहत रस वंत कंत ॥टेक॥ वैसंधि नई नित प्रवेस ॥ तन मुकर लसत कानन सुदेश ॥ यातैं थकित घरनि जुत रति नरेश ॥ नख छटा निकाई सम न लेश ॥१॥ वारिध सौभगता नहिन और ॥ अङ्ग अङ्ग रूप रस परत भौंर ॥ पिय दृष्टि पथिक भई थकित तीर ॥ नाहिं पैठि सकत छबि लहरि भीर ॥२॥ मृदु कनक लता मञ्जरी मनोज ॥ नव हाव भाव रस चाव चोज ॥ आसक्ति मधुव्रत रसिक पीय ॥ अघांन लेत नाहिं त्रिपित हीय ३ नव तलप

सरोवर रमै निसंक जुग स्याम गौर वर राज हंस अधरा-मृत मुख वारिज सुराग ॥ रस भोगी जीवन इहि पराग ॥४॥ खेलत वसंत कोविद खिलार ॥ रंग पिचक कटाछिनु चलति धार ॥ आलिंगन भींजत बार बार ॥ अति प्रेम विवस नहिं तन सम्हार ॥५॥ कछु विगत भये तन ते दुकूल ॥ कच वगरे झरि झरि परत फूल ॥ मनु तडित सजल घन परति बूंद ॥ कछु वसन कसन की तरकी फूंद ॥६॥ धुरि धुरि वरपाने बल्यौ अमित हेत ॥ पुनि किलकि किलकि धरि अङ्क लेत ॥ दोऊ सुरति सुभट नागर निकेत ॥ रस भरत मनोरथ माखिनु खेत॥७॥ वृन्दावन हित बाल वर विहार ॥ भये मिथुन परस्पर हिये हार ॥ हित रूप सहेली निकट जाइ ॥ किये सावधान पुनि लै बलाइ ॥८॥१८१॥

देखौ सजनी कौतिक वसंत ॥ रमैं तलप नवल नागरी कंत ॥टेक॥ सिंगार कलप तरु नवल लाल ॥ सोहैं कनक बेलि तन विचित्र बाल ॥ सब मधुरितु संपति उभै अङ्ग ॥ दरसति नख सिख मति करति पंगु ॥ १ ॥ सुरत श्रमित गये छूटि केस ॥ ते राजत भये मुख सुदेस ॥ अम्बुज मानों अलि अवलि घेरि ॥ मधु पीवत उड़ि उड़ि फेरि फेरि ॥२॥ दुहुं दिसि दीरघ भरत स्वास ॥ वहत मनौं मारुत सुवास ॥ रोमांचित प्रति अङ्ग सोभ ॥ मनु तरु वेली अंकुरित गोभ ॥३॥ लसनि गसनि तन स्वेद वारि ॥ मनु द्रुमनि चली मकरंद धारि ॥ लगे लता उरज फल करि प्रसंस ॥ ताके भोगी पिय कर राज हंस ॥४॥ वदति परस्पर मधुर बैन ॥ मनु पढ़त कोकिला मन्त्र मैन ॥ महिदी नख अधर अरुन प्रकास मनु फूले निधूमित पलास ५

भुज कसनि लपटि मनु विटप वेलि ॥ करैं प्रेम पवन बस चपल केलि ॥ कोक कला बहु भुकनि भेद ॥ पतझार भये पल परन स्वेद ॥६॥ सौरभ गुलाब मधु अधर पान ॥ हुंकारनि मधुरी भृंग गान ॥ साँवल उर बैठी दावि घूँमि ॥ साषा तरु पै मनु रही झूमि ॥७॥ हलैं मुकुट चन्द्रिका नचति मोर ॥ भूषन रव मानौं खगनि सोर ॥ बढ़ैं लोभ ललकि पिय हिय रसाल ॥ जैसें रवि दिन दिन उष्णकाल ॥८॥ उत्साह रह्यौ रमि अङ्ग अङ्ग ॥ अभिलाष भीर भई उर अभंग ॥ दृग कोर पिचक अनुराग रङ्ग ॥ आलिङ्गन गाढ़ी भरनि संग ॥ ६ ॥ मृग मद चरचे पिय मखि सुरेस ॥ नख अङ्क बन्यौ वन्दन विशेष ॥ पीक लीक केशरि कपोल॥निर्तत खिलार मनु भृकुटी लोल ॥१०॥ कुसुम गेंद चलैं सरस भांति ॥ मृदु मुसकनि लसैं दसन पांति ॥ नेह सग वग अतर भाइ ॥ भींजनि छिन छिन चोज चाइ ॥११॥ चिबुक नूत फल सुभग रीति ॥ लालत प्रीतम पिक गाढ़ प्रीति ॥ जोबन वारी मुकलित अनूप ॥ आसक्त मधु व्रत रसिक भूप ॥ १२ ॥ दृष्टि जुरनि अरगजा रेलि ॥ पिय विवस होत नहिं सकत झेलि ॥ पद ओट तकत गौरङ्ग श्याम ॥ तब पुजवति छिन छिन गूढ़ काम ॥१३॥ ललकति चलकत पुनि उसरि जात ॥ रस वीर धीर हँसि भिरत गात ॥ मति कुशल केलि लहि विविध घात ॥ कौतिक वसंत विलसत सिहात ॥१४॥ श्री हित सजनी तब निकट जाइ ॥ तन श्रमित जान मधु पान प्याइ ॥ वृन्दावन हित लखि सुख सवाद ॥ जै श्री रूपलाल गुरुवर प्रसाद ॥१५॥१८१॥

आजु वसंत मदन रंग रलिया । झूमर प्रेम लेत पिय प्यारी

सोहति जूथनि अलियाँ। उड़यौ गुलाल भरयौ सब ओलिनु पिचक परस्पर चलियाँ ॥ २ ॥ प्रथम फागु की करी वोंहनी लै सुगंध मुख मलियां ॥ हँसति कुंवरि दमकति दसनावलि मनहुं कुन्द की कलियां ॥३॥ उररि उररि इत उत रंग ढोरयौ मानौं रूप वद-लियाँ॥लै आरतौ उतारि रूप हित वृन्दावन बलि बलियाँ॥४।१८२।

विवाह वर्णन—आज समाज साजि चलीं श्यामा रितु पति आगम भायौ। फागु वोंहनी करत कंत सों, पंचमी औसर पायौ ॥१॥ अम्बर पीत आभरन ना ना सखनि शृङ्गार बनायौ। मनहु वसंत धरी बहु मूरति यों कौतुक उपजायौ ॥२॥ ओलिन में गुलाल कर गेंदुक पिचकनि रंग भरायौ ॥ मनु दामिनि दल मिलन मेघ यह पूजा साज करायौ ॥३॥ आगें बनि ठाढ़े मुरली-धर शीस वसंत धरायौ। उड़यौ लाग सों वन्दन मनु अनुराग वितान तनायौ ॥४॥ चली रङ्ग पिचकारी इत उत चौंपनि भींजि भिजायौ। कहत न बनै बनें देखें शोभा अम्बुद मनु आयौ॥५॥ वाजत हैं बाजे दुहुं दिसि तें राग हिंडोल जमायौ। गरजनि मधुर कहत हो हो कानन कौतूहल छायौ ॥ ६ ॥ दमकतु है गुलाल भालनि पर ऐसी विधि दरसायौ। मानौं इन्दु इन्दरा पूजे कुल को ओप बढ़ायौ ॥७॥ सब रंग छींट बनी तन बस-ननि रीझै खेल रिझायौ ॥ शोभित धरा बिछयौ जहाँ वंदन हरषी भाग मनायौ ॥८॥ बदलि गयौ तरु रंग कुम कुमा अबीर विपिन घुमड़ायौ। संभ्रम भयौ मैंन मैंना मन ऐसौ रंग मचायौ ॥६॥ गांठि जोरौ करि हँसति सहेली झूमक नाच नचायौ ॥ वृन्दावन हित रूप उदौ कानन सत्त गुनौ दिखायौ ॥१०॥१८३॥

यह वृन्दावन यह रविजा तट यह वसत बनि आयौ ।

कोटि कोटि मनमथ कौ मनमथ मोहन वेश बनायौ ।। लै वसंत सिर धरि प्रीतम के यह सब के मन भायौ।।२।।मंगल को जु महा मङ्गल दिन कोन भाग्य यह पायौ।।विपुल मनोरथ कौ सुख सागर यह रितु पति सजि लायो ।।३।। देखि देखि री तरुनी मन दै सुनि मो बचन सुहायौ ।। तोसी नाहिं वधू त्रिभुवन जाके कर लाल बिकायौ ।।४।। उठी सकल विद्या गुन नागरि राग हिंडोल जु गायौ ।। चरचि गुलाल भावते कंतहि भूरि सुहाग मनायौ ।।५।। अलि जूथनि मिलि भरति रसिक पिय सैंना मदन लजायौ ।। जयति जयति कानन रानीं रस रंग प्रवाह बहायौ ।। ६ ।। बूका वंदन उड़त परस्पर भुव तरु बेलिनु छायौ ।। राधा हरि अनुराग हिये सों मनु सब विपिन मढ़ायौ ।। ७ ।। श्याम भरति है प्रान भाँवती झुरमट प्रेम मचायौ ।। वृन्दावन हित रूप सहेलिनु लालहि पकरि नचायौ ।।८।।१८४।।

देखि जुवति चूड़ामणि रानी सजि रितु पति वन आयौ । होत परम कौतूहल चहुंदिशि चहचर खगन मचायौ ।।१।। तरु पत झार होत आगम सुनि सर्वसु मनहु लुटायौ ।। नव पल्लव उलहे मानों रितुराज आन पहिरायौ ।।२।। कुसुमित भये वदन मनु विहँसित निरखि नृपति सचु पायौ ।। झरत पराग प्रजा आनन्दित मनु पाँवड़ो बिछायौ ।।३।। लघु त्रन हरित भये अवनी मनु प्रेम अधिक सरसायौ ।। गुञ्जारति भँवरी वदकिनु वनितनि मनु मंगल गायौ ।। ४ ।। पढ़तु कपोत तुही एकै मनु वंदिनु विरद सुनायौ ।। कोकिल कूक वजत डोड़ी मधुरितु परताप चितायौ ।। ५ ।। झुके मत्त गज मनों तुङ्ग तरु हय लघु तरु ज

सुहायौ ॥ शोभित अरुन वरन दल मनु किंसुक तरु ध्वज फहरायौ ॥६॥ मोर सोर सहनाई गिर्राझरिना निसान बजायौ ॥ त्रिविधि पवन मनों दूत कान लगि सब मन प्रेम बढ़ायौ ॥७॥ फूले कमल हँसी मनु सरसी आगम भाग्य मनायौ ॥ तुम खेलन कानन अस सम्पति सबहिनु के मन भायौ ॥८॥ यह सुनि हरषी मृदु मन स्वामिनि पियहि वसंत वंधायौ ॥ चाचरि चौंप बढ़ी मन इत उत राग हिंडोल जु गायौ ॥ ६ ॥ भरत भरावन रंग परस्पर वंदन हरषि उड़ायौ ॥ मंडित है कानन अवनी अनुराग मनहुं दरसायौ ॥ १० ॥ खेलति अखिल कलनि की स्वामिनि प्रीतम प्रेम छकायौ ॥ वृन्दावन हित रूप बढ़यौसुख सागर गहर बहायौ ॥११॥१८५॥

असीस—विलसि वसंत कुंवरि मेरी राधा अविचल सदा सुहाग ॥ छिन छिन प्रति बाढ़ति रहौ नौतन प्रीतम सों अनुराग॥१॥पिय इच्छा पुरवन को अङ्ग अङ्ग रूप कलप तरु बाग॥ मदन मनोरथ फल करि पूरन रहे रसिक रस पाग ॥२॥ अखिल लोक चूड़ामणि रस वस धनि तुव अनुपम भाग ॥ वृन्दावन हित रूप स्याम सों नित नित खेलौ फाग ॥३॥१८६॥

भंवर फुलवारी तन वन को । छवि मकरंद पान कर घूमत भांवन्ता मन को ॥१॥ भरै भांवरै सौरभ स्वादी दृढ़ अनन्य पन को ॥ वृन्दावन हित रूप खिलौना गोरांगी धन को॥२॥१८७॥

गोस्वामी श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभु जी को जन्मोत्सव

माघ शुक्ला नौमी मंगल छंद बधाई के पद—राग सूहौ बिलावल

जै जै श्री हरिवंश सुवन प्रनितनि पली ॥ जुगल भजन हिय भाजन सुख प्रापति अली ॥ श्री कृष्णदास गुननिकर सुजस धुज रोपियौ ॥ महँत रीति आरूढ भक्ति उर ओपियौ ॥ भक्ति उर ओपी महाई उदित जैसैं भांन है ॥ विकच द्विज कुल किये वारिज हरन तम अज्ञान है ॥ चौंधे उलूक जु भक्ति असहन प्रभु दई प्रभुता भली ॥ जै जै श्री हरिवंश सुवन प्रनितनि पली ॥१॥ जै जै श्री हरिवंश तनय व्रत बांकुरौ ॥ मुनि दुर्ल्लभ रस सेवत परतु न झांकुरौ ॥ व्यास सुवन दत कांनन रति निरवाधिका ॥ निगम अगम फल दरस्यौ वल्लभ राधिका ॥ राधिका वल्लभ जु क्रीड़त लता कुंज कुटीर मैं ॥ धाम लोकनि मुकट मणि जहां बसत रविजा तीर में ॥ धारयौ जु धर्म अनन्य कबहूँ जाहि लगतु न टाँकुरौ ॥ जै जै श्री हरिवंश तनय व्रत बाँकुरौ ॥२॥ जै जै रुकमिनि कूषि उदित कुल मणि अहा ॥ कोविद करत प्रसंश सील मंदिर महा ॥ रसिक सभा रस वृष्टि वचन रचनावली ॥ सोभित करी सबै विधि कौंनन की थली ॥ सोभित करी रस थली रंग विहार नागर नागरी ॥ लीला सुहृद मुरली धरन गौरंग सोभा आगरी ॥ अवलोकि यह संपति छके हिय हिलग को वरनौं कहा ॥ जै जै रुकिमिनि कूषि उदित कुल मणि अहा ॥३॥ जै जै श्री कृष्णदास हरन मन संश के ॥ आरज पथ जु करावन विविधि प्रसंस के ॥ रसिक सभा दै मान महा मंगल सच्यौ ॥ कमनीं सांवल गौर चरित ग्रंथनि रच्यौ ॥ रचे ग्रंथ प्रबंध नाना कृपा दत रासेश्वरी लह्यौ परम

प्रमाद अनुभव हिये मांहि फुरीदुरी ॥ वृन्दावन हित रूप वंदौं सुत जु श्री हरिवंश के॥जै जैश्रीकृष्णदास हरन मन संशके॥१८८॥

राग जैतश्री— ताल मूल—मुकृत फल्यौ है श्री हरिवंश कौं कुलमणि आगम आजु ॥ टेक ॥ माहसुदी नौमीं जु सोंहिलौ व्है रही जग मग गेहा ॥ कुल वनिता गावति है गहकी पूरित विपुल सनेहा ॥ १ ॥ धनि वासर धनि रजनी सजनी वेली वंश फली है ॥ सुत के जनम हरषि सब तन मन घर घर रंग रली है ॥२॥ गह गहे धुरहिं निसांन दांन सनमांन सबनि बहु दीयौ ॥ रुकिमिनि कूषि सुधाकर मंगल भूरि अवनि पै कीयौ ॥३॥ महिमा महंत व्यास कुल ओपी कहत विप्र अनुरागी ॥ लगन जोग सब वली देखियत भाग्य महामणि जागी ॥४॥ जननीं जनक सुजस सुख वर्द्धन हिय गुन निकर सचैंगे ॥ श्री राध प्रसाद हित पद्धति ग्रंथनि सुविधि रचैंगे ॥५॥ श्री कृष्ण चंद यह नाम धांम सुख द्विज वर वरनत ऐसैं ॥ श्री व्यास नन्द कुल मंडन भाजन भक्ति कृपा वपु जैसैं ॥६॥ अलि भावक प्रांनन की थाती दंपति प्रीति जजैंगे ॥ वृन्दावन हित रूप रहसि रस सादर सुविधि भजैंगे ॥७॥१८६॥

राग सोरठ—ताल मूल—रानीं रुकिमिनि कूषि सिरानीं रे ॥ श्रीकृष्ण दास कुल मंडन प्रगटे रसिक जननि सुख दानी रे ॥ १ ॥ जननी जनक महा जस वर्द्धन वदति विप्र यों बानी रे ॥ श्री राधा पद्धति प्रचार कौं करि है आगम जानीं रे ॥२॥ लगन जोग सुभ परे महामति दै है प्रांन अमानीं रे ॥ धर्म अनन्य ओप वढि है अब सुभ सगुननि पहिचानीं रे॥३

देवन घर घर मंगल ज़हां विप्रनि की रजधानीं रे ॥ ४ ॥ श्री रंगी लाल इष्ट पूजन करि जननी अधिक सिहानीं रे ॥ वरषी कृपा कुंवरि गोरज़ी बात रही नहीं छानीं रे ॥ ५ ॥ सथिया धरति सवासिनि अपनीं लेति लीक मन मानी रे ॥ गावति बधू बधाये मन्दिर परम प्रेम उर सानी रे ॥६॥ चिरुजीवौ रुकिमिनि कुल भूषन होहु जुगल गुन गानीं रे ॥ श्री हरिवंश दान दियौ निर्मल दिसिदिसिचली कहानीं रे॥७॥मांह सुदी नौमीं मन आसा पुजई राधा रानीं रे ॥ वृन्दावन हित रूप जनम दिन यह रस रीति बखानी रे ॥८॥१६०॥

सोरठ-ताल मूल—बधावौ रसिक नृपति घर है ॥ माह सुदी नोमीं आनन्द को लाग्यौ अति झर है ॥१॥ श्री कृष्ण दास प्रगटे रुकिमनि कूषि कलप तरु है ॥ अलभि लाभ दाइक रसिकनि कौं प्रेम भक्ति वरु है ॥२॥ बधू सोहिले गावति उद्दित प्रेम दिवाकर है ॥ प्रफुलित वारिज विप्र महा अज्ञान तिमिर हर है ॥ ३ ॥ प्रनितनि सीतल करन दरसि परयौ किधौं कला धर है ॥ परम हंस कुल सेवन कौ कै भरयौ रंग सर है ॥४॥ जननीं जनक सुकृत कौ, कै बढ़ि गाजत सागर है ॥ आगम निगम सार सोधन कै विद्या आगर है ॥५॥ व्यास वंश के ओप दैन रस रतन उजागर है ॥ मन वढ़ि वांछित दांन दीजियतु सबको सादर है ॥६॥ मंगल रचनां देखि भवन में अति सोभा भर है ॥ तात भाग की करत प्रसंशा नारी अरु नर है ॥७॥ परम सुखित भये साधु लह्यौ अनुभव सर्वोपरि है ॥ वृन्दावन हित रूप मुदित भयौ चरननि अनुचर है ८ १६१

राग गोरी ताल मूल—श्री कृष्णदास गोस्वामि कलप तरु ॥ श्री हरिवंश सुवन सव लाइक सरनागत लगे भजन डारि डरु ॥ प्रेमाभक्ति महा फल दाइक दीन जननि पर अति करुना भरु ॥ वृन्दावन हित रूप राधिका वल्लभ चरित लगायौ रस झरु ॥१६२॥

राग धनाश्री–ताल आड़—आजु बधावौ री अमौ ॥ ॥ भादौं वदि अष्टमी महा तिथि नन्द सदन द्वापर भयौ जैसौ ॥ १ ॥ रुकिमिनि कृपि कलप तरु कौ फल भाग्य भरी नैंननि चलि देखौ ॥ मंगल महा आजु अवनीं पर प्रगट भये लपि सुदिन विशेखौ ॥२॥ कृष्ण समान सवै गुन लच्छन विप्रनि नाम धरयौ है सोई ॥ श्री हरिवंश भवन कौतूहल धनि सुभ द्यौस कहत सब कोई ॥३॥ देवनपुरी जग सगति इहि विधि हरि आगम ज्यौं गोकुल नगरी ॥ गावति है द्विज भांम सोहिलें जननीं कृपि सुधा निधि अगरी ॥४॥ धनि यह माघ मास सुदि नौमी व्यास वंश उद्योत जु कीयौ ॥ वृन्दावन हित रूप राधिका पद्धति सुख जु अपूरव दीयौ ॥५॥१६३॥

इति श्री वसंत खेल माघ सुदी पंचमी ते पूनौ ताई पद संख्या १६२बधाई ८ कुल १६८ समाप्त ॥

अथ होरी धमारि के पद

माघ सुदी पूर्णमासी से प्रारंभ-फागुन सुदी पूर्णमासी तव

(शृङ्खला)

गोस्वामी श्री हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत-राग गोरी (यह पद नित होय है)

प्रथम यथामति प्रणऊँ श्री वृन्दावन अति रम्य। श्री राधिका कृपा बिनु सबके मननि अगम्य ॥ १ ॥ वर यमुना जल सींचन दिन ही शरद बसंत। विविधि भाँति सुमनसि के सौरभ अलि कुल मंत ॥२॥ अरुण नूत पल्लव पर कूंजित कोकिल कीर। निर्त्तनि करत शिखी कुल अति आनन्द अधीर॥३॥बहत पवन रुचिदायक शीतल मंद सुगंध। अरुण नील सित मुकलित जहाँ तहाँ पूषन बंधु॥४॥अति कमनीय विराजत मंदिर नवल निकुंज। सेवत सगन प्रीति जुत दिन मीनध्वज पुञ्ज ॥ ५ ॥ रसिक रास जहाँ खेलत श्यामा स्याम किशोर। उभय बाहु परिरंजित उठे उनींदे भोर ॥६॥ कनक कपिस पट शोभित सुभग साँवरे अङ्ग। नील वसन कामिनि उर कंचुकी कसूंभी सुरंग ॥७॥ ताल रबाब मुरज डफ बाजत मधुर मृदङ्ग। सरस उकति गति सूचत वर बँसुरी मुख चंग ॥ ८ ॥ दोऊ मिलि चाँचरि गावत गौरी राग अलाप। मानस मृग बल बेधत भृकुटी धनुष दृग चाप ॥९॥ दोऊ कर तारिनु पटकत लटकत इत उत जात। हो हो होरी बोलत अति आनन्द कुलकात ॥१०॥ रसिक लाल पर मेलत कामिनि बंदन धूरि। पिय पिचकारिनु छिरकत तकि तकि कुम

चढ़ि दोऊ जन झूलत फूलत करत कलोल ॥१२॥ वर हिंडोर झकोरनि कामिनि अधिक डरात । पुलकि २ वेपथ अङ्ग प्रीतम उर लपटात॥१३॥हित चिंतक निज चेरिनु उर आनन्द न समात। निरखि निपट नैननि सुख तृण तोरति वलि जात ॥१४॥ अति उदार विवि सुन्दर सुरत सूर सुकुमार । जय श्री हित हरिवंश करौ दिन दोऊ अचल विहार ॥१५॥१॥

(चाचा) श्री वृन्दावनदास जी कृत—राग धनाश्री--होरी डाडौ (माघ सुदी पूनौं)

ब्रज खेलत ब्रजराज कुमार । होरी डाडौ रोपियो ॥टेक॥ पूनौ माघ विचारि कैं मन बाढ़्यौ आनन्द अपार ॥ विनती घोष नरेश सौं करन लगे पुनि बारंबार ॥ होरी डाडौ रोपियौ ॥ वृज खेलत० ॥१॥ पुनि सांडिल्ल बुलाइ कें लगन महूरत स्याम-सुधाइ ॥ डाडौ रोप्यौ गोहरें देश भयानें कुशल मनाइ ॥ २ ॥ नन्द परम आनन्द भरे मोहन लीये निकट बुलाइ ॥ चंदन कुम कुम अरगजा कोश सुगंधिनु दिये खुलाइ ॥ ३ ॥ लाड़ सहित सिर कर धरयौ पुनि हिय भरे परम अनुराग ॥ आयसु दीनौ स्याम कौं ब्रजपुर बीथिनु खेलौ फाग ॥ ४ ॥ नाना रूप सखा बनें सुघर मंडली मोहन संग ॥ नाना विधि बाजे सजे करत कुलाहल छिरकत रंग ॥५॥ कौतिक वेष बनाइ कें सकटनि भरे सुगंधिनु साज ॥ महाराज वृषभानु कें चलौ भैया मिलि खेलैं आज ॥६॥ नन्द सुवन आये जहाँ तहाँ राधा खेलन नित नेंम ॥ बेली विटप निहारि कैं प्रेम सरोवर बाढ़्यौ प्रेम ॥७॥ पञ्च शब्द बाजे बजें मुरली मोहन राग अलापु ॥ धुनि रूपा नव सहचरीं पुहुंची जाइ प्रिया ढिंग आपु ॥८॥ खेल उमाहौ तिन कह्यौ ललितादिक लई निकट बुलाइ अगनित साज समाज

लै चलीं कुंवरि वर वृन्द बनाइ ॥६॥ गान गहर विथकित भये मंजुल धुनि सुनि मोहन कान ॥ द्रवित श्रवित गिरि द्रुम लता खग मृग थिर भये अमर विमान ॥१०॥ सहचरि अंश भुजा धरें लटकि चलनि गति परम अनूप ॥ चात्रक व्रत घनस्याम कें वरषत जू धाराधर रूप ॥११॥ अलक सजल धुरवा मनों दामिनि कौतिक मंजुल हास ॥ वग सैनी सोभा बढ़ी मांग जलज मणि विविध प्रकास ॥ १२ ॥ लहर लहर वैंनी लसै विहरति मनु व्यालिनि प्रचंड ॥ पचरंग सारी कोर सों इन्द्र धनुष मनु उदित अखंड ॥१३॥ मणि माला उर वर वनी मनु नग खांनि उदित गिरिराइ ॥ हरित भूमि रोमावली सोभा प्रगटी नाल भाइ ॥१४॥ मधुर मधुर गरजन भली कंकन वलय किंकिनी घोर ॥ चलनि हलनि निर्त्तनि मनों सीस चंद्रिका अद्भुत मोर ॥ १५ ॥ इन्दु वधू जावक मनों झिल्लीं चरननि नूपुर नाद ॥ अति झर बाढ्यौ रूप रस मोहन भींजत सरस सवाद ॥१६॥ द्दग द्दग जब सनमुख भये उफनि उठ्यौ हिय वारिधि हेत ॥ पल मर्जाद विदारि कें पिय के भरत मनोरथ खेत॥१७॥दुहु दिसि तें बाजे बजें पुनि कीनी बंदन की रेल ॥ तकि तकि चोट करन लगे अतिशय बढ्यौ परस्पर खेल ॥१८॥ पिचकनि कों पिचकें चलैं मूठिनु कों लगि मूठ गुलाल ॥ गेंदनि कों गेंदें चलें उत हरि इत राधा नव बाल ॥ १९ ॥ भरि भरि बंदन पोटरी करत कुलाहल देत उड़ाइ ॥ तरु वेली इहि विधि रँगे मनु सब तें अनुराग चुचाइ ॥२०॥ कमल कोश भरि अरगजा स्याम अचानक कीनी घात॥प्यारी को पट छिरकि कें कुंज ओट व्है लखे न जात।२१। कुपित भई सब सहचरी हाटक जटीं छरीं लै हाथ । हँसति

कलश उलैंड ही पैडें लगी विचक्षन भाँम दै दै पीठ सखा भजे लतनि दुरे गहे लीने स्याँम ॥ २३ । घेरि सबै ठाड़ी भई पुनि हँसि दई है लड़ैती सैंन ॥ कर गहि स्याँम नचाइयौ अञ्जन सों गहि आंजे नैंन ॥२४॥ मुरली पटुका किंकिनी रवकि पीत पट लियौ है छिनाइ ॥ पुनि आगे ठाड़े किये निरखि निरखि प्यारी मुसिकाइ ॥२५॥ कह्यौ चहत नहि कह सकैं इत उत देखत कुंवर लजाइ ॥ पिय कें मन कौं जानि कें पटुका मुरली दई है मगाइ ॥ २६ ॥ अति आधीन कुंवर भये प्यारी फगुवा देत विचार ॥ विविध भांति आदर दियौ मुसकनि जुत सौरभ उद्-गार ॥२७॥ विपुल रूप आहार दै वचननि त्रिपित करे मुख दांन॥ दृग कल कोर कटाच्छि सों पिय नैंननि करवावति पांन॥२८॥ तव ललिता कौतिक रच्यौ खोई कहूं नक वेशरि लाल ॥ जित तित सब ढूंढन चली कुञ्जनि विलसत हरि नव वाल॥२९॥ नेह सेहरे नित नए दिन दूलह दुलहिनि सुकुंवारि ॥ मनि रहे कुञ्ज सुहाग सुख हित सजनी पीवत जल वारि ॥३०॥ नन्द सुवन प्यारी राधिका नित व्रज वीथिनु केलि अनूप ॥ इहि रस मगन सदा रहैं सुघर सहचरी वलि हित रूप ॥३१॥ प्रेम सरोवर प्रेम सों ये नित विहरौ मिथुन किशोर ॥ वृन्दावन हित रीति सौं दै असीस करि अञ्चल छोर ॥३२॥२॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग गौरी--होरी डाडौ--माघ सुदी पूनौं

रितु वसंत सुख खेलिये हो आयौ फागुन मास । होरी डाडौ रोपियौ सब व्रज जन हिये हुलास गोकुल के राजा

बड़े गोप वृषभान के हो सब मिलि आये पौरि श्रवन सुनत प्यारी राधिका हो चढी चित्रसारी दौरि ।।गोकुल०।।३।। उझकि झरोखा झांकियौ हो दुहुंवनि मन आनन्द । ऐसी छवि तब लागही मनु निकस्यौ घटा मधिचंद ।। गोकुल० ।।४।। नर नारी एकत भये हो घोष राइ दरवार । सब सनमुख व्है दौरहीं, नहिं भूषन वसन सम्हार ।। गोकुल० ।।५।। वासर खेल मचाइयौ हो नियरें आयौ फाग । झूमक चैतव गावहीं मनमोहन गोरी राग ।।गोकुल०।।६।। अगनित बाजे बाजहीं हो रुञ मुरज नीसांन । डफ दुंदुभि अरु झालरी पै कछुव न सुनियत कांन ।।गोकुल० ।।७।। पिचकारी कर कनक की हो सोंधे अरगजा घोरि । श्यांन प्रिया कौं छिरकहीं हो तकि ताकि नवल किशोर ।।गोकुल०।।८।। बहुरि सखा सनमुख भये हो बल मोहन लै संग । प्रमदागन पर वरषहीं हो उड़त गुलाल सुरंग ।। गोकुल० ।।९।। ललित विसाखा मतौ मत्यौ हो लीनें सुवल बुलाइ । बेरी तेरे बाप की नेंकु गिरिधर कौं पकराइ ।। गोकुल०।।१०।। तबहि सुवल कूटक रच्यौ हो सुनहु सखा इक बात । इनकौं भीतर जान दै नेंकु बोलत जसुमति मात ।। गोकुल० ।। ११ ।। हरैं हरैं सब रिंग चली हो नियरैं पहुंची आइ । सबै सैंन दै दौरही हो मोहन पकरे धाइ ।। गोकुल० ।।१२।। प्यारी कौ अंचल लियौ हो अरु पिय कौ पट पीत । सकतनि गँठिजोरो कियौ हो भले मिले दोऊ मीत ।। गोकुल० ।। १३ ।। फगुवा में मुरली लई हो अरु उर कौ लियौ हार । प्यारी राधा कौं पहिराइ कैं हो हँसि कर

दियौ निवेरि नैननि काजर आंजि कै हो हँसति वदन तन हेरि ॥ गोकुल० ॥१५॥ इहि विधि होरी खेलहीं हो ब्रजवासी संग लगाइ । जुगल कुंवर के रूप पै हो जन गोविन्द वलि वलि जाइ ॥ गोकुल० ॥१६॥३॥

श्री भगवान हित रामराय जी कृत—राग विभागरौ (फागुन वदी १ परवा कौ)

रंग हो हो हो हो होरी खेलै लाड़िलौ ब्रजराज कौ ॥ साँवरे गात कमल दल लोचन नाइक प्रेम समाज कौ ॥१॥ प्रथमहिं रितु वसंत विलसे हुलसे होरी डांडौ रोप्यौ ॥ मानों फाग प्रान जीवन धन आनँदनि सव ब्रज ओप्यौ ॥२॥ मृग मद मलय कपूर अगर केसरि ब्रजपति वहु जोरि धरे ॥ सरस सुगंध सँवारि संग दै रंगनि कंचन कलस भरे ॥३॥ प्रेम भरी खिलवारनि के हित सुख कौ सार सिंगार कियौ ॥ भाग अपार जसोमति मैया वार वार जलवारि पियौ ॥ ४ ॥ फेंट भराइ लई जननी पै आज्ञा लई ब्रज ईस सौं ॥ नन्दराइ तव रतन पेंच रचि वांध्यौ गिरधर सीस सौं ॥५॥ तापर मोर चंद्रिका सोभित ग्रीव डुलनि लहकाति है ॥ मदन जीत कौ वानों मानौं रूप ध्वजा फहराति है ॥६॥ भई रंगीली भीर दुवारें प्रीतम दरसन कारनें ॥ अव वनि ठनि निकसे मंदिर तें कोटि काम किये वारनें ॥७॥ तँमेइ सखा संग रंग भीनें हरषि परस्पर मन मोहैं ॥ वरन वरन जोति के कमल मानौं अमृत दिन मणि संग सोहैं ॥८॥ आनन्द भरि वाजे वाजत नाचत मधु मंगल रंग कियौ॥ हरि की हँसनि दसननि की किरन नैंननि की ढुरनि मन मोहि लियौ ॥९॥ अवीर गुलाल उड़ाइ चले खेलत जैसें सव कोऊ हरषै ॥ छिरकत भरत छैल नव रंगी कह कहियै रस घन वरषै १० कोऊ द्वार न कोऊ

चढ़ी अटारिनु कोऊ खिरकिनु बदन सुहाये ॥ गोकुल चंद्रमा देखन कौं मनौं इन्दु विमाननि चढ़ि आये॥११॥ श्री राधा जू दृष्टि परत ही मोहन फूलि फूलि नैंननि घूम्यौं ॥ सनमुख व्है पिय कलप तरोवर महा भाग फल रस भूम्यौं ॥ १२॥ प्रमदा-गनमणि स्यामा रसिक सिरोमणि सों खेलन आई ॥ दुहुँ दिसि सोभा उमँगि रंग मच्यौ गांन वेंनु धुनि धुनि लाई ॥ १३ ॥ नैंननि वैंननि खेल मच्यौ गेंदुक नवलासिनि मार मची ॥ कमल नैंन कर लई पिचकारी मृग नैंननि की मोह नची ॥१४॥छिरकी छैल छवीली भांतिनि मन हरनी जोवन वारी ॥ रंग रंग छींट वनी तिय वसननि फूल रही छवि फुलवारी ॥१५॥ पहुप पराग उड़ाइ दाइ रचि अञ्जन अञ्जन नियरें आई ॥ दौरि दामिनिनु घन घेरयौ पिय बात बनी सब मन भाई ॥ १६ ॥ कोऊ मुख मांडति दै गरवहियां कोऊ पौंछति आछी छवि सों ॥ अलकनि भौंहनि मूल रंग रह्यो शोभा कही न जाइ कवि सौं ॥१७॥ कोऊ रचि पान खवावति पुलकित सुन्दर अधरनि परसि किये ॥ कोऊ भुज गहि लड़काइ फाग मांगति पिय नैंननि नैंन दिये ॥१८॥ श्री राधा जु नागर स्यांम सुन्दर पर प्रीति उमँगि केशर ढोरी ॥ महा मनोहर ताकौ राज अभिषेक कियौ कहि हो हो री ॥ १९॥ सरसुती सहित महामुनि मोहे यह सोभा संपति हेरें ॥ कहि भगवान् हित रामराय प्रभु हँसि चितवनि बसि जिय मेरे॥२०॥४॥

श्री सूरदासि मदनमोहन जी कृत--राग गौरी (फागुन बदी दोज (२) कौ)

खेलत हैं हरि हो हो होरी ॥ ब्रज तरुनी रस सिंधु झकोरी ॥ १ ॥ बाला वैसंधी नव तरुनी ॥ जोवन भरी चपल दृग हरनी ॥२॥ नवसत करि गृह गृह तें निकसीं मानहु

कमल कली सी विकसी ॥३॥ पिक बचनी. तन चंपक बरनी ॥ उपमा कों नहिं मनसिज घरनी ॥४॥ बरन बरन कंचुकी अरु सारी ॥ मानहुं काम रची फुलवारी ॥५॥ द्वादस अभरन साजि कंचन तन ॥ मुख ससि आभूषन तारा गन ॥६॥ मनों मनोभव मनतें कीनी ॥ अरु त्रिभुवन को सोभा दीनी ॥७॥ देखत दृष्टि छिन न ठहराई ॥ जनु जल झलमलात रवि आई ॥८॥ ताल मृदङ्ग उपंग बजावति ॥ डफ आवझ स्वर एक मजावति ॥९॥ मधु रितु कुसुमित वन नव न्द्योरी॥गावत फाग राग रति गोरी॥१०॥ आई सबै नन्द जू के द्वारै ॥ अगानत कलस सुगंध सवारै॥११॥ झूँमि झूँमि झूमक सब गावति ॥ न मिति भेद दुहुं दिस तें आवति ॥१२॥ रस सागर उमग्यो न समाई ॥ मानहुं लहरि दुहूँ दिसि आई ॥ १३ ॥ खोरि खिरक गिरि जहाँ ही पावै ॥ धाइ जाइ ताही गहि ल्यावैं ॥ १४ ॥ करि कोंडति अपनो मन भायौ ॥ उड़त गुलाल सकल नभ छायौ ॥ १५ ॥ मोहन आइ द्वार व्है झाँके ॥ दूरि भये तें जुवतिनु ताके ॥१६॥ एकहि बेरि सबै जुरि धाई ॥ पौरि तोरि मन्दिर में आई ॥ १७ ॥ मोहन गहत गहत छुटि भागे ॥ पीतांबर तजि भये तन नागे ॥१८॥ दौरि अटा चढ़ि दई दिखाई॥ मानों स्याम घटा जुरि आई ।१९। सुन्दर स्याम नगन तन राजें ॥ गिरा गंभीर मेघ लों गाजें ।२०। टेरि टेरि पीतांबर मागें ॥ गोपी कहें आइ लेहु आगें ॥ २१ ॥ पीतांबर राधिकाहि उढ़ायौ ॥ हरि जू निरखि परम सुख पायौ॥२२॥पीताम्बर हू सोभा पाई ॥ घन तजि दामिनि खेलन आई ॥२३॥ तबहि अरगजा स्यांम मगायौ ॥ अपनैं करवर घोरि बनायौ ॥२४॥ ऊंचे चढ़ि घन लौं वरषायौ । धाराधर

जनौ ऊनै आयौ ॥२५॥ तब इनि जसुमति ठाढ़ी पाई ॥ सौंधै गागरि सिर तें नाई ॥२६॥ उततें निरखि रोहिनी धाई ॥ बिचि ठाढ़ी ह्वै महरि बचाई ॥२७॥ आंगन भीर भई अति भारी ॥ जसुमति देत दिवावति गारी ॥२८॥ गोपिनि नन्द दुरे गहि काढ़े ॥ कंचन गिरि से आगें ठाढ़े ॥२९॥ जनौं जुवती ऐरावति ल्याईं ॥ पूजत हँसत गौरि की नाईं ॥३०॥ जसुमति मानौं गोरा गौरी ॥ छिरकत चंदन वंदन रोरी ॥३१॥ पूजि पूजि मांगत वर मोहन ॥ बिनु पायें छाडत नहिं गोहन ॥३२॥ एक कहत मोहनहि वताअहु ॥ तब तुम हमपै छूटन पावहु ॥३३॥ एक सिखावति एक बचावति ॥ तारी दै दै एक नचावति॥३४॥ एक गहे कर फगुवा मागें ॥ एक नैंन काजर दै भागें ॥३५॥ बसन अभूषन नन्द मंगाये ॥ दिये सबनि जैसे जिहि भाये॥३६॥ देति असीस चली ब्रजबाला ॥ जुग जुग राज करौ नंदलाला ॥३७॥ मदन मोहन पिय के गुन गावैं ॥ सूरदास चरननि रज पावैं ॥५॥

श्री माधुरीदास की कृत–राग धनाश्री–फागुन वदी तीज ३ कौ

हो हो होरी बोल हीं नवल कुंवरि मिलि खेलहिं फाग ॥ आगम सुनि रितुराज को प्रगट्यौ मन कौ अति अनुराग ॥१॥ वरस दिवस लागी रहै या सुख की आशा जिय मांहि ॥ जो क्यौंहूँ विधनाँ रचै सबै द्यौस होरी ह्वै जांहि ॥२॥ अति हुलास हिय में बढ़्यौ अब कापै यह रोक्यौ जाइ ॥ उमडि चल्यौ रस सिन्धु ज्यों अपनी मरजादा बिसराइ ॥३॥ सुबल सुबाहु सखा सबै जोरि लियौ सब संग समाज ॥ अपनें अपनें गृहनि तें करि निकसे खेलन कौ साज ॥४॥ एक दिगम्बर रूप धरें नख

की गांठि जुराइ।५।एक सखा हो हो करै एक करैकछु उलटी रीति॥ मधु मंगल नांचत चल्यौ गावति है फागुन के गीति ॥६॥ ताल पखावज बाजहीं बाजत रुञ्ज मुरज सहिनाइ॥ डफ दुंदुभी अरु झालरी रह्यौ कुलाहल सों व्रज छाइ ॥७॥ सैननि हीं में सांवरे कह्यौ सबनि सों यों समुझाइ ॥ आजु भैया या साज सों खेलैं बरसानें में जाइ ॥८॥ आये बट संकेत में तब कीनी मुरली की घोर ॥ श्रवन सुनत प्यारी राधिका चौंकि परी चित रह्यौ न ठौर ॥६॥ निकसीं संग समाज लै खेलन को सब साज बनाइ ॥ पावस की सरिता मनौं उमगी रस सागर कौं धाइ॥१०॥ एकनि कर गेंदुक सोहैं एकनि नवलासी बहु रङ्ग ॥ झुण्डनि मिलि गावत चलीं झोलिनु भरे गुलाल सुरंग।११। सुर मंडल अरु सारङ्गी सुर बीना बीनां बहु संग ॥ मधुर२ स्वर बाजहीं मदन भेरि मुहु-चंग उपंग ॥ १२ ॥ आइ प्रिया पहुंची तहाँ खेलत हे प्रीतम जिहिं ठौर ॥ मदन खेत संकेत में रुपे सूर मनमुख दुहुं ओर।१३। बिबिधि भाँति कुसुमनि गुहीं पहिलें गेंदुक दई चलाइ ॥ मानहुँ रस संग्राम के आगें दिये बसीठ पठाइ ॥ १४ ॥ पिय पिचकारी पूरि कें दई प्रिया लोचन में तानि ॥ अगर अरगजा घोरि कें मुख सौंधो लपटायो आनि ॥१५॥ छिरकत है चहुँ ओर तें मनहुं मेघ उमड़े जल रासि ॥ गौर घटा अरु साँवरी बरषत केशरि नीर सुवासि ॥१६॥ सब सखियन मिलि स्यांम कौं दीनों लाल गुलाल उड़ाइ ॥ दुरि पाछें व्है घात सों गहे कुँवर मन मोहन आइ ॥१७॥ एकनि कर गाढ़े गहे एक बनावति चित्र कपोल ॥ एक निडर आंजनि लगी नैंन कमल दल परम सलोल ॥ १८ ॥ एकनि मुरली हरि लीनी एकनि मोतिन माल

उतारि ॥ नव केशर मुख मांडि कैं एक नाचति दै दै करतारि।१६ इक सनमुख मुख चाहहीं एक कहति कर चिबुक उठाइ ॥ बहुत दिननि तें आजु हीं अब बस परे हमारे आइ ॥२०॥ इक बैंननि गारी गावहीं एक कहति सैननि मुसिकाइ।।बहुत कहावत हो आपुन आजु बदौं जौ जाहु छुड़ाइ ॥ २१ ॥ दये सबनि मिलि स्यांम के केशरि कलश सीस तें ढारि॥एकनि गहि गूंथी बैंनी एक बनावति मांग सँवारि ॥२२॥ तनसुप की सारी भीनी अरु लीनी सौंधे सों सांनि ॥ मृग मद केशरि वोरि कें प्रीतम कौं पहिराई आंनि ॥ २३ ॥ उर ऊपर कंचुकी कसी पहिरायौ मोतिन कौ हार ॥ नूपुर कंकन किंकिनी नख सिख भूषन सजे सिंगार॥२४॥कर पर कर धरि लै चलीं बैठारी प्यारी ढिंग जाइ ॥ आई नई यह सहचरी चाहति है देखन कौं पाइ ॥ २५ ॥ अति प्रवीन गुन आगरी बीन बजावति परम अनूप ॥ सेवा अङ्ग सिंगार कौं सुघर सखी साँवरे सरूप ॥ २६ ॥ उतकंठा तुव मिलन की लगी रहति याके जिय मांहि ॥ हँसि भेटौ दोऊ अङ्क भरि जैसें तन मन नैंन सिराहिं ॥२७॥ अति आनन्द हुलास सों मिली सखी दोऊ भरि अँकवारि ॥ जब जान्यौं यह भेद कछु रही सकुचि मुसिकाइ निहारि ॥२८॥ जो आनन्द उर में बढ़्यौ इक रसना बरन्यौ क्यौं जाइ ॥ दिन दिन यह सुख दुहुंनि कौ निरखि माधुरी नैंन सिराइ ॥२६॥६॥

श्री आसकरनजी महाराज कृत ॥राग धनाश्री॥ फागुन बदी चोथ ४ कौ

यों गोकुल के चौहटै ॥ रंग राची ग्वालि ॥ मोहन खेलत फाग ॥ नैंन सलौने री रंग राची ग्वालि ॥ नर नारी आनन्द भयौ रंग राची ग्वालि खेलन कौ अनुराग नैंन सलौने

री, रङ्ग राची ग्वालि ..१।। उमहे मानस घोष के ।।रंग०।। भवन रह्यौ नहिं कोइ।।नैंन०।।दुन्दुभि बाजै गह गही।।रंग०।।नगर कुलाहल होइ ।।नैंन०।।२।। डफ बाँसुरी सुहावनी।।रंग०।। ताल मृदङ्ग उपङ्ग ।।नैंन०।। झाँझ झालरी किन्नरी ।।रंग०।। आवझि वर मुख चंग ।।नैंन०।।३।। इतहि संग गोपाल के ।।रङ्ग०।। बल जुत नन्द कुँमार ।।नैंन०।। उत गोपी नव जोवनी ।।रङ्ग०।। अम्बुज लोचन चारु ।।नैंन०।।४।।चोवा चन्दन अरगजा ।।रङ्ग०।। चरचै चित्र सुठानि ।।नैंन०।। केसू कुसुम निचोरि कें ।।रंग०।। भरत परस्पर आँनि ।।नैंन०।।५।। गारी देहि सुहावनी ।।रंग०।। गावत मदन विडम्ब ।।नैंन०।।करतल ताल बजावहीं।।रंग०।।प्रमुदित गोप कदंब।।नैंन०।। ।।६।। पिचकारी कर कनक की ।।रंग०।। कर गहि गोकुल नाथ ।।नैंन०।।तकि छिरकैं तिय वृन्द कौं।।रङ्ग०।।जे राधाके साथ।।नैं०।७। अवीर गुलाल उड़ावहीं ।।रंग०।। बूका वंदन धूरि ।।नैंन०।। चढ़ि विमान सुर देखहीं ।।रंग०।। देह दशा गई भूलि ।।नैंन०।।८।। श्री राधा जू के हेत तें।।रंग०।।मोहन करैं विनोद।।नैंन०।।वृन्दावन ब्रज लोक में ।।रंग०।। उपजत है मन मोद ।।नैंन०।।९।।युगल किशोर कौ विहरवो।।रंग०।। कहत सुनत सुख पाइ ।।नैंन०।। राधा रसिक रसज्ञ की ।।रङ्ग राची०।। आस करन बलि जाइ ।। नैंन सलौने री रङ्ग राची ग्वालि ।।१०।।७।।

श्री गदाधर भट्टजी महाराज कृत ।।राग काफी।। फागुन बदी पंचमी ५ कौ

गोकुल राज कुमार लाल रङ्ग भीने हैं। खेलत डोलत फाग सखा सङ्ग लीनें है ।।१।। वेष विचित्र सुवयस सवैं अनुकूले है। राजत रङ्ग विरङ्ग सरोज से फूले है ।। २। एकनि के कर

कुंकुम घोरि भरे घट हाटक के घने। पंकज पुञ्ज पराग मृग मद सों सने ॥४॥ ढोलक ढोल निसान मुरज डफ बाजहीं। मेंन के मेघ मनों रस वृष्टि सों गाज ही ॥५॥ सुनि सुनि धुनि अकुलाइ चलीं व्रज नागरी। एक तें एक सबै गुन रूप की आगरी ॥६॥ राधा के संग सुहाई अनेक सहेली है। काम के कानन की मनों कंचन बेली है ॥७॥ वेष बनाइ की बात न जात बखानी है। जेती केती उपमां मन में बिलखानी है ॥८॥ कोकिल कूर कहा सुर भेदहि जानहीं। कुञ्जर कायर कौंन कहा गति ठानहीं ॥९॥ केरनि कौ जु सुभाव परयौ अति कंप कौ। हेम लियौ हठि नेम सुपावक झंप कौ ॥१०॥ खंजन खंज से लागि रहे गति लास तें। केहरि कंदर मन्दिर में दुरयौ त्रास तें ॥११॥ पंकज पंक में मूल रहे छवि लाज तें। नित्य प्रकाश विलास मिट्यौ द्विज राज तें ॥१२॥ ताल पखावज आवझ बाजे जंत्र हैं। गान मनोहर मोहन मेंन के मंत्र है ॥१३॥ सो इतकी उतकी धुनि-लागै सुहाई है। मानौं अनङ्ग के आगन बाजै बधाई है॥१४॥ गोकुल खोरिनु गोरिनु खेल मचायौ है। रङ्ग सुरङ्ग अबीर सों अम्बर छायौ है ॥१५॥ लाल गुलाल की धूंधरि में मुख यों लसे। प्रात पतंग प्रभा विच कञ्चन कञ्ज से॥१६॥ दृष्टि करी पिचकारी भरी अनुराग सों। जाइ लगी व्रजराज लला बड़ भाग सों॥१७॥ मंजुल हास कपूर की धूरि उड़ावहीं। सुन्दर स्यांम सुजान के नैंन जुड़ावहीं ॥१८॥ गावत गारिनि नारि सबै झुकि प्रीति की। बात बनावति आपनी आपनी जीति की ॥ १९ ॥ आइ घिरी अबला सब लाल गुपाल सों। हेम लता लपटीं मनों स्यांम

निसंक ह्वै अङ्क भरे घनस्याम कौ २१ स्याम के सीस ते स्यामा जू केसरि ढोरी है । दै करतारी कहै सब हो हो होरी है॥ २२ । औ सोई ध्यान सदा हरि कौ हियें जो रहै॥तो पै गदाधर ताके भागहि को कहै ॥२३॥८॥

गोस्वामी श्री रूपलाल जी महाराज कृत ॥राग धनाश्री॥ फागुन वदी ६ कौ

अति अलबेली लाड़िली अलबेलौ कुञ्ज बिहारी लाल ॥ प्रेम सिंधु अनुराग की रितु बसंत मंजरी रसाल ॥१॥ संग रङ्गीली सहचरी युगल प्रेम मद छाकी आइ । अलि पराग रस हेत सौं आनन्द उमगि रही लपटाइ ॥ २ ॥ भूषन बहु विधि राजहीं बसन लसन की अद्भुत जोति । मानौं अति अनुराग सौं कोटि कला निधि अवनि उदोति ॥३ ॥ अपने अपने मेल सौं खेलत दोऊ बहु विधि फाग । गोरी औ सखी साँवरी मानत है अपनौं बड़ भाग ॥४॥ चंग मृदंग उपंग ताल डफ मधुर मधुर मुरली घन घोर । पिचकारिनु भर लावहीं पोषत चातक नैन चकोर॥५॥ गावत अति उत्साह सौं रूप अनूप करें बहु केलि । प्रेम सुधा सींचीं सबै युगल चंद आनन्द की बेलि ॥ ६ ॥ फूल जहाँ तहाँ देखिये सरस मधुर मुसकानि अपार । रसिक सबै हित हाथ सौं गुहि पहिरायौ अपने उर हार ॥७॥ दंपति सुख नाहि कहि सकौं रोम रोम रसना जो होइ ॥ जै श्री रूपलाल हित हिय रहौ युगल केलि यह तन मन भोइ ॥८॥६॥

(चाचा) श्री वृन्दावन दास जी कृत ॥ सञ्जा खेत॥ फागुन वदी छठ ६ कौ

तलप सुभग कानन मनौं ॥ मिलि होरी खेलैं ॥ भरे मदन आवेश ॥ मिथुन उदार री मिलि होरी खेलैं ॥ कोक कला संग सहचरीं मिलि होरी खेलैं वढ़वति रंग सुदेश मिथुन उदार

री मिलि होरी खेलें ॥१॥ भूषन रव बाजे बजें ॥ मिलि० ॥ छिन छिन बाढ़त चाव ॥मिथुन०॥ उदित मुदित तन मन भये ॥मिलि०॥ताकत रति रस दाव॥मिथुन०॥२॥कल कटाछि पिचके चलें ॥मिलि०॥ आतुर सुहृढ उर नेह॥मिथुन०॥भरत रुचिर बहु घात सों॥मिलि०॥ प्रीतम हियौ अछेह॥मिथुन०॥३॥नख छत वर वंदन वन्यों ॥मिलि०॥ सनि रहे अमित हुलास॥मिथुन०॥पूरित कुञ्ज कुटीर में॥मिलि०॥ सौरभ स्वास सुवास ॥मिथुन०॥४॥ धरत भरत अनुराग सों ॥मिलि०॥ रहें छकि सनमुख चाहि॥ मिथुन०॥ गहकि गहकि पुनि उर लगें ॥मिलि०॥ किलकति सूर सराहिं ॥मिथुन०॥५॥विलुलित कच कुसमनि झरें ॥मिलि०॥ढुरति धुरत गति वाम॥मिथुन०॥ हुङ्कारनि मधुरी करें ॥मिलि०॥लेत न छिन विश्राम॥मिथुन०॥६॥पिवत अधर मधु चौंप सों॥मिलि०॥ लोभी ललित किशोर॥मिथुन०॥ अङ्ग अङ्ग बांधे सुदृढ के ॥मिलि०॥ हुलसत करि करि जोर॥मिथुन०॥७॥ ओघ श्रवत रस केलिके॥ मिलि०॥ सरवरि सहचरि नैंन ॥मिथुन०॥ भरि भरि पुनि झरि झरि चल्यौ ॥मिलि०॥ वन तरु मुनि सुख दैंन॥मिथुन०॥८॥रति सागर गरजन लग्यौ॥मिलि०॥भाव तरंग प्रवाहु॥मिथुन०॥गहरें चोज मनोज के॥मिलि०॥पैरत विथकित नाहु॥मिथुन०॥९॥गति विपरित की धार में ॥मिलि०॥ पिय मन गोता खाइ ॥मिथुन०॥ पुनि उछरें कौतिक करें ॥मिलि०॥उर गिरि टापू पाइ॥मिथुन०॥ १०॥ उमसि उमसि आंकों भरें ॥मिलि०॥ मुख आये श्रम स्वेद ॥मिथुन०॥ विरमि विरमि पोछें हँसे ॥मिलि०॥ पुनि वितरित रस भेद ॥मिथु०॥११॥ वर विहार मादक भरे॥मिलि०॥ कछुक विगत पट अङ्ग ॥मिथुन०॥ देहु देहु यों पिय कहैं ॥मिलि०।

जदपि सने रति रंग॥मिथुन०॥१२॥चहले दहले चाहके॥मिलि०॥ जाचतु पुनि पुनि पिय ॥मिथुन ॥ प्याइ प्रिये मम अधर मधु ॥ मिलि०॥ तृषा बढ़ी अति हीय॥मिथुन०॥१३॥ तब करुना उफि-लनि भई ॥ मिलि० ॥ करत विविधि उपचार ॥मिथुन०॥ प्रीतम प्रीति अगाध में॥मिलि०॥ विवस भई रिझवार ॥मिथुन०॥१४॥ हित अरु चाह सनेह रति ॥मिलि०॥ वृति रूपा आलि पास ॥ मिथुन०॥कहौ सखी कैसें मिटै॥मिलि०॥जब पानी लगी प्यास॥ मिथुन० ॥१५॥ तब ललिता बीना लियौ ॥ मिलि०॥प्रिया रूप कियो गान॥मिथुन०॥ प्रेम गहर तें स्याम कों॥मिलि०॥ काढ़्यो हित के पांन॥मिथुन०॥१६॥ प्रीतम के आसक्ति गुन॥मिलि०॥ गाये सहित विधान॥मिथुन०॥चौंकि उठीं मृदु मन कुंवरि॥मिलि०॥ चितई करि मुसिक्यान॥ मिथुन०॥१७॥ विवस होइ विलसैं हँसे॥ मिलि० ॥ लसें गसें छवि जाल ॥मिथुन०॥ श्री हरिवंश कृपा सुलभ ॥मिलि०॥ दुर्लभ यह रस सार ॥मिथुन०॥१८॥ श्री राधा रूप अगाध रस ॥मिलि०॥मोहन चित्र सवाद ॥मिथुन०॥ वृन्दा-वन हित रूप बलि॥ मिलि होरी खेलें ॥ यह सुख लह्यौ प्रसाद ॥ मिथुन उदार री मिलि होरी खेलें ॥१९॥१०॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी कृत ॥धमार निकुंज की फागुन वदी सप्तमी ७ की

लाल रसिक मणि हँसि कही ॥ मधुरितुसुख विलसें ॥ प्यारी जू सुनहु प्रवीन ॥ होरी पाहुनी मधुरितु सुख विलसें ॥ कानन रस कौ सिन्धु है ॥ मधुरितु सुख विलसें ॥ हम तुम संतत मीन ॥ होरी पाहुनी मधुरितु सुख विलसें॥१॥ दोऊ युक्ति विचारही ॥मधुरितु०॥ खेल अपूरब चाह ॥होरी०॥ सुख आश्रित सब सहचरी ॥मधुरितु०॥ पूरन करौ उमाह ॥होरी०। २॥ प्रीतम

कोविद केलि में ॥ मधुरितु० ॥ यह कीनौ निरधार ॥ होरी० ॥ रतन जटित नौका चढ़ौ ॥ मधुरितु० ॥ करौ रविजा मध्य बिहार ॥होरी०॥३॥ इक नौका नागरि चढ़ी ॥मधुरितु०॥ संग ललितादि अनेक ॥होरी०॥ अपनौ साज समाज लै ॥मधुरितु०॥ पिय चढ़े नौका एक ॥होरी०॥४॥ सात खननि रचना जहाँ ॥ मधुरितु०॥ बिधिमन संभ्रम देंन ॥ होरी० ॥ मधुर तेज की जोति सी ॥ ॥ मधुरितु० ॥ सेवत वपु धर मैंन ॥ होरी० ॥५॥ विविध बरन बंदन धरयौ । मधुरितु० ॥ विविध सुगंधनि साज ॥ होरी० ॥ विविध भाँति बाजे सजे ॥ मधुरितु० ॥ बैठे सहित समाज ॥ ॥ होरी० ॥ ६ ॥ एक संग नौका चलै ॥ मधुरितु० ॥ मुदित उदित मुख चंद ॥होरी०॥ शोभा बढ़नि कहा कहौं ॥मधुरितु०॥ बरषत परमानंद ॥होरी०॥७॥ खेलति सखी विचच्छनी ॥मधुरितु०॥ मन रुचि लै गौरंग ॥होरी०॥ गावति होरी चरित कौं ॥मधुरितु०॥ सुनि मुरझत जु अनंग ॥होरी० ॥८॥ प्रथम वहसि परी निर्त्तकी ॥मधुरितु०॥ ठुमकि सुगति लै जाइ ॥ होरी० ॥ तान तान की परनि में ॥मधुरितु०॥ भरि बंदनि मननि सिहांई ॥होरी० ॥९॥ चलैं मूठि पुनि पोटरी ॥मधुरितु०॥ पिचक चलें भरि रंग ॥होरी०॥ होड़ बदैं ज्यों परस पै । मधुरितु०॥ भरें जु ताही अंग ।होरी०॥ ॥१०॥ खन खन तें बंदन फिकै ॥ मधुरितु० ॥ सबहिनु के मन ऐंठ ॥होरी०॥ परम कुलाहल होतु है ॥मधुरितु०॥ लगी मदन मनु पैंठ ॥होरी० ।११॥ गेंद कुमकुमा की चलैं ॥मधुरितु०॥ अंजुरिनु अतर फुलेल ॥ होरी० ॥ हिय सनेहनि सों सनें ॥ मधुरितु० ॥ रंग सने तन खेल ॥ होरी० ॥ १२ ॥ बाजे बाजें गहे गहे ॥ मधुरितु० ॥ हो होरी किल्लकार ॥होरी० रस संग्राम रुपे सबै ।

मधुरितु०॥ कोऊ न मानैं हार ॥होरी०॥१३॥ उड़ि गुलाल नभकों चल्यौ ॥मधुरितु०॥ डारत रूप गरूर ॥ होरी० ॥ अनु अनुराग सु रीझि कें ॥ मधुरितु०॥ मिल्यौ नीर व्है चूर ॥ होरी० ॥१४॥ तीर तीर कानन चलें ॥ मधुरितु० ॥ नौकनि उड़त गुलाल ॥ ॥होरी०॥ मनहुँ स्याम तन बदलि कें ॥मधुरितु०॥ भई रविजा सोभा जाल ॥ होरी० ॥ १५ ॥ कहा बरनों छवि भवनि की ॥ ॥मधुरितु०॥ रंगे पट कमनी गात ॥होरी०॥ मानौं बैठ विमान में ॥ मधुरितु० ॥ चलि है मदन बरात ॥ होरी० ॥१६॥ झूमक देत विचच्छनी ॥ मधुरितु० ॥ सखी वारने लेत ॥ होरी० ॥ या होरी कों राधिका ॥मधुरितु०॥भांति भांति यश देत॥होरी०॥१७॥ पुनि पुनि छांड़त ताकि कें ॥मधुरितु०॥ जल जंत्रनि कों लाल ॥ ॥ होरी० ॥ हो हो होरी कहति है ॥ मधुरितु० ॥ श्रींव डुगावति वाल ॥होरी० ॥१८॥ ललिता ने कीनों मतौ ॥मधुरितु०॥ भवन जु दूसरे आय ॥ होरी० ॥ वृंदा तू कछु छद रंच ॥मधुरितु०॥ मोहन कों पकराइ ॥ होरी० ॥ १९ ॥ नौका दिये मिलाइ कें ॥ ॥मधुरितु०॥ प्रिया तकी यह घात ॥होरी०॥ ऊंचे भवन है चढ़ि गहे ॥मधुरितु०॥ भुज भरि साँवल गात ॥होरी०॥ २० ॥ नाच नचावैं रंग भरैं ॥मधुरितु०॥ कहें लगौ जू पाइ ॥ होरी० ॥ यह प्रभुता है फाग की ॥मधुरितु०॥ सब मिल लेति बलाइ ॥होरी०॥ ॥२१॥ होरी मदन विडंबिनी ॥ मधुरितु० ॥ जहाँ अनीति की चाल ॥ होरी० ॥ कीनी परम सभागिनी ॥ मधुरितु० ॥ ताकों राधा लाल ॥होरी० ॥२२॥ धन्य रवि सुता तू भई ॥मधुरितु०॥ जामें कौतिक एह ॥ होरी० ॥ सलिलनि सकल सिरोमणि । मधुरितु० दंपति सुख कौ गेह होरी० २३ मोसा में

सोभा निकर ॥ मधुरितु० ॥ राजति नौका नीर ॥ होरी० ॥ रंग भीने पट अंग लगे ॥मधुरितु०॥ बढ़ी किरनि छबि भीर ॥होरी०॥ ॥२४॥ यह नौका चढ़ि खेलिवौ ॥ मधुरितु० ॥ यह विलसन रस फाग ॥ होरी० ॥ श्री हरिवंश प्रसाद तें ॥ मधुरितु० ॥ वरन्यो वि.वे अनुराग ॥ होरी० ॥ लाड़ भरे क्रीड़त सदा ॥ मधुरितु०॥ जल पुनि वृन्दा बाग ॥होरी०॥ वृन्दावनहित रूप रस ॥मधुरितु०॥ जश राधा अचल सुहाग ॥ होरी पाहुनी० ॥ २६ ॥ ११ ॥

श्री नंददास जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥ फागुन वदी अष्टमी ८ कौ

राधा रवनी रंग भरी ॥ रंग होरी खेलें ॥ अपनें प्रीतम के संग ॥ अहो हरि होरी खेलें ॥ इक पहिलें ही रंग मगी ॥ रंग होरी खेलें ॥ पुनि भीनी रंग रंग ॥ अहो हरि होरी खेलें ॥१॥ रंग रंग की संग सहचरी ॥ रंग० ॥ वनी रंगीली के साथ ॥ अहो० ॥ पहिरें वसन रँग रँग के ॥ रंग० ॥ रंग भरे भाजन हाथ ॥ अहो० ॥ २ ॥ रंग रंग की कर पिचकई ॥ रंग० ॥ सोहत एक समान ॥ अहो० ॥ मनों मैंन शिव पर सज्यो ॥ रंग० ॥ हाथन तुपी कमान ॥ अहो० ॥ ३ ॥ काहू पै कुसुम गूंथित छरी ॥ रंग० ॥ काहू पै नये नये नौर ॥ अहो० ॥ काहू पै कुसुम गेंदुक चलैं ॥रंग०॥ काहू पै नूतन मौर ॥अहो० ॥४॥ काहू पै अरगजा रंग कौ ॥ रंग० ॥ काहू पै केशरि कौ रंग ॥ अहो० ॥ कोऊ गौरा मृग मद लियें ॥ रंग० ॥ होत भंवर जहाँ पंग ॥ अहो० ॥ ५ ॥ तिनमें मुकट मनि लाड़िली ॥ रंग० ॥ सोहत अति सुकुँवारि ॥ अहो० ॥ लटकि चलति जनु पवन ते ॥ रंग० ॥ कोमल कंचन डारि ॥ अहो० ॥ ६ ॥ पिय कर पिचका देखि कें ॥ रंग० तिय नेंना छवि में डरौंहि ॥अहो० ॥

खंजन से मनहुँ उड़हिंगे ॥ रंग० ॥ ढरकि मीन ठहे जांहि ॥ अहो० ॥ ७ ॥ छिरकत पिय जब तियनि कों ॥ रंग ॥ यों मन उपजै आनंद ॥ अहो० ॥ मनहुँ इंदु सींचत सुधा ॥ रंग० ॥ अपनी कुमुदिनि के वृन्द ॥ अहो० ॥ ८ ॥ भीजि वमन तन लपटाने ॥ रंग० ॥ बरनत बरनी न जाइ ॥ अहो० ॥ उपमा देंन न दैंहि नैंन ॥ रंग० ॥ गहि राखत हा हा खाइ ॥ अहो० ॥ ९ ॥ रंग रंगीली राधिका ॥ रंग० ॥ रंगीलो गिरधर पीय ॥ अहो० ॥ ये रंग भीने नित वसौ ॥ रंग होरी खेलें ॥ नंददास के हीय ॥ अहो हरि होरी खेलें ॥ १० ॥ १२ ॥

श्री नंददास जी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन वदी नोमी ९ कौ

निकसि कुंवर खेलन चले ॥ रंग हो हो होरी ॥ मोहन नंद के लाल ॥ रंगन रंग हो हो होरी ॥ संग लीने रंगीले ग्वाल बाल ॥ रंग हो हो होरी ॥ वय गुन रूप रसाय ॥ रंगन रंग हो हो होरी ॥ टेक ॥ १ ॥ रतन जटित पिचकारी करनि ॥ रंग० । अबीर भरे भरि झोरी ॥ रंगन० ॥ कंचन माट भराई रंगनि । रंग० ॥ सौंधे भरी है कमोरी ॥ रंगन० ॥ २ ॥ मुग मंडल डफ ताल झांझ ॥ रंग० ॥ बाजत मधुर मृदंग ॥ रंगन० ॥ तिनमें परम सुहावनी ॥ रंग० ॥ महुवर बांसुरी चंग ॥ रंगन० ॥ ३ ॥ खेलत खेलत छवीलौ कुँवर ॥ रंग० ॥ गये वृषभानु की पौरी ॥ रंगन० ॥ जे हुती नवल किशोरी गोरी ॥ रंग० ॥ ते आई आगें दौरी ॥ रंगन० ॥ ४ ॥ सुनि निकसी नव लाड़िली ॥ रंग० ॥ राधा राजकिशोरी ॥ रंगन० ॥ संग अली रंग रली मोहनी रंग० रूप अनूपम गोरी । रंगन० । ५ । मनमथ मन

पहुप पराग रंग ॥रंग० ॥ देति रंगीली गारी ॥रंगन०॥६॥ छवि सों छिरकत छवीले छैल ॥रंग०॥ राजत रूप गहेली ॥ रंगन० ॥ मनों सोम सींचत सुधा ॥ रंग० ॥ अपने प्रेम की वेली ॥ रंगन० ॥ ७ ॥ छवीली वधुनि के छवीले वदन ॥ रंग० ॥ अवीर घुमड़ में डोलें ॥ रंगन० ॥ मनहु निसंक अरुन घन में ॥ रंग० ॥ हिम कर निकर कलोलें ॥ रंगन० ॥ ८ ॥ कोऊ छल सों छिपि छवीली कुंवरि ॥ रंग० ॥ मोहन पकरे आंनि ॥ रंगन० ॥ भई है परस्पर झक झोरनि ॥रंग०॥ कापै जाति बखानि ॥ रंगन० ॥ ६ ॥ गुपत प्रीति प्रगट भई ॥ रंग० ॥ लाज तिनुक सी तोरी ॥ रंगन० ॥ ज्यों मदमाते चौर भोर ॥ रंग० ॥ वलकत निशिकी चोरी ॥ रंगन० ॥ १६ ॥ सखियन सुख देखन कै काजैं ॥रंग०॥ गांठि दुहुँनि की जोरी ॥ रंगन० ॥ मननि बलैया लेति सबै ॥ रंग० ॥ छविन बढ़ी कछु थोरी ॥ रंगन० ॥ ११ ॥ कौऊ छिपि छल छवि सों लालहि ॥ रंग० ॥ छिरकत रंग अमोलनि ॥ रंगन० ॥ कोऊ कमल कर लै पराग ॥रंग०॥ परसति रुचिर कपोलनि ॥ रंगन० ॥१२ ॥ बने पिय के चंचल लोचन ॥ रंग० ॥ जब गहि आँजे अंजन ॥ रंगन० ॥ म्नु अकुलात कमल मंड़ल ॥ रंग० ॥ फंदन परे जुग खंजन ॥ रंगन० ॥ १३ ॥ विवस देखि वृषभानु घरनि ॥रंग०॥ हँसति हँसत तहाँ आई ॥ रंगन० ॥ वरजी है आनि नवल वधू ॥ रंग० ॥ भुज भरि लए है कन्हाइ ॥ रंगन० ॥ १४ ॥ पोंछति मुख अपने अंचल ॥रंग०॥ पुनि पुनि लेत वलाइ ॥रंगन०॥ मुसकि मुसकि छोरति सुगांठि ॥रंग०॥ कापै बरनी जाइ ॥ रंगन० ॥ १५ ॥ छोरनि दौंहि न नवल वधू "रंग०" मांगे कुँवर पै फागु "रंगन० ॥ जो

पै फगुवा दियौ न जाइ ॥ रंग० ॥ प्यारी राधा के पग लाग ॥ रंगन० ॥ १६ ॥ और कहाँ लगि वरनियें॥ रंग०॥ बढ़्यो सुख सिंधु अपार ॥ रंगन०॥ प्रेम कलोल हिलोरनि में ॥ रंग०॥ कछुव न अंग सम्हार ॥ रंगन० ॥१७॥ रंग रंगीली ब्रज वधू ॥ रंग०॥ रंगीलौ गिरधर पीय ॥रंगन०॥ इहि रंग भीने नित बसौ ॥ रंग० ॥ नन्ददास के हीय ॥ रंगन रंग हो हो होरी खेलें ॥ १३ ॥ १८ ॥

श्री प्रेमदासजी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥ फागुन वदी दसमी १० कौ

खेलत मंजु निकुंज में ॥ रंग भीनी होरी ॥ श्याम राधिका गोरी ॥ रंग० ॥ एकम एक मतौ कियो ॥रंग०॥ मृगमद केसरि घोरी ॥ रंग०॥१॥ दूज भाव द्विज कौ लखौ ॥रंग०॥ सो द्विज विविध विहंग ॥ रंग० ॥ ल्यावति तिनके रूप अलि ॥रंग०॥ छिरकत बहु विधि रंग ॥ रंग० ॥ २ ॥ तीज तिहूँ गुन में जये ॥ रंग० ॥ रंग सित श्याम सुरंग॥ रंग० ॥ मिलत त्रिवेनी सी बहे ॥रंग०॥ रंगत मधुर रितु अंग ॥रंग०॥३॥ जानि चतुर्थी चित रथी ॥रंग०॥ मधुरितु रथ चढ़ि धीर ॥ रंग० ॥ उमगे रस संग्राम कों ॥रंग०॥ मारत मूठ अबीर ॥ रंग० ॥४॥ पाँचें पाँचों शब्द मिलि ॥ रंग० ॥ बाजे बाजत आज ॥ रंग०॥ पंचम स्वर गावत सखी ॥रंग०॥ रंगि पँचरंग समाज ॥रंग०॥५॥ छठ छह रस मय अमी ज्यों ॥रंग०॥ फागुन मास सुहाइ ॥रंग०॥ कहो कौन की रुचि घटे ॥ रंग० ॥ याके स्वादहि पाइ ॥रंग० ॥६॥ साते सातौं सुख सजे ॥रंग०॥ नूपुर माहि अनूप ॥रंग०॥ धर्म्यौ तमी पति तमी मे रंग० लखत सप्तमी रूप रंग० ७

मानहु रति पति की सखीं ॥रंग०॥ गावति रस के छंद ॥रंग०॥ ॥८॥ नवमी नव रस मय दिपै ॥रंग०॥ नव निकुंज नव रीति ॥रंग०॥ कछुक विरोधी रस तहाँ ॥रंग०॥ तेऊ रंगे रंग प्रीति ॥रंग० ॥९॥ दसमी दसधा प्रेम है ॥रंग०॥ रंगत नवनि को सोइ ॥रंग०॥ ता रंग सों रंगि तन प्रभा ॥रंग०॥ क्यों न दस गुनी होइ ॥रंग० ॥१०॥ एकादसि एकै दसा ॥रंग०॥ ह्वै रहे लाल गुलाल ॥रंग०॥ सुधि न परत को सहचरी ॥रंग०॥ को ललना को लाल ॥रंग०॥११॥ खेल द्वादसी कौ बढ़्यौ ॥रंग०॥ द्वादस अभरन टूटि ॥रंग०॥ मनहु रीझिवारन भये ॥रंग०॥ परत धरनि पै छूटि ॥रंग०॥१२॥ तेरसि ते रस प्रकटिये ॥ रंग०॥ जे रस सुने न कान ॥रंग०॥ सूहे सुरंग गुलाल उड़ि ॥रंग०॥ करत जु सूहे प्रान ॥रंग०॥१३॥ चतुरदशी को यश छयौ ॥रंग०॥ सुनौ चतुर दस भौन ॥रंग०॥ फुरी दस दसी चतुर की ॥रंग०॥ देखि चख गह्यौ मौन ॥रंग०॥१४॥ पूनौ परम प्रसन्न ह्वै ॥रंग०॥ पूरे खेलनि खेलि ॥रंग०॥ पूरी चित की चाह सब ॥ रंग० ॥ पूरे आनँद झेलि ॥रंग०॥१५॥ परवा परवा डोल पर ॥रंग०॥ झूलत नवसत साजि ॥रंग०॥ यों विहरत नित पाख प्रति ॥रंग०॥ प्रेम सहित छवि छाजि ॥ रंग भीनी होरी ॥ १६ ॥ १४ ॥

(चाचा) श्रीवृन्दावनदासजी कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन सदी एकादसी ११ कौ दोपहर को—दिन में समाज में

मान सरोवर मान तजि, मिलि चाँचरि खेलैं ॥ जहाँ अवनी अति सुचारु ॥ मिलि०॥ कानन कुसुमित गलिनु में ॥ मिलि०॥ बाढ़्यो है फागु विहारु ॥ मिलि०॥१॥ विद्युति निकर लज्यावनी ॥ मिलि०॥ आलिंगन संग अनंत ॥ मिलि०॥ बन दोहाई फिरी

मदन की ॥ मिलि०॥ अवसर जानि वसंत ॥ मिलि०॥२॥ पिय मन अति चचल कीयौ ॥ मिलि० ॥ मनसिज प्रबल प्रताप ॥ मिलि०॥ सैंना रस संग्राम की ॥ मिलि०॥ सजति प्रिया तब आपु ॥मिलि०॥३॥ गेंद छरीं आयुध करनि ॥ मिलि०॥ पिचक धनुष मनु हाथ ॥मिलि०॥ जूथ विविधि साजि आपनें ॥ मिलि०॥ वृन्दा भई हरि साथ ॥मिलि०॥४॥ दुहुँ दिसि लगि बाजे बजें ॥मिलि०॥ विपुल बढ़्यौ मन मोद ॥ मिलि०॥ भाँवरि लेंहि रंग भरान में ॥ मिलि०॥ कौलाहल विवि कोद ॥मिलि०॥५॥ रूपे भले भट जोर सौं ॥मिलि०॥ हो हो बोलनि चाव ॥मिलि०॥ गेंदें छुटत गरूर सौं ॥ मिलि०॥ रंग भरत तकि दाव ॥ मिलि०॥६॥ उत नव रंगी साँवरो ॥ मिलि०॥ इत प्रमुदा मणि बाल ॥ मिलि०॥ भरत गह गहे प्रेम सौं ॥मिलि०॥ चलत मत्त गज चाल ॥मिलि०॥७॥ उत वृन्दा बहु वृन्द लै ॥मिलि०॥ इत ललितादि अनेक ॥ मिलि०॥ पिचकनि गहि सनमुख भई ॥ मिलि० ॥ भरत एक कों एक ॥ मिलि०॥८॥ चोंपनि हुलसीं आवहीं ॥मिलि०॥ जोवन जोर मरोर ॥मिलि०॥ करबर भाजन रंग के ॥मिलि०॥ श्रोनिक मिरतें ढोर ॥मिलि०॥९॥ धाइ धाइ भेटति सबें ॥ मिलि०॥ मर्दत वदन गुलाल ॥मिलि०॥ रंग गह गहें तन मनों ॥मिलि०॥ इंदु वधू सी बाल ॥मिलि०॥१०॥ जो अंग ताकति पीय कों ॥मिलि०॥ भरति चतुर बर भाँम ॥मिलि०। अति मद गंजति काम को ॥मिलि०॥ सिखवति रस संग्राम ॥मिलि०॥११॥ रंग उलेंड़नि परस पैं ॥ मिलि०॥ बोलति हो हो होरी ॥ मिलि०॥ पट छूटत भूषन खसत ॥मिलि०॥ गति मति अति रस बोरी ॥ मिलि०॥१२॥ आतुर गति गज गामिनी मिलि० फिरत गहनि पिय घात मिलि०

रवकि लाल रंग छिरक कैं ॥ मिलि० ॥ पुनि पाछैं फिरि जात ॥ मिलि० ॥ १३ ॥ मनहुँ भ्रमत सर रंग कैं ॥ मिलि० ॥ मधुप रसिक नव लाल ॥ मिलि० ॥ जुवति कनक अंबुज खिलीं ॥ मिलि० ॥ कौतिक छबि तिहिं काल ॥ मिलि० ॥ १४ ॥ कढ़ि बढ़ि निकसत जूथ तैं ॥ मिलि० ॥ सजनी प्रेम गरूर ॥ मिलि० ॥ पग न पिछौड़े पेलहीं ॥ मिलि० ॥ वल करि बलकत सूर ॥ मिलि० ॥ १५ ॥ चहुँ दिस लैं भरैं स्याम कौं ॥ मिलि० ॥ राधा जू सहित समाज ॥ मिलि० ॥ मनु घन पूजति दामिनीं ॥ मिलि० ॥ पावस रितु दै राज ॥ मिलि० ॥ १६ ॥ तब हरि वरषत रंग कौं ॥मिलि०॥ छिन छिन छवि अधिकात ॥मिलि०॥ भींजि लगे पट अंग सौं ॥मिलि०॥ दमकत गोरे गात ॥मिलि०॥ ॥ १७ ॥ देखि कुपित भई सहचरीं ॥ मिलि० ॥ मोहन लिये है दवाइ ॥ मिलि० ॥ दौरि सघन कुंजनि दुरे ॥ मिलि० ॥ बनि- तनि घेरे आइ ॥ मिलि० ॥ १८ ॥ जब नियरैं आवति लखीं ॥ मिलि० ॥ नागर जात पराइ ॥ मिलि० ॥ कौलाहल जुवति करैं ॥ मिलि० ॥ पाछैं लागति धाइ ॥ मिलि० ॥ १९ ॥ कबहूँ निकट रहि छिरकहीं ॥ मिलि० ॥ कबहूँ अधिक बढ़ि जाँइ ॥ मिलि० ॥ स्याम निपुन रस केलि मैं ॥ मिलि० ॥ कौतिक विविधि कराइ ॥मिलि०॥२०॥ मान सरोवर तीर मैं ॥मिलि०॥ मंडित अवनि अबीर ॥मिलि०॥ द्रुम बेली वंदन रँगे ॥मिलि०॥ बाढ़ी है सोभा भीर ॥ मिलि० ॥ २१ ॥ नील कमल वन हरि छिपे ॥मिलि०॥ नैंकु न परत लखाइ ॥मिलि०॥ एकत व्है सब सहचरीं ॥ मिलि० ॥ ताकत विविधि उपाइ ॥ मिलि० ॥ २२ ॥ सकल कला गुन आगरी ॥ मिलि० ॥ राधा जू पूरन प्रीति

॥ मिलि० ॥ मोहन गहन उपाइ कौं ॥मिलि०॥ उघटति गति संगीत ॥मिलि०॥ २३ ॥ पिय करतल पटकन लगे ॥मिलि०॥ विलुलित वे जल जात ॥ मिलि० ॥ लखि धाई नव नागरी ॥ मिलि० ॥ गहि लिये साँवल गात ॥ मिलि० ॥ २४ ॥ पट अँचैं मुख माड़हीं ॥ मिलि० ॥ बस परे मोहन छैल ॥मिलि०॥ प्रेम विवस रस क्रीड़हीं ॥ मिलि० ॥ लजि मनमथ गही गैल ॥मिलि०॥२५॥ वन कमनी कुंजें लसैं ॥मिलि०॥ तहाँ नित यौं विलसंत ॥ मिलि० ॥ भाग निकाई फाग में ॥मिलि०॥ फवी है रसिक गुनवंत ॥मिलि०॥२६॥ बलि हित रूप विनोद पै ॥मिलि०॥ लियौ है मदन गढ़ जीति ॥ मिलि० ॥ श्री हरिवंश प्रताप तें ॥मिलि०॥ गाई हित रस रीति ॥ मिलि० ॥ २७ ॥ केलि कलप तरु मिथुन की ॥ मिलि० ॥ वांछित दाइक सोइ ॥ मिलि० ॥ वृन्दावन हित सेइयै ॥मिलि०॥ अलि सुख भेदी होइ ॥मिलि०॥ चांचरि खेलैं ॥ २८ ॥ १५ ॥

॥श्रीसहचरीसुख जी महाराज कृत ॥ राग राइसौ ॥ फागुन वदी बारस १२ कौ॥

रंग आज वंशीवट फागुन विविधि विहार ॥ विहरत राधा वल्लभ उम्किलत सौरभ सार ॥१॥ वैस कलीनि सी खिलीं ललित ललितादिक वृन्द ॥ तिनकी नख दुति देखत फीकौ लागत चंद ॥ २ ॥ तिनकै जोवन उलहत सुख सोभा की भीर ॥ सादा हूँ पट पहिरत होत जरकसी चीर ॥ ३ ॥ सहज सुगंधनि तिनकी भयौ मधुकर गति भूल ॥ जिनके मुख मुसिकत झरैं उज्वल रस के फूल ॥ ४ ॥ तिनके लखत बनावनि उपमा लजति अनंत ॥ जिनके तन फूल्यौ रहै नित ही मदन वसंत ॥ ५ ॥ तिनमें मिलति लाडिली तब छवि ऐसी होति हरि नख कमलनि

छाई रूप भोर की जोति ॥६॥ करति कटाच्छि दृगनि की मुरति प्रिया की पीठि॥ गोरे हिय पिय व्है रह्यौ मिलत दीठि सौं दीठि ॥ ७ ॥ उर उरजनि के बोझनि लचकि २ कटि जाति ॥ देखत मदन मोहन की चितवनि लचकनि पाँति ॥ ८ ॥ भूलत पलकनि प्रीतम प्रिये प्रेम की पुंज ॥ जा तन चितवत चितवनि भई आरसी कुंज ॥ ९ ॥ रीझि कुँवरि की रचि रही नवल कुँवर हिय माँहि ॥ रोम रोम यौ बँधि रह्यौ भयो फिरत ब्रज छांहि ॥ १० ॥ सिथिल करत कोऊ सहज ही सनमुख चलि गज चाल कोऊ कसि भुज में हँसि हँसि मसरति वदन गुलाल ॥११॥ स्यामा की सैननि सौं कोऊ अलि माँडति भाल ॥ कोऊ अंजनि कौ आँजति छुवति कपोलनि वाल ॥ १२ ॥ लखि ललिता ढिग आइ कैं कहत बचन मन चोर ॥ जूथ विसाखादिक उत हम मोहन की ओर ॥ १३ ॥ कोऊ सखी सखा बनी है सीस चंद्रिका धारि ॥ मिलि मृदंग डफ तालनि गावति सरस धमारि ॥१४॥ चंदन की छींटनि सौं छिरके छकि नँद नंद ॥ कृष्ण जलद में झलके मनु जस उडगन वृन्द ॥ १५ ॥ छिरकौं छैल वंदन सौं ते तिय सब बड़ भाग ॥ मनहुँ मैंन के बागनि वये है बीज अनुराग ॥१६॥ अरगजा तिय लपटावति उर परसति मुसिकाति ॥ रसिक हिये लपटाइ कैं आपुन लपटी जाति ॥ १७ ॥ लपटावति मृग मद मुख अलवेलिनि के लाल ॥ बने दृग मनों सिंगार सर फूले कमल विशाल ॥ १८ ॥ भुरकत चूर कपूर कुचनि पर ओपी वाँम ॥ ममर शंभु मनु पूजे खेल विजैहित स्याम ॥ १९ ॥ रमनी भुरकति रोरी रँगीलो कीनौ है फागु ॥ प्रीति लता मनु लौनी लहकति झरति परागु ॥ २० ॥ ढारी विहारी पिचकारी

लीक दिपीं पचरंग ॥ मनो घन दामिनी सिंगारी लहरिया सारी अंग ॥ २१ ॥ छाती छैल तकतु जब दुरति मुरत रस दाँनि ॥ फिरि तारी दै मुसिकत कंपत जब दोऊ पाँनि ॥ २२ ॥ रचे है गुलालनि आनन कवि यौं करत बखाँन ॥ लाली बरषि मनु कमलनि ससि किये अमृत भाँन ॥ २३ ॥ रंग रंग उडत अवी-रनि परी है लाज की गाढ़ ॥घमडि सुरँग अति आधीन फागुन कियौ असाढ़ ॥ २४ ॥ दरसत अंग दुरे जब मुठीं उठति दुहूँ ओर ॥ मानत जनम सफलता देखत नंद किशोर ॥ २५ ॥ ढ़ार-ति सीसनि केशरि कृष्णागर रिझवार ॥ बदलत तन बरननि कौ बाढ्यौ मोद अपार ॥ २६ ॥ अबलनि के बल में फँसे है लसे जुगल सुजान ॥ कान्ह बनाए है गोरी गोरी कीन्ही है कान्ह ॥२७॥ गँठि जोरा करि किलकीं सजि मंगल तिहि ठौर ॥ गीत ब्याह के गावत बांधि दुहुँनि सिर मौर ॥ २८ ॥ औमेंहीं हुलसौ विलसौ अंस भुजा दोऊ मेलि ॥ दुजरावति सहचरि सुख कुंज महल की केलि ॥ २९ ॥ १६ ॥

॥ श्री दामोदर स्वामी जी कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन बदी तेरस १३ कौ ॥

नवल रँगीली राधा बाल नव लाल रगीलौ तहाँ खेलें हो ॥ध्रु०॥ पुलिन मनोहर मरकत मनि नग जटित फटिक बहु भाँति ॥ जगमग जगमग करत कनक धरु जानी न परै दिन राति ॥ १ ॥ चन्दन ऐला लवंग लतनि मिलि आवति बास सुगन्ध ॥ सौरभ मत्त भ्रमत भृंगावलि फूले सरस रवि बन्धु ॥२॥ नाना रंग सुमन वृन्दावन फूलि बन्यौ चहुँ ओर ॥ शुक सारस पिक कूजत जित कित नाँचत रंग भरे मोर ॥ ३ ॥ तैसेइ निकर अवर खग बोलत बाढ्यौ हैं रंग अपार मनु वसंत पडित के मंदिर पढ़त

हैं मदन कुँवार ॥४॥ तैसेई ललना जूथ ललित गति गावति मिलि मधु राग॥ बीच बीच प्यारी के सुर कौं मिलत मधुर रस पाग ॥ ५ ॥ बाजत वीना वेनु मुरज डफ ताल मृदंग अनेक ॥ महुवरि वर मुखचंग छवीली झमकि मिली स्वर एक ॥ ६ ॥ केशरि कल कस्तूरी घोरी कनक कलश भरि वृंद॥ छिरकत बनितनि फिरत मगन पिय नेति कहति जिहि छंद ॥ ७ ॥ भरि भरि पिचकारी तव प्यारी छिरकति अपने लाल ॥ कनक लता मनु रूप तमालहि सींचत प्रेम विसाल ॥ ८ ॥ भरि भरि गोद गुलाल उडानो बने बदन तिय वृंद ॥ राते मेघ मध्य मनु राजत कोटिक पूरन चंद ॥ ९ ॥ हरि राधा खेलत रंग वाढ़्यौ उमगि उमगि भरि रंग ॥ घन दामिनि या छवि पर वारों रति जुत कोटि अनंग ॥ १० ॥ भीजे अंग जुवति चंचल गति नाहिन रह्यौ कछु नेम ॥ वाढ़्यौ नाहिन समात हिये में उमडि झिरत मनों प्रेम ॥ ११ ॥ छवि सों प्यारी पिय के करतें छुटत अवीर सुराग ॥ मानौं कमल परस्पर खेलत उड़त समूह पराग ॥ १२ ॥ भरि झमोरी कहि हो होरी भरति जुवति हरि धाइ ॥ अति रस वाढ़्यौ चले पनारे मिले (हैं) जमुना जल जाइ ॥१३॥ बढ़्यौ सुख सागर खेलत नागर कहाँ लौं वरनों वेंन ॥ इहि रस में दामोदर हित के वसहु सदा मन नेंन ॥ १४ ॥ १७ ॥

॥ श्रीरसिक रायजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन वदी तेरस १३ कौ ॥

मंजुल कुंज निकुंज भरे रस खेलहीं ॥ अंग अनंग तरंग सुरंगनि झेलहीं ॥ १ ॥ भाव भरी अति चाव खरी दुहुँ ओर कों ॥ हेलीं नवेलीं सहेली नवेली की जोर कौं ॥ २ ॥ अंग छवी जु फवी न कवी मति पावनी केसरी केसरि केतुकी चंप लज्या-

वनी ॥ ३ ॥ काढ़रि ताल मे भाजु रची करतार ने विद्युत ज्योति उदोत सवै करि वारने ॥४॥ सारी वनी जरतारी किनारी सुहावनी ॥ सीस सवनि सीमंत रची मन भावनी ॥५॥ मौधें सनी सुकुसुम ठनी अति वैंनी है ॥ भारी सु धारी जु वारी नगीं अलि श्रैंनी है ॥ ६ ॥ भाइ भरे सु धरे कसि सीमनि पें लसे ॥ मंग के फूल रँगीले छबीले सु फूल से ॥ ७ ॥ भाल विनाल सु चंदन वंदन चित्र हैं ॥ रंग विरंग सुरंग रंगे जु विचित्र है ॥ ८ ॥ नैंननि अंजनि रेख लगै गति लाजहीं ॥ खंजन गंजन मीन अधीन को भ्राजहीं ॥ ६ ॥ कुंडल लोल कपोल तंबोल सुरंग है ॥ नासिका मोती की जोती झुलावैं अनंग है ॥१०॥ चौकी चारु उदार सुहारु हियें रुरें ॥ छीन करी उर पीन कटी छवि सों मुरें ॥ ११ ॥ पाइनु पैंजन बाजन साजन रंजनें ॥ केकी रु कीर सु कोकिल के स्वर भंजनें ॥१२॥ ऐसें विलोकति वाल कों लाल को रूप सौ ॥ बाढ़्यौ सिंगार अपार छयौ छवि रूप जौ ॥१३॥ यों सजि साज समाज विराजत रंग में ॥ गावत भावत आवत आपने संग में ॥ १४ ॥ वानिक वांनि वनाव कह्यौ नहि आवई ॥ लोकनि ओकनि संपति तुच्छ दिखावई ॥ १५ ॥ आलिये लाल गुलाल सुबाल विराजहीं ॥ मौधें सुगंध अमंद भरे घट साजहीं ॥ १६ ॥ लाज के साज सों भाजि भरें दुरि धावहीं ॥ आपनी ताकनि ताकि लगे तकि आवहीं ॥ १७ ॥ चंग मृदंग उपंग सुताल बजावहीं॥पंकज नैंन के पंकज पंक लगावहीं ॥ १८ ॥ काहू भुकावत काहू पै डारत रंग को ॥ चैंन भरे रस मैंन हुलास तरंग को ॥ १६ ॥ द्वै सखी न्यारी कहै बात विचारि विचारि कें ॥ लिजिये भूषन चीर छबीले सौ नारि कें २० आइ कह्यौ हम

ओर तिहारी है स्याम जू ॥ काहू जिनि पतियाव यहै अभिराम जू ॥ २१ ॥ वेष हमारो सौ धारि निसंक व्है जाइयै ॥ वाम विचित्र सु भाम कौं यौं भरि आइये ॥२२॥ भाव बढ़्यौ अति चाव सौं स्याम सिंगारियौ ॥ गौरे लाल रसाल की ओर निहारियौ ॥२३॥ हास बढ़्यौ परिहास विलास दोऊ पगे ॥ रास हुलासनि वास सुवासनि में खगे ॥२४॥ केशरि चंदन वंदन कैं भरि साँवरी। आनंद सिंधु के मध्य भई है बावरी॥ २५ ॥ अतिसै रंग रह्यौ सुलह्यौ न कह्यौ परै ॥ भाग सदा अनुराग रसिक यामें ढ़रै ॥ २६ ॥१८॥

॥ श्री माधोदासजी कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन वदी चौदस १४ कौ (छदम) ॥

वाघंवर ओढ़े साँवरो हो यामें जोगी को हुँनर कोन ॥टेक॥ ग्वाल वाल कोऊ संग नहीं हो अंग विभूति रमाइ ॥ कमल नैंन सुख दैंन कुँवरि कौं आये है भेष वनाइ ॥ १ ॥ शंख शब्द सुनि सुनि जित तित तें घिरि आईं ब्रज नारि ॥ वदन विलोकि कुँवरि राधे को वैठे है आसन मारि ॥ २ ॥ दगड कमगडल धरें मन मोहन कटि बाँधें मृगछाल ॥ भौंह अनियारी नैंन कमल दल मोहिं लई ब्रज वाल ॥ ३ ॥ कौंन दिसा तें आये हो रावल कहाँ तेरी मनसा जाइ ॥ आपनु मौन गही मेरे स्वामी दच्छिन दिसा वताइ ॥ ४ ॥ हँसि बूझत वृषभान नंदिनी रावल उत्तर देहु ॥कारन कौंन भेष तपसी कौ त्रन तजि डोलत गेह ॥५॥ सींगी पत्र विभूति न वटुवा सिर चन्दन की खौरि ॥ मेरे मन एसी आवति है कंत विसारी गौरि ॥ ६ ॥ चंचल चपल चतुर दिखयत अति मुख मधुरी मुसकानि ॥जोगी नहीं कोऊ वडो है वियोगी भोगी है भँवर निदान ॥७॥ चुटकी विभूति दई राधे कौं चले है वाघंवर झारि मन हरि लियो तनक चितवनि में मोहन लगी है

कुँवारि ॥ ८ ॥ नगर वगर अरु भवन भवन प्रति ,निस दिन फिरत उदास ॥ नैंन चकोर भये राधे के हरि दरसन की प्यास ॥९॥ मन हुतो रतन जतन हरि लीनौ चपल नैन की कोर ॥ श्रीजगन्नाथ जीवन धन माधौ प्रीति लगी दुहूँ ओर ॥ १० ॥ १९ ॥

(चाचा) श्री वृंदावनदासजी कृत ॥ राग गोरी ॥ फागुन वदी १४ (शिवरात्री) कें

यह जोगी वसत कहाँ है। मैं परख्यौ वड़ी वेर तें यामें जुक्ति जोग की ना है ॥ टेक ॥ कौन गुरू उपदेश तें इन घर छाँडों तात ॥ ललिता निकट बुलाय कें यासों बूझ मरम की बात ॥ १ ॥ चितवन भरी सनेह की हियें ललक कछु ओर ॥ घर घर प्यासौ सौ फिरैं याके चित की वृत्ति न ठौर ॥ २ ॥ यह जोगी भयौ तर्क सों नहीं ज्ञान को अंग ॥ जोग जवाहर ज्यों दिपै जो कियौ होहि गुरू संग ॥ ३ ॥ कै जोगी जादू जु करि मोह्यौ राजकुमार ॥ सुन्दरता पै रीझ के लै आयौ अपने लार ॥ ४ ॥ बाहू सौ विरच्यौ जु अब पुर कौतुक कियौ हेत ॥ रूप सवादी सौ लगै यह फिर फिर फेरी देत ॥५॥ जिहि देखै तन ऊजरी तहाँ उरझावै नैन ॥ यह औगुन है जोग में सत्य कहति हों बैन ॥ ६ ॥ वह जोगी तुम नृप सुता घटती कही न जाय ॥ जा संदेह सो बूझिये तौ अवही लेहुँ बुलाय ॥ ७ ॥ ललिता काचे जोग बल जिन त्यागो परिवार ॥ विधि प्रतिकूल तहाँ भयौ यह जानि परी निरधार ॥ ८ ॥ जोगी लियौ बुलाय कें बैठ्यौ सन्मुख आइ ॥हिय के हिये फूलें सखी कछु वस्तु डरी सी पाइ ॥९॥ सींगी नाद बजाइ तू कछु राग रंगीलो गाय ॥ वास भानुपुर देहिंगी प्यारी सुंदर कुटी छवाय ॥ १० ॥ सिंगी अधरन धारि कैं रुचिर अलापौ राग विद्या फुरी जु मोहनी श्रति उर उफि-

ल्यो अनुराग ॥ ११ ॥ रीझी कीरति नंदिनी विद्या अखिल निधान ॥ जो कछु इच्छा रावरी अब विरमौं पुर वृषभान ॥१२॥ कौन मनोरथ करि भये तुम जु परम अवधूत ॥ अलख पुरुष परच्यौ नहीं लई हिय जु रावरी कूत ॥१३॥ ग्रीव ढ़ोर रावल कहीं तुम भाषत जु अनीति ॥ परदा में की भामिनी क्यों लखौ जोग की रीति ॥ १४ ॥ जोगी कौ घर दूर है को भाषन समरथ्थ ॥ गुरु गम सौं पहुच्यौ तहाँ जहाँ नाथ गह्यौ हथ्थ ॥ १५ ॥ हाथ गहन कौ को कहाँ सून सान सौ देश ॥ जोग ध्यान नाहिंन सुन्यौ हम कारौ गोरौ भेष ॥ १६ ॥ सब वाही के वरन है सब वाही के रूप ॥ सकल पसारौ अलख कौ सुनि बेटी रावलि भूप ॥ १७ ॥ अलख अलख जाकौ कहति वरनौं ताके अंग ॥ जैसे फूल अकास के किन देखे कैसे रंग ॥ १८ ॥ दिन दस नगरी विरमते समझि तुम्हारौ नेह ॥ अब चरचा ऐसी करी पग धरैं न तुम्हारे गेह ॥ १६ ॥ जोगी कुल जनमें नहीं जोग लियौ सुनि ज्ञान ॥ राज विभौ हमने तजी ताकौ तुम जु करति अभिमान ॥ २० ॥ कौन देश और कौन कुल कौन नाम को ग्राम ॥ रावलि वदन प्रकाशिये हम सब मिल करैं प्रनाम ॥ २१ ॥ भली भई तुम आप मुख कही आपनी आदि ॥ यह संदेह निवारिये वलि और बात सब बादि ॥२२॥ निरखत प्यारी वदन दिस हिय में धक पक होति ॥ जैसे परसत पवन के झकुराति जु दीपक जोति ॥ २३ ॥ देस रंगीलौ कुल बड़ो नाम धाम सुख मूल ॥ विदित लोक सब जानियें प्रेमिन कुल अनुकूल ॥ २४ ॥ सब प्रानी निर्भय वसैं सब कौ पालन होय । हम सुख लाड़ तहां पले यामें संदेह न कोय २५

हम जोगी बन बन फिरत काहू सों न चिन्हार। सुखित भये गुरु ज्ञान सों सब विरस गन्यौ संसार ॥ २६॥ ये गुन व्रज मंडल सबै तुम ठहरायौ कौन। बूझति कीरति नंदिनी मुख रावलि गहि रह्यौ मौन ॥ २७ ॥ रहि रहि कैं बोलति सखी हँसति नैन की कोर। जोगी कैधौं कौतुकी तन सिमटत जैसें चोर ॥ २८॥ जोग छदम सों गिनति ये सखी न मानत आन। कैसें तुम ढिग विरमियैं सुनि निंदा अपने कान ॥ २९ ॥ तुम सूरति जु सनेह की बचन अमी की धार। श्रवन न तृपति जु होत हैं स्यामा सुनियैं बारंबार ॥ ३० ॥ चित्रा नेरैं आउ तू लच्छन परखि निराट। रावल रावल कहा कहै जाकी चरचा औरैं घाट ॥३१॥ केश ढपे शिर बसन सों जे भीजे जु फुलेल। जोगी नहिं भोगी सखी ये नंद सुवन के खेल ॥ ३२ ॥ सुन गहवर वन कों भजे सुख जु अपूरव लूट। मन वाजी छाहीं रह्यौ गई बाग हाथ सों छूट ॥ ३३ ॥ खेल विविध नित नित रचैं भीजैं उर अहिलाद। वृंदावन हित रूप जस गायौ श्री हरिवंश प्रसाद ॥ ३४ ॥२०॥

श्री सूरदास मदनमोहनजी कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन वदी १४ चौदस कौ

खेलत मोहन रंग भरे। लाल माई सुंदर सब सुखरासि॥टेक॥ स्याम संग खेलन चली स्यामा सब सखियन जोरि। अबीर गुलाल कुमकुमा केशरि बहु चंदन घट घोरि ॥ १ ॥ फूलन की कंदुक नवलासी कनक लकुटिया हाथ। आइ गई ब्रज खोरि राधिका कोटिक जुवतिनु साथ ॥ २ ॥ उततें हरि आये जबै हो खेलत ग्वालन संग। कान परी सुनियत नहीं बहु बाजत भेरि मृदंग ॥ ३ ॥ पहिलें सुधि पाई नहीं अब घिरे साँकरी खोरि। अब हलधर उलटौ कहा तुम धावहु ग्वालन जोरि ४ भरत

धरत भाजत राजत कंदुक नवलासिनि मार । वसन रसन छूटत न सम्हारत टूटति मुक्तनि हार ॥ ५ ॥ उड़त गुलाल अबीर कुमकुमा जुरि आई सब बाँम । परयौ गुलाल नैंन कर मीड़त गहि पाये सखि स्याम ॥ ६ ॥ मोहन पिय इकले करि पाये चहुँ दिसि तें रहीं घेरि । बोलहु जू अब आँनि छुड़ावें बलि भैया को टेरि ॥७॥ आज हमारे वस परे हो भले हो तो जाहु छुड़ाइ । कै वल छूटौ आपनें कै जसुमति माइ बुलाइ ॥८॥ एक उठावति वदन चिबुक गहि हम तन स्याम निहारि । एक निहारति रूप माधुरी रहत अपन पौ हारि ॥ ९ ॥ एक श्रवन में कहि कछु भाजत एक भरति अँकवारि । एक नेंन की सेंन मिलावत वैंननि देति है गारि ॥ १० ॥ एक बनाइ देति बीरी कर पल्लव छुवत कपोल । वल्लभ जुवती है वड़भागिनि हरि वस कीन्हें बिन मोल ॥११॥ तब तुम वसन हरे हमारे कीने अनेक उपाइ । तब तुम नगन करी ही हमको अब छाड़ेंगी तुमहि नग्याइ ॥१२॥ आँखि दिखावत हो कहा तुम करिहौ कहा रिसाइ । हम अपनो मन भायौ करि है छाड़ेंगी तुमहि नचाइ ॥१३॥ एक गहे कर फेंट एक पीताम्बर लियौ है छिनाइ । राधाजू हँसति दूरि भई ठाढ़ी सैननि देति सिखाइ ॥ १४ ॥ उड़त गुलाल अरुण भयौ अंबर छाई मानों सांझ । श्रीराधा जू प्रकट करैं नहीं मुखचंद ढकि नीलांबर मांझ ॥१५॥ हरिजू अपने करवर सौं कीनौ जब घूँघट पट दूरि । हँसत प्रकाश भयौ चहुँ दिसि तैं सुधा किरिनि भरि पूरि ॥ १६ ॥ हँसि हँसि कहत लाल सबहिन सों आभूषन सब लेहु नासा को मुक्ता हू देहौं पीताम्बर मेरौ देहु १७

करौ के देहु श्रीदामाहि ओल ॥ १८ ॥ मुख की कहत सबै झूंठी सी मन में अधिक सनेहु । कूट करैगें बलभैया अब हमहि छांड़ि किनि देहु ॥ १९ ॥ खेल फाग अनुराग सिंधु बढ़्यौ मची अरगजा कीच । ब्रजनारी कुमुदिनि गन फूली हरि ससि राजत बीच ॥ २० ॥ देखत शोभा सुख संपति अरु मन में यहै बिचारि । ब्रजनारी हम क्यों न भई यों कहत सबै सुर नारि ॥ २१ ॥ काम कोटि रति भाम कोटि कोटि रमा रहि लाज । रोम रोम प्रति कोटि कोटि शशि सुधा किरण बहु भ्राज ॥२२॥ अष्ट सिधि नव निधि ब्रज वीथन डोलत घर घर द्वार । सदा वसंत रहत वृन्दावन ललित लतनि द्रुम डार ॥ २३ ॥ जुगल किशोर चरन रज जाचौं सरस धमारहि गाइ । (श्री) मदन मोहन की या छवि ऊपर सूरदास बलि जाइ ॥२४॥२१॥

॥ श्री नागरीदासजी महाराज ॥ राग धनाश्री ॥ फागुन बदी १५ मावस्या को ।

रूप अनूपम मोहनी । रंग राँचे लाल ॥ मोहे कुंवर किशोर । लाड गहेलरी रंग राचे लाल ॥ ध्रु० ॥ बदन सुधा रस श्रवित री । रंग० ॥ पीवत नैंन चकोर । लाड० ॥ १ ॥ नैंन कमल मुख कमल के ॥ रंग० ॥ चरन कमल कर लाल ॥ लाड० ॥ तन मन फूले कमल री ॥ रंग० ॥ मोहन मुदित मराल ॥ लाड० ॥ २ ॥ हास कुसुम जोवन लता ॥ रंग० ॥ अति आसक्त तमाल ॥ लाड० ॥ वचन रचन सुर शब्द कों ॥ रंग० ॥ मृग मन मोहे रसाल ॥ लाड० ॥ ३ ॥ ये घन तुम दुति दामिनी ॥ रंग० ॥ मिलि विलसौ प्रेम सुहाग ॥ लाड० ॥ आलस क्यों बलि कीजिये ॥ रंग० ॥ हिलि मिलि खेलहु फाग ॥ लाड० ॥ ४ ॥ सुनत भयौ चित चाउ री

। रंग० । सुघर सिरोमनि जांनि ।। लाड० ।। सहचरी संच सुरनि लियें ।। रंग० ।। करत मधुर कल गान ।। लाड० ।। ५ ।। श्री कुंज बिहारी खेलही ।। रंग०।। प्रेम भरे रस रंग ।।लाड०।। बूका बंदन मेलहीं ।।रंग०।। कुमकुम कुसुम सुरंग ।।लाड०।।६।। सदन मुदित अंग अंगरी ।। रंग० ।। सुरति सुखद कल केलि ।। लाड० ।। उर कर वर परसैं हँसैं ।। रंग० ।। जुगल नवल रस झेलि ।। लाड० ।। ७ ।। पिवत सुधा रस माधुरी ।। रंग० ।। चित्रित पीक कपोल ।।लाड०।। अंग अंग अनुराग री ।।रंग०।। कहत मधुर मृदु बोल ।। लाड० ।।८ ।। राग रंग अति रंग रह्यौ ।। रंग० ।। श्री हरिदासि बिनोद ।। लाड० ।।विचित्र विहारिनि दास री ।। रंग० ।। विपुल बढ़ावति मोद ।। लाड० ।।६।। छिन छिन प्रति रति साजहीं ।। रंग० ।। कुंज सदन सुख रासि ।। लाड० ।। मधुर प्रेम रस बिलसहीं ।।रंग०।। बलि बलि नागरी दासि ।। लाड़ गहेल री रंग राचे लाल ।। १० ।। २२ ।।

श्री व्यासजी महाराज कृत ।। राग गौरी ।। फागुन सुदी १ (परवा) कौ

ए चलि ललन भरें मिलि । चलि हो चलि अलि बेगि गिरिधरनि भरहिं मिलि ।। टेक ।। अलीं चलीं गिरिधरन भरन कौं पहिरैं सुरंग दुकूल । नवसत अभरन साजि चलीं सब अँगनि अँगनि फूल ।। गिरिधरन० ।। १ ।। सनमुख आवत होरी गावत सखन सहित बलवीर । उभै मदन दल उमड़े मानहुँ जुरे है सुभट रनधीर ।। २ । महुवरि चंग उपंग बाँसुरी बीना मुरज मृदंग । ढोलक ढोल झाँझ ढफ बाजत कह्यौ न परत सुख रंग ।। ३ ।। ब्रजजन बाला रसिक गुपाला खेलत रंग भरे फाग । तान तरंगनि मुनि गन मोहे छाइ रह्यौ अनुराग ४ रतन जटित

पिचकारिनि भरि भरि छिरकत चतुर सुजान । कनक लकुटि छैलन पर टूटति फिरत कुँवरि जू की आन ।५॥ छुटत वसन उर टूटति माला धरत भरत भुज पेलि। लाल गुलाल आनन पर तकि तकि करत चपल कल केलि ॥ ६॥ इक भान-पुरा की अमान गूजरी हरषी अंग न माइ । छैलनि खेद कहूँ ज्यौं आई हलधर पकरे धाइ ॥७॥ आई सिमिट सबै व्रजबाला लेति आपनौं दाइ । मानौं ससि अवनी पर घेर्यौ उड़गन पहुँचे आइ ॥ ८ ॥ एकै धाइ धरत आँकौं भरि एक मरोरत कान । इक सनमुख व्है साजि आरतौ बहु पूजा सनमान । ६॥ जोरि सखन मन मोहन धाये दाऊ जू की भीर। जुवतिनि जूथ सनमुखे उमड़े कूकें देत अभीर ॥ १० ॥ जुवतिनि नैंन सैंन भेदनि में मोहन लीने घेरि । मधुमंगल हँसत दूरि भयो ठाड्यौ सुबल बजावति भेरि ॥११॥ मोहन पकरि जूथ में ल्याई पूजा रचति बनाइ।दधि अच्छित रोरी को टीकौ गनपति गौरि मनाइ ॥१२॥ एकै कुच विच लेति लाल को लाइ रहत उर झेलि । मानहुँ तरुन तमालहि लपटी कनक लता बहु वेलि ॥ १३ ॥ गौर लेप मोहन मुख लेप्यौ लिखी छबीली भौंह । ये ढोटा वृषभान राइ के सुबल तुम्हारी सौंह ॥ १४ ॥ पकरि श्रीदामा चोवा में माँड्यौ लै आई भरि बाथ । नन्दराइ यह ढोटा जायौ दयौ है हमारे साथ ॥ १५ ॥ भजि मनसुखा जसुमति पै आयौ कहतु आतुरे बोल । वृषभानपुरा की जोर गूजरी भैइयनि लै गई ओल ॥१६॥ चली महरि तब यह सुख देखन जोरि-आपने वृन्द । सुर नर मुनि जन एक भये है थकित भये रवि चन्द ॥१७॥ देखत साँभा व्रजपति रानी आनंद मन मन होइ आज रोहिनी भाग हमारे

ताहि न पूजै कोइ ॥१८॥ तब रोहिनी ललिता जू बोली आगें आवहुँ भाँम । कर जोरें हम करति विनती चलहु हमारे धाँम ॥ १९ ॥ तब ललिता राधा पै आई बात सुनहुँ दै कान । बड़ी महरि अपने घर बोलति पायौ चाहति मान ॥ २० ॥ तब राधा सखियनि पै आई लगति सबनि के पाँइ । गावति खेलति हँसति हँसावति चलहु महरि कैं जाँइ ॥ २१ ॥ इतनौं सुनत सबै जुर आई चली महरि जू के द्वार । ब्रजपति रानी दृष्टि परी तब भाजि गये सब ग्वार ॥२२॥ आगें व्है रोहिनी जब आई अरघ पाँवड़े देति । कंचन थार उतारि आरतौ वारि बलैयाँ लेति ॥ २३ ॥ रतन जटित सिंहासन आन्यौं दियौ किशोरी राज । बावाजू अब करत बीनती मोल लिये हम आज ॥२४॥ अगनित मेवा गनौं कहाँ लौं भूषन बसन अमोल । प्रेम मगन नन्दरानी वरषति कहत वचन मधु बोल ॥ २५ ॥ नौतन भूषन खुले सबनि तन उपजत कोटिक भाइ । प्रथम उतीरन दिये व्यास कौं विमल विमल जस गाइ ॥ २६ ॥ २३ ॥

॥ श्री हितघनश्याम जी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन सुदी २ दोज कौ ॥

श्री ललित निकुंज बिहारी खेलत कुंज में । पिय कियैं सखी कौ रूप सखिनि के पुंज में ॥ १ ॥ सीस सुगंध छबीले छूटे बार है । मानौं चंदन खंभ सों खेलै भुजंग कुँवार है ॥२॥ श्री लहंगा महँगा छबि छापादार कौ । अति सोहि रह्यौ तन मोहि रह्यौ मन मार कौ ॥ ३ ॥ हेम भराइ बनाइ जराइ की कंचुकी । फूलि रही मनु साँझ सी स्याम की तंचुकी ॥४॥ प्रेम लसी सुवसी सुकसी कसनी तनी । फूलनि की अति फूल सौं

कर कंज फिरावत ठाड़े कदंब के मूल सौं ॥६॥ रीझि रहीं ललिता गलिता छवि में छई। रवनीं कवनीं सुख लूट किशोरी पै गई ॥ ७ ॥ एक अनूपम रूप सखी सुख सागरी। तन कोटि अनंग तरंग छबीली नागरी ॥ ८ ॥ वाहे बारंबार रटै रट राधा मंत्र कौं। उन मोहि लिये वन जंतु बजावै जंत्र कौं ॥ ९ ॥ मान सरोवर माँझ अरी सुनि न्हाइ कैं। राधा कौ जाप जपै पानी में जाइ कैं ॥ १० ॥ तेरी मूरति सोने की अन्हवाइ कें। ताकौ चरनोदक लै ध्यान लगाइ कें ॥११॥ केशर कंज पराग कपूरहि सानि कैं। एरी तेरी प्रतिमा कौं पूजत पान कैं ॥१२॥ अमृत पान अभोगत भोग लगाइ कें। चरणांबुज पूजि प्रसाद प्रसादहि पाइ कें ॥१३॥ धूप अनूप रचै रचनां सुकुमारती। अति आरति वारति प्रान करै अति आरती ॥ १४ ॥ कुंजनि में गुहि फूल निकुंज बनावई। ललना तोकौं नित ही नित लाड़ लड़ावई ॥१५॥ जाननि गाननि ताननि प्राननि सोहि कें। तेरी प्रतिमा पहिरे कंठी में पोहि कें ॥ १६ ॥ कंठ सुघर संगीत सबै स्वर गावहीं। मुरलीधर ज्यौं मुरिकें मुरली जु बजावहीं ॥१७॥ जमुना गमुना न करे व प्रवाह बढ़ावई। मृग वाहन चाहन चित्र वँधे धुनि भावई ॥१८॥ बिथक्यौ पथ को रथ कौ नहि चंद चलावई। बंशीधर की सी नांई बंशी बजावई ॥ १९ ॥ धेनु चरैं न चलैं न करैं त्रिनु खंडली। वर मोर चकोर किशोर मरालनि मंडली ॥२०॥ जल के थल के बन के जु किये बस बाँसुरी। सुनि के छवि के कवि,के न रहे तन मांसुरी ॥ २१ ॥ वैस किशोर उन्हारि श्री नंदकिशोर की। आँखियां बडडी सुख दैनीं पैनी कोर की ॥२२॥ निर्त्त करैं मन रंजन खंजन कुंज में मनु आनि परे अलिनायक

मंजुल गुंज में ॥ २३ ॥ मानहु तेज तुरंग सुरंग है काम कें। मनु साइक धाइक नाइक भाइक वाम कें ॥२४॥ भ्रुव भंग त्रभंग तरंग अनंग की मंजरी। मनु काम कमानि अमान गुमान की गंजरी ॥ २५ ॥ वेशरि कौ मोती निरखै मन फूलई। मनमोहन कौ मन हेम हिंडोरें झूलई ॥ २६ ॥ जो सुख चाहौ नैंननि तौ सुख दीजिये। चलि प्रेम पियूष मयूष पिवौ पी जीजिये ॥२७॥ बात सुनें रोमांच किशोरी के भयो। वृषभानु लली ललिताहि हार हिय कौ दयौ ॥२८॥ प्रेम चले भरि नैंन मेंन रस में सनें। टपके असुवा मनु कंजनि ने मोती जनें ॥२९॥ फूलि उठी छबि पुंज छबीली भामिनी। सखी अंश भुजा गति हंस चली गज गामिनी ॥३०॥ वाम करे इतमाम लयें छबि की छरी। मिल्यौ बीच मनोज सरोज उरोजनि सों अरी ॥३१॥ फूलनि की धनुहीं ललिता लई धाइ कें। पुनि बांन अमान सुपंच लिये हैं छिनाइ कें ॥ ३२ ॥ अति दीन प्रवीन प्रिया पति कों रति लै चली। भजि कुंजनि कोटनि ओट गयौ गहि कें गली ॥ ३३ ॥ संग किशोर किशोर सखी सुख में सनी। सुख दायक लाइक नित्य विहारिनि की अनी ॥३४॥ वाल तमालनि बीच गुलाल उड़ावहीं। मधु पुंजनि कों जनों कंज पराग चलावहीं ॥३५॥ चाहति बाल तमाल लतानि उठाइ कें। मनु मत्त मतंग उतंग जुरे दोउ आइकें ॥ ३६ ॥ मानहु खंजन मीन खरे है ख्याल में। मनु आइ जुरे अलि नाइक मंजुल माल में ॥३७॥ मानहुँ प्यासे हंस खचे मकरंद में। मानों चारि चकोर रहे जुभि चंद में ॥ ३८ ॥ मानहु काम कबूतर घूमत गुंज सों। मनु हेम लता लपटी नव साँवल कंज

मोह उभै मन मोहनी ॥ ४० ॥ कीरति की बिटिया बिथकी छवि देखि कें। सखी अँखियनि की पुतरी पुतरी भई पेखि कें ॥४१॥ श्री वृषभान कुँवारि कह्यौ सुनि री सखी। हम पूरव पुन्यनि पुंजनि कुंजनि में लखी ॥ ४२ ॥ कौन तिहारो नाम कहाँ तेरो गाँवरी। तैं मेरौ मन मोह्यौ री सखी साँवरी ॥४३॥ स्यामा मेरौ नाम गाँव जहाँ नंद कौ। सखि मेरें तेरौ ध्यान चकोर ज्यों चंद कौ ॥४४॥ प्रेम उसासनि लेत मिले दोऊ प्रेम सौं। मानहुँ स्याम चुनी सु बनी खचि हेम सौं ॥४५॥ को बरनै रोमांच सखि जुगचंद कौ। ऊगि उठ्यौ अंकूर मानौं आनंद कौ ॥४६॥ नीलांबर पीताम्बर सौं गँठि जोरि कें। दुलहु दुलहिनि निरखि तरुनि तृण तोरि कें ॥ ४७ ॥ मौर बनायौ सीस आम के मौर कौ। व्याह रच्यौ बंशीवट मंगल ठौर कौ ॥ ४८ ॥ गीत पुनीत सुनीत सु कोकिल गावहीं। ठौरनि ठौरनि भौंर सुभेरि बजावहीं ॥४९॥ श्री ब्रजनारि धमारनि गारिनि गावहीं। ठौरनि ठौरनि कोकिल फाग मनावहीं ॥ ५० ॥ हौं बलिहारी जाँऊ बिहारिनि नाम के। नित्य विहार कौ हार कंठ घनश्याम के ॥ ५१ ॥ २४ ॥

॥ श्री प्रेमदासजी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥ फागुन सुदी २ दौज कौ ॥

खेलत होरी रंग भरे रंग रंगीले जुगल किशोर। मंजुल नवल निकुंज में सुख सौरभ सों झिले न थोर ॥ १ ॥ वास वसंती तन बने मनों रूप निधि से लहरात। भूषन तन मणिमय ठनें, फूले फुलवारी से गात ॥ २ ॥ सौंधें सनी बनी ठनी अली भली झमकत चहुँ कोद। अति विचित्र चित्रित भई उदित मुदित मन विविधि विनोद ॥३॥ मृग नैंनी मृगमद तनीं लेकर मुरज बजावति बाल मनों कमलनि में कूजही चित्र

करत चेटुवा मराल ४ कोऊ लै डफरी रस ढरी खरी छर छरी अलीं उदार। लखि री चकरी सीं फिरे हरें हरें हँसि गावत गारि ॥ ५ ॥ सुघर सिरोमनि ससि मुखीं झूमक झमकि जमायौ लाग। गावत सारंग लोचनी सारंगी में सारंग राग ॥६॥ नव जुवती नैंननि हसैं अमृत कुंडली लै कर ताहि। कोऊ रबाब किन्नरि सजैं कोऊ लयें सुर मंडल चाहि ॥ ७ ॥ सिमिट बजाइ रिझावहीं तालनि में तालिनि दै ताल।बाजत परण पल न परे निरखि चंग मुख चंग रसाल ॥ ८ ॥ कोऊ प्रवीन वीननि सजैं बीनि बीनि स्वर लेति नवीन। दीन करत ध्वज मीन को भीनि रंग लचकति कटि छीन ॥ ९ ॥ मधु महुवर वाजति खरी प्रेम रस भरी लगाइ। झाँझ माँझ मन लै रहीं रुनक झुनक झनकार सुनाइ ॥ १० ॥ कनक तनी कंधन्नि धरे करत तमूरा में कल गान। आछी अछरौटी वजैं टूटि मान हिय लागत बान ॥११॥ ढोलक अनमोलक बजैं गुंजत पारावत से चारु। जल तरंग के रंग को लखि उमंग जिय बढ़ति अपार ॥ १२ ॥ रूप मंजरी सीं अली लियें खंजरी कर कठतार। बजत पखावज आवझीं पणव सुनें पन छाड़्यौ मार ॥ १३ ॥ मुरली मन मोहत खरी लगि मोहन के अधर अनूप। सोन कोंन जो इहि सुने परीव प्रवल प्रेम के कूप ॥ १४ ॥ दंपति करनि गुलाल लै ठुमकि ठुमकि चलि ठहे समुहाइ। रमकि रमकि मुख मांडि कें झमकि झमकि भये न्यारे आइ ॥ १५ ॥ मिहदी हाथनि सौं रंगी रंग रंग के कर लियें अबीर। उड़त फूँक सौं यों बनें तनें चँदोवा मनो व तीर ॥ १६ ॥ सरस समाज सवारि कें आये मुकर महल में धाइ प्रति विंवित तन तन भये ललना लाल न

जान्यौ जाइ ॥ १७ ॥ पचरंग तरु पचरंग लता लपटि भयौ मंडल आकार । आगें अंबुज यों खिले मनों वन कंकन धरयौ उतार ॥ १८ ॥ रंग जल नल मंडल विषे मोती मंडल रह्यौ विराजि । कोर मोर मंडल कियें मध्य समाज बन्यौ छवि छाजि ॥ १६ गेदैं चलति गुलाल की लगत अंग अंग बाढ़ति रंग । निरखत उपमा यों उडै ज्यों तृन उड़त पवन के संग ॥ २० ॥ अरुन धूंधि में मुख दिपैं चंचल दृग अंचल न समात । अरुनोदय में ससिनु पै मनु नटुवा निर्त्तत दिन रात ॥ २१ ॥ नवलागीं सीं सहचरीं फूलनि की नवलासी ल्याइ । दई दुहुन के हाथ में बाढ़्यो तन परसन को चाइ ॥ २२ ॥ खेलत नवलासिनि मिले अंग चुराइ बचावत दाव । मानौं रावत मैंन के छुटे जुटे रति रन के चाव ॥ २३ ॥ मुक्ता मंडल सों चले आये रविजा तट छवि छाइ । तहाँ हंस शुक पिकन दै मणिनु पैजनीं पग झनकाइ ॥२४॥ घाट जराऊ बिधि बने तिन पै मुक्त लता रहीं झूँमि । लपटी तरल तमाल सों प्रतिबिंबित रतननि की भूँमि ॥२५॥ मर्कत मणि से नीर में फूलि रहे कंचन के कंज । कंज कंज प्रति गुंजरै मधु मतवारे मधुकर मंजु ॥ २६ ॥ लाल नवारें में चढ़े अलिंगन संग दंपति रस ऐंन । कहा कहों छवि सुनि सखी जानत जिय कहा जानैं बैंन ॥२७॥ अरुनि मथन बन्दन लयौ खेलत छन्द बन्द मुख लपटाइ । निरखि रहे छवि माधुरी पल न परत पल जुगनि बिताइ ॥ २८ ॥ सबहिनि के तन में बनी रंग रंग की लीकैं दुति लीक । किधौ रूप निधि तें उठीं ललित लहरि सी ठीकम ठीक ॥ २६ ॥ छुटीं मुठी अमृत पुटी सेत अबीर अबरक रह्यौ छाइ । छिटकि रही मानों चांदिनी झलकत

उड़गन तिमिर नसाइ ॥ ३० ॥ दुतियौ खन मणि हेम कौ तहाँ आइ खेलत सु कुँवार। पान भरे मुख रुख लियें रीझि रहे मुख लखि रिझवार ॥३१॥ चौप भरयौ चौवा लयौ मलत वाल उर लाल बनाइ। जो सुख इहि छिन पिय लह्यौ को जाने सखि ताकौ भाइ ॥ ३२ ॥ प्यारी प्यार भरी खरी भरि सौंधें पिचकारी हेम। छिरकति पिय हिये हिये दियें कियौ चित्र उर चमकत प्रेम ॥ ३३ ॥ हीरनि को निरखत हरे सरस तीसरौ सुन्दर खंड। आइ तहाँ दोऊ मिले खेलन कौ मन चाव अखण्ड ॥ ३४ ॥ जोरि अँगूठा आँगुरी पिय अबीर लै दीनौ मेलि। तिय मुख लगि औसें लसै मैंन मुहर सी झलकति हेलि ॥ ३५ ॥ लाड गहेली लाड़ सौं लयें अबीर सुनहिरी हाथ। चमकि चौंध दै पिय मुखै लपटावति लपटी उर साथ ॥३६॥ चौथो खंड जराइ कौ चढ़े धाइ मन मोद बढ़ाइ। हरे खरे पन्ना हरे झिल मिलात छवि कही न जाइ ॥ ३७ ॥ कनक कमोरी कर लई भरी केशरी रंग सुरंग। कवि के मन कब के पचें भये कहन को सोभा पंग ॥ ३८ ॥ लाल लालची वाल पै चाहत औज्यौ रंग उमांहि। तब लगि भरि ललना गई भयौ हास सबहिन के मांहि ॥३९॥ अब तो अपने दाइ कौ चाहत प्यारौ जिय ललचाय। चंचल तन कुंडल हलें नासा में मोती विडुलाइ ॥ ४० ॥ भरि कुम कुम रंग चिपकाई पिय प्यारी पर दई चलाइ। चित्र विचित्रत उर कियौ भीजि वसन तन रंग चुचाइ ॥ ४१ ॥ खंड खंड जिय के करै खंड पाँचमो अति अभिराम। मोतिन की जाली जुरी तामें खेलत स्यामा स्याम ॥४२॥ चंदन वंदन मेलि कें तामें नीर गुलाव मिलाइ। भरत परस्पर सब सखी अरस परस सुख सिंधु वढाइ

॥४३॥कमलनि के डोडानि में लये अरगजा स्यामल गोर। छिरकि छबीली घात सों छके छैल लखि लपटत दौर ॥ ४४ ॥ छठौ छबीलौ खन दिपै इंद्र नील मनि की छबि रासि। स्याम भांम तहाँ यों लसे ज्यों घन में बहु चंद्र प्रकास ॥ ४५ ॥ हाथ जोरि सनमुख भये छल बल करि लंपट रस भीन। भामिनि मुख रंग सों रंग्यौ करतल की करि पिचक नवीन ॥ ४६ ॥ गोरी अति चंचल भई पोंछि बदन अंचल सों आप। करति अलक रोरी रंगी चाहति पिय कों पकरयौ धापि ॥ ४७ ॥ कहति सखी सुनि भाँवती मैंव जाति हौं पिय के पास। बातनि तिनहि लगाइ हो तब लगि तुम गहि लीजो आसु ॥ ४८ ॥ हँसत सखी पिय पै गई सुनहु व एक सुनाऊं बात। सुनन लगे तब भाँवते तब लगि गहे कुँवरि करि घात ॥ ४६ ॥ चहुँ दिसि तें चलि लाल सों लपटी जिहि चिर सहचरी बृंद॥ मनहु चंद घन में घिरयौ अवनि कवनि पर मेघ अमंद ॥ ५० ॥ कहति किशोरी तौ वदौ जो अब क्योंहू जाहु छुडाइ। चतुर कहावत आपकों लट पटाइ क्यों रहे लज्याइ ॥ ५१ ॥ वेशरि लई उतारि कें नथ पहिराइ हँसत दै तार। कलँगी प्यारी कें धरी धरी चंद्रिका पिय सिर नारि ॥५२॥ फठ्यौ फाग सखि स्याम कों वाम वेश पायौ रस पाग। फूलनि कौ खन सातमौ तामें क्रीडत भरि अनुराग॥ ५३ ॥ फूलनि के मंडल विषे फूलनि सों नित्तत नव रीति। उरप तिरप लै लाग सों उघटत थेई थेई करि प्रीति ॥ ५४ ॥ गावत उभय सुहावने मन भावन सखि सुभग सुजान। बूंका की मूठै चलै छूटतिं तबहीं टूटत मान ५५ गोल गुलफ तर हर हरैं बाजत

के राव ॥ ५६ ॥ रतन जटित बिछिया बने गने कवन नख मणि की सोभ। मानौं मंदिर तट लसैं कियें चंद चौकिनि पर ओभ ॥ ५७ ॥ फूलनि सों बैनी गुही झूलीं एडिनि लगि चिकनाइ। मनहुँ चिकुर चंचल भये रीझि भीजि पग परत लुभाइ ॥ ५८ ॥ अरुन अबीर उडत भरयौ परयौ आइ रविजा के नीर। मनौं छयौ सिंगार पै अलि अनुराग राग सों धीर ॥ ५९ ॥ त्रिविधि समीर चलत उड़ै वहु पराग कमलनि सों हालि। मनु दंपति पर मेलहीं लै गुलाल कर जमुना आलि ॥ ६० ॥ दुहुँ तट में खेलत फिरैं हो होरी बोलत करि चैन। इहि सुख बरनत हैं सखी भूलत बैननि हूँ कों बैन॥ ६१ ॥ रतन कुंज घाटनि बनी माटनि सों रंग सजनी लेति। अटा अटारी खोलि कैंवारिनु ठहे बिरकत छबि देति ॥ ६२ ॥ इत मणि मय पिचका सजे बजे दुंदुभी अरु सहनाइ। भरत सखिनि कों सहचरी निरखत जोरी हिये सिहाइ ॥ ६३ ॥ दुहुँ दिस ते गेंदें चलैं फूलनि की फूलीं रस मूल। मैंन तुणी के बांन जे इनहिं देखि तेऊ रहे भूल ॥ ६४ ॥ उतहि अटनि अलि रंग भरी इतहिं सतेसनि चढ्यौ समाज। खेलत होरी चंद से रूप गगन में आनंद साज ॥६५॥ तरल तरौना श्रुति सजे झुके झूमिका देत झुमाइ। नासा बेशरि थिरकहीं बैना के मोती थहराइ ॥ ६६ ॥ गोरे मुख पर लस रही अगर अगरसत की बर बिंदु। त्यौंव सॉंवरो मुख दिपै अरुन फटिक मों पूरन इंदु ॥ ६७ ॥ फुलनि के भूषन रंगे भरत रंग तिनसों वहु भॉंति। मुक्त माल उर पर लुरैं गहति पलक तिनकी कल कॉंति ॥ ६८ ॥ कोविद कोक कलनि भरे गुन

की मेटत पीर ..६६.। केशरि पक कुँवरि लई लई कुँवर कस्तूरी घोरि। मलत बदन मन यों भयौ मनों रूप पलटत चित चोर ॥ ७० ॥ पाइजेब पाइनि परी क्वणित किंकिनी करत सुकेलि। पगनि पैंजनी गैंजनी हलत ललित हिय हार हमेलि ॥ ७१ ॥ अरुन पलक ठहे हग दिपे आनन अति जग मगत मनोज। मानौं मिहिदी सौं रंगे खेलत खंजन खिले सरोज ॥ ७२ ॥ वरुनी सों बूँदें झरैं लाल पीत रंग सों रहे भीजि। नासा मुक्ता हल मनौं हंस सरद कमलनि में थीजि ॥ ७३ ॥ कंकन झंकनि सजि रहे झुनकति चुरी कियें झमकांनि। गान गुमाननि भरि करैं भृकुटिनि हीं में तोरति तांनि ॥ ७४ ॥ गज गति पाँइनि पेलिकें लटकि लटकि आवति लडकाइ। अतर अमोल विलोलि कें करि कल्लोल मुख देत लगाइ ॥ ७५ ॥ झोरी रोरी सों भरी भरि भरि मूठीं देत उडाइ। भरत अंक तजि संक कों नाहिन कोऊ पहिचान्यौ जाइ ॥ ७६ ॥ नैंन नैंन मिलि मन मिल्यौ पुलकित भये रहे मुख ताकि। ललितादिक तृन तोरहीं वारति पुहुप रहीं छवि छाकि ॥ ७७ ॥ कोमल कुशुमनि की बनी चारु चित्र सारी रस रूप। हँसत लसत आये तहाँ नवल जुगल रसिकनि के भूप ॥ ७८ ॥ किसलय सेंन सुहावनीं तापर क्रीड़त व्रीड़ा छाड़ि। झमकि झरोखनि सों लगीं लखत सखीं करि हित की आड़ ॥ ७९ ॥ मिलत रंग मगे तन भये छुटत सग बगे सुन्दर केश। निपट जग मगे सीस तें झरत फूल रस मूल सुदेस ॥ ८० ॥ जो सुख निज सजनी लखैं सो सुख वरनि सकैं कहि कौंन। जो हग सन रसना लहैं तऊ ठहे रहै वरनत मौंन ॥८१ जिनके हिये यह रस वस्यौ या रस में जिन किन्यौं

वास तेई रसिक रस मे छके इन रस तिन हियो कियौ उजास ॥ ८२ ॥ श्रीहित रूप प्रताप तें जो कुछ निरख्यौ नैंननि खेल । जत किंचित मतिसों कह्यौ प्रेमदासि हिय आनंद झेलि ॥८३॥२५।

श्री वृंदावनदासजी कृत ॥ राग धनाश्री ॥ विवाह वर्णन ॥ फागुन सुदी ३ कौ

परम रम्य रविजा तटी ॥रस झूमक खेलें ॥ रंग भीने राधा-लाल ॥ होरी रंग भरी रस झूमक खेलें ॥ लाड़ गहर कौ झूमका ॥ रस० ॥ कोविद उभै मराल ॥होरी रंग भरी रस०॥ १ ॥ मुरि मुरि झूमक देंन में ॥ रस० ॥ श्रवन लगे छबि ओघ ॥होरी०॥ लेत सखी सब वारनें ॥ रस० ॥ जिन उर प्रेम अमोघ ॥होरी०॥ २॥ ललित कुवँरि कौ झूमिका ॥ रस० ॥ नाहु बाहु दै ग्रीव ॥ होरी० ॥ रूप उदधि रंग भरनि में ॥रस०॥ उमगि चल्यौ तजि सींव ॥ होरी० ॥ ३ ॥ अतलस अतरौटा झुमें ॥ रस० ॥ सारी कंचन कोर ॥ होरी० ॥ लावनि लगि मुक्ता झुमें ॥ रस० ॥ उपरैनी के छोर ॥ होरी० ॥ ४ ॥ बैंनी के फौंदा झुमें ॥रस०॥ मांग जलज मनि पांति ॥होरी०॥ बेसरि की लटकनि झुमें ॥रस०॥ लाल झुमें नथ कांति ॥होरी०॥५॥ करतल पटकि झमकि उठें ॥ रस० ॥ नग मुंदरिन नख ज्योति ॥ होरी० ॥ तैसिय रचनि गुलाल की ॥ रस० ॥ अँगुरी सोभा श्रोत ॥ होरी० ॥६॥ छबि के गहर प्रवाह में ॥ रस० ॥ झूमत पिय मन धीर ॥ होरी० ॥ पलक परन विविकूल कौ ॥रस०॥ ढाहति लहरि गंभीर ॥होरी० ॥ ७ ॥ निज सजनी रुख जानिकें ॥ रस० ॥ उपजायौ रस चोज ॥होरी०॥ वसन सहाने तन सजें ॥रस०॥ पानिप बदन मनोज ॥ होरी० ॥ ८ ॥ इत मौरी उत सेहरौ ॥ रस० ॥ धरे दुहुन सिर आंनि होरी० । भरी व्याह रस रीति सों रस० वेदी वंदन

वानि ॥होरी०॥ ६ ॥ मरुवट सो मुख माड़ि के रस० केशरि रंग रचे पांनि ॥होरी०॥ मंडप माधविका लता ॥ रस० ॥ नूतन विटप बितान ॥होरी० ॥ १० ॥ गांठ जुरी दृढ नेह की ॥रस०॥ पटुली प्रेम पुनीत ॥ होरी० ॥ करि दच्छिन पुनि बाँम दिसि ॥ रस० ॥ बैठारे दोऊ मीत ॥ होरी० ॥ ११ ॥ ललित धमारि बधावनें ॥ रस० ॥ गावति सखी मल्हाय ॥ होरी० ॥ झाँमरि झूमक लैंन में ॥ रस० ॥ दरसत कोटिक भाइ ॥ होरी० ॥१२॥ पीत कुसुम गेंदें चलें ॥ रस० ॥ मनहु हवाइनु रेलु ॥ होरी० ॥ पिचकारी मनु फुलझरीं ॥ रस० ॥ सजन सखिनु संग मेलु ॥ होरी० ॥ १३ ॥ कंकन गाढ़ीं प्रीति कैं ॥ रस० ॥ बाँधे पिय के पांन ॥ होरी० ॥ प्रेमदेव आराधहीं ॥ रस० ॥ मुसकनि वेद विधान ॥ होरी० ॥ १४ ॥ द्विज जाचक जन महचरी ॥रस०॥ पावत रस सनमान ॥होरी०॥ नेह निहारिनि सवनि तन ॥रस०॥ मिथुन मिलन सुख दान ॥ होरी० ॥१५॥ लहि भीनी रस केलि में ॥रस०॥ करी विविध रस रीति ॥होरी०॥ पुनि मंदिर सज्या रची ॥ रस० ॥ समझि माहिली प्रीति ॥ होरी० ॥ १६ ॥ बहु मधु पान कराइ कें ॥रस०॥ लै पधराये सैंन ॥ होरी०॥ ललकि मिले लोभी कुंवर ॥ रस० ॥ नैंन भरे मद मैंन ॥होरी०॥१७॥ कनक तार चिक डारि कें ॥रस०॥ लगी झरोखनि जाइ ॥होरी०॥ वरषत अंबुद सुरति कौ ॥रस०॥ उर धर तपित सिराइ ॥होरी० ॥ १८ ॥ सहचरि लोचन नद नदी ॥रस०॥ पूरि रहे रस भाइ ॥ होरी० ॥ पथिक थके पल परन हूँ ॥ रस० ॥ सोचत विविध उपाइ ॥ होरी० ॥ १९ ॥ बढ़ी गह गही हित लता ॥ रस० ॥ फल अभिलाष विहार ।होरी०। भोगी रसिक विहंग दोउ ।रस०।

अधरामृत रस सार ॥ होरी० ॥२०॥ त्रिपित नहीं छिन २ रमें ॥ रस० ॥ दुरि घुरि लागें गात ॥ होरी० ॥ ललकनि बलकनि प्रेम की ॥ रस० ॥ चोज सनीं मृदु बात ॥ होरी० ॥२१॥ चाह केलि दह दल फसे ॥रस०॥ मन गज करि करि जोर ॥होरी०॥ निकस्यौ हू चाहत नहीं ॥रस०॥ रस स्वादी निसि भोर ॥होरी०॥ २२ ॥ श्री हरिवंश हंसी जहां ॥ रस० ॥ युगल मिलन मकरंद ॥होरी०॥ पीवत करत प्रसंस कौं ॥रस०॥ ओद्य द्रवित अरविंद ॥ होरी० ॥२३॥ भीने रैनि सुहाग में ॥ रस० ॥ हुलसि हुलसि भरि रंग ।होरी०। संगम उफनें निधि उभै रस०। बढ़ी रति लहरि अनंत ।होरी०।२४। तजि मरिजाद पट विगत व्है ।रस०। उठन लगी मधु घोर ॥होरी०॥ बडवानल तहाँ सहचरी ।रस०। पीगई लोचन कोर ॥होरी०॥२५॥ तार जंत्र झीने बजें॥ रस० ॥ अति रोचक सुठि नाद ॥होरी०॥ हित सजनी रस गान सों ॥ रस०॥ विपुल बढ़ावति स्वाद ॥ होरी०॥२६ ॥ निकट रूप हित मंजरी ॥रस०॥ करि सिंगार मधु प्याइ ॥ होरी० ॥ वृंदावन हित पुनि वढ़ै ॥रस०॥ वर विनोद चित चाइ ॥ होरी० ॥ २७ ॥ २६ ॥

(चाचा) श्री वृंदावनदास जी कृत ॥ राग धनाश्री ॥ निकुंज ॥ फागुन सुदी ३

अति कमनी अवनी जहाँ ॥ रस होरी खेलैं ॥ कौतिक वृंदारण्य ॥ मोहन नागरी, रस होरी खेलें ॥ ता संपति हरि देखि कैं ॥ रस होरी खेलें ॥ भाग्य वदति धन्य धन्य ॥ मोहन नागरी रस होरी खेलें ॥ १ ॥ परम ललित द्रुम गन लता ॥ ॥ रस० ॥ तनै छत्र आकार ॥ मोहन० ॥ मनु हिय हिलगानि सों गसे ॥ रस० ॥ सूचित करत विहार ॥ मोहन० ॥ २ वर-

[illegible]

झरत मधुर मकरंद ते ।.रस०.. परमल उठत झकोर मोहन० ॥ ३ ॥ प्रेम रूप मादिक भरे ॥ रस० ॥ निर्त्तत मुदित विहंग ॥ मोहन० ॥ कौतिक ता धरु मधि लसै ॥रस०॥ बोलत बादति रंग ॥ मोहन० ॥ ४ ॥ हसि लसि पुनि न्यारे भये ॥ रस० ॥ सखियन कौ हित जानि ॥ मोहन० ॥ इत उत सुभट मराहिये ॥ रस० ॥ को राखति किहि कांनि ॥ मोहन० ॥ ५ ॥ झुकहि झुकावैं गावहीं ॥ रस० ॥ बाजे मधुरव रीति ॥ मोहन० ॥ दुहु दिसि गर्वित बोलहीं ॥रस०॥ अपनी अपनी जीति ॥मोहन०॥ ॥ ६ ॥ कछुक सखी पिय संग दई ॥ रस० ॥ इत ललितादि अनेक ॥ मोहन० ॥ दोउनि की रूचि जानि कें ॥ रस० ॥ रुपी एक कौं एक ॥ मोहन० ॥ ७ ॥ मृग मद बदन लपट हीं ॥ रस० ॥ करतल भुज पटकाइ ॥ मोहन० ॥ प्रनय कोप करि डाट हीं ॥ रस० ॥ घुरति परस्पर धाइ ॥ मोहन० ॥ ८ ॥ अंबुज चोवा रंग भरे ॥ रस० ॥ बढ़ि बढ़ि डारति चोट ॥ मोहन० ॥ हो हो कहि सनमुख चलैं ॥रस०॥ अंचल पट दै ओट ॥मोहन०॥ ॥ ९ ॥ गहि गहि अंक निसंक ठहै ॥ रस० ॥ चित्रित बदन अबीर ॥ मोहन० ॥ कर तारी दै दै हँसै ॥ रस० ॥ निर्त्तति गुननि गंभीर ॥ मोहन० ॥ १० ॥ केशरि जल करतल भरैं ॥ रस० ॥ रवकति जोवन जोर ॥ मोहन० ॥ राधा कौ रुख जानि कें ॥ रस० ॥ उठि धावति हरि ओर ॥ मोहन० ॥११॥ इत उत कोलाहल बढ़्यौ ॥रस०॥ मर्दत बदन फुलेल ॥मोहन०॥ गहकि गहकि बाजे बजें ॥रस०॥ डारत चंदन रेल ॥मोहन०॥ ॥ १२ ॥ आयुध कर गेंदें छुटी ॥ रस० ॥ विहसि बढ़ावत वीर । मोहन० नेह स्वेत गरजन लगे रस० रूप मचाई भीर

॥ मोहन० ॥ १३ ॥ बाज राज लोइन खुले ॥ रस० ॥ खूंदति खुरीं कटाछि ॥ मोहन० ॥ तब पिय पिचकारी गही ॥ रस० ॥ सनमुख आये काछि ॥ मोहन० ॥ १४ ॥ कोर ढुरनि बागैं छुटी ॥ रस० ॥ चाबुक अंजन रेख ॥मोहन०॥ मृदु मुसकनि आरूढ व्है ॥ रस० ॥ चंचल करत विशेष ॥ मोहन० ॥ १५ ॥ भरत अलेलनि चौकरी ॥ रस० ॥ छूटत अपने चाइ ॥ मोहन० ॥ हँसि हँकारनि संग दै ॥ रस० ॥ बल प्रेम भरे थहराइ ॥मोहन० ॥ १६ ॥ पिय उर धर धसकनि लगी ॥ रस० ॥ भाव मुरनि के भार ॥ मोहन० ॥ त्यों त्यों रूंदनि रौर सों ॥ रस० ॥ कौतुक कुशल खिलार ॥ मोहन० ॥ १७ ॥ फिरनि मानक अनकनि ॥ रस० ॥ तीछन सही हूं न जाइ ॥ मोहन० ॥ नृप अनंग चढ़ि खेलहीं ॥रस०॥ हरि मन मृग लियौ है दबाइ ॥मोहन०॥१८॥ दाव विसरि व्याकुल भयौ ॥रस०॥ घुंमत सीस ढुराइ ॥मोहन०॥ करते पिचकारी खसी ॥रस०॥ लये है कुंवरि उरधाइ ॥ मोहन० ॥ १९ ॥ उरझे बावरि प्रेम की ॥ रस० ॥ कसकि कहत जब आहि ॥ मोहन० ॥ ता सुखके परमान कौ ॥ रस० ॥ देहुँ सु पटतर काहि ॥ मोहन० ॥ २० ॥ इत करुना उम्हिलन भई ॥ रस० ॥ लीने अंक लगाइ ॥ मोहन० ॥ उचित रुचित सब विधि करी ॥ रस० ॥ ज्यों हिय वेदनि जाइ ॥ मोहन० ॥२१॥ अंग परसि रस गहर तें ॥रस०॥ काढ़े करि बर जोर ॥ मोहन०॥ श्री राधा राधा नाम लै ॥ रस० ॥ चितये लोचन कोर ॥मोहन० ॥ २२ ॥ वदन प्रछालि तमोल दै ॥ रस० ॥ पुनि सज्या बैठारि ॥ मोहन० ॥ दै असीस हित सहचरी ॥ रस० ॥ निरखि पिवति जल वारि ॥ मोहन० ॥ २३ । तन मन करि ढुरि ढुरि

मिले ॥ रस० ॥ उपजत नव नव चोज ॥ मोहन० ॥ गरुवे मिथुन विहार में ॥ रस० ॥ विथकित ओज मनोज ॥ मोहन० ॥ २४ ॥ गौर स्याम घन ऊनये ॥ रस० ॥ गरजनि भूषनि नाद ॥ मोहन० ॥ श्रवित सुरति रस सार कों ॥रस०॥ अलि चातक घूँटति स्वाद ॥ मोह० ॥ २५ ॥ चाह चौंप छिन छिन वढ़ै ॥ ॥ रस० ॥ यों रस मगन विहार ॥ मोहन० ॥ वृन्दावन हित रूप कौ ॥ रस० ॥ करहु रसिक उर हार ॥ मोहन नागरी रस होरी खेलें ॥ २६ ॥ २७ ॥

(चाचा) श्री वृंदावनदासजी कृत ॥ राग राइसौ ॥ फागुन सुदी ४ चौथ कौ

रितु वसंत सुख दायक सुनिरी नागरि नारि । हिल मिल पिय संग बिलसौ मेरौ बचन बिचारि ॥ १ ॥ जेतिक इहि बन संपति सो सुख आनंद मूल । प्रीति सहित नित सेवत तुम्हरे ही अनुकूल ॥ २ ॥ सुखनिधि श्री वृंदावन सोभा वरनी न जाइ । कुंज कुंज तरु फूले तुव आगम के चाइ ॥३॥ जल थल अमल कमल जे विगसे इहि भाइ । मानौ हरषित अवनी पावड़े दिये हैं बिछाइ ॥ ४ ॥ तैसोइ बहत त्रिविध गुन पवन परम सुख देत । यह निश्चै जिय जानौं ये गुन तुम्हरे हेत ॥ ५ ॥ सुनत प्रिया मुसिकानी हित सहचरि की बात । बचन विचार मुदित भई आनंद उर न समात ॥ ६ ॥ अंग अंग आभूषन पहिरे बसन सुदेश । सो छवि क्यों कहि आवै नाहिं तहाँ बुद्धि प्रवेश ॥ ७ ॥ देखत पिय सचु पायौ मन मान्यौ अति मोद । चले फाग बन खेलन भरी है गुलालनि गोद ॥ ८ ॥ सखिन वृंद मधि राजत हरि राधा दुहुँ ओर इत रस निधि नव नागरि उत पिय नवल

मधुरे स्वर बाजत सुनि धुनि कुहुकत मोर ॥ १० ॥ रसिक कुंवर कर डफ लै गावत ललित धमारि। सुनि सुनि युवती जननि कैं तन मन रही न सम्हारि ॥ ११ ॥ अबीर अरगजा डारति करि करि दाइ उपाइ । ललना लाल परस्पर छिरकत चित के चाइ ॥१२॥ स्याम सजल घन बरषत मानौ अमृत मेह । युवति समूहहिं सींचत उर अंतर के नेह ॥१३॥ कोऊ एक चतुर सखी भरि भाजन केशरि रंग । स्याम सीस तें नायौ छवि छलकति अंग अंग ॥१४॥ सुंदर मुख पर मंडित कहुँ कहुँ स्वेत अबीर । मनो ससि मंडल में खेलत उड़गन भीर ॥१५॥ झीने पट तन सोभित बिच बिच लग्यौ है गुलाल । निरखि सखी भई विह्वल चलि न सकत तिहि काल ॥ १६ ॥ भरी लाल पिचकारी रंग सुगंधि संवारि । औचकि छल सों छोड़ी प्यारी ओर निहारि ॥ १७ ॥ गौर वदन पर जलकन सोभित हैं इहि भाइ । मानौं कनक कमल पर मोती रहे झलकाइ ॥ १८ ॥ ललिता गहि लालन को ढिंग बैठारे आइ । सुख देखन के काजें दीनी गांठ जुराइ ॥ १९ ॥ प्रेम परावधि सहचरि जिनकैं उर अनुराग । नेह परावधि दंपति यह विधि खेलत फाग ॥ २० ॥ परम रम्य रविजा तट कौतिक बढ्यौ अनूप। बसौ हियें वृंदावन जै जै श्रीहित रूप ॥२१॥२८॥

(चाचा) श्रीवृन्दावनदासजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन सुदी ४ कौ

प्रथम विपिन वृन्दावन सुमिरौं श्री गुरु कृपा मनाइ । तिनके चरन प्रताप कछु यश बरनौं सहज सुभाइ ॥ मन मुदित युगल तहां खेलही हो, कुंवरि संग नीकौ बन्यो है समाज ॥ टेक ॥ १ ॥ यमुना तीर सघन वन वीथिन राजत नवल निकुंज । फूले कुसुम विविध रंग रंग के मधुप

करत तहाँ गुंज .. २ .. लतनि द्रुमनि खग वृन्द विराजत बोलत नई नई भाँति । अवनी कनक जटति मणि मानिक झलकति वन अति कांति ॥ ३ ॥ त्रिविध समीर बहत रुचि लिये उड़त सरोज पराग । नित विहरत तहाँ राधा मोहन बन्यौ है अनूपम बाग ॥ ४ ॥ कुंज कुंज मुकुलित द्रुम वेली सेवति सरद बसन्त ॥ अद्भुत सोभा देख धाम की जिय ललचानौ कंत ॥ ५ ॥ नागर रसिक सिरोमनि सब विधि मन में कियौ विचारि । केहि विधि फागु खेलिये वन में प्रिया संग इहि बार ॥ ६ ॥ तब मोहन सखियनि पें आये जोरे सब सों हाथ । खिलावौ हमकों होरी प्रान प्रिया जू साथ वचन ॥ विचारि सखी मुसिकानी हिय बाढ़यौ अनुराग । ललिता कह्यौ कुंवरि सों भामिनि खेलहु पिय संग फाग ॥ ८ ॥ श्रवन सुनत हँसि कह्यौ किशोरी चलिये रविजा कूल । भयौ स्याम जू कौ मन भायौ बाढ़ी है अंग अंग फूल ॥ ९ ॥ भूषन वसन सिंगारे नख सिख मुकुट चंद्रिका सीस । निरखि निरखि छवि रूप माधुरी सहचरि देति असीस ॥ १० ॥ ललित त्रिभंग अंग अंग मोहन रस गुन रूप निधान । वदन विलोकि परस्पर इक टक करत सुधा रस पान ॥११॥ सखिन यूथ न्यारे करि दोऊनि लिये आपने संग । मृग मद केशरि अतर अरगजा भाजन भरि लिये रंग । ॥ १२ ॥ सकल सौंज होरी की लीनी बाजे विविध बजाइ । ताल मृदंग झाँझ डफ बीना मदन भेरि सहनाइ ॥ १३ ॥ बनी एकतें एक आगरी एकतें एक सुजान । उमगि चली अनुराग आपनें करति युगल गुन गान ॥ १४ ॥ बाढ़यौ हियें हुलास सखिनि के खेलन कौ चित चाव इति युवतिन चूड़ामणि राधा

उत रसिकनि मणि राव ॥ १५ ॥ जुरे यूथ,दोउ आइ जहां तहां कुंज मनोहर धाम । दोऊ दल के मध्य विराजत इत स्यामा उत स्याम ॥ १६ ॥ महा मनोहर स्याम सजल घन घटा गौर तिहि संग । गरजनि हो हो वचन दुहूँ दिस वरषत रूप अभंग ॥१७॥ जकि थकि रहत मुदित मनही मन विवस रूप आवेस । कोटि कोटि दामिनि घन वारों रति पति सोम दिनेस ॥ १८ ॥ मधुर मधुर स्वर वाजे बाजत मिले एक स्वर घोर । होरी को गारी गावति है नव तरुनी की ओर ॥ १९ ॥ फूलनि की गेंदुक जब छूटीं भई परस्पर भीर । एक पटनि दै ओट वचावति एक रही रुप धीर ॥२०॥ करन गही कंचन पिचकारी चली रंग की धारि। सारी भीजि अंग लपटानी भूषन पट न सम्हार ॥२१॥ विविध भांति के रंगनि भरिभरि लिये खेल कौ साज । सोधें सने बने तन वागे भीज्यौ है सकल समाज ॥ २२ ॥ मृदु सुरंग प्रीतम गुलाल लै डारयौ दृष्टि बचाइ । प्रिया कनक भाजन भरि केशरि मोहन सिर दियौ नाइ ॥२३॥ ता ऊपर पचरंग बंदन लै डारयौ सखिनि सँवारि । मनो बसंत रितु आगम फूली स्याम अंग फुलवारि ॥ २४ ॥ हो हो बोलैं करें कलोलें फिरति मत्त गज चाल । छूटी अलक गुही वेंनीनु तें टूटी है उर मणि माल ॥२५॥ अति रस वढ़यो कह्यो नहीं आवै खेलत प्यारी कंत॥ वरसत सरस सुगंध रंग जल सुख सागर नहीं अंत ॥२६॥ मोहन संग मोहनी विहरत नहि जानत निस भोर। धनि धनि श्री वृंदावन रानी धनि धनि नवल किशोर ॥२७॥ अबीर गुलालनि भरी पोटरी मेली दुहुँ दिस धाइ। घमडयौ अरुन भये द्रुम पल्लव रह्यौ है दसौ दिस

रहे चकित लाल मन मोहन गहे हैं सखिनु करि घात ॥ २६ ॥ एकनि उचकि पीत पट लीनौ घन दामिनि ज्यों कौंधि। एकनि लाल निकट ठहे पकरे नैंन रहे चक चौंधि ॥३०॥ एक उठाइ चिवुक झक झोरति स्यामा जू दई है सिखाइ। एक कहै श्रीराधा जू के मुरली में गुन गाइ ॥ ३१ ॥ एक कहैं मुख देहु आँगुरी दोऊ कर की जोरि। एकनि दियौ बनाइ दिठौना कर गहि रोरी घोरि ॥ ३२ ॥ एक कहैं हारे हम तुम सों यों कहौ देहैं छोरि। एक कहैं ऐसें मुख भाखौ जीती है कुंवरि किशोरि ॥ ३३ ॥ एकनि मथि सुदेश जावक रंग चित्रित किये कपोल। एक कहैं वह घरी सम्हारौ बोलत है बड़ बोल ॥ ३४ ॥ एकनि रचि रचना सेंदुर के सघन बिन्दु दिये भाल। मनु कोटिक ससि उदय गगन में प्रगट भये इहि काल ॥ ३५ ॥ यह छवि देखन कों जुरि आई रहीं चहूँ दिस घेरिं। आनंद उदधि कलोलत सखि जन कहत खिलावौ फेरि ॥ ३६ ॥ मनु अगनित चपला जलधर संग इकठां रही है थिराइ। अद्भुत कौतुक कहत न आवै उपमा हूँ देत लज्याइ ॥ ३७ ॥ ललिता कही सुनौ मन मोहन छूटहु एक उपाइ ॥ कर जोरौ अरु करहु बीनती बन-रानी सिर नाइ ॥ ३८ ॥ मोहन प्रिया प्रिया कहि टेरति अमृत वचन सुनाइ ॥ सुनतहि कुंवरि नैंन भरि आये लीने है कंठ लगाइ ॥ ३९ ॥ ठहे गये विवस प्रेम उर उमग्यौ प्रिया लये भरि अंक। चितै चितै सोवत से जागे मनु निधि पाई है रंक ॥४०॥ कुंवरि प्रवीन देखि पिय की गति चली बाहु धरि ग्रीव। इहि विधि विपिन सम्पदा विलसत तोरि नेंम की सींव ॥ ॥ ४१ ॥ खेल फागु मन भाये दोऊ वृन्दावन रस खेत। इहि

सुख सिंधु रैन दिन क्रीड़त सहचरि गन सुख देत ॥ ४२ ॥ सदन विचित्र विहारी विहारिनि आये होरी खेलि । अविचल रहौ सदा यह जोरी बिलसौ अंस भुज मेलि ॥ ४३ ॥ अति मन मगन सुरति रस आतुर अरस परस रति मानि । ये दोऊ प्रान नाथ मिलि बिलसहुँ वहु विधि सुख की खांनि ॥ ४४ ॥ रस निधि गुन निधि कोक भाव निधि रसिकनि मणि रस निधि गुन निधि कोक भाव निधि रसिकनि मणि रस भूप । वृन्दावन हिय बसहु कृपा निधि जै जै श्री हित रूप ॥४५॥२६॥

श्री अचलदास जी महाराज कृत ॥ राग विहागरौ ॥ फागुन सुदी ४ चोथ कौ

अहो रंग हो हो हो होरी खेलैं सकल कुंवरि बरसाने की। तिनमें रसिक सिरोमनि स्यामा एकहि वैस समाने की ॥ रंग हो हो हो होरी० ॥ टेक ॥१॥ नव विधि साजि सिंगार विविधि रंग नख सिख वनीं इक बाने की । कीरति प्रांन अधार लली जीवन सब देस भयाने की ॥ २ ॥ गागरि लई भराइ माइ पै केशरि मृग मद साने की । कोमल करनि कनक पिचकारी मनि नग रचित खचाने की ॥ ३ ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ ढ़ोल ढ़मकि सहदाने की । गावति घोर जील स्वर ताननि कोकिल कंठ समाने की ॥४॥ आई है वट संकेत सघन वन सुभग सींव सरसाने की ॥ श्रवन सुनत आये मन मोहन सैंना सखा अमाने की ॥ ५ ॥ दुहुँ दिसि ख्याल मच्यौ जु परस्पर चोप चाप अति ठाने की । इत उत अहुट न मानत कोऊ कमलनि मार मचाने की ॥ ६ ॥ बाढ़ी है रेल पेल बीथिन में सोहैं रंग बरषाने की। उड़त अबीर कपूर धूर मिलि गगन मध्य मड़राने की ॥ ७ ॥ चंपक लता गहें मन मोहन करि सारति कुंज बहाने की

चंद्रावलि पकरे बलि जू धपि धाइ धन्य मरदाने की ॥८॥ लिये दुमामें छीन लड़ैती जीती है रावल राने की। बिचरे सखा भजे जित तित कौ हारि मानि महराने की ॥ ६ ॥ बलि जू की आँखि आंजि मुख माड़यौ कांनि न करी बडयाने की ॥ हा हा खाइ पाँइ परि छूटे रही न कछु विरद वाने की ॥१०॥ गहि गहि चिबुक उठावति ललिता दृष्टि न जुरति खिस्याने की । रहे जु कहा नारि नीची करि अंग अंग सकुच लज्याने की ॥ ११ ॥ सकल सिमिटि आई कान्हर ढ़िग करि करि बात बखाने की । परे आइ बस नवल बधुनि के ह्यां नहि चलति सयाने की ॥१२॥ जानत हो मन में लाला जू छल बल करि भजि जाने की । परौ पाँइ श्री राधा जू के और न कछू बस्याने की ॥ १३ ॥ गावति नारि गारि होरी की अंचर गाँठि जुराने की । कोटि कोटि सुख वारिये इन पर हो हो कहि हँसि जाने की ॥ १४ ॥ रसना एक कहाँ लगि बरनौ यह सुख सिंधु समाने की । नगर बगर घर गली गल्यारे प्रेम हिलोर छकाने की ॥ १५ ॥ बृह्मा शिव मुनि करत प्रसंसा गोपिन भाग बड़ाने की ।अचल दास गिरिधरन भये बस प्रेम के हाथ बिकाने की ॥ १६ ॥ ३० ॥

(चाचा) श्री वृन्दावनदासजी कृत ॥ भूमिका ॥ राग धनाश्री ॥ फागुन सुदी ५ की

(वना की राय सो)

होरी सौ त्यौहार कौ ॥ बड़ भागिनि हे ॥ एरी तरुनि बड़ भागिनि हे ॥ बड़ भागिनि राखौ रंग ॥ प्रिया झूमक लै ॥ पिय दृग सुख दै ॥ तो सम को जु विचच्छनी ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ अब निदरौ सैन अनंग ॥प्रिया०॥पिय०॥ १॥ मधुरितु सम रितु और को ।बड़० एरी० को वन वृंदा जु समान प्रिया०

पिय० । मुरलीधर सम रसिक को ।। बड़० ।। एरी० ।। कहौं दै जु तिहारी आँन ।। प्रिया० ।। पिय० ।। २ ।। पिय दिन दूलहु देखिये ।।बड़०।।एरी०।। तुम दिन दुलहिनि सुख मूल ।।प्रिया०।। पिय० ।। मंगल सजन सखी सबै ।। बड़० ।। एरी० ।। रचौ खेल जु रितु अनुकूल ।। प्रिया० ।। पिय० ।। ३ ।। मुरि चितयौ नव नागरी ।। बड़० ।। एरी० ।। निज सजनी की ओर ।। प्रिया०।। पिय० ।। मन हुलसन भई नेह की ।। बड़० ।। एरी० ।। विहसी नैंननि कोर ।। प्रिया० ।। पिय० ।। ४ ।। गौरंगी रुख जानि कैं ।। बड़० ।। एरी० ।। भये मुदित रसिक मणि राइ ।। प्रिया० ।। पिय० ।। अति गुन मान्यौ प्रिय सखी ।। बड़० ।। एरी० ।। कछु अलभ लाभ सो पाइ ।। प्रिया० ।। पिय० ।। ५ ।। सबही सिंगा-रति चौंप सों ।। बड़० ।।एरी०।। बांछित करनी काज ।।प्रिया०।। पिय० ।। सुख दाइक लाइक सबै ।। बड़० ।। एरी० ।। सजियत साज समाज ।। प्रिया० ।। पिय० ।।६।। मध्य कोट बंदन सज्यौ ।। बड़० ।। एरी० ।। मनहुँ जैति कौ खंभ ।। प्रिया० ।। पिय०।। इत उत दोऊ सैंना रची ।। वड़० ।। एरी० ।। कियौ खेल आरंभ प्रिया० ।। पिय० ।। ७ ।। उतहि मुकुट झंडा लसै ।। बड़० ।। एरी० ।। प्रीतम बिहँसत बदन ।। प्रिया० ।।पिय०।। इतहि जीत धुज चंद्रिका ।।बड़०।।एरी०।। मनु देति चुनौती मदन ।। प्रिया० ।। पिय० ।। ८ ।। सब कर आयुध जंत्र जल ।। बड़० ।। एरी० सबही गाजति सबल ।। प्रिया० ।। पिय० ।। सबही खुलि खेल्यौ चहैं ।। बड़० ।। एरी० ।। लै आज्ञा नागरि नवल ।। प्रिया० ।। पिय० ।। ६ ।। गेंद कुसुम कुमकुम चलैं ।।बड़०।। एरी० ।। चलैं पिचकनि रंगनि धार ।। प्रिया० ।। पिय० ।। छूटैं बंदन पोटरी

बड़०। एरी०। हो हो होरी किलकार ॥प्रिया०॥पिय०॥ १० ॥ कर चकरी सी फिरति है ॥बड़०॥ एरी० ॥ कोविद खेल सहेलि ॥ प्रिया० ॥पिय०॥ मानों विलुलित पवन वस ॥बड़०॥एरी०॥ कोमल कंचन बेलि ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ ११ ॥ मनु भट प्रेरे युद्ध कौ ॥बड़०॥ एरी० ॥ अति चहचरि दुहूँ ओर ॥ प्रिया०॥ पिय० ॥ करतल भुज पटकावहीं ॥ बड़० ॥एरी०॥ धाइ धरति सहजोर ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ १२ ॥ वंदन कोटि लियौ चहें ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ इत उत ताकत दाइ ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ करैं रंग भरि धावरी ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ काको पग ठहराइ ॥ प्रिया०॥ पिय० ॥१३॥ आछें काछें गुनवती ॥बड़०॥ एरी० ॥ पिय पेलति दै सैन ॥प्रिया०॥पिय०॥ करनि नचावति आवहीं ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ कहैं कपट के बैन । प्रिया० ॥ पिय० ॥१४। सुंदरि की सजनी सबै ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ बदलति भेष अनेक ॥प्रिया०॥पिय०॥ प्यारी जू तुमहिं जिताइ हैं ॥ बड़०॥एरी०॥ यह धरति हिये दृढ़ टेक ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ १५ ॥ कोऊ अंजन दै भाजहीं ॥बड़०॥एरी०॥ कोऊ मुख मांड़ति गुलाल ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ कोऊ ऐसें रंगनि भरें ॥ बड़० ॥ पिय० ॥ होंहि रूप बदल सी बाल ॥ प्रिया० । पिय० ॥ १६ ॥ बाजे बाजत गह गहे ॥बड़०॥एरी०। सबहि नचावति नैंन ॥प्रिया०॥ पिय०॥ एक एक गहि रंग भरें ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ मनु लरत मुनैया मैंन ॥ प्रिया० ॥पिय०॥१७॥ विद्या बल जु बराबरी ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ खेल बराबरि होइ ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ अहुटि पछमने पग धरें ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ औसी निबल न कोइ ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ १८ ॥ जैति खंभ कौ लीजिये ।

बड़० ॥ एरी० ॥ परै रंग गुलाल जु रेल ॥ प्रिया० ॥पिय०॥ प्यारी जू बुद्धि विचार कें ॥बड़०॥ एरी० ॥ रच्यौ विविध विधि खेल ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ १९ ॥ लाड सहित झूमक भरयौ ॥ ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ झूमत लावनि छोर ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ मुख विधु झूँमत घूँघटी ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ बढ़यौ सोभा सिंधु न ओर ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥२०॥ गति जु ललित कृश कटि मुरै ॥ बड़० ॥एरी०॥ झूँमति है तन तोलि ॥ प्रिया०॥पिय०॥ बसी करन मन पीय कौ ॥बड़०॥एरी०॥ निचंत है मन खोलि ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ २१ ॥ और खेल बिसरयौ सबै ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ प्रीतम नवल किशोर ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ रूप जलद अविलोकि कें ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ भयौ आनंदित मन मोर ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ २२ ॥ पहुपांजलि बारन लगे ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ दृष्टि उतारन भार ॥ प्रिया० ॥ पिय०॥ ललित कुंवरि को झूमिका ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ लखि विथकित कोटिक मार ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥२३॥ परे रूप के गहर में ॥बड़०॥ एरी० ॥ अति रस स्वादी स्याम । प्रिया० ॥ पिय० ॥ फागुन अति रस मय कियो ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ धनि श्री राधा भाँम ॥प्रिया०॥ पिय० ॥२४॥ रस ही में अति रस रह्यौ ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ हार जीत तजि ओंड़ ॥प्रिया०॥पिय०॥ प्रेम वली राखत नहीं ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ खेल नेंम की मेंड़ ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥२५॥ प्रीतम को कर गहि प्रिया ॥ बड़० ॥ एरी०॥ सिखवति झूमक देंन ॥ प्रिया० ॥पिय०॥ सखी उढ़ाई ओढ़नी ॥ बड़०॥ एरी०॥ भरें भांवरि अंबुज नैंन ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ २६ ॥ यह होरी सुख विलसिबौ ॥बड़०॥एरी०॥ बढ्‌यौ न उर अहिलाद प्रिया०

पिय० ॥ वरनि सुनायौ मति यथा ॥वड़०॥ एरी०॥ श्री हरिवंश प्रसाद ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ २७ ॥ तन मन भीजें रंग सों ॥ बड़० ॥ एरी० ॥ पुनि भीजन जु उमाह ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ बृंदावन हित रूप बलि ॥ वड़० ॥ एरी० ॥ बढ़ो इहि रस दिन दिन चाह ॥ प्रिया० ॥ पिय० ॥ २८ ॥ ३१ ॥

॥ श्री राधवदास जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥ फागुन सुदी ६ छठ कौ ॥

चलि जांहि जहाँ हरि खेलत गोपनु संगा। आनक बहु बाजे ताल मुरज मुखचंगा। गावत सुनि भावत मंद मधुर मुख बाँनी। जनु हरषि परस्पर मनहु मदन गति ठाँनी। चलि जाहि जहाँ ॥ टेक ॥ १ ॥ चलि जाँहि जहाँ क्रीडत नँद नंदन झाँझ पणव डफ भारी ॥ बीन मृदंग उपंग चंग बहु देत परस्पर गारी। करि पिचक विकच मुख कटि पट भेष वनायौ। जनों गुदर दैन कौं वनि बसंत ब्रज आयौ ॥ २ ॥ हाटक मणि नग खचित विविधि कर जेरी साजैं। रुंज मुरज नीसान ढोल ढोलक डफ बाजैं। आवझ अति आतुर वजैं ब्रज जन खेलत फाग। तान तरंगनि वायु बँध्यौ छाय रहयौ अनुराग ॥ धुनि सनत पियारिनु कुम कुम भूषन कीनें ॥ बहु रंग बसन तन जावक चरननि दीनें ॥ ३ ॥ कवरी करज सँवारि निरखि उपमाँ कौं हारी। मानौं हाटक लता रही खग पन्नग नारी ॥ श्रवन तार उर हार छवि अरु मुक्ता सरस सुढ़ार। जनों जुग गिरिविच देखि कैं धसी सुरसरी धार। रचि तिलक भाल पर मृग मद रेख सँवारी। जनु जुगल जीभ धरि पन्नग पीवत सुधारी ॥४॥ खंजन मीन अधीन देखि हग सारंग लाजैं। बदन चंद भुव चापि स्वाँति सुत नासा राजैं। उपमां कौं अवलोकि कवि या सम नाहिन और। मनौं कीर उडगनि गहैं

चुगत नहीं मुनि वौर। अति अधर अरुन छवि अरु दसननि दुति पाई। मानों बिज्जुत बीजनि विद्रुम वारि बनाई ॥ ५ ॥ कंठ कपोति लज्याति करनि अंगद जग मगियौ॥ मानौं जलज मृनाल सरद ससि वालक लजियौ। पहुँचन में पहुँची सघन सुंदर स्यांम सुपास। मनहुँ कंज के कंठ लागि भृंग रहे मधु आस॥ वनि चली है सकल तिय पग नूपुर सुर भारी। मनौं विविधि काम कल हंस करत किलकारी ॥६॥ साखि जवादि सुगंध कुम कुमा केसरि घोरी। भाजन भरि लै चलीं सकल तिय गावति होरी॥ नख सिख तें अविलोकि छबि नागर मोहे गांन॥ मनौं संगीत साला पढ़ीं घटि बढ़ि परति न तांन। छबि सिंधु ललन तन देखत लोचन भूले। चितवत चित चोरत अंग अंग अनुकूले ॥७॥ वरन वरन सिर पाग श्रवन कुंडल मनि मय अति॥ मनहु स्याम नग सिखिर तरनि जुग रमत तरल गति। उर वनमाल विशाल छवि विविधि सुमन वहु वेष॥ मनहुं जलद में प्रगट अति सतमष सारंग रेष॥ रचि तिलक मलय कौ पिय कर खौरि बनाई॥ मनु जुगल अहिनि शशि घन पर दई है दिखाई ॥ ८ ॥ घन तन देखि लज्यात कंज दृग क्यौं सम पावहिं। मुख ससि स्यांम भुजांनि देखि अहि वपुहि लज्यावहि॥ नख सिख तें अविलोकि छवि कटि पट पीत सुदेश। मनहुँ जलद धुरवा सखी दामिनि रही पर वेश। छवि श्री मोहन तन लघु मति वरनी न जाई। चितवत चित चोरत मनमथ रह्यौ है लज्याई ॥६॥ तियनि परस्पर हरषि हरित कर डगे निवाज़े। उठे गोप किलकारि लागि दुहुँ दिसि तें वाजे॥ एकनि कर कुम कुमा लियौ एकनि घोरि गुलाल। चलीं

हरधर दियें है वताइ। गहि नील वसन तन दै त्रिन्दु दियें छिट-काइ ॥ १० ॥ बहुरयौ मोहन पकरि सवैं राधा पै लाईं। तवहि तरुनि मुसिक्याइ साखि भाजन लैं धाइ। छींटत छिरकति भरत वहु प्रेम छकी नंद नंद ॥ मनहुँ अवनि पर मेघ कौं घेरि रहे वहु चंद। निरखत विथकित नभ जहाँ तहाँ अमर विमान ॥ वरसत सुर सुमननि अरु वजाइ निसांन ॥ ११ ॥ रह्यौ परस्पर रंग सकल तिय भवननि आई। तवहि तिनहि व्रज राज विविध पट दई है मिठाई ॥ आइ तरनि तनया सलिल मज्जन कियौ वल-वीर। पहरि वसन आये भवन संग सकल आभीर ॥ परिवा श्री मोहन राजत पीत सुवास। बैठे सिंघासन वखि वलि राधोदास ॥ १२ ॥ ३२ ॥

श्रीसदानंदजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ फागुन सुदी ७ कौ ॥ निकुंज की ॥

श्रीवृन्दावन रानी राधा सुन्दर रूप निधान। वनितन गन चूड़ामनि मंडन मोहन जीवन प्रान॥ अंग अंग छवि मन भाँवती हो सजनी देखहु नैंन निहारि ॥टेक॥१॥ ललित अलक कुसुमनि सों गुंथित सेंदुर रचित सीमंत। मनों रति पति मृग क्रीड़ा कारन कियो सखी उदित बसंत ॥ २ ॥ सीस फूल रस मूल वदन छवि नव नव सोभा होति। मानौं नव ग्रह उडपति ढिंग बैठे जग मगे अपनी जोति ॥३॥ सुन्दर मस्तक वेंदी राजति लखि सुख पावत लाल। प्रगटित भाग सुहाग मनों मणि दिपति मनोहर भाल ॥४॥ कानन वर ताटंकनि की दुति झलक कपोल अभंग। कनक कमल में मनु प्रतिविंवित छवि सों प्रात पतंग ॥ ५ ॥ दीरघ सुन्दर नैंन सु चंचल अंचल पट न समांहि। मानों श्रवन करी मरजादा ज्यौं बढि अधिक न जांहि। ६ अरु अधर

मिलि मषि सुठि लोचन विच मोती बहु भांति। दुहुँ ठां की दुति परसि त्रवैनी भई कल गुंजा कांति ॥७॥ चिवुक सुदेश दिठौंना लोंना छवि सों सुभग सुहात। मनों अलि छौंना पी मकरंदहि बैठ्यौ ढिंग जल जात ॥८॥ गौर मनोहर भुजा विराजत बलय बलित छवि जाल। मानौं भूषन भूषित सोभित कोमल कनक मृनाल ॥९॥ उदित उजागर उर पर मंजुल रुरकत मुक्ता हार। मानौं मूरति वंत सुभगता करत सुदेस विहार ॥ १० ॥ नाभि सरोवर त्रिवली लहरी प्यारी परम प्रवीन। तामें रंग भरयौ डोलति सखी संतत पिय मन मीन ॥११॥ कंकन किंकिनि नूपुर बाजत राजत छवि विस्तार। मानौं कंचन बेलि विलंवित मदन मुनी धुनि चारु ॥ १२ ॥ तनसुख सारी सुभग विराजति अतरौंटा अति रंग। ऐसी छवि सों गोरी होरी खेलत पिय के संग ॥ ॥ १३ ॥ सखी समाज मध्य पिय प्यारी वरषत अमी आनन्द। उडगन कोटि कलोलत मानौं विच डोलत विवि चंद ॥ १४ ॥ बाजे बाजत घन ज्यौं राजत वरषत रंग अपार। भीजत तन मन हरि जुवती जन प्रेम विहार उदार ॥ १५ ॥ अरुन अबीर गगन में घुमड्यौ मनु घन उमड्यौ लाल। रंग भरी चमकत चंचल तन दामिनि सी नव बाल ॥ १६ ॥ वदन छवीले नैंन रंगीले घुमड़ि गुलाल सुरंग। मानौं भोर दिनेश्वर के मधि मीन फिरत ससि संग ॥ १७ ॥ भरत परस्पर प्रीतम प्यारी हिय भारी अनुराग। निरखि निरखि सुख हरषि कहति यों बड़ भागी यह फाग ॥ १८ ॥ श्री वृन्दावन कालिंदी तट खेल बढ्यौ सुख सार। जै श्री सदानंद हित व्यास सुवन बल गावत जुगल विहार ॥ १९ ॥ ३३ ॥

श्री बिहारनिदासजी महाराज कृत .. बना ।। राग धनाश्री ।। फागुन सुदी ८ कौ

श्री बृंदावन सहज सुहावनौं ।। नव नागरि ए ।। एरी नवल नव नागरि ए ।। नव नागरि नेह निधान ।। बना ।। हां हां हंवैं ।। बना हंवै ।। टेक ।। होरी खेलन के मतें ।। नव० ।। बन बैठे करि ठांन ।।बना०।।१।। मान मनावत प्रथम ही ।।नव०।। ए दोउ करत परस्पर आन ।। बना० ।। रोंटि मेंटि मिलि खेलहीं ।। नव० ।। हँसि दिये हैं दुलहिनी पान ।। बना० ।।२।। नवल निकुंज बिराजहीं ।। नव० ।। रवि तनया के तीर ।। बना० ।। भृंग विहंग कुलाहला ।। नव० ।। नव जुवतिन की भीर ।। बना० ।। ३ ।। स्याम ओर की साँवरी ।। नव० ।। गोरी कें गोरे गात ।।बना०।। उमगि चली चित चौंप सों ।। नव० ।। अपनी अपनी गहि घात ।। बना० ।। ४ ।। सब सखि मन अनुसारनी ।। नव० ।। उनि सजि लीनी सब सौंज ।। बना० ।। लाल रतन मणि की कुंडी ।। ।। नव० ।। केशरि की ओजा ओज ।। बना० ।। ५ ।। कस्तूरी कपूर सों ।। नव० ।। साखि कुम कुमा आदि ।।बना०।। चंदन मलयागिर घसे ।।नव०।। घसि गौरा मेद जवादि ।।बना० ।।६।। बाजे बाजैं अनमतीं ।। नव० ।। सब मिले हैं संच सुर तार ।। ।। बना० ।। बीन अमृतीं आवझी ।। नव० ।। वर किन्नर कठतार ।। बना० ।। ७ ।। गावत चैत सुहावनौं ।। नव० ।। मेरी पिय प्यारी को हेत ।। बना० ।। खेलत मेलहि मिलवहीं ।। ।। नव० ।। उन बद्यौ है सबनि संकेत ।। बना० ।। ८ ।। लै लावनि लांगें कसीं ।। नव० ।। बैंनी कटि सों लपटाइ ।। ।। बना० ।। आधे कुच कंचुकी कसी ।। नव० ।। अति आनंद उर न समाइ ।। बना० ।। ६ ।। आज्ञा लै सनमुख भई

॥नव० उन दीनी है जुक्ति बनाइ ॥बना०॥ अरगजा पिचकारी चलीं ॥ नव० ॥ सब भरति परस्पर धाइ ॥ बना० ॥ १० ॥ चौवा के चहले मचे ॥ नव० ॥ भये अंबर अरुन अबीर ॥बना०॥ हारि जीति नहिं समझिहीं ॥नव०॥ अति मन मगन गंभीर ॥ ॥ ११ ॥ फागु खिलावत फूल सौं ॥ नव० ॥ दै सैंननि ही सनकार ॥ बना० ॥ नैंन कमल कज्जल भरे ॥ नव० ॥ मची है कटाछनि मार ॥ बना० ॥१२॥ इक झुकि बैठी पीठि दै ॥नव०॥ इक माननि रहै मुख मोरि॥ बना० ॥ एक मनावत दीन ह्है ॥ ॥ नव० ॥ इक पाइनि परत निहोरि ॥ बना० ॥ १३ ॥ दिन दुलहिन कौं दुलरावहीं ॥ नव० ॥ दिन दूलह कौं दै गारि ॥ ॥ बना० ॥ गावति सुख दै रुख लियें ॥ नव० ॥ मुख चुंवति भरि अँकवारि ॥ बना० ॥ १४ ॥ सौंधे में सौंधीं सबै ॥नव०॥ कौंन पिछानें काहि ॥बना०॥ सबै प्रेम रस रंग रंगी ॥नव०॥ रहे है रसिक मुख चाहि ॥ बना० ॥ १५ ॥ मेरो कुंज विहारी कौतिकी ॥ नव० ॥ इहि कौतिक रहे लुभाइ ॥ बना० ॥ मत्त भये रस माधुरी ॥ नव० ॥ रस पीवत सुख दै धाइ ॥ बना० ॥ ॥ १६ ॥ होरी खेलत रंग रह्यौ ॥ नव० ॥ सब गोरी लई है बुलाइ ॥ बना० ॥ को गोरी को साँवरी ॥ नव० ॥ मोसों कहो स्याम समझाइ ॥ बना० ॥१७॥ स्याम कहै गोरी सबै ॥ ॥ नव० ॥ गोरी कें तन मन स्याम ॥ बना० ॥ निरखि वदन तन में भये ॥ नव० ॥ यों सफल कियौ सब काम ॥ बना० ॥ ॥१८॥ बातनि रहसि बहसि बढ़ी ॥ नव० ॥ इहि विधि खेलैं फाग ॥बना०॥ (अपने) रसिकनि की रस रीति कौं ॥ नव० ॥ प्रगट कियो अनुराग ॥ बना० ॥१९॥ सखी सहेली सहचरी

। नव० ।। श्री हरिदासी सुख रासि ।। बना० ।। श्री विपुल विहारिनि दासि कों ।। नव० ।। रीझि दई स्याबासि ।। बना० ।। हाँ हँवै ।। बना हँवै ।। २० ।। ३४ ।।

श्री नंददास जी महाराज कृत धमार ।। राग गौरी ।। फागुन सुदी ९ नौमी कौ

अरी चलि नवल किशोरी गोरी भोरी होरी खेलन जांहि ।। टेक ।। अरी ऐसी मधु जामिनि देखि भांमिनि क्यों तोहि भवन सुहांहि ।। अरी उहाँ (सब) ब्रज वर नर नारिनु के जूथ जुरे है आइ ।। अरी उहाँ नँदनँदन पुनि आये रँगीले रसिक मनि राइ ।।१।। अरी आली तिनमें तू नहीं देखी रहि गये नैंना नाइ ।। अरी तब इत उत तकि मोहन पिय मो तन तक्यो अरगाइ ।। २ ।। सखी मोसौं सैंननिं ही में कह्यौ कहाँ में कह्यौ ग्रीव ढुराइ ।। तब तौरी छबीले कुँवर तौ पहियाँ सैंननि दई पठाइ ।।३।। तू अब न करि गहरु नागरि तिय आनि बन्यौं भलौ दाइ।। यह सुनि नवल लाड़िली सहचरिं तन मुसिकी नैंन ढुराइ ।।४।। इतनें ही परम चतुर सखी जिनि तिनि भुज भरि लई उठाइ ।। गहि नव कंचुकी सौंधें बोरी बौरी दई बनाइ ।। ५ ।। पुनि पद पीठि पटौरा पौंछि कें आगें धरी समुहाइ । चली नवसत सजि स्वामिनि कामिनि सखी के अंस भुज लाइ ।। ६ ।। मानों कनक धातु पर्वत पर तड़ित लता चमकाइ । नव गुन नवल रूप नव जोवन नवल नेह हुलसाइ ।।७।। झूमक सारी प्यारी पहिरें चलति लंक लचकाइ ।। जनु यह रूप जोति जग मग सौं पवन लगैं झकुराइ ।।८।। कमल फिरावति कर वर बाला माला उरसि रुराइ । पुनि इक लट छबि सौं जु छबीली के बेसरिं रही अरुझाइ ।।९।। मनु प्रीतम मन मीन की बनसी भष मुकता लटकाइ ललितादिक

सखियनि मे सुन्दरि सोभित है इहि भाइ ॥ १० ॥ जनु नव कुमुदिन के मंडल मैं इंदु पगनि चल्यौ जाइ ॥ कबहुँक बदन दुराइ उघारति पुनि हँसि लेत दुराइ ॥ ११ ॥ मंजुल मुकर मरीचनि सीं मनु छिन छिन छवि अधिकाइ ॥ अरु जैसैं नव मद मत्त गयंदनि मल्हकत वाहु दुराइ ॥१२॥ सोभित श्रवननि स्वेद सुदंति के मानौं पटे चुचाइ । नीवी बन्धन फुंदना घंटा किंकिनि घन घुंघराइ ॥ ॥ १३ ॥ नूपुर ऊपर चूरा रूरा मनु संकल भनकाइ । चंचल अंचल चँवर विराजत नैंकु चलति जब धाइ ॥१४॥ सखियनि कैं कर कुशम छरी ते अगद बनैं चहूँ घाइ । मदन महावत कौ बल नाहीं अंकुस देति डराइ ॥ १५ ॥ सखियनि में हितू विशेष विसाखा ज्यौं तन की परछाइ । सो नंद नंदन नियरें जानि कें सहज उठी कछु गाइ ॥ १६ ॥ सबहिनि जान्यौं श्री राधा जू आई भये चौगुनें चाइ । जे हुती नवल किशोरी की साथनि ते दौरी समुहाइ ॥ १७ ॥ तिन संग मोहन धाये आये ज्यौं रंक महा निधि पाइ । पहिलैं ही लाल जुहार कह्यौ मृदु मुरली मांहि बजाइ ॥ १८ ॥ इततें कुटिल कटाच्छिनु पिय तन चितयो मुरि मुसिकाइ । सो सुख पिय नैंना हीं जानें मो मन मैंन समाइ ॥१६॥ चाँचरि दैंन लगी ब्रज वीथिनु रंगीले रंग उपजाइ । गावनि लागी ग्वालिनि गारी सुन्दर ललहि लगाइ ॥ २० ॥ राधा जू गारी सुनि सुनि हसि हसि हरि तन हेरि लज्याइ । ललनु अवीर भरत ग्वालिनि कौं प्रान प्रियाहिं बचाइ ॥ २१ ॥ और जु प्रेम विवस रस कौ सुख कहत कह्यौ नहिं जाइ । जेहि सुख कहिवे कौं कोटिक सरस्वती की सुमति हिराइ ॥ २२ ॥ सेस महेस सुरेस न

[illegible]

पलोटत पाँइ।२३। श्रीवृषभानुसुता पद अंबुज जिनके सदा सहाइ। इहि रस मगन रहत जे तिन पर नंददास बलि जाइ।२४।३५।

गोस्वामी श्रीसुखलालजी महाराज की धमारि ।।राग बिहागरो।। फागुनसुदी१०कौ

अहो रंग हो हो हो होरी खेलैं लाड़िली नव लाल सों। अलक लड़ी चाइनि अलबेली रंग रंगीले ख्याल सों ।। रंग हो हो हो० ।।टेक।।१।। चौंपनि भरी समाति न गातनि बहु भांतिनु नवसत साजैं। अंगनि चीर रंगे नव रंगनि निरखि अनंगनि गन लाजैं ।। २ ।। सखी समाज साजि सब सौंजनि पिय प्यारी संग हुलसि चलीं। रुनक झुनक पग धरति कुंज मग जित तित फूलत कुसुम कलीं ।। ३ ।। चहुँ दिसि फूलि रही फुलवारी जल जंत्रनि सोभा न्यारी। मध्य बिराजत मणि मंडल तहाँ खेल रच्यौ नव सुकुमारी ।। ४ ।। बाजे विविध बजत आनंद निधि श्रवन सुनत हिय हुलसावैं। उमगि उमगि गावति कल कंठनि अद्भुत ताननि उपजावैं ।। ५ ।। आज्ञा पाइ भईं लालन दिस कछु सखी खेल रचावन कौं। चितत सुखद उपाइ निरंतर दंपति लाड़ लड़ावन कौं ।। ६ ।। इत गोरी उत स्याम भाँवतौ दोऊ दल साजि सनमुख हेरें। जूथन सहित गुलाल उड़ावत छबि छावत आये नेरें ।।७।। सौंधौ मोद और वंदन लै भरत परस्पर मन हरहीं। निज सनेह अनुरागनि सों मनु अंतर भरि बाहिर भरहीं ।। ८ ।। सौरभ सार हिये लपटावति घातनि तकि बातनि भोरें। अंग चुराइ बचावत दाइनु परम चतुर वर दुहुँ ओरें ।।९।। लिये कर कुसुम चोरि कुमकुम रंग हसि हसि छिरकत छबि पावैं। पुलकि झिझक पोंछत झीने पट भौंह तान रस बरसावैं ।।१०।। पिचकें चलति भरी बहु रंगनि सम्हरि सम्हरि मुरि मुरि झेलें

लचकति कटि मुखरित रसनावलि कोटिक छबि पाँइनि पेलें ॥११॥ उमहि उमहि धावति रंगनि लै रमकि झमकि भरि भरि भाजें। रुरकत हार सुढार उरनि पर नूपुर किंकिनि कल बाजें ॥ १२ ॥ बिमली फिरत रुचिर आनन पर झूमि झूमि कुंचित अलकें। परसि अधर अरुझत वेशरि सों निरखि नैंन भूलत पलकें ॥ १३ ॥ अरुन अबीर भरे हाथनि सों सुरझावनि भावनि भीनीं। ललित कपोल सुभग नासा पर झलकत अरुनाई झीनीं ॥ १४ ॥ तकि तकि दाइ कमोरिनि ढोरनि लपटि लपेटनि रंग वरषैं। अरुझि अरुझि सुरझत छल बल करि दरसि २ अंग हिय सरसैं ॥ १५ ॥ रंग भीजि चुह चुहनि वसन की स्वच्छ लसनि तन की सोभा। जग मगानि अंगनि मणि भूषन निरखि परस्पर मन लोभा ॥ १६ ॥ ताल मृदंग उपंग बीन डफ मिलि बाजत अति स्वर झीने। लेत सुलप गति मंद मंद दोउ नूपुर ध्वनि मन हरि लीने ॥१७॥ अरुन सोसनी पीत हरित सित लिये अबीर भरि भरि थारी। दुहुँ दिसि पंकति सजि ठाड़ी भई प्रेम पगी नव सहचारी ॥१८॥ उत मोहन इत नवल किशोरी सनमुख चलति दृगनि जोरें। लै लै विविधि गुलाल सुवर वर मुठिनि संग तालनि तोरें ॥ १६ ॥ रचित गुलाल ललित कोमल कर मुठी खुलत प्रानिनि मोहें। रंग भरी भरनि भरी नैंननि में रहित निमिष इक टक जोहें ॥ २० ॥ निर्त्तत निर्त्तत आइ मिले सखी धर अंसनि भुज ठठुकि चहें। सोभा सदन वदन सुखमा लखि रहसि रहसि मृदु बैंन कहें ॥ २१ ॥ पाननि रची नवल दसनावलि नेह रचीं चितवनि सोहे। सस्मित मुख मिलि गान करत दोउ मधुर स्वरनि उपमा को है ॥ २२ ॥ पलटि चले अपनी अपनी दिसि ठुमकि

ठुमकि चरननि राखें । ग्रीवा ढ़ोरि मोरि कर पल्लव मंद मंद थेइ थेइ भाखें ॥ २३ ॥ दच्छिन दिसि भुकि कुंवरि छबीली सहचरि सों हँसि बात कही । परम प्रवीन रसिक नागर वर तिहिं औसर इक घात लही ।२४। दृष्टि बचाइ आइ प्यारी तन रंग भरि पिचकारी मेली । चंचल गति वायें करतल पर ओट लई नव अलबेली ॥ २५ ॥ उचटि छींट रंग मिही फुहीं कन मृदु कपोल पर सोहि रहे । चतुर सिरोमनि खेल सौंज तजि निकट आइ छबि जोहि रहे ॥ २६ ॥ कहत लाल वलि चलि सुखदानी कुंज केलि रस अनुरागें । प्रिया कहत निज दाव लिये विन कैसेहुँ पग न धरौं आगें ॥ २७ ॥ उत विनती इत नेति नेति वच मधु बोलनि नेहनि सानीं । सुन चहचरि सहचरि जुरि आईं पूछत कलह कहा ठानीं ॥२८॥ बोली कुंवरि गुलाल ख्याल रचि विच छाँडी छल पिचकारी । दृग कर नचनि वचन रचननि तकि छकि लालन गति मति हारी ॥२९॥ ललिता समझि न्याय सुठि कीनौं प्राण भाँवती मन मान्यौ । पिय आंखिन काजर दै हँसियै यह बदलौ अति रस सान्यौ ॥३०॥ विवि करजनि के अग्र भाग मषि लाइ लड़कि पिय हाथ गह्यौ । चाह भरे लोचन हीं जानत जो सुख तिहि छिन लाल लह्यौ ॥ ३१ ॥ गहि गहि कर झगरनि चित चोरन झक झोरनि अति सुख कारी । वाम बाहु पिय ग्रीवा कसि हसि आँजी अंखियाँ अनियारी ॥ ३२ ॥ खंजन मद गंजन मन रंजन अंजन युत लोइन लोनें । रूप छके चितवत ललचोहैं कछुक लाज भीने कोनें ॥ ३३ ॥ प्रेम विवस चाहत पग परस्यो ललक झलक तन मन छाए। अति उदार रिझवार रंगीली रीझि कंठ सों लपटाए ॥ ३४ ॥ परसत अंग अनंग सरस भयौ रोम

रोंम आनंद फूले । हित पागे रँग मगे रसीले नव निकुंज सुख अनुकूले ॥ ३५ ॥ हरखि हरखि विलसत नव नव विधि रति विहार अति मन भायौ ॥ जै श्री हित सुख लाल कृपाल कृपा करि यह विलास हग दरसायौ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥

श्री नागरीदासजी महाराज कृत ॥ झूमिका ॥ राग सारंग ॥ फागुन सुदी १० कौ

अहो पिय लाल लडैती को झूमिका हो ॥ सरस सुर गावत मिलि ब्रज बाल ॥ अहो कल कोकिल कंठ रसाल ॥ लाल रस झूमिका हो ॥ टेक ॥ हां हो, नव जोवनी सरद ससि वदनी जुवती जूथ जुरि आई ॥ हां हो, नवसत साजि सिंगार सुभग तन करनि कनक पिचकाई ॥ एकनि सुमन जूथ नवलासी दामिनि सी दरसाई । एक सुगंध सँवारि अरगजा भरन नवल कों आई ॥ १ ॥ हां हो, पहिरे वसन विविधि रंग रंगनि अंग महा रस भीनी ॥ हां हो, अतरोंटा अंगिया अमोल तनसुख सारी अति झीनीं ॥ गज गति मंद मराल चाल झनकत किंकिनि कटि पीनी ॥ चोकी चमकि उरोज जुगल पर आनि अधिक छवि दीनी ॥ २ ॥ हां हो, रुरकत हार सुढ़ार जलज मनि पोति पुंज अति सोहै ॥ हां हो, कंठ सिरी दुलरी दमकनि चोका चमकनि मन मोहै । वेशरि थरहरात गज मोती रति भूली गति जोहै । सीस फूल श्रीमंत जटित नग वरन करन कवि कोहै ॥३॥ हां हो, मृग मद आड़ लिलाट श्रवन तारंक तरनि दुति हारी ॥ हां हो, खंजन मीन हरन अँखियां अंजन रंजित अनियारी ॥ यहि वांनिक वनि संग सखी लीन्हें वृषभांन दुलारी । इक टक दृष्टि चकोर चकित यों निरखी लाल विहारी ॥ ४ ॥ हां हो, नवल निकुंज महल रस पुंज भरे

परस्पर मेलैं ॥ मधुकर जूथ निकट आवत झुकि अति सुगंध की रेलैं । प्रीतम श्रमित जानि प्यारी तव लाल भुजनि भरि झेलैं ॥ ५ ॥ हां हो, वहु विधि भोग विलास रास रस रसिक विहारिनि रानी ॥ हां हो, नागर नृपति निकुंज विहारी संग सुरत रति मानी ॥ जुगल किशोर भोर नहि जानत इहिं विधि रैंनि विहानी प्रीतम प्रान प्रिया मिलि विलसत ललितादिक गुन गानी ॥ ६ ॥ ३७ ॥

श्री वृन्दावनदासजी कृत ॥ सजनी असीस कौ ॥ फागुन सुदी ११ कौ है ॥

सजनी लाल फाग फल पायौ । रंग भरि भरि कें घेरि कुंज मधि गहि गहि वाँह नचायौ ॥ १ ॥ पिय किये प्रिया प्रिया करि प्रीतम वढ़ि गयौ रंग सवायौ ॥ भाँवरि दे बैठारे मंडल सखि दृग भाग्य मनायौ ॥२॥ ललिता घूँघटी स्याम वदन पर रचि कौतुक उपजायौ ॥ वारि वारि पहुपांजुलि सवहिनु अति हित सौं दुलरायौ ॥ ३ ॥ गौर स्याम अंगनि जु रंग चौपनि चाइनि छिरकायौ ॥ तन भींजन मन भींजन कौ सुख आंनन उफलि जु आयौ ॥ ४ ॥ कुसुम छरी दै हाथ वहुरि झूमक कौ खेल खिलायौ ॥ दूलह दुलहिनि प्रेम माहिलौ छंदनि रचि रचि गायौ ॥ ५ ॥ न्यौछावरि किये प्रांण परम कौतिक होरी मन भायौ ॥ यह जु अपूरव लाड़ झूँमिका वना वनी दरसायौ ॥६॥ औरै चाह समझि कै दोऊनि कुंज सदन पधरायौ ॥ वृंदावन हित रूप घुमडि रस कौ अंबुद वरसायौ ॥ ७ ॥ ३८ ॥

श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत ॥ व्याहुलौ ॥ राग विलावल ॥ फागुन सुदी ११ कौ

सखियनि के उर ऐसी आई । व्याह विनोद रचैं सुख दाई ॥ यहै बात सबके मन भाई । आनंद मोद बढ्यौ अधिकाई ।

वढ्यौ आनंद मोद सबकैं महा प्रेम सुरंग रंगी। और कछु न सुहाइ तिनकौं युगल सेवा सुख पगी॥ निशि द्यौस जानत नाहि सजनी एक रस भीजी रहैं। गोप गोपिनु आदि दुर्लभ तिहिं सुखहि दिन प्रति लहैं॥ १॥ यह नव दुलहिनि अति सुकुमारी। ये नव दुलहु लाल विहारी॥ रंग भीनौ दोऊ प्राण पियारे। नवसत अंगनि अंग सिंगारे॥ नवसत सिंगारे अंग अंगनि झलक तन की अति बढ़ी। मोर मौरी सीस सोहै नैन पानिप मुख चढ़ी॥ जलज सुमन सु सेहरे रचि रतन हीरा जग मगैं। देखि अद्भुत रूप मनमथ कोटि रति पायनि लगैं॥ ॥ २॥ सोभा मंडप कुंज द्वारें। हित की बाँधी वंदन वारें॥ कुम कुम सों लै अजिर लिपायौ। अद्भुत मोतिनु चौक पुरायौ॥ पुराय अद्भुत चौक मोतिनु चित्र रचना बहु करी। आय दोऊ ठाढ़े भये तहाँ सबनि की गति मति हरी॥ सुरंग महदी रंग राचे चरण कर अति राजहीं। विविधि रागनि किंकिनी अरु मधुर नूपुर बाजहीं॥ ३॥ वेदी सेज सुदेश सुहाई। मन दृग अंचल ग्रन्थि जुराई॥ रीति भांति विधि उचित बनाई। नेह की देवी तहाँ पुजाई॥ पूजि देवी नेह की दोऊ रति विनोद विहारहीं। तिहिं समैं सखी ललितादि हित सौं हेरि प्राणन वारहीं॥ एक वैस सुभाव एकै सहज जोरी सोहनी। एक डोरी प्रेम की ध्रुव बँधे मोहन मोहनी॥ ४॥ ३६॥

राग-विहागरौ—श्री वृन्दावन धाम रसिक मन मोहई। दूलह दुलहिनि ब्याह सहज तहाँ सोहई॥ १॥ नित्य सहाने पट अरु भूषण साजहीं। नित्य नवल सम वैस एक रस राजही॥ २॥ सोभा को सिरमौर चन्द्रिका मोर की। वरनी न जाइ कछू छवि

नवल किशोर की ॥ ३ ॥ सुभग माँग रंग रेख मनो अनुराग की। झलकत मौरी सीस सुरंग सुहाग की ॥ ४ ॥ मणिनु खचित नव कुंज रही जग मग जहाँ। छवि को बन्यो वितान सोई मंडप तहाँ ॥ ५ ॥ बेदी सेज सुदेस रची अति वानि के। भांति भांति के फूल सुरंग बहु आनि कै ॥६॥ गावत मोर मराल सुहाए गीत री। सहचरि भरी आनंद करति रस रीति री ॥ ७ ॥ अलबेले सुकुमार फिरत तिहिं ठाँवरी। दृग अंचल परी ग्रन्थि लेत मन भाँवरी ॥ ८ ॥ कंगना प्रेम अनूप कबहुँ नहिं छूटही। पोयो डोरी रूप सहज सो न टूटही ॥ ९ ॥ रचि रहे कोमल कर अरु चरण सुरंग री सहज छबीले कुंवर निपुन सब अंग री ॥ १० ॥ नूपुर कंकण किंकिणी बाजे बाजहीं। निरखत कोटि अनंग नारि सब लाजहीं ॥ ११ ॥ बाढ़यौ है मन माहिं अधिक आनंद री। फूले फिरत किशोर वृंदावन चंद री ॥१२॥ सखियनि किये बहु चार अनेक विनोद री। दूधा भाती हेत बाढ्यौ मन मोदरी ॥ १३ ॥ ललित लाल की बात जबहि सखियनि कही। लाज सहित सुकुमारि ओट पट दै रही ॥ १४ ॥ नमित ग्रींव छवि सींव कुँवरि नाहिं बोलहीं। बुधि बल करत उपाय घूँघट पट खोलहीं ॥ १५ ॥ कनक कमल कर नील कलह अति कल बनी। हँसति सखी सुख हेरि सहज सोभा घनी ॥ १६ ॥ बाँम चरण सौं सीस लाल को लावहीं। पानी नारि कुँवरि पर पियहि पिवावहीं ॥१७॥ मेलि सुगंध उगार सौं बीरी खवावहीं। समझि कुँवरि मुसिकाइ अधिक सुख पावहीं ॥१८॥ और हाँस परिहाँस रहसि रस रँग रह्यौ। नित्य विहार बिनोद जथा मति कछु कह्यौ ॥१९॥ अंचल ओट असीस सखी सब देहिं री पल पल बढ्यौ

सुहाग नैन सुख लेहि री ॥२०॥ जेंमें नवल बिलास नवल नवला करैं । मन मन की रुचि जान नेह बिधि अनुसरैं ॥ २१ ॥ बैठी है नव कुंज कुँवरि मन मोहनी । झलकत रूप अपार सहज अति सोहनी ॥ २२ ॥ चाहि चाहि सौं रूप रसिक सिरमौर री । भरि आए दोउ नैंन भई गति और री ॥२३॥ अति आनंद कौ मोद न उरहि समात री । रीझि रीझि रस भीजि आपु बलि जात री ॥ २४ ॥ अरुझै मन अरु नैंन बढ्यौ अनुराग री । एक प्राण द्वै देह नागर अरु नागरी ॥ २५ ॥ यौं राजत दोऊ प्रीतम हँसि मुसिकात री । निरखि परस्पर रूप न कबहूँ अघात री ॥ २६ ॥ तिनही के सुख रंग सखी दिन रँग मँगीं । और न कछू सुहाइ एक रस सब पगीं ॥ २७ ॥ उभय रूप रस सिंधु मगन जहाँ सब भए । दुर्लभ श्रीपति आदि सोई सुख दिन नए ॥ २८ ॥ हित ध्रुव मंगल सहज नित्य जो गावहीं । सर्वोपर सोई होइ प्रेम रस पावहीं ॥ २९ ॥ ४० ॥

गोस्वामी श्री रूपलालजी महाराज कृत असीस कौ पद

लाड़ी जू थारौ अविचल रहौ जी सुहाग । अलक लड़े रिझवार छैल सों नित नव बढ़ौ अनुराग ॥ यों नित विहरौ ललितादिक संग श्री बृंदावन बाग । रूप अली हित युगल नेह लखि मानत निजु बड़ भाग ॥ ४१ ॥

गोस्वामी श्री चनचंद्र महाप्रभुजी के पद ॥ राग आसावरी ॥

हंस सुता तट केलि दंपति रहसि रची री । अवनी कनक सुचारु विद्रुम रतन खची री ॥ १ ॥ आव्रत कुंद कदंब केतुकी चंपकली री । लुब्धत षट पद वृंद मारुत मंद भलीरी २

श्री वृंदाविपिन विहार स्यामा स्याम करैंरी । बद्ध परस्पर बाहु गज गति मन्द ढरैंरी ॥ ३ ॥ आनन अद्‌भुत मोरि पिय दिसि मंद हँसी री । अरुन कंज दुति भाँन मानौं कोटि ससी री ॥४॥ चैत चतुर वर देत प्रीतम चित्त हरैं री। सुर मंदर कल गान मन-मथ मुदित करैं री ॥५॥ बाजत प्रणव मृदंग किंकिनी मुखर सुनी री । निर्त्तति जुवति सुधंग नूपुर मधुर धुनी री ॥६॥ एक वैस रस एक एक तैं एक खरी री । करत हास परिहास अंग अनंग भरी री ॥७॥ कबहूँ कुंज अभिराम किशलय सैंन रची री । निर्मित अरुन नूत दल पंकज मृदुल खची री ॥८॥ तापर निवसित दोऊ अैंचत नील निचोल । प्रिया हरषि कर टारति नेति नेति मधु बोल ॥६॥ उरज अग्र कर देत मोहनलाल भरी री । गहि पिय अंक निसंक भुज जुग मध्य धरी री ॥१०॥ कनक लता द्रुम मानौं अलि अंबुज कृत अैंन । श्री वनमाली हित स्यामा ललितादिक सुख दैंन ॥ ११ ॥ ४२ ॥

गोस्वामी श्री कृष्णचंद्र महाप्रभु जी कौ पद ॥ राग राइसौ ॥

देखहु श्री वृंदावन मोहन अति अभिराम । आयौ मधुरितु सेवन तुमहि हरषि घनश्याम ॥ १ ॥ आपुन विविध सँवारी तरु संपति व्रजनाथ । बीथी सकल विलोकहु प्रान प्रिया के साथ ॥२॥ पहिलैं असित पलासनि पुनि कलिका अरुनाति । माँनहु धूमित विषम सरानल किमपि जराति ॥३॥ जित कित सत वर गनि के कुसुम वृंद विकसात । मानहुँ दिस दिस सिंजित तुव जश उमँग न मात ॥ ४ ॥ विडुलित कुसुम समूह अशोकनि अरुन सुरंग ॥ मानहु प्रगटित बाहिर तुव अनुराग अभंग ॥५॥ हरित [illegible]नि में नूतनि मंजरी पवन हुलाति ॥ मानहुं घन में प्रगटित

पुनि चपला दुरि जाति ॥६॥ प्रति तरु लपटि रही नव पल्लव कोमल वेलि ॥ आनति मनसि तिहारी श्री राधालिंगन केलि ॥७॥ नव नव कुंज सदन पर कोकिलापेशल गांन ॥ मानहु काम संदेसनि मेटति मानिनिमांन ॥८॥ माते फिरत सिलीमुख डारत मधुकन लाल ॥मानौं जैं कौं ढ़ीले मदन मत्तंगज टोल ॥६॥ और कहाँ लौं वरनौं मन में रहति विचारि ॥ तव सुख हेत यहै वन कै राधा वर नारि ॥१०॥ सुनि विनती वृंदा की अपने ही अनुराग ॥ चले मुदित हरि तहाँई खेलन चितयो फाग ॥ ११ ॥ नागरि सहित वीच हरि इत उत जुवति समाज ॥ मानहु उडगन मंडित जुवति सहित द्विजराज ॥ १२ ॥ ताल रवाव मुरज डफ ललनां गीत समेत ॥ बीच बीच मुरली रव खग पसुवनि सुख देत ॥ १३ ॥ रवकत हसत परस्पर छिरकत कुम कुम नीर ॥ मनु अंतर रस भीनें उमगि चुचाने चीर ॥ १४ ॥ स्यामल कर भय भामिनि मुख झंपति पट झीन ॥ मानहु राहु डरनि तें बिधु जलधर में लीन ॥१५॥ नागरि पिय मुख चंदन लेपति मुदित मनोज ॥ मानहुँ कनक कमल बल मर्दत नील सरोज ॥ १६ ॥ वंदन जुवति उड़ायौ राजत मुख जुतहास ॥ मानहु नव आतप में विगसित कमल हुलास ।१७। नादित कटि किंकिनि कर कंकन पद मंजीर । जिन सुनि २ पुनि बोलत हंस तरनिजा तीर ।१८। ऐसें ही सब वन विहरत तन मन अति ही फूल। आनंद सलिता बाढ़ी नासी सुधि बुधि कूल।१६। जहां (दिन) दिन खेलतश्रीराधा रसनिधि नंदकुमार। जै श्री कृष्णदास हितचित में नित ही रहौ विहार ॥२०॥४३॥

गोस्वामी श्री दामोदर वर जी महाराज कृत । राग धनाश्री ।

रसिक रस रंग भरे ।। टेक ।। नवल कुंवर वर खेलहीं हो, हंस सुता के तीर । हरषि हरषि बनिता भरैं हो मोहन के तन चीर ।। रसिक०।। १ ।। उतहि स्यांम इत राधिका हो जुगल जूथ किलकात । मंद मंद जुवती चलैं, हो हरि सनमुख कहैं बात ।। २ ।। बतरस हरि जुवती लगे हो सखि गहिबे कें हेत । छल-बल करि हरि घेरि लये हो भूषन उर ते लेत ।। ३ ।। कनक कपिस पट ऐंचहीं हो कर तैं बैंनु छुड़ाइ । एक गहैं कर एक हँसति एक बंदन मुख लपटाइ ।। ४ ।। स्यांम संग बनिता हुती फिरि भईं प्रिया के संग । बाजे बहु विधि बाजहीं हो उपजत कोटि अनंग ।। ५ ।। उड़त गुलाल कहत हो हो हो हरि जानी जिय हारि । उमड़े जूथ करत कोलाहल घेरि रहीं ब्रजनारि ।। ६ ।। तब पिय सकुचि भये वेपथ हो नाहिन राखति कानि । स्याम प्रिया मुख हेरहीं हो सैंन गूढ़ दई जानि ।।७।। कोप कपट करि लाल लये हो भुज भरि अंक लगाइ । निरखि कुँवर प्यारी पद परसत आनंद उर न समाइ ।। ८ ।। जै श्री दामोदर हित केलि की हो उपमा दीजे वादि । सहज विपिन सुख संपदा हो संतत जुगल अनादि ।। ६ ।। ४४ ।।

राग विहागरौ—होरी खेलैं मोहनी मोहन रंग भीजैं । गावत परस्पर चित हरि लीजैं।।१।।नील कपिस पट अधिक विराजैं। बनै हैं भूषन बहु उपमाइ लाजैं ।।२।। अपने समाज मधि सोभा अति पावैं । मधुर मधुर धुनि मुरली बजावैं।। ३ ।। तरनि तनया तीर भीर भई भारी। नाचत सजनी सब कर दियें तारी ।।४।। पुलकि पुलकि तन मन अति फूले । कबहूँ झलकत दोऊ मनमथ भूलें ।। ५ ।। कोकिला कल कीर केकी शब्द कराहीं　नवल निकुंज नाना

नागरि तहाँहीं ॥ ६ ॥ हसि हसि मोहन लाड़िली लाल बोलैं। मृदु बचननि सोभा सहचरि तोलैं ॥ ७ ॥ रस निधि विविध वर उठत तरंगा। नयन सयन छन लजत अनंगा ॥ ८ ॥ इतहि राधिका प्यारी उताहिं पियारौ। छिरकत हँसत है प्रीतमु तिहारौ ॥ ६ ॥ अति रंग सुरंग केशरि रंग नीकौ। वसन भरे तन सौंधें भाँवतौ है जीकौ ॥ १० ॥ उड़त गुलाल डफ वाजत मृदंगे। बहु विधि बाजैं ताल सरस उपंगे ॥ ११ ॥ हारे हरि प्यारी जू सों सरनि गही है। कुच विच धरि राखै प्रीतम लही है ॥ १२ ॥ वारति सखी सवै तन मन अपनौं। नवल जुगल धन जिनकें है जपनौं ॥ १३ ॥ विपिन सहज सुख ललित त्रिभंगी। जै श्री दामोदर हित मनु रह्यौ रंगी ॥१४॥४५॥

राग गोरी—नाचत गावत स्याम हो हो होरी हो। कुँवर कंठ भुज वाम हो हो होरी हो ॥ १ ॥ पद गति चलनि मधुर धुनि हो हो होरी हो। जलचर थकित श्रवन सुनि हो हो होरी हो ॥ २ ॥ विच विच रव मुरली धुनि हो हो होरी हो। नूपुर कल किंकिनि कुनि हो हो होरी हो ॥ ३ ॥ महा मुदित दोऊ जन हो हो होरी हो। विहरत वर वृन्दावन हो हो होरी हो ॥४॥ बाजत ताल मृदंग हो हो होरी हो। वर बीना मुख चंग हो हो होरी हो ॥ ५ ॥ विवि मुख चंद्र चकोर हो हो होरी हो। नैंन सैंन जुग जोर हो हो होरी हो ॥ ६ ॥ सस्मित मुख सुख रासि हो हो होरी हो। अति आनन्द उल्लास हो हो होरी हो ॥७॥ वंदन गहि गहि डारति हो हो होरी हो। प्राननाथ मन वारत हो हो होरी हो ॥ ८ ॥ छिरकत हँसत भरत हरि हो हो होरी हो

तन मन हो हो होरी हो। उड़त गुलाल बहुत वन हो हो होरी हो ॥१०॥ रंगित चीर धरनि कल हो हो होरी हो। रंगे तमाल लाल जल हो हो होरी हो ॥ ११ ॥ नित्य विहार विपिन वर हो हो होरी हो। कोकिल कीर नदित भर हो हो होरी हो ॥१२॥ या रस कौ उपमा नहि हो हो होरी हो। प्रान प्रिया के चरन गहि हो हो होरी हो ॥ १३ ॥ जै श्री दामोदर हित विलसत हो हो होरी हो। सदा रहत मन हुलसत हो हो होरी हो ॥१४॥४६॥

गोस्वामी श्री कमलनैन जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥

मदन मोद भरे खेलत होरी। मोहन नागर राधा गोरी ॥१॥ तैसीय संग सखी जु सुहाई। देखत रति पति रहत लज्याई ॥२॥ हाथनि पिचक लियें छवि छाजैं। मनों दामिनि घन भुव पर राजैं ॥ ३ ॥ छिरकत रंग परस्पर भीजैं। छवि पावत दुरि अँखियाँ मीजैं ॥ ४ ॥ कबहुँ गुलाल लियें कर प्यारी। भरत सखिन तें आगें न्यारी ॥५॥ मनों नीरज पराग गहैं कर। मारत नीरद प्रेम प्रीति भर ॥ ६ ॥ कबहुँ सखी भुज मंडल करि कें। पकरति लाल प्यारी उर धरि कें ॥ ७ ॥ मनों कमलनि की वारि बनाई। घेरे रवि ससि किये इक ठाँई ॥८॥ अद्भुत कौतुक श्री वृंदावन। देखत सुख पावत सहचरि जन ॥९॥ जै श्री कमल नैन नैनहित यह यश गावैं॥नित नित ललना लाललड़ावै ॥१०॥४७॥

खेलत फाग नागरी नागर गावत मधुर सुर सरस धमारि। सुनि सुनि अलिनी अलि कुल कोकिल रही मौंन सीखत निर-धारि ॥ १ ॥ अपनें अपनें स्वरनि मिलायें आडव षाडव भेद विचारि। वैसेंइ मधुरे बाजे बाजैं वैसीये भाँति देति कर तारि ॥ २ ॥ चोवा चंदन केशरि वंदन फुलेल केवरो अरु घनसार

छिरकत रंगनि होहो बोलत प्रेम मगन तन मन न सम्हार ॥३॥ अद्भुत खेल मच्यौ जमुना तट रँगि गई पुलिन सहित द्रुम डार। तैसैई भीजे बसन तन मांहे तैसेइ छूटि रहे उर हार ॥ ४ ॥ रंग खेल छाँड्यौ सब सखियनि, भई परस्पर कमलनि मार। सगरीं सखी भई प्यारी तन हा हा करी तब नंद कुँमार ॥ ५ ॥ तब प्यारी पकरे मन मोहन बैंनी गूंथि सुकियौ सिंगार। पीतांबर लियौ खैंच नागरी ललिता ललित उढ़ाई सार ॥६॥ फिर प्यारी पगिया सिर धारी पिय कौ कीन्यौ तिय कौ सिंगार। आंकौ भरि मुसिकाइ लाडिली मुदित बदन छबि कौ नहि पार ॥७॥ बाढ्यौ रंग कह्यौ नहिं आवे छबि पर बारों कोटि रति मार। जै श्री कमल नैंन हित बिहरत संतत श्री वृन्दावन सुखद बिहार ॥८॥४८॥

राग सौसी—ब्रजराज कुँवर वर खेलहीं हो अहो हेली सुनहु न डफ धुंकार। ब्रज खोरी वृषभान की पौरी माची है पिचकनि मार ॥ १ ॥ ससि बदनी मृग लोचनी नारी सब तन अति सुकुँवार। तिन मधि श्री वृषभान किशोरी राजति परम उदार ॥ २ ॥ नव नव चीर सुधारि सुभग तन सोभित अतिहीं सुढ़ार। नई नई गति भेद परस्पर गावत मंगल चार ॥ ३ ॥ आँखि आँजि मुख मांडि लाल कौ कीनौं सरस सिंगार। हो हो हो हो हो कहि टेरत बाढ्यौ है प्रेम अपार ॥ ४ ॥ कीरति तिलक कियौ मोहन कैं बहु रतननि भरि थार। जै श्री कमल नैंन हित खेल चले हरि परे है मीन रस जार ॥ ५ ॥ ४९ ॥

गोस्वामी श्री कुँजलालजी महाराज कृत ॥ राग कल्याण ॥

चौंकि परी गोरी होरी में स्याम अचानक बाँह गही री। सम्हरि छुड़ाइ रिसाय चढी भुव अनषि अधर कछु बात कही री

चितै चितै हसि कें बसि कें कसि कें भुज में रस रास लहीरी। श्री कुंजलाल हित बाल जाल छबि ख्याल रसालहि देखि रही री ॥ ५० ॥

राग सारंग—स्यामा स्याम निकुंज महल में खेलत जुगल जूथ अलि बनि बनि। लहँगा लाल कंचुकी झीनीं सारी सितनि किनारी ठनि ठनि ॥१॥ पीत पाग कंचुक तन उज्वल दुहुँ अंगनि छबि निकसति छनि छनि। जुग सिंघासन सनमुख बैठे सौरभ सौंज धरी सखि गनि गनि ॥ २ ॥ लाल पिचक उरजनि तकि छोड़नि इनकी दृगनि लगनि भ्रुव तनि तनि। वसननि अतर गुलाल परस्पर रचित प्रिया पिय तन मन सनि सनि ॥ ३ ॥ बाजे विविधि बजत कल गावत मैंन सनीं बतियाँ मुख भनि भनि। झूमक नाचत लटकत मटकत पटकत पद नूपुर रव झनि झनि ॥ ४ ॥ परसि पुलकि वस मिलत भिलत रस हँसत लसत कर तारनि हनि हनि। जै श्रीकुंजलाल हित सौं लपटनि लखि मानत भाग आपनौं धनि धनि ॥ ५ ॥ ५१ ॥

राग विभास—रति रस फाग सबै निसि खेलें बहुरि सेज उठि खेलन लागे। सिथल हुते भूषन पट दृढ़ करि कच संजम करि आलस त्यागे ॥ १ ॥ मदन रंग अंग अंग भरे अनुराग भरे उर उमगि सभागे। पहिलें खेल नैंन सैंननि सौं बैन बैंन के रस में पागे ॥२॥ झुठी मुठी पिय तियहि झुकावत मुख माँड़न मिस उरजनि खागे। मन सौं मन तन सौं तन मिलवत अधरनि अधर गंड रद दागे ॥ ३ ॥ अप अपने दाइनि बहु भाइनि चाइनि अरत ढरत अनुरागे। जै श्रीकुंजलाल हित केलि छुटीं लट दुहुँ अति रूप मरगजे बागे ४ ५२

राग विभास—भोर किशोर किशोरी जू होरी सेज ही बैठि अलीछत खेलैं। पगिया स्याम रची गुन कंचन गोरी के भाल समेटि धमेलैं ॥ १ ॥ चुपरयौ बदन अलक जुग गंडनि राखी अतर लगाइ नवेलैं। मन मानैं पहिराइ सहानैं पट भूषन उर हार हमेलैं ॥ २ ॥ तिय पिय कौ निज वेष बनायौ अंजन दै मुख मांड़ि फुलेलैं। त्यौंही पिय छल सौं मलि उरजनि खुरजनि अनखि प्रिया पग पेलैं ॥३॥ उमगि उमगि बातनि बहु घातनि हँसत लसत सरसत कल केलैं। जै श्री कुंजलाल हित की सहचरि गन रूप अनूप दृगन भरि झेलैं ॥ ४ ॥ ५३ ॥

गोस्वामी श्री हरिलालजी महाराज कृत धमारि ॥ राग काफी ॥

चाँचरि चौंप बढ़ावनि होरी बोलनीं। कर लिये डफहि बजावनि कुंजनि डोलनीं ॥ १ ॥ लाल भाँवरे भरत निपुन रस खेल में। कुँवरि अगमनी बढ़ति सखिनु के मेल में ॥ २ ॥ तरु वेलिनु दै ओट हुलसि यों आवहीं। मनु बदरिनु दुरि दामिनि छबि दरसावहीं ॥ ३ ॥ पिचकारिनु की धारैं छुटति बराबरी। तारी दै किलकारति रंग भरा भरीं ॥४॥ लाग बराबरि इत उत बाजे बाजहीं। हो हो सब मुख बानीं छबि सों राजहीं ॥ ५ ॥ छुटति गुलालनि रेल अधिक सोभा बढ़ी। मनु अनुराग गगन काँनन रैंनी चढ़ी ॥६॥ मृगमद मुख लपटाइ नचावति हाथ है। पुनि भरि भाजन रंग लगति उठि साथ है ॥७॥ गावति है स्वर साधि महा धुनि मोहनीं। दमकत है दुति चौका लागति सोंहनीं ॥८॥ टंकारति कर जंत्र सुघर सब भांति है। रविजा तट दरसति मनु सोभा पांति है ॥ ९ ॥ लाल छिरकि फिरि जात महाबल जोर सों। प्यारी जू बंदन भरति आपनी ओर सों ॥१०॥ मुरि

ठाढ़ी भई मैना उड़नि अबीर की । प्रेम न बरन्यौ जाइ बढ़नि छवि भीर की ॥११॥ पियहि भरनि कौं नागरि हुलसी आवहीं । बरषत सोभा घटा अधिक छवि पावहीं ॥ १२ ॥ रंग भरनि उर उरझनि गाढ़े प्रेम की । जै श्री हित हरिलाल विलोकि खचनि नग हेम की ॥ १३ ॥ ५४ ॥

गोस्वामी श्रीरूपलालजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

खेलत फाग सुहाग भरे अनुराग सों । दंपति नित्य किशोर रसिक बड़ भाग सों ॥१॥ ताल मृदंग उपंग पणव ढफ बाजहीं । मुरली धुनि सुनि श्रवन मैंन मन लाजहीं ॥ २ ॥ झुकि झुकि झुंडनि झुंडनि सहचरि गावहीं । लाल लडैती कौ प्रेम छकीं दुलरावहीं ॥३॥* अपने अपने मेलि लिये दुहूँ ओर तैं । रूपे सूर सनमुख कछु कहनि मरोर तैं ॥४॥ चपलासी चमकाति चहूँ दिस भामिनी । घेरि लिये घनश्याम किये दिन जामिनीं ॥५॥

श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

* लाल लड़ैती जू खेलहीं आज होरी कौ त्यौहार हो । फूली संग सखी सबै निरखत प्रेम बिहार हो ॥१॥ प्यारी पहिरें सारी केशरी दियें बेंदी लाल गुलाल हो । मोहे मोहन मोहनी चितवनि नैंन विशाल हो ॥ २ ॥ अद्भुत उड़नि गुलाल की पिचकारी धारि निहारि हो । मानौ घन अनुराग के बरषत आनन्द वारि हो ॥ ३ ॥ सखीनि वृंद मधि राजहीं दोऊ सुंदर सुघर उदार हो । बिच बिच बंशी बाजहीं नूपुर की झनकार हो ॥४॥ लटकनि ललित सुहावनी पद पटकनि करनि सुदेश हो । झटकनि उर हारावली ध्रुव कहि न सकत छवि लेश हो ॥ ५ ॥ ५६ ॥

रंग भरी पिचकारीं छुटति हैं हेम कीं। दुरि मुरि भरति लगावति गारी प्रेम कीं ॥ ६ ॥ सौंधें भरी कमोरी जोरी लावहीं। कुमकुम मेलि फुलेल मुखै लपटावहीं ।७। लियो करपूर पराग झोरी भरि२ तबै। उड़वत अबीर गुलाल कहत हो हो सबै ॥ ८ ॥ झूमक दै दै नाचत दंपति लाड़िले। नेह भरे खिलवार छके चित चाड़िले ॥ ६ ॥ नील पीत पट गांठि जोरि ललिता दई। निरखि हँसति मुख मोरि रूप हित बलि गई ॥ १० ॥ ५५ ॥

राग सारंग—होरी साँवरो ब्रजराज लडैतौ खेलन गहवर आयौ। भूषन बसन बनाइ चाइ चित जसुमति लाड़ लड़ायौ ॥ १ ॥ केशरि नीर भरे कंचन घट कावरि सजि सजि लाये। कर लियैं ढफहि बजावत गावत संग सखा मन भाये ॥ २ ॥ हो हो हो कहि करत कुलाहल नाचत अति रंग भीने। धुनि सुनि श्रवन निकसि नव नागरि ललितादिक संग लीने ॥ ३ ॥ साखि जवादि अरगजा चोवा रंगनि भरीं कमोरी। हेम छरी नग जरी करनि में राजति नवल किशोरी ॥४॥ बाजत ताल पखा-वज आवज जंत्र मंत्र से बोलैं। अबीर उड़ावति गावति गारी कछु कछु घूँघट खोलैं ॥ ५ ॥ आनि मिले दोऊ खोरि सांकरी टोल महा धुनि छाई। रतन जटित पिचकारी छूटति लागत परम सुहाई ॥६॥ कोऊ एक पुहुप पराग आलि भरि घूरि कपूर उड़ावें। पचरंग सुरंग गुलाल झोरि भरि चहुँ दिसि तें घम-ड़ावें ॥ ७ ॥ चपलासी चंचल पिक बैनी गहे साँवरे आई। छल बल करत न छूटन पावत भरैं विविधि रंग ल्याई ॥८॥ आंखि आंजि मुख मांड़ि लाल कौं भेष सखी कौ दीनौं। तनसुख की सारी मनुहारी बनवारी रंग भीनौ ॥६॥ कोई इक बदन विलोकि

कुँवर कौ कहति कछू मुसिकाई। फगुवा मांगि पीत पट मुरली सहचरि लई छुड़ाई ॥ १०॥ घूँघट दै ल्याई प्यारी तन मन की जानन हारी। झूमक देति नचावति गावति राधे जू दै दै तारी ॥ ११ ॥ ललिता दृष्टि बचाइ दुहुँन की गांठि दई हँसि जोरी। चाचरि देति बजावति दुंदुभि कहत सबै हो होरी ॥१२॥ लखे लाल वृषभान नंदिनी कछुक सकुच मुसिकानी। जै श्रीरूपलाल हित चित अनुरागी बड़ भागी मन मानी ॥ १३ ॥ ५७ ॥

राग धनाश्री--अलक लड़ी रिझवारि प्रीतम सों खेलें। झूमि झूमि सहचरि संग गावति तान तरंग नवेलें ॥ १ ॥ रंग भरि भरि पिचकारी मोहन तकि२ हित सों मेलें। दुरि मुरि ओट देति पट बदननि मैंन सैंन कों पेलें ॥२॥ झक झोरा झकझोरी करवर टूटत हार हमेलें। जै श्री रूपलाल हित आनंद वेली भेली अलि अलबेलें ॥ ३ ॥ ५८ ॥

राग विभास--विहारिनि लाड़िली हो प्रीतम प्रेम पगी। हिय अनुराग सुहाग झलमलें सब निस आजु जगी॥ फागु खेल रंग रह्यौ लह्यौ सुख प्रेमी प्रेम खगी जै श्री रूपलाल हित ललित त्रभंगी नेंननि रहित लगी ॥ ५९ ॥

राग रामकली--छबीली नागरी हो धन तेरो परम सुहाग। तेरेई रंग रंग्यौ मन मोहन मानत है बड़ भाग॥ आज फवी होरी प्रीतम संग लखियतु है अनुराग। जय श्री रूपलाल हित रूप छके दृग उपमा को नहि लाग ॥ ६० ॥

गो० श्री किशोरीलालजी महाराज ॥राग जोगिया आसावरी ॥११ नित्य होय

होरी रंग रंगीली आई। खेलेंगी ब्रज मोहन सोहन सौं अति ही भाई सुनहु सहेली ललित आदि सब रंगनि घोरौ बहू

चाइनि चाई। जै श्री किशोरीलाल हित सौं भरि कैं करि हौं अपनी ही दाई ॥ ६१ ॥

रंग रंगीले दोऊ नव निकुँज मधि प्रेम रंग भरे खेलत होरियाँ हो हो हो। स्याम बरन सखीं स्याम संग भई गोरी के संग सहेली सब गोरियाँ हो हो हो ॥ फैंटनि भरैं गुलाल विविधि रंग तकि तकि मेलत नवल किशोरियाँ हो हो हो। जै श्री किशोरीलाल हित सौं गहि आनौ मुख माँड्यौ करि करि बर जोरियाँ हो हो हो ॥ ६२ ॥

खेलत होरी सुख सने हो बने वर वानिक राधालाल ॥टेक॥ भाजत भरत ढरत गज वर ज्यों बोलत अमृत बैंन। चलि चलि जात कुंज वर वीथिनु विपुल बढ़ावति मैंन ॥ १ ॥ लै लै करनि गुलाल परस्पर सनमुख आवत धाइ। दुरि मुरि भेंटत वदन लपेटत करि करि दाइ उपाइ ॥ २ ॥ सींचत रंगनि अरि अरि अंगनि कोविद केलि कलानि। दै दै ओट ललित पट आँई घेरे हरि अवलानि ॥ ३ ॥ जब हसि भाजत अति छवि राजति छिपत सघन बन जाइ। लगि लगि पाछें सींचत आछें छल बल जात छुड़ाइ ॥ ४ ॥ रवकत चरन धरत अवनी पर जोवन जोर मरोर। ताकत हरि दिस रंग भरनि मिस हरति हियौ दृग कोर ॥ ५ ॥ विलुलित उर वर दाम जलज मणि प्रगट जनावत हेत। उड़गन सभा चंद ढिंग मानों उठत जुहारहि देत ॥ ६ ॥ आँनन ओभा कौतिक सोभा होरी गावत स्याम। ओलिन भरि भरि कर वर धरि धरि-वंदन डारति भांम ॥ ७ ॥ विहरत बन वन आनन्द मन मन होत पिचक रंग लेत। सुगतिनु छूटत तन तन लूटत मोहन केलि निकेत ॥ ८ ॥ प्रेम वह वहे रंग गह

गहेक्रीड़त वन जुग राज। भई रंग कीच बीच हरि राधा चहुँ दिस सखिनु समाज ॥ ६ ॥ वलि हित रूप मिथुन सुख विलसत यह रितु सरस वसंत। जै श्री किशोरीलाल हित तलप कुशम रचि रमति दुलहिनी कंत ॥ १० ॥ ६३ ॥

गोस्वामी श्री हितलाल जी महाराज—अहो आज होरी झुरमुट रंग महल में चलत पिचक रंगनि भरी। अतर गुलावनि ढोरत सीसी अबीर गुलालनि पोटरी॥ बाजे विविध बजत गहरी धुनि तान मदन रस विस्तरी। जै श्री हित लाल वदनि सुख शोभा निरखि प्रशंसित सहचरी॥ ६४ ॥

गो० रसिकानंदलालजी महाराज—श्रीराधाकांत रस होरी खेलें। रंगनि भरति परस्पर चौंपनि बूका बंदन हसि हसि मेलें ॥ निर्त्त करत कहैं हो हो थेई थेई जंत्र वजावति ०है सखी मेलें। जैश्री रसिकानंद हित रूप किशोरीलाल भुजाभरि उर उरझेलें ॥६५॥

गोस्वामी श्री कृपासिंधु जी महाराज कृत—श्री राधा कांत खेलत रस होरी। चरचत अतर अरगजा हँसि हसि मुख लपटावत वंदन रोरी॥ हो हो कहत देत करतारी गावत तान मदन रंग बोरी। सखिनु मनोरथ भरत रसिक जै श्री कृपा सिंधु हित लाल किशोरी ॥ ६६ ॥

गोस्वामी श्री मकरंद लाल जी महाराज कृत—होरी खेलत हैं रस रासि दोऊ रंग भरे। उमगि उमगि अंग वरषहीं छबि बाढ़ति अतिसै प्यास ॥ दोऊ रंग० ॥टेक॥१॥ सघन वार धुरवा अलक दसन बीज झलकांति। इंद्र धनुष श्रीमंत मनों मुक्ता बलि बग पांति ॥ २ ॥ श्रवत सुधा आनन ससी बिकसि कंज मृदु हाँस। प्रीतम दृष्टि चकोर भृंग मन छिन छिन होत हुलास ३ हाव

भाव सौंधौं भरति चितवनि छिरकनि रंग । भूषन धुनि बाजे बजत मृदु निर्त्तत अंग सुधंग ॥४॥ लखि विवि मुख सुखमां सरस निज सखी नैंननि हेत। जै श्री हित मकरंद सुख निरखहीं त्रन तोरत आसिस देत ॥ ५ ॥ ६७ ॥

छैल छबीली लाडिली, रंग होरी खेलैं। छैल छबीलौ लाल नव रंग भीने दोऊ होरी खेलैं ॥ छैल छबीली सहचरी, रंग होरी खेलैं। करैं छैल छबीले ख्याल, नव रंग भीनें दोऊ होरी खेलैं ॥ १ ॥ अंग अंग नवसत सजें ॥ रंग० ॥ अनुपम सौंज अपार ॥नव०॥ कुंज महल आनन्द रस कौ ॥ रंग० ॥ रस सुगंध उद्गार ॥नव०॥ २ ॥ दुहु दिसि सजि सनमुख भये ॥ रंग० ॥ रंग भरे भाजन हाथ ॥नव०॥ प्यारी के संग गौर अलि ॥रंग०॥ साँवरि पिय के साथ ॥ नव० ॥३॥ पचरंग वंदन घुमड़ में ॥ रंग० ॥ उम्फलि रूप रंग जोति ॥ नव० ॥ पिय पिचकारी छिरकही ॥रंग०॥ इत कटिल कटाच्छन होति ॥नव०॥४॥ रमकि झमकि भरि भरि भजें ॥ रंग० ॥ लपटत रपटत जोर ॥ नव० ॥ हार वलय कृष कटि डुलैं ॥ रंग० ॥ मुसकाति मृदु मुख मोर ॥नव० ॥५॥ मद मंथर गति सुलप सौं ॥ रंग० ॥ निर्त्तत करत कलोल ॥नव०॥ अलक झलक मुख पर रुरैं ॥ रंग० ॥ उरज प्रकाश अलोल ॥नव०॥ ६ ॥ जनु कनक कमल मंडल खिले ॥ रंग ॥ नील घटा के बीच ॥नव०॥ लह लही दामिनि रस भरी ॥रंग०॥ पिय तमाल रंग सींच ॥ नव० ॥७॥ भीज वसन तन लसन की ॥ रंग० ॥ श्रवित माधुरी धार ॥नव०॥ निरखि लाल विथकित भये ॥ रंग० ॥ रही न अंग सँभार ॥ नव० ॥ ८ ॥ यह गति देखत लाडिली ॥ रंग० ॥ नेंन नीर भरे आइ ॥ नव० निज

सहचरि आछौ भरै ।। रंग० ।। दोऊ लिये उर लाइ ।।नव०।।६।। पुष्प लता सज्जा भई ।। रंग० ।। रचकि वैठारे धाइ ।। नव० ।। निज अलि मुख सुषमा लखैं ।। रंग० ।। नवल नेह हुलसाइ ।।नव०।।१०।। वास सुगंध करन धरैं ।। रंग० ।। पोंछत वंदन रेख ।। नव० ।। भौंह मूल नथ मुख मांग ते ।।रंग०।। चिबुक ग्रीव रही देखि ।।नव०।। ११।। नैन निहोरि जनाइ पिय ।। रंग० ।। अंग टहल सरसाइ ।। नव० ।। निज प्रतिविम्ब उरोजन में ।। रंग० ।। भृंग मद भ्रम दरसाइ ।।नव०।।१२।। पिय रुचि लखि आज्ञा दई ।।रंग०।। हुलसि विलसि सुख पाइ ।।नव०।। मुद्रित कनक सरोजन पर ।। रंग०।। नील कंज मिले आइ ।। नव० ।। १३ ।। परसि पुलकि सात्त्विक भये ।।रंग०।। डीठ दृष्टि इहि भाइ ।।नव०।। रूप सरोवर में मनौ ।। रंग० ।। मीन चपल ठहराइ ।। नव० ।। १४ ।। करुणा रस सागर प्रिया ।। रंग० ।। दुहु भुज लिये उठाइ ।।नव०।। गहि कपोल चुम्बन करैं ।। रंग० ।। नैन नैन रही लाइ ।।नव०।। ।।१५।। उभै ज दुहु ससि मनौ ।। रंग० ।। करत नवीन मिलाप ।।नव०।। रस बस व्है जकि थकि रहे ।।रंग०।। भूषण रव आलाप ।। नव० ।। १६ ।। दुहुँ कर थांमे निज सखी ।। रंग० ।। राखि उरज उर बीच ।।नव०।। सेज हेज पौढाइ कैं ।। रंग० ।। लालति अंघ्रि सुचारु ।।नव०।।१७।। उर उरोज प्रतिविम्ब लसैं ।।रंग०।। धरे कनक नील मणि हार ।। नव० ।।सेज सदन रति रंग भर्यौ ।। रंग० ।। रंध्र जाल झलकाइ ।। नव० ।। १८ ।। निज परिकर निज मेल रही ।। रंग० ।। सुख संपति निधि पाइ ।। नव० ।। महा मधुर रस स्वादकौं ।। रंग० ।। क्यौं करि पावै पार ।।नव० ।।१९।। श्री व्यासनन्द पद किरण ते । रंग० यह कीनों निरधार

नव० भाव भावना हिय बसै ॥ रंग० ॥ रोम रोम रस पूरि ॥ नव० ॥ जै श्री हित मकरन्द सुख श्रवत ही ॥ रंग० ॥ मिष्ट सजीवन मूरि ॥ नव० ॥ २० ॥ ६४ ॥

श्री व्यासजी महाराज कृत ॥ राग भैरव ॥

आज भोर ही नन्द भवन ब्रज नारिनु धूम मचाई । बाँह पकरि कैं द्वार पौर में जसुमति भली नचाई ॥ १ ॥ हरि जागे हलधर हू जागे नन्द महरि हँसि हेरे । ठाड़े मणि अँगना में मोहन सखा नाम लै टेरे ॥२॥ द्वार पुकार सुनत नहीं कोऊ तब हरि चढ़े अटारी । आवौ रे तुम सखा संग के घर घेर्यौ ब्रजनारी ॥ ३ ॥ श्रवन सुनत सबही उठि धाये तजि तजि अपने धामा । कृष्ण तोष मधुमंगल माधौ सुबल सुबाहु श्रीदामा ॥४॥ आवत सखा स्याम के देखे सैंन जु दई किशोरी । ललितादिक चन्द्रावलि सखियां सबै सहचरी दौरी ॥५॥ जाओ कहाँ हरि आजु परे बस भजि न सकौ नंदलाला । फगुआ में हम मुरली लें हैं पीत वसन वनमाला ॥ ६ ॥ केशरि ढोरि सीस तें दीनी मुख माड्यौ प्यारी राधा । व्यास स्वामिनी विहँसि मिली तब मन वांछित फल लाधा ॥ ७ ॥ ६६ ॥

खेलत फाग फिरत दोऊ फूले । श्यामा श्याम काम बस नाचत गावत सुरत हिंडोरें झूले ॥१॥ वृंदावन की सम्पति दोऊ नागरि नट बंसीवट मूले । चोवा चंदन वंदन छिरकत छींट छवीले गात दुकूले ॥ २ ॥ कोलाहल सुनि गोपी धाई विसरे गृह पति तोक भरूले । व्यास स्वामिन की छबि निरखत नैंन कुरंग रहे तकि भूले ॥ ३ ॥ ७० ॥

श्री नागरीदासजी महाराज—एरी अपने अपने संग करि यूथ

युगल नव बाल .. टेक .. एरी दुहुँ दिसि दुंदुभि बाजत मृदंग मुरज डफ ताल । एरी रुंज भेरि सहनाई महुवरि मुरली रसाल ॥ १ ॥ एरी भरि पिचकैं सनमुख चलैं चलति मत्त गज चाल । एरी डिगत चरन नूपुर धुनि कृश कटि किंकिनि जाल ॥ २ ॥ एरी कंचन तन नीलांबर कुमकुम रंगित गुलाल । एरी मध्य जराइ की बेंदी मृगमद तिलक सुभाल ॥ ३ ॥ एरी करुनाइत कजरारे लोचन चपल विशाल । एरी बिहसत स्याम दसन दुति अरुन अधर प्रतिपाल ॥४॥ एरी चिबुक चँखौड़ा मोहन कठिया कंठ मणि माल । एरी कौतिक रूप निहारत औसर विथक्यौ हाल ॥५॥ एरी धरिबौ भरिबौ भूल्यौ विवस कुंवर तिहि काल । एरी लै पाइनि तर नाऐ पुलकित प्रेम प्रवाल ॥ ६ ॥ एरी मुख मधु प्याइ अंक भरि प्यारी परम कृपाल । एरी भुज ग्रीवा गहि लटकति जोरी (जनु) जुगल मराल ॥ ७ ॥ एरी सेज सदन सुकुवारी मदन मते मृदु पाल । एरी अगनित गुन गन उपजत रंग अनेक उछाल ॥ ८ ॥ एरी चतुर बाहु कंठनि गसि मनु मिलि उरग मृनाल । नागरीदास हेम की बल्ली अरुभी स्याम तमाल ॥ ६ ॥ ७१ ॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत ॥ राग राइसौ ॥

चलहु सखी मिलि देखहिं खेलत जुगल बसंत । फूल्यौ श्री वृंदावन हेत राधिका कंत ॥ १ ॥ सौरभ सरस सनें हिये गावत कोकिल कीर । अति ही रुचिर बहत सुख सेवत त्रिविध समीर ॥ २ ॥ श्री यमुना तट मंडित मंडल स्यामा स्याम ।रहसि रची सुख सागर नागर मन अभिराम ॥ ३ ॥ जूथ जूथ जुवती संग लीनी सौंज सँवारि एकनि कर डफ तार मृदंग मिले सहनारि

अमृत कुंडली मान ॥ ५ ॥ एकनि कर सुर मंडल सुंदर शब्द सुहाइ एक देत करतारी एक उठी हसि गाइ ॥६॥ मोहन बंशी पूरी दूरि दूरि धुनि जात । प्यारी प्रेम गुनै मुख चंग रंगीली भांति ॥ ७ ॥ बाजे सरस बजे अति खेल कुलाहल होत । भरत रंगनि रंग भीजे लेत परस्पर पोत ॥ ८ ॥ नागर नेह निहारयौ नैंननि कोर कटाच्छि । प्रीतम चित्त हरयौ हरि देत नहीं मृग आच्छि ॥ ९ ॥ यों पिय रसिक भयौ बस फिरत संग ही संग । ज्यौं तन मन दै मोह्यौ अति कल नाद कुरंग ॥ १० ॥ तबहि प्रिया छल बल कै दसा पलटि पति कीन । बढ़ी चौंप चाइ अति अंग अंग अनंग प्रवीन ॥ ११ ॥ श्री वृषभानु सुता नंद नंदन बनी वर केलि । ज्यौं करनी गज माते क्रीड़त आनंद फेलि १२ राजत आज बनें पिय प्यारी मंगल भांति । ज्यौं तरु तरुन तमालहिं हेम लता लपटाति ॥ १३ ॥ श्री हरिवंश कृपा बल देखि कली दिन फूलि । मन क्रम बचन चित्त दै देह दसा यौं भूलि ॥ १४ ॥ ७२ ॥

राग भैरव—खेलत जुगल किशोर फागु रस भीने हो ॥ नहिं जानत निसि भोर प्रेम रस भीने हो ॥ सुनहु सहेली श्रवन दै रस भीने हो ॥ ये दोऊ चितचोर प्रेम रस भीने हो ॥१॥ श्रीवृन्दावन रस बीथियाँ ॥रस०॥ करहिं कुँवर कल केलि ॥ प्रेम० ॥ मानहु विटप तमाल सों ॥ रस० ॥ अरुझी कंचन बेलि ॥ प्रेम० ॥२॥ रितु बसंत बन रंग मग्यौ ॥रस०॥ नव दल फल बहु भीर ॥प्रेम०॥ सौरभ सरस सनेह सो ॥ रस० ॥ माते अलि पिक कीर प्रेम०

॥ प्रेम० ॥ त्रिविध पवन वर बीजना ॥ रस० ॥ सेवत रुचि उप-जाइ ॥ प्रेम० ॥ ४ ॥ ताल पखावज़ डफ बजैं ॥ रस० ॥ बिच बिच मुरली घोर ॥ प्रेम० ॥ खेलत पिय प्यारी लसैं ॥ रस० ॥ आनंद बढ्यौ न थोर ॥ प्रेम० ॥ ५ ॥ नव नव रंगनि सों पगे ॥ रस० ॥ मिथुन मनोज बिहार ॥ प्रेम० ॥ यह अवसर लखि सहचरी ॥रस०॥ करत मिलापी सार ॥ प्रेम० ॥६॥ नव निकुंज मंदिर रच्यौ ॥रस०॥ सखी चतुर वर यूथ ॥प्रेम०॥ मोद विनोद अलापहीं ॥रस०॥ मनहु मदन कल दूत ॥प्रेम०॥७॥ किशलय दल सज्या सची ॥ रस० ॥ विविध वस्तु कपूर ॥ प्रेम० ॥ अली छलनि बल लै चलीं ॥ रस० ॥ रति रन रूपे सूर ॥प्रेम०॥८॥ श्री हरिवंश समाज कें ॥ रस० ॥ अंग अनंगी फौज ॥ प्रेम० ॥ श्री राधा पिय विलसहीं ॥ रस० ॥ उपजति माती मौज ॥प्रेम० ॥ ६ ॥ ललितादिक अविलोकहीं ॥ रस० ॥ सोई कल्यान यश गाइ ॥प्रेम०॥ पलु पलु सुख सागर बढ्यौ ॥ रस० ॥ कह्यौ कहाँ लौं जाइ ॥ प्रेम रस भीने हो ॥ १० ॥ ७२ ॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत ॥ राग आसावरी ॥

देखि सखी नव कुंज राधा लाल बनैं री। रँग मगे अंगनि चीर प्रेम सुरंग सनै री ॥ १ ॥ मोर चंद्रिका सीस बैंनी ललित गुही री। वरन वरन बहु रंग मेंदिनी चंप जुही री ॥ २ ॥ कुम कुम तिलक सुचारु मृग मद आड़ करी री। वेंदी मध्य सुदेस मोतिनु मांग भरी री ॥ ३ ॥ कुंडल कल ताटंक गंडनि झलक सुहाई। वरषत मनो छवि रंग अधरनि की अरुनाई ॥४॥ नासा जलज अनूप वेशरि सुभग बनी री। चंचल नैंन विशाल अंजन रेख ठनी री ५ करि षोडश सिंगार सखियनि अधिक बनाए

भाँति भाँति के लाड़ लाड़िली लाल लड़ाए ॥६॥ खेलत दोऊ जन फाग अति अनुराग भरे री । करत चारु कल गान मानस मृगनि हरे री ॥७॥ सोभित सखियनि बृन्द मध्य किशोर किशोरी । छिरकत कुम कुम नीर हसि हसि पिय दिसि गोरी ॥८॥ बाजत मधुर मृदंग किंकिनि रुचिर सुनी री । ताल वीन मुहुचंग बंशी सरस धुनी री ॥९॥ कंचन डफ लियें हाथ बोलत हो हो होरी । डोलत भरे आनन्द दोऊ जन बाँहाँ जोरी ॥ १० ॥ लटकत पहुँची चारु पटकत ज्यौं ज्यौं तारी । भीनें अति अनुराग प्रीतम नवल प्रिया री ॥ ११ ॥ यह सुख अद्भुत देखि चित्त न नैकु टरै री । हित ध्रुव आनन्द वारि नैंननि तें जु ढरै री ॥१२॥७४॥

राग गौरी–खेलत फाग अधिक छवि पावैं । नवल किशोर किशोरी रंग भरे सुरंग सुगंध गुलाल उड़ावैं ॥ १ ॥ ताल मृदंग हुड़क डफ बीना सुघर सखी चहुँ ओर बजावैं । लटकनि झटकनि पटकनि करननि बचननि हो हो होरी गावैं ॥२॥ चंदन कुमकुम मृग मद सौं मथि आपुन में छिरकैं छिरकावैं । हित ध्रुव ज्यौं ज्यौं प्यारी की रुचि त्यौं त्यौं हित सौं लाड़ लड़ावैं ॥३॥७५॥

राग गौरी–खेलत लाड़िली लाल होरी । मृगमद चंदन वंदन डारत अरु सुरंग कुमकुम रस घोरी ॥ १ ॥ डफ मृदंग बीना मिलि बाजत बिच सुदेश बंशी रव थोरी । चहुँ दिसि सखियनि मंडल निर्त्तत बिच लटकत बाहौं जोरी ॥ २ ॥ अलक हार छूटे पट भूषन अरु छूटि गई कवरी की डोरी । भरि लई अंक रसिक मन मोहन श्रमित भई कछू नवल किशोरी ॥ ३ ॥ परम प्रवीन अवधि निधि प्यार की करत पवन अंचल निज छोरी । हित ध्रुव प्रेम सिंधु रस बाढ़्यौ सहज ही मैंड़ नेम की तोरी ।४ ७६

राग बिहागरौ—रंग भरे राधा लाल अति रस फूले । खेलत फिरत होरी रविजा के कूले ॥१॥ गोरी गोरी सखी जेती तिन मधि गोरी । सांवरी सहेलीं भईं सांवरे की ओरी ॥ २ ॥ चंदन अगरसत कुमकुमा कौ नीरा । सुरंग सुगंध बहु भांतिनु अबीरा ॥३॥ भाजन विविधि रंग भरि भरि लीनें । छिरकैं घातनि तकि रस में प्रवीने ॥४॥ सुरंगित भए सो हैं अंगनि के चीरा । रंगनि की बूँदें बनीं सुभग सरीरा ॥५॥ हुड़क गजक बीना मृदंग सु साजैं । किंकिनी नूपुर ध्वनि एक स्वर बाजैं ॥६॥ निर्त्तत सुधंग अंग गति न्यारी न्यारी । गोरी औ सांवरी सखी बदि वारी वारी ॥ ७ ॥ सरस अलग लाग लेत निरधारीं । जीती जै हैं प्यारी तन सखी स्याम हारीं ॥ ८ ॥ उड्यौ है गुलाल बहु रह्यौ नभ छाई । छल सौं चतुर सखी लालहिं गहि लाई ॥६॥ आगें आनि ठाड़े कीने रहे ग्रीवा नाई । देखत लड़ैती ऐसी भांति मुसिकाई ॥ १० ॥ वंशी पीत पट छीन चूनरी उढ़ाई । नैंननि अंजनि दीनों नथ पहिराई ॥ ११ ॥ हित ध्रुव अंक भरि लीने हैं किशोरी । हित सौं अधर रस देति मुख जोरी ॥१२॥७७॥

राग गौरी-प्रथम नवल वृंदावन गाऊं अति ही रसाल । रंग भीने जहाँ खेलत राधा वल्लभ लाल ॥ १ ॥ नवल प्रिया मन उपज्यौ अति ही आनंद मोद । कछुक सखी न्यारी कै दीनी प्रीतम कोद ॥२॥ नवल बिनोद रच्यौ है नवल तरणिजा कूल । जान फाग रितु बाढ़ी सबहिनु के मन फूल ॥३॥ मृगमद चंदन कुमकुम बंदन अति ही सुरंग । कनक कलशियनि भरि भरि लीने है बहु रंग ॥ ४ ॥ प्रियहि भरन हित नागर आए निकट ही धाय । सखियनि अंचल ओटि कैं लीनी कुंवरि बचाय ५

चहुँ दिशि तें तब सबहिनु दियौ है गुलाल उड़ाय। फिरि पाछें व्है जब गहे कुँवर सिर नाय ॥ ६ ॥ सखी एक पिचकारी आनि प्रिया कर दीन। भरे लाल बहु भांतिनु मन भायौ सोइ कीन ॥७॥ बसन भीज लपटाने सोभा बढ़ी सुभाय। मनहुँ रूप रस सिंधु तें निकसे हैं दोऊ न्हाय ॥८॥ तारी तार डफ किन्नरी स्वर मंदर मुहुचंग। एक ही स्वर बाजें सबै बीना मधुर मृदंग ॥ ६ ॥ नवल नवल गति निर्त्तत सहचरी सरस सुधंग। बिच लटकत दोऊ लाड़िले रंग भरे अँग अंग ॥ १० ॥ अति सुदेश पहुँचिनु के लटकन रहे सखि सोहि। ऐसी को जु न मोहै प्राननि यह छवि जोहि ॥ ११ ॥ अति अभूत रस बाढ्यौ करत हासि परिहासि। हित ध्रुव नवल रँगीले दंपति सुख की रासि।१२।७८

श्री नन्ददासजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

निकसे हैं मोहनलाल खेलन ब्रज में फाग री॥ रंग हो हो होरियाँ।ध्रु०।घमड्यौ है अबीर गुलाल मनो उनयौ अनुराग री। रंग हो हो होरियाँ ॥ १ ॥ सोभित मदन गुपाल कटि बाँधे पटु सोहनौं। काछिनि काछे लाल लाल निचोइ रँगी मनौं ॥ २ ॥ मोर मुकट छबि देत ऐन मैंन मनौं पेखनौं।सबही कौ हियौ हरि लेत बंक दृगनि हँसि देखनौं ॥ ३ ॥ इति आई ब्रजबाल मृग नैंनी गज गामिनीं। छेके हैं मदन गोपाल घन घेरयौ जनो दामिनीं ॥ ४ ॥ छिरकत पिय नँदनंद तिय पट ओट बचावहीं। मनों घन पून्यों चंद दुरहि निकसि पुनि आवहीं ॥ ५ ॥ बने हैं तियन के अंग छिरकि छींट छवि हेम की। मनो फूली रँग रंग ललित लता गन प्रेम की ॥ ६ ॥ बढ्यौ है परस्पर रंग उमगि उमगि रंग भरनि में। निरखि भई गति पंग पीताम्बर फरहरनि

में ॥७॥ जब गहि रंगनि भरे मोहन मूरति साँवरे। हर हर हर हँसि परे मुनि मन व्है गये बावरे ॥८॥ भई सरसुती मति बौर और खेल कहाँ लौं कहों। रंग भीने साँवल गौर नंददास के हिये रहों ॥ ९ ॥ ७९ ॥

राग धनाश्री—अरी चलि वेगि छबीली हरि सों खेलें जांहि ॥ ध्रु० ॥ निकस्यो है मोहन साँवरो बलि फाग खेलन ब्रज माँझ। घमड्यो है अबीर गुलाल गगन बिच मानों माई फूली है साँझ ॥१॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ कही न परत कछु बात। रँग रंग भीनें ग्वाल बाल संग मानों माई मदन बरात ॥ २ ॥ आई हैं इतते जुरि सुन्दरि सब करि करि अपनो ठाट। खेलत नाहिं कोऊ कान्ह कुँवर सों चाहत तुम्हरी बाट ॥३॥ बिनु राजा दल कौन काज बलि उठिये छांड़िये ऐंड़। उमड्यो है निधि ज्यों नवल नन्द को रुकत रावरी मैंड़ ॥४॥ उठी हैं विहसि वृषभानु कुँवरि वर कर पिचकारी लेत। सहि न सकत कोऊ महा सुभट लौं सुनत समर संकेत ॥ ५ ॥ आई है रूप अगाधा राधा छबि बरनी नाहिं जाइ। नवल किशोर अमल चंदहि मनों मिली है चन्द्रिका आइ ॥ ६ ॥ खेल मच्यो ब्रज बीथिनि माँहियाँ बरषत प्रेमानन्द। दमकत भाल गुलाल भरे मनों बंदन भुरके चन्द ।७। और रंग पिचकारिनि छवि सों छिरकत हरि तन तीय। कुटिल कटाच्छि प्रेम रंग भरि भरि भरति पीय को हीय ॥ ८ ॥ दुरि मुरि भरन बचावनि छवि सों बाढ्यो है रंग अपार। मैंन मुनी सी बोलति डोलति पग नूपुर झनकार ॥ ९ ॥ सिव सनकादिक सारद नारद बोलत जै जै जै। नंददास अपने ठाकुर की जियो बलैया लै ॥ १० ॥ ८० ॥

राग परज—आजु बनि ठनि ब्रज खेलन फाग निकस्यौ नन्द दुलारो। फब्यौ है ललित भाल लाल जटित लाल टिपारौ ॥ १ ॥ बड़ेई बंक विशाल नैंन छबि भरे इतराहीं। बने हैं मंजुल मोर के चन्दा चलत देखत छाँहीं ॥ २ ॥ उत बनी ब्रज नव किशोरी गोरी रूप भोरीं। बोरी हैं प्रेम रंग में मानौं एक ही डार की तोरी ॥ ३ ॥ ब्रज की बाल लै गुलाल मोहन लाल छायौ। मनहु नील घन के ऊपर अरुन अंबुद आयौ ॥ ४ ॥ ताही धुंधरी मध्य मत्त भ्रमर भ्रमत ऐसें। बनी है छबि विशाल प्रेम जाल गोलक जैसें ॥ ५ ॥ बढ़यौ है जल जंत्रनि खेल छूटी है रंग की धारैं। जनु धनुर्धरि शरण लरत धार सौं धार मारैं ॥ ६ ॥ और कहाँ लगि कहिये खेल परम रस की मूली। थके हैं नारद सारद निरखि शंभू समाधि भूली ॥ ७ ॥ जिहि हियें हरि चरित्र अमृत सिंधु सौं रति मानी। नन्ददास ताहि मुक्ति नौंन कौ सौ पानी ॥ ८ ॥ ८१ ॥

राग विहागरौ—चली है कुँवरि राधे खेलन होरी। पंकज पराग वर लीयें भरि झोरी ॥१॥ रँग (रँग) रली सँग सोहैं गन अलीं। सफल करी हैं सब गोकुल की गलीं ॥ २ ॥ बाजें डफ ताल मृदंग झांझि सुहाए। मदन सदन मानों मंगल बधाए ॥ ३ ॥ गावति सरस सुर ऐसी मीठी धुनि। हरि जू जारयौ मनोज जीयौ जाइ सुनि ॥ ४ ॥ सोहैं मुख कछु कछु अंबर दुराए। आधे आधे विधु मानों बदरनि छाए ॥ ५ ॥ अबीर धूंधरि मधि राजैं रंग-भीनी। मानौं दीठि डर मार सार ढापि लीनी ॥ ६ ॥ उततें आये मोहन भीनें रंग रंगा चरन लुठत

भारी । उत हरि इत वृषभांन की दुलारी ॥ ८ ॥ छिरकी छबीले आंनि प्यारी तीय गन । रंगनि बरषै मानौं नूतन सघन ॥ ६ ॥ छूटें पिचकारी रंग भरी सोभा भरी । छवि सौं छूटति मानौं मेंन फुलझरी ॥ १० ॥ तियनि के अंग रंग कन गन सोहैं । कंचन जराइ जरीं छरीं छबि को है ॥ ११ ॥ इततें रंग की धार साँवरे पै मेली । अबहीं उलही मानौं नव प्रेम बेली ॥ १२ ॥ अबीर गुलाल मिलि मंडित गगन । मानौं अबहीं रवि चाहत उगन ॥ १३ ॥ हसति हसति उत चन्द्रावलि गई । लाल सों कहति हौं तिहारी दिसि भई ॥ १४ ॥ बाँसुरी छिडाइ लीनी छलकें किसोरी । तारी दै दै हसें सब कहैं हो हो होरी ॥ १५ ॥ राधा जू अधर धरी बाँसुरी विराजी । औसी कबहूँ साँवरे पिय पै न बाजी ॥ १६ ॥ वंसी देंन मिस प्यारी राधिका बुलाए । हसत हसत लाल इकले ही आए ॥ १७ ॥ कामिनी के वृन्द स्याम घेर लीनें औसें । दामिनी निकरि मानौं नव घन जैसें ॥ १८ ॥ साँवरे के अंग संग सोहैं तिय औसी । सिंगार कलप तरु छवि लता जैसी ॥ १६ ॥ नंददास और सुख कहाँ लौं बखानौं । विधि हूँ कह्यौ है सोई जानौं सोई जानौं ॥ २० ॥ ८२ ॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत ॥ राग गौरी॥

होहो खेलैं होरी नागर नवल किसोरी ॥ ध्रुव ॥ वृन्दावन घन जमुना तीरे । सेज सुभग थल कुंज कुटीरे ॥ १ ॥ उमगि उमगि अंग भरन विराजैं । नूपुर किंकिन बाजे बाजैं ॥ २ ॥ चलत कटाच्छि पिचक छवि पावनि । भरि सनमुख पिय नैंन सिरावनि ॥ ३ ॥ अदभुत खेल महा सुख सानैं । केलि कलोल न परत बखानैं ॥ ४ ॥ स्वेदविंदु रंग भीजे अंगा सखी स्लिता-

वति कला अनंगा ॥ ५ ॥ नख छत अरुन गुलाल बने कन। राजत श्री गोरे साँवल तन ॥६॥ अंग अंग आनंद भरे अति। हियें भरे दोऊ रति संपति ॥७॥ कंज भरि जु गतिनि उजियारी। रूप भरे लोचन सहचारी ॥ ८ ॥ पीक कपोल भरे छबि छाजें। अधर भरे अंजन सौं राजैं ॥ ९ ॥ उरज कनक घट भरे मदन रंग। भरत ललन कौं उर गाढ़ें संग ॥१०॥ ऐसी भरनि सुख बढ्यौं भारी। रोम रोम रस भरे पिय प्यारी ॥ ११ ॥ इहि विधि खेलि सुकेलि भरे सुख। प्रेम विवस जोरें मुख सौं मुख ॥१२॥ संतत ये रस भरे रसिक घन। दामोदर हित बसौ सदा मन ॥१३॥८३॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥

रूप बावरो नंद महर कौ बहुरि बन्यौ होरी को छैल। रोकत टोकत घूँघट खोलत भरि पिचकारी तकत उरोजनि गोकुल री माई चलत न गैल ॥ छल सो मसल गुलाल मुठी भरि निरखि रहत पुनि लाज न आवत हियें भरत होरी के फैल। कहिये कहा और सहचरि सुख मदन मवास रहत ब्रज जाके अंग अंग जु कटीली सैल ॥ ८४ ॥

नैननि जिन भरहु गुलाल, रसिक मणि लाड़िली। यहै कसक जिय में धरहु तुम्हैं देखें हीं जीवत लाल, रसिक मणि लाड़िली ॥ १ ॥ पलक ओट अकुलात है रसिया पिय मदन गुपाल ॥ रसिक० ॥ केशरि ढोरौ शीश तें तासौं यहै रंगीलो ख्याल ॥ रसिक० ॥२॥ अंजन आंजो नेंन सों रोरी मुख मसरि गुलाल ॥ रसिक० ॥ उर लैं लपटावहु अरगजा दरसावहु रीझि विशाल ॥रसिक०॥३॥ हो कृपाल कीरति सुता समझत सबही हित हाल ॥ रसिक० ॥ कुँवर कमल ते कोमलौ करि राखौ उर

पर माल ॥ रसिक० ॥४॥ देखि कटीलौ होति हो तुम हो चलि मद गज चाल ॥रसिक०॥ वारी सखी सुख दुहुँनि कैं रति (में) सुजस झलमल्यौ भाल ॥ रसिक० ॥ ५ ॥८५॥

राग काफी—आजु रंग भीने मोहनलाल हो । घेरि लिये वृषभानु नगर में रच्यौ रंगीलौ ख्याल हो ॥ १ ॥ अति रस भरे श्याम घन सुंदर दामिनि सी नव वाल हो । मुख मौंड़ति आँजति अंखियाँ मृगमद लपटावति गाल हो ॥२॥ केसरि चन्दन चरचि अंग पचरंगनि भरति गुलाल हो । कसि भुज बीच उठाइ लेति उर लपट करत हिय माल हो ॥३॥ वैंनी गुहि सारी पहिरावति वेंदी आड़ रचि भाल हो । भौंह नचाइ मोरि मुख मुसिकत गावति गारि रसाल हो ॥ ४ ॥ चंग उपंग वेंनु बीना बाजत मृदंग डफ ताल हो । पाये प्राण सखी सुख सबहिनि श्याम प्रीति प्रतिपाल हो ॥ ५ ॥ ८६ ॥

छैल हेली सांवरौ मन मोहन मदन गोपाल । रंग भीने वागे वनि निकस्यौ फेंटनि भरे गुलाल ॥ १ ॥ ऐंड़ति रूप मरोर कों रंगिली पगिया झुकीली लाल । भौंह कटीली बलभरी चटकीली बेंदी भाल ॥ २ ॥ अलक फंदा मनों मैंन के जोवन छके नैंन विशाल । फूलत फूल बसंत की मुख पर मोहिनी रसाल ॥३॥ खिलति अधखिली वैस में उर नव कलियन की माल । छाँह छुवन नहिं देत है चलै छाँह देखि गज चाल ॥४॥ जासों खेलत फाग में कर कटीले होत मृनाल । तऊ गुमान छबि कों लखै कसकति ससकति ब्रजबाल ॥५॥ सो खेलन आयो कुंवर वृषभान बबा के ताल । रीति सजनता की सज्यौ रानी कीरति कंचन थाल । ६ करि पराग की धूंधरी हसि हसि गति चलहु मराल छल सों

पकरो कुंवर कों मृगमद लपटावहु गाल ॥७॥ वरसाने की रीझि में हो भयो मीन जैसे जाल। दृग बचाइ ताकौ भरौ राधे यहै रंगीलौ ख्याल ॥ ८ ॥ श्याम गौर इत उत हिये तुम दोऊ प्रीति प्रतिपाल। सहचरि सुख वारी प्रिये हे प्राण जीवन नंदलाल।६।८७

फागु अलि खेलहीं श्री वृंदावन बाग। श्री वृषभानु कुँवरि कौ जे चाहत अचल सुहाग ॥ १ ॥ खिलत कमल लों जामिनी हो दिपति चंद्रिका भोर। वारतु कमल अरु चन्द्रिका जिनकों लखि नंद किशोर ॥ २ ॥ नव चपलता श्रृंगार की हो चमकत कुंजन मांहि। पावस चपला लगति है जिनकी छवि आगे छांहि ॥ ३ ॥ चंपकली वन मैंन की हरि रह्यौ भंवर अनुरागि। जिन सुगंध छकि मधुकरनि वन चंपक दीनौ त्यागि ॥४॥ कुसुम वसंती दवि गये जब प्रगटी सहज सुवास। रीझ छके उपमान सों याते पिय फिरत उदास ॥ ५ ॥ कोटिक केसरि घोरिये तऊ होत न पटतर अंग। दरसत जिनके रंग के जिनही केलन में रंग ॥ ६ ॥ उज्वलता अरु अमृत को हो चूरति चलति गुमान। परसत जिनकी किरन को लागै शरद चन्द्र सौ भान ॥७॥ करत सुंड गज कुंडली हो फीके गतिन मराल। मनी चूरि व्रज तियन की हो चले अति अलवेली चाल ॥ ८ ॥ सुघर सहेली कुँवरि की हो ललित विसाखा जोट। ललित रहसि दरसत लला कुंजन में जिनकी ओट ॥ ९ ॥ चटकि रचति चंपक लता चित्रे चित्रा चितवन सैंन। तुंग विद्या तनमय करैं इंदु-लेखा सिखवत वैंन ॥ १० ॥ रंगदेवी पोषें रंगनि देइ सुजस सुदेवी छाइ। सुरत महल की टहल में राखे मन मोहनहिं समाइ ॥ ११ ॥ ता ख्याल मुख बोलई पानिप रस के

चैंन। गावत सुर हिंडोल के फिर जरयौ हरयौ कियौ मैंन ॥१२॥ छल्यौ छबीलिन छलनि में छवि मेंवासी छैल। भूली जाकी फैल में तिय लोक वेद की गैल ॥ १३ ॥ उलहत जोवन रीझ के हो ऐंड़ रही इतराइ। कटीली कसक अंग अंग की पिय के हिय दीनी धाइ ॥१४॥ रचे करेजा सांवरे हो सब ब्रज नंद किशोर। हिये गौर राधा किये तब बिकि गई सबै मरोर ॥ १५ ॥ कनक कसौटी पै कसत जब होत वरन कौ ठीक। परख रूप की खिचत है हेली रूपनि हीय लीक ॥ १६ ॥ चक चोधति लखि कुंवर कों हो ससि जीतति जे वाम। आवति ढिग कीरति सुता तबहीं हरि दीसत श्याम ॥ १७ ॥दसन अधर कर अरुणिमा हो उभलत त्रिविध तरंग। घटि वढि लालिन की कसरि परयौ आज रसिक दुति संग ॥१८॥ फैलति अद्भुत मोहनी श्यामा दीपति की पुंज। अधि ग्रीवा विवि तिय करें ऐसौ जस छायौ कुंज ॥ १९ ॥ वरनन में आवै नहीं हो अलवेली के गात। यह मरजादा लिखन की हरि अंग विवस व्है जात ॥ २० ॥ दरसत मुठी गुलाल की हो भरत अपुन पौ नेंन। रचित राग की अरुनिमा बिच लगत पंच सर मेंन ॥ २१ ॥ मंद मंद मुसिकत मुखनि हो उज्वल होत गुपाल। खिसत पीत पट सुधि नहीं हेली अनूठे हिलग के हाल ॥२२॥ सरसति पेलति कसकि कों हो वरसति कुसुमन नीर। हाव भाव दरसत सुघर अरसति दृग भरे अबीर ॥ २३ ॥ पिचक लियें तकें सांवरे हो उर सैलनि बांकी सैल। कंप देत कर कान्ह के हेली नव जोवन के फैल ॥ २४ ॥ छिरकत पचरंग छींट कों हो रचत रंगीलौ कंत। फूलति चितवन में चखनि अपने ही मदन वसंत ।२५॥ लपटावत अंग परस्पर हो रसिक उमहि रस दानि लपटति

है रुचि होय सो कहे हाल कटीले पानि २६ भुरकत चूर कपूर कों तन बुझे अतन के दाह ; सीतल छातिन कों करत हित हाथनि नवला नाह ॥२७॥ ढोरि सुगंधनि सीस तें वरनन में बद-लत गात। चितै रहत पल भूलि कें तऊ देखत नहीं अघात ॥२८॥ ढकति एक ही वसन में हरिवंशी निरखि सिहाति । अंश भुजा दीयें मिलन की नई नई चोप उफनात ॥ २६ ॥ सफल फाग की सेज पर हो भये उरन के हार । जीवत आठौ याम यह सहचरि सुख गाइ बिहार ॥ ३० ॥ ८८ ॥

सखी खेलत मोहन लाल हो, ब्रज होरी आई रस भरी। चोवा चंदन अरगजा वीथिन में रच्यौ है गुलाल, ब्रज होरी आई रस भरी ॥ टेक ॥१॥ संग सखा अति सोहने मधि नायक मोहन छैल । टोकत रोकत वधुन कों गोकुल में चलत न गैल ॥ २ ॥ कर पिचकारी कनक की और फेंटनि सुरंग अबीर । चहूं ओर रंग वहि चले चरचत रंग केसर नीर ॥ ३ ॥ मैंन लपेटी मोहनी नव पंकज दल से नेंन । एक बार दृग देखिये देखें बिन परत न चेंन ॥४॥ अलक कपोलनि बल भरी मुख पान खात मुसिकात। चंचल भरे चवाव सों सब उठत वैस इतरात ॥५॥ अंबर सोंधेन सों सने झुकि रही रंगीली पाग। किलकि उठे डफ बजत ही हिय उझलि उझलि अनुराग ॥ ६ ॥ लाज सकुचि डर डारि कें भये गोप कुंवर अति ढीठ। आठ पहर इठलात हें ते श्याम सुंदर के ईठ ॥७॥ ऐंढ़ि ऐंढ़ि लकुटनि लिये टोकत रोकत मग आइ। महा अवल अवलान को तिन आगे कहा वसाय ॥ ८ ॥ रूप बावरी मंडली चहुँ ओर रहत ललचाइ। सेंनन में हा हा करें चरनन सों छांह छुवाइ ६ छल करि घूंघट खोलहीं तकि

रीझत होत अधीर । भरत रंग अंखियान में फिर पोंछति लै लै चीर ॥ १० ॥ अतर लपेटत उरन सों जिय अरुझत कंपानि । दुरे हितानि खोलत फिरें तिन तजी बड़ेन की कानि ॥ ११ ॥ पुहुप पराग उड़ाइ कें गहरी धूंधरि करि देत । मधुकर लौं मडरात है छकि सौरभ के संकेत ॥ १२ ॥ चटक मटक के चिकनिया चोरत चित वरषि सुहाग । दूलह नंद किशोर को मन मिले खिलावत फाग ॥ १३ ॥ फगुवा में दै अपन पौ वस व्है वस कीनी बाल । सहचरि सुख हित चिरजियौ रसिया पिय मदन गुपाल ॥ १४ ॥ ८६ ॥

बनि आई होरी कुंज में सखी खेलत मोहन स्याम हो । रूप कली वैसनि खिली मिली स्यामा संग नव वाम हो ॥ १ ॥ बन समाज आगे लखें नभ चंद मंद दुति होति । राधा आवत तें दिपी रवि उदै दीप ज्यों जोति ॥२॥ तिन केलनि की माधुरी रसना वरनी क्यों जाइ । उपमा सब वारतु लला तिन्हैं देखत नहीं अघाइ ॥ ३ ॥ वेनु गिरत जान्यों नहीं यों धरै है मदन गोपाल । घन सिंगार वांध्यौ मनौ मिलि सत छबि दामिनि जाल ॥ ४ ॥ आंखि आंजि मुख मांड़ि कें छकि अंगुरिन कौर सुदेत । कल कीरति कीरति सुता फगुवा में सर्वसु लेति ॥५॥ मुसकि विसाखा अधर छ्वै मसरत मुख सुरंग गुलाल । चंपक लता फुलेल लै केशन कों गुंथित भाल ॥६॥ नख सिख चित्रा चित्रई सुंदर सुहाग के रंग । तुंग विद्या तन मय भई केशर ढोरत अंग ॥७॥ इन्दुलेखा अंवर रचे आनंद दुहुंनि अपार । अनूठी बनी अनूठौ बना बन अनूठौई बन्यौ है विहार ॥ ८ रंग देवी कसि काछनी धरयौ मुकट राधिका सीस पढै सुदेवी

श्रुति रिचा गठजोरा देत असोस ।६ ललिता मंडप स्वामिनी वदलाइ परस्पर माल । मैंन महा मुनि मंत्र विधि दई भांवरि रास रसाल ॥१०॥ बनी है पिचक गोरी भुजा उर तकनि बनी है नेंन । दुरनि मुरनि हरि दृग बनी घूंघट में मेंन की सेंन ॥११॥ अनूठौ कान्ह रस सरसि कें भरे सनमुख मुठी अवीर । अनूठी छलि हँसि कराति है बूका कर कुमकुम नीर ॥ १२ ॥ उमगि कटाच्छनि तें छुटै रति सुरंग केसरी धार । पुतरी पुतरिन पै करें उज्वल पानिप की मार ॥१३॥ लेत देत झोटानि कों झुकि झुकि दीपति के भार । रितु वसंत झूलनि बनी जोवन कलप द्रुम डार ॥ १४ ॥ संपति श्री हरिवंश की चिरु वृंदाविपिन बिलास । सो प्रसाद मुख सुख सखी दुलरायौ जुगल हुलास ॥ १५ ॥ ६० ॥

॥ श्री कृष्णदास जी महाराज कृत ॥ राग विहागरौ ॥

रंग हो हो खेलत फागु अनुराग सों दोऊ लाड़िले । सनमुख बनि ठाँड़े छवि सों मन खेल उमाहें चाड़िले ॥ १ ॥ अलिगन झूमर मधि लसैं मुख चंद्र किरनि दुति उजियारी । कहा चंद अरविंद वृन्द नख कांतिन पांति तड़ित वारी ॥ २ ॥ बिन सिंगार सतमार विमोहित सोहत कछुक सिंगार कियौ । सिंगार कौ सिंगार बन्यौ छवि की उनिहार निहारि हरषि हीयौ ॥ ३ ॥ चमकत चंद्र की जोति कौं जीति कें चंद्रिका अति इतरान भरी । क्यौं न हरैं पिय के मन कौं यांव सीस फूलहु तें आँगे धरी ॥ ४ ॥ सीप सुतन सीमंत बंत मृदु वारनि में जरी तार गुही । मनौं रैनि मध्य तारे किधौं अलि भूलि फूलि रही सेंन जुही ५ बैना झूलनि फूल झरें मृदु भकुटी जुटीं चित

॥ ६ ॥ चंचल अजीं आँखियनि की मँजी लगि कानन सों यों कहैं कोरें । देखौ करजनि की वरजी न रहैं अलकें पिय चित चोरें ॥ ७ ॥ दीपति नासिका की रति रस तिल फूल फब्यौ वेसरि मोती । गोती वरन वदल भयौ लाल सु लाग मधुर अधरनि जोती ॥ ८ ॥ चिवुक त्रिकौना दिठौंना मृदु गोल कपोलन वानि धरयौ । मानौं पिय मन अलि छौंना छकि हँसनि गाढ़ रस आनि परयौ ॥ ९ ॥ नील उनमील उरोजनि चुकी संचुकी छवि सुही सारी । सो हियें लागि सोही तन सों मनों सूही तें भई जरतारी ॥ १० ॥ जलज निहार सुढ़ार वाहु वलय मृदु करजनि मँहदी राचे । उपमा और बनें न बनें मनौं मैंन सुघर ढ़ारी साँचे ॥ ११ ॥ लहँगा लाल पीत लहरी गहरी लावन लावनि लागी । रुरत मुरत कवरी सवरी मनौं नगी तें डरी उपमा भागी ॥ १२ ॥ जोवन भार लटकि कृश कटि तट झणंकार किंकिनि नूपुर । मानौं कहत पुकार अहो छवि चंद चलत पाँयन भूपर ॥ १३ ॥ खिले चिन्ह जावक पग नख दुति मृदु तरुवनि तर अरुनाई । मनौं अधरनि के रचे पाँवड़े रीझि रीझि धर हरसाई ॥ १४ ॥ कंचन वेलि नवेलि सुफूलनि झूमि झूमि दुहुँ ओर लसी । मानौं विपिन वसंत सहेली मिलि प्यारी पग पूजि हँसी ॥ १५ ॥ गुँजत भौंरन भौंर कहत मनौं जुगल फाग खेलन आये । सुनि सुनि तन मन फूल फूल सौरभता भर भेंटनि ल्याये ॥ १६ ॥ सनमुख स्याम निरखि हरषत छवि सों सखियनि मंडली साजें । मानौं रूप बरात चढ़ी दुहुँ दिस अनहद बाजे बाजैं ॥ १७ ॥ लियें सौंज विविध आलिगन कर कमलनि हरसौंहीं चंदन आगे । मानौं रिस तजि मिले परस्पर

सजि सजि भेंट करनि लागे ॥ १८ ॥ बिसरत नाहिन वे छबि सों साँवरि पर पिचकारी मेली। मानौं अति लड़ भाँवरे पर रस फूल झरी जोवन वेली ॥ १९ ॥ मोहन लाल गुलाल मुठी भरि दृग बचाइ छवि रंग रची। चपल चौंक मनौं अरुन घटा में छटा छवि विद्युत कोटि नची ॥ २० ॥ भीनें चीर सरीर लगे चमकें भूषन शोभा बाढ़ी। मनौं अनुराग भरे मन सिंधु तें उमगि उमगि रंगनि गाढ़ी ॥ २१ ॥ छैल दरपन दुरि दीठि पींठि भरि दौरि कदंब कीं ओट गही। कौंने वदी जु ललिता इनि स्याम तें गौर करौं तौ सही ॥ २२ ॥ जबै कुँवरि उत होत गहन कौं सरकि ढ़ीठ इतकौं आवै। रमकि झमक दोऊ फिरें इत उत सो छबि कहत न मति पावैं ॥ २३ ॥ प्रिया सखिनु जुत जोरि करनि चहुँ ओर घेरि कें गहि लीनौं। दै अंजन नैननि रंग बोरयौ मृदु कपोल गुलचा दीनौं ॥ २४ ॥ कोमल अलक झलक मुख झूमी परत पगनि लै उर लायौ। मानौं नव अलि कौं कर कमलनि गहि उर रस में सरसायौं ॥२५॥ बैठे निकट निकुंज सेज पर मधु वतियनि मन अनुरागे। कृष्णदास हित रीझि भीजि रहे सोभ परस्पर उर लागे ॥ २६ ॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥

कुँवरि कुँवर मिलि खेलहीं रंग रंगीलो फाग हो। वास वसंती तनु रंगे पगे प्रीति के पाग हो ॥ १ ॥ कुसुम छरी सीं सहचरी कुसुम छरी लैं हाथ हो। रंग रंग की सारी सजें सोहत दंपति साथ हो ॥२॥ माथे पर मुक्ता हलैं बैंना बनें अमोल हो। मनों चंद के अंक में उड़गन करत कलोल हो। ३ लियें अरगजा

कमल पर वाम हो ॥४॥ चंचल दृग आनन रँगे करनि गुलाल उड़ाइ हो । मनौं पराग लखि कंज के शशि के मृग चपलाइ हो ॥ ५ ॥ मणि मण्डल पर नाचहीं बाजत बीन मृदंग हो । झूमक दै दै गावहीं उपजत तान तरंग हो ॥६॥ नासा के मोती डुलैं रंगे सिंदूर सुरंग हो । मानौं रूप की गेंद सों खेलत कीर अभंग हो ॥७॥ सुरँग फूल तकि मारहीं मारत फूलनि फूल हो । कर पिंजर तजि मनौं लरैं लाल मुनीं छवि मूल हो ॥ ८ ॥ करतल पिचका रंग भरे आइ छलन पिय पास हो । तब लगि गहि गोरीं लये दै दृग मषि कियो हाँस हो ॥६॥ धरि मोहन सिर चन्द्रिका सारी सजी बनाइ हो । मनो पिय तिय हित सों भयो कीट भृंग के भाइ हो ॥१०॥ वर वन्दन की धूंध में को पहिंचान्यौं जाइ हो । दाइ पाइ लपटत दोऊ जोरि वदन मुसकाइ हो ॥ ११ ॥ इहि विधि होरी वन मची, उमची केलि अनूप हो । प्रेम सहित यों चित बसौ गौर श्याम रस रूप हो ॥ १२ ॥ ६२ ॥

राग कान्हरौ—होरी राधा मोहन नव निकुंज में खेलत प्रेम रंगीले । कंचन घट कुच भरे मैंन रंग विशद कटाक्ष धार पिचकारी लोचन परम छबीले ॥ वलय किंकिणीं बाजत ताल मृदंग फैल रही सोभा हसन अबीर उड़त तन सहज बसीले । प्रेमदासि हित कोक कलनि गुन मिली जनि भुज मंडली मंडल सेज पै निर्त्तत रसीले ॥ ६३ ॥

राग काफी—होरी खेलै हो हो रस मय रँगीले । गौरी स्याम अलवेले दोऊ श्री वृंदावन चंद छबीले ॥ १ ॥ दिपत वसन आभरण विविधि विधि महा मनोहर अंग । कोटिक रवि ससि मुख पर वारों निरखि मदन भये पंगु २ रूप रासि गुन

रासि ललित गति गौर स्याम अलि वृंद। सुंदरि छवि मिलि भई घटा मुख उदित अमित तहाँ चंद ॥ ३ ॥ साख जवादि सुगंध भरे भाजन कर धरे अनूप। मानौं कनक कमल पर कलस विराज रहे वहु रूप ॥ ४ ॥ अरुण पीत सित हरित अबीर गुलालनि लयें दुकूल। झुँडनि झुँडनि प्रेम मुनीं सी झमकि रही मन फूल ॥ ५ ॥ जग मगात अवनी कंचन की मनिनि जटित बहु भाइ। मनिमय तरु धर मिलि प्रतिविंवित सोभा कही न जाइ ॥ ६ ॥ कबहुक गोरी कनक कमोरी भरि रंग छिरकत लाल। काम लता मानो प्रेम तमालहि सींचत रंग विसाल ॥ ७ ॥ लीने कर कंचन पिचकारी भरे केसरि को रंग। पिय भामिनि कों छिरकत घन मानौं फिरत दामिनी संग ॥८॥ सुंदर कर कमलनि तें उड़त अबीर गुलाल पराग। घुमड्यौ गगन सरस अरुणिम रंग छाइ रह्यो अनुराग ॥ ९ ॥ ताल मृदंग बाँसुरी बीना महुवर वर मुख चंग। मधुर झाँझ डफ सत्त सुरनि सों बाजत सरस उपंग ॥ १० ॥ विचित्र समीर चलत अति रोचक बाढ़त परम हुलास। पद पटकत कर झटकत मट-कत भृकुटी नैंन विशास ॥ ११ ॥ झूमत फिरत झूमिका बांधे ललितादिक चहुँ ओर। गावत उपजावत रंग भरी नाहिन आनंद थोर ॥ १२ ॥ अलक ललक सों परसत कुच रुचि सों सचु पाइ किसोर। मुरि चितई दृग कोर किशोरी रहे कुँवर कर जोर ॥ १३ ॥ बार बार चरननि चख लावत उपजावत मन मोद। परम चतुर चित खेलन के मिस भुज भरि करत विनोद ॥ १४ ॥ सरसानंद अंग अंगनि में छाइ गयो बहु भाइ। निरखि हित अली किशालय सेंन बैठाये लेत बलाइ । १५

झलकत अंग उमंग रंग सु अभंग करत जुत हासि। जै श्री व्यास सुवन चरननि बल गावत प्रेमदासि रस रासि ॥ १६ ॥ ६४ ॥

राग काफी—राजत रंग भीनी जोरी। खेलत प्रेम पर्यंक पर आनंद की होरी ॥ १ ॥ द्वै तन में द्वै रूप धरि एक प्रान बस्यो री। होत गौर तें स्याम होत स्याम तें गोरी ॥ २ ॥ आनन पाननि सों भरे छवि देखत जीवें। नित्य बिहार अहार करि अमृत रस पीवें ॥ ३ ॥ मंजुल मुक्त लतानि को गृह मदन रच्यौ री। नदित कोकिला कीर अलि गुंजत चहूँ ओरी ॥ ४ ॥ ललितादिक रंध्रनि लगीं निरखत छवि गहिरी। मनों लता ग्रह रूप की माला सी पहिरी ॥ ५ ॥ बहु रंग जल सीकर छुटत जल जंत्र अमित री। मनों सु चंपा रूप के छूटत जित तित री ॥ ६ ॥ जल थल में फूले कमल नव कुंज भवन री। उड़त पराग अनेक रंग लगि त्रिविधि पवन री ॥ ७ ॥ किलकारें कल हंश कुल केकी कल नाचें। पारावत गुंजत फिरें दंपति सुनि राचें ॥ ८ ॥ नवसत साजें अंग में राजत रंग भीने। झिलमिलात द्वादस सरस अभरन छवि लीने ॥ ६ ॥ नील निचोल जुवति सजें पिय पीत बसन री। मनो घन पर दामिनि छई दामिनी पर घन री ॥ १० ॥ मोद विनोदनि सौं भरे दंपति छवि छाजें। हाव भाव लावन्य सों समाज संपद राजें ॥ ११ ॥ कबहूँ हसत कबहूँ रहत मुख मूंदत भामिनी। दुरि दुरि प्रगटित अधर अरुन घन मनो दामिनी ॥ १२ ॥ लावत तिय उर अरगजा पिय तन मन फूले। लाल गहत भुज मूल कसि ललना प्रतिकूलें ॥ १३ ॥ रोमांचित तन तन भये अति छवि विस्तारी। अंग अंग प्रफुलित मनों मनमथ फुलवारी १४ पिय

निबन्ध नीवी करत वाढी अति शोभा कोप कपट टारत करनि कामिनी मन लोभा ॥ १५ ॥ अनियारी अँखियाँ विशद साजी पिचकारी । धारैं चलन कटाक्ष की रंग प्रीति महा री ॥ १६॥ पुलकि पुलकि आँकौं भरे कल खेल सु वाढ्यौ । लसत कटीली भुज करत आलिंगन गाढ्यौ ॥ १७ ॥ अपने अपने दाइनि भरे चाइनि रस झेलैं । उरझ सुरझ उरझत दोऊ गुन गन सौं खेलैं ॥ १८ ॥ पियन अधर मधु मत्त मन परि आनंद गहिरैं । रूप माधुरी की उठत तन तन ते लहरैं ॥ १६ ॥ भरि अनुराग गुलाल रंग दोऊ रंगीले । साख जवादि सुगंध सों तन सहज बसीले ॥ २० ॥ झूमत रस आसव छके घूमत अति प्यारे । मनो करिनी करि इन्द्र मिलि क्रीड़त मतवारे ॥ २१ ॥ चंग चुरी किंकिणि मुरज नूपुर धुन बीना । सनमुख रुख जोरे करत मिलि गान प्रवीना ॥ २२ ॥ मृग मद चन्दन के तिलक दोऊ कियें दुलारें । कुटिल कटीली भ्रू लसत सोभा विस्तारें ॥ २३ ॥ गौर स्याम सोभा रही चहुँ ओर झमकि री । मानों हरो अवीर उड़ रहयौ सरस चमक री ॥ २४ ॥ रंगे सजन रंग मैंन के नव नव सुख वर्षें । दुरनि दुरैं मुरि मुरि अरैं घुरि घुरि अति हर्षें ॥ २५ ॥ अति सुन्दर अति सुघर वर अति छैल छवीले । अति सुकुंवार उदार चित अति रसिक रंगीले ॥२६॥ कंचन मनि में मनों जटित मर्कत मनि ज्यौं री । मर्कत मनि में फिर जटी कंचन मनि त्यौंरी ॥ २७ ॥ वितरत रति विपरीत कुँवरि संगीत निपुन री । निर्त्तत प्रीति सिंगार के मंडल मनों सुनि री ॥ २८ ॥ फूलनि सों वेंनी गुही रमकत तिय ग्रीवाँ । बिमली फिरत नितंब पर सोभा की सींवाँ २६ रत्न जटित

कुंडल चपल गंडनि में झलकैं। निरखि रूप दृग लाल के भूलत सुधि पलकैं ॥ ३० ॥ भरी मैंन रस रंग उरज विवि कनक कमोरी। ढारी मोहनलाल पर नव नित्य किसोरी ॥३१॥ कुच की केशरि सों रंगे उर दोऊ सो री। अंतर को अनुराग मनों बाहर प्रगट्यौ री ॥ ३२ ॥ कोविद कोक कलानि में सखि नैंन सिहावै। केलि वेलि फूली द्रवत रस अलि अलि पावै ॥ ३३ ॥ भीजी अलक फुलेल सों रुरकत छवि न्यारी। मोतियनि माल रसाल उर विलुलित दुति भारी ॥ ३४ ॥ रंगे अधर रंग सों डुलत बेसर के मोती। हँसन अबीर उड़त दसन मनों रँगे ससि गोती ॥ ३५ ॥ तिय परिरंभन में बढ़ी लज्जा पग पेली। अरुझी प्रेम तमाल सों मनों काम की वेली ॥ ३६ ॥ चपल जघन पिय मन रंगन समोंहि कलोलैं। कनक कदलि मनों मैंन की मारुत सौं डोलै ॥ ३७ ॥ लचकत कटि लपटत लटकि प्रीतम उर प्यारी। पीक झलक गंडनि रही अति सौभगता री ॥ ३८ ॥ गोर स्याम मुख पर रुचिर श्रम जल कण झमकैं। मानौं मोती ओस के कमलनि पर दमकैं ॥ ३९ ॥ श्रम जल मिलि ढरे मांग कौ बंदन मुख छायौ। चुंबन सों दोऊ रंगे लखि मदन लजायौ ॥ ४० ॥ झरत फूल मृदु कचनि तें उर नख ससि सोहैं। खंडित अधरनि रंग पर रंग मसि के सोहै ॥ ४१ ॥ प्रतिबिंबित तन तन गसे गांसनि सों लहिरी। सुधि न परत को नागरी को नागर कहि री ॥ ४२ ॥ मनों कल हंसी हंस के गरे लपट रही री। नयो नेह नेही नये नव छवि नित ही री ॥ ४३ ॥ दृगनि बलैयाँ लेत पिय उर सों उर जोरे शुभ चिंतक निज सहचरी छवि पर तृन तोरें ४४ ।

वारत पुहपनि हित अली लखि अमित बिहारी। रीझि भीजि रस में रहे अबला सबला री ॥४५॥ इनकी उपमा को ऐई अरु उपमा नाँही। जानत जात न रैन दिन संतत रस माँही ॥४६॥ कही यथा मति महल की रस रीति री हेली। प्रेमदासि हित चित बसौ जोरी अलबेली ॥ ४७ ॥६५॥

राग गौरी, धनाश्री—श्री राधा वल्लभ लाड़िले हो होरी हो॥ दूलह मोहन लाल प्रेम रंग होरी हो॥ ललित बलित रस प्रेम में हो हो होरी हो॥ दुलहिनी कुँवरि कृपाल प्रेम रंग होरी हो ॥१॥ लाल हर्षि बिनती करी ॥ हो० ॥ फूल्यौ बन रितुराज ॥प्रेम०॥ परम चतुर मनि लाड़िली ॥हो०॥ साज्यौ सकल समाज ॥प्रेम०॥ ॥२॥ भई मुदित मन नागरी ॥ हो० ॥ नागर सुखहि अपार ॥ प्रेम० ॥ गौर श्याम सहचरिनि के ॥ हो० ॥ करे जूथ द्वै चार ॥ प्रेम० ॥ ३ ॥ जगमग जगमग होत तन ॥ हो० ॥ गौर स्याम सुकुमार ॥ प्रेम० ॥ द्वादस अभरन झिल मिलें ॥ हो० ॥ नवसत सजे सिंगार ॥प्रेम०॥४॥ लई सौंज सब खेल की ॥हो०॥ चले रविजा के तीर ॥प्रेम०॥ त्रिविध समीर तहाँ चले ॥हो०॥ कूजत कोकिल कीर ॥प्रेम०॥५॥ हंस मोर चकवा रुचिर ॥हो०॥ बोलत भरे हुलास ॥प्रेम०॥ नवल द्रुमनि लपटी लता ॥ हो०॥ फूल रही सु प्रकास ॥प्रेम०॥६॥ मनिमय अवनी में दिपै ॥हो०॥ तरु मनिमय बहु भांति ॥ प्रेम० ॥ लपट डारि मिलि गुच्छ सो ॥ हो० ॥ जल परसत छई कांति ॥ प्रेम० ॥ ७ ॥ जल थल में सुंदर कमल ॥ हो० ॥ रहे विवि.ध विधि फूल ॥ प्रेम० ॥ पुंज पुंज वर भृंग के ॥ हो० ॥ गुंज गुंज रहे झूल ॥प्रेम० ॥ ८ ॥ आनंदित ०है पुलिन में हो० फूले मन अभिराम प्रेम०

अपने अपने जूथ में ॥हो०॥ राजत स्यामा स्याम ॥प्रेम०॥६॥
ताल पखावज आवझी ॥ हो० ॥ महुवर वर मुखचंग ॥प्रेम०॥
सरस झाँझ डफ मुरलिका ॥हो०॥ बाजत बीन उपंग ॥प्रेम०॥
१०॥ सप्त सुरनि सों रागिनि ॥हो०॥ गावत मेदन संग ॥प्रेम०॥
हो होरी कहि कहि हँसें ॥हो०॥ लाजत निरखि अनंग ॥प्रेम०॥
११ ॥ अमित कमोरी मनिनि मय ॥ हो० ॥ विविधि रंगे तन
माँहि ॥ प्रेम० ॥ साख जवादि सुगंध की ॥हो०॥ तहाँ सुमित
कछु नाहि ॥ प्रेम० ॥ १२ ॥ परम छबीले बदन में ॥ हो० ॥
चंचल नैंन सुहाइ ॥ प्रेम० ॥ खेजत खंजन से मनो ॥ हो० ॥
फूले कंचन आइ ॥प्रेम०॥१३॥ फूलनि सों वेंनी गुही ॥ हो० ॥
झुलत पीठ पर चाक ॥प्रेम०॥ मनों रूप द्रुम पर चढ़ी ॥हो०॥
फूलीं लता सिंगार ॥प्रेम०॥१४॥ वेसरि के मोती नचे ॥हो०॥
मुख ससि मंडल पाइ ॥प्रेम०॥ हँसन छबीली झिल मिलैं ॥हो०।
अलक झलक लहिकाइ ॥ प्रेम० ॥ १५ ॥ मनिमय पिचकारी
बनी ॥ हो० ॥ लाल बाल के पान ॥प्रेम०॥ केसरि के रंग सों
भरी ॥ हो० ॥ छबि को सकत बखान ॥ प्रेम० ॥ १६ ॥ लह-
लहात मानों दामिनी ॥ हो० ॥ प्यारी छबि रही छाइ ॥प्रेम०॥
जगमगात घनश्याम पिय ॥हो०॥ अद्भुत धर पर आइ ।प्रेम०।
१७ ॥ पिय करि पिचकारी छूटे ॥ हो० ॥ प्यारी पर सुख पुंज
॥ प्रेम० ॥ कनक लतहि सींचत मनो ॥ हो० ॥ ससि मधु लै
नव कंज ॥ प्रेम०॥१८॥ कुंकुम के रंग सौं भरे ॥ हो० ॥ पिय
प्यारी सुख मूल ॥ प्रेम० ॥ मनो सिंगार-तमाल में ॥ हो० ॥
लगौ प्रीति के फूल ॥प्रेम०॥१९॥ फूलनि की गैंदें चले ॥ हो०॥
भये गेंद लखि लाल ॥ प्रेम० ॥ मानो मन्मथ तुपी के हो० ।

चलत वान सुरसाल ॥ प्रेम० ॥२०॥ विविधि अबीर गगन छये ॥ हो० ॥ न्यारे न्यारे रंग ॥ प्रेम० ॥ मनों बहु रंगनि के मिले ॥ हो० ॥ आइ सरस घन संग ॥ प्रेम० ॥२१॥ मनों अनुराग घुमड़ि रह्यौ ॥ हो० ॥ उड्यौ गुलाल अमंद ॥ प्रेम० ॥ पकरे सखियनि धाइ पिय । हो० ॥ मनो चकोर गह्यौ चंद ॥प्रेम०॥ २२॥ लै गुलाल कर में सुरंग ॥हो०॥ मलत लाल मुख वाल ॥ प्रेम० ॥ मानौं ससिहि पराग दै ॥ हो० ॥ मिलत कमल सुरसाल ॥ प्रेम० ॥२३॥ तिय उर मनिमय उर वसी ॥ हो०॥ तामें पिय झलकाइ ॥प्रेम०॥ वसत हिय में पिय सदा ॥हो०॥ मनो दयो प्रगटाइ ॥ प्रेम० ॥ २४ ॥ भरत अरगजा सौं मिलें ॥ हो० ॥ दोऊ मरगजे गाज ॥ प्रेम० ॥भीजि वसन तन सों लगे ॥हो०॥ सुंदर रंग चुचात ॥ प्रेम० ॥ २५ ॥ पिय मुख चोवा सों मलत ॥ हो० ॥ मलत कुमकुमा भाम ॥ प्रेम० ॥ मनो रूप लपटत दोऊ ॥ हो० ॥ प्रगट भयो मन काम ॥ प्रेम० ॥ २६ ॥ गौर स्याम पुलकित दोऊ ॥हो०॥ भरत अंक तजि नेम ॥प्रेम०॥ प्रफुलित काम लता मनो ॥ हो० ॥ अरुझि रही द्रुम प्रेम ॥ प्रेम ॥२७॥ अलीं भलीं रस सौं रली ॥ हो० ॥ ल्याँई कुसुमित कुंज ॥ प्रेम० ॥ कमल दलनि की सेज पर ॥ हो० ॥ बैठे दोऊ सुख पुंज ॥ प्रेम० ॥ २८ ॥ फूलनि सों वारत अली ॥ हो० ॥ फूल परम सुख झेलि ॥ प्रेम० ॥ विलसति संपति माधुरी ॥ हो० ॥ दोऊ कंठ भुज मेलि ॥ प्रेम० ॥ २९ ॥ मोहे खग मृग खेल लखि ॥ हो० ॥ थक्यौ हंसजा नीर ॥ प्रेम० ॥ झरत फूल तरु द्रव चले ॥ हो० ॥ आनन्द भयो अधीर ॥ प्रेम० ॥ ३० ॥ श्री हित जुत ललितादि अलि ॥ हो० ॥ फूली मात न अग

॥ प्रेम० ॥ रीझि भीजे हौं ह्व रही ॥ हो० ॥ रूप मंजरी संग ॥ प्रेम० ॥ ३१ ॥ श्री वृंदावन में सदा ॥ हो० ॥ संतत करहु बिहार ॥ प्रेम० ॥ यह समाज नित चित बसौ ॥ हो होरी हो ॥ प्रेमदास बलिहार ॥ प्रेम रंग होरी हो ॥ ३२ ॥ ६६ ॥

राग सोरठ —हेली, खेलत होरी साँवरौ संग रँगीली बाल। रंग रंगीली सखिनि में हेली करत रंगीले ख्याल ॥१॥ कुसुमित वेणी झिलमिलत हेली तन जग मगत अपार। मनहु कनक द्रुम पर चढी हेली प्रफुलित लता सिंगार ॥२॥ रची मांग सिंदूर सों हेली मोती रहे रस भीजि। मनौं क्यारी अनुराग की हेली बये रूप के बीज ॥ ३ ॥ सीस फूल तिय सीस लखि हेली पिय मुख भरयौ मनोज। मनो घन में लखि रवि उदैं हेली फूल्यौ नील सरोज ॥ ४ ॥ अरुन बिंदु तिय भाल पर हेली इक टक निरखत लाल। कनक कमल पर चंद लखि हेली प्रमुदित मनहु मराल ॥५॥ मंजन करि रंजन नयन हेली अंजन दयें अनूप। खंजन गंजन विशद वर हेली कंजनि भंजन रूप ॥ ६ ॥ कर्ण फूल गंडनि दिपत हेली मिले वेंदिनी छोर। मनों फिरावत रूप की हेली चंद लयें चक डोर ॥ ७ ॥ छूटी अलक घुँघरावरी हेली झलकत अमल अमंद। किधौं रूप की मंजरी हेली किधौं मैन के फंद ॥८॥ कनक आरसी लखि कुँवरि हेली फेरत बेसरि नाक। पिय मन लखि मानों फिरत हेली चढ्यौ रूप के चाक ॥ ९ ॥ रचित स्याम दसनावली हेली दिपत अधर जुत हास। मनो लाल के डबा में हेली कनी नील मनि रासि ॥१०॥ दुलरि नील मणि पोत तर हेली चौकी कनक अमंद। मनहु स्याम घन रेख तर हेली ऊग्यो चौसर चंद ॥ ११ ॥ ग्रीव सींव छबि मुख दिपत

हेली मुक्त माल झलकात । मनों शुक्र चहूं दिसि लसत हेली मधि उडराज सुहात ॥ १२ ॥ कनक उर बसी नील मणि हेली जटित गुही मखतूल । लेय गोद सिंगार कों हेली प्रीति झुलावत झूल ॥ १३ ॥ उर पर चौकी जगमगत हेली जटित चुनी मृदु हेम । कच संपुट मणि प्रान पिय हेली मनो तहाँ चौकी प्रेम ॥१४॥ फबी कुचनि पर कंचुकी हेली अरुन बरन रस पाग । मानों रति रन के सुभट हेली सजे कवच्च अनुराग ॥ १५ ॥ नीलांबर सारी फबी हेली कंचन फूल सुहाइ । सरस स्याम घन में मानों हेली उड-गन से झलकाइ ॥ १६ ॥ बाजू बंदनि में बंधी हेली बाजू परम रसाल । नहि जानों खुले कहा करे हेली बांधो बाँधै लाल ॥१७॥ चूरी मखतूली बनीं हेली गोरे दंडनि संग । मानों कनक मृनाल सों हेली लपटि रहे कल भृंग ॥१८॥ रत्न जटित कंकन बने हेली पहुचिनि संग कर मंजु । यह अचिरजता देखिये हेली मंडल बैठे कंज ॥१९॥ रत्न चौक मुंदरी बनी हेली करनि जरांऊ चारु । मनों उडगन जुत कमल पर हेली राजत हंस उदार ॥२०॥ मिहदी कर महिदी लसत हेली कौंन रति यह बाम । रैनी बिन नहि रंग चढ़त हेली निरखि रंगे द्रग स्यांम ॥ २१ ॥ कृश कटि आग्रत किंकिनी हेली रत्न जटित कृत बैंन । मनों डिंडिमी मैंन घर हेली बाजत आनंद दैंन ॥२२॥ अतरौंटा कंचन बरन हेली लावन लावन ऐन । झिलमिलात बूटीं हरी हेली चीन चुनी छवि सैंन ॥ २३ ॥ नूपुर मणिमय क्वणित वर हेली कर को सकल प्रसंस । मनों चरण अरविंद पर हेली नदित चेटुवा हंस ॥ २४ ॥ जाव कली सोभा मिली हेली बने चित्र कल पाइ । मनों जाल अनुराग के हेली निरखि मैंन मुरझाइ ।२५ बिछिया

बने जराव के हेली कनित श्रवत रस सार । मानों बाजत बीन सी हेली होत मुनुक भनकार ॥ २६ ॥ फैल रही सौभाग वर हेली भरी तिय पिय के मोद । मनों सुरंग रंग केसरि हेली फैल रह्यौ चहुँ कोद ॥ २७ ॥ कलँगी मोतिनि की फबी हेली सीस लाल के आइ । मनों सिंगार तमाल पर हेली लसत मंजरी भाइ ॥ २८ ॥ नासा मोती थरहरत हेली बदन साँवरे हास । पहुपांजलि लै बदन पर हेली नाचत मैंन हुलास ॥२६॥ कनक कपिस पटु स्याम तन हेली राजत अद्भुत रीति । मूर्तिवंत सिंगार पर हेली मनो छाइ रही प्रीति ॥ ३० यौ ललित त्रिभंगी साँवरो हेली मुदित बजावत बैंन । प्रियहि रिझावत रीझि निज हेली सोभा कहत बनैंन ॥ ३१ ॥ अलक लड़ी चाइनि बढ़ी हेली कमल फिरावत जाइ । तापर मधुपनि के निकर हेली सरस गुँजरत आइ ॥ ३२ ॥ पान खात दंपति दिपति हेली पीक लीक कल ग्रीव । मनों सीसी अनुराग की हेली भरी खरी छबि सींव ॥ ३३ ॥ मंदिर नवल निकुंज में हेली कूजत खग नव रंग । खेलत होरी मैंन बहु हेली मनों गावत मिलि संग ॥ ३४ ॥ प्रफुलित श्री वृंदा विपिन हेली राजत आनंद कंद । फूले स्यामल गौर मिलि हेली खेलत फाग सुछंद ॥३५॥ कनक कमोरिनि रंग लयै हेली ललितादिक अनुकूल । रस फल जुत फूलीं मनों हेली रूप लता सुख मूल ॥ ३६ ॥ कनक पिचकई कुँवरि कर हेली छुटत सरस रंग पीत । छूटत कमल नल सु मधु जल हेली मनों भरत अलि मीत ॥ ३७ ॥ मूठी चलत गुलाल की हेली रुरत अलक तन लागि । कनक लतनि में अलि लुलित हेली मनो लखि कमल पराग ३८ रंग

समाज गुलाल उड़ हेली भोडल दिपत विसाल। मनो उड़गन उड़ ससिन कों हेली घेर रहे नभ लाल ॥ ३६ ॥ गहि सारंगी रंग सों हेली सारंग गावत स्याम । हँसन झिलमिलत हीय में हेली भयो हार अभिराम ॥ ४० ॥ काम कली सी तिय खिली हेली झिली प्रेम करि गान । गहि प्रवीन कर बीन सुर हेली बीनि बीनि लै तान ॥ ४१ ॥ कोऊ अली रस सों रली हेली मिली देत संग ताल । कोऊ झांझ सु मृदंग डफ हेली भली बजावै आलि ॥ ४२ ॥ कोऊ बजावत कर गहें हेली अली मंजु मंजीर । मानों कल कंजनि विषे हेली बोलत हंस अधीर ॥ ४३ ॥ छुटत रंगीली रंग भरी हेली पिचकारी कर लाल । मनों घन वर्षत राग जल हेली भीजत दामिनी चाल ॥ ४४ ॥ सुरंग बसन झीने मृदुल हेली भीजि लपटि रहे गात । निरखत सोभा परस्पर हेली दोऊ थकित रहि जात ॥ ४५ ॥ प्यारी स्वेत अबीर सों हेली पिय हिय भरत उमगाइ । मानों रस सिंगार पर हेली रह्यौ हास रस छाइ ॥ ४६ ॥ ताता थेई थेई कहें हेली गौर स्याम रस भीन । अनियारी अंखियाँ चपल हेली वर्षत रूप नवीन ॥४७॥ आनन पाननि सौं भरे हेली चंचल नैंन न थोर । उड़ जाते अलि से बंधे हेली जो न कमल मषि डोर ॥ ४८ ॥ हरो अबीर उड़त हरत हेली छबि की उठत झकोर । गौर स्याम दुति मिलि मनों हेली फैल रही चहुँ ओर ॥ ४६ ॥ चांरि चरन अंकित धरनि हेली रहे कमल से फूल । निरखि थके दृग आलनि के हेली मनों मधुप रहे भूल ॥ ५० ॥ बंदन मूठिनि भरि उड़त हेली अरुन भयौ नभ जान । तान्यौ सकल समाज पर हेली मनों अनुराग वितान ५१ लाल पीत सित हरित रंग हेली बूँद

वनीं अंग अंग । मानों कंचन खंभ में हेली जटित चुनी बहु रंग ॥५२॥ घुमड्यौ बूका विशद उड़ हेली ऋ वरक आव्रत कुंज । छिटकि रही मनों चांदिनी हेली फिरत तहां उड़ पुंज ॥ ५३ ॥ चोवा चंदन सों भरत हेली माखन सहित पिय बाल । सुधि न परत को नागरी हेली को नागर को आलि ॥ ५४ ॥ नासा में मोती डुलत हेली वंदन रंगे सुरंग । मानो लटुवा रूप के हेली देत फिराइ अनंग ॥ ५५ ॥ भरत अरगजानि सों दोऊ हेली भयो पुलक अंग अंग । मनों कदंब फूले सरस हेली स्यामल गौर अभंग ॥ ५६ ॥ पिय प्यारी खेलत मिले हेली अलियनि में निरशंस । कंचन कमलनि में मनों हेली क्रीड़त हंसिनी हंस ।५७। बारति पुहुँपनि सहचरी हेली ल्याईं कुसुमित ऐंन । विलसत संपति माधुरी हेली बैठे दंपति सैन ॥ ५८ ॥ माल सखिनि की झिलमिलत हेली विच वर जुगल किशोर । मनों घेरैं विवि चंद कों हेली धर पर बृंद चकोर ॥५९॥ दंपति संपति माधुरी हेली वरनी दुगनित सोइ । उपमा हूँ तो सार्थक हेली इहां बिन नहि होइ ॥६०॥ दोहा मोहा मननि के हेली दोहा है स्नेह । जोहा उभै स्वरूप के हेली सुख बरषत जो मेह ॥ ६१ ॥ अति अभूत आनंद बढ्यौ हेली कहां लौं करौं वखान । प्रेमदासि हित चित बसो हेली जुगल रूप रस खान ॥ ६२ ॥ ६७ ॥

श्री परमानंद दासजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥ गारी ॥

आवहु री मिलि आवहु । मोहन जू को गारि सुनावहु री रस रंग बढ्यौ ॥ टेक ॥१॥ हरि नागर री हरि नागर । जाकौ बाबा नंद उजागर ॥ २ ॥ हरि कारौ री हरि कारौ । यह द्वै बापनि कौ वारौ ॥ ३ ॥ याके द्वै बाप सबै कोऊ जाने । जाहि

वेद पुरान बखाने ॥४॥ हरि मधुकर री हरि मधुकर। रस चाखत डोलत घर घर ॥ ५ ॥ हरि नटवा ही हरि नटवा । श्री राधाजू के आगें लटुवा ॥ ६ ॥ हरि खंजन री हरि खंजन । ब्रज जुवतिन के मन रंजन ॥ ७ ॥ हम भरि हैं री हम भरि हैं । राधा प्यारी कहें सो करि हैं ॥८॥ मुख माँडौ री मुख माँड्यौ । इनि पै लै फगुवा तब छाड़ौ ॥ ९ ॥ हरि होरी हो हरि होरी । बनी श्री राधा मोहन की जोरी ॥ १० ॥ यह जस परमानंद गावै । कछु रहसि बधाई पावै ॥ ११ ॥ ९८ ॥

श्री गदाधर भट्टजी महाराज कृत ॥ राग राइसौ ॥

सकल कुँवर गोकुल के निकसे खेलन फाग । हरि हलधर मधि नायक अंतर अति अनुराग ॥ १ ॥ ओलिन बूका वंदन रोरी हरद गुलाल । बाजत मधुर महुवरि मुरली अरु डफ ताल ॥ २ ॥ कनक कलस केसरि भरे कावरि किंकर कंध । और कहाँ लौं कहियै भाजन भरे सुगंध ॥३॥ हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अबीर । भीजि लगे तन सोभित रंजित रँग रँग चीर ॥ ४ ॥ लै कुसुमनि की गेंदुक करत परस्पर मार । छूटत फेंट लटपटी बिखर परत घनसार ॥ ५ ॥ कोलाहल ग्वालन कौ सुनि गोपिका अपार । टोलनि टोलनि निकसीं करि सोलह सिंगार ॥६॥ रूप माधुरी जिनकी कवि पै कही न जाइ । जिनहि मची रति रंभा पग हूँ परत लजाइ ॥७॥ अति ही सरस सुर गावति कोऊ जील कोऊ घोर । जिनहिं सुनत नहिं भावत बीना नाद कठोर ॥८॥ ललित गली गोकुल की होत विविधि विधि खेल । अगर सत कुमकुम की चली धरनि पर रेल ॥९॥ गयो गुलाल गगन चढ़ि भए ब्रज सदन सुरंग जनौ खुर खेह उड़ी है मैना

सजी अनंग ॥ १० ॥ सींचत हरि ना ना रंग भीजत गोपिनि गात । मनहुँ उमगि बसननि तें अंतर प्रेम चुचात ॥ ११ ॥ लगे बनिता बदननि पर कृष्णागर की पंक । प.र पूरन चन्द्रन तें जनौं च्वै चल्यौ कलंक ॥ १२ ॥ बोलत ग्वाल बराती हमरे हरि कौ ब्याहु । दुलहिनि गोप किशोरी मोहन सब के नाहु ॥ १३ ॥ सुनि सब गोपी कोपी हलधर पकरे धाइ । अंजन दै हग छांड़े मुख मृग मद लपटाइ ॥ १४ ॥ पुनि सब मिलि जुरि आइ घेरे मदन गुपाल । कनक कदलि मंडल में शोभित तरुन तमाल ॥ १५ ॥ जब वृषभानु दुलारी हरि भरि लीनें अंक । कही न जात ता सुख की मनौं निधि पाई रंक ॥ १६ ॥ कहि न सकत कोऊ हरि के अगनित चित्र चरित्र । जिहि तिहिं भांति गदाधर रसना करौं पवित्र ॥ १७ ॥ ६६ ॥

राग बिहागरौ—रंग हो हो होरी खेलैं लाड़िली वृषभान की । गोरे गात समात न शोभा मोहनी स्याम सुजान की ॥ १ ॥ अरगजा भरी फबी सारी तन कंचुकी परम सुहावनी । बेंनी सरस गुही मृग नैंनी प्रीतम हित उपजावनी ॥ २ ॥ वारौं मृग खंजन अंजन युत नैंन बने अति अनियारे । जिनकी तनक कटाच्छि भये बस लालन रूप उज्यारें ॥ ३ ॥ विद्रुम अधर मधुर मृदु मुसकनि बोलन हित रस भीनी । लोल कपोल अमोल अलक झलकत पुलकित अति झीनी ॥ ४ ॥ श्री मोहन जू के सुख के हित नख सिख भूषन कीने । कंचन मनि रतननि सों खचि सोभा प्रति अंगन दीने ॥ ५ ॥ साजि सिंगार सुकुमार कुमरि खेलन निकसी अति सोहै । हम न भई सहचरि यों कहैं सुर बनितन के मन मोहैं ॥ ६ संग अली रस रंग रली

इक इक तें रूप उज्यारी। ऐसी को तरुनी त्रिभुवन में जिन देखि न देह विसारी ॥ ७॥ एक भरी सोभा सुख विलसत फूलन की गेंदुक लीनें। लीनें फूलन की थारी मृगमद केसर सों पट भीनें ॥ ८ ॥ एक भरी अनुराग फाग लीनें पहुप पराग सुहाई। एक लिये हें गुलाल रंग बहु वरन वरन एक दाई ॥ ९ ॥ कंचन के कलसन केसर रंग संग लीने बहु दासी। और विविधि रंग लीये सोहत मोहत जहाँ कमला सी ॥ १० ॥ गावत मिल मधुरे स्वर सों शिव क्रोध दग्ध सुन मदन जियो। वाणी हू धरणी धरयो वीना थकित भई गयो मोह हियो ॥ ११ ॥ हँसत लसत दरसत मुख सोभा वरखत सुख की रासी। हरि मुख चन्द्र चकोर भई ब्रज जुवतिन की अँखियाँ प्यासी ॥ १२ ॥ सुन धुन श्रवण लाल मन मोहन सखन सहित खेलन आये। बाढ्यौ अति रस रंग परस्पर भये हैं सबन के मन भाये ॥ १३ ॥ दुहुँ दिस ते भर भर रंगन छूटीं छवि सों बहु पिचकारी। भीज लगे वागे अंगन इत भीज लगी अंगन सारी ॥ १४ ॥ तब ओलिन गोरिन भरि भरि बहु अवीर गुलाल उड़ायो। व्है रही धूंधरि सुगंध महा भई धरनि अरुन अंबर छायो ॥ १५ ॥ बाजत विविध पखावज आवज रुंज मुरज उफ ताल घने। लटकि लटकि अंसन भुज धरि धरि नाचत गावत ग्वाल बनें ॥ १६॥ भरत भरावत रस उपजावत भाजत राजत भाँति भलें। मार करें नवला कमला सी भामिनि भौंह नचाइ चलें ॥ १७॥ छिरकत नवल वधू नव रंगन नवल लाल तन मन हुलसें। मानों नवल प्रेम वेलिन पर नवल नीर नीरद वरसें १८

चीर लगे अंग अंगन देख सरस सुख नयन लये ॥ १९ ॥ तव दौरी गुलाल घूंघर कर जे चितवत चित्तन करषें। घेरि लिये घनश्याम भांमिनी दामिनि सी तन मन हरषें ॥ २० ॥ एक अरगजा माढ़त मुख सुख भरि आँजत लोचन छवि सों। इक माँगत फगुवा भुजि गहि गहि सो छवि कहि न परति कवि सों ॥ २१ ॥ रहि न परै उर अति सनेह भयो प्रगट कुसुम जल विमल लियो। केशरि घोरि प्रिया पिय ऊपर पुलकित डारत हुलस हियो ॥ २२ ॥ विहँस उठी दै ताल सखी सब कहति भई हो हो होरी। श्री गदाधर प्रभु हिय सदा विराजों गौर स्याम सुन्दर जोरी ॥ २३ ॥ १०० ॥

राग पंचम—देखौ री ब्रज बीथिनि खेलत हैं हरि हो हो होरी। गीत वजित्र कुलाहल कौतुक संग सखा गति कोरी।१।आई धाई झुंड़ झुन्डनि मिलि अगनित गोकुल गोरी। तिनमें युवति कदंब सिरोमनि राधा जू राज किशोरी ॥ २ ॥ बरषत ग्वाल बाल अवलन पर बूका बंदन रोरी। अरुन अकास देख संध्या भ्रम भई मुनि मन मति भोरी ॥ ३ ॥ रपटत चरन कीच अरगज की केसर कुसुम निचोरी। कही न जाइ गदाधर पै कछु वैभव मो मति थोरी ॥ ४ ॥ १०१ ॥

राग काफी—मिलि खेलत फाग बन में श्री बल्लभ वाला। संग खरे रस रंग भरे नव रंगी त्रिभंगी लाला ॥ १ ॥ वाजत वाँसुरी चंग उपंग पखावज आवज ताला। गावत गारी दै दै करतारी मनोहर गीत रसाला ॥ २ ॥ सींचत अंगनि रंग भरे बढ़यौ प्रेम प्रवाह विसाला। मैंन सैंन खुर रैंन उड़ी नभ छायौ अबीर गुलाला ३ कंचन वेलि करें जन केलि परे विच

स्याम तमाला धाइ धरे हँसि अंक भरे छूटे केस टूटी उर माला ॥ ४ ॥ देख पिकी भ्रमरी सबरी मृगी मोरी चकोरिनु जाला। श्री राधिका कृष्ण विलास सरोज गदाधर मत्त मराला ।५।१०२।

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत ॥ राग सारंग (झांझ)

नव निकुंज में होरी, श्री राधा मोहन । खेलत पिय संग गोरी, श्री राधा मोहन ॥ सखी वृन्द दुहुँ ओरी, श्री राधा मोहन । बनी अनूपम जोरी, श्री राधा मोहन ॥ लौंनी मूरति खुभी मिलौंनी चोली होली गावें । चोवा अतर अरगजा अंबर मजा अज्याइब ल्यांवें ॥ सौंधें की लपटैं आवें लपटत आंखिनि सों आवें । वल्लभ रसिक गुलाल उड़ावत धीरज लाज उड़ावैं ॥ १ ॥ तनसुख कौं रूमाल अतर सों तर करि निपट भिगावें । चितहि लगाइ चतुर कौंननि सों चोवा चतुर चढ़ावें ॥ करि करि घरी दुहूँ, कर पर धरि अदब लियें ढिग आवैं । वल्लभ रसिक लेति करतें तिय करतें धीरज जावें ॥ २ ॥ हियहि लगावें नैंननि लावें तिय कौं निपट सुहावे । पिय देखैं जनम सुफल करि लेखैं फूल्यौं अंग न मावें ॥ अधर कपोल पोंछ चोली में राखें धरि ज्यों भावें । वल्लभ रसिक लाल फिरि माँगैं सेंननि हा हा खावें ॥ ३ ॥ अरजनि करैं अजब तरजनि सौं बरजनि काम न आवैं । उरजनि तन देखें उरझनि सौं चतुर अली लखि जावैं ॥ और बनें न कछू तब और रूमाल बनाये ल्यावैं । वल्लभ रसिक लेंइ नहि छोड़ें हिलग्यौ यही कहावें ॥ ४ ॥ वाह वाह करि नैंननि लावैं सैंननि यों बतरावें । तो तन परसि रूमाल मरगज्यो मेरे जियहि जिवावें नव रंगी चंगी लगि

प्रीति कहाँ कोऊ पावैं ॥ ५ ॥ वल्लभ रसिक भरे रस रंगनि लाल गुलाल उड़ावैं। वन वेली फल फूल तरुनि लै लालें रंग मचावैं ॥ अलवेली के तन मन वसननि रंग अनंग रचावैं। श्री वृन्दावन अनुराग रूप यह होरी प्रगट दिखावैं ॥६॥१०३॥

राग धनाश्री—नवल वधू रंग भीनी प्रीतम संग खेलै। झूमि झूमि रसताननि गावत रिझई कुँवरि नवेलैं ॥ १ ॥ रंगीलो लाल पिचकनि रंग भरि भरि उरजनि ऊपर मेलै। मुरि मुरि वदन दुरावनि में मन भावनि कौं रस झेलैं ॥ २ ॥ मटकति धरति चरन धरनी पर लटकति हार हमेलैं। प्रफुलित नव वेली सी लहि लहैं झेलीं अलि अलवेलैं ॥ ३ ॥ अंचल पट चंचल चख अंचल मैंन सैंन कौ पेलैं। वल्लभ रसिक पिय घुमड़ि गुलाल में नव घन अंक सकेलैं ॥ ४ ॥ १०४ ॥

राग सारंग—होरी खेलत है नव बाल, छैल छबीलै सौं आजु होरी। वैस किशोरी गोरी गोरी चंपे की सी माल होरी ॥ टेक ॥१॥ सारी केसरि सौं रंगी लहकत लहँगा लाल। चोवा वैंदी कंचुकी दियें चोवा बेंदी भाल ॥२॥ ऊँची कसि वेंनी कसी तनि उकसी भौंह सुभाइ। मद छाकी आँखियाँ लसैं विहसैं रस के चाइ ॥३॥ लटकत बाजू बंद तर फौंदा अति अभिराम। निकसे भुज मूलनि कसे चोली मुहरा श्याम ॥४॥ हरी चुरीं तर लटपटी लपटी मुक्ता दाम। कर लै निकसे गरव से नरगस डाँडी बाम ॥५॥ रतन चोक प्यारी करनि प्रतिबिंबित जु किशोर। हाथ बीच प्रीतम सुन्यौ सु झलकत इतकी ओर ॥६॥ लाल पगनि सौं जे भरे उभरे डाँक लगाइ। करन फूल झूलत रहैं कानन ही में आइ ७ नथ के मुकतनु हू रंगे देखि लाल सौं हाल नथ के बँधे

बसन मनहि रंगत रंगीले लाल ८ झीनी आगी अग्र कुच
झाँई यह मति देति। हिय की अँखियाँ तीय की पिय की छिपि
छबि लेति ॥ ९ ॥ तार बँधे बैना सँधे सिर पर राखे बाल।
मुक्तनु हूँ कौं होतु है अंगन परसत हाल ॥१०॥ घूँघट में बाजी
करत निकरत बाजी नैंन। सिर पर कलंगी सी हलैं भलैं भौंह
की सैंन ॥११॥ श्याम पोति की जोति तर कंठ माल की ढार।
चंपकली के तर हलैं वर हमेल अरु हार ॥ १२ ॥ लसी उरवसी
तीय उर धुर कुरसी पर जाइ। तऊ घर बसी पीय उर धसी जीय
ललचाइ ॥१३॥ रुकि रुकि रही जु नवल तिय धुकि धुकि पटके
मांहि। लुकि लुकि देखैं लाल कौं झुकि झुकि झटकैं बांहि ॥१४॥
झमकैं झूमक सारियाँ दमकैं दीपति अंग। खमकैं खएनि अंगियाँ
रमकैं रंगी अनंग ॥१५॥ मटकै मौर मरोर सौं लटकैं बैंनी चारु।
पट कै अंतर झलमलैं तटकै फूलन हारु ॥ १६ ॥ वनक कनक
सी पाग की मन कु गसी चिंकनाइ। तनक पेच के देत में मन कु
पेच परि जाय ॥१७॥ लटकत तुर्रा पाग पर मनसिज कुर्रा भाइ।
मान चोर फुर्राइ कैं जुर्रा लौं उड़ि जाइ ॥ १८ ॥ निज सूरति
की उरवसी पिय सिर चढ़ी दिखाति। त्यौं त्यौं तिय इत सिर
चढ़ी सु राति द्यौस इतराति ॥ १९ ॥ सिरकिन हूँ तिय कै सची
खिरकिनि पगिया सेत। छिरक छबीलौ छकि रह्यौ थिरकि थिरकि
सुख लेत ॥ २० ॥ कटि मन भाँवन पै रही जटि मन भावन
फेर। दावन लागी हीं रहैं वैरी दावन घेर ॥ २१ ॥ झूलत
एकहि छोर सौं करत कुलोल अमंद। लाला वाला वंद सौं कीनी
बाला वंद ॥ २२ ॥ नैंकु निहारैं जो मुसकि मारैं डारैं तीय।
पिय इजार तिन तियनि के लेति इजारैं जीय ॥ २३ ॥ मुक्तनु

हूँ कौं देखि री बँधे लाल के संग । चलि चलि कानन तें करैं आनन ही में रंग ॥ २४ ॥ फूल भरी दुलरी करी कंठ धरी है लाल । तोऊ सरकि सरकें फरकि मिलहि माल जिमवाल ॥२५॥ सघन जघन खन कुचल तन पिचकनि सचि रंग रात । परसत दरसत अँगनि कें तरस तरस सरसात ॥ २६ ॥ तिय पिय चष लषि पिचक लै छोडै धार अछेह । सीखी संग घन स्याम कै रंग कौ वरषत मेह ॥ २७ ॥ गहि गहि लाल गुलाल कौ कर सौं छोडै वाल । रस भीजे लपटे भये कर विच लाल गुलाल ॥ २८ ॥ लै लै मुठी गुलाल की दै दै अंचल ओट । कै कै चंचल चषनि कौ द्वै द्वै करहीं चोट ॥ २९ ॥ झपटति लाल गुलाल कौ रपटति पिय की ओर । कपट तिया के हीय में लपटति भजति लजोर ॥ ३० ॥ डफरी तिनि पर आँगुरी सर सफरी सी जोरि । विफरी गारी गावहीं सफरी सी चख ढोरि।३१। गावन चावन सौं लगे डफहि वजावनि लाल । भावनि सौं भींजीं फिरैं दावन लागीं वाल ॥३२॥ सुर मारग के बीच हीं थिरकि अधर कर संग। वजि वजि में रंगें रँगें चंगें मुह मुहचंग ॥३३॥ खंजरीट नैंनी लियें सुघर खंजरी आजु । खंजरीति मन की करति मंजुरीति कै वाजु ॥ ३४ ॥ भीनी अलक फुलेल सौं छुटी कपोलनि आइ । लगि लगि आँचर सौं फिरी दियौ कुमाच चढ़ाइ ॥ ३५ ॥ भाइ भरी परि लाजनी दवि दुरि निकसी जाइ ।पाइल पाँइनि वाजनी लालहि लेति वुलाइ ॥ ३६ ॥ चोली चुपरि फुलेल सौं झोली झेलि गुलाल । तोलीं-ताननि गावहीं होली ही के ष्याल ॥ ३७ ॥ आनन पानद सौं रचे कानन राचे नैन सैननि सौं वातैं रचैं रचैं मचैं उमचैन ३८ रागे रागनि

जोर । ३९ तारनि में ताननि करे तिय गल पिय कल वीन दुहुनि मीत ऑंको भरे करे सुरनि आधीन ४० धरे तँबूरा कंध सुर भरें उचाए नारि । चूरा जूरा सों जुरें दुहुँ सुर जुरे जवारि ।४१। सुरत रंग कों अंक लै मुँह मूँदें तें ज्यों जोर । परसत करत मृदंग यह नवल तिया लों सोर ॥४२॥ नवला सींव सनेह की नवलासी लै आइ । नवल कपोल कलोल सों छल सों जाइ छुवाइ ॥ ४३ ॥ ठाड़े सकुच गहें कहें क्यों हूँ न नागर नेति । कर उचाइ अति चाइ सों नागरि अंजन देति ॥ ४४ ॥ दीठि लगे दीठ्यौ लगे लगे मूठि लगि मूठि । वेंदी आड़ दियें लगे संग दीठि अरु मूठि ॥४५॥ सतर उरज पिय अतर सों कर सों वल मलि दीन । नतरकु अंजन देत तिय सतर भोंह कत कीन ॥ ४६ ॥ अरगजाइ हूँ लजाइ तिय जद्यपि अंजन दीन । पिय चोली लगि अरगजा रस भिजाइ हिय लीन ॥ ४७ ॥ रंग धाइ पिचकें चलें मूठिनि चलें गुलाल । चोवा के चुरवा चलें चलें अतर रुमाल ॥ ४८ ॥ रतन पिचक मुदरी तरें मूठि मॉंझ न दिखाइ । औचक छोड़े लाड़िली चौंकि चतुर मुसिकाइ ॥ ४९ ॥ उपरैनी डारी उलटि पिय मन लेनी जोर । लटकें लटके ढिंग भले हलें वादले छोर ॥ ५० ॥ उलटि अँगूठा आरसी लखि मुख पोंछनि मांहि । प्रतिबिंबित लालहि लखै ओठ ऐंठ इठलांहि ।५१। हँसे हँसावें गावहीं है सब रस की ऐंन । काय व्यूह कीये दीये मन मन गैठ्यौ मेंन ॥ ५२ ॥ जोरी धन सों गांठि ले छोरी तन मन गांठि । होरी होरी कहत है वोरी आनंद गांठि ॥ ५३ ॥ छूटि छूटि अंचल गऐ टूटि टूटि गऐ हार लूटि लूटि छवि पिय

छके घूटि घूटि रस सार ॥५४॥ दरकि दरकि चोली तनी तरकि तरकि गई टूटि । सरकि सरकि तन मन मिले ढरकि ढरकि रस लूटि ॥५५॥ मन पटुका मन कर गह्यौ फगुवा कहें बनेंन । मन दीयें मन ही लियें भए दुहुनि मन चैंन ॥ ५६ ॥ पिय मन दीयें ही रह्यौ तिय हिय जिय आनंद । तिय मन लीयें ही रह्यौ पिय हिय जिय आनंद ॥५७॥ दोहा सम दोहा सबै नहि पुनिरुक्तिहि जान । हैं न्यारे वल्लभ रसिक रसना मिलि रसखान ॥ ५८ ॥ होरी खेल कहें न क्यों दुहुनि मेंन सुख दैन । वल्लभ रसिक सखीनि के रोंम रोंम में बैंन ॥ ५९ ॥ १०५ ॥

श्री कुंभनदासजी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥

होरी कौ है औसर जिनि कोऊ रिसि मानें । काहू कौ हार तोरै काहू की चोली मोरै काहू की खुभी लै भाजे ॥ अचानक काहूँ कें पिचकाई नेंननि ताकि तानें । काहू की नकवेसरि पकरें काहू की बैंनी गहें कसि री झटकि आनें । कुंभनदास प्रभु गिरधर खेलत इहि विधि सब रंग जानें ॥ १०६ ॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥

सब ब्रज कुल के राइ । लाल मन मोहना ॥ ध्रु० ॥ नवल कुंवर खेलन चले । मन मोहना ॥ मुदित सखा संग लाइ । लाल मन मोहना ॥ स्याम अंग भूषन सजे । मन मोहना ॥ विमल वसन पहिराइ । लाल मन मोहना ॥१॥ निकसि द्वार ठाढ़े भए । मन० ॥ मुरली मधुर बजाइ । लाल० ॥ श्रवन सुनत सब ब्रज वधू । मन० ॥ जहाँ तहाँ ते चली है धाइ । लाल० ॥ २ ॥ विविधि भांति बाजे सजे । मन० ॥ ताल मृदंग उपंग । लाल० ॥ रुंज मुरुज डफ दुंदुभी मन० । कर कठताल सुरंग लाल०

॥ ३ ॥ जुवति जूथ सों धावहीं । मन० ॥ भरि पिचकारी हाथ । लाल० ॥ चहुँ दिसि तें वे छिरकहीं । मन० ॥ भरति कुँवर गोपीनाथ । लाल० ॥ ४ ॥ बहुरि सखा सनमुख भए । मन० ॥ आगे दै बलबीर । लाल० ॥ प्रमुदागन पर वरषहीं । मन० ॥ कुमकुम रंग अबीर । लाल० ॥५॥ बहुरि सिमिटि ब्रज सुंदरी । मन० ॥ मोहन लीने घेरि । लाल० ॥ एक जु मुरली लै भजी । मन० ॥ एक कहैं देहु फेरि । लाल० ॥६॥ एक पीत पट गहि रही । मन०॥ फगुवा देहु कुमार । लाल०॥ ऐसें हम न पतीजिहीं। मन० ॥ गहनें धरि उर हार । लाल० ॥ ७ ॥ ललित बचन ललिता कहै । मन० ॥ सुनि गोकुल के राइ । लाल०॥ तौ हम तुमकों छाड़हीं । मन०॥ श्री राधा कौं सिर नाइ । लाल० ॥८॥ प्यारी कर काजर लियौ । मन०॥ आंजे पिय के नैंन । लाल०॥ पट अंचल मुख दै हसैं । मन०॥ मिलिवत कर दै सैंन । लाल० ॥९॥ अरुन नैंन अति रस मसे । मन०॥ अंजन खरे विराज । लाल० ॥ जुगल कमल मुकलित मनों । मन०॥ वैठे जुग अलि राज । लाल० ॥१०॥ कुच ऊपर लट लटकहीं । मन०॥ लागति परम सुदेस । लाल० ॥ मानों भुवंगिनि चहूँ दिसा । मन० ॥ आई अमृत पीवन राकेस । लाल० ॥ ११ ॥ खसति बलय कटि किंकिनी । मन० ॥ पिय संग करत बिहार । लाल० ॥ अति रस भरीं ब्रज सुंदरी । मन० ॥ अंग न कछू सँभार । लाल० ॥१२॥ ऐसें ही पिय संग खेलहीं । मन०॥ गावति गौरी राग ॥ लाल०॥ नवल कुंवर पर अति बढ्यौ । मन० ॥ छिन छिन प्रति अनुराग । लाल० ॥ १३ ॥ पिय मुख निरखत फूलहीं मन० प्रमुदित

अपने अपने टोल । लाल० ॥ १४ ॥ इहि विधि होरी खेलहीं । मन० ॥ ब्रजवासी संग लगाइ । लाल०॥ घोष नृपति सुत बदन की। मन०॥ जन गोविंद बलि बलि जाइ। लाल०॥१५॥१०७॥

राग आसावरी—धनि धनि नन्द जसोमति धन्य सु गोकुल गाम । धन्य कुँवर दोऊ लाड़िले वल मोहन जाकौ नाम ॥ छबीले हो ललना ॥१॥ सखा नाम लै लै बोलहीं हो सुबल तोष श्रीदाम। जहाँ तहाँ ते सब उठि चले हो बोलत सुँदर स्याम ॥२॥ भेष विचित्र बनाइयो हो भूषन वसन सिंगार । निज मंदिर तें सजि चले हो बालक बनि बन वार ॥३॥ गिरधरधारी रसभरे हो मुरली मधुर बजाइ । श्रवन सुनत सब ब्रज बधू जहाँ तहाँ ते चले धाइ ॥४॥ रुंज मुरज डफ दुंदुभी हो बाजे बहु विधि साज। विचि २ भेरि सुहावनी हो रह्यो घोष सब गाजि ॥५॥ पिचकारी कर कनक की हो अरगजा कुमकुम घोरि। प्रान प्रिया कों छिरकहीं हो तकि तकि नवल किशोर ॥६॥ एक ओर जुवतीभई एक ओर बलवीर। कमलन मार मचाइ हो रुपे सुभट रनधीर ॥७॥ ललिता विसाखा मतौ मत्यौ हो बूझौ सुबल बुलाय। हा हा क्योंहूँ भांति कैं हो नेंक गिरिधर देहु गहाइ ॥ ८ ॥ हँसत हँसत सब आइ यो हो लीने मोहन घेरि । नेंननि काजर आंजि कें हो नेंक कहत वदन तन हेरि ॥९॥ उलटि आय ठाड़ी भई अपने अपने टोलि। झूमक दै तब गावहीं हो बिच बिच मीठे बोल ॥ १० ॥ इहि विधि होरी खेलहीं हो सकल घोष के राइ। गिरिवर धर के रूप पै जन गोविन्द बलि जाय ॥ ११ ॥ १०८ ॥

श्री रामरायजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

महा मोहन ढोटा साँवरौ हो अरी मेरो लीनो है चित्त वित

चोर विराजत आज महा रंग भीनो ठाढ्यो है साँकरी खोर ॥ १ ॥ सोभित रतन जटित पिचकारी अबीर भरे भरि फेंट। फाग भरे अनुराग भरे सों भई है अचानक भेट ॥ २ ॥ व्है रही ढीली पाग रँगीली कुंचित कच न समांहि। चंचल नैन अरुन अनियारे छबि भरे मुरि मुरि जांहि ॥ ३ ॥ जग मगाय रहे श्रवनन कुण्डल गंडन लग्यौ है गुलाल। कान्ह कुँवर की मूरति देखें चलि न सकी तिहि काल ॥ ४ ॥ चितयौ काहू भांति सखी उन करी है मदन सर घात। पान भरे मुख हँसि मोसों कही, प्रेम लपेटी वात ॥ ५ ॥ रूप ठगोरी किधों अरगजा दियौ मोपै ढ़रकाइ। बूका मंत्र मनों पढ़ि डारयो तन मन लियौ अपनाइ ॥ ६ ॥ भूली लाज कानि की सब सुधि चित न अनत ठहराइ। रामराय के हित भगवानहि स्याम को संग सुहाइ ।७। ॥ १०६ ॥

राग काफी—वृन्दावन चंद लाल रंग भरे हो, ब्रज जन नैंन चकोर री। नन्द लाल की नव जोवनता लियौ सबनि को चित चोर री ॥१॥ बाँकी पाग वदन अति सुन्दर स्याम मनोहर गात। रितु बसंत के वसन पहरि पिय अंखियनि माँझ समात ॥ २ ॥ कमल नैंन कर लई पिचकारी फेंटनि पहुप पराग। अति सोभित संग मित्र मंडली खेलत डोलत फाग ॥ ३ ॥ किंकर बने लियें कंचन घट भरे बहुरंग सुगंध। इंद्र मानों देखन कै कारन हरि काँवर लई कंध ॥ ४ ॥ भवन सुहाये रंगे है अबीर रंग खेल मच्यौ ब्रज मांहि। बड़ भागिनि गोकुल की ललना जिनि हरि देखन जाहि ५ बाजत बहु बाजन रागनि मिलि सुख समुद्र

६ सुनि निकसी वृषभान नंदिनी संग लियै प्रेम समाज इत बने सकल कुँवर गोकुल के मधि साँवरो सिरताज ॥७॥ कुशम गेंद कमलनि नवलासिनि मार करत ब्रजबाल। ग्वालनि की किलकनि भरि भाजनि हँसत है मदन गोपाल ॥ ८ ॥ घात बनी गुलाल धूँधरि में अछन अछन चली बाम। निकट जाइ दौरी दामिनि ज्यौं घेरि लये घनश्याम ॥ ९ ॥ कोऊ इक गिरिधर की सुन्दरता छकी निहारि निहारि। कोऊ एक पकरन मिस रही भुज भरि अपने प्रान आधार ॥ १० ॥ कोऊ गहै चिबुक देख्यौ चाहत दृग इत चितवहु नन्दलाल। कोऊ कहै लालन गहि पाये द्वौ कर लपटत वनमाल ॥११॥ फागु भरी अनुराग भरी तन चितवत आनंद कंद। वनिता वदन सरोज भवर हरि पीवत रूप मकरंद ॥ १२ ॥ बहुत भांति छिरक्यौ प्यारी राधा अपने चित कौ चैन। नटवर वपु सौं भीजि लगे पट लपटे तियनि के नैंन ॥१३॥ अति रंग भीनो मन हरि लीनो सुन्दर स्याम सुजान। रामराइ प्रभु गिरिधर छवि पर वलि कीनो भगवान ॥१४॥११०॥

श्री सूरदासजी महाराज कृत—राग काफी

तुम चलो सबै मिलि जाँय खेलन होरियाँ। अपनी अपनी सुरंग चूनरी मोतिन माँग भरोरियाँ ॥ १ ॥ थरहरात अधरन पर मोती अँगिया केसर बोरियाँ। चोवा चंदन अगर कुंकुमा भरि भरि देत कमोरियाँ ॥२॥ अंग सों अंग गुलाल विराजत भली बनी यह जोरियाँ। केहरि लंक नितंब विराजत गज गति चाल चलोरियाँ ॥ ३ ॥ पिचकाई मोहन पर डारत विहसी घूँघट खोलियाँ। बाजत ताल मृदंग और डफ पढ़ि पढ़ि बोलत गोलियाँ ४ नयन आँज मुख मांडि स्याम को सब मिलि

करत कलोरियाँ सूरदास प्रभु सब सुख क्रीड़त विहरत ब्रज की खोरियाँ ॥ ५ ॥ १११ ॥

श्री ब्रजईश जी महाराज कृत ॥ राग सोरठा ॥

हौं कैसें जमुना जल जाऊँ री, हरि मोतन हेरै ॥ टेक ॥ नीचे रहै घूँघट के मेरे सनमुख दर्पन लाय । मुख प्रतिबिम्बहिं निरखि कैं, मेरी छिन छिन लेत बलाय ॥ डगर बुहारै काँकरी री, डारत दूरि उठाइ । मृदु वचनन मोसों यों कहैं, तेरे चरनन जिनि चुभ जाय ॥ जब ही हौं गागरि भरौं री, तबहीं बैठि अन्हाय । तू जिनि परसै सीत में, कहै मोही पै जु भराय ॥ हँसि कर सौं उठावै री, छल कर पकरै बाँह । क्यों हूँ हठको ना रहै, मेरी मिसि करि परसै छाँह ॥ जदपि सकल ब्रज सुन्दरी री, सब सों खेलै फागु । मन वच क्रम ब्रज ईश सों, नित मोही सों अनुराग ॥ ११२ ॥

श्री जनदियालजी महाराज कृत ॥ फाग रवानौ-फागुन सुदी पूर्णमासी कौ ॥

गोपनि कै आनंद ब्रज फागु रमानों ॥ टेक ॥ रितु बसंत के आगम फागुन अति बड़ भागम । पून्यौ अरु गुरुवार मघा से दसैं समागम ॥ गर्गायस लै गौरवैं डाँडो रोप्यौं जाइ । कुसल भयानैं देस की विप्र कहत समझाइ ॥ १ ॥ वासर गत वितयें सजनी रजनी जब आई । घर घर बालक सिमिटि मदन की फिरी दुहाई ॥ गारी देत निसंक हीं आरज पथनि लज्याइ । मुख करि सबै लजात है आनंद उर न समाइ ॥ २ ॥ स्याम सुबल सौं मतो मत्यौ दाऊ जू (को) पैये । बड़े भोर बरसाने होरी खेलन जैये भली बात सबहिनि कही रवि कें उदय पयान कनक

सखनि सहित बन बाजे साजे। रुंज मुरज नीसान झाँझ झालरि डफ बाजे॥ आनक भेरि मृदंग मिलि अरु गावत गोप धमारि। नंदीस्वर ते उत्तरत उमगी सुख सागर की वारि॥ ४॥ नौंवत स्वाँग बनाइ जोग मुद्रावलि लियें। तांडव निर्त्त कराइ मत्त वारुनि सी पीयें॥ जाइ सिमिट एकठे भये वृषभान गोप की पौरि। सखिनि सहित प्यारी राधिका चढ़ी अटा पर दौरि॥५॥ उझकि झरोखनि झाँकति कोटिक चंद लज्याहीं। रसिक कुँवर तहाँ आइ निरखि परसत परिछांहीं। नैंना सों नैंना मिले कोऊ न पावत पार। श्री स्यामा हँसि रीझि कें डारयौ पिय पर हार॥ ६॥ मृग मद साखि जवादि कुमकुमा अति घन घोरी। भरि पिच-कारिनि छिरकत बोलत हो हो होरी॥ उड़त अबीर गुलाल है जहाँ बासर गयौ छिपाइ। राधा ललिता सैन दै बल पकराये धाइ॥७॥ चंदभगा मुख माँड़ति ललिता अंजन पारति। इंदा बिंदा प्रेम कलस लै सिर ते ढारति॥ पटुका लियौ छिड़ाइ कें मनौं आवत गज राज। स्याम सखन सों कहत है भले बनें दोऊ आज॥८॥ मेवा बहुत मगाइ दीन ठहै फगुवा दीनौ। पटुका लियौ मगाइ मनोरथ सब कौ कीनौ॥ कीरति जू आनंद भरी चितै स्याम की ओर। कछु मन में बांछित भई करि अंचल की छोर॥ ९॥ जिनके मन हरि लिये संग लागी फिरें भामिनि। खेलि न सकत कुँवर सों राधा जू कौंनिनि॥ मुरली माहि बजावहीं मन मोहन मधुरी तान। रही चित्र की सी लिखी कौंन कहै घर जान॥ १०॥ रात द्यौस के खेल महीना जात न जान्यों। नर नारी बड़ छोट सुफल जीवन करि मान्यों॥ साँझ परी दिन अँथयो होरी पहुँचे ग्वाल। तहाँ रोकि ठाड़े भये मधि नायक

नंदलाल ॥ ११ ॥ घर घर ते सब सिमिटि महत दै सबै बुलाई। रेसम पाट पुहाइ भाल गूजरी बनाई॥ आनंद गारी गावहीं अप अपनी अगवार। होरी जान न पावहीं रोकी है सहज दुवार॥१२॥ एकनि कें कर वंश एक लीने कर डारें। होरी पूजन चलीं धाम सिद्धनि के टारै॥ नवल छैल पौरी रुपे करि जेरिनि की ओट। कपट मारु छवि चारु दै दीनी काम करोट ॥ १३ ॥ घरी महूरत सोधि नंद सब गोप बुलाए। अच्छित पाती दूब सहित होरी पै आए॥ नर नारिनु पर भेटहीं सो सब दीनी जाइ। वेद रिचा विप्रनि पढ़ी घृत आहुति सौं लाइ ॥ १४ ॥ कुटुंभ सहित सिर नाइ सबनि परिकर्मा दीनी। कुशल मानि जिय जानि धूरि की वंदन कीनी॥ वाइस ओर भली भई कहत सयानें लोइ। बल मोहन होरी में गारी सो अजरामर होइ ॥ १५ ॥ ब्रज वासिनि की चरन रेंनु ब्रह्मा शिव जाची। अष्ट सिद्धि नव निद्धि द्वार घर घर के नाची॥ ब्रजरानों ब्रज जन सहित गये भीतरी पौरि। जसुदा कीनी आरती बलराम कृष्ण की दौरि ॥१६। गज मोतिन के हार डोर कर कंकन लीनें। गोपी ग्वाल बुलाइ द्विजनि जाँचक कों दीनें॥ दै असीस घर कों चले आनंद सिंधु बढ़ाइ। गोप कुँवर नंदलाल पर जन दयाल बलि जाइ॥ १७ ॥ ११३ ॥

श्री माधुरीदासजी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

रंग हो हो हो हो होरियाँ। उत बनै नवल किशोर रसिक वर, इत बनी नवल किशोरियाँ॥ १ ॥ वे नव नील स्याम घन सुंदर ये कंचन तन गोरियाँ। इनकें अरुन बसन तन राजत, उनके पीत पटोरियाँ॥ २ ॥ एकनि कर गेंदुक नवलासी अरु फूलन भरि झोरियाँ। भाजत राजत भरत परस्पर परिरंभन

झक झोरियाँ ॥ ३ ॥ राखी करनि दुराइ सवनि मिलि केशरि भरी हैं कटोरियाँ । छल वल सों दुरि मुरि लपटावति चंदन वंदन रोरियाँ ॥ ४ ॥ बाजत ताल मृदंग मुरज डफ मधुर मुरली धुनि थोरियाँ । नाचत गावत करत कुलाहल परम चतुर अरु भोरियाँ ॥ ५ ॥ फेंटनि भरें गुलाल विविधि रंग अरगजा भरी है कमोरियाँ । सनमुख दृष्टि वचाइ धाइ करि स्याम सीस पर ढोरियाँ ॥६॥ याही रस निवहो निसि वासर बंधे प्रेम की डोरियाँ। माधुरी के मन सुख के कारन प्रगटी भूतल जोरियाँ ॥७॥१९४॥

धमारि—अति सरस्यौ वरसानों जू । राजत रमणीक रवानों जू ॥ १ ॥ जहाँ मनि मय मंदिर सोहै जू। उपमा कों रवि शशि को है जू ॥ २ ॥ नित होत कुलाहल भारी जू। मन मुदित सकल नर नारी जू ॥३॥ वृषभानु गोप जहाँ राजै जू । कीरति जाकी जग गाजै जू।४।जव दिन होरी को आयौ जू न्योंतो नंद गाँव पठायौ जू।५।सुनि कें मन मोहन धाये जू । सव सखा संग लियें आये जू ॥ ६ ॥ श्री जसुमति न्योंति बुलाई जू । समधिन समधानें आई जू ॥७॥ कीरति आगैं ह्वै लीनीं जू । मनुहारि बहुत बिधि कीनी जू ॥ ८ ॥ आवो निजु भवन विराजो जू । वरसानो सकल निवाजो जू ॥ ९ ॥ अति कृपा अनुग्रह कीनें जू । हमतो अपनें कर लीनें जू ॥ १० ॥ गुन गनें न परें मुख गाथा जू । व्रज कीनों सकल सनाथा जू ॥ ११ ॥ तुम तो सव की सुखदाई जू । मुख कीजै कौन बड़ाई जू ॥ १२ ॥ तुम तो सबकी सुख रासी जू । ये सफल किये ब्रजवासी जू ॥ १३ ॥ तुम तो यह निज व्रत लीनों जू । जिन जोई जाच्यौ सोई दीनों जू ॥ १४ ॥ यह जस तुम्हरो जग जानें जू । इहि सुख कवि कौन बखानें जू १५ जव कर गहि ढिग बैठारी ज गावैं

गारी ब्रजनारी जू १६ तुमको बूझै एक बाता जू तुम साँची कहो यह गाथा जू ॥१७॥ जब गरग तिहारै आये जू । बहु नाम कृष्ण गुन गाये जू ॥ १८ ॥ मुनि वासुदेव करि लेखे जू । बसुदेव कहाँ तुम देखे जू ॥ १९ ॥ यह सुनि सुनि बात तिहारी जू । अचिरज उपजत जिय भारी जू ॥ २० ॥ औरों शंका जी आवै जू । यह भेद न कोऊ पावै जू ॥ २१ ॥ पति साधु परम तुम पाये जू । यह पूत कहाँ ते जाये जू ॥ २२ ॥ याके गुन रूप नियारे जू । यह मिलें न कुलहि तिहारे जू॥ २३॥ हमसों सब लाज निवारो जू । ऊँचे ह्वै क्यों न निहारो जू।२४। कछु कह्यौ हमारौ कीजै जू । वसि कैं सब को सुख दीजै जू।२५। रहिये कछु द्यौस हमारे जू । हम तो है सकल तिहारे जू।२६। तुम दोऊ एकहि करि जानों जू । नंद गाँव सोई वरसानों जू।२७। जैसे कछू नंदहि मानों जू । तैसे बृषभानहि जानौ जू ॥ २८ ॥ दोऊ है परम सनेही जू । ये एक प्राण द्वै देही जू ॥२९ ॥ तब हँसी सकल ब्रजवाला जू । मुसके कछु नंद के लाला जू ॥ ३०॥ सुनि सुनि जसुदा मुसकानी जू । वोली कछु मधुरी वानी जू।३१। बसहें कछु द्यौस तिहारै जू । कीरति चलि बसहु हमारैं जू॥३२॥ तब हँसि सकल ब्रजनारी जू । जसुमति की ओर निहारी जू ॥ ३३ ॥ ब्रज भयौ कुलाहल भारी जू । नाचैंहिं दै दै करतारी जू ॥ ३४ ॥ यह रस वरसै वरसानें जू । बिन कुँवरि कृपा को जानें जू ॥ ३५ ॥ कीरति जसुमति जसु गायौ जू । ब्रज वास माधुरी पायौ जू ॥ ३६ ॥ ११५ ॥

राग बिलाविल　आगम सुनि रितुराज कौ फूलीं सब ब्रज

नव नवलासी फूल की लियें फूल भरि झोरी जू । केसरि चंदन वंदना अरु घसि लीनी रोरी जू ॥ २ ॥ मंगल साज सबै लिये सब निकट कुँवरि कें आई जू । प्रथमहि दिवस वसंत कौ मन हरषित देत वधाई जू ॥ ३ ॥ गावैं गीत सुहावनें मन हरषित नवल किशोरी जू । सब व्रज कुशल समाज सौं फिरि आई फागुन होरी जू ॥४॥ ताल मृदंगन वाजहीं रुंज मुरज सहनाई जू । डफ दुदुभि अरु झालरी मानो वाजत मदन वधाई जू ॥५॥ सुनि सुनि घोष कुलाहलै जिय सबकौ सरसानौ जू । गिरिधर के अनुराग सौं रंग भीजि रह्यौ वरसानौ जू ॥ ६ ॥ इहि विधि साज समाज लै सब चली राय जू की पौरी जू । श्रीराधा जू के लेन कों हँसि उठि नंदरानी दोरी जू ॥७॥ प्रथमहि केसरि नीर लै अंग चीर सबै रंग वोरे जू । मृगमद अरगजा घोरि के सिर भरि भरि गडुवा ढोरे जू ॥ ८ ॥ सोंधों सुरंग गुलाल सों वहु साधि जवादि मिलाए जू । दोरि अचानक लाड़िली हँसि महरि वदन लपटाए जू ॥ ९ ॥ छिरक्यौ सब मिलि धाइके तब छल वल सों उठि दौरी जू । जानि कुँवरि वृषभान की तव महरि लई भरि कौरी जू ॥ १० ॥ चूँवति चापति प्रेम सों हँसि पुनि पुनि कंठ लगावै जू । जो कछु आनंद जीय कौ सुख कहत कह्यौ नहिं आवै जू ॥ ११ ॥ तव मनि मय नाना भांति के वहु भूषन वसन मंगाये जू । तो इनिकौ हम लेंहि जौ कहौ गिरिधर कहाँ दुराये जू ॥१२॥ कछु ऊँचे चष चाह कैं महरि वदन मुसक्यानी जू । नागरि सब गुन आगरी वात हिये की जानी जू ॥ १३ ॥ सब जुवती जन धाइकैं तव जाइ चढी चित्रसारी जू । सकुचत वदन दुरावही हँसि गहे जाइ गिरिधारी जू १४ घेरि लिये

चहुँ ओर ते अब छूटहु कहाँ पलाने जू क्यौ जुवतिनि के वस परे कहियत अधिक सयाने जू ॥ १५ ॥ कोऊ बातें भेद की कहि काननि में उठि दौरी जू। कोऊ अचानक आइ कें तव लाल लये भरि कौरी जू ॥ १६ ॥ काहू नाना भाँति कें रचि चित्र कपोलनि कीनो जू। काहू मरूवटि मांडि कें मधि वेंदा रोरी दीनो जू ॥१७॥ काहू नीकी भांति सो अंजन नैंन वनायौ जू। इक सहजहि चपल कुरंग से अरु ढरकि श्रवन लों आये जू ॥ १८ ॥ काहू गहि गूँथी वेंनी रचि मोतिन माँग सँवारी जू। तनसुख की सोंधें भीनी सुठि सरस बनाई सारी जू ॥ १९ ॥ चंपक लता चलि चाइकें चिवुक दिठोना दीनो जू। मोहि रही सब मोहिनी रूप मोहनी कीनो जू ॥ २० ॥ तव नाना वरन अवीर लै दुरि मोहन वदन लगावै जू। पूरन चंद मानों घन में इन्द्र धनुष सौ छावै जू ॥ २१ ॥ केसरि ढोरी सीस तें भूमि ढरि ढरि चलै पनारे जू। सोंधें सुरंग गुलाल सों सव भरे घरनि के द्वारे जू ॥ २२ ॥ सनमुख मुखहि निहारि के सुख निरखत कोऊ न अघानी जू। गावैं गारि सुहावनी अति रस सो लपटानी जू ॥ २३ ॥ तब आगें गहि मोहनहि हँसति हँसति तहाँ आई जू। घूँघट सों पट ढांपिकें पगनि महरि के लाई जू ॥२४॥ यह कन्या काहू राइ की तिनि आइ समर्पन कीनी जू। रूप वैस गुन स्याम के जोटि विधाता दीनी जू ॥ २५ ॥ हरषित मन आनन्द सों तुम वाँटहु आजु वधाई जू। विधु तें रूप उजागरी हम कान्ह वधू लै आई जू ॥ २६ ॥ विहसि वधू को नाम सुनि तव महरि गोद वैठारी जू प्रमुदित अति आनंद सों कछु विधि

[illegible]

चुँवत मुसिक्यानी जू। हँसी परस्पर नागरी तब देखत महरि लजानी जू ॥२८॥ हो हो होरी बोलहीं नाचत दै कर तारी जू। प्रमुदित करत कुलाहलै गावति सब ब्रज नारी जू ॥ २९ ॥ यह ब्रज होरी के खेल कौं सब सुख ते सुख न्यारो जू। यह समाज नित माधुरी के टरौ न उर तें टारचौ जू ॥ ३० ॥ ११६ ॥

श्री नरहरिदास घनश्याम जी महाराज कृत ॥ राग बिलावल ॥

नंदगाँव कौ पाँड़े ब्रज बरसाने आयौ। भरि होरी के बीच सजन समध्याने धायौ ॥१॥ पांड़े जू के पायनि कौं हँसि शीश नवायौ। अति उदार वृषभान राय सनमान करायौ ॥ २ ॥ पाँय धुवाय अन्हवाइ प्रथम भोजन करवायौ। भानु भवन भई भीर फाग कौ खेल मचायौ ॥ ३ ॥ समध्याने की गारी सुनत श्रवण सुख पायौ। धाई आई और सखी जिनि सोंधौ नायौ ॥ ४ ॥ शीशी सिर ते ढोरि फुलेल अंग झलकायौ। हनूमान की प्रतिमा मानौं तेल चढ़ायौ ॥ ५ ॥ काजर सौं मुख माढ्यौ वन्दन विन्दु बनायौ। कारे कर सहि चुवत मनौं चपरा चपकायौ ॥ ६ ॥ गज गामिनि गौछनि में तकि तुकमा लपटायौ। देह धरें मानौं फागुन ब्रज में खेलन आयौ ॥ ७ ॥ हो हो होरी कहि हँसि नैंननि सैंन हँसायौ। झूमक चित्र विचित्र सबनि सुंदर सुर गायौ ॥८॥ माथे तें मोहनी मठा कौ माट दुरायौ। मानौं काचे दूध श्याम गिरवरहि न्हवायौ ॥ ९ ॥ काहू चंदन वंदन अरु चोवा चरचायौ। ऋतु वसंत जनौ केशू कौ द्रुम फूलनि छायौ ॥१०॥ गुलगुलाय गहि गुलचन सौं एकनि गुलचायौ। होरी कौ हुरिहारौ काहू पुण्यनि पायौ ॥११॥ रंग रह्यौ चुँहुटियनि अंग रातौ ह्वै आयौ। गूजनि कौ गहिनो मानौं प्रोहित कौं पहिरायौ १२ काहू

गुलरी माल काहू झलँगा गर नायौ गज घंटा इनि बीच मनहु गज गाह बनायौ ॥ १३ ॥ घोरि घोरि घनसार नीर पाँड़े पर नायौ । मानों साँवन मास झमकि झरना झर लायौ ॥ १४ ॥ मलयागिरि मथि मेंद मेह मृगमद बरसायौ । झोरि बोरि भई खोरि लाग तें जल दरिरायौ ॥ १५॥ लगत दंत सों दंत डिग डिगा अंग लगायौ । मानों साज कठतार सुघर संगीत सुनायौ ॥ १६ ॥ गयौ जनेऊ टूटि छूटि पाँयनि लपटायौ । मनहु चक्र चांदिनी राहु पग फंदा लायौ ॥१७॥ लियौ लुगाइनि घेरि नरें नाना के आयौ । तब श्री राधा राधा कहि अपनो बोल सुनायौ ॥१८ ॥ चंचल चन्द्र मुखीनि चहूँ घां तें जु दवायौ । अहो भानु की कुँवरि शरण हौं तेरी आयौ ॥१६॥ कोमल बानी सुनत गरो राधा भरि आयौ । बाबा जू कौ दगल लली जू लै पहिरायौ ॥ २० ॥ कीरति पाँयनि लागि लागि तातौ पय प्यायौ । मन बांछित निधि दीनी तन तें ताप नसायौ ॥ २१ ॥ तौलौं होरी खेलत गिरिधर दूलहु आयौ । साँचे स्वाँगनि साजि सबै समूह सुहायौ ॥ २२ ॥ चारि बदन कौ स्वाँग चतुर चतुरानन ल्यायौ । घूमत आयौ इन्द्र स्वाँग उन्मत्त जनायौ ॥ २३ ॥ देखि नंद के लाल गाल धरि जंत्र बजायौ । सनकादिक चारयौनि सज्यौ सन्यास सुहायौ ॥२४॥ तथा व्यास कौ पूत धूत शुकदेव बनायौ । महादेव पटतार देत यह पट जु मचायौ ॥ २५ ॥ हरि कौ व्है बावरौ सु नारद नाचत आयौ । ब्रज बीथिनु के बीचि कीच में लोट लुटायौ ॥ २६ ॥ माया नें पूतना व्है लै नारद दुलरायौ । काम कामिनी बन्यौ सबनि कौ चित्त चुरायौ २७ गठिजोरा

ब्याह रचायौ ॥ २८ ॥ पीत पिछोरी तांनि रंगीलौ मंडप छायौ। नवल आँम के मौर कौ मौरी मौर बनायौ ॥२९॥ नग न्यौछावर कीनें कीरति कलश धरायौ। मन की भाँवरि दीनी चित कौ चौक पुरायौ ॥ ३० ॥ होरी की अठवारी करि दूलह दुलरायौ। नीकी बनी बरात वरातिनि रंग बढ़ायौ ॥३१॥ होरी की गारिन कौ शाषा चारि पढ़ायौ। नैंननि पियौ पियूष हितुनि कौ हियौ सिरायौ ॥ ३२ ॥ लगनि नगनि उर अगणित दृगनि दायजौ पायौ। लोचन चले चुचाय प्रेम चतुरानन छायौ ॥ ३३ ॥ नित्य विहारिनि लाल बिहारी सों वर पायौ। बृज की होरी देखि देखि सुरराज लुभायौ ॥ ३४ ॥ फूल फाल की फाग फव्यौ जहाँ यह जस गायौ। रसिकनि की घर बात लली ललना चित लायौ ॥ ३५ ॥ होरी कौ पकवान सो झोरी भरि भरि पायौ। पूरण भये मनोरथ रोम रोम सुख छायौ ॥ नरहरिया घनश्याम वास वरसाने पायौ ॥ ३६ ॥ ११७ ॥

श्री घनश्याम जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

ग्वालिनि सोधें भीनी अंगिया सोहै केशरि भीनी सारी। लहँगा छापेदार छबीलौ छीन लंक छवि न्यारी ॥ १ ॥ अधिक बार रिझवार फाग खिलवार चलत भुज डारी। अतर लगाये चतुर नारि गावत होरी की गारी ॥२॥ वड़ी बड़ी बरुनी तरुनी करनी रूप जोवन मतवारी। छवि फुलेल अलकें झलकें ललकें लखि छैल विहारी ॥ ३ ॥ हाव भाव के भवन कैधौं मौहन की उपमा भारी। वसीकरन कैधौं जन्त्र मन्त्र मोहन मन की फँदवारी ॥ ४ ॥ अंचल में न समात बड़ी अखियाँ चंचल अनियारी। जानौं गाँसी गज वेल काम की श्रुति खरसान सँवारी । ५

मोहन जू को मन अचवत अधर सुधा री ६ बीरी मुख मुसिकान दसन दमकत चंचल चौका री कौधि जात मानो घन में दामिनि छबि की पुंज छटा री ॥७॥ स्याम बिंदु गोरी ठोड़ी में उपमा चतुर बिचारी । जानों अरविंद चुभ्यौ न चले मचल्यौ अलि कौ चिकुला री ॥८॥ पोति जोति दुलरी तिलरी तरकुली श्रवन खुटला री । खयन बने कंचन बिजायठे करन चूरी गजरा री ॥९॥ चंपकली चोकी गुंजा गज मोतिन की माला री । करे चतुर चित की चोरी डोरी के जुगल झबा री ॥१०॥ पेने सुख देने कंचन कुच खुभी कंचुकी कारी । काम कुटी कर दीनी हे कीनी शिव सों फिर यारी ॥ ११ ॥ एड़ी लाल महावर जेहर तेहर बाजन वारी । घायल किये पाँय पायल कर सायल नंद लला री ॥१२॥ जोर दीठ सों दीठ ईठ मंजीठ रंगन रंग भारी । लगी लाल के पगी खगी चित चितवन की पिचकारी ॥ १३॥ मोहन मदन गोपाल लाल पर पढ़ि गुलाल जब डारी । संग लग्यौ डोले रसिया बृन्दावन में बनवारी ॥ १४ ॥ छवि दौरन मोरन मरोर पिय जाय भरे अँकवारी । प्रेम फंद पकरे झकरे गोरी नें गिरवर धारी ॥ १५ ॥ छीन लई मुरली कर तें पटुका पट पीत उतारी । ग्वालिनि अधर धरी बंशी वरषी रस सिंधु सुधा री ।१६। जो भावे सो ले ललना कलना पलना मोहि प्यारी । तोहि ददा की सौं है ग्वालिनि दे वंशी हा हा री ॥ १७ ॥ बाहन में बाँहें चाहें मुख चंद चकोर पियारी । मोहन स्याम तमाल बाल लपटानी हेम लता री ॥१८॥ गांठ जोर गोविंद चंद सों दीनी सखिन सँवारी तारी दै दै गारी गावें ग्वाल देत किलकारी

॥ १६ ॥ वशीकरन बतियन रस बरसत बरसाने की नारी। प्रभु घनश्याम दियो मन मेवा फगुवा प्रानन प्यारी ॥२०।११८॥

श्री श्यामदास ब्रजवासी जी महाराज कृत ॥ राग बरारी ॥

खेलत मदन गोपाल फाग सुहावनो। ब्रज जीवनि नंद लाल अनंग लजावनौं ॥१॥ सुबल सुबाहु श्रीदामां सखा संग राजहीं। बहु आवझ रुंज मुरज मुरली उफ बाजहीं ॥ २ ॥ करनि कनक पिचकाई फेंट अबीर की। भरि भाँवरि बहु काँवरि केसरि नीर की ॥३॥ इहि विधि साज समाज चलें वृषभांन कें। मुनि मनसा गई भूलि सुनत धुनि कांन कें॥ ४ ॥ उततें जुरि झुँडनि आई ब्रज बासनी। तिनमें कुँवरि किसोरी नित्य विला-सनी ॥ ५ ॥ संग रंगीलो साज लिये नव नागरी। इक बरन बरन लियें राजति फूलनि की छरी ॥ ६ ॥ आइ जुरे दोऊ टोल पौरि ब्रजराज की। उतहि चैत उदगारि देत बहु भाइ की ॥७॥ जे कबहूँ नबहूँ दरसी रवि हैं कहूँ। ते गुरजन की लाज करति नहिनें कुहूँ ॥ ८ ॥ खेलन कों हरि सों हुलसी सब आवही। भरि कुम कुम कनक चोरनि बोट डुरावहीं ॥ ६ ॥ छिरकत भरत परस्पर मोहन भामिनी। उड़त अबीर गुलाल कियौ दिन जामिनी ॥ १० ॥ संग सखा नहिं सूझैं कौधों कहाँ गये। सब सखियन मिलि स्याम अचानक गहि लये॥११॥ घिरि आई सब वांम ठौर दस बीस तें। तिंहि दियो अरगजा ढारि मोहन सीस तें ॥१२॥ लै ललिता दई गांठि नील पट पीत सों। घन दामिनि ज्यों राजत मोहन मीत सों॥१३॥ फगुवा मांगत रंग रह्यौ न कह्यौ परै। यह सुख निरषत कौं नव धीरज क्यों धरै १४ खेल फागु नर नारि भरे

राग काफी माई बरसाने तें नन्दगाम, प्रोहित वृषभान को आयो।नन्दभवन को वैभव अद्भुत, निरखि परमसुख पायो॥१॥पाँय प्रछाल के जल अचवायौ, घिरि आई ब्रजनारी। पाँय लागि मन फूलि फूलि गावत फागुन की गारी॥ २ ॥ एकनि चोवा आनि सानि, पाँडे के मुख लिपटायो। एक कपोल मरोरति मीड़ति करत आप मन भायो॥ ३ ॥ एक घर वसी घोरि अरगजा, लै ब्राह्मन सिरनायौ। एक जो पकरि फेंट झक झोरति इकिलौ करि कै पायौ॥ ४ ॥ एक चुहुटियाँ लेत चोरि चित, एक तारी जु वजावैं। एक पोथिया लेत छिनायें, हँसि हँसि वाख बढ़ावैं॥५॥ एक जो खट्टी छाछ मटकियाँ, लै ब्राह्मन सिरनाई। इत यह एक उतै वै अनगिन पाँड़े की कहा बसाई॥६॥ डग मगात मारयौ जाड़े को, चितवति भौंहैं तानि। हा हा हूँ हारयौ तुम जीती, छाड़ि देहु जिजमानि॥७॥ एक कहैं याहि पकरि पटकिये, एक कहैं हा हा नीके ही, घरी एक हँसि जीजै॥ ८ ॥ अरस परस ये सब ब्रजनारी, सब मिलि यहै विचारी। इतनी सुनत अथाई ते, उठि आये कुंजबिहारी॥ ९ ॥ जो देखें तो पाँड़े को सब, घेरि रही ब्रजबाला। तब फैंटा मुख हँसि कै दीनैं मुसिक्याने नन्द के लाला॥१०॥तबही ये गदगद ह्वै आयौ स्यामस्यामकहिटेरयौ। पाँड़े जू की ललित पीठि पर लाल कमल कर फेरयौ॥११॥ भली मानसि भलो आदर कीनो, भलो भोजन करवायौ। सुनहु कुँवर हौं सगरी लुगाइनि नाना भाँति नचायो॥ १२ ॥ एकनि मोकों नैन सैन दै, नैननि अंजन दीनो। सुनहु कुँवर जू इन जो लुगाइनि हूँ वहु नाकहिं कीनो॥१३॥ एकनि मेरे लये चुहुँटिया, पीठि ह्वै गई राती इन निर्दैयिनि ते हौं हूं डरपत, धुकर

पुकर करै छाती ॥ १४ ॥ एकनि मेरे गुलचा गुलच्यौ, एकनि कुहिनी दीनी। जानत हो जग जीवन जू कैसी पहुनाई कीनी ॥१५॥ कहत स्याम याहि अजहूँ वकसौ तुम्हरे वहुत सुख पायौ। जो चाहौ सो तुमको दै हैं, हम फगुवा मन भायौ ॥ १६ ॥ तुम तौ परम उदार स्याम जू, तुम से तुमहीं दानी। जानि जाउ जग जीवन जिय में, चीर हरण सुधि आनी ॥ १७ ॥ जो सासुरे की दया कीजिये, फगुवा देहु छुडावो। तौ हम छाँड़ि देय पाँड़े को, यह नात्रे तुम गावो॥ १८ ॥ काहे न पाँड़े गुन परघट करौ, हरि सैंन दई हग मोरी। मगन भयो तव नाचन लाग्यौ, वोलत हो हो होरी ॥१९॥ बाँधि तरोटी पेट फुलायौ, टेढ़ी पाग बनाई। रीझे कुमर अहनैंटा नरोत्तम, अद्भुत फाग मचाई ॥२०॥ जानि बूझि अनवोली०है कैं, दुरिदेखत नंदरानी।निरखि निरखि कौतूहल इनकौ, मन हीमन मुसिक्यानी ॥२१॥ ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, देखत रहे लुभाई। हा हा हम न भये व्रज वांभन ब्रह्मा मन पछिताही ॥२२॥ भई विमान भीर नन्दीस्वर, अमर सुमन वरसाये। निरखि निरखिनैंनन कौतूहल, सुर वनिता मंगलगाये ॥२३॥ धनि ब्राह्मन धन धन्य नन्द कुल, धनि ये व्रज की नारी। धनि धान वास वसे जे तिन पर, स्याम दास वलिहारी ॥ २४ ॥ १२०॥

श्री माधौदास जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

मोहन खेलत होरी ॥ध्रु०॥ बंसीवट जमुना तट कुंजनि तर ठाड़े बनवारी। इतहि सखिन कौ मण्डल जोरैं श्री वृषभानु दुलारी ॥ होडा होडी होत परस्पर देत दिवावत गारी। भरे गुलाल कुम कुमा केसरि करनि कनक पिचकारी १ बाजत

वर श्री मंडल सरस उपंगा ताल मृदंग झाँझ डफ बाजत सुर के उठत तरंगा। नाचत गावत करत कुतूहल छिरकत केसरि अंगा ॥२॥ तबहि स्याम सब सखा बुलाये सबहिनि मतौ सुनायौ । हो भैया तुम चौकस रहियो जिनि कोऊ अवै गहायौ ॥ जो काहू वे पकरि जु पैंहैं करि हैं मन को भायौ। तातैं सावधान तुम रहियौ मैं तुमको समुझायौ ॥३॥ सवै किशोरी राधा गोरी मन में मतो जु कीनौं। सखी एक तब बोलि आपनी भेष जु बल को दीनौं ॥ ताकों मिलनि चले मन मोहन सखा न काहू चीन्हौं। नैंसुक बातन लाइ लाल कौं पाछैं तें गहि लीनौं ॥४॥ जैसे ही सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि मोहन पकरे तबहीं । माँगत हीं हम यह विधना पै दाव जु पावैं कबहीं ॥ जब तुम चीर जु हरे हमारे हा हा खाई सबहीं । अब हम वसन छीन सव लै हैं हा हा खैहौ दै तबही ॥ ५ ॥ एक सखी कहै वदन उठावौ हमहूँ देखन पावैं । श्रीमुख कमल नैंन मेरे मधुकर तन की तपत बुझावैं ॥ एक सखी कहै अंखियाँ आंजो माँथैं वेंदा लावैं। एक कहै इनहीं जु नचावौ हम सब ताल बजावैं।६। एक जु सखी अचानक आई मोर पक्षि तिनि लीनों । एकनि दृष्टि बचाइ लाल कौ पीतांवर गहि छीनों ॥ एकनि आंखि आंजि मुख मांड्यौ ऊपरि गुलचा दीनौ । मानत कोन फाग में प्रभुता मन मान्यौ सौ सो कीनौ ॥ ७ ॥ एक जु हँसति दूर भई ठाड़ी घूँघट पट मुख ढाँके । एक सखी हरि को मुख निरखत तन की दसा न ताके ॥ एक सखी मधुरे सुर गावत मुख तें गारी भाखै। श्री हरि चरित अंत को जाने सवहिनि कौ मन राखै ८ एक जु कहै बोलि बल भैया

कौं लै आवै ॥ जाँनत हौ छल बल करि छूटे गहे अब छूट न पावै । श्री राधा जू सों करौ वीनती सोई तुम्हें भलें छुड़ावै ।६। दूरहिं तें बल आवत देखे सखी जु बहुतक धाई । छल बल करि जैसैं तैसें हूँ उनहूँ कौं गहि ल्याई ॥ आनि कये इक ठौरे ठाड़े हरि हलधर दोऊ भाई । उनहूँ की आंखि आंजि मुख मॉंड्यौ श्री राधा जू सैंन बताई ॥ १० ॥ देखि देखि ब्रह्मा शिव नारद मन ही मन पछिताहीं । ए बड़ भाग सकल ब्रज सुंदरि हम मुख कही न जाँहीं ॥ जा कारन हम ध्यान धरत हैं ध्यानहु आवत नाँहीं । सो देखो ब्रज वनितनि आगे ठाड़े जोरें वाँहीं ॥ ११ ॥ करजोरे हरि हलधर ठाड़े आज्ञा हमकौ कीजे । जो कछु इच्छा होइ तिहारी सोई फगुवा लीजें ॥ हँसि हँसि बात कहत मन मोहन बोवत सुख के बीजें । छांडो हमहि जांहि घर अपने पीतांबर मोहि दीजें ॥ १२ ॥ तब गिरिधर सब सखा बुलाए फगुवा बहुत मँगायौ । अंबर चीर बन्यौ जाहि जैसो ताहि तैसो पहिरायौ ॥ श्रीजगन्नाथ राइ चीरजीवो सबकौ भलो मनायौ । बाढौ वंश नन्द बाबा कौ माधौ दास जस गायौ ॥ १३ ॥ १२१ ॥

राग विलावत—बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आईं । कीयौ है जुहार नंद जू कों भीतर भवन बुलाईं ॥ १ ॥ एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी । काहे मोहन राय दुरि रहे मैया दिवावत गारी ॥ २ ॥ आदर देत ब्रज रानी अब निज भागि हमारे । प्रीतम सजन कुल वधू पाये दरस तुम्हारे ॥ ३ ॥ सुने कुंवरि मेरी राधे अबही जिन-मुख माड़ो । जेंवत स्याम सखन संग जिन पिचकाई छांड़ो ॥ ४ ॥ केसरि बहोत अरगजा कित मोहन पर डारो शीतल लगे कोमल तन तुमही

बरजत भरत कुंकुमा निर्भय नवल किसोरी ।६ ।। कहत रोहनी जसोदा ओली ओटति आगें । जाय भरो ब्रजराजे मोहन दीजे मागें ॥ ७॥ मोहन मागें पैये तो दिन दस हमहिं देहो । गोप कुंवर के पलटें जो चाहो सो लेहो ।।८।। सुवल सुवाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये । कंचन माट भरे दधि लै गोपिन सिर नाये ।।६।। ग्वाल गुपाल सखा सब हँसत करत किलकारी । दूध लियो भीतर ते छिरकी सब ब्रज नारी ।। १० ।। जो सुख सोभा बाढ़ी कहत कहा कहि आवै । ललिता कुँवरि कुँवर को अंचल गहि गहि लावै ।। ११ ।। भये निरंतर अंतर तजि वल्लभ ब्रज वाला । गिरि गिरि परत गलिन में हार तोरि मनि माला ।१२। प्रभु मुकुंद ब्रजवासी अटक कोन की माने । कहत भैया माधौ जन चलो भरो वृषभाने ।। १३ ।। १२२ ।।

गोपी नंदराय घर फगुवा मांगन आई । प्रमुदित करहिं कुलाहल गावत गारि सुहाई ।। १ ।। अवला एक अगमनी आगें दई पठाई । तिनमें मुख्य राधिका लागति सबनि सुहाई ।। २ ।। जसुमति अति आदर सौं भीतर भवन बुलाई । खेलहु हँसो निसंक संक मानों मति काई ।। ३ ।। बहु मोती मनिमाल सबनि देहूँ पहिराई। मनिमाला लै कहा करैं मोहन देहु दिखाई ।। ४ ।। बिन देखें सुंदर मुख नाहिन परत रहाई । मात पिता पति सुत गृह लागत री विष माई ।। ५ ।। सुनि कें प्रेम बचन दामोदर दई दिखाई०। घर में ते घनस्याम भुजा भरि भामिनि लाई ।।६।। नख सिख सुंदर सींव रूप लावनि अधिकाई । रहि

चंदन चहूँ दिसि ते लै धाई। भरति भाँवते लालन करनि कनक पिचकाई ॥ ८ ॥ मंडित करत कपोल एक लै कज्जल आई। अंचल सौं पट जोरत रीझि सकुच सिर नाई ॥ ९ ॥ आलिंगन चुंबन रस नहिं सुरझत सुरझाई। कुच भुज बीच कीच मची अति श्रम की झपटाई ॥१०॥ दरस परस पिय अतिसय सुंदरि लपटाई। दंपति सौभग संपति कौं पीवत न अघाई ॥ ११ ॥ यह लीला अति ललित सो तो नंदरानी भाई। हरखित उदित मुदित सबहिन की करत बड़ाई ॥ १२ ॥ पट दुकूल आभूषन चोली दिव्य मगाई। जसुमति अति प्रफुलित मन सुंदरि सब पहिराई ॥ १३ ॥ यह मेरे आँगन आवौरी नित माई। नैंन श्रवन सुख भयौ लाल जू की कीरति गाई ॥ १४ ॥ निकसी देत असीस जियौ चिरु मोहन राई। यह ब्रज माधौदास रहौ नित नंद दुहाई ॥ १५ ॥ १२३ ॥

श्री आनंद घन जी कृत—रसिक छैल नंद कौ री नैंननि में होरी खेलै। भरि अनुराग दृष्टि पिचकारी आनि अचानक मेलै॥ और कहाँ लौं कहौं सखी री सब बिधि करत भाँवती केलै। रूमि झूमि रसिया आनंद घन रिझै भिजे रस झेलै ॥ १२४ ॥

श्री हितअनूप जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

मेरौ मन मोह्यौ साँवरे मोहि घर अंगना न सुहाइ। अरी हेली, ज्यौं ज्यौं आँखयन देखिये मेरौ त्यौं त्यौं जिय ललचाइ ॥ १ ॥ हेली, मन मोहन अति सोहनौं इत ह्वै निकस्यौ आइ। मोहि देख ठाड़ौ भयौ वह चितयौ मुरि मुसिकाइ ॥ २ ॥ हेली, रूप ठगौरी डारि कैं चल्यौ अंग छवि छैल दिखाइ। नैंन सैंन दै साँवरौ मन लै गयौ संग लगाइ ॥ ३ ॥ हेली, लोक लाज

कुल कान कों जिय कछुव न ठीक ठहराइ । कै लै चलि मोहि स्याम पै कै स्यामहि आनि मिलाइ ॥४॥ हेली, प्रांन प्रीति परवस परयौ अब काहू की न बसाइ । रसिक बाल नंदलाल पै हित-अनूप बलि जाइ ॥ ५ ॥ १२५ ॥

राग सारंग–या गोवर्द्धन की गैल एक ग्वालिनि आवै रंग भरी, ए हाँ रे हेला । बनिय रहति अति रीझ की और रिझवन मोहन छैल, ए हाँ रे हेला ॥१॥ ससि बदनी चंपक तनी कजरारे दृग जोर । मुसकत स्यामहि सामुहि और चितवत भौंह मरोर ॥ २ ॥ ए हाँ रे हेला, छूटी अलक लांबी लटे चटकीली केसरि आड़ । सुख भीनी मुख हँसत में लसत चिबुक की गाड़ ॥ ३ ॥ हेला, कजरौटी गजरा हरा खये वरा अति गोल । कनक तरोना कान में और झलकत रुचिर कपोल ॥४॥ हेला, गुर उरोज के भार सों अति तनक लंक लचकाय । रंग भरयौ जोवन जग मगै तव चलत अंग मचकाय ॥ ५ ॥ हेला, तन सुख की सारी लसैं और अँगिया रंग अनूप । घूमत सौ लहँगा लगै वाकी लावनि लाग्यौ रूप ॥ ६ ॥ हेला, जानि बूझि कें सांवरौ या मग बैठ्यौ आनि । हम जानी छानीं नहीं कबहू की पहिचानि ॥ ७॥ हेला, यह सुख सुख भीनेन कों और निरखि जिवावै जीय। इह बन ए विलसौ हँसौ वसौ हित अनूप के हीय ॥ ८ ॥ १२६ ॥

श्री मंगल प्रभु जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

दोऊ राजत जुगल किशोर अति आनंद भरे । ब्रज जुवतिनि के चित चोर परम विचित्र खरे ॥ ध्रु० ॥ उत श्री मदन गोपाल सखा अंसन भुज दीने । इतहि कुँवरि राधिका मेल अपनो

निकसि गांव के गोइरे हरि खेलन लागे फाग ॥१॥ बाजत डफ बांसुरी ताल मिलि मधुर मृदंगनि । गावत सारंग राग सुनत सुख उपजत अंगनि ॥ नर नारिनु के नेकहू लाज रही नहिं गात। कछू कहत कछू वे कहें हो सबै स्याम रंग रात ॥२॥ तब तिनि ग्वालनि उमंगि लई हाथनि पिचकारी । जुवतिनि के मुख भरत देत होरिनि की गारी ॥ घात कियें चितवत फिरें उत छैलनि के बाग । सावधान सब गोपिका हो देत न लागन लाग ॥ ३ ॥ तबहि ग्वालिनी धाइ गह्यो संगी हरि पिय कौ । आंखि आंजि मुँहु माँड़ दियो सेंदुर कौ टीकौ । कान ऐंठि गुलिचा दियो सब अरु दीनो मुकराइ । चलत आपने झुंड कों वाके खिसिल परत है पाइ ॥ ४ ॥ तबहि नंद के लाल कलपि इक बात विचारी । धर्यौ त्रिया को रूप जाइ भेंटी ब्रजनारी ॥ पाछे ते सकुची सबै जब जान्यौ यह भाव । तारी दै हरि हँसि चले हम लियो सखा कौ दाव ॥५॥ तबहि सहचरी भेष एक हलधर कौ कीनो । गोकुल तन ह्वै आइ पहरि नीलो पट झीनो ॥ ताहि मिलन केसो चले करि अग्रज की कानि । इत चितवत दुचिते भये इत गहे ग्वालिनी आनि ॥ ६ ॥ कोऊ अली भुज टेकि कोऊ पटुका झक झोरे । कोऊ धर हरि मिले कोऊ मुख सों मुख जोरे ॥ कोऊ नैन की सैंन दै कहे तो गर्भित भाइ । काहू बातनि लाइ लाल की मुरली लेइ छिड़ाइ ॥ ७ ॥ छूटन पाये तबहि देन फगुवा जब मान्यौ । रंग रंग बसन मँगाय दियो जाहि जैसो बान्यौ ॥ काहू भूषन पान दै काहू तन मुसिकाइ । एकनि आँकों भरि चले हरि सबको भलौ मनाइ ॥८॥ नाना वरन विलास रास कीने वृंदावन । हरखित करि बल्लवी परम सुख सौं जू गोप गन मदन

लजानो देखि के श्री कमल नैन की केलि गंगल प्रभु आए घरें हो सब सुख सागर झेलि ॥ ६ ॥ १२७ ॥

श्री कृष्ण जीवन लछीरामजी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

तेरी मारी मरि जाँऊ रे साँवरे । होरी में मेरो और तेरो लै लै गावत नांउरे ॥ १ ॥ जा दिन ते या गली हमारी परयौ रावरो पांउ रे । ताही दिन ते इनि उलटा पारयौ चार चवाई गांउ रे ॥२॥ कबहूँ मन मीठी सी लागति कबहूँ जिय करवांउ रे । कबहूँ रस कबहूँ रिस उपजत वर बुझ और महरांउ रे ॥३॥ को जाने यह बात अटपटी मनही मन पछिताउ रे । कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु हौं धरती फाटि समाउ रे ॥ ४ ॥ १२८ ॥

राग काफी—मतवारी ग्वारनि अंचरा संभार । तबहीं ते कछु अधिक भई है धरत धरनि पर भार ॥ तन सुख सारी गुजराती लहँगो अरु अंगिया पर हार । कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु प्यारे छबि पर हों बलिहार ॥ १२६ ॥

श्री मैन प्रभु जी महाराज कृत—राग काफी

रसिक गुपाल बृंदावन महियाँ खेलत फागु सुहाई । अवतौ मान वनें नहि भामिनि सिर पर होरी आई ॥ १ ॥ ललिता ललित भाँति वहु वातनि पियहि जाइ सुनाई । हठीली हठ छांड़े नहि क्यौंहूँ होति अधिक अधिकाई ॥२॥ हितू हेत लै कह्यौ लाल सों में तो बहुत मनाई । विनु घनश्याम होइ क्यों सीतल वह वृष-भान की जाई ॥३॥ सुरंग चूनरी ओढि साँवरो तिय को भेष वनाई । पहिरि पीत फूलनि की माला सुर गुरु कांति लजाई ॥४॥ गये जहाँ बैठी श्री स्यामा मुरली मधुर वजाई रीझी रीझि वचन कहि मीठे

तें आई । नन्द गाँव सुख ठाँव तहाँ के कहियत कुँवर कन्हाई ॥६॥ सुनत ही नाम पीठि हँसि दीनी चीन्हीं हरि लँगराई । पकरी बाँह लई उर अंतर चाचरि मैंन मचाई ॥ ७ ॥ १३० ॥

श्री छीतस्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

सुरंगी होरी खेलैं साँवरौ श्री वृंदावन माँझ ॥ सुरंगी०॥ ब्रज की नव नव नागरी घिरि आँई सब साँझ ॥सुरंगी०॥१॥ सरस वसंत सुहावनी रितु आई सुख दैन ॥सुरंगी०॥ माते मधुपा मधुपनी कोकिल कल कल बैंन ॥ सुरंगी० ॥ २ ॥ फूले कमल कलिंदजा केसू कुसुम सुरंग ॥सुरंगी०॥ चंपक वकुल गुलाब के सौंधें सिंधु तरंग ॥सुरंगी०॥३॥ सुबल सुबाहु श्रीदाम से पठ्ये सखा सिखाय ॥सुरंगी०॥ बाजे बाजैं नव रंगी लीनें ढ़ोल मढ़ाय ॥ सुरंगी० ॥ ४ ॥ रुंज मुरज डफ बाँसुरी भेरिन कौ भर पूर ॥सुरंगी०॥ फूँक नफेरी फेरि कें ऊँचैं गई श्रुतिदूरि ॥सुरंगी०॥५॥ ब्रज कौ प्रेम कहा लौं कहौं केसरि सों घट पूरि ॥सुरंगी०॥ कंचन की पिचकारियाँ मारत हैं तकि दूरि ॥ सुरंगी० ॥ ६ ॥ आँधी अधिक अबीर की चोवा की मची कीच ॥ सुरंगी० ॥ फैली रेल फुलेल की चन्दन वन्दन वीच ॥ सुरंगी० ॥७॥ फूल छरी गहि हाथ सौं मारत बाँह उठाइ ॥ सुरंगी० ॥ अंचल चंचल फरहरैं पैनें नैंन नचाय ॥ सुरंगी० ॥ ८ ॥ ब्रज की नवल जु नागरी सुन्दर सूर उदार ॥ सुरंगी० ॥ खेलन आइ सबै घिरी श्री राधा के दरवार ॥ सुरंगी० ॥ ६ ॥ श्री राधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाइ ॥ सुरंगी ॥ छल करि छैलहि छिरक कैं हँसि भाजी डहकाइ ॥ सुरंगी० ॥१०॥ नारी कौ भेष बनाइ कैं पठ्यौ सखा सिखाय सुरंगी० अति ही अधिक रूहावती ललिता भेटी

जाय सुरंगी० ११ गेंदुक नीकी फूल की दीनी श्रीराधा हाथ ॥ सुरंगी० ॥ आय अचानक ओचका तकि मारे ब्रजनाथ ॥ सुरंगी० ॥ १२ ॥ ब्रज की वीथी सांकरी उत जमुना कौ घाट ॥ सुरंगी० ॥ बलदाऊ कौं बोलि कै दीनें गाढ़ कपाट ॥सुरंगी० ॥१३॥ हलधर हैं जु कहा बली साँचे तुम बलराम ॥ सुरंगी० ॥ बल कौ बल जु कहा भयौ, गहि बाँधे भुज पास ॥ सुरंगी० ॥१४॥ नैंनन अंजन आँजि कें सौंधों ऊपर ढ़ार ॥ सुरंगी० ॥ पाँय परि द्वार पठै दए रस की रासि विचार ॥ सुरंगी० ॥१५॥ हँसि भाजी सब दै दगा आवन दीनें और ॥ सुरंगी० ॥ मदन गुपाल बुलाय कें गहि लाई वर जोर ॥ सुरंगी० ॥ १६ ॥ गिरि धारौ कर वाम सों खर मारयौ गहि पाँय ॥ सुरंगी० ॥ तिनकौ भार कहाँ गयौ ललिता लेत उठाय ॥ सुरंगी० ॥ १७ ॥ घर में घेरि सबै चली श्री राधा कों संग लेत ॥ सुरंगी० ॥ दोऊ जन खेंच मिलाइ कें नैंनन कों सुख देत ॥ सुरंगी० ॥ १८ ॥ तब ललिता हँसि यों कह्यौ श्री राधा कौ सिर नाय ॥ सुरंगी० ॥ नीलाम्बर सों ढाँपि कें मुख मूँदौ मुसिक्याय ॥ सुरंगी० ॥१९॥ उत श्रीदामा अचपलौ इत ललिता अति लोल ॥ सुरंगी० ॥ बीच बिसाखा साख की मुरली माँगत ओल ॥ सुरंगी० ॥२०॥ बसवासी वृषभान कौ मदन सखा वाको नाम ॥ सुरंगी० ॥ स्याम मते कौ मिलनियाँ वस कियौ सब गाँम ॥सुरंगी०॥२१॥ पठयौ मदन बसीठई ढ़ीठ महा मद लोल ॥ सुरंगी० ॥ छिन औरें छिन और सौ छाकयौ छैल दुछोल ॥ सुरंगी० ॥२२॥ मदना मदन गुपाल कौं हलधर कौं लै आव सुरंगी० श्री

श्रीदामा हँसि यों कह्यौ मेवा देहु मँगाय ॥सुरंगी०॥ नैंक हमारे स्याम कौ आनन कौ मधु प्याय ॥ सुरंगी० ॥ २४ ॥ भाग सुहाग सबै बढ़ौ खेलत फागु विनोद ॥ सुरंगी० ॥ श्री राधा माधव बैठारे ब्रज रानी की गोद ॥ सुरंगी० ॥ २५ ॥ भूषन देत जसोमती पहुँची पाँय पिछेल ॥सुरंगी०॥ घडे टीक टिकावरी हीरा हार हमेल ॥ सुरंगी० ॥ २६ ॥ श्री विट्ठल पद पद्म की पावन रैनु प्रताप ॥ सुरंगी० ॥ छीत स्वामी गिरिधर मिले मेटे तन के ताप ॥ सुरंगी० ॥ २७ ॥ १३१ ॥

श्री सिरोमणि प्रभु जी महाराज कृत ॥राग आसावरी॥

मेरी गैल न छाडै साँवरौ हो क्यों कर पनियां जांउ री। इन लाजनि डरपति रहों मोहि धरैं न कोऊ नांउ री ॥१॥ जित देखौं तित देखिये री रसिया नंद कुमार । इनि वातनि कैसे जियौ मोसौं पलकनि करत जुहार ॥ २ ॥ जमुना जल गागरि भरौं री जब सिर धरौं उठाइ । त्यौं अंचल कंचुकी उचैं मेरौ हियरा देखि ललिचाइ ॥ ३ ॥ लै लकुटी आगैं चलै री पंथ संवारत जाइ। मोहि निहोरौ लाइकै वह फिरि चितवै मुसक्याइ ॥ ४ ॥ कैहूँ मिसि हा हा करैं री लंगर मोहि निहारि। फिरि ओढनि मिसि ओढ़ही पीतांबर मो परि वारि ॥५॥ मो तन लग लागै नहीं री वाकौ मन ललचाइ। पुनि हठि मेरी छांह सों अप छांह रहत छुवाइ ।६। अवलौं जिय सकुचत रही री प्रगट करत अनुराग। अव कहि कैसें छूटिए री सिर पर आयौ फागु ॥७॥ घर घर व्रज चाचरि मची री मगन होत नर नारि। मंत्र फागु दूती दियौ दोऊ उमगि मिले डरु डारि ।८। जब लगि तन मिलियौ नहीं री नचे चौंप के नाच सिरोमनि प्रभु हिलिमिलि रहे दोऊ करत मनोरथ साँच ६ १३२

श्री रसखान जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

मोहन हो हो हो होरी। काल्हि हमारे आँगन गारी दै आयौ सो कोरी ॥ १ ॥ अब क्यों दुरि बैठे जसुदा ढिंग निकसो कुँज विहारी। उमगि उमगि आई गोकुल की सकल मही धन वारी ॥२॥ तबहि लला ललकारि निकरि रूप सुधा की प्यासी। लपटि गई घनश्याम लाल सों चमकि चमकि चपला सी ॥ ३ ॥ काजर दै बनाइ भरुवा के हँसि हँसि ब्रज की नारी। कहि रसखानि एक गारी पर सौ आदर बलिहारी ॥ ४ ॥ १३३ ॥

श्री रतनायक जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

मोहन खेलें फागु री, हौं क्यों कर निकसों हाय दई। मेरे संग की सबै निकसि गई, अरी मोहि प्रगट भयो अनुराग, हाय दई ॥१॥ एक रैंन सुपनौं भयौ री, नंद नंदन मिल्यौ आइ। मैं सकुचन घूंघट कियो, अरी उन भेंटी भुज लपटाइ ॥२॥ अपनों रस मोको दियो री, मेरो लीयो घूंट। वैरिन पलकैं उघरतें री, गई आस सी टूट ॥३॥ फिर में बहुतेरो कियो री नेंकु न लागी आँखि। पलक मूंदि परच्यौ लियो, में याम ऐक लों राखि।४। ता दिन द्वारें ही गयो री होरी डाड़ो रोपि। सास ननद देखन गई मोहि घरि रखवारी सोपि ॥ ५ ॥ सास उसासन त्रास ही री ननद खरी अनखाइ। देवर डग धरिवौ गिनै, मेरो बोलत नाहि रिस्याय ॥६॥ तिखनें चढ़ि ठाड़ो रह्यौ री लेवौ करै कन टेरि। रात द्यौस हो हो रहै वा विच मुरली की टेरि ॥ ७ ॥ क्यों कर मन धीरज धरौं री, उठत अति ही अकुलाय। कठिन हियौ

होरी छाड़ि लोक कुल कांनि । जाइ मिल्यौ वृज ईस सों रतनयाक रस की खांनि ॥ ६ ॥ १३४ ॥

श्री मलूकदास जी महाराज कृत ॥ राग काफी ॥

जोगी रंग भीना आया । अच्छा सींगी नाद बजाया ॥ मोतिन लर अलक संगा । मानौं जटा जूट में गंगा ॥ लिलाट में चंदन बिंदा । मानौं किये भूषन इन्दा ॥ कुण्डल की चमक गहरी । कपोलनि छवि की लहरी ॥ अंग अंग भूषन बाजैं । मनौं सुर डँवरू गाजैं ॥ मलिया गिरि भस्म सँवारें । पीतांबर गूदरी धारें ॥ सोहे वाम भाग में प्यारी । मानौं अरधंग सँवारी॥ जोगी छवि बावरो डोलै । राधे राधे राधे बोलै ॥ मोहन मंत्र फूँकि कैं मारी । सब ब्रज मोहनी डारी ॥ जोगी सब संतोंदा प्राना । शरन मलूक न माना ॥ १३५ ॥

श्री कृष्ण जड़ा जी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥

मानो ब्रज ते करिणी चली, मदमाती हो । गिरिधर गज पैं जाय, ग्वालि मदमाती हो ॥ कुल अंकुश मानें नहीं, मदमाती हो । शृङ्खल वेद तुराइ, ग्वालि मदमाती हो ॥ १ ॥ वृन्दावन वीथिन फिरे, मदमाती हो । तैसिय मलकनि चाल, ग्वालि मदमाती हो ॥ निर्भे संक माने नहीं, मदमाती हो । सिंघ मदन दल ढाल, ग्वालि मदमाती हो ॥ २ ॥ अवगाहें यमुना नदी, मदमाती हो । करति तरुनि जल केलि, ग्वालि मदमाती हो ॥ सब मिलि छिरके स्याम कौं, मदमाती हो । सुंड डंड भुज पेलि, ग्वालि मदमाती हो ॥ ३ ॥ कुचनि कुंभ स्थलि ऊपरे, मदमाती हो । मुक्ता हार रुराइ, ग्वालि मदमाती हो ॥ मानो जुग गिरि बिच सुरसरी, मदमाती हो जुगल प्रवाह बहाइ,

ग्वालि मदमाती हो ॥४॥ नाग वेल चरती फिरे, मदमाती हो । मादिक मध्य कपूर, ग्वालि मदमाती हो ॥ साख पटा श्रवननि वहे, मदमाती हो । मंडति मांग सैंदूर, ग्वालि मदमाती हो ॥५॥ घूमति गरवहियाँ गहे, मदमाती हो ॥ लोक अगड तजि कांन, ग्वालि मदमाती हो ॥ मन ही महावत पेल के, मदमाती हो । देति सुरति सुख दांन, ग्वालि मदमाती हो ॥६॥ किंकिनी नूपुर वाजहीं, मदमाती हो । घूँघरु घंट समान, ग्वालि मदमाती हो ॥ मानहु करि करनी मिली, मदमाती हो । केलि कलाहि निधान, ग्वालि मदमाती हो ॥ ७ ॥ वेरुख पद अंचल उड़ैं, मदमाती हो । घन दामिनि उनहार, ग्वालि मदमाती हो ॥ कृष्ण जडा क्रीडा करे, मदमाती हो । व्रज पति व्रज की नारि, ग्वालि मदमाती हो ॥ ८ ॥ १३६ ॥

श्री गोकुलेश जी महाराज कृत—राग सारंग

उत साँवरो बहु रँगन रँगीलौ, इत गुन निधि राधा गोरी । डफ पुंजनि की गुंज गान सुनि खग मृग मुदित मची होरी ॥ अंबर चढ़्यौ अबीर उड़ायौ ललितादिक कर भरि भरि झोरी । मानौं दुहूँ दिसन तें सजनी, उठि अनुराग घटा घोरी ॥ कुम कुम की पिचकारी छाँड़ति चोंकि चपलता करत किशोरी । लचक्यौ लंक इतै मुख फेरयौ, मानौं कनक लता मोरी ॥ छिर-कत छींट उठत चौवा की लगी कपोल वाल के थोरी । परगट करत दुहूँ कर अपनें गोकुलेश चित की चोरी ॥ १३७ ॥

श्री जगन्नाथ कविराय जी महाराज कृत—राग बिलावल

बदति नाहिनें ग्वालिनि जोवन के गारैं । या व्रज में

हरी किनारें । अति रस ते निकरी फिरे अचरा ढिंग डारें ॥२॥ नक वेसरि गजरा बने चौकी खग वारे । अँगिया खमकि खयें वनी कुच सूं भरि वारें ॥ ३ ॥ फुफुदी डोरी के झरा सोंहें फोंद फूंदारे । सोने की बांकी वेंदुली सोहे ललित लिलारें ।४। दीरघ लोचन छवि छटा कजरा अनियारे । जगन्नाथ कवि राय के प्रभु मोही कान्हर कारे ॥ ५ ॥ १३८ ॥

श्री चतुर्भुज जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥

गोरी गोरी गुजरिया भोरी सी, प्यारी तें मोहे नन्दलाल । खेलन में हो हो जु मन्त्र पढ़, डारयौ तें जु गुलाल ॥ १ ॥ तेरी सौधें सनी अंगिया उरजन पर, और कटि लहँगा लाल । उघर जात कबहुक चलन में, जेहर ढिंग एड़ी लाल ॥२॥ तू सकल त्रियन में यौं राजत है ज्यौं मुक्तन में लाल । न्याय चतुर्भुज को प्रभु मोहयौ, अधर सुधा रस लाल ॥ ३ ॥ १३६ ॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत ॥ राग कान्हरौ ॥ यह पद भेंट कौ है ॥

दिन डफ ताल वजावत गावत भरत परस्पर छिन छिन होरी । अति सुकुमार वदन श्रम वरषत भलें मिलें रसिक किसोर किसोरी ॥ बातनि बत बतात राग रंग रमि रह्यौ इत उत चाह चलत तकि खोरी । सुनि हरिदास तमाल स्याम सों लता लपटि कंचन की थोरी ॥ १४० ॥

राग गौरी—राधा रसिक कुंज बिहारी खेलत फाग सब जुवती जन कहत हो हो होरी । भरत पर स्पर काहू की काहू न सुधि हँसि कै मन हरत मोहन गोरी ॥ कर सों कर वजोरि कटि सों कटि व मोरि करत नृत्य काहू न रुचि थोरी श्री हरिदास

के स्वामी स्यामां फिरत न्यारेई न्यारे सब सखियनि की दृष्टि बचावत तकत व खोरी ॥ १४१ ॥

राधा रसिक कुंज बिहारी कहत जु हौं, कहूँ न गयो सुनि राधे तेरी सौं । मोहि न पत्याहु तो संग हरिदासी हुती पूछि देखि भट्ट कहि धौं कहा भयो मेरी सौं ॥ प्यारी तोहि गठौदन प्रतीत छाँड़ि छिया जान दै इतनी अब एरी सौं । गहि लपटाय छैल दोऊ छाती सों छाती लगाय रहे फेरा फेरी सौं ॥ १४२ ॥

श्री विहारिनदास जी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥

हमारो माई लाल बिहारी मन हरयौ जै जै श्री बृन्दा विपिन विलास । नव निकुंज सुख पुंज में फूले बहु भांतिन सुमन सुवास ॥ १ ॥ अलि कुल संकुल कूजही रस लोभी तजि नेंकु न जात । मुदित सिखीकुल नृत्यहीं कूजित कल कोकिल सुर सात ॥ २ ॥ त्रिविधि समीर वहै तहाँ शीतल री अति मंद सुगंध । जल कमलनि वन परसि कें सुखदायक रोचिक रति बंध ॥ ३ ॥ तरु फल फूल मधुर फिलैं छै ऋतु वसंत रहत हित श्याम । नित्य नौतन सम्पति सबै सेवत श्री स्यामा अभिराम ॥ ४ ॥ और कहौं सुख सुनि सखी संजोगी रस परस विहार । प्रेम मगन संतत सदा सावधान अंग अंग सम्हार ॥ ५ ॥ सब गुन रूप अचागरी सेवत अपनें अपनें भाय । दम्पति मुख सुख निरखहीं निसि दिन जात न जानत चाय ॥६॥ कोऊ कर किन्नर साजहीं कोऊ वै कर लीनें कठतार । कोऊ आवझनि वजावहीं सब मिले है संच गति भेद अपार ॥ ७ ॥ झांझि मुरज डफ बाँसुरी वीना मुखचंग उपंग रसाल और वाजे बहु को गनें जे

चली देखन पिय प्यारी को अनुराग । जमुना कूल कदंब तरु राजत वर भांमिनि सुभग सुहाग ॥ ६ ॥ पूरन आनंद कंदनी करुना निधि सुख सिंधु उदार । रसिक कुमर पर बरषहीं जब बोलत वचन कुसुम सुकुमार ॥ १० ॥ प्यारी मोहन सों हँसि कह्यौ आवहु जू मिलि खेलैं फाग । सुनि मन मुदित उदित भये को बरनैं कवि तिनको भाग ॥ ११ ॥ मनि कंचन की पिचकारी लई है कुंवरि भरि अपनें हाथ । तिनहीं को तकि तकि छिरकि हीं जे अपनें मानिनि के नाथ ॥ १२ ॥ मोहन दृष्टि दुराइ कें चले हैं अनत तकि औरे घात । दाउ न पावत भरन कौं बहुरचौ प्यारी छिरकि हँसि जात ॥१३॥ छबीले छद्म कछू कियौ और सखी दे आगें ओट । नख सिख लौं सुन्दरि भरी मनों सचे है मदन के लूटो कोट ॥ १४ ॥ कामिनि कर कटि पटु गह्यौ अलक छुवत नैंनन भयो मेल । पाँन करत मुख माधुरी बाढ्यौ प्रेम परस्पर खेल ।१५। भूषन बसन सबै सनै सौंधें विविधि बरन बहु मोल । अरगजा रंग रुचि कीच में पांनि परसि हँसि करत कलोल ॥१६॥ सखि मंडल मध्य बिराजहीं मानों नव कमलन बिचि उज्वल हंस । ठुमकि ठुमकि गति मति हरें जब धुकि धरत बिमल भुज अंस ॥ १७ ॥ सुघर सिरोमनि गावहीं तांन तरंग अनंग नचाइ । हाव भाव उपजत घनों उमग्यौ उर आनंद न समाइ ॥ १८ ॥ मृदु मालति कल नव लता नव तमाल अंग अंग अरुझात । पुलकि पुलकि आँकौं भरें परिरंभन चुम्बन न अघात ॥ १६ ॥ गौर स्याम तन अति बनें दोऊ व रंगे है प्रेम कें पाग । नील अरुन छवि पीत में कौन करि सके अंग विभाग । २० ॥ निरखि अमित सुख सहचरी दोऊन धरि राखे उर मांहि और निकट

निजु कुँज में बैठारे कर कुसुमनि की छांहि ॥ २१ ॥ कोऊ कर चरन पलोटि हीं कोऊ अंचल पौंछत मुख वारि। काऊ छवि पर तृन तोरिहीं कोऊ प्रेम पीवन जल वारि ॥ २२ ॥ कोऊ कर अग चंदन लियें कोऊ कर लीनें उपहार। याही सुख सचि खेलिये बहुरयौं बलि कीजै विशद बिहार ॥२३॥ (जय जय) श्री हरि-दासि कृपा करी जथा सक्ति गाई रस रीति। जिनकें यह रस सेइये श्री बिहारीदासि करि तिन सों प्रीति ॥ २४ ॥ १४३ ॥

राग बिहागरौ—होरी रस रंगा री। खेलत स्याम प्रिया गौरा री ॥१॥ प्रेम सहित सखी श्री वृंदावन सेवत जल जमुना री। ढिंग ढिंग कुंजनि कुंजनि फूलनि फूलि रही फुलवारी ॥ २ ॥ सकल सुगंधनि रंध्रनि लै लै वहत मलय सुख कारी। छिरकत छुवत सुधाधर पहुप पराग उड़ावत डारी ॥ ३ ॥ गावति चैत सुनावति चाचरि सहचरि अति चतुरारी। सुनत श्रवन मन मोद भयो खेलन कों हरखे श्री कुंज बिहारी ॥ ४ ॥ कहैं प्रिया मेरे को खेलै लाल करे मनुहारी। अति सुख में सुख देखि सखी री देत परस्पर गारी ॥५॥ खेलत झेलत अति रंग में रंग रहसि वहसि हँसि ढारी। अरुन वरन नव कुमकुम के रंग पीक कपोलनि पारी ॥६॥ सब अंग चित्र विचित्र विहारी विहारनि सुरत सिंगारी। तन मन वारि देत छवि पर तृन तोरति कौतिक हारी ॥ ७ ॥ निसि दिन यह सुख जीजतु पीजत प्याय सुधा पिय प्यारी। मत्त भये जुग राज विराजत मिलत मुदित भुज चारी ॥ ८ ॥ अति श्रम सिथिल भये दोऊ जन तिहि छिन सखी संभारी। श्रीविहारनि दासि निरखि मुख सुख दिन धन्य पहर पल घारी ॥९ ॥१४४॥

राग गौरी—श्री विहारी विहारिनि गावत रस रंग भरे परस्पर

मृदंग राजत सुबस भये विवस भये त्रिवि सुंदर चितवत चकृत अलोल ॥१॥ वन प्रसून वरषत सुर पुर ते सोंधौ सरस सतोल। उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत अरु वंदन बहु मोल ॥२॥ पिय डारत लपटात लागि उर प्रिया विसेस बल लोल। राखन कहत अमित सुंदरि प्रति दै सरवस रस बोल ॥३॥ रीझि निरखि रस रीति प्रीति जन सुनत मधुर मृदु बोल। श्री बिहारीदासि बलि बन विनोद नित वारत प्रान अमोल ॥ ४ ॥ १४५ ॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

मेरी रसिक रंगीली नागरी (यों) खेलत पिय संग होरी हो। सखि नव निकुँज सुख पुंज में अति राजत अद्भुत जोरी हो ॥ १ ॥ अरुन पीत पट कंचुकी तन निर्त्तत अति रंग साजें हो। सखि भूषन रव सुर संच सों मानों मृदंग ताल डफ बाजें हो ॥२॥ अति आनंद विराजही नव कोकिल कल सुर गावें हो। सखि द्रुम वेली फूली लता नव पुहुप पराग उड़ावें हो ॥ ३ ॥ सौरभ सरस पवन बहै नव रितु वसंत सुख कारी हो। सखि अति आनंद उमँगि ढरै रस बरषत कुंज विहारी हो ॥४॥ अंग अंग अरगजा रंग छिरकिहीं नव नेह नयो अनुराग हो। सखि मुदित परस्पर खेलहीं अति सुरति रसीली फाग हो ॥ ५ ॥ हाव भाव भ्रू भंगनी अति चोंप बढ़ी चित चार हो। बदन विलोकत माधुरी मची मौज मनोजनि मार हो ॥६॥ कर कमलनि परसैं हँसैं उर आनन अलक सँवार हो। जुगल नवल रस पान के भये विवश वसन न सँभार हो ॥ ७ ॥ सुरत रंग अंग रगमगे अति भ्राजत कुँवरि किशोरी हो। संग सुखदायक सहचरी रीझि रीझि कहत

हो हो होरी हो ॥८॥ यहि रस मत्त मगन रहैं नित नौतन नित्य विहार हो । छिन छिन प्रति रति विलसहीं मृदु रस जस करत अहार हो ॥९॥ जै जै श्रीहरिदास प्रताप तें वलि विपुल विहारनि दासी हो । बलि बलि नागरीदासि दरसि सुखै सबै संतत प्रेम प्रकासी हो ॥ १० ॥ १४६ ॥

राग सारंग—श्री गुरु कृपा जथा मति वरनों श्री वृंदावन अति राजे री । आस पास जमुना रस भूमी सुखद रमित अति भ्राजेरी ॥ १ ॥ सखि मृदुल सुवास पुलिन कन झलकत विमल कमल अति फूलेरी । नील अरुन सित पीत अधिक छवि सौरभ मन्मथ मूले री ॥ २ ॥ सारस हंस चकोर कुलाहल कूजत कल सुर भारी री । अति रस मत्त चलत मधुरी गति लटकनि की छबि न्यारी री ॥३॥ कुँज सघन घन नव नाना रंग फूले हित रति सूचेरी । सम्पति सुख सब सौंज सजै यों दम्पति अति मन रुचेरी ॥ ४ ॥ अद्भुत सहज विविध निर्मित धर मनि मय मृदु अति सोहेरी । नव कपूंर रमित रज राजत वरनैं ऐसो कवि को हे री ॥ ५ ॥ सुन्दर सुभग सरोवर नाना सहज रमी सुखदाई री । मनसिज रंग समूहन कौतिक रही जित तित छवि छाई री ॥६॥ नृत्तत मत्त मयूरी झुन्डनि बोलत मधुरी बानी री । कोकिल कल सुर कीर भीर अति कूजित काम कहानी री ॥७॥ ललित लता नाना रंग फूली माधुरी कुन्द चमेली री । चम्पक लता अरु वकुल केवरो केतकी कदम्ब सहेली री ॥ ८ ॥ स्वर्न जूथिका रूप मंजरी कूजै वेलि निवारी री । दोना चम्पो गुलाव जुही अति फूली सखि फुलवारी री ॥ ९ ॥ पारिजात केशर जु कल्प द्रुम फलित लाल मनि सोहे री । सौरभ सरस गुच्छ मुक्तन के झलकत

छवि मन मोहे री ॥१०॥ अति रस मत्त सुजस अलि गुंजे स्याम अरुन सित पीरें री । नव पराग अनुराग त्रिविध वहै सीतल मन्द समीरें री ।११। छै रितु वसंत सदा बृंदावन सेवत सुख मन लीने री । अपने अपने भाय भजत सब सावधान चित दीने री ॥१२॥ नारि केलि नव नूत सदा फल नीबू फलित सुपारी री । ललित लवंग लता जु इलायची दारयौ दाख छुहारी री ॥१३॥ द्वै द्वै रूप किये सेवत सखि ना ना रति सुख साजें री । मंदिर नवलनि मनि मय मंडल अनंग रंग रति काजें री ॥१४॥ सौरभ मृदु सिज्या बहु रंगनि रचि रचि सहज बनाई री । विहरत नित नवल दोऊ प्रीतम कुँवरि कुँवर सुखदाई री ॥ १५ ॥ नव नव रंग नये नित साजैं खेलत छिन छिन भारी री । जो इच्छा मन करत सोई अब जाचैं श्री कुँज विहारी री ॥ १६ ॥ कबहुँक रंग हिंडोरे झूलत गोर स्याम तन राजे री । वर किन्नरि कठतार वीन डफ रहत सवै सुख साजे री ॥१७॥ गावत चैत परस्पर झुन्डनि रंग अनंग बढ़ावे री । झूलत फूलत विपुल विनोदनि रीझि दुहुनि पै पावेरी ॥१८॥ कबहुँक कुँज कुँज प्रति डोले बोले हँसि मधुरी बानी री । अरुन पीत पट लसत सुभग तन देत सकल सुख दानी री ॥ १९ ॥ कबहुँक दृष्टि बचाइ सबनि ते रंग महल दोउ खेलें री । दरस परस सुख केलि कलोलनि राग रंग रस झेलें री ॥ २० ॥ वीरी परस्पर खात खवावत मधुर मधुर मृदु बोलें री । नैंन सों नैंन मिलाय छंद बंद करि कंचुकी बँद खोलें री ॥ २१॥ परिरम्भन चुम्बन जु अधर मधु पीवत तृपति नहिं माने री । प्रमुदित मत्त रहत जु निरंतर निसि दिन जात न जाने री २२

हरिदासी [illegible]पुन [illegible]विहारिन दास दाऊ उर आनै री ॥ २३ ॥ फेरि सिंगार हारि रति साजैं यों [illegible]ति नेह बढ़ावे री । बलि बलि नागरीदास दरस सुख प्रमुदित प्रेम लड़ावेरी ॥ २४ ॥ १४७ ॥

भूमिका—सब सखी मिलि झूमक देहिं मेरौ लाल विहारी मन हरयौ ॥ टेक ॥ श्री हरिदास सहज रति वरनौं श्री वृन्दावन अति रम्य । श्री विपुल विहारिन दास कृपा बिनु सबके मननि अगम्य ॥ १ ॥ कमल कुमुद फूले जल थल सखि सुखद तरनिजा कूल । सारस हंस चकोर ललित गति लटकि चलत मन फूल ॥ २ ॥ नव निकुंज सुख पुंज मनोहर उदित कमल की कांति । नृत्य करत शिखिकुल फूली कौतिक नाना भांति ॥ ३ ॥ द्रुम वेली फूली लता नित ही रितु शरद वसंत । अद्भुत भूमि रंग राजै अति सोभा सुखहिं न अंत ॥ ४ ॥ रज कर्पूर सुगन्ध त्रिविधि बही सीतल मन्द समीर । अति रस मत्त मुदित कल कूजित शुक पिक भृंगनि भीर ॥ ५ ॥ सेवत काम अनंत कला नित कुंज महल आगार । लाल रतन मनि मुक्ता झूमत रचत वितान अपार ॥ ६ ॥ कनक खचित मनि मंडल पर राजैं कुँवरि संग सुकुँवार । मृदु मनि स्याम तमाल लता मानौं कनक कुसुम उर हार ॥ ७ ॥ श्री ललितादिक सखी सब आई झूमी सब आवझ साजि मृदंग । एक लियें करताल झाँझ डफ वर बाँसुरी मुखचंग ॥ ८ ॥ एकनि कर कठतार अधौटी मुरज रबाब उपंग । एक लियें किन्नरि कर बीन बजावत गावत तान तरंग ॥ ९ ॥ एक अरगजा कनक कलश भरि सौंधें सरस रसाल एकनि कर पिचकारी एकनि कर बुँका [illegible]

कुसुमनि के हार। झूमत सुघर सुनावति चाँचरि सप्त संच सुर तार ॥ ११ ॥ प्यारी हँसि मोहन सों बोली आवौ जू मिलि खेलैं फाग। सुखद वचन सुनि श्याम सहेलिन बाढ्यौ अति अनुराग ॥ १२ ॥ ललिता लै पिचकारी दीनी श्री श्यामा जू कौं आय। छिरकत भरत भांवते पिय कों रहसि वहँसि हँसि जाय ॥१३॥ मोहन भरि पिचकारी लै कर छलबल तकत उपाव। नागरि नवल प्रवीन प्रिया ये क्यों हूँ न पावत दाव ॥ १४ ॥ दृष्टि बचाय अलि आगे लै बूका चन्दन अरुन गुलाल। आय अचानक भरि प्यारी हँसि होरी बोलन लाल ॥ १५ ॥ कामिनि कटि पीताम्बर कर गहि कहत वचन मुसिक्याय। बहुरयौ भरे पल नट नागर नख सिख छबि रहि छाय ॥ १६ ॥ भूषन वसन सबै सनैं कुंकुम सोंधें सुरंग गुलाल। निरखि हरखि सुख प्रेम उमँगि गुन गावत सखि नव बाल ॥ १७ ॥ गौर स्याम तन रुचिर मनोहर चितवत विवि मुख ओर। करत सुधा रस पाँन परस्पर लोचन त्रिषित चकोर ॥ १८ ॥ दरस परस रस मत्त भये दोऊ बिलसत हँसत अनंग। अंग अंग हरषत सुख बरसत खेलत भरि रस रंग ॥ १६ ॥ राग रंग रस सुख बाढ्यौ अति शोभा सिन्धु अपार। विपुल प्रेम अनुराग नवल दोऊ करत विहार अहार ॥२०॥ श्री वृन्दा विपिन विनोद करत नित छिन छिन प्रति सुख रासि। काम केलि माधुर्य प्रेम पर बलि बलि नागरी दासि ॥ २१ ॥ १४८ ॥

राग सारंग—मेरी सहज रँगीली नागरी (यों) राजत श्याम संग गोरी हो। दिन दूलह दुलहिनी लाड़िली अति विचित्र बनी जोरी हो १ नव निकुंज सुख पुंज में प्यारी उबटि

कुसुम कच डोरी हो २ तब चित्र चतुर नख सिख किये दै अंजन मृग मद रोरी हो खुभी पोति चारि चारि चूरी पग नूपुर की धुनि थोरी हो ॥ ३ ॥ सुन्दर वर कर दर्पन लियें मुख निरखत कुँवरि किशोरी हो। जाँचत रति चित चोंप सों नव नागरि नाहु निहोरी हो ॥ ४ ॥ प्यारी नख सिख सुन्दर सोहनी मृदु मुसकति है मुख मोरी हो। श्रवत सुधा शशि माधुरी पिय प्रीतम दृष्टि चकोरी हो ॥ ५ ॥ अंग अंग अनंग उदित भये दै परिरंभन रस रोरी हो। सुरत रंग तन मन हरैं गुन गूढ़ ग्रन्थि हँसि छोरी हो ॥ ६ ॥ दोऊ उमँगि उमँगि रस विलसहीं घन दामिनि भांमिनि भोरी हो। सब सम्पति को सुख सूचहीं यों खेलत है रस होरी हो ॥ ७ ॥ श्री विहारी विहारनि दासि को जस वरनें को मति थोरी हो। बलि बलि नागरी दासि दरसि सुख रीझि वारति मन तृन तोरी हो ॥८॥ १४६॥

स्यामा प्यारी कुँज बिहारी राजत अद्भुत जोरी हो। अति रस मत्त परस्पर विरहत खेलत है रस होरी हो ॥ १ ॥ सोंधें सरस अबीर अरगजा छिरकति कुँवरि किशोरी हो। हाव भाव चित चाव बढ्यौ अति बूका वंदन रोरी हो ॥ २ ॥ रतन खचित पिचकारी हाथनि भरि लई मृग मद रोरी हो। वे उनके वे उनके ताकत मुसिकत है मुख मोरी हो ॥ ३ ॥ कोऊ कर-तार कोऊ कर किन्नर संच सुरनि गति थोरी हो। वीना मुरज पखावज बाजत विविधि डफनि की जोरी हो ॥ ४ ॥ कोकिल कीर अलापनि में सुर ताल देत गुन गोरी हो लेत अतीत

सब को मन कर्षत भई अविचल मति भोरी हो। तन मन प्रान करौं न्यौछावरि या छवि पर तृन तोरी हो ॥ ६ ॥ श्री हरिदासी इष्ट उपासी या सुख में मति मोरी हो॥ श्री नागरीदासि की दासि परम रुचि जैसें चंद्र चकोरी हो ॥ ७ ॥ १५० ॥

राग सारंग—मेरे लाल लडैती रंग भरे मिलि खेलत छिन छिन होरी हो। सुरत रंग अंग अंग छिरकत नित्य नवल छबीली जोरी हो ॥१॥ नव गुन रस रूप विराजहीं कोक कला अति जान। तान तरंगनि मन हरैं मिलि गावत रसिक निधान ॥२॥ प्रेम उमगि चित चोप सों चितवत विवि मुख सुख रासि। कर कपोल परसैं हँसें अंग अंग अनंग प्रकासि ॥३॥ पुलकि पुलकि प्रीतम प्यारी लीनें उर सों उर लाइ। महा माधुरी पान कें उपजति नव नव भाइ ॥ ४ ॥ नवल निसंक अंक भरें मन मगन भऐ चित चाइ। रस सागर नागर नवल क्रीडत अति सुख पाइ ॥ ५ ॥ तान तरंग मन भांवती छवि उपजत रति दुहूं कोद। रंग भीनें लीनें सहचरी संग बढ़ै विचित्र विनोद ॥ ६ ॥ नेंन मेंन रंग रग मगे मृदु बेंन सिथल सुकुमार। श्री विचित्र विहारनिदासि कें उर आनन्द करत विहार ॥ ७ ॥ सरस सुहागनि सहचरी नागरी नवल किसोर। नित्य नव निकुंज सुख पुंज में मिलि विलसत निसि भोर ॥ ८ ॥ १५१ ॥

॥ श्री सरस देव जी महाराज के पद ॥

मतवारे री तेरे छैल छबीले नैना। घूम रहे अलबेले अलौकिक करत कटाछन सैना ॥ चपलारे अनियारे भारे कजरारे सुख देना। सरस पिया बस भये है विहारी कहि कहि साधू बैना ॥ १५२ ॥

श्री ललित किशोरी जी महाराज कृत

एरी सखी नित्य विहारनि वाल वरषत रूप रसाल री ॥रंग होरी ॥ एरी सखी चंचल नैंन विसाल निरखत लाल निहाल री । रंग होरी ॥ १ ॥ एरी सखी अद्भुत सुख की रासि मधुर मधुर मृदु हाँसि री॥रंग होरी॥ एरी सखी हुलसि हुलसि लड़कात आनंद उर न समात री ॥ रंग होरी ॥२॥ एरी सखी अंस अंस भुज देत अंको भरि भरि लेत री ॥रंग होरी॥ एरी सखी मिलत मिलत न अघात रोम रोम फूले गात री ॥ रंग होरी ॥ ३ ॥ एरी सखी वाढ्यो है रंग अपार उपजत कोटिक मार री ॥ रंग होरी ॥ एरी सखी परे है प्रेम रस जाल प्रांन प्रिया उर माल री ॥ रंग होरी ॥ ४ ॥ एरी सखी इनसे ऐई आहिं पटतर दीजै काहि री ॥ रंग होरी ॥ एरी सखी ललित सुकेलि अभंग श्री रसिक सखी अंग संग री ॥ रंग होरी ॥५॥१५३॥

राग ईमन—लियें सकल सौंज होरी की नवल किशोरी जू नेंननि में । स्वेत अबीर स्यांमता अगरसत नेह फुलेल सज्यो नेंननि में ॥ कुटिल कटाछि छुटत पिचकारी पीत रंग भरि भरि नेंननि में । सहज अरुन अनुराग गुलालहि मिलवत ललित सखी नेंननि में ॥ १५४ ॥

॥ श्री ललित मोहनी देव जी महाराज कृत ॥राग धनाश्री ॥

अति रंग विहारनि वाल वरषत लाल पै । इक टक निरखत सहज लाड़िली भाग लिख्यौ हो भाल पै ॥ चूंवि चूंवि तरवा हिय लाये माथे धरे विशाल पै । ललित प्रिये या छवि पर वारी रीझी रसिक सुख्याल पै १५५

श्री भगवत रसिक जी महाराज कृत

नव कुंज सदन में आजु रंगीली होरी। इत स्यामा उत श्याम मनोहर, खेलत उमंग न थोरी ॥ १ ॥ छल बल घात लगावत मोहन अंग बचावत गोरी। सावधान दोऊ सुघर सिरो-मणि अपनी अपनी ओरी।२। कोक कला कल केलि परस्पर जोवन जोर किशोरी। चतुर खिलार लाड़िली लालन, तुम जिन जानो भोरी ॥ ३ ॥ हा हा करो परो पाइन अब, ना चलि है बर जोरी। श्री भगवत रसिक उदार स्वामिनी, दै हैं सरवस छोरी ॥ ४ ॥ १५६ ॥

राग जैतश्री गारी—रहसि घर समधिन आई। ए सब सजनन के मन भाई ॥ ध्रु० ॥ समधिन सों समधोरो कीजे कीरति यह मन आई। नंदगाम ते महरि जसोदा समधिन न्योति बुलाई ॥ १ ॥ समधिन आई सब मन भाई निसि समधी संग खेली। खोलि हुलास आय ढिंग बैठी मोहोरन की सी थेली ॥२॥ अति सुरंग सारी समधिन की लहगा अति ही सुढार। फाटि रही सगरी समधिन की चोली जोवन भार ॥३॥ समधिन को हाथी को भावे आछो नीको पूरो। रंग रंगीलो और चटकीलो हाथ भरे को चूरो ॥ ४ ॥ समधिन तो दियोई चाहे खोली डवा की गांठि। अपने समधिन के नेगन कों हीरा पन्ना गांठि ॥ ५ ॥ समधिन की है गली सांकरी समधी आवन जोग। आधो वाहिर आधो भीतर व्होत वराती लोग ॥ ६ ॥ समधिन कें मेल्यो ही चाहे गल फूलन को हार। काढन कहे समधिन समधी सों डोला के जु कहार ॥७॥ यह लीला सुर नर मुनि गाई देखत रहे लुभ्याय। चिरजीवौ दूल्हे और दुलहिन सूरदास बलि जाय ८ १५७।

(चाचा) श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत ।। राग धनाश्री ।।

श्री प्रीतम लाड़ गहेली होरी बोलई । कनक पिचक रंग भरे कुंज मधि डोलई ।। १ ।। तब ललिता हुलसी मनकी रुचि जानि के । अगनित साज सुगंधनि राखे आँनि के ।। २ ।। उत पिय रसिक किशोर दाइ भाइनि भरे । इत मेरी राधा कुँवरि जूथ सनमुख अरे ।। ३ ।। परम बिचच्छन केलि कलानिधि भामिनी । अंग अंग रस रूप गहर गज गामिनी ।। ४ ।। चतुर चतुर दुहुँ ओर खेलत बहु भाइ सों । तकि तकि मेलत चोट बचावति दाइ सों ।। ५ ।। इत उत फूलनि गेंद चलति हो हो कहें । परसन देत न अंग रवकि कर में गहें ।। ६ ।। दृग उरझे तिहिं खेल सु यों छवि पावहीं । मानों उड़गन कों विवि कमल हिंडोर झुलावहीं ।। ७ ।। किधों अंबुज गहि लाये अरि के मीत कों । झक झोरी बहु देति मनावति जीति कों ।।८।। भरि भरि मुठी गुलाल परस्पर मेल हीं । मनु मन गज अंकुश देत अगमनें पेल हीं ।। ९ ।। कनक लता गहि ठाडी कुँवरि अनूप री । दृग चंचल मिलि वाढ्यौ वारिध रूप री ।। १० ।। पिचकारी कर धरत भरति रंग श्याम कों । मनु सर सांधि कला बहु सिखवति काम कों ।।११।। चौवा अंबुज बहु कोरा भरो रंग साँवरे । प्रियाहि भरनि को फिरत लेत बहु भाँवरे ।। १२ ।। कर परसन हित कहत भरो चलि वाल कों । रूप सवादी लोचन वरजत लाल कों ।। १३ ।। तब हरि रहे विचारि दुहुनि हठ जानि कें ।। मौरयौ है वान कटाच्छ अचानक तांनि कें ।। १४ ।। रहि गये ललित तमाल डार इक टक गहें । भले सूर ज्यों घूंमि घूंमि सनमुख सहें ।। १५ ।। पीत वसन खसि परयौ

गहन ललिता चली। पुनि सम्हरावत स्यामहिं पिय संग की अली ॥१६॥ बाजे दिये बजाइ गुलाल उडावहीं। हो हो होरी कहति दुहूँ दिस धावहीं ॥ १७ ॥ बादी हैं इत उत चौप रंगीले खेल में। माची है सोभा भीर महा रंग रेल में ॥१८॥ उमड़ि घुमड़ि घन आयौ प्रेम अछेह कौ। बरषत मिलि रस रूप भरत सर नेह कौ ॥ १६ ॥ पुनि मधुरी रस रीति अलापी भामिनी। थिरचर चर थिर किये गुननि अभिरामिनी ॥ २० ॥ निर्त्तत मोहन नागर रीति नई नई। झूंमक डारति सहचरि सैंन प्रिया दई ॥ २१ ॥ धाई गहे उर लाइ छबीली नागरी। यह होरी होहि न उम्भिल्यौ मोहन भाग री ॥ २२ ॥ गावति मंगल गीत जीत मन मानि कें। विचलित मदन महीप प्रेम बस जानि कें ॥ २३ ॥ होरी कौतिक चरित जाहि कापै भनैं। छिपे अमित अभिलाष प्रगट यामें बनैं ॥२४॥ वलि हित रूप उदार मिथुन बिलसौं लसौं। वृन्दावन हित रूप हियें या छबि सौं बसौं ॥१५८॥

नव कुंज प्रिया नव लाल खेलत रंग भरे। चाइ चढ़े अति रस बढ़े सुख रासि छबीले छैल प्रेम चहलैं परे ॥ खेलत० ॥ टेक ॥ १ ॥ घूमत मद गज राज ज्यौं पिय भरे मदन मद नैंन। इतहि मंद गज गामिनी छबि बरनत बनहि न बैंन ॥ खेलत० ॥ २ ॥ अति विचित्र बागे बनें हो रूप चुवत अंग अंग। सौंधैं अरगज सो सनें पट भीज लगे तन संग ॥ ३ ॥ भरि भरि इत उत चौंप सो हो मेलत रंग अबीर। महा प्रेम रस रंग रंगे सुख बरसत रविजा तीर ॥ ४ ॥ सब रंग छींट बसन बनी हो सोभा अमित निहारि। वृन्दावन हित रूप यौं लसैं मनु फूली है रूप फुलवारि ॥ ५ ॥ १५६

राग सारंग—इक रंग कुंड भरयौ प्यारी दिस दूजौ प्रीतम ओरी हो। भाजन भरि ढोरत जु सीस तैं बोलत हो हो होरी हो ॥ १ ॥ लाल हाथ नग खचित पिचकारी स्यामा हाथ कमोरी हो । हक धक करत न रंग उलैंडत व्है जु रही झक झोरी हो ॥ २ ॥ भीजि बसन चुहुँटे अंग अंगनि सोभा बढ़ी न थोरी हो । कहुँ मृग मद कहुँ चंदन वंदन कहूँ मंडित तन रोरी हो ॥ ३ ॥ फूली मनु फुलवारि मदन की चित वित लेति जु चोरी हो । तन कंपित मन अधिक साहसी लोक विचच्छन जोरी हो ॥४॥ स्याम वदन की स्याम मयूषैं गौर वदन की गोरी हो । सनमुख मिलि जड़ाव सौ कीनौं व्है रहे नैंन चकोरी हो ॥ ५ ॥ बूझत कहा कहति ललिता कर लीजै पिचक बहोरी हो । सैंननि ही मनुहारि करत नहिं मानत कुँवरि किशोरी हो ॥ ६ ॥ दोऊ रीझे दोऊ भीजे दोऊनि की मति रस आनंद बोरी हो । वृंदावन हित रूप उरझि रहे दोऊ प्रेम की डोरी हो ॥७॥१६०॥

राग धनाश्री दूजी चाल—परम सुहागिनि राधिका॥ तेरी चाँचरि नीकी॥ खेलत प्रीतम संग॥ कुँवरि विचच्छनी तेरी चाँचरि नीकी॥ यह होरी रस वरषनी ॥तेरी०॥ तैं राख्यौ अति रंग ॥कुँवरि०॥ ॥ १ ॥ यह अवनी अति हरषिवौ ॥ तेरी० ॥ ठुमकि धरत जब पाइ ॥ कुँवरि० ॥ मानिक चौक सुहावनौ ॥ तेरी० ॥ प्रतिविंवत तननु सुभाइ । कुँवरि० ॥२॥ कौतिक देखि धरा भई ॥ तेरी० ॥ बिछे बिछौना रूप ॥कुँवरि०॥ इत उत विहसि परी मनौं ॥तेरी०॥ भयौ छबि जाल अनूप ॥ कुँवरि०॥३॥ जो झूमक तू इत भरै ॥ तेरी० ॥ दरसत अवनी मांहि ॥कुँवरि०॥ पिय दृग झोटा लेत है तेरी० तन भौंवरि लै जांहि । कुँवरि० ४

तार जंत्र झीनें बजें ॥तेरी०॥ मधुरव पणव मृदंग ॥ कुँवरि० ॥ कुशल रीति संगीत में ॥तेरी०॥ गान निपुन सब अंग ॥कुँवरि० ॥ ५ ॥ फाग उघारी चातुरी ॥ तेरी० ॥ खुली रतन गुन खानि ॥ कुँवरि० ॥ लाल घुमायौ प्रेम सों ॥ तेरी० ॥ सकल कलानि निधान ॥ कुँवरि० ॥ ६ ॥ कनक कोर पट घूँघरी ॥ तेरी० ॥ हालत झूमक देंन ॥कुँवरि०॥ मुख विधु फैलति चाँदनी ॥तेरी०॥ रूंदति है मद मेंन ॥ कुँवरि० ॥ ७ ॥ गावति होरी चरित कों ॥ तेरी० ॥ राजति सखियन बीच ॥ कुंवरि० ॥ प्रीतम छिरक्यौ अरगजा ॥ तेरी० ॥ ताकी मांची कीच ॥ कुँवरि० ॥८॥ यहि बिधि राखति चरन भुव ॥ तेरी० ॥ मनु देत मदन सिर छाप ॥कुंवरि०॥ रस विद्या सर्वेस्वरी ॥ तेरी० ॥ अमी श्रवित आलाप ॥ कुँवरि० ॥ ९ ॥ रसिक लाल के रूप नें ॥ तेरी० ॥ लोकनि बाँधी सींव ॥ कुँवरि० ॥ सो तो रूप आधीन है ॥तेरी०॥ देखि डुलावत ग्रीव ॥ कुँवरि० ॥१०॥ बूँका बंदन उड़त है ॥तेरी०॥ उड़त अबीर पराग ॥कुंवरि०॥ चहिले परि गये रंग के॥तेरी०॥ वन पूरित अनुराग ॥ कुँवरि० ॥ ११ ॥ उत नागर इत नागरी ॥तेरी०॥ रंग सनत हिय हेत ॥कुँवरि०॥ सखी भई सब कौतिकी ॥तेरी०॥ अनहोतौ सुख देत ॥कुँवरि० ॥ १२ ॥ पुनि प्रीतम निरतन लगे ॥ तेरी० ॥ ऐसे ही गति लेन ॥ कुँवरि० ॥ नाहि नाहि ललिता कहै ॥तेरी०॥ वैसी लाल बनेंन ॥कुँवरि०॥१३॥ होड़ परी इत उत भली ॥तेरी०॥ रहि ठौर बचावौ धार ॥कुँवरि०॥ भरि पिचकें सनमुख भये॥तेरी०॥ छांड़ति निपुन खिलार॥कुँवरि० ॥१४॥ तजति न नागरि ठौर कों ॥ तेरी० ॥ साधें ठाड़ी अंग ॥ कुँवरि० । परसत छींट न रंग की तेरी० मोहन मति

करी पंग ॥ कुँवरि० ॥१५॥ प्रिया चलाई बहुरि वदि ॥तेरी०॥ प्रथम ही गये उकाइ ॥ कुँवरि० ॥ भाव सहित पुनि साधि कें ॥ तेरी० ॥ तन मन दिये भिजाइ ॥ कुँवरि० ॥ १६ ॥ सजनी करत प्रशंस को ॥तेरी०॥ रीझै कोविद छैल ॥ कुँवरि०॥ गाँठि जोरि पुनि लै चलीं ॥तेरी०॥ रंग महल की गैल ॥ कुँवरि० ॥ ।१७। पट भूषन औरैं सजे ।तेरी०। राचे औरहि रंग । कुँवरि०। मधु रस पान कराइ कें ॥तेरी०॥ सरसत केलि अनंग ॥कुँवरि० ॥१८॥ आनंद वारिद ऊनयौ ॥तेरी०॥ कुंज गगन छवि भीर ॥ कुँवरि० ॥ सुरति उमगि रस वरषहीं ॥ तेरी० ॥ भूषण गरज गंभीर ॥ कुँवरि० ॥१६ ॥ पिकी कलापिनि चातकी ॥ तेरी० ॥ अलि हित रूपनि पास ॥कुँवरि०॥ छिन छिन प्रति सुख भीजहीं ॥ तेरी० ॥ लखि दृग रूप प्रकाश ॥ कुँवरि० ॥ २० ॥ कोक कला उपजत नई ॥ तेरी० ॥ नव नव रस उनमाद ॥ कुँवरि० ॥ वृंदावन हित गाइ यश ॥तेरी०॥ श्री हरिवंश प्रसाद ॥ कुँवरि विचत्तनी तेरी चाँचरि नीकी ॥ २१ ॥ १६१ ॥

राग काफी परज—आज मान सरोवर मेला । कुंड तीर मिलि खेलत होरी राधा वल्लभ अलबेला ॥ १ ॥ बाजत बंशी बीन मुरज डफ झाँझि मृदंग तबेला । गावति सखी बढ़ावति चौंपनि रचि रस छंद नवेला ॥२॥ चलत अबीर गुलाल पोटरी रंगनि भरि भरि बेला । निर्त्त करत कहैं हो हो थेई थेई रचत विविधि विधि खेला ॥ ३ ॥ ब्रजवासी दरसन हित आवैं नर नारी व्है भेला । नाचैं गावैं डफहि बजावैं बोलत हेली हेला ॥ ४ ॥ अंब कदंब कलप तरु सेंनी नव तमाल पुनि केला जाय जुही केतुकी

जहाँ नित बिहार रस रेला। वृंदावन हित मंडल यमुना बंशीवट सुख झेला ॥ ६ ॥ १६२ ॥

प्यारी आवो नित नित कुशल सों सुखदायक रंग भीनौ फाग। मोहन नव रंग रसिक सों खेलौ उर भरि अनुराग ॥१॥ उमगि उमगि रंग वरषिनो पायौ नैंननि फल एह। सुख लिख दियौ लिलाट तुव किहि रसना वरनौं पिय नेह ॥ २ ॥ हुलसि चौप सों झूमिका दीयौ दामिनी ज्यों कौंधि। मनहु कमल संपुट लीयौ पिय छाई नैंननि यों चौंधि ॥३॥ मुख माड्यौ गरवाहु दें गाढ़ी लपटनि दुहुँ कोद। वहु अनखनि लडकानि लखि बाढ़्यौ बिनु मित मन मोद ॥ ४ ॥ ललित बेलि फैलनि नई झूँमी लगि ललित तमाल। किधों मेघ लगी दामिनि मिलि रीझी तजि अपनी चाल ॥ ५ ॥ यह होरी रस उपजनी जाकी आसा सुख वारह मास। बिलसि सुहागिनि राधिका फल भोगी प्रीतम नित पास ॥ ६ ॥ षट रितु माँहि वसंत रितु जैसें तन सोभा प्रांन। वरस सिंधु मथिकें किधौं कियो फागुन विधि चतुर सुजान ॥७॥ हिय कौ हिय प्रफुलित करै पूरन पिय रसिका नंद। त्रियनि तिलक मणि रसिकनी गुन गाऊं किहि विधि रचि छंद ॥८॥ छकनि रूप रस की सदा घूमें योवन मद नैंन। श्रवन लगायें रहत पिय अस अमृत मय आचिरज वैंन ॥ ९ ॥ चाचरि चरित कहा भनों पिय ललकै हिय वारंवार। यह असीस सुनि लीजिये रहौ कोंकन अविचल जु विहार ॥ १० ॥ परम अलौकिक लोक में अति कमनी यह रविजा तीर। परमानंद सदा श्रवै तरु वेलिनु खग सोभा भीर ॥ ११ ॥ रुचि लियें वृन्दनि सहचरी

[illegible]

रुख राखि ॥१२॥ में वांछित पायौ सवै गुनवंती को भाग प्रसंश। वृन्दावन हित रूप तुव हग माती श्री हित हरिवंश॥१३॥१६३॥

रम्य कानन भयौ मिलन रितु राज कें राधिका लाल खेलन उमाहें भरे ॥ छुटति पिचकैं छबीली दुहूँ करनि तें भीजि आनंद देखि परम कौतिक करे ॥ १ ॥ सखी इत उत बढ़ावति जु चित चौंप को सूर रस रन महा मनहुँ बानंनि खरे। कछु मुख हँसनि कछु दमकि दसनावली वचन हो हो कहत बीज आनंद झरे।२। रुपे सनमुख चलीं वंदन जु पोटरी नेह के खेत गाजत न पाछैं टरे। रसिकनी कुँवरि औसर भलौ ताकि कें लाल के गहन को अगमने पग धरे ॥ ३ ॥ कदंब तरु पांति तहाँ लेति पिय भाँवरे रसिक खिलवार दिखि आपु गौं अनुसरें। भ्रमत सर रंग के मधुप लोभी मनों परम सोभा बढ़ी सवनि के मन हरे ॥४॥ प्रिया मोहन परी गहन कों पैज वदि मुदित ललितादि हाँ हाँ वचन उच्चरे। बिखिर घनसार परचौ लाल की फेंट तें वृन्दावन हित रूप स्वामिनी बस परे ॥ ५ ॥ १६४ ॥

राग धनाश्री-ताल आड—होरी सम को सुखदाई, किशोरी लाड छकी, सुख छकी, महाई, चाचरि रंग मचाई ॥टेक॥ वंदन मूठि वगेली पिय प्यारी लियौ वदन दुराई। देखौ विपुल पराक्रम वारिज ससि संका उपजाई ॥ १ ॥ मृग मद लै अंजुरी में स्यामा प्रीतम भरन जु धाई। प्रेरी प्रेम रूप मनु वेली यों झुक उर लपटाई ॥ २ ॥ उसरि गई चेटक सो दै कें सखिनि यूथ मनु आई। वहुरि कमोरी भरि केशरि रंग पिय दिस ग्रीव दुराई ॥ ३ ॥ पीतांवर आडो दै सखियनि उत रच्यो छदम महाई। लघु तमाल सेंनी जु ओट व्है आये दृष्टि बचाई ॥४॥ औचक रंग छांड्यौ

जु पिचकारी सुन्दरि रंग भिजाई । गये पलाइ यूथ अपने में समझि प्रिया मुसिकाई ॥५॥ नागरि पिचक साधि भई सनमुख सजनिनु युक्ति बताई । सनय सनय बढ़ि गई अगमनी वंदन लियौ है उड़ाई ॥ ६ ॥ मुरि चितये मोहन उत इततें गहे अचानक जाई । धन्य फाग सबही मन भाई जिन अभिलाष पुजाई ॥ ७ ॥ गाढ़ी अंक भरनि कौ आनंद प्रीतम उर न समाई । वृन्दावन हित रूप वारने दृग वांछित निधि पाई ॥ ८ ॥१६५॥

राग गौरी–ताल आड—दूलह दुलहिनि आज, चांचरि चौंप बढ़ी है बोलत होरी । रविजा तट संघट भट काछे इत उत सखिनु समाज ॥ चांचरि० ॥ टेक ॥ १ ॥ रंगन पिचक छरी कर भाजन गर्वित भाषत बैंन ॥ चाँचरि० ॥ सोभा भीर देखि बिन उद्दिम विचरी सेंना मैंन ॥ चाँचरि० ॥ २ ॥ आवत सनय सनय चहुँ दिस तें घेरन मोहन लाल ॥ चाँचरि० ॥ सेंननि ही में सखिनु सिखावति अति गुनवंती बाल ॥ चाँचरि० ॥३ ॥ उघरि पछमनें हो हो बोलत लाल रसिक मणि ,राइ ॥ चाँचरि० ॥ हँसति छबीली छवि सों पिय के सनमुख ग्रीव ढुराइ ॥ चांचरि० ॥४॥ वंदन डारन भुजा उठाई भयौ दृगनि जब मेल ॥ चाँचरि० ॥ उततें रंग छुटी पिचकारी बढ़यौ परस्पर खेल ॥ चांचरि० ॥५॥ नेह भरन सों भरयौ अरगजा पिय मन गति भई ऒर ॥चाँचरि०॥ भांति भांति भिजवति जु विचत्तन यह रस मूरति गौर ॥ चाँचरि० ॥ ६ ॥ मृग मद भरि अंजुली जु वगेली उछटि छींट परी भाल ॥ चाँचरि ॥ रूप सवादी लोचन डारयौ प्रीतम के चित चाल चांचरि० ७ दुहुँन के खेल दुहुन के मन कों वरवांस-

गये पिचकनि सांधि ॥ चांचरि० ॥ ८ ॥ आवौ री तुम गावौ सजनी होरी कौ अनुराग ॥ चांचरि० ॥ कहौ लोक में कहिये काकौ राधा सम जु सुहाग ॥ चांचरि० ॥ ६ ॥ वृन्दा कांनन सुख कौ सागर ये दोऊ रूप जहाज ॥ चांचरि० ॥ प्रेम पवन के प्रेरे विचरत तोइ भयौ रितु राज ॥ चांचरि० ॥ १० ॥ सखिनु नेंन सौदागर कीजै इच्छा वनिज बनाइ ॥चांचरि०॥ या संपति सों लहनों इतनों नहि उर कोश समाइ ॥ चांचरि० ॥ ११ ॥ दृगनि टकटकी तन सुधि बिसरी तुमहीं करौ सचेत ॥चांचरि०॥ यह रस लीला निगम अगोचर को कवि समझै हेत ॥ चांचरि० ॥ १२ ॥ प्रेम खेल की सूक्षम गति है जानें विरलौ कोइ ॥ चांचरि० ॥ वृन्दावन हित रूप कृपा जो व्यास सुवन की होइ ॥ चांचरि० ॥ १३ ॥ १६६ ॥

राग विहागरौ—खेलत राधा लाल री ॥ रंग हो हो होरी ॥ कमनी रविजा तीर री ॥ रंग हो हो होरी ॥ सोभित नव रंग चीर री ॥ रंग हो हो होरी ॥ भीजे सबै सनेह री ॥ रंग हो हो होरी ॥ १ ॥ चाँचरि माची परस्पर ॥ रंग० ॥ भई हिय हुलसन हेत री ॥ रंग० ॥ पिचक चलें गेंदुक चलें ॥रंग०॥ रवकि अंक भरि लेत री ॥ रंग० ॥ २ ॥ उड़त जु वंदन पोटरी ॥ रंग० ॥ इत उत खेलन लाग री ॥ रंग० ॥ गगन चढ़ौ सोहै जु यों ॥ रंग० ॥ मनु दरस्यौ अनुराग री ॥ रंग० ॥ ३ ॥ अरुन अबीर बिछे जहाँ ॥ रंग० ॥ मिथुन फर्‌यौ फल फाग री ॥ रंग० ॥ तरवर सरवर जग मगै ॥ रंग० ॥ अवनि बढ्यौ सौभाग्य री ॥ रंग० ॥ ४ ॥ भाँवरि भरहिं जु प्रेम सों । रंग० । मृग मद चर-

उडेरैं रंग री ॥ रंग० ॥ ५ ॥ ललित छैल दाइनु भरे ॥रंग०॥ चरित पढ़े रति नाथ री ॥ रंग० ॥ उसरि जाहि आगे झुकें ॥ रंग० ॥ भरे रंग भाजन हाथ री ॥ रंग० ॥ ६ ॥ रूप बदल कछि आवहीं ॥ रंग० ॥ नाना स्वांग वनाइ री ॥ रंग० ॥ चौंक परे देखत हँसें ॥ रंग० ॥ अंग न परखे जाइ री ॥ रंग० ॥ ७ ॥ बारिज मुखी बिचच्छनी ॥रंग०॥ चतुरा चंचल नैंन री ॥ रंग० ॥ दुहुँ मन मोद बढावहीं ॥ रंग० ॥ रचत छदम के बैन री ॥ रंग० ॥८ ॥ किलकति अति लाड़ि राधिका ॥रंग०॥ लागति निज अलि अंश री ॥ रंग० ॥ लाल लट्टू देखत भये ॥ रंग० ॥ प्रमुदित करत प्रसंस री ॥ रंग० ॥ ६ ॥ कुंज कुंज खेलत फिरें ॥रंग०॥ गावति ललित धमारि री ॥रंग०॥ लीला रूपी सहचरी ॥ रंग० ॥ राखे साज संवार री ॥ रंग० ॥ १० ॥ कहुँ दुरि खेलत खेल बहु ॥ रंग० ॥ कहूँ प्रगट भरें धाइ री ॥ रंग० ॥ तन मन लपटनि नेह की ॥ रंग० ॥ केहि विधि वरनी जाइ री ॥ रंग० ॥ ११ ॥ भरनि भरावनि चोप सों ॥रंग०॥ सुख विलसत बहु भांति री ॥ रंग० ॥ छिन छिन बाढ़नि प्रेम की ॥ रंग० ॥ नहिं जानत दिन राति री ॥ रंग० ॥ १२ ॥ केशरि रंग मोहन सने ॥ रंग० ॥ कस्तूरी कुँवरि अनूप री ॥ रंग० ॥ धनि होरी त्यौहार यह ॥ रंग० ॥ अदल बदल कियौ रूप री ॥ रंग० ॥ १३ ॥ मृदु बोलें चित खोलहीं ॥ रंग० ॥ कूटक रचत अनंत री ॥ रंग० ॥ देत असीस जु सहचरी ॥ रंग० ॥ नित नित होहु वसंत री ॥ रंग० ॥ १४ ॥ हंस सुता तट जाइ कैं ॥ रंग० ॥ मांची कमलनि मार री ॥ रंग० रमकें झमकें बदन विधु रंग० पट भूषन न सम्हार

री ॥ रंग० ॥ १५ ॥ तकि तकि कें चोटें करें ॥ रंग० ॥ लाल भजत ढ़िग देखि री ॥ रंग० ॥ एकत ह्वै पैड़ें लगी ॥रंग०॥ कौतिक परम विशेष री ॥ रंग० ॥ १६ ॥ तकि भुज भरि लिये नागरी ।रंग०। हिय भई मनसिज जागरी । रंग०॥ वृंदावन हित रूप वलि ॥रंग०॥ फल्यौ मनोरथ वाग री ॥रंग०॥१७॥१६७॥

राग विहागरौ—चलिये पिय सुख देन आजु वलि खेलिये होरी । प्राननाथ भाँवते कंत सौं मिलि सुख विलसौ गोरी ॥आजु वलि०॥ टेक ॥ १ ॥ हो प्रवीन तुमही जु विचारो देखो यह वन सोभा । वेली विटप उमहि लपटानी उलटी है नव गोभा ॥२॥ प्रथम दिवस यों करति वीनती ठाड़ी अलि कर जोरें । बिनु ही मान फाग खेलन हित मनु माननीं निहोरें ॥३॥ सखी विचित्र वचन रचना करि अति मन मोद बढ़ायो । आज्ञा पाइ लाइ पट भूषन रचि सिंगार बनायो ॥४॥ रूप अवधि रस रासि विहारिनि श्री वृंदा-वन रानी । वारौं चन्द्र वृंद सत दामिनि उपमा देति लजानी ॥ ५ ॥ तैसेइ नव किशोर वर स्याम वरन पिय प्यारे । ललित छैल व्रज जन मन मोहन प्रिया नैंन के तारे ॥६॥ वोलनि मिलनि चलनि हँसि चितवनि सब के चित आकरषें। मृदु मुसिकानि प्रसन्न बदन की मनहु सुधा रस वरषे ॥ ७ ॥ ललना लाल संग मिलि निकसे अंस अंस भुज दीयें । भरि लियौ अवीर गुलाल विविधि रंग सखी समाजहि लीयें ॥ ८ ॥ वन अति रम्य पार सरवर की कुसुम वृंद विकसाई । नग मणि जटित विविधि नाना रंग खेल रच्यौ तिहि ठाईं ॥ ६ ॥ वदि लियौ दाव हारि जीतनि को सो गति लखी न जाई पिय जानें के प्रिया भाँवती तेहि छिन की

राधा। भाइन भरे नेह नव रंगी जिनको मतौ अगाधा ॥ ११॥ कोऊ कर पिचक कोऊ कर भाजन भरि सुगंध जल मेलें। सरस सुवास भयौ वन पूरित चलति रंगनि की रेलें ॥ १२ ॥ कोऊ भरि पुहुप पराग उडावत कोऊ अबीर भरि झोरी। कोऊ इक मिलि मधुरे स्वर गावति कोऊ कहत हो होरी ॥१३॥ कोऊ चंदन वंदन लै आई चढ़ि ऊचे छिरकायो। छीटें बनी गौर स्यामल तन निरख अनंग लज्याओ ॥१४॥ कोऊ इक भरति घोरि कुमकुम रंग कनक कमोरिनु माहीं। छल सों देति दुराइ स्याम तन छुवन देति नहिं छाहीं ॥ १५ ॥ पग धर फिरें न पाछें कोऊ रुपे सुभट दुहुँ ओरी। ता छिन के सुख के कहिवे कों त्रिभुवन में कवि को री ॥ १६ ॥ स्यामा जू दई है सैंन ललिता कों बहुत गुलाल मँगायौ। एक संग भरि लई पोटरी पिय की ओर चलायौ ॥१७॥ दिन कर छिप्यौ भई मनु रजनी सजनिनु बुद्धि उपाई। दाव पाइ ललिता प्रीतम को गहि तेहि छिन लै आई ॥ १८ ॥ अति सुदेस मंडल पिय प्यारी गांठि जोरि बैठाये। मानों रंक मनोरथ पाये यों मोहन विकसाये ॥१९॥ तब पुनि रच्यौ रास रस मंडल निर्त्तत अति रंग भीनें। चुह चुहे चीर चुहुटि तन लागे छवि हू की छबि छीने ॥२०॥ नेह भरे रस भरे भरे रंग रूप गहर अंग अंगा। नागर नृपति लाल नव ललना मिलि विहरत इक संगा ॥२१॥ कुसुमित लता भवन सुख सोभित कियो प्रवेश ता माहीं। वृंदावन हित रूप सहेली यह सुख नित विलसाहीं ॥२२॥१६८॥

राग सारंग—अहो वन वीथिनु वीथिनु फाग राधा हरि खेलत रंग भरे हो। नवल दोऊ अलवेले छवि सींव अहो ठाड़े जोरें भुज ग्रींव मधुर स्वर गावहीं हो टेक हां हो त्रिविध समीरें

यमुना तीरें कुंज विविधि विधि राजें । हां हो कल्प वृक्ष जहां भूमि मनोहर नग मणि खचित विराजै ॥ परम पुनीत पढ़त खग बानी मनहु मधुर घन गाजै । चित बढ्यौ चाव निरखि वन संपति पिय प्यारी दल साजें ॥ अहो वन वीथिन० ॥१॥ हां हो कंचन कलश भरे केशरि रंग सजे खेल के काजें । हा हो, ताल मृदंग झांझि डफ वीना मिले एक स्वर वाजें ॥ सहचरि गावति जुगल लडावत देति असीस सदा जै । वरषति रंग चलति पिचकारी हो होरी कहि भाजें ॥ अहो वन वीथिनु० ॥ २ ॥ हां हो, नव जोवन गुन रूप अवधि दोऊ तैसीय संग सहेली । हां हो, मनहु मेघ अमृत करि सींचीं कोमल कंचन वेली ॥ मंडल रच्यौ है वनाइ सहचरिनु अंश अंश भुज मेली । करत विनोद रसिक रस लंपट निर्त्तत पिय अलवेली ॥ अहो वन वीथिनु० ॥३॥ हा हो, ता पाछें दोऊ न्यारे व्है यूथ वांटि करि लीनें । हा हो, रंग रंग अवीर गुलाल पोटरी भरि सबकें कर दीने ॥ तकि तकि एक एक पर मेलति अरुन दसौं दिस कीनें । नहीं सम्हार होति आपुस में वदन एक रंग भीने ॥अहो वन वीथिनु०॥ ४ ॥ हां हो, अवनी अरुन अरुन द्रुम पल्लव तीर तरनिजा छायौ । हां हो, हिय भयौ हरखि देख यह सोभा भरि भरि झोरि उडायौ ॥ विदिसा दिसा जाति नहिं जानी मनहुँ अरुन घन आयौ । कुहुकत मोर कुँज वन वीथिनु भयौ लाल मन भायौ ॥ अहो वन वीथिनु० ॥ ५ ॥ हां हो, भाजन रंग संग भरि लीनें इत उत दोऊ ओरें । हा हो, सनमुख भये स्याम श्री स्यामा छूटति रंग हिलोरें ॥ घट भरि भरि ढोरें मोहन सिर क्रिये है स्याम तन गोरे भई रंग कीच

॥६॥ हां हो, वहुरयौ रच्यौ है खेल इक सखियनि नव निकुंज की पोरी। हां हो, फूली फिरत महा रंग भीनी सबै भई एक ठोरी॥ कोऊ इक ढीठ आइ पाछे ते गाँठि दुहुँनि की जोरी। एक हँसति दै दै मुख अंचल एक कहति हो होरी॥अहो वन० ॥७॥ हां हो धनि यमुना शुभ धाम मनोहर लागतु परम सुहायौ। हां हो, वलि वलि जाऊं आज इहि औसर यह सुख दृग दरसायौ॥ जै जै श्री हित रूप कृपा निधि मन अभिलाष पुजायौ। वृन्दावन हित खेल केलि रस आनंद सिंधु वढायौ॥ अहो वन वीथिनु, वीथिनु फाग राधा हरि खेलत रंग भरे०॥८॥१६९॥

री होरी सरस सुहाग भरी खेलत गज गामिनि। नैंन करनि अनुराग पिय हिय भरैं भामिनि॥ १ ॥ धार चलैं तीच्छन खरीं दृग कोर दुरावनि। नेह लपेटनि अतर वर वहु दाव उपावनि॥ २ ॥ अभिलाषनि भीजत रहै छिन छिन चित चावनि। वृंदावन हित हिय रमीं यह भरनि भरावनि॥ ३ ॥ १७० ॥

अहो आज भोर भलैं ही रचत अनोखे खेल। उठे उनींदे होरी बोलत मसलत वदन फुलेल॥ चौप चौगुनी इत उत हुलसनि धाइ धरत कर सों कर पेल। वृंदावन हित रूप मद छके डारत सोधें रेल॥ १७१ ॥

असीस कौ—होरी कौ सुख विलसि असीस सुनावत सजनी। दंपति भरि अनुराग विपिन संतत दिन रजनी॥ कौतिक ना ना रचत सींव कांनन नहि तजनी। वृंदावन हित रूप धन्य जे इहि सुख भजनी॥ १७२ ॥

राग कैदारौ—होरी खेलें अति रंग मगे। किये सब अभिलाष पूरन कुंज मारग लगे। वारि पुहुपांजुलि सखी अलसात

रजनी जगे　वृन्दावन हित रूप पोढे केलि रस जग मगे।१७३।

राग काफी—हो रीं समधिन सुख दीनीं। हा हा लाइक ब्रज रानीं ॥ टेक ॥ कीरति अभिलाष जु कीनीं। ढाढ़िन कौं आज्ञा दीनीं ॥ १ ॥ मेरी जाइ बीनती कीजै। होरी में मिलि सुख लीजें ॥ २ ॥ नाते ही कौ सुख लाहौ। कीजै मन सफल उमाहौ ॥ ३ ॥ मेरी पांलागन कहियौ। संग लै वेगि आवन चहियौ ॥ ४ ॥ समधिनि सम बुद्धि कहावै। ताकौ मिलिबौ मुहि भावैं ॥ ५ ॥ यह सुनि कैं ढाढिनि गमनीं। जहाँ घोष राइ गृह कमनीं ॥ ६ ॥ जसुमति कौं माथौ नायौ। कीरति अभिलाष सुनायौ ॥ ७ ॥ विनती सुनि कैं हिय फूलीं। चलिवे कौं मन अनकूलीं ॥ ८ ॥ प्रोहित बृषभांन पठायौ। ब्रजराज लैंन कौं आयौ ॥ ९ ॥ कछु अलभि लाभ सौ पायौ। मन वचन सजन कौ भायौ ॥ १० ॥ सुनि गोपी गोप सिहाये। सजि साजि सिंगार सब आये ॥ ११ ॥ साजे डफ प्रणव मृदंगा। आनक महुवरि मुखचंगा ॥ १२ ॥ भाजन वहु रंग भरे है। सचि अंबर अतर धरे है ॥ १३ ॥ मिलि तरुन विद्ध अरु वारे। बरसानें सबहि सिधारे ॥१४॥ मोहन जु सखा संग साजे। बाजे अनेक बिधि बाजे ॥ १५ ॥ ना ना बिधि स्वांग बनाये। देवनि संभ्रम उपजाये ॥ १६ ॥ आवत बरसानें ओरी। सब बोलत हो हो होरी ॥ १७ ॥ कौतूहल अति अति शोभा। उलहीं सनेह हिय गोभा ॥ १८ ॥ फागुन जु भयौ अगिवांनी। यह आवनि देवन जानीं ॥ १९ ॥ मोहन जु मंडली काछैं। आवत न्यारे बनि आछैं ॥ २० ॥ वंदन सकटनि जु भरे है। उड़ि अंबर अरुन करें है ॥ २१ ॥ अति धौंसनि की धधकारें। हो हो कहि छैल

पुकारैं ॥ २२ ॥ बनीं महरि संग यौं बाला । मनु रची रूप की माला ॥२३॥ बनें गोप नंद संग जानौं । सुर निकर लज्यावत मानौं ॥ २४॥ रावलि पति आगैं आये । मारग पाँवड़े बिछाये ॥ २५ दिन दूलह आये पौरीं । रानीं करन आरतो दौरी ॥२६॥ मिलि गोकुल रावलि रानैं । होरी के चरित बखानैं ॥२७॥ लै लै सुगंधि तन चरचैं । मनसुख जु अलौकित परचैं ॥२८॥ दिपै मानिक चौक जहाँ है । मच्यौ होरी खेल तहाँ है ॥२९॥ कम-नीय कनक मनु गिरि है । दोऊ नाँचत फिरि फिरि है ॥३०॥ भई अबीर गुलाल अँधेरी । मति प्रबल प्रेम नें घेरी ॥३१॥ आरज गोपनि के टोला । बाजें डफ आंनक ढोला ॥ ३२ ॥ होरी के सुख उर भीनैं । लगे चुहुँटि बसन तन भीनैं ॥ ३३ ॥ सब छके सजन कौतूह री । बारौं ब्रह्मानन्द समूह री ॥३४॥ कर लै बंदन मुख मांडै । कहैं वचन लाजि तजि भांडैं ॥ ३५ ॥ इक एकनि कौं गहि लावैं । गूलरी माल पहिरावैं ॥ ३६ ॥ कर पटकि कहत हो हो हो । पहिराइ गयौ सो को हो ॥ ३७ ॥ भवननि चढ़ि भांमिनि गावैं । ब्रजपति कौं गारि लगावैं ॥ ३८ ॥ तुम वा भांमिनि के कंता । जिन पुत्र जन्यौं गुन वंता ॥ ३९ ॥ बड़ी परम कौतिकी बनिता । अपु गोर स्याम सुत जनिता ॥ ४० ॥ अब बरसाने है आई । करि है फिरि सदन बधाई ॥४१॥ जाकैं अग्याकरी पति है । परहित में लाइक अति है ॥४२॥ यह सुनि बृष-भांन हँसे है । वारिज ज्यौं वदन लसे है॥४३॥जसुमति जब नियरें आई । आगें ह्वै कीरति लाई॥४४॥रानीं अरघ पांवडे करि कैं । दै भेंट मिली भुज भरि कैं ॥४५॥ मणि मंदिर कीरति अँगना ।बैठी भईं सबही मगना ॥ ४६ ॥ आई कान्ह कुँवर की मैया सब भेटति

लेत बलैया ॥ ४७ ॥ जसुमति यश लोक धुजा है । सजननि वर दैंन भुजा है ॥ ४८ ॥ लाइक जु लोक को ऐसी । ब्रजपति की रानी जैसी ॥४९॥ सुनि सुनि कैं यश जीवत है । श्रवननि अमृत पीवत है ॥ ५० ॥ अभिलाष जु पूरन कीनें । बरसाने जब पग दीनें ॥ ५१ ॥ यह भाँन भवन अपनौं है । अब मन क्रम वच थपनौं है ॥ ५२ ॥ इहिं विधि हम यश गावति है । गुनवंती करि मानति है ॥ ५३ ॥ सुख दायक तुम मत पूरौ । ब्रज माचि रह्यौ धमतूरौ ॥५४॥ तुम गुपत धर्म कौ साध्यौ । करि प्रीति कौन आराध्यौ।५५।नव रंग प्रेम उर सरस्यौ । ताकौ फल यह सुत दरस्यो ।५६। तुम में गुन शील जु भारी । ब्रज पति हू की आज्ञा कारी ।।५७।। परसंस करत नर नारी । हम हूँ यह बुद्धि बिचारी ।।५८।। धनि धन्य रावरी करनी । नरदेव मुनीसन बरनी ॥ ५९॥ माखन तें कोमल हीयौ । सबकौं सनाथ तुम कीयौ॥६०॥ सब पार परोसी जेहा । सुधि करत तुम्हारौ नेहा ॥ ६१ ॥ एजू अपने तन चहियै । इक बात न्याय की कहियै ॥६२॥ सुत कौ अरु बरन तिहारौ । सूधें करि दृष्टि निहारौ ॥ ६३ ॥ दीसत कछु पैंडौ न्यारौ । को कारन ताहि विचारौ ॥ ६४ आगें जिन मुख तें भाखो । यह बात ढकी ही राखो ॥६५॥ अंचल दै कैं मुख ओली । मुसकाइ महरि यौं बोली ॥ ६६ ॥ तुम कहति चातुरी बचना । घर घर ऐसी ही रचना ॥ ६७ ॥ केशरि रंग भरी कमोरी । लै महरि सीस तें ढोरी ॥६८॥ कीरति रंग कलश मंगायौ । जसुमति के सिर तें नायौ ॥ ६९ ॥ रंग भरैं भरावैं हरषैं । बंदननि पोटरी बरसैं ॥ ७० ॥ खेलति हैं आरज गोपी । सोभा सुख इत उत ओपी ७१ । लेपति मुख सौरभ लैं लैं

इक नाचैं तारी दै दै ॥७२॥ गह गड़ रनिवास जु महियाँ। गहि महरि नचावैं बहियाँ ॥ ७३ ॥ रंग भाजन ढारैं नारी। भवननि बहि चली पनारी ॥७४॥ लखि देव वधू हिय सरसैं। व्रज आवनि कौं जिय तरसैं ॥ ७५ ॥ खेलैं होरी मनु धरि देही। सुख भीजैं सजन सनेही ॥ ७६ ॥ गावैं गारी सुमति सिहातें। हुलसैं इत उत कैं नातें ॥ ७७ ॥ विधि सौं कीनौ समधौरौ। तामें उपज्यौ सुख औरौ ॥७८॥ लाल न्यारे भवन खिलायौ। फागुन जु महा फल पायौ ॥७९॥ राधा के संग की अलियाँ। रंग भरति मानि रंग रलियाँ ॥८०॥ दूलह दुलहिनि कौ नेहरा। बढ्यो होरी खेल अछेहरा ॥ ८१ ॥ पिचकारिनु डर दृग मीचैं। प्रीतम तनु रंगनि सीचैं ॥ ८२ ॥ हो हो कहि पेंडें लागें। भरि लाल पछमनैं भागें ॥ ८३ ॥ श्यामा सोभा जु निकर है। छवि सींवा मुरलीधर है ॥८४॥ यह बना बनीं की जोरी। इहि विधि बिलसौ सुख होरी ॥ ८५ ॥ ललिता नें गांठ जुराई। तुंग विद्या अधिक घुराई ॥ ८६ ॥ छूटति नहिं पिय पै छोरी। दै तारी बोलति होरी ॥ ८७ ॥ कीरति जसुमति दुरि देखैं। विनु मित जु भाग्य फल लेखैं।८८।सुख उदधि बढ्यौ बरसाने। ताकी मित कौंन बखाने।८९। खेलैं बाल विद्ध अरु तरुनी। महिमा मुनि हूँ मन हरनी।९०। व्रज पति वृषभानु जहाँ है। सुख अम्बुद झरयौ तहाँ है ॥ ९१॥ कहैं सजन रीति की बतियाँ। सीतल होईं सुनि सुनि छतियाँ ॥९२॥ कीरति जसुमति कौ मिलिवौ। कहा कहौं प्रेम सुख झिलिवौ ॥ ९३ ॥ दोऊनि कौ सुकृत जग्यौ है। जग नीरस तिमिर भग्यौ है ॥९४॥ धनि किये भानुपुर वासी। रस रतन जोति परकासी ९५ दोऊ भूप इतहि दोऊ रानी हिय प्रीति सु अवधि

बखानी ॥९६॥ पट भूषन दै पहिरावैं । मेवनि सों गोद भरावैं ॥९७॥ यह फाग मनोरथ रूरौ । ब्रजरानी पारयौ पूरौ ॥९८॥ नातैं सुख सागर न्हाये । राधा हरि लाड़ लड़ाये ॥ ९९ ॥ श्री व्यास सुवन बल सूझ्यौ । या रस में मन जु अरूझ्यौ ॥१००॥ दोऊ सजन हिये कौ हितु है । रसिकनु कौ प्यारौ पितु है ॥१०१॥ होरी सुख वरस्यौ जेतौ । इक रसना बरनौ केतौ ॥१०२॥ हित रूप प्रसाद लह्यौ है । लघु मति अनुराग कह्यौ है ॥ १०३ ॥ वृंदावन हित यश गायौ । भरि गोद दासि मैं पायौ ।१०४।१७४।

राग काफी—रस हो हो होरी बोलहीं ॥ टेक ॥ एरी प्यारी तेरे झूमक रंग अबकें झूमक फेरि लै ॥ रस हो० ॥ एरी प्यारी स्याम भाँवते संग नैननि कौं अति चैन दै ॥ रस हो० ॥ १ ॥ एरी प्यारी कनक पिचक रंग हाथ निकसी स्यामा नागरी ॥ रस हो० ॥ एरी प्यारी सखिन वृंद लियें साथ सब गुन रूप उजागरी ॥ रस हो० ॥ २ ॥ एरी प्यारी राजत रविजा तीर परम रम्य पुलिन स्थली ॥रस हो०॥ एरी प्यारी उत हरि स्याम सरीर पुनि पुनि मिलि बाढ़ी रंग रली ॥ रस हो०॥ ३ ॥ एरी प्यारी उमड़ि घुमड़ि लै रंग मोहन आये जोर सों ॥रस हो०॥ एरी प्यारी इत मन धरें है उमंग बोलत वचन मरोर सों ॥ रस हो० ॥ ४ ॥ एरी प्यारी उड्यौ है अबीर गुलाल पिचकारिन रंग मेलहीं ॥ रस हो०॥ एरी प्यारी रुपे हैं दुहूँ दिस वीर पग न पिछौंड़े पेलहीं ॥ ५ ॥ एरी प्यारी मर्दति बदन सरोज प्रीतम के उर लागि कें ॥ रस हो० ॥ एरी प्यारी उपजत नव नव चोज उठत मदन दल जागि कें ॥ रस हो० ॥ ६ ॥ एरी प्यारी हो हो बोलति झाँम दै करतारी पुलकि तन रस हो० एरी प्यारी रंगनि सींचत

स्याम प्रियहि सहित सब सखिनु गन ॥ रस हो० ॥ ७ ॥ एरी प्यारी इत उत बहु किलकार रमकि झमकि दुति देह की ॥रस हो०॥ एरी प्यारी विलुलित उर वर हार झक झोरनि अति नेह की ॥ रस हो० ॥ ८ ॥ एरी प्यारी रूप भीर दृग जाइ फसे आपु बल हारि कें ॥रस हो०॥ एरी प्यारी बहुरि सके नहिं आइ दृग कर नचनि निहारि कें ॥ रस हो० ॥ ६ ॥ एरी प्यारी दै मृदु हँसन अकोर तिरछैं चितयो चित हुलसि ॥रस हो०॥ एरी प्यारी डारि प्रेम की डोरि गहे लाल भुज भुजनि कसि ॥रस हो०॥१०॥ एरी प्यारी बलि हित रूप विलास उपमा देत सबै नमी ॥ रस हो० ॥ एरी प्यारी गाढ़ी भरनि हुलास वृन्दावन हित हिय रमीं ॥ रस हो० ॥ ११ ॥ १७५ ॥

आजु हो हो चाचरि प्रेम की ॥ टेक ॥ एरी गुनवंती खेलति फाग राधा जू तरुनिनु मुकट मनि ॥ आजु हो० ॥ एरी जाकौ नित नव बढ़त सुहाग होरी वरषनि रंग धनि ॥ आजु० ॥ १ ॥ एरी सुख ओपी है इहिं रीति मनु भुव विचरति दामिनीं । एरी मनु त्रिभुवन सोभा जीति आवति मद गज गामिनी ॥२॥ एरी जाकें दमकति मणि जु लिलाट कहा कहौं विहसनि वदन की । एरी छवि बरषति है इहिं बाट सैंन लज्यावनि,मदन की ॥ ३ ॥ एरी जाकें अगनित सहचरि लार खेलन साजनि संग लियें। एरी मनु झुकति रूप के भार सजनी अंश भुजा दियें ॥ ४ ॥ एरी जाकें हियें चौगुनौं चाउ प्रीतम तन रंग भरन कौं । एरी प्यारी ताकत है बहु दाउ गहन पीत पट धरन कौं ॥ ५ ॥ एरी यह नवल छैल भरयौ ऍड़ नैंन वक्र भृकुटी नचें । एरी मरजाद बहावतु मैंड़ होरी के कौतुक रचे ६ एरी याकें कर डफ गोद गुलाल

छक्यौ रहत अनुराग सौ ७ एरी रंग भरे है कनक घट वृन्द मन भरयौ खेल उमाह सौ एरी मुख निंदतु कोटिक इंदु चाँचरि मची अस नाह सौं ॥ ८ ॥ एरी भई बूंका बंदन भीर इत उत रेल महा परी । एरी पुनि थैलनि उड्यौ है अबीर बन अवनी सोभित करी ॥९॥ एरी दिखि नभ दिस घमड्यौ आन होति चिन्हारन साथ की । एरी तन्यौं रंग रंग मनहुँ बितान भाँवरि हित रतिनाथ की ॥ १० ॥ एरी पिचकारिनु छूटति धार भीजे पट तन जग मगें । एरी मनु फूली है रूप फुलवारि निरखि न पल सौं पल लगें ॥ ११ ॥ एरी सुख सोभा की मित नाहि आवनि उलटनि लाग सौं । एरी भरि भागि पिछोड़े जाहि उनमद मनमथ जाग सौं ॥ १२ ॥ एरी अलकावलि रही मुख छूटि चंचल भये तन मन महा । एरी गई मोतिनु माला टूट उरझनि छबि वरनौं कहा ॥ १३ ॥ एरी इहि तरनिसुता कें तीर झूंमिक भरति सुहाग निधि । एरी तन थिरकत नव रंग चीर सा सोभा कहौं कौंन विधि ॥ १४ ॥ एरी किहिं रसना करहुँ प्रसंस गौर स्याम रस केलि की । एरी दृग लहनौं श्री हरिवंश लखि फैलनि हित बेलि की ॥ १५ ॥ एरी होरी सुख वदनि अनूप तन मन जहाँ रंगनि सनैं । एरी वृन्दावन वलि हित रूप कौतिक चरित कहा भनैं ॥ १६ ॥ १७६ ॥

राग काफी—हाँ रँगीली चाँचरि माँची । हाँ प्यारी दै झूंमक नाची ॥१॥ हाँ फबी तन झूंमक सारी। हाँ कंचन लगी किनारी ॥२॥ हाँ रंगी केसरि के रंगा हाँ महाछबि छलकै अंगा ॥३॥ हां लगे

अतरौटा झूमें। हां लाल के दृग लखि घूमें ॥ ५ ॥ हां फबी अतलस की चोली। हां सनीं सौंधें जु अमोली ॥ ६ ॥ हां छुटैं सौंधें तन लपटैं। हां निरखि पिय दृग रपटैं ॥ ७ ॥ हां वदन झलकैं जु गुलाला। हां दिपें श्रम कन कछु भाला ॥ ८ ॥ हां अटल ठरकैं इक तापैं। हां सु छबि कहि आवै कापैं ॥ ९ ॥ हां अधिक जोवन उजराई। हां होरी अति उपमा पाई ॥ १० ॥ हां अलग गति चौंपनि लैंनीं। हां रसिक पिय कौं सुख देनीं ॥ ११ ॥ हां सखी स्यावासि जु देई। हां कहै पुनि वह गति लेई ॥ १२ ॥ हां बढ़ी त्यौं त्यौं मन प्यारी। हां छके लखि लाल बिहारी ॥१३॥ हां सुगंधिनु चरची गोरी। हां रसिक मुख बोलति होरी ॥ १४ ॥ हां पंखा कर मोर के लीयें। हां ढोरैं सिर अति हित हीयें ॥ १५ ॥ हां सखी बाजेनु बजावैं। हां धमारि सुघर मिलि गावैं ॥ १६ ॥ हां बढ़्यौ अति रंग अपारा। हां सुता रवि तीर बिहारा ॥ १७ ॥ हां परम रंग होरी वरषैं। हां सखी प्रीतम मन हरषैं ॥ १८ ॥ हां सकल सुख दाइक राधा। हां सिंधु हित रूप अगाधा ॥ १९ ॥ हां वृन्दावन हित यश गावें। हां यही परसाद जु पावें ॥ २० ॥ १७७ ॥

राग गौरी—ताल मूल—साँवल वरन दुलहिनी माई। गोर गरूर विराजे दूलहु आज बढैगो रंग महाई ॥ १ ॥ ललित धमारि गाइयति घोरी सजनिनु साजि बरात बनाई। वंदन की वेदी रचि कीनीं मिलि गोधूरिक लगन सधाई ॥ २ ॥ लाड झूमिका परत भाँवरी सुदृढ़ प्रीति की गाँठि जुराई। बरषत है रस रंग कुंज में सजन सजन मिलि करत बड़ाई ॥ ३ ॥ राखति नहीं घूंघटी दुलहिनि देखन कौं अति ही अकुलाई बरजति है

ललिता कुलवंती तनक लाज गहियो समझाई ॥ ४ ॥ लाइ मधुर फल आगैं राखे दूधाभाती दुहुनि कराई । भरि दियौ गोद गुलाल दुहुनि कैं हिलि मिलि चाँचरि चौंप मचाई ॥ ५ ॥ उमिलि उठौ अनुराग हिये तैं कहा कहौं होरी प्रभुताई । वृन्दावन हित रूप दुहुनि की उर उरझनि नहि वरनी जाई ।६।१७८।

राग गौरी—नव निकुंज नव रंग भरे ॥ नव रंगी लाला ॥ गावति नवल धमारि ॥ अहो नव रंगी लाला ॥ बाजे बाजत रंग भरे ॥ नव रंगी लाला ॥ देति परस्परि गारि ॥ अहो नव रंगी लाला ॥ १ ॥ अपनी अपनी खेल सौंज ॥ नव० ॥ सजी सखिन दुहुँ ओर ॥ अहो० ॥ गर्वित वचन सबै कहैं ॥ नव० ॥ नव जोवन के जोर ॥ अहो० ॥२॥ सोभा की निधि भामिनी ॥ नव० ॥ सकल त्रियन सिरमोर ॥ अहो० ॥ रति निरखति संशै परी ॥ नव० ॥ क्यौं सम पावैं और ॥ अहो० ॥ ३ ॥ रूप अवधि गुन आगरी ॥नव०॥ राधा अति सुकुमारि ॥ अहो० ॥ वरन करन कौं छवि छटा ॥नव०॥ रहत सारदा हारि ॥ अहो० ॥ ४ ॥ पिय पूरन सुख कौ निधान ॥ नव० ॥ सुन्दरता की रासि ॥ अहो० ॥ जाकौ मुख अवलोक तैं ॥ नव० ॥ बाढति लोचन प्यासि ॥ अहो० ॥ ५ ॥ बढी चौंप चित खेल की ॥ नव० ॥ उमगि चले तकि घात ॥अहो०॥ कोऊ कर वर रंजित छरीं ॥ नव० ॥ कोऊ कर वर जल जात ॥ अहो० ॥ ६ ॥ वरन वरन कर कुशम गैंद ॥नव०॥ सोभित सबकैं हाथ ।अहो०। अपनैं अपनैं मेल मिलीं ॥नव०॥ कुँवरि कंत के साथ ॥ अहो० ॥ ७ ॥ वरन वरन उर कंचुकी ॥ नव० ॥ वस्न वरन तन चीर

रंग नीर ॥ अहो० ॥ ८ ॥ वरन वरन भाजन भरैं ॥ नव० ॥ हाथनि अति छवि देत ॥ अहो० ॥ जब झुकि ढोरति सीस तैं ॥ नव० ॥ मनमथ मन हरि लेत ॥ अहो० ॥ ९ ॥ दोऊनि रहसि विहसि बढ़ी ॥ नव० ॥ माते रंग अनंग ॥ अहो० ॥ खेलत फाग सुहावनौं ॥नव०॥ हरि राधा मिलि संग ॥ अहो० ॥ १० ॥ लियें प्रिया कर पिचकई ॥ नव० ॥ छिरकत मोहन पीय ॥ अहो० ॥ ज्यौं ज्यौं भीजत स्याम गात ॥ नव० ॥ त्यौं सुख उपजत जीय ॥ अहो० ॥ ११ ॥ कनक कमोरी नग जरी ॥ नव० ॥ केशरि रंग भरि स्याम ॥ अहो० ॥ औचक ढोरत सीस तैं ॥ नव० ॥ सफल करत मन काम ॥ अहो० ॥ १२ ॥ सौंधें की रेलैं चली ॥ नव० ॥ छिरकति तकि तकि धाइ ॥ अहो० ॥ लटकि चलत जब साँवरौ ॥ नव० ॥ गति गजराज लज्याइ ॥ अहो० ॥ १३ ॥ छूटति मुठी गुलाल की ॥ नव० ॥ हो होरी मुख बोल ॥ अहो० ॥ डारत दृष्टि बचाइ कें ॥ नव० ॥ कुच कपोल तकि तोल ॥ अहो० ॥ १४ ॥ भरन न पावति नव वधू ॥ नव० ॥ तौ लौं पियु भर जात ॥ अहो० ॥ चहुँटि लगे तन भिही वसन ॥ नव० ॥ दमकत गोरे गात ॥ अहो० ॥ १५ ॥ सोभा अमित विलोकि कें ॥नव०॥ रहि गये इक टक नेंन ॥ अहो० ॥ खकि प्रिया कटि पट गह्यौ ॥ नव० ॥ सो सुख कहत बनेंन ॥ अहो० ॥ १६ ॥ जित नित तें धाईं सबै ॥ नव० ॥ रहे स्याम मुख हेरि ॥ अहो० ॥ मनु रस भीनी दामिनीं ॥नव०॥ रही सजल घन घेरि ॥ अहो० ॥ १७ ॥ झक झोरें गुलचें सबें ॥ नव० ॥ लाल गही मुख पोंछ अहो० नेंन रूप चहलें परे नव० तिनहि निकासै

कोन अहो० १८ कोक निपुन नव नागरी नव० ॥ दियौ सुधा रस पान ॥ अहो० ॥ परम प्रेम पूरित भये ॥नव० ॥ विलसत अति रति मान ॥ अहो० ॥ १६ ॥ यह वानिक नित नित नई ॥नव०॥ नित नित कुशल सरूप ॥अहो०॥ वृन्दावन हित हिय वसौ ॥नव०॥ हौं बलि श्रीहितरूप ॥अहो०।२०।१७६॥

राग धनाश्री दूजी चाल—ललित लता गृह राजहीं ॥ मोहनीं मन मोहन ॥ वर भामिनि नव कंत ॥ मो मन भाँवते मोहनी मन मोहन ॥ तलप रुचिर निवसित भये ॥ मोहनी मन मोहन ॥ मिथुन महा रस वंत ॥ मो मन भाँवते मोहनी मन मोहन ॥१॥ ललित वदन पानिप चढ़ी ॥ मोहनी० ॥ सनमुख रहत निहार ॥ मो मन० ॥ मुदित रीझ हँसि भेटहीं ॥ मोहनी० ॥ भरि गाढी अँकवारि ॥ मो मन० ॥ २ ॥ कोविद कोक कलानि में ॥ मोहनी० ॥ सब सुख प्रेम निकेत ॥ मो मन० ॥ नव नागर नव नागरी ॥ मोहनी० ॥ प्रगट करत हिय हेत ॥ मो मन० ॥ ॥३॥ सुकृत संपति भामिनीं ॥ मोहनी० ॥ रस भोगी प्राणेश ॥ मो मन० ॥ रितु वसंत चित चाइ सौं ॥ मोहनी० ॥ क्रीड़त सदन सुदेश ॥मो मन०॥४॥ सोभित उभै लिलाट पै ॥मोहनी०॥ श्रम कन रस संग्राम ॥मो मन०॥ प्यारी अंग संग रसिक लाल ॥ मोहनी० ॥ ह्वै रहे उर वर दाम ॥ मो मन० ॥ ५ ॥ दुति में दुति मिलि यौं दिपै ॥ मोहनी० ॥ ज्यौं मर्कत मणि हेम ॥मो मन० ॥ मानौं हिय तैं प्रगट ह्वै ॥मोहनी०॥ कियौ जरीना प्रेम ॥ मो मन० ॥ ६ ॥ पिय रस सागर सौं कियौ ॥ मोहनी० ॥ संगम सरिता वाम ॥ मो मन० ॥ सुरति लहरि छिन छिन बढै मोहनी० कूल ढहयौ मद काम मो मन० ७ जुग

मनु मत्त गयंद री ॥मोहनी०॥ अंग चारु चोगान ॥मो मन०॥ प्रेम महीप खिलावही॥ मोहनी० ॥ को करि सकहि बखान ॥मो मन०॥ ८ ॥ नेह गाँठि हिरदै घुरी ॥ मोहनी० ॥ सुरझाये सुरझैं न ॥ मो मन० ॥ नैंनलि उरझै नैंन री ॥ मोहनी० ॥ बैंननि सौं रस बैंन ॥ मो मन० ॥ ९ ॥ इक रस संतत विपिन में ॥ मोहनी० ॥ अगनित कलप विहात ॥ मो मन० ॥ दुलहिनि के सौभाग कौं ॥ मोहनी० ॥ सारद कहत लज्यात ॥ मो मन० ॥ १० ॥ जुग विधु बदन नि तैं छुटीं । मोहनी०॥ किरिनि रंध्र छबि देत ॥मो मन०॥ आलिगन रूप सवादनी ॥मोहनी०॥ दृग मग भरि भरि लेत ॥ मो मन० ॥ ११ ॥ प्रेम खुमारी चित चढ़ी ॥ मोहनी० ॥ मधु मादिक रस पागि ॥ मो मन० ॥ प्रीति फंदा खग मन फरे ॥ मोहनी० ॥ रहीं रंध्र मग लागि ॥ मो मन० ॥ १२ ॥ केलि कलप तरु मिथुन री ॥मोहनी०॥ फलनि फले बहु भाँति ॥मो मन०॥ वांछित पावत सहचरी ॥मोहनी०॥ श्रवित सुधा रस गात ॥ मो मन० ॥ १३ ॥ अभिलाषें बाढें नई ॥ मोहनी० ॥ जद्दिप सदा समीप ॥ मो मन० ॥ बलि हित रूप विनोद पै ॥ मोहनी० ॥ त्रिभुवन रसिक महीप ॥मो मन० ॥ १४ ॥ मगन महा रस गहर में ॥ मोहनी० ॥ ललित वलित भुज ग्रीव ॥मोमन०॥ वृन्दावन हित हिय रमौं ॥मोहनी०॥ जुग सुखसोभा सींव ॥ मोमन भाँवते मोहनी मनमोहन ॥१५।१८०॥

॥ श्री विठ्ठल गिरधरन महाराज जी कृत ॥—छैल छबीलौ ढ़ोटा रस भरयौ बांकी चितवनि भौंह मरोर । खेलन० में बहु छन्द फन्द करि लै जु गयौ चित चोर ॥ १ ॥ अरी वह वन वन आवै वेणु जावै, गावै चटक मटक की गारि हो हो बोलै गलियन ड़ोले,

हँसत सखा किलकारि ॥ २ ॥ हों ठाड़ी अपने द्वारें भोरें, थोरों सों घूंघट मार । आंखिन मांझ गुलाल मुठी भर गयौ अचानक डार ॥३॥ वाके बड़ रे नयना मधुरे बैंना, कह्यौ कछुक मुसिकाय। श्रीविट्ठलगिरिधरन गये मेरेहियरे चटक लगाय ।१८१।

श्री धरमदास जी महाराज कृत ॥ राग बिलावल ॥

सिमिट सकल वृषभानु पुरा ते फगुवा मागनि आई हो । तिनमें कुँवरि किसोरी गोरी भोरी अति छबि छाई हो ॥ १ ॥ बनि ठनि साजि सिंगार हार हियें हरखि भरी सब गोपी हो । नंद कुमार प्रेम रंग राती छटा छबीली ओपी हो ॥२॥ गावत आवति अति छबि पावति मैंन मुनी सी डोलें हो । सनमुख आवति नहीं लाड़िले हारे हो कहि बोले हो ॥३॥ आई पौरि रौरि जहाँ भबि की नंद महर करि वंदन हो । तनकि तनकी सो छिरकि छबीली मन अटिक्यौ नंद नंदन हो ॥ ४ ॥ कीनो भवन गवन जब भीतर जसुमति को देखि हरषी हो । चहूँ ओर रंग भरे रँगीली छल छटा पर बरनी हो ॥ ५ ॥ देखि रोहनी दौरि गई सब घेर भई है ठाढ़ी हो । चोबा चंदन डार अरगजा करी महरि सों गाढ़ी हो ॥ ६ ॥ लाल दिखाय जाँहि बलिहारी मोल लई हम चेरी हो । गारि हमारी खाहु महरि जिनि कहति सुनति हम टेरी हो ॥ ७ ॥ हरे हरे हेरति हरि कों सब गावति गारि सुढारी हो । मईया को देखौ किन मोहन कैसी भांति संवारी हो ॥ ८ ॥ चौंप लगी निकसे नंद नंदन भर लीने अँकवारी हो । नैंननि में नागर नगधर महरि वार फेरि करि डारी हो ॥ ६ ॥ हँसति लसति हेरति कोऊ टेरति एक भरें एक भाजें हो । कोऊ मोहन मुख निरखि माधुरी पीवत नेंकु न लाजें हो　१०

किनहूँ लई छिड़ाइ कें मुरली देति न डहिकावे हो। याही बल पर लाल लाड़िले गिरिधर नाम कहावे हो ॥ ११ ॥ एक करति मनुहार लाल की एक भरति अँकवारी हो। छलि कें आनि छबीली छबि सों गांठि दुहुँन की जोरी हो ॥१२॥ एकनि आनि अचानक पाछें आंखि लाल की आँजी हो। मृग मद कर लपटाइ लाड़िली लीनो है मुख माँजी हो ॥१३॥ हो हो करति हँसति मुख हेरति लै लै उर लपटावे हो। जीती है वृषभान लड़ेती अद्भुत गारी गावे हो ॥१४॥ नभ विमान सुर कौतिक भूले धसे धरनि को आवे हो। सुर बनिता सुर साधन आवे आल बाल कछू गावे हो ॥१५॥ मइया सुनत देखि दोऊ आई लाल लड़ेती दीजे हो। सीत लगे कोमल तन बालक लाग आपनो लीजे हो ॥ १६ ॥ लाग हमारो स्याम सलौनों यहै बात बनि आई हो। लीने जीति प्रीति के बदले बोलति नंद दुहाई हो ॥१७॥ मेरी ओर देखि नव नागरि कह्यौ हमारो कीजे हो। सबकी जीवन स्याम ढिटोनो देखि कें जीजे हो ॥ १८ ॥ फगुवा देहु महरि अंग अंग को हम लैहें मन भायो हो। मइयाँ देखति लाल लड़ेती पकरि कें बहुर नचायो हो ॥१६॥ तब छाड़े कीनो मन भायो सखी लड़ेती न्हाइ हो। भूषन वसन वारि मनि मुक्ता सबहिन को पहिराइ हो ॥ २० ॥ देत असीस सकल ब्रज बनिता चिरजीवो तुम लाला हो। धरम दास पद परति न आगें चकित रही ब्रजबाला हो ॥ २१ ॥ १८२ ॥

०

* गौने वाली लीला *

श्री वृंदावनदासजी महाराज कृत—राग काफी ताल मूल—फागुन सुदी ३ से छत्र

मेरी बात सुनों मैं नन्दगाम तें आई। बसि हों एक रात कोऊ लायक मुहि राखो बिरमाई ॥१॥ व्है गई भेट सखी ललिता सों बाँह पकरि सो लाई। प्यारी जू निकट राखिये याकों यह किनहूँ जु रुठाई ॥२॥ है भामिनि काहू बड़े भवन की दै आदर बैठाई। घूँघट मारि पाय लगि श्री राधा सों कछू बतराई ॥३॥ मेरौ है पीहर पूरौ मुहि तहाँ देउ पहुँचाई। अति अनीत या गाम देखि कें पीहर चली पलाई ॥ ४ ॥ कहि अनीति कैसी देखी तें कौनें तोहि दुखाई। दीखत है कुलवंती मन की कहि दै सबै सचाई ॥५॥ घर छोड़े पति कैसें पावे बड़े गोप की जाई। जाहु जाहु घर उलट आपने दै मुहि भेद बताई ॥६॥ हों गौने आई अबही समझों न कछू चतुराई। एक दिना हों पौरी ठाढ़ी देखी कुँमर कन्हाई ॥७॥ वह ढोटा रिझवार रूप को मो मन भरी भुराई। भूल्यौ खेल और ठौरन मो द्वारें धूम मचाई ॥८॥ फिर फिर रंग भिजोवे मोकू हौं सकुची जु महाई। गावै निपट उघारी बातें मुख माँड़न ललचाई ॥ ९ ॥ मोहि सलौनी कहै साँमरी दै दै बहुत बड़ाई। भीजों लाज कहाँ लगि ढाँपों यह तन सुन्दर ताई ॥१०॥ लागे दोष लगावन मुहि सब नर नारी जु चबाई। घर में पाँव ठहरें कैसें सासु मिली लरिहाई ॥ ११ ॥ एक दिन हौं कपाट दै बैठी ऐसी उक्ति उपाई। खोलि खोलि कहै लंगर मेरी मुरली तें जु चुराई १२ हों डरपी कैसी बनी दैया यासों

॥ १३ ॥ यह राजा कौ कुँमर घर बसी तैं कहा कुमति उपाई । दे चुकि याकी मुरली जो तैं कहूँ डरी है पाई ॥ १४ ॥ पुनि आऐ सब सखा संग के बढ़ि गई भीर सवाई । काहू के कर रंग कमोरी काहू कर पिचकाई ॥१५॥ बीच परी उनकी जु मिलनियाँ तिननि किवार खुलाई । लाल कहै ढूँढौ मुरली इन चोली मांहि दुराई ॥ १६ ॥ हौं घूँघट दे बाहर निकसी तारी सबनि बजाई । भाजन रंग सीस तें ढोरे नख सिख मोहि भिजाई ॥१७॥ इत तासें मोकों सब घर के उत उन करी हुरथाई । कैसें बास होय मेरो जिय छिन छिन में अकुलाई ॥१८॥ औसरु पाय निकसि कें आई मोमें कहा बुराई । विधि बाँधी जु गरे में शोभा यह मोहि नाच नचाई ॥१९॥ अब काहू ढिंग बैठे रहोंगी वहि पुर गयौ न जाई । कीजे कहा होहि जो राजा हू को सुत अन्याई ॥ २० ॥ धर्म रहो के जाउ वहाँ के नाते सौं हौं धाई । कोऊ कहौ भली के भौंड़ी मैं सब कथा सुनाई ॥ २१ ॥ होरी तौ सब ठौरि देखि नँदगाम जु बुद्धि भुलाई । आठ पहर को पहुपट देखत को न जाय बौराई ॥ २२ ॥ तुम हो राज सुता जु न्याय की यहि घर रीति सदाई । शिक्षा देहु कृपा करि मोकों जो मन मिटै कच्याई ॥२३॥ बसौ भवन हौं भाँम भोर व्हा ढांढ़िनि देहुँ पठाई । तेरे पति के सासु ससुर के नृप सुत की जु खुट्याई ॥२४॥ बीति गयौ बासर जु छबीली रजनी छबि दरसाई । बहुत कृपा करि ब्यारू स्यामा ढिंग बैठारि कराई ॥ २५ ॥ न्यारें मोहि नींद नहिं आवै और कछू न सुहाई । रहिकें निकट कहानी कहि हौं सुनों कुँवरि चित्तलाई २६ लै चली बाँह पकरि नागरि जब ढिंग

२७ तू कारी कारौ जु नंद सुत कैसे प्रीति बढ़ाई उनके मन की हौं परखत तैं कोधौं जुगति बनाई ॥ २८ ॥ वे मो दृग पुतरीन बसत हौं उन दृग माहि समाई । यह तो बात अटपटी भामिनि सुनि हौं सोच दबाई ॥२९॥ मुरलीधर कैं व्रत अनन्य मो बिन न और मन भाई । कहत कहत ही हिय भरि आयौ नैननि नीर बहाई ॥३०॥ नंदगाँव की सुनि मन लरज्यौ तोसौं करी भलाई । खोटी बात कही प्रीतम की हौं हिय जिय अनखाई ॥ ३१ ॥ सुनि मोहन कौं भई मूरछा देह दसा बिसराई । कुँवरि कहत कोधौं यह कौतुक ललिता टेरि बुलाई ॥ ३२ ॥ निरखि निरखि सजनी हूँ की मति अचिरज सागर न्हाई । हौं बलि गई प्रिया यह प्रीतम तुमहीं लेउ चिताई ॥ ३३ ॥ अरबराय कैं उठीं कुँमरि लिये सादर अंक लगाई । जागी जबहिं मूर्छा बीरी अधरन खंडि खवाई ॥३४॥ करि जु सिंगार लाल को ललिता छदम समझि मुसिकाई । गरुवी प्रीति कहा न करावै राखै नहिं प्रभुताई ॥ ३५ ॥ या होरी की महिमा मोहन विधिना तुमहिं चिताई । रस बिलसन की घात घनेरी धनि गुरु जननि पढ़ाई ॥ ३६ ॥ करि परिहास सखी भई न्यारी रजनी सुख जु बिहाई । वृन्दावन हित रूप परम कौतुक रस लीला गाई ॥३७॥१८१॥ इति ॥

* चितेरिन लीला *

(राग गौरी, माल मूल) दोहा-टेक बंद

गुनवंती चतुर चितेरी ।

चित्र लेउ करवाय कैं यौं कहत देत है फेरी ॥

स्याम बरन अति गुनि भरी तन ढाकैं अभिराम भाग्य बली

सोहनी संग लगीं कौतुक गोप कुमारि । तिनसों बूझत ग्राम इह सखी है कोऊ रिझवारि ॥ २ ॥ हैं रिझवार उदार अति बेटी श्री वृषभान । तोहि मिलावों वेग दै जहाँ पावै अति सनमान ॥ ३ ॥ भट्ट लै चलो मोहि अब मानौं तुम उपकार । हौं आसा वनजौं यहै मोय लैनो राज दुआर ॥ ४ ॥ बीच मिलीं चम्पक लता बूझत समझौं हौंन । संग फिरत सब गाँम की यह खेल अपूरब कौन ॥५॥ चित्र बहुत या काँख में कहत चितेरिन नाम । प्यारी सौं भेट्यौ चहै बलि तुम जु लै चलौ धाम ॥ ६ ॥ सखी देखि हरखीं अधिक है सुन्दर गुण खान । कुँवरि अति भलो मानि हैं याकी करिवाओ पहिचान ॥७॥ कर गहि ताहि जु लै चलीं संग चली लागि भीर । यह ढाँपत दोउ हाथ सौं अपने तन पुनि पुनि चीर ॥ ८ ॥ चम्पक लता बोली जबहिं तू जिन होय भय भीति। देखि सकै तो और को यहाँ राज भवन की नीति ॥ ९ ॥ हो हौं बाहर गाम की जानों नहिं राजन रीति । भोरी समझि जु राखियो तुम मोसी हू सौं प्रीति ॥१०॥ किसब विधाता यह दियौ तापै भारी लाज । तापै दिखनौट्ठ करी पुनि अनमिल दियौ समाज ॥११॥ चरन लगाई कुँमरि के कही रीति समझाय । प्रिया कह्यौ सनमान दै कोऊ चित्र जो मोय दिखाय ॥ १२ ॥ चित्र दिखायौ मदन कौ रति बैठी तिहिं पास । समझि समझि प्यारी हिये पुनि बाढो अधिक हुलास ॥१३॥ मो में विद्या अधिक है अधिक समझि तुम हीय । औरौ चित्र दिखाय हौं जो तुम करि हो मो प्रीय ॥ १४ ॥ सबै प्रकासो नागरी जो जो गुन तुम मांहि । नैंन फिरत चकडोरि ज्यौं तेरे मनकी थिरता नांहि॥१५॥ यौं न कहो हों वलि गई आई तक तुम ओट दई नैंन कीपे

बड़े यामे मेरो कहा खोट ॥ १६ ॥ कियौ कसीदा आपु कर पट कंचुकी अमोल । स्यामा प्यारी के आगें धरी उन गठरी में तें खोल ॥१७॥ परखनि कर धर लाड़िली बूटी नाना रंग । तोतें बची न चातुरी सखी तू पूरी सब अंग ॥ १८ ॥ कँकरेजी सारी सुभग जामें बूंटा बेलि । कुँमरिहिं दई उढाय कैं लखि सिमिटीं सकल सहेलि ।१६। धन्य धन्य तू नागरी गुनन आगरी आय। तेरे हाथन की सखी पुनि पुनि लीजे जु बलाय ॥२०॥ गुनन छिपायें फिरत हौं हिय कलमली जु होय । काकौं जाय दिखाइये मन रुचती मिलै न कोय ॥२१॥ कछुक कछू मो हिये की गाँस खुली तुम साथ । अधिक कृपा करिहो जबै तुम चित्र लिखौं अपु हाथ ॥२२॥ मेरौ उर कोमल अधिक परचौ एक सनेह । टहल करौं सब भांति की जो होय रावरे ग्रेह ॥२३॥ मन पलटैं मन पाइयें विदित बात संसार । हौं एतौ समझौं कहा तुम समझत हौ रिझवार ॥ २४ ॥ चित्र लिखन विद्या कठिन तू सीखी किहिं ठौर । बहुरि कसीदा काढ़िवौ सखी तो सम लखी न और ॥२५॥ बड़े कष्ट उर लाग सौं विद्या पाई भूर । नीरस सौं राचौं नहीं हौं या बल फिरौं गरूर ॥ २६ ॥ ब्रज अवनीं सब रस मई तू बस गुननि दिखाय । वसत देस है कौन से अब उत फिरि चित्त न चलाय ॥२७॥ सुनौ कुँमरि मो नगर के लोगन करी कुदीठ । तब हौं अपनौं धर्म लै बलि भाजि छुटी हौं नीठ ॥ २८ ॥ और रितुन ज्यौं त्यौं बचे अपने सील सुभाइ । मधुरितु खेलै प्रेम जहाँ तहाँ काहू की न बसाइ ॥२६॥ अरी भलैं तू भजि छुटी सीलवन्त,गुनवंत । तो जु सुलच्छण नारि बिन दिन राति भरै क्यौं कंत ॥ ३० ॥ द्रव्य बहुत लै जाउंगी विद्या बल जु कमाइ । मेरे

मन को भांमतौ वह सहज पलोटै पाइ ३१ मुहि सतवंती जानि कैं पिय मन होहि न संक। मेरे वाके हीय में प्यारी ना हैं दूजौ अंक ॥३२॥ तोसी ही के सत्त सों थम्यौ धरनि आकास। तो दरसन नित कीजियै धनि २ कुल जिहिं जु प्रकाश ॥३३॥ तो कर की कारीगरी मुहि देखन की चाह। जो भूखी है प्रीति की तो कीजै सफल उमाह ॥३४॥ चुप व्है रही विचारि कैं बहुरि डुलाई ग्रीव। अब न दुरायें हूँ वनें राधे तुम जु प्रीति की सींव ॥ ३५ ॥ प्रेम कथा कौ अंत को, वासर गयौ विहाय। श्यामा आपु निज भवन में पुनि लै गई ताहि बुलाय ॥ ३६ ॥ खान पान सब विधि अधिक सुखित करोंगी तोहि। दुरी बात सब जीय की भटू तू अब कहि दै मोहि ॥ ३७ ॥ मन दै कें अवलोकिये जो दरसाऊँ रूप। तुम हूँ को जु चिन्हार है अस चित्र रच्यौ जु अनूप ॥ ३८ ॥ चौकी पै बैठीं प्रिया करि षोडश शृंगार। रूप छके कर जोरि कें ठाडे सन्मुख नन्द कुमार ॥३६॥ जुगल रूप कौ चित्र यह दियौ पानि नव वाल। कोविद विहँसी देखि कें कहै को तू सुमति विशाल ॥ ४० ॥ अरी चितेरिन तू नहीं दीस्यौ छदम निराट। ये कौतुक कापै वनें अति औघट कठिन बाट ॥ ४१ ॥ भेष चितेरिन बदल कें वने सुवन ब्रजराज। सब तारी दै दै हँसी लाल तुमहिं न रंचक लाज ॥४२॥ लज्या बेटी कौन की ताही के घर जाहु। काज सरत अनुराग सों याकों दिन दिन बढ़ौ प्रवाहु ॥४३॥ ताही में नित न्याइयै धर धर ना ना भेष। वरसानो प्यारो सदा प्यारी दरसन चाह विशेष ॥४४ ॥ मैं लीनें ह्यां भांवरे हिय हिलगन यहि खेत। एकौ छिन भूलों नहीं रानी कीरति जू कौ हेत ४५ भाग वली अपनों गिनों धवल महल

अवलोक मन सलिता इतही बहै हो किहि विधि राखो रोक ॥ ४६ ॥ अमली अमल विना दुखी भूखौ विना अहार। रूप सवादी नैंन ये कछू रहन न देत विचार ॥ ४७ ॥ लाल न्याय बोलत जु तुम वसि हो इहिं ससुरारि। हँसि हँसि कै ललिता कहै मैं देखे लछन झारि ॥ ४८ ॥ भोजन सुविधि करावहीं दुहुँन संग बैठारि। बदलत ग्रास सनेह सों सखी बहुत करति मनुहारि ॥ ४९ ॥ किधों बखानों पाहुनी किधों पाहुने स्याम। दोऊ विधि दरसन दियौ वलि जाऊं महा छल धाम ॥ ५० ॥ सिता सहित पय पान करि लै अचमन कियौ सैंन। प्रेम अट-पटी रीति के बरने जु रसीले बैंन ॥ ५१ ॥ आनंद वारिद वर-सहीं रजनी भरी सुहाग। श्री हरिवंश प्रसाद लहि यह कथ्यौ जुगल अनुराग ॥ ५२ ॥ गौर स्याम के प्रेम बिन कवि न पावते शोभ। रसिकनि हिये सनेह की कैसें जु उलहती गोभ ॥ ५३ ॥ वृन्दावन हित रूप वलि यह आनंद अकूत। गरुवोई गरुवौ कह्यौ शिव विधि जु व्यास के पूत ॥५४॥१८२॥ इति ॥

॥ सुनारिन लीला ॥

राग गौरी—तन साँमरी सुघर सुनारी।

रतन जटित के वीछिया लाई नाद परम रुचिकारी ॥टेक॥

इनको शब्द जु परैगो प्रीतम के जब कान। मन को खैंचि जु लाइ है इनमें सु जंत्र बलवान ॥ तन० ॥ १ ॥ बड़े नगर हौं बसंत हौं मो मै बड़ौ गुमान। राज भवन में वेचि हौं जहाँ बड़ो पाइ हौं मान ॥ २ ॥ सब ही सों यों कहत है बैठी पनघट बाट। ये विछिया सोई लेयगी विधि ऊँच्यौ रच्यौ ललाट ३

बूझत हैं व्रज भाँम सब कहा तोपै साज। बेचै क्यों न बजार में कहा मारग र्‍यौ समाज ॥ ४ ॥ वस्तु बजारू नाहिं यह विन समझै सतरात। गहने रतन जड़ाव के सखी भूपन भवन बिकात ॥ ५ ॥ हमहू तो देखैं सुनैं एरी सांवल गात। बैठी चौरें चौहटें तू कहै वड़ी वड़ी बात ॥ ६ ॥ कारे नर नारी जिते ये छल भरे निधान। इनकी बात पतीजियै तौ पाछैं होय पछितान ॥ ७ ॥ कारे वरसे मेह विन जग में कछू न होइ। कारौ ढोटा नन्द कौ ताहि नव जु चलैं सब कोइ ॥८॥ है वाही की मिलनियाँ वाही की उनहार। वा लंगर ते को नवै तू फिर कहि बात विचार ॥ ९ ॥ सजन सगारथ हित नवैं नवैं न नाते राज। उठि जा यहां तें घरबसी कहा बहुत करत गलवाज ॥१०॥ गलवाज्यौं वंशी करत सवन विलोवत हीय। क्यों घर तजि बन जाति हो कोऊ धीरज धरत न तीय ॥ ११ ॥ निवल जान मोसौं अरति सवल नचावत नांच। दुर्वल कौं घाती दई यह कहत विवेकी सांच ॥ १२ ॥ भान सरोवर न्हान कौं जात सखिनु के टोल। भीर देखि अहुँटी सबै अस सुनि भामिनि के बोल ॥१३॥ व्यौपारिन कौ स्वांग सौ है कोऊ बड़ी कुलीन। संग हमारे लगि चलौ क्यों वाट मांहि होय दीन ॥ १४ ॥ लै चलैं प्यारी महल में जहां कछू भय नाहिं। वस्तु विकाती लैंयगी तू जिन डरपै जिय मांहि ॥ १५ ॥ बात कहत उरझैं सबै ऐसौ कठिन सुभाय। कहौ विदेसिन क्यों धरै सखि या नगरी में पाय ॥ १६ ॥ हौं वनजारिन लेत हौं सब काहू कौ सौंन। बिन कारन घर गई ये गुसा लगत हैं हौंन १७। चितै चितै कैं बदन तन ललिता बोली

ब्रज शोभा के सिंधु में रतन प्रगट भये एह जा कारन ही तें बढे मुनि देवन मन संदेह ॥ १९ ॥ तुम सों कछु मन मिलत है दया देखियति अंग । जित चाहौ नित लै चलौ यों कहि उठि लागी संग ॥ २० ॥ बाँह गहे की लाज है रावर देहु पहुँचाय । मोपै भारौ साज है वारी वाही घर जु बिकाय ॥२१॥ रूप छकी कौं रूप को भावै सदा समाज । तोहि भलैं दरसाय हौं दृग तृपति होंयगे आज ॥ २२ ॥ ललिता सम लायक जु को नाम सुनो मैं दूरि । बिना जतन मोकों मिली कहा भाग्य मनाऊ भूरि ॥ २३ ॥ वारौं आलय देवपति अचल धाम पुनि और । देखि धाम वृषभानु कौ बाला चक्रत सब ठौर ॥ २४ ॥ दृष्टि पड़ी जब लाडिली प्रेम उठ्यौ बल पाय । मन की वाग जु मन गही राख्यौ सु विवेक दवाय ॥ २५ ॥ यह अभिलाषिनि दरस की औरौ कछु जिय आस । कुमरि अनुग्रह कीजियै हम लाई हैं तुम पास ॥२६॥ हाथ जोरि ठाड़ी भई दृग सौ दृग जु मिलाय । आँखिन पेटी कवि कहैं छवि सागर पी न अघाय ॥ २७ ॥ ग्राम धाम अरु काम तजि आई है सुनि नाम । तुम पायनु के बीछियां प्यारी लाई है यह भाँम ॥ २८ ॥ गहने औरौ रीझि के रचे विलच्छन रीति । जो कछु देहु सो लेहिगी पै चाहति गरुवी प्रीति ॥२९॥ बोली मुघर सुनारि यौं आजु भई कृत कृत्य । जब तें तुम जसु मैं सुन्यौ जिय चाही हौंन जु भृत्य ॥ ३० ॥ भुज गहि बैठारी कुमरि वहुत करत मनुहार । भूपति की पी नंदनी तू किहि विधि भई सुनार ॥ ३१ ॥ तुम जु बड़ाई करति हो सिमटत है मम देह । कृत्य कृत करत व आपनों प्रति पालन [illegible]

नागरी धनि तू वृद्धा वाल । को को बनिज कमायगी को कों न रचेगी ख्याल ॥३३॥ बुरो न मानि सभागिनी दमकत तेरौ भाल। है पूरी धन धाम की क्यों चपरि बनति कंगाल ॥ ३४ ॥ अहो नृपति कुल मंडिनी तुम मोहि दई असीस । लीनी गोदी ओटि कें फले भाग्य विसे अववीस ॥ ३५ ॥ गहने ना ना भांति के ना ना विधि नग ओप । इन अंगन छबि देहिंगे सुनो जस वर्धन कुल गोप ॥ ३६ ॥ डवा खोल आगें धरयौ भावै सो सो लेहु । पग विछिया पहिराय कें कहै हाथ उठायौ देहु ॥ ३७ ॥ मैं पहिराये बीछिया वेसरि देहु मोय आप। देखि देखि जीऊं सदा सुधि करि हों यह जु मिलाप ॥ ३८ ॥ इन पहिरत ही सतगुनों दरस परयौ जु सुहाग । न्याय कहो इनमें मिल्यो कछु मेरो हू अनुराग ॥ ३९ ॥ यह हीरन की वन्दिनी तुम पहिरो बलि जाऊं । याको मोल कहा कहूँ तुम रीझन हों जु विकाऊं ॥ ४० ॥ सीस फूल छबि मूल है रच्यौ सुघर सोनी जु । पहिरन हारी आपसी भई खोक है न होनी जु ॥ ४१ ॥ देखो कर कारीगरी जड़े सरौना ये जु । और प्रसंसा कहा करों ये निंदत रवि कौ तेजु ॥४२॥ सोभा नथ को लाल यह पहिरत देहैं तोहि । दरपन लै मुख देखि हो प्यारी तब सुधि कीजो मोहि ॥ ४३ ॥ नख सिख के भूषन जिते प्यारी हों लाई बनवाय । तुम हित करो कि जिन करो प्यारी में हित कियो चित लाय ॥ ४४ ॥ तू किसविन हौं वृष-सुता लेहुँ मोल विन हों न । बाउ लगी सी बोलही उठि जाहु आपनें भोंन ॥४५॥ भाग्य वली के द्वार तें अब कैसें उठि जांउ । मर्म खुलैगो प्रीति को मोहि नाम धरें सब ठांउ । ४६ बड़े

कहो बात देखि अपु ओरि ॥४७॥ कैसे कोमल वदन तें निकसी बात कठोर । जो कर गहि घर में लई काढौ औगुन किहिं कर जोर ॥ ४८ ॥ इतनो सुन लजीं प्रिया रमी अधर मुसिक्यान । पढ़ी रीति कछु सांवरी मुहि निश्चय परी सुजान ॥ ४९ ॥ जेते गहने गांठ में सबही लेउ गिनाय । जो मांगे सो दीजिये कह्यौ ललिता सों समुझाय ॥५०॥ गहने गठरी खोलते मुरली परिगई हाथ । यह न सुनारी है भट्ट यह ढोटा गोकुलनाथ ॥ ५१ ॥ किनहूँ उचकी कंचुकी किनहूँ उचक्यो चीर । मुख ऊपर गुलचा दियो हँसे हर हर हलधर वीर ॥ ५२ ॥ सिर फेंटा कंचुकि सज्यो मुख रच दियौ तमोर । तब गोरस चोरी करी लाल अब भये रस के चोर ॥ ५३ ॥ धन्य महर पूजी छटी भले महूरत मांहि । ये छंद बंद संसार में सखी देखे सुने जु नाहिं ॥ ५४ ॥ यह जु छदम को ढांपवौ रचना वचन अनेक । बनैं न श्याम शरीर बिन विधि भ्रम्यों वरष लग एक ॥ ५५ ॥ कौन गुरू पै यह पढ़े बचन आतुरी लीक । सब की बुद्धि पलैड कें कहें बात ठीक की ठीक ॥ ५६ ॥ ललिता इन बीथीन में मो चित पावत चैन । चलें अधिक अकुलाय कें यह घर सुख देखन नैंन ॥ ५७ ॥ प्रीति डोर खैंचें जबहिं यों नाहिं आयो जाय । तब जु बुद्धि बल आपनी अस छदमन रचौं बनाय ॥५८॥ भादों की कारी निशा जन्म परचौ अस जोग । चोरी ही सों मन रुचे लाल रस गोरस को भोग ॥५९॥ सखिन खिलौना करि लग्यो प्रान भांवती कंत । भोजन सुविधि करावहीं रचें कौतुक चरित अनंत ॥ ६० ॥ चौपर सुविधि खिलावहीं झगरावें रचि चोज झलक जु आवत लाल कें देख्यौ ललन सु नमक मनोज ॥ ६१ ॥

आलस जु मन आलस पूरित बैन। धवल महल लै जाइ कें सखी तहाँ करावत सैन ॥ ६२ ॥ पान डवा सौरभ धरे भाजन धरि रस पान। चरन पलोटत रूप हित अली कोऊ रिझवत रस गान ॥६३॥ श्री हरिवंश प्रसाद बल बरनी विवि हिय लाग। वृन्दावन हित वारनें सुख भीनें जुगल सुहाग ॥६४॥१८३॥ इति

* मनिहारी लीला *

राग गौरी—मिठ बोलनी नवल मनिहारी।
भौंहें गोल गरूर हैं याके नैंन चुटीले भारी ॥टेक॥

चुरी लख्य मुख तें कहै घूंघट में मुसिक्यान। शशि मनु बदरी ओट तें दुर दुर दरसत यह जान ॥ १ ॥ चूड़ौ बड़े जु मोल कौ नगर न गाहक कोइ। मो फेरी खाली परी आइ घर घर सब ज टटोइ ॥ २ ॥ चुरी नील मणि पहिरवें नाहिन लायक और। भागवान कोऊ लै चलो मोहि दीखत एकही ठौर ॥३॥ जिहि नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय। वस्तु घनेरी गांठ में बिन गाहक सो पछिताय ॥ ४ ॥ रंग सांवरी गुन भरी धनि मन्यारि कुल ओप। मुदित होत सब देखि कें री यह पुर गोपी गोप ॥ ५ ॥ काहू पै न ठगाइ है तेरी बुद्धि विशाल। लाभ अधिक करि जायगी भट्ट बेच बड़े घर माल ॥६॥ मेरे मालहिं लेइ सो जो मुँह मागौ देइ। ऐसी है कोउ भामिनी ताकौ नाम प्रगट किन लेइ ॥ ७ ॥ वेचनहारी काँच की कहा अधिक इतराय। पौरि भूप वृषभानु के लाखन की वस्तु विकाय ॥८॥ पुरि बजार देखे नहीं है जु गँवेली नार। व्यौपारिन अबही बनी

क्यो जिय होत उदास । लैई अति लड़ी राधिका जो सौदा तेरे पास ॥ १० ॥ यह सुनि कें ठोडी गही सुखित भई अंग अंग। भलौ जु तेरौ मानि हों मोहि लै चलि अपने संग ॥ ११ ॥ लै गई पौरी भानु की बात कही समझाय । गुनन प्रगट करि सामरी तोहि लैहें वेगि बुलाय ॥ १२ ॥ हौं जु मन्यारी दूर की आई राज द्वार । वेचों चूरी चूरिला कोऊ बोलि लेहु रिझवार ॥ १३॥ सुनि आई चित्रा चतुर तू चलि रावर मांझ । प्रात चुरी पहिराइयो अब वसि रहि पर गई सांझ ॥१४॥ अलभ लाभ सो पाइ कें हिय जिय पायो चैन । रूखे से मुख सों कहै गोंगरजिन रचि रचि वैन ॥ १५ ॥ परि घर बसत जु वलि गई खीजै सकल परिवार । बड़े भोर ही आय हौं में यह मन कियौ विचार ॥१६॥ एक बार भीतर जु चलि प्यारी सों बतराय । भली लगे सो कीजियो लगिजा अति लाडि के पाय ॥ १७ ॥ चली जु झूमत झुकत सी बेंनी रुरकत पीठ । घूंट अमी कौ सो भरो जब मिली दीठ सौं दीठ ॥ १८ ॥ बहुत हँसी नव नागरी देखी परम अनूप । कै बेचत चूरी सखी तू कै वेचत है रूप ॥१६॥ मोहि खिलोना जिनि करौ राज कुँवरि बलि जांउ । तन थाको वासर गयौ मोहि फिरत फिरत सब गांउ ॥२०॥ मुख दीसत तो डह डहयौ लगत चीकनौ गात । थाकी कौन बतावहीं कछु ऊपर की सी बात ॥ २१ ॥ हौं तो सूधे जीय की घटि बढि समुझति नाहिं । तुम्हें कछू दरस्यौ कहा प्यारी कपट मेरे हिय मांहि ॥२२॥ रंग पहिराऊं चूरला प्यारी चोखो बनज कमांउ। चोखी प्रीति जु आदरौ नहीं कपटी जन पत्यांउ २३। मेरे जिय यह टेक है कहै देत

आउ आउ री निकट तू देखों वदन निहार। एक बात ही में खिरी तू गुसा हिये तें डार ॥ २५ ॥ सीतल हो ब्यौपारिनी तेरौ ऐसौ काम। तमक नई यह वैस की तजि तोहि फिरनों सब धाम ॥ २६ ॥ हों आई तकि राज घर करन प्रथम पहिचान। मन लीये ही बिनु करी यह हाँसी होय हित हानि ॥ २७ ॥ कासों है तैं हित कियौ अब लगि परी न दृष्टि। बात कहत उरभै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ २८ ॥ अब अपनी करि हित करौ भूषन जुवति समाज। सब विधि पूरन होहि तौ प्यारी मो मन वांछित काज ॥२६॥ मणि चौकी बैठी कुंवरि दीनी भुजा पसारि। काढ़ि चुरी अति सोंहनी पहिराई सुघर मन्यारि।३०। भुजा कढ़त मन्यारि दृग फूल्यौ मनहूँ वसंत। मन छुटि चल्यौ जु हाथ तें धीरज बांधत गुनवंत ॥ ३१ ॥ जबही कर सों कर गह्यौ शिर अरि कियौ प्रताप। तन गति वेपथ जानि कैं कछु मधुरे कियौ अलाप ॥ ३२ ॥ तुम लायक चूरी कुँमरि भूल जु आई ग्रेह। निरखि निरखि प्यारी कह्यौ तेरी क्यों कांपत सी देह ॥ ३३ ॥ सरस्यौ प्रेम हियें वली उत्तर देय जु कौन। रूप अमल तापै चढ़ौ लाल क्यों न गहें मुख मौन ॥ ३४ ॥ ललिता कै यह प्रेम है कै कोउ परस्यौ रोग। जतन करौ तन देखि कैं सखी कौन दई संजोग ॥३५॥ परम गुनीलौ नन्द सुत मैं देख्यौ टकटोइ। अहो प्रिया प्रीतम बिना बाल ऐसो प्रेम न होय ॥ ३६ ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाइ। प्रेम गहर तें काढि कें सखी पुनि पुनि लेत बलाइ ॥३७॥ जस दीयौ सबही कुलनि बनिता रस कनाय। कौन बड़ाई कीजियै जस वर्द्धन गोकुल राइ

बढ़ावनी यह नवल प्रेम की गोभ ३९ जुगल प्रीति गाढ़ी निरखि सखिन हियें अहिलाद। वरनी लीला मोहनी यह श्री हरिवंश प्रसाद।४०। बलि हित रूप चरित्र ये जो विचार है नित्त। वृन्दावन हित भीजि है दंपति रस ताकौ चित्त ॥ १८४ ॥ इति ॥

* मालिन लीला *

राग गौरी—ताल मूल—मालिनियाँ पौरी आई।

फूलन डलिया काँख में याकी कहा कहों रूप निकाई ॥ टेक ॥

तन चटकीलौ साँमरी मांथे केशर आड़। मुख जु झरैं सुख बीज से कहें वचन भरे अति लाड़ ॥ मालिनिया० ॥१॥ फूलन के गहने सबै हौं लाई हों पोहि। पहिरें कीरति नन्दिनी तब कर जु सफलता होहि ॥ २ ॥ पीत चमेली मालती और मोतिया राइ। जब प्यारी डाली खोलि हौं सौरभ जु भवन भरि जाइ ॥ ३ ॥ खबर करौ री वेगि दै नाहिं फिर जैहों ग्रेह। बेचन कों लाई नहीं हों लाई मान सनेह ॥ ४ ॥ हँसि कै चंपलता कह्यौ यह कौतुक है भूर। बचनन में डाटै सबै मालिन बड़ी गरूर ॥ ५ ॥ बिरम घरबसी नैंक लौं कुंवरि करत स्नान। धूम मचाई द्वार पै तेरी कासों है पहिचान ॥ ६ ॥ काम हमारे हाथ कौ सोई है पहिचान। देखि बुलावें रीझि कैं मन समझि बढ़ावें मान ॥ ७ ॥ तबहिं सखी भीतर गई कह्यौ कुँवरि लगि कान। मालिन इक अति आतुरी लाई गहनों रुचि अपुमान ॥ ८ ॥ मानों उतरी गगन तें अवनी प्रगटी नाहिं। ऐसी शोभा आगरी चाहै आवन रावर माहि ९ ॥ सुन शोभा आगर कहौ तौ

॥ १० ॥ सुनि माली की नंदिनी कहा कहों तो भाग । भीतर बोलैं लाड़िली तेरे देखन की मन लाग ॥ ११ ॥ चली भली काहू सगुन की मुख जु भले कौ देख । राज सुता के हिय भई सखी तेरी चाह विशेख ॥ १२ ॥ फूलन डाली काँख में फूल छरी लियें हाथ । सिमिटत चलत कनावड़ी सखी चंपलता के साथ ॥१३॥ कर जोरें पुनि पुनि नवति वचन कहत कछु मंद । घूंघट तैं खोलैं नहीं जाको बदन उजागर चंद ॥१४॥ सकुच न माली की लली भलीं रची करतार । डाली खोलदिखाइयै रचे कैसे गहने हार ।१५। हौं तो अबही सीखतर चतुराई कछु थोर । तुम दरशन के कारनें घर तजि आई बर जोर ॥१६॥ फूलन के सब आभरण पहिराये कर आप । या समये को करत ही प्यारी बहुत दिनन ते जाप ॥ १७ ॥ री माली की अति लड़ी मो मन अति संदेह । बिन देखें बिनही मिलैं क्यों तो उर उपज्यौ नेह ॥१८॥ तू माली के कुल भई हौं जु भई कुल राज । मन दौरायौ तें बड़ो यह अन-मिलतौ सों साज ॥१९॥ साँच कहों हौं बलि गई प्रीति न करत विवेक । चंदा कों पासंग नहीं कियौ चित चकोर धरि टेक ॥२०॥ अर्थ विचारत लाड़िली दीनी मोतिन माल । लीनी मोहि रिझाइ कैं तू धनि धनि चतुरा बाल ॥२१॥ सांवल बरनी भामिनी बचन कहे जे तैं जु । चतुराई की सींव है प्यारी परख लई है मैं जु ॥ २२ ॥ कितक दिना तैं तो हियें प्रीति भई उत्पन्न । भूषन कुसुम जनावहीं कर वरन गुहे हैं धन्य ॥ २३ ॥ हों तुम मूरति सुपन में देखत छकि गई प्रेम । गृह वन बौरी सी फिरों मोहि बिसरे कुल कृत नेम । २४ कोउ कहै इहिं काया लगी कोउ कहै

जाम   २५   या गौरंगी रूप पैं दीनौ तन मन वार । हौं काहू संकौं नहीं धरैं नाम सबै नर नार ॥ २६ ॥ तोमें लच्छण में लखे बसै लच्छमी भौंन । और न तेरे चाहना सखि चाहै साथिन हौंन ॥ २७ ॥ श्री राधा के पग लगी फूली अंग न माय । उर अंतर की बात मो प्यारी तुम लखि लई सुभाय ॥ २८ ॥ तुमसी लायक पाइ कें करौं कौन की आस । रुचि लै टहल करौं सबैं जो मोहि राखौगी पास ॥ २९ ॥ पाटी पारों रीझ कें बैंनी गुहौं बनाय । को मोतें जु बिचच्छनी अस रचौं महावर पाय ॥३०॥ फूलन को गहनौ जितौ गुहौं परम अभि-राम । नख सिख जब सिंगार हौं मोसों कहौ विचच्छन भाम ॥ ३१ ॥ कहा पीहर कहा सास घर जीवत तोहि विलोक । दुहूँ घर की अति लाड़िली कहि कैसैं राखौं रोकि ॥ ३२ ॥ मोहूँ पल विसरै नहीं अरु कहा कहौं बनाइ । तेरौ मन मानैं जहाँ तू तहाँ रहेगी जाइ ॥३३॥ मो चित वृत्त मचली यहाँ अहो तरुणि सिर मौर । मुँह मीठी सबसों कहौं हौं रचो न दूजी ठौर ॥३४॥ चरन पलोटन हौं निपुन प्रथम परीच्छा लेहु । ललिता मोकों महल में वलि तब तुम रहन जु देहु ॥ ३५ ॥ तोकों फूलन टहल है ताही में चित राखि । अहो सहेली मालिनी कछु बात समझि मुख भाखि ॥ ३६ ॥ बक्र विलोकनि निरखि कैं ललिता करत विचार । वचन विचित्र जु मालिनी दीखत जु बड़ी खिल-वार ॥ ३७ ॥ कौस्तुभ मणि उर पर लखी सारी खसी सुभाय । सखी धूत यह नंद कौ तुम देखौ कौतुक आय ॥ ३८ ॥ मालिन नाहिन मन मिलू है मन मिल घनश्याम सबै खिलाई ख्याल

सबकों देहि भुलाइ । उक्त जुक्त ऐसी रचैं कछु छदम न जान्यौं जाइ ॥ ४० ॥ बागौ यह जु उतारियै अब पहिरें किहि काज । हम जानी कै तुम भलैं राखौ जु सजन घर लाज ॥ ४१ ॥ प्रीति मधुर रस जो मिलै लाज कांकरी आइ । ललिता तो सुख स्वाद यह कहौ क्यों कर विलस्यौ जाइ ॥ ४२ ॥ कढ़ी सुवास जु फूल तें मुख तें कढ्यौ मिठास । या मालिन के खेल में रजनी रस भयौ प्रकास ॥ ४३ ॥ एक प्रान पुनि देह द्वै सुख अनेक विधि लेत । श्री हरिवंश प्रसाद तें यह वरनौं गरुवौ हेत ॥४४॥ समझति है मरमी रसिक रस बढ़िबे की रीति । वृन्दावन हित रूप की दुलराई निर्मल प्रीति ॥ ४५ ॥ १८५ ॥ इति ॥

* बिसातिन लीला *

राग परज—कोऊ लै है चुन्नी मोती यों कहत बिसातिन आई । गली गली में कहत फिरत कोऊ लालहि लेहु मुल्याई ॥ १ ॥ जबहिं गई वृषभानु पौरि तब ऊंची टेर सुनाई । स्याम पोति अरु स्याम नगीना इहि घर लायक लाई ॥२॥ द्वारैं उझकि उझकि फिरि आवै आगे जात सकाई । तन ढांपै पुनि घूँघट मारै लाजु जु भींजत जाई ॥३॥ भीतर खबरि भई तब प्यारी बोलि निकट बैठाई । कौन अपूरव वस्तु पास तों कहि मोसौं समुझाई ॥ ४ ॥ कौन नगर तू बसत बिसातिन अबहीं दई दिखाई । तोसी भट्ट बड़े घर चहियै धनि विधि जिन जु बनाई ॥ ५ ॥ सबही भांति ऊजरे तन की किहि मुख करौं बड़ाई । तोहि वसाऊ राज भवन में जो मन होय सचाई ॥ ६ ॥ कैसे चुन्नी कैसे मोती कीमत देहु बताई है लघु वैस कौन पै सीखी परखन की चतुराई ७

के नग ये मेरे तुम रिझवार महाई .. ८ .. जो जो रुचै बस्तु सो राखौ बड़े गोप की जाई । औरो बात कहत सकचति हौं प्रीति जु देखि बिकाई ॥ ९ ॥ नाना विधि की डिबिया छल्ला आरसी मणिनु जराई । श्री राधा के आगें धरि कैं बोली मैं भेट चढ़ाई ॥१०॥ तुम नृप अति लड़ि हौं जु बिसातिन देखत कृपा अघाई । हौं भूखी याही की चाहौं द्रव्य न बहुत कमाई ॥११॥ स्याम पोति कौ पुंजा सुन्दर में घर धरयौ दुराई । मोसौं जो हित करै सभागिन ताहि देहुँ पहिराई ॥१२॥ हौं हित करौं बचन मन क्रम करि रहि मो साथ सदाई । प्रानन हू तें प्यारी मोकों भाग्य बड़े हैं पाई ॥१३॥ बटुआ खोलि दिखाई बेंदी नागरि के मन भाई । सुघर बिसातिन अपने कर सौं माथे कुमरि लगाई ॥१४॥ पुनि झोरी तें दर्पण काढ्यौ मुख शोभा दरसाई । उदित भाल पर मनु सुहाग मणि लखि स्यामा मुसिकाई ॥१५॥ हरषि अंक भरि लई ताहि मन खोलि जबहिं बतराई । परसत अंग दसा बदली प्यारी मनमें धरी भुराई ॥१६॥ बूझत अरी डरी के तोकों छाया आय दबाई । तब लगि परि गई सांझ कहति मोहि वासो देहु बताई ॥१७॥ बिसर न सकति प्रीति अति बाढ़ि गई ब्यारू संग कराई । रजनी गुन उघरे जब सिज्या अपने ढिंग पौढाई ॥१८॥ जबहिं स्वरूप प्रकास्यौ अपनो जान परी लँगराई । बृंदावन हित रूप छदम तजि सुख की लवधि मनाई ॥ १९ ॥ १८६ ॥ इति ॥

* पटविन लीला *

राग परज--सांवल तन परम सुशीला लाई पटविन रचि जु छुटीला । द्वार पाल भीतर जु जानि दे तजि दै हठ जु हठीला ॥ १ ॥ [illegible]

है दुनहाई सी क्यौं तेरो बचन मान में लेहों ॥ २ ॥ मोसी हू कों नाम धरत है किन तोहि सीख सिखाई । तनक दया करि दई सँवारे बड़ी आस करि आई ॥ ३ ॥ नाम सुशीला धरो विप्र किन कहत आतुरे बैना । लै भाजेगी बस्तु राज की मैं परखे तो नैंना ॥ ४ ॥ रावर माहि जाति है रूरी किन है तोहि बुलाई । ताहू पै सतराति गांठि की खरचत है चतुराई ॥५॥ उसरि बैठि धीरज धरि मन में जो तो माहि भलाई । बरजोरी सी करति बिना समझें तैं धूम मचाई ॥ ६ ॥ कै आज्ञा कीरति जू देहै कै कीरति की जाई । भीतर जान देउंगी तबही मोहि वृषभान दुहाई ॥ ७ ॥ नृप की देत दुहाई एहो भीर परी कहा तोकों । अवला जन तापै व्यौपारिन क्यों अटकावत मोकों ॥ ८ ॥ राज भवन की पटविन औरे तू कोऊ जू छली सी । चट चट बचन कहत मो सनमुख निपट गुनीली दीसी ॥६॥ है कोऊ तू नंदगाम की याते ढीठ खरी है । समझि २ कें मैं याही ते तोसों गई करी है ॥१०॥ कैसो है नंदगाम घर बसे काहे दोष लगावे । धन्य पौरि पालक तू नृप के इन गुन क्यों मन भावे ॥ ११ ॥ बड़ी बड़ाई जान न देहैं हौं फिर जैहों पाछे । जो सुनि पावे भानु सुता बुलवाय लेंयगी आछे ॥ १२ ॥ इतने ही आई चित्रा बूझति तू जु कहां की है री । मोसों कहि दे व्यौरो सुन्दरि तोहि चलों संग लै री ॥१३॥ मैं हौं गहनों पोमन वारी सब बनितन की प्यारी । गिन गिन नाम धरत मोकों यह पौरी को अधिकारी ॥ १४ ॥ गहनों पोहि जड़ाऊ चलि तू दीखत चतुर महाई । हौं निकसी याही कारज कों भली भई तू पाई ॥१५॥ जो चोखी मखतूल जु तोपे अरु रेसम रँग रूरो । लेंहि चाह करि सबहिनु चहियत केस बांधवे जूरो

॥ १६ ॥ सैनन माहि बताई झोरी माहि सबै मोपे हो। पौरि नखाइ ले चले जो बलि बलि हों तो तोपे हो ॥१७॥ ले चली बहुत मान दे मंदिर तब किनहूँ नहिं टोकी। हिय को हिय सीतल भई चौकी बैठी प्रिया बिलोकी ॥१८॥ झोरी तें कर काढ़ि चुटीला ले भई आगें ठाढ़ी। देख देख ताकी बहु रचना नागरि अति रुचि वाढ़ी ॥ १९ ॥ नीची ग्रीवा छवि की सींवा कछु चितवत तिरछोंही। संगति भली भलौ कुल पै ये दीखत निपट लजोंही ॥ २० ॥ आज्ञा करी बैठि तू सुन्दरि लाई भेट भली है। पटबिन तौ तू कहति लगति मोहि मानों नृपति लली है ॥२१॥ लायक तुम कहो बात बड़ी ही मो बिसाति नहिं एती। आसा लागी फिरों नगर में घर घर फेरी देती ॥२२॥ सास ननद कैसी हैं तेरी कैसी धौर जिठानी। कैसो पति परिवार मिल्यो है कहि दे साँची बानी ॥ २३ ॥ साँच कहें निंदा सी लागे सास ननद हैं ऐसी। पानी मांगत पाहन मारें करों बड़ाई कैसी ॥ २४ ॥ पति मेरो मन लियें चलत है ओंजि पिवावे पानी। स्वारथ कौ परिवार सगौ अभिमानी धौर जिठानी ॥ २५ ॥ हँसि हँसि सबै लगीं धुकि अंकनि पटबिन मिली खिलौना। अपने गुन सों और बचन तें पति कौ कीयौ टोना ॥ २६ ॥ बात कहें ते देखो प्यारी छिन में भई पराई। काको बिलग मानिये अपनी हाँसी में जु कराई ॥ २७ ॥ सखी करो जिन हाँसी याकी है जु विदेसिन भोरी। तुरत कहि दई अपने मन की बात न राखी चोरी ॥२८॥ कौन कौन से नगर जाति है कौन कौन से ग्रेहा। हम बूझति हैं तोहि रंगीली किहि ठां अधिक सनेहा ॥ २९ ॥ नैनन में मुसिक्याय रही चुप उत्तर कछु नहिं दीयौ। तब चित्रा ने हाथ पकरि कें

बहुत निहोरौ कीयौ ॥३०॥ जो प्यारी प्रसन्न करे तौ नित होय तेरौ ऐवौ । मान वीनती अब कैं मेरी यह बात कहि देवौ ॥३१॥ मेरो हित नंदगाम बहुत है कहा राखौं अब ओटा । सबहीं को आदर राखत है नंद महरि को ढोटा ॥ ३२ ॥ पाट तागरी मेरे करकी पहिर मोद अति मानें । माला रीझ पुहाइ कहै आवन जु वेगि बरसानें ॥३३॥ राजकुंवर सुन्दर सुशील सबही के मन कों भावे । बरसाने को नाम सुनत ही दृगन नीर भरि आवे ॥३४॥ आरज संक मानि अपने मन वह नित रुक्यौ रहे री। गृह वन फिरे तऊ वाको चित याही ओर बहे री ॥ ३५ ॥ मैं देख्यौ टटोइ सब अंगन दुलहिनि ही रंग राच्यौ । बाल काल तें व्याह सगाई हित मन नटुवा नाच्यौ ॥३६॥ बहुत रचत उद्यम जु स्याम घन राधा रूप उमाहें । कुमरि कहौं त्रण छीये तो देखे विन दृग कल नाहें ॥३७॥ कहति कहति हौं होत बावरी अब जिन आगे बूझे। प्रेम वली जिनि मोहि दवावे ऐसी मन गत सूझे ॥३८॥ पटविन कथा कही प्रीतम की सबकों प्रेम भिजायो । समुझि सकुचि अहुरावत प्यारी तऊ गरो भरि आयो ॥ ३९ ॥ ललिता कहति कौन दिन सजनी तू नंदगाम गई ही । कौन भांति प्रीतम के मन की तें सब बात लई ही ॥ ४० ॥ इतनी तो मैं हूँ परखी है गाढ़ी हिलगन हीयें। सजन सगारथ कठिन लोक विधि रहे आड़ ही दीयें ॥ ४१ ॥ तू पटविन उन उर अन्तर की बात जु कैसें जानी । कहत कछू विद्या बल के मोहन मुख आप बखानी ॥४२॥ उत्तर देहि कौन ललिता कों इत उत वेपथ गातैं । समझि करति उपचार लखि परी उर उरझन की बातैं ॥४३॥ रोम रोम प्रीतम के प्यारी सुंदर सींव सनेहा । क्यों न्यारे रहि सकें सखी ये एक

प्रान द्वै देहा ४४ सलिता प्रेम वहति है उलटी जो जाने सो जाने । श्री हरिवंश प्रसाद रसिक मरमी ही रीति बखानैं ॥४५॥ सावधान करवाय सहेली दंपति लाड लडावैं । वृन्दावन हित रूप प्रेम के कौतुक ना ना भावैं ॥४६ ॥ १८७ ॥ इति ॥

* बीना वारी लीला *

राग गौरी—छवि आगरी कोविद राग ।

बीना अंक विराजहीं बैठी वावा के बाग ॥टेक॥

ऊंचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर । जाके अंग सुबास सौं जहाँ है रही भमरन भीर ॥ १ ॥ पंछीं हू कौतिक ठगे ऐसी सोभा अंग । आभा नील मणी मनौं अस तन कौ दरसत रंग ॥ २ ॥ जे देखन तरुनी गईं ते जु बिलोंई प्रेम । बीधि गईं रस नाद में सब भूली नित कृत नेम ॥ ३ ॥ तुम चलि लावो नगर में मिलैं अधिक सुख होय । भूखी वह जु सनेह की प्यारी मैं देखी टक टोय ॥ ४ ॥ गुनी न ऐसी देस यह रीझौगी सुनि गान । औरनि कौं जु छकावहीं वह आप छकै लै तान ॥ ५ ॥ कोमल परम सुभाव है जानति प्रीति बिकाय । जो अब आदर देहुगी तो फिरि आवैगी धाय ॥६॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाकौ सुनत अलाप । शिव समाधि टारै वली विधि कौ टारत है जाप ॥ ७ ॥ ब्रज मंडल ऐसी नहीं नहीं भरत के खंड । अति गुन-वन्ती भामिनी सखी यह आई परचंड ॥ ८ ॥ यह सुनि अति अकुलाय कैं चलीं सखी लै संग । रूप सिंधु उमग्यौ मनौं तामें नाना उठत तरंग ॥ ९ ॥ उठ सनमानति सांवरी फूली सरवस पाइ दृग सौं दृग मन सौं जु मन लखि उरझे सहज सुभाइ १०

सुनाइयै सखी वीना धरि के अंस ॥ ११ ॥ चपल करज नख दुति बढी गौरी गाई वाल । रीझी अति लडी भूप की दई ताहि आप हिय माल।१२। मान वढी तानन बढ़ी बढ़ी रूप लहि लाहु। प्रगट करी सब चातुरी जाकैं मन में विपुल उमाहु ॥१३॥ विद्या निपुन उजागरी धनि तुम सिखवन हार । कोऊ दिन बरसाने वसौ अब चलो हमारे लार ॥१४॥ सुनत कछु मोरयौ बदन चुप व्है रही सुजान । बीना धरि दियो कंध तें रूखी ह्वै गई निदान ॥ १५ ॥ ललिता बूझति समझि कैं को कारन वलि जाउं । तुम उदास अतिही भई सुनि धाम हमारे नाउं ॥ १६ ॥ मेरे छक है गुनन की सुनों खोलि कें कान। पर घर गये जु को सहै सखी जौरु होहि अपमान ॥१७॥ तुम्हें प्रान सम राखि हैं लाड़ नयो नित होइ । अहो गुनीली भामिनी यह संशै मन तें खोइ ॥ १८ ॥ गुन गाहक विरचें नहीं दूरि करो संदेह । जे गुन कों समझें नहीं परि हरिये तिन को ग्रेह ॥ १९ ॥ यह सुनि भई जु डह डही सखी सामरी गात । चम्पक वरनी धन्य तू कही निपट समझि की बात ॥ २० ॥ अब हों निश्चय चलोंगी जान तुमारो हेत । तो मन थाह मिली भटू नृप सुता न उत्तर देत॥२१॥ कहा न्याव सौ करति हौ कहत अति लड़ी बैन । सुख पावो तो विरमियों नाही कर जैयो गैन ॥ २२ ॥ मुसकि उठी कर बीन लै लगी कुमरि के साथ । निपट मंद गवनी भई गहि प्यारी जू कौ हाथ ॥ २३ ॥ गोपन के मंदिर जिते सबको बूझत नाम। तन श्रम अधिक जनावहीं कहै कितक दूर तुम धाम ॥ २४ ॥ हम जु चढें रथ पालकी अतिही आदर जोग । गुनी रीझ जानैं नहीं ये बृज के भोरे लोग ॥२५॥ कहो मगाऊं अश्व रथ कहौ

पालकी रंग आज्ञा पहिलै करी नही येही उठ लागी संग २६॥ हौं जान्यों नियरौ भवन यह तौ निकरयौ दूरि। बहुरयौ खबर परी नहीं तुम नेह रह्यौ भर पूरि ॥२७॥ और सुनों मो वीनती नीकैं धरियो साज। मेरे जीवन प्रान है याही सों रंग समाज ।२८। तुम मानत हौ खेल सौ सुनि मो मुख रस रीति। नारद सारद के सदा अति या वाजे सों प्रीति ॥२६॥ हौं सीखी उन कृपा सौं हियकी गाढ़ी लाग। ता प्रतापतें करति हो सखी सब मोसों अनुराग ।३०। लाई न्यारे भवनमें बहुत करत सनमान। अब एकांत सुनाइयै सखी सुघर साँमरी गान ॥३१॥ बीना के सुर साधि कै अंक लाइ मुसिकाय। गायौ चित की चौंप सौं जिन लीनौं सबहिं रिझाय ॥ ३२ ॥ जैसी ये रजनी ऊजरी तैसोई हियें हुलास। चपल करज तैसे चलैं भयौ तैसोई रूप प्रकाश ॥ ३३ ॥ अहो सहेली सामरी करि इहिं नगर निवास। असन वसन करिहौं सुखी वलि रहि नित मेरे पास ॥ ३४ ॥ मुहि आसा यह नगर घर यामें संश न कोय। आवति जाति सदा रहौं जो प्रीति रावरी होय ॥ ३५ ॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर वीन। ग्रीव ढुराई सांवरी अस गायौ कुँवरि प्रवीन ॥ ३६ ॥ जब उघटी संगीत गति प्यारी दै करताल। छदम विसर गई सामरी लगी निर्तन गति नंद लाल ॥ ३७ ॥ ह्वै त्रिभंग ठाड़ी भई करि मुरली कौ भाव। फूंक चलै अँगुरी चलैं गई भूल कपट कौ दाव ।३८। राधा राधा रट लगी अधरन ही के माहिं। समझि समझि ललिता कही प्यारी यह तौ भामिनि नाहिं ॥३६॥ भुजा अंश पर धरन कों झुकी प्रिया की ओर सावधान होइ सांवरी

फूल न आदर पाइ । स्यानी है कै वावरी तू अपनौ रूप बताइ ॥ ४१ ॥ यासौं प्रीति न तोरिये हौं लाई जु बुलाय । भेद हियें कौ पूछि कै देहु सादर वेगि पठाय ॥ ४२ ॥ प्रीतम कौं देखौ कहूँ इन लीनी गति चोर । परम चातुरी सींव यह गुन आछे लेति टटोर ॥ ४३ ॥ कान लाग चित्रा कह्यौ है यह नन्द किशोर । मैं लच्छण नीकें लखे दृग चलत लगौंहीं कोर ॥४४॥ भट्ट बहुरि नीकें परखि बातन भांडो फोरि । लायक सौं समझे बिना अति गरूवौ नेह न तोरि ॥ ४५ ॥ भरी कटोरी अतर की लाई सखीं सुजान । सब चोलिनु लगाइ कैं उहि चोली परसे पान ॥४६॥ वह अधरन ही में हँसी यह जु हँसी मुख खोलि । है यह धूत शिरो-मणी कह्यौ सब सखियन सों वोलि ॥ ४७ ॥ मेरी ही भूलनि सखी तब तुम लियौ विलोकि । प्रेम सिंधु बढ़िबौं कहा राखै छदम जु तिनको रोकि ॥४८॥ कबहूँ दुरि कबहूँ प्रगट आवति भानु निकेत । मधुप अनत बिरमै नहीं दृढ कियौ कमल सों हेत ॥ ४६ ॥ वरन्यौ कौतुक प्रेम कौ नेम नहीं मरजाद । लखी जु रस वांकी गली यह श्री हरिवंश प्रसाद ॥ ५० ॥ यह रस रसिक जु बिलसि हैं जामें अति ही चोज । वृन्दावन हित रूप बलि रुचै दंपति केलि मनोज ॥ ५१ ॥ १८८ ॥ इति ॥

* गंधिन लीला *

राग गौरी—गंधी की कुँवरि नवेली ।

कहत लेउ बड़ भागिनी चोखौ जु फुलेल चंवेली ॥

अतिरौटा अति घेरि कौ चोली सोभा ऐंन । कनक छपी सारी लसै याके बड़े बड़े है नैंन ॥ १ ॥ अत्तर लियें बहु भांति कौं सीसी भरी पिटारि । धरें वायें हाथ पै संग लामै कौतुक

हारि । २ । तन सांवल अति ऊजरी मन खेलत चौगान । लोचन वाजी सी रचै देखौ मनहुँ चुटीले वान ॥ ३ ॥ लोग वसत ह्याई तरे राखत नाहिन कानि । हौं आई आसा लगी घर बड़े करन पहिचानि ॥४॥ तोसी आवैं वीस दस सवही कौं सुख होइ । गंधी के जु परोस में सौरभ जु लेत सव कोय ॥५॥ चोखो अम्वर डवनि में गाहक होय सो लेहु । वसत भानुपुर सोंहनौं कोऊ मोहू आदर देहु ॥ ६ ॥ सौरभ महकत गलिन में जित जित करत जु गौन । परदा में की भामिनी कहैं अहा अहा लै पौन ॥ ७ ॥ अरी अपूरव कौन यह आई नगर मँझार । हग शोभा उरझै परें नासा सुगंधि लगि लार ॥ ८ ॥ फिरत फिरत आई जहाँ रावलिपति जु निकेत । चोखौ अतर गुलाव कौ कोऊ राज भवन है लेत ॥९॥ चौंक परी तव लाड़िली बैठी अपने भौन । लाउ वेगि सखि वोलि कें गंधिन सी बोलति कौन ॥ १० ॥ नरम वचन अति प्रीति के जिनमें भरयौ मिठास । ह्यां लौं आई है सखी जो याकें पास सुवास ॥ ११ ॥ यह आई कोऊ दूर तें या नगरी की नाहिं । ज्यों वेचै त्यौं लीजियै याहि लावौ मंदिर माहिं ॥ १२ ॥ गई सुदेवी दौरि कें कहति आउरी आउ । तो व्योपार छिप्यौ नहीं कहयौ कुंवरि मान दै लाउ ॥ १३ ॥ मोपै चोखौ अतर है तुम दे सकौ न मोल । राज कुँवरि ढिंग जो चलौं तुम बढ़ि बोलौगी वोल ॥१४॥ आदर दियैं चले नहीं फिरे निरादर ग्राम । सौदा करि जानैं नहीं तेरौ क्यों सुधरैगौ काम ॥ १५ ॥ इक आई द्वै चार पुनि लै जु गई परचाय । सौदा कर व्योपारिनी कहा पहिलें हीं सतराय ॥ १६ ॥ यह सौदा महँगौ नहीं तोरेहींजु विकाय । जो तुम मरम न बूझहू

कहा बैठो माल गँवाय । १७ । भट्ट कौन रिझवार है भानु सुता सम और । कोमल परम सुभाव है रिझवारन की सिरमौर ॥१८॥ उझकत सी यह चलति है कछू लेति किन हेरि । प्रिया हिये की चाह की लेइ थाह सियानी फेरि ॥ १६ ॥ बीच आइ चित्रा मिली कहत जु पाँय उठाय । अतर कि जादू सों भर्यौ लिये सबके चित्त चुराय ॥ २० ॥ मोसी सौदागर सुनों नहीं तुम्हारे देस । नई नई वस्तु दिखाय हों सखी एक एकतें वेस ॥ २१ ॥ तू देखी नहीं वस्तु तौ कासों कहत नवीन । लै सुगंधि गई जान कें हम स्वामिनि परम प्रवीन ॥ २२ ॥ आदर मोइ दिवाइयो जो समझी हों चित्त । साज अपूरव लाइ हों और आऊंगी नित नित्त ॥ २३ ॥ शोभा निकरि दई सच्यौ इत उत होत चिन्हार । अँखियाँ ह्वै गईं पाहुनी पायौ वांछित रूप अहार ॥ २४ ॥ आउ बैठरी भामिनी अपनी वस्तु दिखाय । तो उर भर्यौ सनेह सों आनन पै झलक्यौ आय ॥ २५ ॥ हौं सनेह समझौं नहीं फिरों जु उद्यम काज । तुम लायक जु कृपा करौं मो मन उपजत है लाज ॥२६॥ व्यौपारिन कों बलि गई शोभा हू जंजार । सब कोऊ हाँसी करें नित फिरों पराये द्वार ॥२७॥ बहुत हँसी सुनि लाड़िली गंधिन मुख की बात । तोही तू ढांपै फिरै यह नख सिख सुन्दर गात ॥ २८ ॥ सौदा तौ थोरौ करैं सब कोऊ गृह बोलि । मोहि देखि आनंद हीं बेबात कहैं मुख खोलि ॥२६॥ सुनों कुँवरि शोभा जु विधि बड़े घरन हीं देय । व्यौपारिन में स्वांग सौ सब कोऊ अंत जु लेय ॥ ३० ॥ राखों तन जु छिपाइ कें ज्यों त्यों अपनों धर्म । ढीठ्यौ दै हौं कहति हौं तिय बड़ी होत है शर्म ३१ भोरी पुनि सांची लगति

यह गंधी की धीय . सौदा पाछे कीजिये सुनो बचन जु यहि मुख प्रीय ॥ ३२ ॥ बहुत बकावौ मोहि जिन हो प्रवीन तुम आप । बहुरि कहूँगी खोलि मन अब पहिलो ही जु मिलाप ॥ ३३ ॥ तुंग विद्या ठोडी गही लगत खिलौना मोहि । प्यारी कों बातैं रुचैं कहि भैया की सौं तोहि ॥ ३४ ॥ मेरी सकुच गई नहीं पुनि मन मिल्यौ न पास । घटि बढ़ि वात कहें सखी होइ राज भवन उपहास ॥ ३५ ॥ कौन देस को पुर सखी कौन नाम तेरो जु । कौन कौन से गाम में तू सदा करत फेरौ जु ॥ ३६ ॥ कालि गई हों नंदपुर लाई द्रव्य कमाइ । भरयो पिटार सुगंधि को लियो ब्रजपति सुवन मुल्याइ ॥ ३७ ॥ मोहि दाम दूनों दियो ऐसो वो रिझवार । तुम जस ऐसोई सुनो तब आई यहि दरबार ॥३८॥ वे हू बातन के रसिक अधिक सुनें दे कान । ऐसो मैं देख्यो नहीं प्यारी यह बृज चतुर सुजान ॥ ३९ ॥ इतकी उत उत की जु इत कुशल कहोंगी आय । सुखित होंहुंगी हीय हों प्यारी आदर दुहुँ दिस पाय ॥ ४० ॥ सौदा में सौदा भयो दई मोहि अनुकूल । रसना एक कहा कहों ललिता हो उर की फूल ॥ ४१ ॥ जानी री जानी हमनि है उनहीं के रंग । बोलति बहुत उतावली चट-साल पढ़ी उन संग ॥४२॥ खोलि पिटारि सुगंधि को करि अपनो व्यौपार । गाँव गाँव तुहि डोलिवो तू काहे करत अवार ॥४३॥ सीसी काढ़ी अतर की दई कुमरि के पानि । याको मोल न लेहुँगी मैं भेट करी हित मानि ॥ ४४ ॥ आपहु सूँघो बलि गई औरन देहु सुँघाइ । चोखो होइ तो लीजियो नातर दीजो बगदाइ ॥४५॥ रीझीं कीरति नंदिनी अतर लगावत अंग । कह्यौ मांगे सो दीजिये व्यौपारिन अति चतुरंग ॥४६॥ असन बसन बहु द्रव्य

दै राजी कीनी ताहि । अब तू मांड दुकान ह्यां जिनि दूर दिसं-
तर जाहि ॥४७॥ गंधिन कर लखि मूँदरी ललिता करत बिचार ।
यह कीरति के हाथ की दीनीं ही पलिका चार ॥ ४८ ॥ हियें
विराजति धुक धुकी जड़ी अमोलक हीर । सोऊ लई पहिचान कें
जब सरक्यौ उर तैं चीर ॥४९॥ गौने में तीयल दई सो यह पहरे
भाम । लगि लगि कान कहें सबै यह नंद सुवन के काम ॥५०॥
इन्दुसेन रानी दई जो मुतियन की माल । हों जानत ललिता
कहै याके हीयें लसत विशाल ॥५१॥ अरी उतावलि जिन करो
चित्रा भाखति बैन । छान्यो छदम रहे नहीं परे उघरि देखि हो
नैन ॥ ५२ ॥ रजनी हूँ आई निकट जो यह बिदा न होय ।
निश्चय छदम जु जानियों यामें सन्देह न कोय ॥ ५३ ॥ ज्यों
ज्यों आवति सरवरी त्यों हिय हरषति नीक । समझि विसाखा नें
कह्यौ सखी है यह लंगर ठीक ॥ ५४ ॥ प्यारी जू अब रजनी
भई कहो जांउ किहिं ग्रेह । या नगरी में है नहीं मेरो दूजी ठौर
सनेह ॥ ५५ ॥ गंधिन के तू गल परू ह्यां न रहन को काम ।
तू चंचल जु बिदेसिनी पुनि यह राजा को धाम ॥ ५६ ॥ सब
बिधि करि सुचती रहो मेरो है मन शुद्ध । हँसि हँसि क्यों ललिता
करो व्योपारिन संग बिरुद्ध ॥ ५७ ॥ कर उचाइ यों कहति है
झमकत मुंदरी जोति । सखी गहि लई आंगुरी तब धक पक हिय
जिय होति ॥ ५८ ॥ यह मुंदरी पाई कहां सो ठाँ हमें बताय ।
मोतिन माला धुक धुकी उर तें उतारि दरसाय ॥५९॥ राज भवन
देखी नहीं काहू देस अनीति । भट्ट अधिक ज्ञानी परी मुहि याही
मंदिर रीति ॥ ६० ॥ माला उर जु उतार तैं गई कंचुकी छूटि ।
देखि सबै हर हर हँसी गयो मांड़ो छदम जु फूटि ॥ ६१ ॥ धनि

गंधी की नंदिनी कुख जस दैन अनूप　तब जु महरि उर तैं कढ़्यौ अब कढ्यौ घूँघट तै रूप॥६२॥चौदह सीक महरि धरी औरनि धरी जु सात। हियें फुरति हैं रावरे जग तैं जु अनौखी घात ॥६३॥ कंदुक डार जु केतकी गिनै न हिय जिय हेत। अलि अनन्य झुकि आवही रुचि वार वार रस लेत ॥६४॥ काहू लीनी कंचुकी काहू लीनी सार । उछरि उछरि नाचैं सबै मोहन कौ वदन निहार ॥ ६५ ॥ छदम कढ़त जो सुख वढ़्यौ काके हियैं समाय । श्री हरिवंश प्रसाद तें रसना पुनि पुनि दुलराय ॥६६॥ रस बरस्यौ या छद्म में रजनी वढ़्यौ सुहाग । वृंदावन हित रूप वलि उमग्यौ जु उभय अनुराग ॥ ६७ ॥ १८६ ॥ इति ॥

* रंगरेजिन लीला *

राग परज–ताल आड़—धन वरनी रूप गुमानी रंगरेजिन निपट सयानी। श्रीवृषभानु पौरिपै ठाड़ी कहत रंगीली बानी॥१॥ कहियौरी कोऊ राजकुँमरि सौं जात जु रावर माहीं । कै बुलाइयै पास आपकै वेगि देहु कर नाहीं ॥ २ ॥ मो गुन देखि बहुत हित करि हो जो ढिंग आवन पाऊँ । तुम रिझवार सुनी हौं अम्बर रंगि जु अपूरव लाऊँ ॥ ३ ॥ देखि स्वरूप दौरि गई चित्रा पौरि बधू इक ऐसी । रची विधाता और न दरसति मेघ वरन नव वैसी ॥ ४ ॥ चीर रंगनवारी जु बिचारी देख सिरायौ हीयौ। अचरज बड़ौ हरत सबको मन दई रूप अस दीयौ ॥५॥ प्यारी कही बुलावौ रावरि यह कौतुक जु कहा है। तेरी बात सुनत ही अचरज मोमन भयौ महा है ॥ ६ ॥ गई सखी भुज गहि लै आई बनी परम अभिरामा　अतर्क गति विधिना की

रंग और गह गही सारी । खुभि रही पीत कंचुकी लखि रति रंभा डारौं वारी ॥ ८ ॥ तू रंगरेजिन कैसी भामिनि बूझत भानु दुलारी । वसन अमोल राज घर कैसे यह संदेह जु भारी ॥ ६ ॥ यह जु किसब मो घर कौ वारी रंगि पहिरौं रुचि जैसी । जो रुचि होय रावरे मनकी बात कहौ तौ तैसी ॥१०॥ न्हांनौं किसब छांड़ि दै भामिनि मेरे मन यों आवै । विधिना दीनी छवि यह तोकूँ घर घर तू जु लजावै ॥ ११ ॥ कुल कृत तज्यौ न जाइ बलि गई हौं समुझत जु घनेरौ । मोहि पचै नहिं पानी जब लगि घर घर करौं न फेरौ ॥ १२ ॥ मोहि लाभ यह किसब बड़ौ है सबको दरशन पाऊँ । वारौं जगत बड़ाई जासौं घर जु घिरी अकुलाऊँ ॥१३॥ कहाँ हौं बसन रंगन हारी कहाँ तुम कीरति की जाई । इन विद्या ही तुमकौं प्यारी मोहि जु आन मिलाई ॥१४॥ जहाँ तहाँ फिरौं अटक नहिं मानौं खोटी कहै न कोई । कुलकी रीति यहै चलि आई मैं लियौ सार टटोई ॥ १५ ॥ जो तुम कहौ रूप है अधिकौ दुरि बैठे जु भलाई । तौ मानैं नहिं घर के जहाँ तहाँ मोही दैहिं पठाई ॥१६॥ पराधीन सबकी सिख मानौं तब हौं भली कहाऊँ । बैठि रहैं दूखैं सब तौ यासौं मैं लै जु बहाऊँ ॥१७॥ एक ही संग हँसी ब्रजबाला धन्य चतुर रंगरेजी। बात कहत तेरे उर अन्तर तमकि आय गई तेजी ॥१८॥ कुँमरि कहत बैठी रहि मो ढिंग तेरौ भलौ मनैं हौं । असन वसन वांछित तेरे कुटुंब सहित हौं दैहौं ॥ १६ ॥ कौन कैद में परै बलि गई रावरि रुकी रहौंगी । परहथ बिक्यौ न जाय बात मन भाई क्हाँ कहौंगी ॥२०॥ वसन रंगायौ चाहौ जैसे तैसी आज्ञा दीजै। घर के काम बहुत बिगरैं मोहि बिदा वेगि दै कीजे २१

बातन मांहि बीति गयौ वासर अब जु घोर निसि आवै जो परि जैहै राति मोहि तौ पर घर रह्यौ न भावै ॥२२॥ मो कर कौ कछु काम देखिये परखि परै चतुराई। अब लगि मोकूँ भोरी गिनकैं हाँसी ही बहराई ॥२३॥ अरी प्रगट करि अब चतुराई हमहूँ देख्यौ चाहैं। बहुत काम लैने मुहि वाला तू उदास होय काहैं ॥२४॥ जहाँ गये वसन रंगे मो करके तिन मन और न आवै। वे रिझवार भामिनी फिर फिर मोही पै जु रंगावैं ॥ २५ ॥ अब पहिचान भई या घर सों वड़ौ भाग्य मैं मान्यौं। जब दिखाइ हौं हाथ हथौटी तब गुन परिहै जान्यौं ॥२६॥ सफल होय मो कर श्रीराधा जब तुम अंगन धारौ। सुखित होंय मेरे दृग यह अभिलाष रहै हिय भारौ ॥ २७॥ सुभग बाँधनू की जु चूँनरी तुमहिं दिखावन लाई। कछु मुसिक्याय निकास काँखतें स्यामा जू हाथ गहाई ॥ २८ ॥ जुरि आँई सब सखी अरी याकी देखौ यह जु हथौटी। अरी किधौं साँची यह कैधौं फिरत कोऊ जु खिलौटी ॥२९॥ बूँटी फबी जड़ी मनु चुन्नी औरौ अति चतुराई। दरसत गहरौ रंग कसूँभी लै प्यारी पहिराई ॥ ३० ॥ कोऊ चूँमत हैं हाथ कोऊ करैं याके भाग्य वड़ाई। मनु अनुराग लपेटी दामिन भामिन यों छबि पाई ॥३१॥ सबै निहारैं सब कर जोरैं हमहूँ कौं रंग दीजै। तेरी सुमति विशाल प्रसंसा एक वदन कहा कीजै ॥३२॥ अब तेरौ गुन उघरि परयौ है सुनि सजनी मृग नैनी। कौन देश को नगर जहाँ की यह गहरी रंग रैनी ॥३३॥ मेरौ नाम दुकान विदित है गुन जो गाहकी होई। मन दै कारज करौं सभागिन प्रीति करैं सब कोई ॥ ३४ ॥ मुँह मांगे मुहि दाम देति हैं बड़ी बड़ी गुजरैटी अबकै काम परौ है तुम सौं हौं जु अहीरनि बेटी

॥३५॥ वे अधिकी हैं द्रव्य देन में तुम में अधिक सनेहा। यातें मन परचत कबहूँ कबहूँ उपजत संदेहा ॥३६॥ इक विदेस अरु मन जु परायो थाह लियें सुख सूझै। सनै सनैं अनमिल रुख लैं कै बात मरम की बूझै ॥३७॥ सत्य कहौ कीरति कुल मंडनि कछु चूनरि मन मानी। हौं लखि रोंम रोंम फूली हौं बार बार पियौं पानी ॥ ३८ ॥ लै दरपन मुख देखत श्यामा चूनरि अंग लसी है। तेरी प्रीति अधिक रंगरे जिन मोय भलैं दरसी है ॥ ३९ ॥ मैं सबही भर पायौ मुख तें बात रीझ की काढ़ी। हाँसि हाँसि अब बसन रँगौगी चौंप लगी हिय गाढ़ी ॥४०॥ बसन उतीरन दिये पहरि तू बड़ी आस करि आई। धक पक भई हिये सुनि सकुचति भामिन दृष्टि दुराई ॥ ४१ ॥ पहरि पहरि बड़ि भागिन अबही आज्ञा तू जिन टारे। कहत बिशाखा अरी भटू कहा इत उत अब जु निहारे ॥ ४२ ॥ कोऊ चुनि लाई सारी कोऊ खोलन लागी बंद चोली। कोऊ लाई अतरोटा सादर तू पहरि वेगि यौं बोली ॥ ४३ ॥ वह जु टरि चली ये पहिरावैं झुरमट माच्यौ ऐसो। भामिन तें भांवतौ जु दरस्यौ कौतुक बरनौं कैसो ॥ ४४ ॥ रूप बाग कौ भौंरा मोहन कहां परै कल एरी। विविधि जतन करि करि रस लोभी पुनि पुनि लेहि जु फेरी ॥४५॥ मन क्रम बचन श्याम के दृढ व्रत दुलहिनि रूप बखानैं। नंद सुवन अनुरागी बिन का पंथ नेह कौ जानैं ॥ ४६ ॥ श्री राधा सुहाग मणि ताकौ प्रान भांवतौ नाहा। गरुवौ प्रेम महा गरुवौ रस लैंहि कौतुक रचि लाहा ॥४७॥ रस की वृद्धि रंगीले खेलन हौहि रसिक जन जानैं। बिन मरमी न स्वाद सुख पावैं कृपा जनित उर आनैं ॥४८॥ प्रेम खिलावै त्यौं त्यौं खेलत नंद सुवन

॥ ४९ ॥ रस सिंगार चाल है वाकी योही शोभा पावैं । चोज चाइ रस वातन में गहरौ ही भाव दिखावैं ॥ ५० ॥ प्रीतम छद्म दरस उतकंठा प्रेमी प्रेम भिजै है। वृंदावन हित रूप मिथुन रस विलसन जो मन दै है॥ ५१ ॥ १९० ॥ इति ॥

* ढाँढिन लीला *

राग गौरी–ताल मूल—तन सांवरी ढाढिन एरी ।

फगुवा दीजै लाड़िली मुहि बड़ी आस है तेरी ॥ टेक ॥ पहिलै दीजै गोद भरि होरी कौ पकवान । राग अलाप सुनाय हौं तुम सुनौ वहुरि दै कान ॥१॥ औसर ही आवैं जु हम नित के याचक नाहिं । पुनि जु सुनी रिझवार मैं गुनि समझति सव मन मांहि ॥२॥ हौं नख सिख गुन सों भरी कार हौं सवै प्रकाश । पीहर पूरी सासुरे कमला कौ अचल निवास ॥३॥ जितौ देहु थोरौ सवै परत भंडार न टोट । हौं जाचौं घर घर नहीं लैंउ राज भवन कर ओट ॥ ४ ॥ मेरे गर्व गुमान को कहा जानि हैं रंक । जो मांगो सो लैटरों हौं ऐसीहौं निरसंक ॥ ५ ॥ ऐसे घर ही मिलत है हमैं अधिक सनमान । दिन जु रंगीले फागु के कछु वरसौ भांमिनि दान ॥६॥ वैठौ सखिन समाज रचि मुहि लिहु निकट बुलाय । वरषा होइ सुख रंग की सव कौं दैऊ प्रेम भिजाय ॥७॥ हौं ढाढिन की नंदनी व्रज में मेरौ वास । वसन उतीरन लैउगी आई मन धरि अधिक हुलास ॥८॥ लेहु हमारी आसिका यह होरी त्यौहार । नंद सुवन मोकौ दियो फगुवा में मोतिनु हार ॥ ९ ॥ सुनौ तरुणि मणि नागरी तुम हो परम उदार। विधि ने होरी कौ दियौ तुमकौ विलसन सुख सार ॥१०॥ निपट छबीली भामिनी अति चटकीले वैंन आज

अपूरव मैं लखी तेरे निपट सलौने नैंन ॥११॥ होरी खेलत नंद सुत ऐसे भाव बताइ। लाई माला रीझ में तू ऐसौई कछु गाइ ॥१२॥ सुगति उघटि संगीत की गुनी कहावति तू जु। बातन के चटके करै बिन रीझैं देहुँ न हूँ जु ॥१३॥ तीन ग्राम सुर सात लै ठाड़ी भई समाज। धरौ तँबूरा अंक लै निर्त्तत मिलि नूपुर बाज ॥१४॥ ग्रीव लटकि वैसी सखी वैसी ही भ्रुव भंग। वैसी ही गति लै चलै यह घटि नहीं काहू अंग ॥१५॥ तान लेति वहि रीति सौं गान रचति वहि रीति। दृग कटाक्ष वैसी चलैं वैसी हिय लल-कनि प्रीति ॥१६॥ भट्ट सुघर ढाढिन खरी बैंसीय होति त्रिभंग। नकल उतारी है भली इन कियौ कोऊ दिन संग ॥१७॥ बीच बीच हो हो कहै ताके बाही भाइ। रंग भरनि नंदलाल की वैसी विधि देति बताइ ॥१८॥ याकौं नित जु बुलाइयै होरी को सुख लेहु। कै राखौ संग आपनैं याहि रीझि बड़ी सी देहु ॥ १९ ॥ पहरि कुंवरि नूतन वसन दिये उतीरिन बोल। चरनन नै नै कैं लगी वह पुनि निर्त्तति मन खोल ॥२०॥ कबहूँ कूटक फागु के नचत रचत दृग लोल। पहिचाने ललिता तबै ये प्रीतम कैसे बोल ॥२१॥याकौं निकट बुलाइये लगत छदम सो गात। बसन और पहिराइये तब समुझ परैंगी बात ॥२२॥ पहिरायौ वागौ पलटि दरस्यौ स्यान सरूप। लाल रसिक अति कौतुकी वलि वृन्दावन हित रूप ॥ २३ ॥ १६१ ॥

॥ इति श्री ढाँढिन लीला की जय जय श्री हित हरिवंश ११ ॥

* होरी के रसिया *

(चाचा) श्री वृंदावन दास जी महाराज कृत

ब्रज कौ दिन दूलह रंग भरयौ। हो हो होरी बोलत डोलत हाथ लकुट सिर मुकुट धरयौ॥ गाढ़ें रंग रंग्यौ ब्रज सगरो फागु खेल को अमल परयौ। वृंदावन हित नित सुख बरषत गान तान सुनि मन जु हरयौ॥ १६२॥

अलबेली कुँवरि महल ठाढ़ी। गहे पिचक रंग भरत स्याम कौं उततें प्रीति भरन गाढ़ी॥ हो हो कहि मोहन मन मोहत मनहु रूप निधि मथि काढ़ी। वृंदावन हित रूप स्वामिनी कर डफ गावत छवि बाढ़ी॥ १६३॥

गहरे कर यार अमल पानी। तोहि करें होरी को रसिया होहिं सबै तेरे अगवानी॥ लै चलि है बरसानें तोकों तेरे मनकी हम जानी। वृंदावन हित रूप भली विधि खाँय भान घर मेहमानी॥ १६४॥

डफ बाजे कुँवर किशोरी के। तैसिय संग सखी रंग भीनी छैल छबीली गोरी के॥ हो हो कहि मोहन मन मोहत प्रीतम के चित चोरी के। वृंदावन हित रूप स्वामिनी कर डफ गावत होरी के॥ १६५॥

होरी को रसिया निकसन देत न बाट री। भरि भरि रंग उलैंड़नि डारतु यह ऊधमी निराट री॥ कर डफ लै ऐसौ कछु गावै सुनि मन होत उचाट री। वृंदावन हित रूप फागु सुख लिख्यौ विधि श्याम लिलाट री॥ १६६॥

होरी को रंग भीनों री रसिया एक खेल में बहुत रचत

करत है बहुत कला वाके उर में बसिया। चतुर चेटकी दृष्टि परत ही जात तुरत मन धीरज नसिया ॥ २ ॥ रह री रह अबकें गहि याकों भरि हौं नैंन अंक में कसिया। वृंदावन हित रूप तन सच्यौ अबही भीजत है मुख मसिया ॥ ३ ॥ १६७ ॥

बरसाने महल लाड़िली के। ओर पास वाके बाग बगीचा बिच बिच पढ़े माधुरी के ॥ तिन महलन विहरत प्रिया प्रीतम निस दिन प्रिया चाडिली के। वृंदावन हित रंग बरषत है छिन छिन रस जु बादली के ॥ १६८ ॥

मृग नैंनी नारि नवल रसिया। अतलत कौ याकौ लहँगा सोहै झूमक सारी तन लसिया ॥ होरी खेलत मन मोहन सों बदन मोड़ि मुरि मृदु हँसिया। वृंदावन हित रूप झूमक दै रसिक कुँवरि के मन बसिया ॥ १६६ ॥

खेलें नंद दुलारौ हुरियाँ। रंग महल में खेल मच्यौ जहाँ राधा लहुरि वहुरियाँ। रंग गुलाल उलेंडनि डारें ललिता आदि छहुरियाँ। वृंदावन हित निरषि प्रशंसति बाला रूप जुहारियाँ २००

मन मोहन नंद दुटौना। होरी में आयौ बरसाने सुंदर स्याम सलौना ॥ १ ॥ कीरति जू हँसि लियौ अंक भरि जसुमति जू कौ छौना। भोजन सुहथ कराइ नेह युत सीतल जल जु अचौना ॥ २ ॥ ललितादिक लै चली खिलावनि जहां दाइजे भौना। रंग गुलाल बगेलत खेलत राधा संग नचौना ॥३॥ गारी गावति सखी लड़ावत होरी छंद रचौना। ललकत वलकत रस छकि घूँमत उर सुख मुख गह्यौ मौना ॥४॥ कीरति दुरि निरखति मन हरषित हिय सुख सिंधु बढ़ौना। वृंदावन हित रूप असीसत ये दोऊ लाड़ खिलौना ५ २०१

राधा वल्लभ खेलत होरी। फेंट गुलाल करनि पिचकारी मुख माँड़ति करि करि वर जोरी॥ निर्त्तत गावत कर पटकावत छकि छकि भृकुटी भौंह मरोरी। वृंदावन हित रूप प्रशंसित सजनी चित्रि मुख चंद चकोरी॥ २०२॥

होरी में वरजोरी करेंगी। कहा चमकावत मोर के चंदा वदन माँड ते हम न डरेंगी॥ कान पकरि मुख गुलचा दैहैं अपु अधीन करि रंगनि भरेंगी। वृंदावन हित रूप लाड़िले औंड न रहि है अब निदरेंगी॥ २०३॥

रंग भरि हौं याहि जानि न दै, यामैं औड़ बहुत है। सजनी गहि मन भायौ करि हौं, याहि जानि न दै रंग भरि हो॥ टेक॥ घेरि खवावौ हा हा छल बल लीजै, जाहि न टरि हो॥ रंग०॥ होरी में कहा कानि, महावर माँडौ वदन निदरि हों॥ रंग॥२॥ बहुत बकतु ताकौ फलु दै अब नेंकु न मन में डरि हो॥ रंग०॥ वृंदावन हित रूप छाँडि जब रहें कुँवरि पद परि हो॥ रंग०॥ ३॥ २०४॥

होरी के खिलैया हम तन नेंक चितै हो॥ दृग काजर दै छेक भरौंगी बहुत न ऊधम दैहो॥ होरी०॥ टेक॥ जो मुख आवै सोई गावै तुमहि न रंचक भै हो॥ वृंदावन हित रूप फाग फल दैहौं तोहि अघैहौं॥ होरी०॥२०५॥

हो होरी खेलै छैल छवीले राधा मोहन रंग भीने॥ अतर अरगजा मुख लपटावै भौंह चढ़ति मन हरि लीने॥ भेद भीतरी बातें कहि कहि उर आनंद अंकुर कीने॥ वृंदावन हित रूप छके दोऊ मदन केलि रस परवीनें २०६

तिलक मणि गोरी ॥ १ ॥ वृंदावन में खेल रच्यौ है सखिनु मंडली जोरी । ललित बिसाखा चंपक चित्रा रंगनि भरे कमोरी ॥२॥ तुंग विद्या इंदु लेखा यूथनि केशरि अरगज घोरी । रंग-देवी रु सुदेवी भरि लई अबीर गुलालनि झोरी ॥३॥ हित चित विर्ति खिलावति चौपनि मन मिलि भई दुहु ओरी ॥ बाजे विविध वजावें गावें तान युगल रस बोरी ॥ ४ ॥ मोर मुकट सिर धरें सांवरो ओढ़ पीत पिछौरी ॥ प्यारी सीस चंद्रिका सोहै निर्त्तत बाहाँ जोरी ॥ ५ ॥ इत उत चलति गुलाल पोटरी रंग पिचकारी छोरी । थेई थेई हो हो कहि मुख माँडति मुसिकत भौंह मरोरी ॥ ६ ॥ हित रूपी सखी आइ अचानक गांठि दुहुँन की जोरी । झूंमक नाच नचावत हँसि हँसि लै बलाइ त्रृन तोरी ॥७॥ कहा वरनौं सोभा सुख सरसनि जो रस बरस्यौ होरी । वृन्दावन हित राधा वल्लभ मुख ससि नैंन चकोरी ॥ ८ ॥ २०७ ॥

होरी खेलत कुँवर कन्हैया । मन मिलि बनी सखानि मंडली एक ओर बलभैया ॥ १ ॥ नंदराय जू के अँगवारे सुन्दर जहाँ अथैया । बनि ठनि आये गोप कुँवर बहु स्वांगी सुघर खिलैया ॥ २ ॥ बाजे त्रिविधि बजावति सुगतिनु एक तें एक गवैया । मोर मुकुट सिर धरे साँवरौ मुरली मधुर बजैया ॥ ३ ॥ नव गोपी मिलि खेलन आई गावत फाग बधैया । मोर पच्छ मूंठा कर ढोरतु स्याम भलौ नचकैया ॥ ४ ॥ अबीर गुलालनि चलति पोटरी रंगनि भीजि भिजैया । झुरमट मच्यौ कहत नहिं आवै सोभा सुख सरसैया ॥ ५ ॥ बनितनि पकरि लिये मन मोहन काजर नैंन अँजैया । लै गईं जहाँ रोहिनी

मेवनि गोद भरैया। हरि हलधर हँसि कंठ लगाये करि सिंगार पै प्यैया ॥ ७ ॥ दिन दुलहिनि राधा को दूलहु नित ब्रज रस बरसैया। वृन्दावन हित रूप जियौ चिरु धन्य पिता धनिमैया २०८

हरि रसिया खेलत है होरी। मोर पखा मूठा सिर ढोरत झूमक दै नाचत गोरी ॥ १ ॥ कनक लकुट लीयें ब्रज नागरि मुसिकति है थोरी थोरी। कर जेरीं नग जटित स्याम के अबीर गुलाल भरे झोरी ॥ २ ॥ खेलत श्री ब्रजराज पौरि पै होत परस्पर बरजोरी। वृन्दावन हित धाइ धाइ उर धरत भरत रंग दुहुँ ओरी ॥ ३ ॥ २०९ ॥

हरि होरी रंग मचावतु है। जोवन रूप मद छक्यौ ढोटा तुव लखि नैन नचावत है ॥ १ ॥ घर घर जाइ फाग के फोकट निलजी गारी गावतु है। आपुन भरत रंग पट बनितनि इनकी चोट बचावति है ॥२॥ भरि भरि कलश अरगजा मोहन जुव-तिन के सिर नावतु है। दै कर तारी हो हो कहि कहि बाजे विविध बजावतु है ॥ ३ ॥ जो कोउ गली गल्यारे निकसें धाइ जाइ गहि लावतु है। वृन्दावन हित नगर नंदीश्वर आपुन भींजि भिजावत है ॥ ४ ॥ २१० ॥

श्री बलिहार जी के—अरे मेरे आँखिन निरदई भरि गुलाल हू न बोली रे। पाय अकेली जो मन मानी करि गयौ घूंघट खोली रे॥ गावत निकसौ छैला गारी, रसिया रंग भरि चोली रे। नित बलिहारि करत बोली ढोली अवधौं पाई होली रे॥२११॥

आंखिन भरत गुलाल, रसिया ना मानें रे। अछन अछन पाछें अलबेलौ निरख नवेली बाल, रसिया ना मानें रे　नयौ

कहा करौ बलिहारि चवाई भुज भरि होत निहाल, रसिया ना मानें रे ॥ २१२ ॥

श्री नन्दकिशोर जी कृत—रसिया होरी में मत करौ हगन पै चोट । मैं तो लाज भरी बड़ कुल की, तुम तो भरे बड़े खोट॥ रसिया० ।१। अबकी बेर बचाइ गई में, कर घूंघट की ओट । नन्दकिसोर वहां जाय खेलौ, जहाँ बने तुम्हारी जोट ॥ २१३॥

श्री दयासखी जी कृत—हेरी ये डफ बाजे छैला के, मनमोहन रसिया नागर के, वा जुलमी औगुन गारे के, धुनि सुनि जिय अति अकुलाय गई । कहा कीजै री आवत उमगि हियो निधि ज्यों अब कापै रोक्यौ जाइ दई ॥ उर गुरु जन की लाज दहति उर धरि नहिं सकिये देहरी पाइ । दया सखी अब होइ सु हूजो मिलों घनश्यामहि धाइ ॥ २१४ ॥

अरे हेला वे डफ बाजें छैल पियारी के, वा श्री वृषभानु दुलारी के, कीरतिजा रूप उजारी के, धुनि सुनि उर चौंप बढ़ी भारी । रंग रंगीली अलीसंग लिये फूलि रही छवि फुलवारी॥ अरे हेला छाइ रह्यौ अनुराग रंग गावैं मैंन मद सनी रुचिर मारी । दया सखी घनश्याम लाल कह्यौ नर्म सखन सो चलो जाइ देखैं अपने प्राण की निज है जियारी ॥ २१५ ॥

जो तुम कीनी होरी रे हम सों रसिया समझि परैगी आज। कूक कूक करि गारी सुनावैं करि नहिं पाऊं काज ॥ लैहौं छीन पीत पट मुरली (दया) तनक न करिहौं लाज । दौरि दौरि बलिहार भरत रंग अब कित जैहो भाज ॥ २१६ ॥

मन मोहन रिझवार री, तेरे नैंन सलोने री सोंह दिवाय

गाँव की, अबही आई है गौने री मन मोहन तेरे द्वारे ठाड़े, तू धसि बैठी है कौने री ॥ होरी के डफ बाजन लागे, तू गहि बैठी है मौने री । दया सखी या ब्रज में बसि कें, नेम निभायौ है कौने री ॥ २१७ ॥

श्री अवध विहारी जी कृत—होरी कौ खिलार सारी चूँदर डारी फार ॥ टेक ॥ मोतिन माल गले सों तोरी, लहँगा फरिया रंग में बोरी, कुम कुम मूँठा मारे मार ॥ होरी० ॥ ऐसो निडर ढीठ बनवारी, तक मारत नैननि पिचकारी, कर सौं घूँघट पट दे टार ॥ होरी० ॥ बाट चलत में बोली मारे, चितवन सो घायल कर डारे, ग्वाल बाल संग लिये पिचकार ॥ होरी० ॥ भरि भरि झोर अबीर उड़ावै, केशर कीचन कुचहि लगावै, या उधम सों हम गई हार ॥होरी०॥ ननद सुनें घर देवैं गारी, तुम निर्लज्ज भये गिर-धारी, विनय करत कर जोर तुम्हार ॥होरी०॥ जब सों हम ब्रज में हैं आई, ऐसी होरी नाहिं खिलाई, दुलरी तिलरी तोरयौ हार ॥ होरी० ॥ कसकत आँख गुलाल है लाला, बड़े घरन की हम ब्रज बाला, तुम ठहरे ग्वारिया गँवार ॥ होरी० ॥ ऐसो ऊधम तुम नित ठानो, लाख कहैं पर एक न मानों, बलिहारी हम ब्रज की नार ॥होरी०॥ धनि धनि होरी के मतवारे, प्रेमिन भक्तन प्रानन प्यारे, अवध विहारी चरन चित धार ॥ होरी० ॥ २१८ ॥

श्री शालिग राम जी कृत—नैननि में पिचकारी दई, गारी दई, होरी खेली न जाय ॥ टेक ॥ क्यों रे लँगर लँगराई मोते कीन्हीं, केशर कीच कपोलन दीन्हीं, लिये गुलाल ठाडो मुसकाय, होरी खेली न जाय ॥ नेक न कान करत काऊ की, नजर बचावै भैया बलदाऊ की, पनघट सौं घर लों वतराय, होरी खेली न जाय

औचक कुचन कुमकुमा मारे, रंग सुरंग सीस सों ढारे, यह ऊधम सुनि सास रिसाय, मेरी ननद रिसाय, होरी खेली न जाय ॥ होरी के दिनन मोसों दूनों दूनों अरुझैं, शालिगराम कौन याय बरजैं, अंग लिपट हँसि हा हा खाय, होरी खेली न जाय ॥२१६॥

श्री हरिचन्द जी कृत—चिरजीवो, होरी के रसिया ॥चिरजीवो०॥ नित प्रति आवो मेरे होरी खेलन, नित गारी नित ही वसिया ॥ चिरजीवो० ॥ हरिचन्द इन नैन सिरायो, प्रीति पिछोरी कटि कसिया ॥ चिरजीवो, होरी के रसिया ॥ २२० ॥

श्री आनंदघन जी कृत—येरी यह जोवन तेरो होरी में कैसे बचैंगो। वा दिन की सुधि भूलगई है, जा दिन रंग मचैंगो ॥ चोवा चंदन और अरगजा, आंगन कीच मचैंगो । आनन्द घन ब्रज मोहन जानी, तेरे संग नचैंगो ॥ २२१ ॥

होरी खेलन की चौंप हो निस नींद न आवैं ॥ श्याम सलौना रूप रिझौना उलही जोवन को मुरली टेर जगाय सुनावैं ॥ मेरे वगर मडराय त्यों त्यों हूँ सकुचों जिय अपने खेलूँगी उघर वनावैं ॥ कहा करेगी सास ननदिया यह सब को त्यौहार ॥ आनंद घन गुलाल घुमडन में कर राखू हिय हार ॥ २२२ ॥

श्री बलिदास जी कृत—मेरी चुंदरी में पड गयो दाग री ॥ असी चटक रंग डारो श्याम, मोहू सी केतिक बृज सुन्दरि उनसों न खेलैं फाग री ॥ औरन को अचरा न छुऐ याकी मोही सो पड़ गई लाग री ॥ बलिदास वास ब्रज छोडो ऐसी होरी में लग गई आग री ॥ २२३ ॥

श्री नागरिया जी महाराज कृत—कन्हैया, जान दै रे तेरे पांय परति हों रे कन्हैया ॥ टूटि गये हार छूटि गयो अचरा भींजि

गई अंगिया रे दैया। या मग मांझ न कर वरजोरी है गोकुल के लोग चवैया ॥ नागरिया धनि रीति तिहारी यह धन्य खेल तुम धन्य खिलवैया ॥ २२४ ॥

रूप दुरै किहिं भांति री, तू कहै क्यों न सजनी। घूँघट में न छिपात सखी मेरे गोरे वदन की कान्ति री ॥ १ ॥ वरज रही वरज्यौ ना मानें कौन दई संजोग री। मैं तरुणी और या ब्रज के सब बावरे लोग री ॥ २ ॥ मोहन गोहन लाग्यौई डोलै, प्रगट करत अनुराग री। अब नागर डफ बाजन लागे, सिर पर आयौ फाग री ॥ ३ ॥ २२५ ॥

श्री गोकुल कृष्ण जी कृत—होरी में कैसे बचैगो, यह जोवन तेरो। जो कहीं दृष्टि परैगी श्याम की संग लै तोय नचैगो ॥ १ ॥ अबकी फागुन तेरेई बगर में होरी रंग मचेगो। छैल बड़े छल चितवन चोरे नैनन बीच डसेगो ॥२॥ गोकुल कृष्ण की लगन यही है तेरे ही भवन बसेगो ॥ २ ॥ २२६ ॥

श्री हरिप्रिया जी कृत—प्यारी बिहारी लाल सों रस होरी खेलैं। लटकीली गज चाल सों, बूका वंदन मेलैं ॥टेक॥ जोवन जोर उमंग सों रति रंगहि रेलें। लै पिचकी कर कमल सों पिय तन पर पेलें ॥ १ ॥ अति निसंक लच लंक सों भरि अंक सकेलें। गहि गाढ़ी अहिलादिनी आनन्द अलवेलें ॥ २ ॥ अतर लाय तन तर करी नव तिया नवेलें॥ सग वग कीनी ढारि कैं सीसी जु फुलेलैं ॥ ३ ॥ चहल पहल भई महल के या बगर बगेलें ॥ श्री हरि प्रिया जे धन्य हैं, ते यह रस झेलैं ॥ ४ ॥ २२७ ॥

श्री खुमानजी महाराज कृत—कैसा है यह देस निगोड़ा, जगत

बदन मेरा गोरा। मोसों कहें चलो कुंजन में, तनक तनक से छोरा, परे आंखिन में डोरा ॥ कैसा० ॥१॥ जियरा देख डरात है सजनी, आयो लाज सरम को ओरा। कहा बूढ़े कहा लोग लुगाई, एक ते एक ठठोरा, न काहू कौ काहू से जोरा ॥ कैसा० ॥२॥ मन मेरौ हर्यौ नन्द के ने सजनी, चलत लगावत चोरा। कहे खुमान सिखाय सखन सों, सब मेरा अंग टटोरा, न मानत करत निहोरा ॥ कैसा है ये देश निगोड़ा० ॥ ३ ॥ २२८ ॥

श्री हित घनश्याम जी कृत–गौंहन पर्यो री मेरे गौंहन पर्यो, साँवरौ सलौनों ढोटा मेरे गौंहन पर्यौ ॥ १ ॥ याकी घाली मेरी आली कहौ कित जाउं। बाँसुरी में गावे वह लै लै मेरौ नाऊँ ॥ २ ॥ साँवरे कमल नैंन आगें नेकु आइ। लाजन के मारे मोपै कहूँ गयौ न जाइ ॥ ३ ॥ जो हौं त्रितऊ आड़ौ दै दै चीर। सैंननि में कहै चलि कुंज कुटीर ॥ ४ ॥ अँगना में ठाढ़ीं हू अटा चढ़ि आवे। मुकट की छहियाँ मेरे पाइनि छुवावे ॥ ५ ॥ हित घनश्याम मिलोंगी धाइ। साँवरे सलोने बिनु रह्यौ न जाय ॥ ६ ॥ २२६ ॥

काजर वारी गोरी ग्वार ॥ या सांवरिया की लगवारि ॥ निसि दिन रहत प्रेम रंग भीनी ॥ हरि रसिया सों यानें यारी कीनी ॥ मदन गोपाल जानि रिझवारि ॥ नाना विधि के करत सिंगार ॥ काजर वारी० ॥१॥ मिलन काज रहै अंग अंगोछैं ॥ सरस सुगंधनि तेल तिलौछैं ॥ अंजन नाहिं भट्ट यह दीयें ॥ स्याम रंग नैनन में लीयें ॥ काजर वारी० ॥ २ ॥ गायन कूँ जसुमति गृह आवें ॥ कृष्ण चरित्रहि गाय सुनावें ॥ सुंदर स्याम सुनें ढिंग आइ ॥ चितवत ही चितवत रहि जाय काजर वारी०

॥ ३ ॥ रामराइ प्रभु यों समुझावें ॥ भागवान तू नीके गावें ॥ लखि घनश्याम कियौ निरधार॥ यह लगवारिनि वह लगवार ॥ काजर वारी गोरी ग्वारि ॥ ४ ॥ २३० ॥

श्री पुरुषोत्तम प्रभु जी कृत–बृंदावन खेल रच्यौ भारी ॥बृंदावन॥ बृंदावन की गोरी नारी, टूटे हार फटी सारी ॥ बृंदावन ॥ ब्रज की होरी ब्रज की गारी, ब्रज की श्री राधा प्यारी ॥ बृंदावन ॥ पुरुषोत्तम प्रभु होरी खेलें, तन मन धन सर्वस वारी ॥ बृंदावन खेल रच्यौ भारी ॥ २३१ ॥

फागुन में रसिया घर वारी ॥ फागुन में० ॥ हो हो बोले गलियन डोले, गारी दै दै मतवारी ॥ फागुन में० ॥ लाज धरी छपरन के ऊपर आप भए है अधिकारी ॥फागुन में०॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत ग्वाल करैं सब किलकारी ॥ फागुन में रसिया घर वारी ॥ २३२ ॥

फगुवा दे मोहन मतवारे ॥ फगुवा दे० ॥ ब्रज की नारी गावत गारी, तुम द्वै बापन बिच बारे ॥ फगुवा दे० ॥ नन्द जी गोरे जसुमति गोरी, तुम याही ते भये कारे ॥फगुवा दे०॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत गोप भेष लियौ अवतारे ॥फगुवा दे मोहन मतवारे ॥ २३३ ॥

ठाड़ो रे कनुवा ब्रजवासी ॥ठाड़ो रे०॥ रंग ढारि कित भज्यौ लंगरवा, लोग करैं मेरी हाँसी ॥ ठाड़ो रे० ॥ १ ॥ बाल पनो खेलन में खोयौ, गोकुल में बारो मासी । ठाड़ो रे०॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत जनम जनम की तिहारी दासी ॥२॥२३४॥

मृग नैंनी तेरो यार नवल रसिया ॥मृग नैंनी　जाके बड़े

॥ मृग नैंनी ॥ जाके नव रंगी लहँगा सोहै, जाकी पतरी कमर मेरे मन बसिया ॥ मृग नैंनी ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत सबै मिली ब्रज में बसिया ॥ मृग नैंनी तेरो० ॥ २३५ ॥

चलो अइयो श्याम मेरे पलकन पै ॥ चलो अइयो० ॥ तू तौ रे रीझ्यो मेरे नवल जोवना, मैं रीझी तेरे तिलकन पै ॥ चलो अइयो० ॥ तू तौ रे रीझ्यो मेरी लटक चाल पै, मैं रीझी तेरी अलकन पै ॥ चलो अइयो० ॥ पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरषत, अबीर गुलाल की झलकन पै ॥ चलो अइयो श्याम मेरे पलकन पै ॥ २३६ ॥

बन आयो छैला होरी कौ । मल्ल काछ सिंगार धरयौ है याकौ फैंटा सीस मरोरी कौ ॥ सौंधैं भीनों उपरना सोहैं जाके माथैं बेंदा रोरी कौ ॥ पुरुषोत्तम प्रभु कुंवर लाडिलौ यह रसिया वाही गोरी कौ ॥ २३७ ॥

ब्रज की तोहि लाज मुकुट वारे । सूर्य्य चन्द्र तेरौ ध्यान धरत हैं, ध्यान करत नव लख तारे ॥ इन्द्र नें कोप कियौ ब्रज ऊपर तब गिरिवर कर पर धारे । पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरषत गाय गोप के रखवारे ॥ २३८ ॥

दरसन दै निकसि अटा में ते ॥ दरसन दै ॥ तू है श्री वृषभानु नन्दनी ज्यौं निकस्यौ चन्द्र घटा में ते ॥ दरसन दै० ॥ कोटि रमा सावित्री भवानी, सो निकसीं अंग छटा में ते ॥ दरसन दै० ॥ पुरुषोत्तम प्रभु यह रस चाख्यौ जैसे माखन निकस्यौ मठा में ते ॥ दरसन दै० ॥ २३९ ॥

श्री सूरदास जी कृत—करौंगी कपोलन लाल, लाल मेरी अँगिया न छुओ ॥ टेक ॥ यह अँगिया नहीं धनुष जनक को,

उड़ी नन्दलाल लाल मेरी० १ गिरिवर उठाय भये गिर-
धारी, नही जानी ब्रजबाल जावौं जु खावौं सुदामा के तन्दुल,
गायन के प्रतिपाल ॥ लाल मेरी० ॥ २ ॥ कहा विलोकत कुटिल
भृकुटि करि नहीं है पूतना काल । या अँगियाहि काली मति
समझो नाथ्यौ जाय पताल ॥ लाल मेरी० ॥ ३ ॥ सुनि सुनि
बचनन लाल अविलोकें लियहि अबीर गुलाल। सूर स्याम प्रभु
हरखि छिरक कें सखियन करी निहाल ॥ लाल० ॥४॥ २४० ॥

स्यामा स्याम सों होरी खेलत आज नई ॥ नन्द नन्दन
को राधे कीनौ, माधव आप भई ॥ १ ॥ सखा सखी भये सखी
सखा भई, यशुमति भवन गई ॥ बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ,
नाचत थेई थेई ॥२॥ गोरे स्याम सामरी राधे, या मूरत चितई॥
पलट्यौ रूप देखि जसुमति की, सुधि बुद्धि बिसर गई ॥ सूर
स्याम को बदन किलोकत, उघर गई कलई ॥ ३ ॥ २४१ ॥

श्री ललितकिशोरीजी महाराज कृत—श्री बिहारी बिहारिन की मोपै
यह छबि बरनी न जाय । तन मन मिलै झिलै मृदु रस है,
आनन्द उर न समाय ॥१॥ रंग महल में होरी खेलें, अंग अंग
रंग चुचाय । श्री हरिदास ललित छबि निरखत सेवत नव नव
भाय ॥ २ ॥ २४२ ॥

गोरी तेरे नैंना बड़े रसीले । बिहँसि उठत निरखि मेरौ
मुख घूँघट पट सकुचीले ॥ फागुन में ऐसी न चाहिये ये दिन
रंग रंगीले । ललित किशोरी गोरी खंजन बिन अंजन
कजरीले २४३

सब ब्रज बनिता, तुम रहो राधे जू हमरी ओरी ॥ होरी० ॥ चौवा चंदन अतर अरगजा, लाल गुलाल भरे भोरी ॥ ललित किशोरी पिया प्रीतम मिलि, खेलेंगे फाग सराबोरी ॥ होरी खेलौ तौ कुँजन चलौ गोरी ॥ २४४ ॥

श्री नारायण स्वामी जी कृत—मति मारो पिचकारी स्याम, अब देऊंगी मैं गारी ॥ भीजेगी लाल नई मेरी अँगिया, चूँदर बिगरैगी न्यारी ॥ देखैगी सास रिसायगी मोपै, संग की ऐसी है दारी, हँसेगी दे दे तारी ॥ मति मारो पिचकारी० ॥ १ ॥ घाट बाट सब सों अटकत हो, लै लै रारि उधारी, कहाँ लों तेरी कुचाल कहूँ मैं, एक एक ब्रज नारी, जानत करतूत तिहारी ॥ मति मारो० ॥ २ ॥ मूठ अबीर न डारो दृगन में, दूखैंगी आँख हमारी ॥ नारायन न बहुत इतरावो, छाँड़ो डगर गिरधारी, नये भये तुमही खिलारी ॥ मति मारौ पिचकारी० ॥ ३ ॥ २४५ ॥

श्री सिरोमणि प्रभु जी कृत—मदन मोहन की यारि, गोरी गूजरी। सब ब्रज के टोकत रहैं तातें निकसैं घूँघट मारि, गोरी गूजरी ॥ १ ॥ जो कोऊ झूठे कहैं आए मदन मुरारि, गोरी गूजरी। रहि न सकै इत उत तकै दुरि देखैं वदन उघारि गोरी गूजरी ॥ २ ॥ तनसुख की सारी लसैं हो कंचन सौ तन पाइ, गोरी गूजरी। मनो दामिनि की देह सों हो रही जोन्ह लपटाइ, गोरी गूजरी ॥ ३ ॥ धरति पगनि लाली फबै भरै ढरै रित जाइ, गोरी गूजरी। काच करौती जल रँग्यौ कछु यहै जुगत ठहराइ, गोरी गूजरी ॥ ४ ॥ कटि नितंब ढिंग पातरौ हो उरज भार अधिकाइ, गोरी गूजरी। लग्यौ लंक मनु लाल कौ वाकी लचनि लचक्यौ जाइ, गोरी गूजरी। ५ । बरन बरन पट पलटई

हो नूतनि नूतनि रंग, गोरी गूजरी । तव इत उत निकसत फिरत हरिहि दिखावै अंग, गोरी गूजरी ॥ ६ ॥ छूटी अलक नैंना बड़े हो श्रोप्यौ मो मुख इंदु, गोरी गूजरी । अरुन अधर मुसिकात से दिये भाल सिंदूर कौ बिन्दु, गोरी गूजरी ॥ ७ ॥ लगन लगी नंदलाल सों हो करे निर्वाहन काज, गोरी गूजरी । चब्यौ चाक त्रित चतुर कौ वाके प्रेमहि आयौ राज, गोरी गूजरी ॥ ८ ॥ लाल लखें लालच बढ़े उत त्रास पिय पियराइ, गोरी गूजरी । यह संजोगिनि विरहनी तातें अरुझी बीच सुभाइ, गोरी गूजरी ॥६॥ नर नारी एकत भए हो मिलि मिलि करैं चवाव, गोरी गूजरी । सिरोमनि प्रभु दोऊ सुनें तातें बढ़े चौगुनें चाव, गोरी गूजरी ॥ १० ॥ २४६ ॥

श्री सुघररायजी कृत—होरी को खिलार कर लिये डफहिं बजावे हो ॥ टेक ॥ पान भरे मुख चमकत चौका अरु दियें बेंदा रोरी की । रातो लहँगा तनसुख सारी कहा कहौं छबि या गोरी की ॥ १ ॥ कठिन कुचनि पर उकसति आंगिया आहि मनों रति की जोरी की । चोवा की बेंदी तुईयनि पर अरु अंचरा की ढिग थोरी की ॥२॥ नीवी खुभि रही है नाभि पर अरु कसि गांठि दई डोरी की । भरति न डरति आँखि आंजति है करत दुहाई किसोरी की ॥३॥ नंदलाल कों गारि देत है हँसि ग्वालिन सों गठ जोरी की ॥४॥ जोवन रूप बनी सु बनी मनों है वृषभान गोप ओरी की । हो हो हो कहि सुघरराय प्रभु नेंन सेंन दै चित चोरी की ॥ ५ ॥ २४७ ॥

श्री सरसदासजी कृत—बैंया झकझोरी मोसे, खेलिये ना ऐसी

कुच मोहे जान लंगर भोरी ॥ खेलिये० ॥ निठुर निलज काहे मोतियन माला तोरी ॥ खेलिये० ॥ रंग पिचकारी मारी, चूनरी बिगारी सारी । चलिरे अनारी काहे मलत कपोल रोरी ॥खेलिये०॥ भरिये न अँकवारी, देऊंगी में प्यारे गारी । सरस विहारी तोसों हारी कहूँ कर जोरी ॥ खेलिये० ॥ २४८ ॥

श्री श्यामदासजी कृत–गोरे अंग गुवालिन गोकुलगाम की ।ध्रु०। लहर लहर जोवना करे हो थहर थहर करे देह । छतिया धुकर पुकर करे वाको नयो रसिक सों नेह ॥१॥ कुवटा को पानी भरे गोरी नवि नवि लेजू लेय । घूँघट दावे दांत सों ये गर्व न उत्तर देय ॥२॥ पहरे नौतन चूनरी लावनि लई सकोरि । अरग थरग सिर गागरी वह चिते चली मुख मोरि ॥ ३ ॥ चाल चले गज हंस की ऊंची नीची दीठ । ओढ़न के मिस मुरकि कें नेक हरि ही दिखावे पीठ ॥ ४ ॥ ठमकि चले मुरि मुरि हँसे गोपी फिरि फिरि ठाड़ी होय । घायल सी घूमत फिरे याको मर्म न जानें कोय ॥ ५ ॥ तिलक बन्यों अगिया बनी वाकी पायल की झनकार। बड़े बगर ते नीकसी स्याम खरे दरबार ॥ ६ ॥ २४६ ॥

श्री नागरियाजी कृत–निलज गारी जिन दैरे अरे कान्हा,निलज गारी जिन दैरे ॥१॥ अबहूँ हारी हा हा तोसों, नेंक लाज मुख लैरे ॥२॥ अब या गली बहुरि नहिं अइहौं, सों बाबा की हैरे ॥३॥ नागरिया ब्रज बधू भिगोई, होरी माँझ सवेरे ॥ ४ ॥ २५० ॥

राधा मोहन खेलत फाग। रंग गुलाल बसन तन सनि रहे हिय सनि रहे नवल अनुराग ॥ सखिनु समाज चहूँ दिस राजत मनों फूल्यौ सोभा को बाग । बृन्दावन हित रूप रस छके मदन [illegible] रहे उर लाग । २५१ । इति

फागुन सुदी पून्यौ कौ जनम मगल छद राग सूहो बिलावल

जै जै श्री गोपीनाथ श्रोप द्विज कुल दई। कांनन कमनी भूमि प्रीति बढ़े नित नई ॥ हृदयौ सील सों नमित अंग सब सोहने। परम धर्म चित्त विर्त्ति रसिक मन मोहने ॥ मोहन महा दंपति चरित रुचि श्रवन कथन विशेषिये। कला धरमनु उदित पांनिप वदन पै यों देखिये॥ कोमल किरिनि बानी सुधा सुरसम्य उर पूरित भई। जै जै श्री गोपीनाथ श्रोप द्विज कुल दई ॥१॥ जै जै श्री गोपीनाथ सुखित होंहि दरस ते। भक्ति महा रति वढ़े चरन रज परस ते ॥ सुमति सदा प्रभु श्रोर उचि पद श्रादरयौ। ग्रंथनि सार बिचार सोधि संग्रह करयौ ॥ करयौ संग्रह सोधि श्री राधाचरन परधान को। भजन भीजे सुख श्रपूरव दे श्रमानीं मान को ॥ राधिका रंगीलाल सेवा रहें छिन छिन सरस ते। जै जै श्री गोपीनाथ सुखित होंहि दरस ते ॥ २ ॥ मंगल गुन गरुवत्त सु मंगल वपु धरयौ। मंगल जस गौरंग महीतल विस्तरयौ ॥ मंगल नाम श्रलाप विहारिनि कंत को। निरखि कुंज थल मंगल श्रति गुनवंत को ॥ गुनवंत श्रति रस विवस जहाँ श्रानंद नित बरषे घना। श्रलि भाव धर्मिनु मिलि मुदित हित कृपा पूरित जे जना ॥ रस छके भाव जु भीतरे श्रभिलाष जन प्रनितनि भरयौ। मंगल गुन गरुवत्त सुमंगल वपु धरयौ ॥ ३ ॥ जै जै श्री गोपीनाथ श्रमित लाहौ लह्यौ। छंद श्रगोचर रूप चित तानें गह्यौ मुरली मुरलीधरन प्रिया विपनेसुरी वह ललितादि

सुदृष्टि जु पाइये । बृंदावन हित रूप श्री हरिवंश कृपा मनाइये ॥ सर तलप मिथुन मराल क्रीड़त रीझि मन तट रमि रह्यौ । जै जै श्री गोपीनाथ अमित लाहौ लह्यौ ॥ ४ ॥ १ ॥

राग सारंग, ताल मूल—प्रगटे श्री गुर गोपीनाथ । फागुन सुदि पूनौं वपु दरस्यौ निजु जन करन सनाथ ॥१॥ बनिता चलीं बधाये गावति तिलक थार धरि हाथ । श्री राधा कुल सेव्य मनावति रंग सोहिलिनु गाथ ॥ २ ॥ इष्ट कृपा की करति प्रसंशा मिलति जु भरि भरि बाथ । बृन्दावन हित रूप निरखि प्रेमी जन तजत न साथ ॥ ३ ॥ २ ॥

राग सोरठ, ताल मूल—आजु मंगल भूर निहारो रे । रुकिमिनि कूखि प्रगट भयौ जो सुत रूप गुननि अति भारो रे ॥ १ ॥ बरनत लगन नक्षत्र देखि कें जोतिश भेद बिचारो रे । कुल मयंक दृढ़ भक्ति थापि है सुकृतिनु प्रान अधारो रे ॥ २ ॥ रस पद्धति आनंद बढ़ावन श्री हरिवंश दुलारो रे । मंजु कुँज अलि भावक भेदी प्रनितनि कौ दातारो रे ॥३॥ तिलक दाम धर मान वर्द्धि है दसधा रुचि आगारो रे । रसिक नृपति कौ प्रांन जीवन धन सब जन मोहन हारो रे ॥ ४ ॥ संदेहनि कौ निकर निबारन दीनन करे सुखारो रे । बृन्दावन हित रूप रसिक जन सर्वसु गनें हमारो रे ॥ ५ ॥ ३ ॥

राग गौरी—ताल मूल——श्री गोपीनाथ भजन गुन आगर । सुदृढ़ राधिका पद रति भांति भांति सब जगत उजागर ॥ रासेस्वरी सहेली प्रगटी दुलरावन नागरी नव नागर । बृन्दावन हित रूप झकोरति जिनकी सुमति रस सागर ॥४॥ इति॥

चैत्र वदी परवा के दिन होरी डोल के पद

गोस्वामी श्री हित हरिवंश महाप्रभु जी के पद ॥ राग देव गंधार ॥

झूलत दोऊ नवल किशोर । रजनी जनित रंग सुख सूचत अंग अंग उठि भोर ॥ अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंदर कल घोर । बीच बीच प्रीतम चित चोरत प्रिया नैंन की कोर ॥ अवला अति सुकुमारि डरत मन वर हिंडोर झकोर । पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत दै नव उरज अकोर ॥ उरझी विमल माल कंकण सों कुंडल सों कच डोर । वेपथ जुत क्यौं वनै विवेचित आनंद बढ्यौ न थोर ॥ निरखि निरखि फूलति ललितादिक विवि मुख चन्द्र चकोर । दै अशीश हरिवंश प्रसंसित करि अंचल की छोर ॥ १ ॥

गोस्वामी श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभु जी कृत—झूलत फूल भई अति भारी । निर्मित वर हिंडोर विटप तर वृन्दा विपिनि विहारी ॥ सखी सकल अति मुदित भई बहु रंग पहिरें तन सारी । भृकुटि भंग लावण्य अंग दुति कोटि मदन मद टारी ॥ अति सुगौर राधे ग्रीवा में श्याम भुजा छवि न्यारी । दामिनि अचल विराजत मानौं मेघ घटा बिचकारी ॥ वरनन कहा कीजिये प्रेम कौ रुचि दायक जहाँ गारी । जै श्री कृष्णदास हित यह सुख देखत प्रांन सम्पदा-वारी ॥ २ ॥

गोस्वामी श्री कमल नैन जी महाराज कृत—झूलत प्यारी के संग रंग भरे लाल । मुरली लकुटि कटि काछनी काछें पीताम्बर वनमाल ॥ मुकट दमकि मुक्ताफल माँग को आँको भरैं अजवाल । जै श्री कमल नैन हित अनुपम यह छवि हिये रह्यौ सब काल ३

लागी रस पागी चौंप चाव रुचि अंग अंग फूलें ॥ १ ॥ मचकि लचकि कटि चरन बाहु धरि हरषि वरषि सुख होत अमोलें। सुधि नहीं सिथिल बिथल भये भूषन ललितादिक गहि राखति ओलें ॥ २ ॥ पवन कर रंग भाजन काजनि तजि धाई लै आई सोलें। जै श्री कमल नैंन हित दासी तिहि कौतिक इक टक लागि रही अनबोलें ॥ ३ ॥ ४ ॥

गोस्वामी श्री कुंजलाल जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

हो हो हो होरी कहि झूलें। प्रेम रंगीले रंग में फूलें ॥ ॥ टेक ॥ चंदन चारु लता चंपक मिलि रंग रंग कुसुमनि कुंजा। मधुर सुगंधनि रंध्रनि माते मधुप मुदित मधु गुँजा ॥ १ ॥ मंजन करि अंजन तन चीर चतुर अंग अंगनि धारे। सीस फूल कल कुंडल वेशरि हार तिलक छवि ढारे ॥ २ ॥ चटक छवीलो मुकट सीस मुरली पीतांबर सोहै। छविनि छवीली रगनि रंगीली कटि काछिनी मन मोहै ॥३॥ मणि मंजीर मिथुन पग झनकत आननि पांननि ओभा। चखनि चोज रति मौज मनोजनि बाढ़ति सोभनि सोभा ॥४॥ झुडनि झुँड मिलि गावति सहचरि वहु वादित्र वजावें। रमकनि झमकनि दरस परस लखि कुँजलाल सुख पावें ॥५॥५॥

गोस्वामी श्री रूपलाल जी महाराज कृत पद ॥ राग सारंग ॥

डोल झूलतदंपति होरी रंग रह्यौ। फाग सुहाग भरे अनुरागनि अंग अनंग लह्यौ ॥ लतनि लतनि प्रति झलकत तन दुति जात न बैन कह्यौ। जै श्री रूपलाल हित सहचरी झुलवत प्रेम प्रवाह बह्यौ ॥६॥

राग सारंग–डोल झूलैं री दोऊ जुगल किशोर। फाग भरे अनुराग ढरे ये विवि मुख चंद चकोर। रूप छके रिझवार लाड़िले

प्रेम सिंधु की वोर ७

गोस्वामी श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—रचि सुन्दर डोल झुलावहीं। विहसि विहसि राधा हरि झूलत चहुं दिस सहचरि गावहीं ॥ १ ॥ होरी कौ सुख विलसि सभागे परिवा मोद बढ़ावहीं। कबहूँ किलकि किलकि उर लागत कबहूँ अबीर उड़ावहीं ॥२॥ श्रीराधामोहन जोरी अविचल सखी असीस सुनावहीं। जै श्री किशोरीलाल हित रूप मिथुन मुख निरखत नैंन सिरावहीं ॥८॥

गोस्वामी श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज कृत॥ राग सारंग ॥

झूलत डोल वोल होरी विच परिवा मोद बढ़ावत हैं री। लता कुँज छाई चहुँ दिस ते मोरनि शोर करें निरभै री ॥ १ ॥ वसन गुलावी धारे अंगनि पुष्प गुलाव पीत सोहे तन। जगमगात हैंगे आभूषन इकही रंग रंगे दोऊ जन ॥ २ ॥ बड़ झोटनि भामिनी डरावैं पीय भुजा में भुज लपटावें। गर वहियाँ दै हित उपजावैं अधर सुधा रस ही कौ प्यावैं ॥ ३ ॥ यह सुख सागर कौन वखानैं रूप छकन ही में जु छकानें। जै श्री हित गोवर्द्धन नैना जानैं धनि धनि भाग आपनौं मानें ॥४॥६॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत—डोल झूलत बिहारी विहारिन राग रमि रह्यौ। काहू के हाथ अधौटी काहू के वीन काहू के मृदंग कोऊ गहि तार काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ॥ डाँड़ी छाँड़ि खेल बढ़यौ जो परस्पर नाँही जानियत पगु क्यों रह्यौ। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुँज विहारी को खेल खेलत काहू न लह्यौ ॥१०॥

झूलत डोल दोऊ जन ठाढ़े। हा गत जोर सहित जैसी जाकी डाँडी गहैं गाढ़े॥ बिच बिच प्रीति रहसि रस रीति की राग रागिनी के यूथ बाढ़े श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कूँज

विहारी राग ही के रंग रंगि काढ़े ॥ ११ ॥

झूलत डोल श्री कुंज विहारी। दूसरी ओर रसिक राधा वर नागर नवल दुलारी ॥ राखें न रहत हँसत कहि कहि प्रिया विलावलात पीय भारी। श्री हरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी, अबकें राखि हा हा री ॥ १२ ॥

एक समें एकान्त वन में डोल झूलत कुँज विहारी। झोटा देत परस्पर सव मिलि अवीर उड़ावत डारी ॥ कबहुँक वे उनके वे उनके हों दुहून के एक सारी। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी, रह्यौ रंग भारी ॥ १३ ॥

डोल झूलत दुलहिनी दुलहु। उड़त अवीर कुम कुमा छिरकत खेल परस्पर सूलहु ॥ वाजत ताल रवाव और वहु तरनि तनया कूलहु। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुँज विहारी को अनत नाहिने फूलहु ॥ १४ ॥

श्री व्यास जी महाराज कृत ॥ राग देव गंधार ॥ फूलत दोऊ झूलत डोल। रच्यौ अलौकिक कौतुक निरखत, रति पति दीजति ओल ॥ १ ॥ पिय प्यारी उर सौं उर जोरें अधरन सौं अधर कपोल। चारयो वाँहु पीठि पर दीठि, नाँहु पर कचनि विलोल ॥ २ ॥ जोवन जोर देत दोऊ झोंटा चंचल अलक निचोल। मुख मुख रव नेति नेति नव नागरि बोलत बोल ॥३॥ तन सौं तन मनसौं मन अरुझ्यौ, वाढ़ी प्रीति अमोल। परिरंभन चुँवन रति लम्पट, नीवी वंधन खोल ॥४॥ वाजत ताल पखावज आवज, डफ कल दुन्दुभि ढोल। वीथिनि वीचि कीच अरगज की, गावत सहचरि टोल ॥५॥ सुक पिक मोर मराल मधुप, मृग मुदित पुलिन्दिनी कोल। व्यास [illegible]मिनी कौ जसु गावत, मधुरितु होला होल ६ १५ ॥

श्री बिहारिनदास जी महाराज कृत　राग सारंग　डोल झुलावत कुंज विहारी । रमकि धरति पग नव जोवन भर अति आनन्द दुलारी ॥ सारंग राग अलापत लाल रसाल दै दै करतारी । कबहुक हँसत हँसावत रीझि रिझावति प्रीतम प्यारी ॥ री तब कर गहि लेत किसोर किसोरी पुलकि भरत अँकवारी । श्री बिहारीदासि दंपति नव नव छवि पर छिन छिन बलिहारी ॥ १६ ॥

राग कल्यान—श्री बिहारी बिहारिन गावत रस रंग भरे परस्पर फूलत झूलत डोल ॥टेक॥ एकनि के कर किन्नरि एकनि के करताल रबाब मृदंग । राजत सुबस भए बिबि सुन्दर चितवत चकित अभंग ॥ बन प्रसून बरषत सुर पुर तें सोंधौ सरस सतोल । उड़त अबीर कुमकुमा छिरकत अरु बंदन बहु मोल ॥ पीउ डरात लपटात लागि उर प्रिया बिसेष बल तोल । राखन कहति श्रमित सुन्दर प्रति दै सर्वसु रस ओल ॥ रीझि निरखि रस रीति प्रीति जन सुनत मधुर मृदु बोल । श्री बिहारी दासि बलि बन बिनोद नित वारत प्रांन अमोल ॥ १७ ॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत ॥ राग कान्हरो ॥ झूलत डोल नवल स्याम प्रिया गोरी । नव निकुंज नव रंग महल अति विचित्र बनी यह जोरी ॥ भृकुटि कटाच्छि मनोहर नैंननि बैंन बदत चित चोरी । गावत तान तरंग अनंगनि रीझि कहत हो होरी ॥ डाँडी छाड़ि करत परिरंभन चुँबन देत निहोरी । कच कुच कर कंचुकी रस परसत बिहरत कुँवरि किसोरी ॥ तब सहचरी अतिहि उड़ावति बूका बंदन रोरी । निरषि नागरीदासि दंपति छवि विपुल प्रेम भई भोरी　१८

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री ॥

जमुना पुलिन सुहावनौं, रंग भीनैं झूलैं ॥ तन मन मोद बढ़ाइ डोल सुहावनौं, रंग भीनैं झूलैं ॥ कंचन खंभ जटित बने, रंग भीनै झूलैं ॥ देखत मन ललचाइ, डोल सुहावनौं रंग भीनैं झूलैं ॥१॥ नवल लाल नव लाड़िली ॥रंग०॥ मुदित सखी यह भांति ॥ डोल०॥ मानौं जुग ससि एकठां ॥ रंग०॥ कुमुदिन फूली ढिंग आइ ॥ डोल० ॥२॥ नील पीत पट राजहीं ॥रंग०॥ भूषण रहे छबि छाइ ॥ डोल० ॥ यह छवि कवि को कहि सकै ॥ रंग० ॥ चितवनि मृदु मुसिकाइ ॥ डोल० ॥ ३ ॥ चारौं दृग चंचल बनैं ॥ रंग० ॥ उपमा कछु ठहराइ ॥ डोल०॥ मानौं रूप तड़ाग में ॥ रंग०॥ खेलत मीन सुभाइ ॥ डोल०॥४॥ मधुर मधुर सुर गावहीं ॥ रंग० ॥ खग मृग रहे लुभाइ ॥ डोल० ॥ अद्भुत रंग बढ्यौ तहाँ ॥ रंग० ॥ सारद वलि वलि जाय ॥ डोल० ॥ ॥ ५ ॥ सुरंग गुलाल अखंड़ सौं ॥ रंग० ॥ गगन रह्यौ घमडाइ ॥ डोल० ॥ मनु हरि ऊपर काम नें ॥ रंग० ॥ रच्यौ है वितान वनाइ ॥ डोल० ॥ ६ ॥ वड़ झोटनि भय भांमिनी ॥ रंग० ॥ लागति पिय तन धाइ ॥डोल०॥ मानहु सुन्दर मेघ सौं ।रंग०। छवीली छटा लपटाइ ॥डोल०॥७॥ सोभा के सागर दोऊ ॥रंग॥ छिन छिन छवि अधिकाइ ॥ डोल० ॥ दामोदर हित रसिक जे ॥ रंग० ॥ जीवत यह जस गाइ ॥ डोल० ॥ ८ ॥ १६ ॥

राग काफी—वर जमुना के तीर दोऊ, डोल सुहावनें बनें झूलैं हो ॥ टेक ॥ हाटक खंभ जटित मणि नग सौं पटुली बनी है सुचारु । डाँडी रंग रंगीली राजति लटकत मुक्ता हार ॥१॥ नव नव भूषन अंबर पहिरैं गहरे रूप अनूप सुख की रासि

रसीले नागर वृन्दावन के भूप　२　इत उत मुदित सखी जन निरखति झूलत आनंद कंद । मानौं कुमुदिनि फूलीं ढिंग ढिंग मध्य उदित विवि चंद ॥ ३ ॥ ढलकत मुकट लटकि बैंनी वर झलकत तिलक सुभाल । वारत देखि अपन पौ छवि पर रीझि मदन की माल ॥ ४ ॥ चमकति रंग भीनीं दसनावलि मंद मृदुल मुसिकाहिं । मानौं फूले कमल रंगीले बिच हीरा दमकाहिं ॥ ५ ॥ सोभित चार्यौ चंचल लोइन कछु उपमा ठहराइ । मानौं रूप सरोवर कै बिच खेलत मीन सुभाइ ॥ ६ ॥ मधुर मधुर सुर गावनि छवि सों तैसीये अलि झंकार । तैसीये कंकन किंकिनि की धुनि वाढ्यौ है रंग अपार ॥ ७ ॥ सुरंग गुलाल उड़ायौ छवि सों गगन रह्यौ घमराइ । मानौं हरि ऊपर मनमथ नैं रच्यौ है वितान बनाइ ॥ ८ ॥ बड़ झोटनि भय भांमिनि छवि सों लागति पीय तन धाइ । मानौं नवल अनूपम घन सों छबीली छटा लपटाइ ॥ ९ ॥ गुन सागर दोऊ रूप उजागर छिन छिन छवि अधिकाइ । जे जन रसिक दामोदर हित ते जीवत यह जस गाइ ॥ १० ॥ २० ॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत　॥ राग धनाश्री ॥

रितु वसंत झूलत दंपति वन रंग फूल्यौ जमुना के तीर । रूप रमकि रमकत रूपनि में जुगल अंग भई छवि की भीर ।१। ललित डोल ललिता पधराये, उझिली उज्वल रस की सीर । पुलकि कट्यात लज्यात खिलत तन लपटन चाहत परसत चीर ॥ २ ॥ राग सुहाग सफल भये भागनि मेटत मन मनमथ की पीर । चूर्यौ चहत मृजाद हटत फिरि गजलौं जकरे सकुच जंजीर　३　वांकौ मुकट इतै पर मोहन गहै सयान सुमुख

गहि धीर। खिसत सिंगार प्रिया कौ जब कोऊ होत खवास रसिक वलवीर ॥ ४ ॥ ललितादिक लीनें पिचकारी बीच भरें केशरि को नीर। चरचत चोवा चंदन वंदन चहुँघाँ पँचरंग उड़त अबीर। ५। फूलीं कुँज विविधि वृन्दावन बोलत छकि छकि कोकिल कीर। सहचरि सुख वारी तिन ऊपर जिनके इहिं रस मगन सरीर २१

राग सारंग—झूलत डोल मोहनी मोहन फूलि फूलि वंशी-वट छहियाँ। डाँडी गहे एक भुज राजत एक भुजा दीनें गर-वहियाँ ॥१॥ रितु वसंत के वसन प.हरि तन रूप छकत चाहत मुख चहियाँ। सहचरि सुख कुंजनि ललितादिक निरखि हरषि राखे हिय महियाँ ॥ २ ॥ २२ ॥

राग ईमनि—झूलत डोल झलकि अंग अंगनि राधा मोहन श्री वंशीवट। रूप वसंत खिलै वर वैसनि ज्यौं वसंत फूल्यौ जमुना तट ॥ तकत सकत लाजनि भीजत तन पुलकत परसत नील पीत पट। सुरझ्यौ चहत हियनि अरुझत ज्यौं अरुझत हार अरुझि कुंडल लट ॥ झोटा देति ललित ललितादिक गौर स्याम जिनि रंग है जुगल घट। सहचरि सुख झलकत मुकरनि में पिय नागरि ह्वै तिय नागर नट ॥ २३ ॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

आज सोहत रमकनि डोल की। कुँवरि कुँवर मिलि झूलत फूलत बाढ़ी प्रभा कलोल की ॥१॥ रुरति अलक तिनमें ह्वै झांई झलकति ललित कपोल की। छाई अरुणाई आनन पर कोमल कलित तम्बोल की ॥ २ ॥ हलत नासिका को मुक्ताहल अरु फहरानि निचोल की। विलुलित विमल लागि उर उर सों माला रतन अमोल की ३। वरषावत अति रंग

अनूपम शोभा सुन्दर बोल की　प्रेम सहित चित वसौ केलि कल खेलनि नैंन सलोल की ॥ ४ ॥ २४ ॥

राग सारंग—माई री झूलत डोल लाड़िली लाल। झलकत अंग अनंग विशाल ॥ टेक ॥ चितवत दृग कोरनि नव वाल। झिल मिलात मुसिकान रसाल ॥ ढ़रकत अलक झलक वर भाल। विलुलित उर पर मंजुल माल ॥ १ ॥ आनन पाननि भरे अनूप। चंचल नैंन ऐंन रस रूप ॥ मानों फूले उभै सरोज। तिनमें खेलत खंजन मनोज ॥ २ ॥ झूमक सारी पहिरें भाम। खुभी कंचुकी उर अति श्याम ॥ हेम वरण अतरौटा चारु। निरखि हरषि फूलत सुकुँवार ॥ ३ ॥ क्वणित किंकिणी कंकण खरें। नूपुर मधुर मधुर धुनि करें ॥ भरें अंक तजि संक उदार। लचकत कटि सोभा के भार ॥ ४ ॥ वेंणी गुही जुही के फूल। प्रथु नितंव पर विमली झूल ॥ चंचल कुंडल मंडित गंड। कलंगी हलत चंद्रिका अखंड ॥ ५ ॥ करत अधर मधु पान सलोल। प्रफुलित तन मन उठत कलोल ॥ प्रेमदासि हित जुत सुख पुंज। सदा वसौ मम नैंन निकुंज ॥ ६ ॥ २५ ॥

राग काफी—झूलत दंपति डोल कलोलनि सौं भरे। रमकन में झमकत रंग रंगनि में ढरे ॥ १ ॥ नील पीत पटु की फहरान सुहावनी। आवत सुभग समीर वीर सरसावनी ॥ २ ॥ घूँघर बारी अलक झलकि मुख पै ढ़रैं। रतन जटित वेंदिनि के तर मोती डुरैं ॥ ३ ॥ तरे तरौना कुंडल दुति कुँडल अरैं। काननि लागे नैंन क्यौं न चित कों हरैं ॥ ४ ॥ वेसरि की सर कौंन करैं मुक्ता हलैं। वरषावत हँसि फूल अचल देखत चलैं ॥५॥ विलुलित उर पर तार हार अति सोहने पैंजनि गैंजनि

करत पाइ मन मोहने ॥ ६ ॥ पाननि भरि आनन ताननि कों लेत री । बिन कमान मनु बान मैंन के देत री ॥ ७ ॥ बजवत बीन नवीन प्रवीन अली खरी । कोकिल ज्यौं कल कंठ आप रस मंजरी ॥ ८ ॥ उड़वत लाल गुलाल सखी दुहुँ ओर सों । छावत दामिनी सी अनुराग झकोर सों ॥ ९ ॥ देखि दुहुनि के रूप अनूपम री अवै । गह्यौ मोन खग मृगनि भये मुनि से सवै ॥ १० ॥ भीज्यौ सकल समाज आज सुख साजि कें । प्रेम सहित चित बसो लसो छवि छाजि कें ॥ ११ ॥ २६ ॥

(चाचा) श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत ॥ राग धनाश्री—दूजी चाल ॥

देखौ झूलत राधा लाल सखीं झुलावहीं । रविजा तीर कलप तरु छहियाँ आछी नीकी सोभा पावहीं ॥ १ ॥ इत उत सजि ठाढ़ीं भई टोलनि कर हिंडोर चलावहीं । विविधि भांति रचना रची जामें विविधि रचना जु लज्यावहीं ॥ २ ॥ कोऊ वारति पुहुपाँजुलि कोऊ त्रन तोरि करज चटकावहीं । कोऊ बाजंत्र बजावति अति रुचि सुगतिनु लै उपजावहीं ॥३॥ कोऊ साधैं सुरताल तान कौं मन सों मन जु मिलावहीं । हियें प्रेम की उमगनि सजनीं मधुर मधुर सुर गावहीं ॥ ४ ॥ कोऊ दैहिं डार बचाइ जु झोटा हँसि हँसि कैं समझावहीं । लाल अधिक उरझत कहा डांडी गाढी गहौ बतावहीं ॥ ५ ॥ तन परसन होरी में सीखे झूलत हमहि न भावहीं । प्रीतम समझि सखी के वचननि पुनि पुनि ग्रींव दुरावहीं ॥६॥ फरहरात अंवर तन भूषन दामिनि दमकि लज्यावहीं । इत उत आवत जात झूल मनु छवि धुरवा दरसावहीं ॥ ७ ॥ परसत जाइ कलप तरु डारिनु फल फूलनि लै झुमहीं वृन्दावनहित रूप अतुल आनंद विपुल वरषावहीं २७॥

राग बिहागरौ　राधा लाल डोल झूलै ऐसी छबि पावै मानौं घन दामिनी अवनि झुके आवैं ॥ १ ॥ कवरी कुसुम किरैं सोभा सरसावैं । मानौं छवि धुरवा बूँदनि वरसावैं ॥ २ ॥ कंकन किंकिनि धुनि मिलि दोऊ गावैं । गरज सिखंडी अली मोद उपजावैं ॥ ३ ॥ चात्रक से दृग सखी उतही लगावैं । रूप रस पान करैं हिय कौं सिरावैं ॥ ४ ॥ रमकत मानौं प्रेरे पवन के धावैं । धनि होरी डोल ऐसे कौतिक दिखावैं ॥५॥ झिल्ली धुनि मानौं पग नूपुर बजावैं । वृन्दावन हित रूप झर सौ लगावैं ।२८।

राग धनाश्री–डोल रच्यौ नव कुंज री, राधा हरि झूलैं ॥ परिवा परव मनाइ, अति छवि देत री राधा हरि झूलैं॥ बास वसंती तन फबै ॥ राधा० ॥ वरनत मति अरुझाइ, अति छवि देत री ॥ राधा० ॥ टेक ॥ १ ॥ लसि गसि हुलसि हरैं हरैं ॥राधा०॥ सरकि ढरकि लगि अंग ॥ अति० ॥ गावत रस रंगनि भरे ॥ राधा० ॥ उपजत तान तरंग ॥ अति० ॥ २ ॥ ललित बदन मुसिकनि भरी ॥राधा०॥ बोलत मीठे बैंन ॥ अति० ॥ सनमुख साधैं पीय कैं ॥ राधा० ॥ कल कटाच्छि सर नैंन ॥ अति० ॥ ॥३॥ झूलति फूलति चाइ सौं ॥राधा०॥ करि लालन तन चोट ॥ अति० ॥ सहि गहि कर डाँडी रहे ॥राधा०॥ विसरे दृग पल ओट ॥ अति० ॥ ४ ॥ पीवत तन छवि माधुरी ॥ राधा० ॥ करि करि गाढ़ी ओक ॥अति०॥ इत वरषा भरु रूप कौ ॥राधा०॥ दहलत घुमड़नि झोक ॥ अति० ॥५॥ उपजत ना ना भाइ सौं ॥ राधा० ॥ रमकनि झमकनि चोज ॥ अति० ॥ भ्रुव विलास बिथकित भये ॥ राधा० ॥ अगनित ओज मनोज ॥ अति०॥ ॥ ६ विलुलित उर हारा वली राधा० पुनि लचकति कटि

खीन ॥ अति० ॥ सोभा अमित प्रवाह में ।।राधा०।। पैरत पिय दृग मीन ॥ अति० ॥७॥ बढ़ि बढ़ि झोटा देत हँसि ।।राधा०।। गाढ़ मिलन मिस पीय ॥ अति० ॥ तब जिय कछु भय मानि कें ॥ राधा० ॥ भामिनि लागति हीय ॥ अति० ॥ ८ ॥ दरस परस सुख अंग कौ ॥ राधा० ॥ रोंम रोंम रह्यौ पूरि ।।अति०।। मदन स्वाद रस हिय भिदे ॥ राधा० ॥ मिथुन कोक विधि सूर ॥ अति० ॥ ६ ॥ तव हित रूपा सहचरी ॥ राधा० ॥ उदित मनोभव जानि ।।अति०।। निविड़ निकुंज निवसित किये ।राधा०। रसिक कुँवर सुखदानि ॥ अति० ॥ १० ॥ सुख संगम सरिता बढ़ी ॥ राधा० ॥ न्हाति सुमति अलि बृंद ॥ अति० ॥ गहकि गहकि पीवत सबै ।।राधा०।। दृग मग भरि आनंद ॥ अति० ॥ ॥ ११ ॥ रस गहरें लहरें उठें ॥ राधा० ॥ प्रेम हिलोरें लेत ॥ अति० ॥ सुरति हिंडोरें रमक हीं ।।राधा०।। झलकति उझिलनि हेत ।।अति०।।१२।। यों होरी रस विलसि कें ।।राधा०।। दियौ सखिनु चित चैंन ।।अति०।। वृन्दावनहित नित रहौ ।।राधा०।। यह सुख निरखत नैंन ।। अति छबि देत री राधा हरि झूलैं ।।१३।।२६।।

राग गौरी–होरी खेल झूलत है दंपति डोल री । रूप के सवाद भये नैंन सलोल री ॥ १ ॥ झोटनि की बढ़नि में फरकें दुकूल री । झरि झरि परत है कबरी ते फूल री ॥ २ ॥ मुकट लटकि सोभा बाढ़ी अंग अंग री । झूलनि में रचैं लाल होरी ही के रंग री ॥३॥ प्यारी जू की चंद्रिका झुकी है इहि भांति री । फागुन मदन जीत धुज फहराति री ।४। सजनी झुलावें गावैं अस कछु राग री । मनसिज हिये होति मनसिज जाग री ।५। होरी सुख

चैत्र बदी छठि कौ जनम मगल छद राग सूहौ बिलावल

जै जै श्री वनचंद गौर पद रति महा राजत बृंदारन्य गुननि वरनौं कहा ॥ सरनागत जन देत भक्ति अनपाइनी । रस मय उभै किशोर केलि सुख दाइनी । सुख दाइनी रस केलि कांनन रसिक हियो सिरावनी । दुर्लभ वदित श्रुति जाहि सो विनु श्रम दृगनि दरसावनी ॥ सुभ सील मिथुन उदार जस रस प्रेम भीजी मति अहा । जय जय श्री वनचंद गौर पद रति महा ॥१॥ जय जय श्री वनचंद अमित करुना भरे । उग्र भजन परताप विस्त्र परहित ढरे ॥ नंदन रसिक नरेश कृपा विग्रह मनौं । प्रगट कियौ पर हेत कहां लगि जस भनौं ॥ भनौं कहांलगि सुजस निर्मल सकल दिस पूरित भयौ । राधिका पर वस नेह जो प्रभु तिहिं लड़ायौ नित नयौ ॥ दृढ़ काटि बंधन भव उदधि जन अभै रस लीला ररे । जय जय श्री वनचंद अमित करुना भरे ॥ २ ॥ जय जय श्री वनचंद सेव्य हरि वल्लभा । तिहिं पद्धति करी प्रचुर रसिक भूषन सभा॥ गरुवौ भाव विचार सार रस उर धरचौ । गूढ़ रीति आरूढ़ विकट व्रत आचरचौ ॥ आचरचौ व्रत अति विकट जिहिं पथ देव मुनि नर भूलहीं । श्री व्यास सुवन प्रसाद सुलभ बसि लता गृह फूलहीं ॥ जहां नागर नवल विहरत विवस गति लखि छवि प्रभा । जय जय श्री वनचंद सेव्य हरि वल्लभा ॥३॥ जय जय श्री वनचंद जलद अनुराग कौ । वरषत रस वचनामृत जुगल सुहाग कौ ॥ रुकिमिनि तनय मयंक भक्त मंडल दिपे । मुदित चकोर अनन्य विमुख उड़गन छिपे छिपे उड़गन विमुख

हीयें भरी ॥ अलि भाव भीजे तलप गृह रस मिथुन लहि हिय लाग कौ। जय जय श्री वनचंद जलद अनुराग कौ ॥ ४ ॥ जय जय श्री वनचंद सुगति अगतिनु दई। जिनहि न पद रति गौर दया तिन हित भई॥ कर्मठ काइर कूर भक्ति पथ आँनि कैं। ते किये भजन निकेत दुखित जग जान कैं। जानि कैं जग दुखित वैभव दई विपिन दिखाइ कैं। वृन्दावन हितरूप वंदों लये सव अपनाइ कैं॥ श्रीहरिवंश सुवन सुदृष्टि जन वन रहसि निरखत नित नई। जय जय श्री वनचंद सुगति अगतिनु दई ॥ ५ ॥१॥

राग सारंग ताल मूल—बधाई रसिक नृपति दरवार। मंगल साजि चली द्विज वनिता गावति मंगल चार ॥१॥ रानी रुकिमिनि कूखि सिरानी गह गहे धुरत निसान। व्यास सुवन के सुवन जनम दिन देत दान सनमान ॥ २ ॥ महा भाग्य महाराज विप्र कुल आजु परम आनंद। श्री हरिवंश चंद कुल मंडन प्रगटे श्री वनचंद ॥३॥ जुगल किशोर चरन रति दाइक लाइक रसिक समाज। बृन्दावन हित प्रणित जननि के सफल करन मन काज ॥४॥२॥

राग जैतश्री ताल मूल—बजति बधाई रसिक नरेश कें जनमें श्री वनचंद ॥टेक॥ मिट्यौ उर तिमर उदोत होत ही रुकिमिनि कूखि सिरानी। श्री राधा सुदृष्टि करि चितयौ सव मुख सुनियति वानी ॥१॥ करि वर अंग अलंकृत वनिता गलिनु गलिनु में आवैं। परम प्रेम सों हुलसी हीयें रंग वधाये गावैं ॥ २ ॥ भवन भीर सरसत सुख दरसत जननी कूखि मल्हावैं। चंदन वंदन लेपति हँसि हँसि फूलि फूलि उर लावैं ॥ २ ॥ वंदन वार वितान जग मगें सीक साथिये साजें। झगरति वंश सवासि मुद भरी मंगल बाजे बाजैं ॥ ४ ॥ कुम कुम छिरकें अंबर थिरकें रंगनि छींट

उर उत्साहनि प्रेम उमाहनि वारि आभरन दैंही भूर भाग्य परसंशि व्यास सुत भूरि वलैयाँ लैंही ॥६॥ ओटति गोद मोद भरि पुनि पुनि यह फल दाइक राधा । श्री हरिवंश प्रांन जीवन धन जिनि पुजई मन साधा ॥ ७ ॥ परम इष्ट कुल सेव्य नागरी प्रीतम कृपा मनावैं । बृन्दाबन हित रूप प्रेम छकि हरखि हरखि दुलरावैं ॥ ८ ॥ ३ ॥

राग सोरठ ताल आड़—अरी हेली मंगल रसिक नरेश घर कौतिक परम अनूप । सुत प्रगट्यौ वनचंद्र माहिली लखि कुल मंडन रूप ॥ हेली० ॥१॥ श्री हरिवंश सुवन जनम हेली जग्यौ रसिक जन भाग । प्रचुर होहिगौ अवनि अव हेली राधा हरि अनुराग ॥ २ ॥ रुकिमिनि कूखि सुलच्छनी हेली हरखि मल्हावौ आजु । धरौ सवासिनि साथिये हेली प्रभु कियौ वांछित काजु ॥३॥ सुभ तिथि चैत्र वदी जु छठि हेली पुनि सुभ लगन प्रकास । परम इष्ट श्री राधिका हेली सफल करी मन आस ॥ ४ ॥ जननी जनक उदार मन हेली देत दान सनमान । वंश बखानत कुल जगा हेली गहरे धुरत निसान ॥ ५ ॥ वदन ओप गोस्वामि कैं हेली विप्र कहत अस वैंन । यह सुत आनंद वरसनौं हेली सुभ लच्छन लखि नैंन ॥६॥ थापन धर्म अनन्य कौं हेली ज्यौं आरज रस रीति । वृन्दावनहितरूप वलि हेली प्रनित बढ़ावन प्रीति ।७।४॥

राग सोरठ ताल मूल—आजु माई मंगल भूर भयो । श्री हरिवंश सुजस कुल वर्द्धन जनमत मोद नयो ॥ १ ॥ भक्ति धुजा फरकी अव जग में नीरस तिमर गयो । अहा कहा वर वीथिनु

नीकें समझि लयो । जननी जनक महा मन हरखे चौपन दान दयो ॥ ३ ॥ गावति वधू सोहिले रचि रचि हियो प्रेम भिजयो । श्री वनचंद प्रकास होत सुख विरवा अचल वयो ॥ ४ ॥ रुकिमिनि कूखि सभागी जाचक जन दरिद्र रितयो । वृन्दावन हित रूप भजन धन दै रसिकनि रिझयो ॥ ५ ॥ ५ ॥

राग हमीर ताल चर्चरी–जुगल एकांत रस रीति भेदी भजन । रसिक मंडन सभा बास कांनन सुहृद जयति वनचंद अति प्रीति दंपति जजन ॥ १ ॥ केलि कौतिक कुंज पुंज सुख गहर के तहां गहकी सुमति विपुल आनंद सजन । विधि अविधि रही जिहिं रंग भीजन हियें कुशल हित दत्त विभौ पाइ धन ज्यौं गजन ॥२॥ भक्ति भाजन सील सुहृद सुभ आचरन उग्र परताप लखि क्रूर कर्मठ लजन । सरन अनुसरत जन भये जग उद्धरन बृन्दावन हित विदित सुजस आंनक वजन ॥ ३ ॥ ६ ॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत ॥ राग भैरों ॥

तजि अभिमान अरे मूरख अग्यान नर वृन्दावन कनक कन कन माँगि कर सरवा । ओढ़ तन गूदरी गरूरता दै छाँड़ि सठ कनक कलस तजि माटी कौ लै करुवा ॥ रसिकनि की जूठि खाहि सुजस सुनि अघाहि ह्वै रहि निसंक रंक काहू की न परवा । भये हैं कल्यान ते विराजमान सर्वोपरि जिन सेये श्री बनचंद जू के तरवा ॥ ७ ॥

नमो नमो जै श्री बनचंद । बृन्दाविपिन बिलास माधुरी परि पूरन आनंद के कंद ॥ सब भक्तनि कुल कुमुद प्रकासित श्री हरिवंश रसिक वर नंद । सीस बद्ध उर मंडन नागरीदास सीतल सुखद चरन अरविंद ॥ ८ ॥ इति ।

* शृंगार रस के पद *

गोस्वामी श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

अति नागरि बृषभानु किशोरी । सुनि दूतिका चपल मृग नैंनी आकर्षत चितवत चित गोरी ॥ श्रीफल उरज कंचन सी देही, कटि केहरि गुण सिंधु झकोरी । वेंनी भुजंग, चन्द्र सत बदनी, कदलि जंघ जलचर गति चोरी ॥ सुनि हरिवंश आज रजनी मुख वन मिलाइ मेरी निज जोरी । यद्यपि मान समेत भामिनी सुनि कत रहत भली जिय भोरी ॥ १ ॥

राग सारंग—आवति श्री बृषभानु दुलारी । रूप रासि अति चतुर शिरोमनि अंग अंग सुकुमारी ॥ १ ॥ प्रथम उबटि मज्जन करि सज्जित नील बरन तन सारी । गूँथित अलक तिलक कृत सुंदर सैंदुर माँग संवारी ॥ २ ॥ मृगज समान नैंन अंजन जुत रुचिर रेख अनुसारी । जटित लवंग ललित नासा पर, दस-नावलि कृत कारी ॥ ३ ॥ श्रीफल उरज कसूँभी कंचुकी कसि, ऊपर हार छबि न्यारी । कृश कटि उदर गंभीर नाभि पुट जघन नितम्बनि भारी ॥ ४ ॥ मनो मृनाल भूषन भूषित भुज स्याम अंस पर डारी । जै श्री हित हरिवंश जुगल करनी गज बिहरत बन पिय प्यारी ॥ ५ ॥ २ ॥

राग सारंग—बनी बृषभानु नंदिनी आजु । भूषन वसन विविध पहिरे तन पिय मोहन हित साजु ॥ हाव भाव लावन्य भृकुटि लट हरत जुवति जन पाजु । ताल भेद अवघर सुर सूचत नूपुर किंकिनि बाजु ॥ नव निकुंज अभिराम श्याम संग नीको बन्यौ समाजु । जय श्री हित हरिवंश विलास रास युत जोरी अविचल राजु ॥ ३ ॥

राग देव गंधार—ब्रज नव तरुणि कदम्ब मुकुट मणि श्यामा आजु बनी। नख शिख लों अंग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥१॥ यों राजत कबरी गूँथित कच कनक कंज वदनी। चिकुर चंद्रिकनि बीच अर्ध विधु मानो ग्रसित फनी ॥ २ ॥ सौभग रस शिर श्रवत पनारी पिय सीमन्त ठनी। भृकुटि काम कोदंड नैंन सर कज्जल रेख अनी ॥३॥ तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी। दसन कुंद सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ ॥ ४ ॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि, सांवल बिंदु कनी। प्रीतम प्रांण रतन संपुट कुच कंचुकि कसिब तनी ॥ ५ ॥ भुज मृनाल वल हरत बलय जुत परस सरस श्रवनी। श्याम शीश तरु मनौ मिडवारी रची रुचिर रवनी ॥ ६ ॥ नाभि गंभीर मीन मोहन मन खेलन कों हृदनी। कृष कटि पृथु नितम्ब किंकिणि व्रत कदलि खंभ जघनी ॥ ७ ॥ पद अम्बुज जावक जुत भूषन प्रीतम उर अवनी। नव नव भाय विलोभि भाँम इभ विहरत वर करनी ॥८॥ जय श्री हित हरिवंश प्रशंशित श्यामा कीरति विशद धनी। गावत श्रवनन सुनत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥६॥४॥

राग सारंग—चलि सुन्दरि बोली वृन्दावन। कामिनि कंठ लागि किनि राजहि तू दामिनि मोहन नूतन घन॥ कंचुकि सुरंग विविध रंग सारी नख जुग ऊन बने तेरे तन। ये सब उचित नवल मोहन कों श्रीफल कुच जोवन आगम धन ॥ अतिशय प्रीति हुती अंतर गति जय श्री हित हरिवंश चली मुकुलित मन। निबिड़ निकुंज मिले रस सागर जीते सत रति राज सुरत रन ॥ ५ ॥

राग धनाश्री—नैंननि पर वारौं कोटिक खंजन। चंचल चपल अरुण अनियारे अग्र भाग बन्यौ अंजन रुचिर मनोहर वक्र

विलोकन सुरत समर दल गंजन जय श्रीहित हरिवंश कहत न बनैं छबि सुख समुद्र मन रंजन ॥ ६ ॥

राग केदारो—नागरता की राशि किशोरी । नव नागर कुल मौलि साँवरो बरबस कियौ चितै मुख मोरी ॥ १ ॥ रूप रुचिर अंग अंग माधुरी बिनु भूषण भूषित ब्रज गोरी । छिन छिन कुशल सुधंग अंग में कोक रभसि रस सिंधु झकोरी ॥ २ ॥ चंचल रसिक मधुप मोहन मन राखे कनक कमल कुच कोरी । प्रीतम नैंन जुगल खंजन खग बाँधे विविध निबंधन डोरी ॥ ३ ॥ अवनी उदर नाभि सरसी में मनों कछुक मादिक मधु घोरी । जय श्री हित हरिवंश पिवत सुन्दर वर सींव सुदृढ़ निगमनि की तोरी ॥४॥७॥

राग आसावरी—सुन मेरो बचन छबीली श्री राधा । तैं पायौ रस सिंधु अगाधा ॥१॥ तू बृषभानु गोप की बेटी । मोहन लाल रसिक हँसि भेटी ॥ २ ॥ जाहि विरंचि उमापति नाये । तापै तैं बन फूल बिनाये ॥३॥ जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यौ । ताको तें अधर सुधा रस चाख्यौ ॥ ४ ॥ तेरौ रूप कहत नहीं आवै । जय श्री हित हरिवंश कछुक जस गावै ॥ ५ ॥ ८ ॥

राग गौरी—कहा कहौं इन नैंननि की बात । ये अलि प्रिया बदन अम्बुज रस अटके अनत न जात ॥ जब जब रुकत पलक सम्पुट लट अति आतुर अकुलात । लंपट लव निमेष अन्तर ते अलप कलप सत सात ॥ श्रुति पर कंज दृगंजन कुच विच मृग मद व्है न समात । जय श्री हित हरिवंश नाभि सर जलचर जांचत सांवल गात ॥ ६ ॥

मैं जु मोहन सुन्यौं वेणु गोपाल कौ । व्योम मुनियान सुर-नारि विथकित भई, कहत नहिं बनत कछु भेद यति ताल कौ

श्रवण कुंडल छुरित रुरत कुँतल ललित, रुचिर कस्तूरि चंदन तिलक भाल कौ। चंद गति मंद भई निरखि छबि काम गहि, देखि हरिवंश हित वेष नंदलाल कौ ॥ १० ॥

राग गौरी—तेरोई ध्यान राधिका प्यारी गोवर्द्धन धर लालहिं। कनक लता सी क्यों न विराजत अरुझी श्याम तमालहिं ॥ गौरी गान सु तान ताल गहि रिझवत क्यों न गुपालहिं। यह जोवन कंचन तन ग्वालिनि सफल होत यह कालहि। मेरे कहै विलंब न करि सखि, भूर भाग अति भालहिं। जय श्री हित हरिवंश उचित हौं चाहत श्याम कंठ की मालहिं ॥ ११ ॥

राग टोड़ी—अधर अरुण तेरे कैसे के दुराऊँ। रवि शशि शंक भजन किये अपवस अद्भुत रंगनि कुसुम बनाऊँ ॥ शुभ कौशेय कसिव कौस्तुभ मणि पंकज सुतनु लै अंगनु लुपाऊँ। हरषित इंदु तजत जैसे जलधर सो भ्रम ढूँढि कहाँ हौं पाऊँ ॥ अम्बु न दम्भ कछू नहीं व्यापत हिम कर तपै ताहि कैसे कै बुझाऊँ। जय श्री हित हरिवंश रसिक नव रंग पिय भृकुटी भौंह तेरे खंजन लराऊँ ॥ १२ ॥

गोस्वामी श्री दामोदर वर जी महाराज कृत

नागरी नव लाल संग रंग भरी राजें। श्याम अंस बाहु दियें, कुँवरि पुलकि पुलकि हिये, मंद मंद हँसन प्रिये, कोटि मदन लाजें ॥ तरु तमाल श्याम लाल लपटी अंग कनक बेलि निरखि रुखी छबि सुकेलि नूपुर कल बाजें। जय श्री दामोदर हित सुदेस सोभित रस सुख सुवेस नवनिकुँज भँवर गुँज कोकिल कल गाजें। १३

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज कृत ॥ राग दण्डक ॥

जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके, तरुनि मनि नित्य

नव तन किशोरी कृष्ण तनु लीन घन रूप की चातकी, कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी, कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी । कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी, कृष्ण गुन गान रस सिन्धु बोरी ॥ एक अद्भुत अलौकिक रीति में लखी, मनसि स्यामल रंग अंग गोरी । और आश्चर्य कहूँ मैं न देख्यौ सुन्यौ, चतुर चौसठ कला तदपि भोरी ॥ विमुख परवित ते चित्त जाको सदा, करत निज नाह की चित्त चोरी । प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनें, अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥ १४ ॥

राग सोरठ—राधे, रूप अद्भुत रीति । सहज जे प्रतिकूल तो तन, रहे छांड़ि अनीति ॥ कचनि रचना राहु ढिंग ही, मुदित बदन मयंक । तिलक बान कमान दृग मृग, रहैं निपट निसंक ॥ रतन जतननि जटित जुग, ताटंक रवि रहे छाज । तदपि दूनी जोति मोतिन, मंडली उडुराज ॥ अधर सुधर सुपक्क विम्बा, सुभग दसन अनार । धीर धरि कै कीर नासा, करत नहिं संचार ॥ नील पट तम जोन्ह तन छबि, संग रंग रसाल । कोक जुगल उरोज परसत, नाहिं भुजा मृनाल ॥ निकट कटि केहरी पै, गज गति न मेटी जात । प्रगट गज गति जहाँ जंघा, कदलि रुचि हुलसाति । गदाधर बलि जाइ बूझत, लगत है मन त्रास । इति संपति सहित क्यों पिय, देत नाहिन वास ।१५।

कुँवरि राधिका तुव जस सकल सौभाग्य की सीमा वदन पर कोटि शत चंद वारों । खंजन कुरंग मीन शत कोटि नयनन ऊपर वारने करत जिय में विचारों १ कदली शत कोटि

कोटि शत चाल पर कुंभ शत कोटि इन कुचन पर वार डारों ॥२॥ कीर शत कोटि नासा ऊपर कुंद शत कोटि दसनन ऊपर कहीन पारों । पक्क कंदूर बंधूक शत कोटि अधरन ऊपर वार रुचि गर्व टारों ॥ ३ ॥ नाग शत कोटि बैनी ऊपर कपोत शत कोटि ग्रीवा पर दूर सारों । कमल शत कोटि कर युगल पर वारने नाहिन कोऊ लोक उपमा जु धारों ॥ ४ ॥ दास कुमन स्वामिनी सु नख शिख अंग अद्‌भुत सुठान कहां लगि सँभारों । लाल गिरिवर धरन कहत मोहि तोहि लों सुख जों लों वह रूप छिनछिन निहारों ॥१६॥

श्री व्यास जी महाराज कृत—आज बनी वृषभानु दुलारी । नव निकुंज विहरत प्रीतम संग, मन्द पवन चाँदनी उजियारी ॥ भूषन भूषित अंग सुपेसल, नील वसन तन झूमक सारी । चिकुर चन्द्रकनि चंपकली गुहि सिर सीमंत सुकंत संवारी ॥ मनि ताटंक विलोल कपोलनि, नासा मनि लटकनि लटकारी । झलकति अलक तिलक भौंहनि छबि नैंननि अंजन रेखि अन्यारी । स्याम सदन सित चौका चमकत, अधर विम्ब प्रतिविंब विहारी । कुच गिरि पर घनश्याम कंचुकी, कृस कटि जघनि नितम्बनि भारी ॥ तरुवनि कुम कुम नखनि महावर, पद मृग मद चूरा चौधारी । नख सिख सुन्दरता की सींवा व्यास स्वामिनी जय पिय प्यारी ॥ १७ ॥

राग कैदारौ—जयति नव नागरी कृष्ण सुख सागरी सकल गुन आगरी दिनन भोरी । जयति हरि भामिनी कृष्ण घन दामिनी मत्त गज गामिनी नव किशोरी ॥ जयति प्रिय केलि हित कनक नव वेलि सम, कृष्ण कल कलप निसि मिलि विलासी । भान कुल कुमुद वन कुमुदिनी, कृष्ण सुख हिम कर

निरख प्रकासी। जयति गोपाल मन मधुप नव मालती, जयति गोविन्द मुख कमल भृंगी॥ जयति नंद नंदन उर परम आनंद निधि, लाल गिरिधरन प्रिय प्रेम रंगी॥ जयति सौभाग्य मनि कृष्ण अनुराग मनि, सकल तिय मुकट मनि सुजस लीजै। दीजिये दान यह 'व्यास' निज दास को, कृष्ण सों बहुरि नहि मान कीजै १८

राग गौड मलार—बनै न कहत राधा कौ रूप। विहसि विलोकनि विमोह्यौ मोहन, वृन्दावन कौ भूप॥ अंगनि कोटि अनंग सोमकुल, एक अंग कौ कूप। नख सिख भोग भोगवतु नागर, अधर सुधा रस तूप॥ लेत उसास बासु मुख महकत, मनहुँ अगर कौ धूप। मानहुं चम्पे कौ वन फूल्यौ, गोरौ गात अनूप॥ वाम पयोधर राजत मानहुँ, सुरत यज्ञ कौ जूप। 'व्यास स्वामिनी' सों विहरत ही, मोहन लगत सरूप॥ १६॥

लटकति फिरति जोवन मतमाती, चम्पक विथिनि चम्पक वरनी। रतनारे अनियारे लोचन, दुख मोचन लखि लाजत हरिनी॥ अंस भुजा धरि लटकति लालहि, निरख थके मद गज गति करिनी। वृन्दाविपिन विनोदहि देखत बहु मानिक मोही वृन्दारक घरनी॥ रास विलास करत जहाँ मोहन, वलि वलि धनि धनि है वन धरनी। श्री वृषभान नन्दिनी के सम 'व्यास' नहीं त्रिभुवन महँ तरुनी॥ २०॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत—सुनि धुनि मुरली वन बाजै हरि रास रच्यौ। कुँज कुँज द्रुम वेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिनु खच्यौ॥ १॥ निर्त्तत जुगल किशोर जुवति जन मन मिलि राग केदारो मच्यौ। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुँज विहारी नीकैं आजु प्यारो लाल नच्यौ　२　२१

राग कल्याण—जहाँ जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे तहाँ तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाँही। वहुत मूरति मेरी चौंर ढुरावति कोऊ वीरी खवावति एक व आरसी लै जाँहीं॥ औरौं सेवा वहुत भांतिन की जैसी ये कहैं कोऊ तैसीये करों ज्यों रुचि जानी जाँही। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कौ भलौ मनावत दाइ उपाहीं॥२२॥

कुंज विहारी नाचत नीकें लाड़िली नचावति नीकें। औघर ताल धरे श्री स्यामा ता ता थेई मिलवति गावति संग पीकें॥ तांडव लास और अंग को गनें जे जे रुचि उपजति जीकें। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कौ मेरु सरस वन्यौं और रस गुनी परे फीकें॥ २३॥

प्यारी तेरी महिमा वरनी न जाय मोपै, जिहि आलस काम वस कीन। ताकौ दंड हमें लागतु है री, भये आधीन॥ साढ़े ग्यारह ज्यौं औटि दूजे, नवसत साजि सहज ही तामें, जवादि कपूर कस्तूरी कुंकुम के रंग भीन। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी रस वस करि लीन॥ २४॥

यह कौन वात जु अवही और अवही और अवही और। देव नारि नाग नारि और नारि ते न हौंहि और की और॥ पाछैं न सुनी ऐसी अवहूँ आगे हूँ न ह्वै है यह गति रूप की अद्भुत और की और। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुँज विहारी या रस ही वस भए यह भई और की और॥ २५॥

वनी री तेरे चारि चारि चूरी करनि। कंठ सिरी दुलरी हीरनि की नासा मुक्ता ढरनि॥ तैसोई नैंननि कजरा फवि रह्यौ निरखि काम जिय डरनि। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी रीझि रीझि पाइन परनि॥ २६॥

प्यारी जू हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा रूसैं क्यों बनैं। इहां कोऊ हितू मेरौ न तेरौ जो यह पीर जनैं ॥ हौं तेरौ वसीठ तू मेरौ और न वीच सनैं। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी, कहत प्रीति पनैं ॥ २७ ॥

श्री बीठल विपुल जी महाराज कृत—नव वन नव निकुँज नव वाला। नव रंग रसिक रसीलो मोहन, विलसत कुंज विहारी लाला ॥ नव मराल जित अवनि धरति पग, कूजत नूपुर किंकिनि जाला। श्री बीठल विपुल विहारी के उर यों राजत, जैसें चंपे की माला ॥ २८ ॥

नव निकुंज नव भूमि रंग मगी। नवल विहारी लाल लाड़िले नवल शरद की जोन्ह जग मगी ॥ नवसत साज सकल अंग सुन्दर, नवल बदन पर अलक सग बगी। श्री बीठल विपुल विहारी के अंग लाड़त लाड़िली सहज उर लगी ॥२६॥

प्यारी पियहि सिखावति वीना। ताल बंधान कल्याण मनोहर इत मन देहु प्रवीना ॥ लेत सम्हारि सुघर वर, नागरि कहति फबीना। श्री विठ्ठल विपुल विनोद विहारी कौ जानत भेद कवीना ॥ ३० ॥

श्री विहारनि दास जी महाराज कृत ॥ रास के पद ॥

रास में रसिक निर्त्तत रंग भारे। गौर सांवल अनूप निपुन गुन गन स्वरूप निरखि शत यूथ कल काम वलिहारे ॥ १ ॥ तरुन तनया कूल शरद निशि अनुकूल विविध मुकलित फूल भ्रमर गुंजारे। रिषभ खरज जात पंचम सुर सस मिलि लेत करताल उघटत नवलं लारे ॥२॥ उलट नागर लेत प्रिया तन चित देत ज्योंही ज्योंही कहत त्योंही त्योंही चरन धारे। लाग

कट्टर दाट भुव विलासनि सारि लेत गति सुधंग वर अंगन सभारे ॥ ३ ॥ चतुर सहचरि नारि सुनि श्रवण सुर धारि हरषत तन मुदित प्रांन धन वारें। चित चकित चंद गति मंद उड़गन सहित सरस विवि वदन भूतल निहारें ॥४॥ करन सों कर जोर सब जुवतिन चित्त चोर श्याम नागर गौर रमित न्यारे न्यारे। कुँज चल रहसि रस वर्षहिं आनंद हँसि श्री विहारिन दासि उभै प्रांन पति प्यारे ॥ ३१ ॥

ललित गति नूपुर चलत चरन बाजैं। रही जकि जुवति निर्त्तत सु पग धरत परसि संगीत वारति सत समाजैं ॥ अंग अंग अभिरामिनी बिन भाइ भामिनी सहज इत उत चितै समर सर साजैं। श्री विहारिन दास स्वामिनी रीझि रस वस किये रवनी रमि रसिक संग कुंज बसि भ्राजैं ॥ ३२ ॥

जोरी अद्‌भुत आज बनी। वारौं कोटि काम नख छवि पर उज्जल नील मनी॥ उपमा देति सकुचि निर उपमित घन दामिनि लजनी। करत हास परिहास प्रेम युत सरस विलास सनीं॥ कहा री कहूँ लावन्य रूप गुन सोभा सहज घनी। श्री विहारनि दासि दुलरावत श्री हरिदास कृपा वरनी॥ ३३ ॥

विलावल—श्री वृन्दावन कौ री चौज मनोज वढ़त रहैं॥ कुँजन कुँजन केलि नवेलि नवल कहैं॥ कहैं नवल नवेलि केलि सुनि सखी सुख पावहीं॥ मंद मंद मधुर मिले सुर सरस गीतहिं गावहीं ॥१॥ प्रथम प्रिया आराधि साध सब पाइये॥ प्रीतम अति अवलम्ब सुरसिक रिझाइये॥ रिझाय अति अवलम्ब प्रीतम फूल तन मन में वढै॥ नेंम गहि निर्वाहि यह रस प्रेम प्यारी को पढै ॥ २ ॥ रहसि बहसि वदी होड़ परस्पर मन हरें। रस ही रस उपजाइ

उमंग अंग अंग ढरैं ढरैं रंग उमंग रँगीले जिहिं अंग परनि परै ॥ निपुन नागर नवल दोऊ हरषि हँसि अंको भरैं ॥ ३ ॥ वहुरि कुंवरि करी रोड़ कोड़ के चाड़िले ॥ हारी होड़ न देत लेत लट लाड़िले ॥ लट लेत परस न देत अपनों अंग अति नव नागरी ॥ कोक कुशल किशोर वरवस किये कुँवरि अचागरी ॥ ४ ॥ अति आसक्त दुहूँ दिस रिसहिं नसावहीं ॥ अति आनन्द सुधाधर पीवत पिवावहीं ॥ पिवाय अधर सुधा महा मधु मत्त मिलि कौतिक कियौ ॥ किये को सुख अल्प सुनि सखि कह्यौ भरि उमग्यौ हियौ ॥ ५ ॥ दम्पति सम्पति सहित सवै सुख पूजहीं ॥ नख सिख कौतिक रासि विलसि कल कूजही ॥ कूजि कल कंठी कृशोदरि श्याम श्रवन सुहावनी ॥ वारि पिय सुकुमार पर मन देत रीझि रिझावनी ॥६॥ रीझि रहे शिरमौर और उबीठी सवै ॥ तरुनि तरंग अनंग अंग लपटी जवै ॥ लपटि श्याम तमाल वाला बेलि कोमल लौलई ॥ हाँस कुसुम उदित उरोजनि नेह नाजुक नित नई ॥ ७ ॥ निजु रस रीति प्रतीति विपिन बसि तो लहै ॥ रसिक अनन्य नृपति को संग समझि ग है ॥ गह्यौ संग अनन्य नृपति को रंग लाग्यौ जब हिये ॥ भये साधन सिद्ध तिनके तेहि छिन अनहीं किये ॥ ८ ॥ नित्य विहार अधार श्री हरिदासी दियौ ॥ विपिन विनोदनि देखि सु जन्म सुफल कियौ ॥ कियौ जन्म सुफल सो अपनों और प्रांनी जे सुनें ॥ संग मिलि श्रद्धा वढें सुख दुर्लभ वृज जुवती जनें ॥९॥ श्यामा कौ आधार राज रस तो कह्यौ ॥ सव रस को रस सार विहार विशद गह्यौ ॥ गह्यो विशद विहार अपनों जानि निजु कीनी मया ॥ जय श्री वर विहारनि दास सुख निधि दुलहिनी दिन दया ३४

राग आसावरी निकुंज विराजिये जू नव जोवन जुग राज विहारी विहरत नव रति साजिये जू ॥टेक॥ मदन सदन मैंदान विपिन रन रुपे है रसिक मन धीर ॥ वे उनके वे उनके छल वल तोलत गुननि गंभीर ॥ १ ॥ उवटि वदन उमहे मन रंजन संजन सहज सुभाय ॥ अंजन अनी नैंन सर सूधे भृकुटिन चाप चढ़ाय ॥२॥ विवि उरोज गज कुंभन पर अंचल चल ढाल ढुलाय ॥ चंवर चिकुर चमकत मनसिज की फौजन सिलह सजाय ॥ ३ ॥ कंचुकि कवच कसत कटि गाढें पीयरे वसन वनाय ॥ वीरी वसीठ चुनौती दै सखि कीजिये युद्ध अघाय ॥४॥ घोष रोषहनि वचन निसानें चढ़ि तुरंग चित चाय ॥ छोटी छुरी कटाक्षनि खूँदत उपजत अगनित भाय ॥५॥ बोलत भृंग वखानत विरदनि सुनत सरस सहनाय ॥ उमड़ि परत समुहाय सुभट नट नख सिख छवि रहि छाय ॥ ६ ॥ खंड खंड भये गंड रदन छद दै भुज दंड सहाय ॥ लूटत महा माधुरी घूँटत घूमत अंग अंग घाइ ॥ ७ ॥ पीक कपोलनि पर श्रोनित सद सोहत सुरत सुमार ॥ जीति रहै संग्राम सूर दोऊ सम वल वैस उदार ॥ ८ ॥ तजत न खेत हेत हठि गाढ़ें अप अपनें चित छोह ॥ खेम कुशल सल फवी है रौतई पाये निपट निलोह ॥ ९ ॥ जै जै श्री विपुल विहारनि दासि खवासी करति रही अंग संग ॥ रसिक अनन्य सिरोमनि श्री हरिदासी जू के प्रेम अभंग ॥ १० ॥ गावत गीत मीत मिलि बैठे सब रिस रोस नसाय । सुरति समें के अन्त उदित भये मुदित भये दुलराय ॥ ११ ॥ कहत सुनत सेवत जे यह सुख ते धनि कौतिक हार ॥ श्री वृन्दावन दिन बजत बधाई वलि वलि विशद विहार १२ ३५ ।

राग गौरी चलौ जु कौतुक देखन जाहिं सूचति सखी सुख प्रेम परस्पर नव जुवतिनि मिलि माहिं ॥ १ ॥ गावति प्रेम भरी मन भावति फूली अंगन माहिं । नव वन नव निकुंज नव पल्लव नव दल सीतल छाहिं ॥२॥ विविधि रंग चित्रित वीथिनि चलि विमल जमुन जल न्हाहिं । कोमल कूल मूल वंसीवट निकट अटक कछु नाहिं ॥३॥ सुन्दर पुलिन नलिन ना ना रंग अलि अवली अरुझाहिं । उड़त पराग राग रंजित रस मत्त मुदित गुंजाहिं ॥ ४ ॥ त्रिविधि पवन मृदु गवन परम रुचि परसत श्रम नसि जाहिं । अति रति रुचि राजत सम्पति सुख दम्पति हिये हिताहिं ॥५॥ तहाँ विहरत द्वै मीत मनोहर वन वसि अनत न जाहिं । मृदु कुन्दन मनि मय अवनी पर रमनी रवन रमाहिं ॥ ६ ॥ आजु समाज सहज सुख वरषत हरषत मिलि मन माहिं । कोमल काम प्रेम मधुरे रस रहसि वहसि किल काहिं ॥७॥ मानों मल्ल जुगल जीतन हित नित छल बलहि तुलाहिं । राती गाती छाती कसि कटि पीत वसन फहराहिं ॥८॥ अंगराग मर्दत भुज दंडनि मुख मंडित मुसिक्याहिं । विनु वैननि सैननि सुख नैननि चितै चितै इतराहिं ॥ ९ ॥ हाव भाव भृकुटिनि मटकत नट अटकि लटकि लपटाहिं । अपनी अपनी गों गहि घातनि वातनि विहसि रिसाहिं ॥ १० ॥ कवहुँ कवहुँ जुरि जुरि अंग अंग मुरि परसत हूँ न पत्याहिं । अति लावन्य निपुन लाघवता पुनि सनेह नियराहिं ॥ ११ ॥ सकल कला कोविद विद्या निधि काहू धीरज नाहिं । हाथा पाई करत नवल वल अति व्याकुल अकुलाहिं ॥ १२ ॥ छाड़त गहत गहावत भावत अति रस मिस मिलि जाहिं । गूढ़ भाइ गाढ़े आलिंगन चुंवन सखी सिहाहिं १३ अति सुगंध

सम रंध्र भये मिलि अलि नलिनी वलि जाहिं । सहज सुरति रस मत्त परस्पर अंक निशंक समाहिं ॥ १४ ॥ सुखद खुमारी कुंज विहारी पुनि ऐंड़ाहिं जम्हाहिं । ए पुजवत वे निजवत इहि रस अचै अचै न अघाहिं ॥१५॥ श्री विहारिनि दासि लड़ावति त्यों त्यों अलक लड़े लड़काहिं । उमा रमा को सची सरस्वती व्रज जवती ललचाहिं ॥१६॥ तिनकौ दरस देव दुर्ल्लभ जे आराधा राधाहिं। भुव वसि वृंदावन नाहिं सेवततें प्रांनी पछिताहिं॥१७॥२६॥

सुहेलरा ॥ राग गौरी—मोहन मोहनी सुहेलरा गाऊं । लाड़िली लाल गहेलरा लड़ाऊं ॥ १ ॥ श्री वृन्दावन घन सहज सोभा मन लोभा उपजावै। जिनकों कृपा करें श्री स्यामा तिनहिं सुन्यौं जस भावै ॥२॥ विपिन विलासनि प्रेम प्रकासनि जो निज प्रेमहिं पाऊं । ज्योंहीं ज्योंही कुंज विहार करो मिलि त्योंही त्योंही तुमहिं लड़ाऊं ॥३॥ सुनहु सहेली प्रेम गहेली कौतिक एक दिखाऊं । अंचल जोरि चितै तृन तोरों तन मन मोद बढ़ाऊं ॥ ४ ॥ रायवेल सतवर्ग सेवती विच विच चम्पे की कलियाँ। रचि रचि चौसर हार गुँदे गुहि पहिरावन चलि अलियाँ ॥ ५ ॥ कुसुमित कुंज गुँज अलि माला चन्दन चर्चित गलियाँ । सुखद समीर वहत सौरभ जल कमल विराजत थलियाँ ॥६॥ सारस हंस चकोर मोर पिक चात्रक भाषा भलियाँ। गावत रस जस पिय प्यारी कौ सखि सुनि पग प्रेम न टलियाँ ॥७॥ कबहुँक वाल सलज्ज सपिय तन कवहुँ हँसत मुख मोरी । कवहुँक निपुन सुरति सुख सागर नागर नवल किशोरी ॥ ८ ॥ छिन छिन प्रति दम्पति नव नव रति अंग अंग अभिरामा । प्रथम समागम श्याम दिनहिं दिन दूलह दुलहिनि स्यामा ॥ ६ ॥

नौतन तरल तमाल लाल मिलि लता ललित फल फलियाँ।
देत असीस विहारनि दासी करहु नवल नित रलियाँ ।११.३७।

असीस कौ पद—चिरजीवौ लाल रसाल प्यारी जू तेरौ लाड़िली को लाल। चितवत चितवित ही चुरावत मधुरे बैन श्रवन सिरावत नैंनन ही पुनि देख्यौ भावत खिलौना सु तेरे मन को ख्याल ॥ तेरे हित नित दरस परस हुलसि हियौ सरसत तू तन मन प्रांन प्यारी तोसों प्रेम परनि ढ़ाल। श्री विहारी विहारनि दास मिले सुख मुख देखत होत निहाल ॥ ३६ ॥

राग गौरी——श्री कुँज विहारी हरषि बुलाई ह्यां ज्यों होड़ी हेली री। काज करो निजु आज हमारौ तू मेरी सुखद सहेली री ॥ १ ॥ खेलत है इक ठौर भोर में पूछी है प्रेम पहेली री। घाल मिलावौ माँगत मत्त भई झुकि झुकि नेह नवेली री ॥२॥ हारी होड़ न देति लाड़िली छांड़ि चली अब हेली री। बैठी (है) मान गंभीर कुँज नव जोवन गर्व गहेली री ॥३॥ मेरे मन रुचि राचि रही मोसों काल्हि भली विधि खेली री। मेरी उनकी जानत

---

* राग बिहागरौ-दूलह दुलहिनि अधिक बनी। पूजन चली कल्प तरु सुन्दर औरहिं ठाँन ठनी ॥ कियौ है सखिन गठजोर सबन मिलि आगे धन पाछे जु धनी। गावत चली गीत मंगल के सब ही सुघर सजनी ॥ रुनक झुनक पग धरत धरनि पर छबि पावत अवनी। छिरकि सुगन्ध मूल तरु पूज्यौ फूलन माल घनी ॥ अंचल जोरि यहै वर मांगों रहों यह प्रेम सनी। श्री रसिक विहारनि हो न मान छक केलि कला कमनी ॥ ३८ ।

है सब तू मन मतै महेली री ॥ ४ ॥ वचन रचन सुनि चली सहचरि कैं आतुर तन तल वेली री । भोरैं भाइ आइ ढिंग बैठी जानत गटी गवेली री ॥ ५ ॥ देखि अनमनैं श्याम सखी संग सुमिर समौ कल केली री । हारि मानि निजु नाहु भये बस अंस बाहु हँसि मेली री ॥ ६ ॥ मैंटी रींट अटक नटवर भेटत भरि भुजनि सकेली री । उमड़ि चले मन मदन मनोहर मान मेंड़ पग पेली री ॥ ७ ॥ श्याम तमाल रसाल लाड़िली गौर वरन वर वेली री । कुँज मंजु वरषत पुहुपांजुलि चंप गुलाब चंवेली री ॥ ८ ॥ श्री विहारी विहारनि दासि मिलैं सुख रासि रसिक रस झेली री । रीझैं देत दुलहिनी दूलहु फूलहु प्रेम सहेली री ।४०।

तू नां करि मान मनोहर लाल लड़ावैगो जू ।।टेक।। छिन छिन मांन अयान करौं न सियान समझि सुकुमारी जू ॥ प्यारे पिय की पीर न जानत व्याकुल विरह विहारी जू ॥१॥ आसन सैंन सुहाय न परस्यो असन वसन करि वीरा जू ॥ दरस परस की आस अवधि वदि हों आई दै धीरा जू ॥ २ ॥ सुन्दर सुघर उदार धीर वर होत विलम्ब अधीरा जू ॥ विन श्रम हों लै मिलऊ लालहिं और निपट पथ नीरा जू ॥ ३ ॥ तनत हियें मन सुनत उठत भयौ मोहि अचम्भो भारी जू ॥ पिय तन पीठि दीठि मोतन हँसि पूँछति कुँवरि कहां री जू ॥४॥ पिय के अंग संग अनुराग रमित श्रम आलस केलि विसारी जू ॥ सदा समीप सुहाग नयो नित तू कबहूँ होत न न्यारी जू ॥५॥ प्रेम अवधि तुव मांन प्रिया सुनि मन संभ्रम उपजावै जू ॥ श्रवन सुनत नैंनन देखत मुख वचन प्रतीति न आवै जू ॥ ६ ॥ अंग अंग वसन दसन रसना वलि कटि तट चरनानि चित्र वनावैं जू कर कंकन दर्पन देखत मुहिं

इहि कौतुक हँसि आवै जू ७ । सुनि सुनि समझि समझि सखि वैननि नैंन सैंन जिय जानी जू ॥ सकुचति हँसति न चित-वत इत उत लटकि लाल लपटानी जू ॥ ८ ॥ मन को मन मन के मन सों मिलि मगन भये तन लीना जू ॥ रस में रिस रिस में रस उपजत रसिक प्रवीन प्रवीना जू ॥ ९ ॥ श्री वृन्दा विपिन विलासनि विलसत श्री विहारिनि दासि पीय प्यारी जू ॥ रूठत तूठत सव सुख बूढत या रस की वलिहारी जू ॥ १० ॥ ४१ ॥

राग बिलावल—मनुहारि करै मनुहारि लला ॥ श्री राधा आराधि लला । यह निज नेंम आराधि लला ॥ १ ॥ प्रेम करौ जिनि वाधि लला । पिय पग परसन की साधि लला ॥ २ ॥ सुनि सुन्दर सुकुँमारि लला । मानिनी मान निवारि लला ॥३॥ *बिनु अपराध न गारि लला । कोमल करहिं न टारि लला ॥ ४ ॥ नैंन चले च्वै वारि लला । पिय की प्रीति विचारि लला ॥ ५ ॥ हौं तन मन धन दैहों वारि लला । मम वचननि प्रति पारि लला ॥६॥ इती करत कित आरि लला । अपनें सुखहिं सँभारि लला ॥ ७ ॥ इहि रस मन अनुसार लला । हौं आई सेज सँवारि लला ॥ ८ ॥ नव निकुँज पग धारि लला । प्रीतम मुखहिं निहारि लला ॥ ९ ॥ सुन्दरि मुरि मुसिक्याय लला ।

---

*पद—हो नेंक मांनिनी मान निवारिये । यहै जानि जिय मान सयानी हौं आई हौं समझि सँवारिये ॥ रचि रुचिर नव कुँज कुसुम तर सुरति सु समयो सँवारिये । विरह जु श्याम अधीर पीर अति आतुर पिय अँकवारिये ॥ मिलि रस रंग अंग अंग पिय संग सरस कुसुम सुकुँवारिये । श्री विहारनि दास छवि निरखि हरषि तृन तोर प्रांन धन वारिये ४३

श्याम सखी सुख पाय लला ॥ १० ॥ अद्भुत उक्ति उपाय लला । इक कौतिक देखौ आय लला ॥११॥ वत रस लीनी लाइ लला । फूली अंगनि माइ लला ॥ १२ ॥ उदित मुदित मन माहिं लला । चली अली गहि वाहिं लला ॥ १३ ॥ नव दल शीतल छाँह लला । आपु निहोरी नाहु लला ॥ १४ ॥ ललित वलित द्रुम वेलि लला । सबै सँवारत केलि लला ॥१५॥ बढ्यौ मदन मन मोद लला । वीथी विपिन विनोद लला ।१६। रवि तनया के तीर लला । कोमल मलय समीर लला ॥ १७ ॥ अति आसक्त अधीर लला । विनय निवारत चीर लला ॥१८॥ चितवत विवि मुख ओर लला । लोंचन चारु चकोर लला ।१९। नित ही नवल किशोर लला । दोऊ नव जोवन जोर लला ॥ २० ॥ मिलि मेटी पिय की पीर लला । विहरत प्रेम गंभीर लला ॥ २१ ॥ मिलि विलसत निसि भोर लला । मेरे चित के चोर लला ॥ २२ ॥ छिन छिन पद प्रतिकूल लला । श्याम सहज अनुकूल लला ॥२३॥ दै आलिंगन दान लला । मानिनि कैं धन मान लला ॥ २४ ॥ दै अधरामृत पान लला । पालि प्रिया मम प्रांन लला ॥ २५॥ अब जिनि करहि निदान लला । सतर भौंह अपमान लला ॥ २६ ॥ गौर स्याम को संग लला । देखि दुहुन को रंग लला ॥२७॥ रति पति की गति पंग लला । मन अनुराम अभंग लला ॥२८॥ इहि रस वस सुख रास लला । जस गाय विहारनि दास लला ॥ २९ ॥ ४२ ॥

राग गौरी—रस भीनें विहारी मन हरयौ हो ऐसी जुवती धीरज धरहि कौ ॥ टेक ॥ इक कौतिक देख्यौ सुनि सजनी आजु तरनिजा तीर ॥ विमल तमाल लता लपटी सब शुक पिक

भृंगनि भीर ॥ १ ॥ हंस हंसनी नलिन पुलिन मिलि पत्र विलोल समीर ॥ दंपति संपति सहज सु देखत बढ़ी मनसिज मन पीर ॥२॥ सुभग बरन तन श्याम मनोहर सुन्दर नैंन विशाल ॥ बंसी सरस मधुर सुर गावत गुन गन रूप रसाल ॥ ३ ॥ हो ही लेति प्रीति परचौ आलि ये अति प्रेम प्रवीन । पलक वोट वन वोलत डोलत व्याकुल तन मन लीन ॥ ४ ॥ औचक अचक आय ऊभे भये हों हीं सहज सुभाय । कह्यौ कछू न लह्यौ मन कौ मतौ दरस परस अकुलाय ॥ ५ ॥ कंप पुलकि तन स्वेद भयो भ्रम मोपै कह्यौ न जाय ॥ अति चंचल अंचल गहि मेरो वचननि रुचि उपजाय ॥६॥ तैं हूँ मांन सयांन दृढ़ायौ मैं गाढ़े करे प्रांन ॥ प्रीतम पानि उरज परसे हँसि मनहुँ विशिष वर बांन ॥७॥ विह्वल भये भाँवते पिय राखी उर कंठ लगाय ॥ वदन निहारि निवारि सकुचि सखि अधर मधुर रस प्याय ॥ ८ ॥ सर्वसु श्री हरिदासी को सर्वोपरि नित्य विहार ॥ विपुल विनोद सदा वृन्दावन रसिक अनन्य अधार ॥ ९ ॥ ललितादिक सेवत सन्तत सुख वरषत हरषि उदार ॥ श्री विहारनि दासि विलास मगन मन मधुर प्रेम रस सार ॥ १० ॥ ४४ ॥

राग जेतश्री—हो हो रंगीली नागरी हो, रंग रत्ता मत्ता तेरे री नैंन वैंन सलोनें चाव ॥ मोहि लिया मिठ बोलन ढोलन मोहन रसिक राव ॥ १ ॥ साँवली वेंनी मनों अलि सैंनी सोहंदा झव्वा अंत ॥ लटकि चली अलवेली रस वस कारन कामी कंत ॥२॥ उजली जोति झलक्कदा मोती ऊंची नकलवंग ॥ एक अलक झलक कपोलनि विथुरी मोती मंग ॥३॥ अधर मधुर रस चखियाँ अँखियाँ अंजन ऊपर लीक ॥ सेज सुरति रस केलि कलोलनि

प्रेम परी सखी पीक ॥ ४ ॥ चौसर चंप गुलावदी माला दल मली अंग अंग ॥ कुंज भवन रवन रमी प्यारे पीय के रंग सुरंग ॥५॥ चोली चित्र मित्रा अलि भीनी अंगराग अनुराग ॥ निसि जागे रति रंग मनोहर पगि रहे गल लाग ॥ ६ ॥ उच्च कुच्च नव रंगे चंगे अंचल अति उदार ॥ लाड़िली लाल लड़ावन्दा भावन्दा गावन्दा नित्य विहार ॥ ७ ॥ छैल छवीले की छाय रही छवि अंग अंग उर ओर ॥ कटि पटु कच छूटि सर्वसु लूटि लियो सिरमोर ॥ ८ ॥ सखी सब गल्ला लखियां अंखियाँ कुंजन कीती गल्ल ॥ सुनि सुनि सुख नेह सनेहीदा हँसि मिली मुख भल्ल ॥ ९ ॥ श्री कुँज बिहारी प्यारी पर वारी जीवन प्रीतम प्रांन ॥ श्री विहारिनि दासि जथा मति तुव गुन लावनि रूप निधान ॥ १० ॥ ४५ ॥

राग गौरी ॥ सांवरी सहेली छत्र—मन मोहन भेष पलटि चले सांवरी सहेली अपनों नाउ वनाइ ॥ प्रेम सहेली सौं मिली श्री स्यामा मोहि मिलाइ ॥१॥ प्रेम सहेली यों कह्यौ तू मेरौ सीखि सुभाउ ॥ यों मिलियें यों वोलिये ज्यौं उपजै चित चाउ ॥ २ ॥ तैं कह्यौ भलो मन भाँवतौ अव वन्यौं है दाउ उपाउ ॥ हौं देंउ कहा सुख तेरोई तोमें सवै समाउ ॥३॥ जो तू कहि है सुई करि हौं सखी तेरे पाइनि पाइ ॥ वातनि हिलि मिलि रंग रह्यौ फूली अंग न माइ ॥ ४ ॥ प्रेम सहेली कुंज में साजे सकल सिंगार ॥ केस कुसुम वेंनी गुही सोंधें सरस सुढ़ार ॥ ५ ॥ जूरे चंपौ जग मगै मधि मुक्ता मनि लाल ॥ विच विच मल्ली मौलसिरी झब्बा सुरंग गुलाल ॥ ६ ॥ पटियनि प्रेम बनाइ लिख्यौ अरुन सरस सीमंत अघ तम श्रम सव दूरि होत ससि-

पाइ। ८ अति बांकी भोहे सोहे अंजन नैंन विशाल ॥ चितवत चितहि चुरावई जुवति बृंद नव वाल ९। घुटिला घुभी जराव के अवतंसनि मनि लाल ॥ वेसरि मुक्ता झल मलै अधर मधुर सुरसाल ॥ १० ॥ दसनावलि कल कुंद लौं मुख हँसत लसत वहु भाँति ॥ रवि ससि कोटिक दामिनी सकुचि दुरति लजि जाति ॥ ११ ॥ रसनावलि गुन गन गनें जाचति रति सुख सार ॥ चंदन वंदन कौ झलकि चिवुक चषौंडा चारु ॥ १२ ॥ कंठ पदिक छूटी लरें उज्वल जलज सुदेस ॥ राते डोरा दुरंग भए पहिरें प्रेंम अवेस ॥ १३ ॥ अतलस की अंगिया लसति अति आनंद उदित उरोज ॥ हँसति दुरति अंचल मुख दै तन घन मुदित मनोज ॥ १४ ॥ विविधि वरन वहु भांति जाति सारी सुवन सुवास ॥ लहँगा महँगा मोल नहि कोमल विमल विलास ॥ १५ ॥ कर पहुँची चारि चारि चुरी कंकन वलया वाजू वंद ॥ अगुरिनि मुंदरी सुंदरी नषनि लसति सत इंदु ॥ १६ ॥ अरध चंद वांकी चौकी उपमां देंऊ सुकाहि ॥ झवनि पर फोंदा फवे मानों उपजे हैं मदन उमाहि ॥ १७॥ त्रिवली उदर सुहावनी मधि मोहन नाभि गंभीर ॥ छीन कटि मधि किंकिनी मुषरित मुदित अधीर ॥ १८॥ सुन्दर सुभरि नितंविनी जंघनि मनि मौज विलोल ॥ सरस सनिग्ध सुवन वनी गुल्फ पिडरिया गोल ॥ १९ ॥ पगनि घूँघरा वाजने ऐड़ी अंगुरी लाल ॥ लटकि चलति गज गति लजति सीखत सुगति मराल ॥ २० ॥ चूरा चौका चाँदिनी पग नषनि दसहुँ दिसि जोति जित ढरि

चरन सुधरनि धरति तित प्रीति प्रगट होति ॥२१॥ अंग अंग निहारति मन हरति आरति तन मन काम ॥ प्रेम सहेली लै चली नवल कमल कुंज धाम ॥ २२ ॥ मेघ महल परदा फुही बहु बादल विमल वितानि ॥ अद्भुत वन आनंद मई तहाँ राजैं श्री स्यामा रसिक निधान ॥ २३ ॥ रतन खचित सरोट पर बैठी बनि विस्तार ॥ प्यारी प्रीतम कौ हित चित धरैं हुलसत हँसति उदार ॥ २४ ॥ सोहत सखी समूह में जीति मदन भई भूप ॥ पचरंग छत्र चमर ढरें मन मोह्यौ स्यामा रूप अनूप ॥ २५ ॥ प्रेम सहेली फिरि चितयौ कछुक सिषै लई लाज ॥ चली अली जब निकट आई चंचल सहज विराज ॥ २६॥ चौंक परी चितयौ सबनि यह कौ आई आँन ॥ प्रेम सहेली यौं कह्यौ यह सरस निपुन गुन गान ॥२७॥ एक प्रेम सबहिनि भयौ लै आई वर धांम ॥ प्रेम सहेली आगे व्है बोलि लई निज नाम ॥ २८ ॥ प्रेम सहेली यौं कह्यौ यह मेरे कुल सील समान ॥ सर्वसु प्रेम हियैं सच्यौं लै मिली अप वपु प्रांन ॥ २९ ॥ देखन मन औरै भयौ आदर कियौ सराहि ॥ नवल किशोरी यौं कह्यौं तू मो ढिंग तें जिनि जाहि ॥ ३० ॥ नष सिष सुन्दर मोहिनी श्री स्यामां जू के प्रांन ॥ अंग अंग रस वरषहीं नागरि सुघर सुजांन ॥ ३१ ॥ नवल किशोरी यौं कह्यौ मोहि अपनौं सौं सिंगार सिषाइ ॥ सुनत श्रवन मन सुख भयौ सीखौ वलि कह्यौ लडाइ ॥ ३२ ॥ पांनि परसि हँसि लै चली नव केसरि की कुंज ॥ अरुन स्याम सित पीत मधुप गावत रस जस पुंज ॥ ३३ ॥ प्रेम सहेली पहिलें ही रचि सचि सीतल सेज ॥ सकल सौंज उपयोग भोग प्रांन प्रिया जू कें हेज ॥ ॥३४॥तन रोम हरषि पुलकावली कीनौं कुंज प्रवेस काम कुंज

अभिराम ही वहु वातनि बढ़्यौ अवेस ॥ ३५ ॥ अब कछु राग सुनाइ सखी रही रुष लियें मुख चाहि ॥ प्रगट प्रेम न जनावई गावति उमहि उमाहि ॥ ३६ ॥ जाके गावत तानि तरंग अनंग नचैं लीनी कंठ लगाइ ॥ भैंटत भुजनि भरम गयौ मिली अंग अंग समाइ ॥३७॥ मधुर प्रेम रस सिंधु वढ़्यौ गई निसि नसि भयौ भोर ॥ विलसत हँसत न जानहीं भोरहु जुगल किशोर ॥ ३८॥ प्रेम सहेली के प्रेम को गावत ललना लाल ॥ छिन छिन प्रति रति विस्तरति करत प्रांन प्रतिपाल ॥ ३६ ॥ जो तुम मेरे प्रान पियारे रंग भरे उमगि ढरे रस रासि ॥ तो हौं तुम्हरो जस गाऊं दिन दुलराऊं तू मेरी जीवनि विहारिनिदासि ॥४०॥४६॥

सहेली ॥ राग गौरी ॥—सहेली मेरो लाल विहारी ऐसो रंग मग्यौ (जय) श्री वृन्दावन को री चन्द ॥ जाके दरस परस सुख पाइयै मन उपजत अति आनन्द ॥१॥ नख सिख रसिक सु रस भरयौ मो प्रांन प्रिया के रंग ॥ मो विन नेकु न रहि सकै विहरत अनुराग असंग ॥२॥ अवधि प्रेम की साँवरो मिलि करत नई नित केलि ॥ या रस तें नेकु न टरै हम दोऊ नवल नवेलि ॥३॥ तोतें कछु न दुराइ हौं सखि तू मेरे हित प्रांन ॥ तैं मेरे रस वस कियौ वर सुन्दर सुघर सुजांन ॥ ४ ॥ तोहि सुन्यौ भावत भट्ट रुचि आछें मन की दौर ॥ तोसौं छिन छिन मन मिलै हौं वहुत कहौंगी और ॥ ५ ॥ श्री वृन्दावन सहज सुहावनौ राजत जमुना के फेर ॥ कुँज कुँज अलि गुँजहीं मानौं सदन मदन के मेर ॥ ६ ॥ इक दिन अति आतुर मिल्यौ नव चंपक कुँज किशोर ॥ तन मन की मोसौं सब कही सखी याकी प्रीति न थोर ॥७॥ जित जित हौं तितहीं चलै तित आपुन हूँ चलि जाय तितहीं

मोहू लै चलैं कछु आनंद कह्यौ न जाय ॥८॥ कुंज कुंज कौतिक घनौं लै तहीं तही विरमाय ॥ ता छिन तें ता ठौर ते सुख आगे चल्यौ न जाय ॥ ६ ॥ जल थल कुंज पुलिन वन घन रंग रह्यौ भरि कह्यौ न जाय ॥ सव पत्ती द्रुम त्रन जलनि अलि कमलनि चलत डुलाय ॥ १० ॥ मेरे मन के आगें हीं फिरै अति संपति सहित सुहाइ ॥ जब चाहौं ताही समैं रति तैसियै व्है मिलि जाइ ॥ ११ ॥ श्री वृन्दावन जो सु कृपा करैं तो निज सुख मननि समाय ॥ हम इनहीं की आस अनत सुख सुपनें हूँ न सुहाय ॥१२॥ लाल रतन मनि मुक्ता मय तरु ललितै लता उदार ॥ स्यामै सेवत नित नये फल फूल प्रेम के भार ॥१३॥ नारि केलि नव नारंगी सत अम्ब मौर वहु ठौर ॥ देखत शोभा वन घनौं रस रीझि रह्यौ शिरमौर ॥१४॥ श्रीवृन्दावन जब देखौं तवहीं नयो नित लेत प्रेम उपजाय ॥ या रंग रस में मन भ्रमहीं तो भूलि पाछिलो जाय ॥१५॥ जा दिन तू पाछे रहीं मोहि मिल्यौ सामु है आय ॥ मोहिं अकेली देखि के कछु सुखही में सुख पाय ॥ १६ ॥ तव पूँछी संग की कहां में उत्तर दियौ बनाय ॥ नव कुंदन की कुंज को तैं पतो मिलायो आय ॥ १७ ॥ तब सुनि सुख दूनों भयो मन फूल्यौ अंग न माय ॥ तो तन चितै चितै हँसि मेरे पाइनि परयौ लड़ाय ॥१८॥ तब मेरो मुख चूम्यौ माथौ चूम्यौ और चूमैं नैंन कपोल ॥ तेरे देखत सब भयौ यो कह्यो लियो बिन मोल ॥ १६ ॥ सखि इक दिन नवल निकुँज में नट रह्यौ लता सौं लागि ॥ हौं फूलनि के ख्याल ही मोहि मिल्यो मदन मद जागि ॥ २० ॥ ताकी वातन और न पाइयै अति गावत सुघर सुदेस ॥ खेलत छिन छिन ख्याल में मोहि मिल्यौ मनोहर वेस २१ सुन

गन रूप अचागरौ अति चंचल अंग अंग कोक मनो सुख हीं पढ्यौ तन उपजत अनंत अनंग ॥ २२ ॥ तब मेरौ हाथ छुयौ हियौ छुयौ पुनि कर परसि कपोल ॥ चितवन ही चित दिन रह्यौ मेरे सुनत मधुर मृदु बोल ॥ २३ । इक दिन कालिंदी के कूल ही ठाढ़ो ललिता के संग ॥ तें मोसों तबहीं कह्यौ यह तेरे ही रस रंग ॥ २४ ॥ तू कछु उनहिं मिलावति मोसों करत सैंन ही बात ॥ मेरी सी मोसों कहै उनकी पुजवति घात ॥२५॥ प्यारी जू तुम हम सों ऐसी कहो तेरे पिय कें प्रेम अवेस ॥ तेरे मन कों भांवतौ मिलि करि रमतु सुदेस ॥ २६ ॥ प्यारी जू हम साँझ समैं साँझै कहैं और कहैं भोर सों भोर ॥ बात कहों सों समझियें पै मन को और न छोर ॥ २७ ॥ सखि तू जानत सब दिन की सबै घट नट नागर की बात ॥ कौतुक नित नये करै बहु निपुन कला सत सात ॥ २८ ॥ अजु तुम मिले सयानें चतुरई बिच भोरी हूँ दै दै जात ॥ मेरौ यहै सहज सदा सुख देखत सुनत न अघात ॥ २९ ॥ मोहन सों मुख की कछु कहि आवै पै जिय तै निकसि न जाय ॥ सब दिन यह सुख जीजियें नेंक तुम सों कहत लड़ाय ॥ ३० ॥ भावत सबही भांवतौ सुनि तेरे सुख संतोष ॥ तेरे सुख ही तें सुखी और है समरथ सब घोष ॥ ३१ ॥ सखी इक दिन हौं जमुना जल न्हाति ही मैं देख्यौ बन में जात ॥ ना जानूं कित व्है मिल्यौ हौं चौंकि परी सब गात ॥ ३२ ॥ केश कुशुम बैंनी शिथिल गई जलजमनि माला टूटि ॥ करन फूल खुटला खुले कंचुकि नीवी बंद छूटि ॥ ३३॥ सादौ भेष उतावलौ फिर सच्यौ आपने हाथ ॥ बेंनी गुहत कछु कह्यौ मोहि राखि आपनें साथ ३४ सखि तोहू सों न

वहीं मेरे हरुवे हा हा खात ॥ नेंक निकट ही ओट होत तव तोहू सों बिललात ॥ ३५ ॥ प्यारी जू तम इनही को कह्यौ करौ कछु हौं तौ नहीं अनखात ॥ भीर परें जो साँकरें कछु हों संग ते नाहिं जात ॥ ३६ ॥ तुम्हारी इनकी अटपटी एकौ जानी नहिं जाय ॥ अन जानत हूँ जानिये पै प्रेम न वरन्यौ जाय ॥३७॥ प्रेम आहि कहै कोऊ यह सुख दुख लाभ कि हाँनि ॥ रिस ही में हाँसी आवै हों कहते नहीं कछु वांनि ॥ ३८ ॥ सखि तोतें अधिक न जानि हों कोऊ कहै तो लागौं पाँय ॥ मेरे मन संसै रहै मोसों तू कहि दाव उपाय ॥ ३९ ॥ प्यारी जू तुम मेरौ कह्यौ करौ ये कहै सो कीजै वेग ॥ सखी तेरौ कह्यौ कहा करौं यह लावण्य भरयौ अनेक ॥४०॥ मोहन करि हों कहा सु कीजिये यों सुनत भयौ चित चाव ॥ जगत विदित हमहूँ सुन्यौ तू रसिक रंगीलौ राव ॥ ४१ ॥ प्यारी जू तेरे वरन वसन करों तन तेरेई उनिहार ॥ तेरी सी बातें लगें कहि जीवत बदन निहार ॥४२॥ तो लौं चलौं मिलौं तोही लौं तो पहिचानि है न कोइ ॥ मिले मिलाये रंग रहैं तौ खेल चौगुनौं होइ ॥ ४३ ॥ मोहन आहि भली जो व्है आवै तो मिल्यौ सखिन सों जाय ॥ बहुरयौ मिलि है कुंज मैं लियौ जल हूँ कौ सुख पाय ॥ ४४ ॥ तब निकट सुनत ही सहचरी फिर चितयौ नैंन विशाल ॥ मनि चूरा चौकी चुरी दै राती वेंदी भाल ॥ ४५ ॥ सखी देखति है याकौ मतौ यह याकी टेव न जाय ॥ वरजत हीं वरजत हठि व्है आयौ फोंदा फुली बनाय ॥ ४६ ॥ तब लाल सकुचि ठाढौ भयौ कछु रूप न वरन्यौ जाय ॥ चितै चितै मुख साँवरौ तन उपजत अम-नित भाय ॥ ४७ ॥ तन मन अंग पलटि परे लीनें उर सों ऌर

लाय। रस वस भये न जानही निसि वासर गयौ विहाय ॥४८॥ सखि तेरे संग सुख पाइये सब तेरे कियौ सहाय ॥ सुरति रंग में रंग रह्यौ रस रीझि रह्यौ गहि पाँय ॥ ४९ ॥ सुन्दरि तेरी कृपा कहा कहौं यह रस जस प्रेम प्रकासि ॥ वलि वलि श्रीहरिदासि की जिन करी है विहारिन दासि ॥ ५० ॥ ४७ ॥

झूमिका—राग विलावल—मेरे पिय प्यारी की झूमिका सखि कहत परस्पर प्रेम ॥ लाल वलि लाड़िली हो ॥ ए दोऊ निमिष न वीछुरैं सखी इनहिं प्रेम को नेंम ॥ १ ॥ प्रथम लडैती गाइ हौं जाकौ श्री वृन्दावन धाम ॥ पुनि रसिक रंगीलौ गाइ हौं जाको कुंज विहारी नाम ॥ २ ॥ नख सिख सुन्दर सोहई दोऊ अद्भुत रूप अपार। एक प्रांन द्वै तन धरें अति मधुर प्रेम रस सार ॥ ३ ॥ पहिलो झूमक ताहि को जाको सोहत सहज सुहाग। दूजो झूमक ताहि कौ जाकौ वाढ़त अति अनु-राग ॥ ४ ॥ पूरन प्रेम प्रकासनी श्री स्यामा अति सुकुँवारि। मोहन जू के नैंन चकोर लौं शशि जीवत वदन निहारि ॥५॥ नव चंपक तन कामिनी पिय सुभग साँवरे अंग। दोऊ सम वैस विराजहीं लजि लागत पगनि अनंग॥६॥ नित नवल किशोरी नागरी नित नागर नवल किशोर। प्रेम परस्पर झूमहीं जुरि दोऊ नव जोवन जोर ॥७॥ तन मन अरुझि न सुरझहीं दोऊ मगन मदन मद मोद ॥८॥ झूमत झूमत आवहीं छवि अंसनि झूमक वाहु। कुँज कुटी तन मन दिये दोऊ फूलत नागरी नाहु ॥ ९ ॥ झूमक झव्वा झलकि हीं नीवी वन्द बाजू वन्द। तरकि तरकि वन्द टूटहीं सुख लूटत अति आनन्द ॥ १० ॥ श्याम अधर अंजन भये मिलि राते नैंन कपोल।

* श्रम जलकन वदन विराजहीं मानौं नव मुक्ता निरमोल ॥११॥ अब औरै छवि छाजहीं सखि देखौ मन दै धाइ । अपनो सर्वसु साँवरो लेहु ललना लाड़ लड़ाइ॥१२॥झूमक सारीझूमहीं सखीपहिरें झूमक देहिं । हरषि हरषि रस वरषहीं सखी निरखि निरखि सुख लेहिं ॥ १३ ॥ श्री वृन्दावन दिन झूमिका सखी झूम रह्यौ फल फूल । सुनि मन मुदित सबै आईं झूमि कालिन्दी के कूल ॥१४॥ मेरे कुँज रवन कौ झूमिका गुन गावत कोकिल कीर । प्रेम उमंगि हियौ भरयौ सुख झूमत जमुना नीर ॥१५॥ माते मुदित शिली-मुखा झूमि देत मधुर सुर घोर । आनन्द उमँगि अलापहीं कल नाचत मोर चकोर ॥ १६ ॥ झुँडनि झुँडनि मृगा मृगी जुरि नैंननि झूमक देहिं । सुन्दर वदन निहारहीं सुर शब्द श्रवण भरि लेहिं ॥ १७ ॥ निरखि निरखि मुख रुप लिये वहुरी सब सीस नवाय । तन मन गुन अर्पन कियो सुख दीनों दुहुन अघाय ॥ १८ ॥ तव उनि मान्यौं मनकौ मतौ सखि लै चली सुहित जनाय । सुन्दर पुलिन सरस कन झलकन कमल कुमुद देखौ आय ॥ १६ ॥ तहाँ सारस हंस प्रसंसित झूमक देत सुगतिन दिखाय । प्यारी हार पीतांवर पिय सों रीझि दियौ सुख पाय ॥ २० ॥ आगे उमगि चलत लटकत सखी झूमक दै दुलराइ । तहाँ नये नये रस छाकत कौतिक उछकत छवि रहि छाय ॥२१॥

---

*सवैया—अरुनाधर अंजन रंजित ह्वै विथुके अलि बन्ध कलोलनि में । विथुरी अलकें सिथली पलकें जु लखी ललिता गति गोलनि में ॥ श्री बिहारी विहारिनदास कहें वलि चाल डग मगी डोलनि में । मुसिक्यानि सयानि पिछाँनि प्रिया पिय की कछु पीक कपोलनि में ४६

कदली कुन्द कदंव अंव वन वीथिन वर विरमाय। तन वन किधौं वन तन भयौ कछु व्यौरौ वरन्यौ न जाय ॥ २२ ॥ मणि मंडल मुक्ता महल वहु रतन सार चित्र सार। कनक कलश छज्जे झलकत वहु झूमत रतन प्रवाल ॥२३॥ मधि मंजुल नव कुंज किशलय दल शीतल सेज सुरंग। कोमल कुसुम सरस सौरभ सब सम पराग वहु रंग ॥२४॥ जाके परदनि द्वार झरोखनि झूमत मनसिज मदन अनंग। तहाँ बैठे रीझि सराहि रसिक वर निरखि हरखि अंग अंग ॥ २५ ॥ चिवुक टटोरत छन्द वंद छोरत परसत हँसत उतंग। याही रस खेलत पुनि पुनि पिय प्यारी लेत उछंग ॥ २६ ॥ अंगराग अनुराग रंगे दूलह दुलहिनि द्वै देह। सहचरि कहत सुरत सुख सागर झूमो सहज सनेह ॥ २७ ॥ जै जै श्री हरिदास प्रताप चरन वलि विपुल सु प्रेम प्रकासि। मेरे गौर स्याम कौ सरस झूमका झूमि विहारिनि दासि ॥ २८ ॥ ४८ ॥

श्री नागरीदास जी महाराज के पद–प्यारी सहजहि मन हरि लेत। तू मन मोहनी री मोहन हेत ॥ तुम अति प्रेम प्रवीन हो (प्यारी) सुघर सिरोमनि जान। मन क्रम वचन विलासनी मेरे तुम विन गति नहिं आन ॥ १ ॥ तू तन तू मन में बसी (प्यारी) तू मम जीवन प्रांन। तू सर्वस धन मानिनी दै मोहिं मान रति दांन ॥ २ ॥ भामिनि तुव भुव छेप हो (प्यारी) मोपै सह्यौ न जाय। अंचल पल अलकावली के अन्तर मन अकुलाय ॥ ३ ॥ मो मन ऐसी होत है प्यारी तो तन में मिलि जाँऊ। * तुव मुख चन्द्र चकोर लों नैना पान करत न अघाऊं ॥ ४ ॥ श्रवन सुयश रसना रसौं तुव कहत रहौं गुन गाँन। जाचत ज्यों जल

मीन लौं तुव दरस परस अग्रांन ॥ ५ ॥ तुव लावनि गुन निधि आगरी (प्यारी) अब जिन करहु निदाँन । पूरन प्रेम प्रकासनी दै मोहि अधर मधु पाँन ॥ ६ ॥ तव ललित बचन सुनि श्याम के (प्यारी) नैननि में मुसिक्याय । व्याकुल विरह बिलोकि कैं प्यारी लियें है लाल उर लाय ॥ ७ ॥ मैं मान कियो तुम सों कवै प्यारे कलपि कलपि कित लेत । * मेरे प्रीतम प्रांन हो पिय जीवन तुमहिं समेत ॥ ८ ॥ (तब) लटकि लगी उर स्याम कें (प्यारी) हुलसति हँसति उदार । कोक निपुन नव नागरी वर वस कियें सुकुंवार ॥ ९ ॥ भये मदन मत्त रस माधुरी सुख बरषत सुखनि अघाइ । निरखि हरखि रस फूलहीं श्रीललि-तादिक सुख पाइ ॥ १० ॥ सुरति रंग में रंग रह्यौ (हो) कुंज सदन सुख रासि । श्री विपुल विहारिनि दासि पर बलि नवल नागरीदासि ॥ ११ ॥ ५० ॥

*ऐसी जिय होत जो जिय सों जिय मिलें तन सों तन समाय लेहुं तो देखौं कहा हो प्यारी । तोही सों हिलग आँखि आँखिन सों मिली रहै जीवन कौ यहै लहा हो प्यारी ॥ मोकों इतो साज कहाँ री प्यारी हौं अति दीन तुव वस भुव छेप न जाय सहा हो प्यारी ॥ श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज विहारी कहत री प्यारी राखि लै बाहु बल हौं बपुरा काम दहा हो प्यारी ॥ ५१ ॥

* ए जू जानत हो मेरे मन की मैं कब मान कियो । तुम मेरी जीवन जिय कों जानत हो कित मानत हौ पिय संभ्रम वचन वियो । क्यों अनबोले व्है रहे गहे से मन कहत वचन समुझाय सुनत हँसि आयौ हुलसि हियो । श्री विहारनिदास प्रीतम प्यारी प्रति खोलत खोलत कर कंचुकी कुच कल मुख अमृत पियो ॥ ५२ ॥

राग आसावरी होरी धमारि—चलि सखि देखन जाँहि कौतुक आज भलौरी। अपनी अपनी सौंज साजि सब वेगि चलौ री ॥ १ ॥ सुखद तरनिजा कूल फूल फूले कमल कली री। तहां सारस हंस चकोर मोर झूमें आनि अली री ॥ २ ॥ फूली ललित लता द्रुम वेलि शोभा अमित बढ़ी री। कूजित कोकिल कीर कुंज अटानि चढ़ी री ॥ ३ ॥ अलि कुल कुसुम समूह सरस वितान तनै री। तहां खेलत नवल नवेलि केलि कल हरत मनैं री ॥ ४ ॥ बाजत ताल मृदंग चंग रस रंग सने री। वर किन्नर कठतार वीन उफ सरस घनें री ॥ ५ ॥ गावत फाग सुहाग राग रंग सरस पनें री। सहेलिन को अनुराग भाग कवि कौंन गनें री ॥ ६ ॥ मुदित प्रिया पिय अंग अनंग विनोद करें री। सौधों सुरंग अबीर अरगजा निशंक भरें री ॥ ७ ॥ गौर श्याम अभिराम वसन सुरंग बनें री। सारी सुमन सुवास पीत पट लसत तनें री ॥ ८ ॥ दोऊ राजत अमित अपार सुसार विहार करें री। उदित मदन मन मोद भुजा हँसि अंस धरें री ॥ ९ ॥ रति दान अधर रस पाँन विलसत अंक भरें री। विवि विधु वदन निहारि नैंन रस रंग ढरें री ॥ १० ॥ बाढ्यौ रंग अपार हार मुक्ता लर टूटी। कंचुकी कसन सुदेस कुसुम अलकावलि छूटी ॥ ११ ॥ अति माधुर्य सनेह परस्पर विवस भये री। दोऊ सुरत श्रमित अति जानि सहचरी अंक लये री ॥ १२ ॥ यह फागु नयो अनुराग सुहाग कह्यौ न परै री। श्री वृन्दाविपिन विनोद कौंन सुख सिन्धु तरैं री ॥ १३ ॥ सेवत सुख रुष जानि नये सिंगार ठये री। वलि वलि नागरी दासि की स्वामिनी नेह नये री　१४　५३ ।

रास के पद—रसिक रसिकनी किशोर निर्त्तत रंग भीनें। गौर सुभग श्याम तनें नटवर वपु वेष धरें त त ठुमक थेई थेई उघटत गति लीनें ॥ १ ॥ कोक संगीत सुघर गावत सुख सर्वोपर तान तिरप लेत प्यारी पहिरें पट झीनें। अधर दसन दुति प्रकास अलक झलक भ्रुवि विलास तार सुरन चोरत चित नवल नेह नवीनें ॥ २ ॥ रीझि रवन मोहिं रहे धाय चपल चरन गहे लहे लाल ललना हँसि अंस वाहु दीनें। दास श्री नागरी नवेलि नागर मिलि करत केलि आनंद रस झेलि खेलि पूरन प्रेम प्रवीनें ॥ ३ ॥ ५५ ॥

रास के पद—जय श्री वृन्दावन विराजै तहाँ नित विहरें श्री रसिक राय ॥ झिलि मिलि झिलि मिलि आस पास श्री जमुना अति सोहे ॥ मिलि खेलैं दोऊ जला थला सखि देखि मेरो मन मोहे ॥१॥ सौरभ कन पुलिन रंग विमल कमल फूले ॥ सारस हंस चकोर मोर मृदु कूजित कल कूले ॥२॥ कुसुमित कल कुँज लता विविध रंगन फूली ॥ मत्त मुदित गुंजित अलि अवली फिरत भूली ॥ ३ ॥ वहै सीतल मंद सुगंध पवन शुक पिक सुर गावें ॥ सुनि श्रवन रवनी रवन मदन मोद वढ़ावें ॥ ४ ॥ वनी वीथी विचित्र चित्रित धर प्रति विंवित झाँई ॥ मंडल मनि मय मौज महल मुक्तनि छवि छाई ॥५॥ पुहुप वितानिनि झिलिमिलैं झरोखनि सहचरि दुलरावें ॥ अति अद्भुत सुख सेज सरस लाड़िली लाल लड़ावें ॥ ६ ॥ गौर सुभग साँवल सखी अंग अंगनि राजैं ॥ पहिरें पट पीत अरुन मौजनि छवि छाजैं ॥७॥ विलोकत विवि वदन छवि हँसि हँसि उर लागें ॥ वचन रचन कहें प्रिया जू सों लाल यहै रति मागें ८ मंद मंद मधुर मधुर

सप्त सुरनि गावें ।. तान तरंग भृकुटी भंग अंग अनंग नचावें ॥९॥ दोऊ रूप उदित प्रेम मुदित मत्त मननि कर्षें॥ गुन रीझि सुरति अंग अंग हरषि सुरन वर्षें ॥ १० ॥ श्री कुँज विहारी विहारनि दासि सुख सन्तत करत खवासी ॥ नव नव रस छिन छिन सुख निरखि नागरी दासी ॥ ११ ॥ ५६ ॥

श्यामा नागरी हो प्रवीन । सकल गुन निधान राजत नागरि नेह प्रवीन ॥ १ ॥ नख सिख छबि रूप की रासि सोहत मोतिन मंग। अलक झलक देखत छवि मोहे लाल अनंग ।२। कवरी कुसुम ग्रंथित कच तिलक बिंदुली भाल । वंक भृकुटी मोहन मन चपल नैन विशाल ॥३॥ अति दुति ताटंकनि छवि भ्राजत लोल कपोल । अधर दसन मुसिकन सखि मधुरे मधुरे बोल ॥४॥ सुभग नासा सोहत अति वेशर मनि लाल । मुक्ता बहु भांति लसै चिबुक विन्दु रसाल ॥ ५ ॥ कंठ पदिक छूटी लरैं मिहीं जँगाली पोति । हेम जटित चौकी छवि जग मगै अति जोति ॥ ६ ॥ कुच जुगल श्याम कंचुकी यों राजत मोतिन हार । उर अम्बर उड़गन मानों कीनों है उदगार ॥७॥ भुज मृणाल जुगल वलय झब्बा फोंदा स्याम सुढार । पुहुप सुरंग फूले मानों मदन विटप डार ॥ ८ ॥ त्रिवली नाभि कटि नितंब किंकिनी सुर तार । करभ (कदली) जंघ जेहरि छवि नूपुर (की) झनकार ॥ ९ ॥ जुगल कमल अरुन चरन राजै बहु भांति । नख मनि गन देखत छवि मोहन मन सांति ॥ १० ॥ पचरंग ढिग अरुन सारी लहँगा पीत दुकूल । गौर तन भोरे मन देखत लालहिं फूल ॥ ११ ॥ निरखत छवि अंग अंग मोहे श्याम प्रवीन । चक चौंधी लागी नैननि लाल भये आधीन

॥ १२ ॥ कुँज कुँज डोलनि वहु लीनें सखिन संग । मुदित मोर निर्त्तत देख दामिनी घन रंग ॥१३॥ दम्पति रति सोहत अति विलसत सुख सार । श्री ललितादिक देखत दिन सर्वसु प्रांन अधार ॥ १४ ॥ श्री वर विहारनि दास कृपा तें सेऊ सुख रास । छिन छिन प्रति वलि वलि नवल नागरी दास।१५।५७।

श्री सरसदास जी महाराज कृत—निर्त्तत रस भरे रसिक विहारी । तान तिरप गति भेद अनागति घात लेत सुकुमारी ॥ १ ॥ थेई थेई करत धरत पग चंचल उपजत नूपुर रव झनकारी । गावत कटि लटकावत नैंन नचावत प्रीतम प्यारी ॥ २ ॥ मृदंग ताल सुर सप्त संच मिलि तैसीये छिटकि रही उजियारी । कोक कला कल केलि झेलि रस क्रींडत कुँवरि दुलारी ॥ ३ ॥ द्रुम वेली फूली रस वर्षत चंपक वकुल गुलाव निवारी । करत विनोद विपुन मन भाये श्री सरस दास वलिहारी ॥ ४ ॥ ५८ ॥

माईरी आजु रसमसे रस वन वैठे अंग अंग रोम रोम सुख भरे । कहाँ लौं कहौं री और रहस वहस रस हास ही के मिस मिलि जे जे रंग करे ॥ बार बार बदन निहार मन वार वार अंक भरत पुनि पुनि आतुर ह्वै इत उत न ढरे । श्री सरसदास वारी विवस विहारी प्यारी यह विधि तन मन मुदित भरे ॥ ५९ ॥

श्री भगवत रसिक जी कृत—आजु तो छवीली राधे रस भरी डोलहीं । साँवरे पिया के संग, भीजी है मदन रंग, मोद की उमंग अंग गुण ग्रन्थ खोलही ॥ जैसे दामिनी घन माही, ऐसे भामिनी तनु माही लखि आपनी परछाही हँसि हँसि बोलहीं । भगवत लाल विहारी, पाई है कहा वर नारी गुण रूप वैस [illegible], करत कलोल ही ६० ॥

श्री रसिक विहारी जी महाराज कृत—शोभित नैन कमल रतनारे। रूप भरे मटकत खंजन से मनहुँ वान अनियारे ॥ माथे मुकुट लटक ग्रींवा की चित ते टरत न टारे। अलिगन जन झुकि रहे री वदन पर केश सु घूँघर वारे ॥ छूटे वंद झीनों तन वागो मुकुर रूप अति कारे। ढुरकि रही माला मोतिन की छकित छैल मतवारे ॥ अंग अंग की शोभा निरखत हरषत प्रान हमारे। श्री रसिक विहारी की छवि वरनत कोटिक कवि जन हारे ।६१।

* श्री जमुना जी के पद *

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—नमो नमो यमुना महारानी। निकट तेरे विहरत पिय प्यारी वृन्दावन रजधानी ॥ जे जन पान करत पय तेरो तिन त्रय ताप सिरानी। टहल महल की मिलत निरंतर कृपा करत ब्रजरानी ॥ दामोदर हित कहाँलों वरनौं तुव महिमा मन मोहन जानी ॥ ६२ ॥

नमो नमो यमुना महारानी। नील वरण गंभीर स्वच्छ अति अतुलित प्रेम महा रस दानी ॥ रसावेस तुम मध्य जल क्रीड़ा पी संग करी लली सुखदानी। वही कुचन मृग मद चारों दिसि श्याम रंग भयौ सुन्दर पानी ॥ विकसि रहे जहाँ तहाँ विचित्रित जलज पराग सुगंध उड़ानी। तासु छटा उद्दीपन कीजे मो मन मंद कृपा उर आनी ॥६३॥ श्रीभगवत मुदितजी कृत राग पट

देखे नव निकुंज रति पुंज गुंज अलि जहाँ तहाँ आनंद रह्यौ छाई। रूप रासि गुन रासि रासि रस रसिक मुकट मणि कुँवरि कुँवर दोऊ रहे रूप संपति लुभाई ॥ करत केलि रस झेलि मेलि भुज कनक वेलि नव वाल लाल कौतिक तमाल रहे कंठ लाई। छूटी गौरी चहुँ ओर चमकि छवि चकित होत चक चौंधी

* गुलाब फूल डोल के पद *

* चैत्र सुदी एकादसी कौ *

॥ गो स्वामी श्री रूपलालजी महाराज कृत–राग राइसौ ॥

फूलनि कुंज गुलाब की बनक बनी अति सोहै। फूलनि सों बैठी प्रिया लाल तहाँ छबि जोहै ॥ १ ॥ फूल चवेली पीत के भूषन भूषित अंगा। सीस चन्द्रिका झुकि रही पुहुप मालती संगा ॥ २ ॥ वसन अरगजा रंग रंगे तनसुख प्रभा प्रकासी। महकनि सरस सुगंध की लतनि लतनि आभा सी ॥ ३ ॥ पान भरे सुख चन्द्रमा मृदु मृदु हँसन सुहाई। किरनि प्रकासी विपिन में अलि उड़गन मन भाई ॥ ४ ॥ राग जमायौ राइसौ साज समाजनि लियें। सब सखीं मन अनुसारनी रिझवत तन मन दियें ॥ ५ ॥ पुहुपाँजुलि करि वारनैं निर्त्तति गुननि प्रवीना। जै श्री रूपलाल हित सहचरी निकट सुनावत वीना ॥६॥१॥

राग गौरी—फूलनि फूल झुलावति लालनु ललना फूल फूलि अनुरागी। भूषन फूल वसन तन मन में झलकत अंग अनंग सुहागी ॥ १ ॥ सौरभ सरस परस अलि झुकि झुकि गान तान सुनि सुर उर पागी। जै श्री रूप अनूप त्रिभंगी हित चित छकनि छके की चितवन लागी ॥ २ ॥

राग केदारौ—फूल डोल झूलत विहारी विहारिन संग लियें। फूले फूले वदन निहारत अंसनि बाहु दियें ॥ १ ॥ फूलनि की सारी प्यारी अंग फूलनि सिंगार कियें। चहूँ ओर सहचरि गुन गावति निरखि निरखि जिय जियें ॥२॥ ललित लता फूली रंग रंगनि गुंजत अलि मधु पियें। जै श्री रूपलाल हित दंपति सोभा लखि पहिरों हार हियें ॥ ३ ॥ ३ ॥

गोस्वामी श्री कृष्णचन्द्र महाराज जी कृत　रागदेव गधार

झूलत फूल भई अति भारी। निर्मित वर हिंडोर विटपतर वृन्दाविपिन विहारी ॥ १ ॥ सखी सकल अति मुदित भई बहु रंग पहिरैं तन सारी। भृकुटि भंग लावण्य अंग दुति कोटि मदन छवि टारी ॥ २ ॥ अति सैं गौर राधे ग्रीवा में श्याम भुजा छवि न्यारी। दामिनि अचल विराजत मानौं मेघ घटा विच कारी ॥ ३ ॥ वरनन कहा कीजिये प्रेम कौ रुचि दायक जहाँ गारी। जै श्री कृष्णदास हित यह सुख देखत प्रान सम्पदा वारी ॥ ४ ॥ ४ ॥

गोस्वामी श्री कमल नैंन जी महाराज कृत ॥ राग देव गंधार ॥

फूलनि की रचनां रचि कीनी। फूलनि के मंडल तरु डोल रचि फूलनि की वैठक छवि भीनी ॥ १ ॥ फूलनि ही की तलप बनाई फूलनि के उप वरहत दीनैं ॥ सिज्या मंदिर फूलनि ही के फूलनि फूल गवास नवीनैं ॥ २॥ फूलनि के अभरन अनेक विधि फूल दुकूल लसन तन भीनैं ॥ जै श्री कमल नैंन हित विवि मुख फूलत झूलत सरस हिंडोर प्रवीनैं ॥ ३ ॥ ५ ॥

गोस्वामी श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत ॥ राग बिहागरौ ॥

फूल डोल झूलत फूल भरे हैं। फूलि भरी सब सखी झुलावत फूल सिंगार करे है ॥ १ ॥ फूले राधा लाल ललित मुख गावत चित्त हरे है। जै श्री किशोरीलाल हित रूप महा मन सुख के सार ढरे है ॥ २ ॥ ६ ॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत ॥ राग बिहागरौ ॥

फूल डोल झूलत फूल भई। फूलन के खम्भ फूलन की पटुली फूलनि डाँडी नई　१　फूली फिरत सखिन में श्री

राधा फूलैं फूल छई। दामोदर हित सब व्रज फूल्यौ व्है रही फूल मई ॥ २ ॥ ७ ॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—फूलत फूल डोल मिलि दम्पति फूलि फूलि कुंजन जमुना तट। रितु बसंत फूल्ये वृन्दा-वन अनूठौ रंग फूल्यौ वंसीवट ॥ १ ॥ फूल्यौ रूप सुभग सारी में उज्जल रस फूल्यौ पियरे पट। फूली प्रीति नवल नैननि में फूल्यौ मैंन चैंन रंगीले घट ॥ २ ॥ हिय फूले वपु चरन वदन द्युति जिय फूले अभिलाषन के ठट। फूली रति तन मिलत उरनि उर मुख फूले अरुझनि कुंडल लट ॥ ३ ॥ फूल हुलसि अली रसना रचि गान तान संगीतनि गत नट। सहचरि सुख फूले मोहन छकि मुरली में जपत राधा रट ॥ ८ ॥

राग ईमनि—झूलत डोल झलकि अंग अंगनि राधा मोहन श्री वंशीवट। रूप वसंत खिले वर वैसनि ज्यौं वसंत फूल्यौ जमुना तट ॥ १ ॥ तकत सकत लाजन भीजत तन पुलक परसत नील पीत तट। सरस्यौ चहत हियनि अरुझत ज्यौं अर-झत हार अरुझि कुंडल लट ॥२॥ झोटा देति ललित ललितादिक गौर स्याम जिन रंग है जुगल घट। सहचरि सुख झलकत है मुकरनि में पिय नागरि व्है तिय नागर नट ॥ ३ ॥ ॥९॥

श्री सूरदासजी महाराज कृत—झूलत फूल डोल पिय प्यारी। अति सुकुमार फूल दोऊ बैठे, नवल कुँवरि गिरधारी ॥ वरन वरन फूलन की रचना चंपक वेलि निवारी। फूली सखी झुलावति गावत, रंग रह्यौ अति भारी ॥ वरषत कुसुम देव मुनि हरषत, फूलन की वर्षा री। मदन मोहन की या छवि निरखत सूरदास बलिहारी ॥ १० ॥

श्री विहारनिदासजी महाराज कृत डोल झुलावत कुँज विहारी। रमकि धरत पग नव जोवन भर, अति आनन्द दुलारी ॥ सारंग राग अलापत लाल रसाल दै दै कर तारी। कवहुँक हँसत हँसावत रीझ रिझावत प्रीतम प्यारी ॥ तव कर गहि लेत किशोर किशोरी पुलकि भरत अँकवारी। श्री विहारीदासि दंपति नव नव तन छवि पर छिन छिन वलिहारी ॥ ११ ॥

श्री प्रेमदासजी महाराज कृत-राग धनाश्री—माई री झूलत डोल लाड़िली लाल। झलकत अंग अनंग विशाल ॥टेक॥ चितवत दृग कोरनि नव वाल। मिल मिलात मुसकान रसाल ॥ कि रुरकत अलक झलक वर भाल। लुलकित उर पर मंजुल माल ॥ १ ॥ आनन पाननि भरे अनूप। चंचल नैंन ऐंन रस रूप ॥ मानौं फूले उभै सरोज। तिनमें खेलत खंजन मनोज ॥ २ ॥ झूमक सारी पहिरें भाम। खुभी कंचुकी उर अति स्याम। हेम वरन अतरौटा चारु। निरखि हरखि फूलति सुकुंवार ॥ ३ ॥ क्वणित किंकिनी कंकण खरें। नूपुर मधुर मधुर धुनि करें ॥ भरें अंक तजि संक उदार। लटकत कटि सोभा के भार ॥४॥ वेंनी गुही जुही के फूल। प्रथु नितंव पर विमली झूल ॥ चंचल कुण्डल मंडित गंड। कलंगीं हलत चंद्रिका अखंड ॥५॥ करत अधर मधु पान सलोल। प्रफुलित तन मन उठत कलोल ॥ प्रेमदासि हित जुत सुख पुंज। सदा वसौ मम नैंन निकुँज॥६॥१२॥

राग पूर्वी—झूलत फूल डोल पिय प्यारी फूलनि सौं सहचरी झुलावति। फुलनि के अभारन वसन सजि फुलि फुलि दम्पति कल गावत॥ १ ॥ फुलनि की नव कुंज मंजु में फुले शुक पिक वोल सुनावत। प्रेमदासहित स्यामां स्याम सुफुले चषकी कोर चलावत १३

राग कान्हरौ—झूलत रंगीले दोऊ फूलत छबीली भांति मंद मुसिकाति झरैं फूल सुखदाई है। फूले फिरैं चष चारु फूलनि के हलैं हार फूलनि की चंद्रिका सुकलंगी बनाई है ॥ १ ॥ फूलि रहे हाव भाव फूली सखीं चढ़े चाव फूलनि के अंबर में सब छबि छाई है। प्रेमदास हित वारी भरैं अंक पिय प्यारी फूल डोल पै कलोल आज बन आई है ॥ २ ॥ ॥ १४ ॥

राग कान्हरौ—फूलनि के महल में फूली महलनि अली फूलनि कौ फूल डोल रचत कलोल सौं। फूले फूले स्यामां स्याम झूलत है अभिराम चलत कटाच्छ फूले लोचन सलोल सौं ॥ १ ॥ फूलनि के भूषन भूषित भये अंग अंग वहत बयारि चारु फूल के निचोल सौं। प्रेमदास हित फूली गावैं संग अनु-कूली डुलत अलक लगि ललित कपोल सौं ॥ २ ॥ १५ ॥

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत।

राग राइसौ-ताल रूपक—फूलनि डोल सुहावनों झूलति हैं हरि राधा। सखीं झुलावति प्रीति सौं दुहूँ तन छवि जु अगाधा ॥ १ ॥ खंभनि रचना फूल की फूल मयारि सचे है। फूल बनें मरुवे सुभग बेलन फूल रचे है ॥ २ ॥ डाँडी कलशा फूल रचि पटुली फूल बनाई। फूलनि के वितान रचि फूलनि अवनी छाई ॥ ३ ॥ फूलनि झोटा देत अलि मनु फूली छवि बेली। फूलि फूलि लपटाति है प्रीतम सौं अलबेली ॥ ४ ॥ फूल झरत रमकनि ललित तरलित छवि सौं बैंनी। लै सौरभ आये मधुप कछु संकित मृग नैंनी ॥ ५ ॥ तन चंचल भामिनि भई छवि नहि परति बखानी। ओपी दामिनि कौंधि मनु ये घन अंक समानी ॥ ६ ॥ ललिता करि पटुली गही राखि राखि कह्यो

ः-मन वांछित भयौ रसिक पिय कुंवरि भई उर माला

७ । लाल पीत पट छोर लै अलिनि वारि मन फूलै वृन्दावन हित रूप बलि गौर स्याम मिलि झूलैं ॥ ८ ॥ १६ ॥

राग सारंग—बन्यौं फूलनि डोल सुहावनौं। झूलति है श्री राधा मोहन मिलि मधुरे सुर गावनौं ॥ १ ॥ जहाँ तरु बेलिनु कौ वन्यौं मंडफ रवि की किरिनि न आवनौं। झूमत है कुशुमनि के झूमक अलि कुल कलह मचावनौं ॥ २ ॥ अवनी अति कमनी रविजा तट चूर कपूर विछावनौं। जूथ अनंत फिरत है अलि जहाँ फूल सिंगार बनावनौं ॥ ३ ॥ विनु मित फूल भरी जिन तन मन दम्पति रुचि दुलरावनौं। चित्त चौंपनि सौं झोटा दै दै कहैं भयौ मन भावनौं ॥ ४ ॥ विधि विमान चढ़ि उतरतु मनु यह उपमा लघु जु दिखावनौं। यह वन्यौं डोल अलौकिक ताकें सम छवि कहा बतावनौं ॥ ५ ॥ कै सोभा के डबा रासि नग गौर स्याम दरसावनौं। विवि सुकुंवार फूल तक धरि कैं सखी दृग करनि उचावनौं ॥ ६ ॥ कै छवि भार उतारति झोटनि सुनि सखि यह मन लावनौं। कै प्राननि की थाती यातें फूलनि माँहि छिपावनौं ॥ ७ ॥ भूषन फूल डोल फूलनि के बैठे छवि जु बढावनौं। वृन्दावन हित रूप जलद कें रमकनि में वरषावनौं ॥ ८ ॥ १७ ॥

राग आसावरी—सहेली फूली डोल झुलावैं ॥ फूली पिय संग झूलति राधा रमकनि फूल बढ़ावैं ॥ १ ॥ फूलनि डोल बन्यौं अति कमनीं फूल वितान तनावैं ॥ फूलनि मुकुट काछनीं प्रिय तन पटुका फूल बनावैं ॥२॥ फलनि की सारी अरु चोली फूलि प्रिये पहिरावैं ॥ फूल चंद्रिका झुकी छकनि सौं फूल वदन दरसावैं

३　फलनि के भूषन ना ना विधि अंग अंग छवि पावैं

फूले अमल कमल पद कर वर हिय फूलनि सरसावैं ।४। फूल बनें तरु वेलि उर ऊपर अवनी फूल बिछावें ॥ वृन्दावन हित रूप फूल सों शुक पिक मंगल गावें ॥ ५ ॥ १८ ॥

राग बिहागरो ताल रूपक—झूलि झूलि री डोल सभागिनि जहाँ विविधि रंग फूलनि की रचना ॥ रसिक कंत संग अस छवि बाढ़ी तुव भ्रुव भंग मदन गन नचना ॥ १ ॥ नील वसन घूँघट मुख ढ़पि गयौ विनु देखैं रंचक पिय सचना ॥ अपनें कर निरवारन लपटे मनु मर्कत मणि कंचन खचना ॥२॥ सोभा सदन कपाट खुलै मनौं उपमा और लगी सब लचना । वृन्दावन हित रूप बलि गई रमकि निसंक डार तरु वचना ॥३॥१६॥

फूल डोल झूलत फूल वढ़ी है। फूले वदन विलोक परस्पर पानिप मदन चढ़ी है॥ फूली झोटा देत सखी जन मति गति प्रेम मढ़ी है। वृन्दावन हित रूप जाऊ वलि रमकनि फूल कढ़ी है२०

झूलनि डोल गुलाब पै, उर फूल भरी बतरानि। मूलनि भुज गरबाँह दै, विवि मोहनि मृदु मुसिकानि ॥ १ ॥ रंग रँगीली सहचरी त्यों रँगी प्रेम के लार। दम्पति लाड़ लड़ावनो कीयें निज उर कौ हार ॥ २ ॥ कोऊ तान अलापि कैं मन गति मति करत अपंग। अद्भुत परननि ताल सुनि छन होत सचेत उमंग ॥ ३ ॥ रमक झमक की वढ़नि में लागत ललना उर लाल। सखि लखि तन मन वारहीं हँसि प्रीतमु होत निहाल ॥ ४ ॥ उमग्यौ आनंद अम्बु निधि कहि को थाहनि समरत्थ। उछरनि डूबनि ह्वै रही हित कौतुक यौंहि अकत्थ ॥ ५ ॥ हित सहचरि हित डोल नित, नित नित हित प्यारी पीय। हित रूपा राधा [illegible] नित जीवन जीय ॥ ६ । २१ ।

* चैत चाँदनी के पद *

गो. श्रीकमलनैनजी महाराज—रागकेदारौ—श्री वृन्दावन उजियारी अरी कछु कही न जाई। बैठे लाल नागरी नागर अनंग अंग छवि छाई॥ फूली फूली कुंज चहुँ दिस को छवि वरनै माई। द्यौस रजनी कछु कहत न आवै पिय प्यारी सुखदाई॥ २॥ तलप सुदेस अति ही कोमल मनहु फेंन की बनाई। तहाँ सुख विलसत कमल नैंन हित निरखि सखी वलि जाई॥ ३॥ १॥

गो. श्री रूपलाल जी महाराज—राग शंकरा भरन—वदन विधु जोति उजारी निरखत लाल विहारी। रूप अनूपम वेली अंग अंग सीचि अमी रस फूली मैंन फुलवारी॥ १॥ मन मधुकर सुहाग सौरभ छकि सेवत अनुदिन आनंद वारी। जै श्री रूप लाल हित अलि अविलोकत इक टक रंध्रन सुधि बुधि सबै विसारी॥ २॥ २॥

गो. श्रीरसिक राय जी महाराज—राग कान्हरौ—चंद वारौं तेरे मुख ऊपर जोंन्ह पर वारौं आछे अंग की छवि। भौंहन पर धनुष भृंग नैंननि पर कमल मीन नासा पर चंपकली अधरनि पर विद्रुम वरनत वारों कवि।१। भुजन पर मृनाल वारि डारों कटि पर केहरि कदलि और गर्व गंजन मन रंजन नितंब मतंग की गति यातें गई दवि। धन सुहाग भाग पायो रचि पचि विधना बनायौ रसिक राइ श्रीराधा संग औसें सो है हीराढिंग चुनी फवि२

श्री हितमोहनजी॥ राग पंचम—निरखि सखी कुँज धाम केलि वेलि फूली। लपटी घनश्याम तमाल लटकि लटकि झूली॥१॥ आल वाल मंडल सखि रोचक जल नावै। मधुप मत्त नैंन छकि छवि सों छवि पावै २ वदन चंद चांदनी में

गोस्वामी श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत ॥ राग विहागरौ ॥

चाँदनी में डोलैं दोऊ चंद से उदित है। चाँदनी की शोभा देखैं चंद हूँ सकुचि जात कोटिक मयंक वारौं वदन मुदित है ॥१॥ वह एक पच्छि माहिं घटि बढ़ि ह्वै ह्वै जात ये तौ रहैं एक रस नित ही अखंड़ जोति। वह तो कलंक युत ये निह-कलंक सदा राधा हरि मुख देखैं यातें बलि बलि होति ॥ २ ॥ रति हूँ न नख जोर कौन त्रिया सम और कुंडल करन फूल दुति रवि की। जै श्री किशोरी लाल हित रूप रसिक दोऊ अखिल भुवन मानौं रासि सची छवि की ॥ ३ ॥ ५ ॥

श्री दामोदर स्वामी जी कृत—राजत मानौं राका निशि प्यारी। जगमगात गोरे तन की दुति तैसीय मंजुल उज्वल सारी ॥१॥ भूषन भूषित उड़गन शोभा अंग अंग सुन्दरतारी। चारु वदन सखि संपूरण ससि फैलि रही निर्मल उजियारी ॥ २ ॥ प्रीतम नैंन चकोर से पीवत हँसनि सुधा रस की वरषारी। दामोदर हित आनंद सागर वाढ़्यौ लालन उर सहचारी ॥ ३ ॥ ६ ॥

राग विहागरौ—तैसी निशि उजियारी तैसी तन सेत सारी तैसी वृन्दावन घन फूलीं फुलवारी। तैसी नव योवन प्यारी छूटी छवि छटा न्यारी ठाड़ी तहाँ सोभा वाढ़ी पिय सुखकारी ॥१॥ आनंद की वरषारी नेंननि रूप निहारी रीझ भरें अँकवारी रसिक विहारी। आसिस देत सहचारी कर अंचल लै वलिहारी दामोदर हित रति वरनौ क्हारी ॥ २ ॥ ७ ॥

श्री जगन्नाथजी महाराज कृत–राग नाइकी—जोंन्ह सी फूलि रही चहुँ ओर। निरखि लाल चक्र चौंधत वदन चन्द उजियारी प्रीतम चकोर ॥ १ हाव भाव लावन्य ललित गति उपजत छवि

छवि नहिं थोर　जगन्नाथ राधा पति　जीवन　अविचल रहौ यह जोर ॥ २ ॥ ८ ॥

श्री भगवत रसिकजी महाराज कृत–राग केदारौ––प्रिया या चाँदनी कौ छवि चन्द भई। कोटि कोटि चन्दनि की आभा रूप मई करी मोद मई ॥ १ ॥ रोम रोम रस प्रेम अमी निधि अंग अनंगनि जोति छई। भगवत मुदित विलास नई दुति पिय चकोर मिलि हरषि दई ॥ २ ॥ ६ ॥

श्री नागरियाजी महाराज कृत–राग परज––चाँदनी　छाइ　रही, आधी राति । अति सुकुमारी लडैती प्यारी प्रीतम उर　लपटाइ रही आधी राति ॥ उर सौ उर नैंनन सों नैंना मन सों मन अरु-भाइ रही आधी　राति ।　नागरिया　नागर　दोऊ प्यारे　हँसि चितवन मृदु मुसकाइ रही आधी राति ॥ १० ॥

चाचा श्री वृन्दावनदास जी　महाराज कृत–राग गौरी––चाँदनी महल में रास खेल आये । चाँदनी की चन्द्र भा ने चादर बिछाई मानों मानि कें सनेह राधालाल यों रिझाये ॥ १ ॥ चन्द्र ओर　देखि देखि कौतिक रच्यौ है और सुन्दर अधिक को है वदन मिलाये। सोभा है अधिक सखी युगल वदन विधु ससि लगे फीको सुनि दोऊ मुसिकाये ॥ २ ॥　राजति है चौदुतहाँ फटिक मणिन की दरसे अनेक तन तहाँ बैठाये। वृन्दावन हित रूप पुंज से प्रकास देखि कें सहेलिनु अलभ्य लाभ पाये ॥ ३ ॥ ११ ॥

श्री नित्यानन्द जीमहाराज–राग केदारौ––कुंज के आँगन में दोऊ व चाँदनी बैठे राजै। वरन वरन कुशुमनि सज्जा कोटि अनंगनि लाजै ।१ कहत बात मुसिकात परस्पर अति अनूप छवि छाजै

श्रीराधावल्लभजीकौ अष्टयाम सेवागान

मंगला सों शयन आरती पर्य्यन्त सातों आरतियों के पद

* मंगला समय के पद *

प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊँ । करौ कृपा श्री दामोदर मोपै श्री हरिवंश चरण रति पाऊँ ॥ गुण गंभीर व्यास नन्दन जू के तुव प्रसाद सुयश रस गाऊँ । नागरीदास के तुमही सहायक रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ ॥१॥ प्रात समय नव कुंज द्वार ह्वै ललिता जू ललित बजाई बीना । पौढ़े सुनत स्याम श्री श्यामा दंपति चतुर प्रवीन प्रवीना ॥ अति अनुराग सुहाग परस्पर कोक कला निपुण नवीन नवीना । श्री विहारिनदास बलि बलि बंदसि पर मुदित प्रांन न्यौछावर कीना ॥ २ ॥

अब ही नैक सोये हैं अरसाय । काम केलि अनुराग रस भरे जागे रैन विहाय ॥ बार बार सपनेहु सूचत सुख रंग रंग के भाय । यह सुख निरखत अलिजन प्रमुदित नागरीदास बलिजाय ॥ ३ ॥

मंगला आरती के पद—रौनक झल्लरी झनकार विविध कल बाजे बाजत । सुन धाईं अलि यूथ प्रेम भरि आरति साजत ॥ करत मंगल आरती सखी हाथ कंचन थार । मरगजे अंबर बने तन टुटे छुटे उर हार ॥ चौंरु चारु फहरात दुहुँ दिशि सुमुखी ढारति । कर कपूर वर्तिका नेह आरती उतारति ॥ इक गाहिकी गुण गावती एक बहु निरख दिखावति । एक बारने लेत एक कुसुमनि वरषावति ॥ अति शोभित गहवर बन जहँ तहँ कुजें कमनी । फूल बन्यो चहुँ ओर परम शोभित जिहिं अवनी ॥ श्रीराधा हरि चरण कमल परसन हित सरसती । अरुण उदय के भये कोटि विधि शोभा दरसती ४ ।

मङ्गला उपरान्त के पद नन्द के लाल हरयौ मन मोर हौं अपने मोतिन लर पोवत कांकर डारि गयौ सखि भोर ॥ वंक बिलोकनि चाल छबीली रसिक शिरोमणि नन्द किशोर । कहि कैसे मन रहत श्रवन सुनि सरस मधुर मुरली की घोर ॥ इन्दु गोविन्द वदन के कारण चितवन कों भये नैन चकोर । जय श्रीहित हरिवंश रसिक रस युवती तू ले मिलि सखी प्राण अकोर ॥ ५ ॥

धूप आरती के पद--आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी। ब्रज युवति यूथ में रूप अरु चतुरई, शील श्रृंगार गुण सवन तैं आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा बाम भुज अंश सखि-गावति सरस मिलि मधुर स्वर रागरी । सकल विद्या विदित रहसि श्रीहरिवंश हित, मिलत नव कुञ्ज वर श्याम बड भागरी ॥ ६ ॥

आज नागरी किशोर भाँवती विचित्र जोर कहा कहों अंग अंग परम माधुरी । करत केलि कण्ठ मेलि बाहु दण्ड-गण्ड गण्ड परस सरस रास लास मण्डली जुरी ॥ श्याम सुन्दरी बिहार बाँसुरी मृदंग तार, मधुर घोष नूपुरादि किंकिनी चुरी । जय श्री देखत हरिवंश आलि निर्तनी सुधंग चालि वारि फेर देत प्राण देह सौं दुरी ॥ ७ ॥

श्रृंगार समय के पद--बनी श्रीराधामोहन की जोरी। इन्द्र नील मणि श्याम मनोहर सात कुम्भ तन गोरी ॥ भाल विशाल तिलक हरि कामिनि चिकुर चन्द्र विच रोरी । गजनायक प्रभु चाल गयन्दनि गति वृषभानु किशोरी ॥ नील निचोल युवति मोहन पट पीत अरुण शिर खोरी । जय श्री हित हरिवंश रसिक राधा पति सुरत रंग में बोरी ॥ ८ ॥

बेसर कौन की अति नीकी। होड़ परी लालन अरु ललना चोंप पढ़ी अति जीकी॥ न्याव परथौ ललिताजू के आगे कौन ललित कौन फीकी। दामोदर हित विलग न मानौं झुकन झुकी राधे जु की॥ ६॥

दोहा–स्तुति श्रीयुगल ध्यान—श्री प्रिया वदन छवि चन्द मनौ, प्रीतम नैन चकोर। प्रेम सुधा रस माधुरी, पान करत निशि भोर। १ ॥ अंगन की छवि कहा कहौं, मन में रहत विचार। भूषन भये भूषननि कों, अति स्वरूप सुकुमार॥ २॥ सुरंग मांग मोतिन सहित, शीश फूल सुख मूल। मोर चन्द्रिका मोहनी, देखत भूली भूल॥ ३॥ श्याम लाल बेंदी बनी, शोभा बनी अपार। प्रगट बिराजत शशिन पर, मनौ अनुराग सिंगार॥ ४॥ कुण्डल कलि ताटक चल, रहे अधिक जलकाइ। मनो छवि के शशि भानु जुग, छवि कमलनि मिलि आइ॥ ५॥ नासा वेसर नथ बनी, सोहत चञ्चल नैन। देखत भाँति सुहावनी, मोहे कोटिक मैन॥ ६॥ सुन्दर चिबुक कपोल मृदु अधर सुरंग सुदेश। मुसकनि बरषत फूल सुख, कहि न सकत छवि लेश॥ ७॥ अंगनि भूषनि झलकि रहे, अरु अंजन रंग पान। नवसत सरवर तें मनौ, निकसे करि स्नान॥ ८॥ कहि न सकत अंगन प्रभा, कुंज भवन रह्यौ छाइ। मानौ बागे रूप के, पहिरे दुहुन बनाइ॥९॥ रतनांगद पहुँची बनी बलया बलय सुढ़ार। अंगुरिन मुंदरी फबि रही, अरु महँदी रंग सार॥ १०॥ चन्द्र-हार मुक्तावली राजत दुलरी पोति। पानि पदिक अरु जग मगे, प्रतिविम्बित अंग जोति॥ ११॥ मनिमय किंकिनि जाल जोइ सोइ थोर। मनौ रूप दीपावली, झलमलात

चहुँ ओर १२ जेहरि सुमिलि अनूप वनी नूपुर अन-वट चारि . और छाँड़ि के या छबिहि, हिय के नैन निहारि ॥ १३ ॥ बिछुवनि की छवि कहा कहौं, उपजत रव रुचि दैन । मनौ सावक कल हंस के, बोलत अति मृदु बैन ॥ १४ ॥ नख पल्लव सुठि सोहने, शोभा वढ़ी सुभाइ । मानौ छवि चन्द्रावली कंज दलन लगी आइ ॥ १५ ॥ गौर वरन साँवल चरण, रचि मेंहदी के रंग । तिन तरुवनि तर लुटत रहें, रति जुत कोटि अनंग ॥ १६ ॥ अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार । इक छत प्रेम छके रहें, अद्भुत प्रेम-विहार ॥ १७ ॥ अनुपम श्यामल गौर छवि, सदा बसहु मम चित्त । जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रहें नित्त ॥ १८ ॥ वरनै दोहा अष्टदस, युगल ध्यान रसखान । जो चाहत विश्राम ध्रुव, यह छवि उर में आन ॥ १९ ॥ पलकनि के जैसे अधिक, पुतरिन तें अति प्यार । ऐसे लाड़िली लाल के, छिन-छिन चरण सँभार ॥ २० ॥ ॥ १० ॥

राज भोग के पद—भोजन कुंज में चलि आये । जैसी ऋतु वैसी बैठक में, हित सों लै बैठाये ॥ भूषण वसन उतार उचित पुनि, औलाई पहिराये । कुल्ला करि रुमाल पोंछि तब, निज दासी मन नैन सिराये ॥ ११ ॥

अली लै आई राजभोग के थार। निखरी शखरी सामिग्री बहु विधि रचि मधुर सलौनी विचार ॥ दम्पति सन्मुख बैठी निज अलि बीच धरॅयो लै थार। वे जेंवति ये जिंवावति हित सों, कोऊ न मानत हार प्रथम कौर प्यारी मुख दै पुनि, प्रीतम

हँसावति नारि ॥ कबहुँ कौर प्यारी निज अलि मुख, देत लेत अति प्यार । सो प्रसाद लालन सब सहचरि, हँसि-हँसि देत उदार ॥ खवाय प्याय अँचवन दै बीरी, प्रीतम लियो उगार । बैठे आइ निज सिंहासन पै, निज दासी बलिहारी ॥ १२ ॥

अथ राजभोग की आरती—नवल घनश्याम नवल वर राधिका, नवल नव कुंज नव केलि ठानी । नवल कुसुमावलि नवल सिज्या रचित, नवल कोकिल कीर भृङ्ग गानी । नवल सहचार वृन्द नवल वीणा मृदंग, नवल स्वर तान नव राग वानी । जय श्री नवल गोपीनाथ हित नवल रस रीति सों, नवल हरिवंश अनुराग दानी ॥ १३ ॥

राज भोग की शयन—कियो गवन सैन भवन प्राण प्यारी प्राण रवन, रचत चोज रस मनोज पोढ़े सचु पाई । मणिनु को प्रकाश जहाँ सौरभ उदगार तहाँ, पान डबा झारी जल धरी तहाँ जाई ॥ नेह भरी गुननि भरी दंपति सुख लार ढरी, मृदुल करन चाँपि चरन बाहर सखि आई । बलि बलि वृन्दावन हित रूप जुगल रसिक भूप, तिनकी रस केलि हिये संपति सचि लाई ॥ १४ ॥

अथ उत्थापन समय के पद—श्री राधा मेरे प्राणन हू ते प्यारी । भूलि हू मान न कीजै सुन्दरि हौं तो शरण तिहारी ॥ नैक चितै हँसि बोलिये मोतें खोलिये घूँघट सारी । जय श्रीकृष्णदास हित प्रीति रीति बस भर लई अङ्कन वारी ॥ १५ ॥

प्रीतम मेरे प्राणन हू तें प्यारो । निशिदिन उर लगाये रहौ हित सों नैक न करिहौं न्यारो ॥ देखत जाहि परम सुख उपजत रूप रंग गुण गारो । जै श्री कमल नयन हित सुनि प्रिय बैनन तन मन धन सब वारौ ॥ १६ ॥

के चतुराई कार जु हँसत हो ॥ लीजिये परखि सरूप आपनो पुत-
रिन में प्यारे तुमहि लसत हो । बृन्दावन हितरूप बलि गई कुंज
लड़ावत हिय हुलसत हो ॥ १७ ॥

ऐसी करो नव लाल रंगीले जू चित्त न और कहूँ ललचाई ।
जे सुख दुःख रहे लगि देह सों ते मिटि जाहिं और लोक बड़ाई ॥
संगति साधु वृन्दावन कानन तुव गुण गावन माँझ विहाई ।
छवि कंज चरण तिहारे वसौ उर देहु यहै ध्रुव कों ध्रुवताई ॥१८॥

शोभित आज रंगीली जोरी । सुन्दर रसिक नवल मनमोहन
अलबेली नव वयस किशोरी ॥ बेशर उभय हँसन में डोलति सो
छवि लेत प्राण चित चोरी । हित ध्रुव फँदी मीन यह अँखियाँ
निरखत रूप प्रेम की डोरी ॥ १६ ॥

सहज स्वभाव परयौ नवल किशोरी जू कौ मृदुता दयालुता
कृपालुता की राशि हैं । नेक हू न रिस कहूँ भूलि हू न होत
सखि रहत प्रसन्न सदा हिये मुख हाँसि है । ऐसी सुकुमारी प्यारे
लाल जू की प्राणप्यारी धन्य धन्य धन्य तेई जिनके उपासि हैं ।
हित ध्रुव और सुख देखियत जहँ लगि सुनियत तहँ लगि सबै
दुख पासि हैं ॥ २० ॥

किशोरी तेरे चरणन की रज पाऊँ । बैठि रहौं कुंजन के
कोने श्याम राधिका गाऊँ ॥ जो रज शिव सनकादिक याँचत
सो रज शीश चढ़ाऊँ । व्यास स्वामिनी की छवि निरखत विमल
विमल यश गाऊँ ॥ २१ ॥

किशोरी मोहिं अपनी करि लीजै । और दियें कछु भावत
नाहीं वृन्दावन रज दीजै ॥ खग मृग पंछी जे या वन के चरण

शरण रख लीजै। व्यास स्वामिनि की छबि निरखत महल टहलनी कीजै ॥ २२ ॥

परम धन राधा नाम अधार। जाहि स्याम मुरली में गावत, सुमिरत बारंबार॥ वेद तंत्र अरु जंत्र मंत्र में, एहिं कियौ निरधार। सहचरि रूप धरयौ नंद नन्दन, तोउ न पायौ पार॥ श्रीशुक प्रगट कियौ नहिं यातै, जानि सार कौ सार। व्यास दास अब प्रगट बखानत, डार भार में भार ॥ २३ ॥

ऐसो कब करिहौ मन मेरौ। कर करुआ कांमरि काँधे पै, कुंजन मांझ बसेरौ॥ बृज बासिन के टूँक भूख में, घर घर छाछ महेरौ। भूख लगै जब माँग खाऊँगौ, गनौं न साँझ सवेरौ॥ रास विलास वृत्ति कर पाऊँ, मेरे खूट न खेरौ। व्यासदास होय वृन्दावन में, रसिक जनन कौ चेरौ ॥ २४ ॥

अथ संध्या भोग के पद—नमो नमो जय श्री हरिवंश। रसिक अनन्य वेणु कुल मंडन लीला मान सरोवर हंस॥ नमो (जयति) वृन्दावन सहज माधुरी रास विलास प्रसंस। आगम निगम अगोचर राधे चरण सरोज व्यास अवतंश ॥ २५ ॥

श्री हरिवंश शरण जे आये। श्री वृषभान कुंवरि नँदनंदन निज कर अपनी चिठी चढ़ाये॥ दिये मुकराय कछू नहिं गायौ किये मनोरथ मन के भाये। श्री व्यास सुवन चरणन रज परसत नागरीदास से रंक जिवाये ॥ २६ ॥

जिनके श्रीहरिवंश सहायक। तेई सजन भजन अधिकारी वृन्दावन धन बसिवे लायक॥ अलक लड़े आनन्द भरें डोलैं सिर पर व्यास सुवन सुख दायक। कुंवरि कुंवर जाहि सुलभ रसिक शिरोमणि के गुण गायक २७

रस सानी जय श्री रूपलाल हित हाथ बिकानी निधि पाई मन मानी २८

रहौ कोउ काहू मनहिं दियें । मेरे प्राणनाथ श्री स्यामा सस करौ तृण छियें ॥ जे अवतार कदम्ब भजत हैं धरि दृढ़ व्रत जे हियें । तेऊ उमगि तजत मर्यादा बन विहार रस पियें ॥ खोयें रतन फिरत जे घर घर कौन काज ऐसे जियें । जय श्रीहित हरिवंश अनत सचु नाहीं बिन या रजहिं लियें ॥ २६ ॥

हम कब ह्वै हैं व्रजवासी । ठाकुर नन्दकिशोर हमारे ठकुराइन राधासी ॥ सखी सहेली नीकी मिलि हैं हरिवंशी हरिदासी । वंशीवट की शीतल छाया सुभग बहै यमुनासी ॥ जाकी वैभव करत लालसा कर मीड़त कमलासी । इतनी आस व्यास की पुजवौ वृन्दाविपिन विलासी ॥ ३० ॥

अब मैं श्रीवृन्दावन धन पायौ । राधेजू चरण शरण मन दीनौं श्रीहरिवंश बतायौ ॥ सोयौ हुतौ विषय मंदिर में हित गुरु टेरि जगायौ । अब तो व्यास विहार विलोकत शुक नारद मुनि गायौ ॥ ३१ ॥

प्यारी लागै श्री वृन्दावन की धूरि । राधे जू रानी मोहन राजा राज्य सदा भरि पूरि ॥ कनक कलश करुवा महमूँदी खासा ब्रज कमरिनु की चूरि । व्यासहि श्री हरिवंश बताई अपनी जीवन मूरि ॥ ३२ ॥

दोहा—आय विराजे महल में, सन्ध्या समयौ जानि ।
आली ल्याई भोग सब, मेवा अरु पक्वान

सन्ध्या भोग अली लै आई। पेड़ा खुरमा और जलेबी मोदक मगद मलाई॥ कंचन थार धरे भरि आगें पिस्ता अरु बादाम रलाई। खात खवावत लेत परस्पर हँसन दसन चमकन अधिकाई॥

दोहा——अद्भुत मीठे मधुर फल, ल्याई सखी बनाय।
खवावत प्यारे लालकों, सु पहिले प्रियहि पवाय॥

पाणि परस सुख देत बीड़ी पिय तिय तब नयननमें मुसिकाई। ललितादिक सखी कमल नयन हित धनि दिन मानत आपनो माई॥ ३३॥

पाग बनी पटुका बन्यौ, बन्यौ लाल कौ भेष।
श्रीराधावल्लभलाल की, सु दौरि आरती देख॥

अथ नामध्वनि——जय जय राधावल्लभ गुरु हरिवंस। रंगीलौ राधावल्लभ हित हरिवंश॥ छबीलौ राधावल्लभ प्यारौ हरिवंश। रसीलौ राधावल्लभ जीवन हरिवंश॥ श्रीहरिवंश जय जय हरिवंश।

अथ श्री सन्ध्या आरती के पद

आरति कीजै श्यामसुन्दर की। नन्द के नन्दन राधिका वर की॥
भक्ति कर दीप प्रेम कर बाती। साधु संगति करि अनुदिन राती॥
आरति ब्रजयुवति यूथ मनभावै। श्यामलीलाश्रीहरिवंश हितगावैं॥
सखि चहुँओर चँवर कर लीये। अनुरागन सों भीने हीये॥
सनमुख वीणा मृदंग बजावैं। सहचरि नाना राग सुनावैं॥
कंचनथार जटित मणि सोहैं। मध्य वर्तिका त्रिभुवन मोहैं॥
घण्टा नाद कह्यौ नहिं जाई। आनन्द मंगल की निधि माई॥
जयति२ यह जोरी सुखरासी। जय श्रीरूपलाल हितचरण निवासी॥
... कीजै। निरखि नयनछवि लाहोलीजैं

अथ सन्ध्या समय स्तुति के दोहा-

चन्द्र मिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार दृढ़ व्रत श्री हरिवंश कौ, मिटै न नित्य विहार ॥ १ ॥ जोरी युगल किशोर की, और रची विधि वाद । दृढ़ व्रत श्री हरिवंश को, निबह्यौ आदि युगादि ॥ २ ॥ निगम ब्रह्म परसत नहीं जो रस सबतें दूरि । कियौ प्रगट हरिवंशजू रसिकन जीवन मूरि ॥ ३ ॥ रूप वेलि प्यारी बनी सु प्रीतम प्रेम तमाल । दोऊ मन मिलि एकै भये श्रीराधावल्लभ लाल ॥ ४ ॥ निकसि कुंज ठाढ़े भये भुजा परस्पर अंश । श्रीराधाबल्लभ मुख कमल निरखि नयन हरिवंश ॥ ५ ॥ रे मन श्री हरिवंश भज जो चाहत विश्राम । जिहि रस बस व्रज सुन्दरिन छाड़ि दिये सुखधाम ॥ ६ ॥ निगम नीर मिलि एक भयो भजन दुग्ध सम स्वेत । श्रीहरिवंश हंश न्यारौ कियौ प्रगट जगत के हेत ॥ ७ ॥

कुण्डलिया—श्री राधाबल्लभ लाड़िली अति उदार सुकुमारि । ध्रुव तो भूल्यौ ओर तें तुम जिन देहु विसारि ॥ तुम जिन देहु विसारि ठौर मोकों कहुँ नाहीं । पिय रंग भरी कटाक्ष नेक चितवौ मो माही ॥ बढ़ै प्रीति की रीति बीच कछु होय न बाधा । तुम हौ परम प्रवीण प्राण वल्लभ श्री राधा ॥ ८ ॥

दोहा—विसरिहौं न विसारिहौं यही दान मोहि देहु । श्रीहरिवंश के लाड़िले मोहि अपनी कर लेहु ॥ ९ ॥ कैसोउ पापी क्यों न हो श्रीहरिवंश नाम जो लेय । अलक लडैती रीझि कैं महल खवासी देय ॥ १० ॥ महिमा तेरी कहा कहूँ श्रीहरिवंश दयाल । तेरे द्वारें वटत हैं सहज लाड़िली लाल ॥ ११ सब अधमन कौ भूप हौं नाहिन कछु समझन्त

अधम उधारन व्यास सुत यह सुनि कें हर्षन्त ॥ १२ ॥ वन्दों श्रीहरिवंश के चरण कमल सुख धाम। जिनकों वन्दत नित्य ही छैल छबीलो श्याम ॥ १३ ॥ श्रीहरिवंश स्वरूप कों मन बच करों प्रणाम। सदा सनातन पाइये श्री वृन्दावन धाम ॥ १४ ॥ जोरी श्री हरिवंश की श्री हरिवंश स्वरूप। सेवक वाणी कुंज में विहरत परम अनूप ॥१५॥ करुणानिधि अरु कृपानिधि श्रीहरिवंश उदार। वृन्दावन रस कहन कौं प्रगट धर्यौ अवतार ॥ १६ ॥ हित की यहाँ उपासना हित के हैं हम दास। हित विशेष राखत रहौं चित नित हित की आस ॥ १७ ॥ हरिवंशी हरि अधर चढ़ि गूँजत सदा अनन्द। दृग चकोर प्यासे सदा पाय सुधा मकरन्द ॥ १८ ॥ श्री हरिवंशहि गाय मन भावे यश हरिवंश। हरिवंश बिना नहिं निकासिहौं पद निवास श्रीहरिवंश ॥ १६ ॥ ॥ ३५ ॥

दीजै श्री वृन्दावन वास। निरखूं श्री राधाबल्लभ लाल कौं लड़ैती लाल कौं ॥ यह जोरी मेरे जीवन प्राण निरखूं श्री राधावल्लभ लाल कौं लडैती लाल कौं। मोर मुकुट पीताम्बर उर बैजन्ती माल ॥ निरखूं० ॥ यमुना पुलिन वंशीवट सेवा कुँज निज धाम ॥ निरखूं० ॥ मण्डल सेवा सुख धाम, मान सरोवर वाद ग्राम ॥ निरखूं० ॥ वंशी बजावै प्यारो मोहना लै लै राधा राधा नाम ॥ निरखूं० ॥ देखो या व्रज की रचना नाचें युगल किशोर ॥ निरखूं० ॥ चन्द्र सखी कौ प्यारौ। श्री राधाजू कौ प्यारौ। गोपिन को प्यारौ। विरज रखवारौ। श्री हरिवंश दुलारौ। दर्शन दीजो दीनानाथ, ये जी दर्शन दीजो हितलाल ॥ निरखूं० ॥ यह जोरी मेरे जीवन प्राण निरखूँ

श्री राधावल्लभलाल कौ लड़ैती लाल कौ ३६ ।

इति श्री सन्ध्या स्तुति के दोहा पद सम्पूर्ण ।

अथ शयन भोग के पद—लाड़िलीलाल राजत रुचिर कुंज में। अरगजा अंग रँग रँग बागे बने दोऊ जन प्रेम सों सने रस पुंज में॥ निर्त्तत ठाड़ी अली भली गति भेद सों रैन पहिली जाम एक अलि गुंज में। परयौ परदा धरयौ सैन कौ भोग पय पूरी भर थार श्री ब्रजलाल कर मुँज में॥ ३७॥

सैन भोग ल्याई भर थारी। रुचिर कचौरी पूवा पूरी मोहन भोग जेंवत पिय प्यारी। धरे कटारा भरे मुरब्बा सरस सधानें वर तरकारी। औट्यौ दूध रजत भाजन भरि ता मधि पीस शिता बहु डारी॥ ३८॥

भोजन सैन समय करवावत। लुचई मोहन भोग अमिरती मिश्री फैंनी दूध मिलावत। दृग कोरनि मधि हँसत परस्पर रद छद परसत ललन खवावत॥

राधा मोहन लाल व्यारू कीजे। पूरी दूध मलाई मिश्री पहिलैं कौर श्री प्रिया को दीजे॥ जैंमत लाल लड़ैती दोऊ ललितादिक निरखत सुख भीजे॥ ३९॥ करत राधा मोहन व्यारू, बैठे सदन मिलि सोहैं। एक थारी एकै जल झारी एक वैस एक रूप उजारी॥ मधु मेवा पकवान मिठाई दंपति अति रुचिकारी। राधा प्यारी को करवावत प्यारो लाल, प्यारे को करवावत प्यारी॥ दूध सिराय लै आई श्री ललिता, प्यारी जू पियौ, प्यारौ लाल करै मनुहारी॥ ४०॥ हँसि हँसि दूध पीवत बाल। मधुर वर सौंधे सुवासित रुचिर परम रसाल॥ भ्रुव भंग रंग अनंग वितरत चितै मोहन ओर। सुधा निधि मनौं प्रेम धारा

पुषित त्रिषित चकोर ॥ प्यारौ लाल रस लंपट सुकर अचवाय मुख छवि हेर । लेत तव अवशेष आपुन परे मनमथ फेर ।४१ पिय पै धरयौ कनक कटोर । सुगंध एला मिल्यौ मिश्री लेत देत निहार ॥ वलि जाऊँ कवहुं मेलै कवहुं हेलैं कर कटाक्षनि कोर । मुख कला निधि मनौं सुधा पीवत सखिन नैंन चकोर।४२। हँसि हँसि दूध पीवत पिय प्यारी । चन्दन वार कनक चिर ओटयौ वारौं कोटि सुधारी ॥ मिश्री लौंग चिरौंजी एला कपूर सुगंध सँवारी । उज्वल सरस सचिक्कन सुन्दर स्वाद सुमिष्ट महारी ॥ ४३ ॥ नवल नवेली अलवेली सुकुमारी जू कौ, रूप पिय प्रानन को सहज अहार री । व्यंजन सुभायन के नेह घृत सौं वने, रोचक रुचि रहैं अनूप अति चारु री ॥ नैंनन की रसना तृपित न होत क्यों हू, नई नई रुचि ध्रुव वढ़त अपार री । पानिप कौं पानी प्याय पान मुसिक्यान खवाय, राधे उर सेज स्वाय पायो सुख सार री ॥ ४४ ॥

सैंन आरती—नागरी निकुंज ऐंन किसलय दल रचित सैन कोक कला कुशल कुमरि अति उदार री । सुरत रंग अंग अंग हाव भाव भृकुटी भंग माधुरी तरंग मथत कोटि मार री ॥ मुखर नूपुरनि स्वभाव किंकिणी विचित्र राव, विरमि विरमि नाथ वदत वर विहार री । लाड़िलीकिशोर राज हंश हंसिनी समाज, सींचत हरिवंश नैंन सुरस सार री ॥ ४५ ॥

श्री भगवत रसिक जी कृत—पौढ़े दोऊ ललित लतान तरें सुमन सेज सुखराशि सनेही अधरनि अधर धरे ॥ उरजनि उरज जोरि कटि सौं कटि लपटि भुजानि भरें । यह रस मत्त मगन मन [illegible] आवस वीजन करें

* रसिक नाम ध्वनि कीर्तन *

जय जय राधाबल्लभ गुरु हरिवंश। रंगीलौ राधाबल्लभ हित हरिवंश ॥ छबीलौ राधाबल्लभ प्यारौ हरिवंश। रसीलौ राधाबल्लभ जीवन हरिवंश ॥ श्रीवृन्दावन रानी राधाबल्लभ नृपति प्रशंस हितके बस यश रस उर धरिये करिये श्रुत अवतंश ॥ वंशीवट यमुना तट धीर समीर पुलिन सुखपुंज। विहरत रंग रँगीलौ हित सों मण्डल सेवाकुंज ॥ ललित विशाखा चम्पक चित्रा तुंगविद्या रंग देवी। इन्दुलेखा अरु सखी सुदेवी सकल यूथ हित सेवी ॥ श्रीवनचन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र श्रीगोपीनाथ श्रीमोहन। नाद विन्दु परिवार रंगीलौ हितसों नित छवि जोहन ॥ नर वाहन ध्रुवदास व्यास श्रीसेवक नागरीदास। बीठल मोहन नवल छबीले हित चरणन की आस ॥ हरीदास नाहरमल गोविन्द जैमल भुवन सुजान। खरगसेन हरिवंश दास परमानन्द के हित प्रान ॥ गंगा यमुना कमंठी अरु भागमती ये बाई। हित के चरण शरण ह्वै कैं इन दम्पति सम्पति पाई ॥ दास चतुर्भुज कन्हर स्वामी अरु प्रबोध कल्याण। स्वामी लाल दमोदर पुहुकर सुन्दर हित उर आन ॥ हरीदास तुलाधार और यशवन्त महामति नागर। रसिकदास हरेकृष्ण दोऊ ये प्रेम भक्ति के सागर ॥ मोहन माधुरी दास द्वारिकादास परम अनुरागी। श्याम शाह तूमर कुल हित सों दम्पति में मति पागी ॥ श्रीहित शरण भये अरु अब हैं फेरहु जे जन ह्वै हैं। प्रेम भक्ति उर चाव भाव सों वृन्दावन निधि पैहैं ॥ रसिक मण्डली में या तन कों नीके ढंग लगावो। दम्पति यश गावो हर्षावो हित सों रीझि रिझावो ॥ देवन को

क्यो जान बूझ बिसराई .. एक अहंता ममता ये है जग मे अति दुखदाई। ये जब श्री जू की ओर लगें तव होत परम सुख-दाई ॥ मात तात सुत दार देह में मति अरुझै मति मन्दा। श्रीहित किशोर की ह्वै चकोर तू लखि श्रीवृन्दावन चंदा ॥४६॥

अथ राधारानी रास मंडल (सेवाकुंज) की आरती

जै जै हो श्री राधे जू मैं शरण तिहारी मैं शरण तिहारी लोचन आरती जाऊँ बलिहारी ॥ जै जै हो राधे० ॥ पाट पटा-म्बर ओढ़े नील सारी शीश के सेंदुर जाऊँ बलिहारी ॥ जै जै हो राधे० ॥ रतन सिंहासन वैठो श्रीराधे, आरति करैं हम पिय संग जोरी ॥ जै जै हो राधे० ॥ झलमल झलमल मानिक मोती अबलख मुनि मोहे पिय संग जोरी ॥ जै जै हो राधे० ॥ श्री राधे पद पंकज भगति की आशा दास मनोहर करत भरोसा ॥ जै जै हो राधे० ॥ श्री राधाकृष्णजू की जाऊँ बलिहारी ॥४७॥

सैंन के पद—चांपत चरन मोहन लाल । कुंवरि राधे पलंग पौढ़ी सुन्दरी नव बाल ॥ कबहूँ कर गहि नैन लावत कबहुँ छुवा-वत भाल। नन्ददास प्रभु छवि विलोकत प्रीति के प्रतिपाल ॥४८॥

लड़ैती जू के नैंनन नींद घुरी । आलस वश जोवन वश मद वश पिय के अंश ढुरी ॥ पिय कर परस्यौ सहज चिवुक वर बांकी भौंह मुरी। बावरी सखी हित व्यास सुवन बल देखत ललन दुरी ॥ ४६ ॥

चरण पलोटति हित अली प्यारी । पौढ़े विवि सुख सेज प्रिया पिय राजत चित्रित री चित्रसारी॥ अंग अंग अरुझे अरसाने आनंद मगन महारी। विजन करति हित रूप सहचरी छवि लखि पुनि पुनि बलिहारी । ५० ।

गो० श्रीहितहरिवंशचन्द्र महाप्रभुजी कौ जनम वैसाख सुदी ११ एकादसी कौ

उत्सव प्रारम्भ–चैत सुदी पूर्णमासी से–मंगल बधाई गान शृङ्खला

श्री सेवक (दामोदर दास जी) महाराज कृत ॥ मंगल राग सूहौ विलावल ॥

यह मङ्गल नित्य होय है।

जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मंडना। रसिक अनन्यनि मुख्य गुरु जन भय खंडना॥ श्री वृन्दावन वास रास रस भूमि जहाँ। क्रीड़त श्यामा स्याम पुलिन मंजुल तहाँ॥ पुलिन मंजुल परम पावन त्रिविधि तहाँ मारुत वहै। कुंज भवन विचित्र शोभा मदन नित सेवत रहै॥ तहाँ संतत व्यास नंदन रहत कलुष विहंडना। जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मंडना॥ १॥ जै जै श्री हरिवंश चंद्र उदित सदा। द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा॥ पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी। करुणा सिंधु कृपाल काल भय सब हरी॥ हरी सब कलिकाल की भय कृपा रूप जु वपु धरयौ। करत जे अनसहन निंदक तिनहुँ पै अनुग्रह करयौ॥ निरभिमान निर्वैर निरुपम निहकलंक जु सर्वदा। जै जै श्री हरिवंश चंद्र उदित सदा॥ २॥ जय जय श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी। सारा सार विवेकित कोविद बहु गुनी॥ गुप्त रीति आचरण प्रगट सब जग दिये। ज्ञान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये॥ भक्ति हित जे शरण आये द्वन्द दोष जु सब घटे। कमल कर जिन अभय दीनें कर्म बंधन सब कटे॥ परम ल पाहि स्वामिनि मम धनी जय जय

श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी । २ जय जय श्री हरिवंश नाम गुन (जो नर) गाइ है। प्रेम लच्छणा भक्ति सुदृढ़ करि पाइ है॥ अरु बाढ़े रस रीति प्रीति चित ना टरै। जीति विषम संसार कीरति जग विस्तरै॥ विस्तरै सब जग विमल कीरति साधु संगति ना टरै। वास वृन्दावन विपिन पावै श्री राधिका जु कृपा करैं॥ चतुर जुगल किशोर सेवक दिन प्रसादहि पाइ है। जय जय श्री हरिवंश नाम गुण (जो नर) गाइ है।४।१।

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत बधाई—मधुरितु माधव मास सुहाई। भाग प्रकाश व्यास नंदन मुख फूल्यौ कमल अमल छबि छाई॥ श्रवत मधुर मकरन्द सुयश निज कुंज केलि सौरभ सरसाई। सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन कृष्णदास सुख सार सदाई ॥२॥

गोस्वामी श्री कमल नैंन जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

रसिक राग रंग सुरस प्रकट भयौ आजु अवनि महा मोद मंगल ब्रज कुंज कुंज छायौ। जनमत हरिवंश चन्द अमृत कंद व्यास नन्द कर्म धर्म भर्म तिमर नैंन कौ नसायौ ॥१॥ फूले हैं अनन्य मुकुद जुगल सुयश सरनि मांझ अनुरागे आनंद उदौ सबके मन भायौ*। गावत विवि विविधि बधाई भावक अलि जियनि भाई उज्जल फल सुफलता कौ सोहिलौ सुहायौ ॥२॥ उलहे बरन लीला ललित रूप दलनि श्याम गौर ललितादिक छकनि कौ विनोद सबनि पायौ। श्रीकमलनैंन सदन संपति राधा इष्ट कौ प्रताप हुलसि हुलसि सहचरि सुख रसनादुलरायौ ॥३॥३॥

* गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी महाराज कृत ॥ राग विलावल ॥ *

आनंद आज नंद के द्वार। दास अनन्य भजन रस कारण मनोहर ग्वार॥ चंदन सकल धेनु तन मंडित कुसुम

पीपर की डार ॥ जुवति यूथ मिल गोप विराजत बाजत पणव मृदंग सुतार जै श्री हित हरिवंश अजिर वर वीथिनु दधि मधु दूध हरद के खार ॥ ४ ॥

पद—चलौ वृषभानु गोप के द्वार । जन्म लियौ मोहन हित श्यामा आनंद निधि सुकुमार ॥१॥ गावत जुवति मुदित मिलि मंगल उच्च मधुर धुनि धार । विविध कुसुम किशलय कोमल दल शोभित वंदन वार ॥२॥ विदित वेद विधि विहित विप्र वर, करि स्वस्तिनु उच्चार । मृदुल मृदंग मुरज भेरी डफ दिवि दुंदुभि रव कार ॥ ३ ॥ मागध सूत वंदी चारण जस कहत पुकार पुकार । हाटक हीर चीर पाटम्बर देत सम्हार सम्हार ॥ ४ ॥ चंदन सकल धेनु तन मंडित चले जु ग्वाल सिंगार । जय श्री हित हरिवंश दुग्ध दधि छिरकत मध्य हरिद्रा गार ॥ ५ ॥ ५ ॥

गोस्वामी श्री रूपलाल जी महाराज कृत—राग जैतश्री

आजु सुहेलरा श्री व्यास मिश्र घर प्रगटे श्री हित हरिवंश ॥टेक॥ धन्य धन्य श्री तारा रानी द्विज कुल कियौ है प्रकाश । रसिक अनन्यनि कौ हिय हरष्यौ सफल भयौ वन वास ॥१॥ प्रेमा भक्ति उदोति ललित मुख सुख शोभा की सींवा । कनक कूट दुति अंग अंगछबि निरखि सकल जन जींवा ॥२॥ उदौ भयौ श्रीव्यास मिश्र वर तन मन नैंन सिराये । कोटि सुकृत की संपति पाई आनंद मोद बधाये ॥ ३ ॥ धुजा पताका घर घर राजैं मंगल कलशनि सोहैं । मणि गन वन्दन माल चँदोवा सुरपति के मन मोहै ॥४॥ गावत नाचत प्रमुदित ह्वै ह्वै नर नारी रंग भीनें । पुलकित गद गद भूषन बसननि देत प्रेम रस लीनें ॥ ५ ॥ धुरत निसान

भेरि सहनाई जय जय बानी छाई । जय श्री रूपलाल हित श्री वृन्दावन आनंद की निधि आई ॥ ६ ॥ ६ ॥

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत ॥ राग हमीर–ताल मूल ॥ असीस कौ

आज द्विज राज भवन रंग रलियां । अपनैं अपनैं टोल वधू मिलि आवति सोभित गलियां ॥ इक सजि सजि ठाढ़ी भई पौरिनु गावति गीत मिली दस अलियां । वृन्दावन हित एक ललन लखि दै असीस घर चलियां ॥ ७ ॥

गो. श्रीसदानन्दजी महाराज कृत ॥ मंगल ॥ राग सूही बिलावल ॥ वैशाख वदी१

मंगल श्री हरिवंश सदा मंगल जहाँ । मंगल रूप रसाल नाम जपिये तहाँ । नाम श्री हरिवंश को जहाँ तहाँ मंगल रस भरयौ । सहज संतत सुमति सुन्दर राधिका वल्लभ वरयौ ॥ पर्म धर्म सुधीर मंडन सुभग व्रत निजु हंश को । जै श्री सदानंद हित सदा मंगल नाम श्री हरिवंश को ॥ १ ॥ जै जै श्री हरिवंश दृगनि रस झेलहीं । कुंज भरे रस पुंज जुगल जहाँ खेलहीं ॥ जहाँ जुगल किशोर खेलत तलप कुसुम सुहावनीं ॥ झलक सांवल गौर तन की नवल रुचि उपजावनीं ॥ चलत विशद कटाच्छि मंजुल प्रेम भुज गर मेलहीं । जै श्री सदानंद हित व्यास नंदन दृगनि रस जहाँ झेलहीं ॥ २ ॥ जै जै श्री गोपी नाथ सनाथ सबै किये । शरणागत प्रतिपाल सरस सब सुख दिये ॥ दिये सब सुख अभय कीनें नित्य वृन्दावन वसे । जहाँ श्यामा श्याम विलसत रास रस दिन रस मसे ॥ जै श्री सदानंद हित सुभग जोरी रहत नित लोचन हिये । जै जै श्री गोपीनाथ सनाथ सबै किये ॥ ३ ॥ जै जैं श्री हरिवंश सुयश जग मगे । श्री गोपीनाथ सुनाम कहत अति सुखे

दम्पति कुंज अलि मकरंद निस वासर लहै जै श्री व्यास सुत हरिवंश नंदन भजन रस सौ हिय पगै जै श्री सदानंद हित नित उजागर सुयश जग में जग मगै ॥ ४ ॥ १० ॥

श्रीलालदासजी महाराज कृत मंगल ॥ राग सूहौ विलावल ॥ वैशाख वदी २ कौ

वलि वलि श्री हरिवंश निकुंज निवासई। उपकारक अव-तंश सुयश परकासई ॥ सुयश स्याम प्रकाश कीनों रीति रस मंडित मही। गुन गोप्य गहर गंभीर लीला जा कृपा सुल्लभ लही ॥ पद नाम परसत सरस तन मन परम गति मति हंश की। विधु व्यास नंदन विवुध वंदन वलि वलि श्री हरिवंश की ॥१॥ भजन अनन्य प्रवीन सुदृढ़ व्रत जिन धरयौ। केवल पद निर्वान प्रेम जिन उद्धरयौ ॥ धरयौ दृढ़ व्रत प्रेम उद्धरि धर्म सुंदर संचरयौ। लोक वेद विवेक दुंदुभि राधिका वल्लभ वरयौ। कुटिल कर्मठ भक्ति वेमुख भई भौंकनि स्वान की। मद अजर कुंजर भय न मानी भजन अनन्य प्रमान की ॥ २ ॥ श्री हित हरिवंश सुगुन गन जीवन मूरियै। नव रंग नेह निधान सु उर घट पूरियै ॥ उर प्रगट पूरन परम प्रेरक प्रांन धन जन रंजना। मनसि मंजन भरम भंजन चर्म दृग दिव अंजना ॥ निगम तरवर तरल फल मथि रसिक कुल रस पान दै। प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ हित हरिवंश गुन गान जै ॥ ३ ॥ सींवा स्याम सनेह नवल घन गोरिये। ललित लता रस ग्रेह जग मगत जोरिये ॥ नव जलद गोरी प्रगट जोरी रमत संतत संग फिरैं। मधु हास रास विलास कौतिक रहसि सुख सागर तिरैं। हाव भाव विनोद मंगल मधुर वरषनि मेह की भुज ग्रींव भरि छवि

नैंन पीवत सीव स्याम सनेह की .. ४ .. शरनागत हरिवंश प्रशंसित हूजिये। मन वच क्रम सरवंश अवर नाहिं दूजिये॥ अवर नाहिंन तरन तारक त्रिविधि ताप त्रिखंडनो। तव नंद हित गोपीनाथ चंदन हृदै मन्दिर मंडनौ॥ प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ दवन दुर्मति संश की। देहु वास वृन्दा विपिन गहवर शरण श्री हरिवंश की॥ ५॥ श्री राधा वर देव सेय सुख लीजिये। वृन्दावन रस मेव रम्य रंग भीजिये॥ रमि रंग भीजै छिनु न छीजै चित्त रुचि चरननि चढ़े॥ गुन भजन निर्मल गिरा गायैं प्रेम द्रुम दिन दिन बढ़े। ललित वल्ली लपटि मनसा फूल फल मधु मेव मैं। प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ राधिका वर देव जैं॥ ६॥ हौं वलि जुगल किशोर मोर मन भावहीं। निसि जागर भई भोर लटकि तव आवहीं॥ लटकि आवत छविहि पावत अलक चंचल डोलहीं॥ मनु प्रात पंकज विलसि निकसे निकर भृंग कलोल हीं॥ अधर अंजन पीक झलमल झलक पलकनि कोर की। प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ हौं बलि जुगल किशोर की॥ ७॥ पलटि फवित पट कूल मूल सुख पुंज में। केलि कलप द्रुम मूल सुमंजुल कुंज में॥ कुंज मंजुल जगत मंगल विमल विधु निधि मधु भरे॥ मृदुल कंचन मेरु मर्कत जलद जित विज्वल वरे॥ केश निसि तट टूट उड़गन गिरनि चंपक फूल की॥ प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ पलटि फवि पट कूल की॥ ८॥ घूँमनि नैंन विशाल चाल गज ज्यौं ढरैं। गहि भुज पिय प्रिय बाल सुचित वित कौं हरैं॥ हरत चित वित ढरत गज गति सिथल सुन्दर रंग पगे। पिय प्रांन प्यारी वर विहारी प्रेम सुख सागर पगे तिलक

जावक भाल भल छवि छलनि मनमथ जाल की प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ घूँमनि नैंन विशाल की ॥ ६ ॥ श्री हरिवंश प्रसाद स्वाद सुख सो लहैं । मधु मादिक उनमाद सुपरमित को कहै ॥ को कहै परमित परम सुख की अमित सुख जो पावई। रसन साइक सक्र सुत मित सोभ कहत न आवई ॥ प्रभु प्रान पालक लाल वल्लभ रहत प्रति मति वाद तैं । गुरु गोप्य नायक भक्ति दाइक हित हरिवंश प्रसाद तैं ॥ १० ॥ ११ ॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज ॥ मंगल--राग सूहौ बिलावल ॥ वैसाख वदी ३

जै जै श्री हरिवंश गिरा रस गाइयै । मन क्रम वचन सुदृढ़ करि चित लगाइयै ॥ रसिक जननि के संग रंग यह लागि है । विपत प्रेम रस प्यास न कबहूँ भागि है ॥ भागै न कबहूँ प्यास रस की बढ़ति रति छिनु छिनु तदा । गुन गाइ सरस समाज में मत यौं वितौ निसि दिन सदा ॥ प्रगट वृन्दा विपिन यह सुख अनत कहूँ नहिं पाइयै । जय जय श्री हरिवंश गिरा रस गाइयै ॥१॥ जै जै श्री हरिबंश सार संग्रह कियौ । जुगल केलि गुन रूप श्रवन नेंननि पियौ ॥ रसिकनि कौ रस रीति प्रीति सम्पति दई। गौर स्याय छवि रासि बढ़ति पलु पलु नई ॥ बढ़ति पलु पलु रासि नौतन कुंज कल सज्या रची । मिलत ललना लाल तापर अंग अंगनि भये पची ॥ दुरि देखि ललितादिकनि चोरी मानि अपनौं धनि जियौ । जय जय श्री हरिवंश सार संग्रह कियौ ॥ २ ॥ जय जय श्री हरिवंश भोर जोरी लसै । पलटि परे पट देह नेह वरषत रसै ॥ छूटी लट टूटी उर माला मरगजी । सिथल भये अंग अंग सिथल किंकिनि वजी ॥ वजी किंकिनि मन्द मुसकनि वदन द्युति बाढ़ी घनी नैंन आलस वंत प्यारी

सिखा नख विलसी धनी ।। परस्पर अनुराग पागे श्याम उर गोरी बसै । जय जय श्री हरिवंश भोर जोरी लसैं ।। ३ ।। श्री हरिवंश उदार पार नहिं पावहीं । श्री राधा पिय नव नव लाड़ लड़ावहीं ।। कोक कोटि संगीत गुननि सेवा करैं । रहत छहौ रितु निकट समैं सुख संचरैं ।। संचरैं सुख कौ समैं जैसौ उचित औसरु पाइयै। ताहि यह ततकाल प्रापति सुयश मंगल गाइयै।। रसिक जन मन मगन छिनु छिनु कली बहु विधि ध्यावहीं । जय जय श्री हरिवंश उदार पारु नहिं पावहीं ।। ४ ।। १२ ।।

श्री कल्याण पुजारी जी कृत ।। मङ्गल–राग सूहौ बिलावल ।। वैसाख वदी ४ कौ

जय जय श्री हरिवंश इंदु अति राजहीं । श्री वृन्दावन नभ वसत सकल सुख साजहीं ।। पिय प्यारी घन तड़ित परस्पर हरषिहीं । प्रेम रूप रस रसिक निरंतर वरषहीं ।। वरषैं निरंतर रूप रस को कोटि मनमथ लाजहीं। कल केलि भरु निसि द्यौस निरवधि किंकिनी कल गाजहीं ।। प्रथम जोवन जोर दुहुँ दिसि लसत सेज समाजहीं । जै जै श्री हरिवंश इंदु अति राजहीं।१।
जै जै श्री हरिवंश लाल लालचु बढ़्यौ । अद्भुत रूप रसाल बाल वर उर कढ़्यौ।। कंचुकी कसनि विदारि उरज कर परस हीं। ज्यौं निधि पाई रंक मुदित छवि दरस हीं ।। दरसि छवि कौ छैल छल बल मत्त अंक सकेल ही । पिवत मधु मकरंद चौंपनि भुजा अंशनि मेल ही ।। छके लसि गसि रसहि वितरित सुयश सांवल मुख पढ्यौ । जय जय श्री हरिवंश लाल लालचु बढ्यौ ।। २ ।।
जय जय श्री हरिवंश हंस हंसिनी मिले । विलसत तृपित न होत अंग अंग रस झिले।। बाढ़त नव नव स्वाद कहत कापै बनैं। सुरत संगमी केलि ललित तन मन सनैं सनैं तन मन लाल

ललना पलु न अंतर भावहीं । रहत ज्यौं फणि मणि सदा रस रीति प्रीति बढ़ावहीं ॥ ज्यौं करनि गज मत्त विरहति फिरत रस ही रस ढिले । जय जय श्री हरिवंश हंस हंसिनि मिले ॥ ३ ॥ जय जय श्री हरिवंश प्रसंश करत अंचल लियैं । स्यामा स्याम विहार अचल जुग जुग कियैं ॥ कहत सुनत सुख रासि आस सब पूजि हैं । श्री वृन्दावन ताहि यथा मति सूझि है ॥ सूझै यथा मति ताहि तैसौ अमित पार न पावहीं । जस होहि जग विख्यात चहुँ दिसि साधु कीरति गावहीं ॥ जे जुगल रस मत्त मधुकर कली अलि देखैं जियैं । जय जय श्री हरिवंश प्रसंश करत अंचल लियैं ॥ ४ ॥ १३ ॥

श्री सहचरि सुख जी कृत ॥ मंगल छंद ॥राग सूहौ विलावल॥ वैसाख वदी ५ को

जै जै श्री हरिवंश सुयश नित गाइयै । नित नव मंगल मोद धाम नित पाइयै ॥ नित नव नाम रूप गुन हिय मैं छाइयै। नित नई रस की झूलनि मनहि झुलाइयै ॥ नित नई फूलनि फूलि अंग अंग कुंज रंग अपार की । नित नई विलसन विलसियै वन नित्य जुगल विहार की ॥ आनंद नित नित ओप दस दिसि झलक निगम प्रसंश की । नित्य ललितादिक छकनि अंखियाँ खिलनि हरिवंश की ॥१॥ जय जय श्री हरिवंश श्री वृन्दावन वसें । रास विलास हुलास प्रगट रसिकनि रसें ॥ विषई करत अनन्य त्रास हरि काम की । देत अनन्यनि टहल महल निजु धाम की ॥ उदार टहलनि महल की जिन भाव मिले हे सुभाव सौं । परपंच भुलये जगत के सनमुख किये चित चाव सौं ॥ राधा चरन रंज इष्ट मोहन मानि मन अवतंश की। वांछित न पावत चारि मुख संपति सोई हरिवंश की २ जै

जैं व्यास सुवन कुल भान प्रगट भये। धर्म अधर्म सुभर्म तिमर सब मिटि गये ॥ प्रेम ऊख के स्वाद विविधि जग में जगे। और न चाखैं रसना जे मिश्री पगे ॥ फीके लगैं सब स्वाद ब्रज हू के विलास जिते गनैं। जिनके सुचित चातक भये अमृत रहसि कुंजनि सनैं ॥ धारना ध्यान समाधि तिनके प्रेम में सब पाइयै। (श्री) व्यास नन्दन की कृपा यातैं सुहरषि मनाइयै ॥ ३ ॥ जै जैं तारा कूखि सफल जिन ब्रज करी। सुभ नक्षत्र सुभ लगन जनम भयौ शुभ घरी ॥ जुगल राग कौ रूप महल अति मानियैं। प्रगट शैल तें चंद उदय यौं जानियैं ॥ उदय नित्य न अस्त जिनकौ दरस दासिन कौं नये। प्रगटिवौ अनप्रगटिवौ झांकीन ज्यौं परदा दये ॥ सांवल गौर के संग अलि सांवल गौर भई चैंन में। जमुना पुलिन की झलक झलकत सुख सखी के नैंन में ॥ ४ ॥ १४ ॥

श्रीसहचरि सुखजी महाराज ॥ मंगल ॥ राग सूहौ विलावल ॥ वैशाख वदी ६ कौ

राधा हरि जस जनम वरन तें जानियैं। वरन जनम है भाव सौं कुंज वखानियैं ॥ महली भाव जनम हरिवंश तें मानियैं। व्यास सदन हरिवंश जनम उर आनियैं ॥ महली टहल जो अष्ट अलि की प्रगट रसना सो करी। भागौत शुक मुख सार सोधि अनन्य रस वरषी झरी ॥ नव कुंज नित्य निकुंज निभृत निकुंज रस दरसाइ कैं। धर्म धर्मी रहसि हूँ में दिये प्रगट दिखाइ कैं ॥१॥ तारा कूषि प्रगट भई मोद महा जग्यौ। रसिकनि चाह लता सौं रस फल है लग्यौ ॥ गुपत विहार सिंगार मिष्टता सौं भरयौ। धर्म विजाती भर्म हियनि कौ सब हरयौ ॥ धर्मनि मिली श्रुति रिचा अकि मुनि व्रता कन्या देवकी नित्त सिद्धा संग मिलीं

लहि रीति दम्पति सेवकी दुलहिनी दूलह गौर श्यामल अचल अंसनि भुज लसैं । व्रज दृष्टि विविधि विनोद फूलत सदा वृन्दावन वसैं ॥ २ ॥ जै जै जमुना पुलिन महा मंगल तहाँ । चार चरन कें चिन्ह चौक मंडित जहाँ ॥ आनंद मन्दिर मदन मोद मन प्रीति कौ । जनम वधावो ललित है ललिता रीति कौ ॥ ललित ललिता रीति में नव रंग वंशीवट खिल्यौ । कीरति कुंवरि के लाड़ सों कीरति करन रस में मिल्यौ साथिये रचे हैं रसाल वंदन वार द्वार वंधाइ कैं। ढोलक पखावज ताल जंत्रनि सोहिलो रह्यौ छाइ कै ॥ ३ ॥ राधा वल्लभ वल्लभ राधा जानियै। वानी विमल प्रकास दरस पहिचानियै ॥ तेई जानैं हिय दृगनि देखि अमृत पियौ । जनम वधायें जनम सुफल जिन है कियौ ॥ यह सकृत रीति सु श्रुतिनु गहरी जानि हैं सो जानि है। त्यागि तीनौं गुननि कौं जु प्रमानि हैं सुप्रमानि है ॥ श्री कमल नैंन प्रसाद पूरन सुख सखी दुलरावई । जे कुंज सेवा जय मिले तिनके सुजिय अति भावई ॥ ४ ॥ १५ ॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत ॥ मंगल छंद ॥ वैशाख वदी ७ कौ

आजु सुहेलरा री हेली तारा नंद कौं ॥ व्यास महल में री हेली रंगे अनंद कौ ॥ जनम वधावौ री हेली भाव सु छंद कौ ॥ जस हरिवंश कौ री हेली रस व्रज चंद कौ ॥ आजु मंगल मंजु माधव रितु वसंत लखी रली ॥ अष्ट मन हित एक देखत खिलीं ललितादिक अलीं ॥ धरत सथिये द्वार वंदन माल वांधति भामिनी ॥ किरिनि राधा कुंवरि की पहिराई कल कुल कामिनी॥१॥ मलया गर सौं री हेली अंगनि लिपावनौं ॥ गज मोतिनु सों री हेली चौक पुरावनौं पंच शब्द मिलि री हेली मृदंग

वजावनौं। सप्त सुरन सौं रीहे ती राग दरसावनौं ॥ रीझि मदन गुपाल किरति मदन केलि लडाइयै। चारि चरननि चिन्ह रज जमुना पुलिन में पाइयै ॥ ढोरि केशरि अरगजा भूषन कुसुम सिंगारहीं। जोर सांवल गोर पर दासी द्दगनि कौं वारहीं ॥ २ ॥ वंश वरन करैं री हेली मागद चैंन में। सूत सुमुख कहैं री हेली श्रुति मति वैंन में ॥ भाट कवित्त पढ़ैं री हेली जग जस अैंन में। वंदी साधैं री हेली निर्त्तनि सैंन में ॥ निर्त्त रास विलास रहसि विनोद नित दुलरावनौं। कुंज सेवा इष्ट तहाँ दंपति दरस कौं पावनौं॥प्रिये राग सुहाग विटकुल नृपति जो गनि सौं रच्यौ। वंसीवट वन-रानी अनुगत भोग भागनि में रच्यौ॥ ३ ॥ हिय फूलनि में री हेली मिलि तन फूलियै। कुंवरि कृपा में री हेली मोदनि झूलियै॥ हरि अनुकूलनि री हेली जय अनुकूलियै। अरुझत हारनि री हेली पलकनि भूलियैं ॥ सेज किशलय दलनि पर भुज अंश दूलह दुलहिनी। किये अर्पन अपन पे दर्पननि लौं लीला सनीं ॥ महलीनि के विज्ञान कौं सुख सखी महली जानहीं। बृन्दा विपिन सत चित मूरति तेई चित पहिचानहीं ॥ ४ ॥ १६ ॥

श्री कृष्णदास जी कृत ॥ मंगल छंद ॥राग सूहौ विलावल॥ वैसाख वदी ८ कौ

जै जै मंगल कुंज निकुँज सुहावनौ। परम सुखद रस पुंज जुगल मन भावनौ ॥ सखी हुलास तरंग सुरति रति साजनी। श्री राधिका सरवंश वंशी हरषि हरि मुख वाजनी ॥ वाजनी हरि-वंश वंशी व्यास नंदन वपु धरयौ। झिल मिलत तन तेज अद्भुत भवन उजियारौ करयौ ॥ जननी जनक हरषे निरषि चिरुजियौ हियौ सिरावनौ। जै जै मंगल कुंज निकुंज सुहावनौं ॥ १ ॥ जै जै मंगल चारु सुढार सुहाइयां गावति हौंसनि नारि रह्यौ सब

धाइयाँ ॥ वदनानंद निकन्द सुछंदनि उच्चरैं। मनु फूलि मंजुल कमल कंचन मधुर मकरंदनि झरैं ॥ झरैं मधु मकरंद हरषीं सुनत सुत श्री व्यास कैं। कुमुदिनीं फूलीं मुदित मुख उदित चन्द्र प्रकास कैं ॥ पगीं प्रेम पियूष रस तन मन मगन भईं भाइयाँ। जै जै मंगल चार सुढार सुहाइयाँ ॥ २ ॥ जै जै मंगल रीति पुनीत सवै करैं। लै लीक सथिये सींक सुवरन कलश भरि सोभा धरैं॥ सु चन्दन लीपि अजिर दीपावलि मुक्तावलि रचना रचैं। झलकनि करज नख पल्लवनि मनु वीच विच रतननि खचैं॥ खचि रतन आरति सोद वालक गोद जननी कों दियौ। श्री तारा जू कों छिरकि केशरि तिलक मिश्र जू कैं कियौ ॥ धरि हरी दूव सुपाग पर लै लाग रागनि अनुसरैं। जै जै मंगल रीति पुनीत सवै करैं ॥३॥ जै जै मंगल रूप अनूपम जग मगीं। पहिराई तन चीर सुरंगनि रंग मगी ॥ गावत सुजस सुहीत सुनत हरषावहीं। तेई सुजन वन वास प्रेम पद पावहीं ॥ पावहीं पद प्रेम जिनकैं नेम नवधा कौ नाहीं। छके सेवैं माधुरी मुख देखि क्यों देखैं कहीं ॥ सुहाई वधाई मंगली कृष्नदास हित चित सौं लगीं। जै जै मंगल रूप अनूपम जग मगी ॥ ४ ॥ १७ ॥

श्रीप्रेमदासजी महाराज कृत ॥ मंगल छंद–राग सूहो विलावल-वैसाख वदी ६ कौ

नव निकुंज में आजु वधाई। निजु सजनी मिलि दुहुँनि लड़ाई ॥ करि उवटन हित अली न्हवाई। करत सिंगार कुंवरि सुखदाई ॥ करति कुंवरि सिंगार निजु कर फूल माति न गात री। गुहि पुहुँप वैंनी वनावति खौरि मुख सरसात री ॥ पीत अंवर सजे तन मनु रूप निधि लहराति री। कुसुम भूषन वने अंग अंग कही क्यौं छवि जाति री ॥ १ ॥ वहु फूलनि सौं मंडप

छायौ । रंगरंग की धुरि धुजा रचायौ ॥ नव रतननि सौं अजिर खचायौ । गज मोतिनु कौ चौक पुरायौ ॥ पुराइ मोतिनु चौक चहूँ दिसि कनक कदली रोपि कैं । धरे कंचन कलश जित तित भरे अमृत ओपिकैं ॥ तानि जलज वितान वन्दन माल सुमननि की रची । पचत कवि कव के कहन कौं निरखि यह छुति मति लची ॥ २ ॥ रतन जटित सिंहासन छाजैं । तहाँ आइ जुगराज विराजैं ॥ मणि मय चौकी आनि विछाई । सुहृद अली तहाँ लै वैठाई ॥ वैठाइ तापर सुहृद हेली भरयौ आनन पांन सौं । झरत फूल कपूर के मनु हँसत मुख रसखान सौं ॥ लख्यौ निजु रस कौ प्रगट दोऊ गान मिलि मंगल करैं । रीझि दंपति देत भूषन लेत अलि निर्त्तंति खरैं ॥३॥ नाँचत मोर मंडली आगें । गावत शुक पिक अति अनुरागें ॥ देत मधुप मृदु सुर सुख साजें । कूजत हंश वीन सी वाजें ॥ वाजत सुवीन नवीन तिन संग स्याम श्यामा नाँचहीं । कहत सूहो राग सूहे करत चित नित राचहीं ॥ लाल मुरली में कहत सोई वाल नूपुर में लयौ । प्रेमदासि हित रीझि इहि चिर सहचरिनु आनंद दयौ ॥ ४ ॥ १८ ॥

गो. श्रीहितमकरंदजी कृत ॥ मङ्गल ॥ राग सूहौ विलावल ॥ वैसाख वदी १० कौ

जय जय श्री हरिवंश प्रसंशित गाइयै । पिय प्यारी को प्रेम सु ताहि लड़ाइयै ॥ जुगल संधि अलि रूप विहार बढ़ाइयै । दम्पति रस सम तूल नवल रस छाइयै ॥ छाइ नवल विहार कौतिक प्रथम सुख छिन छिन वये । सेव्य सेवक विपिन सम्पति आधार सखि सेवन नये ॥ अखंड नित्य विहार जिनकी प्रेम जीव जिवाइयै । जय जय श्री हरिवंश प्रसंशित गाइयै ॥ १ ॥ जय जय प्रेम उदोत सु उमड़ि उदधि बह्यौ इच्छा शक्ति जन हेत

विस्तरन मग लह्यौ ॥ तारा व्यास प्रकाश तेज दुहुँ हिय भरयौ। सोई वे हित रूप अनूपम वपु धरयौ ॥ धरयौ रूप अनूप सुख निधि कनक द्युति मन्द करी । गौर भव्य सुमधुर संपति सदन दिस दिस छवि भरी ॥ बजे दुन्दुभि भई बधाई व्यास सुकृत सुख फल लह्यौ । जय जय प्रेम उदोत सु उमड़ि उदधि वह्यौ ॥२॥ जय जय तारा नंद चंद रस कंद कौ। उदित चाँदनी सुयश सु गावत छंद कौ ॥ कुमुदावलि द्विज नारि सार फूलनि फलीं। उमग्यौ सागर भाग सुहाग सरिता चलीं ॥ चलीं सरिता भलीं रंगनि रलीं चपल पहल गलीं। दिये दान समान करि कैं भूख सबकी दल मलीं ॥ फूल मूरति फूल फूल्यौरंग फूल अमंद कौ। जै जै तारा नंद चंद रस कंद को ॥ ३ ॥ जै जै लाड़ गहेल रसिक शिरमौर री। चित्र विचित्र चरित्र छिनहिं छिन और री ॥ मदन माधुरी वृन्द फिरति संग पछ लगी। तारा व्यास डर डीठन देखन सुख पगीं ॥ पगी पगनन लगन अँखियाँ रूप द्रव उर उर भरयौ। डुलन ढुरन फिरन अजिर मुसिकानि घर कीयौ हरयौ ॥ मकरन्द हित दृग मिष्ट रस वस भई मति गति और री । जय जय लाड़ गहेल रसिक शिरमौर री ॥ ४ ॥ १६ ॥

श्री वृन्दावनदासजी महाराज ॥ मंगल राग सूहौ विलावल वैशाख ॥ बदी ११ कौ

जै जै हित सर्वोपर ताहि लड़ाइये। हित जग जीवन मूरि सु सादर गाइये ॥ हित कौ विपिन विनोद बढ़त छिन छिन रहै। हित कौ सूछम रूप मरम मरमी लहै ॥ लहैं मरमी रूप हित कौ जो खिलावत खेल है। वंदियै हित पुनि पुनि सदा दंपति करावतु मेल है ॥ खोयो रतन धन जुगल जा हित कैं प्रकास जु पाइयै। जै जै हित सर्वोपर ताहि लडाइयै ॥ १ ॥ जै जै हित उर गगन

उदित जाकें भयौ। ना जानौं भ्रम तिमिर जु कब करि नसि गयौ ॥ सब सुख दायक लाइक हित वृन्दाटवी। हित प्रसाद ही अलभि लाभ प्रनितनि फवी ॥ फवी प्रनितनि लवधि हित मारग लग्यौ जो घाट है। अनुभव जनित रस रूप लहि खुलि गई ग्रंथि कपाट है॥ छकि गयौ मिथुन विहार कौतिक निरखि जहाँ छिन छिन नयौ। जै जै हित उर गगन उदित जाकें भयौ ॥ २ ॥ नमो नमो हित जासु महत महिमा कही। ता विनु नर पशु देह न सुख संपति लही ॥ जो हित दिव्य सरूप वसत जोरी हियैं। ताहि अराधत नांहि विफल तौ जग जियैं॥ जियैं जग में विफल हित की सरन जब लगि नहिं लई। रमै वाइस कर्म मोरी हंस गति जु भुलै दई ॥ हित चित वरै दीपक अमल अति जोति जग मग व्है रही। नमो नमो हित जासु महत महिमा कही ॥ ३ ॥ जै जै हित नर सुरति दैंन उपमा महा। हित विनु जन न पत्याय तौ मिलहिं जुगल कहाँ ॥ हित विनु नीरस जांनि स्याम नहिं करग हैं। हित विनु काँदौं बीजर भक्ति कहाँ रहै ॥ रहै भक्ति नहिंन हित उर कोटि जतननि जो करें। लरजै न राधा रसिक हित विनु कौन अभिलाषा भरै ॥ जयति हित मूरति प्रगट श्री व्यास सुत निरखौ अहा। जै जै हित नर सुमति दैंन उपमा महा ॥४॥ जै जै हित के चरित कुंज थल देखिये। गौर स्याम हित रस वस रमत विशेषिये ॥ चोज चाइ वहु वढ़तु रहत हित दान सौं। जो जो लीला रचत सुहित जु विधान सौं ॥ विधान विधि हित की जहाँ जानौ सु आठौ जांम हैं। वृन्दावन हित रूप ही की विभौ स्यामा स्याम हैं ॥ हित के नवल उत्साह उपजत कहाँ लगि सौं लेखिये। जै जै हित के चरित कुंज थल देखिये ५ २०

श्रीवृन्दावनदास जी कृत ॥ मंगल छंद ॥ राग सूहौ विलावल ॥ वैसाख वदी १२

चरन सरोज नमामि गोप्य रस जिन कह्यौ । जग जन करुना हेत जलद ऊनै रह्यौ ॥ वरषि ललित रस भजन ताप तन मन हरी । श्री स्वामिनि गौरांग प्रचुर पद्धति करी ॥ करी पद्धति प्रचुर विवि अनुराग हित मूरति धरी । मोहनी मनु सुर रसिक हित वानीं सुधा मय विस्तरी ॥ वलि व्यास नंदन सुदत्त कानन गहर सुख साग्र वह्यौ । चरन सरोज नमामि गोप्य रस जिन कह्यौ ॥ १ ॥ जयति राधिका सुयश दिखावन को वियौ । व्यास सदन नभ दिन मणि मनहुँ उदौ कियौ ॥ सीतल किरिनि अखंड गिरा जग पूरि कैं । तम अज्ञान अमंगल डारे चूरि कैं ॥ डारे अमंगल चूरि प्रेमाभक्ति पथ सूझ्यौ परयौ । अलि भाव भावक वहु किये अपनाइ जिहिं सिर कर धरयौ ॥ मंगल मही करता कृपा वपु अलभि लाभ जननि दियौ ।,जयति राधिका सुयश दिखावन को वियौ ॥ २ ॥ जयति व्यास कुल भूपन रसिक सिखा मनीं । मिथुन रहसि रस रीति फुरी रसना घनीं ॥ वितरित परम प्रसाद प्रनित जन नित नई । निगम दुरी बन संपति जगत विदित दई॥ दईअतिरस रहसि दुर्लभ लवधि कोविद पाइकैं । राधिका विपुल सुहाग तीरथ सुमति हरषि न्हवाइ कै ॥ कमनीय महा मंदिर लता हित अलि तहां सुख में सनीं । जयति व्यास कुल भूषन रसिक सिखा मनीं ॥३॥ वलि वलि रंग विहार सार सुख जिन दिये । रस चिंतामनि चुनि गुनि रतन प्रगट किये॥ साधन सकल विहाइ धरयौ व्रत बांकुरौ । सुमति प्रसंशति ताहि गह्यौ हित नांकुरौ ॥ गह्यौ हित नाँकौ लड़ैती कृपा दत्त ही पाइयै । व्यास उर आनंद दाइक सरनि भाग्य मनाइयै वृन्दावन हित

रूप श्री हरिवंश जस गायक जिये वलि वलि रंग विहार सार सुख जिन दियैं ॥ ४ ॥ २१ ॥

श्रीवृन्दावनदासजी महाराज कृत-मंगल छंद-राग सूहौ विलावल वैशाख वदी १३कौ

जै जै नवल निकुंज सुदेश वधावनौ । उपज्यौ है परम विनोद सवनि मन भावनौ ॥ नीर सुगंधिनु सींचि चौक चित्रित किये । सजि धरे मंगल साज भये हरषित हिये ॥ भये हरषित हिये सब के जहाँ तहाँ रचना करी । पीत अंबर छाइ मंडप अवलि कदलिनु की धरी ॥ कनक घट भरि धरे पौरिनु दिपत धाम सुहावनौं । जै जै नवल निकुंज सुदेश बधावनौ ॥ १ ॥ जै जै मंगल रूप नवल जुग राजहीं । सुहृद अली दिन जनम वधाई साजहीं ॥ मज्जन प्रथम कराइ वसन पहिरावहीं । भूषन विविधि मंगाइ सिंगार करावहीं ॥ सिंगारहीं मिलि लाल ललनां हिये हित की माधुरी । परम प्रेम विचित्र मूरति जाहि वंदत साधुरी ॥ कर जोरि नवल किशोर निर्त्तत अमित बाजे बाजहीं । जै जै मंगल रूप नवल जुग राजहीं ॥ २ ॥ जै जै करुना सिंधु जुवति मणि स्वामिनी । पिय हिय को अहलाद बढ़ावन भामिनी॥ वरषति सुधा समूह मेघ संग दामिनी । कौंन विरंचि रची लोकनि निधि कामिनी ॥ रची त्रिभुवन लोक सोभा रूप साँचे ढारि कैं । चहत लहत न अंत मोहन रहे सर्वसु हारि कैं ॥ सुख रासि श्यामा श्याम दोऊ जोट मन अभिरामिनी ॥ जैं जैं करुना सिंधु जुवति मणि स्वामिनी ॥ ३ ॥ जै जै जगत प्रसंश नवल की बांसुरी । सो प्रगटी भुव लोक कहन जुग गांसुरी ॥ द्विज कुल कियो है प्रकास गूढ़ गुन विस्तरयौ । पिय प्यारी को हेत कह्यौ रति रस भरयौ कही रति रस रास लीला रसिक जन

मन भावनी   वृन्दावन हित राधिका धव चरन रति उपजावनी जुगल पथ दरसाइ दृग अज्ञान तम किये नासुरी । जय जय जगत प्रसंस नवल की बांसुरी ॥ ४ ॥ २२ ॥

श्रीवृन्दावनदासजी महाराज कृत ॥ मंगल छंद—वरस गांठ ॥ वैसाख वदी १४ कौ

यह मंगल राधा हरि मन अति भावनौं। हित सजनी कौं चाइनु लाड़ लड़ावनौं ॥ जा दिन प्रेम प्रकास कियौ भुव आइकैं। भयौ हित जुगल सदेह सु अग्या पाइ कैं ॥ अग्या सु पाइ धरयौ महा कमनीय वपु घर व्यास जू । इच्छा जु राधा नागरी पद्धति करन परकास जू ॥ रस गूढ़ करता प्रचुर स्वामिनि सु दिन रचति वधावनौं । यह मंगल राधा हरि मन अति भावनौं ॥१॥ केशरि सुभग पिसाइ सुचौकी धरति है । हँसि हँसि सकल सहेली उबटन करति हे ॥ चहूँ दिस मंगल गांन सु मंगल रचति है । नीर सुगंधि न्हवाइ वसन तन सचति है ॥ सचति अंबर पीत भूषन विविधि विधि पहिराइ कें । मंगल जु बाजे बाजहीं कियौ तिलक भाल वनाइ कैं ॥ देहिं प्रिया कौ सब ही वधाई गोद मेवा भरति है । केसरि सुभग पिसाइ सुचौकी धरति है ॥ २ ॥ फूल महल रचि कीनौ फूल वितान है । सबहि फूल सौं निर्त्तति सब देहि मान है ॥ प्यारी जू वीरी माल सबनि कौं देति है । प्रांन भाँवती सजनी अंकनि लेति है ॥ लेति अंकनि हित अली राधा सुजस जिन विस्तरयौ । ताकौ जु उद्धव मास माधौ कुंवरि सो सादर करयौ ॥ गोप्य रस कियौ प्रचुर घर घर दियौ दसधा दान है । फूल महल रचि कीनौ फूल वितान है ॥ ३ ॥ अंग अरगजा लेप फूल वागे वनैं । फूल चंद्रिका मुकट फूल वरषत घनैं   फूल वदन उर फूल सुइहिं उत्साह की वरस गांठि हित

सजनी (सु) फूल उमाह की ॥ उमही जु जननी राग सुरली बजी औरैं रीति सौं । भयौ प्रेम सब उर उदै थिरचर विपुल पूरति प्रीति सौं ॥ वृन्दावन हित रूप मंगल भूरि कहा रसना भनैं । अंग अरगजा लेप फूल बागे बनैं ॥ ४ ॥ २३ ॥

श्री वृन्दावनदासजी महाराज कृत ॥ मङ्गल ॥ बैसाख बदी १५ अमावस्या की

वरस गांठि श्री व्यास सुवन की रस भरी । आई मंगल मानि सदन रचना करी ॥ चाइनु अजिर लिपाइ सुगंध सिचावहीं । मोतिन चौक पुराइ तौ मंगल गावहीं ॥ गावत वधू मंगल जहाँ चौकी धरी पुनि लाइ कैं । लाल तन उवटन करति केशरि जु नीर मिलाइ कैं ॥ है रहो गह मह धाम अति आनंद की लागी झरी । वरसगांठ श्री व्यास सुवन की रस भरी ॥१॥ केशरि जग मगै वदन प्रेम हिय लाग सौं । मानों अंवुज कनक भरयौ जु पराग सौं ॥ सौरभ जल जु न्हवाइ अँगौछति अंग है । चुनि पहिरावति वसन पीत नव रंग है ॥ पीत वसन पुनीत अंवर विविधि भूषन साजहीं । चरचि सकल सुगंधि मृद मद भाल तिलक विराजहीं ॥ माला कुशुम पहिराइ जन मन सब भरे अनुराग सौं । केशरि जगमगै वदन प्रेम हिय लाग सौं ॥२॥ बिछे बिछौना भवन गमन कीयौ जहाँ । आसन उच्च सँवारि तौ वैठाये तहाँ ॥ जननी सुहथ जिमाइ सुजल अँचवाइयौ । आँनन सोभा वढ़ी तंवोल रचाइयौ ॥ रच्यौ वदन तंवोल रोरी तिलक करि अच्छत धरे । बजे आँनक विविध बाजे वेद विप्रनि उच्चरे ॥ आवैं जु नाना भेंट मंगल गान दान जु मित कहाँ । बिछे बिछौना भवन गवन कीयौ जहाँ ॥ ३ ॥ सुत सोभा लषि फूलत तारा माइ है । करज चटकि कैं पुनि पुनि लेत बलाइ है ॥ गौर तेज तन कमनी लषि सचु पावही नैंन भाँन

ज्यौं राखति दिन दुलरावही ॥ दुलरावही हिय हेत रानी वारि वहु धन देति है। श्री राधिकावल्लभ कृपा जु विचार हिय भरि लेति है। वंदति रहति गौरांग पद अति लइ जु कुसल मनाइ है। सुत सोभा लषि फूलति तारा माइ है ॥४॥ मनमानत भुव देव व्यास भागिनु वली। सुकृति अवधि फल पायौ जस गाथा चली ॥ सुत सनेह सौं भीजत हिय जिय मुदित है। विप्रसभा उड़गन मधि ससि ज्यौं उदित है। उदित मुदित विलोकि श्री हरिवंश से नंदन अहा। वृन्दावन हित रूप भूषन भवन प्रान सुधन महा ॥ जननी रु जनक उदार कीरति करी प्रभु प्रनितनि पली। सनमानत भुव देव व्यास भागिनु वली ॥ ५ ॥ २४ ॥

श्री चतुर सिरोमणि लाल जी कृत ॥मंगल॥राग सूहौ विलावल॥ वैसाख सुदी १

जय जय श्री हरिवंश रसिक रस राज हो। दंपति केलि प्रकाशक सुखनि समाज हो ॥ उदित व्यास कुल कलि लखि करुना रासि हो। मधुकर निजु रसिकनि हित आपु प्रकाश हो ॥ आपुही जु प्रकाश ह्वै करि देत अतुलित जीवका। स्वामिनि पद कमल रस करि पोषि नित प्रति हीवका ॥ दूरि कृत शुभ अशुभ वाधक अमल रस ध्यावत सदा। अति उदार विहार दायक कौन गुन वरनैं अहा ॥ १ ॥ जय जय श्री हरिवंश तरनि सुख रूप हो। दूरि कियौ जग तम नित परम अनूप हो ॥ निज वानी रस पूरि सु किरिनि प्रकास के। पोषत सव विधि नित्य कमल सम दास के ॥ दास कै हिय आस पूरक किये प्रफुलित अति हिये। सवनि तें अति गुप्त रस जो निकट करि सर्वसु दिये ॥ परम शोभित वचन रचन सुहृदय नैंन सिरावनौ। नित विराजहु चित सिंघासन व्यास नंदन सुहावनौं ॥ २ ॥ जय जय श्री हरिवंश वंशि वपु

सोहनों । निजु वानी रस ब्रज सुंदरि मन मोहनौं ।। पुनि दंपति सुख रूप विराजत हित अली । साधन विविध प्रकार जुगल की रुचि भली ।। भली रुचि लै रसिक वपु धरि विश्व रस मय सब कियौ । श्री राधिका पद पत्त हिय धरि रहसि रस मग पग दियौ ।। बिधि निषेधहि छेद कर बर निगम पर रस विस्तरयौ । सकल भक्तिनु तें जु अद्भुत स्वाद लै श्री वन धरयौ ।।२।। जय जय श्री हरिवंश मधुर वपु सोहनौं । गौर वरन तन हीय गौर मन मोहनौं ।। सदा रहत वन सघन कुंज अभिराम में । जस जग मगत उदार सदा सुखधाम में ।। धाम में सुख सदा विलसत नित अखंडित रस भरयौ । रहत शोभा सदन नित प्रति रूप उजियारौ धरयौ।।नाम रसना स्वाद चाखत प्रेम मादिक रसछकै। रसिक जन मन हरन हो हित चतुर कहा कछु कहि सके ।।२५।।

श्री वृन्दावनदासजी महाराज ।।मंगल छंद।।राग सूहौ विलावल।। वैशाख सुदी१२कौ

जय जयश्री हरिवंश परम करुणा।। मई नृप नरवाहन ताहि युगल पद निधि दई ।। नाहरमलहि निहाल कियो हित खीझ कें । वीठल मोहन अंग संग लियौ रीझ के ।। रीझि के परिकर मिलायौ हित छबीलौ दास कौ । नवल वेडी तोरि संत प्रभाव दीनौ व्यास कौ ।। कुंज क्रीडा वेलि श्री हरिदास के उर में वई । जय जय श्री हरिवंश परम करुना मई ।। १ ।। जय जय श्री हरिवंश देत आनंद कों । भाख्यौ धाम स्वरूप प्रबोधा नंद कों ।। घर ही मंत्र लियो नृप परमानंद नें । पूरन संग सुख दियौ सु हित रस कंद नें ।। रस कंद जमुना संग गंगा कर्मठी शिर कर धरयो ।। हरिवंश कृपालुता सों नरक सों द्रोही तरयो ।। जो न हो तो सेवक तो को काट तो भ्रम फंद कों जै जैश्री हरिवंश

देत आनंद को २ जै जे श्री हरिवंश सहायक धीर कों। चत्रभुज अरु हरिदास हरत पर पीर कों॥ जैमल रक्षा हेत आप जैमल भये। खरग सेंन जशवंत भुवन जश जग छये॥ भुवन जस जग छये सुंदर लाल स्वामी रस मई। दामोदर प्रण राखि हित ध्रुवदास को वाणी दई॥ दास नागरि भागवती मिलि गुणत गुण गंभीर कों। जय जय श्री हरिवंश सहायक धीर कों॥३॥ जय जय श्री हरिवंश शरण सुख दान जू। कन्हर स्वामी हरे कृष्ण कल्याण जू॥ हरिदास गोविंद जु मोहन माधुरी श्याम शाह हित रसिक प्रीति ढारनि ढुरी॥ ढुरी द्वारिकादास पुष्करदास पै गुरु की कृपा। कियो सर्वस भेंद हित सों मिट गई तीनौ तपा॥ व्यास वृन्दावन करत सब महल टहल सुजान जू॥ जय जय श्री हरिवंश शरण सुखदान जू॥ ४ ॥ २६ ॥

॥स्वामी चतुर्भुजदासजी कृत ॥मंगल सार जस ॥राग सारंग॥ वैशाख सुदी ३ कौ

श्री हरिवंश नाम मंगल मय मंगल सार जु गावै हरि जू।
सकल भक्ति सुख सार माधुरी प्रेम लच्छिना पावै हरि जू ॥१॥
मिटहिं सकल भव द्वंद फन्द कटि रटि निशि दिन जो गावै हरि जू।
सब सुख सार विहार विपिन वानी माधुरी बतावै हरि जू ॥२॥
तब करि कृपा किशोर किशोरी वृन्दाविपिन वसावै हरि जू।
माया काल व्याल डरु तातें नेंकु न नियरौ आवै हरि जू॥ ३॥
क्रीडा सारु चारु दम्पति रति वह गति अति मन भावै हरि जू।
श्रीहरिवंश गिरा मारग चलै तौ पै भलें दिखावै हरि जू॥ ४॥
कीनी भक्ति सत्यजुग वैसी जैसी वेद बताई हरि जू।
सार रूप हरि भजन यजन ते अभै महा निधि पाई हरि जू॥५॥
तत्त्व ज्ञान उपदेश सार हरिवंश रूप धरि दीनौ हरि जू

सारा सार विचार परे मुनि वह धुनि मुनि जस कीनौ हरि जू ॥६॥
स्मृति रीति जु भजन सार हरि त्रेतायुग जु यजाये हरि जू ।
ऋषि मुख कें उपदेश सबनि सों तैसे मारग लाये हरि जू ॥ ७॥
अष्टादश पुरान कहि द्वापर व्यास सु भजन करायौ हरि जू ।
महाराज उपचार सारु कथि सबहिं यजन सिखायौ हरि जू ॥८॥
कलियुग कठिन महा अति वाँकौ सबै धर्म हरि लीने हरि जू ।
अन्त्यज यमननि मंत्र सुने सब वेद सार विनु कीने हरि जू ।६।
पाखण्ड धर्म प्रचुर पहुमी महँ उतपथ पंथ चलायौ हरि जू ।
सार रूप हरि भजन गुपति भौ, सब जग शिव वौरायौ हरि जू ।१०।
तब करि कृपा व्यास नंदन सुख कौ सुख सार बतायौ हरि जू ।
आगम निगम सिंधु मथि कथि कैं सारकौ सर्वस गायौ हरिजू ।११।
कठिन कर्म जेवरी बँधे जेते काटि कैं छुड़ाये हरि जू ।
श्रीहरिवंश प्रताप सार वर जे नर शरण जु आये हरि जू ॥१२॥
पाखण्ड अभ्र पटल छल छाये गिरा समीर उड़ाये हरि जू ।
सारा सार विचार कुठार मोह मद विटप कटाये हरि जू ॥१३॥
मत्सर दम्भ प्रपंचनि पर्वत आनन्द असि तिन मोरे हरि जू ।
शुभ अरु अशुभ कलुष कालिम पुर प्रेम सार सर बोरे हरि जू ।१४।
विसन मदन विष विषै लहरि हरि, हरि गद सार सिधायौ हरि जू।
श्री हरिवंश किशोर किशोरी कौ जस विमल जु गायौ हरि जू ।१५।
चार वाक् छप्पनक छवि कुहुर समान तिमिर महा छाये हरि जू ।
तारा तनय तरणि सम ह्वै कैं अति तम तेज नशाये हरि जू ।१६।
तृष्णा लोभ तुरंग तरल संतोष लगाम निवारे हरि जू ।
सत्य सार केहरि करि क्रोध घटा कुंजरनि विदारे हरि जू ।१७।
करि निःकलंक शंक सब मेटी तव रस रीति चलाई हरि ज

सवही के अभिमान सार हरि दुनी शरण सब आई हरि जू।१८
आगम उक्ति भक्ति परिचर्या तैसी सवनि वताई हरि जू।
गुपति रीति श्रुति सार रूप सो हस्तामलक दिखाई हरि जू।१६।
प्रेम लक्षणा प्रगट करी तव सवहिनु के मन भाई हरि जू।
सार रूप दसई, नवधा तें, श्री हरिवंश सुनाई हरि जू॥२०॥
संतत हरि आराधत राधा नाम उक्ति यह जानी हरि जू।
जो रस रीति सुरासुर दुरलभ प्रगट व्यास सुव वानी हरि जू।२१।
सकल अभै श्रुति सार रूप श्री राधा पद आराधन हरि जू।
नवधा भक्ति करै जुग जुग प्रति प्रेम भक्ति कौ साधन हरि जू।२२।
द्विज कुल कुमुद चन्द प्रगटत वर सीतल करि रसदाई हरि जू।
अमी सार रस श्रवत गिरा मुख रसिक जननि सुखदाई हरि जू।२३।
तिहि रस सार मोद मदमाते आरज क्रिया भुलानी हरि जू।
जहाँ प्रेम तहाँ नेम नहीं, यह श्री हरिवंश वखानी हरि जू॥२४॥
लीला नेम प्रेम पूरित घट रट राधा गुण गावत हरि जू।
क्रिया किशोर विहार सार सर, तन मंजन जु करावत हरि जू॥२५॥
तर्पन तद-आनंद अश्रु, उर कुश-वरुनि निज बहावत हरि जू।
पुलकित रोम होत सुर नर मुनि मोद महा सचु पावत हरि जू॥२६॥
ये कर्म संत करत सन्तत अति श्री हरिवंश बताये हरि जू।
सुधा सार रस रीति जानि कैं सब रसिकनि मन भाये हरि जू॥२७॥
दियौ वताय प्रसाद सार फल श्रुति स्मृति बल भाख्यौ हरि जू।
कोटि कोटि तीरथ व्रत कीनें एक सीथ जव चाख्यौ हरि जू॥२८॥
सव जग जस जग मगत विमल अति सुनीविमल जिनवानी हरिजू।
सार रूप भागवत वेंद मत बुधि विभूति पहिचानी हरि जू॥२६॥
कुटिल हृदै वालिस जे दग्ध मन ते या रसहिं न जानत हरि जू

सब सुख रस आनंद सार विनु कन तजि छोकल छानत हरि जू ३०
श्री हरिवंश कृपा मानें विनु जे या रसहिं बखानत हरि जू।
गैर साल नानैं जिमि जानें रसिक ताहि पहिचानत हरि जू॥३१॥
सुख कौ सुख अरु मोद मोद रस कौ रस एकत कीनौ हरि जू।
तृषा तृषा की गुन कौ गुन ताकौ सुसार मथि लीनौ हरि जू॥३२॥
ता सार कौ शोधि सर्वस लयौ पुनि जु माधुरी लीनी हरि जू।
तब निज आनन्द प्रेम मिलै कैं रुचि की रुचि जिन कीनी हरि जू॥३३॥
प्रेम लच्छना नाम तासु सुख सेवत सदा विहारी हरि जू।
अति आनंद प्रेम मयी विग्रह तातें प्रिया विचारी हरि जू॥३४॥
अति अगाध गुपति तें गुपति सो सुर मुनि मरम न जानत हरिजू।
ता जु महल की बात सार सुख श्री हरिवंश बखानत हरि जू॥३५॥
एक प्रान द्वै देह सनातन अविनाशी रसरासी हरि जू।
वृन्दावन में वसत सदा सु तहाँ संतत निज दासी हरि जू॥३६॥
जब कलि कठिन प्रवल जुग जान्यौ सबै धर्म तिहि भाने हरि जू।
तब करि कृपा रसिक भक्तनि पर रस सुख सार बखाने हरि जू॥३७॥
तिहि रस सार गिरा महि पूरी, आनंद रसिक कलोलत हरि जू।
संयम व्रत तप विसरि गये सब, मोद मत्त अति डोलत हरि जू॥३८॥
श्रीहरिवंश प्रताप सार जस, मोपै कहत न आवै हरि जू।
कोटि शेष मिलि जौ वरनहिं तौ ताकौं पार न पावै हरि जू॥३९॥
हरि हरिवंश प्रताप जाप सों मेरे अन्तर नाहीं हरि जू।
शपथ करत तृन लियेंसुनहुँसब सुमिरन अघ जरि जाहींहरि जू॥४०॥
करहिं कृपा राधा जु रवन कहि है हरिवंश सु बानी हरि जू।
मुरली धरन विहार सार रति चतुर्भुज दास बखानी हरिजू॥४१॥
यह जस सुनि गुनि जो उर धरि है सो माया न काल तें डरि है।

पावै निज वृन्दावन वास राधावल्लभ सदा निवास ४२ २७

गोस्वामी श्री जोरीलाल जी महाराज कृत ॥ राग आसावरी ॥ वधाई—

प्रगटत ही सुख बाढ्यौ सहचरि मिलि गावौ। रिषि के वचन साचु भये सजनी आनंद मोद बढ़ावौ ॥ १ ॥ मम प्रभु तुम गृह निजु वपु धरि है व्यास मिश्र प्रति भाषी। सोई तारा कूखि सभागी पूजी मन अभिलाषी ॥ २ ॥ मंगल साज सँवारि सबै मिलि चंदन आँगन लिपावौ। रौपौ सींक साथिये रचि रुचि मोतिनु चौक पुरावौ ॥३॥ घर घर तें बनि वनिता गन रंगीलौ सोहिलौ गावौ। मिश्र सदन लखि वदन कुंवर कौ नैननि हियौ सिरावौ ॥ ४ ॥ वंदी जन कौ मान राखि कर दान झरी वरषावौ। विप्रनि देहु गाई अरु वाछीं हरषि असीस पढ़ावौ ॥५॥ मंगलमुखी साजि साजनि मिलि नौतन निर्त्त दिखावौ। सप्त सुरनि अरु तीनि ग्राम दै राग रंग दरसावौ ॥ ६ ॥ श्रीमुख मुख जैसैं विधि भाषी तैसी व्यास वधाई गाई। जय श्री जोरीलाल हित रसिक सभा मिलि फूली अंगन माई ॥७॥२७॥

गोस्वामी श्री नवनीतलाल जी महाराज कृत ॥राग विलावल—अल्हैया॥ बधाई ॥

श्री द्विजराज कैं हो आँगन मंगल भीर। सुर वर रिषि वर मुनिवर आये मिटी हिये की पीर ॥१॥ जय जय कहत देव ऋषि आशिष नृपति लुठत जन तीर। सुर फल वनफल सिंधु सार फल वलि ल्याये मणि हीर ॥२॥ अचिरज यहै कूँखि तारा कैं प्रगटे श्री ब्रजचंद। कीनौं तिमिर दूरि मायिक सब फूले भावुक वृन्द ॥३॥ इक सुनत वधाई धाये। दिसि दिसि ते गुन गन ल्याये॥ इक पढ़त वेद धुनि साँचे। बृजरीति रहसि रस राँचे ॥ ४ ॥ भावुक जन हिय हरषावैं। मुनि युगल उपनिषद गावैं इक

वंदी विरद उचारैं । इक मागद कुलहिं सँभारै ॥ ५ ॥ इक प्रेम रंग रस राँचैं । इक सूत पुराननि वाँचैं ॥ इक समझि सार वहु नाचैं । इक मन चीते फल जाचैं ॥६॥ इक हास रसन के पाँड़े । इन चोष चवाइनि चाँड़े ॥ दुहुँ दिसि के समधी भांड़े । आये रंग रंग मुख मांड़े ॥ ७ ॥ लियौ जनम पहिलैं वृजपति घर मोहिं दैन जो कीनौं । जै श्री कमल नैंन अब दीजै दूनौ नव नीतहि रस भीनौं ॥ ८ ॥ २८ ॥

गोस्वामी श्री कुंजलाल जी महाराज कृत ॥ राग श्रीराग ॥ वधाई ॥

प्रगटे श्री हरिवंश चन्द्र तहाँ चलौ वधाई बाजै । सर्वोपरि ब्रज भूमि विदित श्रुति वाद अनादि विराजै ॥१॥ धन्य कूखि श्री तारा रानी मंगल मोद सदा जै । मिश्र व्यास कुल दीप दिपत जहाँ दान मान छवि छाजै ॥ २ ॥ जमुना तीर उतै श्री गोकुल नन्द जसोदा राजैं । शुभ श्री कृष्ण जनम तहाँ लीनौं दास अनन्यनि काजै ॥ ३ ॥ गोप सभा शोभित ढिंग रावलि श्री वृषभान सु भ्राजै । जहाँ कीरति कूखि राधिका प्रगटी वरनत कवि कुल लाजैं ॥ ४ ॥ जाचक जन वहु किये मनोरथ सफल भये सब आजै । जय श्री कुंजलाल हित नित नित नव चित दंपति केलि समाजैं ॥ ५ ॥ २९ ॥

गोस्वामी श्री रूपलाल जी महाराज कृत ॥ राग मारू ॥ वधाई ॥

आजु वधाई कुंज महल में । अति रस मगन भई सहचरि गन डोलत सबै टहल में ॥ १ ॥ पिय प्यारी के नेह सौं सनैं सुवरन वरन मंगाये । जरकसी वसन हँसनि सौं दंपति ललितादिक पहिराये ॥ २ ॥ करि सिंगार बैठे दोऊ जन वीरी खाइ खवावैं हरषि हरषि सुख वरषि वरषि वलि भूषन वसन लुटावैं

३ ढाढी ढाढिन बनी ठनी सहचरि कुज सदन भये ठाढ़े देत असीस ईश वृन्दावन प्रेम प्रवाहनि बाढ़े ॥ ४ ॥ नाना विधि के जंत्र बजावैं गान करे अरु नाचैं। कुंज कुंज करनी मन हरनी जनम करम तें बाचैं ॥ ५ ॥ रसिक जनंनि आधार सार सुख सिंधु प्रवाह बढ़ायौ। जै श्री रूपलाल हित दंपति संपति वंशी प्रगट बतायौ ॥ ६ ॥ ३० ॥

राग भैरौं—श्री व्यास नंदन व्यास नंदन व्यास नंदन गाइये। जिनकौ हित नाम लेत दंपति हित पाइयै ॥ १ ॥ रास मध्य ललिता निजु प्रार्थना कीनी। कर तें सुकुँवारि प्यारी वंशी तब दीनी ॥ २ ॥ सोई कलि प्रगट रूप वंशी वपु धारयौ। कुंज भवन रास रवन त्रिभुवन विस्तारयौ ॥ ३ ॥ गोकुल रावलि सु ठाँव निकट बाद राजे। विदित प्रेम रास जनम रसिकनि हित काजे ॥ ४ ॥ तिनकौं पिय नाम सहित मंत्र दियौ श्री राधे। सत चित आनन्द रूप निगम आगम साधे ॥ ५ ॥ श्री वृन्दा-वन धाम तरनिजा सु तीर वासी। श्री राधा पति रति अनन्य करत नित खवासी ॥ ६ ॥ अद्भुत हरि जुक्त वंश ध्वनित नाम स्यामा। जै श्रीरूपलाल हित चित दै पायौ विश्रामा।३१।

राग विभास—आज वृज आनंद मोद भयौ। प्रकट भई निज अलि हित वंशी कलि अज्ञान गयौ॥ रसिक सभा हुलसी विलसी हिय छिन छिन प्रेम नयौ। जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी रंगी रंग नयौ ॥ ३२ ॥

राग पूर्वी—चौतालौ—धनि दिन धनि यह राति धन्य पल धन्य धन्य यह नक्षत्रघरी। धनि श्री व्यास धन्य श्री तारा जननी कूषिहि सफल करी १ धनि द्विज कुल मंडन अघ खंडन

धनि वंशी वपु प्रगट धरी। धनि धनि श्री राधा वर वल्लभ नित्य केलि यह भुव विस्तरी ॥ २ ॥ रसिक नरेश धन्य श्री हित प्रभु भुव तल दसधा भक्ति भरी। जय श्री धनि हित रूप उपासिक धनि धनि जिन यह नित्य विहार वरी ॥ ३ ॥ ३३ ॥

राग रामकली–ताल मूल—सुनि री सुनि बाजै मंगल बधाई। वंशी निजु अलि प्रगटी आई ॥ १ ॥ ललिता विनय वचन करि ल्याई। नित्य विहार केलि दरसाई ॥ २ ॥ रसिक अनन्य धर्म सुदृढाई। ज्ञान कर्म गति रति बिसराई ॥ ३ ॥ प्रेम प्रीति रस रीति बढ़ाई। दंपति निभृत निकुंज लड़ाई ॥ ४ ॥ श्री राधा वर गुन गन गाई। जय श्री हित अलि रूप लई अपनाई॥३४॥

राग सारङ्ग—आज बधाई माई मंगल री हरषति निर्त्तत नारि। गवाति गीत निरषि मुख सुखमय प्रान करति वलिहारि॥ दुन्दुभि ढोलक ढोल भेरि सहनाई बाजति झांझि प्रनव करतार। जै जै धुनि कुसुमावलि वरषित जै श्रीलालरूप हित सार।३५।

सारंग—श्री व्यास सुखद मन्दिर मैं बजति बधाई री माई। प्रगट भये त्रिभुवन हित कारन श्री हरिवंश सहाई ॥ १ ॥ द्विज कुल कुमुद प्रकाशक प्रेमा राकापति छबि छाई। उड़गन रसिक समाज साजि कलि दुर्ल्लभ सुलभ दिखाई ॥ २ ॥ नीरस सरस किये भुव तल सब नित्य केलि दरसाई। वंशी वपु अवतार निहारो निजु जन के हित आई ॥३॥ गये अमंगल कर्म कठिन ते भये मंगल अधिकाई। जै श्री रूपलाल हित श्री वृन्दावन वास बधाई पाई ॥ ४ ॥ ३६ ॥

सारंग—वंशी प्रगट प्रकाश अवनि श्री हित हरिवंश किये। रसिक अनन्यनि के गुरजन मन वांछित जननि दिये १ ॥

नित्य निकुंज विहार सार रस अमृत संत पिये। महा मोद मंगल कौ उद्भव लखि अलि रूप जिये ॥ २ ॥ ३७ ॥

सारंग—व्यास वंश कुल दीप सुधा कर प्रकटित श्री हरिवंश उजागर। ललिता हित रसिकनि मन पोषन निजु अलि बंशी प्रेमा आगर ॥ १ ॥ विधि निषेध तम हरन करन सुख नित्य विहार सार रस सागर। दंपति केलि मान सर क्रीडत जय श्री लाल रूप हित पोषत नागर ॥ २ ॥ ३८ ॥

गोस्वामी श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत—राग जैतश्री। ताल आड ॥

भूर भाग श्री तारा रानी जिन जग मंगल कीनौ जू।
श्री हरिवंश चंद्र जहाँ प्रगटे जननी जनक सुख दीनौ जू ॥ १ ॥
व्यास आस की वेलि लह लही सुकृत सार फली है जू।
सुजन जननि के भये भाँवते घर घर रंग रली है जू ॥ २ ॥
राधा रसिक रसामृत पूरित जिहिं वंशी वपु धारयौ जू।
आइसु पाइ भाइ ना ना विधि भुव मंडल विस्तारयौ जू ॥ ३ ॥
वृन्दारन्य मिथुन पद रवनी कमनी केलि महाई जू।
साधन पुनि आराधन सोई रसिकनि हित दरसाई जू ॥ ४ ॥
आगम वचन मिश्र सुनि सुनि कै बिप्रनि के पद वंदे जू।
मंगल विशद होत गृह गृह प्रति कुटंब सहित आनंदे जू ॥ ५ ॥
गावति सरस सोहिले रचि रचि द्विज बनिता बनि आई जू।
मुरि मुरि लगति चरन रानी कै फूली देति वधाई जू ॥ ६ ॥
पुनि वंदीचारन जस वरनत वंशावली सुनावै जू।
मंगल मुखी निर्त्त सजि ना ना निर्त्तत रंग वढ़ावै जू ॥ ७ ॥
फूली फिरति मलिनियाँ पौरिनु बाँधति वंदन वारैं जू।
चाइनु भाइनु सकल सुवासिनि धरति साथिये द्वारैं जू। ८

परम उदार विप्र कुल भूषन मिश्र महा मन हरखे जू। हय गय रतन धेनु पट भूषन जाचक जन पर वरषे जू ॥ ९ ॥ गह गही धुरति दुंदुभि रुचि सौं बाजें बहु विधि बाजें जू। जय श्री किशोरी लाल हित रूप जनम दिन प्रमुदित रसिक समाजे जू ॥१० ॥ ३६ ॥

राग धनाश्री—श्री द्विज राज भवन में रँगीली बाजत आजु वधाई। जग मानीं जानीं द्विज रानी जायौ सुत सुखदाई ॥ रंगीली० ॥ टेक ॥ सुनें एक रस की द्वै मूरति गौर स्याम रंग भीनें। वृन्दावन की सम्पति दम्पति नित नव नेह नवीनें ॥ तिनकौ हित वंशी तै हितमय त्रिविधि एक वपु धारे। श्री हरिवंश नाम व्है प्रगटे हित स्वरूप विस्तारे ॥ १ ॥ नव निकुंज कौ महा मधुर रस अद्भुत अंग रसीलौ। उज्वल रस की उज्वलता लौं जग मगात चटकीलौ॥जाकौ ध्यान धरत हैं श्रीपति ऐसे वेद वखानैं। ताही के ये उदय करन कौ उदय भये रुचि मानैं ॥२॥ लखि अचिरज सौं प्रथम व्यास जू पुनि ऋषि रव सुधि कीनो। तब तौ फूलि उठे द्विज नृप जु मंगल में मन दीनो ॥ फूलनि मंडप द्वार धुजा धरि केशरि अजिर लिपाये। बाँधी वंदन माल मनोहर मोतिनु चौक पुराये ॥३॥ जल गुलाब छिरकाय चहूँदिशि कदली कलित रुपाये। दीपावलि दीपति करि मणि मय कंचन कलश भराये ॥ तान वितान विविधि रचन रचि पाँचौं शब्द करावैं। जय जय कहि वजाइ दुंदभि दिवि सुर सुमननि वरसावैं ॥४॥ भई छबीली भीर द्वार पर कोउ गावैं कोऊ नाचैं। मागध मंजुल वंश बखानत सूत पुराननि बांचैं॥ महीदेव आपधाये आये निगम रिचानि सुनावैं। पढ़त कवित्त विविध वंदी जन अरु गुन गुनी दिखावैं ॥५॥ एक

धरत सिर हरी दूब कौ इक हँसि पाइनु लागै एकनि भेट धरी लै आगे मिश्र निरषि अनुरागैं ॥ घोरि अमोल कुम कुमा चंदन छिरकत सब छाये । मनहुँ रूप सरवर में सुन्दर हेम पुहुप विक-साये ॥ ६ ॥ देत सबच्छ धेनु विप्रनि कौ कनक वसन मणि माला । गाजि गाजि घन लौं धन वरषत जाचक किये निहाला ॥ वंधु वधू पहिराइ मान दै मेवनि गोद भराई । देत असीस सकल नर नारी कीरति धुज फहराई ॥७॥ प्रफुलित रसिक रंगीले वहु विधि अति आनंद सों डोलैं । चित चाहत फल पाय प्रेम सों श्री हित श्री हित वोल ॥ नित्य विहार भजन दायक कौ उत्सव हियो सिरावै ॥ जयश्री हित रूप किशोरी लाल यह उमगि उमगि जस गावै ॥ ८ ॥ ४० ॥

राग ललित—वधाई आजु व्यास मिश्र के धाम । प्रगटी भुव वंशी प्रीतम की सुफल भये मन काम ॥ निभृत निकुंज रहसि रस ग्याता दाता राधा नाम । जय श्री किशोरीलाल हित रसिकनि जीवन रटि हैं आठौ जाम ॥ ४१ ॥

राग देसी टोडी—वधाई आजु व्यास मिश्र घर वजति रंगीली भाँति । लै लै भेट वाद उमह्यौ सव इक आवत इक जाति ॥ वाँधत वंदन वार द्वार इक फूले अंगन माति । जय श्री किशोरी लाल हित रूप प्रगट लखि वल्लभ वलि वलि जाति ॥ ४२ ॥

राग जोगिया आसावरी—रंगीली वधाई है सखि आज, चलौ मिलि मंगल गावौ माई । पुत्र भयौ तारा रानी कैं रसिक जननि सिरताज ॥ चलौ० ॥ भई मन भावन भीर भाँवती व्यास मिश्र सवों पर राज । जैं श्री किशोरीलाल हित रूप प्रगट लखि सफल भये मन काज　४३

गोस्वामी श्री व्रजपति जी महाराज कृत॥राग भैरौ॥ बधाई

जै जै श्री हरिवंश रसिक वर । प्रगटे प्रेम भक्तिरस कारन व्यास नन्द राजत सर्वोपरि ॥ १ ॥ प्रफुलित वदन कमल कल नित ही जुगल चरण नख तेज प्रभा कर । कनक राशि तन वन कवनी छवि प्रतिबिंबित छवि गौर छटा झर ॥ २ ॥ बाधा रहित सहित सुख सम्पति मान देत जग निधि नित कौ घर । श्री राधा मोहन चरन माधुरी पान करत दृग जुग चष चंच्चर ॥ ३ ॥ पर अपराध जानि हूँ हित के वचन मधुर तर वदित निरन्तर । जै श्री व्रजपति हित चित हिये ध्यान धरि ताप अनल कौ है धारा धर ॥ ४ ॥ ४४ ॥

सारंग—आजु जग प्रगट्यौ हित आनन्द । व्यास वंश कौ अखिल उदौ भयौ फूले रसिक वर वृन्द ॥१॥ सखि कुमुदावलि फूलीं लखि दृग जै जै पूरनचन्द । प्रिया चरन पंकज अलि निशि दिन पान करत मकरन्द ॥ २ ॥ वाल चरित्र पवित्र करन कौं गावत नये नये छन्द । जै श्री व्रज पति हित अनुराग रंग भरे नीरस मन भये मंद ॥ ३ ॥ ४५ ॥

सारंग—प्रगट भये हरिवंश गुसाईं । माधौ मास सुकल तिथि पूरन यह एकादशी सवनि सुहाईं ॥ १ ॥ वाद गांव अभिराम धाम वर व्रज की भूमि सवनि सुखदाईं । रावलि प्रगट भई पूरन प्रिया तातें सखि सनमुख प्रगटाईं ॥ २ ॥ लाल युगल पोषन कारन श्री व्यास वंश की जोति जगाईं । वृन्दावन बसि राधावल्लभ सेवा चरन कमल चितलाईं ॥ ३ ॥ विठ्ठलदास व्यास रस रासहि कृपा करी उनकें मन भाईं ।श्री व्रज पति हित वरनत यह जस रसना इहि विधि लाड़ लड़ाईं ४ ४६

गो स्वामी श्रीउदैलाल जी महाराज कृत वधाई

आजु वधाई मंगल मेरे गावति सखी सयानी जू । कुंज कुंज फूलनि अति प्रफुल्लित प्रेमलता हुलसानी जू ॥१॥ मानत मोद लाल लाड़िली दोऊ बोलत मधुरी बानी जू । देत परस्पर चितवनि विहसनि श्री हित निजु सखी जानी जू ॥ २ ॥ जमुना जल तरंग रंग रंग छवि वृन्दावन रजधानी जू । माधव मास व्यास उजियारी प्रगट भये जग जानीं जू ॥ ३ ॥ श्री राधा-वल्लभ नित प्रति सेवत कुंज कुटी मन मानीं जू । जय श्री उदैलाल हित सर्वस मोहन हित चरननि शुभ थानीं जू ॥ ४ ॥ ४७ ॥

गोस्वामी श्री चतुर सिरोमणिलाल जी महाराज कृत ॥ राग सारंग ॥

प्रगटे श्री हरिवंश जू, रस दानी हो ॥ सकल रसनि की खानि, लाडिलौ व्यास कौ रस दानी हो ॥ सुख दृग अति ही सिरात हें, रस दानी हो ॥ कहत वनें नहीं वैंन ॥ लाडिलौ० ॥ १ ॥ तारा अति अनुराग सों ॥ रस०॥ प्रफुलित माति न अंग ॥ लाडिलौ० ॥ देखत मुख सुत कौ तवै ॥ रस०॥ प्रगटी हियें उमंग ॥ लाडिलौ० ॥ २ ॥ छायौ घन आनंद कौ ॥ ॥ रस० ॥ चपला तन सुठि वाल ॥ लाडिलौ० ॥ वरषत अति रस रंग है ॥ रस० ॥ प्रफुलित सवहि निहाल ॥ लाडिलौ० ॥ ३ ॥ हिलि मिलि के युवति सवै ॥ रस० ॥ आई व्यास गृह धाइ ॥ लाडिलौ० ॥ देत वधाई व्यास कौं ॥रस०॥ आनंद अति हरषाइ ॥लाडिलौ०॥४॥ धनि धनि तेरौ भागरी ॥रस०॥ तारा कहत वनैंन ॥ लाडिलौ० ॥ प्रगट्यौ पूरनचंद री ॥रस०॥ लखि मुख टरै न नैंन ॥ लाडिलौ० ॥ ५ ॥ कोऊ सथिया रुचि सौं धरैं । रस० ॥ मोतिनु चौक सुढार लाडिलौ० । कोऊ

मलया गर लीपई ॥ रस० ॥ बाँधत वंदन वार ॥ लाडिलौ० ॥ ६ ॥ कोऊ लालन मुख निरषई ॥ रस० ॥ लोचन करि रस घूट ॥ लाडिलौ० ॥ टरत न ढिंग तें रंचकौ ॥ रस० ॥ परी हाथ मनौ लूट ॥ लाडिलौ० ॥ ७ ॥ कोऊ गावति चाइ सौं ॥ रस० ॥ मंगल सचहि वनाइ ॥ लाडिलौ० ॥ धनि निज मानत भाग कौं ॥ रस० ॥ फूली अंग न माइ ॥ लाडिलौ० ॥ ८ ॥ जो सुख छायौ वाद में ॥ रस० ॥ सौं अब कहत वनैन ॥ लाडिलौ० ॥ मनहि जानत है वहै ॥ रस० ॥ वनै जु देखै नैन ॥ लाडिलौ० ॥ ९ ॥ वाढ्यौ अति अनुराग रस ॥ रस० ॥ व्यास मिश्र के धाम ॥ लाडिलौ० ॥ भए सवै हित चतुर कैं ॥ रस० ॥ पूरन मन के काम ॥ लाडिलौ०॥१०॥४८॥

राग ललित—व्यास घर प्रगटी सुखद वधाई । आनंद युत प्रफुलित जुवती सब तारा अंग न माई ॥ १ । अति ही लाडिलौ व्यास मिश्र कौ मुख हेरत दिन जाई । तारा ललक हिय लालन तन छिन छिन चाह सवाई ॥ २ ॥ उमड़ि घुमड़ि सुठि सदन व्यास कै जे तिय गृह तजि धाई । देखत कुंवर नवल मुख शोभा लोचन किहूँ न अघाई ॥ ३॥ किलकत कुंवर करनि तारी दिये राधा नाम सुहाई । त्यौं त्यौं कहत सकल सचु पावत मन ही मन हरषाई ॥ ४ ॥ तव तें रहत चुहुल गृह तारा आवत जे नहिं जाई । रहत लुभाइ रुचिर रस माही हित चातुर वलि जाई ॥ ५ ॥ ४९ ॥

गो० श्री जुगलवल्लभ जी महाराज कृत—रावल वजी गोकुल वजी अव तो वधाई बाद में ॥ रावल में प्यारी राधिका गोकुल गुपाला साधिका, बाद में हित के हितू, अव तो वधाई बाद में ।

१ एक मन तीनो सही, कहता मुल्क मैंने कही, एक संग तीनों वही अब तो वधाई वाद में ॥ २ ॥ कोल कर आवे जहाँ रस भूमि में प्रगटे तहाँ, और ऐसा है कहाँ, अब तो वधाई बाद में ॥ ३ ॥ कहते जुगलवल्लभ यही, यस छारहा सारी मही, रसिको ने कुछ मैनें लही, अब तो वधाई वाद में ॥ ४ ॥५०॥

वधाई रास मंडल की–चलो मंडल सभी मिलि कें वधाई है वधाई है ॥ जहाँ वानी श्री सेवक की रसीली झर लगाई है ॥ समाजी साज बाजे से सभी रसिकों ने गाई है ॥ रंगीली राग रागिन में सुनी मन में समाई है ॥ कमाई श्याम सुन्दर की यही मंडल पै छाई है ॥ जहाँ वट में रहे सेवक तमाले ध्रुव समाई है ॥ किशोरी रास रंगी की रंगीली मूर्ति ध्याई है ॥ बजी जब से भई तब से जुगलवल्लभ सुनाई है ॥ परी कानों में जिनके सो रंगे रंग में सदाई है ॥ ५१ ॥

श्री मधुरानन्द जी महाराज कृत राग विभास–प्रगटे श्रीहरिवंश नरेश दिनेश द्विजेश श्री व्यास मिश्र गृह शेष महेश सुरेश सारदा नारद जसु रसु भावन । वलि वलि पन्द्रह सै संवत्सर रितु वसन्त माधव मास ग्यास उजियारी सुप्रसन्न श्री राधावल्लभ जू आपु ही सुरूप धरि प्रीति प्रतीति रस रीति दृढ़ावनि ॥ १ ॥ अति उत्साह वाद अनादि सुधर परि करि उधारुनि निगम सारु नित्य विहार स्नेह आचार आचारज रुई श्री वृन्दावन कुंज निकुंज इष्ट लीला रस दरसावन । हित मधुरा नन्द सुछन्द तत्सुख नन्द श्री तारा जू नन्दन पद द्वन्द शरन हौं अरु जेते विशद विशद गुन गावन २ ५२

॥ श्री हित वल्लभ जी महाराज कृत ॥ राग माल कोश ॥

अति आनन्द मिश्र दरबार । प्रगटी हितवंशी प्रीतम की माधव मास ग्यास उजियार॥ भयौ प्रकास कूषि तारा की गावति युवति मंगल चार । हित वल्लभ लखि रूप माधुरी तन मन धन कीनौ बलिहार ॥ ५४ ॥

श्री लालदास जी महाराज कृत—राग सारंग—व्यास भवन में बजति बधाई । प्रगट भये श्रीरसिकशिरोमणि रसिक जननि सुखदाई।१। धुजा पताका रोपी गृह गृह रचना रुचिर बनाई । धरे साथिये सौनें सींकनि सखियनि मंगल गाई ॥ २ ॥ तोरन बंदन माला बाँधी नूत पत्र छवि छाई । जग मगात हीरन की झालरि शोभा कही न जाई ॥३॥ चारन सूत वंदीजन गायक सब मिलि करत बड़ाई । देत दान अति मिश्र महा मन गौ गन कोटि मंगाई ॥ ४ ॥ लेत सु विप्र छिप्र सब आवत देत असीस सुहाई । वरषत पुहुप देव मन हरषत इन्द्र निसान बजाई ॥ ५ ॥ श्री हित हरिवंश चन्द्र वर राजत सब जग तिमर नसाई । वरषत सुधा सरस सबही की त्रिविधि जु ताप सिराई ॥६॥ बाढ्यौ सिंधु व्यास मन आनन्द निरखि निरखि सुख पाई । लालदास इक टक दृग देखत ज्यौं चकोर चित लाई ॥ ७ ॥ ५५ ॥

श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत—राग गौरा—प्रगटित श्री हरिवंश सुधाकर । प्रचुरित विशद प्रेम करि दिस दिस नसत सकल कर्मादिक तिलपर ॥ विकसत कुमुद सुजस निज संपति सरस रहसि जुत अमी अवनि पर । करत पान रस रसिक भृंग ह्वै हित ध्रुव मन आनंन्द उमगि भर ॥ ५६ ॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत ॥ राग गौरी ॥

प्रगटे श्रीहरिवंश धनी श्री व्यास मिश्र तारा तन उत्पति

रसिक जननि के मुकट मनी　प्रेम प्रकास भयौ दसहु दिस कीरति रास विलास सनी। श्री वृन्दावन राज विनोदनि मोद कल्यान छए सघनी ॥ ५७ ॥

राग देव गंधार—श्री तारा नन्द प्रगट यह कारनु। भजन जिहाज आजु कलियुग में भव समुद्र कौ तारनु॥ रसिकनि की रस मूरि सजीवनि सब जीवनि प्रति पारनु। कुल सिंगार भारु सब गुन कौ प्रीतम प्रीति सहारनु॥ अति गंभीर धीर धरनी धन वानी जश विस्तारनु। श्री व्यास नन्द आनन्द मई तनु पद कल्यान सिर धारनु ॥ ५८ ॥

॥ श्री सहचरी सुखजी महाराज कृत वधाई ॥ राग आसावरी ॥

रंगीलौ आज वधावौ मिलि मंगल गावौ। जनम द्यौस हरिवंश चन्द्र को गह गहे मृदंग वजावौ ॥ मिलि मंगल०॥ टेक ॥१॥ व्यास सुकृत भयो सफल पाछिलौ आँगन चंदन लिपावौ। रानी तारा सदन सोहिलौ मोतिनु चौक पुरावौ ॥ २ ॥ रचौ साथिये सात सीक धरि द्वारे केलि रुपावौ। रस वत नवल फूल फल दल की वंदन वार वँधावौ ॥३॥ चित्रौ कलश सीस श्रीफल धरि दीपनि अवलि जुरावौ। झलकत कोर कंचन तारनि सजि सुरंग वितान तनावौ ॥४॥ विप्र बुलावौ रिचा पढ़ावौ दच्छिणा हुलसि बटावौ। पूजौ चरन स्वच्छ गो दै हरषि असीस दिवावौ ॥ ५ ॥ जरकसी चीर विविधि पाटम्बर सबहि जात पहिरावौ। दुन्दुभि झाँझ भेरि सहनाई ढोल मृदंग वजावौ ॥ ६ ॥ ततरु वितत घन सिखरनि लै कंठनि के सुरनि मिलावौ। मंगलमुखी साधि संगीतनि नए नए नित्त दिखावौ ॥७॥ रसिक मोद छकि खोलि भंडारनि संपति सरस लुटावौ। भिच्छुक विरद पढ़त तिन

पर लै दान झरी बरषावौ ।।८।। पाँय परौ सबही गुरुजन कै रुचि सौं सीस नवावौ । सहचरि सुख यौ वर विनोद वन भावक नैननि छावौ ।। ६ ।। ५६ ।।

राग विभास—माई व्यास उदधि सिंगार जुगल मधि जस की लहरि बढ़ी छवि अनन्द । तामें सलिता ललित अमृत की तारा रानी रंग संगम कियौ प्रगटे तहाँ हरिवंश चन्द्र ।।१।। मदन रैंन भावुक बहु उडुगन झलकि तेज द्युति भये है मन्द । ज्योति सुपुंज प्रीति कुंजन में रूप देस दिपे सुरत अकासनि नव प्रकाश मोहनी छन्द ।।२।। फूले हृदय कुमुद रसिकनि के दृग गो चकोर भये भूले पलकनि समुख विलोकत रहास कन्द । सहचरि सुख ललितादि अलिनु के मुदित वृन्द मन वर विहार वृन्दावन शोभा जगत वृन्द ।। ३ ।। ६० ।।

राग नट—ताल मूल—आज रंगीली बधाई रस सानी । व्यास महल रस चहल पहल भई सुकृत सफल तारा रानी ।।१।। वरस गांठि हरिवंश चन्द्र की वाद जनम दिन सनमानी । वोलि महा मुनि जात करम करि पढ़वाई वेदनि वानी ।। २ ।। सूत कहत अवतार वेंनु हरि वेंनु राधिका जस दानी । श्याम वेद की रिचा विप्र कुल मागध वंशनि पहिचानी ।।३।। भाट काव्य किरिकिरी रहसि की भाव पटनि में छकि छानी । वन्दी सुर गावत मृदंग मिलि धर्मी जुगल रजधानी ।। ४ ।। ललिता ललित रीति की रचना जिनकी लय सौं लपटानी । चारि चरन रज सहचरि सुख हित कुल प्रताप तें उर आनी ।। ५ ।। ६१ ।।

राग ललित—आजु बधाई हिय सुखदाई सुनत सुहाई रसिकनि गाई । तारा कूखि रंग वरस नें चैन सरसाने जस

दरसाने आनन्द साने कीरति ब्रज में छाई ॥ १ ॥ जनमत ही हरिवंश चन्द्र कैं अमृत कन्द कै जगत वंद कैं व्यास नन्द कैं भई सवनि मन भाई । फूलि उठे रिझवारनि के गन रचे तन जे अनन्य न श्री वृन्दावन उज्वल रस निधि पाई ॥२॥ खिलत वाल कर कनक थाल रचि दीप माल नव दल रसाल की वंदन माल वँधाई । वीन वैंन सौं मिलि मृदंग धुनि चंग उपंगनि सुर मुहचंगनि हित के संगनि सहचरि सुख दुलराई ॥ ३ ॥६२॥

राग देव गंधार—आजु मिलि गावत रसिक वधाई । नव निकुंज लीला लीला प्रकाश की रस चिन्तामणि पाई ॥ १ ॥ कीरति जुगल स्वरूप सरस्वती जा रसना पर छाई । अष्ट अलिनु की एक अली वृन्दावन में दरसाई ॥२॥ जाके वदन विलास वरन वर रहसि रीति वरसाई । व्यास सदन प्रगटे ते जु जिन में कुंज प्रीति सरसाई ॥ ३ ॥ जनम रली हरिवंश चन्द्र की सव अनन्य मन भाई । वरस वरस पर वरस गांठि भावक मुख ललित लड़ाई ॥ ४ ॥ नांचत गावत मृदंग वजावत फूलन अंग समाई । अर्पन कियौ अरन पो जिन छकि संपति बहुत लुटाई ॥ ५ ॥ तारा कूखि प्रगट भये वन की ओपी अति ठकुराई । श्री राधिका सुहाग सिद्ध लखि सहचरि सुख दुलराई ॥ ६ ॥ ६३ ॥

रसिक मिलि गावत रंगीली वधाई । राधा सुजस किरनि उज्जल हरिवंश चन्द्र में पाई ॥ १ ॥ कुमुद हिये फूले सिंगार रस (रवि) विकसि वृन्दावन छाई । दृग चकोर भई अनन्य सहेली रास रहसि दरशाई ॥ २ ॥ नित्य छहो ऋतु योग पुष्ट छक सांवल गौर दिखाई । व्यास महल तारा सुत कीरति सहचरि सुख दुलराई ॥ ३ ॥ ६४ ॥

राग वसंत—हेली रंग फूल्यौ कुंज महल में रहसि की विरधि भई मन भाई। वरस गांठि हरिवंश रसिक की हरिवंशी वपु उदै भाव वन वरन वरन छवि छाई ॥१॥ सत चित आनंद मोद की लीला ललित विनोद दिखाई। सफल भयौ सिंगार कल्प तरु वनरानी जस कलियनि खिलि खिलि प्रीतिलता लपटाई ॥ २ ॥ अष्ट अलिनु की टहल रीझि छकि योग वृष्टि वनरा नैं पाई। धर्मी धर्म रीति वंशीवट सहचरि सुख दुलराई ॥३॥६५॥

बसन्त—माधौ रस वरषौं व्यास महल। हरिवंश जनम रस चहल पहल ॥ टेक ॥ फूल्यौ सफल सुकृत तारा कैं भाग। फूले रूप कुंज कुंजनि में राग ॥ ललितादिक कौ फूल्यौ सुहाग। सिंगार कलीं खिलीं मदन वाग ॥ १ ॥ फूले चंपक तन यमुना कैं तीर। इक सौंन जुही दुति चमकैं चीर ॥ बहु केशरि वरनी अलिनि भीर। गुललाला हिय सींचे उज्जल नीर ॥२॥ गोलोक इष्ट हित मति विशाल। शुक नासा पिक वानी रसाल॥ झरें फूल हँसत चलैं हंश चाल। वंधूक अधर जगमगत लाल ॥३॥ मौरे भाव अंव कीरति के मोर। वृन्दावन आनंद ठौर ठौर ॥ गावत सरस्वति सुर भई हैं वौर। सहचरि सुख रीझै श्याम गौर ॥ ४ ॥ ६६ ॥

राग गौरी—उज्जल रस रच्यौ आजु वधावौ ॥ टेक ॥ अलि भावक मिलि मंगल गावौ। राधा जस हित चौक पुरावौ ॥१॥ हँसि हरिवंश सुहिलरा गावौ। तारा कूखि तेज दुलरावौ ॥२॥ व्यास विरधि आनन्द बढ़ावौ। कुंजनि गह गहे मृदंग बजावौ ॥३॥ रंग रंगीले श्रवननि छावौ। ललितादिक अलि जो मन भावौ ४ रहसि मोद गुन सुख वरषावौ हिय जिय कान्ह

कुँवरहि रिझावौ ५ रास छकीलौ झमक आवौ छकि छकि सहचरि सुखहि छकावौ ॥ ६ ॥ ६७ ॥

राग राइसौ—व्यास सदन नव सोहिलौ, ए मिलि मंगल गावौ । तारा कूखि सफल भई गह गहे मृदंग बजावौ ॥ १ ॥ जनम सुनत हरिवंश कौ वृज आनंद फूले । कृपा अष्ट अलियनि लखैं रसिकनि हिये फूले ॥२॥ उदै भयौ रस रास कौ रसना रस वानी । लीला निभृत निकुंज की नैंननि में सानी ॥ ३ ॥ मोद विनोद भरी रली वृन्दावन छाई । ललितादिक अलि भाव की चिन्तामणि पाई ॥ ४ ॥ श्री राधा जस चाह कनि हँसि अजिर लिपाये । लाल श्याम मन भाँवते किये विविधि बधाये ॥ ५ ॥ रंगीले चौक पुराइ कैं कदली रुपवाई । द्वार द्वार फल दलनि की वन्दन माल बँधाई ॥ ६ ॥ विरध खिले हित हाथ सौं साथिये धराये । पंच शब्द संगीत गति बहु निर्त्त दिखाये ॥७॥ आनंद मंदिर मदन कौ सहचरि सुख गावैं । महा प्रसादी रीझि में चरननि रज पावैं ॥ ८ ॥ ६८ ॥

राग जैतश्री—आनंद आजु रसिक पुर घर घर जुगल रहसि निधि पाई जू । जनम सुनत हरिवंश चन्द्र कौ गावत विविध बधाई जू ॥१॥ उलही रीति ललित ललितादिक भावक अलि मन भाई जू । उलह्यौ रस सिंगार जस उज्वल वर वरननि छवि छाई जू ॥ २ ॥ श्री राधा पद मधुकर के हिय रति की खिलनि बढ़ाई जू । दान मान आनंद अवधि इच्छा फल चाह सुहाई जू ॥ ३ ॥ व्यास सदन सोहिलौ सुहायौ घुरत निसाननि घाई जू । ताल मृदंगनि संग रंगनि मिलि विरधि सखी सुख गाई जू ४ । ६६ ।

॥ राग चैती गौरी ॥—अहो रंग फूल्यौ है रसिकनि नैंन रंगीलो आजु सोहिलौ। अहो वाढ़्यौ सव ब्रज चहुँ दिस चैंन रंगीलो आजु सोहिलौ ॥ १ ॥ आजु विरधि सुहावनी सव हुल-स्यौ रसिक समाज। व्यास मंदिर मोद मई मंदिलरा गह गहो वाज ॥ २ ॥ सफल तारा कूषि मही भई हिये आनंद झूलि। हरिवंश चंद्र कौ जनम दिन सुनि भावक सव उठे फूलि ॥३॥ एक मृदंग वजावहीं अरु एक लिये कर जंत्र। एक कंठनि सुर कहैं मन मोहनी मनौं रस मंत्र ॥ ४ ॥ चित्रिति चतुर नव चौक इक चंदनि सौं अजिर लिपाइ। एक कंचन झर वरषि गहि रहत गुनिनु के पाइ ॥५॥ लावति वधाई मुदित व्है तन हुलसि रंगीली वाल। मंगल रुचिर रचना रचैं कर ओपे हैं कंचन थाल ॥६॥ वोलि विप्र रिचा पढ़ावैं हुलसि दच्छिना देत। सनमान सौं अर्पन करत सुरभी गन वछनि समेत ॥ ७ ॥ धरैं सवासिनि साथिये धर मानि विरधि रसाल॥ मालिनि कुसुम किशलय दलनि की बाँधति वंदन माल ॥ ८ ॥ सूत मागद भाट वंदी पढ़त जसनि अपार। तिनकौं लुटावत ललित रीतिनु खोलि खोलि भंडार ॥ ९ ॥ धुज कलश पूरन धाम धरि आंगन रुपाई केलि। जग मगैं अनूठे विनोद सौं विधि रचना पायनु पेलि ॥ १० ॥ श्री राधा वल्लभ भाँवते उलहे चहूँ दिसि चैंन॥ श्री कमल नैन प्रताप तैं झलकैं सहचरि सुख नैंन ॥ ११ ॥ ७० ॥

राग श्याम कल्याण—मंगल रसिकनि मन भायौ। हेली वृन्दावन उझिल्यौ आनंद। फूले रसिक मोद अंग अंगनि जनम सुनत हरिवंश चंद ॥१॥ राधा जस जोतिनु की चन्द्रिका झलकी जमुना तट सु छंद। आंन प्रकाश दवे उडगन लौं तिमिर मोह

भ्रम भये मंद ।२ ।। दृग चकोर छवि छके सजाती है अनन्य फसे चाह फंद । उदै ओट सिंगार शैल तें सुरति सुनभ दिप्यौ अमृत कंद ।। ३ ।। अलि भावक कुमुदनि सहचरि सुख खिलनि खिल्यौ दुरि जगत वन्द । निशदिन नित्य शरद मय पोषक लिखि विनोद छक्यौ नँद नंद ।। ४ ।। ७१ ।।

राग वसंत—हेली वरस गांठि अलबेली केली रति वेलीनि फूल्यौ वसन्त ।। वाद जनम हरिवंश चन्द्र को भावक अंव मौरे कुंजनि में चंपक वरनी खिली अनन्त ।।१।। पंकज मुख लोचन गुलाव भरैं हसनि कुशम माधव है मंत ।। ललित विशाखा वन रानी संग मदन वाग छवि फूली अंग अंग भंवर कियो अनुकूल कन्त ।। २ ।। जमुना तट यश उदै धर्म धरमी पिक व्रत वानी लसन्त ।। रास विलास हुलास सखी सुख हित कुल कृपा अनन्यनि ऊपर तजि प्रपंच हिय भये है सन्त ।। ३ ।। ७२ ।।

राग वसंत—प्रगट भयौ रसिकनि कौ आधार । दम्पति के सम्पति सुनियत है सो हित व्यास कुंवार ।।१।। विधि निषेध नूतन धर्मिन कैं पल में दिये विडार । प्रेम भक्ति सर्वोपर राखी कर रस रीति प्रचार ।। सुख सखी हित उदधि तरंगे गौर श्याम वलिहार ।। २ ।। ७३ ।।

।। श्री कृष्णदास जी महाराज कृत वधाई ।। राग धनाश्री ।।

माधव मधुर सुहावनौं, नव रंग भिल्यौ वन । पूरन चन्द प्रकाश, मधुर सुहावनौ, नव रंग भिल्यौ वन ।। व्यास कुंवर मन भावनौं, नव रंग भिल्यौ वन । आनन्द सिंधु हुलास, मधुर सुहावनौ, नव रंग भिल्यौ वन ।। १ ।। फूली सुधा मधु माधुरी ।। नव० ।। रसिक चकोरनि भाग ।।मधुर०।। भीर भवन नव सुंदरी

॥ नव० ॥ हुलसत सुभग सुहाग ॥ मधुर० ॥ २ ॥ लसनि लसे शीशन कसे ॥ नव० ॥ सीस फूल श्रीमंत ॥ मधुर० ॥ हरषि हिये न समावई ॥नव०॥ शिर चढ़ि फूलि वसंत ॥ मधुर० ॥ ३ ॥ स्वच्छ गुच्छ मोतिनु लरैं ॥नव०॥ लतस गुही लट शोभ ।मधुर०। मनु षट पद फूलनि जुही ॥नव०॥ लपटि रहे रस लोभ ॥ मधुर० ॥ ४ ॥ भालनि रुरैं न दुरैं पिसैं ॥ नव० ॥ कोमल कुंचित केश ॥मधुर०॥ मनहुँ नूत छवि मंजरी ॥नव०॥ निकसी फूल सुदेश ॥ मधुर० ॥ ५ ॥ वंकौंही भृकुटी जुटी ॥ नव० ॥ चपलौंही चित चाड़ ॥ मधुर० ॥ मनु भृंगी लरती भली ॥ नव० ॥ जो न हुती विच आड़ ॥ मधुर० ॥ ६ ॥ नैंन चन्द्र कमलनि मुखी ॥नव०॥ मृदु मुसिकनि मकरंद ॥ मधुर० ॥ पीवति भरी चष चितवनी ॥ नव० ॥ मनु भँवरी रस कंद ॥ मधुर० ॥ ७ ॥ ढ़ेढ़िन ढ़िंग टेढ़ी हलै ॥ नव० ॥ अलकावलि अनुसार ॥ मधुर० ॥ मनहुँ चलै धारा चली ॥नव०॥ दुहूँ दिस रस सिंगार ॥ मधुर० ॥८॥ श्रम जल कन मद मोर री ॥ नव० ॥ स्वास सुवास समीर ॥ मधुर० ॥ अधर अरुन मुक्ता फलहि ॥ नव० ॥ झुकि झुकि नासा कीर ॥ मधुर० ॥९॥ हँसत लसत दसनावली ॥ नव०॥ पीक सनीक तंवोल ॥मधुर०॥ मनु सौनैं सुमनावली ॥ नव० ॥ झलकत दलनि कपोल ॥मधुर०॥१०॥ चिबुक चिकौनैं चमकि हीं ॥ नव० ॥ पोति कपोतनि ग्रींव ॥ मधुर० ॥ देखि निमेष न लागहीं ॥ नव० ॥ रेष रूप रस सींव ॥ मधुर० ॥ ११ ॥ सौभग सर उरजनि कली ॥ नव० ॥ कंचन वाहु मृनाल ॥ ॥ मधुर० ॥ मृदुल करज पल्लव मनौं ॥ नव० ॥ नख अंकुर अति लाल मधुर० १२ झुनु झुनुनुनु नूपुर वजैं

॥ नव० ॥ कृश कटि किंकिनि जाल ॥ मधुर०॥ ठुमकि चलनि में छलनि मनौ ॥ नव० ॥ मोहन मुदित मराल ॥ मधुर० ॥ ॥ १३ ॥ अथ घूँघटनि छविनु छटा ॥ नव० ॥ दामिनि सी सुकुंमार ॥ मधुर० ॥ गावति सरस सुहेलरे ॥ नव० ॥ कल कोकिल गुंजार ॥ मधुर० ॥ १४ ॥ मिलि सुर साज समाजनी ॥ नव० ॥ वाजनि चंग मृदंग ॥ मधुर० ॥ धुनि तत्ता गिडि धित धाता थेइ ॥ नव० ॥ सम संगीत सुधंग ॥ मधुर० ॥१५॥ लेति सुघर उझकैं झुकैं ॥ नव० ॥ अलग लाग पद न्यास ॥ मधुर० ॥ प्रति विंवित अवनीं विछैं ॥ नव० ॥ मनु अनुराग विकास ॥ मधुर० ॥ १६ ॥ सन्मुष छिरकैं छिरकावहीं ॥ नव०॥ करि नीलांवर छोर ॥ मधुर० ॥ दुरि उघरैं घन तैं मनौं ॥नव०॥ रस भीनी ससि कोर ॥ मधुर० ॥ १७ ॥ दमकि दुरि चितवनि चलै ॥ नव० ॥ मंजु मुठीनु अबीर ॥ मधुर० ॥ गौर वदन पर झल मलै ॥ नव० ॥ मनु कुंदन कन हीर ॥ मधुर० ॥ १८ ॥ इक.न उरनि लपटावहीं ॥ नव० ॥ आवेशति भुज मेलि ॥ मधुर० ॥ दृगनि सजल व्है आवही ॥ नव० ॥ अली अंवुज रस झेलि ॥ मधुर० ॥ १९ ॥ भींजि वसन तन तन लगे ॥ नव० ॥ जगि मगि अंगनि अंग ॥ मधुर० ॥ रंगीले रूप निधि के मनौं ॥ नव० ॥ उपजत तरल तरंग ॥ मधुर० ॥ ॥ २० ॥ इक वसु चित विधि सौं करें ॥ नव० ॥ उचित मंगली रीति ॥ मधुर० ॥ दूव सुगनि सीसनि धरें ॥ नव० ॥ करि केशरि सौं चीति ॥मधुर०॥२१॥ रचि तव चौकनि चौकुनै॥नव०॥ अवनि अरगजे लीपि ॥मधुर०॥ गज मोतिनुके चौपनें ॥नव०॥ दीपति रतननि दीपि मधुर० २२ ॥ कलित कदलि चल

दल हरे ॥ नव० ॥ पूरन कुंभ सुधारि ॥ मधुर० ॥ अगरनि धूप सुवास के ॥ नव० ॥ उठत अवनि उदगार ॥ मधुर० ॥ २३ ॥ रुपति सवासिनि साथिये ॥नव०॥ ओपति सौनें सींक ॥मधुर०॥ देति असीस सुहावनी ॥ नव० ॥ लेति आपनी लीक ॥ मधुर० ॥ २४ ॥ चिलक तिलक मौरी करनि ॥ नव० ॥ रोरी अच्छित चार ॥ मधुर० ॥ विदित वेद विप्रनि पढ़े ॥ नव० ॥ वंशावली उच्चार ॥ मधुर० ॥ २५ ॥ नाम करनि उघरनि भयो ॥ नव० ॥ वाद वटेस्वर मूल ॥ मधुर० ॥ मनु आनंद उगयौ नयो ।नव०॥ सबहितु के मन फूल ॥ मधुर० ॥ २६ ॥ प्रेमामृत निधि तें कढ़े ॥ नव० ॥ रस भीनी झलकानि ॥ मधुर० ॥ चतुर अच्छर में चतुर रहै ॥ नव० ॥ कहि यौं वेद पुरान ॥ मधुर० ॥ २७ ॥ ह हरि रा राधा रतन ॥ नव० ॥ व वन वैठनि अवतंश ॥ मधुर० ॥ स सखी सुख संपुट मनौं ॥ नव० ॥ ललित नाम हरिवंश ॥ मधुर० ॥ २८ ॥ सुनत हरयौ मन सबनि कौ ॥ नव० ॥ वजी किधौं फिरि आइ ॥ मधुर० ॥ हरषि सजी मंगल मुखी ॥ नव० ॥ फूलि उठीं जस गाइ ॥ मधुर० ॥२९॥ जननी जनक हुलसे अहो ॥ नव० ॥ हरषि न हिये समाइ ॥ मधुर० ॥ साल पर्वत मोतिनु के ॥ नव० ॥ दीने विप्रनि बुलाइ ॥ मधुर० ॥ ३० ॥ व्यास विप्र रानी वधू ॥ नव० ॥ पहिरावनि तिन कीन ॥मधुर०॥ दिव्य वसन भूषन नए ॥नव०॥ गोदनि मेवा दीन ॥ मधुर० ॥ ३१ ॥ इक व चित्र वत ह्वै रही ॥ नव० ॥ इक पग लावति शीस ॥ मधुर० ॥ एक ललन मुख निरषि हीं ॥ नव० ॥ इक हँसि देति असीस ॥ मधुर० ॥ ३२ कहत सुजस दिस दिस चले नव० जाचक

जन धन पाइ मधुर० जा चंगा मन की गई नव०
भए रंक तें राइ ॥ मधुर० ॥ ३३ ॥ सुर पुर दुंदुभि बाजियौ
॥ नव० ॥ वीथिनु जै जै कार ॥मधुर०॥ श्री कृष्णदास हित
प्रेम को ॥ नव० ॥ संपूरन अवतार॥ मधुर० ॥ ३४ ॥ ७४ ॥

राग नाइको—येरी ये मेरे मन की भई । फूली व्यास नन्द मुख चाँदनी आनन्द मूल जई ॥१॥ सजल सुधा वृन्दावन घन छवि फूली फूल छई । फूली रहसि गहसि रस सानी वानी मोद मई ॥२॥ सियरे रसिक चकोरनि गन मन मन की तपनि गई । भीने प्रेम रंग रस सागर वाढ़ी प्रीति नई ॥ ३ ॥ फूले गुन उड़-गन शोभा की उपमा कोन दई । कृष्णदास हित छिन छिन उपजत सुख की सीर नई ॥ ४ ॥ ७५ ॥

वधाई—एरी वीर वाजत वाद वधाई। हौं अवहीं सुनि आई॥ कुंवर भयौ तारा रानी के दिन की उमगन पह पीरी। जो न पतीजियै लीजियै एरी हरी दूव सगुन की चीरी ॥ भीर भई गुनियनि की रावरि तुव उतावरि वलि बोली। कियें सिंगार चलौ किन वेगहि लिये नेगनि की टोली ॥ तू ही सवै वनितनि में मुकट मणि यह सुनि विलंव न कीजै। ए री दिन गिनती के आये मन भाये सुख लीजै ॥ कहा कहौं छवि व्यास कुंवर की वरनत वैन वनैना। देखी अनदेखी चलि देखौ कृष्णदासके नैना७६

वधाई—व्यास नंद वर चंद उजागर। चष चकोर रसिकनि जीवन मणि वाढ्यौ प्रेम सुधा रस सागर। मिटी तिमर ताप भ्रम जग में फेलि किरनि गिरा गुन आगर। कृष्णदास हित सहज चाँदनी दिन खेलत नागरी नव नागर ॥ ७७ ॥

राग पञ्चम—देखि री देखि वलि व्यास नंदन बन्यौ सन्यौ

सुख श्रियौ हियरौ सिरावै। गौर सो वरन मुख अरुन अम्बुज नैंन
वैन मधुरियौ जियरौ जिवावै।१। पाग रँग मगी जगमगी कलंगी
थिरकि केश किंचित चिलक तिलक रोरी। बंक भृकुटी जुटीं
छटीं गुँथित अलक चपल कुंडल झलकि चित्त चोरी ॥ २ ॥
दिपति नासा सधर अधर दसनावली मधुर मुसिक्यानि थहरात
मोती। रहतु राच्यौ सुधा सिंधु मधु माधुरी क्यौं न नाचैं बदन
चन्द्र गोती ॥ ३ ॥ झीनौं वसन केशरी पीन अंशनि करी रेख
चन्दन फूल माल पहिरें। देखि प्रतिबिंब दुति उर उजागर ज्यौं
व सुभग सागर उमगि लेत लहरें ॥ ४ ॥ फवे मोतिनु झवे बाहु
दुहूँ करनि मन हरन चूरनि चुनी चुरनि सोहैं। छीन कटि किंकिनी
कोर कंचन कनी झीन धोती चीन मुरनि मोहैं ॥ ५ ॥ बजत
नूपुर चरन धरत भूपर लसत हँसत आवत वरस गांठि कीयैं। वैठि
गावत कृष्णदास की कुटी मैं परन पंचम सरस सुरनि लीयैं।७८।

गौरी—प्रगटित श्री हरिवंश चन्द्र सुख। सियरे नैंन चकोर
सजातिनु कियरे दूरि ताप तें दुर दुख। पियरे प्रेम पियूष रसा-
सव जियरे निरषि निरखि सुंदर मुख। दियरे कृष्णदास हित
हियरे हरषि अवधि वाढ्यौ पूरन सुख ॥ ७९ ॥

राग सारंग—प्रगटे श्रीहरिवंश चंद्र वर। धन्य कूखि श्रीतारा
रानी आनंद मोद शुभावर ॥१॥ धुजा पताका वंदन माला मंगल
गावत नारी नर। लगन नच्छत्र जनम पत्र लिखि खोल दिये
भंडार घरनि घर ॥ २ ॥ देत दान मनमान द्विजनि कौ जै जै
बानी बोलैं। सुख वरषत हरषत व्यास मिश्र जू अतुलित रतन
अमोलैं ॥ ३ ॥ लला मुख निरखि वलैया लै लै रसिक जननि
सब फूले। भये मनोरथ कृष्णदास के प्रेमी देखि सब भूले ४ ८०

राग सारंग—गावति नेगिनि नारि वधाई आजु व्यास मिश्र घर । सुरनि धुरनि मुरि जुरि भ्रू आँनन दै काँनन करतार ॥१॥ हलत व श्वास नासिकनि मोती जोती मैंन मद रू ंदैं। झरत मनौं छवि कंज मंजु मुख मकरंदनि बूँदैं ॥ २ ॥ परत कपोल झोल दसननि दुति हसन गाड़ गहराई । मनहुँ रूप निधि भँवर परी उपमा खोजत नहिं पाई ॥ ३ ॥ वजत मृदंग सुधंग नचत सुख सचत गुननि गति लागैं। नाइक जुवति समाज राज आज द्विज रानी जू कैं आगैं ॥४॥ ज्यौं ज्यौं गुन प्रगटत उघटत यश नाम कुंवर को लेति । त्यौं त्यौं सुनि भूषन अंगनि के करि न्यौछावरि देति ॥५॥ हसुनु हरषि मेल हीरनि की रिझुनि रीझि रतनावली। वसुनि वोलि दई वेंदी निजु ससुनि सौंनैं सुमनावली ॥६॥ कीर्ति कुलीन प्रवीन उचित सिधि सुविधि सबनि मन भाई । झलकति पौरिनु पौरि मणिनु गन वंदन माल वधाई ॥ ७ ॥ झलकि रही भालनि विन्दुकनि बन सौरभ छींटन लागी। मनु आगम श्री व्यास कुंवर कें रती भाग की जागी ॥ ८ ॥ अति उदार द्विज राज घरनि घर बात वारनैं कीनी । कृष्णदास हित कुंवर चरन की भूर वलैया लीनी ॥ ९ ॥ ८१ ॥

राग श्याम कल्याण—आज वधाई मन भाई हेली व्यास सदन नेगिन नारी । निर्त्तति कुँवर जनम दिन सुगतिनु विहँसि वदन वारी वारी ॥ हेली० ॥ १ ॥ अनखि अरुन अँखियन कीं मन रंजन पैंनी रेखैं। भाइ भरी कोरनि रस ढोरनि चित चोरनि जितहीं देखैं ॥ २ ॥ ग्रींवनि ढुरनि मुरनि अंचल चंचल चरननि धरनि न लागैं । रुनुनु झुनुनु नूपुर धुनि सुनि मनु सोवत संगीतनि जागैं ॥३॥ मोहत द्विज युवती मुख जोहत ति धा थेई य

थेई मन भावैं । कृष्णदास हित रीझि वारि धनु प्रेम मगन कंठनि लागें ॥ ४ ॥ ८२ ॥

राग वसन्त—आजु जनम दिन व्यास सुवन रितुराज वधावन आई। फूली सुचंप चँवेली नवेली सहेलीनि संग सुहाई ॥ १ ॥ पल्लव पीत रसीत दुकूलनि भूषन फूल विकासौ । मनौं करनि कुसुमाकृत भाजन सौरभ सार सुवासौ ॥ २ ॥ मुक्तलता वलिता पर रंजित विंज सुधर पूजन्ते । मौरे नूत रसूतनि पर पिक थोर नि कर कूजन्ते ॥३॥ देखत केशरि फूलनि फूल नये सिर किंशुक जाते । मनहुँ हँसे अनुराग रसे मुख कोरनि तें भये राते ॥ ४ ॥ निर्त्त कलापि अलापिनि कोकिल शुक संगीत बजावै । वृत्ती स्वर मधु गुंजरि अनुसरि मंजरि जाइ सुनावैं ॥५॥ बंदन भारनि सार सुगंधनि चन्दन सीरनि नीरे। छिरकत सुमन समूह समाज सखीयनि सीर समीरे ॥ ६ ॥ झूंमरि झौंरनि पौरिनि, बंदन माल मरालनि रागे। देत मनौं कमलनि कर भूरनि भूरनि पूर परागे ॥७॥ उदित ही आनन्द चंद्र सुधा रस भीजि बधू वन वेली। कृष्णदास हित फूलत छिन छिन झूलत इहिं रस झेली॥८३॥

राग सारंग—द्विज रानी लालहि लाड़ लड़ावै । देखत मुख सुख पावै ॥ १ ॥ लै लै उर लावति मन भावति बोलनि बोलि सिखावै । मृदु करजनि गहि रुचिर कपोलनि आपुनु हँसति हँसावै ॥ २ ॥ कवहुँक वरन वरन बहु रंग खिलौननि खेल खिलावैं । कबहूँ धरनि पर ढुरनि दिखावति किलकि कुँवर लै आवै ।३। वाल विनोद विलोकत छिन छिन औरु न कछू सुहावै । कृष्णदास हित या सुख आगें सब सुख तुच्छ दिखावै ॥ ८४ ॥

राग वसन्त—देखौ व्यास सदन मधुरितु रसाल फूली कुँवर

जनम दिन नवल वाल ॥ टेक ॥ नैंन विमल मुख फूल हास । अनकूल किरिनि कमलनि विकास ॥ उर स्वासित सौरभ समीर । अलक असित भुव भृंग भीर ॥ १ ॥ छवि मूल भुजनि भूषन सुहेलि । फवि फूल सुकोमल कनक बेलि ॥ नव फलनि फली उरजनि उतंग । मनौं सुमन कली उफली सुरंग ॥ २ ॥ फूली नूत नेह मंजरी सुवास । फूलीं पिकनि मधुर गुंजरी हुलास ॥ थिरकति वेशरि मुसिकनि सुराग । छिरकति केशरि कुसुमनि पराग ॥ ३ ॥ भीनें पल्लव पीत रसीत चीर । भीनें अतर अरगजें अरु अबीर ॥ लीनें साज सोहगी सौंज हाथ । कीनें यौं जु गवन सखी पवन साथ ॥ ४ ॥ आई भवन रवन कमनी कुंवारि । गावति कोकिल सुर देत वारि । निर्त्तन नई सखियनि निहारि । दीनें सकुचि अखियनि पल पंष डारि ॥ ५ ॥ अलग लाग पग लसत भूमि । मनु हँसति अरुन भई मगन चूमि ॥ नूपुर धुनि सुनि संगीत रीति । सोवत जागत गुन गुपत प्रीति ॥ ६ ॥ रुपहि नारि रचनादि शोभ । उपज करज नव नूत गोभ ॥ अगर धूप आरति सजोइ । फूली आरति वारति समोइ ॥ ७ ॥ इक भूरि मोतियनि पूरि थाल । इक देत भूर मागद मराल ॥ भनत यश सुनि श्रवननि शिरंत ॥ हित कृष्णदास वरननि वसंत ॥ ८ ॥ ८५ ॥

राग बसन्त—प्रगटत व्यास सुवन वनि आई री वधाई ऋतु वसन्त । फूल फूल सुगंधनि भूरि भजन कर वेलि वधू हरषन्त ॥ १ ॥ चंपक चतुर चँवेली में वेशरि केशरि फूल लसन्त । मनु अपनैं अपनैं रंगनि मिलि फूली प्रति पूजन्त ॥ २ ॥ फूल राग अनुराग बाग में मनु कोकिल कूजन्त । फूले विरदनि कुंज

विनोदनि सुनत हिये हुलसन्त । ३ ॥ फूले नूत नेह अभिलाषनि साख नई उलहन्त । भावक पिक अलि कृष्णदास हित झूल रहे रसमन्त ॥ ४ ॥ ८६ ॥

राग सारंग—ललन को लोरी देति द्विज रानी । ललित लिये गोदी में गोरी रस भोरी मृदु बानी ॥ १ ॥ आपुनु हेरि हँसावति करजनि धरति कपोलनि भावै । नखनि की किरिनिनु तें फूल्यौ कर कमल कली विगसावैं ॥ २ ॥ कबहुंक भाल गुहै गुन लाल सौं चोटी बलनि बनावै । कबहुँक गहि मृदु बहियाँ जोटी पाइनु चलन सिखावै ॥ ३ ॥ कबहूँ शिर टोपी सौनैं ओपी झीन झगा पहिरावै । कबहू सकोपी जानि भूख में पय पियूष रस प्यावैं ॥ ४ ॥ अति माधुर्य्य सनेह मगन मन औरु न कछू सुहावै । कृष्णदास हित यौं राखति ज्यौं रंक महा धन पावैं ॥ ५ ॥ ८७ ॥

राग आसावरी—मंगल मेरे आज, मिलि गावौ री सजनी ॥ जजमानी रानी कैं भयौ सुत मोहन सोहन साज ॥ मिलि०॥१॥ हौं उमही मन मैं जु लगत दिन उगन सुगन मुहि आयौ। चुहुकी चिरीं पिरीं मुहुँकी कन सौ सुख प्रगट दिखायौ ॥ २ ॥ वे घन-श्याम परम सुन्दर मुख गौर सुचंद भये री । भादौं बरसि हरषि माधव निसि कीनी सुरूप उजेरी ॥ ३ ॥ जब जसुदा की गोद मोद अब तारा जसु दीनौ । तबहि मनोहर ग्वार अवै गुर प्रगट भजन रस कीनौं ॥ ४ ॥ अरध नाम गुन गन निधान जे पै पूरन मन मान्यौं । रहे सघन वन माँझु साँझ हरिवंशी सुनी जब जान्यौं ॥ ५ ॥ उन गोकुल इन वाद अनादि करी सब कुल की सैंना । रज कन पौरि निहोरि सगन सुर सेवत मनसिज

सैना ६ चित्रित दर कुसुमिन रंजित धर रंगनि अंगनि रौसें। सोभनि घोरिनि चोरि सनी मनौ देखत त्रिपति न हौसें ॥ ७ ॥ अरुन पीत सित हरी जरी बहु विमल धुजा फहराई। मनु सोभा की सुता भवन पर मुरि मुरि लेति बलाई ॥ ८ ॥ हरषीं तब गोपीं ओपीं अब द्विज जुवतीं जुरि आई। वे खेली दधि मधु मेली ये सुख सौरभ सरसाई ॥६॥ खिसत न वसन सँभारि सकति अंचल चंचल छवि डोलें। मुषरित पद मंजीर मनौं बिच मैंन मुनी सीं बोलें ॥ १० ॥ बजत मृदंग सुधंग नचति इक गावति गीतनि दूजीं। छविनु छटा की घटा मैं मातीं मिलि कोकिल सीं कूजी ॥ ११ ॥ हरषौंही अखियनि जल सौंही मिटी अंजन कन कोरैं। छूटी परीं सुख सिंधु मीन मनु मन रंजन गुन तोरैं ॥ १२ ॥ देखि ललन बलि चलैं न नैन पल परन धरन सुधि भूली। सींची सुधा समूह बदन बिधु कुमुदावलि सी फूली ॥ १३ ॥ मोतिनु चौकि पूरि नई वेदनि द्विज शुभ घरी विचारैं। भनत वेद विधि विदित मुदित मन जै जै शब्द उचारैं ॥ १४ ॥ रोरी तिलक चिलक मोरी कर भूरि भाग बहु दीनीं। तब दई धैंन अवै धन विप्रनि मिश्र महर सी कीनी ॥१५॥ कुल नेंगी ने वेगीं सुनि आई टेरि असीष सुनाई। चिरुजीओ श्री व्यास कुंवर हित कृष्णदास बलि जाई ॥१६॥८८॥

राग हमीर कल्यान चर्चरी—आजु नेगिनि नवल रंग रस मैं भिली। देखि सुन्दर वदन व्यास नन्दन चंद भरी आनन्द रस कंद कुमुदनि खिली ॥ १ ॥ गावती दिन उगन सगुन के सोहिले मोहिले मुंच सुर संच साजनि मिली। सूचही शुद्ध संगीत गीतनि खिरिर थिरिर तीधा थेई थेई थर हर हिलीं २ लियैं

गति लाग अनुराग मादिक पियै दियैं भुज मूल समतूल नाचति अली । मृदुल पद न्यास अनियास प्रगटति परनि अरुन अवनी अधर रीझि चुंवत तली ॥३॥ रचित कुम कुम नीर चीर चपलं-जुली मंजुली मुखनि कीं मन्द मुसिकनि भली । नखनि मनि किरिनि लगि फूल इन्दुनि मिलीं झरत मकरंद अरविंद कुसुमनि कलीं ॥ ४ ॥ रीझि रानी वरन वरन अपनैं करनि किये सिंगार लंका रतन झलमली । कृष्णदास हित कुंवर के प्रेम पालैं परी इक खरी लसति इक हँसति घर कौं चलीं ॥ ५ ॥ ८६ ॥

राग जैतश्री—आजु कुंवर कौ सोहिलरा, गावत द्विज कुल नारि ॥ टेक ॥ उपज्यौ मोद विनोद प्रिया मन निजु अलि तन मुसिकानी । करहु प्रगट कलि कुञ्ज केलि रस यह मेरे मन मानी ॥ १ ॥ सुखद विचार सुनत हिय हरष्यौ आनंद आयस पाई । वर वंशी अंशी वपु धरि शुभ तारा कूखि सिराई ॥ २ ॥ शुभ नत्तत्र शुभ वार सुकल पछि माधव मास अग्यासा । उदौ भयौ शशि व्यास राइ कैं भवन भयौ परकासा ॥ ३ ॥ चमकि कान्ति बहु भाँति ललित मुख सुन्दरता की सींवा । अंग अंग मृदुताई देखौ अवधि रूप की ग्रींवा ॥ ४ ॥ पानिप वदन अनूपम झमकैं झलमलात अति पाई । रानी देखि मुदित भई नैंना चकचौंधी छवि छाई ॥ ५ ॥ भयौ कुलाहल रावर भारी मिश्र सुनत हरषान्यौं । आनन्दित जननी अति फूली भाग आपनों मान्यौं ॥ ६ ॥ वजे सदानैं आनन्द सानैं नारिनु मंगल गाये । प्रेम विवश मन गावत निर्त्तत भये है मनोरथ भाये ॥ ७ ॥ घसि कुमकुम रचि धरे साथिये मंगल कलश धराये रोपे कदली

झलकैं पौरिनु वन्दन माला। दिपति देहरी खचित मणिनु नग बहु विधि रतन रसाला ॥ ६ ॥ सोधि लगन विधि भनत विप्र वर जै जै शब्द उचारैं। यह अवतार भयौ कुल मंडन व्यास सुपुत्र तिहारैं ॥ १० ॥ सजि सिंगार उर पदिक हार वर वनक वनी नव वाला। चली वधाई गावति कुल वधू कर धरि कंचन थाला ॥ ११ ॥ देति वधाई परम सुहाई मृदु मुख वचन उचारैं। झूमि झूमि लखि वदन लाल कौं प्रान संपदा वारैं ॥ १२ ॥ घर घर प्रति अति आनन्द उमह्यौ सुनत ही सब हरषाईं। याचक जन पोषे दै दै धनु कहत हैं सुजश वधाईं ॥ १३ ॥ तिहिं छिन प्रगट भयौ निजु परिकर हित नित चरित दिखायौ। प्रगट प्रकाशी दिव्य भूमि तहाँ जग मगात छवि छायौ ॥ १४ ॥ नव युवती नव वैस कनक तन सुहिल वधाई आई ॥ कंचन की अवनी कमनी वर वीथिनु जटित सुहाई ॥ १५ ॥ वाद अनादि भयौ सव रस मय जगमग जगमग जोती। फूलि रही फुलवारि अनूठी द्रुमनि झलकैं मोती ॥ १६ ॥ व्यास मिश्र अरु तारा रानी देखि चकित भई अैसी। सुपनौं भयो किधौं यह साँची इहिं विधि विधनां कैसी ॥ १७ ॥ कौतिक कुंवर कौ देखि मिश्र सुधि वचन सिद्ध की लीनी। खोलि भंडार उघारि सौंज सब करि न्यौछावरि दीनी ॥ १८ ॥ प्रगट होत गति भई धरनि की ठौर ठौर हरियारी। निर्जल सजल सरोवर उखटे नव पल्लव द्रुम डारी ॥ १६ ॥ भक्ति भाव उपज्यौ सवहिनु कैं भजन रीतिं उर धारी। अद्भुत प्रीति परस्पर बाढ़ी दुरमति मत्ति विड़ारी ॥ २० ॥ गुपत रीति विस्तारि रसिक हित कुंज केलि दरशाईं। विधि निषेध करि दूरि पूरि उर इक रस रीति सरसाई ॥ २१ ॥ श्री

वृन्दावन धाम नाम हरिवंश उपासी जाके। राधा वल्लभ नित छवि दरशैं बड़े भाग है ताके ॥ २२ ॥ दुलरावौ गावौ नित नित हित रस मैं रसिक वधाई। जै श्री हित विनोद वल्लभ पद वाञ्छित कृष्णदास हँसि गाई ॥ २३ ॥ ६० ॥

राग सारंग—व्यास मिश्र घर गावति आजु वधाई। रानी के पीहर की नेगिनि कुंवर जनम सुनि आईं ॥ १ ॥ उलझत सुही सुही सारिनु जरतारिनु में तन गोरैं। सौंन जुहीं मैं सौंन जुहीं सी फूल रहीं चहुँ ओरैं ॥ २ ॥ मंजु मुखनि की जोति जग मगी मोती लरनि के जूरा। पहिरैं पोति रंग मगी ग्रीवा कपोत वरन कर चूरा ॥ ३ ॥ तनत तँमूरनि की तारनि सुर पूरन परन मिलावैं। पंच सुरनि की झनकारिन मनु सोवत समर जगावैं ॥ ४ ॥ चपलौंही नैंननि की कोरनि मुरि चितवनि चेत चौरैं। भाइ भरी भृकुटिनु की मोरि मरोरनि मौंझु निहोरैं ॥५॥ उघटति संगीतनि गीतनि ता ति धा थेई करतारी। थिरकनि मोतिनु की अधरनि मनु रीझि होत वलिहारी ॥६॥ मोरि धरति करजनि उरजनि पर भेदनि रमकि वतावैं। पहिराई सुन्दरिनु मणि मुन्दरी तिनकी झमकि दिखावैं ॥ ७ ॥ लटकि धरैं वर धरनि चरन मृदु नूपुर नेवर सुर साजैं। सुलप सुधंग मृदंगनि की धुननन भुननन मिलि वाजैं॥८॥ मल्हकि मल्हावति नीकैं गावति सत सखिया जु सु आनैं। जाके पुत्र जनम जोई गायौ ताकौ फेरि वखानैं ॥ ६ ॥ वीठलदास के जनम नची सुख रची चूँनरी दीनीं। तासु रंग छवि भई दूँनरी रीझि आपनीं

 मोंहन सोंहन के जनमत हीं फूलि वधाई गाई ।

नाहरमल नरवाहन जनमत गाई विरद नवीनी रीझि दई कर छाप छकनि रस रीति लीक लिखि दीनीं ॥ १२ ॥ सेवक जनम जोई जोई पायौ सोई मेरे मन भायौ । श्री हरिवंश नाम धन साँचौ खरचत होतु सवायौ ॥१३॥ अब नाची द्विजराज घरनि घर जोई मांगौं सोई दीजै । कृष्णदास कौ चुकै निहोरौ निजु दासी कर लीजै ॥ १४ ॥ ६१ ॥

राग काफी—भई री रानी तेरे मंगल मुखिन की भीर । कुंवर जनम सुनि आई लियें दूव हरी पह पीर ॥ झलकत रंग भरे आनन मृदु काननि वारी वीर । हियरनि हार हीरनि की लरनि के चमकि चुहचुहे चीर ॥ तेरेई घर विनु और न जाचत राचत गुननि गंभीर । कृष्णदास तुव सुत जस गानी, जग जानी पन धीर॥६२॥

राग चैती-गौरी—अहो आजु माधव मास सुहायौ मेरे मन भायौ भवन द्विज राज कै ॥ टेक ॥ मंजु मूरति तेज मय जय गौर वदनानन्द । दम्पति रसामृत सिन्धुतें प्रगट्यौ वन पूरनचन्द ॥ १ ॥ जो कहो सुन कहूँ देख्यौं सुन्यौ असौ रूप । देखि इन अखियनि मैं रखियनि झलकि रही छवि जूप ॥ २ ॥ मंजु सु मयूखनि पद नखनि खुलि खिली वरवट मूल । झलमली प्रति में प्रति जितै तित सौंन जुही सी फूल ॥३॥ हरि सम सुलच्छन देखि जोतिसियनि समोति ससोधि । कह्यौ यह अवतार वंशी सुनत लह्यौ मन मोद ॥ ४ ॥ वजे अनहद वाजनें सुनि सजे सुघरनि साज । तजे घूँघट मुखनि कौं देखत लाजी है लाज ॥ ५ ॥ भ्रू चपल नैंन नचावहीं मन भावहीं मखि रेखि । चितवनि चौज उपजावहीं वलि जावही मनसिज देखि ६ झलकि

समैंडिन मोहनी मदन मतंग ॥ ७ ॥ सौनैंन गीतन सौं लगीं रंग मगी सारिनु कोर । जग मगी अथ शीसनि धरी जरीतार किना-रिनु मोरि ॥८॥ कलित कन केशरि कपोलनि ललित अधरनि जोति । हलत वेशरि नासिकनि मृदु बोलनि परि वलि होति ॥ ६ ॥ पग धरें चंचल फरहरैं अंचल उरनि कर थार । मन हरें नूपुर की झनक थरहरें लंक जोवन भार ॥ १० ॥ जेहीं चतुरथौ वनि चली इक झिली सखन सम्हार । विवस भरि करि कंप गातनि वनत नहीं सिंगार ॥ ११ ॥ लई हियें हमेल की गति मेलि मोतिनु माल । एकनि दई है भूलि वैंदी चिवुकनि के कन भाल ॥ १२ ॥ इक गुही इक अन-गुही अतिहीं सुहीं मुख झूंमि । लटकि धौं पट पदनि पंकति-पंकज रस रहीं घूमि ॥ १३ ॥ इक कहैं चलि वलि वेगि चलि इक रहैं उर लपटाइ । इक भईं बौरी सुनि भजी मनौं फेरि वजी वन आइ ॥ १४ ॥ छविनु छावति आवहीं गलियनि गलिनु सुहंत । इक मुदित मुरि मुसिकाँवहीं मनु कुसुम कली विगसंत ॥ १५ ॥ इक पहुँच अगमनी सगमनी झुकि लगति रानी पाइ। गिनि देति सगुन की सोहगी मृदु चीरनि सौंधौ लाइ ॥ १६ ॥ इक सजल नैंननि देखि लालन पालनैं कौं पूजि । मनौं देत अरघ दृग पूरि रस ससि देखि उपासी दूज ॥ १७ ॥ वनवंत बाजे बजावहीं गुनवन्त गावत गीत । नवलंत निर्त्तत नई गति सुघरंत सुधत संगीत ॥ १८ ॥ इक रचत सदन समाज सुख साजन सचत अनुराग। विहसि वदन प्रगट सभा में गुपत गुननि की लाग ॥ १६ ॥ चतुरंत चंदन छिरकहीं वंदन मुखनि समु-

इक कुल कुलीन प्रवीन करतव करत सगुन विचार इक नवी-
ननि नूत दल की वाँधत वंदन वार ॥ २१ ॥ अरगजैं अवनीं
लीपि रज गज मोतिनु चौक पुराइ । भरि धरे कल कलशनि
लसैं चौकौंनैं चिन्ह बनाइ ॥ २२ ॥ अति दिव्य दिपति दीपा-
वली रतनावली रचनादि । मानौं सो इनि सुमनावली फूली
ब्रज आदि अनादि ॥ २३ ॥ रचे कदली मूल फूलनि खचे
विशद वितान । भरे भाजन अमृत जल सौंधैं सनि राखे वानि
॥ २४ ॥ तहाँ कुल देवी प्रिया पद पूजि माथौ नाइ । तिहिं
छिन तरैंयनि की कुँवर कौं छहियनि लियौ अन्हवाइ ॥ २५ ॥
इक करति हैं आरती इक निरखि वारति प्रान । इक हरषि न
सँभारती धन देत द्विजनि कौं दान ॥ २६ ॥ दै साथियनि सु
सवासिनी वैठीं चहूँ दिश घेरि । मनहुँ रूप की माल
मध्य रसाल लसत छवि मेर ॥ २७ ॥ इक लियें लालहि गोद
में यौं कहति हे बड़ भाग । देहैं तवै जवहीं अहो लै लैहैं
अपनौं लाग ॥ २८ ॥ यह दिन हमैं गिनतिन कौं आयौ पायौ
पूरन दाइ । धरयौ गहनैं नेग कैं वलि वेगि दै लेहु छुड़ाइ
॥ २९ ॥ हँसि हँसि परैं झगरौं करैं मुख झरैं अमृत वैन । मनु
भरैं भ्रुव साखी समाखी श्रवननि सौं लगे नैंन ॥ ३० ॥ इक कहैं
गहनौं लेहु अपनौं हमैं लहनौं देहु । इक कहैं चलि री लै चलैं
या कुंवर कौ अपनें ग्रेह ॥३१॥ सुनत द्विज रानी जु मुसिकानीं
लियौं पति वोलि । देखि कौतूहल त्रियनि के विप्र विके विनु
मोल ॥३२॥ विनवत दोऊ कर जोरि दीनत करत हे मनुहार ।
लीजिये जोई मन इच्छा अपनी दीजियें प्रान अधार ॥ ३३ ॥
भये गद गद सुर दुहूँ दिसि विवश लागत पाइ फिरी दोही

प्रेम की वन दीनौं है न्याइ चुकाइ ॥ ३४ ॥ दिव्य भूषन वसन पहिराइँ सुहाइँ वाल । मुदवंत देति असीस ईसनि चिरुजीवौ नव लाल ॥ ३५ ॥ जोई जोई सुख नैननि लह्यौ वैननि न वरनन देत । कृष्णदास हित कछु इक कह्यौ इन रसिक जननि कें हेत ॥ ३६ ॥ ६२ ॥

राग काफी—आजु अहो सुनि वात कहौं मन भावनी । एरी सुनत श्रवन सुख होत हियौ हरषावनी ॥ १ ॥ पुत्र भयौ द्विज रानी कें सुन्दर सोंहनौं । हेली प्रगट्यौ है व्रज वनितनि गन के मन मोहनौं ॥ २ ॥ गौर सु मुख दृग कोरनि तीखी हैं श्याम की । मनौं अनसीखी चित चोरैं करोरनि काम कीं ॥ ३ ॥ नैंननि नन्द अनन्द दियौ इन व्यास कैं । मनौं देखत फूली कमोदनि चंद प्रकाश कैं ॥ ४ ॥ मसी तिथि आठैं रसी रस ग्यासि उजासिनी । हेली भक्तनि के कर्मादिक तिमर विनाशिनी ॥ ५ ॥ मधुर सुधा रस पाक सु पारस पाइयौ । हेली प्रेम प्रसाद के स्वाद सौं नैंम भुलाइयौं ॥ ६ ॥ तव तिन विश्व दिखाई अवै निजु कुंज री । प्रसिद्धि छवीले के नैंननि में छवि पुंज री ॥ ७ ॥ झल मलि सौंनैं मही रचना रतनादि री । मनौं फूल नई निकसी व्रज वाद अनादि री ॥ ८ ॥ कल कमनीय निकेत सुहेत सुहावनौं । हेली जटित नील मणि हेम झलकि झलकावनौं ॥ ९ ॥ सुभग वितानंनि गज मोतिनु की झालरैं । एरी मनौं रवि की किरननि सौं किरिनि अरुझी हैं जालरैं ॥ १० ॥ सदन सिखिरि छवि देन धुजा फहरावहीं । ए री मनौं सैननि [illegible] उपमा कौं बुलावहीं । ११ । सुथरे सुमननि कौ

सानही १२ । चतुराई चित्र विचित्र बनावति द्वार री। एरी मधुरई मोद के मौर की वदन वार री ॥१३॥ नित्य समीपिनि सुखद सुहृद अनुसारनी । एरी सखी प्रगटी है छिब कोटिक दामिनी वारनी ॥ १४ ॥ सुख वाल विनोद चरित्रनि कौं द्रग लैंन कौं । हेली राधिका सुजश पवित्रनि टीका दैंन कौं ॥१५॥ नाम नवहिनी आदि वचन्न भुताईयाँ । लिये रितु राज समाज वधावन आईयाँ ॥ १६ ॥ विविधि विविधि पल्लव पहिरैं तन चीर री । लियें नव डारिनु नारि सिंगार के संग समीर री ।१७। फूली नहीं मनु फूलनि भूपन अंग री । एरी मधुर फलनि नफली मनु उरजनु तंग री ॥१८॥ अंवनि मौर लियें किंसुकनि अवीर री । चंदनी चंदन कमलनि केशरि नीर री ॥१६॥ गावति कोकिलनि मयूरनि निर्त्त दिखावहीं । एरी सारो अनुसारि सुधारि कैं जन्त्र वजावहीं ॥ २० ॥ केकी अनेकन होत सुजुक्ति वतावहीं । एरी ये कपोतिनि मोतिनि चौकुनि चौक पुरावहीं ॥ २१ ॥ कीर काड़ियाँ वेद पढैं पिक कूजहीं । मनौं मधुरे वचनामृत सौं मृत पूजहीं ॥२२॥ व्रती सुर भौंरनि कुल भौंरनि झूलहीं । एरीं मनौं जजमाननि सुधि देत सुनत हिय फूलहीं ॥ २३ ॥ मागद मोर मरालनि विरद सुनावहीं । मनौं द्रुम देत भूर कपूर परागनि पावहीं ॥ २४ ॥ चातक यह सुख देखि अटनि चढ़ि जावहीं । एरी मानौं करत रटन रस रीझि वटनि कौं वुलावहीं ॥ २५ ॥ ल्याई हैं तिलक तंवोर धरैं कर थारनैं । एरी मणि मानिक रतन अमोल कुंवर पर वारनैं ॥ २६ ॥ चंद्र मुखी द्विज युवति परम सु कुवारियाँ एरी मनौं सौन्दर्य सांचे में

मौरि कैं। एरी मानौं भरे मन मैंननि नैंननि चोरि कैं॥ २८॥ भालनि वैंदी रसैंदी दई चित चाड़री। एरी चढ़ी भ्रूव भंग लरीनु परी विच आड़री।२६। कलित कपोलनि केशरि वेशरि डोलहीं। एरी मन मोती वलैयनि लेत जुवति जब बोलहीं॥ ३०॥ करननि फूलन होंहि फूलीं छवि मंजरी। एरी अलकन हीं घुँघरारी कारी मधु गुंजरी॥ ३१॥ खमकि वनी खयें कंचुकि संचुकि रास की। एरी लरैं उर फूलनि हारन फूल हुलास की॥ ३२॥ भुनुनु रुनुनु किंकिनि नूपुर भुनकार हीं। एरी कृश कटिनु की मुरनि दुरनि उघरनि तें पुकार हीं॥ ३३॥ ओैसैं विलोकति लालन पालन लागि री। इक रींभि कहति धनि धन्य रानी तेरे भागि री॥३४॥ छिरकति केशरि रंग उमंगनि खेलहीं। भीजी अंग अंगनि भमकि तरंगनि भेलहीं॥ ३५॥ भटकि भरैं पट ओट करैं मुख पोंछहीं। एरी मानौं भरैं छवि सार निहारनि सौंचहीं॥ ३६॥ एक बजावति गावति सुंदर सोहले। एरी तरलित तान त ना री री री री सौं मोहिले।३७। एक नचैं गति गुनन बचैं संगीत री। एरी वजैं ता गड़ धिति धा थेई सचैं रस रीति री॥ ३८॥ तब तारा जू तीयल सौ न वूनरी चूँनरी। एरी पहिराई ते भई छवि दूना दूनरी॥ ३६॥ मेवा दियौ भरि गोदनि नेह निहारि कैं। एरी ये खरी चहूँ कोदनि मोद भरीं कर जोरिकैं॥ ४०॥ विप्र नरेश सुदेशत वसन मगाइ कैं। पहिराये पुरवासी निवासी वुलाइ कैं॥ ४१॥ जाचक जन धन पाइ कैं सुजस वढ़ाईयौ। कृष्णदास हित जोई कह्यौ सोई गाईयौ ४२ ६४

उपजी सबनि मन भावनी व्यास आस की बेली ।। १ ।। अंकुर नव अनुराग के पल्लव पीत सुहाई । आगम आनंद फूल रस अनुदिन होति सवाई ।। २ ।। लपटी नूत अभिलाष मन मोद मौंर सरसानी । मनसा ही मृदु मंजुरी मरी मधुर पिकबानी ।।३।। सींची पलु पलु प्रेम जल रुचि फूलीं फल लाग । माधवी व्यास उजासनी उमगि उभै अनुराग ।। ४ ।। सोई जनम्यौ व्यास घर जस सुगंध महकाई । भौंरी सीं दौरीं सबै द्विज युवती सुनि आई ।। ५ ।। मिहीं मिहीं अध घूँघटनि फूली फूलनि माई । मंजु मयूषनि मुखनि की फैली जोति जुन्हाई ।। ६ ।। अंगनि छवि भूषन दिपैं छिपैं छिपैं नहीं पट भीनैं । मानौं रंग समुद्र में भलकनि मीन नवीनैं ।। ७ ।। भलकि हार कर थार मिलि किंकिनि नूपुर बाजैं । दुति में दुति फूली मनौं ससि हंसनि सुत लाजैं ।। ८ ।। स्वच्छ धरनि पग एड़ियनि प्रति-विंवत अरुनाई । मनहुँ रचित छवि पावड़े पग पग आँनि विछाई ।। ९ ।। कीनौं सदन प्रवेश छवि हेरि हँसी हरषानी । अरुन उदै मानौ जसी रूप लता प्रफुलानी ।। १० ।। रानी के पाइनि परैं भरैं नैन सुख बारि । शशि कमलनि मनु पूजई भिमी अमीं रस सार ।। ११ ।। देखि ललन मुख माधुरी हरी चंद की जोति । मृदुल चरन नख चन्द्रकनि लखि चकचौंधी होति ।। १२ ।। दुलरावति करजनि चटकि राधे राधे नाम उचारि । किलकि कुंवर सुनि पुलक सौं वा मुख रहत निहारि ।। १३ ।। चंकृत खरीं सुठि सुंदरी परी प्रेम भकभोर । तव मोहीं वन वोलि कैं अव गृह मैं चित चोर ।। १४ ।। भुजा

कीनें कनक किवार ॥ १५ ॥ रंगीली गलिनु रचना करीं अरुन पीत दल फूल । जरी वितानिनि सौं रहीं लरीं मोतियनि झूलि ॥ १६ ॥ अरगजा अजिर लिपाइ कैं मुक्तावलि भरी भाइ । कनक कलश दीपावलि धरि मिलि मंगल गाइ ॥ १७ ॥ कुल-देवी राधे चरन दियौ प्रताप दिखाइ । अगम अगोचर कुंज की शोभा प्रगटी आइ ॥ १८ ॥ वालक शीश छुवाइ करि पूरि आरती कीन । फूल अंजुली वारती भूरि विप्र वर दीन ॥१६॥ जै जै सुर नर उच्चरैं निर्त्त करैं नव नारि । परैं सुपरनि मृदंग की झरैं सुरंग फुहारि ॥ २० ॥ वंदन मुख लपटावहीं भावहीं मुसिकनि मंद । रंगीली कमल मनु फूल सौं झरत मधुर मकरंद ॥२१॥ सारीं भीजि तन सौं लगीं रंग मगी अंग लसंत । जगमगी नैंननि मैं मनौं फूली रंग वसन्त ॥ २२ ॥ वैठाई श्रम जानि हँसि रानी कंठ लगाइ । पहिराई गोदनि दियौ मेवा रहसि मगाइ ॥ २३ ॥ पंच शब्द धुनि वाजहीं गाजहीं जाचक द्वार । व्यास संचि धन राशि कैं दीनें खोलि भंडार ॥ २४ ॥ पुनि वोले कुल विप्र गृह करि आदर वैठाये । रतन माल पहिराइ कैं सुंदर तिलक वनाये ॥ २५ ॥ सोधि महूरत कुंवर कौ जनम पत्र लिखि लीन । दिन दिन यह जश गान कौ कृष्णदास कर दीन ॥ २६ ॥ ६५ ॥

॥ श्री प्रेमदास जी महाराज कृत ॥ राग बिलावल सूहौ ॥

चलि चलि री हेली व्यास घर जाइये । प्रगटे सु रसिक नरेश हित हरिवंश जू तिहि गाइये ॥१॥ वेद विधि में विदित विप्र सु मुदित नाम करन करें मागद चारन सूत वंदीजन [illegible] ॥ २ ॥

रचना रचे . वांधि वंदन माल फूलनि की सरस तोरन सचै ।३। मिश्र जू आनंद में भरि करत दान उमाह सों । कनक मोती द्रव्य वहु पट देत अति उत्साह सों ॥४॥ वाजें आनक सहनाई भेरी पणव झांझ न कहि परें । वहु मृदंग उपंग वीना मुरज की धुनि मन हरें ॥५॥ नाचैं रु गावैं जूथ जूथनि नव जुवती आनंद भरी । तिनके चरन की नख छटा पर देव वनिता वलि करी ॥ ६ ॥ सुर सुमन वरषाइ जै जै कहि निसान वजाइयो । वंशीधर हरि भये प्रगटित आनंद जग में छाइयो ॥७॥ कुंकुम के धरि साथिये री मन वाञ्छित फल पाइये । प्रेम दासि हित कुंवर कौ मुख निरखि नैंन सिराइये ॥ ८ ॥ ६६ ॥

राग भैरौं—गावत मंगल आली सुहाई । मंगल मुखी समय मंगल के अरस परस हरषी हरषाई ॥ १ ॥ तारा रानी कृषि सिरानी वाजति सुंदर सुघर वधाई । प्रगटे रसिक नरेश वेश वर गौर स्याम छवि तन दरसाई ॥ २ ॥ फूलनि मंडप छाइ चाइ सों रंग रंग की करि धुजा धराई । मोतिन चौक पुराइ चहूँ दिसि कञ्चन कदली कलित रुपाई ॥३॥ लीपि ललि तआँगन केशरि सों जहाँ तहाँ रचना रचवाई । मणि मय कलश पूरि तोरन धरि किशलय वंदन माल वधाई ॥ ४ ॥ होत कुलाहल द्विज कुल उमड़े धाइ आइ शुभ लगन सुनाई । विदित वेद विधि विप्र छिप्र ही नाम करन करि नव निधि पाई ॥५॥ देव दुन्दुभी वहु विधि वाजति राजति अति अछरौट निकाई । तिनकी वनिता वनि ठनि नाचति वरषावति पहुपनि उमगाई ॥६॥ कनक वसन मुक्ता मणि कंचन देत व्यास जु भरी ल्याई वंदीजन

सिर दूव मिश्र कैं सव कल कुल मिलि करत वड़ाई। भयौ उजागर विप्र वंश नित रहो तुम्हारी यह ठकुराई ॥ ८ ॥ छिरकि अरगजनि सुहृद पान दै विप्र इंद्र माला पहिराई। प्रेम दासि हित ता उत्सव में रहसि भजन की दृढ़ता पाई ॥ ८ ॥ ६७ ॥

राग काफी—गावति मंगल चारु वधाई सुहाईयाँ। रंग रंगीली सखी सब सु बनि ठनि आईयाँ ॥ १ ॥ झूमक सारी सुरंग सजैं रंगि राग सौं। दामिनि सीं लटकति लपटी अनुराग सौं ॥ २ ॥ नीली छवीलीं अँगियाँ अंग में यौं लसैं। चंद के डर मनु तिमिर हेम गिरि पै वसैं ॥ ३ ॥ लहँगा हरे में सुरंगित बूटियाँ छोटियाँ। सो हैं हरी धर पर मनु वीर वहुटियाँ ॥ ४ ॥ सीस पै सीस कैं फूल धरे रस रीति कैं। मानौं कलश चढ़ाये मनमथ जीति कैं ॥ ५ ॥ भाल विशाल पै वंदन विंदु विराजहीं। हेम सिंहासन पर हेम सूर से छाजहीं ॥६॥ लोचन लोल कपोल करें मुख सोहनें। चंद के अंक में खेलें चकोर से मोहनें ॥ ७ ॥ हलत तरौना दिपै मुख लट लांवी रुरें। घेरे मनौं शशि सूर राहु विच में डरें ॥८॥ नासिका में गज मोती रहे थहराय कैं। रूप की गेंद सों खेलें मनों शुक आय कें ॥ ६ ॥ भूषन चंद्र मणिनु के धरें तन में सवैं। लपटे कंचन षंभनि चंद मनों अवैं ॥ १० ॥ वैनीं लगें झुकि पाइनु लंक जवै मुरें। मोहनी मंत्र किधौं धुनि नूपुर की धुरें ॥ ११ ॥ मोतिनु चौक पुरावति चंचुर चाइ सों। छवि के अंकुर से निपजावति भाइ सों ॥ १२ ॥ बाँधति द्वारनि तोरन ससि गोती खिलें। बसंत सदन के बदन रदन से झिलि मिलें ॥ १३ ॥ दीपति

हेम उदोति के ॥१४॥ लाल गुलाल धुजा धरि कें थिरकाईयाँ। तान वितान सुरंग सु झालरि लाईयाँ ॥ १५ ॥ नाँचति राचति नागरि भरी कलोल सों। कोकिल कंठ लज्यावति बोल सुबोल सों ॥ १६ ॥ बाजत बीन नवीन प्रवीन बजावहीं। ताल रसाल सों वाल सुकंज फिरावहीं ॥ १७ ॥ तारा जू की कूष मल्हावति मोहनीं। निरषि कुँवर कौ वदन थकी सब सोहनी ॥ १८ ॥ आवत भावत छावत द्विज दुति वृन्द कों। रंक करत जिनकी छवि इन्द्र सुचंद कों ॥ १९ ॥ छिरकत केशरि विप्र सभाजनि प्रेम सों। फूले रूप तरु से बहु फूलनि हेम सों ॥ २० ॥ होति निगम धुनि सुनि सुर देत निसान कों। बरषावति मृदु फूलनि फूले गान कों ॥२१॥ छायौविमाननिसों नभ छविकवियों कहैं। मानों गुडी सी उडाई चढ़ी रंग कों लहैं ॥ २२ ॥ गाजि उठ्यौ घन सों धन दैंन कों व्यास जू। जाचक जन किये भूप बढ़ाइ हुलास जू ॥ २३ ॥ भूषन बसन अमोल सों मंजूसें धरी। कुल वधुवनि पहिराये गोद मेवनि भरी ॥ २४ ॥ विदा भये सब देत असीसनि कों भलें। देखि लाल को रूप पाँय काके चलें ॥ २५ ॥ प्रेमदासि श्री व्यास मिश्र मन लाइ कें। तिनहि बसायौ भवन माहिं मुसिक्याय कें ॥ २६ ॥ ६८ ॥

राग पंचम—भरयौ आनन्द रस सिन्धु सुन्दर विमल जयति हरिवंश हित नाम मंगल सदा। ललित कल अमित भावनि वलित कलित वर जपत जो जानि जन ताहि सुख सर्वदा ॥ १ ॥ अमृत के सिन्धु में होइ पंकज हेम तदपि कछु रीति नहि मनहि भावै। चरन अरविन्द पर भृंग भावक पांन रसे नृख

सरस हेम कदलीहि उपमा न पावैं। मृदुल पटु झीन धोतीहि कटि किंकिनी हरित निरखत मोद तदुगजावै ॥ ३ ॥ छीन कटि पीन उर लसति रोमावली मध्य त्रिवली नाभि छवि वढ़ावै। पीत कौसेइ ओढ़ैं महा माधुरी कथत जो सारदा कथि न आवै ॥ ४ ॥ ढ़रीं सुढ़ार भुज कर वरहि कटक जुत ग्रींव छवि सींव मणि माल सोहैं। मंद मुसिकानि झिल मिलति नासा उच्चि नैनन की कोर सतमार मोहैं ॥ ५ ॥ निर्मल कपोल में अलक कुंडल झलकि उच्चि पदवीय पद भाल भ्राजैं। जगमगत तिलक सिर सुरंग चीरा लसत रत्नमय पेच कलंगी विराजैं ॥ ६ ॥ महा माधुर्य सुकुँवार रस सिन्धु विवि गौर अरु श्याम सम्पति तिनकैं। धांम अभिराम श्री सहित वृन्दाविपिन एक रस रीति सौं प्रीति जिनकैं ॥ ७ ॥ हित प्रेमदास निज नेंम जिन यह गह्यौ गति न विन तुम कछू और बूझै। रूप में आपनें धरौ मम चित्त श्री विपिन विन ठाँव नहिं और सूझैं ॥८॥ ॥६६॥

राग वरवी—नाचत मंगलमुखी रंग भीनैं नवल रंग भीनैं। व्यास सुवन के जनम सोंहिलै गावत परम प्रवीनैं ॥ १ ॥ हीरा लाल कनक पट मोती मुदित मिश्र जू दीनैं। सोऊ लै लैं देत भिक्षुकनि रूप रसासव पीनैं ॥ २ ॥ चारि पदारथ छुवत न क्यौं हूँ अति उदार मन कीनैं। प्रेमदासि लखि तारा सुत मुख प्रान वारनैं कीनैं ॥ ३ ॥ १०० ॥

राग मारू—ढ़ाढ़ी नाचतु रंग रँगीलौ। गावत जस भीजति मसि मुख शशि हँसि लसि रह्यौ छवीलौ ॥ १ ॥ लाल पाग कलँगी मोतिन की तुररा हलतु लसीलौ। लौनो तन टौनों सौ नौंसौं झगा उपरना पीलौ ॥ २ सजे रतन भूषन भूषित तन

मनौ इन्द्र सरसीलौ पैंजनि गैजनि करतु फिरावत कमल ताल सौं नीलौ ॥ ३ ॥ ब्रह्म रिषिन में रिषि नरेश जु जग मग होत हँसीलौ। मनौ मुदित कंजनि में प्रमुदित ऊग्यौ हंस रसीलौ ॥ ४ ॥ द्विजराजन की सभा विराजत सजि आनन्द नवीलौ। तिनकौ आइ नवावत माथौ महा मगन झमकीलौ ॥ ५ ॥ लै सुकुँवारि वधू संग निर्त्तत डरतु न छवि अरझीलौ। मति उड़ि परै परी सी ढ़ाढ़िनि लगत स्वास सुर भीलौ ॥ ६ ॥ विप्र इन्द्र की वर वंशावलि वरनत दृग उनमीलौ। मुक्ति आदि सुख पेलि पाइ सौं यौं अैंड़त अैंड़ीलौ ॥ ७ ॥ श्री राधावल्लभ जू तिनकौ रंग परम चटकीलौ। तिनसौं इनकी साखि मिलावतु भावतु मन झलकीलौ ॥ ८ ॥ मणि गण मुक्ताहल कंचन पट देत मिश्र हरषीलौ। सोऊ लै लै सकल लुटावत महा मत्त गरवीलौ ॥ ६ ॥ सर्वसु दयौ तऊ नहिं मानत अैसो अरनि अरीलौ। विनु देखें श्री तारा सुत कौ टरत न हठनि हठीलौ ॥ १० ॥ जव निरख्यौ श्री व्यास दुलारौ रूप रंग वरसीलौ। प्रेमदास तव दै अशीश कर सुख सागर में झीलौ ॥ ११ ॥ १०१ ॥

राग आसावरी—आज सखी दिन परम सुहायौ। प्रगट्यौ व्यास सुवन अति सुंदर मनु वसन्त में सरद लसायौ ॥ १ ॥ भये विमल उर गगन सवनि के जहाँ तहाँ मन शशि सरसायौ। खिली चाँदनी चारु प्रीति वर ललित रीति सुख सिंधु वढ़ायौ ॥ २ ॥ विषय पंक मिटि गई निपट ही प्रेम भक्ति कौ मग दरसायौ। स्वच्छ सरोवर वुधि विवेक तहाँ संतत कुमुद वृन्द विगसायौ ॥ ३ ॥ भक्ति बिना जे तन उखटें तरु ते जन फूलत विरस न लायौ रास बिलास श्याम स्यामा कौ हित सरूप में

प्रगट दिखायौ ॥ ४ ॥ शीत उष्ण जे काम क्रोध ते तिनको मद बहु भाँति नसायौ । वढ्यौ हुलास सकल रसिकनि में सुर नर मुनि मिलि सब मंगल गायौ ॥ ५ ॥ लखि अद्भुत छवि विप्र इन्द्र जु करि सब विधि भंडार लुटायौ ॥ प्रेमदास हित निरषि कुंवर मुख नैंन धरे कौ फल अलि पायौ ॥ ६ ॥१०२ ॥

राग जैतश्री—मंगल गावैं सखीं सुहावनीं गावैं हेली रूप लता सीं आज । धनि धनि श्री व्रज भूमि री रह्यौ वाद छवि छाज ॥ १ ॥ श्री तारा कूखि सफल भई प्रगटे रसिक नरेश सुर नर मुनि जै जै करैं फूले रसिक सुदेश ॥ २ ॥ देव दुन्दुभी वाजहीं वरषावत सुर फूल । तिनकी वनिता नाँचहीं सजि साजि सुरंग दुकूल ॥ ३ ॥ व्यास मिश्र प्रमुदित खरे विप्र सभा में राज । मनु उडगन में ऊगियौ पूरन शशि सुख साज ॥ ४ ॥ मोतिनु चौक पुराइ कैं फूलनि मंडप छाइ । वन्दन माल वंधाइ कैं रचनां रुचिर रचाइ ॥ ५ ॥ जनम पत्र लिखवाइ कैं सुत मुख लखि हरषाइ । धरत नाम द्विज सोंधि कैं श्री हरिवंश वनाइ ॥ ६ ॥ वंदी जन मन में वढ़े गनत न राजा राव । वंशावली द्विज राज की वरनत चित के चाव ॥ ७ ॥ देत दान सनमान सौं मिश्र मुदित मन माँहि ॥ जाचक जन किये इन्द्र से अगनित धन दै ताहि ॥ ८ ॥ काम धैंनु विप्रनि दई नर नारी पहिराइ । प्रेमदासियनि सौं कह्यौ तुम हरषो जस गाइ ॥ ९ ॥ १०३ ॥

राग सारंग—प्रगटे मधुर रस रूप कलप तरु श्री हरिवंश गुसाईं । विमल विशद गुन गन मृदु पल्लव लह लहात लसि सघन न ववत त्रिविधि ताप रवि झाँईं । अति अनुराग रंगे नवधा

के नव लच्छन बहु भाँतिनि फूले फूल सुगंध सुयश सब ठाँई प्रेम सहित पद मूल गहैं जे ते जन पावैं गौर स्याम फल वैठि सदा सुख छाई ॥ १०४ ॥

राग कान्हरौ–प्रगटे श्री हरिवंश हंश उदयाचल तारा रानी उदर कल । व्यास मिश्र घर व्योम मनोहर भयौ प्रकाश प्रेम कौ फूले रसिक कमल अलि निर्मल ॥ दुरे कर्म उड़गन कामादिक तसकर जाइ छिपे सु रसातल । प्रेमदास हित मिट्यौ तिमिर भ्रम सब जन लागे भक्ति कृत्य कौ जैं जैं होति सकल थल ॥१०५॥

राग जैतश्री–आजु बधाई मिश्र व्यास कें प्रगटे रसिक नरेश ॥ टेक ॥ लाल बाल कौ प्रेम नेम विनु त्यों निजु नेह नवीलौ । तिनकौ सार सुहित तिनकौ तन दरसायौ झमकीलौ ॥ १ ॥ हेम निचोरि नेह साँचे में मनु अद्भुत तन कीनौं । जौं लौं कहौ गौर तौलौं वह श्याम होतु रंग भीनौं ॥ २ ॥ वे सुनि देव दुन्दुभी वाजति सुर सुमननि वरषावैं । त्रिभुवन मोद विनोद वढ्यौ अति घर घर मंगल गावैं ॥ ३ ॥ लीपि अरगजनि सौं आँगन अलि सथिये सुभग वनावौ । गज मोतिनु जोतिनु सौं तिनके चंचुर चौक पुरावौ ॥ ४ ॥ कनक कलश भरि राखौ द्वारनि धरि करि पुहुप रसाला । रंग रंग के कंजनि की मंजुल वाँधहु वन्दन माला ॥ ५ ॥ कंचन केलि रुपाइ चाइ सौं मन्दिर चित्र वनावौ । गलीं भलीं छिरकौ सौरभ सौं स्वर्ण पहुप वरषावौ ॥ ६ ॥ लाल पीत सित हरी जरी की सुन्दर धुजा धरावौ । होत कुलाहल द्विज कुल उमड़े फूलनि मंडप छावौ ॥७॥ मणि मय दीपक दिपत चहूँ दिशि वाढ़्यौ रंग रंगीलौ । मनौं धाम अभिराम विराजैं सजैं सिंगार छवीलौ ८ तनैं

वितान वनैं पुष्पनि के कौंन एक विधि राजै। हँसत अकाश प्रकाश भये मनों महा मुदित छवि छाजैं ॥ ६ ॥ विप्र क्षिप्र हीं धाइ आइ लै लगन सुललित सुनाई। शुभ नक्षत्र शुभवार सुक्ल कल ग्यासि आजु सुख दाई ॥ १० ॥ सदा रहत मधुरितु वृन्दावन अव मधुरितु सव ठाँई। ता रितु की फूलनि सुत जनम्यौ जहाँ तहाँ छवि छाई ॥ ११ ॥ तारा रानी सव जग जानी यह सुनि अमृत वानी। पूत सपूत भयौ कुल दीपक कुंज केलि रस दानी ॥ १२ ॥ सुनहु मिश्र जु वहुत कहा कहौं मैं निर्धार विचारी। यह वालक वर विमल तुम्हारें प्रगट्यौ कुंज विहारी ॥ १३ ॥ जे जन भक्ति विना उखटे तरु ते फूलनि सों काछैं। जिनके हिये सरोवर सूखे ते रस में भरें आछैं ॥१४॥ तव मोहन व्है वर वंशी सौ किये वहुत गिरि पानी। अव जे मन पाँहन ते पिघलें सुनि हरिवंश सुवानी ॥ १५ ॥ सुनि सुनि सुखद वचन द्विज नृप जू हिय जिय मोद वढ़ावै। जनम पत्र लै लख्यौ तात मुख फूले तन न समावैं ॥ १६ ॥ भरे पांन मुख सव सुहृदनि के छिरके केशरि सौं री। माल रसाल मेलि गर तिनकें हरषावत सव कों री ॥ १७ ॥ करत दान सनमान सहित सव वहु भंडार लुटावैं। याचक जन गावैं ते पावैं तूरनि लियें वजावैं ॥ १८ ॥ विधिवत धेनु दई विप्रनि कौं हीर चीर वहु दीनैं। जिन जो माँग्यौ तिन सो पायौ भये सवनि के चीन्हैं ॥ १६ ॥ वंदी जन उच्चारत विरदनि जै जै वाँनी वोलैं। कनक वसन मुक्ता मणि गन लैं मनौं इन्द्र से डोलैं ॥ २० ॥ पंच शब्द वाजत सुवि नारी घर घर ते उठि धाईं। दमकि दामिनी सी वर भामिनि हँसति भवन में आईं २१

कनक थार लै धावति तिय कल झलकत मुख तिनमें री। चंद वृंद निर्त्तत आवत मनौं कंचन मंडल पै री ॥ २२ ॥ द्विज नरेश के धाम भाँम बहु नाचति अति सुकुंवारी। जग मगात भूषन जराव के झमकति झूंमक सारी ॥ २३ ॥ नदित नवल भूषन रतननि के पगनि महावर सोहैं । मोहन मंत्रनि पढ़त कमल मनौं धुनि सुनि कौन न मोहैं ॥ २४ ॥ बाजत बीन मुरज सारंगी ताल मृदंगनि संगा। डुलत हार उर मिले ताल सौं उपजत तान तरंगा ॥ २५ ॥ कोकिल कंठ लज्यावति गावति नव युवती रंग झेलैं। ताननि ही में मनु कमान बिनु बाँन मैंन पर मेलैं ॥ २६ ॥ द्विज रानी सुख सानी हरषित सब तिय निकट बुलाई। जो जाकी रुचि सो ताकौं त्यौं भली भाँति पहिराई ॥ २७ ॥ जो सुख आजु बढ़्यौ री सजनी सो कापै कहि आवै। रोम रोम प्रति व्है शत रसना तऊँ पार नहीं पावैं ॥ २८ ॥ फुले रसिक रंगीले जित कित लखि हित रूप सुहायो। प्रेम दासि हित बसि वृन्दावन हरषि हरषि यश गायौ ॥ २९ ॥ १०६ ॥

राग चैती-गौरी—अहो हेली गावौ मंगल चार सुहायौ, दिन आजु कौ। अहो कोऊ पुन्य उदै भयौ आनि जानि द्विज राज कौ ॥ १ ॥ अहो धन्य श्री तारा कौ भाग सुहागनि नित रहौ। अहो इन जायौ है रसिक नरेश मोद सबही लहौ ॥ २ ॥ अहो सुनि सुर नर मुनि जै जै कहत देव दुन्दुभी बजें। अहो हेली सुर सुमननि बरषाइ परम सुख कौं सजें ॥ ३ ॥ अहो हेली केशरि अजिर लिपाइ चौक मोतिनु रचौ। अहो हेली कदली कनक रुपाय दीप रतननि सचौ ॥ ४ ॥ अहो हेली वंदन माल बंधाइ

धुजा सुरंगित धरौ। अहो हेली फूलनि मंडप छाइ हेम कलशनि भरौ ॥ ५ ॥ अहो हेली ह्वै आनन्द अधीर तिहूँ पुर में छयौ। अहो हेली जुगल प्रेम कौ रूप अवनि प्रगटित भयौ ॥ ६ ॥ अहो हेली आयौ विप्र समाज मान सबकौ करौ। अहो हेली तिनहि रंग सौं भरौ धरौ चंदन खरौ ॥ ७ ॥ अहो हेली देत द्विजनि कौं दान मिश्र विधि सौं खरे। अहो हेली खोलि दिये भंडार विविधि धन सौं भरे ॥८॥ अहो हेली मागद चारन सूत विरद वरनन करै। अहो हेली मन वांछित फल लेत इन्द्र से ह्वै फिरैं ॥९॥ अहो हेली नर नारी पहिराए हरषि वढ़ाइकें। अहो करी प्रेमदासि सब शीतल सुतहि दिखाइकें ।१०७।

रागकान्हरौ—प्रगटे गौर श्याम हित रूप अनूपम श्री हरिवंश चन्द्र वर। सुर सुमननि वरषावत गावत तिनकी वनिता वनि ठनि नाचत दै निसान प्रमुदित डारि डर ॥ विप्र छिप्र सौं धाइ आइ धरि लगन देत दृग लगननि कौ फल निरखि कुँवर मुख महा मधुर तर। प्रेम सहित श्री व्यास मिश्र जू मिश्रित वधाई सुनि वंदी जन कौं हरषावत करि कंचन झर ॥ १०८ ॥

राग राइसौ—मंगल श्री हरिवंश हित नाम रूप सुखदाई। प्रगटे श्रीमत व्यास घर मंगल जग रह्यौ छाई ॥ १ ॥ श्री राधा वल्लभ लाल जू नव निकुंज में राजैं। तहाँ संग नित हित अली ललित छविनि सौं छाजैं ॥ २ ॥ वढ्यौ मोद मन कुंवरि कैं दई आज्ञा कवनी। श्री वृन्दावन प्रगट ह्वै प्रगट करौ रस अवनी ॥ ३ ॥ हरषि पाइ हरि रूप धरि गौर वाद में आये। मंगल चारु सुहावनैं घर घर होत सुहाये ॥ ४ ॥ श्री राधा जू हरि सु हरि तिनकौ प्रेम सु वंशी। श्री हरिवंश धरयौ रुचिर

नाम जगत परसंसी ॥ ५ ॥ कुंकुम के धरि साथिये मोतिनु चौक पुराये । धुजा पताका विविधि रंग सदन सदन फहराये ॥६॥ मंगल बाजे बाजहीं पंच शब्द सर सौं री । गावत मंगल मुखी मिलि ललित मंगली कौं री ॥ ७ ॥ विविधि कुसुम कल मृदुल के तोरन सरस वनाये । द्वार द्वार करि चित्र वर सुन्दर भाँति वँधाये ॥ ८ ॥ बाँधी वन्दन माल मृदु कमल दलनि की छाजैं । भरे कलश तोरन धरे चल दल डार विराजैं ॥ ६ ॥ माँगद चारन सूत जन वन्दी जन उच्चारें । कनक चीर मुक्ता फलनि देत व्यास नहिं हारें ॥ १० ॥ घसि चन्दन कोमल ललित नीर गुलाव मिलायौ । भरत परस्पर प्रेम सौं सुख सौरभ बहु छायौ ॥ ११ ॥ चन्द्र मुखी आनन्द लहि उमगि चली घर सौं री । कनक थार में भेंट लै श्रीफल अच्छत रोरी ॥ १२ ॥ नाचति गावति व्यास घर जगमगाति छवि भारी । श्रम जलकन झलकत वदन वरषत चंद सुधा री ॥ १३ ॥ लुलित हार तन रूप निधि छवि सरिता की लहरी । कनक कमल मुख पर मनौं अलक भृंग थिरकहि री ॥ १४ ॥ जै जै जै कहि मुदित व्है सुर दुन्दुभी वजावैं । गावति तिनकी नारि मिलि पहुँपावलि वरषावैं ॥ १५ ॥ भये सजल सर सुथल के वन उपवन बहु फूले । नव नव सुख जग में भये उत्तम रुचि अनुकूले ॥ १६ ॥ करी भक्ति सब जग प्रगट जो जाके मन भावै । द्रवत भीजि सबके हिये आनन्द उर न समावै ॥१७॥ प्रेम भक्ति श्री विपिन में प्रगट करी सुख सागर । ललित केलि कल माधुरी गावत रसिक उजागर ॥ १८ ॥ तहाँ लता गृह में रहत श्री हरिवंश सदाई । श्री ललितादिक ललित गति प्रेम रूप ता ठाई १६

कोमल किशलय कें दलनि सुन्दर सेज रचाई । पूरित मधु भाजन कनक धरे जटित मणि माई ॥ २० ॥ शीतल मंद सुगंध कल चलत पवन रुचिदाई । वदित कीर कल कोकिला सरस राग धुनि गाई ॥ २१ ॥ गौर स्याम नव सत सजैं फूलनि सौं तन झलकें । तहाँ विराजत प्रेम रंग भीनें अति छवि छलकें ॥२२॥ अलक छवीली ललित मुख कुंडल गंडनि झमकैं । करत परस्पर हास मुख झरत फूल मन रमकें ॥ २३ ॥ वड़ड़े दृग आसव छके चितवत कोरनि सौं री । मिल मिलात तन चाँदनी तन की अद्भुत जोरी ॥ २४ ॥ हाव भाव करि लाज पग ललित वलित सौं पेलें । उदित मुदित कल कोक की कलित कलनि सों केलें ॥ २५ ॥ श्रवत अमी आनंद के रीझि रीझि दुति रेलैं । सखी चकोरी प्रेम मुख चंद निरखि सुख झेलैं ॥ २६ ॥ छुटत सुगन्ध फुहारन जल सौरभ चहुँ ओरी । गुंजत मत्त मधुप मधुर हरषित कुँवर किशोरी ॥२७॥ उठत तरंगें माधुरी कंचन अवनी मोहें । हीरा मर्कत मणिनु के विविधि लहरिया सोहें ॥ २८ ॥ कमल केतुकी माधवी वर गुलाव सु चंवेली । वनें फूल वहु मणिनु के जटित धरनि में हेली ॥ २९ ॥ मर्कत मणि मय तरुनि सौं कनक लता लपटानी । तरु कञ्चन मय वेलि तहाँ मर्कत मणि सीं जानी ॥३०॥अद्भुत द्रुम शाखा कनक पत्र अरुन मणि भाँती । भौंरा मोतिनु के तहाँ फल मर्कत मणि कांती ॥ ३१ ॥ मोतिनु के तरु की अरुन डार जग मगति जोती । विविधि रंग के दलनि सौं लगे विविधि रंग मोती ॥ ३२ ॥ कनक सु दल में झूमिका मोती जंगाली री । झूमक मोती स्वेत कौं त्यौं दल में लाली री ॥ ३३ । झमकि रहे दल स्वेत में मोती रंग उदे री सरस

गुलावी मुक्ता फल दल मर्कत मणि मैं री ३४। आल वाल तिनके वनैं लाल मणिनु के हेरी। कहूँ कि हीरनि के वनैं कहूँ मर्कत मणि केरी ॥ ३५ ॥ आभूषन वहु फूल के कोई इक तरु सौं लागे। कोई इक तरु फूलनि विषैं लयें वसन अनुरागे ।३६। विविधि भांति फूले फले तरु वेली विवि संगा । प्रतिविंवित कल धरनि में राजति दुति अति भंगा ॥ ३७ ॥ अद्भुत तनैं वितान वहु मोतिनु के सुख रासी। सेवत मदन निकुंज वहु सदन वसंत प्रकासी ॥ ३८ ॥ कंचन आकृत प्रेम मय राजति रविजा आली । अमल सुजल पूरित विविधि सरसी सुरस विशाली ॥ ३९ ॥ जल थल मैं फूले कमल अरुन पीत सित नीले । चन्द्र कान्ति मणि के वनें मंडल धर झमकीले ॥४०॥ हंश मोर चकवादि वहु मिले जुगल रस भाखें। संपति श्रीहरिवंश की वरनत रसना थाकें ॥ ४१ ॥ वरनत हारे सरस्वती मो मति कहा विचारी। यथा शक्ति चाहत कह्यौ आनंद हित पिय प्यारी ॥४२॥ जै जै श्री हित रूप अलि तिनकी कृपा मनाऊँ। प्रेम सहित वृन्दाविपिन वास वधाई पाऊँ ॥ ४३ ॥ १०६ ॥

राग काफी—गावौ मंगल चार वधावौ। तारा रानी सुख दानी सुत जायौ मोद वढ़ावौ ॥ १ ॥ केशरि अजिर लिपावो सजनी कंचन कलश भरावो। मोतिनु चौक पुरावो आवो कदली कनक रुपावो ॥ २ ॥ सरस मुकेशी कोर मंगावो सुंदर धुजा धरावो। लाल पीत सित कल कमलनि की वंदन माल वंधावो ॥ ३ ॥ सुरंग साथिये धरि रोरी के सुख सौरभ छिरकावो। विदित वेद विधि प्र बुलावो जै जै शब्द करावो ॥ ४ ॥ होत कुलाहल द्विज कुल उमड़े फूलनि मंडप छावो पूरन पुन्य

मिल्यौ यह औसर पहुपावलि वरषावो ॥ ५ ॥ देव दुन्दुभी वाजत राजत सुनि सुनि हिय हरषावो । प्रगट भयौ आनन्द कौ आनन्द सकल रसिक सचु पावो ॥६॥ पाँचौ शब्द कराइ चाइ सौं मंगल मुखी नचावो । मागद चारन सूत कहत जस तिनकी आस पुजावो ॥७॥ फूले तन न समात मिश्र जू तिनकौ माँथो नावो । प्रेमदास श्री व्यास कुँवर कौ मुखलखि नैन सिहावो।११०।

राग गौरी ॥ ढाढिनि ॥ ढाढिनि निर्त्तति रंग भरी द्विज रानी जू के आगें ॥ टेक ॥ भूषन भूषित लाल रतन कें पहिरैं सुरंग दुकूल । लैकर कमल फिरावति गावति वरषावति हँसि फूल ।१। वाजत ताल मृदंगचंग संग वीन मुरज सहनाइ। लेति सुलप में ठुमकि ठुमकि गति नूपुर नव झनकाइ ॥ २ ॥ झरत कचनि तैं कुशुम झिलिमिलत चपल पगनि नख वृन्द । मिलत मनौं घन तें चलि उड़गन नचत कंज चढ़ि चन्द ॥ ३ ॥ अलक झलकि रुरकति आंनन पर विलुलित नैंन अभंग । भाजत खंजन से कंजनि तजि लखि मतवारे भृंग ॥ ४ ॥ द्विज नरेश की कहि वंशावलि उमगी देति असीस । व्यास मिश्र को कुंवर लाड़िलौ जीयौ कोटि वरीस ॥ ५ ॥ प्रेमदास हित तारा जू सुनि भरी पुत्र के मोद । नख सिख लौं ढाढिनि पहिराई भरि मेवनि सौं गोद ॥ ६ ॥ १११ ॥

राग ईमन ॥ ढाढिनि नाँचति अति रंग भीनी । गावति छवि छावति, उपजावति तान तरंग नवीनी ॥ १ ॥ झमकि रही तन झूमक सारी जरतारी रंग पीरी । हलति मुकेशी किरिनि झुलति सिर कलंगी मोतिनु कीरी ॥ २ ॥ थरहरात वैंना के झोम झढ़ाई । खेलत मनौं मयंक अंक में उड्गन

करि चपलाईं ॥ ३ ॥ लटकी लट ठठकी लगि उरजनि कर्ण फूल तेयौरी । दुरत राहु मनु कंचन गिरि में डरे आशु रवि सौंरी ॥ ४ ॥ लचकति कटि कच के भारनि सौं कुनित किंकिनीं भारी मनौं वोलि सव सखि चहुँ दिश तें थाँभि लई सुकुंवारी ॥ ५ ॥ गोल गुलफ तर हर रव नूपुर मिले वीन सौं यौं री । मानौं हंश प्रशंसत दुहुँ दिस अमलनि कमलनि मौंरी ॥ ६ ॥ सुनत जनम श्री रसिक नृपति कौ देति अशीष न थोरी । विप्र इन्द्र की वर वंशावलि वरनति वैस किशोरी ॥ ७ ॥ सुनि सुनि मुदित भई द्विजरानी तत छिन निकट वुलाईं । हँसति लसति मनु कल कपूर के झरत फूल छवि छाई ॥ ८ ॥ जदिप दीये वहु वसन आभरन तदिप न हरषित सोरी । यह तौ लालहि देख्यौ चाहै वंधी निवंधन डोरी ॥ ६ ॥ जव निरखे श्री व्यास दुलारे तव अँखियाँ सियराईं । प्रेमदास हित लै वलाइ कर धरि अंगुरी चटकाई ॥ १० ॥ ११२ ॥

श्री किशोरी दास जी महाराज कृत ॥ रागदेव गंधार ॥

भैया हो अद्भुत मंगल आज । प्रगटे श्री हरिवंशचन्द्र वर रसिकनि के सिरताज ॥ १ ॥ घर घर वंदन वार साथिये संपति सार सिंगार । नांचत गावत प्रेम विवस गति प्रमुदित तन न संभार ॥ २ ॥ पञ्च शब्द मिलि वाजे वाजें धुनि सुनि श्रवन सिरात । भूषन वसन लुटावत वहु विधि आनंद उर न समात ॥ ३ ॥ जाचक जन सव किये अयाची पुजई मन की आस । श्री व्यास सुवन की चरन वलैया लगौ किशोरीदास ॥ ४ ॥ ११६ ॥

वधाई ॥ वाद वधाई माई रंग रली, वनि वनिता चली गली गली । तारा रानी कृषि सिरानी सव मन मानी भली भली

व्यास मिश्र मुनि कै उठि धाये हियौ सिराये वेलि फली । किशोरी लाल हित मूरति प्रगटी नीरस के मन दल मली ॥ ११७ ॥

श्री प्राणनाथ जी महाराज कृत ॥ रागदेव गंधार—

मंगल मोद विनोद व्यास घर ॥ प्रगट्यौ वाद अनादि विमल रस महाराज गुरु राज रसिक वर ॥ १ ॥ पर पूरन प्रेमा को दाइक लायक सव विधि गौर भजन भर ॥ कुंज केलि को विद कल क्रीड़ा प्राण नाथ मधु मत्त चरन तर ॥२॥११८॥

श्री जै कृष्ण जी महाराज कृत राग सोरठ ॥ भैया वाद वधाई वाजै रे । सर्वोपरि गुरराज गुसाई प्रगट्यौ है रसिकनि काजै रे ।१। मथुरा मंडल भूमि आपनी श्री मुख वचन निवाजे रे । रितु वसंत वैसाख उजारी व्यासि सकल सुख साजे रे ॥ २ ॥ गावत गीत पुनीत नारि नर परमानंद समाजे रे । जमुना तीर भीर वाढ़ी उत गोकुल रावलि राजे रे ॥ ३ ॥ महा भाग अनुराग मुकुट मणि व्यास मिश्र छवि छाजे रे । श्री तारा रानी सव जग जानी कूषि सिरानी आजे रे ॥४॥ प्रान प्रिया प्रीतम रस दाता मंगल मोद सदाजे रे । जाचक जन जे कृष्ण केलि कौ श्री कुंजलाल वल गाजे रे ॥ ५ ॥ ११९ ॥

राग मारु—हौं जाचक अति ही अभिमानी मान दैंन द्विजराज । दान मान परिधान जानि मणि तुम दानी सिरताज ॥ देऊँ असीस शीस तुहि नाँऊ जाचन अनत न जाऊं । एक समान सवनि कौं देखौं लै लै द्विज कुल नाऊँ ॥ दीनै लेऊ न चारि पदारथ जिनकौं जग ललचाई । जिते जगत पति गति लोकनि अवतार ईश अधिकाई । तिन तन नैंकु न चितऊं नृप मुनि निपट कानि । इक रसिक नृपति के घर कौं भिक्षुक दृढ़ मत

मेरौ जानि ॥ भजन भीष हौं लैऊँ मान सौंदर्वि दान नहिं जाचौं। तेरे कुल की जूठि खाइ हौं दंपति धन कौ साँचौं ॥ श्री कुंजलाल कल केलि कल्प तरु लाज राषि है मेरी ॥ प्रन कीनो जै कृष्ण चरन वल विदित वात जिहिं केरी ॥ १२० ॥

राग मारू ॥ वरस गांठ—माधव मास उज्यारी ग्यासि । श्री व्यास कुंवर की वरष गाँठि है मंगल सुख की राशि ॥ टेक ॥ जैसें नन्द गोप गृह प्रगटे अखिल लोक सुख दीनों। श्री हरि सव लाइक शुभ सन्तनि सुफल मनोरथ कीनौं ॥ मंगल घुरे निशान महावन जाचक जन धन पायौं। मन रंजन भंजन दुख दारिद शुक मुनि सो जश गायौ ॥ १ ॥ ऐसेंई सुख सागर गुन आगर नागर नृपति लड़ाये। श्री हरिवंश जनम दिन मंगल सेवक वचननि पाये ॥ श्री मथुरा मंडल भूमि आपनी श्री मुख विदित वखानी। जमुना तीर उतहि श्री गोकुल इत श्री वाद प्रमानी ॥ २ ॥ विप्र वंश उद्योत राज ऋषि मिश्र व्यास जहाँ सो हैं। सकल सुखनि संपन्नि शिरोमणि सुयश कहन कवि को हैं ॥ ताके सदन सहज शोभा निधि वालक वेष सुहायौ। विकसित वदन विलोकि ललन कौ पिता पुन्य फल पायौ ॥ ३ ॥ पावन मर सावन सुख की रति भाग्य भरी महतारी। श्री तारा रस धारा उर धायो सवही कौ हित-कारी ॥ वाजे शुभ साजे शुभ अंगनि दान मान छवि छाये। गावति गीत मुदित व्रज वनिता मंगल चारु वधाये ॥ ४ ॥ उदित उदार विरद जग जान्यौं भजन जननि निधि पाई। रसिक सजीवन मूल प्रान पति घर घर वात लुटाई ॥ हरि हरि-वंश भेद नहिं करिवै धरिवै दृढ़ व्रत हीयें सेव्य सदा श्री गौर

माधुरी प्रेम सुधा रस पीयें ॥ ५ ॥ सहज विपिन संपति दृग दरसैं सरसैं संग सजाती । प्रवल चौंप दंपति रस वस विलसैं सव विधि शीतल छाती ॥ श्री कुंजलाल गुरराज कृपा वल केलि कला गुन गाऊँ । चरन शरण जै कृष्ण दास हित जनम वधाई पाऊँ ॥ ६ ॥ १२१ ॥

राग मारू—मंगल सव मन भावनों ॥ टेक ॥ प्रथम सुमिरि गुरुराज श्री कुंजलाल वर नाम । केलि सहायक सुख लहौं वरनौं श्री व्यास कौं धाम ॥ १ ॥ तारा रानी रस भरी जिन जायौ कुंवर अनूप । छवि प्रकाश जग मगि रह्यौ नख शिख सुखद सरूप ॥ २ ॥ वाजे वहु विधि वाजहीं कौलाहल सुनि कान । गावत गीत सुहावनें गुन निधि प्रेम निधान ॥ ३ ॥ वंदन माल वंधाइ कैं चित्रित चौक वनाइ । आरति दीप संजोइ के हरषि न हियें समाइ ॥ ४ ॥ धरति सवासिनि साथिये रचि रचि रोपैं सीक । झगरत रुचि उपजावहीं लेति आपनीं लीक ॥ ५ ॥ वरषि हरषति चाइ सौं कंचन कौ दिन आज । प्रगटे श्रीहरिवंश जू रसिक सभा सिरताज ॥ ६ ॥ कीरति को कवि वरनई दान मान परिधान । नागरी दासी प्रीति सौं राखति सबकौ मान ।७। रीझि देहु जैं कृष्ण को कुंज केलि अनुराग । प्रान प्रिया प्रीतम जहाँ अविचल रहौ सुहाग ॥ ८ ॥ १२२ ॥

वधाई—हमारे मन क्रम वचन सु इष्ट । धर्म अनन्य भजन रस पुष्टक श्रीगुरु गुणनि गरिष्ट॥१॥पूरन प्रवल प्रताप छाप हित नित नित सुखकी वृष्टि । सर्वसु श्रीहरिवंश जनम दिन वरषिगांठि मधु मिष्ट॥२॥कुंज केलि उर ध्यान निरंतर पावतप्रेम उचिष्ट। गह्यौ जैं कृष्ण करौ किन यश अपस्वरा सब धृष्ट ॥३ १२३॥

राग जैतश्री—श्री सेवक बानी को आसै—आजु वधावौ द्विज राज कें, प्रगटे हैं श्री हरिवंश, इष्ट उभै कल हंश, वधावौ द्विज राज कें ॥ टेक ॥ सेवक वचन धर्म थापन हित जनम आजु निजु लीनौं । श्री तारा जननी जनक ऋषि व्यासहि प्रेम सार सुख दीनौं ॥ १ ॥ मथुरा मंडल भूमि आपनी श्री मुख वेद वखानी। माधव मास ग्यास उजियारी वाद विदित जग जानी ॥ २ ॥ गावत गीत पुनीत नारि नभ दुन्दुभि देव वजाये । जै जै शब्द कहत सुर नर मुनि सवही के हिये सिराये ॥ ३ ॥ श्री भागौत कही जो शुक मुनि नन्दादिक आनन्दे । विप्र राज सो सव विधि कीनी दान मान पग वन्दे ॥ ४ ॥ घर घर तोरन वंदन माला घर घर मंगल चार । घर घर पंच शब्द मिलि वाजें घर घर प्रति उदगार ॥ ५ ॥ घर घर दान प्रतिग्रह घर घर निर्त्त करत सव कोई । घर घर प्रति चित्रित दरवारहि अति हुलास हिय होई ॥ ६ ॥ निर्जल सजल सरोवर उमड़े आनन्द कौन वखानें । उखटे द्रुम फल फूलनि फूले नव पल्लव सरसानें ॥७॥ असन सैंन सुख नित नित नौंतन चारयौ दिस सचु मान्यौ । गये अशुभ दुरि दूरि विश्व के भजन भाव पहिचान्यौ ॥ ८ ॥ हरि यश रस विस्तार अवनि पर अन्यज उत्तम वानी । अपनी अपनी रुचि वस वासी अधिपति अति सुख दानी ॥ ९ ॥ चलहिं सकल जन धर्म आपनैं भर्म सवनि के भागे । कलियुग रीति छूटि गई सहजही प्रीति प्रेम अनुरागे ॥१०॥ प्रगट होत ऐसी विधि कीनी दारिद कदन वहाये । सव हरि सम सागर गुन आगर नागर नृपति लड़ाये ॥ ११ ॥ श्री व्यास मिश्र घर कुँवर लाडिलौ मण्डन रसिक सभा कौ । जै जै श्री हरिवंश

प्रशंसित प्रान प्रिया धन ताकौ ॥१२॥ श्री कुंजलाल हित केलि कलप तरु मन की आस पुजाई । चरन शरन जै कृष्ण निरंतर जनम वधाई पाई ॥ १३ ॥ १२४ ॥

॥ श्री भोरी सखी जी महाराज कृत ॥ राग रामकली ॥

फूली फूली राधा आजु मंगल गावैं, फूली फूली राधा आजु अंग न मावै । मिलि आवौ ललितादि सखी मेरी हित सजनी कौ आज वधावैं ॥ १ ॥ चंदन कुंकुम घसि गुलाव जल कुंज भवन सव खरी लिपावैं । मोतिनु चौक पुराइ दै सथिया तोरन वन्दन वार वँधावैं ॥ २ ॥ सजल कुंभ धरि श्रीफल ऊपर दीपावली ता पास धरावैं । कदली खम्भ रुपाइ चहूँ दिसि ऊपर विशद वितान तनावैं ॥ ३ ॥ पुष्पाजुलि मुक्तावलि वाँधैं जल सुगंध छिरकाव करावैं । सहनाई सहदानैं तुरिया सखियनि पै कहि कहि बजवावैं ॥ ४ ॥ वितान तरे कुसुमनि चौकी पर निज अलि कौ लै वैठावैं । उवटि न्हवाइ सिंगार केशरी अपने भूषन लै पहिरावैं ॥ ५ ॥ रोरी को टीकौ दै मस्तक व्यास नंदन कौ भेष वनावैं । मोदक मिश्री गरी छुहारी प्रान अली की गोद भरावैं ॥ ६ ॥ निजु परिकर ललितादिक सौं कहि वारी वारी ग्रास जिमावैं । छोटे मुख दै वड़े वड़े कौरनि निकसि परैं तव सवनि हँसावैं ॥७॥ अचवावैं जल दै मुख वीरी आरति लै कर माँहि फिरावैं । तोरैं तृन वार जल पीवैं लै वलाय अपु वारनै जावैं ॥ ८ ॥ मुसिक्यावैं हित अली कौ लै अपनी गोद में जु वैठावैं । मुख चूंवै गलवहियाँ दै कैं हित अली तव अति सकुचावैं ॥ ६ ॥ मृदु मुसिक्याय वहुरि मुख चूंवै सुहृद अली मुख [illegible] दुरावैं नाचैं गावैं करें कौतूहल अपनौ तन मन वैनं

सिरावै ..१०.. कहैं पुकारि ललित ललिता सो यह आली मेरो जीव जिवावै। हित सजनी देखैं विनु ललिता एक पलक मुहि जुग सम जावै ॥ ११ ॥ यामें मोमें अन्तर नाहीं एक प्रान द्वै देह दिखावै। यातें मोकौ न्यारी जानै सो तौ मेरे मनहि न भावै ॥ १२ ॥ सो मेरे प्राननि तैं प्यारी मन वच क्रम करि या सिर नावै। मूल से व्याज पूत तैं नाती अति प्यारो मन मोद वढ़ावै ॥१३॥ व्यास राइ और तारा रानी सखी रूप व्है लाड़ लड़ावै। हरिवंशी के दरस परस तें रोम रोम अति आनंद छावै ॥१४॥ ढ़ाढ़ी लाल वनै अपनी रुचि ढ़ाढ़िनी भेष सखीहि दिवावै। नाचै गावै ढ़ाढ़ी ढ़ाढ़िनी हुडक वजावै प्रियहि रिझावै ॥ १५ ॥ बोली रीझि स्यामा ढ़ाँढ़ी सौं जोई जोई मांगें सोई सोई पावै। या उत्सव को फल यह पाऊँ कबहुं मान लव लेश न आवै ॥१६॥ इहि विधि सौं करि वरष गाँठ सब भूषन वसन भंडार लुटावै। भोरी सखी हित यह जाँची जिय गौर चरन तजि अनत न जावै ॥१२६॥

राग श्री तिताल—आजु अति प्रगट्यौ हित आनंद। वाद ग्राम वदि वदि विहरत दोऊ गौर श्याम रस कंद ॥ १ ॥ तोरन वंदन वार वंदनी कुच कलशनि मकरंद। चुंवन चंदन पानिप पानी धरौं अधर गंड मंद ॥ २ ॥ गावत गीत पुनीत मींत दोऊ भये नये रस के कन्द। मोतिनु चौकनि चौक पुराये सौरभ श्वास स्वछन्द ॥३॥ सथिये साथिनि देति कपोलनि वाँटत रूप अमंद। रस कौ व्यास सु मास सु तारा मिलि उपज्यौ हित चन्द्र ॥ ४ ॥ किंकिनि कंकन नूपुर धुनि मिलि पञ्च शब्द सुर वंद भोरी

श्री हितदास जी महाराज कृत ॥ राग रेखता ॥ बधाई ॥

देखौ कैसा बना हैगा, श्री हित जू व्यास का लाला ।
सोई प्रगट नजर आया जपो जिस नाम की माला ॥ १ ॥
अजाइब रंग गोरा है, गोरे रस में झकोरा है ।
सुभोरी शाह भोरा है पिये हैं प्रेम का प्याला ॥ २ ॥
जसोदा ने जो जाया है उसै तो सबने गाया है ।
सुतारा ने लडाया है सु गोरा है वो है काला ॥ ३ ॥
सुरख चीरा जरी तारी कलंगी की अदा भारी ।
झमकि तुर्रे की चटकारी लपेटी फूल की माला ॥ ४ ॥
तिलक रोरी का माथे पर, झलकती नाक में बेसर ।
अधर पर बिंब सों खुसतर, दसन छवि सब सेती आला ॥५॥
बड़ी अखियाँ रसीली है भौं बाँकी सजीली है ।
अलक मुख पर छबीली है चिबुक का बिंद मत वाला ॥ ६ ॥
बने मोती जु कानों में उन्हें कहि क्या बखानौं में ।
लटें लपटी हैं दानों में सुधा पर नाग की बाला ॥ ७ ॥
जरद बागा सुहाया है झलकि सब अंग आया है ।
दुपट्टे को बनाया है बगल सों ले गले डाला ॥ ८ ॥
गले हीरावली सोहै भुजा भुज बंध मन मोहै ।
उदर रोमावली सोहै मनौ शृंगार पर नाला ॥ ९ ॥
कटि पर बाज है किंकिनि सुरख सुथन पे बूटी घन ।
मनो दीपावली रोसन झमकि निकसा है उजियाला ॥ १० ॥
चरन में बाजि है नूपुर नहि ऐसा कोई भूपुर ।
टुक आवो दास उर ऊपुर चलै गजराज की चाला ॥ ११ ॥
कहूँ क्या कद्द जु है खुसतर नहि होता कोई सरवर ।

प्रिया पिय मनका साँचा कर यही कंचन सा तन ढाला ॥१२॥
छुटी न वैस लड़काई जवानी की वहार आई ।
चढ़ी सब फौज चतुराई बढ़ा है रूप का नाला ॥ १३ ॥
तेरी ढाढ़िन कहाई में बड़ी निधि आज पाई में ।
यही माँगौ वधाई में मिटे यह देह जंजाला ॥ १४ ॥
न जानौं के कलप वीते किते भांड़ै भरे रीते ।
अभी के हार के जीते जु पाया तुझसा रखवाला ॥ १५ ॥
अली भोरी कृपा सेती कही हितदास ने ओती ।
सदा जाँचौ चरन रेती जिन्हौं हित तन में मन डाला ।१६।१२८।

॥ श्री भोरी सखी (भोलानाथ) जी महाराज कृत ॥ वधाई ॥

सुंदर अनूप छवि है श्री व्यास जू कौ लाला । नख चन्द्र जिसकी चाँदनी त्रिभुवन हुआ उजाला ॥ १ ॥ नव कुंज नित विहारी दोनों का हित अपारा । उमड़ा प्रवाह आली सभला नहीं सँभारा ॥ २ ॥ दोनों कें हिय में भरि कें सखियों कौ रंग में बोरा । समाया न कुंज वन में वह भूमि पर हिलोरा ॥ ३ ॥ अवनी का भाग जागा घर घर बजी वधाई । सो वर्ष गाँठ आखी हित जू की आज आई ॥ ४ ॥ हित से वरस वहा फिर होकर के हित की वाणी । चौरासी अरु सुधा निधि फुटकर सुनौं प्रमानी ॥ ५ ॥ महि वोरता चला सो रस की हिलोरें खाता । रसिकों को दे रसिकता साधन का गुण डुबाता ॥ ६ ॥ व्है नाद विन्दु धारा द्वै रूप में वहा है । हित सो प्रवाह अब भी जग मेव छा रहा है ॥ ७ ॥ है आजही का वो दिन रस रीति जग में आई । अद्भुत सु आज मंगल तिहुँ लोक धूम छाई ॥८॥ रसिकों की सुभ सभा है आनन्द उमँगि फूली ' हित माधुरी

की मूरति हित की सनेह झूली ॥ ९ ॥ हित भोरी यों असीसें रस रीति यह अचल हो। जग तारने कौं हित के दोनों ही कुल अटल हो ॥ १० ॥ १२६ ॥

वधाई—आवहु ललिता आजु वधाई गाइये। मेरे प्राननि की प्रान लड़ैती लड़ाइये ॥ टेक ॥ ल्यावहु साज समाज सखी सब सोहनी। वलि वलि प्रियतम लेहु मुरलिया मोहनी ॥ १ ॥ यह मो जीवन मूरि सखी हित रूपिणी। सकल सार को सार अधार स्वरूपिणी ॥ २ ॥ यह मो अखियनि ज्योति हृदय संपुट मनी। सुख संपति सर्वस्व हमारे धन धनी ॥३॥ यह ह्वै वंशी लेत अधर पिय स्वाद कौं। धुनि ह्वै मम श्रुति पैठि करत उन्माद कौं ॥ ४ ॥ पोषत वृन्दा रूप लता तरु वेलि कौं। ह्वै हित सजनी हमें सिखावत केलि कौं ॥ ५ ॥ कोटि प्राण यह एक अनेकनि वपु धरै। परम प्रेम सौं तोषि पोषि हियरा हरै ॥६॥ याके गुन जु अपार कोटि मुख क्यों कहौं। मीन जलधि की थाह दीन कैसे लहौं ॥ ७ ॥ याके वल हम जियें जिवावन हार ए। याही को सब खेल खिलावन हार ए ॥ ८ ॥ याकी सकल विभूति अनूपम धाम ए। याकी सब रस केलि परम विश्राम ए ॥ ९ ॥ याके वल सब रास विलासनि हम करैं। याकी भुज अवलंबि सुरत सागर तरैं ॥ १० ॥ यही डुबावे प्रेम उछारे केलि में। आप एक रस रहै उभय रस झेलि में ॥ ११ ॥ यह जल हम हैं मीन सदा ज्याये जियैं। यही प्यास यही नीर पिवावैं ज्यों पियैं ॥ १२ ॥ हम याके आधीन सदा रुख लै रहै। जाकौ यह दै दैई जू ताके ह्वै रहै ॥ १३ ॥ याही [illegible] व्रत एक हमारें जानिये। दोउन हिय की सार परम निधि

मानिये।१४। जहाँ याकौ संबंध रंचहू देखिये। तहाँ पहिले आधीन जुगल हम लेखिये ॥ १५ ॥ याकैं तन मन प्राण प्राण की प्राण हौं। यह मो तन मन प्राण सखी साँची कहौं ॥ १६ ॥ मेरे हित अवतार अवनी इनने लियौ। मोसौं लै निज मंत्र प्रकासित जग कीयौ ॥१७॥ धन्य धन्य वलि जाऊँ द्यौस यह चंद को। उदय आजु हरिवंश रसिक रस कंद को ॥ १८ ॥ धन्य धन्य यह मास गही हित टेक ही। राधा माधव नाम जुगल वपु एक ही ॥ १६ ॥ वलि वलि यह तिथि पक्ष ऋक्ष औ पल घरी। मेरे मन की साध सबै पूरन करी ॥२०॥ छिन छिन वाढ़े उमंगि हृदय नहि माइ री। रोम रोम रस सिंधु अधिक अकुलाय री ॥ २१ ॥ तुंग तरंगनि परयौ न चित्त ठहराइ री। प्रेम प्रवाह अथाह वह्यौ सौ जाय री ॥२२॥ कहत कहत तन कांती पुलकि गद गद भई। स्नेह सलिल दृग दौरि सखी भुज भरि लई ॥ २३ ॥ काहे होत अधीर कहौ वलि हीय की। तुम जु प्रिया अवलंबि हमारे जीय की ॥ २४ ॥ अहो सखी वलि जाऊँ निहोरौ मानिये। व्यास कुंवरि के रूप सखी निजु आनिये ॥ २५ ॥ तारा जू की रीस मोहि हित लाग की। कहा प्रसंशा करौं व्यास के भाग की ॥ २६ ॥ तारा मोहि वनाय वढ़ावौ मोद री। कुंवर लाडिलौ ल्याय सिरावौ गोद री ॥ २७ ॥ हों प्रियतम वलि जाऊ व्यास वन आइये। वांटि वधाई आजु सु मंगल गाइये ॥ २८ ॥ अति ही उन्मद क्षोभ वढ़े मम हीय री। वलि वलि हित गुन गाइ जिवावौ जीय री ॥ २६ ॥ प्यारी की गति देखि सवनि सोई कियौ। लाल लाडिलौ ल्याइ गोद तारा दियौ ॥ ३० देखिलाल मुख कंज मुदित अति ही भई शशि लै

गोद चकोर ठगी सी रह गई ॥ ३१ ॥ उम्फल परयौ वात्सल्य सिंधु नहि पार री । तन मन गति भई और रही न सँभार री ॥ ३२ ॥ आनंद सिंधु अथाह थकी अवगाहि कें । डूब चली रस माँहि सराहि सराहि कें ॥ ३३ ॥ यह गति देखत कुंवर कुलकि मृदु हँसि दियौ । प्रेम गहर सौं काढ़ि निपट बौरी कियौ ॥३४॥ भूलि गई निजु रूप छकी अल्हाद सौं । कहत सौं बैंन अनूठे स्वाद सौं ॥ ३५ ॥ कहा देषि वलि लाल रह्यौ मुसिकाइ हो ॥ मेरौ जैसो भाग्य कहाँ तू पाइ हौ ॥ ३६ ॥ तुम देखौं मो वदन तुच्छ सौं है महा । मैं देखौं जो रूप सु तुम पैहौ कहाँ ॥ ३७॥ तेरी हेरनि लाल मोहि अति भावही । यापैं वारौ कहा हियौ पछितावही ॥ ३८ ॥ लोक अनंत विलोकि सोच वाढ्यौ हिये । योग निछावर नाहि कहा धौं वारिये ॥ ३९ ॥ मेरे तन मन प्राण तुच्छ येहू महा । ऐसे कोटि जु होंय करौ तौहू कहा ॥४०॥ वाढ़त जान्यौ सोच भुजा ललिता गही । कहा अनमनी होत आजु हँसि कै कही ॥ ४१ ॥ श्री हरिवंश सु जन्म द्यौस उत्साह सौं । अपने हिय की बात कहौ जु उमाह सौं ॥ ४२ ॥ सत्य सत्य सुनि सखी सत्य तोसों कहौं । लेय जु याको नाम ऋणी ताकी रहौं ॥ ४३ ॥ याकी तन की वायु परसि जाकौ करै । बलि बलि ताकी जाऊँ जु पद रज सिर धरै ॥ ४४ ॥ जिनकौ यासौं हेत मोल मोहि नित लई । जाको चाहै देय जु तिन कर विक गई ॥ ४५ ॥ याके भजतिनु भजै भजे पुन ताहि जो । सर्वोपरि सब भाँति हमारे आहि सो ॥ ४६ ॥ ता मुख की बलि जाऊँ जु नाम सुनावही । सर्वसु तापर देहु जु हित गुन गावही ॥ ४७ ॥ ज्यौं ज्यौं सरिता नीर जु नीचो जावही त्यौं त्यौं

गहरो होय पार को पावही ॥ ४८ ॥ तैसे यह हित हेत सदा बढ़तौ रहै। बलि बलि जाऊ सरन हित की गहै ॥ ४६ ॥ हम दुहुँ तन मन प्राण एकही जानिये । दुहुँन प्राण को प्राण व्यास सुत आनिये ॥ ५० ॥ छाँडि खेल को भाव प्रगट जब यौं कही। तब प्रियतम हू उमगि साषी कीन्ही सही ॥ ५१ ॥ हो ललिता यह सत्य सत्य उर आनिये। हम तन मन हिय जिय निधि जानिये ॥५२॥ हम अधीन धन धनी यही दातार है। अति उदार रिझवार खुले दरवार है ॥ ५३ ॥ नाम जु श्री हरिवंश प्रिया तहाँ देखिये। प्यारी हूँ ते प्रथम मोहि तहँ लेखिये ॥५४॥ दै जु अचल विश्वास दृढ़ाऊ प्रीति में। अपने बल ले आऊ खेंचि रस रीति में ॥ ५५ ॥ भूल स्वप्न हू माँहि सरन हित की गहै। झूँठी साँची होय सु दुर्लभ गति लहै ॥ ५६ ॥ सुनि फूली ललितादि वलैया लेत है। चिरजीवौ हरिवंश अशीशें देत है ॥ ५७ ॥ अटल होय तुव राज जगत सव उद्धरौ। भोरी हूँ से महा पतित पावन करौ ॥ ५८ ॥ जै जै धुनि व्है रही सकल लोकन छई। सुनि हित भोरि दौरि सरन हित की लई ॥ ५६ ॥ प्यारी जू की प्रीति कही क्यों जावहीं। बूंद दिखावै सिंधु न हियरे आवहीं ॥ ६० ॥ १३० ॥

राग चैती गौरी—अहो चलि देखौ री रसिकन नैन लाल रंगीलौ व्यास कौ। अहो तन मन आनंद दैन, लाल रंगीलौ व्यास कौ ॥ टेक ॥ सार रूप कौ यह रस रस के रस कौ सार। दंपति हिय सुख सार कोई यह अद्भुत प्रगट्यौ प्यार ॥ लाल ० ॥१॥ मो अंखियनि की आँखि यह हिय के हिय कौ सार तन मन

सलिल दृग डह डहे जाके वरषत प्यारी पीय रोम रोम अमृत झरैं मेरो सहज जिवावैं जीय ॥ लाल० ॥ ३ ॥ गोरी की सब गौरता अरु श्याम श्यामता सार । दोऊनि हिय के हेत की निधि प्रगटी मेरे लार ॥ लाल० ॥ ४ ॥ प्यारी जु को सुहाग पिय प्यारी पिय को भाग । दुहुँन भाग के भाग मेरे जग मग सीस सुहाग ॥ लाल० ॥ ५ ॥ छिनु छिनु में रस सिंधु की लहरिनु उमड़त रंग । दंपति जीय जिवावनी सुधा सार सब अंग ॥ लाल० ॥ ६ ॥ देखत ही देखत दृगन लगत और ही और । उलहत छवि सौं छवि नई ललित मनोहर गौर ॥ लाल० ॥ ७ ॥ कोटि विश्व की माधुरी महा सार को सार । सार सार में नित नयौ नैंन न पावैं पार ॥ लाल० ॥ ८ ॥ देखत अनदेखौ लगै हेरत हियौ हिराय । मधु मादक मूरति मधुर झलकनि मति बौराय ॥ लाल० ॥ ९ ॥ मृदुता पग चूँवत डरे छवि दूरहि सौं वलि जाय । सरस सु दीठ सनेह की परसत जीय डराय ॥ लाल० ॥ १० ॥ सुंदरता सब विश्व की करि कोटि गुन अनुमात । नहि जोग निछावर रोम की कह तुच्छ जु मेरे प्रान ॥ लाल० ॥ ११ ॥ मो मन मोहे शीश सुठि अरुण जरकसी पाग । परयौ पेच में पेच मन पिय प्यारी अनुराग ॥ लाल० ॥ १२ ॥ कुंचित कोमल कुटिल लट रुचिर मनोहर श्याम । अलि कुल व्याकुल व्है चल्यौ पद पंकज तकि ठाम ॥ लाल० ॥ १३ ॥ उन्नत भाल विशाल पर सोहत तिलक ललाम । ता मधि नाम जु राधिका सेवत वेंदी श्याम ॥ लाल० ॥ १४ ॥ ललित भौंह सोहे वनी पत्रावली सुरंग । मानहुँ काम कमान ढिंग कुसुमन को जु निषंग ॥ लाल० ॥ १५ ॥ [illegible] श्याम सित चषन पैं पियौ जु पानी वार हित पिय

प्यारी सहज ही मिले रहत अति प्यार ॥ लाल रंगीलो व्यास को ॥ १६ ॥ जलधि सरस उमड़े रहैं करुण तुंग तुरंग । जलधर लौं वरषै सदा गौर स्याम बिवि रंग ॥ लाल० ॥ १७ ॥ इन नैननि सों होय जब जिन नैननि को मेलि । तब सूझै वृन्दाविपिन कुंज माधुरी केलि ॥ लाल० ॥ १८ ॥ एक मेक ह्वै कैं रहौ इन नैननि मो नैन । श्री वृन्दावन हित माधुरी अवलोकों दिन रैन ॥ लाल० ॥ १६ ॥ विलग जु इनते ह्वै रहैं ते अँखियाँ जर जाय । वस्तु न देखे आँधरी नित भव पीर पिराय ॥लाल० ॥ २० ॥ वारौं रुचिर कपोल पर कोटि आरसी मंजु। अति अद्भुत झलकत जहाँ नील पीत बिवि कंज॥लाल० ॥ २१ ॥ अलक लड़े हित लाड़िले दुहुँ दिश लिये उछंग । प्रिया दाहिनी वाम पिय छवि वरषत अंग अंग ॥लाल०॥२२॥ गौर स्याम छवि सिंधु दुहुँ अति अगाध लहराहिं । प्रतिबिंबित मिलि परस्पर हित अंग अंगन माहिं ॥ लाल० ॥ २३ ॥ कै राजै हित गोद यह कै हित हियरे माहिं । हित दृग हित की दीठ बिनु देखि सके कोउ नाहिं ॥ लाल० ॥ २४ ॥ बेसर में मोती नचैं सो कैसे ठहराय । बिवि बिधु मुख छबि रंग रंगे ललकि ललकि लुभि पाय ॥ लाल० ॥ २५ ॥ अरुण अधर की जोति मिलि उज्वल हाँसि सुहात । बिवि मुख कमलन पै लई रवि किरणे जनु प्रात ॥ लाल०॥२६ ॥ चारु अंश ग्रीवा ललित गौर श्याम तहाँ वाहि । नील पीत कमलन मई माला पहिरौ आहि ॥ लाल० ॥ २७ ॥ भुज विशाल मृणाल जुग सोहत ललित ललाम । जिन बिच फूले कमल द्वय गौर स्याम अभिराम ।लाल०।२८। बलि बलि हित के हृदय की प्रेम पयोधि

अपार । भीतर वाहिर लसत जहाँ हित जोरी सुकुमार ॥लाल०
॥ २६ ॥ त्रिभुवन में उपमा जिती लोटत डोलत उलटे पाय ।
परम सूक्ष्म कटि भाग लौं कोऊ पहुँचत नाय ॥लाल०॥ ३० ॥
पृथु नितंब रंभा जघन पद अंबुज गज चाल । कोटि मदन मन
मोहनी वैस किशोर रसाल ॥ लाल० ॥ ३१ ॥ प्यारी पिय अनु-
हार सब रूप रंग अंग अंग । उमड़त रोमनि रोम में पिय प्यारी
को रंग ॥ लाल०॥ ३२ ॥ श्री हित सिंधु अथाह है पिय प्यारी
जू तरंग । रोमनि रोम झरे परै उमंग युगल इक संग ॥ लाल०
॥ ३३ ॥ अति जु सूक्ष्म रोमावली उपमा क्यों कहि जाय ।
जनु निज हित की सूक्ष्मता प्रगट विराजी आय ॥लाल०॥३४॥
नष सिष लौं यह माधुरी रमो जु मो दृग माँहि । या छवि सों
विलगाइ कै मो दृग अनत न जाहि ॥लाल०॥३५॥ इन नैननि
नैना मिलो हिय में हिय रह्यो भोइ । भीतर वाहिर एक रस हित
गौर स्याम तहाँ दोइ ॥ लाल० ॥ ३६ ॥ जब लौं जीवन जिन
गनौ वीतत काल वृथाहि । हित चरननि की सरन में जब लगि
आवत नाहि ॥ लाल० ॥ ३७ ॥ दृग सो है देखौं सदा लिये
गोद दोऊ लाल । कै हित दृग हित हृदय में देखौं केलि रसाल
॥ लाल० ॥ ३८ ॥ जियौं तो ऐसे ही जियौं देखत निमिष
विसारि । मरौ तौ या छवि पर मरौ प्राण निछावर वारि ॥लाल०
॥ ३६ ॥ वरष गाँठ रीझन यही जाचौं गोद पसार । भोरी हित
वलि वकसियौ हित रिझवार उदार ॥ लाल० ॥ ४० ॥१३१ ॥

राग गजल वधाई—मुख चन्द्र की यह चाँदनी नित कुंज में
छाई रहे । छवि पान मत्त चकोर अँखियाँ देखि बौराई रहे ।
मैं कोर करुणासिन्धु की लहरी हिलोरत ही रहै प्रेम की उम-

गन उमगि जुन जीय बोरत ही रहै यह बंक चितवन नैन की हियरा में नित धँसती रहै। यह चारु छूटी लटनु ऊपर मो सुरत फँसती रहै ॥ यह बाँह फरकीली सदा भुज दीन पकरत ही रहै। यह माधुरी के जाल तनु मति मेरी जकरत ही रहै ॥ नख चन्द की यह ज्योति हिय तम तोम टारत ही रहै । यह वान करुणा की सदा बिगड़ी सुधारत ही रहै ॥ यह मेरी अँखियाँ लाड़िले मग रावरौ हेरत रहै। ये मेरी रसना चातिकी रस घन तुम्हें टेरत रहै ॥ जहँ परै मम दीठ जागत रावरी छबि लखि परै। सोवते सपने न हिय सों आपकी मूरति टरै ॥ भोरी हित जन दीन की विनती अवश्य यह मानिये। कोटि जन्मन की भिखा-रिन आपनी पहिचानिये ॥ १३२ ॥

गजल वधाई—अनूठा आज मंगल है चलो मिलि व्यास घर आली। कुंवरि कीरति औ नंदलाला हुए हित रूप घर आली ॥ १ ॥ मिटी अब मेंढ़ बेदों की वही सब लोक की लज्जा। चढ़ा है प्रेम का दरिया उमड़ता जोर पर आली ॥२॥ अजब वह चाँद सा मुखड़ा गजब मुसिक्न जुन्हैया सी। कि तन मन होवै मतवाला जु देखै भर नजर आली ॥ ३ ॥ जुगल मन हित के साँचे में ढली कंचन सी यह मूरति। कि हों कन्दर्प न्यौछावर चरण रज चूम कर आली ॥ ४ ॥ उमड़ता रोम रोमों में अजब दरिया है लावन का। वरसता प्रेम का झरना लगी करुणा की झर आली ॥ ५ ॥ हमें यह राधिका वल्लभ सदा को देने आया है। करम का काल का मेटा सभी माया का डर आली ॥ ६ ॥ जु रोमनि रोम हों अँखियाँ जु देखैं एक टक कोई न हों इक रोम छवि पूरी हजारों कल्प भर आली

।७। अभी कुछ और फिर कुछ और फिर कुछ और छिन छिन में। जभी देखौ नई मूरति नया लावन का भर अली ।८। ये धनि धनि मास माधव की उजारी धन्य ग्यारस है। ये धनि धनि जन्म का उत्सव सभी रसिकों के घर आली ॥ ६ ॥ पड़ी द्वारे पै हित भोरी नजर भर देखलो मुझको। यही दौ रीझि तन मन प्राँण वारूँ पाँव पर आली ॥ १० ॥ हुआ है जग में उजियाला हुआ रसिकों का भूपाला। यही वृषभानु की वाला यही है नन्द का लाला ॥ ११ ॥ यही मोहन की वंशी है यही राधा प्रशंशी है। यही रस सर की हंसी है यही दम्पति की उर माला ॥१२॥ यही नव कुंज की केली यही अनुराग की वेली। यही राधा की निज चेरी यही मोहन की प्रतिपाला ॥ १३ ॥ रसिक रस प्राण भी येही मनावै मान भी येही। करैं हित दान भी येही सदा निज दीन जन पाला ॥ १४ ॥ खिलारी खेल मतवारे खिलौना खेल के प्यारे। यही है खेल श्री वन का खिलाने खेलने वाला ॥ १५ ॥ यही हित प्यास का सागर। यही हित प्रेम का पानी यही हित प्रेम का दाता यही हित प्रेम मतवाला ॥ १६ ॥ रसिक घर घर वधाई है भली तिथि आज आई है। छटा हित प्रेम की छाई कि कलि कलमष को धो डाला ॥ १७ ॥ रसिक जन भाग जागा है जुगल अनुराग पागा है। ये माँगैं रीझि हित भोरी कि मेटौ मोह जंजाला ॥ १८ ॥ १३२ ॥

श्री कुँवर अली जी महाराज कृत—प्रगटे हित जू हित निर्वाहक। परम अनन्य रसिक चूड़ा मणि प्रिया प्रेम अव गाहक ॥ व्यास सुवन पद कमल भजन विनु दिन वितये ते नाहक। कुंवरि अली इहि सम नहि दूजौ दीन जननि कौ गाहक १३३ ।

श्री लोकनाथ जी महाराज कृत राग आसावरी व्यास मुदित मन माँही, लखि पुत्र जनम कौं। मंगल सौंज रची बहु भाँतिनि सुर पुर पटतरि नाहीं ॥ लखि० ॥ १ ॥ कंचन मणि मय भवन विराजत ध्वजा पताका सोहैं। कलश झांझरी द्वार झरोखा चहूँ ओर मन मोहैं॥ २ ॥ जरतारी परदा अति शोभित जलज वितान तनाये। वंदन माल कुसुम झौंरा युत चित्र अनेक बनाये ॥ ३ ॥ अरुन पीत सित हरे विविध रंग स्वच्छ सरोवर राजैं। अगर धूप लखि नचत शिखीकुल कोकिल कल रव गाजैं ॥४॥ जल जन्त्रनि की शोभा न्यारी जलज थलज बहु फूले ॥ द्रुम वेली फल फूल रचित मणि अलि गन तिन पर झूले ॥ ५ ॥ नव सत साजि सकल कुल वनिता चौक साथिये साजैं। भेरि निसान औरु सहनाई झाँझ पखावज वाजैं ॥ ६ ॥ विरद कहैं वंदी जन ठाढ़े रीझि लहैं अति भारी। मंगल गान चहूँ दिस छायो नाँचें मिलि नर नारी ॥ ७॥ जनम पत्र लिखि हरषे द्विज वर गुन गन कहे न जाहीं। नन्दराइ गृह जो सुत उपज्यौ सो लच्छन या माहीं ॥ ८ ॥ उनि लीला करि असुर संघारे सुजननि के सुखदाई। कर्मठ ज्ञानी भक्ति वहिर्मुख इन आगैं जु नसाई॥९॥ नव निकुंज सुभ गाननि पुन वर वृन्दाविपिन विहारी। श्यामा जू की सुहृद सहचरी वंशी हरि हितकारी॥ १० ॥ अति हरषी सुनि तारा रानी भवन भंडार लुटायौ। लोक नाथ पर अनुकम्पा करि शशि मुख बाल दिखायौ ॥ ११ ॥ १३४ ॥

आजु कौ द्यौस सुहायौ, अति हरषि वढ़त मन। जनमत श्री हरिवंश चन्द्र कौ मंगल सब जग छायौ ॥ अति०॥टेक॥१॥ धरनि निसाननि व्यौंम दुंदुभि बाजत सुख उपजावैं मागद

सूत वन्दीजन चारन महा मुदित जस गावै ॥ २ ॥ तारा रानी कृषि सिरानी जायौ कुंवर अनूप । लजैं मदन गन निरखत शोभा दंपति प्रेम सरूप ॥ ३ ॥ सुर नर मिलि कैं पुहुँपनि वरषत भूमि रम्य हरियाई । नदी सरोवर जल वहु उमग्यौ पंकज छवि अधिकाई ॥ ४ ॥ नीरस हिय सब सरस भये है प्रीति रीति बहु गाई । सरस हदै रस मगन न जानत निस बासर कित जाई॥५॥ घर घर वंदन माल सुहाई गलीं सुगंधि जल भीनी । तोरन कुम्भ बने द्वारन पर रचना बहु विधि कीनी ॥६॥ कंचन थार संजोइ नारि सब व्यास नृपति घर आई । विविधि वधाई गावति मंगल दै असीस मन भाई॥७॥ भवन भवन प्रति धुजा पताका जलज चौक छबि पावै । चतुर सवासिनि धरत साथिये झगरत मोद बढ़ावै ॥ ८ ॥ मणि मानिक भूषन गन दीनैं अंबर परम रसाला । गज तुरंग बहु भवन सुहाये मुक्तनि की बहु माला ॥९ ॥ दान मान सनमान दै पोषैं तोषे सबहीं भाई । तारा रानी रस सरसानी गहत पाइ तहाँ धाई ॥ १० ॥ गद गद सुर वेपथ सब अंगनि जननी जनक हित भीनैं । पलु पलु प्रति निज भाग सराहत पुत्र अंक भरि लीनैं ॥ ११ ॥ ता छिन नभ बानी यौं प्रगटी यह बालक सुख दानी । रसिक सभा सिरताज प्रगट भयौ जुगल प्रेम रस दानी ॥ १२ ॥ सुर किंनर जै जै बोलैं त्रिमुख समूह बिलाये । लोकनाथ हित वरनि वधाई परम प्रेम सुख पाये ॥ १३॥१३५॥

॥ श्री चन्द्र सखी जी महाराज कृत ॥ राग जैतश्री ॥

आजु वधाई बाजै व्यास कैं, सुख निधि प्रगटे श्री हरिवंश ॥ टेक ॥ नव किशोर सुख रासी विपिन विलासी हियें विचारी । नित्य विहार नवल रस दुर्ल्लभ भुवन मध्य विस्तारी १

अद्भुत हरषि भयौ सबहिनु के घर घर वाञ्छित पायौ । नर नारी नाचैं अरु गावैं मंगल मोद बढ़ायौ ॥ २ ॥ गृह गृह तें निकसीं ब्रज नारी गावत गीत सुहाये । सजि सजि कंचन थार आरतौ मणि दीपक चमकाये ॥ ३ ॥ अपनें अपनें मेल मिलीं सब गावति झूमक भारी । कृष्ण जनम फिर भयौ कुलाहल आनंदित नर नारी ॥४॥ द्वार द्वार प्रति कलश विराजैं तोरन मुक्ता छाये । सुर मुनि देव दुन्दुभी बाजें सुमन झरत मन भाये ॥ ५ ॥ प्रेम मगन सब नाचत गावत व्यास मिश्र गृह आये । हरद दूध दधि कादौं माधौ भादौं झर जु लगाये ॥ ६ ॥ बहु विधि जन्त्र बजावैं सुख बरषावैं आनन्द भीनैं । श्री व्यास नन्द जग प्रगट होत हीं सफल मनोरथ कीनैं ॥७॥ जय श्री उदयलाल हित प्रगट भये सुख सागर रस के दानी । चन्द सखी को भयौ भावतौ निधि पाई मन मानी ॥ ८ ॥ १३६ ॥

राग राईसौ—नवल बधाई बाजे व्यास मिश्र दरबार । प्रगटे श्री हरिवंश सु आनन्द सुख के सार ॥ १ ॥ सुर दुन्दुभी बाजी तब जय जय शब्द अकाश । कुसुम देव मुनि बरषैं हरषैं सुखनि प्रकाश ॥२॥ घर घर आनन्द बाढ्यौ नर नारी सुख दैन । जो जाके सुख दुर्लभ सो देख्यौ भरि नैन ॥ ३ ॥ बनि बनि सब ब्रज नारी निकसीं गावत गीत । मंगल थार सुहाये काज भये मन चीत ॥ ४ ॥ झूमक सौं सब गावति आवति औसी भांति । नख शिख भूषन सोहैं लाल मुनिनु की पांति ॥ ५ ॥ आई व्यास महल में शोभा जग मग होति । नौबति लाल नगारे बाजत अति हीं उदोत ॥६॥ धुजा पताका सोहैं कंचन कलश अनेक ताल पखावज आवझ बाजत सहित विवेक

जै श्री नन्दलाल प्रभु दीजै अपनै निकट निवास । चंद सखी निजु दासी चरन कमल की आस ॥ ८ ॥ १३७ ॥

॥ राग मारू ॥ ढाढिनि—व्यास महल में आज, ढाढिनि नाचै रंग भीनी । श्री हित जनम सुनत उठि धाई हरषि वधाई दीनी ॥ ढाढिनी० ॥ टेक ॥ १ ॥ यहै आस मेरे मन माँही श्री तारा जू कूखि सिराई । तीन लोक की शोभा संपति सो तेरे गृह आई ॥ २ ॥ श्री हरिवंश प्रगट पिय प्यारी सुखकारी दोऊ आये । सकल लोक सुर नर मुनि सबकै भये मनोरथ भाये ॥ ३ ॥ श्री तारा रानी अति हरषानी युवतिन सभा बुलाई । गाइ गाइ नाचत रंग भीनी ढाढिनि हिय हुलसाई ॥ ४ ॥ श्री व्यास घरनी रीझी सुख भीनी ढ़ाढ़िनि निकट बुलाई। विविध भाँति आभूषण मणि मय ढ़ाढ़िनि कौ पहिराई ॥ ५ ॥ जै श्री उदैलाल प्रगटे सुख सागर देति असीस सुहाई । चंद सखी हित चरन रैन की आसा रहौं सदाई ॥ ६ ॥ १३८ ॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत । अष्टक लिख्यते ॥ कवित्त ॥

रसिक हरिवंश सरवंश श्री राधिका, राधिका सरवंश हरिवंश वंशी । हरिवंश गुरु शिष्य हरिवंश प्रेमावली, हरिवंश धन धर्म राधा प्रसंसी ॥ राधिका देह हरिवंश मन राधिका, राधिका हरिवंश मम श्रुति वतंशी । रसिक जन मननि आभरन हरिवंश हित, हरिवंश आभरन कल हंस हंशी ॥ १ ॥ रसिक हरिवंश रस लाड़िली लाल बस, लसत वन अंग इक रंग रंगी । श्री राधिका बल्लभो बल्लरी प्रान धन, सुधन निरखत रहौं सुरत रंगी ॥ ललित सखि कुंज सुख पुंज वरषत जुगल, ललित मन एक तन चारु गौरंगी रूप लावण्य अनुराग अंग माधुरी

केलि कल कलित तरलित तरंगी ॥ २ ॥ रसिक हरिवंश मन लाड़िली लाल तन, ललित अनुराग वपु करनि लीने । वाम भुजा लाल दच्छिन भुजा लाड़िली, ललित गति चलत मल्हकत प्रवीने ॥ रसद वृन्दाविपिन मोद मकरंद सद माधुरी प्याय पीवत नवीने । जुग जुगल इक रंग चतुरंग पुलिन स्थली, जमुन कल कुंज रति रंग भीने ॥ ३ ॥ रसिक हरिवंश मन इक तन चारि हो, तो वेनु बानी विमल मोल लीनी । बाँह छ्वै छाँह करि छ्वै पद रज सिर धरि, अँखियाँ छ्वै छकी छवि रहौ अधीनी ॥ अल्प पल ओट सत कल्प वीतत जिनहि, दिव्य कैशोर हद दृष्टि दीनी । नागरी नव रंग निकुंज हित कल्प तरु, तीर छवि भीर भृंगिनि नवीनी ॥ ४ ॥ रूप हद लाड़िली लाल लावण्य हद, नेह हद हरिवंश विपिनि आसक्ति हद । वैसंधि इक वर्ण अँन वर्ण वरनत वनैं न, तरुन शैशैव विभौ विलसैं सौन्दर्य सद ॥ नैंनामृत मंजरी मृदुल अलिराज जुग, जुगल इक रंग रँगे पुलिन कालिन्द नद । नागरी नव रंग निकुंज हित कल्प तरु, पत्र फल फूल सर्वांग गौरांग पद ॥५॥ जुगल रस सिंधु सेवैं पुलिन रस सिन्धु कौं, नलिन हरिवंश आनंद लहरी । ललित वानीं विमल वार अरु पार नहिं, थाह कहुँ नाहि अति निपट गहरी ॥ अनन्य जन मीन आधीन ह्वै अनुसरैं, प्रेम अंजन दियें दृष्टि ठहरी । नागरी नव रंग निकुंज हित कलप तरु, पलक पल ललक परी रूप दहरी ॥ ६ ॥ रसिक हरिवंश वर विमल कल कल्प तरु, प्रेम फल फलित अनुराग वानी । केलि कल कलित अति ललित आमोद वन, श्रवन पुट पिवत नव रंग रानी ॥ रसिक मंडल विमल भूमिका भूमि

रहे, श्री राधिका वल्लभ अमान दानीं। परम हंस आधार रस सार धारा श्रवन, भजन एकान्त जिन मन समानी ॥७॥ रसिक रस सरस सर हंस हरिवंश जू, केलि मुक्ता चुगत मन नैंन दीने। प्राननि के प्रांन सो मेरे प्रान जीवन सुधन, दृष्टि प्रति दृष्टि आलिंगन नवीने ॥ सकल सुख धाम विश्राम वन विलसि हँसि, जमुन कल कूल अंग अरगजनि भीने। दिव्य अभरन वसन ललित अंग माधुरी, प्रेम परजंक अंकनि में लीने ॥८॥ १३९॥

सवैया—श्री व्यास रस सागर तें प्रगटे शशि श्री हरिवंश गुसाई। न घटै छिनहीं छिन होत उदौत जु कीरति तीनहूँ लोक में छाई ॥ चकोर अनन्यनि कौं मधु प्याइ दिखावत केलि ज्यौं दर्पन झांई। भई सव नागरीदासि खवासि श्री राधिका वल्लभ जू मन भाई ॥ १४० ॥

राग गौरी—कुल मंडन हरिवंश चंद। वैसाखे वर ग्यासि उज्यारी सीतल सकल सुख प्रगटे व्यास नंद ॥ वजत वधाई सव सुखदाई प्रफुलित रसिक जननि आनन्द। तारा जू जायौ जग चमकायौ नागरीदास भजन मकरंद ॥ १४१ ॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत–राग नाइकी

सुहावनौं लागतु है अति आजु सुन्दर व्यास कौ धाम। प्रगटे श्रीहरिवंश महा प्रभु शशि प्राची तारा वाम॥१॥ जगत महा दिन करना दुख ताप करी सव दूरि। वानी सुन्दर किरनि मधुरिया रही सकल थल पूरि॥२॥ द्विज कुल उड़गन मध्य विराजत वाढ़्यौ सागर प्रेम। परम चकोर रसिक जन शोभा निरखत निस गत नेंम ॥३॥ वृन्दावन घन गगन निरन्तर राजत सुख की राशि। दामोदर छ्ति जुगल मिलन मग विमल कियौ तम नास ४ १४२।

श्रीउदैसखीजी महाराज कृत　राग राइसौ सुकृत सफल भयौ व्यास कौ मंगल मन भायौ। जनम वाद मूरति रहसि तारा सुत जायौ ॥ १ ॥ माधव मास सुहावनौं मधुरितु सुखदाई। उज्जल तिथि एकादशी व्रज वजी वधाई ॥ २ ॥ धर्मा धर्म विचार कौ जस कुंजनि छायौ। इष्ट अष्ट अलि श्रुतिनु तें मथि सार दिखायौ ॥ ३ ॥ हरि रति सागर तें कढ़ी शोभा शशि राधे। सुरत नैंन वंशी सुरनि लखै रूप अगाधे ॥ ४ ॥ सोई वंशी हरिवंश तन वरननि में भावक। अनुभावक महली टहल जहाँ रचै पिय जावक ॥ ५ ॥ द्विज कुल विरधि सुहावनीं आँगन लिपवाये। चौक चित्र फल फूल धरि जल कुम्भ भराये ॥ ६ ॥ कुल देवी ललिता ललित विग्यान छकाये। वरस वरस की गांठि पै नव मृदंग वजाये ॥ ७ ॥ रजित कनक के फूल रचि मुकतनि की माला। नूतनि दल चंपक कली द्वारें सजें वाला ॥ ८ ॥ धरति सवासिनि साथिये कदली रुपवाई। केशरि चंदन अगर की रंग कीच मचाई ॥ ९ ॥ वंशावलि मागद कहैं पढ़ै सूत पुरानें। चित चरननि कीरति कुंवरि अरपन वरसानें ॥ १० ॥ उदै सखी सुख वैंन कुल वढ़ी वड़ाई। वनरानी वन श्याम सों सिंगार लड़ाई ॥ ११ ॥ १४३ ॥

श्री अतिवल्लभ जी महाराज कृत ॥ वंशावली ॥

जै जै जै सुर नर मुनि भाषैं। महा प्रेम कौ सुर तरु प्रगट्यौ सुफल भई अभिलाषैं ॥ टेक ॥ द्विज नरेश कें द्वारे ठाड़े ढाढ़ी ढाढ़िनि गावैं। मागद भाट सूत वन्दीजन विरदनि बोल सुनावैं ॥ १ ॥ ढाढ़िनि की अंगुरिनु सु लपाई झाँझि झनक सौं वाजें। ढाढ़ी हुरक वजावैं गावैं मणि मंदिर में गाजें　२　मात तात

के सुयश सुनावैं लालन जनम लड़ावैं। वंधु सजन अरु नेगि सवासिनि ते हँसि हँसि पहिरावैं ॥ ३ ॥ देस देस की भाषा कहि कहि सजननि गारि लगावैं। पशु पंछिनु की रचना रचि रचि सब जन मन हरषावैं ॥ ४ ॥ दानिनु दान दिये वहु माननि भाट कवित्तनि भाखैं। सुनि सुनि देत सतगुनौं तातें कोटिनु की अभिलाखैं ॥५॥ सूत पुरान प्रमाननि दै दै कहैं मिश्र कें आगें। पुरुष पुरान श्रुतिनु गायौ जो सो प्रगट्यौ वड़ भागें ॥ ६ ॥ जुग जुग रूप अनूपम धरि धरि जग में साके कीनैं। शेष शिवादि पार नहिं पावत निसि दिन कहत नवीनैं ॥ ७ ॥ मत्स्य रूप धरि वेद उद्धरे विरद ज्ञान विस्तारयौ। कमठ कठोर पृष्ठि मंदिर धरि रतन जतन चित धारयौ ॥ ८ ॥ असुर मारि धरनीं उधारि थपि यज्ञ वराह विराजै। खम्भ फारि नरहरि वपु प्रगटे भक्तनि के हित काजै ॥९॥ पैंड़ दोइ करि धरि नभ नापे वांवनि विरद वखानौं। इकईस वेर निछत्री धरनी परसुराम गुन गानौं ॥ १० ॥ राम रूप धरि सीता व्याहीं धनुष तोरि जसु लीनौं। सेत वाँधि लंका पति जीत्यौं राज अयोध्या कीनौं ॥ ११ ॥ व्रज मथुरा द्वारिका धाम त्रय भक्तनि कौं सुख दीनौं। वकी वकासुर अघ कंसासुर जरासंधि वध कीनौं ॥ १२ ॥ रास विलास कियें गो चारन रुकमिनि आदि विवाही। नरकासुर वानासुर जीते श्री बलदेव सहाही ॥ १३ ॥ वौद्ध रूप धरि असुर विमोहे हिंसक धर्म न भाख्यौ। कलकि रूप कलि अन्त प्रगट करि धर्म चारि पद राख्यौ ॥ १४ ॥ कपिल देव नारद सनकादिक रिषिभ देव पृथु व्यासा। वद्री पति हय ग्रीव हंस मन्वन्तर धर्म प्रकाशा ॥१५॥ दत्तात्रेय यज्ञ धन्वन्तर ध्रुव वराह हरि अवतारा नाम रूप गुन

कर्म अन्त नहिं जुग जुग के अनुसारा ॥ १६ ॥ पुनि अब श्री हरिवंश प्रगट व्है तीन रूप दरसाये । वंशी वंशीधर द्विजवर वपु व्यास मिश्र घर आये ॥१७॥ कहाँ लगि वरनौं रूप माधुरी रसना कोटिक नाहीं । नवल किशोर रूप मधि दरसै भाव भावना जाहीं ।१८। सूत वचन सुनि मिश्र हरषि सौं श्री तारा पै आये । वर दीयौ सो प्रगट भये अब मम भ्राता जस गाये ॥१६॥ जनम होत ही परचौ पायौ पुंजनि तेज दिखाये । वंश देखि हरिवंश नाम भनि कुंज निकुंज लखाये ॥२०॥ वाद मात्र देवकी गृह प्रगटे जसुदा लाड़ लड़ाये । वाद जनम यौं कथन मात्र ही नव निकुंज दरसाये ॥२१॥ सूतहि पूजि पुरान अठारह कनक सिंहासन धारे । बड़भागी विप्रनि कों दीनें आसिष वचन उचारे ॥ २२ ॥ गऊ सवच्छ तरुण बहु दूधी कनक श्रृंग रचि पीठी । रौप्य खुरी पाटम्बर ढकि ढकि दई न काहू दीठी ॥ २३ ॥ हय हाथी रथ यान पालकी दिये सबनि मन भाये । भूषन वसन असन ना ना विधि सजननि दिये वधाये ॥२४॥ वन्दी जन प्रस्ताव देखि कैं जनम आन के गानैं । हित जू जनम पहिल जनमैं जे तिनकें सुयश वखानैं ॥ २५ ॥ व्यास मिश्र के जनम वधाये हिमकर दान जु दीनैं । सो अब लौं घर भरयौ हमारौ खरचत बढ़तु न हीनैं ॥ २६ ॥ श्री तारा कें जनम होत हीं गई हमारी माता । भूषण दै कैं भूख मिटाई करी सगाई दाता ॥ २७ ॥ वड़ौ वंश कहाँ लगि यश वरनौं हित परिकर गुन गाऊँ । प्रगटे जिहिं जिहिं ठाम नाम लैं तिनके दान सुनाऊँ ॥ २८ ॥ सेवक जनम लह्यौ परमारथ स्वारथ तन मन पूरे । व्यास जनम हम लह्यौ दान सनमान भक्त जन रूरे २६ विपिनि निकट श्री यमुन

तट नरवाहन जनम वखान्यौ । दान केलि कौ दान मान युत सुयश गान हम जान्यौ ॥ ३० ॥ परमानन्द नवल प्रमुदानन्द प्रियादास हरिदासा । नाहरमल श्री विट्ठल मोहन प्रगटित पूजी आसा ॥ ३१ ॥ दास छबीले रस सरसीले नंदु मनोहर सेवा । जनम सुयश कहि जन मन राँचे जाँचे आन न देवा ॥ ३२ ॥ धामानन्द प्रबोध जनम कहि कहि उतरे भव पारा । पूरन खरग सैंन गुन गाये लह्यौ भक्ति सुख सारा ॥३३॥ पूजी आस हमारे मन की मिश्र घरनि सुत जायौ । राधा पिय दम्पति की संपति दान तिहूँ पुर छायौ ॥३४॥ वंदी जन की कहनि रचन सुनि व्यास मिश्र मुसिकाये । वंश प्रशंश करन कौ मागद संश मिटावन आये ॥ ३५ ॥ श्री नारायण नाभि कमल तें वृह्मा जनम जु लीनौं । ऋषि मरीचि तिनके सुत कश्यप कश्यप सुत पुर तीनौं ॥ ३६॥ कश्यप जू के अचलेश्वर सुत अच्युत ईश्वर ज्ञाता । तिनके हलधर सुत श्रीधर तें पाणीधर विख्याता ॥ ३७ ॥ गंगाधर लौं ऋषि कहि गाये पुनि सुनि भट्ट सुहाये । विजय भट्ट के सुवन कुलाजित सुत विद्याधर भाये ॥ ३८ ॥ तिन तें जालप मिश्र प्रगट भये राधावल्लभ सेये । भाव भावना में मन दीनौं और सकल तजि हेये ॥ ३९ ॥ मिश्र प्रभाकर तिनतें प्रगटे मिश्र उवार उवारे । जोवद मिश्र सुवन हिम कर जू व्यास मिश्र सुत धारे ॥ ४० ॥ चारनि तें ये वड़े कहावैं चारनि तें ये छोटे । नौ भाई नव नंद रूप हैं सकल गुननि करि मोटे ॥ ४१ ॥ हेत रूप निजु व्यास मिश्र घर प्रगटे श्री नँद नंदा । चारयौ वेद रूप गुन गावैं रचि रचि नाना छन्दा ॥४२॥ बिन्द नाद कौ वंश वहुत इनके ह्वै है सुखराता वन्दनीय तिनके पद वंदै सुर नर मुनि वड़ ज्ञाता

॥ ४३॥ तन मन धन करि सकल समोखे व्यास मिश्र वड़ भागी। दरस परस सुख संपति लै लै निकट वसे अनरागी ॥ ४४ ॥ अति वल्लभ की दुर्लभ आसा सोव सुलभ करि पाई। परिकर जुत वंशावलि वरनन जनम वधाई गाई ॥४५। हित जू जनम वधाई गावै मन दै अर्थ विचारै। स्वारथ सकल होंहि परमारथ जुगल चरण चित धारै ॥ ४६ ॥ १४५ ॥

श्री हितदासीजी महाराज कृत राग सारंग ॥—चलौ सखी मिलि वेगि वधाये तारा सुवन वदन शशि देखैं। विधनां करी सुनी मन भाई तन मन नैंन सुफल करि लेखैं॥ जात चले रिषि मुनी जन धाये गावत चाइनु मंगल भेषैं ॥ हितदासी आनन्द घन छायौ हरषत वरषत प्रेम विशेषैं ॥ १४५ ॥

श्री वंशीअली जी महाराजकृत ॥ राग रामकली—श्री राधिका पद कमल माधुरी परम रस विना हरिवंश हित को वखानें। निगम आगम अगोचर सु शुक शिव विधिनि रमापति आदि नहिं लहत ध्यानें ॥ १ ॥ रसिक सिरमौर जग विमुख लखि ललित वपु कियौ रस प्रगट कछु रहि न छानें। जासु मुख कमल बानीं सु मकरंद रस श्रवन सुनि लाड़िली अति प्रमानें ॥ २ ॥ नित्य नव कुंज रस पुंज गुंजत भंवर तहाँ जुग लाड़ लाड़त सहानें। धन्य वड़ भाग गावत जु जे नाम गुन वंशी अलि सुखित सुनि श्रवन मानें ॥ ३ ॥ १४६ ॥

श्री किशोरीअलीजी कृत ॥ राग सौरठा—प्रगटे श्री हरिवंश रसिक वर। गह मह भीर भई वृन्दावन उमहि उमहि आये नारी नर। रसिकनि के हिय हित सरसायौ, लागि रह्यौ अति हीं आनंदझर

सोरठा ॥ ताल मूल—वधाई आजु वाजति व्यास निकेत। गौर स्याम हिय कौ अति अद्भुत प्रगट भयौ है हेत॥ श्री हित हरिवंश नाम धरि आये सींचन रसिकनि खेत। तनक शरन आवत हीं जन कौं राधा पद रति देत॥ अति अगाध रस रीति प्रीति दै कीनैं मूढ़ सचेत। फूली अली किशोरी हिय में हरषि वलैया लेत॥ १४८॥

श्री रसिक दास जी महाराज कृत॥ अष्टक॥ राग त्रिभंगी छंद॥

भज मन हरिवंश अघ कलि नंशं जगत प्रसंसं संश हरम्। वर प्रेमहि दाता जस विख्याता रस मय गाथा मोद करं॥ श्री राधा वल्लभ तत्त्वन सुल्लभ सब तें दुर्ल्लभ प्रीति भरं। अति सुखद निकुंजा सहचरि पुंजा आलिगन गुंजा हिय स्फुरं॥ १॥ वन रचना सचितं मणिमय रचितं कंचन खचितं आपु भनैं। जटित तट सलितं पंकज वलितं बीची ललितं ताहि ठनैं। कल सदन सुकेलिं कंचन वेलिं लवंग एलां लवं घनैं। मुकुलित वर कुंदं केतुकी वृन्दं वेलि अमंदं द्वन्द हनैं॥ २॥ छवि सुर तरु अंबं विशद कदंवं बकुलय निम्बं वंश वरे। शुभ चंदन वरनं चम्पक करनं मालती भरनं नंद ढरे॥ मणि मंडल हीरं वट तरु तीरं वहै समीरं रंध्र वरे। अति रुचिर हिडोरं शब्दित मोरं तडि घन घोरं रंवु सरे॥ ३॥ सजनी मृग नैनीं बहु गज गैनीं सत पिक बैनीं सेव करे। जुवती अति सुघरा सब विधि चतुरा जित गति मधुरा राग भरे॥ मधु सद विधि रसदं षट रस विशदं भाजन लसदं सेज रचे। चौसर लर हारं वसन सुधारं करि सिगारं हेत नचे ॥४॥ अद्भुत जुगलंगा वसन सुरंगा मोतिनु मंगा सिखि पिच्छे

स्वच्छे ॥ लस छवि मुख मंडल तरलित कुंडल मनु दुति मंडल चल स्वच्छे । मधु मय हँसि बोलनि गज गति डोलनि प्रेम अलोलनि भौंह लच्छे ॥ ५ ॥ मिलि निर्त्त सुधंगे बीन उपंगे मुरली चंगे तान घनी । उर हार उतंगे भार नितम्बे मुरि मुरि अंगे चारु तनीं ॥ भामिनि भ्रू भंगे ताल अभंगे प्रीतम संगे केलि ठनीं । भरि गहन उछंगे लजत अनंगे भाव तरंगे दिन रजनी ॥६॥ रस सिंधु झकोरैं भाव हिलोरैं चाव मरोरैं प्रेम पगे । अंचल झकझोरैं श्रम कन थोरैं पलटै भोरैं अंग लगे ॥ दृग दुहुँ ओरैं अति सुख रोरैं बंधन छोरैं रैंनि जगे । सु कहा मति मोरैं सारद जोरैं भेवन ओरैं और नगे ॥७॥ श्री पद हरिवंशं रसिक वतंशं करि निहसंशं हुलसि भजे । ते सब सुख लायक रति वर दायक सदा सहायक दुरित भजे ॥ रसना दिन रटनं अष्टक पठनं प्रेमहि बढ़नं विमुख लजे । भव भय उद्धारक भावहि कारक सब विधि तारक कर्म तजे ॥८॥ मन रसिका दासे यह मन आसे निज वन वासे करुनि हये । चह अति हुलासे क्रीड़ा रासे प्रेम प्रकासे शीश नये ॥ श्री मिथुन विलासे तव पद दासे सदा उपासे सरन लये । बिनु प्रीति सुत्रासे बहु उपहासे व्यर्थ उसासे रछ्य दये ।१४६।

॥ श्री प्रीतमदास जी महाराज कृत ॥

बधाई माई व्यास मिश्र गृह आज । द्विज वनिता हुलसी छवि पावत आवत भावत साज ॥ १ ॥ लै लै भेंट थार कर कंजन गावत गीत रसाली । मत्त करिनि ज्यों धावत गति सों महा प्रेम मतवाली ॥ २ ॥ कबरी हलत झरत सुमनावलि हलत नासिका मोती । कर्नफूल झूमक अति झूमत ढ़िग कपोल शशि

सारी झूमत घूमत नैन अन्यारे अंजन जुत चष चारी ४
आई आँगन मधि श्री तारा गोद कुँवर छवि पावैं। मोतिन चौक दिपत कदली दल सजनी चहुँ दिसि गावैं ॥ ५ ॥ पाँय परत धरि शीश लाल मुख इक टक पलक विसारे। रहीं मोहि सब कुँवरि वधूटी हित करि हितहि निहारे ॥ ६ ॥ राधा नाम मल्हावत गावत किलकत हँसि हित लाला। लै वलाइ विधि तन अंचल कर चिरजीवो सुख पाला ॥ ७ ॥ श्री तारा विहँसि वैठारि सवनि ढ़िग मेवनि गोद भराई। हित प्रीतम चेरी करि नेरी दई लालन सेवकाई ॥ ८ ॥ १५० ॥

माई वधाई कुंज महल में आज। वर्ष गांठ श्री व्यास सुवन की सफल भये मन काज ॥ १ ॥ हिय फूली प्यारी श्री राधा प्रीतम निज हिय लीन्हो। महा प्रेम उन्मत्त किशोरी सुरत केलि रस दीन्हो ॥२॥ वदलि वदलि अधरामृत प्यावत विवस सुहिय कछु चेती। आजु प्रगट भई मम हित सजनी हिय जिय आनंद देती ॥ ३ ॥ सखिनु बुलाइ कह्यौ श्री प्यारी सुनहु सकल मम हेली। कीजैं महा प्रेम उत्सव निज सजहुँ कुंज रस केली ॥ ४ ॥ थिरचर वन घन संपति हित मय अली प्रफुलित भारी। प्रीतम फूलि उठे हिय जिय में वंदत कुंवरि सुर वारी ॥ ५ ॥ खग मृग मोर मराल नँचत सब कोलाहल भयो भारी। कुंज कुंज सो सखिनु टोल सजि गावत गीत न गारी ॥ ६ ॥ प्यारी महल महा कमनी अति रुचिर समय अनुसारी। चहुँ दिसि झमकत सहचरि यूथन मधि सिंघासन धारी ॥ ७ ॥ तापर लै वैठाइ हित अली भूषन चीर सँवारी। रोरी तिलक माल धूपन करि भोग आरती वारी ; ८ नृत्तंत प्रीतम प्रिया नाम लैं श्री हरिवंशी

प्यारी। सकल वधाई देत कुँवरि को लेत जिवावत ज्यारी ॥६॥ सव को वीरी माल देत प्रिय लै सु लगाय हिया री। मेरी जीवन मूरि हितालो कहि कहि विहँसि प्रिया री ॥ १० ॥ हित अलि गोद विराजत प्रिय के निरखत मुख सखि नेरी। हित प्रीतम कर गहि प्यारी ढिग लीनी करि निजु चेरी ॥ ११ ॥ १५१ ॥

श्री व्रज जीवन जी महाराज कृत—राग परज—महल में आज वधाई है। रानी ढाढ़िन वुलाई है ॥ अजायव रंग मचाई है। खरी ह्वै सीस नवाई है। तमासे में तमासा है ।१। देखैं महवूव खाँसे हैं। सवों के जी हुलासे हैं ॥ दै ताले कर दे हासे हैं। तमासे में तमासा है ॥ २॥ जोरी वजदी तमूरों की। मिलन चूरों हजूरों की। घूरन खजें मयूरों की। सुनेंदी जिंद संत पूरो की। तमासे में ० ॥ ३ ॥ पखावज में देदी थापें। गतिनु के पुंज है जापें। अँगुरियों संक्रिया छापें। वजावदी भेद क्या तापें ॥ त मासे में० ॥ ४ ॥ खरी हैं दो वेवीन वाली। जुलम परणें लैं दी हाली ॥ छकीं हैं रूप मतवाली। लटैं उरझी लसैं वाली ॥तमासे में ० ॥ ५ ॥ दो तर्फा वजदीं सारंगी। लै ढाढ़ी रंग नारंगी ॥ लैं दी लहरें वो मुख चंगी। वजन फंसी की तो फंगी ॥तमासे में० ॥६॥ वायाँ ढोलक का रंग मारै। धमाके साजों पर डारै। पुरै अगले की ठनकारै। वजाँदी तिस पै प्राण वारै। तमासे में ० ।७। इक दोनों दस्त करतारैं। किट खिरैं फिरैं थिरैं धुनि धारैं। वे पंछी मस्त करि डारैं। चौकैं वोलैं विपिन डारैं। तमासे में० ॥८॥ वाजे वहु विधि के राजें हैं। लिखे मैं जितने वाजें हैं ॥ ढाढ़िन तिन मधि विराजें हैं। सहेली चारु छाजें हैं तमासे

लै रागे छवि भरी जमकै दिखावै ग्राम स्वर रमकै तमासे में० ॥१०॥ सरगम की रीति करि गावै। बने बनरी के मन भावै॥ ललित लगि कान बतरावै। ये टप्पे लाल खूब गावैं। तमासे में ०॥ ११ ॥ हुकम लै ललिता जू आई। ढाढिन सौं हँसि कै बतराइ। यह प्यारी जू ने फरमाई। तू टप्पे क्यों नहीं गाई॥ तमासे में ०॥ १२॥ सुनत हँसकें भरी तानैं। परज सोहनी मिली ठानें॥ हरफ चोजो के मन मानें। अहा कहि दोऊ मुसकाने॥ तमासे में ०॥ १३॥ बुलाकर ढाढ़िनी पासै। समझि करि जीय की आसै॥ रीझन सो मगन सुख रासै॥ लगे देनें भूषण खासै॥ तमासे में ०॥ १४॥ पहिले दीने झबे चोटी। जिसे दिख दिल गया लोटी॥ उसी वखत गाई झँझोटी। वजी साजों में अछरोटी॥ तमासे में॥ १५॥ पहिला ईनाम लै करि ढाढ़ित उकत उठाई। इतने में नैनों सैनो प्यारी निकट बुलाई॥ क्या जोर तमासा॥ १६॥ झमकैं दी वेंदी वेंना। ढेढ़ी झमक सठेना॥ वेंदी सुरंग दीनी। केशरि दी आड़ कीनी॥ टकलाय रही प्यारी। क्या खूब तमासा॥ १७॥ अलकें कुटिल संवारी। फूलोंदी कली धारी॥ कपोलों दी चित्रकारी। हीरे दी चिबुक वारी॥ क्या होती है चमतकारी। बलिहारी बलिहारी॥ बोलें हैं मेरी जान। क्या खूब तमासा॥१८॥ नैना बजाय खंजन। क्या फूले हुये कंजन। तिनमें दिया है अंजन। साधों के मन के रंजन। मेरे दुखों के भंजन। भौंहें दी मटक॥ वाह वा०॥ मानैं न हटक॥ वाह वा ०॥ लोभांदी चटक। वाह वा ०॥ पागी ही सटक॥ वाह वा० ॥ सवदी सौं झटक। वाह वा ० बोलें। क्या खूब तमासा॥१६॥

दांतों दी चमक ॥ वाहवा ॥ मिस्सी दी दमक ॥ वाहवा ॥ खीलों दी धमक ॥ वाहवा ॥ मुसक्यान रमक ॥ वाहवा ॥ क्या लाली फमक ॥ वाहवा ॥ होठों दी अहा अहा ॥ क्या खूब तमासा ॥ २० ॥ ढाढिनि के हाव भाव में रानी गई है भूल ॥ क्या ० ॥ प्यारे ने याद दिलाके दिलाया सीस फूल ॥ बोलैं क्या खूब तमासा ॥ २१ ॥ है घेरा लाले दिल का तिसमें है युगल मोती ॥ दरमियान इन दोनों के लपकै है एक चुन्नी ॥ अजान जो न समझै परदे की मेरी बातें ॥ तिनकी बोखातरों कौ, बोलैं है मेरी जीवन ॥ सब गहनों की है कलंगी, इसका है नाम नत्थ ॥ पहिरेगा सो निहाल । बोलैं, क्या खूब तमाशा ॥ २२ ॥ मोती की दई दुलरी । पन्नों की दई तिलरी । हीरों के दिये चौलड़ । मानिक की लड़ी पाँच ॥ मीनों की दई चौकी । किया चित्र अपने गौंकी ॥ सबकी जो है सिरताज । बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २३ ॥ चोली है कटावों दी ॥ जरब फत बनावों दी ॥ चोये की हुई लपटी ॥ क्या देख सकैं कपटी ॥ जिनकी हैं मतें रपटी ॥ रती के दूलह दपटी ॥ देखैं है अहल दिल ॥ क्या और का है काम ॥ चढ़ि मैंन तुरंग ऊपर ॥ आतस की भरी भूपर ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २४ ॥ ओढ़नी औ तिलक ॥ वाहवा ॥ लप्पे की चिलक ॥ आनंद झिलक ॥ पहिराई किलक ॥ यह छवि की भरी ढाढ़िनि देखेंगे तिसके नैन ॥ जिस मेहर सों हित आली ॥ फेरै नजर इक पलक ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २५ ॥ सब नग के भरे बाजू ॥ जो देखै कहै हां जू ॥ चूरी हरी पछेला ॥ विच विच में छन्द मेला महदी

आरसी पहिराई रस सों ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २६ ॥ किंकिण बोलैं है भुन भुन ॥ कूकैं नूपुर वह धुनि सुनि ॥ पायल कै है रुन रुन ॥ जेहर रीझै है पुन पुन ॥ विछिया जुदाही झनकै ॥ छल्ले की जुदा ठनकै ॥ अनवट बड़ा ही भावक ॥ जिस पास लगा जावक ॥ गहने तो सब पहिरा करि फूलों दी चार माल ॥ स्यामा ने गले ढाढ़िनि वद्धी की वजह डाला ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २७ ॥ पाकरि इनाम ॥ वाहवा ॥ करकै प्रणाम ॥ वाहवा ॥ हित स्यामा स्याम ॥ वाहवा ॥ चहुँ ओर वाम ॥ वाहवा ॥ को वरनै नाम ॥ वाहवा ॥ जिनका मुकाम ॥ वन आठों याम ॥ नहिं छाड़ैं धाम ॥ तिनकी रीझनि देख ढाढ़िनि मस्ती में बोली ॥ इस वस्ती का भला ॥ सुन प्यारी लला ॥ कहने लगे आपस में ढाढ़िनि मजे की खानि ॥ वाह वाह वाह वाह होने लगे कुरवान ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २८ ॥ ढाढ़िनि ने मन की जाना ॥ फिरकै जो ठान ठाना ॥ गावै रंगीली ताना ॥ परिकर आनंद समाना ॥ सदके मैं अपने गुरु के ॥ महरम महल मधुर के ॥ कधीं ओट खड़े मुर के ॥ हँसि बोलें मुजसें मुरकें ॥ तिनकी दया ब्रज जीवन ढाढ़िनि का सुख सहाना ॥ है चुसुम गुल चेहर की दरसाना दरसाना ॥ बोलैं ॥ क्या खूब तमासा ॥ २९ ॥ ढाढिनि संगीत नाची है ॥ जेते गति भेद न वाची है ॥ सनमुख सबनि के राची है ॥ झूमर में अब जु माची है ॥ सुभग सखिनु संग हरि सहचरि ब्रज जीवना खूँब नाची है ॥ पग की पटक ॥ घूमन दी लटक ॥ इक इक छटक ॥ मालों दी झटक ॥ कंकण दी अटक ॥ चुटकी चटक ॥ भूली भटक ॥ सुख को गटक बोलैं । क्या

खूब तमासा ॥ ३० ॥ वनरे के दिल की मौजें ॥ मँगाय पाग आली ॥ वाँधी ढाढ़िनि के सिर पर ॥ व मेंन रंग आली ॥ तुर्रे की जोर लटकनि ॥ दै तारी अँगुरी चटकनि ॥ लै करि वलाय छवि सों अलवेली खड़ी घूम ॥ दै करि असीस रुचि की रंग महल रही झूम ॥ गावै सुनै यह लीला ॥ पावै सुहित वसीला ॥ नित निरखै नीला पीला ॥ लोटै विपिन की रज में ॥ बोलैं हैं मेरी जान ॥ क्या खूब तमासा ॥३१॥ १५२ ॥

वज दानी रंग वधाया मोरी आली, लग दानी वाद सुहाया, म्हारी आँखड़ियाँ ॥ भाग सुहाग विपिन वृज जीवन तारा रानी गोद खिलाया, रसिकौंदा जियरा जिवाया मेरी आँखड़ियाँ ॥ १५३ ॥

॥ चाचा श्री वृन्दावनदासजी महाराज कृत—वधाई की माँझ ३५ ॥

रानी तारा महा भाग की को कहि जात कहानी । प्रानी सब के प्रान रूप हित सुत जायौ सुख दानी ॥ ज्ञानी सब कौ ज्ञान यह है ध्यान धरत जो ध्यानी । वृन्दावन हित राधा वल्लभ कौ यह प्रेम निदानी ॥ १ ॥ आये श्री हरिवंश शरन मन श्री हरिवंशहि भाये । गाये श्री हरिवंश कृपा तें श्री हरिवंश वधाये॥ लाये श्री हरिवंश ध्यान हिये श्री हरिवंश रमाये । वृन्दावन हित राधावल्लभ श्री हरिवंश सुहाये ॥२॥ अपने व्यास कुमार लाल की वरस गाँठ सुठि आई । हिय आनंद समात नहीं मुख कमल रहे विकसाई ॥ रसिक अनन्य समूह मिले रस मोद कुतूह वधाई। वृन्दावन हित राधा-वल्लभ वानिक विशुद्ध वनाई ॥ ३ ॥ मिलि कै वाद नचै व्रजवासी रह्यौ रंग रस भिलि कै । चिलकै भाग्य

गोद कुमर छवि निरखि रहे हिय हिलकै । वृन्दावन हित राधा वल्लभ दिन दिखै लयौ दिल दिल कै ॥४॥ भूरि सजीवन प्रगट भयो भरि पूरि महा सुख दीनौ । दूर गये दुख द्वन्द सबनि के हित गरूर हित कीनौ ॥ भूर भाग सब रसिक जननि के हरषि हरषि सुख लीनौ । वृन्दावन हित राधा वल्लभ हित हजूर रस भीनौ ॥ ५ ॥ व्यास कुंवर की वरस गाँठ वर बाजत विपुल बधाई । ब्रज वनिता द्विज नारि मिली सब चाव छबीली लाई॥ बाद नगर सब डगर बगर में मोद कुतूह महाई । वृन्दावन हित राधा वल्लभ रीझि भीजि छबि छाई ॥६॥ जो हरिवंश जनम दिन मंगल सो कापै कहि आवै । खौं आनन्द की खुली व्यास घर सो अमृत रस प्यावै ॥ सौ हजार लखि कौ दिन गिनती गौ गन अश्व लुटावै । वृन्दावन हित राधा वल्लभ तौ इहि निधि वरषावै ॥७॥ जै जै श्री मथुरा मंडल ब्रज देश बाद शुभ ग्रामा। जै जै श्री गोकुल रावल ढ़िग लसत परम अभिरामा ॥ जै जै श्री जननी तारा श्री जनक व्यास सुख धामा । वृन्दावन हित राधा वल्लभ प्रगट्यौ श्री हित नामा ॥८॥ व्यास उज्यारी अति-ही सुंदर सुंदर माधव मासा । आसा सुफल भई सुत जायौ श्री तारा सुख रासा ॥ खासा खूब खुशी का अवसर घर घर बटत बतासा । वृन्दावन हित राधा वल्लभ प्रेम भौन परकाशा ॥ ९ ॥ ढाढ़ी कहत कहा भयौ मोकौं दयौ जरी का पग्गा । व्यास मिश्र सुनि तोसौं मेरौ लग्यौ नित्य कौ लग्गा ॥ लालन कौ मुख लखौं निरंतर तजौं नहीं यह जग्गा । वृन्दावन हित राधावल्लभ तोहि दियौ यह थग्गा ॥ १० अवनी रतन

गोकुल ढिंग श्री वाद ग्राम सुख भवनी ॥ श्रवनी नित्य प्रेम रस तिहिं ठा व्यास कुंवर दुख दवनी । वृन्दावन हित राधावल्लभ कलुष नगर गढ़ ढवनी ॥११॥ नद्दी वद्दी जु सद्दी प्रेमकी वद्दी नेम की रद्दी। वद्दी उठि गई अधरम की विद्दौ धरम मुसद्दी॥लद्दी शोभा व्यास भवन सुत जनम्यौ हित उन्मद्दी । वृन्दावन हित राधावल्लभ थपी जगत गुरु गद्दी ॥ १२ ॥ आली ढाढ़िनि नख सिख सुन्दर साँचे की सी ढाली । ताली दै दै नाचै गावै व्यास वंश परनाली ॥ जाली की अंगियाँ तन झलकैं हलैं कान की वाली। वृन्दावन हित राधावल्लभ प्रेम प्रेम मतवाली ॥ १३ ॥ जुट्टै एक एक पै जाचक मन भाई निधि छुट्टै । छुट्टै व्यास कुंवर जस अमृत पीवत नाहि अहुट्टै ॥ छुट्टै अंवर प्रेम मगन जानत न आभरन टुट्टै । वृन्दावन हित राधावल्लभ वरषत निधि नहि खुट्टै॥१४॥ दूर द्वंद गये है जु दुनी तें पुर पुर मंगल छाये । गुरु गुरुजन पग पूजि व्यास भूसुर सुर नभ सिर नाये ॥ जुर जुर वाद सकल ब्रजवासी मुर मुर अंग नचाये । वृन्दावन हित राधावल्लभ घुर घुर घन सुख छाये ॥१५॥ घर घर मिलि मिलि गावैं मंगल भर भर मोद मल्हावैं । धर धर शीश पाय गुरु जन के पर पर भाग मनावैं ॥ डर डर डीठ लगन उर सुत कौ कर कर जतन छिपावैं । वृन्दावन हित राधावल्लभ वर वरदान दिवावैं ॥१६॥ श्री हरि राधा कौ शरीर श्रीहित हरिवंश धरयौ है । मथुरा मंडल मधि श्री ब्रज लोक सुमोद भरयौ है ॥ श्रीयुत वाद जनक तहाँ श्री द्विज राज सुरंग ढरयौ है । वृन्दावन हित राधावल्लभ श्रीयुत श्री वितरयौ है ॥ १७ ॥ जग उद्योत व्यास कुल दीपक मग सुन्दर दरसाये खग मन उड़त फिरे है सबके हिलग

विप बान खगाये ।। लग नहीं सके दंभ सठ कमंठ वग ठग अध ठगाये । वृन्दावन हित राधावल्लभ भगत तहाँ पहुँचाये ॥ १८ ॥ भरो अटा अट प्रेम पात्र रस दै सुघराई गट्टा । जगत झटा झट खोलि सकत नहीं करत उलट्ट पलट्टा ॥ ताहि गटा गट पीवत रसिक अनन्य सदा के चट्टा । वृन्दावन हित राधा-वल्लभ लिख्यौ व्यास सुत पट्टा ॥ १६ ॥ खमकै रंग रंग उर अँगियाँ हार हमेले रमकै । चमकै चपलासी चहुँ दिश तें वाद नगर में झमकैं ॥ लमकैं व्यास कुंवर छवि उर भर मन जु मुदित तन दमकैं । वृन्दावन हित राधावल्लभ निरखि नचत पग ठमकैं ॥२०॥ फूल फूलि रहे फूल जहाँ तहाँ फूलनि मंडप छाये । फूले फूले फिरत व्यास जू पुन्य सुकृत फल पाये ॥ फणि मणि ज्यौं फानूस दिया त्यौं हितू आपै हित छाये । वृन्दावन हित राधा वल्लभ चित सुख जाल फसाये ॥ २१ ॥ राजन के राजा महाराजा हित राजा शिरताजा । काजा सुफल भये सब तेरे मंगल मोद समाजा ॥ ताजा बाँट बतासा यह सुत जान जहाँन जहाजा । वृन्दावन हित राधावल्लभ लाल गरीब निवाजा ॥ २२ ॥ अति अभूत अखंड अपूरव आनँद आज अनूठा । मिश्र व्यास अपने मुन्ना पै वारत भर मणि मुट्ठा ॥ विट्ठा परम प्रेम का पाना कलि-युग अमला उट्ठा । वृन्दावन हित राधावल्लभ लाल जहाँन में तुट्ठा ॥ २३ ॥ मिश्र राज के मणि आँगन में मौज मजे जस झल्ली । वढ़ी प्रेम की सलिता तहाँ नहीं लगे नेम की बल्ली ॥ श्री हरिवंश जनम सुख लख चख इक छिन नहीं निठल्ली । वृन्दावन हित राधावल्लभ महकत जस घन मल्ली ॥ २४ ॥ ताला दै दै ढ़ाढ़ी नाचै डुलैं कान का वाला लाला दूधा पीवौ

जीवौ दै असीस मतवाला ॥ माला ताकौ दई मणिन की मिश्र जु महा कृपाला । वृन्दावन हित राधावल्लभ शोभा सरस विसाला ॥ २५ ॥ केला की कोपीन लगाये संग बहुत हैं चेला । पेला पैल पौरि में बैठे देखन उमंड्यौ मेला ॥ ठेला ठेल व्है आवत ऐसे मुनि धावत कोऊ अकेला । वृन्दावन हित राधावल्लभ प्रगट्यौ श्री हित छैला ॥ २६ ॥ हेला दै ब्रज वासिन के सुत किये मिजु मेला । वेला भर भर मेवा दीनौं धरि धरि मिश्री डेला ॥ सेला इक इक सबनि दियौ इह ह्वै लै भग्यौ अकेला । वृन्दावन हित राधावल्लभ प्रगट्यौ श्री हित छैला ॥ २७ ॥ आस हमारी पुजी व्यास चिरजीवौ तुम्हारौ लल्लू । मास महा हुल्लास भरौ माधव मलूक रंग रल्लू ॥ यह सुख क्यौं कहि सकत शारदा जाकी बुद्धि सटल्लू ॥ वृन्दावन हित राधावल्लभ जस छायौ जग भल्लू ॥ २८ ॥ कलुवा नंद महर कौ अरु वृषभान सुता रंग रलुआ । पलुआ ताके पोष तोष सौं तन मन प्रेम उफलुआ ॥ बलुवा बड़ौ बड़े जन परसत चरण जुगल मृदु तलुवा । वृन्दाबन हित राधावल्लभ जिवौ व्यास कौ ललुवा ॥ २९ ॥ चप्पै नहीं किसी तें मन हरिवंश धरम पैं लप्पै । कप्पै लोक वेद ते क्यौं गुन नाम धनी का जप्पै ॥ थप्पै वास निकुंज व्यर्थ तीरज मग पग नहीं नप्पै । वृन्दावन हित राधाबल्लभ हप्पै सरस नहिं धप्पै ॥ ३० ॥ आवैं ब्रज नारी द्विज नारी मिलि मिलि मंगल गावैं । भावैं व्यास कुंवर छबि निरख्यौ घर जावौ न सुहावैं ॥ लावैं बहु विधि खेल खिलौना हित सौं हितहि खिलावैं । वृन्दावन हित राधा वल्लभ यौं दिन मोद बढ़ावैं ॥ ३१

पार नहि पावै दुर सटकत कवि त्रासा .. मुरि मटकत भृकुटी मुख पंकज रुर लट भ्रमर विलासा। वृंदावन हित राधा वल्लभ उर अटक्यौ सुख रासा ॥ ३२ ॥ दै असीस इक चली सु वनिता लै सुभेट इक आई। है जु एक ठाड़ी लालन ढिग हेज भरी मन भाई ॥ ने जु रही इक तारा के पग जै जु कहै इक माई। वृंदावन हित राधा वल्लभ सेज सदा सुखदाई ॥ ३३ ॥ आनंद अतिही अमंद आज अनुपम औसर इहि आयौ। अजिर अरगजा लीपहु आछैं आलय चित्र बनायौ ॥ अद्भुत अंबर अतर आभरन अनगन लै पहिरायौ। वृन्दावन हित राधा वल्लभ व्यास सुवन दुलरायौ ॥ ३४ ॥ मिश्र राज की सिंघ पौरि सहनाई नौवत वाजै। सुर जोषा पुहुपनि वरषा-वति बोलत बोल सदा जै ॥ वेद यजुर रिग साम अथरवन उच्चरत विप्र समाजै। वृंदावन हित राधा वल्लभ कौ जु जनम भयौ आजै ॥ ३५ ॥ १५४ ॥ इति ॥

वरस गांठि वरनन ॥ राग सुहौ विलावल ॥ ताल आड़ चौतालो ॥

सुख सरस्यौ री हेली शुभ दिन आजु कौ ॥ टेक ॥ गावैं सभागिनि सवै रानी तारा जू महल वधावनौ। आजु वरस गांठि जु अति लड़े की प्रेम सौं दुलरावनौं ॥ १ ॥ अरगजा अजिर लिपाइ रचि रचि मोतिनु चौक पुराइयौ। धरे पूरि गो घृत वारि दीपक वंदन वार बँधाइयौ ॥ २ ॥ रोपे जु कदली मूल चहूँ दिस सुरंग वितान तनाइयौ। धरे सींक सहित सँवारि सथिये फूलनि मंडप छाइयौ ॥ ३ ॥ भरे नीर घट श्रीफल सहित पल्लव जु नूत धराइयौ चौकी सुचारु विछाइ तापर लाल

इयौ । हरषे सकल नर नारि केशरि नीर मेलि न्हवाइयौ ॥ ५ ॥
भुव देव उच्चरत वेद जै धुनि भई कुसुम वरषाइयौ । वंदी वखा-
नत विरद मंगल पंच शब्द कराइयौ ॥ ६ ॥ निर्मल सुनीर
न्हवाइ अंग अंगौछि पट पहिराइयौ । तन चरचि सौरभ भाल
मृग मद तिलक चारु वनाइयौ ॥७॥ जग मगै कलँगी सीस वाँध्यौ
रतन पेच जराइ कौ । श्रवननि दिपैं जु अमोल मोती सोभा
भरु समुदाइ कौ ॥ ८ ॥ रुरकैं जु अलक कपोल गोल गरूर
भृकुटिनु छवि अहा । अधरनि रमी मुसिकानि लौंनौ चिवुक कहौं
उपमां कहा ॥९॥ द्दग सजल भीजें भजन जे गौरंग भाव भरे रहैं ।
वचननि अमी सौं झरत छिन छिन राधिकावल्लभ कहैं ॥१०॥
छवि कंठ कंवु लज्यात वाहु मृनाल की सोभा हरी । उर वर जु
परम विशाल मुक्ता तुलसिका माला धरी ॥११॥ चूरा जू रतन
जराइ अँगुरिन छाप भुज वाजू लसैं । रस भक्ति भीज्यौ हियौ
जहाँ गौरंग सांवल पद वसैं ॥ १२ ॥ सुठि नाभि छवि कौ गहरु
शुभ कटि पीत तट धोती वनी । जंघा परम अभिराम पद पर-
ताप नवें अवनी धनी ॥ १३ ॥ वैठारि आसन उच्च जननी
सुहथ आपु जिमावहीं । वहु पाक मेवा फल जु रस मय लाड़
जुत मुख लावहीं ॥ १४ ॥ अति भई मन्दिर भीर आनक पौरि
वहु वाजे वाजैं । अचवाइ सीतल नीर रचि तंबोल पुनि आरति
सजैं ॥ १५ ॥ पहिराइ कुसुमनि माल कोऊ पुहुपाँजुली लै वारहीं ।
चहुँ ओर मंगल गान कोऊ जैं जयति धुनि उच्चारहीं ॥ १६ ॥
इक वंदि इक आनँदि इक गहकी असीसैं देति है। तारा सुकृत
सुख सिंधु पैरति भाग्य कौ फल लेति है ॥ १७ सवकौं दियौ

तिलक करि करि न्योछावरि देहि उचित हैं ॥ १८ ॥ मांगैं सवासिनि लीक अपनी पूरन रानी करति है। पहिराइ भूषन वसन सब की गोद मेवा भरति है ॥ १६ ॥ द्विज भाट बंदी और भिक्षुक राज द्वार सबै खरे। हरषे महामन व्यास मन अभिलाष सब पूरन करे ॥ २० ॥ चिरजियौ नंदन व्यास दै दै आसिका घर को चले। जननी जनक आनंद पूरित वचन लागत अति भले ॥ २१ ॥ सुत अंक लै कैं व्यास बैठे सभा विप्रनि की जहाँ। गुन रूप विद्या सील भाजन सब प्रसंशित है तहाँ ॥ २२ ॥ सनमान असन जु वसन दै कैं व्यास सुषित सबै किये। कुल विदित विरद बुलाइ सीतल किये सुजननि के हिये ॥ २३ ॥ श्री हरिवंश चन्द्र किशोर कोविद रुकिमिनी पति गाइयै। यह वरस गांठि पुनीत वरनी भजन भिच्या पाइयै ॥२४॥ तारा जू कृषि सु लच्छनी रानी द्विज कुल ओप चढ़ाइयौ। वृन्दावन हित रूप वलि रस भक्ति वेलि वढ़ाइयौ ॥ २५ ॥ १५५ ॥

राग आसावरी—ताल रूपक—द्विज रानी सुत जायौ, मंगल मन भायौ आजु भलौ दिन। ललित वदन छवि सदन निरखि कैं लोचन हियौ सिरायौ ॥ मंगल मन० ॥ टेक ॥ १ ॥ धावति आवति गावति वनिता कर वर भेट भली हैं। प्रेम गह गही वदन डह डही द्विज वर भवन चली है ॥ २ ॥ लटकति रंग भरी सुख पूरित नव गुन रूप गहेली। मानहुँ प्रेम पवन बस विलुलित मृदुल कनक की वेली ॥ ३ ॥ गौर तेज कुल तिलक विप्र लखि जननी पद रज वंदैं। भाग्य मनाइ गोद प्रभु तन करि सबही मन आनन्दैं ॥ ४ ॥ देति असीस मुदित अति भामिनि

पहिगई । ५ ॥ लगन नछत्र विचारि देव भुव हिय सुख भीजि रहे है। प्रवल प्रताप जोग इहि वालक रसना परैं न कहे है ॥६॥ प्रभु सव काल महीतल जुग जुग भक्ति विस्तरन काजैं । ना ना रूप धरत करुना निधि प्रनित अभै नित राजैं ॥७॥ दान मान दै आरज गुर द्विज माथैं तिलक करे है । वृन्दावन हित रूप जनम सुत अति रस रंग भरे है ॥ ८ ॥ १५६ ॥

राग ईमन—ताल आड़—श्री राधा प्रसाद ते दरस्यौ व्यास भवन आजु मंगल माई। श्रीहरिवंश उदोत होत ही वेली भक्ति हरित ह्वै आई ॥ १ ॥ माधौ मास स्यामि उजियारी वाजी वाद सु गहकि वधाई। तव आनंद दियौ व्रज वंशी अव तारा जू की आस पुजाई ॥ २ ॥ गावति है सोहिले वधू जन नभ अवनी जै जै धुनि छाई। प्रेम अपूरव सव उर सरस्यौ जनक भाग की करत वड़ाई ॥ ३ ॥ दान मान जावक जन पायौ रसिकनि जुगल रसाइनि पाई। वृन्दावन हित रूप वारनैं लै लै वधुनि असीस सुनाई ॥ ४ ॥ १५७ ॥

राग काफी—विप्रराजकें धाम वधाई वाजही। श्रीहरिवंश जनम दिन मंगल साजही ॥१॥ राधा पद आराधत है रस रीति सौं। देत द्विजनि कौ दान वंदि पद प्रीति सौं ॥ २ ॥ गावति मंगल गीत वलैयाँ लेति है। मेवा भरि भरि गोद वधुनि कौ देति है ॥ ३ ॥ व्है रही सोभा भीर मिश्र के धाम है। वंदी वोलत विरद लेत कुल नाम है ॥ ४ ॥ सथिये धरति सवासिनि मांगति लाग है। व्यास मुदित मन देत भरे अनुराग है ॥ ५ ॥ निरषि लाल कौ वदन कुलाहल करति है। जननी कें पग लागति आनंद भरति है ॥ ६ ॥ पुनि पुनि देति असीस कुंवर

चिरुजीजियौ । वृन्दावन हित रूप सदा सुख दीजियौ ॥१५६॥

टेर—दूसरी तरह की—ताल आड—व्यास के महल वधावनौं धनि दिन भयौ आज । तारा कृषि सफल भई जनमैं गुरराज ॥ १ ॥ द्विज वनिता आवौ सवै गावौ मंगल चार । वाँधि मलिनियाँ सुभ घरीं आजु वंदन वार ॥ २ ॥ धरौ सवासिनि साथिये रचि सौनें सीक । सव विधि विधिना दाहिनौं लेहु आपनी लीक॥ ३ ॥ चंदन अजिर लिपाइ कैं रचि चौक पुराइ । दीप चौमुषे सजि धरौ जल कुंभ भराइ ॥ ४ ॥ नूत डार श्रीफल धरौ जौतिसी वुलाइ । जनम पत्र सादर लिखौ प्रभु कृपा मनाइ ॥ ५ ॥ भूमि दाँन गोदाँन देहु अरु वहु सनमान । मागद चारन सूत मिलि करौ वंश वखान ॥ ६ ॥ भवन अलंकृत कीजियै धरि कदली मूल । सौरभ जल छिरकाइ कैं रचौ मंडप फूल ॥ ७ ॥ श्री राधा पद वन्दि कैं जस करहु प्रसंश । भक्ति दिवाकर अवतरे जग श्री हरिवंश ॥८॥ तारा भाग्य महा वली धनि जनक जु व्यास । वृन्दावन हित रूप जहाँ भयौ प्रेम प्रकास १५७

सोरठा—ताल आड—अरी हेली अति मंगल दिन आजु कौ गृह अँगना जग मग होत । पुर मंगल मंगल सदन हेली मंगल अवनि उदोत ॥ हेली अति मंगल दिन आजु कौ० ॥ टेक ॥ १ ॥ आंनक वाजें व्यास घर हेली वाज्यौ गहकि मृदंग । सहनाइनु की टेर सुनि हेली सीतल भये सव अंग ॥२॥ लषि वनितनि की आवनी हेली गावति हिय की लाग । वड़ भागिनि सुत जावनौं हेली वरषतु पुर अनुराग ॥ ३ ॥ वदन हलति हैं घूँघटी हेली धरति आतुरे पाइ प्रेम करी है घाक्री

सवहिनु के मन माँहिं। प्रथम वधाई दैन कौं हेली सबही मन अकुलाँहि ॥ ५ ॥ रासेस्वरि पूजन सफल हेली भयौ रसिक अवतंश। द्विज कहैं लगन विचारि कैं हेली नाम श्री हित हरिवंश ॥६॥ महँत मांन तारा दियौ हेली सादर भेटनि लेति। वनितनि मुख के वचन सुनि हेली वाँछित सव कौं देति ॥ ७ ॥ सुकृत जननी जनक कौ हेली पूरव फल्यौ विशेषि। उमगि उठ्यौ सागर जु सम हेली दृग मन भायौ देषि ॥ ८ ॥ अजिर लसति है भामिनी हेली रचनां जहाँ अभूत। श्री राधा जु प्रसाद दत हेली जा घर दरस्यौ पूत ॥ ९ ॥ आविर्भाव जु मुरलिका हेली दम्पति हिय कौ गंश। वृन्दावन हित रूप वलि हेली करें रस गोप्य प्रसंश ॥ १० ॥ १५८ ॥

राग सारंग—ताल आड—लाल केशरि नीर न्हवावहीं। व्यास सुवन कौ जनम द्यौस द्विज वनिता हुलसीं आवहीं ॥ १ ॥ चौक पूरि चंदन चौकी धरि तहाँ सादर वैठावहीं। पंच नाद करि हरषैं तन मन फूलीं मंगल गावहीं ॥२॥ भारी कनक सुहागिनि कर लै हँसि हँसि सीस ढुरावहीं। गौर अंग की कांति मनोहर दरसति लखि सुख पावहीं॥ ३ ॥ कोऊ भूर वारनैं लै लै करजनि कौं चटकावहीं। कोऊ वारि देति पट भूषन कोऊ असीस सुनावहीं ॥ ४ ॥ उष्न नीर पुनि मज्जन करि कैं अंग अगौंछि सिहावहीं। धोती पीत पीत उपरैंना चुनि चुनि कैं पहिरावहीं ॥ ५ ॥ फैंटा पीत पीत कंचुक कटि पटुका पीत वधावहीं। रत्न जटित आभूषण ना ना मिलि तन ओप वढ़ावहीं ॥ ६ ॥ कुसुम दाम सजि कुसुम सेहरौ पुनि कुसुमनि वरषाहीं। विप्र वधुनि सनमानति जननी ते कुल कुशल मनावहीं ७

घृत पक्क मधुर मधुर पुनि मेवा लालहि मुदित जिमावहीं विप्र वेद धुनि करत पौरि भिच्छुक कुल विरद सुनावहीं ॥ ८ । तात सबनि सनमान देत आनंदित दान करावहीं । बरस गांठि की भेट सबै घर घर ते वनिता लावहीं ॥ ९ ॥ भूवा करति आरतो रानी सुत कर भेट धरावहीं । वृंदावन हित रूप अति लड़े मंगल दिन दुलरावहीं ॥ १० ॥ १५९ ॥

राग सोरठ—अरी हेली तारा जू कूषि सुलच्छनीं कहाँ लगि करौ प्रसंश ॥ रसिक मुकट मणि औतरे हेली जहाँ श्री हित हरिवंश ॥ हेली ० ॥ १ ॥ सरवर तीरैं कृष्णवट हेली धनि ब्रज बाद सुग्राँम ॥ आँनक बाजत गह गहे हेली विप्र राज कें धाँम ॥ २ ॥ गोकुल रावलि कें निकट हेली मंगल रच्यौ है अभूत ॥ उदौ करन रस रास कौ हेली भयो व्यास घर पूत ॥३॥ सुकल पच्छ एकादशी हेली अति सुभ माधौ मास ॥ श्री राधा प्रसाद दत्त हेली सुत दरस्यौ घर व्यास ॥ ४ ॥ पद गौरांग सुविधि भजे हेली जननी चित लगाइ ॥ रसिकनि मन बाँछित कियौ हेली सादर इष्ट मनाइ ॥ ५ ॥ बंशी बंशीधर प्रिया हेली कहन गूढ़ रस रीति ॥ हित सदेह अवनी भयौ हेली गुपत चितावन प्रीति ॥ ६ ॥ कृष्न जनम ब्रज पति कियौ हेली जैसें विधि जु विधान ॥ व्यास भाग्य बड़ मानि कैं हेली तिहिं विधि दीयौ दान ॥ ७ ॥ जुगल हेत कौ चंद्रमा हेली भयौ रिषि भवनउदोत । बृन्दावनहित रूप लषि हेली जनमन प्रमुदित होत ॥ १६० ॥

राग पंचम ताल चर्चरी ॥ अष्टक श्री हित कृपा विचार वेली से ॥

जयति हरिवंश महिमा महत विदित जग केलि कल कुंज

तन तेज छवि पुंज दरसै ॥ जुगल मुसिकनि सुधन पाइ प्रफु-
लित वदन नैंन करुना भरे अमी वरषै । वृंदावन हित वंदि सदा
तारा तनय मधुप मन मिथुन पद कमल परसैं ॥ १ ॥ जयति
सर्वेश्वरी कुंवरि आनंदनी श्री सहित वंदनी कुंज रानी ॥ विपिन
सुख वरषनी लाल मन करषनी सखीनु मिलि हरषनी धर रवानी ॥
सुविधि हरिवंश चित नैंन रस पोषनी केलि कौतिक ललित
रंग सानी ॥ वृंदावन हित रूप भाँति भाँतिनु प्रिये भरति उर
प्रेम सौं द्रवित वानी ॥ २ ॥ गुननि गंभीर अति धीर रस नद
महा सुहृद अलि भाँवती कुँवरि घर की ॥ माहिलैं सुख पत्नी
वर विहारहि रली निपुन रस चात्रकी मिथुन झरकी ॥ सुख
उलैंडें परैं पिवति सादर हरैं उर श्रवनि सींचि मृदु वैंन वर की ॥
फैलि दिस दिस गयौ सुदत्त राधा कुंवरि वृन्दावन हित
सुजस धुजा फरकी ॥ ३ ॥ चाइ चोजनि कथी माधुरी विपिन
की व्यास कुल ओप अतिसै चढ़ाई ॥ जासु परताप अलि
भाव भावक विदित प्रेम विधि मनहु मन करि पढ़ाई ॥ तरुणि
मणि मुकट उत्कर्ष श्री स्वांमिनी रसिक कुल सेव्य कीरति बढ़ाई
वृंदावन हित रूप वंदि हरिवंश पद प्रेम जिन लच्छणा मति
मढ़ाई ॥ ४ ॥ झुकी वल्ली ललित वलित तरु कंठ मिलि सदा
कुसुमित तहाँ रम्य रविजा तटी ॥ तहाँ मंजुल पिकी भ्रमरी
कलापिनी वर भामिनी राधिका नाम मधु रीति लागी रटी ॥
तहाँ मंजुल कुसुम दलनि सज्या रची त्रिविधि मारुत धरनि
कनक मानिक जटी ॥ वृंदा हित रूप जयति हरिवंश अलि
ललतनि निरषति युगल सुरति आरंभटी ५ सुमति दहली

लतनि लगि रहीं सब चित्र पुतरी मनौं रंग झूमति चिबुक करनि धरि कैं ॥ प्यास छिन छिन बढ़ति चौप पलु पलु चढ़ति लोल दृग नचत रहे रूप अरि कैं ॥ वृंदावन हित गौर श्याम छबि सिंधु मनु मीन हरिवंश मन सकै न तरिकैं ॥ ६ ॥ गुन उज्जागर मही सरन पालक सुबिधि देषियत व्यास कुल महत महिमा फुरी ॥ प्रेम पारस भक्ति दई शिर कर धरत कृपा अति रावरी जासु कें दिस दुरी ॥ राधिका वल्लभो लाड़ लाड़त भए प्रगट रस केलि वरनीजु आगम दुरी ॥ वृंदावन हित रूप वंदि हरिवंश प्रभू महा मधु रुचिर वरषे विपिन माधुरी ॥ ७ ॥ गौर विकसित वदन नैंन करुणा भरे वाहु आजानु अंग अंग कवनी ॥ जुगल अंगराग को तिलक मंडित भाल ललित ग्रींवा हियें कृपा द्रवनी ॥ तुलसिका दाम उर रुरति वहु छवि भरी चारु कटि चरन वन फिरत अवनी ॥ जयति श्री व्यास नंदन धरयौ हेत वपु वृन्दावन हित चरित मिथुन श्रवनी ॥८॥ कुंवरि गौरंग कौ कृपा भाजन मनौं जयति श्री व्यास सुत वसत वृन्दाविपिन ॥ निगम आगम रहसि जुगल दरसाइ कैं उदित राका धनीं सुरति मनु नभ दिपन ॥ तरक वादी कुटिल क्रूर कर्मठ जिते देखि परताप लागे जु उड़गन छिपन ॥ वृन्दावन हित चकोरी भए अनन्य जन सदा सेवत धरैं हियैं सुदृढ़ पन ॥ ६ ॥ वंदनी सेश विधि उमापति मुनिनु कौं भक्ति भूषन ललित व्यास कुल सौं भई ॥ सुमति करि ओप दै पहिरि हरिवंश हित लसति अंग अंग कमनीय नित नित नई ॥ ज्ञान गति कुशल कर्मठ लजे ऋषि कैं परम कौनिक अहा उनि पदवी लई वृन्दावन हित

राग भैरो–ताल आड़–अहो द्विजराज घरनि आजु कृषि सिरानी घर घर मोद नयौ है। निरवधि प्रेम प्रगट भुव तल पर अमर विमान छयौ है॥ वीथिनु छवि पावति वर वनिता मनहुँ रूप अंबुद उनयौ है। वृन्दावन हित रूप जनम दिन मंगल विशद ठयौ है।१६२। यथा॥ भयौ मंगलजु व्यास घर दरस्यौ प्रेम वली है। श्री हरिवंश जनम लियौ भुव तल घर घर रंग रली है॥ कोधौं सुकृत कियौ है पूरव तारा रानी कृषि फली है। वृन्दावन हित रूप उदौ लषि हरषी रास थली है॥ १६३॥

राग रामकली॥ मंगल मुखी वर्नन॥–मंगल मुषिनु मचायौ पहपट। नाचत ताल देत है चट चट॥ १॥ तुम जायौ कुल मंडन रानी॥ न्यौछावरि लै है मन मानी॥२॥ जानि न परैं पुरुष कै वनिता॥ कहैं चिरुजियौ लाल की जनिता॥ ३॥ भूषन वसन अँगूठी दैंही॥ लगि लगि चरन ओटि कर लैंही॥४॥ रानी रीझि देति मणि छल्ला॥ जियौ वड़ भागिनि तेरौ लल्ला॥ ५॥ हँसति वधू वे वदन मरोरैं॥ कूटक रचि रचि तानिनि तोरैं॥ ६॥ दान मान हम वाँछित पायौ॥ धन्य कृषि जिन यह सुत जायौ॥ ७॥ अव दै दान लला की दाई॥ तैं वाँछित निधि या घर पाई॥ ८॥ कहा नइनिया मटकति डोलैं॥ दान दैन किनि गठरी खोलै॥ ६॥ नकलैं रचैं वधूनि रिझावैं॥ लाज छोडि कैं नाचैं गावैं॥ १०॥ लटकत अंश भुजा धरैं अँगना॥ पहरि जरी पट होत है मँगना॥ ११॥ आये मंगित किधौं खिलौना॥ पढ़ैं हाँसि रस के मनु टौंना॥१२॥ वलि हित रूप रसिक जन पालक॥ सो दरस्यो जु व्यास घर वालक॥ १३

देव गंधार—मैया आजु द्विज कुल ओप दई ॥ तारा तनय जनम दिन मंगल रसिकनि सूल गई ॥ १ ॥ आविर्भाव मुरलिका हरि जुत जग उद्योत भई ॥ इहिं प्रसाद अब वढ़ि है छिन छिन वेली भक्ति नई ॥ २ ॥ भवन भवन तें आवति आनँद उर भिजई ॥ निरषि कुंवर मुख दै असीस कर वारि वलाइ लई ॥ ३ ॥ जस वढ्यौं रिषि व्यास वंश राधा सुदृष्टि चितई ॥ वृन्दावन हित भूर भाग जननी सुनि प्रेम छई ॥ ४ ॥ १६६ ॥

वधाई— सव मिलि गावौ द्विज राज कैं पुत्र जनम दिन आजु ॥ टेक ॥ सुचि रुचि अंग अलंकृत करिकें वैं गुन रूप गहेलीं । भवन भवन तैं आवति छवि सों निदरी है हाटक वेलीं ॥ १ ॥ अति कमनी रवनी गति गवनी अवनी अमित निकाई । आनन्द भरी सोहिले गावति उपजति मनु चतुराई ॥२॥ रव रस घुरी ढुरी वहु भेदनि गान गहर मति पागीं । हुलसि हुलसि अनुराग भरी अति प्रेम पंथ ढुरि लागी ॥३॥ इक पहुँची इक निकसी गृह तें इक भई पौरिनु ठाढ़ी । इक आतुर गति चली सुनत ही अति उत-कंठा वाढ़ी ॥ ४ ॥ इक गई सोभा सदन विप्र कैं रचना देखत भूलीं । इक लषि कौतिक वदन कुंवर को प्रेम हिडौरे झूली ॥ ५ ॥ इक पद वंदैं इक आनंदैं इक कहैं मधुरी वानीं । धन्य कृषि रस ओध कलप तरु सफल फली द्विज रानीं ॥ ६ ॥ इक दैंहि वारि वारि मणि भूषन इक करैं भाग प्रसंस । इक कहैं सत्य भई रिषि गाथा प्रगटे है श्री हरिवंश ॥ ७ ॥ आगम वरति कहति द्विज वर सुभ जनम पत्र के भावैं । निरवधि प्रेम भक्ति विस्तरि हैं हरि सम सील सुभावैं ॥ ८ ॥ ह्वै मन मुदित मिश्र

सिसु के लच्छन सव समझाई ६ अति सनमान करत रिषि वोले सुनौं मिश्र वड़ ग्याता। तुम कुल ललित वलित हरि कीरति करि है जग विख्याता॥ १० ॥ तीन्यौं जुग हरि प्रगट धरत है वहुत भाँति अवतारा। कलिजुग छिपि आचारज वपु धरि भक्ति करत विस्तारा॥ ११ ॥ ऐसैं कह्यौ व्यास श्री शुक मुनि श्री भागौत विचारी। सो तुम गृह कल्यांन कृपा हित दरसे सिसु उनहारी॥ १२ ॥ वृन्दारन्य सु पद करि रवनी वैभव अमित अपारा। श्रुति अगम्य रस प्रचुर करन जग प्रापति नित्य विहारा ॥ १३ ॥ राधा रसिक भरी अधरामृत वदन विभूषन जोहै। हरि अंशी वंशी गुन गंशी करन विदित भई सोहै॥ १४ ॥ सुनिये वात गात भये सीतल वंधु वचन सुधि आये। दान मान दियौ गोप राज ज्यौं आनंद कें निधि न्हाये ॥ १५ ॥ जननी जनक उदार महा मन सुत सनेह रस भीनैं। नित नव लाड़ चाव भावनि सौं भूर भाग्य सुख दीनैं ॥ १६ ॥ वलि हित रूप चरित रस वारिद वरषि हरित सव कीये। वृंदा-वन हित भाव सरोवर भरे है रसिक जन हीये॥ १७ ॥१६७॥

राग सारंग—झप ताल—विप्र राज गृह समाज रसिक नृपति जनम आज पूजे सव काज व्यास आस फली माई। सजि सिंगार पदिक हार करनि लसत कनक थार करति मंगल गान रहसि देति सव वधाई॥१॥ ललित नाम प्रेम धाम अंग अंग अभि-राम सुन्दर वदन गौर तेज निरषि को अघाई। देत दान वहुत मान पूरित जस जग वितान सुकृत सार पायौ रानी कूषि सुख सिराई २ राधा देव राधा सेव राधा विनु न दूजौ भेव

ध्यान राधा चरण कुल प्रधान जयति श्री हरिवंश चंद्र प्रगट करि दिखाई ॥ ३ ॥ लीला ललित रस सौं वलित जुगल प्रेम भक्ति फलित कृपा हेत रसिक जननि वंशी सुत आई । वलि वलि हित रूप चरित गुन अगाधि मन कौं हरित वृन्दावन हित फवी यह भाग की निकाई ॥ ४ ॥ १६८ ॥

मंगल वधाई—तारा जू महल में हो आज वधावनौं । सुत कें जनम लगौ हो वासर सुहावनौं ॥ सुहावनौं वासर सहेली तात भाग्य उदै भयौ । दिसनि विपुल प्रकाश दरस्यौ तिमर नीरस नसि गयौ ॥ हियनि वाढथौ हरषि वरषत कुसुम जै धुनि होति है । देखि दृगनि निहारि औरैं भाँति इहि पुर जोति है ॥ सजि चलौ सुभग सिंगार यह विधना कियौ मन भावनौं । तारा जू महल में हो आज वधावनौं ॥ १ ॥ इष्ट आराधन हो द्विजरानी कीयौ । धनि रासेश्वरी हो मन वाँछित दीयौ ॥ दियौ मन वाँछित जु पद्धतिप्रचुर करता राधिका । धर्म रसिक अनन्य थापनि छाप हित निरवाधिका ॥ गूढ़ जाप अलाप मुरली मंत्र सार उद्धार कौं । सिद्धि वपु रिषि वंश धारयौ कथन श्रुति के सार कौं ॥ महिमा महत कानन उजागर मधुर रस सींचन हीयौ । इष्ट अराधन हो द्विज रानी कीयौ ॥ २ ॥ सोहिलौ अपूरव हो जन मन लाग को । कहा कहा मित वरनौ जनक सु भाग को ॥ जनक भाग अथाह सागर सुत मयंक उदै जहाँ । गौर स्याम चरित्र अमृत वरषि है विन मित तहाँ ॥ रसिक चारु चकोर अभिलाषी करेगें पान कौं । व्यास कुल मंडन महत गुन दैंहि पुनि सनमान कौं ॥ रमि है सुमति सर हंसनी जहाँ भरयौ जुगल

मंगल मही तल हौ लखियतु विधि भली। भक्ति रवि उग्यौ ह्वौ तिमर हरन वली ॥ हरन तम अज्ञान आनंद विद्धि सबकें उर भई। सुपनें न डीठी आन काहू सादर सुसबहिनु दई। लै दान भिक्षिक विरद उच्चरत व्यास वंश प्रसंस कौ। वृन्दावन हित रूप प्रादुर्भाव श्री हरिवंश कौ ॥ पहिरैं सवासिनि कुल वधू द्विजराज मंदिर रंग रली। मंगल मही तल हो लखियतु विधि भली।१६९।

देव गंधार—अहो चिरुजीवी तारा नंद। देत असीस सकल नर नारी भरीं परम आनंद ॥ करुना कुशल जगत गुरु रानी तुव कुल निर्मल चंद। वृन्दावन हित रसिक मुकट मणि रस उद्धारक छंद ॥ १७० ॥

राग केदारौ तालमूल—असीस—जियौ जसु वद्ध न व्यास दुलारौ। विप्र असीस सुनावत कियौ मन बाँछित सब जु हमारौ ॥ वेद सार सर्वग्य महँत गुन कुल मंडन होहु पुत्र तुम्हारौ। वृन्दावन हित रूप प्रनित जन पालक अनन्य व्रत भारौ ॥ १७१ ॥

मंगल—आजु जनम दिन हो रसिकनि भूप कौं। सोहिलौ दरस परयौ हो गुनन अनूप कौं॥ अनूप गुनन प्रसंस कारन व्यास कुल कौ जस दीयौ। हरि वासर पुनि मास माधौ सुकल पच्छ उदौ कीयौ॥ वरनौं कहा अनुराग अवनी प्रगट भयौ तिहि छिन अहा। भुव देव उच्चरें वेद वंदी विरद पढ़ें पावन महा ॥ जननी निहारति ललित मुख अचरज जू कौतिक रूप कौ। आजु जनम दिन हौ रसिकनि भूप कौ ॥ १ ॥ सौहिलें सुहाये हो वनिता गावहीं। व्यास भवन कौं हो हुलसी आवहीं ॥ आवही मिलि व्यास मंदिर तारा जू कृषि मल्हावही। तन अलंकृत भेट कर वर वधू अति

है। जाइ जननी ढ़िंग असीसे देति करि करि गोद है। दै दान अति सनमान सकल सवासिनि पहिरावही ॥ सोहिले सुहाये हो वनिता गावही ॥ २ ॥ हित जग दुर्लभ हो वपु धरि आवनौं। जनक महा मन हो विरद बढ़ावनौं ॥ बढ़ावनौं कुल विरद सोभग सींव लखि मुख जीजियें। गहकि कैं चलि दै बधाई दृगनि कौं फल लीजियें ॥ अहा कहा समीति वाढ़ी देखि धन्य दिन सोहनो। पुत्र जनम चरित रतननि सुमति गुन लै पोवनो ॥ भवन कवनी फिरति रमनी कुसुम मंडप छावनौं। हित जग दुर्ल्लभ हो वपु धरि आवनौं ॥ ३ ॥ फूल भरचौ वासर हो रंग भरी सरवरी। कूषि भरी आनंद हो सुख निधि उर धरी॥ सुख निधि धरी उर धन्य हौ वलि कौन सुकृत यह घरी। चरन लगि लगि कहति वनिता प्रेम की लागी झरी ॥ गौर श्याम सनेह मूरति अगम लखि विश्रन भन्यौं। सभा रची द्विज राज वैठे महा भाग सफल गन्यौं ॥ वृन्दावन हित रूप वलि वलि देव जै जै धुनि करी। फूल भरचौ वासर हो रंग भरी सरवरी ॥ ४ ॥ १७२ ॥

मंगल ॥ व्यास सुकृत कौ री हेली सुख बिरवा भयौ। परम डह डहौ री हेली प्रभु वाँछित दयौ ॥ दयौ वाँछित प्रभु जू छिन छिन वढ़ति नव नव गोभ है। जननी निहारति वदन कौतिक अंग अंग अति शोभ है ॥ आरज कह्यौ सो वर लह्यौ अपनौ प्रसंसित भाग है। मन मन जु करत विचार सुत लाड़ति भरी अनु-राग है ॥ १ ॥ धनि रासेश्वरी री हेली पूजन फल लग्यौ। कुंवर आगमन री हेली कुल जसु जग मग्यौ ॥ जग मग्यौ कुल कौ सुजसु आजु विलोकि मंगल धाम है। व्यास वंश उदोत

जै सु धुनि पूरित भई । वरषैं कुसुम सुर वधू भयौ अनुकूल सव विधि सौं दई ॥ २ ॥ सुविधि सोहिले री हेली वनिता गावहीं । तारा रानी की री हेली कूषि मल्हावहीं ॥ मल्हावहीं यह कूषि कीनी सफल वल्लभ राधिका । पायौ अलभ्य सुलाभ धनि धनि व्यास भक्ति अवाधिका ॥ गोकुल सु रावलि निकट व्रज अवनीं भयौ मंगल महा । (जहाँ) जनम रसिकनि मुकुट मणि रसना वषानि कहौं कहा ॥ ३ ॥ धनि मुरलिका री हेली जग करूनां ढ़री ॥ धनि दम्पति हित री हेली रस मूरति धरी ॥ धरी मूरति प्रेम उद्धव आजु सव हिय सरसियौ । गोप्य रस की महत महिमा प्रगट भुव तल दरसियौ ॥ वृंदावन हित रूप श्री हरिवंश हंस जु आोपियौ । कलि कौ विध्वंस्यौ तिमर धर्म अनन्य द्दढ़ धुज रोपियौ ॥ ४ ॥ १७३ ॥

राग राइसौ—प्रेम भक्ति कौ अम्बुद देखि उनयौ आज । रस वानी वरषन जस दैन व्यास रिषि राज ॥ १ ॥ तारा जननी कूखि सुलच्छन अति अभिराम । दास सिषंडी हरषे आगम वाँछित काम ॥ २ ॥ रसिक मनोरथ सरवर अव जु भरैंगे पूरि । पावस कृपा विलोकी ताप गये दुरि दूरि ॥ ३ ॥ कलि कलेश ग्रीषम ते डारे सवही चूरि । तरु वेली हिय हरित भये लहे जीवन मूरि ॥ ४ ॥ कुल आरज नद नदीं जु तहाँ सरस्यौ सुख वारि । गरजनि गांन सो सोहिले आंनक अरु सहनारि ।५। कोकिल वंदी टेरैं करत हैं वंश प्रशंश । अद्भुत वरषा दरसी जनमत श्री हरिवंश ॥ ६ ॥ दादुर झिल्ली जाचक आनन्दित नहिं थोर । रंकनि धनु दै डारीं मैंड़ दरिद्र जु तोर ७ तव व्रज पति अव

कै वेद विधान ॥ ८ ॥ प्रचुर करन जश इहि जुग राधा चरन प्रधान। द्विज वर कुल वपु धारयौ मंगल रूप निधान ॥ ९ ॥ जननी जनक लाड़ सुख भीजैं आठौ जाम। बाल चरित करि रहे अलंकृत जिनको धाम ॥ १० ॥ ललित वदन अवलोकत बाढ़तु उर आहिलाद। सुचि रुचि इष्ट अराधन पायौ यह जु प्रसाद ॥ ११ ॥ सृष्टि सनाथ करन हित की रति वर्द्धन व्यास। गौर स्याम मंगल जश रसना करन प्रकाश ॥ १२ ॥ कौन सुकृत फल पायौ बुद्धि विचार न होत। वृन्दावन हित रूप महत गुन करन उदोत ॥ १३ ॥ १७४ ॥

राग धनाश्री—आजु भलौ दिन है री। चलि घर व्यास बधाई दै री ॥ १ ॥ आविर्भाव जगत गुर एहा। सब उर उभिल्यौ विपुल सनेहा ॥ २ ॥ लगन पुनीत शुभ घरी एरी। व्यास सुकृत की बरषी ढ़ेरी ॥ ३ ॥ सब दिस मंगल दरसि परयौ है। चित चीत्यौ विधनां जु करयौ है ॥ ४ ॥ धनि सुत जनम व्यास घर माई। श्री राधा जस धुजा फहराई ॥ ५ ॥ रचि रचि सरस सोहिलै गावैं। व्यास इष्ट कुल देव मनावैं ॥ ६ ॥ धनि बड़ भागिनि रानी तारा। बरषि परी आजु आनंद धारा ॥ ७ ॥ धनि धनि पद आराधन राधा। जिन पुजई सबही विधि साधा ॥ ८ ॥ धनि नरसिंघाश्रम के बचना। प्रभु दरसाई त्यौंही रचनां ॥ ९ ॥ धनि ब्रज भूमि बाद जस दीयौ। मंगल महा उदोत जु कीयौ ॥ १० ॥ धनि यह कुंड कृष्ण वट कमनी। धनि हरि वासर तिथि सुख अवनी ॥ ११ ॥ धनि राधा हरि जनम थली है। निकट बाद यह रंग रली है। १२ धनि भूवा जु

सोहिलौ व्यास कुँवर कौ । सुख दाइक सब नारी नर कौ ..१४
निगम सार उद्धरन अवतरे । रसिक महामन मोद उर भरे ॥१५॥
वंदौ श्री हित रूप सदाई । दीजै मुहि रस भक्ति वधाई ॥१६॥
वंशी प्रेम भक्ति विस्तरनी । कृपा कलेवर पर हित धरनीं ॥१७॥
यह मंगल जस वरनि सुनायौ । वृन्दावन हित वाँछित पायौ ।१७५।

राग रामकली–वंशी दया अति मन भरी । देखि कलि अति-घन घोर प्रानी हियें तव अरवरी ॥ १ ॥ को सुकृत उपकार को धनि व्यास कुल अवतरी । कौ वड़ौ जस देन तारा आस पूरन करी ॥ २ ॥ वह रस रूप समाज तजि कैं जगत के हित ढ़री । सिद्ध वपु द्विज राज मन्दिर दुरि जहाँ विचरी ॥३ ॥ जानि रुषि गौरांग स्वामिनि चरित कछु उचरी । वृन्दारण्य विहार स्थल वसि रस अगाधि जु भरी ॥ ४ ॥ जुगल परिकर में मिलावन वांनि जाकौं परी । निगम अगोचर कुंज वैभव आनि भुव विस्तरी ॥ ५॥ ललित रीति सु भजन सेवा सुमति यौं अनुसरी । राधिका पद्धति प्रचुर दरसाइ संसय हरी ॥ ६ ॥ जे व्रत कर्म उतंग कांनन रहसि विनु निदरी । नित विहार अखंड दम्पति प्रीति यह उर अरी ॥ ७ ॥ जिन दत्त परम प्रसाद विलसत रसिक निधि गहरी । पुनि पुनि वंदत व्यास सुत पद आस वेली फरी ॥ ८ ॥ रहनि कहनि जु हदौ श्रुति कौ सवै रीति खरी । देखि कैं भौंकत सकामी विकट गति आचरी ॥ ९ ॥ या रस की वाँकी गली तव मुरली गुन उघरी । श्यामा प्राननि नाथ दै कैं सप्त टेक जु धरी ॥१०॥ लोक वेद पथहि निदरत नहीं तव अव डरी । वृन्दावन हित रूप मुनि गति गूढ़ रंग रस ररी ॥ ११ ॥ १७६ ॥

राग आसावरी अविर्भाव मुरलिका अवनी कमनीय वपु

धर्यो माई । करुना वढ़ी विचारि जगत हित व्यास मिश्र गृह आई ॥ १ ॥ अहा कहा मंगल दरसतु है वाजति रंग वधाई । आवति वधू सोहिले गावति गलिनु भली छवि पाई ॥ २ ॥ धनि तारा की कूखि सभागिनि जिन सब आस पुजाई । रसिक सभा कौ सुकृत उदौ कियौ नीरसता जु मिटाई ॥ ३ ॥ धन्य राधिका वल्लभ पूजन करि जननी जु सिहाई । धन्य व्यास की करनी जा कुल महिमा महत चिताई ॥ ४ ॥ वरषतु है आनंद भवन में कहत कह्यौ नहिं जाई । हरषतु है सब कौ मन सजनी देखि ललित छवि छाई ॥५॥ तारा जू के पट भूषन लै धन्य भई आजु दाई । स्यौं परिवार साजि कैं ढाढ़िनि आनि अशीश सुनाई ॥ ६॥ नाँचति गावति रंग वढ़ावति फूली अंग न माई । उघटति है संगीत रीझि द्विज वनितनि मूंठि उठाई ॥७॥ धन्य जनम मानति अपनौं लाल शोभा लखि न अघाई। मन वाञ्छित धन पाइ प्रशंसति रानी कूखि भल्हाई ॥ ८ ॥ सीक साथिये पौरिनु धरि रासेश्वरि कृपा मनाई। झगरति वंश सवासिनि सबकौं देति लीक मन भाई ॥ ६ ॥ कुल कीरति जु बखानत वन्दी द्वारैं भीर महाई । आगम कथित ज्योतिषी (यह) दरशी प्रभु की प्रभुताई ॥ १० ॥ सचि सचि धरे साज मंगल सब कहा कहौं सदन निकाई । दीपनि अवलि माल मणि वंदन शिखर ध्वजा फहराई ॥ ११ ॥ श्री हरिवंश नाम धर्यौ रस मय रसिक जननि वर दाई । धर्म अनन्य राधिका पद्धति दिन दिन ओप वढ़ाई ॥ १२ ॥ कानन रहसि निगम हूँ दुर्लभ दुरी बात दरसाई । वृन्दावन हित रूप कृपा अम्बुद वरषै जु सदाई ॥ १३ ॥ १७७ ॥

राग धनाश्री ॥ श्री हरिवंश जनम दिन सब मन भावनौं । विप्र राज दरवार सु विपुल वधावनौं १ जो वह प्रेमानन्द

सु छन्दनि कथि कह्यौ । सो संपूरन राधा हरि मन रमि रह्यौ ॥ २ ॥ सो रस भेद प्रकाशन जग जन हेत री । कृपा रूप वपु धारयौ भजन निकेत री ॥ ३ ॥ इहिं विधि प्रेम सकल जन मन आकर्षहीं । यातें लोकनि ओकनि सब चित हरषहीं ॥ ४ ॥ सब मन देति उमाहौं आपु महा मती । दुरि वनितनि मधि विचरति वरनति सरस्वती ॥ ५ ॥ वनरानी मन इच्छा पद्धति प्रचार की । तारा कूखि सफल भई रस आगार की ॥६॥ ताकौ जनम सोहिलौ सब जग छाइयौ । यह मंगल राधा हरि मन अति भाईयौ ॥ ७ ॥ वंशी अंशी सहित कृपा स्वामिनि ढुरी । व्यास मिश्र कुल कीरति निर्मल विस्तरी ॥ ८ ॥ दया धर्म गुन शील भक्ति रति दृढ़ महा । जननी जनक भाग्य महिमा वरनौं कहा ॥ ९ ॥ जिनकौं हरि पद सुमति रमति यह वरु दयौ । दिन मणि ज्यौं उद्योत होत तम हरि लयौ ॥ १० ॥ राधा हरि रस यस शशि ज्यौं भयौ उदित री । सुनियै कौतिक चरित सवै मन मुदित री ॥ ११ ॥ हरि इच्छा पुनि प्रेरे वे मुनि राइ जू । भजन सिद्ध वय वृद्ध भरे रस भाइ जू ॥ १२ ॥ वन्धु आगमन सुनि पुनि आगैं जाइ कैं । हरषि मिलै उर लाइ बहुत सुख पाइ कैं ॥ १३ ॥ पद वंदन करि भुज गहि लाये ग्रेह जू । पूजन असन कराइ भरे अति नेह जू ॥ १४ ॥ संपति सदन निहारत पुनि सिसु रूप जू । करि वंदन प्रभु चरन कहत मुनि भूप जू ॥ १५ ॥ सुनहु अनुज चित लाइ चरित मम नाथ जू । वरु दै प्रगटे तुम गृह करन सनाथ जू ॥१६॥ सुनौं पुराननि साखि चरित हरि के सबै । धर्म रहित जब जानौं प्रगटौं हौं तबै ॥१७॥ तीनि जुगनि अवतार सु प्रगट विशेषियैं कलियुग गुपत चरित

हरि कौ सब लेखियै ॥ १८ ॥ लीला नित्य विहार महा रस जानियै। प्रापति निपट दुहेली निगम बखानियै ॥ १९ ॥ मुनि नर देव विचारि देखि जकि थकि रहैं। विकट पंथ लखि उत्कत पुनि दुर्ल्लभ कहैं ॥ २० ॥ जो कारन मुनि देव नरनि तें नहिं वनैं। ता हित प्रभु अवतार निगम आगम भनैं ॥ २१ ॥ वेदहु ते अति गूढ़ रहसि कौ पावही। यह रस भक्ति दुरी पुनि हाथ न आवही ॥ २२ ॥ ता रस कौ मथि प्रगट करन आचरन कौं। मिथुन केलि वर दाइक वरन अवरन कौं ॥ २३ ॥ मम प्रभु युग युग रूप धरत जन हेत जू। अब इहिं कारन प्रगटे अनुज निकेत जू ॥ २४ ॥ यह सुनि वेपथ गात जनक जननी भये। विप्र वन्धु लै साथ निकट शिशु कैं गये ॥ २५ ॥ धूप दीप आरतो साजि ऋषि राज जू। प्रेम सिन्धु में न्हाये सहित समाज जू ॥ २६ ॥ सथिये धरनि सवासि आस जिनकी फली। मागद चारन भाट कहत यश विधि भली ॥ २७ ॥ घर घर विशद वधाई मंगल रीति सौं। घर घर तें वनि आवति हुलसी प्रीति सौं ॥ २८ ॥ गावति सरस सोहिले भरि अनुराग री। सुत लखि वदन मयंक कहति धन भाग री ॥ २९ ॥ द्विज रानी पद वंदति धरि धरि शीश री। विधि तन अंचल करि करि देति अशीष री ॥३०॥ धेनु वसन गज राज और धन अमित जू। व्यास मिश्र दै सवै विप्र पद नमित जू ॥ ३१ ॥ पहिराई कुल वधू विविधि-पट आनि कैं। मेवा दीनी गोद वहुत हिय मानि कैं ॥ ३२ ॥ हौं वलि श्री हित रूप जनम यश गाइ कैं। दीजैं मोहि वधाई रीझि बुलाइ कैं ।'३३'। श्री हरिवंश नाम गुन न्सि

राग धनाश्री—ताल रूपक—सब कहति धन्य दिन आजु बधावौ द्विजराज कैं ॥ टेक ॥ भुव जनित मंगल अमित सर सरिता अमल जल पूर । तरु बेलि कुशमित गह गहे बरषत पराग सुभूर ॥ गिरि धरैं ना ना धातु द्विज वर वेद मारग सूर । सुनि जनम रसिक नरेश हरि जन भये रस भजन गरूर ॥ बधावौ०॥ ॥ १ ॥ पालत मही नृप नीति सब जन सहज करत समीति । दबि गये दम्भ प्रपंच सबही दुसह माया जीति ॥ व्यास नन्दन जनम दिन तें लह लही उर प्रीति । लीला निकुंज प्रकाश दिन दिन बाढ़ति अति रस रीति ॥ बधावौ० ॥ २ ॥ उभै हिय हितगनि कलेवर विपुल प्रेम प्रकास । गौर तेज प्रशंश हंसी रति सरोवर वास ॥ तारा उदर सोई धरयौ श्रुति हृदौ कहियतु जासु । राधिका पद्धति प्रचार मानौं मूरति रास विलास ॥ ॥ बधावौ० ॥ ३ ॥ त्रैलोक विजई जो भई श्री कृष्ण अधरनि लागि । थिरचर किये चर थिर भये मुनि ध्यान तें उठे जागि ॥ ब्रज वधू सब मोहित करी पथ चली अति अनुरागि । सोई व्यास वंश विदित धरयौ वपु बरनौं कहा बड़ भाग ॥ बधावौ० ॥४॥ यौं करि विचार सिंगार मंगल साज सकल बनाइ । गवनी तौ विप्र नरेश मन्दिर प्रेम भरि अकुलाइ ॥ गावैं सवासिनि सोहिलै द्विज घरनि कूखि मल्हाइ । उमह्यौ मनौ छबि अमित वारिध शिशु लखि नैन सिराइ ॥ बधावौ०॥ ५ ॥ इक भीजि परमानंद पुनि पुनि मुदित देति अशीश । इक कुल वधू कर जोरि विनवति चरन लावति शीश ॥ इक रीझि वारति आभरन दै याचकनि वकसीस । लखि प्रेम भुव पर चारु बरषत कुसुमनि नभ कौ ईश

सुहाग । इक चोज चाइनु रुचि वढ़ावति झगरि माँगति लाग ॥ इक कृपा मन्दिर माँहि झूलति वदति धनि धनि भाग । रुचि पाइ रहसि प्रसाद रानी फल्यौ है मनोरथ वाग ॥ वधावौ० ॥७॥ इक ताल तान प्रवीन उपजैं भेद भावनि लेत । इक सुघर मति गुन पारखू सनमान तैसौ देत ॥ इक जंत्र ना ना विधि वजावत राग रंग समेत । इक अंक भरि भरि भेटहीं सुनि उफनि चल्यौ हिय हेत ॥ वधावौ० ॥ ८ ॥ इक सचत कुसुम वितान पौरिनु रचहिं वंदन वार । करि अगर धूप गुलाव सींचत उठति भुव उदगार ॥ दै धैंनु भूषन वसन द्विज गुरु वन्धु करि मनुहार । व्यास सकल समोषि विधि सौं छकि रहे कृपाहि विचार ॥वधावौ० ॥ ९ ॥ हरि सिन्धु मथि अमृत उपायौ देव हित कें पान । यौं वेद अौरु पुरान सोधे रस भजन लियौ छान ॥ वलि जाऊँ श्री हरिवंश वपु धरि दियौ है यह रस दान । जा पाइ कर्मनि भर्म भंजे ग्यान हूँ छिलका समान ॥ वधावौ० ॥ १० ॥ गौरंग अंगी चरित मति अति रमी रति सर न्हाइ । कमनीय कानन केलि कौतिक दियौ जग दरसाइ । वंदौं चरन हित रूप रस यश वरनि कौन अघाइ । वृन्दावन हित जनम मंगल मिथुन रहसि भरयौ भाइ ॥ वधावौ द्विज राज कैं ॥ ११ ॥ १७९ ॥

राग सारंग—आजु वधाई विप्रराज कैं सब मन वाढ्यौ है मोद ॥ टेक ॥ देखि महा मंगल अवनी पर बोलत द्विज शुभ वानी । तारा कूखि चन्द्रमा ऊग्यौ अद्भुत अकथ कहानी ॥१॥ संशै शूल ताप निरवारे निरखत नैंन सिराये । जै जै जयति शब्द तिहिं छिन भये युवतिनु मंगल गाये २ जो वंशी सब

हित व्यास मिश्र घर आई ।३। निश दिन रहत अराधत मोहन जा मुरली मधि राधे। सो कियौ विदित बखान प्रगट ह्वै कह्यौ रस रूप अगाधे ॥ ४ ॥ को जानैं वह रीति तासु बिनु दुर्लभ निगम प्रमान्यैं । सुर्ल्लभ कियौ दया करुना निधि ललित भजन रस खान्यैं ॥ ५ ॥ दूरि कर्यौ अज्ञान अँधेरौ भक्ति भान परकास्यौ । सूझयौ नित्य विहार सबनि कौ उर अन्तर आभास्यौ ॥ ६ ॥ दंभ उलूक दुरे हग दरशत प्रेम पंथ जन लागे । रजनीं सहज अविद्या नासी सोवत से सब जागे ॥ ७ ॥ गिरा गंभीर वृष्टि रस धारा । सुनत सबनि मचु मानैं । रसिकनि भाव सरोवर पूरे हिय वारिज विगसानैं ॥८॥ परम धर्म आचरन दृढ़ायो जो सर्वोपर भाख्यौ । राधा नाम धाम सब सुख को रतन जतन करि राख्यौ ॥ ६ ॥ गौर स्याम हित चित की मूरति रसिकनि हित दरसाई । तात मात के भये मनोरथ मनु निधनी निधि पाई ॥१०॥ उदित उदार व्यास कुल दीपक उग्र भजन पर पाटी । वृन्दावन हित रूप कृपा निधि फांसि करम की काटी ॥१८०॥

राग सारंग—आजु तारा जू महल बधावनौं । श्री हरिवंश जनम लियौ सजनी चलि मिलि मंगल गावनौ ॥ १ ॥ ब्रज अवनी आनन्द जहाँ तहाँ वाद सुजस सरसावनौं । द्विज कुल दीनी ओप धन्य बड़ भागिनि कूखि मल्हावनौं ॥२॥ कहा कहौं मन्दिर की रचना भांति भांति दरसावनौं । धुजा पताका वंदन माला सुरंग वितान तनावनौं ॥३॥ निर्त्तत गुनी पढ़त वंदीजन कुल कौ विरद बखावनौं । भ्रगरति वंश सवासिनि चाइनु भाइनु रुचि उपजावनौं ॥ ४ ॥ विप्र विचारत लगन शुभ घरी सोधि

मन भावनौ .. ५ .. गगन मगन जै धुनि भई वानी दुन्दुभि देव वजावनौं । कर धरैं थार महा छवि पावति देखौ वनितनि आवनौं ॥ ६ ॥ दै दै भैंट लगति है पाइनु हरषि असीष सुनावनौ । सादर देति वोर अरगजा सबकें अंग लगावनौं ॥ ७ ॥ इक आवति इक जाति प्रेम सौं एकनि कौं पहिरावनौं । एक रचति है चौक साथिये गनि गनि सींक धरावनौं ॥ ८ ॥ गह गहौ वजतु मदिरला सुगतिनु नाना रंग वढ़ावनौं । राजत गाजत भिच्छुक पौरी रीझि दान झर लावनौं ॥ ६ ॥ मंगल मुखी करत कौतूहल रावर सुख वरषावनौं। छला अँगूठी देत भामिनी लैं पुनि करनि नचावनौं ॥१०॥ भांड रचत भंड कूट्यौ ना ना द्विज वर सभा रिझावनौं । महा मुदित श्री व्यास भाग्य बड़ तिनकी आस पुजावनौं ॥ ११ ॥ सजि नाची रनिवास जु ढाढ़िन मन वांछित दतु पावनौं । लाल वदन लखि फूलति तन मन पुनि पुनि माथौ नावनौं ॥ १२ ॥ पाई लीक मलिनियाँ अपनी दिन दिन उदौ मनावनौं । खपरा पूजि दियौ धनु दाई धोइ दरिद्र बहावनौं ॥ १३ ॥ बड़े मान सौं आई नाइनि पाँय महावर लावनौं । स्यौं गहनैं जु उतीरन दै कैं सुत कौं बदन दिखावनौं ॥ १४ ॥ भव निधि नौका रसिकनि सर्वसु औसौ नाम धरावनौं । वंशी वंशधरन राधा सखी ताकैं मधि जु चितावनौं ॥ १५ ॥ पुरजन गुरजन विधि सौं पूजे सब मुख सुजसु कहावनौं । कृपा राधिका वल्लभ उझिली सब जग आनंद छावनौं ॥ १६ ॥ चले नेग लै लै असीस दै चिरजीवौ कुशल मनावनौं । वृन्दावन हित रूप व्यास सुत मन नैननि उरझावनौं । १७ १८१ ।

वधू सोहिले आवति आजु भलौ दिन माई ॥ अहा कहा बाजति रंग वधाई ॥ टेक ॥ १ ॥ व्यास सुकृत की वेलि लहलही लाग्यौ फल सुखदाई । भाग्य अवधि श्री तारा जननी जाकी कूखि सिराई ॥ २ ॥ द्विज कुल दीनी ओप अवनि अति कृपा अवधि दरसाई । धन्य कहत नर नारि रसिक जन प्रान संपदा पाई ॥ ३ ॥ देखि अपूरव उदौ जनक नें संपति बहुत लुटाई । ऊग्यौ विरवा भक्ति प्रेम की सरिता गहर वहाइ ॥४॥ प्रगट भये राधा हरि जा थल वाद निकट छबि छाई । व्यास वंश प्रभुता विस्तारन वंशी वपु धरि आई ॥ ५ ॥ रासेश्वरी पद्धति प्रचार कौं करुनां भरि अकुलाई । श्री हरिवंश जनम मंगल रस गोप्य ध्वजा फहराई ॥ ६ ॥ आनक घुरं अनेक शुभ घरी विप्रनि सोधि बताई । भई सुदृष्टि राधिकावल्लभ आगम वरनि चिताई ॥ ७ ॥ धन्य मास माधौ हरि वासर सुकल पच्छि वर दाई । वृन्दावन हित रूप धन्य जन प्रनितनि आस पुजाई ॥ ८ ॥ १८२ ॥

राग चैती गौरी—अहो आजु व्यास भवन भई भीर वधाई वाजै गह गही । अहो सखि उलही है आनन्द वेलि सबनि उर डह डही ॥ टेक ॥ कहत द्विज यौं सोधि आगम शुभ नच्छत्रनि देखि । पुत्र प्रगटयौ भाग पूरन जनम सफल करि लेखि ॥ वधाई वाजै गह गही ॥ १ ॥ श्री कृष्ण वंशी वपु धरयौ धनि धनि यह शुभ वार । राधा सुजस की चाँदनी मनु उदित भई संसार ॥ २ ॥ अज्ञान तम के हरन कौं मनु ऊग्यौ अद्‌भुत भान । रसिक अम्बुज भये प्रफुलित दरस्यौ है उर विज्ञान ॥३॥ इच्छा पुजावन कलप तरु गुन गननि कौ निज धाम । भक्ति वर दाता महा फल

गिरिराज । कृष्ण सम सम दृष्टि सब पर देह धरी पर काज ॥५॥ परम धर्म उदार कीरति सरद शशि सम तूल । सहन शील सुशरण पालक हरन हिये की शूल ॥ ६ ॥ नव कुंज रास विलास लीला करैं जगत प्रसंस । महा मोहन नाम पावन जयति जयति हरिवंश ॥७॥ कुल दीप श्री गुरराज प्रगटे जुगल रस की खानि । गौर बरन विचित्र मूरति दैन अमानिनु मान ॥८॥ तात मात मुदित भये अद्भुत सुजस सुनि कान । वजन लागी देव दुंदुभि अवनि घुरे नीसान ॥ ९ ॥ दिशा निर्मल भई तिहि छिन भयौ प्रेम प्रकाश । भये उज्जल मन सबनि के जुगल चरन बढ़ी आश ॥ १० ॥ जुरी मेलनि कुल वधू मिलि चलीं मन्दिर राज । महा भाग सुहाग सुन्दरि सजि सजि मंगल साज ॥११॥ एक परम प्रवीन नारिनु चित्र रचे बनाइ । एक रोपैं धुज पताका फूलनि मंडप छाइ ॥ १२ ॥ परम प्रेम उदौ भयौ हिय बढ्यौ अति आनन्द । विविधि बाजे बाजहीं गुन गावति रचि रचि छन्द ॥ १३ ॥ आभरन पट पहिराइ सबकौं कियौ बहु सनमान । विप्र गुरजन बन्धु पोषे दियौ है गुनिनु बहु दान ॥ १४ ॥ भूरि भाग विचारि अपनौं कृपा हरि की जानि । बिरद साँचौ गन्यौ प्रभु कौ बन्धु बचन उर आनि ॥१५॥ विवि हिये कौ अनुराग शोभा प्रगट देख्यौ नैंन । वृन्दावनहित रूपसोभा बरनत बनहि न वैंन १८३

राग विहागरौ ॥ मैया यह मंगल मन भायौ रे । श्री हरिवंश जनम दिन रसिकनि लाभ अपूरव पायौ रे ॥ १ ॥ जुगल रहसि वृन्दा कानन जाकौ निगम दुरयौ रस गायौ रे । व्रत अनन्य धरि ताहि चितावन धनि तारा जू जायौ रे २ द्वापर

कूखि प्रगटि यह कलि कौ तिमर नसायौ रे ॥ ३ ॥ प्रनितनि पाल भक्ति रस वैभौ वाटन हिय अकुलायौ रे । व्याज जनक कुल ओप दैंन ब्रज सुख अम्बुद वरसायौ रे ॥ ४ ॥ विप्र सभा हरषित दंपति पूजन परसाद मनायौ रे । पटह निसान मृदंग प्रणव सहनाइनु रंग बढ़ायौ रे ॥ ५ ॥ धनि धनि माधौ मास धन्य हरि वासर आस पुजायौ रे । धन्य भये दृग लाल वदन द्विज रानी वोलि दिखायौ रे ॥ ६ ॥ धन्य सोहिलौ शुभ दिन दरस्यौ परम पुरुष घर आयौ रे । धन्य धन्य भुव देव मुकट मणि सादर दर्वि लुटायौ रे ॥ ७ ॥ अहा कहाँ करुना प्रनि-तनि कौ हिय जिय सुविधि सिरायौ रे । श्री राधा पद्धति थापन यह अद्भुत भेष बनायौ रे ॥ ८ ॥ धन्य धन्य रसिकनि की रसना जिन हित नाम लड़ायौ रे । स्वामिनि सुदत्त व्यास नन्दन मुख धन्य सुधन जित पायौ रे ॥ ९ ॥ आविर्भाव विश्व हित करता सुमतिनु प्रेम छकायौ रे । वृंदावन हित रूप सोधि श्रुति सार अमी अचवायौ रे ॥ १० ॥ १८४ ॥

राग विहागरौ ॥ सोहिलौ व्यास सदन भयौ एरी । श्री हरिवंश जनम लियौ घर घर वरषि परी सुख ढेरी ॥ १ ॥ आनक धुरे अनेक बाद अरु वाजे मंगल भेरी । व्है है रस विस्तार आगमन सब जग दुरित टरे री ॥२॥ वनिता चली बधाये गावति ढाढ़िनि लैं लैं फेरी । उठि उठि भजी काज तजि सब मनु प्रेम पवन की प्रेरी ॥ ३ ॥ तारा जू के भाग प्रशंसित जुरि मिलि वड़ी वड़े री । द्विज कुल दीनी ओप मिटि गई नीरस तिमर अंधेरी ॥४॥ गली गली मैं जैं धुनि सजनी दुंदुभी देव बजे री आजु व्यास

छवि सदन विलोकन हौं हूँ गई दरेरी। प्रभु पुजई अभिलाष समझि यह मोहि प्रेम नैं घेरी ॥६॥ परम उदार जनक अरु जननी संपति दई घनेरी। जाचक जस गावत है पौरी आरज नामनि टेरी ॥ ७ ॥ सब कोऊ देत असीस गोद भरि और विधाता हेरी। एक विदा व्है जाति पहिरि इक पहिरन आवति नेरी ॥८॥ एक रीझि कैं लेति वारनैं कंचन मूँठि वखेरी। वृंदावन हित रूप व्यास सुत रस चिन्तामणि मेरी ॥ ९ ॥ १८५ ॥

राग विहागरो ॥ मुरलिका इहिं जुग वहुत करी। तव कुल कृत गोपीनु तजे अब सवनि कांनि निदरी ॥ १ ॥ तव रस पान दियौ तरुनिनु अब सब उर सुभर भरी। तव हरि पुनि वंशी मोहीं अब एकैं देह धरी ॥ २ ॥ तव व्रत कर्म धर्म सब टारे वर वस हियहि अरी। अब विनु श्रम भये सहज विदा जब प्रेम सुढ़ार ढरी ॥ ३ ॥ तव हरि वदन विधु चढ़ी गाजी त्रिभुवन रौर परी अब रस रीति गुपत रस स्वादिनु दै वन में विचरी ॥ ४ ॥ तव मोहन सौं मिलि श्यामा गुन गाये रंग ररी। अब अति धीर आपु राधा रस रूप अगाध झरी ॥ ५ ॥ जे जे तिहिं समयेंन अनुसरी हरि इच्छा विसरी। वृंदावन हित द्विज कुल वपु धरि अब सब शूल हरी ॥ ६ ॥ १८६ ॥

राग विहागरौ—श्री हरिवंश जनम शुभ गाऊँ। श्री हित रूप कृपा वल पाऊँ ॥ आरज श्री गुरु मुख सुनि पाई। ता विधि वरनौं विशद वधाई ॥ १ ॥ देवनि नगर देवनि जु थानैं। व्यास मिश्र तहाँ अति गुन वानैं ॥ जोतिष वेद पुरान वखानैं। वैभव विपुल विदित जग जानैं ॥ २ ॥ धर्म शील रिषिराज कहावैं।

भजन कुशल मति जग वैरागी ॥ २ ॥ सब हरि धाम महा मन परसे। प्रेम प्रसाद पाइ हरि दरसे ॥ पुनि पुनि भुव परदच्छिना दीनी। हरि रस रूप रहति मति भीनी ॥ ४ ॥ इक दिन व्यास मिश्र गृह आये। लखि रिषिराज परम सुख पाये ॥ धूप दीप बहु पूजन कीयौ। भुज भरि मिलत प्रेम भर्यौ हीयौ ॥ ५ ॥ पद बंदन करि पुनि बैठाये। बिबिधि भाँति भोजन करवाये ॥ सजल नैंन भई तारा रानी। तब मुनि बोले मधुरी बानी ॥ ६ ॥ कारन कौंन कहो समझाई। प्रभु जन दुख क्यौं योग्य न भाई ॥ व्यास मिश्र तब कहत बिचारी। सब बिधि पूरन कृपा तुम्हारी ॥ ७ ॥ धर्म धाम धन सहित सुखारी। इक संतति बिनु रहत दुखारी ॥ तुम प्रभु मन की जानन हारे। इहिं बिधि बधू नैन जल ढारे ॥ ८ ॥ तब बोले मुनि हरि पद ध्यानी। तीनौं काल दरस बिज्ञानी ॥ अब हौं हरि पद कृपा मनाऊँ। आइसु होहि सु कहि समझाऊँ ॥ ६ ॥ एकत मन करि इष्ट अराधे। दरसे वे प्रभु सबहि दुराधे ॥ मुकुट पीत पट मुरली कर धर। नख सिख सुन्दर स्याम मनोहर ॥ १० ॥ कृपा दृष्टि करि शीतल कीयौ। गद गद कंठ प्रेम भर्यौ हीयौ ॥ अंजुलि जोरि विनय बहु कीनी। तब प्रभु बांछित आज्ञा दीनी ॥ ११ ॥ वंशी जुत मम नाम प्रचारा। रसिकनि हित द्विज कुल अवतारा ॥ धरि हौं सुनि मुनि सुचि रुचि बानी। मैंने तेरे मन की सब जानी ॥१२॥ वृन्दावन मम केलि खानी। जानत निगमन सकत बखानी ॥ कर्म कुशल मति ताहि न जानैं। ग्यान दग्ध मति मनहि न आनैं ॥ १३ ॥ कोऊ इक मिश्रित भक्ति कराहीं। वह रस तिनहूँ

भक्ति मुहि प्यारी ॥ १४ ॥ ता हित मो मन मुनि यह भाई । धरि हौं द्विज कुल वपु यदुराई ॥ भक्ति रहित जग जानौं जवहीं । वपु आचारज धारौं तवहीं ॥ १५ ॥ सत्य करौं तुव मन अभिलाषा । परम धर्म विस्तरिहौं साखा ॥ कहौ अनुज सौं यह मत जाई । ज्यौं कोऊ और सुनें न मुनि राई ॥ १६ ॥ श्री राधा जुत मम पूजन कीजौ । यह सिख द्विज रानी कौ दीजौ ॥ यौं कहि प्रभु निजु धाम सिधारें । व्यास भवन तव मुनि पग धारे ॥ १७ ॥ जाइ कही प्रभु मुख की गाथा । सुनि सुनि द्विज वर भये सनाथा ॥ अज्ञा माँगि चले वन माँहीं । विचरत मुनि हरि पद की छाँहीं ॥ १८ ॥ धर्म शील गुन निधि द्विज रानी। उर धरि दिन दिन छवि अधिकानी ॥ देखत हरषीं सब पुर नारी। देति असीसैं गोद पसारी ॥ १६ ॥ कछु दिन वीतें मुनि पुनि आये । बन्धु भवन छवि लषि मुसिकाये ॥ रंग महल सुख सैंन विराजै । तहाँ वैठी द्विजरानी राजै ॥ २० ॥ आरज देखि उठीं सकुचाई । तव रिषि अज्ञा दै बैठाई ॥ हरि के वचन सुधि करे जवहीं । प्रेम विवस भये तन मन तवहीं ॥ २१ ॥ पुनि प्रनाम परदच्छिनां करि कैं । हरि गुन गावत चले सुख भरि कैं ॥ गर्भ मास वहु दान करायौ । विप्र इन्द्र दियौ सब मन भायौ ॥२२॥ रितु वसंत शुभ आगम आयौ । तव प्रभु वानिक रुचिर वनायौ ॥ व्रज धरु दरस हेत जब चाह्यौ । विप्र राज मन विपुल उमाह्यौ ॥२३॥ रथ पुनि वहिल सकट गज वाजैं। अनुग सहित पुर सकल समाजैं। चले भुव देव कुटम्ब लै संगा। व्रज दरसन अभिलाष अभंगा ॥२४॥ मथुरा मंडल दृग भरि देख्यौ। तब कछु अचिरज सौं उर

विधि दरसायौ ॥ २५ ॥ राधा हरि जहाँ जनम सुथानें । इत यह वाद विदित जग जानैं ॥ तरवर सरवर अमित निकाई । तहाँ सुख वास कियौ रिपि राई ॥२६॥ सुकल पच्छि शुभ माधव मासा । हरि वासर भयौ भवन प्रकाशा ॥ निर्मल दिशा भई अति कमनी । मंगल अमित उदित भये अवनी ॥२७॥ निर्त्तति व्योम सकल सुर नारी । सबके मन में हरषि महा री ॥ देव विमाननि चढ़े कलोलैं । बाजति दुंदुभी जै जै बोलैं ॥ २८ ॥ इत इहि अवनि ललित छवि छाई । जब यह जनम शुभ घरी आई ॥ रूप गुन भरी कोविद दाई । तिहि छिन बहुत मान दै बुलाई ॥२६॥ लगन नक्षत्र संयोग अनूपै । प्रगट भये तब जग हित रूपै ॥ मंगल गाइ उठीं द्विज वनिता । पुत्र जनम लखि हरषी जनिता ॥ ३० ॥ जित तित द्रुम फल फूल भरे हैं। उखटे पुनि सुनि होत हरे हैं ॥ दिव्य मही तल अमित निकाई। जनमत व्यास सुवन यह माई ॥३१॥ गृह गृह मंगल गावति रमनी । गृह गृह रचना राजति कमनी ॥ गृह गृह धुजा पताका धरई । गृह गृह चौकनि चित्रित करई ॥ ३२ ॥ गृह गृह रुचिर वितान तनैं है । गृह गृह वंदन वार बनैं है ॥ गृह गृह कदली दीप धरैं हैं । गृह गृह मंगल कलश भरैं हैं ॥ ३३ ॥ धरति साथिये गृह गृह पौरी । चाइनु फिरति सवासिनि दौरी ॥ कुशुम नूत दल माल रचीं हैं। गृह गृह द्वारनि विविध सची हैं ॥३४॥ गृह गृह तें वनिता जब गवनी । बरषति छवि राधा धर अवनी॥ गान रचनि सुख सचनि हियें अति । कहा कहौं शोभा थिथ-कित मो मति ॥ ३५ ॥ मधुरितु कोकिल कंठ विशेषी निकसीं

भई छवि भरी वही रंग गली है ३६ धाइ चलनि मुख श्रम कन दिपहीं। मनु शशि अंकनि उड़गन छिपहीं ॥ छुटि लट श्रवन तरौना विलोलैं। तजि अरि भाव राहु रवि डोलैं ॥ ३७ ॥ विलुलित मांग जलज मणि ऐसें। अहि शिर नचत नक्षत्र गन जैसें॥ कर वर भेट अधिक ही बाढ़ी। भई जब जूथनि जूथनि ठाढ़ी ॥ ३८ ॥ चहुँ दिशि आवनि भांति भली है। वीथिनु बाढ़ी रंग रली है ॥ कोऊ चलि गई है अगमनी आछैं। इक दुलरावति रहि रहि पाछैं ॥३९॥ सब मिलि जब वर भवन धसी है। प्रतिबिंबित तन अजिर लसीं है ॥ वानिक श्री द्विज राज भवन की। लखि वनिता सुधि भूली तन की ॥ ४० ॥ पुनि शिशु वदन मयंक विलोकैं। पलक धरनि गति जब तब रोकें ॥ इक द्विज रानी चरननि लागी। इक कहैं धन्य कूखि बड़ भागी ॥ ४१ ॥ इक कहैं लैंहें अपु मन भायौ। इक कहैं देहु सुकृत फल पायौ॥ इक कहैं पूरव कहा धों करनी। जो यह लाभ लह्यौ द्विज घरनी ॥ ४२ ॥ इक कहैं चितै चितै मुख ओरी। तुव सुत जिओ(रानी)जुग जुग कोरी॥ बातें प्रेम रस भरी सुनि सुनि। जननी जनक मोद भरे पुनि पुनि ॥ ४३ ॥ इक दिस जोतिष विप्र विचारैं। इक दिश वंदी विरद उचारैं ॥ इक दिश सूत पुराननि वाँचैं। इक दिश मंगलमुखी बनि नांचैं॥४४॥ चारन भाट कवित्त जस गावैं। टेरत लै लै द्विज कुल नावैं ॥ रंचक प्रेम जासु उर आवै। सो सबकौं रस गहर भिजावै ॥४५॥ यह हित मूरति प्रेम धरी है। ताकी लोकनि रंग ररी है ॥ उत सब व्योम विमान थके है इत सब कौतिक प्रेम छके है।

नामैं ॥ यह सुनि दान देत द्विज राजैं । भूषन वसन धेंनु गज बाजैं ॥ ४७ ॥ वंश सवासिनि सब पहिराई । दै बहु मेवा गोद भराई ॥ विप्र वधू अति हीं सनमानीं । जननी जनक महा मन दांनी ॥ ४८ ॥ गोपराज तब अब द्विज ईसैं । हरषि दिवावत सुतहि असीसैं ॥ तब सब देवनि कौ हित कीयौ । अब जग प्रेम भक्ति वरु दीयौ ॥ ४६ ॥ तारा सम को जग बनितनि में ॥ जिन उर आंनि जगत गुर जनमैं ॥ हरि जुत वंशी यह वपु धारयौ । कांनन गूढ़ रहसि विस्तारयौ ॥५०॥ दुलरावन गुन रूप अगाधा । पद्धति प्रचुर करन श्री राधा ॥ या रस दाइक लाइक कौ तौ । जौ वंशी अवतारु न हो तौ ॥ ५१ ॥ वन्दौ श्री हित रूप सदाई । आइसु पाइ वधाई गाई ॥ वंदौ रसिक जु सुनि सचु मानौ । तुम मुख सुनि गुनि कछुक वखानौं ॥ ५२ ॥ वंदौं कृपा निकेत महाई । विप्र सभा भूषन द्विज राई ॥ यह सुत जनम वधाई पाऊँ । वृन्दावन हित नित जश गाऊँ ॥ ५३ ॥१८७॥

राग मारू—विप्र घर महा महोत्सव आज । घर घर प्रति अति आनंद वाढ्यौ प्रगटे श्री गुर राज ॥ १ ॥ विप्रनि मिलि आगम सब शोध्यौ लच्छन सकल वखानैं । यह बालक कुल भूषन तुम्हरौ सुनत हीं हिये सिरानै ॥ २ ॥ कौंन भाग्य गनियें जु तुम्हारौ हम पै कहत न आवै । बानक वन्यौ विलच्छन सब ही इहिं विधि आगम गावै ॥ ३ ॥ सत्य कहौं सबही सुनि लीजौ वचन न उत्त तैं टारौ । कृष्ण समान भाँवतौ सबकौ प्रगट्यौ पुत्र तुम्हारौ ॥ ४ ॥ अब में यह निश्चै जिय जान्यौ बारंबार विचारयौ । दुस्तर यह कलिकाल देखि कैं कृपा हेत वपु

न मानौ । प्रभु के वचन सत्य करि लेखौ संशै उर के भानौ ॥ ६ ॥ श्रीमुख यौं अर्जुन सौं भाख्यौ गीता साखि प्रमानीं । भक्ति रहित जानौं जब जग कौं तब तब प्रगटौं आनी ॥ ७ ॥ कर्मठ कुटिल सशल्य बढ़े जग वादि भये व्रत मानी ! कारन यहै भक्ति विस्तारन यह विधि तुम ग्रह वानी ॥ ८ ॥ जो कछु रीति पुराननि भाषी सो लच्छन दरसाये । करि हैं सफल मनोरथ तुम्हरे प्रभु कीये मन भाये ॥ ९ ॥ अवनि महा मंगल लखियतु है जहाँ तहाँ छवि छाई । निर्मल भईं दिशा सब शोभित व्यासादिक ज्यौं गाई ॥ १० ॥ इनके नाम रूप गुन जेते सब जग पावन कारी । यह सुनि मिश्र मुदित भये मन में प्रभु तन गोद पसारी ॥ ११ ॥ गावन लगीं नारि मिलि मंगल नाम करन करवायौ । श्री हरिवंश नाम निधि सुख कीयौं रिषि कहि समझायौ ॥ १२ ॥ विप्रनि दान दियौ मन भायौ पुनि पुनि शीश नवायौ । देखि नाम आनंद कौ वैभव रोम रोम सचु पायौ ॥१३॥ सुर पुर वाजन लगीं दुंदुभी भवन भीर भई भारी । लागी हौंन वृष्टि पहुपनि की मुदित होत नर नारी ॥ १४ ॥ गुरजन सुजन वंधु पहिराये सवही भांति ममोखे । पट आभूषन दिये सबनि कौं जाचक धनु दै पोषै ॥ १५ ॥ जै श्री रूप लाल पद कमल कृपा वल सुजश वधाई गाई । वृन्दावन हित वसौ हियें नित यह मंगल सुखदाई ॥ १६ ॥ १८८ ॥

विभास–जुगल रहिस रस कोष खुल्यौ है विलसैंगे अव रसिक महा मन । श्री हरिवंश जनम दिन मंगल यातें गह्यौ है अनन्यनि दृढ़ पन ॥ १ ॥ व्यास सुवन दत्त कौं कहा वरनौं मुक्ति अचाक्क

वढ़ी दसधा घन ॥ २ ॥ जननी जनक सुजस की सरिता दरशत नसे है अमंगल के गन । हौं वलि वलि हित रूप उदौ लखि सुख संपति लहि हित वृन्दावन ॥ ३ ॥ १८६ ॥

राग गिमास ताल आड़–मलिनियाँ भागिनु पूरी लाल जनम सुनि मंगल गावति आई । नूत नवीन दलनि की रचि रचि वंदन माला रहसीं फूली लाई ॥१॥ सदन वदन सब किये है अलंकृत कहा कहौं अतिसै ओप वढ़ाई । बीच बीच कुसमनि के झूमिक अहा कहा छवि जग मग होत महाई ॥ २ ॥ वांछित देति कुंवर की मैया मालिनि की परखी चतुराई । वृन्दावन हित रूप रही छकि बार बार यह कहति वधाई वधाई ॥ ३ ॥ १९० ॥

सवासिनि वरनन ॥ राग गौरी दोहा बंध–हम लैहैं मन को भायौ । झगरति सकल सवासिनी रानी तुम सुन्दर सुत जायौ ॥ टेक ॥ वंश उदौ भयौ वीर कैं फली हमारी आस । विप्रनि वरती शुभ घरी शुभ वासर माधौ मास ॥ १ ॥ भाभी मन क्रम वचन लै गोदी ओटि अशीष । लाल जगत गुर हो होहिगौ सुनि वचन विसेये वीस ॥ २ ॥ तो अभिलाषा मेर सम प्रभु पुजई इहिंकाल । कुल वर्द्धन मन भाँवतौ अति लौनौं दरस्यो लाल ॥ ३ ॥ व्यास सुकृत कोऊ पाछिलौ राधा इष्ट प्रताप । मन्दिर जगमग ह्वै रह्यौ सब उर की मेटी ताप ॥ ४ ॥ हम रचि धरे जु साथिये कुल की कुशल मनाइ । फूली मंगल गावहीं रानी तेरी कूखि मल्हाइ॥५॥ चौक चाँदनौं ह्वै रह्यौ ओपे रंग वितान । दीप वराये चौमुखे गो घृत लै पूरयौ पान ॥ ६ ॥ कदली रुपे सुहावनें नव दल वंदन वार । वंदी विरदनि उच्चरैं ढाढ़ी पढ़तु वंश विस्तार ॥७॥ बनिता रचति वधाव नैं बैठी अजिर मझार । विधि अनुकूल जु

देखिये गह्‌ मह तेरे दरबार ॥८॥ तारा जू वाञ्छित दियौ सबकौ राख्यौ मान । व्यास परम आनंद ह्वै आजु देत जाचकनि दान ॥ ६ ॥ मंगल रसिक नरेश कौ रसिक जननि अनुकूल । रस पद्धति रासेश्वरी आनन्द कौं आनन्द मूल ॥ १० ॥ जो हित दंपति हिय बसतु सो हित भयौ सदेह । वृन्दावन हित रूप रस हिय अंकुर भयौ सनेह ॥ ११ ॥ १६१ ॥

राग आसावरी---ए सोहिलौ सदन द्विज राज शुभ दिन आजु भयौ । रस मय रवि होत उदोत नीरस तिमर गयौ ॥ तारा उर निर्मल व्यौम शोभित भयौ महा । वारिज कुल विप्र समाज फूलनि कहौं कहा ॥ १ ॥ अति कमनीं रविजा तीर गोकुल निकट जहाँ । द्वापर व्रजरानी कूखि प्रगटे कृष्ण तहाँ ॥ रावल वृषभान निकेत जनमी कनक तनी ॥ मंगल कौ मंगल रूप लोकनि मुकुट मनी ॥ २ ॥ कीरति कीरति उद्दोत लौनी सुता जनी । रस मय श्री राधा नाम आगम निगम भनी ॥ इत बाद भई सुख मूल सबकी शूल गई । रस बेली ललित अनूप अब अति हरित भई ॥ ३ ॥ व्रज मंगल उदित अनेक यातैं जानि परी । उद्धरन मही कलि जीव हित मूरति जु धरी ॥ सबकै मन विपुल उमाह मंगल साजि चली । गावति मिलि मंगल गीत बनिता वृन्द भली ॥ ४ ॥ पुर वरषत हैं आनंद शोभित दिस अवनी । अति सरसत सब मन प्रेम कमनी गति गवनी ॥ दुलरावति तारा कूखि जिन कुल सफल कियौ । लखि व्यास सुकृत की राशि शीतल भयौ हीयौ ॥ ५ ॥ सब गहकि बधाई देति भाग प्रशंस करैं । सुत कौ लखि कौतिक रूप दृग

लसैं वसन आभरन अंग वेली छवि फूली ॥ ६ ॥ तिन में जे वंश सवासि रचि साथिये धरैं । मांगै हँसि अपनी लीक अति कौतिक जु करैं ॥ घट वृन्द चौमुखे दीपक कदली मूल लसैं । अति शोभित वन्दन माल मनु मुख भवन हँसैं ॥ ७ ॥ तन चरचत चन्दन गारि मोतिनु चौक रचे । ओपे नव रंग वितान धुजा पताक सचे ॥ बैठे द्विज सभा बनाइ ज्योतिष देखि भनैं । ग्रह लगन विचारि विचारि प्रबल प्रताप गनैं ॥ ८ ॥ सुनि हुलसे दच्छिनां देत बंदन चरन लगे । तिनकी रुचि लेत असीस मानत भाग्य जगे ॥ गुन गुनी दिखावत आजु विद्या अप अपनी । मन क्रम वच इष्ट अराधि प्रीति अचल थपनी ॥ ९ ॥ बन्दी जन ठाड़े पौरि वंश बखान करैं । मागद चारन अरु सूत नामनि लै उच्चरैं ॥ द्विज कुल भयौ चन्द उदोत हिय के ताप हरे । सहनाईं प्रणव मृदंग घाव निसांन परैं ॥ १० ॥ तारा सम को बड़ भाग जिन घर रंग रली । पहिराईं बनिता वृन्द देति असीस भली ॥ मंगल भयौ व्यास निकेत कुल मणि जनम दिना । उपमा नहिं जग में और ब्रजपति सदन बिना ॥ ११ ॥ राधा हरि कुंज विनोद अवनि प्रचुर करता । रसिकनि पुजवन अभिलाष प्रभु कलि दुख हरता ॥ कियौ युग युग विरद पुनीत जैसो काज परचौ । अब भक्ति विस्तरनि हेत वपु आचारज धरयौ ॥ १२ ॥ रसिकनि कौ सुकृत पुंज व्यास सदन दरस्यौ । निज गौर श्याम रस केलि अम्बुद धुरि बरस्यौ ॥ नित लाड़त नव नव रीति भक्ति प्रतीति बढ़ी । वृन्दावन बलि हित रूप द्विज कुल ओप चढ़ी ।१९२।

राग विहागरौ–ताल मूल—चाव छवीली वनिता लावहीं पुत्र

प्रकाश ॥ १ ॥ आनक वाजत गह गहे मीठी धुनि सहनाई । वजत मृदंग सुहावनैं अरु बाजे समुदाई ॥ २ ॥ व्रज अवनीं अति सोहनी वाद परम अभिराम । वधू सभागिनि रचति है वहु विधि मंगल धाम ॥ ३ ॥ गावति सुन्दरि सोहिले भरी परम अनुराग । धरति सवासिनि साथियें मांगति अपनी लाग ॥४॥ पहिरावति सनमांन दै जननी अति मन मोद । ते जु असीस सुनावहीं विधि तन करि करि गोद ॥ ५ ॥ ललित वदन के वारनैं लखि अति आनंदित होत । जस वर्द्धन भयौ भाँवतौ विप्र वंश उद्दोत ॥ ६ ॥ इक आवैं इक जाँहि घर इक वधाई दैहिं । एक बैठि दुलरावहीं भूर भाग्य फल लैहिं ॥ ७ ॥ अवनि जगत गुर औतरत मंगल रच्यौ है अनूप ॥ वांछित पायौ रसिक जन वृन्दावन हित रूप ॥ ८ ॥ १६३ ॥

राग गौरी—दोहा—टेक बंध—ढ़ाढ़ी—नाचै ढाढ़िया लै फेरी रे भय्या ॥ टेक ॥ देखि आजु मन भांवतौ हो मंगल अति अभिराम । जुगल हेत मूरति धरी जग मग ठहे रह्यौ धाम ॥ रे भय्या, नाँचै ढाढ़िया लै फेरी रे भय्या ॥ १ ॥ श्री हरिवंश जनम लियौ हो व्यास मिश्र के गृह । वाद विदित मंगल रच्यौ सब उर उमिल्यौ नेह ॥ रे भय्या० ॥ २ ॥ नख शिख सुभग सिंगारि कैं हो ढाढ़ी घरनि सँजूत । गति संगीत दिखावही जा उर गुन जु अकूत ॥ रे भय्या० ॥ ३ ॥ तारा कूखि मल्हावही हो जो जग में भई धन्य । हरित भक्ति वेली करी जायौ रसिक अनन्य ॥रे भय्या०॥ ॥ ४ ॥ यह इच्छा रासेश्वरी हो पद्धति करन प्रचार । व्यास वंश कौं जस दियौ मैं जानी निरधार रे भय्या० ५ श्री राधा

तन करि करि गोद ॥ रे भय्या० ॥ ६ ॥ रजत रुकम वरषैं सवै हो कोविद विप्र समाज। कौन सुकृत तारा कियौ ताकौ फल हग दरस्यौ आज ॥ रे भय्या० ॥ ७ ॥ कहूँ नाँचत मंगल मुखी हो कहूँ कूद्यौ रचैं भांड। कहूँ वंदी जस उच्चरैं कहूँ गुनिनु करी गुन मांड ॥ रे भय्या० ॥ ८ ॥ आविर्भाव जु व्यास सुत हो रसिक सुकृत कौ पुंज। वृन्दावन हित रूप रस दाइक जुगल निकुंज ॥ रे भय्या० ॥ ६ ॥ १६४ ॥

राग मारू ॥ ढाढ़ी ॥ वंशावली——श्री हित रूप प्रनम्य गुरु ऋषि कुल करौं प्रशंस। रसिक मुकट मणि अवतरे जिहिं कुल श्री हरि-वंश ॥१॥ जनम समैं श्री व्यास कौं ढाढ़ी नायौ शीश। कह्यौ वरनि मम आदि कौं दैहौं बहु वकसीस ॥ २ ॥ सुत कौ जनम वधावनौं आरज विरद वखानि। मुदित होहि सुनि विप्र सव निर्मल कुल यश गानि ॥ ३ ॥ ढाढ़िन ढाढ़ी सों कह्यौ माथौ बहुरि नवाइ। हम वांछित विवनाँ कियौ रिषि नामनि कौं गाइ ॥४॥ उदौ वड़े घर प्रभु कियौ पूरन भई जु आस। कहा दीपक सों देखिवौ जव रवि भयौ प्रकाश ॥ ५ ॥ ढाढ़ी व्यास कौ वंश कहि आदि लै कैं। तपोधन धर्म मुनि सार निगमनि कथ्यौ वरनि तिन चरित सुनैं श्रवन दै कैं ॥ १ ॥ अनुज अग्रज सहित व्यास वैठे तहाँ विप्र कुल सभा ग्रंथ निजु ज्ञाता। पाइ बहु मान ढाढ़ी सुज्ञ उच्चरै सुनौं जजमान वाञ्छित जु दाता ॥२॥ धाम रस मय उभै रूप धामी जहाँ अखिल ब्रह्माण्ड ईश निजु ईशे। इक इक अंड के नाथ अगनित किये लियें अज्ञा चलैं सवहिं सीशै ॥ ३ ॥ आदि उतपति कहौं कृपा मुनि पाइ कैं निगम

तासु अज्ञा सवनि शीश राखी ४ अंशी के वहु अंश हैं सृष्टि रचन कें हेत । आपु मधुर रस भोगता कांनन कियौ है निकेत ॥ १ ॥ अज्ञा दीनी सृष्टि की अंश प्रशंस अनन्त । इक रस वृन्दाविपिन में संतत राधा कंत ॥२॥ कहौं आदि मंगल सुनौं श्रवन दै कै आपनें इष्ट गुरु चरन नैकें । शेष शय्या करी सैंन जल मांहि प्रभु नाभि भयौ कमल इच्छया जु लैकैं ॥ १ ॥ तहाँ विधि भयौ जिन सृष्टि ना ना रची कियौ तप ध्यान हरि वर जु दीयौ। शम्भु सनकादि नारद महा मुनि भये भक्ति वैराग्य ज्ञान उग्र कीयौ ॥२॥ प्रजा पति दस भये वेद मूरति मनौं रिषि मरीच जु महा तेज धारी । तासु कुल भये कश्यप उजागर मही जिनहि प्रभु दई प्रभुता जु भारी ॥३॥ वहुत घरनीं भई जगत मंगल करन विदित तिहूँ लोक संतानि जाकी । हियौ निर्मल भयौ प्रभु अराधे सुविधि वरनि क्यौं सकौं करनी जु ताकी॥४॥ कश्यप कुल एतौ वढ्यौ वरनैं समरथ कौन । चारि भांति की सृष्टि सों भरि गये तीन्यों भौंन ॥ १ ॥ वेद सार संग्रह कियौ वसे कृपा हरि देस। कश्यप कुल भये महा मुनि नाम सुनौं अच- लेस ॥ २ ॥ अच्युतेश तिनकें भये रुचे प्रभु चरित अनन्त । हरि सेये नीकी जु विधि शीलवन्त गुनवन्त ॥ ३ ॥ तिनकें सुत श्रीधर भये श्रीधर ही जु समान। तिनकें हलधर वंशधर कहा गुन करौं वखान ॥ ४ ॥ पाणीधर तिनके सुवन प्रभु की आज्ञा पाइ। ग्रन्थन की रचना करी गूढ़ अर्थ वहु भाइ ॥ ५ ॥ गंगाधर तिन कुल भये ज्ञाता वेद पुरान । वहुत काल राख्यौ जु वपु प्रभु पूजे रुचि मान ॥ ६ ॥ सुनौं वरनि हौं वंश निर्मल जु करनी । कहैं अजहुँ इहाँ लगि नाम गंगा जु धर हरि चरन प्रीति परतीति

वरनीं ॥ १ ॥ विजै मुनि भट्ट भये विदित तिनके सुवन विपुल गुन शील कहा करौं बड़ाई। आदरयौ धर्म जो कह्यौ भागौत मत साधुता कुलहि उपमां बढ़ाई ॥ २ ॥ कुलाजित तिन सुवन कुलहि उपमां दई अहा कहा कृष्ण पद रति जु मानी। वंश उत्पन्न तिनकें जु विद्याधरन रहनि अरु कहनि परति न बखानीं ॥३॥ मिश्र जालप भये तनय तिन सूर मति राधिका वल्लभ भो रहसि सेवी। काटि संदेह इक उच्च पदवी गही कुंज कमनीय पद गौर सेवी ॥४॥ मिश्र प्रभा कर तिन सुवन प्रभु पूजे कर प्रीति। सुत जु उधाकर तिन सदन जुगल भजे रस रीति ॥ १ ॥ तिन नंदन जीवद भये परम धर्म दृढ़ टेक। हिम कर तिनके आतमज भक्ति उजागर एक ॥ २ ॥ हिमकर कुल सुत नौ भये जैसैं नौह्न नंद। विद्या धनिक उदार सब परम साधु जग वंद ॥ ३ ॥ सिद्ध नृसिंहाश्रम सुनौं हरि परचे जिन प्रेम। बड़ भ्राता श्री व्यास के प्रभु पद पूजन नेम ॥ ४ ॥ दूजे गंगादास पुनि तीजे है रघुनाथ। चौथे श्री दिवदास जु हरि भजि भये सनाथ ॥ ५ ॥ श्री गोपाल जु पाँचयें छठें सुनौं उदैराम। पदमाकर मुनि सतायें सेवत श्यामा श्याम ॥ ६ ॥ गुन आगर कल्यान जू जानि आँठयें एह। व्यास सहित नौ बंधु ये परम धर्म सौं नेह ॥ ७ ॥ व्यास सुनौं अब कान दै जो प्रगटे तुम वंश। जुगल रहसि करि है विदित नाम श्री हित हरिवंश ॥ ८ ॥ धन्य धन्य हिमकर सुवन सुजस गाऊँ, व्यास द्विज मुकुट मणि शीश नाऊँ ॥ कौन करनी अहा महा पूरब करी सुकृत बूढ्यौ सिन्धु नहिं थाह पाऊँ ॥ १ ॥ उदौ तुम वंश दिषि दाहिनौं प्रभु भयौ मुरलिका सहित हरि वपु जु धारयौ

रयौ ॥ २ ॥ महा मंगल भयौ पुत्र के जनम दिन इष्ट सेवन अलभि लाभ पायौ । जानि यह कृपा विपनेश्वरी कुंवरि की भाँति भाँतिनु हियौ अब सिरायौ ॥ ३ ॥ गौर कमनीत तन सुभग लच्छन सबै अवनि आगम निरषि साधु हरषैं । महा कोऊ पुरुष तुम ओप कुल दैन कौं प्रगट भये देव गन कुसम बरषैं ॥४॥ प्रभु जु आराधि कैं और आगम भनौं भक्ति प्रेमा प्रचुर लोक करि है । राधिका लाल रस विपुल उर संचि हैं ग्रन्थ वादीनु संदेह हरि हैं ॥ ५ ॥ विप्र कुल तिलक पुनि रसिक मंडन सभा अनन्य व्रत एक साँचौ जु धरि है । अमल कीरति महा वंश विस्तारि है विपिन रस रहसि उर प्रनित भरि है ॥ ६ ॥ धन्य भई कूखि जननी सुफल पाइ कैं गाइ कहा भाग्य महिमा सुनाऊँ । विदित वद्धति सुदृढ़ थापि श्री राधिका भजन एकांत रति होइ बताऊँ ॥ ७ ॥ अमानी मान वद्धन अमित महत गुन जगत गुरु कुशल पर हित महाई । रसिक जन कृपा वाँछित रहैं चरन इन विश्व परताप हरि सम बड़ाई ॥८॥ नाद अरु विंद विस्तार वहु होहिगो सुनौं द्विज राज आगम जु गायौ । वंश बरन्यौ सुविधि अब, अजाची करौ धरि वड़ी आस मन द्वार आयौ ॥ ९ ॥ निकट लियौ बोलि श्री व्यास ढिंग आपनैं अधिक सनमान वाँछित जु दीयौ । वृन्दावन हित रूप लाल मुख देख कैं पौरि सेवतु सुजस गाइ जीयौ ॥ १० ॥ १९५ ॥

राग मारू—ढाढ़ी—कहतु जस ढाढ़ी सुनहु समाज । व्यास सदन कमनीय वपु धारयौ पर हित गुरराज ॥ १ ॥ रह्यौ नित उदौ मनावतु मन क्रम सेऊ बचन सदाज । जानि परयौ परताप

यह हित विश्व उधारन साज । जननीं जनक मोद मन वर्द्धन कहा कहौं प्रभु प्रभुता ज ॥ ३ ॥ जनम जनम की भूख मिटैगी भये गरीब निवाज । देंहिं अमानिनु मान राखि हैं सरनागत की लाज ॥ ४ ॥ हौं धायौ आतुर मदलरा की सुनत गह गही गाज । व्यास सुवन आगम महा मंगल भुव नभ दिस रह्यौ आज ॥ ५ ॥ श्री हरिवंश चरन रज जाचक नाँहि और सौं काज । वृन्दावन हित रूप वंदि नित विप्र वंश शिर ताज ॥६॥१६६॥

राग मारु—ढाढ़ी—ढाढ़ी आजु भयौ चित चीत्यौ । जुगल भजन रस दाइक जनमत व्यास जनम जग जीत्यौ ॥टेक ॥ स्यौं परिवार सिंगारयौ ढाढ़ी विप्र सभा में आयौ । ढादिनि कर झाँझिनु झन-कावति ढाढ़ी हुरकव जायौ॥निर्त्तत हैं चित चौपनि मुरि मुरि अपनों भाग मनायौ । श्री हरिवंश प्रगट भये अति मन मुदित सोहिलौ गायौ ॥ १ ॥ शीश जरकसी पाग रही लसि श्रवननि झलकत मोती । रतन पेंच कलंगी जराय नग जाकी जग मग जोती । मुक्ता माल धुक धुकी बाजू टोडर छवि अनहोती । कनक सूत उपरैंना काँधैं पीत वरन कटि धोती ॥ २ ॥ सजल नैंन अरु वदन डह डहौ श्रवत अमी सी वानी । अंग अंग उत्साह भरयौ मन फूलनि परै न वखानी ॥ व्यास वंश कौ उदौ देखि प्रभु पूरन कृपा सु जानी । अलभि लाभ पायौ जु सभागिनि सुत जायौ द्विज रानी ॥३॥ कृपा कलप तरु अवनि अवतरयौ महत मान में पायौ । उमग्यौ व्यास सुकृत कौ सागर रसना परतु न गायौ ॥ इष्ट राधिका वल्लभ धनि धनि यह दिन मोहि दिखायौ । वृन्दारण्य गोप्य रस ताकौ अंबुद ऊनै आयौ ॥ ४ ॥ कलि में भक्ति प्रवर्त्त करन राधा पति मन अकुलायौ । जानि परी इच्छा

जु रावरी रस मारग दरसायौ । श्री तारा जननी जस दीनौं जनक सु बिरद बुलायौ । आजु महा मंगल जु विप्र कुल सब मन मोद बढ़ायौ ॥ ५ ॥ धन्य कूखि उत्पन्न जगद्गुर पर हित हीं बपु धारयौ । लच्छन सबै बिलच्छन श्री बपु जोतिष भेद बिचा-रयौ ॥ बिकट रीति आचरन दिखायौ रसिकनि रस संचारयौ । कांनन केलि प्रकाशन प्रनितनि कृपा सु दृष्टि निहारयौ ।६। सुनि सुनि ढाढ़ी बचन श्रवन उर सीतल सबनि भये है । समझि भीतरौ भाव हरषि मन दान अनेक दये है ॥ दरसत बदन व्यास नन्दन कौ सब दुख बिसरि गये है । रजित रुकम भूषन पट बरषत प्रेम हिये भिजये है ॥७॥ भाँति भाँति मेरौ मन बाँछित यह कुल मंडन करि है । राधा चरन प्रधान छाप यह सकल मही बिस्तारि है । भाख्यौ सत्य तात तुम आगें ब्रत अनन्य दृढ़ धरि है ॥ बृन्दा-वन हित रूप रसिक जन मन अभिलाषा भरि है ॥ ८ ॥१६७॥

राग मारू—ढाढ़ी—भयौ व्यास वंश उद्योत ढाढ़ी रहण्यौ देतु बधाई । विप्र सभा सुनियौं मो बानी कहौं प्रभु आज्ञा पाई ॥१॥ निर्मल जस तुम कुल विस्तरि हैं सुनौं सुमति मुनि राई । लोक प्रवर्त भयौ यह मंगल अवनि महा छबि छाई ॥ २ ॥ सगुन परीछ्या में बहु लीनीं यह निश्चै मन आई । भक्ति रहित जग जानि राधिका पति यह जुक्ति बनाई ॥ ३ ॥ रसिकन दैन गोप्य रस वैभव शरणागत सुख दाई । दै है मांन अपूरब सबकौ अपु निहगर्व सदाई ॥ ४ ॥ रासेश्वरी थापि है पद्धति विपन ओपि प्रभुताई । बार बार भाषतु है ढाढ़ी प्रेम छक्यौ जु महाई ॥ ५ ॥ लटकि लटकि नाँचतु है पौरी जननी कूखि मल्हाई जनक भाग

बजावति गहकी ढाढ़ी हुरक बजाई । भागिनु भरी लेति गति ऐसी विप्रनि सभा रिझाई ॥ ७ ॥ नख सिख सजी अंग सब लौंनी हिये भरी चतुराई । इहिं घर होहु सदा अस मंगल मुदित असीस सुनाई ॥ ८ ॥ सब तें देत पायौ मन भायौ पुनि रनिवास बुलाई । अपनैं पट भूषन दै रानीं ताहि सुविधि पहिराई ॥ ९ ॥ बहुत दान ढाढ़ी नें पायौ मैं जु लीक भरि पाई । अब मो जनम सफल कीजै देहु सुत कौ वदन दिखाई ॥ १० ॥ मैं पद सदा अराधे राधा कृपा सुदृष्टि मनाई । तुम कुल विद्धि भई वड़ भागिनि पूरी करी कमाई ॥ ११ ॥ लै ढाढ़िनि अपनौ मन भायौ सुत मुख निरखि अघाई । चटकति करज वारनैं लै लै घर जेबौ न सुहाई ॥ १२ ॥ नित नौतन सोहिले सुनावति फूली अंग न माई । ढाढ़ी सेवतु पौरि व्यास की नित नव कीरति गाई ॥ १३ ॥ श्री हरिवंश नाम रति रसना पद चित बृत्ति लगाई । वृन्दावन हित रूप राधिका वल्लभ महल बसाई ।१९८।

राग मारू ढाढ़ी—प्रभु कीयौ चित चीत्यौ ढाढ़ी द्विज कुल करतु प्रशंस । व्यास आस की वेलि फली है प्रगटे श्री हरिवंश ॥ ढाढ़ी द्विज कुल करतु प्रशंस ॥ टेक ॥ १ ॥ हिम कर सुत आदर दै ताकौ अपनैं निकट बुलायौ । दीयौ प्रथम दुशाला अपनौं उनि पुनि शीश नवायौ ॥ २ ॥ प्रफुलित वदन सजैं पट भूषन ठाढ़ौ घरनि संजूत । कूखि मल्हावतु द्विज रानी जिन जायौ कुल मणि पूत ॥ ३ ॥ करी सुदृष्टि राधिका वल्लभ सुनौ सकल जजमान । गुरु सारदा मनाइ करौं हौं आगम सवहि बखान ॥ ४ ॥ परम धर्म ओपन धुज रोपन तुम कुल भयौ प्रकाश । महत मांन वर्द्धन द्विज गुर जन आरज पथ विसवास

अहा कहा उद्धव प्रभु की यौं मंगल अवनि महाई मेरे मन की सकल कामना विधना आजु पुजाई ॥ ६ ॥ हौं भयौ परम सनाथ व्यास जू तुम अस करनी कीनी । कुल मयंक देखत भयौ शीतल ओप विप्र कुल दीनी ॥ ७ ॥ वृन्दारण्य गोप्य रस लीला प्रचुर करैं जग माहीं । सब गुन निकर भक्ति रस आलय उपमाँ कोउ सम नाहीं ॥ ८ ॥ प्रनित पाल करुना को भाजन भूषन रसिक समाजैं । नाद विंद सन्तति विद्धैं कीरति निर्मल भुव राजैं ।६। श्री राधा पद्धति जु उजागर करन जनमु शुभ धारयौ । मेरौ वचन सत्य यह मानौं आगम सगुन विचारयौ ॥ १० ॥ शरणागत प्रति पालक सब विधि लच्छन महत विशेषे । अपनी बुद्धि न हौं भाषतु ग्रह लगन जोग सब देखे ॥ ११ ॥ ढाढ़ी वचन सुनत आनन्दित सबही करत बड़ाई । व्यास पाछिलौ सुकृत लह्यौ फल लखि प्रभु कृपा मनाई ॥ १२ ॥ दीनौं व्यास जरकसी चीरा अरु अपु गर कौ बागौ । कलंगी औरु दिये कर टोडर ढाढ़ी परम सभागौ ॥ १३ ॥ रीझि रीझि सबहिनु धन दीयौ पुजई मन अभिलाषा । सादर देतु असीस हरित रहौ व्यास वंश की शाखा ॥ १४ ॥ श्री हरिवंश जनम दिन मंगल ढाढ़ीं वरनि सुनायौ । भीतर बोलि विविधि पट भूषन ढाढ़िनि कौं पहिरायौ ॥ १५ ॥ अवतीरन भये रसिक मुकुट मणि वरनि धन्य भयौ ढाढ़ी । वृन्दावन हित रूप चरन रज वंदन आसा बाढ़ी ॥१६॥

राग रामकली—ढाढिनि—साजि समाजहि ढ़ाढ़िनि आई । व्यास वंश को उदौ देखिकैं तारा जू कौं देत वधाई ॥१॥ अति मन मुदित होति है पुनि पुनि श्री हरिवंश जनम सुनि धाई ।

गावति अरु निर्त्तति है सुगतिनि कहा कहौं अंग अंग सुन्दर ताई। मूरति मनु संगीत सुघरता हस्तक भेदनि मांहि दिखाई ॥ ३ ॥ अतलस कौ अतरौटा थिरकतु सारी कंचन तार सुहाई। सोहत पीत कंचुकी गाढ़ी धनि विधिना जिन सुविधि बनाई ॥४॥ शीश फूल अरु आड़ भाल पर लसत वंदनी रतन जराई। नथ की हलनि चलनि नैननि की लोंनी अंजन रेख महाई ॥५॥ सुघन बनी वेशरि सुठि नासा परति कपोल तरौंननि झाई। झलकत कछु श्रम स्वेद वदन पर ररकति अलक परम छवि पाई। ॥ ६ ॥ ग्रीवा ललित फबी छवि दुलरी हार हमेल हियें ढरकाई। मणि चौकी दमकति जु धुक धुकी मोतिन माला अधिक निकाई ॥ ७ ॥ पर्यें बरा बाजू बंधन दुति कर कंकन शोभा सरसाई। वलिया वलित सुथरता पुहुँचिनु मणि मुदरिनु नख ज्योति जगाई ॥ ८ ॥ उर पर केशरि पंक सु मंडित त्रिवली उदर नाभि गह-राई। कट खीनी पर कुनित किंकिनीं डोरी की झवियनि जु लुनाई ॥ ९ ॥ जंघ सठौंन नदित पद नूपुर नख सिख बनी त्रियनि मन भाई। कंधा तँबूरा झलकत चूरा प्रगट करत उर की चतुराई ॥ १० ॥ श्री तारा अभिलाष सफल भई व्यास सुकृत की करत वड़ाई। जननी जनक देहु मन भायौ मैं नित नित कुल विर्द्धि मनाई ॥ ११ ॥ श्री राधा सुदृष्टि करि चितयौ यह रस वेली भक्ति वढ़ाई। आविर्भाव जगद्गुरु अवनी मोकौं मेरे इष्ट चिताई ॥१२॥ श्री हरिवंश मल्हावति नामहि उमग्यौ प्रेम हियें न समाई। करज चटकि कैं लेति वारनैं अपु रीझी रानी जु रिझाई ॥१३॥ दै करताल सुलप गति लैकैं ठुमकि धरयौ पग

सीवा माई १४ किनहूँ पट किनहूँ दिये भूषन किनहूँ कंचन मूठि उठाई। श्री तारा जू ढ़िग बोलि आपनें कराठ लाइ ढाढ़िन पहिराई ॥१५॥ नाद विन्द बढ्यो कुल रानी गोदी ओटि असीस सुनाई। सुन्दर वदन विलोकि लाल कौ पौरि वसन कौ मन ललचाई ॥१६॥ तुम कुल सेव्य राधिका वल्लभ तिन पद बाढ़ो सुमति सदाई। वृन्दावन हित रूप व्यास सुत रसिक सभा होहु अति प्रभुताई ॥ १७ ॥ २०० ॥

रामकली ढाढी—वंश उदौ सुनि ढाढ़ी आयौ। व्यास मिश्र कौ माथौ नायौ ॥ १ ॥ सबनि मान दै निकट बुलायौ। प्रफुलित वदन हियौ विकसायौ ॥२॥ पुनि प्रभु गुरु शारदा मनायौ। सुगतिनु नाच्यौ सबहिं रिझायौ ॥ ३ ॥ अपनौ मन अभिलाष सुनायौ। मैं व्रत करि जु इष्ट वर पायौ ॥४॥ तिन दृग वांछित मोहि दिखायौ। प्रभु कियौ तुम मन कौ भायौ ॥ ५ ॥ तारा जू रसिक मुकुट मणि जायौ। जग कौ नीरस तिमर मिटायौ ॥६॥ धनि विधिना जिन आस पुजायौ। सदन महा मंगल दरसायौ ॥ ७ ॥ इष्ट अगह फल तुमहि गहायौ। हौं जस गाइक धन्य कहायौ ॥ ८ ॥ श्री राधा दत्त सुविधि चितायौ। करि हैं काज सोउ समुझायौ ॥ ९ ॥ द्विज कुल सुयश वितान तनायौ। यह रासेश्वरी बान बनायौ ॥ १० ॥ रस मारग जग रहित जनायौ। ताहि प्रकाशन जतन करायौ ॥ ११ ॥ व्यास सुकृत विरवा उपजायौ। भक्ति कल्प तरु जग पर छायौ ॥ १२ ॥ धन्य विप्र जिन लगन सधायौ। श्री हरिवंश सुनाम धरायौ ॥१३॥ धनि जननी जिन लाड़ लड़ायौ। धनि जनक जिन नित दुलरायौ

 बहु धन दै ढाढी अघवायौ लै लै आरज नाम

मल्हायौ ॥ १५ । दै असीस तिन हुरक वजायौ । मन रुचितौ ढाढ़िन पहिरायौ ॥ १६ ॥ सुत लखि जनम सोहिलौ गायौ । वृन्दावन हित रूप विकायौ ॥ १७ ॥ २०१ ॥

राग मारू—ताल मूल—ढाढ़ी रंग भीन्यौं गावै, आजु निर्त्तत अति छवि पावै । आविर्भाव जगत गुर तिनकौं प्रेम छक्यौ दुलरावै ॥ढाढ़ी०॥१॥ मेरौ वांछित कियौ विधाता गोदी ओटि वतावै । सिद्धि प्रसिद्धि दियौ वरु ताकौ फल मो नैंन दिखावै ॥ २ ॥ सुत कौ जनम व्यास मंदिर सुभ लछन कहत न आवैं। श्री राधा सुदृष्टि चितवनि यह, सवके चितहिं चुरावैं ॥ ३ ॥ सुनि यों वेद अर्थ ग्याता सव उर अचिरज उपजावै । भुव नभ दिस मंगल दिषियुत प्रभु वेली भक्ति वढ़ावै ॥४॥ भाग्य अवधि गुन अवधि अवधि सुख भक्ति अवधि दरसावै । व्यास आत-मज रसिक अनन्यनि कौ सिरताज कहावैं ॥ ५ ॥ प्रभु की सी प्रभुता विस्तारिहैं सव हिय संश मिटावै । जो रस रीति मुनिन दुर्ल्लभ इन शरण सहज उर आवैं ॥ ६ ॥ महँत मान दाइक लाइक जस द्विज कुल कलश चढावै । भव निधि दुस्तर तारक प्रगट्यौ आगम सुविधि जनावै ॥७॥ रवि कैं उदै तिमर नासतु ज्यौं यों अग्यान नसावै । उमड्यो जुगल हेत कौ अंवुद तपित हियेनु सिरावैं ॥ ८ ॥ विप्रनि सभा सुनत आनन्दित ढाढ़ी वरनतु भावैं । सव संपति संपन्नि व्यास वड़ भाग ताहि पहिरावैं ॥ ६ ॥ मंगल मुषी गुनी जन गावत वहु धन जनक लुटावैं । वधू सोहिले गावैं वंदी हरष्यौ विरद वुलावैं ॥ १० ॥ ढाढ़िनि पहिरि असीस सुनावति अंचल छोर उचावै । चिरुजीवौ

उद्धव घर घर महा मोद वरषावै । वृन्दावन हित रूप सुकृत फल जननी लाड़ लड़ावै ॥ १२ ॥ २०२ ॥

राग मारू—ढाढ़ी विरद वखानतु आयौ, आदरु दै व्यास बुलायौ । बड़ भागिनि की कूषि मल्हावतु जिन अभिलाष पुजायौ ॥ ढाढ़ी० ॥ टेक ॥ १ ॥ कमनीय रूप वहुरि नष सिष जिन सुविधि सिंगार बनायौ । घरनीं बनीं महा मन हरनीं दुहूँ मिलि मंगल गायौ ॥ २ ॥ पीत उपरना जरकसी फैंटा पुनि तुर्रा ढरकायौ । श्रवननि दिपत अमोल जलज मणि कौतिक रूप दिषायौ ॥ ३ ॥ भुज वाजू कर चूरा रूरा नूपुर नाद सुहायौ । निर्त्तत है द्विज राज सभा में सुगतिनु हुरक बजायौ ॥ ४ ॥ मगन भयौ वरनतु कुल करनी आरज नाम मल्हायौ । दियौ अधिक सनमान सबनि ही फूल्यौ अंग न मायौ ॥ ५ ॥ बड़ौ वंश विस्तार बड़ौ वरनन कौ मन अकुलायौ । पीढ़ी आठ कहौं जैसें मम आरज मोहि सुनायौ ॥ ६ ॥ विप्र वंश उद्योत महा मन विजै भट्ट जस गायौ । तिनकें सुवन जु भये कुलाजित कुल मंडन सु कहायौ ॥ ७ ॥ तिन सुत भये विदित विद्याधर विपुल तेज दरसायौ । जालप मिश्र भये तिन नन्दन राधा पति दुलरायौ ॥ ८ ॥ तिनकें भये उमाकर अति मति परम धर्म मन भायौ । तिनकें जीवद मिश्र उजागर प्रभु पद चित विरमायौ ॥ ९ ॥ तिनकें भये आतमज हिमकर जसु सब जग में छायौ । तिनकें नौ सुत भये भक्ति रति प्रनि तनि मोद बढ़ायौ ॥ १० ॥ बड़े नृसिंहाश्रम गुन गरुवे भुव तल भजन चितायौ । श्री रघुनाथ दास गंगाधर मो मन भूष भगायौ ॥ ११ ॥ पुनि दिवदास गुपाल

बहु भाँति लुटायौ १२ विप्र सभा श्री व्यास मुकुट मणि जिन कुल कलश चढायौ मेरौ गयौ दरिद्र आजु द्विजरानी ढोटा जायौ ॥१३॥ नाम उदै सिर वहिन व्यास की मंगल भूर मनायौ। सुकृत वेलि फली हिमकर की सब मन सूल नसायौ ॥ १४ ॥ बार बार ढाढ़ी असीस दै पौरी माथौ नायौ । वृन्दावन हित रूप जनम दिन सब विधि वांछित पायौ ॥ १५ ॥ २०३ ॥

राग मारू—ढाढिनि तैं को सुकृत कमायौ । श्री हरिवंश जनम मंगल यह प्रेम भक्ति दत्त पायौ ॥ १ ॥ धनि वड़ भागिनि आई छबि सौं रचि सिंगार बनायौ । थिरकतु है अतरौटा कंचुकी सारी रंग बढायौ ॥ २ ॥ सीस फूल वैंना जु वंदनी मृगमद तिलक सुहायौ । लसति पीठि पर वैंनी पन्नग घरनी भ्रम उपजायौ ॥३॥ श्रवन तरौंना नथ वेशरि प्रतिविम्ब कपोलनि छायौ । अंजन रेख सलज दृग कोरनि ढोरनि चित्त चुरायौ ॥४॥ सुठि नासा अधरनि अरुनाई दसन हसन मन भायौ । लौंनौं चिवुक सुभग अति ग्रीवाँ हियें हार ढरकायौ ॥ ५ ॥ फबी हमेल धुक धुकी चौकी दुलरी दुति दरसायौ । कंकन वलय मणि खची मुंदरी वाजू नगनि जरायौ ॥ ६ ॥ खीन लंक पर कनक किंकिनीं धुनि मिलि मंगल गायौ । वनी गूजरीं पाइल विछुवा नूपुर नाद सुहायौ ॥ ७ ॥ सजि ठाड़ी द्विज राज भवन में अंक तंबूरा लायौ । साधैं अंग वदति थेई थेई गरुवौ गुन जु दिखायौ ॥ ८ ॥ जे भये धर्म सील रिषि पहिलैं तिनकौ सुजस सुनायौ । मो वाँछित दाइक जु व्यास कुल कीरति वर्द्धन आयौ ॥ ९ ॥ तारा जू के लेति वारनैं जिन ऐसौ सुत जायौ कृपा कलप तरु कृषि सभागिनि सब अभिलाष

जु रिझायौ । धन्य धन्य भापति सब वनिता कंचन झर वरषायौ ॥ ११ ॥ जननी जनक दियौ मन भायौ हुलसी भार भरायौ । अपनौं सब सिंगार नष सिष रानी ढाढ़िनि कौ पहिरायौ ॥१२॥ हरषी देति असीस बढ़ौ संतत्ति नित उदौ मनायौ । चिरुजीवौ यह व्यास वंश धर कहि सब कौ सिर नायौ ॥१३॥ होहु जगत गुर जग हित करता विधि तन गोद उचायौ । विस्तरिहै राधा सुहाग सुख मम पति मोहि वतायौ ॥१४॥ कहति विपुल परताप लाल कौ प्रेम हियौ सरसायौ । वृन्दावन हित रूप अपूरव जसु कहि सबहि छकायौ ॥ १५ ॥ २०४ ॥

भाँड वरनन ॥ राग सारंग ताल मूल–पुत्र जनम सुनि आये जाचिक देत अशीष जु मन क्रम वाचिक ॥ १ ॥ हमैं निवाजन आयौ लाला । दै न्यौछावरि करौं निहाला ॥ २ ॥ भाँड़ जननि की आशिष लीजै । महाराज मन वाँछित दीजै ॥ ३ ॥ विप्र सभा सब देखन आवौ । हमकौं रीझि रीझि पहिरावौ ॥ ४ ॥ तारी पटकैं मुह मटकावैं ॥ नकलैं रचि रचि सवनि हँसावैं ॥ ५ ॥ महाराज वनियाँ पुर पुर के । परम उदार देखियत उर के ॥ ६ ॥ पुत्र भये पै हमैं नचावैं । समझि वूझि कैं । रीझि पचावैं ॥ ७ ॥ नींमा जांमां के वंद खोलैं । लाज छाड़ि कैं भाँड जु वोलैं ॥८॥ रंचक डरैं न दई सँवारे । सब जातिनु के पढ़त पँवारे ॥९॥नाइनि कौतिक देखति हाँसी । भांड कहै यह मेरी मौसी ॥ १०॥ मंगल मुखी दान लै आये । भांड नकल रचि ते जु भगाये॥११॥ जीवौ विप्र राज कुल भूषन । जग होंइ विदित चरित निरदूषन॥१२॥जिहिं जनमत हम पायौ आदर । दीयौ दान तात नैं सादर १३॥वरष्यौ

भांड वरनन ॥ राग सारंग ताल मूल—आये भँडेला नकल बनावैं। मोरैं बदन नैंन मटकावैं ॥ १ ॥ चिरजीवौ द्विज रानी जायौ। हरि मंगल हम आदर पायौ ॥ २ ॥ कूटक रचैं लेत है लटकें। मंगल मुखी देखि कैं सटके ॥ ३ ॥ टेढ़ी पगरी जामां ढीलें। सबै हसावै परम गुनीले ॥ ४ ॥ वनियाँ निपुन हमारे मीता। कहा पढ़ैं इन गुन की गीता ॥५॥ भांड देवतनि पूजि मनावैं। दान दैंन कौं बदन दुरावैं ॥ ६ ॥ महाराज मन भायौ लैहै। गोद पसारी आसिका दैहैं ॥ ७ ॥ हम जु पढ़े हाँसी के टौंना। राज सभा के भांड खिलौंना ॥ ८ ॥ सूरति सूम उदास जु आवैं। तिनकौं हम वर जोर हँसावैं ॥ ९ ॥ जाति ऊजरे भांड कहावैं। सब तें अधिकी दछिनाँ पावैं ॥१०॥ पट भूषन पाये जु दुशाला। हमैं निवाजन आयौ लाला ॥११॥ विप्र वंश जस वरन्यौं रूरा। भांडनि मिले जरयाऊ चूरा ॥ १२ ॥ गावैं गुन तारी पटकावैं। सब जातिनु की नकल बनावैं ॥ १३ ॥ फूले फिरैं भँडेला तन मन। वृन्दावन हित रूप पाइ धन ॥ १४ ॥ २०६ ॥

राग ब्रज बासिनी की टेर ॥ ताल मूल—जनमैं हो, रसिकनि मणि हो. रसिकनि मणि हो भूप, बजति बधाई गह गही। तारा हो रानी भाग अहो रानी भाग अनूप मन्दिर गह मह ह्वै रही ॥१॥ धनि धनि हो यह माधौ मास धन्य महूरत सुभ घरी। धनि धनि हो उजियारी ग्यास, व्यास आस वेली फरी ॥ २ ॥ धनि धनि हो मंगल जु उदोत, पह पीरी वरिया भई। जहाँ तहाँ हो जै जै धुनि होति भली भाँति लरज्यौ दई ३ । गोकुल हो रावसि

जु हेत रासेश्वरि सुख विस्तरयौ प्रगटे हो द्विज व्यास निकेत प्रनितनि मन भायौ करयौ ॥ ५ ॥ मंगल हो ब्रज अवनी आज दिस दिस प्रगट जु देखिये । वरनत हो मिलि विप्र समाज यह प्रभु कृपा विशेषियै ॥ ६ ॥ मंगल हो गावति ब्रज तीय जूथनि जूथनि आवहीं । हरषित हो सबही हिय जीय तारा जू कूषि मल्हावही ॥ ७ ॥ बैठी हो सब अजिर मंझार आरज नामनि लेति है । चीतति हो सथिया मिलि द्वार रानी जू वांछित देति है ॥ ८ ॥ वाढ़ौ हो बीरन परिवार कहति सवासिनि मुद भरी । चिरजीवौ हो भाभी प्रान अधार हम अभिलाष सफल करी ।९। देखौ हो सुख दृगनि अघाइ अति लड़ श्री हरिवंश कौ । वदति हो प्रभु कौं सिर नाइ व्यास उदौ लखि हरिवंश कौ ॥ १० ॥ यह फल हो राधा पद सेव कहत होत सब मगन है । बाजति हो दुन्दुभी जु देव कुशुम वृष्टि होइ गगन है ॥११॥ वृन्दावन हो हित रूप सदेह कृपा कलप तरु औतरयौ । दंपति हो गरुवौ जु सनेह सुकृतिनु हित सु प्रचुर करयौ ॥ १२ ॥ २०७ ॥

राग चैती–गौरी ॥ दाई वरनन—विप्र राज वड़ ज्ञाता ॥ सव जग विख्याता ॥ दियौ वर भ्राता ॥ सकल सुख दाता ॥ अहो वंश सहित हरि तुव गृह प्रगटे आइ कें ॥१॥ भक्ति गिरा प्रति पाला ॥ प्रभु परम कृपाला ॥ सुनि विनय रसाला ॥ आये गर्भ तिहिं काला ॥ अहो मुदित भई है द्विज रानी रिषि वचन विचारि कैं ॥२॥ आगम निगम वखानी ॥ वृज भूमि रवानी ॥ सर्वोपरि मानी ॥ वाद जग जानी ॥ अहो वानिक वन्यौ है वाछी शुभ घरी ३ । सब मन वढ्यौ है हुलासा ॥

भवन प्रकाशा। अहो हरस्यो सकल परिवार प्रीति अति मन वढ़ी ॥४॥ तिहि छिन दाई वुलाई ॥ आये माथो नाई॥ सुगंधि अंग लगाई॥ रानी जु कूखि सराई॥ अहो गावति गीत पुनीत विप्रकुल नाम लै ।५। गौर तेज छवि ऐना॥ कछु कहत वनैंना॥ देखत भूलै नैंना ॥ पल पलक हूँ लगैंना ॥ अहो हित मूरति अभिराम जननि दरसाइयौ ॥ ६ ॥ भक्ति शील गुण भारे ॥ विप्रनि पगु धारे ॥ मिलि आगम विचारे ॥ शुभ वचन उचारे॥ अहो लक्षण सवै विलक्षण प्रभु सम देखिये ॥ ७ ॥ आनन्द निधि गृह आनी ॥ भक्ति रति दानी ॥ युगल गुण गानी ॥ दैहैं मान अमानी ॥ अहो सकल गुणन की है राशि रसिक जन मुकुट मणि ॥८॥ कृष्ण रसामृत पानै ॥ कियौ मुख लगि जानै ॥ राधे गुण गानैं ॥ जग मोह्यौ नीकी तानैं ॥ अहो सो वंशी भुव प्रगटी गुपत गुन कथन कौं ॥६॥ राधे रूप अगाधे॥ जाहि हरि आराधे ॥ पूजै मन साधे ॥ विसरे न पलु आधे ॥ अहो यह जश रस विस्तारन प्रेम विग्रह धरयौ ॥ १० ॥ वन्धु वचन सुधि आये ॥ सुनि मिश्र सिहाये ॥ पट भूषण मगाये ॥ द्विज वन्धु पहिराये ॥ अहो दियौ हैं याचकनि दान अधिक सन्मान करि ॥ ११ ॥ विदा भई जब दाई ॥ वहु भांति पहि- राई ॥ वांछित निधि पाई ॥ अशीश दै सिहाई ॥ अहो धन्य भई हौं आजु कहति यौं घर चली ॥१२॥ मंगल परम पुनीत॥ जनम शुभ रीति ॥ सुनि वढ़ै हित प्रीति ॥ होहि मन चीति ॥ अहो व्यास सुवन पद कमल सुतहि उर जग मगै ॥ १३ ॥ सरस वधाई गाऊँ॥ हित रूप दुलराऊँ॥ रसिकनि सिर नाऊँ॥ यहै कछु पाऊँ॥ अहो वृन्दावन हित देहु वास वृन्दा विपिन।२०८।

असीस अर्पै—अष्ट सिद्धि नव निद्धि वचन वर बिद्धि होहु अब। जप तप विद्या वेद अगम आगम संपति सब॥ दान मान सनमान करहि गुन गान रसिक जन। कर्म धर्म व्रत नैम सकल कौ सार भक्ति गन॥ हरिवंश चरन अनुसरहि जै तिनके ए चित नित लसहु। अन गन देत असीस द्विज तुम सब वृन्दावन बसहु॥ २०६॥

राग रूपक आसावरी-सुनि धुनि श्रवन सुहाई, आजु बजतु मदिरला हरपि गह गहो। राधा यश चिन्तामणि प्रगटित द्विज कुल ओप बढ़ाई॥ आजु बजतु०॥ टेक॥ १॥ आगम कुशल कहत द्विज पुनि पुनि जनम नछत्र विचारी। रसिक शिषा चूड़ामणि गुन गन आलय जन हितकारी॥ २॥ निगम सार सर्वग्य जगत गुरु भक्ति प्रीति रति भारी। शरनागत पालक अति कोविद व्रत अनन्य दृढ़ धारी॥३॥ भूरि भाग जन कृपा जु वपु धर्यौ आगम जानि पर्यौ है। करुनामय गौरंगी पद्धति थापन जतन कर्यौ है॥ ४॥ निरवधि रूप रंग रस कांनन राधा नित्य विहारी। तिनकें चरित रतन दरसावन हित वंशी अवतारी॥ ५॥ यह सुनि विप्र सभा परशंसित व्यास मिश्र बड़ भागी। रजित रुकम पट धैंनु विधिनु सौं देत परम अनुरागी॥ ६॥ गृह गृह तें गवनीं युवती मिलि मंगल भवन रच्यौ है। वृन्दावन हित रूप जाँऊ वलि सुख कौ निकर सच्यौ है॥२१०॥

विवि हिय हिलग कलेवर मैया, भाग भलौ द्विज वर कुल दरस्यौ। किधौं अंबुज अनुराग उमै रस रसिकनि हित धुरि

करन गुन सरस्यौ । वृन्दावन हित रूप जाँऊ बलि जासु गिरा रस सुकृतिनु परस्यौ ॥ २११ ॥

राग ईमन—महँत गुननि को कोश खुल्यौ है यह इच्छा श्री कांनन रानी । जुगल रहसि रसिकनि दरसावन विदित करन जग रस मय वानी ॥ निगमनि गोप्य भाव अति गरुवौ व्यास सुवन दत्त रसिकनि जानी । वृन्दावन हित रूप अहा कहा व्रत अनन्यनि की धुज फहरानी ॥ २१२ ॥

बधाई—उफनि उठ्यौ कानन कमनीय जस व्यास सुवन आगम मन भायौ । अपनौं प्रवल प्रताप दिखावन प्रेम दिवाकर वपु धरि आयौ ॥ १ ॥ वृज धरु मंगल जनम होत ही रस वैभव वीथिनु दरशायौ । मधुरितु हरषि उठी तरु संपति फल फूलनि सौरभ झरलायौ ॥ २ ॥ तारा तनय सोहिलौ गावत वनितनि आनंद रंग बढ़ायौ । मिश्र भाग कौ सवहि प्रशंसित कौंन सुकृत कौ यह फल पायौ ॥ ३ ॥ जित तित कौतिक सदन कुलाहल महा मोद सबकें मन छायौ । वलि हित रूप प्रगट भये जो सुख वृन्दावन हित जातु न गायौ ॥ ४ ॥ २१३ ॥

बधाई—बजत मृदंग रवाव तँबूरा । सारंगी नौवत सहनाई ढोलक ताल शब्द लगे सूरा ॥ गावत गुनी समाज साधि सुर व्यास रीझि देही हय पट चूरा । वृन्दावन हित रूप असीसत होहु जगत गुरु सब गुन पूरा ॥ २१४ ॥

बधाई—गहकि महिलरा व्यास सदन में बाज गाजि आनंद दियौ है । त्रिभुवन विजई अमी रस पूरित तिन हरिवंश जनम

वाद कियौ है। वृन्दावन हित कुंवरि कृपा दत्त जिन रसिकनि सींचो जु हियौ है॥ २१५॥

॥ चाचा श्री वृन्दावनदास जी कृत॥ जेठ वदी १ को॥

छठी वरनन॥ राग सूहौ विलावल॥ मंगल छन्द—श्री व्यास सुवन की छठी छवीली। आई रजनी परम रंगीली॥ वनिता जूथ जूथ मिलि आवैं। ना ना भेंट करनि सजि लावैं॥ लावैं करनि सजि भेंट वाला मुदित मंगल गावहीं। भीजीं परम आनंद आरज नाम लै जु मल्हावहीं। लई सादर भवन कौतूहल परम अहिलाद है। गहकीं बधाई देत जहाँ होइ पंच विधि कौ नाद है॥ १॥ फिरति सवासिनि मोद भरी है। सथियनि में रचना जु करी है॥ मन्दिर पाक अनेक रचे हैं। सखरे निखरे सवहि सचे हैं॥ सचे ना ना पाक झगुली पीत टोपी तास की। चूरा कनक कर चरन चौकी हियैं मणिन प्रकास की॥ आरज पुजावति छठी जननीं अंक अति लड़ मुदित है। पीत अंबर तन सजे मुख कलाधर ज्यौं उदित है॥ २॥ भाभी ननंद होहु सभागौ। याहि दीठि कबहुं जिनि लागौ॥ वंस सवासि असीस जु देहीं। झगरि लीक अपनी सब लेहीं॥ लेहिं अपनी लीक सबहीं जे लगाइत वंश के। व्यास वांछित देत जे जस करन हार प्रसंश के। कंचन जु मूँठि उठावहीं ताई रु चाची सुख सनी। मेवानि गोद भराइ सादर सफल यह रजनी गनी॥ ३॥ मंगल नगर बगर दिस देषैं। द्विज रानी को सुकृत विशेषैं॥ श्रीराधा पूजन फल पायौ। भांति भांति भयौ मन को भायौ॥ भयौ मन [illegible] भाँवतौ श्री व्यास कुल वेली बढ़ी सुविधि इष्ट अराधि पूजी

रहसि निगमनि दुरी वृन्दावन हित रूप पद्धति थापि है रासेश्वरी ॥ ४ ॥ २१६ ॥

राग विलावल—ताल मूल—आवौ री मिलि छठी पुजावौ। इष्ट मिष्ट राधा जस गावौ ॥ १ ॥ वधुनि बुलाइ नइनियाँ लावौ। रहसी फूलीं मो घर आवौ ॥ २ ॥ चाइनु चाइनु सौं दुलरावौ। मो अति लड़ की कुशल मनावौ ॥ ३ ॥ भाग्य भरी सब राति जगावौ। वंश सवासि असीस सुनावौ ॥ ४ ॥ जो कुल सेव्य ताहि सिर नावौ। मंगल रचनां करि जु दिखावौ ॥ ५ ॥ व्यास वंश लै नाम मल्हावौ। वलि हित रूप रंग सरसावौ ॥ ६ ॥ वृन्दावन हित चित जु लगावौ। जो जो वांछित सो सो पावौ ॥ ७ ॥ २१७ ॥

॥ श्री प्रेमदासजी महाराज कृत ॥ मंगल छठी कौ—राग सूहौ विलावल ॥

चलि मिलि गावौ री मंगल श्री द्विजराज कैं। सखी लड़ावौ री तारा सुत रह्यौ छाजि कैं ॥ छटीं अति सुख जटी सजनी आजु रसिक नरेश की। सुर निसान बजाइ वरषा करत सुमन सुदेश की ॥ १ ॥ सूत मागद आदि वन्दी जन विरद कहि सुख छये। अमित हीरा लाल मोती मिश्र जू तिनको दये ॥२॥ लैहिंगी हम झगर अपनो नेग वन्दन माल कौ। प्रेमदासि हित लाग में अति लाभ दरसन लाल कौ ॥ ३ ॥ २१८ ॥

चाचा वृन्दावनदास जी महाराज कृत मंगल-दसूठन कौ ॥ जेठ बदी ५ कौ ॥

आजु दसूठन री हेली श्री हरिवंश कौ। श्री राधा वल्लभ री हेली गुननि प्रसंश कौ ॥ टेक ॥ आई सवासिनि साजि मंगल भवन रचना करति है। घोरि अरगज लीपि आँगन चौक मोतिनु भरति है ॥ १ ॥ कनक घट भरि नीर अमृत नूत दल श्रीफल

कुसुम मंडप छाइ ऊपर सुरंग वितान तनाइयौ जरी तारनि लरी मोतिनु पीत धुज फहराइयौ ॥३॥ बाँधि वंदन माल चौकी धरी अति छबि पावहीं। धूप सौरभ साज मंगल धरे कहत न आवहीं ॥ ४ ॥ नाइनि भरी उत्साह मन श्री तारा जु उबटि न्हवाइयौ। महिदी महावर साजि नवसत पीत नट पहिराइयौ ॥ ५ ॥ श्री व्यास जू पुनि न्हाइ पीत पुनीत अंबर तन धरे। गठि जोरि करि बैठारि चौकी वेद विप्रनि उच्चरे ॥ ६ ॥ पंच शब्दनि होति धुनि द्विज वधू मंगल गावही। कुल वेद विधि सब करत वंदी भाट विरद मल्हावहीं ॥ ७ ॥ व्यास जू कौ लाडिलौ श्री तारा जू गोद विराजहीं। हँसुली करूला कौंधनी टोपी तास झगुली राजहीं ॥ ८ ॥ द्विजनि विधिवत रीति करि पुनि व्यास गोद कुंवर दयौ। नौ वन्धु पुनि आरजनि गोदी दियौ सब मन सुख भयौ ॥९॥ श्री व्यास भगिनि उदै सिर जू आरतौ सजि लाइयौ। हँसि नेग माँगति देत द्विज वर तिन असीस सुनाइयौ ॥ १० ॥ चिरुजीयौ भाभी अति लाडौ मेरे वीर कुल जस मंडनौ। हूजौ जगत गुरु प्रभु चरन रति प्रनित भव भय खंडनौ ॥ ११ ॥ दै द्विजनि दछिना धेनु पट नग पुनि असन करवाइयौ। भाट वन्दी सूत मागध दान दै पहिराइयौ ॥ १२ ॥ चिरजियौ व्यास कुंवार रसिकनि के मनोरथ पुजावनौं। वृन्दावन हित रूप वलि रस भक्ति दान दियौ घनौं ॥ १३॥२१६॥

बधाई-राग सवैया-प्रगट्यौ हित वाद विवाद तजौ, सब याद करौ दिन वाद गये। धन गाम अझूकी अड़े रस वादहि, जल्प वितण्डा न [illegible] ॥ कोइलो रस रावल गोकुल के, दसवा नौरंगा वाद [illegible]।

माला का चालीसवाँ पुष्प—

॥ श्री श्री हित राधा वल्लभो-जयति ॥

* श्री श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति *

ब्रज-साहित्य का- द्वितीय खण्ड

र-रस-सागर

के प्राचीन ५०० महात्माओं की वाणियों
का अपूर्व संग्रह

ावल्लभ जी कौ वर्षोत्सव

ीय सम्प्रदायाचार्य महाप्रभु श्री हित हरिवंश वंशावतंश
०८ गोस्वामि श्री मुकुटवल्लभाचार्य जी महाराज
बी० ए०, वृन्दावन की कृपा आज्ञानुसार
बाबा तुलसीदास द्वारा प्रकाशित

प्रकाशक —

बाबा तुलसीदास

(गोपाल भवन, मुहल्ला डुसायत)

वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

सजिल्द ४)
अजिल्द ३।)

प्राक्-कथन

प्राचीन रसिक वाणी माला का यह चालीसवाँ पुष्प पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। ब्रज के देवताओं—विशेषतः वृन्दावन के मन्दिरों, निकुञ्जों तथा अन्य धार्मिक स्थलों पर समय समय पर समाज में गाये जाने वाले पदों का इसमें अपूर्व संग्रह है। एक ही स्थान पर इतनी विपुल और विभिन्न प्रकार की सामिग्री सम्भवतः प्रथम बार ही इस रूप में उपस्थित करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। ब्रज साहित्य में श्री राधिका कृष्ण की उपासना से संबन्धित एक से एक अनूठे लाखों पद हैं, किंतु प्रस्तुत संग्रह में भिन्न भिन्न ऋतुओं में होने वाले उत्सवों से सम्बन्धित पद ही रखना हमारा लक्ष रहा है। प्रत्येक ऋतु में अपने हृदय-धन को लाड़ लड़ाने के चाव से भक्त कवियों के मन-मयूर की यह अभिनव काकली एक से एक बढ़ी चढ़ी उपमा, प्रार्थना और लीला विलास के वर्णन से विलसित हुई है। भावनाओं का जैसा उन्मेष इस रूप साधना में भक्त कवियों में हुआ है, वैसा विनय या सिद्धान्त के तत्वों को लेकर नहीं हुआ। प्रिया–प्रियतम की शृङ्गार भावनाओं से यह पद छल छला रहे हैं। रसिक भक्त कवियों की कल्पना इस मनोरम, परन्तु सात्विक क्षेत्र को लेकर मचल मचल उठी है। श्री कृष्ण राधिका के सम्बन्ध में कुछ भी उनके लिये अवर्ण्य नहीं रहा। नाजुक से नाजुक प्रसंगों में रमण करती हुई भी कवि प्रतिमा उदात्त भावनाओं के जिस अभेद्य कवच को पहिन कर अछूती निकल सकी, वह रीति कालीन कवियों के पास नहीं था। यही कारण हैं राधाकृष्ण की ढ़ाल को लेकर भी वह चोट खा गये।

काव्य की दृष्टि से कृष्ण-रति का क्षेत्र सीमित हो सकता है, पर किसी अर्थ में उसे संकीर्ण नहीं कहा जा सकता। रसिक-भक्तों की अनन्य भावना की जो मनोरम क्रीड़ा यहाँ देखने को मिलती है। अन्यत्र दुर्लभ है। बड़े ही मनोहारी रूप विधानों में यह पल्लवित हुई है, और कहीं कहीं तो इतनी कोमल और सूक्ष्म कि उसकी पृष्ठभूमि के लिये तत् तत् सम्प्रदायों की परंपरा, उनका अपना सौन्दर्य दर्शन आदि से परिचित हुए बिना कविता केवल शब्दार्थ का विजृंभण ही लगेगी। इन भक्त-कवियों ने राधाकृष्ण सम्बन्धी प्रेम को जो स्वरूप प्रदान किया है, वह लौकिकता और अलौकिकता दोनों से बिलक्षण है। वहां संयोग है, वियोग है, मान है मिलन है, पर उनके व्यवच्छेदन करने वाली रेखा अत्यंन्त सूक्ष्म और कोमल है। कोरे साहित्यिक के लिये जो वाकजाल है, वही यहा भक्त की, उपासना का मेरुदण्ड है।

संग्रह में दिए गये पदों का मर्म पहिचानने के लिये एक भक्त हृदय की अपेक्षा है और उस पृष्ठ भूमि की भी जो वृन्दावन, गो गोप, गोपी निकुञ्ज और सहचरी आदि

के रूप में पगपग पर उपस्थित होती हैं इनकी काव्यात्मा का हृदयगम किये विना इन पदों का रसास्वादन अपूर्ण ही रहेगा। मन्दिरों में होने वाले 'समाज' भी अपने ढंग के विलक्षण वातावरण की सृष्टि करते हैं। ये पद जब सुकण्ठ समाजियों के समवेत स्वर में गुञ्जायमान होकर कोमल वितान की रचना करते हैं, तव स्वरों के आरोह-अवरोहों की व्यंजना बिभोर कर देती है। जिन्हें इन समाजों के सुनने का सौभाग्य मिला है वे हमारे इस कथन से सहमत होंगे।

साहित्यिक सौन्दर्य से निरपेक्ष रह कर मात्र भक्ति भावना से मूल्यांकन करने वाले भक्तों को तो यह संग्रह अनुकूल पड़ेगा ही, परन्तु शुद्ध कलात्मक दृष्टि से व्रज भाषा साहित्य में अवगाहन करने वाले विद्वानों के लिये भी यह एक संग्रहणीय निधि होगी।

एक शब्द अपने विषय में कह दूं यह जो कुछ है, जैसा है एक अकिंचन 'बाबाजी' के अवोध प्रयास का संग्रह है। व्रज की प्राचीन निधि के संग्रह तथा खोज में आज दिन वहुत श्रम और व्यय की आवश्यकता होती है। किसी प्रकार की श्रेय कामना इन प्रकाशनों का उद्देश्य नहीं है। गुणी जन की प्रसन्नता और रसिक चित्त का मुदित होना ही इस प्रयास की कृतार्थता है।

अन्त में जिन आचार्य वर्य और भक्त प्रवरों तथा संत महात्माओं ने मुझे सहायता दी है, उनका कृतज्ञ हूं। विशेष कर श्री शेठ गजानन्द जी के सुपुत्र शेठ बाबूलाल जी कलकत्ता निवासी की सामयिक सहायता के लिये अत्यन्त आभारी हूं।

शृङ्गार रस सागर के प्रकाशन की महती योजना के अन्तर्गत प्रथम खण्ड पहिले प्रकाशित हो चुका है। द्वितीय आपके सन्मुख है। तृतीय खण्ड इसी श्रावण मास की हरियाली तीज तक प्रकाशित हो जायगा—एसी पूर्ण आशा है।

श्री गुरु-पूर्णिमा सं० २०१६
श्री वृन्दावन धाम

हित चिंतक
बाबा तुलसीदास

कुञ्ज–महोत्सव

१ श्री राधावल्लभ जी के मंदिर की समाज-शृङ्गा-पद-रूप गुण कीर्तन ।
२ श्री रास मंडल (श्री हित हरिवंश चंद्र महाप्रभु जी की बैठक में) समाज
३ श्री गोवर्द्धन लाल (छुट्टनलाल) भट्ट जी महाराज के यहाँ की समाज के पद
४ श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के यहाँ की समाज के पद ।
५ श्री वरसाने (श्री लाड़िली जी कौ महल) की समाज पद-रूप गुण कीर्तन ।
६ श्री नन्द गाँव (श्री नन्दराय जी कौ महल) की समाज-पद-रूप गुण कीर्तन ।

नोट–पुष्टि मार्गीय मंदिरों में जो जो रूप गुण कीर्तन के पद होते हैं, वे पद भी इसमें सम्मिलित हैं, अन्य मंदिरों तथा कुञ्जों में गाये जाने वाले समाज-रूप गुण कीतन के पव भी है

पद-सूची

ी वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप गुट

पद-सूची

वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप--गुण कीर्तन

ड

पद-सूची

* वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप-गुण

पद-सूची

' वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप--गुण कीत

:स

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप गुण कीर्तन

महिंदी-सिंधारे के पद

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप--गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप--गुण कीर्तं

पृष्ठ सं०	(पवित्रा के पद)	पद सं०	पृष्ठ सं०	(राखी के पद) पद
१६१	झूलत नवल प्रिया प्रीतम	१	१६४	रक्षा बंधन साज समाजनि
१६१	पवित्रा शोभित पाट पुनीत	२	१६५	अद्भुत रंग हिंडोर जोर भुज
१६१	पानिप भरे पवित्रा पहिरे	३	१६५	आज भलौ दिन राखी बंधन
१६१	हिंडोला झूलत लाड़िली लाल	४	१६५	श्रावण पून्यौं श्रवण पूजत
१६२	उर पाट पवित्रा जग मगे	५	१६६	जानि सलौनौं युगल सलौनो
१६२	सुभग पवित्रा हो पहिरे	६	१६६	पूरन मासी पूरन धनि हरि
१६२	पवित्रा ललिता रुचिर बनायो	७	१६६	प्रीतम बाँधि दोऊ कर राखी
१६३	पवित्रा पहिरें स्यामा स्याम	८	१६६	रक्षा करत स्याम की स्यामा
१६३	पवित्रा पहिरें गिरधर लाल	९	१६६	रक्षा बंधन करत सहेली
१६३	पवित्रा पहिरें श्री वल्लभ लाल	१०	१६७	आजु मंगल द्यौस सलूनों
१६३	पवित्रा पहिरें श्री गिरधर	११	१६७	जननी जसोदा राखी बाँधति
१६४	पवित्रा पहिरे कान्हर वारे	१२	१६७	सिंह पौरि ठाढे मन मोहन
१६४	पवित्रा पहिरें श्री गिरधारी	१३	१६८	रच्छा बाँधत जसुमति
१६४	बैठे पहिर पवित्रा दोऊ	१४	१६७	आज सलूनों मंगल माई
१६४	पवित्रा पहिरें है नंद लाल	१५	१६८	तिथि पून्यौं सुभ द्यौस
१६४	पवित्रा पहिरत गिरधर	१६	१६८	राखी बंधन स्याम करावत
			१६९	राखी राखौ सुन्दर कर वर
			१६९	राखी बाँधि सुभ घरी माई
			२१०	आनंद आजु नंद के द्वार (वधाई)

श्री राधावल्लभ जी के मंदिर में श्री सेवक जनम की मंगल वधाई

कार्यक्रम की पद सूची

श्री सेवक जी महाराज कौ जनम, सावन सुदी तीज कौ

उत्सव प्रारम्भ—सावन वदी एकादसी से—मंगल—वधाई गान शृङ्खला

पृष्ठसं०	(मङ्गल वधाई के पद)		पद सं०	नामावली	तिथि
२०१	जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल	(मंगल)	१	श्री सेवक जी महा० कृत	(सावन वदी एकाद
२०२	जै जै श्री हरिवंश हुदौ सेवक	(मंगल)	२	श्री प्रियादास जी महाराज कृत	(नित्य होय
२०३	मधुरितु माधव मास सुहाई	(वधाई)	३	श्री हित कृष्णदास जी महा० कृत	„ „
२०३	प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊँ	(वधाई)	४	श्री नागरीदास जी महाराज कृत	„ „
२०३	जयति वैयास के रसिक	(अष्टक)	५	श्री प्रियादासजी महा० कृत	(एकादसी कौ दिन
२०५	जजौं जैति सेवक सदा छके	(वधाई)	६	श्री प्रियादासजी महा० कृत	„ „
२०६	श्री हित रूप किशोरी लाल	„	७	श्री „	(यह पद आखरी में नित होय
२०६	आज हरिवंश वढ वंश नादे	„	८	श्री „	(एकादसी की रात्रि
२०८	आयौ आयौ रे अवनि हित	„	९	श्री „	(श्रावण वदी १२ कौ दिन

श्री राधावल्लभ जी के मंदिर मे श्री सेवक जनम की मङ्गल बधाई

कार्य-क्रम पद सूची

श्री सेवक जी महाराज कौ जनम, सावन सुदी तीज कौ

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत--पद--रूप--गुरा कीर्तन

पृष्ठ सं०	(मङ्गल बधाई के पद)		पद सं०	नामावली	तिथि
२०६	आयौ आयौ है भुव हित बितरनौं	”	१०	श्रीप्रियादासजी महा०	(सावनबदी १२ कौ दिन
२१०	सजनी हे गोरी गति औरै	”	११	” ”	” ” रात्रि
२११	निर्त्तत प्रेम भरी री ढाढिनि	”	१२	श्री आनंदीबाईजी कृत	(सावनबदी १३ कौ दिन
२१५	हेली हित रसानंद घन ऊनयौ	”	१३	श्री प्रियादास जी महा० कृत ,,	,, रात्रि
२१७	अहो आजु जनम द्यौस हित	”	१४	,, ,, ,,	(सावन बदी १४ कौ दिन
२२०	सुख संपति साहौ हित रस	”	१५	,, ,, ,,	,, रात्रि
२२१	सावन सरस लुभावनौं, हित	”	१६	,, ,,	(सावन बदी १५ अमावस्या कौ दिन
२२५	सजनी हित गोरी आगमनि	”	१७	,, ,, ,,	,, रात्रि
२२६	वंदौ श्री व्यास सुवन नाद नंदे	”	१८	,, ,,	(सावन सुदी १ परवा कौ दिन
२३०	जै हरिवंश धर्म गुन गारा	”	१६	,, ,, ,,	रात्रि
२३३	आयौ दिवस मन भावनौं,	”	२०	श्रीआनंदीबाईजी कृत	(सावनसुदी २ कौ दिन
२३८	नवल बधावौ री हेली हित के	”	२१	श्री प्रियादास जी महाराज कृत	,, रात्रि
२४१	जनम दिवस सुख रमि रह्यौ	”	२२	,, ,, ,,	(सावन सुदी ३ कौ दिन
२४४	आयौ हित सुरस पिवावन हे	”	२३	,, ,, ,,	,,
२४४	कला री हित मादिक आइ प्यायौ	”	२४	,, ,, ,,	,,
२४५	फहराई (री) माई धर्म धुजा हित	”	२५	,,	(यह पद रास मंडल पै हो
२४५	हित के हित अवतार छैल ललकति	”	२६	,,	(तिथि बढ़े तौ यह पद
२४८	प्रगट्यौ जग हित जू पद आसक्ती	”	२७	,, ,,	,,
२४८	प्रगट्यौ श्री हरिवंश चरन कौ	”	२८	,, ,,	,,
२४८	हित स्वादी सबै हित स्वाद	”	२६	,, ,,	,,
२४६	प्रगट्यौ रे प्रगट्यौ आज हित	”	३०	,, ,,	,,
२४६	अद्भुत री आजु नवल बधाई	”	३१	,, ,,	,,
२५०	गौर स्याम संगम सिंधु सुरत	”	३२	,, ,,	,,
२५०	हित जु हियौ प्रगट्यौ सुव चार	”	३३	,, ,,	,,
२५१	वंदौं सेवक सुमति सार श्रुति	(मंगल)	३४	चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत	
२५२	जै जै श्री सेवक सुनाद कुल	”	३५	,, ,, ,,	
२५३	जै जै श्री सेवक निज हरिवंश	”	३६	श्री परमानन्द दास जी महाराज कृत	
२५४	धन्य वृन्दावन धाम धन्य	(कवित्त)	३७	,, ,, ,,	
२५४	हित मारग पहुँच्यौ निपट	(बधाई)	३८	चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत	
२५५	पुनि पुनि सेवक पद सिर नैहौं	”	३	,, ,, ,,	
२५५	जयति राधिकावल्लभो पद उपासी	”	४०	,, ,, ,,	
२५५	श्री हरिवंश दिखाई बटिया	”	४१	,, ,, ,,	
२५६	सेवक कौ जस गाइ कैं सेवकहि	”	४२	,, ,, ,,	

”

गोलङ

ी गोवर्द्धनलाल (छुट्टनलाल) भट्ट जी महाराज के यहाँ पद शृङ्खला

सब प्रारभ--सावन सुदी तीज से--सायकाल ५ बजे से समाज-पद-रूप गुण कीर्तन

सं०	(झूलन के पद)	पद सं०	पृष्ठ सं०	(झूलन के पद)	पद सं०
	झूलत नागरी नागर लाल (तीज कौ)	५२	१४६	झूलत कुञ्ज निकुञ्ज किशोर "	३२
	सुरङ्ग हिंडोरना माई झूलत "	८	१६२	फूल कौ हिंडोरौ बन्यौ फूलि रही "	७३
३	हिंडोरे व झूलन आई नई रितु "	१०७	१६६	रमकि झमकि झूलन में झमकि "	८७
	माई री झूलत नवल लाल "	६९	१५४	निज सुखपुञ्ज वितान कुञ्ज (एकादसीकौ)	५७
१	रसिया पिय झुलावै (नित आम्बरी में)	७८	१२८	झूलत दोऊ नवल किशोर "	४
३	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना (चौथ कौ)	५६	१५०	हौं तौ झूली री हिंडोरे रमकि "	४७
६	ललित हिंडोरो ललिता रच्यौ है "	६०	१५१	मुदित झुलावैं अप अपनें "	४८
३	गोकुल राय की पौरी रच्यौ है "	११	१६३	पवित्रा पहिरें श्रीगिरिधर आज (पवित्रा)	११
३	बोलें माई श्री वृन्दावन में मोरवा "	८४	१६३	पवित्रा पहिरें श्री स्यामा स्याम "	८
५	गोकुल चंद हिंडोरे झूलत नटवर "	८५	१५२	झूलत नागरी नागर लाल (द्वादसी कौ)	५२
	झूलत नागरी नागर लाल (पंचमी कौ)	५२	१२६	सावन सुहावनौ हो राधा जू तुम "	६
२	झूलति अति फूलति वन रानी "	५९	१४६	झूलत किशोर जोर मधुर बोलत "	४२
०	झूलत सुरङ्ग हिंडोरे मुकुट "	४४	१४२	रङ्गीले हिंडोरे रङ्गीले विहारी "	२०
५	सुरङ्ग हिंडोरना माई झूलत "	८७	१७५	झूलत फूलत सुरत हिंडोरे "	११३
७	गरजनि घन अरु दमकनि "	३५	१५५	सुखद वृन्दावन सुखद (तेरस कौ)	५६
८	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना (छठ कौ)	५६	१७२	हिंडोरे व झूलत लाल दिन दूलह "	१०२
५	झुलवहि सहचरि रङ्ग रङ्गीली "	५८	१७४	प्यारी झूलत अति रस माती "	१०६
१	सुरङ्ग हिंडोरना माई श्री वृषभान "	७	१४७	रस भरे सुरङ्ग हिंडोरे झूलत "	३४
१	हिंडोरे माई झूलत जुगल किशोर "	६९	१५१	अलक लड़ी सामन अलक लड़ी "	४६
७	अति अलबेली राधे भाँति झूलें "	३६	१४२	आज झूली री रंग हिंडोरे प्यारी "	२२
४	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना (सतमीकौ)	५६	१६०	गोर स्याम धारिन कौ लहरिया "	६६
७	झूलत खेलनि छैल छबीली "	६२	५४	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना(चौदसकौ	५६
०	रच्यौ है हिंडोरना हो वंशीवट "	१६	७३	झूलत दोऊ सुन्दर रङ्ग हिंडोरे "	१०३
६	हिंडोरना झूलत जुगल किशोर "	३३	१७३	झूलत कमल नैन सुकुमार "	१०४
९	आई परम सुहाई पावस रितु "	४१	१४३	अद्भुत बरखा आई देखौ माई "	२५
२	झूलत नागरी नागर लाल (अष्टमी कौ)	५२	१६१	झूलत दोऊ रस रङ्ग भरे "	७२
८	ललित कदंब हिंडोरे झूलैं "	६३	१६७	हा हा हरि नेंक हरें हरें झूलौ "	६०
८	श्री वृषभान की पौरी रच्यौ है "	५	१६२	झूलत तेरे नैन हिंडोरे "	७४
१२	राधे जू झूलत रमकि रमकि "	५५	१६५	मोहन झूलत रङ्ग हिंडोरे "	८६
३३	झूलत साँवरे संग गोरी "	७६	१५२	झूलत नागरी नागर ल.ल (पूर्णमासीकौ)	५२
१४	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना (नौमी कौ)	५६	१५०	झूलत सुरङ्ग हिंडोरे मुकुट "	४४
५७	आजु दोऊ झूलत रति रस सानें "	६१	१६७	आजु सलूनौं मंगल माई (राखी)	१२
३७	झूलत प्रिया सभागी मुरली धरन "	१४	१६७	आजु मंगल चौस सलूनौं "	१०
६९	झूलत लाड़िलो नवल विहारी "	९६	१२७	झूलत दंपति अति रङ्ग भीनें (झूलन)	३
६७	हा हा वलि नेंक हरें हरें झूलौ "	६०	१६२	झूलत तेरे नयन हिंडोरे "	७६
६१	दूलह दुलहिनि सुरत हिंडोरे "	७१	१४३	हिंडोरे दोऊ झूलत री सुरङ्ग "	२६
४	सुखद वृन्दावन सुखद जमुना (दसमीकौ)	५६	१४८	सौं तू राखि लै रीं झोटा तरल '	३६
			१७८	लाल मेरी पिंडरी पिरान लगी '	१०१

श्री राधा वल्लभ जी के मन्दिर में महोत्सव कार्य क्रम सूची

पृष्ठ संख्या—पद नामावलि–तिथि

१६१ पवित्रा के पद [सावन सुदी एकादसी को] समस्त रा

७० रच्या है हिंडोरना हो नशीवट — श्री सहचरि सुख

७८ लाल भरी पिंडुरी पि न लगी — श्री वृज जीवनलाल

८८ सा न रागि ले रा झाना नरल — श्री कल्याण जी म

८८ तेंडा झुलावना मैनू भावै — श्री वृज जीवनलाल

८८ लाल कें गाइ चराई कै गिरि — चाचा श्री वृन्दावनद

९५ राखी [रक्षा] बन्धन के पद—सावन सुदी पूर्णमासी कौ

२०० आनन्द आजु नन्द के द्वार — गो श्री हित हरिवंश

२०१ श्री सेवक जनम की मङ्गल वधाई—सावन वदी ११ से

अशुद्धि शुद्धि पत्रम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
२—	५—	मोहै—	मोहै ।	१०४—	१—
८—	१६—	फूलि—	फूली	११४—	१६—
११—	५—	जाग—	जागि	१३३—	६—
१६—	१७—	काफ—	काफी	१४०—	१२—
१७—	१२—	हँसि—	हँसि	१४६—	१—
३०—	८—	मोहन	मोहन	१४८—	१४—
३०—	२४—	महाचरी—	महचरी	१५०—	१५—
३५—	१६—	अम्बिलोकैं—	अवलोकैं	७६—	१७—
३६—	४—	हँस—	हँस	१५४—	२२—
३६—	११—	कलि—	केलि	१५६—	१८—
४०—	१—	भिरना—	भिरना	१६०—	१८—
४१—	१६—	मधुप—	मधुप	१६८—	६—
४७—	१६—	न—	धन	१७४—	७—
४८—	५—	जातन—	जात न	१७४—	१७—
५३—	१—	विविधि	त्रिविधि	१७६—	१—
५३—	६—	गविद—	गोविंद	१७६—	१८—
५४—	८—	ग्वनी खन—	रवनी रवन	१८०—	२३—
५५—	११—	भ्रसन—	भ्रमन	१८२—	१४—
५५—	१७—	०—	२६	१८२—	१६—
५५—	२१—	श्रवन—	श्रवत	१८६—	१६—
५६—	११—	सहसरी	महचरी	२०३—	२१—
५६—	१४—	वलि बलि—	वलि	२०५—	१६—
५६—	२३—	कौन—	कौ न	२०६—	१३—
५६—	२३—	भीर—	गंभीर	२०८—	—१३
६०—	२१—	स वरि—	साँवरि	२०६—	१५—
६४—	१७—	तलय—	तलप	२१३=	१=
६४—	२०—	छकि—	छकी	२१६—	१=
६५—	१५—	२४—	२५	२१६—	१५—
६६—	७—	ज—	जी	२२८—	४—
७१—	१५—	४६—	४७	२४२—	१६—
७७—	३—	चलाव—	चलावैं	२५४—	२४—
[illegible]	६	जने	पढे	५३	४
	६	मक	मेक	५५	१

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य
श्रीमद् गोस्वामि मुकुन्दलालजी महाराज

पृष्ठ
८—
१८—
२४—
२६—
२७—
३०—
३०—
३४—
३६—
३६—
४०—
४१—
४७—
४८—
४३—
४३—
४५—
४५—
४५—
४५—
४६—
४६—
४६—
४८—
६०—
६४—
६४—
६५—
६६—
७१—
७७

श्री हित राधावल्लभो जयति

श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति

श्रृंगार–रस–सागर

(द्वितीय खण्ड)

(श्री वृन्दावन के अनन्य रसिकों की वाणियों का संग्रह)

फूल रचना के पद

गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग सारङ्ग

रन की लीला लालहि भावै। पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहि नख सिख प्रिया जनावै ॥ सकुच न सकत प्रगट परिरम्भन, अलि लम्पट दुरि धावै ॥ संभ्रम देत कुलकि कल कामिनि, रति रन कलह मचावै ॥ उलटी सबै समुझि नैननि में, अञ्जन रेख बनावै। जै श्री हित हरिवंश प्रीति रीति बस, सजनी श्याम कहावै ॥१॥

गो० श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग केदारौ

सुनि सखी एक कौतुक नीकौ, पिय आये जब रवि अथयौ।
कमलनि कमल पिय धरनी सुत, कमलनि में अति उदित भयौ ॥
कमलनि कमल गह्यौ कमला निधि, विमन कला निधि हास ठयौ।
जै श्रीकृष्णदास हितप्रीति परस्पर, नवल लाल उर लाय लयौ ॥२॥

गो० श्री दामोदरवरजी महाराज कृत—राग आसावरी (फूल सज्या कौ)

सुमननि रची सेज, सुभ चलि बिलसनि कौं प्यारी नेग तेरौ।
सघन कुंज मध्य तहाँ कुसुम लता घेरि रही, या छवि उपमा कौं

में जग हेरौ ॥ तो बिनु छिनु कल न परै प्रिये पाऊँ धारि सुख देऊँ अनेरौ । जै श्री दामोदर हित मिलि चपल चली यह सुख सर्वसु मेरौ ॥३॥

गो० श्री रूपलालजी महाराज कृत—राग राइसौ

फूलनि कुंज गुलाब की वनक वनी अति सोहै फूलनि सौं बैठी प्रिया लाल तहाँ छवि जोहै ॥ फूल चँवेली पीत के भूषन भूषित अङ्गा । सीस चन्द्रिका झुकि रही पुहुप मालती संगा ॥ वसन अरगजा रँग रँगे तनसुख प्रभा प्रकासी । महकनि सरस सुगंध की लतनि लतनि आभासी ॥ पान भरे मुख चन्द्रमा मृदु मृदु हँसन सुहाई । किरनि प्रकासी विपिन में अलि उड़गन मन भाई ॥ राग जमायौ राइसौ साज समाजनि लीयैं । सब सखि मन अनुसारनी रिझवत तन मन दीयैं ॥ पुहुपांजुलि करि वारनैं निर्तति गुननि प्रवीना । जै श्री रूपलाल हित सहचरी निकट सुनावत वीना ॥४॥

राग विलावल—हिय फूल जिय फूल, फूल तन मन दृगनि अधर धरि खराड वीरी खवाई । फूल सौं पिय करि प्रिया जुत प्राणप्रिय फूल सौं आनि राजति सुहाई ॥ वसन भूषन फूल फूल अलि जग मगत साज सजि राग रागिनि जमाई । जै श्री लाल हित रूप फूलनि सहित जूथ करि कर ते फूलनि माल रीझि पाई ॥५॥

राग राइसौ—आजु विहारिनि लाड़िली निरखि अनूपम भाँति । नैन वैन मुसिक्यान में रँगी रँगीली कांति ॥ प्रीतम लाड़ गहेल री सुरत सिंधु अनुकूली । प्रेम रूप अनुराग की आनन्द बेली फूली ॥ पुष्पनि आभूषन धरै राजत है अङ्ग

अङ्गा। पान भरे मुख चन्द की जोति प्रकाश अभङ्गा॥ भुजा धरें पिय अंस पै चितवनि कछु अलसौंहीं। जै श्री रूपलाल हित हिय बसौ लाल लड़ैती यौंहीं ॥६॥

राग पूर्वी—फूल कुंज विवि फूलनि हेरत भूषन फूल हार हिय धारैं। चलति लटकि लड़काइ लाड़िली निरषि हरषि पुहुपांजुलि वारैं॥ फूलनि गेंद उछारत कमलनि गुच्छ निहारि जीति अरु हारैं। लाल रूप अलि निर्तत गावत वरषावत गुन गननि अपारैं ॥७॥

राग गौरी—बैठे मणि मय खचित बँगला प्रफुलित चहुँ दिसि मधि फुलवारी। रागनि अनुरागिनि अलि गावति निर्तति पुष्पांजुलि भरि वारी॥ अंस भुजा कर कमल फिरावत मृदु वतरावत मुसिकनि हारी। श्री रूपलाल हित पान खवावत निरषि निरषि छवि पर वलिहारी ॥८॥

राग धनाश्री—निभृत निकुंज प्रिया पिय राजैं। रतन जटित सिंघासन आसन प्रेम नृपति दल साजैं॥ मधि फुलवारि फुहारे मणि मय छूटत चहुँ दिसि भ्राजैं। ललितादिक अलि निर्तति गावत राग रागिनी गाजैं॥ अलसौंहैं वतरात लाड़िले कोटि काम लखि लाजैं। जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभङ्गी मुरली कल रव बाजैं ॥६॥

राग विहागरो—राजत फूल कुंज पिय प्यारी। भूषन भूषित अङ्ग अङ्ग छवि तन दुति दीपति न्यारी॥ फूल महल छाजैं अति राजैं फूलनि खंभ तिवारी। फूलनि कलस पताका झालर फूलनि बहु रङ्ग जारी॥ फूलनि हँसनि लसनि मृदु बोलनि

चितवनि अति छबि प्यारी । फूल बीजना फूल चँवर कर फूली संग सहचारी ॥ फूलनि सौं मिलति अति गावति आनन्द मगन महारी । लाल रूप हित दंपति संपति निरषि निरषि बलिहारी ॥१०॥

राग पूर्वी—आजु तौ विहारिनि छबीली भुज अंस धरैं राजत विहारी फुलवारी कुंज आइ कैं । अति अलबेले लड़काति जात बात बात निरखि सिहात विवि छके रूप चाइ कैं ॥ कमल फिराइ मुसिकाइ भृकुटि नचाइ कोटि मनमथ मंद हरि हरा भाइ कैं । मधुर मधुर स्वर झुकि झुकि वृन्द वृन्द हित अलि रूप वलि वलि गुन गाइ कैं ॥११॥

आजु फुलवारि दोऊ राजत लड़ैती लाल अति अनुराग भरे रूप रस रङ्ग में । आनन्द के कन्द रस प्रेम सार विवि हार वार वार प्रभा छवि उठै अङ्ग अङ्ग में ॥ पाछैं अलि वृन्द गावैं नेह लता सरसावैं प्रेम सुख वरषावैं अद्भुत उमंग में । हित अलि रूप वलि वलि यह सुख हेरि वेरि वेरि छकि छकि सहचरि संग में ॥१२॥

कवित्त—आजु फुलवारी मध्य राजत लड़ैती लाल, भूषन वसन फूल फूले तन मन हैं । छवि की तरङ्ग छटा उठै छिन छिन अङ्ग रङ्ग रस रूप भूप छायौ वन वन है ॥ फूलनि की छरी लिये विवि कर कंज दोऊ उपमा न वनैं कोऊ सखी लाषि तन है । हित रूपलाल प्यारौ ललित त्रिभङ्गी पिय छक्यौ छवि दामिनी निकर नव घन है ॥१३॥

राग सारङ्ग—लता माधुरी कुंज सुहाई । निकट सरोवर प्रिया नाम कौ निज कर रचना लाल वनाई ॥ सीतल मंद सुगंध

पवन अति पुष्प राग रूखी छाई । नव पल्लव ... मुखानल तापर प्यारी कुँवर कन्हाई ॥ भुज जोरैं मृदु वेनु बजावैं गावैं रीझि रीझि सुखदाई। बीन मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग धुनि ललिता-दिक अनुकूल सुहाई ॥ ... रस भीने लीनें दम्पति निरखि निरखि मधु पाई । जै श्री रूपलाल हित चित मुख बाढ्यौ उमगि चल्यौ अनुराग न माई ॥१४॥

गो० श्री किशोरीलालजी महाराज कृत—राग विहागरौ

फूल कुंज बैठे राजैं राधा हरि साई । फूलनि की रचना बहु विचित्र बनाई ॥ फूलनि कौ छतरौंटा फूलनि की सारी । फूलनि कंचुकी अति सुभग सँवारी ॥ फूलनि की पाग सिर सोहति विहारी । फूलनि कौ कंचुक काछनी छवि भारी ॥ फूलनिकौ कटि पटुका अधिक बिराजैं। फूल उपरैंना ओढै प्यारी पिय राजैं ॥ राधिका रसिक लाल फूले हैं महाई । फूलनि के आभूषन सोभा अधिकाई ॥ फूलनि की छड़ी कर गेंदुक सुहाई । फूले फूले गावैं उर फूले न समाई ॥ एकनि पै फूलनि बिजन छवि पावैं । एक कर लिये फूल चँवर दुरावैं ॥ डोलें अलबेली भांति फूल लै सदन । क्रीड़ा मन भाई करें लाजत मदन ॥ कोक रस घातनि फूले स्यामा राधा गोरी । जै श्री किशोरी लाल हित रूप निधि जोरी ॥१५॥

गो० श्री हित नवनीत जी महाराज कृत—राग विहागरौ (शय्या समय)

देखौ सखी फूलनि कुंज बनाई । तापर सघन वृच्छ फूलनि के चहुँ ओर रहे छाई ॥ डार डार पर पंछी बोलत दंपति केलि सुहाई । झरना झरत छुटत जल जंत्रनि मनों वरषा रितु आई ॥

फूलनि सेज रची तिहि भीतर तहां पौढे सुखदाई । मुख सौं मुख नैननि सौं नैना उर सौं उर लपटाई ॥ हरिवंशी निज प्रिय सखी मुख अविलोकति मन लाई । जै श्री हित नव नीत करी कृपा मोहि दैके सैन बुलाई ॥१६॥

श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत—राग कान्हरौ (शयन समय)

फूलनि की कुंज ऐन फूलनि की रची सैन फूलनि के भूषन वसन फूल मन में । फूल ही के चितवनि मुसिकनि फूल ही की फूलि फूलि लपटात फूल के मदन में ॥ फूलनि के हाव भाव फूलनि कौ बढ्यौ चाव फूले फूल देखि ध्रुव उभय तन वन में । बरपत सुख फूल सुरत हिंडोरे भूल फूलनि की दामिनी लसत फूल घन में ॥१७॥

राग विलावल—दुलहिनि मन मोहिनी दुलहु रसिक लाल । रची है सेज सुहावनी दल लै लै कंज गुलाल ॥ रँगीली भामिनी ॥ टेक ॥ अञ्चल नैननि चितवनी बिच भौंहनि की भंग । हुलसि हुलसि पिय को हियौ भर्यौ रंग अनङ्ग ॥ कवहुँ कवहुँ लपटि जात दशन वसन जोरि । पीवत रस माधुरी दोऊ नागर नवल किशोरि ॥ सुरत रङ्ग के तरंग उपजत अङ्ग अङ्ग । हित ध्रुव वलि जात सखी निरखि सुख अभङ्ग ॥१८॥

श्री हरिचन्द महाराज जी कृत—पद

फूल कौ सिंगार करत अपने हाथ प्यारौ । फूलन की कलियन को आभरन सँवारौ ॥ पाटी पारि आपने हाथ वैनी गूँथि बनावै । शीश फूल करन फूल लै लै पहिरावै ॥ कंचुकी पहिरावत में चपलई कछु कीन्हीं । प्यारी मुसकाय आंखि नीची करि लीन्हीं ॥ किंकिनि पहिराय भवा लहँगा पहिरायौ । देखि

देखि मुदित होत प्यारो मन भायौ ॥ पायल पहिरावन कौ जबै चित कीनौं। मान प्यारी सोचि चरन तब छिपाय लीनौं ॥ प्यारी कौ संकोच जानि प्यारे इमि भाख्यौ। मान समय कोटि वार इनहिं सीस राख्यौ ॥ पायल पग बाँधि फूल माला पहिराई। अपने कर नन्दलाल आरसी दिखाई ॥ प्यारी तब धाइ पिया कंठहि लपटाई। हरीचन्द वार वार लखि कै बलि जाई ॥१६॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग केदारो

फूल बैठे प्यारी लाल फूली कुंज बनी। मुसिकनि फूल झरें दुहुँ मुख तें फूलनि तलप ठनी ॥ फूलनि की बैनी वनिता सिर, फूल मुकट सिर सुभग धनीं। फूलनि सारी फूल उपरैना फूलनि की काछनीं ॥ फूल प्रकाश रु विवि तन की दुति अद्भुत कहि न परत सजनी। अखियनि अविलोकतहिं यह छवि गई गरि मैंन मनी ॥ सेज सुदेश विराजत रचना विच विच रची लाल कनी। दामोदर हित युगल हिये की फूल न जात भनी ॥२०॥

राग कान्हरौ—फूलनि कौ कुंज धाम देखि सखी अभिराम वैठे दोऊ स्यामा स्याम तन मन फूले। फूलनि के भूषन कर फूलनि के हार उर फूले फूले गावें मुनि मैंन गन भूले ॥ फूलनि की सेज कल किशलय कमल दल वुरकि सुगंधि घनसार जल कूले ॥ इत उत फूल बनें फूलनि वितान तनें दामोदर हित रंग रंग फूल झूले ॥२१॥

बैठे फूल रचना स्याम। सङ्ग प्यारी राधा नागरि अङ्ग अङ्ग अभिराम ॥ करत हास रसाल राजत रजनी कर मुख

कांति । ऐनी चहुँ फूलनि पुहुप सोभा झिलमिली बहु भांति ॥ कबहुँ कबहुँ प्रेम भीनें बातें दोऊ मिलि करैं । कबहुँ बातनि रंग बाढ़े लटकि झकोरे भरैं ॥ कबहुँ प्यारी बदन सुन्दर देत बीरी लाल । कबहुँ फूल सुरङ्ग ठैंढी कर बनावत माल ॥ फूल से कोमल युगल तन फूल मन रस धाम । देखि यह छवि हित दामोदर कोटि वारौं काम ॥२२॥

बैठे दोऊ लाल बाल फूले फूल रचना पै बलि बलि गई आलु की छवि माहि । गोरे अंस पर सखी श्याम सुभग भुजा साँवरे सुकंठ गोरे भुज सुखदाई ॥ दच्छिण कर कंदुक फूलन को देत लेत पिय वाम सुहाई । दामोदर हित ये रङ्ग भीनें बसहु हमहु को हियें सदाई ॥२३॥

श्री (हरिराम) व्यास जी महाराज कृत—पद

फूलन कौ भवन फूलनि कौ पवन बहे, फूलनि की सेज रचि फूलनि के चँदोये । फूलनि की सारी चोली पहिरैं प्यारी, देखत फूले मोहन के नैननि के कोये ॥ फूले उरज करज परसत ही, पान करत फूले अधर निचोये । यह सुख निरखि 'व्यास सखी' फूली फूले अङ्ग न मात सकल दुख खोये ॥२४॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत —राग सारङ्ग

फूलि चंप थलिन मांझ लता महल माधुरी कौ मध्य सौंन जुही की रचना आलिनु गुहि बनाई । रंगीली विधि तिवारी जारी तापैं बंगला अरु अटारी नव निकुंज सोभा स्याम स्यामा मन भाई ॥ कमल दल की सेज ऊपर दल गुलाब के बिछाये तकिया दयें पंखा फूलनि रीझि अङ्ग को सुहाई । झलकैं रूप

कूप सुतनि जलनि की फुलवारी विविधि रितु वसंत चहुँघा कुसुम वरषा वरषाई ॥२५॥

राग कान्हरौ—फूलनि के भूषन पट फूलनि की सेज सुभग फूले स्यामा स्याम अङ्ग रंग आजु फूल महल। फूले कुंजमंजु गुंजत अलि वृन्दावन हँसत लसत युगल फँसत रीझ रीझ रूप चहल ॥ फूले नैंन फूले चैंन चित के चोर भरत राग हियनि ढराति करत करनि सुरत टहल। सहचरि सुख वर विहार वंशी वट यमुना तट वरसैं फूल ललितादि हरषि निरषि मदन गहल ॥२६॥

राग सारंग—वैठे फूल महल पिय प्यारी फूली वन संपति फुलवारी। फूलनि के भूषन निजु कर गुहि पहिरावत पहिरत सनमुख छकि छकि पलक टरत नहिं टारी ॥ फूली ललित अली ललितादिक फूलत लाड टहल रुचिकारी। फूली चटक चैन वृन्दा-वन जोति चंद्रिका फूली नभ में फूली आनंद रूप उजारी ॥ फूलनि हार चारु वदलत उर उत हरि इत वृषभानु दुलारी। सहचरि सुख फूली रति नैंननि मैंन चैंन फूले अङ्ग अङ्गनि फूले राग सुहाग विहारी ॥२७॥

श्री प्रेमदास महाराज जी कृत—राग काफी

खरी सुकुमारी फुलवारी में प्यारी। फूल तन जोवन वारी ॥ कहत प्रेम सों मधुप विहारी। अरी याकें मति गडि जाइ पहुप पगारी ॥२८॥

मोतिया की जाली में गुलाव ही के फूल खचे बंगला में रचे सौंन जुही के सु द्वार हैं। कंज के कमल राजैं माधवी के छज्जा छाजैं पीत चंवेली के लटकन अति चारु है॥ फूल के सिंघासन पै

फूल रहे स्यामा स्याम फूलनि के अभिराम सोभित सिगार है प्रेमदासि हित वारी फूली अलि फुलवारी कुंज केलि फूली भारी झूलें रति मार है ॥२६॥

फूलन कौ मुकट विराजै सीस सांवरे के प्यारी सजें फूलनि की चंद्रिका नवीन है। फूलनि के भूषन वसन सोहैं फूलनि की फूली फूली डारैं कर लीन है॥ फूलनि सौं निर्त करैं फूले फूले मन हरें प्रेम दासि हित फूली संग रंग भीन है। फूलनि की कुंज मंजु गुंज अलि पुंज पुंज फूली फूली गावैं अलि बीन में प्रवीन है ॥३०॥

राग कान्हरौ—फूलनि सौं फूली कुंज फूलनि की सेज मंजु फूले तहां सुख पुंज स्यामा स्याम रंग में। फूले नैंन रूप मूल हांसि माहि झरैं फूल भूषन दुकूल सोहैं फूलनि के अङ्ग में॥ फूली फिरैं वैंनी चारु फूलनि के डुलैं हार फूल भरी धरी बाल लाल लैं उछंग में। प्रेमदासि हित वारी फूलैं हाव भाव भारी केलि वेलि फूली न्यारी छवि के तरंग में ॥३१॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत—गुलाब कुँज की—माँझ

फूल गुलाब कुंज मंजुल में फूले हैं पिय प्यारी। फूली है चन्द चाँदनी ता मधि फूली फूल तिवारी॥ फूलनि के तकिया लागि सोहैं छकियाँ सखियाँ लखियाँ री। वल्लभ रसिक बदन चन्द तें छवि की छुटहिं छटा री ॥१॥ फूलनि की पिछवाई ढारी आलिनु जालिनु वारी। फूलनि के छज्जे तर भौंरा भौंरा गुंजनि न्यारी॥ फूलनि साएवान तने कलसांनि फूल सिर धारी। वल्लभ रसिक फूले निसि कुँहुकत कल कोकिल शुक सारी ॥२॥ चमकहि चन्द अमन्द किरनि सों पुलिन चाँदनी सारी। छये

वितान तने अम्बर पर तारा पति तारा री ॥ फूली रितु रति पति अति फूल्यौ त्रिविधि पवन सुखकारी । वल्लभ रसिक सरोवर मान अमानति फूलनि कारी ॥३॥ फूल सवीह फवीनीमाँ गल युगल डोरिया धारी । फूली भावनि चोली दावनि फूल कसीदा सारी ॥ फूलनि के गहने मणि गहने फूलनि जाग पगिया री । वल्लभ रसिक अतर अम्बर तर लपट फूल चहुँ-धाँरी ॥४॥ फूल गुलाव आवसी आली लियें दल गुलाव माला री । फूली कर करपूर दांनि लै लै गुलाव सी सारी ॥ चौंरनि ढारहि भौंरनि टारहि प्रेम भोर में डारी । वल्लभ रसिक चाँदनी सहचरि सूरत साँचे ढारी ॥५॥ अली मृदङ्ग वजावहि गावहिं तानैं भाइ उतारी । फूलीं चहुँ दिसि कुंज कनातें यातें धुनि गुंजारी ॥ आली के नृत्यहि निहारि निज हारहि देत उतारी । वल्लभ रसिक मुसिकि यारहि उर रहि हारहि करांत निहारी ॥६॥ फूली रस सींवाँ प्यारी निज भुज पिय ग्रीवा धारी । फूली पिय भुज तिय भुज तर रहे लहि जुग धन कल सारी ॥ श्री वृन्दावन वेलिनु हेलिनु की फूलन परत सँभारी । वल्लभ रसिक अली कर दर्पन ज्यों दरसन पनवारी ॥७॥ पियत ही आसव छकनि थकनि मिसु पिय तन हारि निहारी । प्यारी अद्भुत रीति जीति धृत विकसि निकसि असवारी ॥ गह्यो मौन मञ्जीर धीर किंकिनि कोलाहल कारी । वेहद मदन सदन घन लूटत वल्लभ रसिक विहारी ॥८॥३२॥

श्री हरि नारायन महाराज जी कृत—राग केदारौ

फूली फूली डोलत कुञ्ज सदन मैं मदन मोहन रस माती ।
जिन वस किये विहारी विहारिनि मंद मंद मुसिकाती ॥

किशोर किशोरी बाँहाँ जोरी लटकत चलति लड़ैती लड़काती।
हरिनारायन स्यामदास के प्रभु पर सुख बरषति अनभांती ॥३३॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

देखि री देखि पिय भवन सुख कारी। फूलन सों रचि पचि कीने है श्री वृषभानु दुलारी ॥१॥ लाल गुलाल के खंभ मनोहर छाजेन की छबि भारी। चंपक बकुल गुलाब निवारौ कीनी है चित्रसारी ॥२॥ कुन्द माल की बनी तिवारी विविध पोहोप की जारी। सुमन यूथ के कलशा शोभित तापर वंदन वारी ॥३॥ झूँमि रहे चहुँ दिसि झूँमका गेंदन की छबि न्यारी। खेलत तामें लाल लाड़िली मुदित भरत अङ्कवारी ॥४॥ फूलन की पाग फूलन के चोलना फूलन पटुका धारी। फूलन के लहँगा सारी मध्य फूलन अङ्गिया कारी ॥५॥ फूलन की सेज फूलन के बँधना फूलन की चौकी मन हारी। फूलन बनें गेंदुवा तकिया चहुँ दिशि फूल रही फुलवारी ॥६॥ फूलन पंखा कर लिये ठाढ़ी फूल रहीं ब्रज नारी। गोविंद प्रभु फूले अति शोभित रस फूले श्री गोवर्द्धन धारी ॥७॥३४॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज के लिये यह पद (भेट कीहैं) राग कैदारो

ये दोऊ बैठे री कुसुम कुंज भवन। विविधि रंग पुहुपनि के भूषण पिय साजत प्यारी तन ॥ लड़ैती झुकि झुकि जात मंद मंद मुसिकात बलैयाँ लेत श्याम घन। श्री हरिदास के स्वामी श्यामा कुंज विहारिनि पर वारौं कोटि मदन गन ॥३५॥

श्री बिहारिनदास जी महाराज कृत—राग केदारो

फूलन की सारी प्यारी पहिरे तन। फूलन की कंचुकी फूलन की ओढ़नी अङ्ग अङ्ग फूले फूल ललना के मन ॥ फूलन के उर

हार फूलन की माला फूलन के आभरन केश गूँथे फूल घन। फूलन के हाव भाव फूलन के चौज चाव विविधि वरण फूले फूल श्री वृन्दावन ॥ फूली फूली सखी आई बीन बीन फूल ल्याई पञ्चम राग सुहाई रचित वितान गन। फूल सी लाड़िली पाई फूल सौं लाड़ लड़ाई श्री विहारिनि दासी गाई फूले फूल प्रेम पन ॥३६॥

राग कल्यान—फूले फूल रमीले तन में सब इनही के मन की फूल। नैंन कमल मुख कमल सखी कुच कमलनि ऊपर मनहुँ अलक अलि भूल ॥ चरन कमल कर कमलनि पूजत फूलत सिथिल दुकूल। श्री विहारिनदास सुदान मगन मन नव निकुंज मंजु मिलि फूलत गहि भुज मूल ॥३७॥

श्री नागरीदास महाराज जी कृत—राग वसंत

फूलनि के नवसत तन साजैं। फूलनि की कंचुकी फूलनि कौ लहँगा फूलनि की सारी अङ्ग अङ्ग विराजैं ॥ कंकन वलय किंकिनी नूपुर फूल वदावनि फूलही सौं बाजैं। फूले आलिंगन फूलही के चुँवन फूले सुख मधु पिय फूल ही सौं भ्राजैं ॥ फूलही के निकुँज घर फूल की तलप पर फूलही वरपत फूलही के काजैं। फूल के हाउलास फूली सखी आस पास नागरीदास फूले फूल खेल काजैं ॥३८॥

राग टोड़ी—फूलनि के हार डोर फूलनि की माला, फूलनि सौं रसिक नव रचित रसाला। फूलनि के आभरन फूल गूँथे सीस घन, फूलनि की सारी चोली फूली नव बाला ॥ फूलनि की सेज बनी फूल बैठे धन धनी, फूलनि के महल विचित्र विशाला।

फूल सों विलास हास फूली श्री नागरीदास, फूलनि की छवि देखि भई निहाला ॥३६॥

श्री सरसदास महाराज जी कृत-राग पूर्वी

गोरे तन में प्रतिविंब फूल बीनत लाल विहारी। जब जब हाथ आवत नाहीं तब हँसि जात प्रियारी ॥ अरबराय अङ्क भरत छिन छिन करत मनुहारी। सुरत विवस विहरत दोऊ प्रीतम सरस दास बलिहारी ॥४०॥

लाल प्रिया कौ सिंगार बनावत। कोमल कर कुसुमन कच गूँथत, मृग मद आड़ रचित सुख पावत ॥ अञ्जन मन रञ्जन नख बर करि चित्र बनाइ बनाइ रिझावत। लेत बलाइ भाव नव उपजत, रीझि रसाल माल पहिरावत ॥ अति आतुर आसक्त दीन भये, चितवत कुँवरि कुँवर मन भावत। नैनन में मुसक्यात जानि पिय, प्रेम विवस हँसि कंठ लगावत ॥ रूप रंग सींवाँ डारि भुज ग्रीवा, हँसत परस्पर मदन लड़ावत। सरसदास सुख निरखि निहाल भये, गई निशा नव गुन उपजावत ॥४१॥

पद—वे वाके वे वाके नैनन प्रतिविम्ब में, सिंगार जनावत। चतुर रूप गुन रासि सुघर दोऊ, अपने कर रचि रचि सखिहि दिखावत ॥ इतहि सँभारि विलोकत उन तन चितै चितै चित चौंप बढावत। सरसदास सुख रासि प्रिया पिय पुलकि पुलकि हिलि मिलि मधुरे सुर गावत ॥४२॥

श्री ललित किशोरी देव जी महाराज कृत-पद

फूल महल फूले पिय प्यारी। फूली सेज फूल बन वर्षत

फूले फूल भये हितकारी ॥ फूल की मुसकनि चितवन फूल की फूली फूल अंसन भुज धारी । फूली ललित लाल लखि फूलन फूली फूल फूलन फुलवारी ॥४३॥

श्री रसिकरूप जी महाराज कृत—पद

विहारी जू के अङ्क में अलबेली । कुन्दन लता तमाल स्याम सौं लपटी चारु नवेली ॥ फूल दल फल ललित अङ्गन सुरति रंग रस झेली । रसिक रूप वृन्दावन रानी ललित सु-संग महेली ॥४४॥

आजु वदन ते वर्षत फूल । प्रमुदित मानौं कली कुन्दन की अलकैं अलि रहे झूलि ॥ महल निकुंज सुरङ्ग सेज पर गौर स्याम परसत भुज मूल । रसिक रूप हरिदासि निरखि सु-छवि सदा अङ्ग अङ्ग अनुकूल ॥४५॥

श्री रूप रसिक महाराज जी कृत—राग कान्हरी

ककरेजी सारी तन पहिरैं छबीली प्यारी सौंने की किनारी तासौं मिलि छवि छाई है । गोरे गोल कुचन पै कंचुकी कसूभी झीनी सौंधे भीनी खमकि खयेन पै खुँभाई है ॥ तैसौ अत-लस्यौ लस्यौ कस्यौ कटि लहँगा सु महँगा सुमोल मंजु रंजु रंजुताई है । मादेई सिंगार साज स्यामा जू विराजत हैं रसिक स्वरूप सोभा देखि कै लुभाई है ॥४६॥

कोकनद केतकी कदंब कुरविन्द कुन्द केवरा कनीर केरि केसरि सुमन में । मौलिसिरि मल्ली मालती चमेली चंपक में जुही मैं लुभाय आय लुभ्यौ है लतन में ॥ अङ्ग अङ्ग माधुरी के झोरन में झूमि झूमि घूमि घूमि सरस सुगंधन के गन में ।

रहै मडराने मन मोहन को मन महा रसिक भयो री तेरे रूप तन वन मे ॥४७॥

राग गौरी—कवन तप कीनों नथ के मोती। अधर सुधा अचवत रहै निसि दिन नैंक न परत बिछोती॥ पल पल मांहि पियाधर परसे सरसे सुख सर सोती। रूप रसिक अधिकहि कहि अति बढ़त जात नित जोती ॥४८॥

श्री हित वल्लभ महाराज जी कृत—राग काफी

बनां फुलौंदा बंगला जोर। लाल बाग गुल लाल चँवेली सीस फूल सिर मोर॥ जरद दुपट्टा पगड़ी जामा जुलफैं जुलम करोर। वल्लभ सखी हित साहिब फूली अंबुज दृग झक-झोर ॥४९॥

राग केदारो—फूलनि फूली हो देखौ फूल कुंज में गौर स्याम तन मन दोऊ। गौर स्याम सिंगार विराजत रचना गौर स्याम सोऊ॥ गौर स्याम सखी गौर स्याम कौं दुलरावति अद्भुत रस भोऊ। हित वल्लभ छवि रूप निहारत तृण तोरत बलि कोऊ कोऊ ॥५०॥

राग काफ—सखियन फूलनि कुँज सजाई। सौन जुही की गुही मरगोलैं कदली खंभ जराव जराई॥ बिच मोर मोखनि मुखरैं मनु ऊपर पत्रनु छजलि लगाई। बहु विधि फूल जाल चहुँ दिसि तैं तिन बिच मन की मणि झलकाई॥ फूलनि चिक फूलनि पिक सोहैं पिक बैनी मन अधिक सुहाई। कोटि कगूँरनि भौंरनि तैं मनों गावत हित दंपति ठकुराई॥ छात छबाव परदा पखरिन के फूल कलिनु छिटकी पिछवाई। वल्लभ युगल फूल फवि पाटनि राधा वल्लभ राजत राई ॥५१॥

श्री सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत—राग केदारौ

फूली फूली डारें फूलनि की कर फूले कान्ह फूले बोलत। फूली राधिका फूलीं सखी संग फूली कुंज मधि डोलत॥ फूले पिक चात्रिक कोकिल मोर फूले मधुकर मुरली धुनि सुनि फूले मुदित कलोलत। सूरदास मदन मोहन स्यामा फूले फूले छोरि फेंट तें लेत आग्रन वैनी गुहन मिस फूल्यौ वदन टक टोलत ॥५२॥

श्री पिय भगवान मदन मोहनलाल जी महाराज कृत—राग बिहागरौ

फूलनि के भूषन पहिर सब अङ्गनि फूलनि तलप पर बैठे पिय प्यारी। तेसीय झलकि अति गौर स्याम अङ्गनि की मानौं माई फूलि रही ससि उजियारी॥ फूली सखी बीरी देति फूले हाथनि सों लेति फूल सों परसि हंसि कहें हा हा री। पिय भगवान प्यारौ मदन मोहन लाल दृगनि की टक टकी टरत न टारी ॥५३॥

श्री नंददास जी महाराज कृत—राग बिहागरौ

फूलनि सों वैंनी गुही फूलनि की आङ्गिया, फूलनि की सारी मानौ फूली फुलवारी। फूलनि की दुलरी हमेल हार फूलनि के फूलनि की चौकी चारु फूलनि के बाजू वन्द और गजरारी॥ फूलनि के तरौना कुंडल और फूलनि के फूलनि की किंकिनी सरस सँवारी॥ फूल महल में फूली है राधिका प्यारी फूले फूले नन्ददास लेत बलिहारी ॥५४॥

श्री हित रामराइ महाराज जी कृत—राग बिहागरौ

फूले फूले फिरत स्यामा स्याम फूली कुंजनि माहीं। फूल्यौ सिंगार हार हमेल फूली फूली करत केलि हँसत घन दामिनी

ज्यों लसत दोऊ किये गरवाहीं ॥ फूली जौन्ह जगमगात तामें फूली वदन क्रांति कुमुद कली फूली अलि तन मन हुलसाहीं । कहि भगवान हित रामराइ प्रभु देखि फूल्यौ श्री वृन्दावन पुहुप वृष्टि होत तहाँ जहीं जहीं चलि जाहीं ॥५५॥

चाचा श्री वृन्दावनदास महाराज जी कृत--राग मारू

बैठे फूल कुंज पिय प्यारी अति फूली चंद उजियारी । यह मधु मास अमी ससि बरषतु कानन सोभा भारी ॥१॥ जहाँ तरु जाति अनेक भांति नव बल्ली प्रफुलित ऐसें । मदन के सदन वधावौ लखि युवती जन प्रमुदित जैसें ॥२॥ कैं रति नाथ बसंत सखा मिलि सभा विचित्र बनाई । केकी कीर बिरद पढ़ै मनु कोकिल दुन्दुभी बजाई ॥३॥ यह रवि सुता तीर महा मंगल नित नित नयौ दिखावै । पुनि रितु राज प्रवेश भयें बन सोभा सिंधु बढ़ावै ॥४॥ तामें कुसुम महल अति कौतिक रचना विविध रची है । राजत तहाँ राधिका वल्लभ कहा छवि अनत वची है ॥५॥ फूल गुही वैनी सिर फूलनि बंदिनी चंद्रिका राजै । सीस फूल फूलनि जु तरोंना बेसरि फूल विराजै ॥६॥ अतरौटा सारी फूलनि की कंचुकी जु उपमा को है । मनु कमनी कंचन गिर मनसिज तनी रावटी सो है ॥७॥ फूलनि गजरा बाजू बंदन दुलरी तिलरी माला । फूलनि रची किंकिनी छवि युत फूलनि छवि देइ बाला ॥८॥ फूलनि पाग फूल तन कंचुक काछनी पट चटकीलौ । फूलनि मुकट फूल तन गहनौं पहिरें लाल छबीलौ ॥९॥ चरचति है सौरभ चहुँ दिसि तें सजनी यों छवि पावै । मनु सोभा अम्बुद जु छबीली वदरी पूजि मनावैं ॥१०॥ जित देखौ तित फूलनि रचना सखी फूल गावे तरु रिझ-

वार फूल वरपत राधा हरि जहाँ चलि जावें ॥११॥ गौर स्याम तन मन की फूलनि बैननि वरनीं न जाई। वृन्दावन हित रूप सिंधु उमग्यौ मरजाद बहाई ॥१२॥५६॥

राग विहागरौ—देखि री विचित्र धाम फूले फिरें स्यामा स्याम फूलनि के वागे तन आभूषण पहिरें। फूल अति मन वाढ़ी फूली सखी संग ठाढ़ी ललित लतानि झरें फूलनि की गहरें ॥ फूलनि कौ वंगला सँवारयौ है विविधि भांति रंग रंग फूल लागे उठें छवि लहरें। वृन्दावन हित रूप नवल निकुंज प्यारी योवन गरूर फूली पिय संग विहरें ॥५७॥

राग विहागरौ—फूले डोलैं गौर स्याम फूले तरु वेली। अगनित फूली राजैं संग में सहेली ॥१॥ फूलनि कौ सीस फूल चंद्रिका रची है। रीझ रही प्यारी सखी सुविधि सची है ॥२॥ फूलनि की वंदिनी तरौना अति सोहैं। फूल्यौ है आनन सम उपमा जु को है ॥३॥ अङ्ग अङ्ग फूलनि के भूषन वने हैं। फूलनि के भवन वितान जू तने हैं ॥४॥ फूलनि विछौना जहाँ तहाँ छवि छाई। फूल कौ सिंघासन राजे फूल पिछवाई ॥५॥ फूले वैठे राधा लाल फूल भरे गावैं। चंद हू की चाँदनी की फूल कौं लजावैं ॥६॥ निर्तत है आगें सखी मानों रूप वारी। गुननि गहेली विधि कौन सें सँवारी ॥७॥ मननि की फूल आज तन दरसावैं। प्रेम छकीं ओली भरि फूल वरषावैं ॥८॥ फूल जल फूल थल फूल मित नाहीं। वृन्दावन हित रूप राजैं गरवाहीं ॥९॥५८॥

राग विहागरौ-ताल रूपक—फूले हैं सघन फूल नाना रंग रंगनि के ललित लतानि गृह राजैं अति कमनी फूले फूले फिरत

लडैती नव लाल तामैं ऐसै प्रतिबिंब रहे मानौं फूली अवनी ॥ फूले हैं अमल गात फूली धन करैं बात पिय जिय जीवनि अतन ताप दवनीं । वृन्दावन हित रूप फूलनि को धाम चारु करत विनोद रवन मिलि रवनीं ॥५६॥

राग विहागरौ—फूल कुंज राधा लाल विराजैं,देखियत तन मन फूल वढ़ी है। ऊपर फूल चँदोवा मानौं सघन अखंड भ्राजैं, देखियत तन मन फूल वढ़ी है ॥ टेक ॥१॥ मात खननि लौं फूलनि रचना फूल किवारी जारी। फूलनि झूँमक झालर मानौं फूलही फूल सँवारी ॥२॥ फूलनि मुकट चंद्रिका फूलनि उपरैंना तन सारी। फूलनि पटुका कंचुक काछनीं अतरौटा अङ्गिया री ॥३॥ फूलनि के भूषन अति कमनी अङ्ग अङ्ग सुमन बने हैं। फूलनि की कर गेंद छरी लै करत विनोद घने हैं ॥४॥ तैसेइ फूल दुकूल आभरन पहिरैं अलि अति सोहैं। फूली युगल सुहागहि गावत निकर कोकिला को हैं ॥५॥ फूल झरत मृदु हँसनि परस्पर राधे जू फूल मई है। वरषत फूल विटप नव वेली जहाँ तहाँ फूल छई है ॥६॥ फूल भरे वाजे साजनि सौं वाजत राजत भारी। फूल्यौ गान तान रुचि गावत प्राननाथ सुकुमारी ॥७॥ फूलभरे खग वृन्द मनोहर महा मुदित भये बोलैं। फूले सदन करत जल क्रीड़ा लाल लड़ैती डोलैं ॥८॥ छूटी जोति वितान फूल तें मनु छवि वहति पनारी। कौतिक मिथुन दरस परसन किधौं उड़पति किरनि पसारी ॥९॥ मृग मद की वेंदी प्यारी के भाल अधिक छवि पाई। मानौं रस सिंगार धर्यो तन हस्यौ फूल सौं छाई ॥१०॥ फैंटनि फूल फूल सौं भेंटति फूलन हिये समाई। मनु नृप राज प्रेम के मंगल बाँटत फूल

बधाई ॥११॥ फूलनि की सौरभ लै आये मत्त नदित अलि भूले । गह गही धुरत दुन्दुभी मनु जाचक संपति लहि फूले ॥१२॥ निर्मल धर पर फूल रहे बिबि छवि दिखियत जु घनी है । मानों आजु परम हरषित ह्वै अवनी फूल जनी है ॥१३॥ लै कर कंज कंज नालनि जुत चंचल गति जु फिरावैं । कौतिक रूप फूल मनु फूले तांडव निर्त सिखावैं ॥१४॥ फूल गेंद पुनि लैं राधे कर ओटैं गगन उछारैं । हाटक जलज अमल तारा मनु खेलत मल्ल अखारैं ॥१५॥ फूले वदन मदन पानिप भरि सुख भरि फूले हीयें । फूले रूप मवादी लोचन राधा पिय छवि पीयें ॥१६॥ फूली छुटत कटाच्छ रस भरी स्याम झाँकते ओरी । फूले अङ्ग सुरत रन गरुवे दुहुँ दिसि फूल न थोरी ॥१७॥ फूलनि तलप रची उत कंठित रस लोभी अलि नैंना । बैठे फूल मिथुन मिलि बिलसत परे गहर रस ऐना ॥१८॥ काँनन भवन सिंगार फूल उर कहाँ लगि फूल बखानौं । मूरति वंत फूल हिय तें कढ़ि धरे है रूप बहु मानौं ॥१९॥ फूलनि की जाली लगि निरखत मुदित रूप हित सजनी । वृन्दावन हित फूल फबी आज चंद चाँदनी रजनी ॥२०॥६०॥

राग विहागरौ—बैठे कुसुम मदन राजैं नागरी नव लाला । कुंद गुलाब जुही निवारी फूले फूल रंग ना ना री रचि रुचि सखियनि सँवारी राजति उर माला ॥ गावत रस रंग ढरत गुपत गुननि प्रगट करत रीझि रीझि अङ्क भरत प्रीतम नव वाला । फूले मुख सुख के सदन वारों ससि कोटि मदन वृन्दावन हित निहारि मानौं मत्त मराला ॥६१॥

राग विहागरौ—फूल रची कवरी फूलनि की चंद्रिका फूलनि

कौ सीस फूल फूलनि कौ गहनौं । फूली मुख माधुरी छिन ही छिन नई नई फूली रस दृष्टि परस्पर चहनौं॥ फूले प्यारी प्रान-नाथ फूलनि की गेंदैं हाथ फूलनि सुवास सीत मंद बाउ बहनौं वृन्दावन हित चित फूली हित रूप आली फूलीं छवि देखि लह्यौ नैंननि कौ लहनौं ॥६२॥

राग विहागरौ—फूलनि सदन बैठे फूलनि बदन पर फूलनि के भूषन सिंगारे सखी तन में । फूल मन फूल वन फूली हैं सहेली गन फूलनि की वतरानि होत धनी धन में ॥ फूलन के वागे सोहैं गौर स्याम मन मोहैं फूल से झरत हैं परस पै हँसनि में । वृन्दावन हित रूप की वढ़नि भई अति फूले फूले गावैं जब आनन्द मगन में ॥६३॥

राग विहागरौ—फूलनि के हार गर फूलनि की गेंद कर फूल मौं उछारि देत ताकत गगन है। प्रीतम के लाड़ की वढ़ी है फूल आनन पै लटकि लटकि धरैं खकि डगनि है ॥ मनु ससि दामिनीं चढ़ाइ लई रीझि सिर काँनन विलोकिवे कौं फिरत पगनि है । वृन्दावन हित रूप कौतुक अपूरव है खेलति लड़ैती फूली जौन्ह में मगन है ॥६४॥

राग विहागरौ—आनन्द वारी हो कुंवरि लाल सेवत सदा । नख सिख रूप फूली फुलवारी पिय जीवनि संपदा ॥ अति आसक्त तजत नहिं पल छिन भीज्यौ नेह हदा । वृन्दावन हित अद्भुत गति लखि ढहि गयौ मदन मदा ॥६५॥

राग केदारौ–ताल मूल—तन मन फूले फूले बैठे फूल सिंघा-सन । फूले द्रुम वेलि फूलनि के भूषन महकनि फूल सुवासन ॥ फूले वदन विलोकि परस्पर बढ्यौ है विनोद हास परिहासन

वृन्दावन हित केलि कुशल दोऊ बंधे हैं प्रेम दृढ़ पासन ॥६६॥

राग केदारौ-चौताला—कैसी नीकी फूल बदन पर वदति सखी यों छिन छिन नई लागें। फूलनि के मन्दिर रसिक पुरंदर बैठे फूल बन बागें॥ चंद फूल्यौ चाँदनी हूँ फूली थकित भयौ रथ चलत न आगें। वृन्दावन हित लाल लड़ैती फूल भरे अनुरागें॥६७॥

राग केदारौ-चौताला—फूल भरी फूल विसद गृह फिरत लड़ैती फूल गेंद कर मोहैं। देति उछार गगन तन ताकत ओट लेत पुनि धाइ चलनि मन मोहैं॥ रूप भरी गुन भरी सम कोऊ है नहिं भई अरु होहैं। वृन्दावन हित फूले गातनि लसत अमित छवि ललित लाल नीके जोहैं॥६८॥

राग केदारौ-चौताला—देखि री फूल जहाँ तहाँ चाँदनी चंद फूली कुंजनि फूलनि गहरी; कानन भयौ फूल कौ सागर मधुरितु संगम उठति सुवासनि लहरी॥ रविजा भई ताकी मरजादा यातें फूल यहाँ ही ठहरी। वृन्दावन हित रूप फूल की मूरति माला सो दंपति रुचि पहिरी॥६९॥

राग ईमन ताल आड़—हिये की फूलनि फूले गौर स्याम सुभ गात। फूल भरी रस दृष्टि दुहुँनि की फूल भरी मृदु बात॥ फूल भरी मृदु हँसनि मनोहर बदन खिले मानौं जल जात। वृन्दावन हित चित अभिलाखें फूलीं मन न समात॥७०॥

राग राईसौ आड़ चौतालौ—नव दुलहिनि दूलह नवल, नवल नेह की सीवाँ। फूल महल बैठे फूल मन विमल भुजा धरें ग्रीवाँ॥ चहुँ दिसि फूलीं प्रेम लता मधुपनि कलह मचाई। प्रतिबिंबित अवनी अमल फूलनि सों मनु छाई॥ फूलनि कौ गहनों

सबै रचि पचि सखिनु बनायौ। अप अपनी अभिलाष सों पिय प्यारी पहिरायौ॥ तन मन वाढ़ी फूल अति भूषन हूं छवि पाई। गौर स्याम अङ्गनि प्रभा सोभित सदन निकाई॥ प्रफुलित बदन सरोज से अरबरात अलि नैंना। चलि न सकत रस बस भये भूलि गये मनु गैंना॥ पहिरें बसन रंग रंग के सखिनु वृन्द चहुँ ओरैं। बाजे साजैं रंग भरे ए नव घन ज्यों घोरैं॥ गावति राग रंगनि भरीं तन मन फूलीं फूलीं। निरखि छकीं छवि माधुरी पलक धरन गति भूलीं॥ फूल झरैं छवि अंजुली वार-बार अलि वारें। वृन्दावन हित रूप युग फूली रस दृष्टि निहारें॥७१॥

राग विहागरौ—राजत फूल महल अलबेली। फूलनि बसन आभरन फूलनि फूलि फूलि अंसनि भुज मेली॥ फूल हँसनि मृदु बोलनि फूलनि अङ्ग अङ्ग फूलनि रस झेली। फूली फूली करति वीजना फूली अलि गन विवि हित केली॥ फूलनि की जहाँ छुटत फुहारें फूल नृत्य जस पढ़त पहेली। वृन्दावन हित फूली दासी रूप फूले फूलनि हित खेली॥७२॥

❀ फूल वाटिका के पद ❀

श्री चाचा वृन्दावनदास जी महाराज कृत— राग सारङ्ग-झपताल

मन उमंग रचत रंग कुंज कुंज फिरत संग सोभा निधि उठैं तरङ्ग गौर स्याम री। अमी वैन चपल नैंन भ्रू विलास नचत मैंन सहज चैंन दैंन अखिल कला धाम री॥ तननि फूल मननि फूल दोऊ आनन्द मूल सजनिनु अनुकूल अहा गुननि ग्राम री। वलि वलि वृन्दावन हित रूप खेल रुचि अनूप रसिकनि मणि भूप कुँवरि राधा नाम री १

(पद)—ऊँचे ऊँचे फूल देखि लड़ैती जु कहति लाल ये मो मन भावत । नागर जतन करत बहु भांतिनु निपट त्रिकट वे हाथ न आवत ॥१॥ तब धरि काँधे कुँवरि छबीली रसिक लाल ऊँचे उचकावत । कछु भरि गोद मोद सौं प्यारी कछु प्रीतम के पानि गहावत ॥२॥ इन्द्र नील मणि मेरु सिखर मनु अचल भई चपला छवि पावत । किधौं सदा संजोग कारनें पूजि प्रेम सों घनहिं मनावत ॥३॥ मोहन विपुल भाग को वैभव किधौं आज सबहिनु दरसावत । वृन्दावन हित रूप बलि गई पिय उर आनन्द कहत न आवत ॥४॥२॥

(पद)—अम्ब की डार कोकिला बैठी श्री राधा राधा गावै हो । प्रीतम रसिक देखि कैं पुनि पुनि सुनि सुनि प्रीत दुरावै हो ॥ तरु की छाँह बिरमि रहे दोऊ खग गावत जस भावै हो । वृन्दावन हित रूप श्याम ता स्वर सों स्वरहिं मिलावै हो ॥३॥

सवैया—सारी सँवारी है सोन जुही, अरु जूही की तापै लगाई किनारी । पंकज के दल को लहँगा, अङ्गिया गुलाबाँस की शोभित न्यारी ॥ चमेली को हार हमेल गुलाब की, मौर की बेंदी दै भाल सँवारी । आज विचित्र सँवारि कै देखिये कैसी शृङ्गारी है प्यारे ने प्यारी ॥४॥

सवैया—सौंन जुही की बनी पगियाऽ, रु चमेली को गुच्छ रह्यौ झुकि न्यारौ । दो दल फूल कदम्ब के कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारौ ॥ नव तुलसी पटुका घनश्याम, गुलाब इजार चमेली को नारौ । फूलन आज विचित्र बन्यो, देखो कैसो सिङ्गार्यौ है प्यारी ने प्यारो ॥५॥

❀ चंदन के पद ❀

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत (बैसाख सुदी तीज, अखै तृतीया) से

राग सारङ्ग—चंदन की चोली तन गोरैं ॥ मलयागिरि घसि मेलि अगरमत्त लेपन करत स्याम मन भोरैं ॥ सुभ्र पटीर कपूर मेलि घसि कंचुकि स्याम अङ्ग चित चोरैं । केशरि चंदन खौरि भाल रचि चंदन कौ बैंदा छबि जोरैं ॥ अंग अंग अभरन रचि चंदन के रँग रँग थाकनि की दुति दोरैं । जै श्री कमल नैंन हित तन झलकनि लखि पलक न लगत ललक नहिं थोरैं ॥१॥

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत— राग सारङ्ग

चंदन चित्र विचित्र विराजैं । रचि रचि सरस सुगंधि बनाये अलि लंपट सुख साजैं ॥ मुकट चंद्रिका नील पीत पट तन दुति मनमथ लाजैं । जै श्री रूपलाल हित अलि अनुरागिनि सरस समाजैं ॥२॥

राग सारङ्ग—मूरति स्याम की मन मानी । चंदन चित्रित स्याम मनोहर प्रिया रूप रस सानी ॥ वंशीवट यमुना तट कुंजनि केलि वेलि लपटानी । जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी रंगी रंग बिकानी ॥३॥

गो० श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

हरि चंदन चोली तन बनीं । वाम भाग वृषभानु नंदिनी तातें छबि बाढ़ी घनीं ॥ सीतल छाँह लता ग्रह बैठे सारंग गावत धन धनीं । जै श्री किशोरीलाल हित रूप मिथुन मुख ललितादिक लखि सुख सनीं ॥४॥

गो० श्री हित गोवर्धनलाल जी महाराज कृत—राग गौरी

चंदन चित्रित अङ्ग बनाये । चंदन की चोली अंग पहिरें

चंदन वागे दुहुँनि सुहाये ॥१॥ चंदन खौरि लिलाट विराजै आभूषन चंदन मन भाये । चंदन को छिरकाव कियौ है छुटत फुहारे चंदन छाये ॥२॥ चंदन बीजन हाथ लिये सखि करत दुहूं के मोद बढ़ाये । चंदन अतर सुगंधी छूटें चंदन के बँगला जु छवाये ॥३॥ पान दौंन चंदन कर लीने ललिता सखी तमोल लगाये । चंदन चौंरि लियें कर माहीं जै श्री हित गोवर्धन नैंन छकाये ॥४॥५॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत—राग सारंग

वंशीवट मूल खरे दंपति अनुराग भरे, गावत हैं सारंग पिय सारंग वर नैनी । उमहि कुँवरि करति गान सिखवति प्रिया निकट तान, सप्त स्वर सौं मधुर मधुर लेति कोकिल वैनी ॥ चित्रित चंदन सु अंग भूषन फूलनि सुरंग, दसन वसन सहज रङ्ग वेशरि छवि दैनी । लसत कंठ जलज माल वदन स्वेद कन रसाल, दीरघ वर लोचन मषि रेख वनी पैनी ॥ चहुँ दिसि सखियनि की भीर सकल प्रेम रस अधीर, उभय रूप राग रंग सुख अनूप लैनी । उमग्यौ जल प्रेम नैंन रहित भये रसन बैंन, इहिं गति रह्यौ मत्त चित्त हित ध्रुव दिन रैंनी ॥६॥

सवैया—ग्रीष्म की रितु जानि सहेलिनु कंज कपूर की कुंज बनाई । चंदन चंद के खंभ रचे दल कोमल रंग सुरंगनि छाई ॥ उज्वल सेज सुरंग सुहावनी वारि गुलाब सौं लै छिरकाई । राजत है ध्रुव लाड़िली लाल विनोद को मोद बढ्यौ अधिकाई ॥७॥

श्री मोहनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

चंदन की कुंज तामें चंदन कौ बँगला चंदन की चौकी

पर बैठे दोऊ चंद री। चंदन कौ वागौ पहिरै चंदन की आवैं लहरैं चंदन के हार सुख कंद री ॥ चंदन के द्रुमनि पै वेली नाना चंदन की चंदन के भाजन बहु भरे हैं सुगंध री ॥ छूटत फुहारे नीकें तेऊ बनैं चंदन के चंदन की तान गावैं चंदन के छन्द री ॥ चंदन के बीजना ढुरावैं चहुँ ओर सखी दास मोहन निरखि निरखि मानत आनंद री ॥८॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

मोहन सोभा देखौ माई। अद्भुत झलकनि स्याम सुभग तन चंदन केशरि खौरि सुहाई ॥ तैसीय पगिया पीत मनोहर साँवरे सिर कछु उपमा पाई। मनु सिंगार जलद पर दामिनि सिमिट रही थिरकति छवि छाई ॥ तैसेई पियरे उभै वसन छवि मंजुल मुख चितवनि सुखदाई। दामोदर हित गोरे तन की तैसीय अद्भुत झिल मिल ताई ॥९॥

राग धनाश्री—चंदन चरचैं चतुर नागरी सोभा आगर सुख सागर नंदलाल। उज्वल पीत वसन छवि राजत तैसीय साँवरे तन की झलकन मनु फूलौ सिंगार तमाल ॥ अंग सुवास हास मुख सौरभ लै लै मत्त भ्रमत अलि माल। दामोदर हित कोमल कंचन वेलि लह लही लपटी राधा बाल ॥१०॥

राग धनाश्री—बन्यौ सखि चारु चंदन कौ वागौ सुभग मनोहर अंग। रूप सुधा सागर में मानौं छवि की उठत तरंग ॥ अति गंभीर बढ़ति छिन छिन प्रति दुति तन संगम प्यारी संग। दामोदर हित सहचरि जन मन मीन फिरत भरे रस रङ्ग ॥११॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग सारंग

अखै तृतिया अखै लीला नव रँग गिरिधर पहिरत चंदन

वाम भाग वृषभानु नन्दनी खिच खिच चित्र देत बहु वंदन ॥
तनसुख छींट इजार बनी है पीत उपरैंना विरह निकंदन ।
उर उदार वर दाम मल्लिका सुघद पाग युवती जन फंदन ॥
नख सिख हेम अलंकृत भूषन श्री वल्लभ मारग मन रंजन ।
कृष्णदास प्रभु की यह बाँनिक लोचन चपल लजावत
खंजन ॥१२॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत--राग सारंग

चंदन की कुंज माहिं चाँदनी प्रकाश रही प्यारी कौ बदन चंद, चंद गात, गात हैं। कोटि चंद्रमा सौ पिय चंदन चढ़ायें चारु हार चंद्र सैंनी सुत उर सरसात हैं ॥ चंदन की चोली सखी सची वैंदी चंदन की चंदन की खौरैं धरैं सोभा दरसात हैं। जाली लाल कौ दुकूल प्रेमदासि हित मानौं मंडल में बैठे बहु चंद सरसात हैं ॥१३॥

श्री अलि मोहन जी महाराज कृत—राग सारंग

पहिरैं चंदन बागे जोरी। रंग रंग घसि लाइ युवति वर जिनकैं प्रीति न थोरी ॥ चंदन के सिंघासन तकिया चंदन भूमि सँवारी। चंदन जात तीज तिथि मंगल चन्दन गावत नारी ॥ चन्दन कौ लहँगा चन्दन की अङ्गिया सुन्दर सारी। चन्दन खमकि बनीं तन चूरी सोभित भानु-दुलारी ॥ चन्दन की सूथन चन्दन के पटुका पाग सँवारी। चन्दन के भूषन अलि मोहन निरखि मदन रति वारी ॥१४॥

श्री चतुरभुजदास जी महाराज कृत—राग सारंग

आज सखी नन्द नन्दन री नव चंदन कौ तन लेप कियैं। तामैं चित्र कियैं केशरि के राजत हैं सखी सुभग हियैं तन-

सुख को कटि बांधि पिछौरा ठाढ़े हैं कर कमल लियैं। रुचि वनमाल पीत उपरैंना नैंन मैंन सरसे दिखियैं ॥ करन फूल प्रतिबिंब कपोलनि मृग मद तिलक लिलाट दियैं। चत्रभुज प्रभु गिरधरन लाल सिर टेढ़ी पाग रही भृकुटि छियैं ॥१५॥

राग सारंग—देखि सखी गोविंद के चंदन सोभित साँवल अंग। ना ना भांति चित्र किये हैं तामें केशरि विविधि सुरंग ॥ कंठ माल पीरौ उपरैंना बनी इजार पचरंग। करनि फूल कनक भृकुटि गति मोहन कोटि अनंग ॥ मृग मद तिलक कमल दल लोचन सीस पाग अधरंग। चत्रभुज प्रभु गिरधरन छिन छिन छबि के उठत तरंग ॥१६॥

श्री हरि वल्लभ जी महाराज कृत—राग सारंग-चौताल

चन्दन खौर और ठौर ठौर अङ्ग लेपन अरस परस करति रति विलास ग्रीषम तपति। गुलाबन के पुहुपन की पखुरिनि सौं सेज रची मची सुगन्ध चरची पुहुपन की बीजन दुरावति पति प्यारी प्यारी पति ॥ पुहुपनि सौं गूँथे वार पुहुपनि के सब सिंगार गुलाब छूटत फुहार भरि भरि अङ्क माल त्यौं त्यौं प्यारी अधिक कंपति। हरि वल्लभ प्रभु इहै विधि रितु मनाई रीझि रीझि भींजि भींजि हँसि हँसि बसि बसि रसि रसि रसिक दोऊ रस में लिपति ॥१७॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—राग सारंग-चौताला

कमल दल कान्ह बिछावत मारग करनि सँवारि। तापर चितवनि रचे हैं पाँवड़े नेह लाज गहिरैं रँग सौं रँगे चलति तापै मंद मंद सुकुँवारि ॥ ललित लता लपटी गहिरैं बन मुकुट लगैं हलि वरषत फूलनि बनी है मदन मनुहारि सहाचरि सुख

ग्रीषम की दुपहरी सरद चांदिनी भई जमुना तट रीझि हरि रहे हैं अपन पौं हारि ॥१८॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत—राग मलार

हरि के अंग कौ चंदन लपटानौं तन तेरे दिखियत हैं जैसैं पीत चोली। मरगजे आभरन वदन छिपावत छिपै न छिपाये मानौं कृष्ण बोली॥ कहूँ अञ्जन कहूँ अलक रही खसि सुरत रंग की पोट खोली। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा मिलत विहारनि हारन रह्यौ कंठ विच ओली ॥१९॥

श्री विहारिनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

चंदन वंदन की तन सोभा॥ मानौं निसि नछत्र प्रगटैं घन विमल वसन विच ओभा ॥१॥ करि सिंगार सहचरि लै आईं सुख देखन के लोभा॥ श्री विहारिनदास स्वामिनि मुख निरखत काम विबस चित चोभा ॥२॥२०॥

राग सारंग—पिय प्यारी चंदन चित्र कियैं। मानहुँ काम प्रेम के अंकुर सींचत दृष्टि दियैं॥ अति अभिलाष लाल ललना मिलि सीतल होत हियैं॥ श्री विहारिनि दासि दंपति दुलरावति इहिं सुख सखी जियैं ॥२१॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत--राग सारंग

याही तैं अखै तृतिया नाँउ॥ पहिलैं ही ते सकल सजनी कुल रचि राखियत केलि कौ ठाँउ ॥१॥ दरस परस रस महा महोछौ संघट कोलाहली विचित्र बनाउ॥ नागरीदास सखिनु कौ मनोरथ पूरन होत केलि कल दाउ ॥२२॥

राग सारंग—आज महा मंगल कौ दिन है॥ अखती लाड प्यारी की कोटि कोटि सुख कौ इहि छिन है १ प्रेम रस

लाइ रस लाल सौं मिलन भीतरौ सखी सिसु खिन है ॥ अद्भुत भेंट समेटि नागरीदासि अत्रई जुरी रंग हद बिन है ॥२३॥

श्री पीताम्बर देव जी महाराज कृत—राग भैरवी

कहूँ देख्यौ री चन्दन चोलना ॥ गौरांगी के उर वर राजत नील मणिनु कौ ढोलना ॥१॥ सकल सिंगार कियौ न्यौछावर नैंन निरखि मुख बोलना ॥ रसिक सखी पीताम्बर दोऊ राजत सहचरि ओलना ॥२४॥

श्री नरिन्द ग्वाल जी महाराज कृत—राग सारंग

आज बनें गिरि धरन रसिक वर चन्दन अंग अरगजा लाये । तामें चित्र धरें केशरि पुट गुंजत अलि अलकनि छवि पाये ॥ तनसुख कौ कटि बन्यौ पिछौरा टेढ़ी पाग तुर्रा लट-काये । कटि किंकिनी नूपुर जराइ के जग मगात मनसिजहिं जगाये ॥ अत्तै धेनु अत्तै तृतिया कौ अत्तै गोप ग्वाल संगु-सायें । अत्तै सी ब्रज सी गोवरधन बसत नरिंद ग्वाल जसु गाये ॥२५॥

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

बलि गई हौं चंदन चरचै गात । अंग अंग की सुंदरताई निरखत दृग न अघात ॥१॥ सोभा सदन वदन पर सजनी कुम कुम बिंदु विराजै । मनु ससि मध्य अबहि ऊग्यौ ससि, ससि समूह लखि लाजै ॥२॥ ताढिंग ढिंग बेंदी चंदन की रचि रुचि सखिनु बनाई । मनु उडगन मंडल ससि बैठे जानि नई ठकुराई ॥३॥ केशरि खौरि लिलाट रही लसि बरनौं कहा विशेष। मनहु सजल घन प्रगट देखियत बिच दामिनि रेष ॥४॥ दै दै पेच रची खिरकी सिर पगिया सेत सुढार मर्कत मनि

गिरि सिखर जटित किये हीरा मनु सित धार ॥५॥ ललित कपोल जग मगत कुंडल दिन मनि जोति हरी । कंचन कलित बने कर चूरा पहुँची नगनि जरी ॥६॥ अति अभिराम स्याम उर ऊपर मोतिन माल बनी । ता मधि लसत जराव धुक धुकी भई छवि किरिनि घनी ॥७॥ कटि बाँधें पियरौ उपरैंना छके मदन मद नैंन । वृन्दावन हित प्रियहि रिझावत मधुर बजावत बैंन ॥८॥२६॥

राग सारंग ताल मूल—हँसि हँसि चंदन चित्र बनावैं । चंदन बागे रचति दुहुँनि तन सजनी घसि २ लावैं ॥१॥ सकल सुगंधिनि मिश्रित करि कैं केशरि पीसि मिलावैं । रँगि दुकूल सारी उपरैंनी अतरौटा पहिरावैं ॥२॥ पाग छबीली सुभग धोवती भाल खौरि मँड़रावैं । तापर दै कुम २ कौ बैंदा सोभा अधिक बढ़ावैं ॥३॥ चंदन के भूषन तन रचि २ अलि चातुरी जनावैं । चंदन सदन सिंघासन चंदन चंदन भुव छिरकावैं ॥४॥ चंदन चँवर बिजन चंदन के चंद मुखी जु ढुरावैं । चंदन बारि छुटत जल जंत्रनि अहा कहा छबि पावैं ।५। चंदन हीके बिटप सघन अति हियैं मोद उपजावैं । चंदन भाजन चंदन जल भरि सहचरि खेल मचावैं ॥६॥ आप अंग चरचत हैं सादर औरनि अंग लगावैं । चंदन की गेंदुक रचि सुंदर तकि तकि सखी चलावैं ॥७॥ कोउ ऊँचे तरु वर पर चढ़ि २ किलकि २ बरषावैं । पवन झकोर लपट परिमल की आवत युगल छकावैं ॥८॥ अमी स्वाद सम सीतल भोजन सुरुचि दुहूँनि जिमावैं । गौर स्याम की प्रीति परस्पर निपुन पहेरी गावैं ॥६॥ तुष्टि पुष्टि करि प्रान भाँवतेनु बीरी रचि जु खवावैं । सीतल २ कुंजनि विहरत केलि बेलि सरसावैं

॥१०॥ मनमिज मद गंजत वल वहियाँ अस कौतिक दरसावैं। वृन्दावन हित रूप और सुख उरझे मो मन भावैं ॥११॥२७॥

राग सारंग चौतालो—चंदन के दारु निर्मित मंदिर कमनी बैठे रसिक गरवहियाँ। चंदन की वारि मही तल छिरक्यौ चंदन सिंघासन चंदन विटप की छहियाँ॥ चंदन के बागे विचित्र बने तन चंदन बिजन अलि ढोरैं सुख चहियाँ। वृन्दावन हित रूप अहा कहा चंदन गुलाव जल छुटत फुहारे ता महियाँ ॥२८॥

राग सारंग—मलयज गारि गुलाव वारि डारि सुघरता सौं सँवारि लेपत अंग भरि उमंग गौर स्याम। जुगल रिझावन कौं सखी पचति विरमि विरमि चित्र रचति कौन कौन सुखनि सचति आसन कुसुम दलनि खचति हिम रितु सदेह आइ विचरति मनु इहि धाम ॥ छूटत हैं जल जंत्र अवनी मनु पढ़ति मंत्र मधुर मधुर बाजेनु वाज गावत मधु माध राग मुरली धर विचित्र भाम। वृन्दावन हित रूप रसिकनि मनि रसिक भूप रस सरसत धुरि वरषत कौतिक कमनी दिन छिन जाम ॥२९॥

राग सारंग–चौताला—अंग चंदन लेपत हैं दोऊ परस्पर सरसत हैं नव नेह। सजल घटा सौं मिली वग स्रैंनी चैंन दृगनि देति छवि कौ परत न छेह॥ मनु ससि किरन लपेटी दामिनि यौं दुति दरसति गोरे देह। वृन्दावन हित रूप रीझि रहे चित्र विचित्र किये बैठे लता निजु गेह ॥३०॥

राग सारंग ताल आड़ (चंदन-नौका)—चंदन जल भाजन भरे हाथनि चंदन चढ़े नवारैं हो। भरि भरि अंजुलि लेत परस्पर तकि तकि अञ्जनि मारैं हो ॥१॥ चंदन के जल जंत्र छुटत हैं तिनकी मिहीं फुहारैं हो चंदन गैंद उछारि गगन तन ओटि

लेति किलकारैं हो ॥२॥ चंदन नीर गुलाब जु मिश्रित छुटत छबीली धारैं हो। चंद मुखी चंदन बिजना कर लिये ललित गति ढारैं हो ॥३॥ चंदन दारु मृदङ्ग तबूँरा चंदन कर कठतारैं हो। सखी बजावति प्यारी गावति पिय स्याबासि उचारैं हो ॥४॥ जमुना तीर कदँब तरु पाँती छाँह नवारौं टारैं हो। रुचि लै पवन बह्यौ है परसत ग्रीषम ताप निवारैं हो ॥५॥ चंदन कौ बँगला उसीर के परदा सुभग सँवारैं हो। छिरकत नेह परायन सजनी सुख अनंत विस्तारैं हो ॥६॥ कमल दलनि कौ रचि तहाँ आसन गौर स्याम बैठारैं हो। दंपति के रुख सुख की मरमी बहुरि अरगजा गारैं हो ॥७॥ बार बार लेपति अङ्गनि छबि बारंबार निहारैं हो। दंपति ही के लाड़ चाइ सखी बार-बार बिचारैं हो ॥८॥ अति सुगंध सीतल रस छाने सिता पीसि बहु डारैं हो। रस भोगिन कौं पान करावति रीझ रहति रिझवारैं हो ॥९॥ मुरली बजति लाल मुख ललना मधुर बीन टंकारैं हो। वृन्दावन हित रूप जमीं सारँग मुख बढ्यौ अपारैं हो ।३१।

राग पूरबी चौताला—फटिक मणि निकुंज चंदन विटप तरे ठाड़े नव लाल दियैं ललना गरवाहीं हो। चंदन के चित्र किये केशरि की खौरि दियें फूलनि की माला हियें सघन अति छाहीं हो॥ खुले बंद नीमा लाल उपरैंनी मिही बाल सोभा अविलोकैं सखी पलकैं बिसराँही हो। वृन्दावन हित नील कमल कर छबि सौं फिरावत मुदित मन माँहीं हो ॥३२॥

राग सारंग—मिले स्वर सारंग गावति नेह ललक सों ताननि बदि बदि लेत। लाल की तान प्रिया परसंशति प्यारी जू की प्रीतम सुख जु अपूरव देत　कंध तँबूरा हलनि लखि जूरा

रदन लसनि पिय होत अचेत वृन्दावन हित रूप जीत स्वर भेदनि राखत उमगत वारिधि हेत ॥२३॥

राग सारंग चौताला—चंदन कौ बँगला चंदन जल छिरक्यौ चंदन कौ लेप करैं दोऊ कर वर । चंदन कौ बीजना सुघर अलि ढोरनि चंदन सुबास फैली परम मुदित बैठे चंदन विटप तर ॥ चंदन रँग्यौ उपरैंना सारी चंदन धरयौ घसि भाजननि निकट कर । वृन्दावन हित रूप चारु चंदन के चँवर लियैं अलि चंदन की वारि फुहारे छुटत धर ॥२४॥

राग सारंग—रँगे चंदन के वागे रीझि रीझि पहिरैं लै दर्पन छवि तोलैं । समुझि समुझि मुसिकाइ रहे चुप रीझि पचति नहिं वचन कहत कछु ओलैं ॥ निजु सजनी के श्रवननि लगि लगि अप अपनी मन ग्रंथि जु खोलैं । वृन्दावन हित रूप गर्वता परखी दुहुँ दिसि मरम समुझि अलि बोलैं ॥२५॥

राग सारंग—लाल मुख देखौ परखि कैं पुनि कछु इतहूँ समझि न्याव मन दीजै । सेना में गज तब लगि ऊँचौ जब लगि जाइ न गिरि तर ठाढ़ौ कीजै ॥ रंग मिलावौ गुननि मिलावौ सबकौं बूझि आप सोचि लीजै । वृन्दावन हित रूप तौल कैं नैन तराजू कहत सुमति यौं निरनैं सुविधि करीजै ॥२६॥

राग पूर्वी—चंदन कौ सिंगार कियैं दोऊ बैठे फूल महल री माई । नील पीत कर कंज लियें हैं अंस अंस भुज परम सुहाई ॥ नैंननि अरुझनि वैंननि अरुझनि हियरा अरुझनि कह्यौ न जाई । सीतल भोग प्रिया तन रसमय भोगी लाल न कबहुँ अघाई ॥ कबहुंक गावत गीत परस्पर वे वंशी ये बीन वजाई । हित स्वामिनी सरन कहै जै जै तान मान बढ़ौ रंग सवाई ३७

(ज्येष्ठ वदी दौज को वन विहार, रात्रि कौ परिक्रमा, समाज रूप सुख कीर्तन)

* वन विहार के पद *

गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग कल्याण

विहरत दोऊ प्रीतम कुंज । अनुपम गौर श्याम तन शोभा वन वरषत सुख पुञ्ज ॥१॥ अद्भुत खेत महा मनमथ को दुन्दुभि भूषन राव । जूझत सुभट परस्पर अङ्ग अङ्ग उपजत कोटिक भाव ।२। भरि संग्राम श्रमित अति अवला निद्रायत कल नैंन । पिय के अङ्क निशंक तंक तन आलस जुत कृत सैंन ॥३॥ लालन मिस आतुर पिय परसत उरू नाभि उरजात । अद्भुत छटा विलोकि अवनि पर विथकित वेपथ गात ॥४॥ नागरि निरखि मदन विष व्यापत दियो सुधा धर धीर । सत्वर उठे महा मधु पीवत मिलत मीन मिव नीर ॥५॥ अवही मैं सुख मध्य विलोके विंवाधर सु रसाल । जाग्रत ज्यों भ्रम भयौ परयौ मन, मत मनसिज कुल जाल ॥६॥ सकृदपि मयि अधरामृत मुपनय सुन्दरि सहज सनेह । तव पद पंकज को निज मंदिर, पालय सखि मम देह ॥७॥ प्रिया कहत कहु कहाँ हुते पिय नव निकुंज वर राज । सुंदर वचन रचन कत वितरति रति लंपट विनु काज ॥८॥ इतनो श्रवन सुनत मानिनि मुख अन्तर रह्यौ न धीर । मति कातर विरहज दुख व्यापत, वहुतर स्वाँस समीर ॥९॥ जै श्री हित हरिवंश भुजन आकर्षं लै राखे उर माँझ । मिथुन मिलत: जु कछुक सुख उपज्यौ त्रुटि लव मिव भई साँझ ॥१०॥१॥

राग सारंग—देखि सखी राधा पिय केलि ये दोऊ खोरि

खिरक गिरि गह्वर, विहरत कुँमरि कंठ भुज मेलि ॥ ये दोऊ नवल किशोर रूप निधि, बिटप तमाल कनक मनों वेलि । अधर अदन चुम्बन परिरम्भन तन पुलकित आनंद रस झेलि ॥ पट बंधन कंचुकी कुच परसत कोप कपट निरखत कर पेलि । जैश्री हित हरिवंश लाल रस लम्पट धाइ धरत उर बीच सकेलि ।२।

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत—पद

वन विहरन कौं चले दोऊ प्यारे । नाचत गावत प्रेम बढ़ावत रूप रास छवि निधि उजियारे ॥ करत हास परिहाँस परस्पर काम के भेद जनावत न्यारे । जै श्री कमल नैन हित रसिकन कौ धन जीवन प्रान हमारे ॥३॥

गो० श्री दामोदर वर जी महाराज कृत—पद

मंद मंद दोऊ गवनत छवि सों, मनि नग जटित कनक अवनि पर । प्रतिबिंबित सुंदर पद अवनी मानौं उरज धरत चरननि तर ॥ रंग भरे डग मगत उनींदे चलि न सकत मानों छवि के भर । दामोदर हित कंठ धरें भुज राजत री ए नागरि नागर ॥४॥

पद—लटकि लटकि पग धरति लाडिली सुरत रंग रस माती । पिय के अंस बाहु धरें प्रमुदित करी केलि सब राती ॥ औडाइ अलसात मोरि तन बारंबार जंभाती । नख सिख ते बरनत कत अङ्गहि कवि कुल मति अरुझाती ॥ जै श्री दामोदर हित निरखि निरखि छवि रति कोटिक जु लजाती । सखी परस्पर वचन कहत मुनि भवन चली मुसिक्याती ॥५॥

श्री व्यास जी महाराज कृत—गौरी व गौड़ व मलार

देखौ माई सोभा नागरि नट की विहरत राधा के संग

निरखि बिलखि रति कमला मटकी ॥ सुरत श्रमित प्यारी प्रीतम के कंठ भुजा धरि लटकी । मानहुँ मेघ मंडल में दामिनि चंचलता तजि अटकी ॥ मोहन करजनि बीच शोभियत सुंदरता कुच घटकी । मानहुँ कनक कमल पर हँस चरन धरि भँवरनि अटकी ॥ कुच गहि चुंबन करत अधर खंडित हुँ कुंवरि न मटकी । मानहुँ निकट चकोर चुञ्च गहि चंद सुधा मधु गटकी ॥ गौर गंड रस मंडित स्याम बदन गति नैंक न ठटकी । मानहुँ नूत मंजरी के रस अनत न कोइल भटकी ॥ देखत बनै कहत नहि आवै, क्रीड़ा वंशीवट की । व्यास स्वामिनी की छबि वरनत कविनु लिलारी पटकी ॥६॥

राग बिलावल-विहागरा—वृन्दावन कुंज कुंज केलि वेलि फूली । कुंद कुसुम चंद नलिन विद्रुम छबि भूली ॥ मधुकर सुक पिक अनार, मृगज सानुकूली । अद्भुत घन मंडल पर दामिनि सी भूली । व्यासदासि रंग रासि देखि देह भूली ॥७॥

राग सारंग—वन की कुंजनि कुंजनि केलि । विविधि वरन वीथिनि महँ वीथी, विगमित नव द्रुम बेलि ॥ तिनि महँ सहज सेज पर श्यामा श्याम विराजत खेलि । अङ्गनि कोटि अनंग रंग छबि सुरत सिंधु महँ झेलि ॥ मुख विधु वारिज पर लट लटकति, अँसनि पर भुज मेलि । मादक अधर सुधा मधु पीवति, जीवत नवल नवेलि ॥ जोवन जोर किशोर जगे रस निशि, भोरहि अवहेलि । व्यास स्वामिनीहिं सेवत मोहन, निज वैभव पग पेलि ८

राग सारंग—वन में कुंजनि कुंजनि केलि । जमुना पुलिन कमल मंडल मह, रहे रास रस झेलि ॥ वीथिनि वर विहार गहवर गिरि लीला ललित सुवेलि । खोरि सरिक प्रति रत्नना

सखी री जानि बाहु गलि मेलि ॥ रस सरिता झरना सौरभ जल अवगाहत पग पेलि । व्यास स्वामिनी विरचित छिनु छिनु निसि दिन पिय संग खेलि ॥९॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत--राग विहागरौ

खेलत नवल किशोर किशोरी नव निकुंज में सजनी । त्रिविधि समीर वहै सुख दैनी सोहत राका रजनी ॥ लालन ललित सुमनि मय भूषण रचि रचि प्रियहि बनावै । तिनही की रुचि लियें रंगीलो नव नव भांति लड़ावै ॥ रूप सिंधु गंभीर गौर तन नाभि भँवर सुख दानी । रहत लाल दृग मीन भए तहाँ त्रिपित तऊ नहिं मानी ॥ निरखि निरखि छबि वदन माधुरी नैंन अम्बु कन झलकैं । लटक्यौ मौलि शिखण्ड प्रेम बस परत तऊ नहिं पलकैं ॥ अतिहीं मृदुल मन स्यामा प्यारी कुँवर अङ्क भरि लीनौ । जान अधीर विवस मन मोहन अधर सुधा रस दीनौ ॥ विलसत सुरत विहार अमित विधि निपुन दोऊ पिय प्यारी । यह सुख अवलोकत निज सहचरि दुरि दुरि सघन लता री ॥ सब सुख कौ रस सार यहै है दिन आनंद बढ़ावैं । हित ध्रुव सुख सखियनि कौ कैसे रसना पै कहि आवै ॥१०॥

राग सारंग—वंशीवट मूल खरे दंपति अनुराग भरे गावत हैं सारंग पिय सारंग वर नैनी । उमहि कुंवरि करति गान सिखवत पिय विकट तान, सप्त स्वर सों मधुर मधुर लेति कोकिल वैनी ॥ चित्रित चंदन सुअङ्ग भूषण फूलनि सुरंग दशन वसन सहज रंग वेसरि छवि दैनी । लसत कंठ जलज माल झलकि स्वेद कन रसाल, दीरघ वर लोचन मषि रेख वनी पैनी ॥ चहूं दिशि सखियनि भीर सकल प्रेम रस अधीर, उभय रूप राग रंग

सुख अभंग लैंनी। उमड्यौ जल प्रेम नैंन रहित भए रसन बैंन, इहिं गति रह्यौ मत्त चित हित ध्रुव दिन रैंनी ॥११॥

कवित्त—केशरी सुरंग इक रङ्ग वागे दुहुँनि के, यमुना के कूल कूल बाहौं जोरी आवहीं। सखिन के यूथ साथ आवत हैं पाछे आछे हित की निकट सखी संग लागी गावहीं ॥ कहूँ कहूँ ठाढ़े होइ देखत फूलनि छवि, मन भाये रंग लै लै प्रियहि बनावहीं। अति अलबेली भांति फिरैं अलबेले दोऊ, करत विनोद ध्रुव जे जे मन भावहीं ॥१२॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत – राग केदारौ

प्यारी जू आगें चलि आगें चलि, गहवर वन भीतर जहाँ बोलैं कोइल री। अति ही विचित्र फूल पत्रन की सिज्या रची रुचिर सँवारी तहाँ तू सोइल री ॥ छिन छिन पल पल तेरी ये कहानी तुव मग जोइल री। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा (कुंज विहारी) कहत छबीलौ काम रस भोइल री ॥१३॥

श्री बीठल विपुल जी महाराज कृत—पद

श्यामा चलहु लड़ैती प्रिया कुंजन करहु केलि। श्याम तमाल लाल नवल किशोरी वाल, तुम जु नवल नव कनक वेलि ॥ विविधि कुसुम घन रचित श्री वृन्दावन बोलत सुहाए, पिक मधुप रहे झेलि। श्री बीठल विपुल रस विहारी तिहारे बस जमुना के तीर सुख विशद विलास खेलि ॥१४॥

श्री बिहारिनदास जी महाराज कृत—राग रामकली

विहरत लाल विहारिनि दोऊ, श्री जमुना के तीरें तीरें। अद्भुत अखण्ड मण्डल भुव पर, वर भामिनि भुज भीरें भीरें ॥ कुंज गगन घन अलक वदरिया, चलत परस्पर सीरें सीरें

तामें द्वै शशि श्रवत सुधाश्रम जल कन मुख छवि नीरैं नीरैं।
लोचन चारु चकोर चितै हित, पिवत अधीर न धीरैं धीरैं॥
उमगि मिलत अनुराग नवल वर कल कुंडल चल वीरैं वीरैं।
श्री विहारिनदासि सुरझत नहि तन मन अरझि अरुन पट-
पीरैं पीरैं ॥१५॥

श्री रतनदास जी महाराज कृत—पद

सोभा पुंज प्यारी कुंज कुंज विहरत। अलिकावलि अलि गुंज मंजु मुख कमल पाय अधर दल झलकत॥ स्वास समीर सुभग सौरभ मनि वचन रचन मकरंद सु वरषत। रसिक लाल लोभी रस लंपट लै उछंग कुच करजनि परसत॥ छूटि चमकि छल अहा अहा करि कल कौतूह प्रगट दोऊ लरजत। हित रतनदास हरिवंश हंस हसि रहसि बहसि बोलत विवि हरषत।१६

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत—राग पूरवी

कांनन की तुम चूड़ामणि स्वामिनि वन कौतिक देखौ वरिया भली है। फूले तरु वेली रविजा के तीरैं तीरैं परयौ है पराग झरि सोभित थली है॥ अलिनु कौ नाद शुक पिक मोर कुहुकत त्रिविधि पवन तहाँ आवति चली है। वृन्दावन हित रूप सुख देहु लेहु सुनहु श्रवन दै वार वार कहत यों चतुर अली है॥१७॥

राग पूरवी—आवति है कांनन कौ गहनौ वाहु दुरावति गति गज गैंनी। रूंदति है सब कौ मद सोभा वढ़ति अगौंनी पिय हू के मन कौं झोका दैंनी॥ छवि सागर मथि कैं मनु काढ़ी सहज हीं जीति मदन गढ़ लैंनी। वृन्दावन हित रूप वली सैंना अङ्ग अङ्गनि त्रियनि मुकट मणि सारंग नैंनी १८

राग पूरवी—चौताली—कुंज कुंज कौतिक विलोकति रहि आवति मनु मद छाकी करनी। अंकुश वचन सखी को मानति अञ्चल के छोर मोरि मोरि सिर धरनी॥ छक वै संधि निकर गुनकी छक लाड़ की छकनि मोपै जाति न वरनी। वृन्दावनहित रूप की छकनि तापै मदन के मोहन कौं न्याइ मन हरनी॥१६॥

राग नाट—देखौ आवनि कुंजनि तर की। वाहु डुराइ चलति जव प्यारी, मल्हकनि मद गज वर की॥ आगें रवकि जात प्रीतम देखि लता उचावनि कर की। कैसें नवि निकसत है छवि सों उरझनि पीतांवर की॥ लाल निपुणता सखी निहारति प्रिया हँसनि हर हर की। कहा वरनों चौका की चमकनि मनहु दामिनी दरकी॥ ताही मग निकसत प्यारी जू उरझनि मोती लर की। सुरझावत इत उत जु परस्पर दुहुँ उर उरझनि अरकी॥ रसिक कौतिकी किये कौतिक इहिं मिस लागनि गरकी। अव न सम्हारी परति लाल पै मदन भीर भई भरकी॥ वचन रुखाई देति सहेली कुँवरि अगवनी सरकी। वृन्दावन हित रूप कहा कहों लीला मुरली धरकी॥२०॥

पद—तुव वड़ भागिनि कांनन रानी तो जस पंछिनु भावै हो। कहा मिठास नाम श्री राधा मोहन चितहिं चुरावै हो॥ वारौं अमी नाम पै अच्छर, को सम उपमां पावै हो। वृन्दावन हित रूप न्याइ यों सर्वेस्वरि जु कहावै हो॥२१॥

पद—छवि को निकर वपु प्रीतम के वायें भाग लटकि लटकि पग राखति धरनि है। शोभा कौ सो वाग सहेली तिनमें गेंद री उछारें अति कौतिक करनि है॥ प्रीतम के मन कौं खिलावै मनु हाथनि ऊँचौ नीचौ होत इहि गेंद उछरनि है

वृन्दावन हित रूप में मगन लाल नैन हू थकित, थकित भई पल हू परनि है ॥२२॥

राग मालव चौतालौ—धाइ धाइ चलनि औ हलनि पीठि बेनी, अंचल की बिसरनि शोभा री बढ़नि । ऊँचे नीचे हेरनि दृगनि की फेरनि, ओटति है गेंद आछे कर की कढ़नि ॥ लोभी नैन प्राण प्रति रहे री चकृत अति गति मति बरबस प्रेम सों मढ़नि । वृन्दावन हित रूप हूँ सबल होत अमित जानि तोहि बरजति सखी तब भौंह की चढ़नि ॥२३॥

राग गौरी—देखत फुलवारिनु कौं कुंज ललित जारिनु कौं अंब औ कदंब फूल माधुरी बनीं । मल्ली अरु जुहीं जाइ केतुकी महकी सुभाइ केवरा की फैलि रही वासु वन घनी ॥ कहति है उचाइ हाथ अहो अहो प्रांन नाथ पारिजात आवति है गंधि सुख सनी । बलि बलि वृन्दावन हित रूप महा मोद भरे वरनति है श्री मुख धन सुनत हैं धनीं ॥२४॥

पद—दिखावत कुंज के हो प्रिया कौ कौतिक रसिक किशोर । द्रुम बेलिनु की गमनि प्रसंशत निरखनि भोरी मोर ॥१॥ समझति है मति कुशल नागरी मोरति है दृग कोर । भँवरी भँवर गुंज सुनि प्रमुदित डोलत बाँहाँ जोर ॥२॥ कुसुम गंधि संजोग चितावत अति आतुर चित चोर । वृन्दावन हित रूप जु वांछित पावत सुखहि न ओर ॥३॥२५॥

राग देव गंधार—डोलत लाल प्रिया गरबाँहीं । कुशमित कुँज पुंज अलि गुंजत देखि मुदित मन माही ॥१॥ रविजा तीरें धीर समीरें जहाँ जहाँ चलि जाही । तहाँ तहाँ नव रंगी नागर कौतिक केलि कराहीं ॥२॥ शुक पिक मोर मरालनि

पाछें गहत फिरत परछाहीं । मणि मय धरनि देखि प्रतिबिंबित मोहन मन सकुचाहीं ॥३॥ बहु जल जंत्र छुटत मणि सरवर कौतिक कुंज जहाँ ही । वृन्दावन हित रूप मिथुन तहाँ जल क्रीडन हुलसाहीं ॥४॥२६॥

राग नट—हो प्रीतम इहि वन सुख पैयै । नव नव कुंज सदन द्रुम वेली, निरखि निरखि न अघैयै ॥१॥ यह कालिंदी तीर सुभग अति जहाँ अमित छवि छैयै । फूल फूलन के भार लता जल परसति नैंन सिरैयै ॥२॥ ये खग करत परम कौतूहल वानी सुनि ललचैयै । विरमि विरमि पग धरहु रसिक पिय, कित आगें वढ़ि जैयै ॥३॥ यह वन धरा धरें अति शोभा छिन छिन नई दिखैयै । यह पराग कोमल वन वगरतु, सौरभ मधुप लुभैयै ॥४॥ ये सरसी जल सीतल पूरित जिनमें जब तब न्हैयै। नाना वरन फूलि वनें अंवुज छवि कौतिक दरसैयै ॥५॥ मधुर जोति मय यह वंशीवट सोभा जब मन दैयै । जाके रूप सिंधु महिमा की क्योंहू थाह न लैयै ॥६॥ कांनन की संपति अति सोभा स्वामिनि सुख दुलरैयै । वृन्दावन हित रूप वलि गई प्रेम सहित गुन गैयै ॥७॥२७॥

राग नट—हो प्यारी मोहू कों यह भावै । या कांनन की जेतिक संपति नव नव रुचि उपजावै ॥१॥ जब यह कोकिल कूक देति वन मनसिज विपुल जगावै । सुनि यह मोरनि कुहक गह गही प्रांन पोष अति पावै ॥२॥ अति मोहन मराल मृदु वानी जब श्रवननि पथ आवै । उफनि उठे हीयें सुख वारिध मरजादा विसरावै ॥३॥ परम प्रेम सों वेलि द्रुम मृदु सोभा अमित वढ़ावै । मन धीरज धरि सकत न क्योंहूँ जवहि दृष्टि उत धावै ४

जलज कोश लोभी ये मधुकर चंचल कलह मचावै। तब उर भिदति भीतरी वेदनि कासौं विथा सुनावै ॥५॥ जब चलि जात कुंज कुसुमित जहाँ देखत मति बौरावै। पुनि यह पवन गवन तिहुँ विधि कौ, रहसि संदेशौ लावै ॥६॥ तुम विन कौन विपिन गुन गरुवे मोकौं कहि समझावै। वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि यह वन हमहि लड़ावै ॥७॥२८॥

पद—सुनि री ललिता साँच कहौं तोसौं मोहि लाल प्राननि तें प्यारे। बैठत उठत सोवत अरु जागत भये रहत मेरे नैननि के तारे॥ जिय जानें यह हिलग हेत की एकौ छिन ह्वै सकत न न्यारे। वृन्दावन हित प्रिया के वचन सुनि लाल भये विवस दृगनि जल ढारे ॥२६॥

पद—नेह भरी बातें पिय सुनि सुनि मृदु कर कमल चिबुक सहरावत। भयौ भर प्रेम लाल उर अन्तर बार बार चरननि कौं धावत॥ चटकि चटकि करजनि तृण तोरत पौंछि वदन हँसि हिये लगावति। अघटित प्रीति परस्पर दुहुँ मिलि वृन्दावन हित क्यों कहि आवत ॥३०॥

राग पूरवी—प्रीतम कें लाड़ भरी लटकि चली है। जोवन ही पालकी अलेलता वाहन मानौं, छवि छत्र छांह राजैं रंग में रली है॥ प्रबल प्रताप रूप विश्व हू मोहन बस ऐसी राधा रानी जू की अटल थली है। वृन्दावन हित रूप रंग प्रेम रस थावर जंगम वन परजा पली है ॥३१॥

राग पूरवी—प्रीतम पाँवडे रचे सखि फूल दल सचे निजु अलि अंश तहाँ चरन धरति है। पद तल अरुनाई तिनमें अधिक छाई लाल हिय मनु अनुराग ही भरति है पिय की

है। वृन्दावन हित अति ही आधीन जानि हँमति लड़ैती रेल रूप की परति है ॥२२॥

* उसीर कुंज के पद *

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

कुंज उसीर विराजत दंपति मधि फुलवारि सघन द्रुम छाहीं। कुसुम रचित सिंघासन आसन रूप रासि छबि निधि गरबाहीं॥ छुटत सुगंधि फुहार धार जल गावत अलि गन उपमा नाहीं। जै श्री रूपलाल हित चित रंग भीने रीझि विवस हँसि नैन सिराहीं ॥१॥

सघन कुंज मधि विमल सरोवर ता मधि विमल उसीर कुटीर। कुसुम रचित सिंघासन आसन राजत युगल सुरत रण धीर॥ सरस सुगंधि गुलाब जलनि सों छिरकत चहुँ दिसि सहचरि भीर। बीन मृदंग मिलावत गावत जै श्री रूपलाल हित करत समीर ॥२॥

राग सारंग—सुभग उसीर निकुंज विराजति आजु बनीं। हौद गुलाब फुहारे चहुँ दिसि सरस सुगंध सनीं॥ तान तरंग रंग उपजावत अलि संगीत भनीं। लाल रूप हित रूप अनूपम न यह धन जु धनीं ॥३॥

राग सारङ्ग—बैठे कालिंदी तीर सघन कुंज मधि उसीर, हीर धरनि मृदु कुटीर प्यारी पिय रंग में। सौरभ महकात जात बात बात हँसि सिहात, पान खात नैन छके रूप अंग में

छिन छिन पल कोटि भ्रकुटि भंग में। वलि वलि हेरि हेरि लाल रूप हित चित गावत मन भावत गुण ललितादिक संग में ॥४॥

भीनी अरगजा सारी भीनी झलक रही। तैसो मेंठ मेंठवा फेंटा सोभा सरस लही॥ गूँथत फूल फूल सों बैंनी लालनि करनि गही। लाल रूप हित रूप अनूपम जातन वैंन कही ॥५॥

सघन कुंज मधि विमल सरोवर ता मधि सुभग उसीर महल है। चहुँ दिसि छुटत गुलाव फुहारे साज राग रँग अलिनु टहल है॥ विविधि पुहुप आभरन हरन मन लाल प्रिया छवि चहल पहल है। जै श्री हित चित रूप छकनि छकि छाके दुहुँनि कटाक्ष मनोज सहल है ॥६॥

गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग सारंग चौतालौ

तनसुख सारी पहिरें प्यारी पिय समीप बैठे उसीर भवन। तैसोई चंदन लेप किये तन तैसीय पुहुप आभूषन अंगनि तैसोई वीजना पवन॥ तैसोई सारङ्ग राग परस्पर करत हरत मन रवनी रवन। जै श्री किशोरी लाल हित रूप मिथुन रस वरषत हरषत होत परम सुख सुनि सुनि सीतल भये श्रवन ॥७॥

गो० श्री चंदलाल जी महाराज कृत—कवित्त

छूटत फुहारे ताकी अद्भुत अनूप सोभा, पन्ना की झलक भयौ हर्‌यौ रंग नीर कौ। पान दान पीक दान धरे हरे पन्ना ही के, हरयौ ही दीखत कंठ धरयौ हार हीर कौ॥ सखिन समेत सब भूषन वसन हरे, हरयौ रंग दीखै उन भौंरनि की भीर कौ। ऐसी हरियारी सब वन में जु फैलि रही, हरयौ रंग होइ गयौ सुखद समीर कौ १ गावत फिरत अनुराग भरे

वाग ही मे, गग जाम रह्यौ भरि भाग वेला वेली कौ। बैंठ के झकोर तान तोरि कैं चलत आगैं, शोर नहीं होति तहाँ खग औ खगेली कौ॥ तरु तन देखि देखि हिय में विशेष हित, भाव ही बतावें कर पकर महेली कौ। हँसि हँसि हेरि हेरि उर उर भेरि भेरि, रसिकनि प्यावत हैं दिव्य रस केली कौ॥२॥ भाँवरी भरत तिहिं वाग में रहस मन, करत कलोल लाल लोचन मिलाइ कें। खोलि खोलि हिये कों अमोल तान गावत हैं, ढोलक मृदंग वीन स्वर सरसाइ कें॥ तौलि तौलि ताही कों निचोल झमकाय चाय, नीम तर नाचत हैं नूपुर बजाइ कें। लाग दाट के समेत उरप तिरप लेत, चंद हित सुख रह्यौ कानन में छाइ कें॥३॥ कोऊ अति मृदुलता सों चंदन घिसत नीकें, कोऊ एक ना ना विधि हार कों वनावै है। कोऊ एक केलि कुंज रचना पराइन है, कोऊ जल झारी लियें अधिक सुहावै है॥ कोऊ एक सुन्दर दुकूलनि कों चुनें धरें, कोऊ अलंकार नव संग्रह करावै है। कोऊ एक खान पान विधि मांझ विज्ञ सदा, ऐसी निज सखी हित चंद मन भावै है॥४॥ बाजें वहु जंत्र मैंन मंत्र सौ पढ़त मानौं, दुहुँनि अलापि राग पूर्वी जमायौ है। लेत सुख दान तान मानि के अजान भेद, वाह २ कहें सीस सखिन हिलायौ है॥ विवि सुकुमार फुलवारि कों निहारि कर ढोरि ढोरि ग्रीव गावें हिय हरषायौ है। ऐसोई रहत सुख आदि औ अनादि जहाँ, नाद गान जंत्रनि कों सब वन छायौ है॥५॥ चाँदनी में चंपा बाग देखन चले हैं दोऊ, चौंरनि सों भौंर भीर टारत सहेली है। भूषन वसन भार घूँमि घूँमि झूँमि झूँमि, मंद मंद मग धारें पग गज गति पेली है भौंरनि सों

चौंकि पिय हिय सों निपटि जाति, तिय चपला सी नाहिं चलति अकेली है। सावधान बोले फिर भूलि जात देह सुधि, निज कर टारें पिय ऐसी द्रुम वेली है ॥६॥८॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग सारंग चौताली

सोहत रंग भरे दोऊ महल उसीर मधि भीजे हैं फुहारनि गुलाब नीर। वरुनी अलक भौंह बूंदैं फबी है मानों सरद कमल पर ओस जैसे गौर स्याम अंगनि लपटे चीर ॥ गावैं तहाँ दंपति बजावै है विसाखा वीन बैठी है प्रवीन सखी सभा सर तीर। नागरीदास सुख निवास ग्रीषम विहार चारु सावन सौ लगि रह्यौ रस झर पुंज कुंज धीर समीर ॥६॥

श्री ललितदास जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

जमुना तट नवल कुंज द्रुम नव दल पुहुप पुंज तहाँ रची नागर वर रावटी उसीर की। कुम कुम घन सार घोरि पंकज दल बोरि बोरि चरचित चहुँ ओर लावैं पंक कर पटीर की ॥ सोभित तन गौर स्याम सुखद सेज सुरत काम परसत सीतल सुगंध मंद गति समीर की। पिय विहारी लाल ललित ललितादिक हरषि हियें सुनि सुनि धुनि श्रवननि कल किंकिनि मंजीर की ॥१०॥

श्री गोवर्धन हित जी महाराज कृत—राग सारंग

उसीर भवन छायौ सुवन तामें बैठे राधा रवन एरी अंश भुजानि मेलि। मृग मद घसि अंग लगाइ करपूर जल सिंचाइ अलप बूँदें चुचाइ सीत लागे दोऊ री करत सुखद केलि ॥ गावत सारंग सरस कोकिला सुनि होत विवस चल होत अचल या रस पुलकित द्रुम वेलि। गोवर्धन हित विलास ग्रीषम रितु अति निवास ललितादिक निरखि नैन प्रवेश सुरस झेलि ११

श्री किशोरदास जी महाराज कृत राग सारंग

अद्भुत उसीर कुंज अतर, फुहारे पुंज मंजुल मसंद पर सोहें सुकुमार हैं। करत विलास हास नव तन प्रकाश भास हरषि हुलास मिलि आनंद उदार है॥ बन्यौ वन राज साज सजि कें समाज सखी लखीं सब संपति सरूप सुख सार हैं। ग्रीषम की रीति रस सीतल प्रतीति होत किशोरी श्री किशोर-दास उज्वल विहार हैं ॥१२॥

रागश्री—चंदन सिंगार करि मृग मद बिंद भाल केशरि की खौरि गौर साँवल लिलाट परि। कमल महल मधि तलप मृदुल तन परसि पवन मंद सौरभ सनेह भरि॥ उदित उसीर अति अतर सुगंध नीर छुटत फुहारे तीर बाहुनि तें बाहु अरि। अमृत पिवावत प्यात राग रागिनी मिलात किशोरी किशोर दास नेक न सकत टरि ॥१३॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग सारंग

कुंज उसीर तीर यमुना के चलत ललित गति त्रिविधि समीर। सौरभ मत्त रणित भृंगावलि कूजत धीर कोकिला कीर॥ छुटत सुगंध नीर भल लागत युवति भीर सजि रंग रंग चीर। प्रेमदासि हित दंपति सुख संपति अति रति रण दोऊ वीर ॥१४॥

राग सारंग—बनी बावरी अति सीतल तर दुहुँ दिसि सोहत सुभग तखानैं। तिनमें क्रीड़ा करत अली री गौर स्याम फूलनि सों फूले चंदन लेप कियैं मन मानैं॥ कबहुँक जीलनि गाइ जिवावत लेत ललित सारङ्ग की तानैं। बीन बीन सुर बीन बजावत प्रेम सहित अलि रीझि रिझावत या सुख कौं कहि कवि कहा जानैं १५

श्री आनन्द घन जी महाराज कृत—राग सारंग

अति सुगंध मलयज घन सार मिलाइ कुसुम जल सौं छिरकाइ उसीर सदन, बैठे मन मोहन संग लै राधा प्राननि प्यारी रति रंगनि ॥ जमुना तीर वा नीर मंजु कुंज त्रिविधि पवन सुख पुंज परस रोमांचित होत छबीले हुलसत अति अपनी उमंगनि ॥ आनंद धन अभिलाष भरे खरे भीजे संगम रस सागर की अतुल तरंगनि ॥१६॥

श्री मुरली जी महाराज कृत—राग सारंग

सीतल सदन में राजत प्रिया पिय मधि ललितादि सहचरी करैं केलि । महल उसीर रच्यौ पूरित गुलाब नीर अतर अरगजा चंदन सुगंध रेलि ॥ चहुँ ओर छुटत फुहारे जल ठौर ठौर चादरि परति गान करत तहाँ जुवती नवेलि । सुमन सेज पर विहरत श्यामा श्याम प्रेम बस परस्पर अंस भुज मेलि ॥ असित प्रवाह आगैं वहति तरल तामें तरु झुके झूमि झूमि लपटी माधुरी वेलि । त्रिविधि समीर चल मंजु कुंज गुंजैं अलि होत बलि मुरली नैननि सुख झेलि ॥१७॥

श्री हित मोहन जी महाराज कृत—मांझ

खस के महल खस ही के परदा अद्भुत रच्यौ तिवारी कौं । खस खाने जल जंत्र बूँद तें महकत अति खस जारी कौं ॥ मध्य सेज पै युगल विराजे खस की खोलि किवारी कौं । जै श्री मोहन हित खस कौ जु अतर लै सुँघवत प्यारौ प्यारी कौं ॥१८॥

श्री गोविन्द स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग-कवित

बिछे हैं बिछौना घनसार के नवीने तामें, कीने छिरकाव तर अतर गंभीर के गुलाब के फुहार छूटैं ठौर ठौर

उठत झकोर तामें विविधि समीर के ।। सेज अरविंद की चंदन की चोली चारु श्री गोविंद सुमन शृङ्गार हैं शरीर के । झमक मनक सों बनिक बनि बैठी आजु राधिका रवन संग भवन उसीर के ।।१९।।

राग सारंग—सीतल उसीर गृह छिरको गुलाब नीर, तहाँ बैठे पिय प्यारी केलि करत हैं । अरगजा अंग लगाइ कपूर जल अँचाए, फूल के हार आछे हिए दरसत हैं ।। सीतल झारी बनाइ सीतल सामिग्री धराइ, सीतल पान मुख बीरा रचत हैं । सीतल सिज्या बिछाइ खस के परदा लगाइ, 'गविंद' प्रभु तहाँ छबि निरखत हैं ।।२०।।

राग सारंग—सीतल उसीर गृह छिरक्यौ गुलाब नीर परिमल पटीर घनसार बरषत है । सेज सजी पत्रन की अतर सों तर कीनी अरगजा अनूप अंग मोद दरसत है ।। बीजना बियार सीरी छूटत फुहारे नीके मानों घन में न्हनीं न्हनीं फुही बरसत है । चतुर बिहारी प्यारी रस सों विलास करत जेष्ठमास हिमंत ऋतु सरस दरसत है ।।२१।।

श्री वल्लभ युगल जी महाराज कृत—राग सारंग

सुन्दर युगल सुहावनी राजत कुंज उसीर । प्रफुलित कमल कंज चहुँ दिसि सीतल यमुना तीर ।। मन मघवा मोहन मत्तौ सींचत नेहनि नीर । नदित केकि कोकिल कल हंस कोकिला कीर ।। मनों रितुराज समाज की ह्वै रही रच पच भीर । कोमल किसलय फूल फल सौरभ बहत समीर ।। तरल तरंग फुहारनि सीरौ धीर समीर । पट पियरौ सियरौ भयौ तैसोई नीलनि चीर ।। बैठे दोऊ गरबाहिनु बाँहन मन्मथ बीर । वल्लभ युगल परस्पर प्रेम पगे दोऊ धीर ।।२२।।

राग राईसौ—कुंज उसीर सुहावनी राजत रविजा तीर। नेह नवल युत सींचतीं सखि जन धीर समीर॥ प्रेम पराग भरे कमल मुख विकसे चहूँ ओर। प्रीति पवन दोऊ दिसि बहै शीतल सहज न छोर॥ दिपत चाँदनी चंद छबि छटकी नैन चकोर। सीकर सरस सनेह के भिजवत सुख तर बोर॥ कोमल किसलय अधर की छींट छटा छिरकंत। झीने पट अँग लपटि रहे, रस बस भरि सरसंत॥ आनंद उमगि उदधि बह्यौ ताहि पिवन सुख मंत। वल्लभ युगल मिल्यौ जु कछु गायौ लै तिन दंत॥२३॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग सारंग

छुटत फुहारे आगैं विराजैं दोऊ उसीर महल। नीकें ललितादिक गावैं बजावैं मधुर धुनि रस की चहल पहल॥ जब प्यारी फल लै धरति धार पर थिरकि रहै वह हल न चल। कृष्णदास देखि रीझि विवस भई भूली है बिजना की टहल॥२४॥

राग सारंग—वृन्दावन कुंजन के मध्य खसखानौं रच्यौ सीतल वियार झुक गौखन बहत हैं। सुगंधी गुलाब जल स्नान बहु भांतिन के लाय धाय सखी सब छिरकत है॥ धार धुरवा छूटत तहाँ नीके दादुर मोर पिक शुक जु फिरत हैं। कृष्णदास फुहारे छूटे मानौं मनमथ लूटे झुक झुक धारे हौदन भरत है॥२५॥

श्री जीवनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

सुन्दर तिवारौ खसखाने कौ बन्यौ है, बैठे ब्रजराज कुंवर मन कों हरत हैं। अति सुगंध जल बहु भांतिन के बेला भर लाय लाय सखी सब छिरक्यौ करत है सीतल सुगंध त्रिविध

समीर बहे कोकिला चकोर मोर डोलत फिरत हैं । जीवन फुहारे छूटें मानौ मनमथ लूटें झुक झुक धार हौदन भरन हैं ॥२६॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग सारंग

दुपहरी ग्रीषम मानौ पावस रितु भई छूटत फुहारे खस भवन । चंदन कौ पलिंग बिछाये कुसुम दल चंदन कौ लेप तन बैठे खनी खन ॥ मुक्ता भूषन अंग अंग राजैं सकल सुगंधि सींची सीतल अवनि । वृन्दावन हित रूप सहेली सारंग गावति रिझवति राधा लाल कुसुम विजन करैं पवन ॥२७॥

राग सारंग—महा रविजा तट कवनी उसीर मंदिर बैठे श्री राधा कंत । सघन लता तापै झुकि आई ललित फूल फल मधुप भ्रमन रस वंत ॥ नीर गुलाब छुटत हैं फुहारे भुव मनु जलद उलटि वरषंत । वृन्दावन हित रूप लियें बीना गौरंगी सारंग गावत मिलि प्रीतम गुनवंत ॥२८॥

राग सारंग—सखी ग्रीषम भई पावस री महल में छुटत फुहारिनु वारि । खस परदा चादरी करैं बंगला मधि पिय सुकुँवारि ॥ चुनि चुनि कुसुमनि पाँखुरी लाल सज्या रची सँवारि । वृन्दावन हित रूप सुघर अलि लेपति चंदन गारि ।

राग सारंग—सुखद उसीर महल में बैठे ललना लाल रूप गुन रासी । चौपरि पूरि विचित्र दाव रचि खेलत दोऊ परस्पर परि गई होड़ हासि ये हाँसी ॥ को जीतै को हारै बाजी विहँसि विहँसि पासे कर ढारत मृदु मुसिकनि में श्रवन सुधा सी ॥ वृन्दावन हित जीती मेरी प्यारी राधे लाल मुख देखि रहे नागर रसिक निकुंज बिलासी ॥३०॥

राग सारंग—माई री ग्रीष्म रितु आरंभ सखिन कियौ

सरस विचार। रच्यौ सुभग उसीर मंदिर सहचरी सूत धार ॥१॥ सीतल नीर गुलाब सींची कुंज अजिर दुवार। जहाँ तहाँ जल जंत्र रोपे छुटत मिहीं फुहार ॥२॥ कुसुम दलनि सँवारि आसन धरी चौकी चारु। मिहीं अंवर ल्याइ सखियन कियौ युगल सिंगार ॥३॥ घस्यौ मलय सुगंधि चंदन भरे कंचन थार। कियौ हँसि हँसि अंग लेपन प्रिया प्रान अधार ॥४॥ वहत रुचि अनुसार मारुत उठत भुज उदगार। देखि भयौ है अधीर आनन्द मंजु अलि गुंजार ॥५॥ सघन चंदन विटप छाँहीं छत्र के आकार। तैसी हैं बहु वेलि लपटीं मनहुँ रति आगार ॥६॥ तहाँ राजत लाल ललना चतुर परम उदार। गान कलानि प्रवीन दोऊ सुनत मोहित मार ॥७॥ प्रेम पूरित सहसरी नैननि ढरीं सुख वारि। चित्र की सी लिखीं सजनी रहीं सर्वसु हारि ॥८॥ इहि विधि अलि मिलि युगल सेवा करति रितु अनुसार। वृन्दावन हित रूप वैभव निरखि वलि बलि बलिहार ॥९॥२१॥

राग चौतालो—सुभग उसीर मंदिर ता मधि प्रेम पूरन राधा रसिक ग्रीषम रितु क्रीड़ा करत। चहूँ ओर जल जंत्र नीर गुलाब छूटत मिही कन झरत ॥ वीच रच्यौ कुसुम सिंघासन तापर बैठे दोऊ राग रंग करत। वृन्दावन हित नेरैं हित रूप अलि वीरी चँवर लियैं कर वर वीजना ढरत ॥२२॥

❀ ग्रीषम ऋतु के मांझ-सवैया ❀

श्री अनन्य अली जी महाराज कृत—मांझ सवैया

शोभित हैं मलयागिरि के द्रुम बेलि तरैं छविलै लड़काई। पीत दुकूल सुगंध पगे सुलगेतन में तन कौन जनाई

अंगनि अंगनि में प्रतिबिंवत सो दरसे अखियाँन अघाई।
श्री हरिवंश कृपा बल तें बन रूप अनन्य अली दरसाई ॥१॥
कल चन्द्र लता वर मंदिर में विवि चंदन चित्र किये सरसैं।
फुलवारि किधौं छवि अंकुर शोभित कै पट भूषन से ठरसैं ॥
चित्र विचित्र किये अप रूपनि देखत सो छवि कौं तरसैं।
सखी श्री हरिवंश कृपा बल तें कल वानि अनन्य अली दरसैं
॥२॥ अप चित्र विचित्र निहारत री सखि वारत प्राननि कौं
तरसैं। उमड़े सुख सिंधु विन्नी ललकैं पुलकैं कल अंग
विना परसैं ॥ फुलवारि नवीननि में हम राजत यो बतरात
हँसैं सरसैं। सखि श्री हरिवंश कृपा बल तें वर वानि अनन्य
अली दरसैं ॥३॥ पट झीन सुगंध पगे सु लगे तन में तन ही
अति ही झलकैं। सु भई छवि भीर अधीर उभै छवि देखत
केलनि कौं ललकैं ॥ कल गौरहि श्यामल सिंधुनि तें नव रूपनि
की लहरैं छलकैं। सु अनन्य अली हित वानि बिलोकत
नैंननि की न लगीं पलकैं ॥४॥ फूलनि के पट भूषन मंदिर
फूलनि सों सखिनु ने बनाये। फूलनि आसन फूलनि छाइ
सुगंध गुलाबनि सों छिरकाये ॥ राजें तहाँ अति फूलनि सों
विवि फूलनि अंग सिंगार रचाये। श्री हरिवंश कृपा बल फूलनि
ऐन अनन्य अली दरसाये ॥५॥ फूल निवारिन में विवि राजत
देखत फूलनि फूल सँभारें। फूलनि के पट भूषन अंगनि रंगनि
रंग मनों फुलवारें ॥ भृङ्ग मनों दृग चंचल सें मुख नैंन चकोर
सहेलि अपारें। श्री हरिवंश कृपा बल तें नव फूल अनन्य
अली सु निहारें ॥६॥ कल फूलनि के पट भूषन अंगनि भामिनि
स्याम सखी सजलीं वन देखन छैल चले छवि सों सुनि कें

मव आइ सहेली चली धुनि भूषन की मधुरी सुनि के मृग आइ खगे जु रहे अचलीं । सखि श्री हरिवंश कृपा बल देखि अनन्य अली पलकैं न चलीं ॥७॥

चंप चमेलिन कौ वर मंदिर सौरभ भीर समीर चलाई । राजत लाड़िली लाल सखी सब फूलनि माल लला सु बनाई ॥ फूलनि सों पहिराइ प्रिये उर फूलनि सिंधु बढ़ै न समाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन भाव अनन्य अली दरसाई ॥८॥ कुंजनि के पट भूषन वानि सु लाड़िली लाल सखी नव लाई । राजत नीरज मंदिर में विवि गुंजत भृङ्ग विहंग घनाई ॥ मानहु रूप सरोवर में कुच नीरज पीत कली विकसाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन रूप अनन्य अली दरसाई ॥९॥ चित्र विचित्र किये कल रंगनि राजत है खस मंदिर माई । मांझि गुलाब सुगंधनि सों जल जंत्र गुलाबनि के बरसाई ॥ फूलनि के बिजना सखि ढोरत चौंरनि आदि सहेली गहाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें कल बानि अनन्य अली दरसाई ॥१०॥ ग्रीषम की रितु आई सुहाई सु नैंननि कौं अतिहि सुखदाई । सौंज रची सियराई नै सीतल लाड़िली लालहि कौं रुचिदाई ॥ कुंजनि कुंजनि फूलनि सेज गुलाब सुगंधनि सों छिरकाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन बानि अनन्य अली दरसाई ॥११॥ दाखिन कौ कल ऐन बन्यौं कदली अवली फल फूलनि छाई । चंद मनी अवनी रवनी छिरकी सु गुलाब सुगंधनि माई ॥ गुलाबनि के जल जंत्रनि छूटत लाड़िली लाल तहाँ विलसाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन बानि अनन्य अल दरसाई ॥१२॥ चंदन के द्रुम बेलि तरें कल राजत लाड़िली लाल सहेली गौर

छवी दुति सौं वन भूमि लसै इक रंग न जात कहेली ॥ जानि परै न कछू तन भेदनि नैंननि पै चकचौंध छहेली । श्री हरिवंश अनन्य अली उरमें वन वानि सदा जु रहेली ॥१३॥ दाखनि मंदिर में कल राजत लाड़िली लाल खरे हरषाहीं । चीर सुगंध पगे सुपगे तन मैंन दिखै तन कौ परखाई ॥ छूटत रूपनि के जल जंत्रनि लूटत नैंन छवी वरसाई । श्री हरिवंश कृपा बल तें वन रूप अनन्य अली दरसाई ॥१४॥ लागत सीतनि पागत अंग मनौ घन में चपला चमकाई । रूपनि केलिनि की वर्षा वर्षै रितु ग्रीषम कौ जु वहाई ॥ सीतल होत सखी सब देखत नैंननि की पलकैं न लगाई । श्री हरिवंश कृपा वल तें छवि केलि अनन्य अली दरसाई ॥१५॥

❀ जल विहार के पद ❀

श्री अनन्य अली जी महाराज कृत—मांझ-सवैया

भीर भई सर के तट ही छबि मो मति थोर बखान न आवैं । तैसीय छत्री खची मनि मानिक रंगनि रंग दसा झलकावैं ॥ और सबै द्रुम वेलिन फूलहि झूँमि रहे जल में छवि पावैं । श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥१॥ कंज जल स्थल रंगनि रंग विहंगनि भृङ्गनि गान सुनावैं । नागरि नागर के सुख गावत भावत कोटि अनंग जगावैं ॥ चीर कसंत लसंत सरीरनि भीर छवी सर में वरसावैं । श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥२॥ लाड़िली लाल सहेलि महा उनमत्त रसासब खेल मचावैं । बेलिनु छत्रनि पै चढ़ि कूदत नीर भीर सुपार न पावैं दूर

क्नि निकसंत हसंत लसंत पिछै उर मोद बढ़ावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥३॥ लंपट लाल सुवालहि कौं मधि ऐंचत केलि करैं लपटावैं। देतहि छोर किशोर महा विट जाइ मुदूरहि नैंन नचावैं ॥ दौरत भाम लला पर ही तव लै बुड़की मनु मीन छिपावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥४॥ घेर लियौ पिय कौं सखि नें मिलि वारि करी कहुँ जान न पावैं। स्याम सखी मिलि आइ जुरी पिय ओरनि व्है सब काछ कछावैं ॥ मानहुँ चंद घने घन दामिनि आनन्द की वर्षा वर्षावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥५॥ नीर भरैं कर में छिरकैं पिचकारनि सों मनहुं छिरकावैं। नाथ सुहाथ धरैं मुख ऊपर भामिनि मीचत नैंन नचावैं ॥ हार भुजा मुख में भर नीरनि मेलत झेलत है सुख पावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥६॥ झेलत है मुख में सुख पावत लै अधरामृत ही भरसावैं। नैंननि मैंननि की छविली छवि देखि रहौं उपमा न खटावैं ॥ डारत हारत नाहिं उभै पट भूषन की सुधि कौन करावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥७॥ नीरज तोरि किशोर परस्पर भावन सों कल कंज चलावैं। मारत डारत नागरि नागर अंगनि कौं परसैं परसावैं ॥ खेलत झेलत पेलि दई सखि स वरि साँवर हा हा सु खावैं। श्री हरिवंश कृपा वल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥८॥ भाँतिनि २ खेल किये छवि रूप अनूप कहत न आवैं। छूटि गये पट ही लट भूषन भीजि गये तनमें न

लसावैं । श्री हरिवंश कृपा बल तें सर खेल अनन्य अली दरसावैं ॥९॥ अंगनि के रंग धोइ गये सब रंग विरंग सरोवर मोहै । देखत नागरता कलता अरु कामिनि काम करोरनि को है ॥ और कहा सु कहौं रचना वर मोहनि मोहन कौ मन मोहै । श्री हरिवंश कृपा बल तें सुख रूप अनन्य अली कल जोहै ॥१०॥ लाड़िली लाल सखी सर तें निकसे सब बाहर नीर चुचावैं । रूप सिंगार सुमेरनि तें मनु आनन्द के झरना जल आवैं ॥ अंगनि कान्ति लसांति दसौं दिसि चंदनि वृन्दनि जोति लजावैं । श्री हरिवंश कृपा बल तें नव रूप अनन्य अली दरसावैं ॥११॥

गो० श्री मोहन हित लाल जी महाराज कृत—सांझ

जल विहार श्री राधा वल्लभ मान सरोवर करहीं । चौंपनि जल छिरकत दुहुँ कोदनि सखी समूह न डरहीं ॥ भीजे वसन लाग तन सुन्दर उपमां कहत न ठरहीं । जै श्री मोहन हित सजनी कौ यह सुख दृग देखन अरवहीं ॥१२॥ जल विहार श्री यमुना जल में ललितादिक जु करावैं । सखी समूह राधिका वल्लभ जल छींटत हरषावैं ॥ कबहूँ नाव चढ़े जल डोलें लखि तरंग मुसिकावैं । जै श्री मोहन हित सखी श्रमित जानि कैं कुंज सैंन पधरावैं ॥१३॥ हौं बलि जल विहार उपमा नहीं दुहूँ खिलार प्रवीना । भिंहीं पट नाभि सरोवर प्यारी दरस लाल मन मीना ॥ पुनि प्यारी मुख इंदु लाल के दृग चकोर आधीना । जै श्री मोहन हित सजनी लखि विहँसी युगल मिलन करि दीना ॥१४॥ लता भवन के बीच सरोवर बहु फूली फुलवारी । छुटैं फुहारे पत्र लतन तें झरना मनौं वरषा री ता मधि उभै

करैं जल क्रीड़ा सखी संग हितकारी। जै श्री मोहन हित रस की लखि घातैं दीनौं सर्वसु वारी ॥१५॥ जल विहार करि फूल बंगला राजत भये हरिवंश दुलारैं। फूलनि सिखर फूलनि कौ मंडप फूलनि सिंघासन छवि भारैं॥ फूलनि कौ सिंगार किये हैं जल गुलाब के छुटत फुहारैं। जै श्री मोहन हित स्वामिनि पर अलिगन प्रांन संपदा वारैं ॥१६॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत--मांझ

भरि गुलाब जल विमल सरोवर दंपति केलि सुँचाई। श्रैणी अमल कमल नैंनी अलि पंकज पाँति डुलाई॥ गहि गहि कलस तरंगनि बदलत डूबन उछरनि लाई। बलभ रसिक अंग अँगनि तें निज निज छवि दरसाई ॥१॥ करनि चाँपि पिचकें सी छोड़ैं ओढ़े हलि तरु डारैं सी। दवि दवि कमलनि तें निकसें मकरंदनि की धारैं सी॥ नैन उरोजनि जात जानि निज निज भिजएं ही डारैं सी। वलभ रसिक अली रस डूबीं जुगल चंद छवि तारें सी ॥२॥ लै लै चुभकीं अंतर शुभकीं लुभकीं परसनि भावैं। लपटनि में कपटनि भजि चौंकनि नौंकनि नैंन नचावैं॥ मरम हँसी बनसी रस हिलगीं लगीं मीन जिम आवैं। वलभ रसिक रसनि तन मन सनि निकसनि मनहि न ल्यावैं ॥३॥

ठाढ़ें न्हाइ रतन चौकी पर सुन्दर दरपण जोहे। चंदन खौर लसी उर पर उरवसी उरवसी मोहे॥ गोल कपोलनि मोती जोती को ती देखि न मोहे। वलभ रसिक पियारी नें दी बेंदी यारी सोहे ॥४॥ पहिरि सुदेश केशरी धोती मंजुल पिंजुल सोहें। वल्लभ रसिक मिंही डुपटा के छुटे छोर लटको हैं

माथे जूरा हाथें चूरा धरे तंबूरा कोहैं गावत आज हौज पर ठाढ़े मौज भरे तिय सोहैं ॥५॥१७॥

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग कान्हरो

सुन्दर पुलिन सुभग सुख दायक । नव नव घन अनुराग परस्पर, खेलत कुंवरि नागरी नायक ॥ शीतल हंस सुता रस वीचिनि, परस पवन शीकर मृदु वरषत । वर मंदार कमल चंपक कुल, सौरभ सरस मिथुन मन हरषत ॥ सकल सुधंग विलास परावधि, नाचत नवल मिले स्वर गावत । मृगज मयूर मराल भ्रँमर पिक, अद्भुत कोटि मदन सिर नावत ॥ निर्मित कुसुम शयन मधु पूरित, भाजन कनक निकुंज विराजत । रजनी मुख सुख राशि परस्पर सुरत समर दोऊ दल साजत ॥ विटकुल नृपति किशोरी कर धृत, बुधि बल नीवी वंधन मोचत । नेति नेति वचनामृत बोलत, प्रणय कोप प्रीतम नहिं सोचत ॥ जय श्री हित हरिवंश रसिक ललितादिक, लता भवन रंध्रनि अवलोकत । अनुपम सुख भर भरित विवस असु आनन्द वारि कंठ दृग रोकत ॥१८॥

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत—राग कान्हरो-सारङ्ग

कुंजन की वीथी सुखदाई । उड़ि उड़ि परयौ पराग अवनि पर फूली लता चहूँ दिसि छाई ॥ मंद मंद गति सों पिय प्यारी आवत छवि पावत अधिकाई । निरखत निरखत बन की सोभा कालिंदी तट पहुँचे जाई ॥ मणि गन जटित नाव अति सुंदर मधि मंडल फुलवारि सुहाई । तिहि मधि बैठे जाइ लड़ैते कर्ण-धार खेवत मन भाई ॥ कंचन मनि गन जटित फूल विवि लता भूँमि जल सों परसाई । फूले कमल अमल ना ना रंग गुंजत भ्रमरनि अति छवि छाई श्री यमुना तट मान सरोवर मधि

संगम तहाँ नाव लगाई . उतरे जल विहार को जै श्री कमल नैन छवि पर बलि जाई ॥१६॥

राग सारंग—जल विहार समयौ मन भायौ । बसन भीजि लगे अंग अंग सों छिरकत जल छींटनि झरलायौ ॥ बुड़की लेति चलति मीननि ज्यों परसनि अंग अनंग जगायौ । जल क्रीड़ा करि जै श्री कमल नैन हित बसन पहिरि उपवन दरसायौ ॥२०॥

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत—राग धनाश्री

लाल लाड़िली करत विहार । अपने अपने यूथ सखी करि छोड़त कर जल धार ॥ अंजुलि भरि भरि चौंप चाव सों देत उछार उछार । छिरकत नैन बैन हँसि बोलत नेह भरे रिझवार ॥ सीत ऊष्ण रितु समय विचार न्हवावत अलि शुक सार । पहिरावत हित रूप आनि तहाँ धौत बसन जु सँवार ॥२१॥

राग सारङ्ग—तरनि सुता तट सुभग सरोवर सरस गुलाब उठति उदगारैं । अद्भुत जल जंत्रनि चहुं दिसि तैं सौरभ सार छुटति जल धारैं ॥ झुकनि झुकी तहाँ लता माधुरी कुंजनि कुंज भ्रमर गुंजारैं । मध्य उसीर महल पिय प्यारी तलप पराग सुरति उर धारैं ॥ साज समाजनि सजि सजि सहचरि चिक बाहर मृदु गान उचारैं । जै श्री हित चित रूप अनूप छकनि छकि लाल लड़ैती रस विस्तारैं ॥२२॥

राग सारंग—कदम खंडी चहुँ ओर सरोवर कदम खिले । मध्य उसीर महल अनुरागे दंपति आनि मिले ॥ सजि सजि साजनि गान तान सुर सारङ्ग मदन पिले । जै श्री हित अलि रूप अनूप त्रिभंगी रङ्गी रङ्ग मिले २३

राग सारंग विवि सुख सेज सरोवर क्रीड़त रूप नीर छवि तरल तरंगा। वैस संधि वय आसव छकि छकि नेह गजक अनुराग अभंगा ॥ नैंन मीन मुख कमल प्रफुल्लित अलि दृग भृङ्ग पराग अनंगा। जै श्री लाल रूप हित चित नित सेवत सुरति विहारी विहारिनि संगा ॥२४॥

गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग सारंग

ग्रीषम रितु जमुना जल क्रीड़त राधा संग नव रंग विहारी। स्याम ओर वृन्दादिक राजत स्यामा दिसि ललितादिक प्यारी ॥१॥ कवहूँ करतल बल जल छींटत कवहूँ हँसि भाजत दै तारी। कवहूं नैन सैंन दै पकरति मोहन कौं वृषभान दुलारी ॥२॥ कवहूं दै बुड़की जल उछारत कवहूँ रवकि भरत अकवारी। कवहूं कमलनि खेल परस्पर कवहूँ तिरत मीन उनहारी ॥३॥ कवहूं चलि वैठत गहरें जल कवहूँ करत कुलाहल भारी। जै श्री किशोरी लाल हित रूप मिथुन जल केलि करत कमनीय महारी ॥४॥२४॥

श्री व्यास जी महाराज कृत—राग सारंग

मन करि मान सरोवर खेलत। ग्रीषम रितु सजनी सजनी मिलि विरह ताप पग पेलत ॥ बूड़क लै जल ही जल आये हरि सहचरि कौ बपु धरि। थाह लेत ही कुंवरि राधिका धाइ धरी आँकौ भरि ॥ चुंवन परिरंभन पहिचाने नागरी जाने नागर। इहि विधि जल थल छल बल क्रीड़त व्यास प्रभू सुख सागर ॥२६॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत—सवैया

सेज सरोवर राजत हैं जल मादिक रूप भरे तरुणाई। अंगनि आभा तरंग उठैं तहाँ मीन कटाच्छनि की चपलाई

प्यासी सखी भरि अंजुलि नैंन पिये तें गिरी उपमा भुव पाई
प्रेम गयंद नें डारे हैं तोरि कैं कंचन कंज चहूँ दिसि माई ॥२७॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

जमुना जल में करत कलोलैं । बाल समीप लाल मन मोहन ग्रीषम रितु हित क्रीड़त डोलैं ॥१॥ राजत संग समूह सखी जन तन जल में मुख ऐसैं लोलैं । तिरत फिरत मानौं पूरन ससि किधौं घन में गन उदित विलोलैं ॥२॥ कबहूं मिलि छिरकत लालन कौं वास विवस गुंजत अलि टोलैं । नृप मनमथ अविवेक मनौं चहुं दिसि तें जन जै जै बोलैं ॥३॥ कबहूँ विहरत बाँहाँ जोरी हाथ मलति पाइन टक टोलैं । कबहूं लाल अगाध चलत लै बाल गहत भुज कंठनि बोलैं ॥४॥ कबहूं छल सौं लै बुड़की पिय दुरि प्यारी कंचुकी बँध खोलैं । परसत अंग हसी मन नागरि जानें पिय जद्यपि जल ओलैं ॥५॥ वारि विहार करत रस बाढ्यौ बरनि सकै इहि सुख कौं कोलैं । दामोदर हित मूक मिठाई खाइ न स्वाद कहैं सिर ढोलैं ।६।२८।

श्री रसिकदास जी महाराज कृत—राग विलावल

सरिता के तट छबि लता सी ठाढ़ी प्यारी झल मलात सारी इक लौट । लाल लालच सौं लै आये सुरंग चीर चुनि अरु बिचित्र अतरौट ॥ प्रेम भरी पहिरत पहिरावत कल कंचुकी वँद देत सँवार सलौट । रसिक दासि रीझि माँगत री प्यारी दैं अब तें मान करौट ॥२६॥

राग सारंग—करत जल केलि रस खेलि राधा रमन संग नव हेलि ललना सुहाई । छिरकि अंग अंग सिख नख रंग आलिंगन भुज भृङ्ग भर भाइ रति रंग भाई चलत चख चीर

छवि भीर तन चारु पर नीर में हीर झलमलत झाँई । रसिक सुख रासि मोहे रसिक दासि है वास पहिराइ लाड़नि लड़ाई ॥३०॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—राग सारंग

मीन लौं सर वर पैरत राधा संग हरि दुरि जल में दोऊ गात । लै चुभकी लपटात अंग यौं कोऊ न जानैं अलि संगनि की उछरत न्यारेई दरसात ॥ कबहुँक कौतिक अनूठौ करत तन स्याम गौर तहाँ अरुन नील रंग कमलनि में मिलि जात । सहचरि सुख कल केलि विहार मान सरवर कौ फूली रीझि कुंजनि वृन्दावन देखै ही रसिकनि नैंन सिरात ॥३१॥

श्री बिहारिन दास जी महाराज कृत—राग सारंग

महा मत्त माननी मनोहर मान सरोवर खेलैं । छिरकत छींट कटाच्छनि छवि सौं छैल उमँगि रस झेलैं ॥१॥ बाढ़त अति अनुराग परस्पर प्रेम भुजनि बल पेलैं । ह्वै गयौ खंड खंड जल इत उत सुख सागर की रेलैं ॥२॥ उदित मुदित युगराज विराजत लाज नवल अव हेलैं । ह्वै मन मगन लगन अँग अंगनि चीरनि चिकुर सकेलैं ॥३॥ भींजे वसन निवारि सिंगारत सखि गुहि माल धमेलैं । श्री बिहारिन दास दरसि सुख वरणत जल थल कुंजनि केलैं ॥४॥३२॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग सारंग

बाढ़ी यमुना जल कल केलि । कुंवरि कुंवर सब संग सखी लै खेलत आनन्द झेलि ॥ भरत धरत कोलाहल उमगे नागर सुभग नवेलि । छिरकि चले प्यारी जब प्रीतम पकरे प्रीतम पट मेलि ॥ उदित उजागर अंग रसीले भींजे वसन सुहेलि । मंगल रूप संपदा प्रगटी उपमा सब पग पेलि फैलि रही मोहन

के नैननि प्रिया प्रेम की बेलि नागरीदास बलि बलि विव. जानियति छतियाँ लगि खेलि ॥३३॥

आई है गेह स्यामा उपवन तैं लियें भाँवतो संग । डोलनि कौ श्रम दूरि करन हित मंजन काज चली कुंज कौ एरी वगरारै है वार सिंवार पीठ पर कारे सचिक्कन रंग ॥ न्हावत अहा कहा छवि पावत गोरी ढिंग नई बाल साँवरी टहल करत श्री अंग । नागरि सखी ओट लियें ठाढ़ी कमल चरन की चंदन पावरं एरी दुरि देखत बावरी सी रही जकि भई नैननि गति पंक ॥३४

स्यामा तेरी जोवन नदिया गहरी । नील दुकूल तरंगें तन की झलकत अद्भुत लहरी ॥ बूढ़त विवस भोर में मोहन काढ़ि बाँह दैयै री । छवि सागर नागर नव रंगी मिहरवान तू मेहरी ॥३५॥

श्री रूप रसिक जी महाराज कृत—राग सारंग

जल क्रीड़ा ब्रीड़ा तजि करें । जुगल किशोर जोर चहुँ ओरिन गोरिन के गन मन हरें ॥ छिरकत जात गात छल छन्द करि अति आनंद उर में भरें । रूप रसिक रस बहस बढ़े दोऊ मनहु मेघ दामिनि अरें ॥३६॥

अरस परस मिलि कंत कामिनी कमल कुलन कल मार मचाई । मृदुल मनोहर सुरंग रंग के अँग अंगन प्रति परसहि जाई ॥ झेलहि पेलहिं पुलकि दोऊ जन तन मन मोद बढ्यौ अधिकाई । रूप रसिक बड़ भागनि सहचरि देखत दृगन निमेष न लाई ॥३७॥

गो० श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज कृत—राग सारंग

यमुना जल में करत कलोलैं । ग्रीषम रितु ग्यारस उजि-यारी जेठ मास सुख वरषत डोलैं कर पिचकारिन सों जल

छिरकत प्रिया वदन मोरत दृग खोलैं बुड़की लाल लई जल भीतर खेंचत जल विच नील निचोलैं ॥ अरवराय पट पकरयौ प्यारी इत उत देखि जानि गई तोलैं । प्रीतम प्रिय पद हृदये राख्यौ मैंन मत्यौ कर पकरत जोलैं ॥ प्रफुलित नैन बैंन रस माते गरवहियाँ दै रस मय बोलैं । झीनें वसन चिहुट अंगनि सौं जै श्री गोवर्द्धन लाल बिक्यौ विन मोलैं ॥३८॥

श्री सरसदास जी महाराज कृत—राग सारंग

विहरत जमुना जल सुखदाई । गौर स्याम अँग अंग मनोहर चीर चिकुर छवि छाई ॥ कवहुँक रहसि वहसि हँसि धावति प्रीतम लेत मिलाई । छिरकत छैल परस्पर छवि सों कर अंजुलि छुटकाई ॥ कवहूँ जल समूह रम झेलत खेलत लै बुड़काई । महा मत्त जुग वर सुखदाइक, रहत कंठ लपटाई ॥ क्रीड़त कुंवरि कुँवर जल थल मिलि रंग अनंग वढ़ाई । हाव भाव आलिंगन चुंवन, करत केलि मन भाई ॥ भींजैं वसन निवारि सहचरी, नव तन चित्र वनाई । रचे दुकूल फूल अति अंग अंग सरसदासि वलि जाई ॥३६॥

श्री भगवत रसिक जी महाराज कृत—यमुन जल विमलत युगल किशोर । उवटि न्हाइ पहिरि पट भूषन, सजि सिंगार दुहूँ ओर ॥ रस भोगी रस भोगत रुचि सौं हिलि मिलि हियौ हिलोर । भगवत अधर पान अचवन लै, वीरी देत मुख जोर ॥४०॥

राग जैजैवंती चौतालौ—जल में विहार करैं कीरति सुकुँवारि लली नंदलाल संग लियैं सखी सव ते भली । नाम ता सहचरि कौ हित हरिवंश रूप जगत के तारिवे कौं कैसी रची सूधी गली यमुना जू केलि समै मंद मंद लहरि लेत कैसी छवि

बाढ़ी सब फूलनि सिंगार कली। देखि देखि सोभा कौं लजात चन्द्रमा की जोति कवि की सामर्थ कहा राधा लाल रंग रली।४१।

श्री सूरदास जी महाराज कृत—राग सारंग

जमुन जल गिरिधर करत विहार। इत उत गोप बधू मिलि छिरकत हस्त कमल सुख सार॥ काहू की कंचुकी छूटी काहू के बिथुरे हैं बार। काहु खुभी काहू नक बेसरि काहू के टूटे हार। सूरदास कहँ लौं बरनों मैं लीला अगम अपार॥४२॥

रीझे श्याम नागरी रूप। तैसीये लट बगरीं ऊपर श्रवत नीर अनूप॥ श्रवत जल कुच परत धारा नहीं उपमा पार। मनों उगलत राहु अमृत कनक गिरि पर धार॥ उरज परसत श्याम सुंदर नागरी सरमाइ। सूर प्रभु तन काम व्याकुल गए मननि जनाइ॥४३॥

स्यामा स्याम अंक में भरी। उरज उर परसाइ भुज भुज जोरि गाढ़े धरी॥ तुरत मन सुख मानि लीन्हौं नारि तेहि रंग ढरी। परस्पर दोऊ करत क्रीड़ा राधिका नव हरी॥ ऐसें ही सुख दियौ मोहन सबै आनन्द भरी। करति रंग हिलोर यमुना प्रेम आनन्द भरी॥ रास निशि श्रम दूरि कीन्हौं धन्य धनि यह घरी। सूर प्रभु तट निकसि आए नारि संग सब खरी॥४४॥

राधे छिरकत छींट छबीली। कुच कुम कुम कंचुकी बँद छूटे, लटकि रही लट गीली॥ बंदन सिर ताटंक गंड पर, रतन जटित मणि लीली। गति गयंद मृगराज सुकटि पर शोभित किंकिणि ढीली॥ मच्यौ खेल यमुना जल भीतर प्रेम मुदित रस भीली। नंद सुवन भुज ग्रीव विराजत भाग सुहाग भरीली॥ वर्षत सुमन देवगण हरषित दुन्दुभि सरस बजीली। सूर स्याम स्यामा रस क्रीड़त यमुना तरंग थकीली ४५

स्यामा स्याम सुभग यमुना जल निरभै करत विहार। पीत कमल इंदी वर पर मनों भोरहि भए निहार॥ श्री राधा अंबुज कर भरि भरि छिरकत वारंवार। कनक लता मकरंद भरत मनु, हालत पवन सँचार॥ अतसी कुसुम कलेवर बूँदें, प्रतिबिंबित निरधार। ज्योति प्रकाश सुघन में खोलत स्वाति सुवन आकार॥ धाइ धरे वृषभानु सुता हरि, मोहे सकल शृङ्गार। विद्रुम जलद सूर मनों विधु मिलि श्रवत सुधा की धार॥४६॥

श्री बाबा वृन्दावनदास जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

विहरत जमुना जल गहियाँ। झुकि रहे अंब कदंब तीर में ऊपर तिनकी छहियाँ॥१॥ झीनें वसन छुहुटि तन लागे छवि कहि आवत नहियाँ। मनहुँ चाँदनी जाल दामिनी लपटि रही ता महियाँ॥२॥ गौर स्याम तन तें दुति निकसी मनु छवि गोभ उलहियाँ। बुड़की लै जु दूरि उछरत हैं लेत फिरत जल थहियाँ॥३॥ पैरत है पिय प्यारी कबहू एक बराबर रहियाँ। अद्भुत समय विलोकि सखी ऊगे जुग ससि मनु इक ठहियाँ॥४॥ लाल भजत गहि लेत सखी प्यारी हारयौ हँसि मुख कहियाँ। वृन्दावन हित रूप छके सुख छकत वदन तन चहियाँ॥५॥४६॥

राग सारंग—अँजुलिनु डारत जल रेल री। कालिंदी कमनीय वारि धँसि रचत नये नये खेल री॥१॥ सखिनु जूथ इत उत जु बराबरि सब मन चौंप नवेल री। छींटत अरु सबल किलकारत आवति दल कौं पेलि री॥२॥ कनक वरन अंबुज भरैं ओलिनु पिय दिसि सकल सहेल री। नील वरन स्यामा सजनी लियें होड़नि देत वगेलि री॥३॥ देखैं बने कहत नहि आवै हंस सुता मधि केलि री। वृन्दावन हित रूप महा रस छके दृगनि कैं मेलि री ४ ४८

फटिक मणि राजति सीढ़ी सुभग सरोवर पूरित निर्मल नीर। जा तट बैठे चरन झुलावत परम कौतिकी बाढ़ी है सोभा भीर॥ छुटत फुहारे लेत मुख ऊपर चुहुटि लगे तन झीने चीर। वृन्दावन हित रूप की गोभा कढ़ी बढ़ी अति विंवित जु शरीर।४६

राग सारंग—राधा हरि जमुना जल धसे। बार बार बुड़की जु लेत हैं ग्रीषम ताप सबै नसे॥१॥ भरि भरि अँजुली सनमुख छिरकत भीजि वसन सिर तें खसे। मुख ससि मनु बदरी तें निकस्यौ रवि ताटंक श्रवन लसे॥२॥ रहे बलु खाइ चिकुर कछु छूटे मनहु राहु अरि नें कसे। मुक्ता माँग नचत मनु उड़गन शत्रु गह्यौ देखत हँसे॥३॥ सूर सुता टापू में सजनी किधौं रमत कल हंस से। लोचन भीत भये मनु वारिज मित्र जानि परवस फसे॥४॥ ठाढ़ी सखी कंठ जल आनन प्रफुलित कंचन कंज से। वृन्दावन हित रूप केलि रुचि गौर स्याम उर उर गसे॥५॥५०॥

तैरत जल में राधा हरि दोऊ बराबरि आगें बढ़ें जीत ताकी। जूथनि जुरि पैरत सखीं पाछैं वारि विदारति कहा कहौं छबि रविजा की॥ मनु अगनित भये उदित निसापति गगन लज्यौ लषि सोभा धरा की। वृन्दावन हित रूप अलौकिक ग्रीषम क्रीड़ा उपमा दैउँ सु काकी॥५१॥

राग सारंग-ताल सूल—कहा जल केलि वनी है री बगेलत भरि भरि अंजुली नीर। चुहुटि लगे अंबर मिही सखी साँवल गौर सरीर॥ ग्रीषम अति सुख वर्द्धनी धनि रविजा जहाँ छबि भीर। वृन्दावन हित रूप मगन भये कढ़ि न सकत जल तीर।५२।

❀ नौका विहार के पद ❀

गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग सारंग

नवल नवारें राजैं दंपति कौतिक कमनीं आजु नयौ री। खेवति अलि गति परम विचच्छन ऊपर कुशम वितान छयौरी ॥ वारिज वारि अमल रवि तनया ता मधि विशद विनोद ठ्यौ री। खेलत खेल भरे सुख चौपरि वदि वदि अपनौं दाव लयौ री ॥ दुहु तट सोभा संघट सखि लखि पवन वेग सम तरत भयौ री। जै श्री किशोरीलाल हित रूप परावधि ललितादिक आनंद दयौ री ॥१॥

गो० श्री जोरीलाल जी महाराज कृत—राग पूर्वी

फूलनि के निवारे मधि बैठे दोऊ राधा लाल फूल भरी सखी फूल डाँड़ीनु सों खेवैं। कोऊ नाचत कोऊ सरस मृदंग लीयें कोऊ गावत कोऊ कुसुमनि जल भेवैं ॥ सीतल सरस भोग लैं लैं आवैं थारी भरि सरस सुगंध सँवारि सब मेवैं। जै श्री जोरी लाल हित जल के विनोद मोद चन्दन लगाइ हरिवंश अलि सेवैं ॥२॥

गो० श्री रूप लाल जी महाराज कृत—गौड़ सारंग

मणि नग जटित विचित्र चित्र कल नौका भल मलात जल माहीं। सरस सुगंध गुलाव सरोवर चहुँ दिसि लता कलप तरु छाहीं ॥ अरुन पीत सित असित प्रफुल्लित पंकज मत्त भ्रमर गुंजाहीं। सजि सजि साज समाज रूप हित गान तान अलि-गन सरसाहीं ॥३॥

राग सारंग—रूप नीर छबि तरल तरंगनि नौका सर अभिलाष विराजैं करिया मदन मनोरथ पूरित क्रीड़त लाल

प्रिया रति साजैं नैन मीन रस लीन विलोकनि अवलोकनि लखि सखि सुख साजैं। जै श्री हित चित रूप खुमारी वारी उपमा कवि कुल की सब लाजैं ॥४॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग सारंग

नवल नव रंग सौं बैठे फूलनि की नाव। अद्भुत छवि फबि रही परस्पर संग सहचरि ज्यौं जग मगे जटित जराव ॥ विमल जमुन जुगराज विराजत मानौं फूले फूल चित चाव। यह कौतिक जल विहार देखि दासि नागरी गुन निधान नव नागर उपजत नव नव भाव ॥५॥

देखौ सखी री देखौ दोऊ बैठे नाव में। गावत आवत चपल चलावत सहचरि चंपा चाव में ॥ स्यामा स्याम दियैं गरबहियाँ नवका बिच रस भाव में। नागर नवल सखिन की अँखियाँ लगि लपटीं लपटाव में ॥६॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग केदारौ

प्यारी तेरो वदन सुधा सर तामें राजत नैन नवारौ। झलकत पलकत पलक वारि अलि वरुनी खेवट कल कटाच्छ उजियारौ ॥ गोलक सिंघासन पै हँसनि विछाय रूप सों पाट्यौ नारौ। प्रेम सहित चित रँग्यौ रंगीलौ तारयौ तारिनु में लै पारौ ॥७॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग केदारौ-ताल आड़

चारु चंदन की नवरिया तामें बंगला छायौ पंकज दलनि। गौर स्याम बैठे ग्रीषम रितु जल विहार करैं खेवति अलि कर वलनि ॥ मोहन मुख मुरली प्यारी लियैं वीन बजावति प्रगट करत ना ना गुन कलनि। वृन्दावन हित रूप थकित रविजा प्रवाह कियौ इत उत हलनि चलनि ८

राग राईसी कुसुम कुंज अलि गुंज बहु बैठे रसिक तहाँ हैं। मणि तड़ाग जल जात रंग प्रफुल्लित विविधि जहाँ हैं ॥१॥ तिनमें मणि नौका रचित ए बहु चित्र बने हैं। जिन पर पुहुप वितान सचि ए रचि रुचिर तने हैं ॥२॥ तामें सिंघासन सुभग ए पट रंग बिछाये। मंद मंद मन भाँवते आनि तहाँ बैठाये ॥३॥ मंद मंद खेवति चलीं ए हरषित सुकुमारी। कमलनि अलि आतुर भ्रमत ए सोभा अति भारी ॥४॥ गावति अलि अनुराग सौं दुहु मन मोद बढ़ावैं। परम रसिक नागर कुंवर वीन प्रवीन बजावैं ॥५॥ रीझि भीजि सजनी सबै नैन प्रान धन वारैं। वृन्दावन हित रूप विवि भरि रस दृष्टि निहारैं ॥६॥

राग सारंग चौताली—राधा लाल बैठे री सुभग सतेसा तामें ग्रीषम रितु करत विलास। कौतिक रस राग रुचि परम विचक्षन ललितादिक राजति पास ॥ भान सुता नीर निर्मल तामें फूले अमल कमल भवरिनु भीर वहै पवन सुवास। आतुर गति खेवति अलि प्रमुदित हित रूप मिथुन वलि वृन्दावनदास ।१०।

सुघर अलि नोका झोका भलैं बचावति पवन परसि डग मगति। प्रीति करन उमगति है रविजा यह वड़ भागिनि ऐसें मोकौं लगत ॥ वारि विसारि कमल मनु हुलसत पूजत सुवास करि नासा षगति। वृन्दावन हित रूप स्वामिनी कहति प्रीतम सों अहा सोभा तोइ अमल जग मगति ॥११॥

राग विहागरौ-चौताली—खेवति अलि परम विचक्षन वैठे दंपति सोभा निकर नवरिया। फूल्यौ कानन देखि प्रसंशति ऊँचौ कर करि प्यारी देखौ लाल अति छवि भरिया ॥ या कानन कौ चंद जौहरी परखै गगन चढि विरमि रहतु रथ आगैं न टरिया।

वृन्दावन हित रूप किरिनि परसत हियँ भीज्यौ सुधा वारि दृग झरिया ॥१२॥

राग सारंग-चौताली—सुभग सर रचित नवारें बैठे दोऊ राग रंग करत। सुभग मधुप नाद सौरभ सुभग स्वाद सुभग श्रवन सुख भरत ॥ सुभग सिंगार किये सुभग अलि वृन्द लियें सुभग नेह बस व्है रंग ढरत। वृन्दावन हित रूप जाऊँ बलि सुभग गुन विस्तरत ॥१३॥

श्री हरिचन्द जी महाराज कृत—पद

नाव चढ़ि दोऊ इत उत डोलै। छिरकत कर सों जल जंत्रित कर, गावत हँसत कलोलै ॥ करन धार ललिता अति सुंदर, सखि सब खेवत नावैं। नाव हलनि में, पिया बाहु में, प्यारी डर लपटावैं ॥ जेहि दिसि करि परिहास झुकावहिं सबही मिलि जलयानैं। तेहि दिसि जुगल सिमिट झुकि परिहीं, सो छबि कौन बखानैं ॥ ललिता कहति दाँव अब मेरी, तू मो हाथन प्यारी। मान करन की सौंह खाइ तौ, हम पहुँचावैं प्यारी ॥ हँसत हँसावति छींट उड़ावत, विहरत दोऊ सोहैं। हरिचन्द जमुना जल फूले, जलज सरिस मन मोहैं ॥१५॥

श्री अनन्य अली जी महाराज कृत—सांझ-सवैया

नाव बनाव अनूप विचित्र खची मणि कुंदन रंग अपारैं।
शोभित हैं दुखनें तिखनें कल छूटत हैं जल जंत्रनि धारैं ॥
लाइ सखी जमुना हित सों झलकांति सुभांतिन भांति अकारैं।
श्री हरिवंश कृपा वलतें वन बानि अनन्य अली जु निहारैं ।१५।

फूलनि आसन चित्र विचित्र विलास अनेकनि भावनि ठानैं।
मोहनि मोहन जोहत मोहत नैंननि की पलकैं न लगानैं जाइ

चढ़ै छबि सों छबिलै ससि खेलन खेलन कौं हरसावै। श्री हरिवंश कृपा बल तें वनबानि अनन्य अली निरखावैं ॥१६॥ भाँमिनि स्यामल होड़ बदैं बदि नाव बराबर राखि चलावै। ऐसेहि साँवरि गौर सखी सब खेलत मोद न हीय समावैं ॥ मीन अकार सुनावनि में प्रिय प्रीतम मोरनि भांति लसावैं। श्री हरिवंश कृपा बल तें बन बानि अनन्य अली दरसावैं ॥१७॥ पेलत दूरि गई छबिली हँसि है छबि फूलनि कौं बर्षावैं। दौरत प्रीतम नाव पिछैं मनु मीननि मोर गहै हित धावैं ॥ जात इतै उत आवत है चपला घन खंजन मीन लजावैं। श्री हरिवंश कृपा जमुना जल खेल अनन्य अली दरसावैं ॥१८॥ भांमिनि जीतनि बेरि सबै हँसती लसती नहि मोद समावैं। त्यौं प्रिय खेलनि झेलनि की पिय के मनमें अति चोंप बढ़ावैं ॥ खेल निहारि निहारि रहैं छबि हास लला सुधि कौं बिसरावैं। श्री हरिवंश कृपा जमुना जल खेल अनन्य अली दरसावैं ॥१९॥ आवनि जावनि कौंन कहै छबि आनन्द वार न पार न पावैं। भांतिनि भांति रही झमकी झलकैं चष कौं मृदु चौंधि लगावैं ॥ भानु सुता मधि दामिनि मेघ मनौं छबि रूप सुधा बरसावैं। श्री हरिवंश कृपा बल नावनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥२०॥ नाव समेत लसैं प्रतिबिंबनि सो रचना चित लेत चुरावैं। कै घन दामिनि चंदनि वृन्द किधौं रवि कंज छबि बिगसावैं ॥ सो तन देखत नागरी नागर मेलनि खेलनि कौं ललचावैं। श्री हरिवंश कृपा बल कौतिक खेल अनन्य अली दरसावैं ॥२१॥ तीरनि पै जल फैलि रह्यौ कल छैलनि के प्रतिबिंब लसावैं कंज मनौं कल ए बिकसे जल जातनि

छांड़ि तहाँ अलि आवैं ॥ एकहि तें छवि एक नई नव जात कहीं न सखी मन लावैं । श्री हरिवंश कृपा यमुना जल खेल अनन्य अली दरसावैं ॥२२॥ भांतिनि भांतिनि खेल किये गन नेक न कोऊ तऊ जु अघावैं। अंगनि चीर सजैं फुलवारी सुगंध पगे कल गात लसावैं ॥ नावनि तें उतरैं सवही वन देखनि कौं अति ही तरसावैं । श्री हरिवंश कृपा वल तें बन रूप अनन्य अली दरसावैं ॥२३॥

श्री अनन्य अली जी महाराज कृत—गेंद खेल के सवैया मांझ

राजत हैं जमुना तट ही बट चन्द्रमनी अवनीं झलकावैं । फैलि रह्यौ सुविशाल दसौ दिसि सीतल छाँह समीरनि आवैं ॥ लाड़िली लाल सखी गन जूथनि फूलनि गेंदनि खेल मचावैं । श्री हरिवंश कृपा वल गेंदनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥१॥ फूलि रही फुलवारि तहाँ ढिंग देखत फूलनि फूल बढ़ावैं । रंगनि रंगनि फूल लये सखि गेंदुनि चावनि भाइ बनावैं ॥ काछहिं आछहिं भूषन चीर सुभीर भई छवि अंग लसावैं । श्री हरिवंश कृपा वल गेंदुनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥२॥ काछहिं आछे भूषन चीर भई छवि भीर कहत न आवैं । कामिनि काम किशोर लजैं अरु देखत फूलन फूल समावैं ॥ लाजनि की सब लाज गई अरु काजहु नैम गये जु लजावैं । श्री हरिवंश कृपा वल तें वन रूप अनन्य अली दरसावैं ॥३॥

डारत मारत गेंदु परस्पर झेलत अंग अनंग वढ़ावैं । लंपट लाल सुझेलत गेंदु मनौं प्रिय के उर सौं लपटावैं ॥ अंगनि अङ्ग प्रवीन महा प्रिय झेलति लालनि घात बचावैं । श्री हरिवंश कृपा वल गेंदुनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥४॥ चावनि

भावनि मारत हैं परसैं अङ्ग अङ्ग करैं मन भावैं । मानहुँ केलिनि खेल मच्यौ मुख मेलनि झेलनि के सब गावैं ॥ लाल निहाल निहाल कहैं पुलकैं ललकैं सरसैं सरसावैं । श्री हरिवंश कृपा बल गैंदुनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥५॥ गेंदुनि खेलनि भांति अनेकनि खेलत वार न पार न पावैं । फूलनि सों नवलासनि सों कल खेलनि खेल भये उपजावैं ॥ खेलहु खेल गये सब देखत आनन्द आनन्द के न समावैं । श्री हरिवंश कृपा बल गैंदुनि खेल अनन्य अली दरसावैं ॥६॥ छूटि गये पट के लटके बँद भूषन टूटि गये लटकावैं । हैं समतूल समात न फूल सखी इतकी उतकी हरसावैं ॥ स्वेद कना तन के पर सोहत मोहत मोहन न पल लावैं । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन रूप अनन्य अली दरसावैं ॥७॥ कंचन नील मणी द्रुम वेलि खचे कल मोतिन से झलकावैं । कै छवि रूपनि कुंजनि ऊपर ओस कना नवला चिलकावैं ॥ भोर भई छवि कौन कहै सखि रूपहुँ देखनि कौं तरसावैं । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन रूप अनन्य अली दरसावैं ॥८॥ भामिनि कौ श्रम जानि लला अप मानत हार जु सीस नवावैं । फूलनि कौ बिजनौं कर लै पिय मंदहि मंद करैं सरसावैं ॥ प्रेम सरोवर ओर चले जल क्रीड़नि कौं सबही तरसावैं । श्री हरिवंश कृपा बल तें बन रूप अनन्य अली दरसावैं ॥९॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग विभास

तरणि तनया तीर आवत हैं प्रात समैं गेंद खेलत देख्यो री आनन्द को कँदवा । काछिनी किंकिणी कटि पीतांबर कस बाँधे लाल उपरना शिर मोरन के चँदवा पंकज नैंन सलोल

बोलत मधुरे बोल गोकुल की सुंदरी संग आनन्द स्वछँदवा । कृष्णदास प्रभु गिरि गोवर्द्धन धारी लाल चारू चितवन खोलत कंचुकी के वँदवा ॥१०॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत—राग धनाश्री

ग्वालिन तैं मेरी गेंद चुराई । खेलत आन परी पलका पर अँगिया मांझ दुराई ॥ भुज पकरत मेरी अँगिया टटोवत छूवत छतियाँ पराई । सूरदास मोहि येही अचम्भौ एक गई द्वय पाई ।११।

❀ रथ यात्रा के पद ❀

(असाढ़ सुदी दोज को यह पद गाये जाते हैं)

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग मलार (टेर पावस की)

रथ चढ़ि आवत साँवरो बरसाने की बाट ॥ सहेली जहाँ दिन दुलहिनि राधिका ॥ नाहीं अंक काहूँ विधि रचे, सम गौरंग लिलाट ॥ सहेली जहाँ दिन दुलहिनि राधिका ॥टेक॥१॥ दूलह लोक मुकुट मणि दुलहिनि लोकनि ओप । रूप अवधि गुन की अवधि दुहुँ कुल कौतिक गोप ॥२॥ अनुरागी ब्रज पति लला रहे नित्त भरयो उमाह । श्रवन रूचै श्यामा कथा दृग देखनि की चाह ॥३॥ दृष्टि पथिक इतहीं वहै पलु पलु नागै अवनि । जो कोऊ कहै सन्देशरा अधिक करैं पियु नवनि ॥४॥ प्रेम सरोवर नन्द सुत कीन्हो मुरली नाद । चकृत भई तरुणी सबै उर बाढ्यौ अहलाद ॥५॥ कलस उतंग जो जग मगैं रावल पति के धांम । तिनहीं देख फूले अधिक लोचन सुन्दर श्याम ॥६॥ गगन जु जलधर ऊनयो ब्रज छवि जलधर नवल । वह जु वरस फीकौ लगै यह तन शोभा सवल ७ सुकला

मास असाढ़ की दुतिया कौ यह नेम रथ चढ़ि आवै ससुर घर कहा वरनौं उर प्रेम ॥८॥ वे देखौ अस्व नचावहीं वाग गहे बल वीर । रथ पर फरकत हैं धुजा अंग कसूँमी चीर ॥६॥ मित्र मंडली संग वनीं मनु फूल्यौ छवि बाग । रूप कल्प तरु मधि लसै लाल भरचौ अनुराग ॥१०॥ अरी नन्द कौ अति लड़ो जाकी इत चित्त वृति । नियरें आयो नगर यों कहत प्रिया को भूति ॥११॥ शोभा वरनति श्याम की विपुल वढ़ावति प्रीति । मरमी सजनी कुंवरि की समुझावति रस रीति ॥१२॥ महल सतखनें लाड़िली राजति सखी गरवांहि । तड़ित निकर दुति देह की बैठी खिरकी माँहि ॥१३॥ वदन मयंक मयूष की आगैं फैली ज्योति । सखी रचि पान खवावहीं ता दृग चौंधी होति ॥१४॥ सादर दृष्टि मिलाय कैं विरमि विरमि चलै लाल । मानौं मीन रसज्ञ दृग फसि गये सोभा जाल ॥१५॥ देखौ मोंहन मदन कौ सो मोह्यौ दृग कोर । रोकैं रुकत न नैंन मन छुटि आवत वरजोर ।१६। लाज आय आड़ी भई शोभा अरुझी दीठि । फूल माल उर ते खसी पठई मनों वसीठि ॥१७॥ बगर बगर तें उठि चले प्रेमी जन पुर भांन । आयौ नैननि भाँवतो दैन अधिक सनमांन ॥१८॥ भयौ पौरि पुर चौंहनो मंगल ठामें ठांम । गारी गावत वाम सब लै लै ब्रजपति नांम ॥१६॥ रावलि पति भुज भरि लिये कर वर राख्यौ शीश । द्विज वन्दी आरज वधू सवहीं देहि असीस ॥२०॥ श्रीदामा हरष्यौ हियें मिल्यौ कृष्ण सौं धाय । दोऊ राज कुँवर निरखि कीरति लेत वलाय ॥२१॥ रानी कीन्हों आरतौ सादर लीन्हों ग्रेह । अमित लाड़ वरनों कहा सासु की कृपा मदेह २२ कीरति की आज्ञा

लई सखी भई कौतुक हार । रथु रनिवास मंगायौ मानिक चौक मँझार ॥२३॥ रस मूरति सजनीं सबै कियौ मनोरथ गूढ़ । राधा मोहन कौं तहाँ रथ पै कियौ आरूढ़ ॥२४॥ कोऊ करति हैं आरतौ रतननि वारति कोय । कोऊ मंगल गाँवहि कहैं धन्य नित्त ऐसौ होय ॥२५॥ रथ जोतैं कोविद अली देहि सम्पति मन मोद । सबहीं आशिका उच्चरहि विधि तन करि करि गोद ।२६। दुरीं झरोखनि निरखहीं कीरति आरज भांम । त्रिभुवन सुख दुर्लभ सखी जो रावलि पति धांम ।२७। सुरपति सम लोचन चहैं रसना शेष समान । दुलहिनि मुख देखन जु पिय पुनि गुन करत वखान ॥२८॥ मंगल कौ मंगल करैं अस मंगल बृज लोक । छबि जु उलेड़नि वरषहीं पिय दृग नान्हीं ओक ॥२९॥ सखीं बहु खेल खिलावहीं कहा वरनौं इक वदन । कीरति अर्घ वढ़ाय कें लये भीतरे सदन ॥३०॥ लाड़ अवधि वरनौं कहा खेलें प्रेम सदेह । श्री हरिवंश प्रसाद बल वरनौं मंगल एह ।३१। दिन दिन सुख ससुरारि अस शारद लहै न अन्त । बृन्दावन हित रूप बलि विलसत राधा कन्त ॥सहेली०॥३२॥१॥

राग मलार ताल आसावरी—रथ चढ़ि आवत भाँवती हो सजनी कौतिक हार । जोतत अस्व डोरि कर गहि कैं प्रीतम नंद कुंवार ॥ भवन भान रनिवास भींतरे मानिक चौक जहाँ विस्तार । दुतिया मास असाढ़ खिलावति खेल परम रिझवार ॥ परम रसिक मुरि देखत जब तब विथकित नैंन मन शोभा भार । बृन्दावन हित रूप अवधि सुख यों विलसत ससुरार ॥२॥

राग सारंग—रथ जोवन रूप नृपति बली । वाजी नैंन अलोलनि छूटत धरत चौकरीं गति भली १ कलँगी भौंह

हलत सिर ऊपर कहाँ कहौं सोभा अली । हाँसि हँकारनि देत सारथी देखि करत अति रंग रली ॥२॥ अंजन रेख बनी अति पैनी बाग मुरनि कोर जु हली । खुरीं कटाच्छ करत अति कौतिक खूँदत नेह अवनि गली ॥३॥ पलक जीन वरुनी जु फौंदना मैंन सैंन इहि छबि दली । डोरा अरुन फबे पट्टे रुके लाज काइजा कख भली ॥४॥ वदन बंगला राजत कलशा सीस फूल छबि भल भली । घूँघट परदा नासा जूवा चक्र चारु चरननि तली ॥५॥ आयौ जीति मदन गढ़ सुभ दिन सदा विजय याकौ फली । वृन्दावन हित रूप राधिका नित नौतन कीरति चली ॥६॥३॥

राग मलार-ताल आसावरी—रथ चढ़ि साँवरौ री आवतु भान जू कैं भौंन । गरजत घन अरु कौंधत दामिनि कुहुक सिखंडिनु लाल छबि वरनौं कौन ॥ सादर लिये महल मंगल सजि रावलि पति महतौंन । वृन्दावन हित रूप झरोखा झाँकति नागरि इत उत दृग मुख मौंन ॥४॥

राग गौरी—झँझोटी तथा काफी—ताल मूल—दुतिया सुदि जु असाढ़ रथ चढ़ि मोहन आये । लगी रथ जात औरु ग्वालनि की वहुरि वाग गहि लाल सुंदर अस्व नचाये ॥ मंगल साज लियें जुवती जन आईं सनमुख लैंन गावति रंग वधाये । मुदित भान पुरवासी सबही कुसुम वृष्टि पुनि होत भीतर भवन वुलाये ॥ मंगल महाराज मंदिर भयौ सखियनि ना ना भाँति ललना लाल लड़ाये । वृन्दावन हित रूप भाग्य फल कीरति आयु सब सुख वांछित पाये ५

राग परज खमाइची–ताल चर्चरी—आयौ री आयौ रथ चढ्यौ मन बढ्यौ लाल मुरली धरन । ससुर ग्रह वास सिरमौर सब सुखनि कौ आजु मंगल भयौ मन जु नारी नरन ॥ नचत बाजी भले पौरि भीतर चले साजि कीरति लगीं आरते कौं करन । वृन्दावन हित रूप विस्व मोंहन लाल आपु मोहे परी दृष्टि चंपक वरन ॥६॥

दोऊ मदन मनोरथ रथ चढ़े । नेह नगर की डगर चलत नित चौप चाह नव नव बढ़े ॥ गुण जु गूढ़ आरूढ़ सारथी प्रेम कलश हित नग मढ़े । वृन्दावन हित रूप भूप मन खेलत कौक कलानि जड़े ॥७॥

राग मलार—देखि सखी नंद गाँम की ओर । रथ पै चढ्यौ भान घर आवत दूलहु नंद किशोर ॥१॥ सखा मंडली इत उत राजत रचत कौतिक जोर । कोऊ गज गति कोऊ चलत अस्व गति कोऊ चलत गति मोर ॥२॥ श्री वृषभानु पौरि जब आये आनन्द बढ्यौ न थोर । कीरति करि आरतौ वदन बिधु पोंछति अंचल छोर ॥३॥ दुतिया सुदि असाढ़ महा मङ्गल गान जील स्वर घोर । पहुनाई आये मोहन सुख सागर लेत हिलोर ॥४॥ कीरति सुहथ जिमावति लाड़ति पुनि पुनि करति निहोर । वारति रतन मुदित मन रानी वधू डारति तृन तोर ॥५॥ मानिक चौक महल भीतर रथ बैठे साँवल गौर । सखीं विचछन अस्व नचावति कर गहि सुरंगित डोर ॥६॥ अति कौतिक रनिवास सबनि कैं दंपति भये चित चोर । कहा कहौं उर उरझनि इत उत चितवत लोचन कोर ॥७॥ चंदन अतर अरगजा चरचति विवि विधु सखी चकोर । वृन्दावन हित रूप वदनि अति देहिं मन मदन मरोर ॥८॥८॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग पूर्वी

मन हरनीं हरिनी कंचन सी कंचन के रथ जुतनि सुहाईं। तापर चढ़े किशोर किशोरी निरखि सखी कैसी छवि छाईं॥ चले हंसजा की दुति देखन बिच बिच कुंजनि केलि मचाई। प्रेम सहित ललितादिक सजनीं रुचि में रुचि उपजावत जाई ॥९॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत—राग देव गंधार

बैठे रथ पर दंपति भावत, वन पथ संपति देखत। करि सिंगार सिंगार भवन तें उपवन बैठक आवत ॥१॥ रंजित रथ के सुवरन चित्र विचित्र तियाहि दिखावत। रंग सुरंग तुरंगनि की वागें गहि उमहि चलावत ॥२॥ चौरासी वाजनि कलँगी राजति लखि नैन दुरावति। सबै विमान विमान किये उपमा नहिं कैसेहुँ पावत ॥३॥ कोमल सुरंग दुरंग तकिया लगि जगि अनंग इतरावत। वल्लभ रसिक रीझि उरझनि में मो नैनानि उरझावत ॥४॥१०॥

रथ चढ़ि आवनि आजु नई। अलिन मनोरथ पथ में लालन सों लड़काइ आइ प्यारी हय बाग लई॥ एक ही ओर दुहूँ चरननि की झुलवनि में झुलई। वल्लभ रसिक छरी फेरनि हँसि हेरनि मति भुलई ॥११॥

श्री विट्ठल जी महाराज कृत—राग मलार

लाल माई खरे विराजत आज। रतन खचित रथ ऊपर बैठे नवल नवल सब साज ॥१॥ सूथन लाल काछनी सोभित उर वैजन्ती माल। माथे मुकुट पीतांबर ओढ़े अंबुज नैन विसाल ॥२॥ स्याम अंग आभूषन पहिरे झलकत लोल कपोल। बार बार चितवत सबही तन बोलत मीठे बोल ॥३॥ यह छवि निरखि निरखि ब्रज सुंदरि नैननि भरि भरि लेत फिर फिर

झुकि झुकि मुख देखैं रोम रोम सुख देत ॥४॥ उतरि लाल मंदिर में आए, मुरली मधुर बजाई । देखि देखि फूलत नंद रानी मुख चूँबति न अघाई ॥५॥ अति सोभित कर लिये आरती करति सुहाइ सुहाई । श्री विट्ठल गिरधरन लाल पर वारत नहीं अघाई ॥६॥१२॥

श्री परमानन्द दास जी महाराज कृत—राग मलार

तुम देखो माई रथ बैठे गिरिधारी । राजत परम मनोहर सब अंग संग राधिका प्यारी ॥ मणि मानिक हीरा कुंदन खचि डाँडी पाँच सँवारी । विविधि विचित्र रच्यौ है विधाता अपने हाथ सँवारी ॥ गाती सुरंग ताफता सुंदर फेरि वाज छवि न्यारी । छत्र अनूपम हाटक कलसा झमकन लर मुक्ता री ॥ चलत अस्व द्वै चलत हंस गति उपजत है छवि भारी । देखि डोरि पचरंग पाट की कर गहि कुँज विहारी ॥ विहरत ब्रज वीथिन वृन्दावन गोपी जन मनहारी । कुसुमावलि वरषत सुर नर मुनि परमानन्द वलिहारी ॥१३॥

राग मलार—रथ चढ़ि आवत गिरधर लाल । रतन जचित सोभित मुक्ता लर नील पदुम की माल ॥ वर दुकूल मोर चंद्रावलि कुंडल लोल विशाल । वसन पीत परिधान मनोहर विमल गुंज वनमाल ॥ सोभित सुभग चारु लोचन मृग मोहत मनमथ जाल । झलकत ललित कपोल लोल पर श्रम जल विंदु रसाल ॥ अमर नारि अवलोकि रूप छवि गति देखि डगे दिग पाल । तन मन धन वारत परमानन्द विवस भई ब्रजबाल ॥१४॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग मलार

तुम देखौ माई रथ बैठे हरि आजु । अति विचित्र पहिरे पट

भीनौं उर सोभित वनमाल ॥ सुंदर मनिन जटित है मनोहर सुंदर है सब साजु । सुंदर तुरंग चलन धरनी पर रह्यौ घोष सब गाज ॥ ताल पखावज वैनु बाँसुरी बाजत परम रसाल । गोविंद प्रभु पीय पै लैं डारत विविधि कुसम ब्रज बाल ॥१५॥

राग मलार—तुम देखौ माई हरि जू के रथ की सोभा । प्रात समैं मानौं प्रगट भए रवि, निरखि नैंन अति लोभा ॥ मणि मय जटित तरु साज सरस सब धुजा चंवरि चित चोभा । मदन मोहन पिय मध्य विराजत मनसिज मन के छोभा ॥ चलत तुरंग चपल भुव ऊपर कहा कहौं चित्त जोभा । आनन्द सिंधु मकर मानौं क्रीड़त मदन मुदित चित गोभा ॥ यहि विधि वन ब्रज वीथिन महियाँ देत सकल आनंद । गोविंद प्रभु हरि सदा बसौ उर वृन्दावन के चंद ॥१६॥

आजु माई रथ बैठे गिरिधारी । वाम भाग वृषभान नन्दिनी पहिर कसूँमी सारी ॥ तैसेई घन उनये चहुँ दिशि तैं गरजति है अति भारी । तैसेई दादुर मोर करत रट तैसेइ भूमि हरियारी ॥ सीतल मन्द बहत मलयानिल लागत है सुखकारी । नंद नंदन की या छवि ऊपर गोविंद जन बलिहारी ॥१७॥

श्री माधोदास जी महाराज कृत—राग मलार

तुम देखौ सखि रथ बैठे हरि आज । अग्रज सहित श्याम घन सुंदर सबै मनोरथ साज ॥ हाटक कलशा धुजा पताका छत्र चमर सिरताज । तुरंग चाल अति चपल चलैं है देखि पवन मन लाज ॥ सुदी असाढ़ द्वौज शुभ दिन अति नक्षत्र पुष्य शुभ योग । वन माला पीतांबर राजत धूप दीप बहु भोग ॥ गारी देत सबै मन भाई कीरति अगम अपार । माधौदास चरण कौ सेवक जगन्नाथ श्रुति सार १८

❀ पावस ऋतु के पद ❀

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग मलार

दोऊ जन भींजत अटकें बातन। सघन कुंज के द्वारे ठाडे अम्बर लपटे गातन॥ ललिता ललित रूप रस भीजी बूँद बचावत पातन। जय श्री हित हरिवंश परस्पर प्रीतम मिलवत रति रस घातन॥१॥

देखौ माई अबला के बल रासि। अति गज मत्त निरंकुश मोहन निरखि बँधे लट पासि॥ अबहीं पंगु भई मन की गति बिनु उद्यम अनियासि। तब की कहा कहौं जब पिय प्रति चाहति भृकुटि विलास॥ कच संयमन व्याज भुज दरसति मुसकनि बदन विकास। हा हरिवंश अनीति रीति हित कत डारत तन त्रास॥२॥

नयौ नेह नव रंग नयौ रस नवल श्याम वृषभानु किशोरी। नव पीतांबर नवल चूँनरी नई नई बूँदनि भीजति गोरी॥ नव वृन्दावन हरित मनोहर नव चातक बोलत मोर मोरी। नव मुरली जु मलार नई गति श्रवन सुनत आये घन घोरी॥ नव भूषन नव मुकुट विराजत नइ नइ उरप लेत थोरी थोरी। जै श्री हित हरिवंश असीस देत मुख चिरजीवो भूतल यह जोरी॥३॥

देखौ माई सुन्दरता की सीवाँ। ब्रज नव तरुनि कदंब नागरी निरखि करत अध ग्रीवाँ॥१॥ जो कोउ कोटि कलप लगि जीवै, रसना कोटिक पावै। तऊ रुचिर वदनारविंद की शोभा कहत न आवै॥२॥ देवलोक भूलोक रसातल सुनि कवि कुल मति डरिये सहज माधुरी अंग अंग की कहि कासों पट

तरिये ॥३॥ जै श्री हित हरिवंश प्रताप रूप गुण वय बल श्याम उजागर। जाकी भ्रू विलास बस पशु रिव दिन विथकित रस सागर ॥४॥

आजु दोऊ दामिनी मिलि बहसी। विच लै श्याम घटा अति नौतन ताके रंग रसी॥ एक चमकि चहुँ ओर सखी री अपने सुभाय लसी। आई एक सरस गहनी में दुहुँ भुज बीच बसी॥ अंबुज नील उभय विधु राजत तिनकी चलन खसी। जै श्री हित हरिवंश लोभ भेटन मन पूरण शरद शसी ॥५॥

राग गौड़ मलार—हौं बलि जाऊँ नागरी स्याम। ऐसे ही रंग करौ निशि वासर वृन्दाविपिन कुटी अभिराम ॥ हास विलास सुरत रस सींचन पशुपति दग्ध जिवावत काम। जै श्री हित हरिवंश लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम ॥६॥

गो स्वामी श्री दामोदर वर जी महाराज कृत—राग मलार

जोरी राजत रंग भरी। नव किशोर घनस्याम तड़ित छबि मोहन रूप हरी॥ सस्मित मुख जुग सहज माधुरी रस निधि निरखि तरी। प्रांन अधार नेंन चंचल गति कोटि तरंग अरी॥ ए रस भेद विविधि रस सागर लोचन अग्र धरी। जै श्री दामोदर हित प्रान वस्यौ सुख देह दसा विसरी ॥७॥

विहरत दंपति मोद भरे। सहज केलि रस पुष्ट कुंवर विवि सनमुख उमगि लरे॥ स्याम सनेह भेद रस लंपट सुंदरि अंग ढरे। वाहु असंक कृत अमृत विंव रस पान प्रमत्त करे॥ प्रिया प्रान पति कुच विच राखे अंग अनंग हरे। जै श्री दामोदर हित प्रेम सिंधु रस बहु बिधि जुगल तरे ॥८॥

गो० स्वामी श्री कमल नैंन जी महाराज कृत—राग मलार

देखौ माई सुंदर कुंज बनीं। बैठे नवल नागरी नागर छबि नहिं जाति भनीं ॥ दादुर मोर पपीहा बोलत बरसत घन सजनीं। जै श्री कमल नैंन हित अति सचु पायौ जागे सब रजनीं ॥९॥

गो० श्री हित हरि लाल जी महाराज कृत—राग मलार

यह घन घुमड़ि घुमड़ि बरसै री। भींजत लाल ललित बर भामिनि अतुलित छबि दरसै री ॥ यह कालिंदी यह वृन्दा-वन पावस रितु सरसै री। जै श्री हित हरिलाल मिथुन जहाँ निवसित वेली बर भुव परसै री ॥१०॥

गो० श्री रूप लाल जी महाराज कृत—राग मलार

रहे दोऊ साँकरी खोर घन आयौ घन घोर। नेह झरी अरु मेह दुहूँ दिसि बतरस चसकैं जोर ॥ लतनि लतनि दुरि बूँद बचावति चपल दृगनि की कोर। जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी बिबि मुख चंद चकोर ॥११॥

गोवर्धन शिखर घटा घन स्याम। छतना सघन द्रुमन तर लीयें उत चपला इत बाम ॥ नीलांबर पीतांबर लहरैं गहरैं बूड़े काम। नेह नीर झर ललित त्रिभंगी रूप लह्यौ विश्राम ॥१२॥

जमुन तट धवल महल भये ठाड़े। झुकि घन गरजि फुहारनि बरषै मदन मनोरथ गाढ़े ॥ दामिनि चमकि झिझक उर भामिनि प्रेम पदारथ काढ़े। जै श्री रूप त्रिभंगी हित चित झलकत दंपति रस बस बाढ़े ॥१३॥

कदंब पर निर्त्तत लाल बिहारी। संग बिहारिनि सुख सोभा निधि भुज भुज उर उर धारी ॥ गरजि गरजि घन बरष फुहारनि चपला चमक महारी। गान तान लषि साज समाजनि रूप अली बलिहारी ॥१४॥

माई तहाँ सुख सेज प्रिया पिय पौढे स्याम घटा घुरि बरसन आई मंद मंद मारुत झकोर मोर कोकिला चात्रिक नें रट लाई। विवि अनुराग रंग रस भीनें हित चित रहे ललचाई॥१४॥

स्याम घन निर्त्तत मोरनि संग। उत घन गरज इतै वंशी रव नेह नीर रस रंग॥ चपला चमकि चौंरि चित भामिनि मिलि अनुराग अभंग। जै श्री हित अलि रूप त्रिभंगी रस वस उर उर लेत उछंग॥१५॥

वंशी निज अलि रूप रवानी। नित्त विहार निकुंज केलि रस पीवत चषकनि पानी॥ हित अरु सुरत सनेह चाह जुत दंपति रति मति सानी। जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी निशि दिन ही मन मानी॥१६॥

सुहावनी बूँद लगै मन भाई। सखी यह पावस की रितु आई॥१॥ चहुँ दिस धुरवा जित तित दरसै। दामिनि लसनि छिनहि छिन सरसै॥२॥ वग पंकति सुखदाई माई। लखि लखि लाल प्रिय उर लाई॥३॥ कुहुकनि मोर पपीहा सोहै। दादुर आगम रति पति मोहै॥४॥ हरित भूमि पर इन्द्र वधू छवि। प्रफुलित लता झुकी जित तित अवि॥५॥ झूमक सारी अलि गन रस रंग। चंद्र मुखी दीपति दुति अंग अंग॥६॥ धवल महल पर साज समाजनि। राग मलार सुरन की गाजनि॥७॥ प्यारी रूप भूप छवि छाई। हित अलि रूप निरखि वलि जाई॥८॥१७॥

राजत रंग महल पिय प्यारी घन गरजत वरषत रस बूँदन। बोलत कोकिल कीर मोर सोर झरलायौ दामिनि

दमकि मनमथ मन रूँदन ॥ हरित भूमि पर इन्द्र वधू छवि देत दंपति राग रागनी की घूँदन । भूषन वसन रंग भीने झीनें सोभा सुख लाल हित रूप कवि मति सूदन ॥१८॥

आजु दोऊ रूप अनूप बने । गौर स्याम सोभा सुख सागर नेह सनेह सने ॥ लतनि लतनि दुति दीपति झलकैं गुन नहिं जात गने । जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी मनमथ गर्व हने ॥१६॥

सखी सुनि मोरनि की झनकार । बादल दल में चपला चमकति चात्रक करत पुकार ॥ हरित भूमि पर इंद्र वधू छवि मनमथ कौ उदगार । लपटी लता तरुनि अनु रागी सूचत विपिन विहार ॥ पूरि रहे सरवर सलिता जल प्रफुलित कुमुद निहार । जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी प्रान प्रिया उर हार ॥२०॥

फवी चटकीली चूँनरि लाल । पहिराई प्रीतम मन हरनी घरनी प्रेम रसाल ॥ भूषन भूषित मणि गन मुक्ता जग मगात छवि जाल । अलवेली लड़काइ ललित गति चलत छबीली चाल ॥ हरित कोर ढिग पीत किनारी सोभित प्यारी बाल । जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी करि राखी उर माल ॥२१॥

भींजेगी तेरी चूँनरी री रस बूँद परैं । ओढ़ें एक कामरी हम तुम मनमथ मोद करैं ॥ लेंउ बलाइ विलोकि वदन छवि चित अभिलाष सरैं । जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी यौं कहि हृदय धरैं ॥२२॥

प्रिये चटकीली चूनरी पहिराई नंद लाल सावन हरषावन

मन भावन सोभित परम रसाल। तैसोई गरजि गरजि घन बरषत कुहुकनि मोर मराल। जै श्री लाल रूप हित चित अवलोकत परे जुगल रस जाल ॥२३॥

बनी वर वानिक आज सखी। गरजत घन बरषत बन सोभा कुंजनि कुंज लखी ॥ निर्त्तति मोरनि लखि मन मोहन उपमा सबै नखी। जै श्री रूप लाल हित रीझ लड़ैती बेसरि आपु रखी ॥२४॥

जुगल रति पावस रितु सरसी। नेह झरी घनस्याम घुमड़ि घुरि दामिनि सुरति लसी ॥ सलिता चाह नीर रस पूरित उर मरजाद खसी। जै श्री हित अलि रूप भूप तन बन सुख लहि गहि भुजनि कसी ॥२५॥

प्यारी जू रूप अनूपम रीति। प्रीतम रहत अधीन दीन अति त्यौं त्यौं करत अनीति ॥ कोटि कोटि रति पति दल मल करत कटाछन जीति। जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी रंगी रंगनि प्रीति ॥२६॥

हेरैं आजु बने वर वानिक। धवल महल के अटा भवन में अलि दुरि मिले अचानक ॥ घन घनस्याम वाम उत दामिनि गरज मदन मन आनक। रूप लाल हित बरषत धुरवा रूप दृगनि करि पानिक ॥२७॥

स्याम घन अलकैं धुरवा छूटे। वदन चन्द्र दुरि दुरि दरसावत कुटिल कटाछिन टूटे ॥ वंशी गरज सुनत चातिक ज्यौं बोलत गोप वधूटे। पीत वसन दामिनि लखि हित रूप लाल रस लूटे ॥२८॥

आजु ब्रज उमड़ि घुमड़ि घन आये मित्र स्याम घन

वंशी बोलनि टोलनि सुनि धाये ॥ कोकिल कीर मोर पिक बोलत गावत राग सुहाये । जै श्री रूपलाल हित चित रस भींजे रसिकन रस सरसाये ॥२६॥

आजु सखी वृन्दावन तन धुरवा । गरजत मधुर मधुर वंशी ज्यौं बोलत चहुँ दिसि मुरवा ॥ चपला चमकि पीत पट मानौं फेरि हेरि चित चुरवा । जै श्री रूप लाल हित सहचरि चातिक रटि लावत नहिं थुरवा ॥३०॥

अरी घन घोर घटा धुरि आई, प्रीति लता सरसाई । गिरि द्रुम हरित भूमि गहवर वन यमुना रुचिर सुहाई ॥ धवल महल पर ललित वंगला लाल प्रिया गरवाई । सूहे वागे रति रस पागे राग मलार जमाई ॥ तैसेई नवल नवल सुख सहचरि साज समाजनि गाई । जै श्री रूपलाल हित रूप रसासव छकनि छके अधिकाई ॥३१॥

सुहावनी बूँद लगै मन भाई । उत चमकनि दामिनि भामिनि घन घनस्याम दुराई ॥ नेह नीर वरषत हरषत दृग चातिक लौं रटि लाई । हिय अभिलाष सरोवर पूरित वन तन ताप मिटाई ॥ प्रफुल्लित कुमुदावलि अलि गन प्रीति लता सरसाई । जै श्री रूपलाल हित सहचरि सेवत दंपति प्रेम बढ़ाई ॥३२॥

या व्रज स्याम सघन घन उनये । चपला चमकि चमकि उर लावत प्रीतम प्रेम नये ॥ कुहुकनि मोर पपीहा पिउ पिउ मदन विलास दये । जै श्री हित चित रूप त्रिभंगी रंगी रंगनि मोल लये ॥३३॥

वदरा वरषन लागे प्यारी पिय उर लागे । धवल महल

मणि रतन बंगला पौढ़े सेज सभागे ॥ झीने सुर गावत अलि रलि सुर सुनत मदन मन जागे । जै श्री रूपलाल हित रूप रसासव छकनि छके अनुरागे ॥३४॥

अरी घन गरजि गरजि बरसै बूँदनि स्यामा स्याम खरे । सघन कुंज की छाँह लता गहें हँसि हँसि भुजा धरे ॥ दामिनि चमकि झिझकि उर लागति ललना रंग करे । जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी प्रेम प्रवाह परे ॥३५॥

प्रिया मुख चंद्र प्रभा घन अलकनि दुरि दरसति । चितवनि सुधा सुभग अति सीतल पिय चकोर दृग तरसत ॥ इन्द्र धनुष पचरंगी सारी सम उडगन भूषन दुति सरसत । जै श्री रूप लाल हित अलि गुन गावैं गरजि गरजि रस बरसत ॥३६॥

अरी गिरिराज शिखर पर वंशी बजावत स्याम । नटवर वेष त्रिभंगी मोहन रटत प्रिया जू कौ नाम ॥ तैसोई घन गरजत मधुर ध्वनि तैसीये दामिनि करति सकाम ॥ कुहुकनि मोर पपीहा जित तित लाल रूप हित धाम ॥३७॥

अरी गिरि गहवर सिखिर विहारिनि राजति अद्भुत रीति । नील पीत वर वसन लसन छबि अंशनि भुज उर प्रीति ॥ ललितादिक अलि गुन गन गावति राग जमावति कवि मति जीति । घन गरजत कुहुकत चहुँ दिस तें रूपहिं प्रेम प्रतीति ॥३८॥

चूँनरी दूंनरी आजु फबी प्यारी तन । तैसीय स्याम घटा दामिनि दुति इत घनस्याम सुभग वन ॥ पहिरे अरून सारी अलि गन हितकारी गावति राग मलार सुरति पन । दुहुँ दिसि उमगि बढी रस सलिता हित अलि रूप धनीं धन ३६

अरी लखि नैंननि री गौर स्याम तन दीपति। तन मन अरुझि अंग अंगनि में राजति मदन मही पति॥ चपला चमकि चमकि लपटावति भामिनि भुज भरि भरि पति। जै श्री रूप लाल हित रूप अनूपम निरखि दृगनि पाई पति ॥४०॥

नौका राग मलार—दुहुँ दिसि कुंज लता तरनि सुता सुख रास। मणि नग जटित फवी मधि नौका सोभित रति पति पास॥ भूषन फूल फूल तन मन विवि लाल प्रिया कृत हास। गावत तान तरंग गरज घन अलि गन करत उपास॥ मह महात सौरभ अंग वसननि छनि छनि हृदय हुलास। जै श्री रूपलाल हित रूप रसासव छकि छकि बढ़ावति प्यास ॥४१॥

धवल महल चढ़ि देखत वन घन वनि ठनि आजु वनें रँग भीनें। विवि गलबाँहीं परसत नाहीं ललचाहीं अँग अंग नवीनें॥ दामिनि दमकि चमकि छवि दंपति कहत वनें नाहिं उपमा दीनें। जै श्री रूपलाल हित रूप लुभाने नेह विकाने प्रेम प्रवीने ॥४२॥

लौने रूप अरी अँखियां स्याम सुंदर घन। धवल महल अलि गन मधि राजत सूहे बसन धनी धन॥ तैसीय साँझ माँझ वन फूली हरित भूमि वृन्दावन। जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी मुरली रटि राधा पन ॥४३॥

पहिर चूनरी धवल महल भई ठाढ़ी। अँग अँग भूषन भूषित सोभा दुहुं दिसि उपजत गाढ़ी॥ घूँमि झूँमि घन वन हरियारी सरसी उर उर काढ़ी। जै श्री रूपलाल हित ललित त्रिभंगी अवलोकत उतकंठा बाढी ४४

गो० श्री किशोरीलाल जी महाराज कृत—राग मलार

हरि संग राधे जू रूप गहेली। स्याम परम अभिराम वाम अंग राजत हैं अलवेली॥ रंग महल रस विलसत हुलसत रसिक कुंवर भुज मेली। पावस रितु घन वरषत गावत राग मलार सहेली॥ रंग गह गही खुभी है चूँनरी उपमा सवही पेली। जै श्री किशोरी लाल हित रूप मिथुन मिलि वाढ़ी है कौतिक केली ॥४५॥

श्री व्यास जी महाराज कृत—राग मलार

आज कछु कुंजन में वरषा सी। वादर घन में देखि सखी री चमकति है चपला सी॥ न्हानी न्हानी वूँदन कछु धुरवा से, पवन वहै सुखरासी। मंद मंद गरजन सी सुनियत नाचत मोर सभासी॥ इन्द्र धनुष में वग पंकति डोलत वोलत है कोकिला सी। चंद्र वधू छवि छाइ रही है, गिरि पर श्याम घटा सी॥ उमगि उमगि रुहसे महि कंपित फूली मृग माला सी। रटत व्यास चात्रक की रसना रस पीवत हू प्यासी ॥४६॥

मानौं माई कुंजनि पावस आयौ। स्याम घटा देखत उनमद हो, मोहन सोरु मचायौ॥ दामिनि दमकति चमकति कामिनि प्रीतम उर लपटायौ। निसि अँधियारी दिसि नहिं सूझत, काज भयौ मन भायौ॥ डोलत वग वोलत घन धुनि सुनि चातक वदन उठायौ। वरषत धुरवा सीतल वूँदनि, तन मन ताप वुझाऔ॥ कुसुमित धरनि तरनि तनया तट, चन्द वदन सुख पायौ। व्यास आस सवही की पूजी, सरिता सिन्धु वढ़ायौ ॥४७॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत—राग मलार

आज सखी नाचत हैं वन मोर निरखि निरखि सोभा

घन दामिनि, गौर स्याम तन ओर ॥ बरषत रूप अमित वर बीथिनि बिकसत सुमन सुरंग। अति अनुराग मुदित बन बोलत द्रुम द्रुम लतनि बिहंग ॥ डोलत हंस हंसजा के तट, बाढ़त आनन्द मोद। हित ध्रुव रहीं भीजि सुख में सखी, चितै मिथुन मुख कोद ॥४८॥

काम रस भीजे है दोऊ लाल। पानिप रूप बढ़ी कछु औरै, घूमत नैंन विशाल ॥ छूटी अलक टूटी हारावली श्रम जल कन बने भाल। सुरत समर सर तें नहिं निकसत, हित ध्रुव उभय मराल ॥४६॥

गरजनि घन अरु दमकनि दामिनी चातक पिक शुक बोलत मोरनि। श्याम घटा काजर हूँ तें कारी उमड़ि उमड़ि आई चहुँ ओरनि ॥ नान्हीं नान्हीं बूँदनि बरषनि लाग्यो तैंसिय रोचक पवन झकोरनि। हित ध्रुव प्यारी प्यार सों झूलति पियहि झुलावति नैननि कोरनि ॥५०॥

आजु छबि बरषत है अंग अंग। मनौं अलक राजत घन दामिनि दशन धनुष वर मंग ॥ मोतिनु माल बुलाक चन्द्र वधू सोभित अधर सुरंग। श्रम जल फुहीं रहीं कछु मुख पर जीति समर पिय संग ॥ भूषन रव कूजत खग मानों अति अनुराग अभंग। प्रफुलित रोम रोम पिय तरु तन भीजे रति रस रंग ॥ हित ध्रुव निरखि सहज छबि सींवा भये सखिनु चख पंग। ज्यों श्रुति सुनत गान रस मोहित चकि रहे रहत कुरंग ॥५१॥

स्यामा जू के चरणन की बलिहारी। जे हैं बसत किशोर लाल के प्राणनि मध्य सदा री ॥ विहरत कुसुम पराग लगत

जब पीत बसन लै झारत। लुठत मयूर चंद्रिका तिन तर अद्भुत छबिहि निहारत॥ जावक चित्र बनाय सँवारत करनि सफल तब मानत॥ हित ध्रुव ते दुर्ल्लभ सबहिनु तें, रसिक मरम पै जानत॥५२॥

ललित ललनि तरैं नान्हीं नान्हीं बूँद परैं भींजत रँगीले दोऊ प्रीतम प्यारी। हँसि हँसि बातैं करैं भुज मूल अंस धरैं लाग्यौ पीत पट तन सुरँग कसूँमी सारी॥ बिबि बदननि छबि रही कछु फुहीं फबि उपमा न जात कछू मन में बिचारी। रसिक उभय उदार गावत राग मलार हित ध्रुव सुनि तान देत प्रान वारी॥५३॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत—राग मलार

पावस रितु कौ आगम आयौ। ठौर ठौर कौंधति बिज्जलिता घन चहुँ दिसि तें छायौ॥ देखत किलकि केकि कोकिल गन जहाँ तहाँ मंगल गायौ। बढ़ी अति ललकि लाल ललना कें प्रेम पुंज बरषायौ॥ हरित अवनि बन रँगन रंगीलौ कुंवरि कुँवर मन भायौ। बिलसत सैंन चैंन में दोऊ कली हगन फल पायौ॥५४॥

आज घन गगन चढ्यौ गरजै। पायौ राज प्रेम रितु पावस मानिनि मन बरजै॥ कोकिल केकि कुलाहल मानौं मदन मंत्र परजै। बाढ़ी ललकि लालची लालहि दै प्रिये पति उरजै। सुनत सखी के बचन श्रवन हँसति ओट करजै। बलि कल्यान स्याम गोरी छबि मिलत कुंज घरजै॥५५॥

आज कछू अति ही घन की घोर। अति आनंद भरे सुनि गर्जनि किलकत नाँचत मोर तैसोइ सरस सुहायौ

सावन मद्दा मत्त जल जोर । तैसीये चल चपला की चमकनि लाघवता चहुँ ओर ॥ तैसीये विपिन भूमि हरियारी बाढ़त मोद न थोर। कोटि कोटि मनमथ छबि लाजति निरखि रहति जिहि ओर ॥ दोऊ नेह मेह रस भीजति राधा पिउ चित चोर । उमगि उमगि क्रीड़त कल कोविद निरखि कली त्रिन तोर ॥५६॥

आजु बन कोकिल मोरनि सोर । स्याम घटा गोरी घन दामिनि वरषत प्रेम झकोर ॥ तैसीय हरित अवनि अब अब छवि तन मन जोवन जोर । नूपुर किंकिनि धुनि सुनि गर्जनि विलसति लख्यौ न भोर ॥ ऐसेई साज वाज दिन दोऊ खेलत वाल किशोर । श्री हरिवंश कृपा रस फूली निरखि कली त्रिन तोर ॥५७॥

देखि री पावस प्रेम समाजै । गोरी स्याम घटा घन दामिनि प्रेम रसैं वरषाजै ॥ तैसोई हरित अवनि वन संपति दंपति हित सुख साजै । निस वासर यह रस झर कौ भरु घर भूल्यौ रति राजै ॥ उमगि कली सलिता ललितादिक संगम सिंधु विराजै । निरवधि केलि वेलि कल वाढ़ी नूपुर किंकिनि वाजै ॥५८॥

देखि री यह पावस रितु आई । नाचति मोर कोकिला गावति वाजति प्रेम वधाई ॥ स्याम घटा अति सरस मेह निधि विज्वलिता छवि छाई । हरषि हरषि वरषत पिउ प्यारी छतियाँ कली सिराई ॥५६॥

नवल दोऊ यों री आज लसें। गौर स्याम घन दामिनि की छवि हरषत वरषत प्रेम रसें गर्जनि किंकिनि नूपुर की

धुनि सुनि सुनि पकरत शब्द दमे श्री राधा हिय केलि कला निधि गाइ कली दिन सेज जमे ॥६०॥

सावन प्रेम संपदा लायौ। हरित भरित फल फूल विपिन रँग मोरनि मंगल गायौ ॥ चात्रक पिउ पिउ करत ललकि रट कोकिल शब्द सुनायौ । यौं जहाँ तहाँ निरभिर हरियारी अवनि सिंगार वनायौ ॥ चपला चमकि चमकि अति लाघव चहुँ दिसि तें घन छायौ । विलसत जुगल सेज सुख की निधि देखि कली जस गायौ ॥६१॥

देखौ माई आजु नैंन फल लागे। गौर स्याम अभिराम रसीले विलसि निसा रस जागे ॥ श्री वृषभानु सुता नँद नंदन अंग अंग रति पागे। प्रेम मगन तन मन पलटे पट वने मनोहर बागे ॥ ये दोऊ अमित रूप गुन सागर नागर रसिक सुहागे । श्री हरिवंश हेत नित नौतन जुगल कली अनुरागे ॥६२॥

श्री लाल वल्लभ जी महाराज कृत—राग मलार ताल सूर

उमड़ि घन लहरि आये इतै स्याम घन तन दुति रसाल। उतै धुरवा इतै अलक उतै दामिनि पट पीत उतै वग पंगति इतै मुक्तमाल ॥ इतै इन्द्र धनुष उतै वैजन्ती माल उतै दादुर इतै नूपुर मुरवा मुरलि धुनि रसाल । श्री हित लाल उतै झूँमि भूमि कौं भिजवाइत प्यारी कौं रिझावत नंदलाल ॥६३॥

नव निकुंज पर छाई वदरिया, कारी पीरी स्वेत वदरिया, दंपति चित सुखदाई । चलत पवन पुरवाई सननननन न जैसेई वोलत झींगुर झुननननन दादुर मोर पिक सोर संग लियै रस की वूँदन झर ल्याई ॥ जित तित करत व्रज वन भुय सरित सरस जल थल जहाँ तहाँ भरे रवि छबि कछु कछु पाई साँवरे कन्हाई

सुकुमारी तिय कर गह कहत निरखि पिय पावस सुहाई आई
गावत गीत ब्रज लाल हित सखिन सवन मन भाई ॥६४॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग मलार

गगन सघन घन गरजै री। चपला चमकनि बूँदें झमकनि छवि पर मोहन लरजै री॥ अंचल ओट चोट नागर सों नेही नैंननि वरजै री। महल निकुंज विहारी प्यारी प्रीतम की निज अरजै री ॥६५॥

राग मलार–आड़ चौतालौ—भीजत दोऊ घन दामिनि तन हेरैं। चातक रट पिक गान भेक रव सुनत केकि कल टेरैं॥ पुलकि पुलकि लपटात गात गसि हँसि उरोज उर भेरैं। आरज वसन तन अवनि अमित छवि अलि ललितादिक घेरैं॥ पावस संपति दंपति विलसत कूल कलिंदिनि नेरैं। नागरी दास नव नागर नेही सदा उर वसो मेरैं ॥६६॥

पावस रितु आई सवनि के मन भाई तैसोई श्री वृन्दावन राजै सुखदाई। तैसोई घन की घोर धनुष चहुं ओर तैसेई नाचत मोर तैसेई चात्रिक पिक बोलनि सुहाई॥ तैसीयै भूमि हरी हरी डोलैं बूड़ैं रंग भरी लता अनुराग ढरी रहीं छवि छाई। निरखि नागरी दासि प्रिया पिय सुख रासि विलसत मन हुलास गावत मलार लाल ललना लड़ाई ॥६७॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग मलार

पहिरें चूँनरि हरिय लतनि तरें रंग रँगीली करति गान। पान खात इतराति कछुक हँसि भुवनि तान हर्‌यौ स्याम सुजान॥ देति ताल कर कमल फिरावति लेत नवल नूपुर में मान। प्रेमदास हित लखि ललितादिक तोरि तोरि त्रन वारति प्रान ॥६८॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत—वर्षा की मांझ

दंपति चित हरषावनि रस वरषावनि वरषा आई । हरी भरी वन भूमि करी चलि इन्द्र वधू दरसाई ॥ नव घन दामिनि संग लसे हुलसें लखि मति ललचाई । वल्लभ रसिक लाल वसननि वनि निकसे अति छवि छाई ॥१॥ घन घनश्याम संग वहु कामिनि दामिनि सी दमकी है । रंग रंग सारी लगीं किनारी झूमि झूमि चमकी हैं ॥ सुवरन वेलि मोल महँगा अतलस लहँगा झमकी हैं । वल्लभ रसिकनि दीसें कंचुकि सव नमकी खमकी हैं ॥२॥ लै लै निकरी चकरी सहचरी चहचरि जोरि मचावैं । मैन भरी तिय कमल नैन मुख सन्मुख आनि फिरावैं ॥ पिय गहि पकरी डोरी टूटन मिसु गोरी ढिग आवैं । वल्लभ रसिक सुकुच पकरी पकरी चकरीनि छुटावैं ॥३॥ नवल लाल नव वाल संग मिलि राग मलारहि गावैं । धुर बादर तें धुरवा छूटैं मुरवा बोलन लागैं ॥ रंग हिंडोरे की डोरी गहि झूलि झूलि अनुरागैं । वल्लभ रसिक मचकि लचकनि रस लीने श्याम सभागैं ॥४॥६६॥

बँगला की मांझ—दंपति महल अटा ठाढ़े वाढ़े घन घटा सुहाई । वन्यो बंगला रंग लाल मणि जाल छटा छवि छाई ॥ सोहैं सूहे वसन सहाने तानें आलिनु गाई । वल्लभ रसिक सूहे की सूरति मनों मूरति धरि आई ॥१॥ रंग सोसनी प्यारी सारी झूलनि झूलति आवैं । घूमति अखियाँ मद छाकी बाँकी चकरीनि फिरावैं ॥ लाल परी चकरी गोरी की डोरी सों उरझावैं । वल्लभ रसिक उरझि सुरझनि हूं फिर उरझाय रिझावैं ॥२॥ नीमा लाल चुरी चढाय करि मुक्ता माल झुलावैं

फेंटा लाल हरी हरी सिरकी फिरकी काढ़ि फिरावै ॥ सुंदर मुदरी छलनि छली सुंदरि निज हाथ हिलावैं । बल्लभ रसिक रंगीले हाथनि दै दै हाथ लड़ावैं ॥३॥ सहचरि नवल वधूटी वीर वहूटी लै लै आवैं । लेत लाल कर देत बाल कैं लाल लाल मन भावैं ॥ दुपटा झटकि घटा में आईं तिय बग पाँति दिखावैं । वल्लभ रसिक वृन्दावन सावन श्याम घनहिं सरसावैं ॥४॥७०॥

श्री श्री भट्ट जी महाराज कृत—राग मलार

भींजत कब देखौं इन नैना । स्यामा जू की सुरंग चूँनरी मोहन को उपरैना ॥ स्यामा स्याम कुंज मधि ठाड़े जतन करत कछु ऐना । उमड़ी घटा चहूं दिशि ते श्रीभट्ट जुरि आई जल सैना ॥७१॥

ठाड़े दोऊ एकहि खोहिया माहीं । वंशीवट तट यमुना जल में निरखत चंचल झाँहीं ॥ कारी कमरिया अंतर दम्पति, स्यामा स्याम सुहाहीं । श्री भट्ट कृष्ण कूट में कंचन, जल वर्षत झलकाहीं ॥७२॥

भींजत कुंजन ते दोऊ आवत । ज्यों ज्यों बूँद परत चूनरि पर त्यों त्यों हरि उर लावत ॥ अति गम्भीर झीने मेघनि की, द्रुम तर छिन विरमावत । जय श्री भट्ट रसिक रस लम्पट हिलि मिलि हिय सचु पावत ॥७३॥

श्री राधे जू सुन्दर छत्ता हमारौ । मोहि सहित श्री स्यामा लायक, वनयो वनिक विचारौ ॥ भींजेगें जु वसन तन भामिनि, छिन एक मेह निवारौ । श्री भट हठ न कियो हित जान्यो, आनि गह्यौ हिय प्यारो ॥७४॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग मलार

चहुँ दिसि तें घन घोर उनए बादर सघनां गरजि गरजि

तरपि तरपि दामिनि, झरपि कुंवरि डरपि प्रीतम केउर लगना ॥ झिम काँवर सिर चूनरी अंचर, पिय पर तारति प्रेम मगना । गोविंद वलि वलि पिय प्यारी रंग भरे, सुरति केलि निसिऽव निसि जगना ॥७५॥

देखौ माई उत घन इत नंदलाल । उत वादर गरजत चहुँ दिसि इत मुरली शब्द रसाल ॥ उत राजत कौदंड इन्द्र कौ इत राजत वनमाल । उत दामिनि चमकत है अति छवि इत पीत वसन गोपाल ॥ उत धुरवा इत चित्र किये हरि वरषत अमृत धार । उत वग पाँति उड़त वादर में इत वाजत किंकिनी जाल ॥ गोविंद प्रभु की वानिक निरखत मोहि रहीं व्रजवाल ।७६।

देखि सखि वरषन लाग्यो सावन । गरजत गगन दामिनी चमकत रिझै लेहु मन भावन ॥ नाचत मोर रसिक मद माते कोयल पिक बोलत है रिझावन । चहुँ दिसि राग मलार सस सुर मगन भए सव गावन ॥ सुनि राधे अव कठिन भई रितु विनु व्रज नाथ नाहिं सुख पावन । जाइ मिली 'गोविंद' प्रभु कों सव विरह विथा जु नसावन ॥७७॥

पावस नट नच्यो अखारो वृन्दावन अवनी रंग । निर्तत गुन रासि वरुहा पपैया शब्द उघटत, कोकिला गावति तान तरंग ॥ जलधर तहाँ मंद मंद सुलप संच गति भेद, उरपि तिरपि मानु लेत मधुर मृदंग । गोविंद प्रभु गोवर्द्धन सिंघासन पर वैठे, सुरभी सखा मध्य रीझे ललित त्रिभंग ॥७८॥

आई जू श्याम जलद चहुँ दिशि तें घनघोर घटा । दंपति अति रंग भरे वाहाँ जोटी फिरें कुसुम वीनत कालिंदी तटा ॥ नान्ही नान्ही बूँदनि वरसन लाग्यौ, तैसीये दमकति दामिनी

छटा गोविंद प्रभु पिय प्यारी उठि चलि ओटि लाल दौरि लियौ धाइ वंशी वटा ॥७६॥

श्री रूप रसिक जी महाराज कृत—राग मलार

प्यारी पिय विवस अधर रस दीजै। लता तमाल दामिनी ऊनयौ अंक माल भरि लीजै॥ मही मुदित छबि उदित विहारी प्रेम रंग उर भीजै। रसिक रूप नित्य (श्री) हरिदासी विपुल विहार रस पीजै ॥८०॥

श्री ललित किशोरी जी महाराज कृत—राग मलार

आज सखी आये मेह सुहाये। गौर घटा उमगी आनंद में महा प्रेम झर लाये॥ राजत धनुष चहूँ दिस नीके छिन छिन रंग सवाये। श्री ललित किशोरी रसिक सिरोमनि करत लाल मन भाये ॥८१॥

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज कृत—राग मलार

देखौ हरि पावस वधू वनी। साजि सिंगार अंग अंगनि प्रति तुमसों सनेह सनी ॥१॥ सघन घटा घूँघट में चपला चपल कटाच्छि विलास। ढरकि रहे धुरवा अलकावलि वग पंकति मृदु हास ॥२॥ जल कन धार हार मोतिनु के विविध वसन पहिराव। ठौर ठौर सुर चाप सुरंग छबि जग मगि रह्यौ जराव ॥३॥ कुसुम कदंब सुगंध वदन कौ लागत परम सुहायौ। चन्द्र वधू रचि रुचिर विराजत चरन महावर लायौ ॥४॥ दादुर मोर सोर चात्रिक पिक सुनियत भूषन राव। उपजै क्यों न गदाधर प्रभु के मन मनसिज रस चाव ॥५॥८२॥

श्री भगवान दास जी महाराज कृत—राग मलार

श्री राधे रूप की घटा हो पोषत चातिक मदन गोपालै। दामिनि वारौं दसननि पर छूटी अलकनि पर धुरवा वारौं वग

पंकति मुक्ता मालै ॥ इंद्र धनुष पचरंग सारी पर वारि डारों अरु वारों जावक पर बूँदनि लालै । पिय भगवान मदन मोहन वारत पिक वानी श्रवननि सुनि सुनि शब्द रसालै ॥८३॥

श्री परमानन्द दास जी महाराज कृत—राग मलार

वरषि रे सुहाये मेहा में हरि को संग पायौं । भीजन दै पीतांवर सारी वड़ी बड़ी बूँदन आयौ ॥ ठाड़े हँसत राधिका मोहन राग मलार जमायौ । परमानंद प्रभु तरुवर के तर लाल कियौ मन भायौ ॥८४॥

श्री नन्ददास जी महाराज कृत—राग मलार

कारे कारे वादर आवत हैं मंद मंद ॥ देखि देखि जिय डरपत मेरी आली मानों मतवारे भारे मनमथ के गयंद ॥ दामिनि दमकि जनों कंचन अंकुश धरैं पवन महावत नीके करि झरकै । धुरवा वांके आकार गंडनि मदकी धार गरज गुंजार सुनि सुनि हियो धरकै ॥ छूटे है वंधन छोर अति ही छोभ भरे आवेंगे निकट जव तव कहा कीजेगी । नंददास प्रभु स्याम शरद रितु दूरि माई प्रान सजीवन विनु कैसें के जीजेगी ।८५

आगम गहरी गरज सुनि चकि रही वाल सलौंनीं । अली के अंक में दुरि रही ऐसैं जैसें कंदरि में केहरि धुनि सुनि मृगी अंक मृग छौनी ॥ नेक न धीर धरै हियो थर थर करै सोचति मन ही मन गहि मुख मौनी । नंददास पिय जो न चलिहो जू वेगि भई है कहा आगे होनी ॥८६॥

मंजु कुंज तर ठाड़े दोऊ रिमि झिमि रिमि झिम वरषत मेहु । सुख के पुंज तर नव किशोर वर रूप आगर तैसोई नयौ नेहु ॥ कवहूँ हँसत खेलत कवहूँ मधुरे गावत रँगीलौ राग

अनुराग कौ गेहु । नंददास प्रभु प्यारी प्यारे सों कहति तुम हो सुघर राय यह धौं तान पिय तुम अब लेहु ॥८७॥

निकसि ठाड़ी भई चढ़ि नवल धवल महल रंगीली आलिनु मांझ । तैसीये ऊननि तैसीये बूँदनि तैसीये कसूँमी सारी तैसीये फूली है सांझ ॥ कोऊ प्रवीन सुवीन बजावत कोऊ हरैं हुडक ढोलक झीने झनकावति झाँझ । नंददास प्रभु पिय प्यारी की छवि निरखि विरंचि की निपुनता भई बांझ ॥८८॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग मलार

श्याम संग रंग भरी राजति राधिका प्यारी मानों घन दामिनी रहसि मिली । पचरंग सारी तामें इंद्र धनुष वनमाल मुक्ता किरनि विच विच जु रली ॥ मंद मंद गरजनि मुरली धुनि वाजति पिय सों मिलि गावति मानों फूली कमल कली । कृष्ण दास प्रभु गिरिधर श्यामा को मुख निरखि चरन परसन लागे हँसि आँकौ भरि ग्रींव चली ॥८६॥

श्री चंचलससि जी महाराज कृत—राग मलार

लाल चटकीली रंगीली चूनरी, ए रंगाई गहरे रंग श्याम । तैसीये छवीली रँगीली जोवन गात पहिरें ओप भई दूना दूनरी ॥ वरन वरन रंग छींटैं तामें भूषन जग मगात ऐसी सूरति मूरति विधिना न तूँ रची तोसी वनिता भूनरी । चंचल ससि प्रभु के रितु वसंत उडगन वरिषा रचित हूंनरी ॥६०॥

श्री मोहनलाल जी महाराज कृत—राग मलार

आली तेरो मान कैसे रहि है जब बोलैगी कोयल वन में । दादुर मोर की टेर परि है श्रवन तातें पिय विन अनंग दहैगो तुव तन में ज्यों ज्यों घर घर धरकैगो हियो त्यों त्यों तर तर

आली सुख पावेगी सवही घन मे ॥६१।

श्री कुभनदास जी महाराज कृत राग मलार

श्याम सुनि नियरें आयौ मेहु। भीजेंगी मेरी सुरंग चूंनरी ओट पीतांवर देहु॥ दामिनि तें डरपति हौं मोहन निकट आपनें लेहु। कुंभन दास लाल गिरधर सों वाढ्यौ अधिक सनेहु॥६३॥

श्री कृष्ण जीवन जी महाराज कृत—राग मलार

माई री श्याम घन तन दामिनि दमकै पीतांवर (वर) फर हरै। मुक्ता माल वग जाल कही न परति छवि विशाल माँनिनि की अर हरै॥ मोर मुकुट इन्द्र धनुप सुभग सोहत मोहत निरखि प्रिया तन दुरि थर हरै। कृष्ण जीवन प्रभु पुरंदर कौ सोभा निधि मुरलिका घोर घर हरै॥६४॥

श्री मीरा वाई जी कृत—राग मलार

प्यारी के चिकुर विथुरे मानौं धारा धरकी श्याम घटा उनई ता मधि पुहुप छूटि परे जैसें वड़ी वड़ी वूँदें। ता मधि मंग मुक्ता वग पांति तरौना अलक वीच विज्जुलता सी कौंधे नेत्र खंजरीट पिक वोलत वोलैं रूँदैं॥ लाल सारी पहिरैं हरी कोर मदायन सी घूँघट करि चली पीठि पाछै तें तरकैं लाल मुनैंयां सी कंचुकी तनी की फूँदैं। मेंहदी सौं आरक्त नख वीर वहूटी औसी पावस वनिता मिली मीरा लाल गिरधर कौं लै काम प्रीति काम हार गूँदैं॥६५॥

श्री शिवराम जी महाराज कृत—राग मलार

वरषत घोरि घोरि वादर तैसेइ वोलत मोर। तैसीये गावति राधिका प्यारी तैसीये मुरली पिय संग वजावत स्वर की उठत

झकोर ॥ सप्त स्वरनि तीन ग्राम इक्ईस मूर्छना उनंचास कोटि तानिनि की मीड़ैं होति संकीरन भेद क्यों हूँ न पायो ओर। श्री शिव राम सखी रीझि भीजि पिय प्यारी दीनें हैं प्रान अकोर ॥६६॥

श्री आनन्द घन जी महाराज कृत—राग मलार

गज चाल चलति जोवन मद माती पचरँग चूनरि पहिरैं वाल। मोरि मुरनि भुज दुरनि भाइ सों उर रुरकति मोतिन की माल ॥ लंक लचनि सु नचनि नैननि की गोरी पीठि पर वेंनीं हाल। मुरकि चितै आनँद घन पिय कों करि जु गई छिन में बेहाल ॥६७॥

श्री सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत—राग मलार

दंपति भींजत वरषत बूँद फुहीं, चित्र महल के आँगन में। कवहूँ आनन पर लेत अंबु कन कवहूँ अधर रस कवहूँ कहत प्यारी मेरे प्रान तूँ हीं ॥ अरबरात अँगिया तरकी करकीं कर चुरियां छूटी वेंनीं जेव रुचि सों गुहीं। सूरदास मदन मोहन प्यारी छवि पर वारी कोटिनु कमल मुहीं ॥६८॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत—राग मलार

ऐसी रितु सदा सर्वदा जो रहै वोलति मोरनि। नीके वादर नीके धनुष चहूँ दिशि नीको श्री वृन्दावन आछी नीकी मेघन की घोरनि ॥ आछी नीकी भूमि हरी हरी आछी नीकी वूंदनि की रेंगन काम करोरनि। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा के (मिलि)गावत राग मलार जम्यौ किशोर किशोरनि ॥६६॥

आये दिन पावस के सच के। सौं वोल वोलिये मान न करिहों, घरी घरी के रूसनें क्यों वनें ते वोल वोलियें जु मन क्रम वच के भयौ है वंधान बहुत जतननि करि विसरे गुन

गम के श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी प्यारी वस के ॥१००॥

यह अचिरज देख्यौ न सुन्यौ कहूं नवीन मेघ संग विजुरी एक रस । तामैं मौज उठति अधिक वहु भांति लस ॥ मन के हरिवे कौं और सुख नांहि कोऊ, प्यारी तू चितवत चितहि करत वस । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी विहारिनि जू कौ पवित्र जस ॥१०१॥

बूँदें सुहावनी लागत मति भींजै तेरी चूँनरी । मोहि दै उतारि धरि राखौं वगल में तूँ नरी ॥ लागि लपटाइ रहें छाती सों छाती लगाय ज्यों न आवै तोहि वौछार की फूँनरी । श्री हरिदास के स्वामी स्याम कहत वीजुरी कौंधें करि हां हूंनरी ॥१०२॥

भींजन लागे री दोऊ जन । अचरा की ओट करत दोऊ जन ॥ अति उनमत्त रहत निशि वासर राग ही के रंग रंगे दोऊ जन । श्री हरिदास के स्वामी स्यामां कुंज विहारी प्रेम परस्पर नृत्य करत दोऊ जन ॥१०३॥

नदित मन मृदंगी रास भूमि सुकांति, अभिनय सुनत्र गति तृभंगी । धापि राधा नटति ललिता रस वती, नागरी गाइ ते ग्रि नाभि तान तुंगी ॥ रसद विहारी वंदे वल्लभा राधिका निशि दिन रंग रंगी । श्री हरिदास के स्वामी स्यामां कुंज विहारी संगीत संगी ॥१०४॥

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामांहि रिझावत । तैसीये कोकिला अलापत पपीहा देति सुर तैसोई मेघ गरजि मृदङ्ग बजावत तैसीये स्याम घटा निशि सी कारी तैसीये दामिनी

कोंधि दीप दिखावत श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी रीझि राधे हँसि कंठ लगावत ॥१०५॥

श्री वीठल विपुल जी महाराज कृत—राग मलार

हमारे माई स्यामा जू कौ राज । जाके आधीन सदाई साँवरो या व्रज कौ सिरताज ॥ यह जोरी अविचल श्री वृन्दावन नाहिं आन सों काज । श्री वीठल विपुल विहारिन के वल ज्यौं दिन जलधर संग गाज ॥१०६॥

जमुना तट स्याम घटन की पाँति । हरित भूमि वन हरित शिखंडी, वोलत अति रस माँति ॥ सुरंग चूनरी की छवि दुलहिनि अभरन ना ना भाँति । श्री वीठल विपुल विनोद विहारी सों, मिलि नित विलसत किलकांति ॥१०७॥

नीके द्रुम फूले फूल सुभग कालिंदी के कूल इन्द्र धनुष राजै स्याम घटन में । नीके गृह लता कुंज नीकी आली अलिगुंज नीकौ राग रंग रह्यौ पिकन की रटन में ॥ नीकी गति मन्द मन्द विहारी आनंद कंद नीकौ भेद वन्यौ अरुन पीत पटन में । श्री वीठल विपुल रंग ललिता के फूले अंग, मिले देखोंगी नैंननि की आछी विधि छटन में ॥१०८॥

श्री विहारिन दास जी महाराज कृत—राग मलार

गावत राग मलार मिले मन विहरत वन वन बूँदनि में । भीजै पीतांवर सारी कंचुकी करत न्यारी कहत हा हा री प्यारी छोरनि छवि फवति फूँदनि में ॥ सूखे वसन वनाइ पिय प्यारी पहिराइ सुख ही में सुख पाइ सीस फूल गूँदनि में । श्री विहारिनि दासि स्वामिनी स्याम निकुंज वसाइ सेज हेज वाढ़ी रुचि रूँदनि में ॥१०९॥

नांन्ही नांन्ही बूँद वन सघन मे मानो प्रेम वरसे पानी सींचि सींचि मन मोद वढ़ावत गावत प्रीतम प्रियहि रिझावत कहि कहि काम कहानी ॥ फूहिनि पात चुचात गात सिरात रीझि भीजि अंग अंग रसिक रवानी । श्री विहारी दास सुख संपति दंपति विलसि विलसि रस पावस रितु रति मानी ॥११०॥

हरी हरी भूमि अरुन्न वूढ़नि अरु नांचत मुदित वन मोर। सारी सुही जुही सिर गूँदें वूँदें वचन मृदु स्याम गगन घन घोर ॥ हरषि हरषि वरषत मन हीं मन प्रेम परस्पर आनंद हियें हिलोर । श्री विहारी दास दम्पति सुख दरसत छिन हीं छिन सुख वढ्यौ दुहुँ ओर ॥१११॥

धूमरे गगन गरजि गरजि उनहरि आये री वरषन कों । तैसोई करि सिंगार स्याम सुभग अंग अंग उमगत इत अवनी रवनी पिय मुख मुख दरसन कों ॥ नान्हीं नान्ही वूँद वचन चनक मूंद अरुन्न हरित प्रेम भरित पियरे पट परसन कों ॥ श्री विहारिनि दासि स्वामिनी स्याम सव रितु रहें लटपटाइ उर सों उर सरसन कों ॥११२॥

धूमरे गगन गर्जत घन मंद मंद वरषत वर वृन्दावन सघन सरस पावस रितु सुहाई । चातिक पिक मोर मुदित नाचत गावत भरे रंग निरखि निरखि, दम्पति सब संपति सुखदाई ॥ तैसिये सरस सरद निशि आई तैसिये निकुंज कुसुम छाई तैसिये ललना लाल लड़ाई कंठ लपटाई । श्री विहारिनि दास गाई गूढ़ ओढ़नी उढ़ाई रीझि रहे अंग भीजि मिलि मल्हार गाई ११३

श्री तानसेन जी महाराज कृत—राग मलार

वरषा नव वधू री ताको रितु दूती लियें आवति। घन गरजत नूपुर बाजत पवन चलत दामिनि दमकति ए सोभा मानों अनेक जतननि करि रिझावति॥ दादुर मोर पपीहा बोलत बरन बरन बादर अंबर फहरावति। आंनि मिलाई हौं तानसेंन के प्रभु कौ प्रस्वेद बूंदनि झरें तातें चंद तरनि लाजनि नेंन दुरावति ॥११४॥

(असाढ़ सुदी एकादसी के दिन यह पद गाया जाता है)

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग मलार ॥वनजारौ॥ (टेर ब्रजवासी चालमें)

यह वनजारौ वीरन नगर कौ कहि सन्देश सखि जाय। वहिन बसत नंद गांम रे काहे न लेत बुलाय॥१॥ पिता भयाने अति वड़ भूप सौं लीजौ मेरौ नाम। पुनि पुनि भाख्यौ वेटी राधिका वेगि दिखावौ गाम ॥२॥ घोषन गढ़त हिंडोरना गोप सुतन के हेत। पीहर पूरी बिसरी कौन विधि तुम न तात सुधि लेत ॥३॥ सावन आयौ सादर नीयरौ अब मोय कछू न सुहाय। कौन मल्हावै वीर हिंडोल चढ़ि अब वहिनैं लै जाय ॥४॥ ज्यौं दिन जात अषाढ़ के त्यौं त्यौं घटत जु भूख। कब विधना दृग दरसाइ है वरसानैं के रूख ॥५॥ जब सुधि आवै मैया लाड़ की तब भर सकूँ न स्वाँस। समझि समझि चुप व्है रहूँ सोदर आवन आस ॥६॥ ऐसे ही कहियो वीर लदैनिया जो मैं कह्यौ है गाय। प्यारी वेटी तुम रावल धनी राधाय लेहु बुलाय ॥७॥ ऐसे ही कहियौ कीरति माय सौं पठवैं राजकुमार। हौं मग हेरौं जायौ माय कौ कब लै चलै जुहार ॥८॥ आयौ है अति लड़ भानु कौ कब सुनि हौं यह पौरि धन शुभ घरी कब वह

होयगी हौ भेटूँगी दौरि ६ रथ चढ़ि आवै सकल समाज लै कब देखूँगी भरि दृष्टि। बिन मा जाये सावन सुख नहीं सूनी लागत सृष्टि ॥१०॥ कहत कहत देख्यौ नगर दिशि नैनन झलक्यौ है नीर। कागा जु बोल्यौ तिहिं छिन दाहिनौ मारग दरस्यौ वीर ॥११॥ आय कही सखी सुलच्छिनी वीरन आयौ जु लैन। विनमित आनंद श्री राधा उर बढ्यौ वरन्यौ जात न बैन ॥१२॥ मिलि सुख बढ्यौ रुचि भोजन कियौ विदा मांगै श्रीदाम। लै चले वहिनहिं रथ जु चढ़ाइ कै पहुँचे तात जु धाम ॥१३॥ श्रावण सफल कीरति नन्दिनी भेटी पर परिवार। झूलत हिंडोले वीर मल्हावहीं दिन दिन सुख विस्तार। ॥१४॥ प्रीतम नव सखि रूप धरि आवत सहज सनेह। वृन्दावन हित रूप सुहावने एक प्राण द्वै देह ॥१५॥११५॥

इति श्री वनजारी लीला की जय जय श्री हित हरिवंश ॥

राग मलार—खुभि रही गोरे गात चूँनरी रँग मगी। अतलौटा अति घूँम घूँमारौ कंचुकि सौंधे सगवगी ॥ तैसेई वरन वरन नग भूपन अंग अंग छवि अधिक जग मगी। वृन्दावन हित सोभा की निधि निरपत पिय पल नहिं लगी ॥११६॥

सेइ नित गौर स्याम रज धानीं। नित पावस जा धाम बसत नित वरषत प्रेम सु पानीं ॥ हरपि हरियारी नेह चोवाई लगै नित भूमि स्वानीं। नित घनश्याम उनयो नित राधे दामिनि भुजनि समानी ॥ इन्दु वधू सी फिरति ललतादिक नित खग मधुरी वानीं। वृन्दावन हित रूप वढ़त रस वैभव परै न बखानी ११७

राज निधि नवल प्रिया तन राजै ॥ फरहरात कमनीय वदन पर अंचल पवन विराजै ॥ भौंहें कमान तिलक सर साधैं जीतन मदन मवासी । एक ते एक सुभट सुंदर अंग महारथी मृदु हाँसी ॥ चंचल वंक दृगनि पर वारौं कोटिक काम तुरंग । मंद चलनि गज गतिहि लजावत करत लाल दृग पंग ॥ रूप गर्व कौ अचल सिंघासन छत्र सुहाग सदाई । मंत्री नेह कियौ बस अपने त्रिभुवन ईश कन्हाई ॥ देश सुदेश प्रेम प्रीतम सौं सकल सुखन की रासी । कला अनेक रहत कर जोरें शक्ति सबै जाकी दासी ॥ गुन अति गहर कहत नहिं आवै परजा आज्ञा कारी । नव जोवन आनंद कौ वैभव विलसत पिय संग प्यारी ॥ सुख समर दल मले मदन दल नूपुर निसान वजाई । वृन्दावन हित रूप स्वामिनी अखिल भुवन की राई ॥११८॥

गौर तन चूनरि सुरंग लसी है । अति ही वेश सुदेश रीति सौं अँग अँग अगस गसी है ॥ मानौ कनक खंभ के अंतर सरसुति धार धसी है । किधौं अनुराग जाल में कौतिक दामिनि आनि फसी है ॥ छोटी छोटी वूँद खुभि रहीं ता मधि इहि विधि छवि दरसी है । अति मृदु गात परसि प्यारी के भाग्य मनाइ हँसी है ॥ पुनि तन बने मणिन के भूषन तिनकी दुति निकसी है । सब अंग मनहु भये रोमांचित गरुवे प्रेम डसी है ॥ पवन परस छूटत जव तन से सिर ते कछुक खसी है । तव रंग हानि सहति जल भींजति गाढ़ी कसनि कसी है ॥ चाह चौगुनी पिय हिय देखन पावस रितु हुलसी है । वृन्दावन हित रूप जाऊँ बलि यह छवि हियें वसी है ॥११९॥

भींजत कुंजन तर छवि पावत उत नव नीरद इतहि

स्याम घन दुहुँ दिसि विहँसि घटावत उत दामिनि इत भामिनि राधा छिन छिन छवि सरसावत ॥ उतहि दुरति इत अचल विराजत मुसकनि हियहि सिरावत ॥ उतहि वरषि अवनी करी सीतल गरज शिषंडिन भावत । इत मुरली मग व्है त्रिभुवन कों वरषि अमी रस प्यावत ॥ उत मारुत अरि तें डरि विचरत इत नित नव दरसावत । वृन्दावन हित रूप परावधि विवि घन तड़ित लजावत ॥१२०॥

वचन सुनि मान न करि री सयानी । पावस रितु सुख विलसनि विरियाँ तैं कत अरवी ठानी ॥ हरी हरी भूमि हरित वृन्दावन वेली तरु लपटानी । चलि देखौ रविजा के तट में घन घुमड़ै लै पानी ॥ अधिक होत आधीन रसिक पिय वोलत मधुरी वानी । मुरि चितवौ ठाड़े मुरली धर सावन करहु रवानी ॥ स्याम घटनि में लपटी दामिनि तो मन काहे न मानी । वृन्दावन हित रूप मृदुल चित समुझि समुझि मुसिकानी ॥१२१॥

उमड़े घन वीजु चमकै भारी । अहो अहो प्रान नाथ उठि देखौ पियहि जगावति प्यारी ॥ तैसीय पावस रितु गहवर वन तैसीय रैनि अँध्यारी । उठि कैं लाल अंक भरि लीनी संकित सी सुकुमारी ॥ धवल महल में दमकत दिवला दिपति मणिन की जारी । वरषत पानी विपिन रवानी सरसत सुख जु विहारी ॥ दादुर मोर सोर वन चहचर गरजत रवि जु दुलारी । वृन्दावन हित रूप केलि कल निरखि मुदित सहचारी ॥१२२॥

लड़ैती जू की आवनि पर हौं वारी । तेज पुंज के निकर निकाई किधौं शशि कोटि उजारी ॥ पावस प्रेम किधौं छवि अम्बुद उमड्यौ आवत भारी किधौं प्रीतम कौ भाग्य अवधि

फल दरसि परी सुकुमारी पीत कंचुकी हरित अतरौटा फबि रही सुरंगित सारी। मंद मंद पग धरति मद छकी शोभित भूमि हरियारी॥ गावत राग मलार मुदित मन सखी अंश भुज डारी। वृन्दावन हित रूप लग्यौ उर चात्रक चतुर विहारी ॥१२३॥

आज पिय पावस रैनि अँधेरी। लाल रसिक मणि उठि किनि देखहु दामिनि लरजत नेरी॥ जल वोभक भुकि आये वदरा मोरनि कुहुक घनेरी। अरु गहरी गरजनि सुनि दिसि दिसि नींद अहुरि गई मेरी॥ तुम आलस बस सुनत न नागर वरषत वन सुख ढेरी। चौंकि परी सोवत तें पिय पिय कहति पपीहा टेरी॥ जब तें श्रवन परी खग वानी प्रेम बुद्धि भो घेरी। प्रीति न सुधिहि करावत सव कों वरषत रुचिर पहेरी॥ परम रसिक पुलकित भये अंगनि प्रीति अपूरव हेरी। वार वार कहैं स्याम प्रिया गुन सागर मित नहिं तेरी॥ सादर अंक भरी वर भामिनि लाल चिवुक कर फेरी। वृन्दावन हित रूप वलि गई वतरस उरभे थेरी ॥१२४॥

प्रिया सुनि चूँनरि भीजैगी तेरी। कोंधति है दामिनि अति तीक्षन आवति घटा अँधेरी॥ रवकि धरौ पग कानन कमनी सघन कुंज वह नेरी। पातन कौ छतना रचि दैहौं अरु करौं जतन घनेरी॥ मनों मत्त गज धावति वदरा पवन महावत प्रेरी। उररि उररि वरषत चहुँ दिश तें दै आवै चक फेरी॥ लाल पीत पट खोई करि कैं भामिनि अंक सकेरी। वृन्दावन हित रूप वलि गई यह छवि निरषौ येरी ॥१२५॥

वढत छवि छिन हू परत न छेहरा गौर स्याम वरषत

हैं दुरि घुरि देखि अनोखौ मेहरा ॥ यह पावस दिन गननी यह नित बसत कुंज निज गेहरा । वहति विमल चौवाई मानौं नित जु अपूरब नेहरा ॥ वह घन समये बरषै सजनी बहुरि करै संदेहरा । वृन्दावन हित रूप सदा भर इन बांधौं सिर सेहरा ॥१२६॥

दौरि लेहु छहियाँ वंशीवट की । आयौ मेह निकट प्यारी यौं बोलनि नागर नट की ॥ रवँकि चली भामिनि प्रीतम उर बाहु ढुरनि छवि अटकी । आगैं गौर पुंज पिय पाछैं फरकनि पियरे पटकी ॥ आतुर पवन सजल घन दामिनि कौंधति है चट चटकी । वैन अधीर नैन चंचल जब बूँद पात तरु वटकी ॥ खरे तरु मूल लाल अंशनि लगि कुंवरि छबीली लटकी । भिभकत तन वौछार लगत जल लखि शोभा संवट की ॥ उरभन प्रेम कौन विधि बरनौं लीला रविजा तटकी । वृन्दावन हित रूप बढ़ि परचौ उपमा देत जु सटकी ॥१२७॥

यह छबि मोहन कौ मन हरनी । अति चटकीली पहिर चूँनरी आवत ज्यों मद करनी ॥ इंद्र वधू सी सोभित भामिनि हरित भूमि पग धरनी । चहलत दहलत लोचन पिय हिय हिलगनि जात न बरनी ॥ छिन छिन महा रंग रस वरषत लालहि सुख विस्तरनी वृन्दावन हित रूप रसिकनी सकल मनोरथ भरनी ॥१२८॥

रूप चटकि चटकीली चुनरिया तापैं अधिक लसी है । मनु अनुराग जाल में दामिनि शोभा सहित फँसी है ॥ दुहुं बिच हलनि पीठ पर वैनी इहि विधि छबि दरसी है । मानौं कनक चौहटे खेलन पन्नग तिय निकसी है पाछैं ०है निरषत

आलें पिय वर बस दृष्टि डसी है वृन्दावन हित रूप लड़ैती तू पिय हिये बसी है ॥१२६॥

चुनरिया भीजेगी चटकोली। आई घटा उमड़ि श्री राधे कहा फिरत बन ढीली ॥ बूँद परैं न रहै रंग ऐसौ मानि अधिक अरबीली। प्रीतम करी है पीत पट खोई लैं नव चाइ छबीली ॥ ये छूटी जल धार चहूं दिसि रहि है हठ न हठीली। वृन्दावन हित अनख उठी तव महा रूप गरबीली ॥१३०॥

रूप भर श्याम सुभग अंग अंग। सखि चातक पीवत सुख जीवति दामिनि भामिनि संग ॥ तैसीय गरजन मुख विधु मुरली वाढ़त है रस रंग। वृन्दावन हित रास रसिक दोऊ निर्त्तत सरस सुधंग ॥१३१॥

लगि पाइनि कहत ए मानिनि हठ तजि आयौ पावस तोरन गढ़ मान। पिय मिल देत पपीहा डौंड़ी सुनि भामिनि दै कान ॥ गरज दमामे वाजत नियरे बूँद बड़ी बड़ी छूटत वान। वृन्दावन हित रूप समझि अब फिरि किहि काम सयान ॥१३२॥

लाल चित चुभी है कदंव तरु पाती। जामैं खेल रचत मन भाये सुख विलसत दिन राती ॥१॥ विवि गिरि बीच ठौर अति कमनी तहाँ फवी रस घाती। परम रसिक आनंद घनेरौ लेत लवधि बहु भाँती ॥२॥ विन रुख ढीठ करत लँगराई कर परसत जब गाती। मुंचि मुंचि नागरि तब भाखति प्रनै कोप अनखाती ॥३॥ परम दीन व्है चरननि लागत ललना सुख सरसाती। वृन्दावन हित रूप जाउँ बलि वितरत अपनी थाती ४ १३३

मेंहदी सिंधारे के पद

श्री आनन्द घन जी महाराज कृत—राग मलार (सावन सुदी दोज के पद)

मेंहदी रची कुँवरि के पाइनि। कोमल नख सुरहे अति सुंदर झलकत विविधि बनाइनि ॥ रुचिर अँगुरियनि अति सोहत बिछुवा मंजुल जटित जराइनि। लै लै रसिक लाल हाथन पै अवलोकत चित चाइनि ॥ नैननि छुवाए छुवाए उर लावत सुख पावत बहु भाइनि। आनंद घन पिय चतुर सिरो-मनि कौतिक केलि पराइनि ॥१॥

श्री वंशी अलि जी महाराज कृत—राग मलार

करि मेरी मैया मीठौ सिंधारो तेरी राधा बेटी झूलैंगी। भान जिवो मेरी माई सुभागिनि ताके लाड़ नित फूलैंगी ॥ नए नए वसन रँगाइ मेरी मैया सारी सुरंगहि खूलैंगी। ललि-तादिक मेरी बहन बुलाइ लै मेरे प्राँन सम तूलैंगी ॥ करि सिंगार चढ़ि झूलें गावैं ब्रज सोभा अनुकूलैंगी। हाथन महिंदी इँगुर के रंगनि पगनि महावर रुलैंगी ॥ वंशी अली सुख रासि लाड़िली पगन हिंडोरा हूलैंगी। करि मेरी मैया मीठौ सिंधारौ तेरी राधा बेटी झूलैंगी ॥२॥

श्री वृज जीवन जी महाराज कृत—राग मलार

चूनरी रँगादे वारे वीरना चलि वरसाने जाहिं।
कीरति जू के हाथ के चलौ इँन्दरसे खाहिं ॥
वृषभानु बाबा के बाग में झूलि फूलि हरषाहिं।
भानोखर कौ जल पियैं वृज जीवन बलि जाहिं। ३

राग मलार—आई है सावन तीज सलौनी कल्ल झुलाना होवैगा। झूलैगी दूलह संग दुलहिनि कल्ल झुलाना होवैगा ॥१॥ सेहरे को लखि मेहरें तुँ सुनि कैं नेह बरसाना होवैगा । हसती कामिनि कौ पेखि दामिनी चेहरा छिपाना होवैगा ॥२॥ वलियौं से यों अलियाँ कहैं कल्ल दिल फुलाना होवैगा। भौरौं के हल्कें तुम सुन लो तुम्हैं खूब गाना होवैगा ॥३॥ सुनरी कोकिल वनरे के रंग तुमकौ कुहकाना होवैगा। मैंने मयूर मुनियौं को भी वाजे बजाना होवैगा ॥४॥ झिल्ली झिंगुर तुम भी सुनौ घूँघुर वजाना होवैगा । साँवरी नदी के हंसो को संगीत नचाना होवैगा ॥५॥ डरपैगी वनरी पैगन मैज दगर लगाना होवैगा। सदकें जावैंगी सहचरी हर दिसि फुलाना होवैगा ॥६॥ बाँटैंगी वे वधाइयाँ क्या क्या न पाना होवैगा । बृज जीवना हित कर साधुवो (का) कदमों ठिकाना होवैगा ॥७॥४॥

श्री नीलांबर प्रभु जी महाराज कृत—राग मलार

मेरे कर मिहिंदी लगी है, लट उरझी सुरझाय जा । सिर की सारी सरक गई है अपने हाथ उढ़ाय जा ॥ भाल की बेंदी मोरी गिर जो परी है हा हा करत लगाय जा । नीलांवर प्रभु गुण ना भूलूँ वीरी नैक खवाय जा ॥५॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग टोड़ी-चौतालौ

छद्म किये स्याम सहेली दीयें घूँघट रचत महावर पाँइ । निरखि परखि पट ऊपर राखति नीची ग्रीवा चित्र करन अकुलाइ ॥ अपने करन कठोर विचारति जिय, हिय पुनि पुनि जु डराइ । वृन्दावन हित रूप भाइ भींजत कछु औरें यों रँग भरयौ न जाइ ६

ग्रीव नीची करि बैठी भरी अभिलाषनि जावक चित्रति चरण । प्यारी जू न जानति कपट सहेली तरवनि परखति जे है ईंगुर वरण ॥ चातुरी की अवधि ढाँपि तन अति लाघवता दिखावति करन । वृन्दावन हित रूप रही थकि मौन धरें मुख छद्म खुलन जिय डरन ॥७॥

चरण महावर देति सहेली मोहि दरसत रचना अद्भुत री । किधौं चातुरी ही वपु धरि कैं लोक अलौकिक तहाँ तें उतरी ॥ किधौं अनुराग रीझि पग परसतु किधौं जलज पूजत जल सुत री । वृन्दावन हित रूप सभागिनि न्याइ वसी प्रीतम दृग पुतरी ॥८॥

राग विहागरौ—मेंहदी अति राचनी हो लै रची है कुँवरि जू के पान । चित्रा चतुर करि अति रचना सजनी परम सुजान ॥ कहा कहौं अरुनाई उघरन मृदुता मिलि कै साथ । मानौं ऊग्यौ अनुराग सखी री पिय मन कीयौ हाथ ॥ यह साँवन मन भावन आवन सरसावन सुख वीज । उत्सव महा अहा हरियारी प्रात भूलि हैं तीज ॥ फूली फिरत सखीनु में श्री राधा जाकौ अचल सुहाग । वृन्दावन हित रूप रसिकनी भरी परम अनुराग ॥९॥

अरी आज कौने महावर दीयौ तेरे चरणनि निपट नेह की लगौनी । सुमति विशाल करनि लाघवता रचनि में दरसति सब तें गुणनि अगौनी ॥ मैं देखी वह स्याम वदन ही परखति तरवनि अधिक रिझौनी । वृन्दावन हित रूप टहल यह वाही दीजै प्रगट न होत छिपौनी ॥१०॥

राग विहागरौ—मैया अब हिंडोर गढ़ावौ । सोनी सुघर बुलाय नगर के रतन अमोल जडावौ १ गहरें रंग चूनरी सारी

छींपनि पै जु रंगावौ । कन्या गोंप जिती मो साथनि सादर सब पहिरावौ ॥२॥ यह सावन मन भावन रानी मोकों उवटि न्हवावौ । सब सखियनि मैं सुंदर लागों रचि सिंगार बनावौ ॥३॥ पूवा करि कीरति मैया गूझा मेवानि भरावौ । अधिक राचनी मेंहदी मो लैं तुम मो करनि लगावौ ॥४॥ मानिक चौक पौरि के आगें तहाँ लैं खंभ रुपावौ । मरुवे और मयारि जु डांड़ी चित्र विचित्र करावौ ॥५॥ पटुली कनक जटित बहु चूनिनु लैं सुभ घरी धरावौ । मोतिनु की झालर रचि चहुँ दिस सुरंग वितान तनावौ ॥६॥ सब गोपनि की विटियां मिलि कैं तात मात दुलरावौ । या सावन के गीत प्रीति सों वीर नाम लै गावौ ॥७॥ मो सोंदर श्रीदामा ताकौं प्रथमहिं चलि जु मल्हावौ । भवन भवन तें निकसि द्वार बावा कैं सबही आवौ ॥८॥ अप अपनें ओसरें भट्ट री झूलौ औरु झुलावौ । अधिक लाड कौ यह दिन रानी तुम चलि विधि जु बतावौ ॥९॥ यह जु तीज त्यौहार अति बड़ौ सब मन मोद बढ़ावौ । उमड़ें स्याम सजल घन गरजनि गहरी सुनि सचु पावौ ॥१०॥ कीरति श्री वृषभान कह्यौ यों कुंवरिहि लाड़ लड़ावौ । वृन्दावन हित रूप सिमिटि ललितादिक तीज खिलावौ ॥११॥११॥

राग बिहागरौ—आई तीज हरियारी सजनी मांहिंदी अति लडि हाथ रची है । सावन सुदि दुतिया आज राधे सुनि फूली दृग कोर नची है ॥ उघरचौ रंग सतगुनौं इहिं विधि चतुर सहेलिनु सुविधि सची री । वृन्दावन हित रूप ललित कर पिय हिय मनु अनुराग खची है १२

राग विहागरो—लड़ैती महिदी रचि लै हाथ। कालिह तीज खेलन कौं जैहौ गोप सुता लै साथ ॥१॥ बेटी यह त्यौहार जु तेरौ तबही सोभा पावै। अति राचनी धरौ कर महिदी सबहिनु के मन भावै ॥२॥ मैया बलि बलि जाय लली जौ सीख सुनोंगी मेरी। जरी आढ़नी सब कौं देहौं जेतिक साथिनि तेरी ॥३॥ भूषण अरु पकवान जु देहौं जिनकौ तूँ जु कहैगी। चोटी कर गुहाय लै मोपै जो अरवी न गहैगी ॥४॥ मुहि पट भूषण कैसे देहै हग दिखाय अबहीं री। महिदी रचि चोटी गुहाइ हौं सांच मानि तबहीं री ॥५॥ मैया हँसी हँसी सब बनिता बेटी समझि सयानी। खोलि पिटार दिखाये तब पट भूषण कीरति रानी ॥६॥ कहति सखिनु सौं अति लड़ि राधा मेरी सी मां काकैं। सावन लाड लडावन मुहि अनुराग हवित रहै जाकैं ॥७॥ हँसति हँसति आई जननी ढिग कर गहि अंक लई है। हाथ रची महिदी चोटी गुहि अति मन मुदित भई है ॥८॥ अब हौं रचौं गुली के गूझा पूवा सक्कर पारे। झूलौ प्रात हिंडोर करौं तब घेवर मिष्ट जु भारे ॥९॥ सावन बहुरि कुशल सौं ब्रज मैं भाग्य भरी कौ आयौ। वृन्दावन हित रूप लाड़ कौ यह दिन दई दिखायौ ॥१०॥१३॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—दोहा

राखे नैन बिछाय कैं लाल पहुप दल गोद। पाँय महावर दैन कौं, बढ्यौ महा उर मोद ॥१४॥ रमा पलोटत चरन नित, जाके सहज सुभाय। सो वृषभानु कुमारि कैं देत महाउर पाँय ॥१५॥ चरन कमल पिय चतुर लखि, इक टक रहे लुभाय। लियैं महाउर हाथ मैं, रंग भरयौ नही जाय। १६ रंग भरत

पग दुहुँनि श्राँति, वाढ्यौ रंग श्रनंग। नागरिया के हगनि वह लग्यौ सुछूटत रंग ॥१७॥

राग विहागरौ—वीन वीन फूल लाल जावक वनाय राख्यौ, ऐहैं प्यारी राधा रंग पाँयनि में लगे हौं। मंद पौन पात कुंज श्राहट तैं चौंक परैं, जानैं कव देखि नैंन नैंननि में खगे हौं॥ श्राय मिली वाल श्रंकमाल भरि वैठे लाल, पौंछत चरन श्राछैं पीतांवर छोर सौं। श्राधे मुख घूँघट में श्राँगुरी दसन धरि, नागरि निहारि रही नैंननि की कोर सौं ॥१८॥

लाल रँगे रँग जावक सौं चरन निहारैं। लीनैं कर कमल मैं भीनैं रंग पाय प्यारो ताहि देखि, रीझि रीझि मन धन वारैं॥ तव पिय सीस नाय नैंननि छुवायौ चहैं, दोऊ मुख झेलि पग न निकारैं। नाहिंन सम्हारैं श्रंग नागर निहारैं रंग, श्राधी रात कुंज श्रोर चंद उजियारैं ॥१९॥

दोहा—श्रद्भुत पद पल्लव प्रभा, मृदु सुरंग छवि ऐन। छिन छिन चूँवत प्यार सौं रहत लाइ उर नैन ॥२०॥

पद—प्यारी के पाइ लगे लाल जावक दैंन चरन कमल चित हित लगाइ। सींक सनेह सँवारि स्याम घन लिखत चित्र वहु विधि वनाइ॥ नख मनि जोति निरखि विथकित भये, सिथिल भये रँग रँग्यौ न जाइ। नागरीदासि हँसि कहति कुंवरि यौं रहौ जू रहौ पग रही है छिपाय ॥२१॥

जव तैं जावक चरण दयौ। तन मन चित वित तिहि कौं जु भयौ॥ हियरा हिलग फिरत सँग लाग्यौ जियरा ललकि रह्यौ। नागरीदासि तन मन धन जीवन मंगल यह विधयौ ॥२२॥

❀ झूलन-भोग के पद ❀

श्रीहित आनंदलाल जी महाराज कृत (सावन सुदी तीजसे यह भोगके पद नित्य होय है)

झूलत भोग लगावें श्री राधा वल्लभ । पूवा पूरी जलेवी लडुवा मलाई मिश्री पावैं, श्री राधा वल्लभ ॥ भोजन करत परस्पर रुचि सों सखि जन लै लै आवैं, श्री राधा वल्लभ । हित आनँद श्री व्यास सुवन पै हरषि हरषि बलि जावैं, श्री राधा वल्लभ ॥१॥

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत—राग मलार

अधिक हेत सों ल्याई, श्री ललिता । बँधवा दही कचौरी बूरा मिश्री मिश्रित सरस मलाई, श्री ललिता ॥ पगे मखाने दाने पिस्ता मधि बादाम रलाई, श्री ललिता । दाड़िम सेव और नारंगी कदलि फली लै आई, श्री ललिता ॥ भोजन करत परस्पर दोऊ सखि जन लेत बलाई, श्री ललिता । दै आचमन खवावत बीरी श्री जै कमल नैन बलि जाई, श्री ललिता ॥२॥

झूलत दंपति अति रंग भीनें । तैसेई अमल अनंग विराजत तैसेइ बसनन झीनें ॥ तैसेइ वदन जोति तैसेइ भूषन दोति वारों घन दामिनि कोटि नवीनें । परस्पर तन निहारत हरषत लोचन अधीनें ॥ रमकि झमकि मुसिकाइ लाड़िली लपटति लटकि मन मनमथ छीनें । जै श्री कमल नैंन हित अति रस बाढ्यौ निरखि सखी दृग दीनें ॥३॥

❀ झूलन के पदों की शृंखला ❀

गो० श्रीहित हरिवंश चन्द्र महाप्रभुजी कृत (सावन सुदी तीज से यह पद नित्य होय है)

राग बिहागरौ—झूलत दोऊ नवल किशोर । रजनी जनित रंग सुख सूचत अंग अंग उठि भोर ॥१॥ अति अनुराग भरे मिलि गावत सुर मंदर कल घोर । बीच बीच प्रीतम चित चोरति प्रिया नैन की कोर ॥२॥ अबला अति सुकुमारि डरत मन वर हिंडोर झकोर । पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागति दै नव उरज अकोर ॥३॥ अरुझी विमल माल कंकन सौं कुण्डल सौं कच डोर । वेपथ जुत क्यौं बनैं विवेचित आनंद बढ्यौ न थोर ॥४॥ निरखि निरखि फूलति ललितादिक विवि मुख चंद चकोर । दै असीस (श्री) हरिवंश प्रसंसित करि अंचल की छोर ॥५॥४।

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—(सावन सुदी तीज कौ) राग मलार-छंद

श्री वृषभान की पौरी रच्यौ है हिंडोरना । ब्रज मोहन सोहन कौ है चित चोरना ॥ चित चोरना मोहन छैल कौ मन मोहनी मन कौं छलै । मरुव मयारिनु लसत थंभनि रतन अवनी झलमलैं ॥ पटुली पिरोजा पदिक खचि डाँड़ी रची मुक्तान की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥१॥ झूलन आई हैं गोरी नव नव गोप किशोरी । ते सब वैसनि भोरी श्याम रंग में बोरी ॥ बोरी किशोरी वैस भोरी लसति जोवन लह लहैं । अरविंद चंद सु मंद दुति उपमा कहा कहि कवि कहै ॥ पचरंग पहिरैं चूँनरी अँग अंग रूप समान की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥२॥ श्यामा-जू संग सहेली फूलीं प्रीति ही की वेली । सब छबि पायनि

पेली है सुहाग अलवेली ॥ सुंदर सहेली प्रीति वेली झरति राग पराग कौ । सिंगार कली खिली चहूं दिसि अति रसिक बड़ भाग कौ ॥ मुसकाति नैननि बंक भौंहनि झलक कछु उर मान की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥३॥ रस छकी रमनी रमकैं मदन चंद्रिका सी चमकैं । हँसत दसन दुति दमकैं पाइनि नूपुर झमकैं ॥ रमकैं कुंवरि दमकैं दुतिनि झमकैं जु पाइल पाँइ की । विछुवा सुरनि सौं मिलि वजैं जेहरैं जटित जराय की ॥ कंचन चुरी कटि किंकिनी रव रीझि कान्ह सुजान की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥४॥ खिसत कुसुम छूटीं अलकैं भालनि श्रमकन झलकैं । लाल के लोइन ललकैं देखत लगत न पलकैं ॥ विथुरी अलक श्रमकन झलक अधरनि ललक मधुपान की । दुहुँघाँ मचनि में लचति कटि गति मति हरति प्रमदानि की ॥ थहराति पिंडी फहरात पट वरषा दुरे अँग दान की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥५॥ वीन प्रवीन बजावैं मुदित मलारहिं गावैं । स्वर श्रवननि में छावैं हरि जू कौ हियौ चुरावैं ॥ वीना बजावैं मधुर गावैं सरस तीज सुहावनी । लपटावनी कर पाय पिय अपन पौ दियौ रिझावनी ॥ वस कियौ गोकुल चंद्रमा अब कहा चली है आन की । वलि सहचरी सुख रच्यौ हिंडोरौ पौरि श्री वृषभानु की ॥६॥५॥

चाचा श्री वृन्दावनदासजी महाराज कृत (सावन सुदी चोथ कौ) राग मेवारौ धनाश्री छन्द

सावन सुहावनौ हो राधा जू तुम कियौ । आयौ है कुशल सौं हो पटुली पग दियौ ॥ दियौ पटुली पाँउ विहसनि कहा वरनौं वदन की बिना उद्यिम निरखि सैना धुकि परी धरु मदन की

प्रेम की मूरति सखी स्वर ग्राम साधें लेति है। भरी मन उत्साह अति सनमान प्यारी देति है ॥ सुनत मधुरव गान हुतौ जु अचेत तद्यपि पुनि जियौ। सावन सुहावनौ हो राधा जू तुम कियौ ॥१॥ रतन हिंडोरना हो अति सोभा बढ़ी। कर गहि डांड़ी हो जब नागरि चढ़ी ॥ चढ़ी नागरि गुननि आगरि कहा कहौं फूलनि अंग की। मुख किरनि भयौ प्रकाश चहुँ दिसि थिरकें चूनरि रंग की ॥ श्रम स्वेद कछुक लिलाट पट पै देखि सब उपमा भगै। मनहुँ राका चंद में सीपज अलौकिक जग मगै ॥ सीतल करत प्राणेश दृग धनि धन्य विधिना जिन गढ़ी। रतन हिंडोरना हो सोभा अति बढ़ी ॥२॥ सखी झुलावति हो पूरित नेहरा। मंद मंद गरजनि हो बरषै मेहरा ॥ मंद मंद जु मेह बरसै झूल अति लाँबी चली। कोऊ बरजति कोऊ झुलावति कोऊ गावति गति भली ॥ हंस कूजें मोर बोलें कोकिला कूकें महा। सकल कानन प्रेम चहचर कहौं सो बानिक कहा ॥ खसि परी मल्ली माल टूट्यौ देखि री मोतिनु हरा। सखी झूलावति हो पूरित नेहरा ॥३॥ मोहन मोहे हो ग्रीवा ढुरनि में। फूल झरत हैं हो बैंनी रुरनि में ॥ रुरनि बैंनी ढुरनि ग्रीवा रूप अति सींवा भई। पावस जु सुख उपज्यौ अलौकिक आज की रमकनि नई ॥ हरित बेली तरु जु अवनी दामिनीं चहुँ दिसि लसै। मनहुँ जीती वाद भामिनि लोल दृग हर हर हँसै ॥ वृन्दावन हित रूप अलि रहि वदित कृश कटि मुरनि में। मोहन मोहे हो ग्रीवा ढुरनि में ॥४॥६॥

श्री रघुनन्दन जी महाराज कृत—(सावन सुदी पंचमी दिवस का) राग सोरठ

सुरंग हिंडोरना माई श्री वृषभानु जु के धाम । ब्रज नारि नैन निहारि सोभा वारति कोटिक काम ॥ द्वै खंभ कंचन कलित नग जग मगत डाँडी चारु । पटुली विचित्र सुचित्र रचि मानों कनक कलस मयार ॥ मरुवे मनोहर मोर लटकत जटित मुक पिक सार । झूलैं कुंवरि वृषभानु की श्री राधे जू राज कुंवारि ॥१॥ चहुँ ओर नवल किशोरि सजनी सुघर सब ब्रजबाल । सिंगार षट दस वैस षट दस राग तान रसाल ॥ बीना मृदंग मलार धुनि सुनि नव कुंवर नंदलाल । नव सखी वेष बनाय देखन आये मदन गोपाल ॥२॥ जब नव वधू छवि देखि अद्भुत निकट बोली वाम । किहि गोप की कवनी कुंवरि रमनीय काकी भाम ॥ किहि वास किहि पुर किहि नगर ह्याँ आई किहि काम । अवलौं न मैं देखी कहूं सखि कहौ कृपा करि नाम ॥३॥ मृदु मंद मुसकि मुख चंद शुभ मुख वधू बोली बैन । श्री नंद गाँम सुठाम तिहि ठाँ वसति हौं सुख चैन ॥ सुनि भाष जिय अभिलाष उपजी झूलियै तुम एन । करि प्रेम प्रीति प्रतीति दोऊ मिलि सोइये सुख सैन ॥४॥ यह सुनत श्री ललिता विसाखा कह्यौ श्रवन समझाय । यह वाम नाहिन श्याम सुंदर हैं कुंवर नंदराय ॥ तुव दरस परसन काज कामिनि सखी वेष बनाय । सनमान करि दै पान प्यारी पियहि संग झुलाय ॥५॥ सुनि सुनि वचन रस रचन नव वधू लई बुलाय । मिलि भेंटि हँसि हिंडोरें झूलैं बैन मधुरे गाय ॥ ब्रज वधू सुर वधू मन मन रीझि लेतिं बलाय । सुख देति रघुनन्दन रसिक रस लेत हेत अघाय ५ ७

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—(सावन सुदी छट दिवस कौ) राग मलार

सुरँग हिडोरना माई झूलत गोकुल चन्द ॥टेक॥ दोऊ खंभ कंचन के मनोहर रतन जटित सुरंग । जाकी चारु डाँड़ी सरल सुन्दर निरखि लजत अनंग ॥ पटुली पिरोजा लाल लटकत झूँमिका बहु रंग । मरुवे तौ मनि चुन्नी लगी बिच बिच हीरा तरंग ॥१॥ कल्प द्रुम तरु छाँह सीतल त्रिविधि मंद समीर । लता लटकत भार कुसुमित परसि जमुना नीर ॥ हंस मोर चकोर चातक कोकिला अलि कीर । नव नेह नवल किशोर राधे नव रंग गिरधर धीर ॥२॥ ललिता विसाखा देत झोटा फूली अंग न माति । लाड़िली सुकुमारि डरपति स्याम उर लपटाति ॥ गौर स्यामल अंग मिलि दोऊ भए हैं एक ही भाय । नील पीत दुकूल राजत दामिनी दुरि जाय ॥३॥ नव कुंज कुंज झुलाय झुलवत सहचरी चहुँ ओर । मानौ कमोदिनी कमल फूले निरखि जुगल किशोर ॥ व्रज वधू तृण तोरि डारति देति प्रान अकोर । कृष्णदास कों व्रज वास दीजै नागर नंद किशोर ॥४॥८॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग धनाश्री (सावन सुदी छट दिवस कौ)

झूलत फूलत पति हियें, हिंडोरना । वलि दामिनि घन कोटि, हिंडोरना ॥ लाल ललकि लालच वढ्यौ, हिंडोरना । विलसत निधि पिय पोटि, हिंडोरना ॥१॥ मुक्ता माल वग पंकती, हिंडोरना । धनुप घूँघट पच रंग, हिंडोरना ॥ धुरवा अलक आनंद भरें, हिंडोरना । मनु घन हिम कर इक संग, हिंडोरना ॥२॥ कोकिल कूजें चातिक रटें, हिंडोरना । मेह नेह छये घूँमि, हिंडोरना केकी किलकि कौतिक नचैं, हिंडोरना

घटा दिसि दिसि झूमि, हिंडोरना ..३। गर्व गहलि कंकन धुरे, हिंडोरना। नूपुर किंकिनी वलैं बाज, हिंडोरना ॥ स्याम दमन चपला दिपै, हिंडोरना। गंभीर मंगली गाज, हिंडोरना ॥४॥ अलक लड़ी लाड़नि लड़ै, हिंडोरना। दुलरावत कल कंत, हिंडोरना ॥ दरस परस परिरंभना, हिंडोरना। चुंबन मद मय मंत, हिंडोरना ॥५॥ प्रमुदित वदन सुधा पियें, हिंडोरना। मदन गुमानी वैंन, हिंडोरना ॥ कुंडल झलक कपोलनी, हिंडोरना। चपल चारु चारौ नैंन, हिंडोरना ॥६॥ लटक मटक कृश कटि डुलैं, हिंडोरना। ललित लुलित अव चाइ, हिंडोरन ॥ मद मंथर गति गुनवती, हिंडोरना। देखत नैंन लुभाइ, हिंडोरना ॥७॥ विलसत हिंये विनोदिनी, हिंडोरना। मुलसि मुखनि सुकुमार, हिंडोरना ॥ नागरी दासी वारनैं, हिंडोरना। आनंद उदित उदार, हिंडोरना ॥८॥६॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत–(सावन सुदी सतमी कौ) म० सो० मिली छंद

कमनीय वंशी वट में वरषत रंग है। झूलत रविजा तट में भरी उमंग है ॥ भरी परम उमंग झूलत रूप सींवा राधिका। वनीं वेष विचित्र सखी स्वर तान ताल जु साधिका ॥ झूलैं झुलावैं मधुर गावैं फवी नव रंग चूँनरी। आभास धुनि सुर वधू मोहीं करति हाँ पुनि हूँनरी ॥ वैसंधि वाला छवि विशाला वृन्द सहचरि संग है। कहा कहौं वानिक आज की वरषै महा रस रंग है ॥१॥ अलरौटा रंग गहिरैं कनक तनी वनी। पीत कंचुकी पहिरैं सोंधैं सों सनी ॥ सनी सोंधे कंचुकी विविधि भूषन नग खचे। महिंदी रचे कर कमल जावक चित्र चरननि में रचे तन तें छुटैं जु सुगंधि रेलैं वदन ससि जीती

झला । दमकैं जु वेंदी भाल रमकें हलैं चंचल अंचला ॥ ऊँचे गहै फल फूल वढ़ि वढ़ि फैलि रही सोभा घनी । जोवन जु जोर मरोर झूलैं भामिनी कनक तनी ॥२॥ रसिक कुंवर संग वाला दिपति सुहाग मनि । झोटा दै तिहि काला बदै सखि भाग धनि ॥ धनि धन्य भाग बदै सहेली सावन सब सुख पाइयौ । गौर स्यामल सुभग जोरी हरषि हरषि झुलाइयौ ॥ उत सजल घन गंभीर गरजनि दामिनी अतिसै लसै । इत निरखि उपमा सवहिं वारौं प्रिया पिय अंकनि वसै ॥ कोकिला कूकें मोर वोलें चात्रिक जहाँ पिय पिया भनि । हरी भूमि विलोकि रमकें श्री राधा परम सुहाग मनि ॥३॥ झुकि रहीं यमुना जल में द्रुम साखा हरी । पांति कलप तरु थल में अवनी छवि भरी ॥ भरी छवि अवनी अलौकिक तहाँ चहचर प्रेम कौ । नग काँति भाँति अनेक जग मग रच्यौ हिंडोरा हेम कौ ॥ किलकैं कुलाहल करें अवला सवल रितु पावस महा । वृन्दावन हित रूप वलि वलि अतुल सुख वरनौं कहा ॥ नहिं लोक ओकनि लेश संपति जो विपिन वीथिनु धरी । हिंडोर झूलैं कुंवरि फूलैं साखा निरखि हरी हरी ॥४॥१०॥

श्री नंददास जी महाराज कृत—(सावन सुदी अष्टमी दिवस कौ) राग सोरठ

गोकुल राइ की पौरी रच्यौ है हिंडोरना । कंचन खंभ वनाये चित के चोरना ॥ चित चोरना विवि खंभ बानक रतन डाँड़ी सौहिनी । चौकी कनक की तिहि बनक की वनी मन की मोहिनी ॥ आई नवल ब्रज वधू झूलन सवै एक बनाय की । बलि नंद वन्यौ सुन्यौ हिंडोरौ पौरि गोकुल राय की ॥१॥ गावति चढी है हिंडोरें सारी सूही सोहै डह डहे मुख रंग

भीनें सरद ससि को है सौ है सरद ससि मुख रहै लसि चपल नैंना सोहने । चलैं कोनें कछु लजौंनें मैंन मन के मोहने ॥ सीतल मधुर धुनि गान सुनि उघरे सघन घुरि आवहीं । वलि नंद अति आनन्द वाढ्यौ चढ़ि हिंडोरें गावहीं ॥२॥ आय तहाँ नंदलाला पहिरें फूलन माला । चढ़ि गए रँगीले हिंडोरें कहा री कहौं तिहि काला ॥ तिहिं काल ब्रज वर बाल मदन गोपाल दुति परति न गनी । सिंगार सुंदर तरु के ढिग ढिग मनौं छवि वेली वनी ॥ कहत न वनैं देखत बनैं भए दृगनि मन के भाए । वलि नन्द दास विलास निधि नंदलाल जव तहाँ आए ॥३॥ चढ़ी है वड़ेड़ी झूलें झलकैं चंदा मोर के । खिसत सिरन तें फूलें दियें झकझोर के ॥ झकझोर झपट सुगंध लपटें उठत कछु घन घोर से । फरकैं तौ, अंचल और चंचल दामिनी के छोर से ॥ वारति जसोमति भूषननि अवि-लोकि सुत सोभा भली । वलि नंद श्री गोविंद चंद की झूल जव बड़ड़ी चली ॥४॥११॥

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत—(सावन सुदी नौमी दिवस कौ) राग मलार-छंद

झूलत रंग हिंडोरें श्री राधा मोहन । भँवर भ्रमत चहुँ ओरें श्री राधा मोहन ॥ गावति अलि सुर जोरें श्री राधा मोहन । रीझि रीझि तृन तोरें श्री राधा मोहन ॥टेक॥ मन भावन हरषावन आवन सावन तीज सुहाई । चावनि गावनि रीझि रिझावनि दंपति रति दरसाई ॥ चढ़े हिंडोरें नैननि जोरें चित चोरें सुखदाई । जुगल चंद रस कंद किरनि लखि जै श्री रूप लाल वलि जाई ॥१॥ रमकि झमकि झुकि चमकि दमकि झूलति फूलति अभिरामा नागर रूप उजागर आगर छवि

नागर सुख धामा ॥ अली भली रस रली झुलावैं गावैं गुन गन ग्रामा । जै श्री रूप लाल हित ललिता रस सलिता संग पुजये सब कामा ॥२॥ सूहे वागे रति रस पागे अनुरागे दोऊ झूलैं। मृदु बोलैं चित ग्रंथिनि खोलें करत कलोलें अंग अंग फूलें ॥ वनक बनावैं सुरनि मिलावैं गावैं रस अनुकूलें । जै श्री रूप लाल हित दंपति संपति लखि सखि गति मति भूलें ॥३॥ कवहुँक झुकि झमकि झुलावैं गावैं रीझि रिझावैं । मन भावैं नैंननि दरसावैं प्रेम सिंधु सरसावें ॥ नेह वढ़ावें विवि सचु पावें रस निधि रस वरषावें । जै श्री रूप लाल हित निकट वुलावें अलि वलि नैन सिरावें ॥४॥१२॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत (दसमी दिवस कौ) राग मलार ताल आड़-चौतालौ

सुहावनौ साँवन भावन आज । झूलें सु दंपति रसिक संपति बन्यौ सरस समाज ॥टेक॥ चारु सजल नवीन नीरद गगन ऊनय बने । मनों मदन वितान छवि सों युगल ऊपर तने ॥ वग पाँति मुक्ता माल झालरि झलमल्यौ आकास। लह लहति है दामिनी दृग देखि परम हुलास ॥१॥ ललित कूल कलिंदजा कुल कीर कोकिल नाद । कुहुक केकी गुंज मधुकर करन हिय अहिलाद ॥ हरषि अवनी पुलकि तन हित परस पद जल जात । मुदित प्रीतम संग झूलें नवल तन नव सात ॥२॥ लह लहीं नव लता नव द्रुम फूल सोभा देत । रहे सीस नवाइ छवि सों नवल प्रेम सहेत ॥ सीत मंद समेत सौरभ वहत विशद समीर । वरन वरन सुरंग सारी संग युवती भीर ॥३॥ गावैं झुलावैं प्रीति भरि हिय खरीं चहुँ दिसि वृन्द गौर स्यामल अंग झलकनि रमकनी आनंद विमल अंवर

अमल भूषन जलज कमल सुनैन हित दामोदर बसौ मम हिय रसिक जन सुख दैन ॥४॥१३॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत (सावन सुदी एकादसी को) राग धनाश्री

झूलत प्रिया सभागी मुरली धरन की। वल्लभ राजदुलारी गोरे वरन की ॥ गौर वरन विशाल नैंनी नवल जोवन उलहिनी। जसोमति जो लाड़ भाजन तासु प्यारी दुलहिनी ॥ प्रेम सरवर झुके तरु वर महा कमनी तीर में। सुथरता किहि विधि रची तन लसै कसूँभी चीर में ॥ सोभा न वरनी जात मोपै अंचला फरहरन की। वृन्दावन हित रूप झूलति प्रिया मुरली धरन की ॥१॥ रमकनि वरनी न जाइ डोरी करनि है। फटिक मणिनु की पटुली चापैं चरनि है ॥ चरन चांपै सुख अलापै सुर सुधा वरषै अहा। सावन जु सुख विस्तरन राधा कहौं इक रसना कहा ॥ तरुवनि ललाइ वढ़ि चली ज्यौं सवल झोटा लेति है। जगि जगि उठति मुख ज्योति घूँघट खुलनि अति छबि देति है ॥ त्रैलोक्य सुंदर मदन मोहन तासु चित वित हरनि है। वृन्दावन हित रूप झूलति मृदुल डोरी करनि है ॥२॥ पावस मान वढ़ावनि तो सम को सखी। भानुवंश यश वर्द्धन मैं नीकैं लखी ॥ लखी मैं नीकैं हिंडोरो विलसि सुख तूँ जान ही। श्रीदाम अनुजा चिरजिवो कहा और अधिक वखान ही ॥ गृह गोप अरु कानन खानो होत है तेरो कियो। आईं सहेली साँवरी तो यस सुनत हुलस्यो हियो ॥ कुल वड़े की दरसति मिलन तोहि लाज जिन पाछे नखी। वृन्दावन हित मान सब को दैन को तो सम सखी ॥३॥ मो हित इकली आइ मूरति नेह की मरकति मणि दुति जीतति आभा देह की

देह की दुति निकर सोभा स्यामा जू संग झुलाइयो। पाहुनी गोप कुमारि ताके मन सु मन जु मिलाइयो ॥ झूलें करें पुनि बात रुख लै कुशल अपनी गो दुरें। लपटाति झोटा वढनि में कछु नये से कौतिक करें ॥ मुरि देखिये वलि जाऊँ गिरि दिसि झमकि आवनि मेह की। वृन्दावन हित रूप वोली साँवल सींव सनेह की ॥४॥ चलि वलि सघन कुंज में जहाँ बूँद न परें। दुरि वैठे सवहिनु तें रस वतियां करें ॥ करें रस वतियाँ संदेसो तो प्रीतम तोसों कह्यो। अधिक जिय में चट-पटी विनु कहे अव जात न रह्यो ॥ तुम हो कुशल मती अहो नागरि कह्यो मेरो कीजिये। नियरे जु आयौ मेह अव क्यों हिंडोरे चढ़ि भीजिये ॥ भोरी प्रिया अति चतुर पिय एकान्त मिलि सुख विस्तरें। वृन्दावन हित रूप कमनी कुंज जहाँ वूँद न परें ॥५॥१४॥

गो० श्री गोवर्धन लाल जी महाराज कृत (सावन सुदी एकादसी दिवस कौ) राग मलार

श्री हित कुंज भवन में झूलत राधा लाड़ी, एरी हां संग सखी री ॥ झुलवै पिय प्यारौ गहें जो मनोहर डाड़ी, एरी हां संग सखीरी ॥१॥ झोटा तरल सुहावनों झिझकें अति सुकुमारि। हंस सुता तट नीर लों रमकें वढ़त अपार ॥ एरी हां० ॥२॥ चहूँ ओर सखियाँ खड़ी हित की चितवनि हार। नैंन फिरैं चक डोर ज्यों मन में करत विचार ॥ एरी हां० ॥३॥ हित आली प्रीतम गहे विवि मिलि झूलहु आप। चढ़ि झूलन लागे दोऊ युग ससि संग मिलाप ॥ एरी हां० ॥४॥ घनस्याम घन सोहई चपला अति लड़ राज। मुरलिका गरजै मनौं वजत पखावज साज एरी हां० ५ स्याम वरन सारी लसै कंचुकि कसूमी

सुरंग। दामिनि पचरंगी मनौं इन्द्र धनुप छवि संग ॥ एरी हां० ॥६॥ रक्त पाग पटुका हरौ तड़ित पीतांवर जोति। आभूषण मिलि राजहीं जग मग अति ही होति ॥ एरी हां० ॥७॥ वहौ पींड़ सु झुकि रह्यौ नटवर नंद कुमार। चंद्र कांत मणि चंद्रिका अलक लड़ी सिर धार ॥ एरी हां० ॥८॥ कहि न सकौं सोभा घनीं उभै रूप रस जाल। लोचन कै रसना नहीं लखि छवि होत निहाल ॥ एरी हां० ॥९॥ हित सजनी चौंरी लियें सींचत दृग हिय खेत। व्यजना श्री वनचंद जू कर फेरत सुख लेत ॥ एरी हां० ॥१०॥ कृष्णचंद्र पाननि डवा अतर दान गोपीनाथ। मोहन जल झारी लियें जल अचवावत हाथ ॥ एरी हां० ॥११॥ इक डाडी सुंदर गहें इक राधा वल्लभ दास। व्रज भूषण जू तीसरी तुर्य नागर वर पास ॥ एरी हां० ॥१२॥ लियौ सुगंध रूमाल कौ सेवक हित रस लीन। पिक दानी कर व्यास कैं प्रवोधानंद स्वर वीन ॥ एरी हां ॥१३॥ गावत श्री हरिदास जू सावन सुघर अलाप। नरवाहन जु मृदंग लै परण वजावत थाप ॥ एरी हां० ॥१४॥ निर्तत नागरीदास जू हित ध्रुव छवि में छाक। वहु वाजंत्र वजावहीं सवै रसिक चित चाक ॥ एरी हां० ॥१५॥ संध्या समय सु जानि कें विविधि भाँति पकवाँन। कंचन थार भराइ कें वहु मेवनि युत आँनि ॥ एरी हां० ॥१६॥ भोग लगायौ हित सखी जल अचवन दै पान। फेरत हित सों आरती माणिन जटी सुख दान ॥ एरी हां० ॥१७॥ लखि शोभा छवि में छके प्रांन करत वलिहार। झुकि झूमें आलस भरे भूपन वसन उतार ॥ एरी हां० ॥१८॥ केलि सेज रस झेलही विवि

मुख रहे मिलाय। विविधि भांति क्रीड़ा करें निरखि सखी वलि जाय ॥ एरी हां० ॥१६॥ लै प्रसाद दीयौ जु हित टेर सकल परिवार। जै श्री हित गोवर्धन लाल कौ देत है विविधि प्रकार ॥ एरी हां संग सखीरी ॥२०॥१५॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—राग मलार (सावन सुदी पूर्णमासी दिवस कौ)

रच्यौ है हिंडोरना हो वंशीवट की छाँह। रंग दैंन चैंन सुनैंन मैंन झकोर कुंजनि माँह ॥टेक॥ द्वै खंभ हेम भराय जरे है जराय जमुना तीर। मरुवे मयारनि मनि लगी पन्नानि पंकति कीर ॥ मुकतानि डाँड़ी चारु माडी श्रवत अमृत सीर। पटुली पिरोजा झूमकनि झल मलत लालऽरु हीर ॥१॥ दोऊ वसन पहिरें तीज के राधा रसिक वल बीर। रमकत तहाँ दमकत दुति न मिलि गौर स्याम सरीर ॥ ललित झोटा देति अलि ललितादिकनि की भीर। रस भर दुहुँ दिसि हियनि घुमड़ी रूप घटा गंभीर ॥२॥ इक टक निहारत वदन पल सहि सकत पलकन पीर। तिय परसि पुलकत पीत पट पिय परसि सुन्दर चीर ॥ हँसति लपटाति खिलत सकुचति धरकि होत अधीर। लडकानि ललना की सँभारत लाल गहि गहि धीर ॥३॥ सावन अवनि हरियावनौ घन सघन वरसत नीर। नव फूल फूलति द्रुमनि वेली त्रिविधि वहत समीर ॥ संगीत उघटत किंकिनी मुख गहें मोन मंजीर। सुख सखी देत असीस अचल विहार कुंज कुटीर ॥४॥१६॥

श्री सहचरि सुख जी महाराज कृत—राग मलार

झूलत रसिक दोऊ कुंजनि माँहि। जमुना तट वंशी वट छाँहि दहुँन के रूप दुहुनि के फंद दोऊ ही रसिक दोऊ

रस के कंद टेक । राधा कुंवरि कुँवर नँद नंद दोऊ ससि मुख दोऊ जीतत चंद ॥१॥ दोऊ चातिक दोऊ अमृत मेह । हरित होत दोऊ वरषत नेह ॥ दोऊ भिजवत दोऊ भींजत देह । दोऊ लहत मन मोद अछेह ॥२॥ झलकत स्याम गौर दोऊ अंग । रंगे है दोऊ हिय तन को रंग ॥ रमकत दोऊ दमकत दृग संग । दुहु मुख फूली है तीज उमंग ॥३॥ दोऊ ही तकत दोऊ जिय में लजात । दोऊ मकत दोऊ मुसिकात जात ॥ दोऊ धन पाइ जियहि इतरात । दोऊ मैननि करें रति की बात ॥४॥ दोऊ भुज भुज गहें पलकनि भूलि । दोऊ छके छवि में सनमुख फूलि ॥ दोऊ झुकें अंकनि गज लौं झूलि । दोऊ तिय पिय ह्वै रहै अनुकूल ॥५॥ दोऊ ही दोउन के करत सिंगार । दोऊ ही रिझावत विविधि विहार ॥ दोऊ वन दरसत रीझि अपार । दोऊ दोऊन पर होत वलिहार ॥६॥ दोऊ ही राग में सरस प्रवीन । दोऊ ही बजावत वंसी वीन ॥ दोऊ मृग लौं सुर श्रवननि लीन । दोऊ ही दुहुँन के अति अधीन ।७। दोऊ ही मिले अति आनंद दैन । दोऊ हरिवंश हिय के चैन ॥ जो देखे सहचरि मुख नैन । ज्यौं के त्यौं काहि परत वनैन । ८।१७।

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी की (यह पद भेंट है) राग मलार

प्रीतम दोऊ झूलत हैं संकेत । उतहिं कुंवर इत कुंवरि राधिका ललिता झोटा देत ॥ दोऊ मिलि मुदित परस्पर गावत अलापत राग मलार । खिसि खिसि परत नील पीतांवर नाहिन अंग सम्हार ॥ वरषत मेह सकल वन रंजित अवलोकत छवि देत । जै श्री हित हरिवंश परस्पर झूलत सखी वलैया लेत १८

गो० श्री कृष्णचन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग मलार

झूलत उभय नवल किशोर। विविधि हास विलास अद्भुत प्रेम सिंधु झकोर ॥ कपिस नील वसन विराजत पवन विचलित छोर। किमपि खसत मुकट सुसोभित शिथिल केशनि डोर ॥ उरज कनक कलश विलोकत स्वास मानस चोर। प्रिया मुख विधु मृदु कला युत प्रीतम नैंन चकोर ॥ सरस गति जति देखि मनमथ वँध्यौ भृकुटी कोर। जै श्री कृष्णदास हितालि निरखति दुरहिं दोऊ हिंडोर ॥१६॥

गो० श्री हित गोपीनाथ जी महाराज कृत—राग विहागरौ

रँगीले हिंडोरे रँगीले विहारी रँगीली प्रिया कौं झुलावत माई। रँगीले आभूषण अँग अँग साजें रँगीली महिंदी प्यारी हाथ रचाई ॥ रँगीली चहूँ ओर सहचरि गावैं रँगीली सावन तीज सुहाई। जै श्री हित गोपी नाथ रँगीली छवि वाढ़ी कहा री कहूँ कछू कही न जाई ॥२०॥

गो० श्री दामोदर वर जी महाराज कृत—राग मलार

नवल हिंडोरना हो झूलत जुगल किशोर। वर भामिनि रस भरे मन मोहन हँसत लसत चित चोर ॥१॥ स्याम तमाल लाल रस लंपट गान करत कल घोर। पुलकि पुलकि तन अंस वाहु कसि निरखत सुख नहि थोर ॥२॥ नीलांवर पीतांवर अंचल चंचल चलत झकोर। जै श्री दामोदर हित प्रीतम की छवि सदा वसौ मन मोर ॥३॥२१॥

राग कान्हरौ—आज झूली री रंग हिंडोरे प्यारी पिय के संग। गोरे तन फवि सुरंग चूनरी पीत वसन सोहै सुभग साँवरे अंग। तैसेई वदरा घमड़ि रहे तैसी वरन वरन सारी पहिरें

गावै ललितादिक भीनी रंग जै श्री दामोदर हित रसिक बिहारी विहारिनि की छवि पर वारी रति अनंग ॥२२॥

गो० श्री कमल नैन जी महाराज कृत—राग मलार

झूलत नवल प्रिया संग प्रीतम झोटा झकोरत हा हा खाई । हरषत हँसत उर लावत मोहन चौंप बढ़ावत बदन की माई ॥ तैसीये तरुणाई तैसी अंग अरुनाई तैसीये सुरंग सूही सारी सुहाई । जै श्री कमल नैंन हित सखी सचु पावति गावति झुलवति लेति बलाई ॥२३॥

गो० श्री हित हरिलाल जी महाराज कृत—राग मलार

झूलत रंग भरे पिय प्यारी । झूमत घन घूमत सहचरि गण मन हरषत मनुहारी ॥ गावति रस सरसावति गोरी पहिर केशरी सारी । लाल पाग नीमां छवि सींमा राजत लाल विहारी ॥ भुज जोरैं चित चोरैं दोऊ वन छवि छाई भारी । जै श्री हित हरिलाल बाल अद्भुत सुख निरखि रूप बलिहारी ॥२४॥

गो० श्री नवनीत जी महाराज कृत—राग देव गंधार

अद्भुत वरषा आई देखौ माई । स्याम सरूप घटा घहराई प्रिय चपला चमकाई ॥ हित की सखी उज्जल रस भीनी बग पंकति छवि छाई । नूपुर शब्द पपीहा दादुर कोकिल मोर कुहुकाई ॥ हरिवंशी धुनि मनौं गरजत घन लरजति धन अकुलाई । डरपी जानि प्रिया प्रीतम नैं पुनि पुनि लै उर लाई ॥ हलत हिंडोर झकोर पवन की करत कलोल मन भाई । जै श्री हित नवनीत परम रस बरषत निरषत नैंन सिराई ॥२५॥

गो० श्री रूपलालजी महाराज कृत—राग अड़ानो (संध्या आरती पश्चात यह पद होता है)

हिंडोरे दोऊ झूलत री सुरंग चूँनरी पहिरैं । झुलवत ललन विहारी प्यारी, उठति छबिनु की लहरैं घन गरजनि

झुकि अलि गन गावति तान तरंगनि गहरैं । जै श्री रूपलाल हित रस बस दंपति लखि उपमा नाहिं ठहरैं ॥२६॥

राग मलार—सुभग हिंडोरना माई रहसि रच्यौ सुख रासि ॥टेक॥ सघन घन वन झूमि आये रहे जित तित छाइ । बनी सरस कदंब खंडी प्रेम सर झलराइ ॥ जुही जाती मालती प्रफुल्लित चहुँ दिसि छाइ ॥ पचरंग डोरी हेम सूतनि निरखि हियो सिराइ । तापर विराजति लाड़िली पिय मुरि मुरि देत झुलाइ ॥१॥ पिक मोर कोकिल मधुर बोलैं करैं दादुर शोर । घटनि में वग पांति झलकैं दामिनी चहूँ ओर ॥ हरषि झुकि झुकि गीत गावैं सखी तान मरोर । ताल बीन मृदंग उपजें मिलि चलैं चित चोर ॥ जुगल चंद विलोकि फूले कुमुद नैंन चकोर ॥२॥ छबि रासि रसिक विचित्र विवि पहिरें कसूँमी दुकूल । अँग अँग भूषन त्रिविधि साजें हियें आनंद फूल ॥ रमकि झमकि झुलाइ झूलें प्रेम वल्ली मूल ॥ चितैं मृदु मुसिकानि सों वतरानि दंपति भूल । जै श्री रूपलाल निहारि हित चित भयौ है अनुकूल ॥३॥२७॥

राग मलार छंद—आली री झूलत लाड़िली लाल । श्याम सुंदर सुंदरी वने रूप रंग रसाल ॥टेक॥ रतन खंभ मयारि मरुवे चारु डाडी हीर । पाटुली मणि लाल पन्ननि दिपति दुति गंभीर ॥ चहुँ ओर साज समाज सहचरि अरुन सोभित चीर । गावति लड़ावति स्वरनि सुनि चुप रहे कोकिल कीर ॥१॥ प्रफुलित झुकी द्रुम लता दिसि दिसि निकट जमुना हेरि । हरित भूमि सुहावनी जित तित मयूरनि टेरि ॥ घुरि घमड़ि घन वरषत फुहारनि चमकि चपला घेरि । झिम्झकि झुकि लपटाति

ललना लाल सुखहिं मकेरि ॥२॥ दोऊ लेत रमकनि अंग झमकनि स्वरनि राग मलार। सुख भरे पानन झलकि आनन दृगनि मदन विहार ॥ बतरानि प्रेम बिकानि दंपति रसनि के उदगार। जै श्री लाल रूप विलोकि हित तन प्रान करि बलिहार ॥३॥२८॥

राग मलार छन्द—रंग हिंडोरना माई झूलत जुगल किशोर। बिवि चंद आनंद कंद रसिक सुछंद प्रेम हिलोर ॥टेक॥ तरु लता चहूं दिसि लह लहें प्रफुलित सुमन वन राज। पिक मोर कोकिल कीर दादुर धुनि मदन मन लाज ॥ घन घोर चपला चमकि वरषि फुहार पावस सार। हरित भूँमि पर वीर बहुटी निरखि सुख दृग आज ॥१॥ कूल कालिंदी रच्यौ बहु रतन जटित सुरंग। कल चित्र खंभ मयारि मरुवे चारि डाड़ी संग ॥ पटुली नगनि मन मगन लखि उपज्यौ जु प्रेम अभंग। चढ़ि हरखि झमकि झुलाइ झूलें दुहुँनि बढ़ी उमंग ॥२॥ पीत अरुन दुकूल राजैं फरहरानि अनूप। भूषननि भूषित करत अंग रस सिंधु रोमनि कूप ॥ ललितादि सजि सजि साज सहित समाज राग सरूप। गान तान तरंग रंगनि नेह नव रस भूप ॥३॥ छबि रासि रसिक विचित्र बिवि छाके छबिनु के धाम। झलकि पाननि भरे आंनन लसत स्यामा स्याम ॥ मुसिकानि मृदु बतरानि कुटिल कटाच्छ वेधन काम। श्री हित रूप दंपति भूप लखि सखि सुमिरि आठौं जाम ॥४॥२६॥

राग मलार—सखी मिलि पिय संग झूल झुलावैं। गरजि गरजि घन चपला चमकैं नेह नीर झरि लावैं। बढि बढि लेति

लड़ैती झोटा डारनि छ्वै छ्वै जै श्री हित चित रूप लाल ललना दोऊ राग मलारहि गावै ॥३०॥

उमगि रस रंग हिंडोरे झूलैं। घन दामिनि घनश्याम भामिनी हरषि वरषि अनुकूलैं॥ अरस परस विवि सरस परस ह्वै उर उर भुज भुज मूलैं। जै श्री हित अलि रूप अनूप प्रेम छकि छाके दृग दृग फूलैं ॥३१॥

श्री (हरिराम) व्यास जी महाराज कृत—राग मलार

झूलत कुंज निकुंज किशोर। सुरत रंग सुख सैंननि सूचत नैंन रंगीले भोर ॥१॥ सिथिल पलक में वंक विलोकनि विहसनि चितवनि चोर। फिरि फिरि उर लपटात समात न फूले तन कुच ओर ॥२॥ अधर मधुर मधु प्याय जिवाये विवि वर वदन चकोर। मादिक रस रसना न अघावत लहत मंडल चल छोर ॥३॥ बीच बीच नाचत मिलि गावत सुर मंद्र कल घोर। रीझि पुलकि चुंबन करि पुलकित झुलवत जोवन जोर ॥४॥ हरिवंशी फूलति हरिदासी निरखति सुरति हिंड़ोर। व्यासदास चंचल अंचल करि मोद विनोद न थोर ॥५॥२२॥

हिंड़ोरना झूलत जुगल किशोर। वरषत मेघ हरियालौ सावन जहाँ तहाँ नाचत मोर ॥१॥ दामिनि दुरति भामिनि छवि निरखत चंचल अंचल छोर। डोलत वग बोलत पिक चातक सुनत मंद घन घोर ॥२॥ हिय सौं पियहि लगाय मचायौ अवला जोवन जोर। सीकत श्याम गिरत तें उबरें कर गहि उरज कठोर ॥३॥ पट भूषन लट उरझि न छूटत वाढ़ी प्रीति न थोर। कच गहि चुंबन कर मुख देखत सुख सागर झक झोर ॥४॥ नाचत गावत सखी झुलावत गति उपजत चित चोर रास्यौ रंग व्यास की स्वामिनि रति रस सिंधु हिलोर ५ ३३

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत राग मलार

रस भरे सुरंग हिंडोरै झूलत । अति सुकुमार रूप निधि दोऊ सो छवि देखि परस्पर फूलत ॥१॥ नवल तरुनता अँग अँग भूषण लसत सुभग उरजनि मणि माल । उभय सिंधु मनौं बढ़े रूप के चित्र विचित्र झलकत रंग रसाल ॥२॥ रुचिर नील पट पीत पवन बस उड़त उठत मनौं लहरि तरंग । हित ध्रुव दिनहिं मीन सखियन दृग तृषित फिरत रस में तिन संग ।३।३४।

राग मलार—गरजनि घन अरु दमकनि दामिनी चातिक पिक शुक बोलत मोरनि । स्याम घटा काजर हू ते कारी उमड़ि उमड़ि आई चहुँ ओरनि ॥ नान्हीं नान्हीं बूँदनि बरषनि लाग्यौ तैसिये रोचक पवन झकोरनि । हित ध्रुव प्यारी प्यार सौं झूलति पियहि झुलावति नैननि कोरनि ॥३५॥

कवित्त—अति अलबेली भांति झूलैं अलबेली प्रिये, सहज छवीली छवि नवल निहारहीं । सारी सुही सुरँग परति खसि खसि सखी वार वार प्यारो पिय फूल से सँवारहीं ॥ जेही ओर अंग पट भूषन खिसत पिय, तेही ओर मुरि मुरि प्रान ज्यौं सँभारहीं । हित ध्रुव प्रीतम के नाहिं और दूजी गति, छिन छिन तिनही के सुखही विचारहीं ॥३६॥

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत—राग जैतश्री

घुरि आये री बादर काज रे, बन बोलत चात्रक मोर री, घन गरजनि आज सुहावनीं ॥टेक॥ वर भूमि हरी वृन्दाटवी छवि देखत लाजै काम री । रंग भांतिनु भांतिनु को गनें कल कोमलता कौ धाम री ॥१॥ श्री राधा कौं आराधि कें पिय बोलत मीठे बोल री नंदलाल लाड़िलौ लालची तुम लेहु

प्रिया मोहि मोल री ॥२॥ दोऊ कुंज हिंडोरें झूलहीं नव फूलन अंग समाइ री। रमकावति गावति गोपिका उर आनंद सिंधु बढ़ाइ री ॥३॥ पट नील पीत फहरात हैं कहि को वरनैं इहि भाँति री। घन दामिनि की उपमा कहा यह अधिक अनूपम काँति री ॥४॥ दोऊ मिले अंग अंग सों गसे वसौ मेरे उर यह रूप री। पीउ पीवत अधर सुधा वदै प्रिये कियौ हौं रंक तें भूप री ॥५॥ श्री स्याम रूप रस रासि है नित राधा के आधीन री। रितु पावस प्रेम नदी भरी सींवा न कली मन मीन री ॥६॥३७॥

श्री कल्याण राय जी महाराज कृत—राग मलार

झूलैं माई जुगल किशोर हिंडोरे। संग झूलत वृषभानु नंदिनी बैठे प्रेम रति जोरे॥ कियो सिंगार सकल ब्रज सुन्दरि ठाड़ी भई चहूँ ओरे। मानौं मदन अखारो रोप्यौ गावत तान मरोर॥ तैसेई घुमड़ि रहे हैं वादर मंद मंद घन घोरे। कल्यान के प्रभु रमकि रमकि झूलैं निरखि मदन तृन तोरे ॥३८॥

राग अड़ानो—सो तू राखि लै री, (सो तू राखि लै री) झोटा तरल भये। इत नव कुंज कदंव परसि कैं उत जमुना लौं गये॥ आवत जात लपटात लतनि सौं ता ऊपर द्रुम छाँह छये। कल्यान के प्रभु गिरधरन किये वस झूलति नये नये ॥३९॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग धनाश्री

हौं वलि वलि या रमकनि की, सरस हिंडोरें झूलावत लाल ॥टेक॥ नवल रंगीली अति अभिराम। सोहन सारी सूही वाम॥ रुरकति उर मुक्ता मनि दाम। झलक पदिक ग्रीवा छवि धाम "१" गुही बेंनी सुठि सुकर सुहाति

नाना रंग कुसुमनि की पाँति ॥ सोभित पाछैं आछी भाँति । रूप लता मानों फूली डुलाति ॥२॥ सुंदर रंग सिंदूर सीमंत । रची सँभारि मनोहर कंत ॥ सीस फूल कल तिलक सुदेस । मुख राजत लाजत राकेस ॥३॥ श्रुति कुंडल गंडन झलकैं । झूलत फूल झरैं अलकैं ॥ पिय हिय उपजति नई ललकैं । देखत दृग न लगें पलकैं ॥४॥ खंजन से अंजन जुत नैंन । विसद विशाल सुखद रस ऐंन ॥ चितवनि वरषत सुधा सुभाय । निरषत लालन मन न अघाय ॥५॥ दामोदर हित भरी रस रंग । अंग अंग छवि की उठत तरंग ॥ बसो निरंतर ए मन मोर । रसिक कुंवर वर जुगल किशोर ॥६॥४०॥

राग सारंग—आई परम सुहाई पावस रितु सुखदाई, तैसोई वृन्दावन मिलि छवि पाई । त्रिविधि समीर चलाई तैसिय कोकिल कुहुकाई झूलत हिंडोरें पिय प्यारी मन भाई ॥ तैसिये दामिनि कौंधति तैसिये गरज घन तैसिय किशोर किशोरी मलार गाई । अद्भुत छवि छाई ज्यों ज्यों सखी देति झुलाई दामोदर हित कछु मनहि समाई ॥४१॥

राग सारंग—झूलत किशोर जोर मधुर बोलत मोर दामिनी दमकैं घन मंद मंद घोरें । चलत समीर धीर लवंग लता पटीर परसि आवति सौरभ की झकोरें । सखी जन गन तीर तीर बाढ़ी सोभा भीर गावत झुलावत रंग हिंडोरें लोचन चपल चारु अंचल चंचल माई कहै कौन कवि छवि स्याम तन गोरें ॥ नीकी भाँति रमकनि दसन सु दमकनि मृदुल मृदुल हसि हसि चित चोरें । रस भरे रंग भरे प्रेम भरे गुण भरे दामोदर हित नित बसौ मन मोरें ॥४२॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग लूम

तेरी झूलनि अति रस सानी सुख दानी श्री राधा वल्लभ लाड़िले। सब सिंगार अरु हार फूलनि के प्यारी कूँ झुलावत अति जिय चाडिले॥ गावत बजावत रिझावत पिया कूँ तान तरंगनि आडिले। राधा वल कृष्ण हित रूप झडी लागी विपिन वसावौ अनत न छाडिले॥४३॥

राग मलार—झूलत सुरंग हिंडोरे मुकुट धरि बैठे है नन्द-लाल। लाल काछनि कटि पर बाँधे उर शोभित वनमाल॥ वाम भाग वृषभान नन्दनी चंचल नैन बिशाल। कृष्णदास दंपति छवि निरखत अखियाँ भई निहाल॥४४॥

राग ईमन—लटकि लगत एडिनु सौं तू अंचल लै री लै। जिन उरझै पटुली पग ऊलत झूलत आवत है मैं री मैं॥ कै बैठौ भरि अंक झुलाऊँ कै मेरे अंशनि भुज दै री दै। कृष्णदास हित चतुर स्वामिनी द्वै तें एकै है री है॥४५॥

श्री जगन्नाथ जी महाराज कृत—राग मलार

दोऊ रीझे भीजे झूलत रस रंग हिंडोरें। नेह खंभ डांडी चतुराई हाव भाव मरुवे वेलन चौंप पटुली अनूप बनीं कटाच्छ रमकैं चित चोरें॥ रस उन्नित सुख वरषत मंद हसनि गरज दसन चमक चपला हुलास रस पवन झकोरें। वलित वलय नूपुर मानों विहंग वोलैं जगन्नाथ कविराय प्रभु जात काम रस भोरें॥४६॥

श्री सुघरराय जी महाराज कृत—राग केदारौ

हौं तौ झुली री हिंडोरें रमकि रमकि प्रीतम प्यारे के संग। तैसेई वादर ओल्हरि आए सुहाए इक्लौं उठी री दामिनि

दमकि दमकि । कबहूं कबहूं नान्हीं नान्हीं बूँद डारत झमकि झमकि । सुघर राय प्रभू रस वस करि लीनौं अब कहा करि है काम तमकि तमकि ॥४७॥

श्री चत्रभुज दास जी महाराज कृत—राग बिहागरो

मुदित झुलावैं अप अपने आसरैं माई नवल हिंडोरैं झूलैं नवल किशोर । नवल कसूँभी सारी पहिरें नवल वधू प्यारी नव भूमि हरियारी सोभित चहुँ ओर ॥ राधे जू चूनरी नव पट पीत सुंदर स्याम के ढिग मनि गन खचित पटुली बैठे एक जोर । नवल घटा सुहाई परति थोरी थोरी बूँदें बीच बीच नव घन की घोर ॥ नवल गीत झुंडनि गावति कंचन खंभ कें ढिग नवल वृन्दावन में बोलत है मोरी मोर । चत्रभुज दास प्रभु कौं सखी मिलि झोटा देति मदन गोर ॥४८॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग बिहागरो

अलक लड़ौ सामन अलक लड़ी लाड़िली झूलत अलक लड़ौ हिंडोल । कोकिल चातिक गान सु कानन नाचत वरह केकी कल बोल ॥ धावत उन्मद अलक लड़ौ घुररतु धग्न धरैं कसूँभी निचोल । पहिरें पीत वसन पिय आगैं नागरीदासि सुवस बिन मोल ॥४६॥

अहो लाल झूलिये नेंक धीरें धीरें । काहे को इतनी रमकि वढ़ावत द्रुम उलझत चीरें चीरें ॥ जो तुम झुकि झुकि झोटान के मिस आवत हौ नीरें नीरें । हम बरजत मानत नहीं नागर लेत भुजन भीरें भीरें ॥५०॥

झूलत रसिक मोहन राय । संग भामिनि दामिनी घन बीच मनौं दरसाय ॥१॥ कटि लचकि मचकनि चलत अद्भुत

लेत चित को चोर । बढ़ि गई झूलनि झनन झननि किंकिनी धुनि सोर ॥२॥ नील पीत दुकूल फहरत तुटी नव वनमाल । गयो अंचल छूटि उर डर मिलत झुकि झुकि बाल ॥३॥ छई चहूँ दिसि मेघ माला छयौ राग मलार । दास नागरि तिहिं समय सुख बढ्यौ विपिन विहार ॥४॥५१॥

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज कृत—राग विहागरौ

झूलत नागरी नागर लाल। मंद मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल ॥१॥ फरहरानि पट नील पीत की, अंचल चंचल चाल । मनौं परस्पर उमगि ध्यान छवि प्रगट भई तिहिं काल ॥२॥ सिल सिलानि अति प्रिया सीस तें लटकत बेंनी नाल । मनु पिय मुकट बरहि बरही भ्रम व्याली विकल विहाल ॥३॥ मल्ली माल प्रिया जू को अरुझी पिय तुलसी दल माल । मनु सुरसरी तरनि तनया मिलि किधौं शुक श्रेणी मराल ॥४॥ साँवल गौर परस्पर प्रति छबि सोभा विशद विशाल । निरखि गदाधर कुँवरि कुँवरि कौं मन पर्यौ रस जंजाल ॥५॥५२॥

राग धनाश्री—माई री, झूलहि कुँवरि गोपरायन की मधि राधे सुंदरि सुकुमारि ॥टेक॥ प्रथमहि रितु पावस आरंभ । श्री वृषभानु मँगाये खंभ ॥ काढ़ि भवन तें रतन अमोल । रचि पचि रुचिर रच्यौ है हिंडोल ॥१॥ एक तें एक सुंदरि सुकुमारि । मनहु रची विधि कुम कुम गारि ॥ जग मगाति नव जोवन जोति । निरखि नैंन चंक चौंधी होति ॥२॥ वरन वरन चूँनरी सुरंग । छवि लौंने सौंने से अंग ॥ राजत मणि अभरण रमनीय । जुही गुही कबरी कमनीय ॥३॥ गावति सरस सुघर सुर गीत

दुलरावति मन मोहन मीत प्रेम विवस भई सकति न गाय उमग्यौ है आनंद उर न समाय ॥४॥ दुरि देखत गोकुल के राइ । सोभा निरखत मन न अघाइ ॥ मुदित गदाधर नंद किशोर । लोचन भये भोर के चोर ॥५॥५३॥

राग गौरी—हिंडोरना झूलत जुगलकिशोर । हिंडोरना राजत जोवन जोर ॥टेक॥ अगनित मणि मानिक लागे । जाहि निरखि नैंन अनुरागे ॥१॥ ऊपर चंद्रातप तानें । व्योम में उनए घन जानें ॥ पचरंग पाट झवा तहाँ झूलें । जनों रंग-रंग पंकज फूलें ॥२॥ मोतिन के लटकन-लटकें । लखि जिन नक्षत्र गन मटकें ॥४॥ ये चपल झिलमिली झलकें । देखत नाहिं लागत पलकें ॥५॥ मणि चौक रचे वर धरनी । यह सोभा जात न वरनी ॥६॥ मृदु पवन उड़त रज रूरी । कुंकुम कपूर कस्तूरी ॥७॥ कुसुमित उपवन चहुँ पासा । तहाँ झूले भँवर सुवासा ॥८॥ तहाँ कोकिल कीर कलापी । मृदु बोलत मधुरालापी ॥९॥ तहाँ जूथ जूथ ब्रज नारी । जनु कुंकुम गारि सँवारी ।१०। वे मधुर मधुर स्वर गावें । वे कुँवरि कुँवर कौ लड़ावें ॥११॥ दंपति मुख सोभा देपैं । लागत नहीं नैंन निमेषैं ॥१२॥ जब झूलें थोरें-थोरैं। आवैं सुभग सुगंध झकोरैं ॥१३॥ पट नील पीत पहराहीं । जनु घन दामिनि निर्त्त कराहीं ॥१४॥ सुर वनिता फूलनि वरषैं । वे ढिग आवन कों तरसैं ॥१५॥ जहाँ रंग वढ्यौ अति भारी । तन की गति सवनि विसारी ॥१६॥ गुन गाय गदाधर जीजैं । मन प्रेम रङ्ग सों भींजैं ॥१७॥५४॥

राग अड़ाना—राधे जू झूलत रमकि रमकि । मणि कंचन कौ सुरंग हिंडोरौ ता मध्य दामिनि चमकि-चमकि गावत गुन

गिरिधरन लाल के उठत दसन दुति दमकि दमकि । वाढ्यौ रंग गदाधर प्रभु जहाँ गयौ है मदन ग्रसि तमकि तमकि ॥५५॥

राग मलार—सुखद वृन्दावन सुखद यमुना तट सुखद कुंज भवन रच्यौ है हिंडोरौ । सुखद कल्प तरु सुखद फूल फल सुखद वहत सीतल पवन झकोरौ ॥ सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा सुखद करत केलि रति पति जोरौ । सुखद सखी झुलावैं सुखद गीत गावैं सुखद गरज वरसत थोरौ थोरौ ॥ सुखद हरित भूमि सुखद वूँदनि रंग सुखद कोकिला कल सारस चकोरौ । सुखद वजावैं बैंन सुखद सुजस सुनि सुखद गदाधर चित कौ चोरौ ॥५६॥

राग मारू—निज सुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना झूलत स्याम सुजान । संग स्यामा जू परम प्रवीन जासौं सदा रसिक ग्राधीन ॥टेक॥ कंचन खंभ पेच ववरैंड़ा जटित जराऊ सँग री । पन्ना खचित पिरोजा विच विच कनक कलश जग मग री ॥१॥ गज मोतिन सौं डांडी गूँथी चौकी चमकि सुरंगी । रमकति झमकति गहि-गहि लटकति मोहन मदन त्रिभंगी ॥२॥ मरुवे वेलन ध्वजा झालरी दुति गहरैं परषि सु तरुणी । चौका रतन झोटन में जानी कोकिल शब्द उचरणी ॥३॥ चहुँ ओर द्रुम वेली लता सघन गंभीर । जब रमकत झमकत दामिनि सी ज्यौं झलमलत जमुना नीर ॥४॥ सारस हंस चातक चकोर पिक नेह धरे ह्वै पैठैं । झूलत लता द्रुमनि तन दीसत ग्रैसे जुरि-जुरि वैठैं ॥५॥ विजै सुभाव किये घन संपति उल्हर विपिन पर ग्राए । गरजत तरजत मधुर राग लिये सखि केकी कूक सुहाए ६ सहचरि गान करति ऊँचे सुर श्री वृन्दावन

राजें । मधुर मजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजें ॥७॥ नीलांबर पहरें नव नागरि लाल कंचुकी सोहै । भीजि गई श्रम जल सौं उरजनि प्रीतम को मन मोहै ॥८॥ लट सगवगी सु लाल वदन पर सीस फूल लपटानों । प्रिया जू की चौकी गिरिधर कौ चन्द्रहार अति सोभित अरुझानों ॥९॥ दृग रसाल रस भरी भौंह सो हँसि हँसि अर्थ जनावैं । मुरनि दुरनि में चितै आकरषत है लालची मन ललचावैं ॥१०॥ फैलि रह्यौ सौरभ सगरें सखि कुंकुम कृष्णागर कौ । कहाँ लगि कहै मत्त भयौ वरनै भाव गदाधर उर कौ ॥११॥५७॥

श्री बल्लभ रसिक जी महाराज कृत—राग मलार

झुलवहि सहचरि रंग रंगीली रंग रँगीले दोऊ झूलैं हो । दसन रँगीली बसन रँगीली दरसन रसनि रँगीली हो ॥१॥ नव जोवन के जोरनि मोर मरोरनि छवि अंगनि में । नई बाँधनू तन में लखि पिय लई बाँधनू मन में ॥२॥ लहरैं लेंहि लहरिया सारी रूप समुद्र के जोरैं । जाइ किनारे लगे जु तारे तिनहूँ को लै वोरैं ॥३॥ हरी हरी चुन्नी पर बूँदें लाल चुनी सी सोहैं । लाल चुनी पर हरी हरी बूँदें रूँदें मन कों मोहैं ॥४॥ लाल चुनी इहि लालच नीकें वाल चुनीनि सँभालें । रंगी जानि रँगीन लाल ये रँगीन रंगन वालें ॥५॥ लाल हरे अतरोंटनि की दुति लाल हरे मन कोहैं । लाल हरे मन जाय लगे तहाँ लाल हरे ह्वै जोहैं ॥६॥ मुलकट चोली बनी धनी के अतुल पुलक उपजावैं । चुकीन टूक टूक करतैं कंचुकी टुकी सुभावैं ॥७॥ भाग भरी भामिनि अनुरागिनि राग मलारहि छावैं । संभ्रम दामिनि जानि श्यामघन झूमि झूमि पर आवैं ॥८॥ एक मृदंग तरंग धरैं इक बीण प्रवीण वजावैं

सुवरण रंजित चूरे एकनि तंबूरे परनि मिलावैं ॥९॥ झूलि-झूलि झुलवहिं गहि सहचरि चहचरि जोर मचावैं। एक कहैं छिन रहौरी धौरी बीरी पान खवावैं ॥१०॥ झुलवहिं बीर वहुटी सी जु वधूटी भूषन बाजैं। वल्लभ रसिक अलिन के अंग मानौं अनंग दुहाई गाजैं ॥११॥५८॥

राग मलार—झूलति अति फूलति वन रानी, नवल रसिक वर संग ॥ झूलत घन फूलत वृन्दावन वसन वनक मन मानी ॥१॥ प्यारी पिय के नेह सों सनी पहरि सोसनी सारी। झलकति वंदन सहित कंचुकी झमकति लगी किनारी ॥२॥ चिलकत लहँगा की धारी पर सारी मिहीं न दीसी। प्रगटित मंजुल पिंजुल की ठौरनि ह्वै इक ठोरी सी ॥३॥ ललित गुलाबी फेंटा सीस कलित सिर पेच सु कलँगी। कसी उर वसी तल मुक्ता हल हालनि हालनि वलगी ॥४॥ सुवरन वरन इजार चुनावट वेलि बुनावट गति की। गुल अनार नीमा सीमा में झलमल झलमल अतिकी ॥५॥ रँगभीनो झीनो रुमाल ओढ्यो करि कटि कसि दीनो। वल्लभ रसिक रसीली झूलनि झूलि झूलि रस लीनो ॥६॥५९॥

राम मलार—ललित हिंडोरो ललिता रच्यौ है, लखि लखि दोऊ हरषे री। दम्पति वरण सुभाउ सुरति पूरति मनों सानि सच्यौ है ॥१॥ कृत आरम्भ जंभ भेदिन मनि खंभ क्रांति उमची है। तिनमें लाल मणिन कुसुमनि सौं कनक मणि वेलि गची है ॥२॥ राखी अंस मयार मेंड नाखी भाखी कवि थोरें। मिलि निकरे कर लखि अनुमानौं वर पग सों पगजोरें ३ दुहुँ दिसि कलस मध्य कमला कृत कुच वदना

कृति मानैं । द्वै द्वै अँग दरसनि नहीं याते रति लम्पट लपटानैं ॥४॥ मणि रँग पट सम डोरी डोरी सुरत छुटे दरसात । काम केलि गुंफित उहि डोरी लखि पुनि रस सरसात ॥५॥ आनि परी आडे पटुली चटुली नहिं डोरी धारी। छुटि अटके झूमक दुहुँ दिसि लटके पटुली रतनारी ॥६॥ मणि मय शुक कोकिल चातक धारे मयारि करि बोलैं । साँचे केकी हूँ सँग राचे नाचैं करैं कलोलैं ॥७॥ जोवन में झूलन नऊ जन में फैली छटा नवीनी । वल्लभ रसिक मदन दीपन दुहुँ मिलि चढ़ि झूलनि लीनी ॥८॥६०॥

राग मलार—आज दोऊ झूलत रति रस सानैं । ठाढ़े मचकैं लचकि तरुनि के गहि फल फूलनि आनैं ॥१॥ सूहे पट पहिरैं द्वै पटुली बैठे साँवल गोरी । अलिनु रँगीली तिय पद अंगुली पिय डोरी सौं जोरी ॥२॥ श्याम काम वस झूलि फूलि पग मूलनि झूल वढ़ाहीं । कामिनि चरन ताम रस छुटि अलि काम लूटि मचि जाहीं ॥३॥ जोवन माधि जोवन मद झुलए झूलनि फंदनि जानैं । वल्लभ रसिक सखी के नैना एही झूलनि झुलानैं ॥४॥६१॥

राग मलार—झूलत खेलनि छैल छबीली । नव नव रंग मचावत गोरी डोरी तजि अरबीली ॥१॥ नारिन के कर शुक सारिनु के पिंजर मंजुल लागे । छैल अंस पर ललित हरित शुक सोहैं सूहे वागे ॥२॥ झूलति वाल लाल मुनि पिंजर मंजु कंज कर लीयें । अलक लड़ी लड़ि लड़ी छैल नामनि कों अति छवि दीयें ॥३॥ लाल करनि पकरी चकरी वजि निकरी खरी सुहावैं बँधी निरंतर अंतर डोरनि छुटि फिरि

हाथ न आवैं ॥४॥ बाल करनि ते छुटि छुटि चंगी चंगी बाजनि भावैं। फिरि फिरि हाथन थिरकी की फिरकी की कीरति गावैं ॥५॥ ओचकरी चकरी जु बाजनी लालन सन्मुख आवैं। पकरीं करी न तऊ लाजनी तिय लौं उतकौं धावैं ॥६॥ चतुर लट्टू लहट्टूहि फिराइ गगन तें हाथ हिलावैं। हाथ हिलावैं बाल मगन ह्वै दै दै हाथ लड़ावैं ॥७॥ हाथ लड़ावत साथ झुलावत अलि झुलवहि अलबेली। बल्लभ रसिक सखी जानति छैलन की गैल नवेली ॥८॥६२॥

राग मलार—ललित कदंब हिंडोरे झूलैं। रसिक कदंब सिरोमणि दंपति वन संपति लखि फूलैं ॥१॥ सोहै सुहे बसन सुवन तन मणि गण भूषण राजैं। जोवन चैननि बढ़े हैं नैन चल चढ़े हैं मैन के बाजैं ॥२॥ रँगी हिंडोरे की डोरी गोरी गहि उमहि झुलावैं। भाव सहित पावस रितु गीतनि मीत अमी रस प्यावैं ॥३॥ ह्वै आरूढ़ मसृण तृण भूपर बूढ़ मोद छबि छाई। पावस रितु झूलनि मंगल में गिलमें आनि बिछाई ॥४॥ घन अंबर पर संबरारि पच्छिनु लच्छिनु रँग लाये। मित्र स्याम घन हित तनु चित्र विचित्र वितानु तनाये ॥५॥ अधर धरें मुरलीधर मुरली मधि सूहो सुर रागैं। धुर बादर लौं जाय लगे सुर धुरवा छूटन लागैं ॥६॥ इन्द्र धनुष आवै बनि बनि पुनि छिन छिन में दुरि जात। पचरँग सारी धारी छवि लखि मन मन मनौं लजात ॥७॥ नव लालित्यनि सौं नवला नव लाल मलारहि गावैं। घन दामिनि के भोर मोर नाचैं राचैं सु रचावैं ॥८॥ बैठे आय हिंडोरे कोकिल कल कंठनि के बोलैं। निजकुल संभ्रम बोलि बोलि सुर रहें मधुरता

तोलैं ॥९॥ झूलनि रमकनि दामिनि दमकनि रिमि झिमि-झमकनि घन में। झूलनि दावनि झूलनि लावनि मिलि झिलि मिलि अंगनि में ॥१०॥ फूलनि लाल गुही सुरही के पेचनि मेचक वेंनी। झूलति पाछैं पाछैं लगि आछैं मनु वँधी त्रिवेंनी ॥११॥ घन अँधियारी लै यारी कीनी पिय प्यारी सों जोर। दामिनि उजियारी विच बिच न्यारी सखियाँरी ओर ॥१२॥ मोर छलनि सों फिरैं मोर फिरि जोर छलनि कौं ठानैं। चंचल चंचरीक एक आकुल रंच न हटक्यो मानैं ॥१३॥ गहत उर वसी वंद जरकसी कंचुकि उरज कसी। सुपटु कसे उकसे दवि ऊपर छवि तव फवि निकसी ॥१४॥ नेह मेह सरसैं उरसें वरसें रस टूटें वंद। भीजैं वसन मन धरनि भरनि अंकुरित रोम आनँद ॥१५॥ इहिं झूलनि झुलवनि मद छाकी थाकी मत कल चलई। बल्लभ रसिक अली अब निस दिन झुलवति झूलत रहई ॥१६॥६३॥

राग मांझ—झूलत रंग हिंडोरें श्री राधा वल्लभ। भमर भ्रमत चहूँ ओरें श्री राधा बल्लभ॥ गावति अलि स्वर जोरें श्री राधा वल्लभ। रीझि रीझि तृण तोरें श्री राधा बल्लभ॥ (मांझ-दंपति महल अटा पर ठाढ़े) यह पद सभा नं० १०२ पद नं० ७० में है ॥६४॥

श्री तानसैन जी महाराज कृत—राग मलार

रमकि झूलत हैं री लाल बाल रहसि रहसि संग। ज्यौं ज्यौं डरपति प्यारी त्यौं त्यौं कर गहत मोहन आली मोहि अति रस बाढ्यौ तातें भेटत भुज भरि अंग॥ सावन तीज सुहावनी लागति झुलवति सहचरि करत रंग। तानसैंन पिय प्यारी की छबि पर वारौं कोटि अनंग ६५

श्री आनन्द घन जी महाराज कृत—राग मलार

गौर स्याम धारनि कौ लहरिया झूलत लहरें खेत। पहिर्‌यौ परम चौंप सौं स्यामा उघारे पर्‌यौ हिय हेत॥ उफनि उठ्यौ संगम सुख सागर लौनें अंग दिखाई देत। पिय मन मगन होत अभिलाषनि बँधतु न धीरज सेत॥ मधुर मधुर गावनि मलार धुनि सुनि रीझत भीजत चित चेत। छूटे चिकुर आनँद घन वरषत भरत मनोरथ खेत॥६६॥

श्री रामराय जी महाराज कृत—राग मेघ

सखी झूलत स्यामा स्याम हिंडोरे रंग सौं। सखी नवल छबीली वाम महा अभिराम झुलावें सुखधाम हिंडोरे रंग सौं॥१॥ सखी रेशम पचरंग डोर गही कर जोर किशोरी किशोर हिंडोरे रंग सौं। सखी गरजत घन घोर कुहकि पिक मोर दामिनि चहुँ ओर हिंडोरे रंग सौं॥२॥ सखी वरषत रस की धार गावत सुकुमार विहारी विहार हिंडोरे रंग सौं। सखी भीज रहीं सब बाल उमंगि रस जाल कोकिल सुरसाल हिंडोरे रंग सौं॥३॥ सखी रमकि हिलोर विशाल सुमोहन लाल प्रिया हिय माल हिंडोरे रंग सौं। सखी जमुना तीर गंभीर मदन मद पीर रसिक वर वीर हिंडोरे रंग सौं॥४॥ सखी अनुपम अखिल सिंगार सुरत सुख सार परस्पर प्यार हिंडोरे रंग सौं॥ सखी रामराय उद्‌गार हियें न सम्हार गावत जु मलार हिंडोरे रंग सौं॥५॥६७॥

राग मलार—सघन निकुंज सुहावनी सखी झूलत दोऊ सुकुमार। अंसन उरजन भुज दियें हियें हरनी हिय हार॥ अंग अंग उमहत झुलत अधरामृत आहार पुलकित अरुझी

माल कर कंकन कुंडल वार गावन मिलि कलरव भरे झूल परत रिझवार। वेपथु जुत विग्रह बने आनन्द वृष्टि अपार ॥ श्रमकन प्रशमित करत है ललिता अंचल व्यार। श्री रामराय सुललित महा सुरत हिंडोर विहार ॥६८॥

श्री नन्ददास जी महाराज कृत—राग जैजैवंती

माई री झूलत नवल वाल झुलावत नंद लाल कालिंदी के तीर माई रच्यौ है हिंडोरना। तैसेई वोलें मोर क्रीड़ा करैं चहूँ ओर तैसोई मधुर धुनि लाग्यौ घन घोरना॥ तैसेई फूले री फूल हरत मन के मूल अलिन के जूथ मानौं मद के मदो-रना। नंददास प्रभु प्यारी जोरी अद्भुत भारी देखवोई कीजै जैसे चंद कौं चकोरना ॥६९॥

राग मलार—हिंडोरें माई झूलत जुगल किशोर। ललिता चंपक लता विसाखा देति है प्रेम झकोर ॥ तैसिये पावस रितु सुख दायक मंद मंद घन घोर। तैसोई गान करति वृज सुंदरि निरखि पिया की ओर॥ कोटि कोटि दरसन छवि उपजति होत सखी मन भोर। नंददास प्रभु गिरधर राधा प्रीति निवाहत ओर ॥७०॥

राग मलार—दूलह दुलहिनि सुरत हिंडोरे झूलें, प्रथम समागम अहो गठजोरें। चरन खंभ भुज कर मयार डांड़ी चार कमल कर हुलसें दोऊ ओरें॥ सुभग सेज पटुली सुख वरसत मरुवा वेलन प्राची ओरें। नंददास प्रभु रस वरसत जहाँ नव घन दामिनि की अनुहोरें ॥७१॥

राग विहागरौ—झूलत दोऊ रस रंग भरे। नंद नंदन वृषभान नंदिनी राजत अँग अँग रंग ढरे सोभित मणि मय

माला भूषण चमकत चंचल चारु परे मानौं सुरंग दुरंग वसन विच जलचर बालक जाल परे ॥ कुंडल कल तार्टक सु अलकैं झलकैं लोल कपोल अरे । मंद हसनि अरु दमकि दसन छवि कोटि मदन के मान हरे ॥ वडडी झूलनि में डरनि प्रिया की पिय मन मोहन वस जु करे । नंददास प्रभु की यह सोभा नैंननि निरखि निमिष विसरे ॥७२॥

राग जैजैवंती—फूल कौ हिंडोरौ वन्यौ फूलि रही जमुना । सुनत सब दौरि आई झूलिवे कौं ललना ॥ फूलन के खंभा दोऊ डांड़ी चारु फूलन की चौकी वनी जग मग लगना । चहूँ दिसि सखी फूली फूली फूली गावहिं नंददास प्रभु फूले फूलि रहे मगना ॥७३॥

श्री रसिक प्रीतम जी महाराज कृत—राग कान्हरौ

झूलत तेरे नयन हिंडोरें । श्रवण खंभ भ्रू भई मयार दृष्टि करण डांड़ी चहूँ ओरें ॥ पटली अधर कपोल सिंघासन वैठे युगल रूप रति जोरें । कच घन आड़ दामिनी दमकत मानौं इंद्र धनुष अनुहोरें ॥ दुरि देखत अलकावलि अलि कुल लेत सुगंधन पवन झकोरें । वरुणी चमर ढुरत चहुँ दिसि तें लर लटकन फुँदना चित चोरें ॥ थकित भये मंडल युवतिन के युग तार्टक लाज मुख मोरें । रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत रीझ रीझ तानन तृण तोरें ॥७४॥

कौन चढ़े पहले सुरंग हिंडोरे । सोई करत मनुहार हिय हित, रमकि देत जोरा जोरे ॥ गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे । रसिक प्रीतम यह होड़ प्रिया परी, रीझि देत तृण तोरे ७५

राग सोरठ झूलत साँवरे संग गोरी। अमित रूप गुण सहज माधुरी शोभा सिन्धु झकोरी॥ उत सिर मोर मुकुट की लटकन इत बेंदी छवि रोरी। कुंडल लोल कपोलन की छवि इतही बनी कच डोरी॥ नक बेसर मुक्ता की झाँई चौंप परी दुहुँ ओरी। रसिक प्रीतम वल्लभ कटाच्छ छवि हाव भाव चित चोरी॥७६॥

प्यारी झूलन पधारौ झुकि आये बदरा। साजौ सकल शृङ्गार नैनन धारौ कजरा॥ ऐसौ मान नहि कीजै, हठ तजिये अली। तू तौ परम सयानी हो वृषभानु की लली॥ रसिक प्रीतम मग जोवत खड़े। दोऊ कर जोरे तेरे चरनन पड़े॥७७॥

श्री रसिक बिहारी जो महाराज कृत—राग सोरठ

रसिया पिय झुलावै छै हो, प्यारी जू नैं। रंग भरे झोटा दै श्याम, नैन सौं नैन मिलावै छै हो॥ बरषि रह्यौ रस रंग हिंडोरौ मिलि मलार सुर गावै छै हो। ये बातें सामलिया म्हानैं रसिक बिहारी वर भावै छै हो॥७८॥

राग कल्याण—झूलत स्याम प्रिया संग रंग हिंड़ोरना। वरन वरन अंबर तन पहिरें नव युवती जन गावति कल गीतनि चित चोरना॥ तैसीय रितु सावन मन भावन हरियारी भूमि मंद मंद गरजनि घन घोरना। तैसेई पिक चात्रक बन गान करत प्रेम मुदित केकी कीर कुलाहल कौ ओरना॥ सहचरीं चहूँ ओर तें झुलावति अति आनंदित पटतरि घन दामिनी दुति जोरना। पिय बिहारी लाल ललित दंपति ललितादिक निरखि प्रेम बिवस जानत निसि भोरना॥७६॥

राग मलार—हिंडोरा हेली रंग रह्यौ सरसाय । एजी में तो वारी जी वारी, जीहौं छवि देखि ॥हिंडोरा०॥ झोटनि में झुकि झूमि रह्यौ पिया प्यारी जूरौ रूप लुभाय ॥हिंडोरा०॥ तन भीजें तरुवर चुवें हो गलवैयाँ लपटाय ॥हिंडोरा०॥ श्री रसिक विहारी जी तेरो झूलनों जी म्हारे मन में झोटा खाय ॥हिंडोरा०॥८०॥

राग मलार—विहारी नेंक धीरें झूलौ राज । स्यामा प्यारी झूलैं छै थारे लार ॥ घन रमकनि म्हारौ जियौ लरजे छै ये छैं अति सुकुमार ॥ लचकत मचकत रङ्ग हिंडोरें भूषण लागे भार ॥ मद छके छैला श्री रसिक विहारी नैंना अतिशय रसाल ॥८१॥

श्री रसिक गोविंद जी महाराज कृत—राग मलार

तेरी झमकि झूलन कटि लचकि जात रमकि रंगीली अति सोहे री ॥तेरी०॥ तू है गुण रूप जोवन रंग रस भरी तेरी उपमा कूँ को है री ॥तेरी०॥ हाथन चुरी महावर मेंहदी चटकि चौगुनी सोहे री ॥तेरी०॥ रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन, तू दामिनि मन मोहे री ॥तेरी०॥८२॥

कैसे झूलौं री हिंडोरे बतियाँ मानै ना हरी । वरज्यौ न मानत यह काहू कौ, लोक की लाज टरी ॥ हा हा खात ये तौ पैयाँ परत है, प्रेम के फन्द परी । रसिक गोविंद अभिराम स्याम नें भुज भरि अंक भरी ॥८३॥

श्री विठ्ठलनाथ जी महाराज की भेट (श्री गंगाबाई जी कृत)—राग मलार

वोलें माई श्री वृन्दावन में मोरवा । हरित भूमि जमुना तट ठाड़े उमड़ि घुमड़ि घन घोरवा अरस परस दोऊ झूलें

झुलावैं, पचरंग सरस हिंडोरवा कसूँमी पाग सीस खिरकिन की उड़त पीत पर छोरवा ॥ मधुरे सुर मल्हार अलापत मीठी तान चित चोरवा । श्री विट्ठल रसिक दोऊ झूलत सुखद पवन चहुँ ओरवा ॥८४॥

राग मलार—गोकुल चंद हिंडोरे झूलत नटवर भेष किये । शोभित तीन चंद्रिका माथे मुरली करहि लिये ॥ कसूँमी पाग सुरङ्ग पिछोरा मुक्ता माल हिये । रमकि रमकि झूलत राधा संग ब्रज जन सुखहि दिये ॥ निरखि निरखि फूलति ब्रज सुंदरि यह सुख नैंन पिये । श्री विठ्ठल गिरधरन लाल की यह छवि देख जिये ॥८५॥

मोहन झूलत रङ्ग हिंडोरैं । रङ्ग महल में रङ्ग हिंडोरो हरित भूमि चहुँ ओरैं ॥ नव वन नव घन नव चातक पिक नवल सु पवन झकोरैं । वाजत ताल मृदंग मधुर सुर नव मुरली घन घोरैं ॥ नई नई नारि झुलावति गावति भूषन अंगनि गोरैं । नई कंचुकी नव रङ्ग सारी आँगिया सौंधें वोरैं ॥ लाड़िली डरपति लाल उर लपटति झकझोरा झक-झोरैं । श्री विठ्ठल गिरधरन लाल संग सोभित चंद चकोरैं ॥८६॥

श्री परवत जी महाराज कृत—राग मलार

सुरङ्ग हिंडोरना माई झूलत नंद कुमार । हरिण नयनी मंद गवनी सजि सकल सिंगार ॥टेक॥ द्वै खंभ वने कदंव के मलय मरुवे सुढार । लाल डाँड़ी डह डही पचि रची है सुतधार ॥ कनक पटुली जटित हीरा गढ़ी सरस सुढार । चहुँ ओर तरुणी अरुण वसनी किंकिनी झनकार १ रङ्ग भरे

लसत लावें वार ॥ मृग मद अगर करपूर कुंकुम बास की उदगार । मुख भरे पाननि स्याम स्यामा दोऊ परम उदार ॥२॥ गीत गावैं सुकवि के रस रीति की टकसार । ग्राम सुर घट गाँस साँधें ताँन ताल अपार ॥ रीझि रीझे जलहि भींजें जम्यौ राग मलार । शुक मोर कूका कोकिलनि में सुरनि परी हटतार ॥३॥ मेघ बरसें रस भरे जल फुहीं वारम्वार । लाज तजि लपटाति लालहि तज्यौ लोक विचार ॥ छवि फबी मधु सूदनहि वलि वलिहार कोटिक मार । चिरजियौ परवत प्राण पति ब्रज जननि प्रान अधार ॥८७॥

श्री छीत स्वामी जी महाराज कृत—राग अड़ानौ

रमकि झमकि झूलनि में झमकि मेह आयौ नही सुरझत वातन तें । नव पल्लव संकुलित फूल फल नवल नवल द्रुम लता तरें झूलत भयौ है वचाव पातन तें ॥ मंद मंद झूलत थंभनि लागे अंवर ओढ़ैं जल जातन तें । छीत स्वामी गिरधारी तऊ भिज्यौ वागौ सारी भौंरन की भीर भारी टारी न टरति क्यों हूँ छूटी है छवीली छटा गातन तें ॥८७॥

श्री वलिहारी जी महाराज कृत—राग झझौटी जंगला

मन मोहन रङ्ग हिंडोरना । रहसि झुलाय रसिया सामन तीज निहोरना ॥ चलौ सखी मिलि झूलन जैयें वृन्दावन निज ठोरना । मिलि झूले वलिहारी उड़त पीत पट चोलना ॥८८॥

श्री इच्छाराम जी महाराज कृत—राग झझौटी-जंगला

प्यारे प्यारी झूलैं कदम की डारियाँ । घन गरजै अरु दामिनि दमकैं चहुँ दिसि गोप कुमारियाँ ॥ गौर स्याम मुखचंद परस्पर रहत निहारि निहारियाँ । इच्छाराम गिरधर नव गोरी छवि पर वलि वलिहारियाँ ८६

श्री गोकुलनाथ जी महाराज कृत—राग विहागरौ

हा हा हरि नेंक हरें हरें झूलौ। हौं वारी विहारी जू सारी सवारौ पटुली पगु ठहरत नाहीं थहराति पिंडुरी फहरात दुकूलौ॥ टूट्यौ हार गजरा गिरि गयौ छूटी है वेंनी खिस्यौ सीस फूलौ। गोकुल नाथ जू प्यारी तिहारी सम्हारति नाहीं अहो अज हूलौ॥६०॥

श्री भगवत मुदित जी महाराज कृत—राग विहागरौ

हा हा ललि नेंक हरें हरें झूलौ, यौं कहति विहारी प्यारी सौं। देखौई चाहत वदन माधुरी सु मदन मनोरथ फूल्यौ॥ अति आतुर चातुर चित चंचल कौतिक काम छुवत भुज मूलौ। भगवत मुदित झुलाय भाय रति लाय लई दुलहिनि अरु दूल्हौ॥६१॥

श्री सूरदास मदनमोहन जी महाराज कृत—राग ईमन

माई री झूलत रङ्ग हिंडोरें। सोभा तन स्याम गोरें॥ नील पीत पट घन दामिनि के भोरें। गोपी जन चहुँ ओरें॥ झुलवति थोरें थोरें। पवन गमन आवें सोंधे की झकोरें॥ सोभा सिंधु मन वोरें। नैंननि सौं नैंन जोरें, रीझि प्राण वारें छवि पर त्रण तोरें॥ सूरदास मदन मोहन चित चोरें। मुरली की धुनि सुनि सुर वधू सीस ढोरें॥६२॥

श्री हित मकरंद जी महाराज कृत—राग केदारौ

सुरति रङ्ग हिंडोर झूलत, सुरति रङ्ग हिंडोर। मदन सदन सुवदन उमगनि नेह मेह झकोर॥ नील नीरद रसद दामिनि सरस घन गहि चष रुषनि की डोरि पुलक वस कसि अंग अंग

पतिनि ओर । रूप पानिप श्रोत बाढ़ी ओत प्रोत न ओर ॥ झमकि झोटनि संक लखि पिय मंकवच चष कोर । छीन कटि उर उर उदधि भर भाम भृकुटी मरोर ॥ संधि हित मकरंद थांभे रटी मनमथ रोर ॥६३॥

गो स्वामी श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत--राग खमाइची

समान तीज सुहाई माई दोऊ मिलि झूलही हो । गौर स्याम अभिराम परस्पर चढ़े हिंडोरें फूलही हो ॥ चहूँ ओर ललितादिक निरखत इक टक पलकन भूल ही हो । जै श्री किशोरी लाल हित प्रमुदित ह्वै ह्वै मचकत गहि भुज मूलही हो ॥६४॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत--राग मलार

आली री झूलत स्यामा स्याम ॥ध्रुव॥ द्वय खंभ मर्कत मणि मनोहर काम कुंद चढ़ाय । हरित चुन्नी जड़ित नग वहु लाल हीरा लाय ॥ वहुत मुक्ता वहुत विद्रुम ललित लटकें मोर । वहु रङ्ग रेशम वरही वरुहा होत राग झकोर ॥१॥ तहाँ स्याम स्यामा संग झूले सखी देत झुलाय । सबै सरस शृङ्गार कीने रूप न वरन्यो जाय ॥ नील सारी लाल लहँगा पीत अँगिया अंग । रोमावली मानौं होत यमुना त्रिवलि तरल तरङ्ग ॥२॥ वहुत युवती यूथ ठाड़े कहूँ ठाड़े ग्वाल । विहँसि मधुरे गीत गावैं करत वहु बिधि ख्याल ॥ कहूँ चातक कहूँ दादुर कहूँ वोलत मोर । चहुँ ओर चितैं चकोर रहि गये देखि इनकी ओर ॥३॥ दसन दुति अनार की सी हँसत जव मुसिकाय । दमकि दामिनि निरखि लज्जित वहुरि गई छिपाय ॥ कंज खंजन मीन मानौं उड़त नाहिन भौर विंव के ढिग कीर

बैठ्यौ गहि न पावै ठौर ॥४॥ लखि अलक कह्यौ न जाय सखी री अंक देखियत चार । भ्रू देखि भ्रमरा गये वन कटि गयो केहरि हार ॥ चाल देखि मराल लजित गये सर तजि गेह । जानि कैं अभिमान गज सिर अजहुँ डारत खेह ॥५॥ देखि सखी री उरज कंचन कलस धरे बनाय । नहीं होय श्रीफल सुंदर नहि कमल कली सुहाय ॥ बीच मुक्ता माल मानौं सुरसरी धसि धाय । वार चकवा पर चकई दिन हूँ मिलन न आय ॥६॥ सबै राग मल्हार गावैं सरस गौड़ मल्हार । सूहौ सारँग सरस टोड़ी भैरवी केदार ॥ मालवो श्रीराग गौरी होत आसावरी राग । कान्हरौ हिंडोल कौतुक तान बहु विधि लाग ॥७॥ एक अचिरज देखि सखी री राहु शशि इक ठौर । उड़त अंचल लपट बैंनी रपट झपटे मोर ॥ कनक जटित जराय बैंदी कवि जो उपमा गाय । सूर शशि यह राहु ब्रज में प्रगट तीन्यो आयो ॥८॥९५॥

राग मलार—झूलत लाड़िलो नवल बिहारी । सीस सेहरो अति छवि राजत उपरैना जरतारी ॥ मुक्ता माल उर ऊपर सखी री लागत परम सुहाई । मानौं सुरसरि स्वर्ग लोक ते चली धरनि पर आई ॥ सबै सिंगार अद्भुत सखि शोभित उपमा बरनि न जाई । सूर प्रभु के रोम रोम पर बार बार बलि जाई ॥९६॥

राग मलार-छंद—अजर जम्बू नद खंभ हिंडोरना विद्रुम रची है मयारि । जनु रवि सुतहि दिखावत भुव भुज युगल पसारि ॥टेक॥ लाल मणि बिलना बन्यौ बिच मिली है मर्कत डार उगत रवि रथ तें चलीं मनौं यमुन ह्वै बिवि धार

त्रिवि धार धारा धसी अधिकौ फटिक पटुली संग । तिहि बीच तिरछी ह्वै मिली है गगन तें मनु गंग ॥हिंडोरना०॥१॥ प्रति फलित मणि मंजीर जहाँ तहाँ चरन पंकज रङ्ग । हिल मिलत सब प्रतिबिंब सोभित सरसुती अनुरङ्ग ॥ अरध उरध झकोर इत उत झलकि लोचन कोर । वदन विधु सों लुब्ध मानों उड़ि उड़ि मिलत चकोर ॥ उड़ि मिलत जहाँ चकोर अति छवि ललित चलत सुनैन । मनहुँ पंकज वासुकौं सँग लगी मधुकर मैन ॥२॥ मणि मय महल आंगन रच्यौ नव रङ्ग रङ्ग हिंडोर । जहाँ कोटि मनमथ मोद मोहन नवल नन्द किशोर ॥ ललित वलित विशाल अति छवि झलकि मुक्तनि हार । पिय संग राजति लाड़िली वृषभानु गोप कुमारि ॥ जहाँ कुँवरि श्री वृषभानु सोभित नंद नंदन संग । मनों नव घन जलद में अति तड़ित तरल तरङ्ग ॥३॥ अनमेष दृग जहाँ कियें निरखत मंडली ब्रज नारि । मनु सिंगार सुलता की विधि रची है कंचन वारि ॥ इत उतै छवि सिंधु विवि मुख झलकि मुक्ता माल । समैं सावन जानि जनु बग पाँति उड़त विशाल ॥ उड़ि लाल अंचल चूँनरी उत पीत पट फहरानि । सूर सम उपमा सखी मोपै न जाति बखानि ॥४॥६७॥

श्री रसिकदास जी महाराज कृत—पद

झूलन चलौ हिंडोरना वृषभानु नन्दिनी । सावन की तीज आई घन घोर घटा छाई, मेघन झरी लगाई, परैं बूँद मन्दिनी ॥ सुन्दर कदम की डारी झूला परयौ है प्यारी, देखौ कुँवरि किशोरी री, सब दुख निकन्दनी । पहिरौ सुरङ्ग सारी मानौं विनय हमारी, मुखचन्द की उजारी मृदु हास फन्दिनी ॥ सम

मान सीख लीजै सुंदरि न दूर कीजै, हम तो विलोकि जीजै री, तू है गति गयन्दिनी। शोभा लखो विपिन की फूली लता द्रुमन की, सुन अरज रसिक जन की, करों चरण वंदिनी ॥६८॥

राग मलार-छंद—ललित हिंडोरना दोऊ झूलत कुंज दुवार। ललित खंभ सुवलित मणि गण जटित मरुवे मयार ॥टेक॥ लाल डांडी लाल लालनु झलकि झलकत चार। पटुली सुचित्रनि मिली रचना केलि कल छबि सार ॥ बनी कंचन तनी पहिरें सुरंग कसूँभी सार। जग मगैं अभरन हरन मन नवल पिय सुकुमार ॥१॥ रंग पानिनि झलक आनन महक सौरभ अंग। चपल चख मणि तरल कुंडल अलक बेशरि संग ॥ चलत झोटा लुलित वैनी किरत कुसुम सुरंग। उड़त चीर समीर बस घन वरसि रंग विरंग ॥२॥ गान तान समान स्वर अति जोल शील अथोर। मिले प्रेम मलार भेदनि हंस कोकिल मोर ॥ चमकि चपला कला लखि सुनि गरज अति ही घोर। लपटि पिय हिय वदति भय वर नेह नैननि कोर ॥३॥ लगी सावन झरी मन भावन सकल सुख रास। अँग अंग भीजें अनंग रस दोऊ विवस परसि विलास ॥ निरखि हरषति सहचरीं रस भरी चहुँ दिसि पास। रसिक दासि हुलास सों सब देत आसिष दास ॥४॥६६॥

राग मलार—ए विवि झूलत झूलत भानुजा के तीर। ए जुवती जुवती जन गन भीर ॥ जुवती जन गन भीर चीर सुरंग विविधि सुहावने। मोर तानन घोर सुर कल कोकिलनि लजावने ॥ मुदित चित्त अति श्रुतिन दै नव नागरी वर धीर। हित चिंतकनि झुलाय झुलवत लसत भानुजा तीर १

ए बहे त्रिविधि त्रिविधि मंद समीर । ए चंचल चंचल अंचल धीर ॥ चल चीर चप कुंडल सुमंडल माल मुक्ता सोहनी । उर उतंग नितंब कच लचि भार कटि पिय मोहनी ॥ थरहरत जानु सुजंघ कदली रहत नहि ह्वै धीर । फरहरत नीवी वसन जब बहे त्रिविधि मंद समीर ॥२॥ ए बजें नूपुर नूपुर झुन झुनकार । ए अंग मचकि मचकि लटकि सुढार ॥ सुढार अंगनि मचकि लचकनि दरस दुति न कही परै । तरक तड़ि घन घोर मोरनि सोर बहु वन विस्तरैं ॥ डरपि अंगनि रंग अबला लपटि गहि भुज भार । तरल गति अति सरल तन बहु नूपुरन झनकार ॥३॥ ए निरखि निरखि गति पिय औरै । ए लखि थके थके रसिक सिरमौरै ॥ रसिक थकि लपि अंग गहि परिरंभ दै उर लाइयै । मिले दंपति सुरति संपति रङ्ग हिंडोर झुलाइयै ॥ निरखि सुख मन हरषि रसिक सुदासि मति भई बौरै । प्याय अधर सुधाहि सजनी निरखि पिय गति औरै ॥१००॥

श्री रूप रसिक जी महाराज कृत—राग मलार

झूलत लाड़िली लाल हिंडोरैं । उर पर उरज करज करजनि सौं सोहत हगनि की कोरैं ॥ नील वसन पीताम्बर सोहैं तन घन दामिनि भोरैं । किलकति झलकति दसन वसन रुल सौंधें विविधि झकोरैं । कूजत कुंज महल में नूपुर अद्भुत सुर थोरैं थोरैं । ललित रसिक लालन ललचान्यौं निरखि रूप तृण तोरैं ॥१०१॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत—राग विभास

हिंडोरे व झूलत लाल दिन दूलह दुलहिनि विहारिनि

देखौ री ललना । गौर स्याम छवि अति द्युति बहु भाँति री चलना ॥ नीलांबर पीताम्बर अंचल चलत भुजा फहरात कल कलना । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी श्री विहारिनि अब चलना ॥१०२॥

राग देव गंधार (यह पद भेट कौ है)—झूलत दोऊ सुंदर रंग हिंडोरे । स्याम वरन तन रसिक सिरोमनि कुंवरि वरन तन गोरे ॥ नीलांबर पीताम्बर पहिरे घन चपला के भोरें । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी मृदु मुसकति थोरें थोरें ॥१०३॥

(यह पद भेट कौ है)—झूलत कमल नैंन सुकुमार । गावत गीत पुनीत मनोहर आस पास व्रज नारि ॥ भूषन वसन विविधि रंग पहिरें मनौं फूली फुलवारि । श्री हरिदास के स्वामी स्याम काम विवस मुख चंद निहारि ॥१०४॥

श्री विहारिन दास जी महाराज कृत—राग मलार

हरियारो सावन सुहावनों मन भावनों लागत अति नीकौ । इन उन मनमें वहरन की छैयाँ गहि वहियाँ वोलत डोलत वन वन तैसोई संग सवही को । जहाँ तहाँ झुलावत आवत अनुराग भरे राग रंग प्यारी पीय कौ । श्री विचित्र विहारिन दासि कहत दरसत जे यह सुख दिन धन्य धन भाग त्रिया तिनही कौ ॥१०५॥

रस भरे प्रान प्रिया पिय झूलत फूलत अंग संग सरस हिंडोरें । अति आतुर आसक्त भये वस भृकुटी कटाक्ष झकोरें ॥ छूट टूट गये हार वार वँद छोरत छवि वहु भाँति निहोरें । श्री विहारिन दासि सुख देत निरंतर पिया प्यारी यों हँसि मुख सों मुख जोरें ।१०६।

हिंडोरे व झूलन आई नई रितु सावन तीज सुहाई। कुंज कुंज तें निकसि हरी भूँमि अरुन वरन मानौं इन्द्र वधू सी श्री स्यामा जू हरषि बुलाई ॥ अपनें अपनें मेल मिली अनुराग मल्हारहि गावत तानन रुचि उपजाई। श्री विहारिन दासि स्वामिनी स्याम के संग वढ्यौ रँग अँग अँग रीझि रिझाई ॥१०७॥

हरषि हिंडोरना री झूलत नवल किशरी किशोर। रहसि वहसि हँसि हँसि उर लागत अनुरागत झोटा व देत जोवन जोर ॥ श्रमित न रापैं रहैं गूढ़ गुन गाढ़े गहें चित्त चुभि रहे अंचल चंचलनि के छोर। श्री विहारिन दासि सु बिलास विवस दंपति दरसति एह तन मन मगन निशि भोर ॥१०८॥

प्यारी झूलत अति रस माती। पिय के अंक निसंक हिंडोरैं लपटि लटकि लड़काती ॥ पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागति अति रस रसिक अघाती। श्री विहारी विहारिन दासि रहसि रस विपुन अंग संग समाती ॥१०९॥

दूलह दुलहिनि के संग झूलहु। गावत मिलत तार सुर संच सों तान मान जिन भूलहु ॥ लियें सुभाव सहज सुन्दरि को प्रतिकूलत अनुकूलहु। श्री विहारिन दासि ह्वै स्याम रस वश कुंज केलि मिलि फूलहु ॥११०॥

श्री नागरी दास जी महाराज कृत—राग कान्हैरो

अपनी नवल प्रिया संग नवल लाल झूलत हैं हिंडोर ॥टेक॥ वृन्दावन घन सहज सोभा आनन्द सिंधु न थोर। सुभग जमुना कूल कमल जु सारस हंस चकोर ॥ बोलत मधुर सुहावनें अति मधुप कलरव घोर। नव कुंज कोकिल कीर चातिक गावत जस चहुं ओर १ तैसी पावस रितु भली घन मंद

गरजनि थोर । तैसीय दामिनि चहुँ दिसि बोलत मोरी मोर ॥ तैसीय भूमि सुहावनी सखी हरित ना ना भाँति । रही अति छबि छाई जित तित इंद्र वधूनि की पाँति ॥२॥ नव लता ललित तमाल पल्लव विविधि नाना जाति । प्रेम भरि अनुराग झूमी फूल फूल बहु काँति ॥ रचित कुसुम वितान ना ना वहति त्रिविधि समीर । निरखि संपति विवस ह्वै मन बढ़ति मनमथ पीर ॥३॥ रच्यौ रंग हिडोरना सखी सहज चंपक कुंज । नव केलि ना ना सुखद संपति सरस सौरभ पुंज ॥ रमकि झूलत नवल दोऊ गौर स्यामल गात । पीत पट छबि सुरंग सारी अंचल धुजा फहरात ॥४॥ सप्त स्वर मिलि मधुर दोऊ करत हैं गुण गान । तैसीये सहचरि संग गावति संच सुर वंधान ॥ राग रागिनि मिली प्यारी लेति विकट सुतान । सुनि थकित नागर चरन गहि सखि रीझि वारति प्रान ॥५॥ बढ़ति अति अनुराग छिन छिन करत नव नव रंग । सुरति सागर मधुर जोरी सहज संग अभंग ॥ तैसीय सुखद विहारिनि स्वामिनि दासि नागरि संग । तोरि तृण वलि जाति छवि पर वारति कोटि अनंग ॥६॥१११॥

श्री सरस दास जी महाराज कृत—पद

झूलत दोऊ नवल हिंडोलें । विमल पुलिन कल कमल कुंज मधि चितवत नैंन सलोलें ॥ जोवन जोर झकोरनि देति आलिंगन करत कलोलें । सरस दासि सुख रासि रहसि नव सुनत मधुर मृदु बोलें ॥११२॥

झूलत फूलत सुरति हिंडोरे । पुलकि पुलकि किलकति हिलि-मिलि मन जोवन जोर झकोरे छूटी लट पट शिथिल भये

अंग अंग अनंग निहारें। रहसत विहसत हँसत परस्पर उर कर चिवुक टटोरें ॥ अति रस भरे खड़े डांडी गहैं चितवत विवि मुख ओरें। श्री सरसदास दरसत विलास नित अति चंचल चित चोरें ॥११३॥

श्री पीतांवर देव जी महाराज कृत—पद

यह रस रंग हिंडोल सहचरि हरियल सुही सुहाग लहरिया। पहिरें वसन सुरङ्ग दुलहिनी कंचन नील निचोल गहरिया ॥ दूलह घन दामिनि लपटानें तन मन सजि पट पीत पहरिया। सहचरि रसिक देखि छबि ढाँपत पीतांवर जुग रूप ठहरिया ॥११४॥

श्री भगवत रसिक जी महाराज कृत—राग मलार

ललना लाल हिंडोरें झूलैं। श्रावण में मन भावन मन की मन भावन करि फूलैं ॥ नीरद नवल नाहु उर ऊपर दामिनि भामिनि भूलैं। भगवत रसिक झुलावत गावत गहि डाँडी भुज मूलैं ॥११५॥

झूलत दोऊ नव निकुंज मधि ठाढ़े। झोटा देत गहें भुज डाँड़ी अङ्ग अनङ्गन वाढ़े ॥ नवसत साजि शृङ्गार सहचरी भूषण ग्यारह साढ़े। भगवत रसिक प्रेम परिपूरण देत अलिङ्गन गाढ़े ॥११५॥

मेरी अलक लड़ी अलवेली। झूलत रति विपरीति हिंडोरा नाहु अंस भुज मेली ॥ मचकत जोवन जोर परस्पर परिरम्भन पग पेली। गावत राग मलार मनोहर भगवत रसिक सहेली ११६

राग राइरौ

प्यारी राधे ! सावन मन भावन भयो चलि सुरति हिंडोरा झूलि ॥१॥
प्यारी राधे ! माथे मुकुट सुहावनों अरु नचत शिखर चढ़ि मोरे ॥२॥
प्यारी राधे ! घनगरजत मुरलीवजै अरुदामिनि मुरिमुसक्यानि ॥३॥
प्यारी राधे ! वचनरचन कल कोकिला अरु मुक्तावलि वगपांति ॥४॥
प्यारी राधे ! श्यामघटा तनु अति वनो अरु इन्द्र धनुष वनमाल ॥५॥
प्यारी राधे ! छूटे कच टूटे धुरा अरु दादुर मृदु मंजीर ॥६॥
प्यारी राधे ! अरुण वसन वादर कसे अरु अनुकूली वर सांझ ॥७॥
प्यारी राधे ! हरित भूमि हरषी हयी अरु इन्द्र वधू अवतंस ॥८॥
प्यारी राधे ! नवल नेह उलहीं लता अरु किशलय दल पद पान ॥६॥
प्यारी राधे ! सन्तत आस विलासकी अरु चलत पवन झकझोर ।१०।
प्यारी राधे ! प्रेम पुलक रस वरषहीं अरु सरसत सरित अनङ्ग ।११।
प्यारी राधे ! भगवत उर सरवर भरयौ अरु फूले हग जल जात ।१२।

॥११७॥

श्री ब्रज जीवन जी महाराज कृत—राग रेखता

झूलैं है रंग हिंडोरना दोऊ रंग गुलावी । झलकैं भूषण वसन देखी रंग गुलावी ॥ वाजै ता धिन्न धुमकत ता धेई मृदंग गुलावी । गावैं स्वर भरी तानें अली रंग गुलावी ॥ वाढ़ी हिय हरि सहचरि उमंग गुलावी । ब्रज जीवना प्यारा लगै सतसंग गुलावी ॥११८॥

राग रेखता—मचौ है रंग हिंडोरना दोऊ रंग सौं झूलैं ॥ वन फूलौ चहूँ ओरना दोऊ रंग सौं झूलैं ॥ उमगी घटा घन घोरना ॥दोऊ०॥ नाचैं हैं मोरी मोरना ॥दोऊ०॥ पहिरें अंचल पट छोरना ॥दोऊ०॥ गावैं तानें रंग वोरना दोऊ०

हरि सहचरी दृग कोरना ।दोऊ०।। ब्रज जीवना तृण तोरना ।।दोऊ०।।११६।।

राग झझौटी—तैंड़ा झुलावना मैनू भावै । हौल हौलैं तू झुलावैं ।। दें दी स्याबास ब्रज बीजना नू लड़ैंती लाल खड़ा मुसिक्यावैं ।।१२०।।

राग परज—लाल मेरी पिंडरी पिरान लगी । अब न झूलौंगी, ब्रज जीवना तेरी सौं मेरे नयनन नींद खगी ।।१२१।।

राग मलार—कर पै कर धरि दोऊ उतरे । झूले हिंडोरैं वृज जीवना प्यारी क्या खूब नैंनी लग सुथरे ।।१२१।।

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग भैरौं

लाल गाय चराई कै गिरि धारयौ झूलन समझि कहा है । अति सुकुमार प्रिया गौरंगी ता संग झूल्यौ चाहत हो मन माहैं ।। हम जु सिखावैं तैसे सीखौ कहा फिरत हो भरे उमाहैं । वृन्दावन हित रूप रसिकता तब कछु पैहौ यह छल कारज नाहैं ।।१२२।।

राग विहागरौ—रच्यौ है विचित्र हिंडोरना झूलत श्री राधा ।। अति कमनी रविजा तीर री झूलत श्री राधा ।। यूथ अनंत सखिन लियें ।।झूलत०।। पहिरें तन नव रंग चीर री ।।झूलत०।। ।।१।। परम रम्य कानन बन्यौ ।।झूलत०।। तहाँ कलप द्रुमनि की छाँह री ।।झूलत०।। मोहत कोटिक मदन कों ।।झूलत०।। पिय सहित मुदित मन माँह री ।।झूलत०।।२।। जरतारी सारी फबी ।।झूलत०।। बन्यौ अतरौटा अति रंग री ।।झूलत०।। सौंधें भीनी कंचुकी ।।झूलत०।। खमकि बनीं तन संग री ।।झूलत०।।३।। रमकि झमकि कृश कटि मुरै । झूलत०

नूपुर किंकिनी झनकार री ॥झूलत०॥ पवन गवन अंचल चलै ॥झूलत०॥ उरझत उर वर हार री ॥झूलत०॥४॥ विलुलित बैंनी पीठ पै ॥झूलत०॥ ताकी उपमा बनत सुभाय री ॥झूलत०॥ मनहु कनक धरु चौंहटे ॥झूलत०॥ विहरति व्यालिनि सचु पाइ री ॥झूलत०॥५॥ कुसुम किरत हैं सीस तें ॥झूलत०॥ गई तरकि कंचुकी फूँद री ॥झूलत०॥ मनु सोभा घन ऊनयौ ॥झूलत०॥ परत बड़ी बड़ी बूँद री ॥झूलत०॥ ॥६॥ पिय वढ़ि झोटा देत है ॥झूलत०॥ कहैं राखि प्रिया मृदु बैंन री ॥झूलत०॥ लपटि लपटि उर जात है ॥झूलत०॥ यह निरखि भाग्य फल नैंन री ॥झूलत०॥७॥ पीतांवर कटि तें खस्यौ ॥झूलत०॥ दुहुँ चरन रह्यौ लपटाइ री ॥झूलत०॥ छवि पर रीझी दामिनी ॥झूलत०॥ मनहुँ परी पग आय री ॥झूलत०॥८॥ ललिता हँसि पटुली गही ॥झूलत०॥ पोंछति अंचल मुख वारि री ॥झूलत०॥ वृन्दावन हित रूप वलि ॥झूलत०॥ तृन तोरि पिवत जल वारि री ॥झूलत०।९।१२३।

राग गौरी-छंद—झूलत मोहन राधा लाल। अब छवि वढ़ी है अगाधा लाल॥ अब छवि वढ़ी है अगाधा राधा मोहन रंग मुख झूलें। पच रंग पाट गहें कर डोरी अमल कमल मुख फूलें॥ फरकत छोर पीत पट सारी नील वसन छबि ऐसें। कौंधि कौंधि मनु दुरत सजल घन ओपी दामिनि जैसें॥ विहँसि परी वातनि रस घातनि पुजवत सव मन साधा। तीर तरनिजा रच्यौ हिंडोरौ झूलत मोहन राधा॥१॥ खंभ जटित वहु भाँती लाल। झुकी है कलप तरु पाँती लाल॥ झुकी है कलप तरु पाँती सुरंगित तहाँ हिंडोर वनायौ वढि व ढ

लहरि बहनि जहाँ रविजा नव घन ओल्हरि आयौ मह महात कानन अति सौरभ ललित भूमि हरियारी। इन्द्र वधू छबि पावैं कोकिल केकी कल रव भारी॥ जरी वितान मोतियनि झालरि फैलि रही वन कांती। मरुवे कनक मयारि लगे नव खंभ जटित बहु भाँती॥२॥ रमकत है भुज जोरे लाल। देत कबहुँ झकझोरें लाल॥ देत कबहु झकझोरें हँसि हँसि लपटत परम सनेही। मनसिज उदित होत रोमांचित प्रान एक द्वै देही॥ झोटा देति ललित ललितादिक नैननि कौ फल लेहीं। झरि झरि परत कुसुम मणि भूषन मदन बिथा मन देहीं॥ बाला भई माला सोभा की गावति है चहुं ओरें। झुरमट प्रेम लग्यौ रितु पावस रमकत है भुज जोरें॥३॥ चंद्रिका ढरकनि सो है लाल। मुकट लटक मन मोहै लाल॥ मुकट लटक मन मोहै सोहै अलकैं घूँघर वारी। वेशर हलनि चलनि दृग चंचल वेधत मरम विहारी॥ कढ़नि बढ़नि डारिनु तें पुनि पुनि झूल महा छबि पावैं। गौर घटा अरु मनौं सजल घन झुके अवनि पर आवैं॥ प्रीतम लाड़ भरी उर लागी देऊ सु उपमा को है। वृन्दावन हित रूप वढ्यौ अति झुकनि चंद्रिका सोहै॥४॥१२४॥

राग मलार ताल आड़—लटकि लटकि झूलन में चुनरिया फहर फहर फरकी है। पिय भुज जोरि लेत जब झोटा कंचुकि उर तरकी है॥चुनरिया०॥टेक॥१॥ ग्रीवा ढुरनि मुरनि कृश कटिमुख अलकावलि ढरकी है। जोवन जोर मरोरनि तन हिय मदन भीर भरकी है॥२॥ होड़ा होड़ी बढ़त अलोलनि पटुली पग सरकी है वृन्दावन हित रूप सिंधु सुख मोहन मति गरकी है ३ १२५

राग मल्हार सोरठ छद श्री राधा जू सुर तरु छाँही झूलत रंग में । सब गुन रूप गहेली सहचरि संग में ॥ संग में सहचरि नवेली वृन्द वृन्दनि दुति घनी । मनहु सोभा ससि प्रिया की किरनि चहुँ दिसि यों बनी ॥ फहरात अंबर कनक तारन झलकि गोरे अंग में । वृन्दावन हित परम कौतिक राधा जू झूलत रंग में ॥१॥ रमकि झमकि अति भारी मणि आभरन की । अलक रुरति छवि न्यारी कुसुमनि झरनि की ॥ कुसुम झरति सुदेस वेंनी हाल नागरि पीठ पैं । अति भयौ सोभा भार प्रीतम थकित उठत न दीठ पैं ॥ नख सिख विलोकत रसिक पिय गति रही पलकनि धरन की । वृन्दावन हित रूप बलि अति झमकि मणि आभरन की ॥२॥ रमकति लाड़ भरी है परसति डार है । अंचल आड़ खुलनि में रुरकत हार है ॥ हार रुरकै कटि जु मुरकै वदन कछु श्रमकन दिपै । छूटे जु कच मुख यों लसें मनु राहु ग्रह उड़पति छिपै ॥ उघरै दुरै कै स्याम घन विधु कैं पर्यौ तम जार है । वृन्दावन हित लाड़ भरि रमकति जु परसति डार है ॥३॥ छवि वरषति चहुँ ओर झोटा लैंन में । निकर अनंगनि चौंधें दुमची दैंन में ॥ दैंन दुमची मैंन चौंधें सरस तन उपमा महा । सावन जु मन उत्साह राधा वरनों सो वानिक कहा ॥ जल फुही वरषत मंद गरजत दामिनी भुव पै नमें । वृन्दावन हित रूप उम्झल्यौ वड़े झोटा लैंन में ॥४॥ अरी मेरी प्रांननि प्यारी झूलहु मंद गति । पटुली पग न डिगैं ज्यों झोटा लेत अति ॥ अति लेत झोटा वदति श्री हित रूप सजनी मुद भरी । खसि खसि परति जरी तार सारी विवस लखि नागर हरी गावति भरी अनुराग त्यों त्यों प्रेम

दहलत प्रान पति । वृन्दावन हित वलि गई पग राखि झूलहु मंद गति ॥५॥१२६॥

राग मलार सोरठ मिली छंद—चित्र विचित्र बनायौ सुभग हिंडोरना । बहु मणि नगनि जरायौ सोभा थोरना ॥ थोरना सोभा अधिक बाढ़ी ऊपर जरी वितान है । लसें मोतिन झाखरी रसना न होत बखान है ॥ हंसजा तीरैं कल्प तरु अवनी कनक छवि ओरना । वृन्दावन हित रूप वलि जहाँ रच्यौ सुभग हिंडोरना ॥१॥ चोंप चौगुनी हिये सब गुन आगरी । अगनित सखी संग लिये झूलत राधा नागरी ॥ नागरी नव आभरन पहिरें फवी नव रंग चूँनरी । लाड़ सरसति रंग वरषति रमकि छवि बढ़ी दूनरी ॥ डांड़ी गहें पिय नेह दहलत बदत अनुपम भाग री । वृन्दावन हित रूप वलि श्री राधा जू सब गुन आगरी ॥२॥ पाग कसूँभी ढरकी झोटा बढ़नि में । कछुक चंद्रिका तरकी डारिनु कढ़नि में ॥ कढ़नि डारिनु बढ़नि झोटनि हँसि पिंडी थहरानि में । चौंधि मनमथ परयौ चरननि पीत पट फहराति में ॥ मिलि जाति अंक समाति पिय तब बदन पानिप चढ़नि में । वृंदावन हित रूप उमह्यौ विहसि झोटा बढ़नि में ॥३॥ उत नव जलधर घोरें कोंधति दामिनी । इत वल हरत मरोरें मोहन भामिनी ॥ भामिनि मोहन मोहनी सावन भरी उत्साह सों । झूलत हिंडोरें रङ्ग बाढ्यौ आज सुंदर नाह सों ॥ इत अचल नित प्रति देत सुख सखि लाल प्रिय अभिरामिनी । वृन्दावन हित रूप वलि घन घोर कोंधति दामिनी ॥४॥ यह सुख वरनों न जाई लपटनि नेह की । कानन छवि जु महाई आवनि मेह की मेह आवनि उमगि

गावनि जील अरु स्वर घोर है। कुहुक कोकिल नदित दादुर वन झिंगारत मोर है॥ नीठ समझै परत श्रम दुति गौर साँवल देह की। वृन्दावन हित रूप बलि कहा कहौं लपटनि नेह की ॥५॥१२७॥

राग मलार सोरठ मिली-छंद—बनी है कदंब तरु पाती भूमि हरी हरी। गोप सुता तहाँ झूलें बहु लाड़नि भरी॥ भरी लाड़नि चोंप चाड़नि बसन भूषन तन सजें। कहा बरनौं रूप तिनकौ निकर मनसिज लखि लजें॥ रसकति भरी अनुराग गावति कौन विधि रचि पचि करी। इंदु बधुनि बिलोकि सोभा जहाँ भूमि हरी हरी ॥१॥ तिनमें मुकट मणि राधिका सींवा रूप की। अति ही लाड़ गहेली रावल भूप की॥ भूप रावलि की अति लड़ी चढ़ी सुभग हिंडोरना। जहाँ मुख मयंक मयूष फैली कोटि रवि ससि जोरना॥ बिथकित विहंगम पशु जहाँ देखि कुंवरि गुनानि अनूप की। सावन सुहाई तीज खेलति राधा सींवा रूप की ॥२॥ अति चटकीली फरकें चूँनरि अंग की। नग भूषन दुति थिरकै भरी उमंग की॥ उमंग हिय जिय वैस लघु मनु पूतरी मृदु हेम की। अनुराग अंकुर उर भयौ दिन बढ़नि गरुवे प्रेम की॥ मृदु चरन कर गहरे रचे महदी फबी अति रंग की। जोबन छकी झूलैं रु फूलें फरकें चूँनरि अंग की ॥३॥ परम रसिक नँद नंदन यह छवि देखि कें। भरे परम आनंदनि प्रेम बिशेखि कें॥ विशेष प्रेम किशोर घूमत कुँवर गोकुल राइ कौ। मन डोरि श्री राधा गही परयौ पैंचे यह रस दाइ कौ॥ बरषै उलेंड़नि- रूप भींजत रहे बिसरि निमेष कें। वृन्दावन हित रूप बलि नँद नंदन छके छवि देखि कें ४ १२८

राग गौरी झूलति लड़ैती राधा भरी अनुराग री सॉवन सुख जाकें दरसतु भाग री ॥१॥ घूमें अतरौंटा औरु नव रंग चीर री । थकित भये हैं पिये दृग छबि भीर री ॥२॥ झोंटा हँसि लेति प्यारी प्रीतम के संग री । सोभा कें उदधि मानौं उठति तरंग री ॥३॥ रमकि रंगीली बाढ़ी इत उत जात री । रूप के जलद मानौं झोंका खात री ॥४॥ अंगनि की कांति नग भूषन की जोति री बदन बिलोकें नैन अचिरज होत री ॥५॥ चहूँ दिस गावें सखी जोरें भुज ग्रींव री । मनहुँ रची है सोभा सींव हू की सींव री ॥६॥ नित नव नेह बाढ़ै झूलत हिंडोर री । वृन्दाबन हित रूप सुखहिं न ओर री ॥७॥१२६॥

राग मलार आड़-चौतालो—रंग हिंडोरना माई बन्यौ है तरनिजा तीर । कमनीय कानन तरु लता जहाँ नदित कोकिला कीर ॥टेक॥ झूलैं श्री राधा अति लड़ी आलीनु लीयें संग । सिंगार षट दस जाँहि सोहैं चूँनरी नव रंग ॥ सॉवन लिख्यौ सुख भाल जाकें हिये अधिक उमंग । बानी न वरनत बनें सोभा सींव जाके अंग ॥१॥ खीन कटि अरु पीन उर कर गहें डाँड़ी चार । रमकें रंगीली नागरी मनु नवत छबि के भार ॥ प्रीतम बढ़ावत चोंप बिहसत प्रिया बारंबार । झोटा बढ़ैं त्यौं त्यौं अधिक मन मथत कोटिक मार ॥२॥ दमकें खएला नग जटित चमकें मणिनु की चूरि सजनी सजें बहु जंत्र नागरि गान विद्या भूरि ॥ उदित बदन वधु चाँदनी रही सकल कानन पूरि । कहें लाल परसौं प्रिया वे कुसुमनि के भवा लगे दूरि ॥३॥ इत अवधि द्रुम की डार लगि उत अवधि रविजा वारि । पटुली जु टारौ चरन बल वदि होड़ वचन विचारि लपटें जु तन झपटें कुसम

हुलसी हिये सुकुंवारि । जीती तरुणि मणि कहैं मखि कौतिक विचित्र निहारि ॥४॥ कहा वरनौं परस्पर दृग देखिबे की लाग । कहि सकौं क्यों एक रसना राधा विपुल सुहाग ॥ वृन्द अगनित सहचरी मनु रूप फूल्यौ बाग । वृन्दावन हित रूप साँवन बढ्यौ अति अनुराग ॥५॥१३१॥

राग विहागरौ—झूलत दोऊ फूलत रंग भरे हैं। रविजा तीर सुभग वृन्दावन जहँ द्रुम हरे हरे हैं ॥१॥ भँवरी पिकी चकोरी मोरिनु मीठे स्वर उचरे हैं। सुनि सुनि राधा लाल मुदित अति झोटा लेत खरे हैं ॥२॥ किलकत करत कुलाहल प्रीतम अपनी गों जु ढरे हैं। परसि परसि सरसत मन मनसिज चमित भाव उघरे हैं ॥३॥ झूल बढ़नि में खुलि बैंनी तें मल्ली कुसुम झरे हैं। कबहूँ द्वै कबहूँ इक दरसत भुज भुज अंस धरे हैं ॥४॥ तन में उठति सुगंधि झकोरैं दंपति विहसि परे हैं। वृन्दावन हित रूप सिंधु में अलि दृग मीन तरे हैं ॥५॥१३२॥

चलैं झोटा तिरछौंहे जितौंहें सघन द्रुम राखि राखि री राखि। हौं बरजति प्यारी नहिं मानति एहो ललिता आनि भरौ तुम साखि ॥ हा हा री अधिक अरबीली मया करि मेरी विनती न इतउत नाखि। वृन्दावन हित रूप रसिक लाल तुमही विरमि रहौ हौं गुन मानौं सत्य सुनावति भाखि ॥१३३॥

राग धनाश्री ताल रूपक—झूलत वृषभानु कुँवारि रच्यौ है हिंडोरना। जाके अगनित सहचरि लार बनी छवि ओरना ॥टेक॥ विवि खंभ कनक जराइ रतननि कीये रावल भूप। डाँड़ी जु रतन मयारि पटुली परम सुभग अनूप ॥ तरु पाँति कदंबनि सघन छाँही नहीं रवि तहाँ धूप । वृषभानु पुर के

गोंड़रे वरषत धाराधर रूप ॥१॥ रँग रंग सारी चूँनरी भूषन फबे अँग अंग । आगमन पावस रितु सावँन भरी परम उमंग ॥ गावति मधुर रस रीति सों अति लड़ी राधा संग । नँद गाँवरे कौ ईश नंदन उरझ्यौ प्रेम नव रंग ॥२॥ उमड़ी घटा आवति चलीं अति स्याम पूरित वारि । कौंधे जु ता मधि दामिनी मुरि देखि प्रान अधारि ॥ कुहुकैं जु कोकिल मोर बोलत हरित भूमि निहारि । चहूँ ओर गरजनि मंद झोटा देति प्रान धन वारि ॥३॥ रमकें रंगीली भाँति तन फहराति सुरंग दुकूल । मुकुलित भई नव वैस मनमथ देत मन कों सूल ॥ अवलोकि यह छवि स्याम सुंदर रहे तन सुधि भूल । वृन्दावन हित रूप उझिल्यौ वरषत वैंनी फूल ॥४॥१३४॥

राग गौरी—राधा झूलैं री पीरी पोखरि पार । अद्भुत तान गान कोकिल सुनि रही मौन मुख धार ॥१॥ रमकनि में दमकैं नग भूषन सोभा बढ़ी अपार । चौका की चमकनि के ऊपर कोटि दामिनी दुति वार ॥२॥ सजनी एक साँवरी आई झूलनि कौ रिझवार । ताके सँग झूलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥३॥ थिरकत है अतलस अतरौंटा सिर पर सूही सार । खमकि बनी अति पीत कंचुकी मुख पर श्रमकन वार ॥४॥ कौंन गांव कौ नाम तिहारौ कहियै कृपा विचार । चतुरनि में दीखत अति सुंदरि तरुनिनु में बड़ नार ॥५॥ ललिता कहै बोलि री सुंदरि ना तरु दैंउ उतार । राज सुता सँग झूलन आई दियौ दीठि डर डार ॥६॥ सैंननि में समुझावैं मुख सों वचन न सकै उचार । नंद गांव की ओर बतावति ऊँचौ हाथ पसार ७ अँचरा की सरकनि में कौस्तुभ मणि

की भई चिन्हार हर हर हँसत सकल ब्रज सुंदरि (एरी) बड़ी खिलवार ॥८॥ डोरी गहि लीनी ललिता नें दोऊ लई उतार। कोऊ कर चटाके वलैया लै लै कोऊ पीवत जल वार ॥९॥ नई पाहुनी भई खिलौना वैठी घूँघट मार। वृन्दावन हित रूप निहारत डारत तन मन वार ॥१०॥१२५॥

राग सोरठ—झूलन लड़ैती राधा प्रेम भर आई री। साँवरी सहेली एक वैठी तहाँ पाई री ॥१॥ नैननि नचाइ वह मृदु मुसिकाई री। भूली हों सनेह की फिरत वौराई री ॥२॥ भूली वन देखि तुम्हें अति हरषाई री। मोसों करो प्रीति स्यामा वावा की दुहाई री ॥३॥ जानी दीठि तौहू राखी आपनी वड़ाई री। करुणा कुशल राधा संग लै झुलाई री ॥४॥ उघरि परी है ताकी उर चतुराई री। कहै भरों अंक हों तो अधिक डराई री ॥५॥ दरकी है चोली दियो छद्म दिखाई री। सकुचे से नैंन मन जीत सी जनाई री ॥६॥ सजनी कहति केती भरी लँगराई री। छल वल ही में रस लवधि मनाई री ॥७॥ गावें मीठे स्वर भये मगन महाई री। वृन्दावन हित रूप अलि वलि वलि जाई री ॥८॥१२६॥

राग सोरठ—चुँनरिया झूलत खमकि बनीं। फहर फहर फहराति गौर तन फैली छवि जु घनीं ॥ पीत दरयाइ की सौंधे सो कंचुकी सुभग सनी। तैसीये ललित करनि स्यामा कें महिदी रँग रचनी ॥ तैसोई फव्यौ भाग सुख सावन उदित सुहाग मनी। तैसोई लसति वदन विधु पानिप सोभा निधि उफनी ॥ तैसोई रंग हिंडोरो कौतिक जहाँ हरित अवनी। तैसीये झुकी तरुनि की पाँती वानिक परै न गनी गावति झील

घोर सुर जोरें कुंवरि संग सजनी । वृन्दावन हित लख्यौ रूप झर पिवैं दृग श्रोक धनी ॥१३७॥

राग देवस—सुहावन सावन राधा सुख तिहारे बाट परयौ । यह जो सत गुन रूप अंग संग झूलन में उघरयौ ॥ यह जु चौगुनौ चाव कौन विधि भागन तें जु बढ्यौ । वृन्दावन हित रूप रसिक कौ लहनों सुकृत करयौ ॥१३८॥

राग गौरी—रच्यौ है हिंडोरो आली परम अनूप री । झूलत हैं राधा तहाँ वरषत रूप री ॥१॥ परसि परसि आवें द्रुमनि की डार री । खुलि गई वैंनी उर उरझत हार री ॥२॥ रमकि रमकि पियु झूलत है संग री । बढ़ि बढ़ि झोटा लेत लपटत अंग री ॥३॥ तन तें सुवास फैली पवन झकोर री । अलिनु की सैंना झुकि आई चहूँ ओर री ॥४॥ झिझकनि वाढ़ी सोभा नैंन सलोल री । राखि राखि वदे प्यारी प्रीतम सों वोल री ॥५॥ भुजनि समानी पिय पुलकित गात री । वृन्दावन हित बनें कहत न बात री ॥६॥१३९॥

राग काफी—हरखि झुलाइयै मन भावन । उघरि परै हिय नेह गह गहौ झोटा देहु चित चावन ॥ यह जु कल्प तरु यह रविजा तट यह नव घन झुकि आवन । वृन्दावन हित रूप वलि गई यह हरियारौ साँवन ॥१४०॥

राग मलार आड़ चौतालौ—माई री आज नवल निकुंज मंजुल रच्यौ हिंडोरौ स्याम । कमनीय रतन जराइ रोपै खंभ अति अभिराम ॥टेक॥ लसत सुभग मयारि मुक्ता झालरी छवि देत । मरुवे तौ रंग विरंग डांड़ी अरुन बिच बित्र सेत ॥ पटुली जटी वहु भाँति नग जग मगत मन हर लेत मन दै

सँवारयौ रसिक नागर पिया झूलनि हेत ॥१॥ चहुँ ओर सखियनि मंडली मधि राधिका सुकुमारि । मिलि चली सावन तीज खेलन चतुर परम उदार । रँग रंग सारी चूँनरी कंचुकि उरनि सुढार । पग धरति धरनि उठाइ लचकत कटि सु जोबन भार ॥२॥ मृदु मुसकि बोलें प्रान वल्लभ नागरी प्रति बैंन । आजु बन्यौ है रंग हिंडोरना सुख देखिये भरि नैंन ॥ बैठे हिंडोरें धन धनी रस रासि सोभा ऐन । हँसि हँसि धरनि भुज मूल अंसनि निरखि विथकित मैंन ॥३॥ इक मुदित मन दुलरावहीं मोहन रंगीली बाल । इक सजैं बीन मृदंग गावति गीत परम रसाल ॥ इक रहीं सर्वसु हारि अपनौं परी सोभा जाल । इक देति हरषि असीस ए चिरजियौ ललना लाल ॥४॥ सजल घन तन स्याम के पट पीत यों फहरात । अंग अंग राजैं कुँवरि राधे दामिनी दरसात ॥ श्री हित रूप कुशल किशोर दोऊ परस्पर लपटात । वृन्दावन हित सोभा भर लखि सखिन नैंन सिरात ॥५॥१४१॥

राग मलार आड़ चौताल—बन्यौ है हिंडोरना माई राधा जू झूलन हेत । सरसति परम आनन्द दरसत लाल दृग सुख देत ॥टेक॥ रंग खचित मणि नग खचित खंभनि जोति जग मग बढ़ी । मानों अलंकृत भुजा अवनी परम हित सों कढ़ी ॥ मरुवे मयारिनु रतन दुति डांड़ीनु लाली चढ़ी । पटुली तौ चित्र विचित्र रचना अहा किन बिधि गढ़ी ॥१॥ पचरंग तन्यौ है बितान तापर कनक सूतनि कोर । विद्रुमनि झूँमक लसत मोतिनु झालरी चहुँ ओर ॥ हरित भूमि सुहावनी बोलत जु शुक पिक मोर पहिरें तो नव रंग चूँनरी रमकति जु

जोंवन जोर ॥२॥ गावति भरी अनुराग वाला बनी एक समान । फूल्यौ फल्यौ छवि वाग उपमा दियें वनत न आन । सौभाग सींवा गुन अवधि अति लड़ी श्री वृषभान । दुमचींद राख्यौ रंग हँसि हँसि हरत मनमथ मान ॥३॥ होत कौतूहल परम सुख फव्यौ सावन माल । वढ़ि वढ़ि जु झोटा देति वोलति राखि वलि इहि काल ॥ तिनमें सहेली साँवरी लखि वदति भाल विशाल । घन गौर वरषत रूप दमकत दसन दामिनि माल ॥४॥ हलति वैंनी पीठ पै मनु विष धरनि गोती । खुलत घूँघट वदन सोभा देखि अनहोती ॥ ताटंक विलुलित श्रवन नाचत नासिका मोती । वृन्दावन हित रूप निरवधि फैलि रही जोती ॥५॥१४२॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत--राग मलार

हिंडोरे झूलत है पिय प्यारी । तैसीय रितु पावस सुख दायक तैसिये भूमि हरियारी ॥ घन गरजत तैसिए दामिनि कौंधत फुही परत सुखकारी । अवला अति सुकुमारि डरत मन पुलकि भरत अंकवारी ॥ मदन गोपाल तमाल श्याम तन कनक वेलि सुकुमारी । गिरिधर लाल रसिक राधा पर गोविंद जन वलिहारी ॥१४३॥

श्री (भोलानाथ) भोरी सखी जी महाराज कृत--राग मलार

नैना नैंन हिंडोरें झूलें । नैनन ही में रमकें नैंना नैंननि फूलनि फूलें ॥ नैंननि वरषनि नयननि भींजनि नैना रस अनुकूलें । श्री भोरी सखी हित नैंननि साँवन फहरनि रंग दुकूलें ॥१४४॥

—(:)❀(:)

❀ पवित्रा उत्सव के पद ❀

गो० श्री कमलनैन जी महाराज कृत—(श्रावण शुक्ला एकादशी कौ) राग मलार

झूलत नवल प्रिया प्रीतम सँग रँग उपजत छवि कही न जाई। चमकत कंचन सूत पवित्रा उर पर मोतिन माल सुहाई॥ तैसीय मधुर स्वर गावति सखिन की तैसीय मंद धुनि मेघ की झाई। जै श्री कमल नैन हित अतन रंग रंगि रहे हरषि हरषि लपटाई॥१॥

गो स्वामी श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग मलार

पवित्रा शोभित पाट पुनीत। प्यारी उर लसै अरुण सोसनी मोहन उर लसै पीत॥ सहचरि बीन मृदंग बजावति गावति मंगल गीत। जै श्री किशोरी लाल हित रूप हिंडोरे झूलत बढ़त समीत॥२॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग मलार

पानिप भरे पवित्रा पहिरे गौर श्याम पाटनि के नागर। लाल बाल के बाल लाल के मनु हिय बसि लसि उरनि उजागर॥ नील पीत झूला से चमकत नील पीत तरु तन छवि आगर। प्रेमदास हित तापर नित झूलत नवल युगल के मन रस सागर॥३॥

श्री गोवर्द्धन लाल जी महाराज कृत—राग गौड मलार

हिंडोला झूलत लाड़िली लाल। अति पवित्र पचरंग पवित्रा ललिता रचि कर लाई बाल॥ सुंदर कर तें ललना लालहि हर्षित ह्वै पहिराय रसाल। झूलत में अति रंग

बढ़ावति गावत हैं मधुरे स्वर ताल ॥ विविधि भाँति मेवा अर्पन करि जल सुगंध सों मुख प्रच्छाल । उच्छिष्टामृत बांटत सवा-सिनु हित गोवर्द्धन पावत हाल ॥४॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत--राग सारंग

उर पाट पवित्रा जग मगे । राधा लाल प्रेम सों पहिरें विविधि रंग करि रँग मगे ॥ सुविधि बनाए दुहुँ मन भाए देखि रसिक रस में पगे । सजनी करति प्रसंश मुद भरी रमकि झमकि दोऊ हिये खगे ॥ महमहात कानन वर बीथी सोंधें सों तन सग बगे । वृन्दावन हित रूप वलि गई झोटा बढ़ि डारनि लगे ॥५॥

राग धनश्री—सुभग पवित्रा हो पहिरे मोहन लाल । हँसि हँसि प्रथम प्रियहि पहिरावत कहि कहि बचन रसाल ॥ पचरंग पाट सुविधि रचे ललिता उर छवि देत विशाल । ता ढिंग कौतिक देखि सखी री रुरति जलज मणि माल ॥ स्याम सजल घन तन मनु प्रगटति इंद्र धनुष छवि जाल । वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि बग पंकति तिहिं नाल ॥६॥

राग सारंग—पवित्रा ललिता रुचिर बनायौ । मन अभि-राम जानि सजनी तव श्री राधे पहिरायौ ॥१॥ मोहन देखि परम रुचि वाढ़ी सहचरि निकट बुलायौ । ऐसौ एक हमें रचि दीजै यह भूषन मन भायौ ॥२॥ तव बोली मृदु मुसकि सहेली लालहि वचन सुनायौ । यह पहिरौ प्यारी कर वलि वलि जिन मोहि गुहनि सिखायौ ॥३॥ माँगति ललकि देति सादर सो पहिरत पिय सचु पायौ । वृन्दावन हित रूप हिंडोरे रमकनि रंग बढायौ ४ ७

श्री घनश्याम जी महाराज कृत—राग मलार

पवित्रा पहिरे स्यामा स्याम । सोभित सुभग स्वरूप अंग छवि निरखि सकल ब्रज वाम ॥ सुर नर मुनि सब देखि मगन भए रति मोही अरु काम । श्रावन सुदि एकादसी की छवि पार न पावौ नाम ॥ जन घनस्याम सखी बलि बलि जै वृन्दावन निज धाम ॥८॥

श्री चत्रभुज दास जी महाराज कृत—राग सारंग

पवित्रा पहिरें गिरधर लाल । तीनौं लोक पवित्र किये श्री वल्लव नैंन विशाल ॥ कहा कहौं अंग अंग की सोभा उर राजत वनमाल । चत्रभुज प्रभु सुख सेत निवासी भक्तन के प्रतिपाल ॥६॥

श्री विट्ठल मोहन जी महाराज कृत—राग सारंग

पवित्रा पहरें श्री वल्लभ लाल । तीनों लोक पवित्र किये श्री विट्ठल नैंन विशाल ॥ सुनि सुनि सब सिंगार बनाई देखन आई ब्रज बाल । वृन्दावन कौ चंद श्री विट्ठल मोहन रसिक रसाल ॥१०॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग सारंग

पवित्रा पहिरें श्री गिरधर आज । ब्रज की नारि सबै जुरि आईं, छाड़ि सकल ग्रह काज ॥ पचरंग पाट फौंदना सोभित चंदन अंग विराज । नख सिख की छवि कहौं कहा लौं कोटि काम सिरताज ॥ श्रावण सुदि एकादसि सोभा फूली भक्त समाज । कृष्णदास वारनैं तिहीं छिन सुख पायौ

राग सारग पवित्रा पहरे कान्हर वारे कनक सूत्र मिलि जतन रचन करि गेंदा न्यारे न्यारे ॥ मणि माला मोतिन की माला उर मणि माला ललकैं। कुंडल श्रवणनि एक जोति मिलि जगर मगर ह्वै झलकैं ॥ अखिल भुवन की सोभा राजति एक रस कहि नहि आवै। कृष्णदास मनि फणि ज्यौं लाज्यौ भक्त जतन सोंऊ पावै ॥१२॥

श्री परमानन्द दास जी महाराज कृत—राग सारंग

पवित्रा पहिरैं श्री गिरधारी। श्री वृषभान सुता संग राजति अंग अंग छबि न्यारी ॥ हाटक पुष्प पाट पचरंग में मनि माला ढिंग सोहे। निरषत नैंन मैंन गति थाकी जो जोहै सो मोहे ॥ सोभा सिंधु सकल सुख सागर मागौं गोद पसारी। परमानन्द परत नहिं पलकैं अपनौं तन मन वारी ॥१३॥

राग सारंग—बैठे पहिर पवित्रा दोऊ देखत नैंन सिरानें। राजत रुचिर निकुंज कुंज में कोटिक काम लजानें ॥ हास विलास हरत सब के मन अंग अंग सुख साने। परमानंद दास की जीवन उपजति तान विताने ॥१४॥

श्री कुम्भनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

पवित्रा पहरें है नंदलाल। पचरंग पाट के फोंदा वनें हैं मोहि लई ब्रज वाल ॥ कहा कहों अँग अँग की शोभा उर राजत वन माल। कुंभन दास प्रभु गोकुल जीवन राधा रंग रसाल ॥१५॥

राग सारङ्ग—पवित्रा पहिरत गिरधर लाल। वाम भाग वृषभान नंदिनी वोलत वचन रसाल ॥ आस पास सब ग्वाल मराडली मनौं विमल अलि माल। कुंभनदास प्रभु त्रिभुवन मोहन नंद नंदन ब्रज बाल ॥१६॥

❀ राखी उत्सव के पद ❀

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत—(सावन सुदी पूरणमासी कौ) राग टोड़ी

रच्छा बंधन साज समाजनि सजि अलि अरपी दंपति पाननि। रंग हिंडोर जोर भुज बैठे चकमत भूषन बसन सुजाननि॥ झलमलात दुति दीपति अंगनि रंग अनंग उमंगनि आननि। जै श्री हित अलि रूप अनूप विलोकनि लखहि खवावति दंपति पाननि ॥१॥

अद्भुत रंग हिडोर जोर भुज झूल झुलावहिं अरस परस सुख। उर अनुराग उमंग रंग लखि सखि ललितादिक जान्यौ है रुख॥ दृष्टि हेत रच्छा बंधन सजि बाँधी पानि अनंग झलकि मुख। जै श्री हित चित रूप अनूप प्रेम भर रस संपति लहि दूरि किये दुख ॥२॥

गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

आज भलौ दिन राखी बंधन हँसि हँसि मोहन राखत कर वर। ललिता ललित पाट की रचि पचि अधिक सँवारी दै मोतिन लर॥ राधा लाल देखि मन हरषत देत रीझि मुसिकानि मधुर तर। जै श्री किशोरी लाल हित रूप भरे सुख चढ़े हिंडोरे झूलैं परस्पर ॥३॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग मलार

श्रावण पून्यौ श्रवणा पूजत राधा वल्लभ लाल। श्रवन नक्षत्र सुभ मंगल कारी गावति मिलि ब्रज बाल॥ कुंज महल में राखी बँधावत ठाड़ी हैं सखी आस पास। दामोदर हित दछिना पाई श्री वृन्दावन वास ४

श्री कल्याण पुजारी जी महाराज कृत—राग पूर्वी

जानि सलौनौं युगल सलौनें लौंनी राखी करनि बँधाई। गुल अनार रेसम की रचि पचि गज मोतिन सों रुचिर रचाई॥ पहुँची पहुँचिनु गोर स्याम के पाँनिप पाँइ पानि में छाई। मनु गुलाब की कली कमल पर स्वाँति बूँद भरि प्रेम खिलाई॥५॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

पूरनमासी पूरन धनि हरि राखी बाँधत गरग मुनीस। कुंकुम तिलक बनावत हैं अरु अरु तंदुल प्रीत धरत है सीस॥ आरति किये दिये जव दच्छिना देत पुकार असीस। कृष्णदास प्रभु यौं चिरुजीवौ तीन लोक के ईस॥६॥

श्री किशोरदास जी महाराज कृत—राग मलार

प्रीतम बाँधि दोऊ कर राखी। लाड़ भरी लड़काय लाड़िली लाल अवधि अभिलाखी॥ करत मरोर मोर मुख हँसि वस विलसि मधुर वर भाखी। श्री दासि किशोर निहोर निहारत नैंन चाहत रस चाखी॥७॥

रच्छा करत स्याम की स्यामा। कुच कपोल परसत कर, हरषत वर उर वामा॥ कवन कलोल मोल वचननि वदि उपजावत अभिरामा। श्री दासि किशोर रस लौंन लगत सब संपति सहचरि धामा॥८॥

रच्छा बंधन करत सहेली। कोमल कल मखतूल मनोहर फौंदा छवि अलवेली॥ प्रफुलित वदन सदन सोभा निधि सचि रचि सखी सहेली। श्री दासि किशोर किशोरी रस हद कर धर स्याम मकेली ६

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत—राग मलार

आजु मंगल द्यौस सलूनों पून्यों दूनों नीकें मधु मंगल अखि बाँधत राखी। छलनि छबीले रंगीले लाल वाल कर मंजुल लाल के केसम रेसम की धूरि चूरिन के आगें राखी॥ औरनि नरगिस कैसें फौरनि की भौंरनि की मोहिनी कमल श्री तनु रंग मुकुन लगी लाखी। वल्लभ रसिक पियारी कर गहि राखी लखि दुरि अंगुरिन हथेरी हेरी मुसकि अधर कछु भाखी॥१०॥

श्री छीत स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

जननी जसोदा राखी बाँधति वल अरु मदन गुपाल कैं। कंचन थार में अछित कुंकुमा तिलक दियौ व्रज वाल कैं॥ नारि केलि अरु मणि आभूषन वारति मुक्ता माल कैं। छीत स्वामी गिरिधर मुख निरखत वलि वलि नैंन विशाल कैं॥११॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

सिंह पौरि ठाढ़े मन मोहन द्विज वर राखी बाँधत आनि। परम विचित्र पाट की डोरी राखि रहे हरि पानि॥ करत वेद मंगल धुनि हरषत देत असीस सुजानि। चिरजीवौ नंद लाल कन्हैया व्रज जन जीवन प्राण॥ हरषि हरषि हरि देत विप्रनि कौ हीरा मनि के दान॥ गोविंद प्रभु गिरधर पद अंबुज सदा रहौ जिय ध्यान॥१२॥

आज सलूनौं मंगल माई। सॉवन सुदी पून्यौ सुभ वासर घर घर आनन्द दाई॥ लै उछंग जसुमति वैठी वलराम अरु कुंवर कन्हाई। बाँधत गरग महा मुनि देत असीस सुहाई॥ चिरजीयौ यह ढोटा तेरौ परिवार सहित व्रजराई। गोविंद प्रभु गिरधर मुख निरषत नैंननि कौ फल माई॥१३

रच्छा बाँधत जसुमति मैया सकल सिंगार विचित्र विराजत सँग सोभित बल भैया ॥ कनक रुचिर सिंघासन बैठे तहाँ मिले गोकुल के छैया । ताल मृदंग संख धुनि बाजत सुनत ब्रज वधू धैया ॥ कर लै धरि लिलाट बनावत कुंकुमा तिलक सुहैया । दै अच्छित कर राखी बाँधी उर आनंद बढ़ैया ॥ भाजन भरि पकवान मिठाई मेवा बहुत बनैया । अति सुगंध वासित बीरा लै देत आनि नँदरैया ॥ इँडुरी पींडुरी वारति श्री मुख पर जननी लेत बलैया । निरखि मुख आरती उतारति गोविंद बलि बलि जैया ॥१४॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत--राग टोड़ी-सारङ्ग

तिथि पून्यौ शुभ द्यौस सलौनो आजु बड़ौ त्यौहार । सदन सुदेश राधिका वल्लभ बैठे करि शृङ्गार ॥ ललिता ललित पाट की राखी लै आई शुभवार । हँसि हँसि कर पल्लवनि बँधावत राधा जु नन्द कुमार ॥ गूँथी लरी जरी तारनि सों मोती लगे सुढार । अति सुदेश पहुचिनु में शोभित मोहत कोटिक मार ॥ झूलत लेत बड़े बड़े झोंटा परसत हँसि द्रुम डार । रमकत झमकत मुकट चन्द्रिका विलुलित कुंडल हार ॥ इक गावत एक हरखि बजावति वीणा मृदंग सुतार । एक जै जै जै धुनि उपजावति पुहुप अंजुली वारि ॥ इक सुख रासि वदन अवलोकत रहत अपन पौ हार । वृन्दावन हित सखी असीसत अंचल छोर पसार ॥१५॥

राग सारङ्ग—राखी बंधन स्याम करावत । वाम भाग श्री कुंवरि राधिका यातें अति छवि पावत ॥ पाट सहित मोतिन के झूमिका सोभा अमित बढावत । निज सजनी कर

राखि दुहुँनि के फूली मंगल गावत देति असीम ललित ललितादिक धन मुसिकाँनि बढ़ावत। वृन्दावन हित रूप हरखि कैं पुनि हिंडोर झुलावत ॥१६॥

राग सारङ्ग—राखी राखौ सुंदर कर वर। तिथि पून्यौ सुभ द्यौस सलून्यौ फूलौ मुदित परस्पर ॥१॥ देखौ प्रिया अलौकिक भूषन में गूथ्यौं दै कैं मुक्ता लर। स्याम गौर पहुंचिन में कैसी लागत परम मनोहर ॥२॥ लटकत रुचिर पाट के फुंदना कमल नाल मनु मधुप लगे गर। झूलनि माँहि विलोलित ज्यौं ज्यौं देखि हँसत दोऊ हर हर ॥३॥ लैहौं झगरि झगरि इत उत तें रहसि वधाई मृदु मुसिकनि तर। वृन्दावन हित रूप वलि गई रमकनि लाग्यौं सोभा झर ॥४॥१७॥

राग सारङ्ग—राखी बाँधि सुभ घरी माई। पून्यो रंग सलून्यौ सावन भाँति भाँति सुखदाई ॥१॥ ललिता और विसाखा चंपक चित्रा चतुर महाई। तुंग विद्या इंदु लेषा रंग देवी सुदेवी सखी मिलि आई ॥२॥ पाट पुनीत जरी तारनि मिलि मोतिन लरी वनाई। प्रीतम लै प्यारी कर राखी प्यारी पिय पहिराई ॥३॥ गौर स्याम पहुंचिनु में लसि गसि ऐसी उपमा पाई। मनु उडुगन अरु कमल मित्र भये मिले अरि भाव मिटाई ॥४॥ झूलत ंग हिंडोर जोरि भुज यह छवि कही न जाई। पावस रस सुख सिंधु अपर्मित विलसत मन न अघाई ॥५॥ सोभा उमगि वधाई वाटनि सखियनि आस पुजाई। वृन्दावन हित रूप केलि निजु सजनी बेलि बढ़ाई ॥६॥१८॥

राग सुद्ध कल्यान-चौतालौ—लटकि पटुली पग राखति रमकति जोवन जोर। तैसौई परम कौतिकी प्रीतम विहस परी अति दीनी है मदन मरोर ॥ तैसीयै झुकि आई मधुपावलि तन सौरभ लै पवन झकोर। वृन्दावन हित रूप वलि गई क्यों न सम्हारति उरझत अंचल छोर ॥१६॥

राग विहागरौ-चौतालौ—घूँघट की खुलनि मैं वदन तें वढ़ी है मयूपैं जव चली रमक रंगीली। ससि कें अंक मानौं मीन जुग खेलत चपल छवि भरे तापै लट रुरति छवीली ॥ सोभा कोश खुलि गयौ अंचल उडनि में खसी फूल माल भई कंचुकी सुढीली। वृन्दावन हित रूप चेटक मंत्र यह तानैं अति वली मोहन मति मनु कीली ॥२०॥

वनितनि सिरमौर राधा जू सुहाग रूरौ। जोवन छकनि मद अति गरवीली लटकि चलनि में हालतु सिर जूरौ ॥ कानन गहनौं पिय दृग लहनौं जग मगैं माँग सुंदर सिंदूरौ। वृन्दावन हित रूप धनिधन तू अनूप भाग वली अविचल करि चूरौ ॥२१॥

श्री लाल जू की जनम वधाई–(गो० श्री हित हरिवंशचंद्र जी महाप्रभु जी)

राग विलावल—आनन्द आजु नंद कें द्वार। दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ॥ चंदन सकल धैंन तन मंडित कुशुम दाम रंजित आगार। पूरन कुंभ वनैं तोरन पर वीच रुचिर पीपर की डार ॥ जुवति जूथ मिलि गोप विराजत वाजत पणव मृदंग सुतार। जै श्री हित हरिवंश अजिर वर वीथिनि दधि मधु दूध हरद के खार "२२"।

(श्री सेवक चरित्र से संग्रह)

❀श्री सेवक जनम की मंगल बधाई ❀

श्री सेवक जी महाराज कौ, जन्म सावनसुदी ३ कौ

उत्सव प्रारम्भ-सावन वदी एकादशी से-मंगल-वधाई गान शृङ्खला

श्री सेवक (दामोदरदास) जी महाराज कृत (मंगल) सावन वदी एकादसी से

राग सूहौ विलावल—जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मण्डना। रसिक अनन्यनि मुख्य गुरु जन भय खण्डना ॥ श्री वृन्दावन वास रास रस भूमि जहाँ। क्रीड़त श्यामा श्याम पुलिन मंजुल तहाँ ॥ पुलिन मंजुल परम पावन त्रिविध तहाँ मारुत वहै। कुंज भवन विचित्र शोभा मदन नित सेवत रहै ॥ तहाँ संतत व्यास नंदन रहत कलुष विहंडना। जै जै श्री हरिवंश व्यास कुल मण्डना ॥१॥ जै जै श्री हरिवंश चन्द्र उदित सदा। द्विज कुल कुमुद प्रकाश विपुल सुख संपदा ॥ पर उपकार विचार सुमति जग विस्तरी। करुणासिंधु कृपालु काल भय सब हरी ॥ हरी सब कलिकाल की भय कृपा रूप जु वपु धरयौ। करत जे अनसहन निंदक तिनहुँ पै अनुग्रह करयौ ॥ निरभिमान निर्वैर निरुपम, निहकलंक जु सर्वदा। जै जै श्री हरिवंश चन्द्र उदित सदा ॥२॥ जै जै श्री हरिवंश प्रशंसित सब दुनी। सारा सार विवेकित कोविद बहु गुनी ॥ गुप्त रीति आचरण प्रगट सब जग दिये। ग्यान धर्म व्रत कर्म भक्ति किंकर किये ॥ भक्ति हित जे शरण आये द्वन्द दोष जु सब घटे। कमल कर जिन अभय दीने कर्म बन्धन सब कटे ॥ परम सुखद सुशील सुन्दर पाहि स्वामिनि मम धनी जै जै श्री हरिवंश प्रशंसित

सब दुनी ३ जै जै श्री हरिवंश नाम गुण (जो नर) गाइ है । प्रेम लच्छणा भक्ति सुदृढ़ करि पाइ है ॥ अरु बाढ़ै रस रीति प्रीति चित ना टरै । जीति विषम संसार कीर्ति जग विस्तरै ॥ विस्तरै सब जग विमल कीरति साधु संगति ना टरै । वास वृन्दा विपिन पावै श्री राधिका जू कृपा करै ॥ चतुर जुगल किशोर सेवक दिन प्रसादहिं पाइ है । जै जै श्री हरिवंश नाम गुण (जो नर) गाइ है ॥४॥१॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—मंगल-छंद (यह मंगल नित्य होय है)

राग सूहो विलावल—जै जै श्री हरिवंश हृदौ सेवक उदै । भूत भविष्य वर्तमान प्रदीप अनुना मुदै ॥ सान्द्रानंद स्वरूप माद्धि हित जड़ सदा । गौरांगे जू सक्ति हरषि उमग्यौ नदा ॥ उमगि वोल्यौ नेह हित हरिवंश रस जस प्रचुर कौ । सेव्य सेवा भोग्य रीझी पचि न रीझ उचरन कौ ॥ सरित ज्यौं अनु-सरित अररा तीज सावन सुभ सुदै । जै जै श्री हरिवंश हृदौ सेवक उदै ॥१॥ जै जै श्री हरिवंश सकृत सेवक लसै । एक भजन हरिवंश रँग्यौ दृढ़ पन रसै ॥ उगलि गिरा उर भाय परम कहनी कही । दिव्य प्रीति हित रीति धर्म पूरयौ मही ॥ पूरि माहि सब धर्महित हरिवंश मर्म जनाइयौ । हरिवंश रति हरिवंश वानी स्वाद सब दै बुढ़ाइयौ ॥ सौंदर्य्य आकृति गुन रु हित माधुर्य लखि मन सब फसै । जै जै श्री हरिवंश सकृत सेवक लसै ॥२॥ जै जै श्री हित चन्द्र चकोर सेवक मई । भजन सुधा रस सिंधु गटकि त्रिपित न हई ॥ प्रेमामृत सुख ओघ सार धारा श्रवै । मृदुल ललित अति मिष्ट चषक भरि भरि पिवै पिवत भरि हृदौ उपज्यौ अँगनि रँग झिलि मिलि

रह्यौ । पुलकि कंपित देह विथकित स्वेद अश्रु गदि गदि वह्यौ ॥ प्रान धन अमी मत्तता मौं गोप्य मिलि मुख सूचई । जै जै श्री हित चंद्र चकोर सेवक भई ॥३॥ जै जै श्री हरिवंश पदाम्बुज अलि सेवक खगे । ज्यौं हियरा के लोभी अधिक तातें पगे ॥ द्रवत प्रेम मकरंद वृन्द मधु निपटई । आवेमी अनुरक्ति अदन जड़ भटकई ॥ मटक लव न नितंक पी उद्गार छकनि मुछकि अवैं । जंगम रु थावर पुप मुदित आसक्ति हित अनुभव सवैं ॥ जै श्री रसिक नृपति गंभीर गुन सेवक प्रिया दास रँग रँगे । जै जै श्री हरिवंश पदाम्बुज अलि सेवक खगे ॥४॥२॥

श्री हित कृष्णदास जी महाराज कृत—वधाई

मधुरितु माधव मास सुहाई । भाग प्रकाश व्यास नन्दन मुख फूल्यो कमल अमल छवि छाई ॥ श्रवत मधुर मकरन्द सुयश निज कुंज केलि सौरभ सरसाई । सेवत रसिक अनन्य भ्रमर मन कृष्णदास सुख सार सदाई ॥३॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग भैरों (यह पद नित्य होय है),

प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊँ । करौ कृपा (श्री) दामोदर मोपै श्री हरिवंश चरन रति पाऊँ ॥ गुन गंभीर व्यास नंदन जू के तुव प्रसाद सुजस रस गाऊँ। नागरीदास के तुमहीं सहायक रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ ॥४॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत-अष्टक [सावन वदी एकादसी कौ दिन में]

राग पंचम—जयति वैयास के रसिक हरिवंश जू आयु वर्द्धन अवनि नाद वंशे । हृद गौराँग संपुट मनिहित सुहित सेवक हौ भेव संश्रित प्रसंसे जयति रव गिरा उर भास्व उगल्यौ निकर

गुन भरयौ हृद विश्व सेवक जु हंसे ॥१॥ राज सर्वोपरी भजन सर तट मृदुत हिताहि गुण गणालंकृत दिव्य देहे । हरिवंश पादाम्बुज मकरंद रसा स्वाद की प्रेम पारायनी हित हिते हे ॥ सकल कल्यान निधि पुनित करुना जु मय मंगल हरिवंश रस दायक मेहे । करुणा रस सागरे प्रबोधक हित भक्ति घर हित सुविज्ञान सेवक दिपै हे ॥२॥ हृद तम नाश की हित सुरस पासकी सेवक जन सेव्य हरिवंश आलै । परम करुनीक उद्दार अति बुधि निपुन दिव्य हरिवंश रस शास्त्र मालै ॥ परम धर्मज्ञ आचरन सव वल्लभा अमित प्रताप सव हित दै पालै । दिव्य अनुराग रस स्वाद वात्सल्य रति अमृत छवि रूप सेवक प्रनालै ॥३॥ सुद्ध माधुर्य्य लीला जु हरिवंश की माधुरी लास मद्भुत विकासे । सांद्रानंद रस प्रेम पियूष घन भोज्ञता मूरति हरिवंश हाँसे ॥ हास सस्मित मधुर पुलकि हरिवंश तन मग्न निज कौतुके जुग विलासे । हरिवंश की दृष्टि में दृष्टि दै छकि रहे अग्र सखि मूर्ति सेवक सुपासे ॥४॥ रूप हरिवंश गिरा खेल मधि दृग रँगे रसनि गुन नाम अँग अंग नीरे । चित्त मधि चित्त मन में जु मन अरुझि असु बुद्धि मधि बुद्धि जै सेवक धीरे ॥ प्रेम हित निद्धि सोभा जु कैशोर निधि विलास हरिवंश रस निधि सुभीरे । बैन परसत अदन रँजत सद पाज हरिवंश सेवक सकृत भजन तीरे ॥५॥ थरनि नथ नथ्यौ नाथ पथक सुथनि पथ हथै मथ्यौ हुंकार गथ थक्ति कीयें । मिथुन मैथुन मथनि हथनि हरिवंश गुथ गुथे हरिवंश हित सेवक हीयें ॥ रची रति मति लची तची खचि गचि पची हचिन कचि नची दचि सचि सुरस वीयें । सेव्य मधि सेव्य सेवा मधै सेव्य सेवा तरून सै सव सेवा सेवक

पीयें ॥६॥ सुधन कृत हेरि हेरि भींज सेवक रहे माहि ही माहिं प्रान वारि पुंजे । ललक चाव लोभ भर चञ्चु उघरैं घुरैं नलिन हरिवंश पर सेवक गुंजे ॥ द्रविन मकरंद वृन्दनि मधुर अवरली प्रेमामृत धार सुख सार कुंजे । अनुराग नव नेह आसक्ति उल्लास इत भाव आवेस तृष भुंज मुंजे ॥ ७॥ वसे हरिवंश में रसे मन लीन हित सर्व सुख रूप रस वलित अंगे । हरिवंश धन धाँम मधि मत्त इभ लुब्ध मनि झूँमि घूमत विशद हग सुरंगे ॥ पान कृत नृपति हित रंग अँग झिलमिलत जाव्य हित हइ सारूप अरूंगे । जानि संग विचल्यौ प्रियादास चेत टेर लियौ परम अप धन सेवक रहन संगे ॥८॥४॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—[सावन वदी एकादसी कौ दिन में]

राग खमाच धर्ज—जजौं जैति सेवक सदा छके हरिवंश मद सरस लुब्धे घूमत झुकनि न्यारी । अंग गौरांग गौरांग निधि झिल मिलैं हियें हग मूर्ति हरिवंश धारी ॥ कनक पंकज वदन सदन हरिवंश हित नवल जोवन उमगि झिल्यौ भारी ॥१॥ कुटिल अलकावली छुटी भृंगावली दिपत उदयौ ललित भाल शशि है । धर्म हरिवंश कौ भान तम नंश कौ सुष्ठ सुभ्र भ्रमें मर्म रस है ॥२॥ कृपा रस रंग के ऐन जुग नैन धनी चौकुनें मृदुल अध-खुले सुराते सुभग करुनायतें विशद पानिप छके हरिवंश रस पान सौं घुम घुमाते ॥३॥ सुरस हरिवंश के श्रवन घर ललित वर गंड कमनीय मंडल सुहित के । प्रेम रस हित मिली मंद मुसिकनि भली मधुर तरि वृष्टि अनुराग चित के ॥४॥ नासिका माधुरी विंव सोभा तरी वीच सिंगार सम श्रवत पीवैं । अहा आसक्ति अनुरक्ति हित मय पगनि ग्रींव की लीक हित धर्म सीवैं ५

धन्य यह हीयरा भिट्यौ हरिवंश सो कहा सुख कहौ मन जान चुप ह्वै । माहि खिलवार खेलंत थितु खेल लियें करत कौतूह जग मगत उद ह्वै ॥६॥ रुचिर छवि उदर की लोम घन वलित की हृद सर पूरि हित वहि पनारी । नाभि पुट लसत हरिवंश रस कुंडिका कलित त्रिवली लहरि उठि सुढारी ॥७॥ जानु जुग गूढ़ आरूढ गति द्विरद ज्यों मत्त लोलंत वर वाहु सूंड़े । सुधि न कंठ माल की सुधि न तिलक भाल की दिव्य हित हृदय के भजन वूड़े ॥८॥ गिरा हित वारिधा रसनि ओव धारधा मीन मन लीन कल्लोल भौनं । विलास हरिवंश रस मगन मन नगन तन दिशा अंवर तुरिया तीत मौनं ॥९॥ जै जै जुग अंघ्रि प्रियादास के सीस पर रसिक हित नृपति के धर्म धारी । देखि वट रूप हित रूप लै सिकल र है सदा विहरत तरैं पीय प्यारी ॥१०॥६॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--[यह पद आखरी में नित्य होय है]

राग सोरठ——श्री हित रूप किशोरी लाल हम ज्याये री हम ज्याये । उलथि पुलथि हद नेह दिखावत सेवक वपु धर धाये ॥ अपनिनु पर घुरि घुरि छये वरषत पोष तोष गरवाये । वेपरवाही श्री प्रियादास किये विमुखनि मान सब ढाये ॥७॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--[सावन वदी एकादसी की रात्रि में]

राग सारंग——आज हरिवंश वढ़वंश नादे । लाड़ हरिवंश कौ नेह गौरांग लखि उवटि चल्यौ प्रनय गड़हा सुसादे ॥१॥ उदित दामोदरं आर्ति उतकंठ भरे रटत गति लीन हित हित विसादे । हिलग पर हिलग उठि चौंप पर चौंप नव उमगि रह्यौ प्रेम प्रेमा अनादे ॥२॥ ललकि पर ललकि उठ खर्क पर खर्क हियें आस हरिवंश परसंसि गादे सद्य अनुराग आसक्ति

उल्लास मद भाव आवेस वृध मद रमादे ३ हित जु के प्रेम अनुरक्ति रंग छकि छके कंप जुत देह दृग वारि लादे। पुलक अस्तंब वत स्वेद गद गद गिरा स्वामि हरिवंश उन्मद प्रमादे ॥४॥ धाम हूँ धक धकै प्रान हूँ जकि जकै तकै तकै चखु व्याकुल जिवा दे। धाय हरिवंश अकुलाय हियें लै जु लयौ नाम सेवक दयौ सुरस स्वादे ॥५॥ चूँमि भरतार हँसि वित्त सब निज दयौ आप आधीन निशि दिन हियादे। इतहिं मङ्गल झरी इतहिं पावस झरी पुखे थिरचर मुदित हित विहादे ॥६॥ गिरा अभ्यंतरी भाय उगल्यौ सिखर हेरि प्रिया दासि रति पद्म पादे। देखि वनचंद मुख सर्व लुट्यौ उमगि जुगल भंडार सेवा प्रसादे ॥७॥८॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--हेरी की तरह [श्रावण वदी १२ कौ दिन में]

राग गौरी—आयौ आयौ रे अवनि हित भोगी रे भैया ॥टेक॥ सादर विदित मङ्गल रच्यौ हो पावस रितु सु वनाय। गौराँगे रुचि रुख लियें परिकर जुत कुलकाय ॥ हित भोगी रे भैया ॥१॥ हरखि हरित धर वुड लसै हो विछे दुकूल विशाल। विताँन धनुष पचरँग तन्यौ धुरवा डोरी जाल ॥ हित० ॥२॥ सजल सघन उदमद महा हो गर्जै घन गंभीर। पंच शब्द सुर धुर रहे दीप दिपै तड़ि धीर ॥हित०॥३॥ प्रेम भरयौ चौंपनि भरयौ हो चातिक शब्द उघट्ट। थर थरी लै लै निर्त्त की केकी सुलप सुभट्ट ॥हित०॥४॥ कोकिल कुल कल गुन गहर हो गावति मंगल टेर। आनन्द रस भर झर लग्यौ महा महोत्सव हेर ॥हित०॥५॥ सर सरिता पूरे हरित हो तरु तरु वंदन माल साँवन तीज अनुराग भरि प्रगट्यौ हित कौ मराल

॥हित०॥६॥ हित राधा मधि नेह तें हो उपज्यौ सेवक नाम । भजन सरोवर तट रहे कथन मात्र गढ़ा ठाम ॥हित०॥७॥ हित सुकृपा मम सुकृत फल्यौ हो तब इन देख्यौ नैंन । अनुसम स्वाद निज ढरि दियौ तन मन प्रांनन चैंन ॥हित०॥८॥ इनि भींजन हरिवंश हैं हो गुन लच्छन येही जानि । इनहिं हिलग इन वलहि कौ इनहिं नेह वलवानि ॥हित०॥६॥ इनहीं प्रेम हुलास कौ हो इनहीं चौंप ललकान । इनहीं दृढ़ व्रत टेक कौ इनहिं आस वलवान ॥हित०॥१०॥ इनहीं मसकत धर्म कौ हो इनहीं छुधित कौ जान ॥ इनहीं भाव आवेश कौ इनहिं कर्म वलवान ॥हित०॥११॥ इनहिं विचार मनोर्थ कौ हो इनहिं उपाय कौ जान ॥ इनहीं लंपट चाल कौ इनहिं तृष्णा वलवान ॥हित०॥१२॥ इनहिं अनुराग आसक्ति कौ हो इनहीं प्रान कौ जान । गोरी अंगनि में भरयौ हित सेवक कौ पान ॥हित०॥ ॥१३॥ हाव भाव रति मदन रस हो वैठनि हित हग पूरि । वैठनि छवि लखि पिय मरयौ हित भख सेवक सूर ॥हित०॥ ॥१४॥ नासा स्वासनि भेद वहु हो ये वैठन हित पूर । वैठन छवि लखि पिय मरयौ हित भख सेवक सूर ॥हित०॥१५॥ विलास हाँस भंगी तरंग हो वैठन हित भ्रुव पूर । पिय वैठन ही में मरयौ हित भख सेवक सूर ॥ हित०॥१६॥ नेति नेति अरु विरमि विरमि हो बैठन हित ओठन पूरि । पिय बैठन ही में मरयौ हित भख सेवक सूर ॥ हित०॥१७॥ कुच कोरनि सौं वँधि मरयौ हो पाई जौंनि नाभि मीन । पियवैठन छवि लखि मरयौं हित भख सेवक लीन ॥हित०॥१८॥ पैंनी छवि अरु अति चपल हो सेवक जु हिय ठहरैं दृष्टि अनुराग सुरस अहलाद

की हित जू ही मूरति मिष्ट ॥हित०॥१६॥ हित आस्वादी सब किये हो थिरचर बच्यौ है न कोइ । हरिवंस हरिवंश ही रट रहे हित जू ही जीवन जोइ ॥हित०॥२०॥ गद् गद् सुर तन पुलकि ही हो अति हित भर चहुँ ओर । उमग्यौ प्रेम प्रवाह अति वश आवेस न थोर ॥ हित०॥२१॥ बाँकी प्रियादास ओसरौ हो पूरौ श्री सेवक सजोर । जै श्री रसिक नृपति पद उर दये बानी रस सरवोर ॥ हित भोगी रे भैया ॥२२॥६॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--[सावन वदी १२ को दिन में]

राग निकुञ्ज टेर---आयो आयौ हे सुत हित वितरनौं । थिरचर सबहीं हे नव उर हरषनौं ॥१॥ गोरी वदरिया हे उद-मदी झुकि झुकी । छै रहि गड़हा हे ललकनि रुकि रुकी ॥२॥ मदमाती उमड़ी है गरजै हित हिती । चपला चमकत हे हित-गन सरसती ॥३॥ धुरवा प्रगट्यौ हे सेवक वरषि हीं । हित सुख रस रूप हे वारिधि धर वही ॥४॥ भींजे मन सब हे हरिवंश रँग वाह्यौ । महा महोत्सव हे जहाँ तहाँ है रह्यौ ॥५॥ तरु बेली विरवा हे हित के डह डहे । फूलनि फूले हे दल फल लह लहे ॥६॥ सजल सरोवर हे सरिता झिलि रही । त्रिविधि मारुत हे सीकर जुत वही ॥७॥ हरियारी हरियारी हे अवनी हँसि रही । उमड़ी घुमड़ी हे पावस तम रही ॥८॥ मधुर मधुर सुर हे अति विथकित करैं । रस भर रस भर हे तन मन सब हरैं ॥६॥ नाचत नाचत हे वरही कुल कलैं । टेरैं टेरैं हे कोलाहल भलैं ॥१०॥ कुहुकैं कुहुकैं हे कपोत परावती । लखि लखि सोभा हे हियौ न भरावती ॥११॥ किलकैं किलकैं हे चातिक आतुरी । कूँजत कूँजत हे प्रमुदित गातरी ॥१२॥ वोलैं वोलैं

हे मागो भिगारही अवेस आवेसत हे हित उदगारही १३। गावैं गावैं हे कोकिला किलकार हीं। माती राती हे तान गुन विस्तारहीं ॥१४॥ भुरमट लाग्यौ हे हित जू महल में। गरवैं गरवैं हे फसी रंग गहल में ॥१५॥ मिलि सब सुर घुर हे डोरा एकै वंध रह्यौ। आसक्ती अनुरक्ती हे मंगल ह्वै रह्यौ ॥१६॥ पुलकित पुलकित हे सब गद गद गरें। हरिवंश रँग में हे भकभोरें परें ॥१७॥ ललकैं ललकैं हे हित प्रेम वस परे। लाहौ उमाहौ हे अनुरागी खरे ॥१८॥ विसरी तन सुधि हे हित स्वाद पाय कैं। सब सम तूलें हे कह्यौ हित प्याय कैं ॥१९॥ हरिवंश हरिवंश हे रसना सब रटैं। सेवक वधाई हे नाम धन रति वटैं ॥२०॥ सेवक वधाई हे भये रंक रावरी। सब व्यौसाये हे जंगम थावरी ॥२१॥ सेवक वधावौ हे गायौ हुल्लास कौ। रीभनि धुरकी हे नेग प्रियादास कौ ॥२२॥१०॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--[सावन वदी १२ को रात्रि कौ]

राग निकुञ्ज की टेर—सजनी हे गोरी गति औरै। आज कहा कौतिक नयौ। सुहृद अली की हे। नेहनि कौ लाहौ। जनम दिवस ताकौ आयौ ॥१॥ फूलनि फूलत हे। मानौं मत्त करनी। पिय संगम गति मय भई। तन सु सँभारन हे। रौं रौं मन हरषे। नेह सिंधु वोरी है गई ॥२॥ हिलग मूरति निजु हे। भजते की भजनी। सेवक अलि के प्रिय रंग रंगी। आलस वलित रु लाल। मपि सौं घुँघरारे। सेवक अलि सौं दृग ये लगी ॥३॥ अधर अरुनिमा नैंक, जाचक पिय गटकी, लुटाय सौंज आगम रही। कुच कमलनि पर है, अलकावलि छूटी, मनौं भृङ्गा वलि बंधि गही ४ पिय संगम सों है, सूरा कुच

फूले, किरचि किरचि कंचुकी भई लाल नैन लाल गंड, उरजन पै हूँ लाली, वैंनी विथुरी सुधि गई ॥५॥ शिथिल दाम कटि हे, अतरौटा हू छूट्यौ, त्रिवली नाभि सर मोंहनी । किंकिनी ढँके हे, नितंब स्वासनि गति वदली, मौंन धरी मुख मोहनी ॥६॥ राख्यौ कछुव न सार, सेवक अलि उपरि, रहसि सदंधी लुट मई । कबहुँक कंपित अंग, अवयव गति औरै, नेह ललकि हिय कसकई ॥७॥ आनँद आसू नैन, उमगनि ढरि कुच पैं, हित की झरी में झकोरी हे । सेवक वपु हों धार, अभिलाष सुतोपी विचारति, पुलकि किशोरी हे ॥८॥ याही जक में मस्त, अस्तव ज्यौं तनु हे, यातें वपु फिरि नागरी । हित रस बूडी हे, ह्वै अंग प्रस्वेद, अलभि लाभ सुख सागरी ॥९॥ चुम्वत सेवक लै अंक, चाहत गुन गायें, गद गद सुर गरौ भरि रह्यौ । पलटि दसा आवेश, आरक्ता तन ह्वै, उनमादन चित चहलैं वह्यौ ॥१०॥ हित सजनी हिय लाय, चूँम आनन पौंछयौ, लखि छवि जकि थकि पिय रहे । अंक प्रजंकनि स्वाय, अंग अंग मिलाये, सुरत रंग बूड़े जड अहे ॥११॥ जो हित उफल्यौ आजु, कैसें कहि आवें, सेवक सोहिलौ रस झर नयौ । यह विलास उल्लास, जै श्री रसिक नृपति कौ हित, प्रियादासि उर दृग छयौ ॥१२॥११॥

श्री आनंदीवाईजी कृत–(ढाढिन) राग सोरठ [सावन वदी १२ कौ दिन में वधाई]

निर्तति प्रेम भरी री ढाढिनि निर्तति प्रेम भरी । लगी लगन हित के आसक्ति सौं तन मन सुधि विसरी ॥१॥ चंद वदन अंग किरनि लह लहात शरद निशा शशि फूल्यौ । तारा मंडल श्रम जल कन सोभा देखि इंद्र गति भूल्यौ २ भूषन वसन

प्रमादी पहिरें सजें षोडस सिंगार । डह डहाँनि उमगनि नव जोवन उठत प्रेम उद्गार ॥२॥ कुच गडुवा पर पीत कंचुकी हरौ अतरौटा लहकै । कसूँभी सारी जरद किनारी छूटि रही अलकें ॥४॥ आरति अतर लग्यौ री ढाढ़िनि हित सौंधे सौं सनी । नव नव चाह चौंप हिलगनि सौं श्री प्रिया अली संग वनी ॥५॥ रम भम रम भम नूपुर चूरा नव नेह भरीं ललकें । गिरत कुसुम गहवर वेंनी तें भुँकि भिभक मचकें ॥६॥ भिंगी भिगारत ज्यौं उनमादी नैन चपल चमकें । भलमलात अंचल भक भोरत दामिनि सी दमकें ॥७॥ विजै डेरा श्री हरिवंशचंद कौ वाजत आजु वधाई । श्री प्रिये महली घर आजु वधाई हौं ढाढिनि सुनि आई ॥८॥ श्री रसिक नंद लाल जू कें नाद नंदन वाँटत आजु वधाई । जाचक लाल अजाँचक कीनौं प्रिय अंग संपति लुटाई ॥९॥ भूषन वसन भंडार लुटाये अगनित रूप हित भार । वर विहार कौ खेत लुटायौ रसिकनि के हित सार ॥१०॥ हित रंगीली ढाढिनि जस गावै सेवक पद शिर नाय । नाचति गावति करत कुतूहल हित प्रिये मन भाय ॥११॥ निर्त कला गुन की विस्तारी भई हित चरननि पची । चर्चरी निर्त करै री चंचल महा तांडव निर्त नची ॥१२॥ थेई थेई कहत जोवन मदमाती अलवेली सुकुँवारि । मत्त गयंदनि ज्यौं फिरै फूली करत प्रान वलिहारि ॥१३॥ लघुता सौं पग उठत सुलप गति रूप छकी करत कलोलें । घूँम घूँम तन मन अरु नैना हित हित हित अलि वोलें ॥१४॥ सेवक वधाई औसर मिलिवे कौ घटत घटीका चली आवै । आरति तची पची सची गति नची भरि प्रेम भरी लावै १५। कौंन गुरू सिखई री ढाढिनि महा वसीकरनि

घातें। रसिक अनन्य सजाती सेये सब सिखई नेह की वातें ॥१६॥ महा मदंधी हित मद प्यासी चितवत चित हरनी। रसिक सभा के मधि रंग भीनी हित प्रिय वस करनी ॥१७॥ देत असीस ढाढिनि रंग राती सेवक रूप गुन माती। अखंड राजत जुग जुगनि उजागर रहौ अचल हित राती ॥१८॥ सयौ दिग विजै नृप सेवक चक्कवै हित पथ चल्यौ जग जीत। पावन प्रबल प्रताप जस लीनीं वन रानी जीत ॥१९॥ पद उसीर वंगला में खेलत हित की रीति प्रतिपाल। चिरजीवौ हित के नाद नंदन महारानी तेरौ लाल ॥२०॥ सात्विक उठत महा मधु पीवत जै सेवक सकृत सरीर। गद् गद् कंठ पुलकि रोमावलि जै सेवक भजन गंभीर ॥२१॥ नाद कुल कौ मंडन प्रगट्यौ रसिक सभा सिंगार। दुख मोचन सुख वारिधि प्रगट्यौ जै सेवक सुकुँवार ॥२२॥ भुवन सिखर गड़हा के मद्धै प्रिय सेवक अवतार। तीन लोक हित जस विस्तारयौ विमोहत सब नर नार ॥२३॥ रसिक अनन्यनि कौ जिय हिय प्रगट्यौ मेरी सजीवनि मूरि। प्राननि प्रान प्रिय सेवक सब के रसिक भाग के भूर ॥२४॥ प्रौढ़ा पराक्रमी हित रूप गुन गारौ हित धर्म धन कौ धाम। सस्मित वदन फिरै अलि मत्त ज्यौं श्रवत सुधा हित नाम ॥२५॥ जै श्री सेव्य जै श्री जुगल हित सेवा जै जूथ सखी स्वरूप। जै श्री वृन्दावन जै श्री विहार जुत नव निकुंज हित भूप ॥२६॥ प्राकृत अप्राकृत हित सेवा जै सेवक देह विदेही। वित्रेका हित थितु चित रंग्यौ महा सूछम गति नेही ॥२७॥ ये हित भोगी मैं इन पद प्यासी तन मन कियौ वलिहार। सेवक कुँवर कौ सदका पाऊँ मागति वारंवार

॥२८॥ (राग मारू) जाचूँ श्री रसिक नृपति नाद वंशे। महा अमंगली जीव हुतौ यह व्यास सुवन पद पंशे ॥२९॥ श्री हित राधा वल्लभ भजियें सबै अमंगल नंसे। रटति ढाढिनि चातिक की रसना सेवक पद परसंसे ॥३०॥ श्री कीरति कुँवरि जनम हौं जाची भाव सु सदिका पायौ। श्री नँद नंदन जनम हौं जाची चाह जु सदिका पायौ ॥३१॥ श्री व्यास मिश्र हित जनम हौं जाची हित सदिका हित पायौ। श्री सेवक सूर जनम हौं जाची हित कौ धर्म दरसायौ ॥३२॥ श्री नागरीदास जनम हौं जाची नेह दान में पायौ। त्रितिय सेवक प्रिय जनम हौं जाची महा मदंधी रस प्यायौ ॥३३॥ लाड़िली लाल सखिनु कौ हित प्रिय मो नैननि के तारे। सबै हित सिष्य (हित) गुरु सब के करि चरननि के प्यारे ॥३४॥ गई लैवै कौं आप विकानी रसिकनि में हित दरसे। रसिक अनन्य सजाती भजिये भजन सरोवर सरसे ॥३५॥ हित पथ चले चलत जे चलि है तिन पद मम निज दासे। तन मन धन इन पर न्यौछावर हित चरननि रति आसे ॥३६॥ (राग सोरठ) रोम रोम भई हितहि परायन प्रेमा पदवी आई। धर्म नींव हित व्रतधारी प्रगट्यौ चौखूँट खेरा पाई ॥३७॥ औघट घाट श्री व्यास सुवन पथ जिग्यासी ह्वै पाऊँ। करौ कृपा सेवक प्रिय मोपै कमल संगी सिर नाऊँ ॥३८॥ आज वधाई पाऊँ सेवा भीतरी जनम जनम जस गाऊँ। हौं ढाढिनि अजाचक भई जाचक तुव प्रसाद कँनूका पाऊँ ॥३९॥ दिये न लैहौं चौदह लोक सुख इनहीं पद रज धाऊँ। रज में देह मिले प्रिय पहिलें व्यास सुवन पद पाऊँ ४० इन रसिकनि की बाँदी आनंदी हित विन मोल जु

आनी । महा प्रसाद कृपा दृष्टि की पागी हित लाड़िले मन मानी ॥४१॥१२॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--(हेली) (सावन बदी १३ की रात्रि में)

राग सोरठ---हेली हित रमानंद घन ऊनयौ अति रंग भरयौ दिन आजु कौ । हरिवंश नेह मारुत तें री हेली नाइक सखिनु समाज कौ ॥हेली०॥१॥ सुरत समुद्र झकोरी री हेली स्वामिनि हियौ उफनायौ । लाड़ देस दिसि उलह्यौ री हेली गडहा निवासी छायौ ॥हेली॥२॥ आनंदित थिरचर री हेली प्रमुदित हिय अनुरागी । घर घर सजी जुवती आवनी री हेली गलिनु मची है धूम पागी ॥हेली०॥३॥ करनि कंचन फबें थार री हेली मत्त गयंदिनि छूटी । जग मगात दामिनि सी री हेली एकहि डार की सी टूटी ॥हेली०॥४॥ हरे हरे पट लाल बूँटी री हेली वीर बहूटी धर खेलें । झिलि मिलात किनारी री हेली इंद्र धनुष छवि रेलें ॥हेली०॥५॥ खिसत कुसुम बैंनी तें री हेली चरन चलनि पर बरसैं । बजत नूपुर झिल्ली बोलें री हेली जलज लरी बग सरसैं ॥हेली०॥६॥ श्रम जलकन मुख अलकैं री हेली नव जोवन अधिकाई । लोल नैंन मीन तरत री हेली कुच चकवनि कठिनाई ॥हेली०॥७॥ मुख कर हृद नाभि चरन री हेली फूले अंबुज राजैं । अलक रोमावलि अलिगन री हेली मुसकति गावति गाजैं ॥हेली०॥८॥ मंगल सरिता उमड़ी री हेली द्विज सुत सिंधु कौं धाई । मंडित भवन मलयज सौं री हेली वंदन माल बँधाई ॥हेली०॥९॥ तोरन कलस पै दधि हरदी री हेली पाँचौं शब्द बुराई । ज्यौं तीजे भयौ चौथे री हेली लखि मुख सुधि बिसराई । हेली० १०

कुँवर दामोदरे लडावत री हेली हित लखि हित खरकंत। हिलग दामिनि हिये कौंधी री हेली भाय गिरा घोर वरषत ॥हेली०॥११॥ धुरवा भाय मेह नेह री हेली अगगग आशक्ति गरजंत। सौंदर्य आकृत माधुर्य गुन री हेली हित सेवक वरषंत ॥हेली०॥१२॥ उदमद गरज गंभीर घन री हेली हित थित वरषि लसंत। अगाध सुधा रस भरयौं नाम री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१३॥ हरित हृदय अपनी भई री हेली छायौ घुमड़ि उनंत। प्रेमामृत रस ओघ धारा री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१४॥ नव जलधर कोलाहल री हेली तन मन ललक उमहंत। रसाल प्रनाली सुख सार री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१५॥ अंकुरित सब हिय कंठ री हेली हग हरिवंश वसंत। दिव्य सुधा सिंधु वृन्दनि री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१६॥ गौर सजल घटा घन री हेली नव नव ललक उठंत। रोम रोम अंग धुरवा री हेली हरिवंश रस वरषंत ॥हेली०॥१७॥ जलद सजल हित रस री हेली रुकि रुकि अमीयें झरंत। मृदुल मधुर कल रस रेला री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१८॥ घूँमि झूँमि अम्बुद रह्यौ री हेली मेह नेह सरसंत। धर्म मर्म हित रसानंद री हेली जै सेवक वरषंत ॥हेली०॥१९॥ नचत उन्मद मन केकी री हेली कोकिल कंठ नदंत। वदन चंद हृद सिंधु री हेली स्वाति झरि गिरा वरषंत ॥हेली०॥२०॥ झकझोरे वनमाली री हेली सर्वसु उमगि लुटंत। भींजे भींजत भींजि है री हेली मेह नेह नहीं अंत ॥हेली०॥२१॥ अनुरागे सब इक्क मिक री हेली घर घर मङ्गल नवलंत। चातिक प्रियादास हित घन री हेली जै सेवक वरषंत हेली० २२ १३

श्री प्रियादास जी महाराज कृत–[सावन बदी चौदस कौ दिन मे]

राग चैती गौरी—अहो आजु जनम धौस हित चंद्र चकोर सेवक सूर कौ। अहो शुभ सावन तीज सुहाई चकोर सेवक सूर कौ ॥१॥ महा मंगल सकल गावत सजें नौमत अंग। निकुंज गडहा वाद इक सिक फूल फूलत अभंग ॥२॥ आसक्तिता दिस दिस छई जग मग रह्यौ उर नेह। विसद मंगल रीति ह्वै रही लगी है झरी मानों मेह ॥३॥ गीति रीति पुनीति गावत नारी नरनि आनंद। प्रेम भीनें विवस निर्तत दुन्दुभि वजें हैं अमंद ॥४॥ कहत भींजे शब्द जै जै हियें सकल सिहाय। जनक हुलसत विधि सकल करि मान दान पग लाय ॥५॥ घर घरनि प्रति तोरन रुपे किशलय सु वंदन माल। घर घरनि प्रति मंगल रुचिर सुख वारिधि झरीय विशाल ॥६॥ घर घरनि पाँचों शब्द मिलि वजें धुल रहे इक डोर। ह्वै रह्यौ कोलाहल घर घरनि सुधि न निसा गति भोर ॥७॥ घर घरनि प्रति झरी दान लगि रही उमगि उमगि न मात। घर घरनि प्रति महा निर्त ह्वै रहे लखि लखि ललकि न छकात ॥८॥ घर घरनि प्रति दरवार चित्रित अति उमाहौं-हिय होत। ज्यौं भई हरिवंश जनमत त्यौंही ह्वै सेवक पोत ॥९॥ निरजल सरोवर सजल भये उमड़े आनंद वहंत। उखटे वृक्षनि पल्लव नए जुत फूल फलनि सरसंत ॥१०॥ असन सैन नित नित नवल सुख चतुर दिसि जिय पाय। अशुभ विश्व के दूरि मिटि गए हित जूही हाथ विकाय ॥११॥ भजन भाव हित रीति पुष्ट महि हित सुरस विस्तार। सकल जन हित धर्म चल ह्वै सेवक जू अवतार १२ भजन-रस मय वपु धर्यौ

गौरांग हित पद लीन सुखनि सागर गुणनि आगर लखि शशि सोभा हीन ॥१३॥ शान्त रस आलय दिपत भृकुटी जुटीं थिर नैंन। हित ही रसामृत मद छके अलसौंहनें घूँमत चैंन ॥१४॥ वदन अम्बुज डह डह्यौ विटकुल नृपति उज्जास। हरिवंश हित दुलरायवे की ललकि चाव नव आस ॥१५॥ हरिवंश मन्दिर दृग दिपैं निरवधि रमित हरिवंश। धरि रहे मूरति नैन में भरे सगुन हियें अवतंश ॥१६॥ स्वाँस लै हरिवंश दरसत लग्यौ चित अनुराग। रोंम रोंम मधि धुनि प्रगट ह्वै श्री हित हरिवंश सुहाग ॥१७॥ सुभग ग्रींवा अंस कलरव बाहु चारु विशाल। रुचिर उदर रोंमावली कटि छाम सुदेस रसाल ॥१८॥ अभिराम जंघा सोभिये कमनीय पद अरविंद। रँग मगे अँग हरिवंश मद सौं मत्त द्विरद गति निंद ॥१९॥ मुक तन अवस्था मत्त अनु इन छवि कहत नहिं आय। हित जू रसायन में छके तन प्रान पुष्ट मन चाय ॥२०॥ हरिवंश धर्म अनन्य मूरति अरु प्रसंसा ये जु। येई भोगी अस्तुती हित वस्तु सदन येई हे जु ॥२१॥ मूर्त्ति यह प्रिया हिलग की पिय निरखि सात्विक अंग। लगि रह्यौ झुरमुट सकल साजन निर्त्त गान अति रंग ॥२२॥ सिंगार षट दस वैस षट दस सजें सुरङ्ग तियल तीय। फटिक मनि कुरसी पै राजैं पग लटकाये सामुहे पीय ॥२३॥ तकिया सुहृद अलि हीयरा अहा कहा वाँनिक सौं घूँमि। जोवन तरंगैं लेत है पिय वीरी सुमुख दै चूँमि ॥२४॥ विन समैं कौतुक लाल देख्यौ थके लखि कर जोर। छुटि छूटि जाय वेर वेर बेंदी भाल लरक लरी जोर ॥२५॥ धरत पग चूरा कील निकसत पुलकि रोंमनि पीय कुसुम कल धंमल्लिका

गुहि ग्रंथ वेर वेर मरकीय ॥२६॥ हरी कंचुकि खमकि रही ताकी तनी तरकंत । सरकंत सारी सीस तें प्रिया आँखि वाँहैं फरकंत ॥२७॥ अलभ लाभ अन भयौ कौतुक जानि पिय ही नैंन। हरित लखि वन भूँमि ह्वै रही जमुन कलोलत चैंन ॥२८॥ खिल्यौ कानन आन भाँतिन कुसुम नवल फल पात । भुक्यौ भूँमत जमुन कूलनि वरषि अमी मद मात ॥२९॥ खग छके चहचर करत सहचरि ललनि विकसात । आनंद अम्बुद घुमडि लखि पिय प्यारी सौं पूछात ॥३०॥ हा हा जु हा हा स्वामिनि कहौ यह कहा अद्भुत रीति । हरिवंश अलि के लड़वनें कौ प्रागट्य आज मम मीत ॥३१॥ प्रेम सुनि मव गात उमड्यौ विवस एकै रीति । रवकि हित जू हियें लये दोऊ कह न सकत रस रीति ॥३२॥ कवहुँक दुहूँ तन सुधि भई हरषत अलिहिं मुख चूँम । समात न फूलनि गात दोऊ उलथ पुलथ महवूब ॥३३॥ हरिवंश हंस तन जु गसे मन फँसे सुरत सुलाय सेवक जनम के दिवम सुख लखि हित प्रियादास सिराय ॥३४॥ रहसि रमि पिय मंग लटकि रही छकी रस में पैर। सुधंग अंग में कुशल गोरी सुरत सिंधु लौं लहैर ॥३५॥ कोक कलनि गुन उदित नव ह्वै रह्यौ सेज सुराम। अभिनय कुटिल भृकुटी मटकि रही खिसे हैं भूषन अँग वाम ॥३६॥ अलि लंपट प्रीतम विवस श्रोनी पै कवरी भूल । गोरी मुसकि चटकावहीं लखि करज नासा पुट हूल ॥३७॥ वदलि गति फिरि अधर प्यावति फिर विवस फिर चेत । अलकैं कुचनि पर छुटि रहीं फूली मत्त गयंजनि रमेत ॥३८॥ अलि गन रसासव गटकि हीं हरिवंश दायक एक। धनि जयति सेवक सौहिलौ रस वारिधि वटैं है अनेक ॥३९॥ जै श्री रसिक हित प्रियादास

घूँमन गूँग भयौ मधु खाय । हरिवंश हिये की ललकि कौं कोउ बिरले समुझै हाय ॥४०॥१४॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--[सावन वदी चौदस की रात्रि में]

राग आसावरी—सुख संपति साहौ हित रस दायक आयौ । सजनी पर आसक्ति विहारिनि विस्तारनि भुव धायौ ॥१॥ हितगनि की सलिता चढ़ी गडहा आसक्ति बिरवा लह लहायौ । सर तें औसर कियौ अलबेले श्री सुख सेवक कहायौ ॥२॥ सुनि हरषित उर भाय जु काब्यौ मन हरि रसद गिरायौ । मृदु कल मधु हरिवंश पद पंकित कोविद चित प्रमुदायौ ॥३॥ दंपति संपति पावस बरषत सुजस वितान तनायौ । हरति वृत्तनि पर सौंज लियें निज पावस समाज बनायौ ॥४॥ सम्पूरन आनंद मन हरषित गरज घुमड़ि घन छायौ । उघटत शब्द चातकी चौंपनि अलि सुर मधु तर लायौ ॥५॥ केकी नट अद्भुत श्रेनी लियें निर्तत अभिनय जु घुमायौ । कल कौलाहल की धुनि वितरति अति रस भरि सरसायौ ॥६॥ पंच शब्द घोरनि बज कुहकनि सुर इक डोर बँधायौ ।ताननि गुन गाती माती कोकिल प्रमुदित मंगल गायौ ॥७॥ श्रुतिन सुनत सुख भीर जु उपजत या रस तिहुँन छकायौ । हुलसि आय तरु पत्र फूल फल वंदन वार बँधायौ ॥८॥ आसा सथिये नेंह सीक धरि सवासिनि रसिक लुभायौ । प्रेम प्रीति बलि ललक ललू हित वित धर्म मर्म जुत धायौ ॥९॥ उमड़ि धरनि पर रस इक मिक भई रंकता मनसि बिलायौ । पसु पंछी जंगम अरु थावर सबै हित रंग पिवायौ ॥१०॥ सोई आसक्ति छटा कनु लषियतु थिरचर हियौ भरायौ । मोर चकोर सलभ मीन चातिक विन सिर रहत सदायौ ११ ।

यह बरषा रितु हित थित वरषत तन मन सकल हरयौं।
सावन रसीले प्रियादास कीले सेवक सुहेलरा छायौ ॥१२॥१५॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—[सावन वदी १५ अमावस्या को दिन में]

राग धनाश्री—सावन सरस लुभावनौं, हित झरी लगी घन ॥ सुभग तीज दिन आजु ॥ सरस लुभावनौं हित झरी लगी घन ॥ अगगगगग घन गरज हीं ॥ हित झरी लगी घन ॥ चमकि चमकि चपला जु ॥ सरस लुभावनौं० ॥१॥ गौर स्याम घन ऊनये ॥हित०॥ रितु सेवक आसक्ति ॥सरस०॥ सांज मिथुन घन संग लियें ॥हित०॥ उमगि धावन अनुरक्ति ॥सरस०॥२॥ इत जग मगै तन राधिके ॥हित०॥ नव दामिनि लहरात ॥सरस०॥ उतै जग मगै तन हंस कौ ॥हित०॥ सजल जलद सरसाय ॥सरस०॥३॥ इत नीलाम्बर फबि रह्यौ ॥हित०॥ सोई घन रह्यौ छाइ ॥सरस०॥ उत पीताम्बर सोहई ॥हित०॥ सोई दामिनि लह लहाय ॥सरस०॥४॥ इतहिं किनारी झिलमिलैं ॥हित०॥ इंद्र धनुष सोई दीप ॥सरस०॥ मोर मुकुट उत सीस रुचि ॥हित०॥ इंद्र धनुष सोई समीप ॥सरस०॥५॥ इतहिं केश धुरवा छुटे ॥हित०॥ फूल झरें परें बूँद ॥सरस०॥ उत अलकें छूटीं रुरें ॥हित०॥ धुरवा रहे मुख मूँद ॥सरस०॥६॥ लहरात तान हँसि लेत हैं ॥हित०॥ गरजन ह्वै इत चारु ॥सरस०॥ हंसी मुख वंशी नदै ॥हित०॥ इही ह्वै गर्जन तत चारु ॥सरस०॥७॥ जलज माल इत कुच रुरैं ॥हित०॥ सोई वग पाँति विशाल ॥सरस०॥ उत वनमाला तरलई ॥हित०॥ है वग पाँतिन जाल ॥सरस०॥८॥ लहँगा हरित बूँटी रक्त इत ॥हित०॥ रहि धर हरि वुड़ सोहि ॥सरस०॥ उतहिं हसन

रूप ललचई ।।हित०।। वरषा ह्वै रहि छवि जोहि ।।सरस०।।६।। नूपुर रस सनें इत वजैं ।।हित०।। झिल्ली बोल रस देत ।।सरस०।। उत रोमांचित ह्वै रहे ।।हित०।। हरे भये त्रिन छवि देत ।।सरस०।।१०।। इत जोवन सरिता वढ़ी ।।हित०।। त्रिण टूटत दृग आल ।।सरस०।। उत किंकिनि धुनि घुरि रही ।।हित०।। वोलैं झिल्ली करें ख्याल ।।सरस०।।११।। इत दृग तिरछौंहैं चलैं ।।हित०।। तैरे हैं मीन कुलकात ।।सरस०।। उत मोहन मन मगन ह्वै ।।हित०।। नचतसिखण्डी झुकलात ।।सरस०।।१२।। कुच कठोर इत उमगई ।।हित०।। चकवा कसे आँगी जान ।।सरस०।। रूप पाँनिप उत वढ़त है ।।हित०।। नदी चढ़ी रति ठान ।।सरस०।।१३।। मुख कर हृद नाभि चरन इत ।।हित०।। रुचिर कमल रहे फूल ।।सरस०।। उत जोवन उमगत नयौ ।।हित०।। उठत तरंगें हित झूल ।।सरस०।।१४।। इतहिं ललित रोमावली हित०।। निकर भ्रमर करें गुंज ।।सरस०।। मकराकृत कुंडल उतै ।।हित०।। तरत मीन मिलि पुंज ।।सरस०।।१५।। इत मुसिकनि मंद होत है ।।हित०।। उठत लहर गंभीर ।।सरस०।। उत कुशमित दृग लाल के ।।हित०।। विकसे कंज नील भीर ।।सरस०।।१६।। उमगि भरयौ मन इत प्रिया ।।हित०।। कोकिल कुहक कुतूह ।।सरस०।। उत भृकुटीं गैरयात हैं ।।हित०।। हैं चंचल भ्रमर समूह ।।सरस०।।१७।। छविनि भीर इत नासिका ।।हित०।। शुक चहचर करें लीन ।।सरस०।। उत नूपुर रव कल करें ।।हित०।। मराल गान रँग भीन ।।सरस०।।१८।। आनन कल पानन भरयौ ।।हित०।। डह डहाय रह्यौ प्रीय ।सरस०।। घुँघरारी लट तापरि छुटीं ।।हित० लखि सुधि गई

पल पीय। सरस०॥१६॥ मनौ फूले हेम के कंज पै ॥हित०॥ भ्रमरनि लखि कें माल ॥सरस०॥ हंस चकित कल ह्वै रह्यौ ॥हित०॥ अलभ लाभ लहि लाल ॥सरस०॥२०॥ हियौ हित भर आजु कुँवरि कें ॥हित०॥ उमटि चल्यौ है रंग ॥सरस०॥ झिलि मिलात अँग अंग में ॥हित०॥ संगम ह्वै सेवक अंग ॥सरस०॥२१॥ पिय कहें करौं कहा आजु बलि ॥हित०॥ कहा ठौर ही राखि ॥सरस०॥ लखि कृत प्यारे अलि सुहृद कौ ॥हित०॥ जाकृत तुम यह भाखि ॥सरस०॥२२॥ हरिवंश लाड कौ नेह लहि ॥हित०॥ स्वामिनि हियो अकुलाय ॥सरस०॥ मैं इन्हें यौं कब लडाय हौं ॥हित०॥ पच न सक्यौ इहि भाय ॥सरस०॥२३॥ मनसि विचार निहारि कें ॥हित०॥ गइहा हिलग निवास ॥सरस०॥ श्री सेवक ह्वै रस बिस्तरयौ ॥हित०॥ दृढ़ हरिवंश उपास ॥सरस०॥२४॥ गर्ज गर्ज दोऊ तुल रहे ॥हित०॥ समयौ बाट निहार ॥सरस०॥ मंगल दिन घरी आठ रहैं ॥हित०॥ ह्वै रह्यौ जै जै कार ॥सरस०॥२५॥ मन्मथ मन्मथ वपु धरयौ ॥हित०॥ गौर कनक मद त्रास ॥सरस०॥ चाह आवेस मन मगन ह्वै ॥हित०॥ प्रसन्न वदन मृदु हास ॥सरस०॥ ॥२६॥ किलकत हित ही की सेंज पै ॥हित०॥ विनमित मन अभिलाख ॥सरस०॥ हरिवंश हरिवंश हरिवंशै ॥हित०॥ रसना पट रस चाख ॥सरस०॥२७॥ चाखि चाखि हरिवंश रस ॥हित०॥ गुन विस्तार अपार ॥सरस०॥ अनमोदन विकसें करें ॥हित०॥ पी श्रुति भरि पुट चारु ॥सरस०॥२८॥ लगि रही दृष्टि हरिवंश में ॥हित०॥ गड़ी है रूप देह माहि ॥सरस०॥ मुदित वदन हित सदन है ॥हित०॥ लखि जन सब हुलसाहिं सरस० २६

गड़्हा वाद निकुंज मे हित० भीजे रस में चुचात मरस० वंदन वार बाँधी वंदनी ॥हित०॥ भरे कुच कलस कुलकात ॥सरस०॥३०॥ गीत पुनीत दोऊ गावहीं ॥हित०॥ नव नव छंद रस चार ॥सरस०॥ सथिये कपोलन चित्रहीं ॥हित०॥ बाँटत रूप अपार ॥सरस०॥३१॥ कंकन धुनि नूपुर किंकिनी ॥हित०॥ मिलि सुर घुर वँधे डोर ॥सरस०॥ उमगे जाचक लंपटी ॥हित०॥ अंग रस वढ्यौ (है) न थोर ॥सरस०॥३२॥ गुराई गोरे रंग लुटै ॥हित०॥ लुटै सुमृदुता चारु ॥सरस०॥ मुसिकनि में मधुरई लुटै ॥हित०॥ सेवक सुहेलरा चारु ॥सरस०॥३३॥ लोयन के कोयेन तें ॥हित०॥ लुटत चपलता चारु ॥सरस०॥ वत्तस्थल गरुवाई लुटै ॥हित०॥ सेवक सुहेलरा चारु ॥सरस०॥ ॥३४॥ कटि तें सूत्तमताई लुटै ॥हित०॥ लुटै लडकाँनि सुचारु ॥सरस०॥ गवनत में जु धिराई लुटै ॥हित०॥ सेवक सुहेलरा चारु ॥सरस०॥३५॥ श्रोणी तें सुमरई लुटै ॥हित०॥ लुटत सु दलकनि चारु ॥सरस०॥ भौंहनि तें कुटिलई लुटै ॥हित०॥ सेवक सुहेलरा चारु ॥सरस०॥३६॥ अधरनि तें जु ललाई लुटै ॥हित०॥ लुटै मुख पाँनिप चारु ॥सरस०॥ रसना तें बैन नहि नही लुटै ॥हित०॥ सेवक सुहेलरा चारु ॥सरस०॥३७॥ जाँच-कता पिय की मिटी ॥हित०॥ पायौ राधावल्लभ नाम ॥सरस०॥ जोई जोई प्यारौ है करै ॥हित०॥ सोई मोहि भावै अभिराम ॥सरस०॥३८॥ प्यासे रहते रसिक सब ॥हित०॥ सेवक जु जन्म न होत ॥सरस०॥ हरिवंश सुरस अतुलित दयौ ॥हित०॥ पी छक मत्त उदोत ॥सरस०॥३९॥ रसिकनी रसिकानंद मय ।हित० वरषत घुरें उजास सरस० जै श्री दामोदर हित

रास में ॥हित०॥ भींजे हित प्रियादास ॥सरस०॥ लुभावनौं हित झरी लगी घन ॥४०॥१६॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—[सावन वदी १५ अमावस्या की रात्रि में]

राग राइसौ—सजनी हित गोरी आगमनि नेह देह गर्व आई। हरषि चंद्र निसि सरद के दिसि दिसि अमीयें झराई ॥१॥ फूलि फूलि हँसि निर्तौहीं रास रंग सरसाई। अधर पान रस मगन हित थिरचर चित ठहराई ॥२॥ हिलग चौंप भरि ललकि के खरक हियौ धरकाय। लगी रहै जक प्रान कौं पुलकि गरौ भरि आय ॥३॥ इहि आवेस चित चढि रह्यौ छवि मुख देखनि लालौं। आसा वाही कूँख की कव सेवक ह्वै पालौं ॥४॥ कातिक मति कातर करी अगहन अघट घट प्रेमा। पूस पसारौ अनुराग कौ माह महा सुख धामा ॥५॥ फागुन भागनि सौं आयौ चैत चित्र सव कीन। विशेष वैशाख हित सरसयौ लल-क्यो कूँख में मीन ॥६॥ जेठ जेठौ रंग दृग चल्यौ आस असाढ असाढी। गिनत गिनत वितए दिना विरह तपन अब काढी ॥७॥ गरज आयौ हिय भाँवतौ पावस रितु घुमडाई। बालक जायौ बाल नें सावन तीज सुहाई ॥८॥ घुरत सैदानें धुनि सुनि वधू चपल चलीं चपलासी। गावत ऊँचे सुर सदन में घुमड़ि रमड़ि शिशु पासी ॥९॥ करत जुहार लाल माय कौ दै आदर सिंगराई। अप अपनी रचना मगन कोषनि जनक लुटाई ॥१०॥ ग्रह वन इक मिक ह्वै रह्यौ चातिक शब्द उघटाई। निर्त रही सिपी मंडली कोकिल तान उठाई ॥११॥ अनियास मत्त रनिवाँस सव हरिवंश हरिवंश भाषैं। निज प्रताप आसक्ति सुनि किलकि कुँवर अभिलाषैं ॥१२॥ विहँसनि दुति मुख छै रही

दृगनि लाहौ रूप पागी । रसनि लाहौ गुन कहनि कौ चित लाहौ अनुरागी ॥१३॥ हित रस सुधा कौ चंद्रमा पूरन उदित सदाये । थिरकि रह्यौ प्रेम गगन में घट धरि वरषि जिवाये ॥१४॥ हियें धरि आये सो कह्यौ अकह अदिख दिखरायौ । नेह नातौ करि पति व्रता पति विभौ विलस लुटायौ ॥१५॥ श्री हरिवंश स्वरूप कौं जग विस्तारन हेत । सेवक सकृत कहायवौ पोषी अभिलाष छैल चेत ॥१६॥ हरिवंश सरन सेवक जिते सुनौं रस रीति गति चूर । कहनि रहनि सेवक आगें औरातें ज्यों धूर ॥१७॥ प्रगट करी हिय कीं सवै उपज निपज हित वात । सिरये हिये प्रियादास सुनि चले धर्म सूर इतरात ॥१८॥१७॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—राग मारू (सावन सुदी परवा कौ दिन में)

वंदौ श्रीव्यास सुवन नाद नंदे । सुधन धर्म हरिवंश चंद के ता आनंद के वंदे ॥१॥ हित जू हित करि करि गोरी पोषे उमगि हदौ उपटानौं । ता हित हिलग गोरी सेवक ह्वै विस्तरयौ सोई गुन गानौं ॥ हित जू तन धरि रूप छिपायौ राधाहि रति रस भाष्यौ । रूप रु गुन गौरव नेह न रुक्यौ गोरी सेवक ह्वै भाष्यौ ॥२॥ धन्य सुदेस धन्य कुल जनमें धन्य तात धनि माता । ज्यौ वसुदेव सदन पुनि व्रज पति यों सेवक हित ताता ॥ इत मंगल पावस रितु छायौ इत घर घर नर नारी । ठाँव ठाँव हित रति ही पाइयत रंक न कोउ थिर चारी ॥३॥ सावन तीज सुभग कल प्रमदा घर घर मंगल गावैं । दिवि दुन्दभि वजये सुर जै जै सिरये हियें ठाँव ठांवैं ॥ तोरन वंदन वार सोभियत चित्रत कौरनि फूली । पंच शब्द झरी दान प्रतिग्रह हुलस निर्त्त गति भूली ४ छाय रहे उदमदे घन दिस दिस सर सरिता भरे झेली ।

मारुत त्रिविधि श्रवत द्रुम लह लहे सव उर सब सुख देली ॥ चातिक शब्द उघट रहे माते केकी नट थिरकावें । कुल कोकिल कल मंगल गावत हित पद रति धन पावें ॥५॥ उगलि गिरा उर भाय सुगायौ दुलराइ लडाइ सचु पायौ । अपनी जीवन सव जीवनि करी सेवक सकृत कहायौ ॥ सार सार कौ सार हढायौ वानी रति हरिवंशी । हित वैभव वानी रसि पाइयतु के हित नाम प्रसंशी ॥ ६॥ जै हरिवंश धर्म गुन गारे आदिख दिखैया चटकीलौ । भाजन भजन हित धन अधिकारी रखवारौ अरवीलौ ॥ विमल सुहृद जे सेवक धर्मा मर्मी धीर गंभीरा । अलक लड़े सुद्ध साधु सुजन सुख संपति सुकृत शरीरा ॥७॥ रसिक सभा मंडन जे सेवक रसिकनि भूषन अंगी । हित भोगी जै महा मंगली सत्त सुखद हित रंगी ॥ हित रसानंद लहरी अति नेही हित आसक्ति सुभागी । ललित कलप तरु हित पथ अंजन जे सेवक अनुरागी ॥८॥ परम हंस जे भजन सरोवर धर्मिनु विश्रामा सुखधामा । शीतल रसद विशद आनंद घन मंगल रूप अभिरामा ॥ जै सेवक हित गुननि मंजूसिका अनुपम रसिक रसाला । या विन प्रतिपालक सुखदाइ जै सेवक नाम माला ॥६॥ सुख निधान समरथ जै सेवक सुजस सुंदर सुकुमारा । जयति सुजान श्री हित पद सेवी हित धर्मी मूल उचारा ॥ अति उत्तम संतोषी पोषी जै सेवक जु सनेही । मृदुल कृपालु कुशल सरसीले वेपरवाही हित सेही ॥१०॥ जैति लाड़ हद अचल अमानौं रसानौं सुजलचर वानी । दुलरैया हद हद है उपासिक कोविद उदार वखानी ॥ करुना कर रु सुखा-कर जै हित धर्म दिवा कर पाजै । सदा किशोर गुननि गंभीरनि

नेही निपुन सु गाजै ॥ ११॥ मुदती अघट अलभ निधि प्रबलौ हरिवंश हंस कौ छौना । गरवीलौ रु गुनीलौ मतीलौ मंगली पंथ इकौंना ॥ हित जु मर्म कौ तत्व जै सेवक भजन अवधि तम हारी। भजन सवादी चौखौं चौखौं निर्मल सेवक जिवारी ॥१२॥ अकथ कथक हरिवंश सरस्वती सुकृती सूर विनोदी । हरिवंश रस अनुराग पसारौ सुखनि समूहनि मोदी ।। हियौ सिरैया मर्म सिरैया भजनहि मर्मनि तोष्यौ । साध अगाध मोद निधि सेवक हित जु गिरा तन पोष्यौ ॥१३॥ हित पग्यौ प्रेम सुरस हित सागर मत्त दसा जै मराली । जैति सुघर हित भेदनि मथि भरयौ हरिवंश रस की प्रनाली ॥ जै सेवक हित प्रेम परपाटी रसिक रसाल बड़ धीरा । उदमदे प्रेम हुलास प्रकासक मद माते गरव गंभीरा ॥१४॥ तन मन प्राननि धर्मनि पोषक सकृत सेवक जै लाला । गहर अगाध जनक हद भेदी फवि गुन रत्न उर माला ॥ सुनि सुनि गुन वनचंद विमोहे निसि दिन भेंटनि आसै। मिलत न्यौछावरि सर्वसु कीनौं को समुझै इन गासैं ॥१५॥ बड़ भागनि पायौ ऐसौ प्यारौ प्रसंशित कंठ लगायौ । उमड्यौ प्रेम प्रवाह सुर गद गद परम सुखद निधि पायौ ॥ देखि देखि मुख नैंन सिरावत श्रवन सीतल सुनि बानी । तन मन हिय जिय तो विनु को पोषै वलि वनचंद वखानी ॥१६॥ अहा कहा हित नाम सुनायौ तन मन असु बलिहारी । अघट घाट हित गिरा दिखायौ सर्वसु तोपर वारी ॥ जै सेवक हित धर्म सिखायौ हित प्रभु तें प्रभु भारी। प्रिय प्रियादास सेवक पद जो सेवै ता पद सेंऊ उर धारी ॥१७॥ कठिन काल भव जल चढ्यौ ऊँचौ मिहीं पथ नहि दीखै वचन रूप पुल बाँध्यौ कसकी कोविद हेरत

दीखै । मन मुखि चलत वितंडा धरमी नाम कहाय सो भासी । सेवक मत चले चलत चलैं जे तिन पद रज हौं उपासी ॥१८॥

बाँकी तुकें चैती गौरी—अहो झर लागि रह्यौ है रंग अंगनि गोरी पिय नचैं । अहो त्रिन भूषन भूषित व्रज गोरी फूल गोरी पिय नचैं ॥१६॥ नैंन स्वेत रु स्वेत है रदन रदन हँसन है स्वेत । नख सुचं-द्रिका स्वेत हैं सजैं रसद मनोहर स्वेत ।२०। केश स्याम रु हगनि की पुतरी हैं स्याम सुदेस । तिलक सुस्याम रु स्याम हैं सजे कुचनि अग्र वर वेस ॥२१॥ चारि अंग सूक्षम लखित लुनाई मों भरे देख । हगनि कोर रोंमावली सजे सूक्षम पिय हिय लेख ॥२२॥

बाँकी तुकें रायसे में—सु नख चंद्रिका अग्र जे तेहू सूक्षम सजैं राजैं । अरु कटि सूक्षम सोभिये पिय मोहन हित साजैं ॥२३॥ आनंद मय छवि छय रहे थूल चारु सजैं औरैं । अंस पीन इक जुग दिपैं पयोधर पीन गरोरैं ॥२४॥ श्रोणी जघन स्थूल जुग दिपति चारौं सुख मूली । ये षोडस सिंगार रसद प्रीतम पर अनुकूली ॥२५॥ लाल जघन कल पुलिन में सजैं निरति हित प्यारी । नूपुरादि किंकिनि चुरी मधुर परन सुखकारी ॥२६॥

श्री मुख कमल को पराग—राग सोरठ रहसि रहसि मोहन संग हेली अति रस लडैती जू लटकहीं । सरस सुधंग अंगनि में नागरि हेली थेई थेई कहि धर पग पटकही ॥२७॥ कोक कला कुल जान मनि हेली अभिनय कुटिल भ्रु मटकहीं । विवस भये अलि लंपट पिय हेली निरखि नासा पुट चटकही ॥२८॥ गुन गन रसिक राय चूडामनि हेली रिझवत हार पद झटकही । जै श्री हित हरिवंश निकट दासी जन लोचन चषक रसासव गटकही ॥२९॥ श्री मुख कमल कौ पराग राग जै जै वती अहे विपिन

घन कुंज रति केलि भुज मेलि रुचि स्याम स्यामा मिले शरद की जामिनी। हृदै अति फूल सम तूल पिय नागरी करनि कर मत्त मनौं विविध गुन रामिनी ॥३०॥ सरस गति हास परिहास आवेस वस दलित दल मदन वल कोक रस कामिनी। जै श्री हित हरिवंश सुनि लाल लावण्य भिदे प्रिया अति सूर सुख सुरत संग्रामिनी ॥३१॥ बाँकी तुकें राग मारू में—सेवक वपु कौ आवेश भरयौ गोरी घट तन सुरस लुटावै। पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहिं नख सिख प्रिया जनावै ॥ वारिधि केलि कल्लोलनि सींच्यौ श्री रसिक नृपति वल वोलै। श्री प्रियादास सेवक कौ चिकुला कोऊ न लहत कलोलै ॥३२॥१८॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत–(सावन सुदी १ परवा की रात्रि में)

राग सोरठ—जै हरिवंश धर्म गुन गारा। प्रगट्यौ सब रसिकनि सिंगारा ॥ हित जू गुन जानत एक प्यारी। वितरनि हित गड़हा अवतारी ॥१॥ जननी कूँखि धनि विमल विसाला। हित भजनी दियौ कुँवर रसाला ॥ ललित मुदित मुख अनुपम सोहै। अंग अंग अति कल सकृत जनौ है ॥२॥ सुनि सुनि उमड़ी है नव वाला। नौसत सजैं गयंदिनि चाला ॥ मंगल सौंज करन हिम थाला। गहि महि घिरी जहाँ हित लाला ॥३॥ इक टक मुख सुख रासि निहारैं। फूल फूल सथिये धरैं द्वारैं ॥ दधि हरदी सौरभ छकी रेलैं। वाजंत्रनि भरी गावत खेलैं ॥४॥ चिरुजियौ कुँवर दामोदर वोलैं। हुलस जनक धन देत अतोलैं ॥ देखत देखत तन गति वाढ़ी। थिरचर मुदित गिरा मुख काढ़ी ॥५॥ रस हरिवंश वेद हियें काढ़े। पूरन नेह भरे नेही गाढ़े ॥ हरिवंश सौंदर्य्य आकृति दृढायौ गुन घन

माधुर्य भुव नभ छायौ ६ कीट भृङ्ग वत मारूपता पाई परम कहनि सब गाय सुनाई ॥ प्रगट प्रकास अप्रगट प्रकासा । हरिवंश चंद्र कौ प्रगट प्रकासा ॥७॥ भाव स्वरूप हरिवंश जु गायौ । जै सेवक सवै टेर सुनायौ ॥ स्व स्वरूप हरिवंश जु गायौ । जै सेवक सवै टेर दिखायौ ॥८॥ रूप आचार्य हरिवंश जनायौ । गुरु रूप हित रूप प्रथक लखायौ ॥ वंशी रूप हरिवंश जनायौ । सेवा रूप हरिवंश दिखायौ ॥६॥ धर्मी मर्मी धीर गंभीरा । सुहृद अलक लड़े सकुन शरीरा ॥ विमल सुजन शुद्ध साधु हित भागी । सुख संपति मंगली मत्त लोगी ॥१०॥ रसिक सभा मंडन जै इकंगी । रसिकनि भूषन जै हित रंगी ॥ अति नेही सुखद जै हित आसक्ती । हित रसानंद लहरी आसक्ती ॥११॥ जै हरिवंश ललित पथ अंजन । कलप तरू अनुरागी हित रंजन ॥ गुननि मंजूसिका हित सुख धामा । परम हंस धर्मिनि विश्रामा ॥१२॥ रसद विशद आनंद घन सीरे । हृद संपुट हित धारी मणीरे ॥ जै पावन प्रतिपाल रसाला । सुखनि निधान सुखदाई विशाला ॥१३॥ समरथ सुजसी जै सुकुँवारा । जै हित पद सेवी भान सुढारा ॥ जै हित धर्मी मूल संतोषी । मृदुल कृपालु उत्तम नेही तोषी ॥१४॥ सरमी कुशल जै बेपर-वाही । अचल अमानौं रसानौं महाही ॥ दुलरैया हृद लाड हृद बाँकौ । जैति उपासक हृद हित नाँकौ ॥१५॥ जै उदार कोविद करुना कर । सुखनि खौनि हित धर्म दिवाकर ॥ सदा किशोर गुन गननि झिलारें । सुदती अघट निपुन नेही धारें ॥१६॥ प्रबल अलभ निधि हरिवंश छौंना । मंगल पथ गरवीलौ इकौंना नौखौ चोखौ भजन सवादी जै हित मर्म तत्व नाद

गादी १७ तम विध्वंसक पावन गुनीलौ भजन अवधि निर्मल सु नवीलौ ॥ अकथ कथक हरिवंश विलासी । सुकृती विनोदी प्रेमनि गाँसी ॥१८॥ सुखनि समूहनि सुहृदी भारौ । हरिवंश रस अनुराग पसारौ ॥ हियरा मर्म सरईया सूरौ । मर्मी भजन अगाध साधु पूरौ ॥१६॥ हित जुहि गिरा दिपति तन पोष्यौ । हित रस सागर सब इन सोष्यौ ॥ मोदनि निधि विचित्र दसा माती । जौ हरिवंश प्रेम पगे राती ॥२०॥ हरिवंश रस की प्रवल प्रनाली । हित भेदनि भरयौ सुघर मराली ॥ पथ हरिवंश प्रेम परिपाटी । रसिक रसाल विशाल हित वाटी ॥२१॥ हित रस प्रेम प्रकाशक धीरा । हित मद मतौ गर्व गंभीरा ॥ तन मन प्रान धरम्मिनु पोषे । हित जू हार्द दिखायौ चोषे ॥२२॥ हित सजनी संग सेवक सजनी । मत्त द्विरद गति घाँननि सनी ॥ मगन सदा मन लीन अवोला । सुहृद अली संग करत कलोला ॥२३॥ श्री हरिवंश हियें में क्रीड़ैं । दंपति रस सम तूल सु ब्रीड़ैं ॥ सहज समीप अवोलनौं ठनाई । करत जु आनंद मूल सदाई ॥२४॥ काहे कौं डारति सुनि प्यारी । हौं जु कहत निजु बात सुढारी ॥ नेंक वदन सनमुख करौं प्यारी । छिन छिन कल्प सिरात है प्यारी ॥२५॥ वे चितवत विधु वदन तन प्यारी । तू निज चरन निहारति प्यारी ॥ वे मृदु चिवुक प्रलोवहीं प्यारी । तू कर सौं कर टारति प्यारी ॥२६॥ वचन अधीन सदा रहै प्यारी । रूप समुद्र अगाध है प्यारी ॥ प्रान रवन सौं कत करत प्यारी । विनु आगस अपराध है प्यारी ॥२७॥ मुसकि कृपा करि चितयौ प्यारी । लीने कंठ लगाइ पिय प्यारी सुख सागर पूरित भए झेली देखत

हियौ सिराय सहेली । २८ । कहति कहति कछु कहि न परति है हित सेवक छवि हियें अरति हैं ॥ सकृत सेवक हित केलि के भोगी । पद प्रिया दास वन्यौ है सँजोगी ॥२६॥ तिहुँ मिलि सिंधु सुरत कंज फूल्यौ । सुख मकरंद पी प्रियादास भूल्यौ ॥ मत्त मुदित जकि थकि रह्यौ मौंना । सेवक मीन कौ प्रियादास छौंना ॥३०॥१६॥

श्री आनन्दी बाई जी महाराज कृत—(सावन सुदी २ दोज को दिन में)

राग टेर लूम—आयौ दिवस मन भावनों, हिय कौं लखि आगम गति औरैं हें ॥ सुख सौरें हें ॥ हरित मनों अनुराग ॥ दृग घूँमें हें ॥ गौर वरन अवतार नेह हित आनंदित सुधि भूलें हें ॥ हियें फूलें हें ॥ कियौ प्रियादास सुभागनों ॥ दृग घूँमें हें ॥१॥ उत्कंठा उर तवहीं ते उपटी सुरस सुधा वरषानी हें ॥ उनमानी हें ॥ जानी ह्वै हित (हित) कौं तकै ॥ दृग घूँमें हें ॥ अनुभव वल प्रियादास अँग संगी, हित राधे नेह विलासी हें ॥ हिय दृढ़ वासी हें ॥ नेह देह कूँपि तक तकै ॥ दृग घूँमें हें ॥२॥ उठत चोंप नव हिलग हियं में उमगत प्रेम सवायौ हें ॥ ये भिलायौ हें ॥ ललक ललक जिय चित रह्यौ ॥ दृग घूँमें हें ॥ खरक खरक पर उठ हियौ हरषै धरकै अति अनुरागी हे ॥इटी लागी हे॥ आस आवेस लास लह लह्यौ ॥ दृग घूमें हे ॥३॥ छक छक प्रान रँग्यौ रँग जक में पानिप अँग अँग पैठे हे॥ अति मैठें हे ॥ ज्यौं जक थक अकुलाइनों ॥ दृग घूँमें हें ॥ प्रेम भीर पीर चौंप जनित ह्वै वरषा ज्यौं हित छायौ हे ॥ लौ खिचायौ हे ॥ मन चित वृत्ति वुडावनों ॥ दृग घूँमें हे ४ थर थर हियरा काँपत सूखत तपत देह मन

छोभित हे अति लोभित हे उठत सोच चोभ चित गड़त है ॥ दृग घूमें हे ॥ चौंकत चक्कृत उच्चाट मन वृत्ति गद गद कंठ रुकायौ हे ॥ ये सवायौ हे ॥ हिगें तड़ज्यौं छवि अड़त है ॥ दृग घूँमें हे ॥५॥ यह गति आगम करि प्यारौ प्रगट्यौ जननी कूँषि सिराई हे ॥ ये घिर आई हे ॥ गह मह भवन नव सुंदरी ॥ दृग घूँमें हे ॥ मनौं दामिनि करनी ह्वै छूटी, सरिता सिंधु ज्यौं मेलैं हे ॥ सुख झेलैं हें ॥ लखि शिशु मुख ऊँग्यौ इंदु री ॥ दृग घूँमें है ॥६॥ उच्च मधुर धुनि धार मल्हावति गावत मंगल माती हे ॥ हियौ सांती हे ॥ ज्यौं हरिवंश चित चोरियौ ॥ दृग घूँमें हे ॥ परत भरन वाजंत्रनि सुरकी, मनौं भादौं झर लायौ हे ॥ रानी जायौ हे ॥ हरिवंश रँग सब वोरियौ ॥ द्रिग घूँमें हे ॥७॥ घुरत टकोरा आनक सहनाई तुरही नफेर करनाई हे ॥ ये गुंज छाई हे ॥ डफ पुंज विच वंशी थोरि थोरि हे ॥ दृग घूँमें हे ॥ परत भरन ताल मृदंग रवावनि कठतार चंग झांझ घोरैं हे ॥ त्यौंहीं थोरैं हे ॥ आवज उपंग वीन किंनरी ॥ दृग घूँमें हे ॥८॥ गजक खमाइच-का नून कुंडली महुवर सारंगी रंगे हे ॥ ये अभंगे हे ॥ सुख की भरन सब हित मई ॥ दृग घूँमें हे ॥ मगन विप्र गुनी जन सु रिझावत तान तरंग उफनाई हे ॥ ये झुकि आई हे ॥ रहि पावस छई सरसई ॥ दृग घूँमें हे ॥९॥ अरुन असित सित उदमदे जलधर गहर गंभीर, गर्ज छाये हे ॥ ये चपलाये हे ॥ रही लह लहाय विच दामिनी ॥ दृग घूँमें हे ॥ धनुष मिल मिलाइ वगनि पाँत रमैं वरषत धुरवा धारा हे ॥ वहीं धारा हे । मुदित विश्व वलि आवनी दृग घूँमें हे १०

महा महोच्छव तन मन सब भींजे तरु वेली फूले फल लहे ॥ ये जुग डह डहे ॥ सजल सरोवर सरिता झिलि रही ॥ दृग घूँमें हे ॥ मारुत त्रिविधि श्रवत सीकर जुत हरी ये खगी ये भूँमि हर्षित हे ॥ ये हित वरषत हे ॥ मधुप मधुर धुनि ठनि रही ॥ दृग घूँमें हे ॥११॥ अति रस भरि नाचत सिखी कुल कल करत कोलाहल हें ॥ सुख टेरें हे ॥ कुहुकन केक कपोत परावती ॥ दृग घूँमें हे ॥ किलकें चातिक आतुर कूँजत मारो बोल झिंगारें हे ॥ यें धुनि पारें हे ॥ गावति कोकिल किल-कारती ॥ दृग घूँमें हे ॥१२॥ विस्तारत तान गुन राती माती लगि रह्यौ झुरमुट नौखौ हे ॥ भर चोखौ हे ॥ मिलि सुर डोरा एक ह्वै रह्यौ ॥ द्रिग घूँमें हे ॥ ज्यौं दिन मनि शशि कीरनि चहूँ दिसि यों समयौ यह छायौ हे ॥ ये उठि धायौ हे ॥ कुँवर स्याम कौ डह डह्यौ ॥ द्रिग घूँमें हे ॥१३॥ राग फिरयौ जैतिश्री-

आजु हमारे सुहेलरा सुहायौ । प्रगट्यौ कुँवरि हिय भाव ॥टेक॥ रस सौंदर्य प्रेम की आकृति तन मन सकल घुमावैं । उलटी समुझि सेव्य हित आई रसिक छके जस गावैं ॥१॥ सुनत जनम हरिवंश जू आये मंगल निरखि रचायौ । अपनी जीवन मूर सुख संपति दंपति दिखै नचायौ ॥२॥ पुनि पुचकारि चूँमि उर मधि धरयौ हियौ द्रिग कंठ भरायौ । जानी हौं मो हित जु विचारी रुक्यौ न नेह तें जनायौ ॥३॥ जो माई तुम्हें सोई आछी सेव्य तें सेवक कहायौ । ज्यौं हौं तो वा रूप उपासी त्यौं ये तुम मो कहायौ ॥४॥ नीकें रहियौ वेगी अइयौ वनमा-लियें हिय लइयौ । वासौं आपौ कछू न छिपइयौ सब हिय मर्म जनइयौ ॥५॥ सब हिय भाय गिरा कथि कहियौ मो आपौ

रूप लखइयौ वचन रचन करि नीके पोषियौ आसक्ति हिताई मुनइयौ ॥६॥ इक वही रूप समुझि है तेरौ जुग गिरा संग लिखै है। मिलत सिरै है वा वनमाली तुम पर वारि सर्वसु दैहै ॥७॥ प्रगट विपिन दिन सातहिं वसियौ पुनि इहि देह उर लैहैं। अति लगनीक प्रियादास प्रगटैहौं मोतो भेदनि गैहै ॥८॥ श्रुति धरि मन्त्र नाम दियौ सेवक करहु सकल सिर राज। लव निमेष तौसौं नहि विछुरौं चिरजीवौं करौ निज काज ॥९॥ होत विदा पुनि पुनि मुख चूँमत सिर कर कमल फिरावैं। गद गद सुर दुहुं द्रिग द्रवै धारा उर उर गुथे सियरावैं ॥१०॥ वंश विना हरि नाम न लैहौं तत्प्रान नाथे रति भाषैं। हित यौं राधा विन को वोलै नेह गिरा दुहुं साषैं ॥११॥ कुँवरि कह्यौ सब भाय हिये कौ जै जै धुनि नभ छाई। वजें दुन्दुभी कुसुमनि वरषत मुनि वन चन्द हिताई ॥१२॥ राग फिरौ धनाश्री—

सुनि उमग्यौ वन चंद हियौ आजु आगम ठठी है वधाई। उवटे प्रेम प्रवाह हरखि घन कव मुख लखि हौं अघाई ॥टेक॥ लाड लडावनि कौं मन लोचै नेह सिंधु उफनायौ। अति उत्कंठ वढ़त आरति भर हिलगनि चौंप सवायौ ॥ अनादि प्रेम इनकौ को जानें खरकत हियें उही वेष। ललक आस अनुराग लास नव भाव आसक्ति कव देष ॥१॥ वृध आवेस इही रँग छाके तक धक जक लगी प्रानें। सेवक दरसन ही की एक रटना उनमत सोच परानें ॥ प्रगट जगत भौ लिखी दसा निज तुम्हैं हित सौंह जो न आवौ। देखि पत्र थरहरयौ हियौ सेवक धाये वन पवन सुभावौ ॥२॥ रहे समाज घुमड़ाय वन माली वेष वदलि छिपि हेरैं औरै दसा इष्ट वन फिरी तरु खग वाजंत्र

हित हित टेरैं कनक कंज विकस्यौ मुख हित भिल्यौ भुके द्रिग वरषत नेह । रवकि निधन धन वनमाली पायौ गुथे विम-र्जन देह ॥३॥ तन मन प्रान अरुभि रहे आनँद रोम रोम भकभोरें । पुलकि रहे अश्रुधार वहे द्रिग गद् गद् सुर वच थोरें ॥ हित जो कही सु सेवक जनायौ मो मुख हिय ही जानें । आयुस दै भंडार लुटायौ प्रसंसित उर लपटानें ॥४॥ वलि सेवक हित भोगी मंगली विमल मत्त मुख धाम । कुशल कृपालु कोमल कोविद हद परमहंस अभिराम ॥ हित पद्धति सिंगार अचल कल रसिकनि अंजन नैंन । सीतल विशद रसद घन आनंद हित गुन मंजूसिका अैंन ॥५॥ धर्मी धीर गंभीर मरम्मी मुदती अघट विनोदी । भजन अवधि हित भजन सवादी हित वरषत चहूँ कोदी ॥ अकथ कथक हरिवंश विलासनि हित अनु-राग पसारे । हिय कौ मर्म सिरायौ नौषे तन मन पोष सिंगारे ॥६॥ वलि हित हार्द दिखायक तेरी वलि गिरा धर्म परिपाटी । श्री वनचंद प्रसंस परायन वंकट इन रति घाटी ॥ अनुरागे मिलि महली नेही गिरा गिरा संग लिखावैं । पुषे रसिक मुनि सेवकें लडावैं वरनौं तिनके नामें ॥७॥ श्री वनचंद श्री मोहन चन्द जू नेही श्री नागरीदास । चत्रभुज स्वामी श्री कृष्णचन्द जू के पद सेवी श्री रामदास ॥ श्री गोपीनाथ पद सेवी लाल स्वामी श्री ध्रुवदास उजास । जै श्री हित दामोदर चंद मगन मन स्वामी दामोदर पास ॥८॥ श्री नायक रसिक मुकंद रसिक दास कुंज लाल गो स्वामी । श्री इन्द्र मनि गो स्वामी गरज श्री रसिक लाल रस धामी ॥ परम कृपाल जै श्री रूपलाल हित श्रीविट्ठलराय गो स्वामी जै श्रीगुलाबलाल वाँके

श्री सुखलाल सुखधामी ६ जदिवल्लभ जै कृष्णनाथ भट हरि जी उत्तमदास । भगवत मुदित महंत वल्लभदास सखी सुख श्री कृष्णदास ॥ अनन्य अली प्रेमदास वृन्दावन भोरी अली हितदास । आनंदी बाई हरिलाल परमानंद नाभा तुलसीदास ॥ ॥१०॥ राग फिरौ आदि ॥टेर॥ छकि अप अपनिनु मगन लड़ावत रुचि ए स्वाद गुन अपारें हे ॥ ये सँभारें हे ॥ हित निधि सेवक पाइयौ ॥ द्रिग घूँमें हे ॥ पुलकि पुलकि ह्वै रहे गद गद सुर हरिवंश रँग में झकोरे हे ॥ ये न घोरे हे ॥ ललकैं हित में फँसाइयौ ॥ द्रिग घूँमें हे ॥१॥ विखरी तन सुधि हित स्वाद पायें, लाहौ उमाहौ अनुरागी हें ॥ ये सुभागी हे ॥ प्यायौ सुधा हित गोरी आय कें ॥ द्रिग घूँमें हे ॥ हरिवंश हरिवंश रटें सब रसना वटैं, नाम धन रति लुटाई हे ॥ सेवक वधाई हे ॥ भये रंक राव हित पाय कें ॥ द्रिग घूँमें हे ॥२॥ द्रवी भूत चित ह्वै रह्यौ ॥ थिरचर हित नृप दोही फिराई हे ॥ ये धुनि छाई हे ॥ सकृत सेवक जै जै करें ॥ द्रिग घूँमें हे ॥ या रस हेत प्रियादास प्रगट्यौ, अधिकारी दिन गाजें हे ॥ ये वन भ्राजें हे ॥ नंदी आनंदनि भरे ॥ द्रिग घूँमें हे ॥३॥३८॥२०॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—(सावन सुदी २ दोज की रात्रि में)

राग पर्ज-हेली—नवल वधावौ री हेली हित के छगन कौ । सब मन भायौ री हेली रुकमिनि मगन कौ ॥ मगन रुकमिनि कंद हेली चंद सेवक खिल रह्यौ । आनंद मंगल अवधि मूरति जनम दिन दंपति लह्यौ श्री व्यास नंदन बनी स्यामा स्याम

हेमे १ हाँम विलोकन री हेली सजनी कुल छली। कर हेम थारनि री हेली गावत सजि चलीं॥ सजि चलीं चंचल हार रुरकत ललकि छबि अतिहीं भरीं। सुमुख मण्डित सुरम केशर डह डहे रति रस धरीं॥ ताम रस पर खेल खंजन मखिन जुत लोचन चलें। चलत ग्रींवा पदिक कुंडल प्रेम हित वोरी भलें॥२॥ त्रिषित चकोरी री हेली गवनत इंदु पैं। झरत कुशुम सिर में री हेली कल अरविंद पैं॥ अरविंद आनंद अम्बु उपट्यौ चपल चलि नियरें घिरी। पूरि जल जनि चौक सथियाँ सींक सत उमहत थिरीं॥ वाँधि किशलय माल वंदन मंगल कलस दिपावली। घन ग्रौंन रेला पेल झर लगि पंच शब्द सुखावली॥३॥ वदन विलोकत री हेली हित जू लाल कौं। लेति वलैयाँ री हेली रुकमिनि वाल कौं॥ वाल कौं जीवौ कुँवर चिरहोहु सेवक हित रती। तुम सुख सभागौ हित जु रुकमिनि अचल रहि हौ हित मती॥ सकल लच्छन ललित यामें तुम्हें सब फल दायका। सुनौं लच्छन दत्त चित दोऊ कछु प्रताप गुन गायका॥४॥ सहज प्रनय री हेली दुहुँ उर वाढ़ि है। रूप लाड़ री हेली अरु गुन चाढ़ि है॥ चाढ़ि है गुन सहज आसक्ति एक असु देह जुग दिपै। सहज अँग अंग माधुरी है सहज स्वादी सब खिपैं॥ हाव भाव लावन्यता जुत चक चकाते विलसि हौ। सुहाग भागनि प्रेम पूरे मोद मई लखि हुलसि हौ॥५॥ नवल नागरता री हेली तुम अंग उफनि है। अजुष किशोरता री हेली उफनें रुपनि है॥ रुपनि स्याम रु गौर अंग एकत्व ह्वै है अचल री। सुरस करि सम तूल रहि हौ सजनि कर सिर नचल री॥ अलि कंज वत रस लंपटी मिलि अधर संतत गटकि हौ मत्त

दुरदि गयंदिनी है केलि लंपट चिपट हो । ६ । हंसनि हंस री हेली है रमि निर्मलें । तुम प्रेम पुष्टै री हेली करि हो हित भलें ॥ भलें हित सजनी जु करि हैं सु मुख चंद चकोरियें । सुमनि कंचन से खचै हो नहिं अत्रिपतता ओरियें ॥ घन दामिनी है रस वरषि हो दोऊ चपल शोभा भर नयौ । वेलि कंचन तरु तमाला सरस अरुझौ वर दयौ ॥७॥ सुनि सुनि बैंननि री हेली जुग मन चित वह्यौ । कसकी मर्मी री हेली सजनी हँसि कह्यौ ॥ कह्यौ हँसि हरिवंश हित सौं वलि उर सुरुचि कीजियें । दै हीयें आगें लै गई किशलय रचित रस पीजियें ॥ रुपे छैला सूर वर हरिवंश कृत वाजे वजें । सेज में रति रन रच्यौ हित विशद मंगल नव पजै ॥८॥ कटि सौं कटि री हेली उर उर अरझियौ । अधर अदन री हेली खंडनि खंडियौ ॥ धरि वाँहु पीठ लंपट चपल वंक भ्रू सधि रही । नैंन सर छवि पैनि छूटति नेति चाढ़ु धुनि धुरि रही ॥ पीन उरजनि कसनि गाढ़ी रुरति कच मुख चंद पै । अलि गन सवासिनि लाग लै पावस वरषि वलि वृन्द पै ॥९॥ जग मगै अंग री हेली दामिनि कामिनी । धनुष किनारी री हेली पट घन भामिनी ॥ भामिनी के केश छूटे फूल झर वूँदें परें । होत गरजनि नही नाहीं टूटि वग पंक्तनि लरें ॥ वजत नूपुर बोल झिली नदी जोवन अति वढ़ी । चपल नैंना मीन तरहीं चकवा कुच नख वुड़ चढ़ी ॥१०॥ मुख भुज हियरा री हेली नाभि कंज फूले हैं । ललित रोमावलि री हेली अलिगन भूलें हैं ॥ भूलें हें मिलि तीज सावन लहरि मुसिकनि उठि रही । सींचि हिय हरिवंश दासी चित्त चातिक लुट रही ॥ कही ज्यौं प्रियादास चार्यन भई लखि गिरा हित मधै । कंठ द्रिग भरे जयति सेवक तुव वधाई हिय नित छुधै ११ २१ ।

श्री प्रियादास जी महाराज कृत--राग राइसौ [सावन सुदी तीज को दिन मे]

जनम दिवस सुख रमि रह्यौ प्रिय हिय हित उमलाई। सुमुख डह डह्यौ सब चह्यौ वन संपति हरषाई ॥१॥ गोरी मोदनि में मिली सब हिय वारिधि वोरी। यह प्रभाव सेवक अली हित भक्ति गौराँग किशोरी ॥२॥ सुखदाई रस निधि विपिन फल दल फूल अनंत। मुकलित लखि हरिवंश जू दिन ही शरद वसंत ॥३॥ ह्वै रह्यौ रम्य कमनी महा भल मलात रवनीय। मृदु कंचन मनि अवनि रुचि धरत चरन लचकीय ॥४॥ निर्ख रही सिखि मंडली लखि आनंद अधीर। महल निकुंज कमनी लसै झलकनि है द्रुम भीर ॥५॥ जलज लता कंचन वेली भाँति रुचिर लपटाती। मर्कत मनि पर चलत हैं प्रेम भरी रस माती ॥६॥ सौरभ डोरा छुटि रहे कोमल किशलय श्रैनी। तापर विलसत पंच जन नव नव भाय छकैंनी ॥७॥ अध ऊरध छवि वढ़ि रही स्वच्छ गुच्छ तरु फूले। मधुप मधुर सुर ठन रहे अति रस भरि सब भूले ॥८॥ शुक पिक चातिक गूँजहीं परत भरन सुख भारी। सारो सरस अलापहीं मीनध्वज कौं पछारी ॥९॥ माते ह्वै रहे कोकिला तान गान गुनराती। अरुन नूत पलव चुवैं उडत न हिय विकसाती ॥१०॥ केकी धुनि कल कुहकि हीं कुहुक परावती कपोती। वदन चंद राधे खिल्यौ हित लखि सांति न होती ॥११॥ इक मनैं सव पंछी चतुर अली भाव सब हीयें। कवहुँ सु चहचर मिलि करैं कवहुँ तौ व्रत मुनि कीयें ॥१२॥ लखि अनुराग यमुना थकी रस मय वीचि उदोती। जग मगात कंचन सिढ़ीं मनिनि खचित वहु जोती ॥१३॥ फटिक सुमनि खिरकी बनी काँति चहूँ दिसि छाई लता विविधि विवि

तटन ते जुरि छवि ऊरध आई १४ विकस फूल अंबुज रहे स्वेत अरुन पीत नीले। पराग विविधि सौरभ सुरस चख अंग मत्त थकीले ॥१५॥ यौं हीं हंस कलोलहीं मत्त मधुर कल बोलैं। स्वच्छ शीतल कोमल किरन पुलिन प्रकाश हित खोलैं ॥१६॥ संपूरन वन रंग झिल्यौ सेवक सुहेलरा माँहें। वरस गाँठि मंगल घनौं थिरचर सबही उमाहें ॥१७॥ कुंजनि कुंज द्वारें अली निर्मित तरल हिंडोल। सुरंग वितान चारयौ दिसि तनें नभ अनुराग कलोल ॥१८॥ झलकि रही झालर जलज छाये फूल सुवेली। बंदन माल सुकंज दल मुक्ति चौक दिपै केली ॥१९॥ थिरकि रही मुक्ति जवनिका चार द्वार दिसि चारी। कंचन मनि आगर विवि सिंघासन पै खिलारी ॥२०॥ चौपर भाँति रचना महल मध्य रहसि स्थानी। दुहुँ दिसि मिलि पंकति ठठी निर्त पंच शब्द ठानी ॥ २१॥ वैस किशोरी एक सब षोडस सजे हैं मदंधी। झणतकार जंत्रनि झरैं गावत महक सुगंधी ॥२२॥ अष्ट सखिनि मंगली सौंज सजि कर कंचन दीपक थार। वलि वलि हों इन आवनी झूँमत घूमत थकी प्यारे ॥२३॥ स्वच्छ धरनि मनि फटिक की झलकत पगनि ललाई। निजु प्रिया दासी कुँवरि नैं लैवे कौं आगैं पठाई ॥ २४॥ जाय वेगि पग सिर धरयौ वलाइ लेत लै आई। मनु हलका करिनिनु छुटे उमगि कुँवरि हिय लाई ॥२५॥ सुहृद अली जू के वारिनें कुँवरि सहित सब लेत। गद गद सुर हित अलि भये चूँमि लै उछंग दोऊ मेत ॥ २६॥ दोऊ प्यारेनु निजु उछंग में सेवक अलि कों बैठाई सोहिलौ दोऊ मिलि गावहीं निज छवि जल सौं

उमगि भरी निज हाथ सों रोरी अच्छित रचि टीकौ ॥२८॥ प्यारी लै सेवक अली हित पद देवी पुजाई । अहो याकों हिय लायकें देहु सुनाम दिवाई ॥२९॥ नाम करन धनी आप कर दई है सकल निधि पूरि । प्रिये दासिनु हिय रमि रह्यौ कही लही मन चूरि ॥३०॥ सस मधि सेव्य हित स्वामिनी संग सेवा सखी रामी। वव मधि वेई हरिवंश जू क क मधि कृष्ण कुच वामी ॥३१॥ रीझि कुँवरि मेवा सेस करि पुनि सजनी मुख माहीं । पुनि खवावति सेवक अली पुनि सव गोद भराहीं ॥३२॥ करि आरती सखी निर्त्त ही गावत अधिक मल्हाई । सुर डोरा मिलि इक भये रस अनुराग चुचाई ।३३। मलय पिंडीरगुलाव की मची है रेल हरषाई । घुँमड्यौ गुलाल मुँठी परै जल्य घिरी प्यारी गाई ॥३४॥ सव मिलि सखी मोहि लूटि लेहु नख सिख सव सजि लीनों । विन भूषण भूपित गोरी हित अलि दुहुँ गम दीनों ॥३५॥ उत गडहा इत महल हित कोलाहल रह्यौ माँची। वादनें वाद निवारि दै इक मिक ह्वै रह्यौ साँची ॥३६॥ जाँचकता पिय अंग छई हित कर उमगि वटै री । उपधि देत तिय सुरस अंग धन हरिवंश लुटै री ॥३७॥ वर विहार थली सुरत पै जो निरतंत नटैरी । कटि सों कटि ऊरू (ऊरू) अरुझि धन हरिवंश लुटै री ॥३८॥ अधर अदन खंडन करें वाँहु पीष्ट लपटै री। सेवक जू की जै जै अलि कहें धन हरिवंश लुटै री ॥३९॥ पीन उरज गाढ़ी कसनि पिय उर देत हटै री । सेवक जू की जै जै अलि कहें धन हरिवंश लुटै री ॥४०॥ चपल कुटिल भ्रु व सधि रही सर छवि हगनि छुटै री । सेवक जू की जै जै अलि कहें धन जरिवंश लुटै री ॥४१॥ स्रत अलक मुख चंद पै सस्मित

हास नगै री सेवक जू की जै जै अलि कहै धन हरिवंश लुटै री ॥४२॥ रति रन रूप कौ गति विपरीती विस्तारत न घटै री। सेवक जू की जै जै अलि कहैं धन हरिवंश लुटै री ॥४३॥ कछुक भरि लियौ प्रिया दास दृग हियौ कंठ उपटै री। जै श्री रसिक नृपति हित सिंधु में वूड़ी सुधि न घटै री ॥४४॥२२॥

राग धनाश्री, छाया नट—आयौ हित सुरस पिवावन हे। गावौ वधावन हे, मोद वढ़ावन धर्म सिखावन हियो हुलसावन हे ॥१॥ छकनि चढ़ावनि मत्त करावनि नैंन घुमावन हे। रंग रंगावन हित दरसावनि प्रेम वढ़ावनि हे ॥२॥ कंठ रुकावनि दृगनि भरावनि हियौ सरसावनि हे। नेह वढ़ावनि चौंप वढ़ावनि हिलग लगावनि हे ॥३॥ तन पुलकावनि आवेस वढ़ावनि खरक लगावनि हे। पानिप रसावनि चित्त वुढ़ावन अनुराग वहावनि हे ॥४॥ विमुख हँसावनि चवाव करावनि लाज छुड़ावनि हे। निडर करावनि ओर निवाहनि जानी मिलावनि हे ॥५॥ पद गति गिरा रति नाम रटि हित हित हित वरषावनि हे। हित प्रियादास निजु रूप लखावनि हियौ सिरावनि हे ॥६॥२३॥

राग मलार—कला री हित मादिक आइ प्यायौ। सब सुख हे पै आसव विन हे औसर तीज सुहायौ ॥१॥ अति ही सनिग्ध मृदु मधुर घ्राँन सद रसिकनि सुकृत फलायौ। एक तो करारी अरु कर गोरी परसत रस निथरायौ ॥२॥ सुहृद सनेही, स्वादिल घूँमत वन में मत्त सदायौ। जै सेवक हरिवंश रसायन पी प्रियादास गिरायौ ३ २४

राग सारङ्ग–(यह पद रास मडल पै होता है) फहराई (री) माई धर्म धुजा हित आये। वंश आसक्ति नेह दाम सौं बसन हिलग लहराये॥ पीत रङ्ग अनुराग झकोरी चटकीली छवि जोर चक चकात गरवाये। जैं जैं धुनि फिरी दुहाई नृपति हित हिय प्रियादास सिराये॥२५॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत–[तिथि बढ़े तौ यह पद गावनों]

राग चित विलोवन—हित के हित अवतार छैल ललकति लियौ। श्री हरिवंश कौ नेह रुक्यौ न पलटौ दियौ॥ सेवकता में भुलाय छिपें निज रूप कौं। प्रिया दामिनि जु हित मर्म समुझ्यौ सरूप कौ॥१॥ गति मति राधा टेर हित जू लडाइयौ। ताहि हिलग कौ बीज गढ़हा लह लहाइयौ॥ धनि धनि जननी कूखि रमद सेवक दयौ। रंग झर लाग्यौ तीज मङ्गल अनभयौ भयौ॥२॥ हित कौतुक की अवधि कुँवर जायौ नयौ। गौरी कौ सौ रूप मुदित उदै जग भयौ॥ इन पटतर कौं नाहिं इहैं हिय जानि है। रसिकनि कौ रसखान सार हित दानि है॥३॥ धर्मी धीर गंभीर हरिवंश गुन गार है। हरिवंश कौ अनुराग पसारौ सार है॥ पावस रितु आई संग विदित मङ्गल रच्यौ। गढ़हा बाद निकुंज एक मिक ह्वै नच्यौ।४। दिसनि दिसनि रहे झूँमि सजल घन उदमदे। वरषि घूँमि छये नेह मेह हद सब लदे॥ वीर वहूटी हरी भूँमि विछौना रग मगे। पंच शब्द घन गर्ज दामिनि दिप जग मगे॥५॥ चातिक रटना शब्द उघट हित हित रटै। केकी किलकि कौतूहल सुलप नाचत नटै॥ कोकिल कुल किलकार मङ्गल मिलि गावहीं। तरु तरु वंदन माल हरषि उलहावहीं ६ सर सरिता रहे झेलि

त्रिविधि मारुत श्रवै । हित मय हित आसक्ति सुथिरचर दृग द्रवै ॥ इतहिं कुँवरि के भवन उतहिं हित महल में । हित रँग मचि रही भीर प्रियादासी टहल में ॥७॥ इतहिं कुँवरि घन घोर उतहिं पावस ऋतै । प्रति धुनि अदला वदल हित जु सुनै दै चितै ॥ उमगि नेह धन हाथ नवल के पठाइयौ । पुनि न रह्यौ गयौ आप दुरकि हिय लाइयौ ॥८॥ नव नव घन अनुराग दुहुँ वतियन पुषें । भरि रहे हिय दृग कंठ नेही इक रुषें ॥ सब अपनी संपति खिलारी सँग लियें गये । अपनी जीवनि मूरि केलि दिखवत नये ॥९॥ श्री वृन्दावन रम्य सु नव नव कुंज हैं । श्री हरिवंश जु प्रेम सुरस के पुंज हैं ॥ नित्त केलि हरिवंश करत नव हंसनी । छिन छिन प्रति नव नवल सु रस झेलि अंसनी ॥१०॥ कवहुँक निर्मित तरल हिडोला जग मगे । झूलत फूलत करत कलोला रग मगे ॥ कवहुँक नव दल सेज रचावहिं हुलसि कैं । श्री हरिवंश सुरत रति गावहि विलसि कैं ॥११॥ आज सँभारत नाहिन गोरी झूँमहीं । नैंन वैंन जिहिं भाँति अकह छवि घूँमहीं ॥ प्रेम प्रीति रस रीति वढ़ाई अपार है । अंसनि पर भुज दियें विलोकत चारु है ॥१२॥ त्रिपित न सुंदरि मुख अवलोकत डह डहे । इंदु वदन विवि ओर दीखत झिल रहे ॥ चारु सुलोचन त्रिषित चकोरि हित रीति है । करत पान रस मत्त सदा तिहुँ मीत है ॥१३॥ वन की कुञ्जनि कुञ्जनि डोलन रँग भरी । पट न परसंत निकसंत विथिनु सघन री ॥ प्रेम विह्वल सु नहि देह मानी हित वस भलैं । मगन जितहि जित चलत छिन सु डग मग मिलैं ॥१४॥ पंथ विपिन देत अतिहिं हेत जानी मरम कौं रसिक हित

परमानंद वलोकत सरव कौ ।. नव दल नूतनि सेज रचाई हरषाय कैं । नाथ विरमि विरमि कही सचुपाय कैं ॥१५॥ सो रति तैसी धौं कैसैं भुलाई क्रिया हरिवंश की । सत्वर उठे महा मधु पीवत हंस की ॥ अंसनि भुज दियें देखि रहे मुख चन्द्र उभै । परस्पर मधु पान कराई हित सुभै ॥१६॥ आय विलौ-क्यौ हदैं हदैं कियौ मान है । चिबुक सुवारु प्रलोइ मनाई हित ठान है ॥ नयौ नेह नव रंग नयौ रस न औरि है । नवल स्याम वृषभांन किशोरी भोरि है ॥१७॥ नई नई बूँदनि पीय सु भिजवति गोरियै । नई नई उरप हँसत लेत थोरी थोरियै ॥ चंचल कुण्डल कर रु चरन नैन लोल हैं । रति रण भ्रांडत छैल नेति नेति बोल हैं ॥१८॥ झटकत पट चुटकिनि चटकि पुट नासिका । लटकत लट मृदु हाँस गटकत रस दासिका ॥ पटकत पद उघटत सवद थेई थेई ए ॥ मटकत भृकुटी विलास अम्बुज अलि सेई सेई ए ॥१६॥ श्री हरिवंश विना यह हेत को जानही । उघर नच्यौ भयौ मत्त करयौ सोई गानही ॥ रहत सदा सखि संग रंग रसाल हैं । लासं लीला ललित रसालं आलि हैं ॥२०॥ सम सुरतालं वरषत सुख पुंज पासि हैं । अतुलित रस वरषंत सुखा कर प्यासि हैं ॥ अद्भुत महिमा प्रगट सुंदरता की रासि हैं । रासि कनक दुति देह सदा उज्जास हैं ॥२१॥ वारिज वदन प्रसन्न हाँस मृदु रंग रुची । सुभ्र सुष्ट ललाट पट करनं रुची ॥ नैन कृपा अवलोकि प्रणत आरति हरी । सुभग ग्रींव लहकात उरसि वन माल भरी ।२२। चारु अंस वर वाहु विशालं जुग गसैं । उदर ललित नाभि चारु कटि सुदेस धन वसैं ।' चारु जानु सुभ चरन सुवेसं मम

गती । सुभये चरन सुवेश मत्त गज वर गती ॥२३॥ पर उपकार देह धरनं जै व्यास के । सब प्रभुता कही टेर जै सेवक श्रास के ॥ प्रचुर कह्यौ हरिवंश सुरस जस सब मही । अभ्यंतर को नेह गिरा अकहै कही ॥२४॥ श्री हरिवंशहि भजन रंग्यौ दृढ़ चक चकैं । धर्म मर्म हरिवंश प्रीति सब तक तकैं ॥ श्री हरिवंश सुनाम वानी रस सब भरे । भजन सुधा दियौ पान सर्व हित पद अरे ॥२५॥ हित रसानंद सुख ओघ सिंधु सेवक वहे । थिरचर सब अनुराग पोष इक मिक छहे ॥ हरिवंश हरिवंश टेर हरिवंश सु उर धरे । प्रीति उमाहें ललक प्रेम सेवक भरे ॥२६॥ दुलराये हरिवंश सुभाव भाव गहरे खरे । जै जै श्री सेवक रूप तन मन सब हरे ॥ जै जै श्री हरिवंश सुधन सेवक धनी । सकृत समझि हैं राय प्रियादासिनि वनीं ॥२७॥२६॥

श्री प्रियादास जी महाराज कृत—राग मलार-वधाई

प्रगट्यौ जग हित जू पद आसक्ती । सावन तीज सुभग रस वासर हिलग गौरांगे सक्ती ॥ कुञ्ज निकुञ्ज घर घर रस माते झूलत फूलत सुजक्ती । छाय रह्यौ आवेस देस हित जंगम थावर अनुरक्ती ॥ गड़हा वाद एक मिक ह्वै रह्यौ मंगल रीति वरक्ती । लखि हरिवंश नाम धरयौ सेवक प्रियादास आरक्ती ।२७।

राग मलार—प्रगट्यौ श्री हरिवंश चरन कौ षट पद । सावन तीज सुखाकर वासर घुमड़ि रह्यौ आसक्ति मोद हद ॥ ताड़ि घन सुरत हिंडोरें झूलत झगर लेत वधाई हित सौंगद । सुनि हरिवंश वरषि झरी हित की सेवक जनम प्रियादासिनि मद सद ॥२८॥

राग हित स्वादी सवै हित स्वाद सिखायो रस

हरिवंश पिवायौ। सदा निरंतर गटकत गोरी भरि भरि हियौ उपटायौ॥ हित के हित हिलगन ह्वै तन धरयौ पुनि गहि हियौ सचायौ। सोई मुदित उदित सेवक ह्वै संश्रित मंगल छायौ॥ कछुक दिवस गटक्यौ चुप चुप ह्वै कहाँ रुकै उफनायौ। रोंम-रोंम धारा हित वृन्दनि वरषि रहे थिरतायौ॥ थिरचर पोष सजाती कीये उर हरिवंश रमायौ। पुनि प्रियादासि करी रति श्रैंनी सब हित खेल लखायौ॥२९॥

राग सोरठ-वधाई—प्रगट्यौ रे प्रगट्यौ आज हित प्यारे कौ प्यारौ। अलक लड़ै कौ अलक लडौ हरिवंश धर्म गुन गारौ॥ भयौ उदोत नाद कुल दीपक रसिकनि पथ उजियारौ। गुप्त रीति निज संपति वितरी गोरी हित हिय हारौ॥ विलसैया हरिवंश कमइया शुद्ध पतिव्रत धारौ। प्रेम पुंज अनुराग पसारौ हित रस भोगी भारौ॥ हित रस भक्ति गूढ़ मधु मातौ ओहटी छक्यौ उच्यारौ। अपनौ प्यारौ सब कियौ प्यारौ दिव्य दृष्टि दै धारौ॥ धर्म मर्जादा महली बाँधी हित पद रति रँग ढारयौ। हित रँग रँगे गुन गन जस रस गावैं हित मन भाऐ थिरचारौ॥ विगत व्यक्त हित रूप प्रकासनि इहै हेत अवतारौ। मुख प्रियादास सेवक हिद हेरयौ नंदी सर्वसु वारौ॥३०॥

राग अभिरामकली-वधाई—अद्भुत री आजु नवल वधाई। गोरी हिलग हित लडवनि आई॥१॥ लखि प्रभाव पावस आई छाई। पिय चातिक सिखी धूम मचाई॥ औसेर भरी पिक कंठी धाई। ज्यौं हरिवंश त्यौं इनि मोही माई॥२॥ रुकि न सकी हित की हित वाई। हित के हित हारी ठकुराई॥ धरि नाम कुँवरि दामोदर आई ताहू मधि एश्वर्य लखाई

॥३॥ पुनि सेवकता गही निरंतर । लखि हित जू नें कंठ लगाई ॥ सेवकता सौं सेवक कहाई । लह्यौ कौतिक वनचंद लुटाई ॥४॥ सुनि वानी दरसी हित वाई । सेवक पर वनमाली विकाई ॥ तन मन प्रान जीवनि निधि पाई । श्री वनचंद रहे उर लाई ॥५॥ श्री राधा वल्लभ भेद जनाई । दृग सौं दृग लगे दृग मगवाई ॥ हित की रास हित हियें सरसाई । घन ज्यौं वरषि हित कीच मचाई ॥६॥ हित की हित नृप फेरी है दुहाई । जै सेवक हित भुव नभ छाई ॥ फागुन तें अधिकी करी सावन । हित रैंनी प्रिया दास बुडावन ॥७॥२१॥

राग सारंग—गौर स्याम संगम सिंधु सुरत फूल्यौ पूषन वंधु द्रिवत मकरंद हित भोगी अलि धायौ । उठत हीं उदगार चारु महकि रही जक्त सार ढरयौ है षट पद हीय जीय सौं हितायौ ॥१॥ हित रस रसिक एक छिन छिन नव लोभ विशेष गुंजनि परसंसित रंग में रँगायौ । द्रवीभूत नित्त छक्यौ ताद्रूपक चित्त जक्यौ वूड्यौ है मन मगन मुख वौलवौ नसायौ ॥२॥ पीवत निरसंक धार पुलक कंप अश्रु धार गद गद उनमत्त स्वेद जाड्य प्रेम छायौ । उरसि भीर नेह गंभीर ललक खरक हिलग चौंप नख सिख अनुराग तदाकार ह्वै जु गायौ ॥३॥ धर्म मर्म उगल दीयौ हित पथ की सवनि लियौ छके है उन्मत्त पाय हित हेत कौ लखायौ । गटकनि छवि वनचन्द देखि लुटायौ भंडार इष्ट विशेष नेह भर सेवक जै प्रियादास हियौ सिरायौ ॥४॥२२॥

राग विलावल—हित जु हियौ प्रगट्यौ भुव चार । सावन तीज सुदी दिन मंगल गौरांगे सेवक वपु धार ॥१॥ सूक्षम भाग रसिक जन उदयौ ता मधि लिष्यौ सुरस हित सार ।

गोरी ग्रंथ लये हित सुख के ममुभी गाँम परम हित चार ।.२॥ ता उनमाद मत्त घूँमत हों मगन सघन चित हित के विचार । पुषे पुषत पुष है प्रियादास हित मिलिबे कौ खूट्यौ द्वार ॥३॥२३॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज लाड़ लड़ावें हैं

राग सूहौ बिलावल-मंगल छंद—वंदौं सेवक सुमति सार श्रुति उद्धरयौ । जो दरस्यौ हित रूप सु रसना उच्चरयौ ॥ तारा तनय उदार अनुग्रह अति करयौ । लखि गरुवौ अनुराग सीस कर वर धरयौ ॥ धरयौ कर वर सीस प्रभुता दई सब दरसाय कैं ॥ लह्यौ परम प्रसाद जो सो कहा सुनाऊँ गाय कैं ॥ अनुभव जनित प्रगटी गिरा गुन गुपत कथि संसै हरयौ । वंदौं सेवक सुमति सार श्रुति उद्धरयौ ॥१॥ श्री हरिवंश सुनाम धरी दृढ़ टेक है । सेवक सम सेवक ही जग में एक है ॥ सवल भक्ति उर वाढ़ी सहित हुलास जू । गुरु करुना उपजाय बुलाये पास जू ॥ पास आये भक्ति वस प्रभु भृत्य चित चीत्यौ कियौ । कुंज रस वैभव दिखाई कौन अस समरथ वियौ ॥ धर्मी रु धर्म स्वरूप पुनि पुनि कह्यौ सहित विवेक है । श्री हरिवंश सुनाम धरी दृढ़ टेक है ॥२॥ सेवक खेवक धर्म विदित कल वाँकुरौ । पद रति श्री हरिवंश न दूजौ आँकुरौ ॥ गुरु गोविंद उभै वपु सब ग्रंथनि कह्यौ । गुरु ही में गोविंद एक सेवक लह्यौ ॥ लह्यौ दृढ़ व्रत गह्यौ महिमा महत्त सो वरनौं कहा । कानन रहसि मरामिनि अली जहाँ मिथुन सुख विलसैं महा ॥ एक रस संतत सदा छिन हूँ न परै रस झाँकुरौ । सेवक खेवक धर्म विदित कल वाँकुरौ ॥३॥ सकृत रीति कौ भेद सु सेवक ही लह्यौ । वंश विना हरि नाम न जिहिं रसना कह्यौ ॥ धरमी मरमी गाढ़ौ सोई बूझि है श्री हरिवंश कृपा वल ताही

सूझि है सूझि है परम अनन्य पद्धति जो चल्यौ हित रीति है उर फुरैं नव नव भाय सेवक समझि जाकें प्रीति है॥ सपथ करि कें नामश्री हरिवंश जिनि गाढ़ौ गह्यौ। सकृत रीति कौ भेद सु सेवक ही लह्यौ ॥४॥ कहनि रहनि सम तूल धन्य सेवक भयौ। व्यास सुवन जस निर्मल वरन्यौ नित नयौ ॥ सारा सार विवेक कियौ उर ठौर कौ। हियौ सिरायौ जिननि रसिक सिरमौर कौ॥ हियौ सीतल कियौ दंपति तहाँ की संपति भनी। हित अलि लड़ावति दुहुँनि कौं नव कुंज विहरत धन धनी ॥ वृन्दावन हित रूप श्री हरिवंश रीझि सुधन दयौ। कहनि रहनि सम तूल धन्य सेवक भयौ ॥५॥३४॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत--राग सूहौ विलावल

मङ्गल छंद—जै जै श्री सेवक सुनाद कुल मंडना। मंगल मय हित रूप अमंगल खंडना ॥ श्री वनवास निकंज भवन रति रस जहाँ। श्री राधा वल्लभ सहित व्यास नंदन तहाँ ॥ व्यास नन्दन जू लसत तहाँ नहिन वैभव आन की। सघन महल विचित्र सोभा टहल मदन सुजान की॥ तहाँ संतत रहत तुम निज दासि विरह विहंडना। जै जै श्री सेवक सुनाद कुल मंडना ॥१॥ जय जय श्री सेवक सु ध्यान उर धारिये। तिलक भाल तन गौर किशोर निहारिये ॥ छिन छिन हहर हसंत रुदन छिन छिन करैं। श्री हरिवंश सुनाम फूल से मुख झरैं ॥ फूल से मुख झरत गावत गिरा श्री हरिवंश की। भ्रात भृत्यनि सों कहत हँसि बात निज रस गंस की ॥ पुलकि पुलकि सुगात तन मन प्रान छबि लखि वारिये। जय जय श्री सेवक सु ध्यान उर धारिये ॥२ जय जय श्री सेवक से सेवक एक हैं। वंश विना

हरि नाम न लेत जु टेक है कहत सुनत हित सुजम रात दिन जात हैं। नाहर मल नरवाहन से वह भ्रात हैं॥ भ्रात नरवाहन रसिक जन सवहिं हित मन भाँवते। हितहि के नित चरण सेवत हितहि के गुण गाँवते॥ भुवि रसातल स्वर्ग श्री हरिवंश भृत्य अनेक हैं। जय जय श्री सेवक से सेवक एक हैं ॥३॥ जय जय श्री सेवक सुनाम गुण गायकैं। उन्हीं को सिर नाय सुमति रति पाइकैं॥ श्री वृन्दावन वास सुदृढ़ कर थर्प कें। अपने श्री हरिवंशहिं सर्व समर्प कें॥ समर्प सर्व सुहित चरण जग विविधि मग सब ठेलि कैं। राधिका वल्लभ लसत तहँ शीघ्र चल पग पेलि कैं॥ हित के लड़ाये लाड़िले ललितादि मिलि हैं धाय कैं। जय जय श्री सेवक सुनाम गुण गाय कैं ॥४॥२५॥

श्री परमानन्द दास जी महाराज लाड़ लड़ावें है—मंगल छन्द

जै जै श्री सेवक निज हरिवंश के। श्री हरिवंश अधार सुनत व्रत हंस के॥ जिनकें श्री हरिवंश सुजीवन मूरि है। यह प्रतीति करि हित गुरु आसा पूरि है॥ पूरि आसा प्रतीति की हित गुरु कृपा करी आय कें। इष्ट धर्म प्रताप मंत्र स्वरूप दियौ दरसाय कें॥ सेवक भये हरिवंश जू के राधिका निज अंस के। जै जै श्री सेवक निज हरिवंश के ॥१॥ जै जै श्री सेवक हित धर्म प्रगट कियौ। सेवक वानी मध्य सुरस सबकौं दियौ॥ बानी में हरिवंश सु सर्वसु नाम हैं। नव पल्लव फल फलित विपिन वर धाम है॥ धाम वृन्दाविपिन में निज महल सेवा कुंज है। राधिका वल्लभ सखीं हित नित्य सब सुख पुंज है श्री हरिवंश अनन्य धर्म रस दृग पियौ जै जै

रसिकनि प्रान है धन हरिवंश धनी ये धर्म निधान है । तन मन श्री हित जू कें सर्वसु राधिका । तैसैं सेवक जू हरिवंश सु साधिका ॥ साधिका हरिवंश हित आराधिका हरिवंश के । हरिवंश सिद्धि सुरिद्धि नव निधि दिवाकर रस गंश के ॥ हित सेवा निज जानि इष्ट सनमान हैं । जै जै श्री सेवक जू रसिकनि प्रान हैं ॥३॥ जै जै श्री सेवक पद पंकज जो उर धारि हैं । हित रस मधु करि पान सु सदा विचारि हैं ॥ जै जै श्री सेवक नाम सुवानी वाँचि हैं । श्री हित धर्म सुदृढ़ ह्वै रंग रस राचि हैं ॥ रस राचि श्री हरिवंश के सोई नित्य वृन्दावन वसै । श्री हित सखी सेवक सखी के नित्य परिकर तें लसै ॥ परमानंद हिय झलकि प्रिये सुकुँवारि हैं । जै जै श्री सेवक पद पंकज जो उर धारि हैं ॥४॥३६॥

कवित्त—धन्य वृन्दावन धाम धन्य हरिवंश नाम रसिक अनन्य धन्य सब कौ सुख रासि है । धन्य प्रिया लाल हित सेवक वधाई धन्य सावन सुदी तीज रीझि उमगि उजास है ॥ वरस गाँठि सेवक सखी की सवै मिलि करें ललित मंदिर दामोदर चंद जू कौ रास है । धन्य सब हित कुल समाजी औ समाज सब हित परमानन्द ये धन्य प्रियादास है ॥३७॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग विलावल

हित मारग पहुँच्यौ निपट सेवक हित बाँकौ । व्रत अनन्य धरि सुभट दृढ़ दियौ परन न झाँकौ ॥ सकृत रीति मरमी सुविधि गह्यौ गाढ़ौ नाँकौ । श्री हरिवंश सुनाम रति वज्यौ आनक डाँकौ ॥ धर्म कसौटी पर लस्यौ कुंदन बिन टाँकौ में गुरु हरि पूरन लखे कियौ इहि कलि साँकौ

।टेक। नाम हरिवंश इक नहि दूजौ आंकौ। सपथ करी मन क्रम वचन बल हित पथ धाँकौ ॥ कुंज गगन अंबुद उभै भर रूप सुधा कौ। वृन्दावन हित रूप वलि चात्रिकी तहाँ कौ ॥३८॥

राग धनाश्री ताल-आड़—पुनि पुनि सेवक पद सिर नैहों। श्री हरिवंश कृपा कौ भाजन ताकौ जस बरनत न अघैहों ॥ सेवक गिरा जासु मति राची ताकी जूँठनि चुनि चुनि खैहों। सेवक की सी रति हित चरननि ताकी संगति करि सुख पैहों ॥ मन क्रम वच सेवक कौ सेवक ताकी चरन रैनु में न्हैहों। सेवक रहनि कहनि कौ वक्ता ताके सदन बुहारी देहों ॥ सेवक जस रस रतन उद्धरे तिनकी माला कंठ चढ़ैहों। सेवक के जु धर्म कौ मरमी चित की विर्ति तहाँ उरझैहों ॥ श्री हरिवंश नाम धन वाढ्यौ तिनकौ हौं जाचिक जु कहैहों। वृन्दावन हित रूप उपासिक ताकी भूर बलैयाँ लैहौं ॥३९॥

राग करखा—जयति राधिका वल्लभो पद उपासी सेवकहि मिलि दंपति खवासी। गुरु कृपा जलद ह्वै वृष्टि रस की करी भावना भक्ति हिरदैं प्रकासी ॥ जीत पासे परे सफल नर तन कियौ इष्ट के भजन मति प्रेम बोरी। गौर अरु स्याम के चरित चित में रमैं जगत नातेनु की फाँसि तोरी ॥ रसिक जन सभा कौ ओप अतिसै दई भाल पर भक्ति जग मगै ऐसैं। नैंन अरु बैंन झलकैं जुगल भावना फटिक मणि शरद शशि किरिनि जैसैं ॥ ह्दौ गुन गहर थाह न जहाँ पाइयै काढि रस रतन माला जु पोई। वृन्दावन हित रूप वंदि हरिवंश प्रभु जिननि जग सूल निमूंल खोई ॥४०॥

राग सारंग—श्री हरिवंश दिखाई वटिया। गुरु गोहार लगे जु शिष्य कैं जब उर वढी प्रेम चट पटिया कौन भाग

वरनौ सेवक कौ दरसी जाहि कृपा की घटिया । दुर्ल्लभ जुगल उपासन पायौ खुलि गई उर माया की टटिया ॥ धर्म अनन्य न घर घर भैया एकै वृंदावन रस हटिया । जुगल रहसि रस प्यायौ पीयौ व्यास नंद गुर कौ भयौ चटिया ॥ श्री हरिवंश धर्म धन गरुवौ या संचन जु रीति अट पटिया । वृन्दावन हित रूप न सुल्लभ लहै उपासिक सिर के सटिया ॥४१॥

राग विलावल- ताल आड़—सेवक कौ जस गाइ कैं सेवकहि रिझाऊँ । श्री हरिवंश सु चरन रति सेवक दत्त पाऊँ ॥ श्री हरिवंश सुधर्म कौ सेवक विस्तरता । गौर स्याम सुख जनित जो सेवक उर भरता ॥ धामी धाम सरूप कौ सेवक दरसैया । श्री हरिवंश गिरा उदधि रस रतन कढ़ैया ॥ इक धर्मी जु अनन्य वृत सेवक सम को है । उर आरति गुरु धर्म की सेवक ही सो है ॥ श्री सेवक पद वंदि कैं वीनती सुनाऊँ । जनम जनम श्री व्यास सुत पद भृत्य कहाऊँ ॥ या वर के दातार तुम समरथ देहु भिदया । वृन्दावन हित रूप वलि मन और न इच्छा ॥४२॥

राग विलावल ताल आड़—जो राधा पति धाम कों चलनौं पग धरि है । सो जन वाही देस की वातें नित करि है ॥ सुमति सदाई आदरै कुमति जु परिहरि है । असे सुकृती साधु कौ सव कारज सरि है ॥ वरष्यौ मेघ समान भुव नीचे कों ढ़रि है । यों सेवक की दीनता उर भक्ति जु भरि है ॥ हित चित की हिलगन जहाँ सो समझि उचरि है । सेवक विन भेदी जु को ताहि जग विस्तरि है ॥ व्यास नंद सागर सुमति क्यों कर जु विचरि है । सेवक वुद्धि जिहाज है ता विन को तरि है ॥ हरि की भक्ति वेन कपट कौ परदा न उघरि है । वृन्दावन हित रूप हरि भज कहा विगरि है ४३

॥ श्री श्री हित राधा वल्लभो-जयति ॥

श्री श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति *

ब्रज-साहित्य का तृतीय खण्ड

र-रस-सागर

प्राचीन ५०० महात्माओं की वाणियों का अपूर्व संग्रह

...ावल्लभ जी कौ वर्षोत्सव

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदायाचार्य,

००८ गोस्वामी श्री हित रूपलाल जी महाराज,

अधिकारी की आज्ञानुसार

बाबा तुलसीदास द्वारा प्रकाशित

प्रकाशक—

बाबा तुलसीदास

...ल भवन, मुहल्ला दुसायत, मकान नं० ३/८३०

पो०—वृन्दावन (जिला मथुरा) उ. प्र.

सजिल्द ५)
अजिल्द ४॥)

शरण, राष्ट्रीय प्रेस, मथुरा।

प्राक्-कथन

प्राचीन रसिक-वाणी-माला के अन्तर्गत "श्रृंगार रस सागर" का यह तीसर खंड पाठकों के समक्ष उपस्थित है।

"श्री वृन्दावन" रस का आस्वादन, एक बार हो जाने पर, अन्य रसों के आस्वा. में मन की प्रवृत्ति नहीं होती। यह एक परिष्कृत रुचि की बात है। परम सौभाग्य शाली रसिक जन इस रस सागर में उन्मज्जन कर पाते हैं। परिपूर्ण भक्ति ही जब कृप साध्य है तब रस भक्ति का तो कहना ही क्या है। प्रभु-कृपा से प्रेमानुभव जब उच्चतम अवस्था को प्राप्त होता है तभी गौर-श्याम के युगल-श्री चरणों में जीव की रति उत्पन्न होती है। इसके लिये रसिकों ने किशोर श्यामा-श्याम की सहज रसीली रूप, गुण, लीलाओं में अपने को डुबो देने की सम्मति दी है। चतुर्दिक रसमय वातावरण की सृष्टि तभी सम्भव है जब हम परम प्रेम के जीवन स्वरूप, आचार्य रसिक महानुभावों के पाद-पद्मों में, परम दैन्य के साथ स्वयं को अचञ्चल होकर समर्पित कर दें। प्रणय—मधुर रसिकों ने रसोन्मेष काल में जो लोकोत्तर रुदन-गान किया है वही (सन्त) वाणी कहलाती है। और यह वाणी ही यथार्थ में उन-उन रसिकाचार्यों का वाङ्मय स्वरूप है। किन्हीं के मत से गोप लाल-ललना भी यहीं हैं। अतएव इन वाणी कुञ्जों में रम जाने वाले सहृदय जनों को ही इस दिशा में कुछ उपलब्धि होनी है।

ब्रज के ठाकुर उज्वल रस के स्वरूप हैं। निस्सन्देह इनको रसमयी वाणियां प्रिय लगती हैं। लाल-लड़ैती को दुलराने का माध्यम इनको (वाणियों को) छोड़ कर और कोई इस जगती तल पर नहीं है। वाणियों को सुन सुन कर युगल मुसिकराते रहते है (वाणी श्री ध्रुवदास की सुन, जोरी मुसिकात) और लीला में प्रवृत्त रहते हैं। यही रूप-विलास वृन्दावन का विचित्र रस वैभव है, रसिकों का जीवन-सार है। इसी लिये अद्वय तत्व प्रिया-प्रियतमको सहज आकर्षण करने वाली यह वाणियाँ ही प्रगट भगवत्सेवा का भी आधार बन कर रह गई हैं। अष्टयाम सेवा, पदों के सहारे ही चल पाती है।

राधा-माधव की अनुपम छटा और रूप माधुरी का वास्तविक दर्शन हमको इन चक्षुओं से यथावत नहीं होता इसके लिये भी हमकों रसिकाचार्यों की दृष्टि (वाणी) से दर्शन करने होंगे—"राधावल्लभ मुख-कमल, निरख नैन हरिवंश" वाणी-रूप नेत्र प्राप्त हो जाने पर हम प्रभात में मंगला समय में देखते हैं कि "उभय बाहु परिरंजित उठे उनींदे भोर" और 'चाँपत चरण मोहन लाल' यह शयन आरती की झाँकी मन-प्राणको वरवस न्यौछावर कर देने को विवश कर देती है।

"श्रृंगार रस सागर" के इस तीसरे खण्ड में युगल सरकार की जन्म बधाइयाँ, दान केलि तथा साँझी लीलाओं के अनूठे पद संग्रहीत हैं। बाबा तुलसीदास जी का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य है, आशा है वृन्दावन रस के उपासक और साहित्यिक इसके प्रकाशन से प्रमुदित होंगे।

अन्त में जिन आचार्य वर्य और भक्त प्रवरों तथा संत महात्माओं ने मुझे सहायता दी है, उनका कृतज्ञ हूँ। विशेष कर श्री गजानन्द जी के सुपुत्र सेठ बाबूलाल जी कलकत्ता निवासी की सामयिक सहायता के लिये अत्यन्त आभारी हूँ।

श्रृंगार रस सागर के प्रकाशन की महती योजना के अन्तर्गत प्रथम और द्वितीय खंड प्रकाशित हो चुका है, तृतीय खंड यह आपके सन्मुख है। चतुर्थ खंड शीघ्र प्रकाशित होने की आशा है। खरीदने वालों को यह तीन संस्करण बहुत जल्द लै लेना चाहिये, जिससे कोई खंड समाप्त हो जाने से पछिताना न हो, लैने वाले शीघ्रता करें।

बसन्त-पञ्चमी २०१६ **श्री वृन्दावन धाम** हित **गोस्वामी**

अनुक्रमणिका

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावो कृत-पद रूप-गान

कुंज—महोत्सव

नोट—पुष्टी मार्गीय मंदिरों में जो जो रूप गुण कीर्तन के पद होते हैं वे पद भी इसमें सम्मिलित है, अन्य मंदिरों तथा कुंजों में गाये जाने वाले समाज-रूप गुण कीर्तन के पद भी हैं।
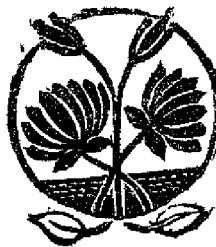
श्री श्री राधा वल्लभ जी के मंदिर मे महोत्सव--कार्यक्रम सूची

पृ० सं०	पद		पद सं०	नामावली	भादों सुदी सतमी
१४३	चलौ वृषभान गोप कें द्वार		१	गो० श्री हितहरिवंश महाप्रभु जी कृत—रा	
१४६	नमो नमो पावन करन	(वंशावली)	६	गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत	
१६६	चाव जसोमति लै चली	(चाव)	८७	चाचा श्री वृन्दावन दास जी महा० कृत	
१७३	प्रथम नाम हरिवंश हित	(दोहा)	५९	श्री ध्रुवदासजी महाराज कृत—सैन आरत	
१७३	जदुवंशी जजमान तिहारौ	(ढाढी)	६०	श्री किशोरीदास जी महाराज कृत	
१७४	हौं वृजवासिनि कौ मगा	,,	६१	श्री किशोरीदास जी महाराज कृत	
१७४	रानी मांगनौं हौं आयौ	,,	६२	श्री किशोरीदास जी महाराज कृत	
१६६	रावलिपति जजमान तिहारौ	,,	८८	चाचा श्री वृन्दावन दास जी महा० कृत	
१७५	बरसानौं गिरवर सुखद	(वंशावली)	६३	श्री किशोरीदास जी महाराज कृत	
१८५	श्री वृषभांन के ही आँगन	(ढाढी)	७६	श्री हित गोवर्द्धनदास जी महाराज कृत	
१५	श्री गुरु श्री गोबिंद पद	(वंशावली)	२६	श्री किशोरी दास जी महाराज कृत	
३०	नन्द जू मेरे मन आनंद भयौ	(बधाई)	४८	श्री सूरदास मदनमोहन जी महाराज कृत	
१६५	ढाढिनियाँ मचलि रही	,,	२१०	श्री दयासखी जी महाराज कृत	
१८४	लली चिरुजीवनी तेरी	(असीस)	१७६	चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत	

भादौं सुदी अष्टमी कौ प्रातःकाल ४ बजे से समाज-रूप गुण कीर्तन के पद

पृ० सं०	पद		पद सं०	नामावली
१६८	गोपिन सिरमौर रानी	(दाई)	८९	श्री वृन्दावनदास जी महा० कृत— अष्टमी
१६६	प्रथम मास जब लाग्यौ	,,	९०	,, ,,
१४४	नवल नृपति वृषभांन राइ	(बधाई)	३	गो० श्री कमल नैंन जी महाराज कृत
१४४	प्रगटी श्री वृषभांन गोप कें	,,	४	,, ,,
१६५	भादौं सुदी आठैं उजियारी	,,	४६	श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत
२०१	रतन जटित चौकी पर बैठी	,,	९१	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत
१६४	बरसानें तें दौरि नारि इक	,,	८३	श्री नंददास जी महाराज कृत
१६५	बाजत आज बधाई वृषभांन	,,	८४	,, ,,
१६५	बरसानें वृषभानु गोप घर शोभा	,,	८५	श्री कल्याण प्रभु जी महाराज कृत
१८३	आज प्रगटी श्री वृषभांन भवन	,,	७३	श्री प्रेमदास जी महाराज कृत
२०१	अरी मेरी वारी राधा या जोगिया	,,	९२	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत
२४१	अरी माई मेरौ बचन सुनि भागिन	,,	१२६	,, ,, ,,
१५५	आजु बधाई है बरसानें	,,	२७	श्री व्यासजी महाराज कृत
१४८	नवल प्रेम भरी बाला जुरि	,,	१०	गो० श्रीरूपलालजीमहा० कृत-दोपहर ११
१६६	श्री वृषभानु कें आजु बधाई	,,	४८	श्री दामोदर स्वामी जी महा० कृत
१६६	कुँवरि किशोरी जनमत ही	,,	४९	श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत
१८२	आजु ब्रज घर घर बजति	,,	७१	श्री प्रेमदास जी महाराज कृत
१४	मिलि आवौ री सजनी	[साथिया]	२२	श्री हित अनूप जी महाराज कृत
२०२	आजु लली कौ सोहिलौ	,,	९३	चाचा श्री वृन्दावनदास जी महा० कृत
६३	बाजैं बधाइयाँ वो सैयौभानु	[बधाई]	४२	श्री नागरीदास जी महाराज कृत
१६१	बरसानौं हमारी रजधानी	,,	४०	,, ,,
१८१	रग वर्षै री हेली कीरत महल	,,	७०	श्री सहचरी सुख जी महाराज कृत—रा

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण व

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत—पद—रूप गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत–पद–रूप गुण कीर्तन

सं० (श्रीलालकी जनम वधाई) पद सं०

पृष्ठ सं० (श्रीराधाकी जनम वधाई) पद स०

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुरु कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण कीर्तन

पद-सूची

श्री वृन्दावन के प्राचीन समस्त रसिक महानुभावों कृत-पद-रूप गुण की

सं० (श्रीराधाकी जनम वधाई) पद सं०

श्री दया सखी जी महाराज कृत

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत

श्री रसिकराय जी महाराज कृत

श्री सूरदास जी महाराज कृत

रसिक सनेहीजी कृत (लाल जू की व०)

श्री लाड़िली जू के पालनें के पद

ी लाड़िली जू की छठी कौ मंगल

ी लाड़िली जू कौ दसूठन कौ मंगल

दान केलि के पद

पृष्ठ सं० (दान केलि के पद) प

श्री वामन जी के जन्मोत्सव

पद-सूची

पृष्ठ सं० (साँझी उत्सव के पद) पद सं०

गो० श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत

श्री घनश्याम जी महाराज कृत

श्री हरिदास जी महाराज कृत

श्री (हरिराम) व्यास जी महाराज कृत

श्री नागरीदास (नागरिया) जी महा० कृत

पृष्ठ सं० (साँझी उत्सव के पद) पद स[illegible]

श्री ललित किशोरी जी महाराज कृत

श्री कृष्णवल्लभ जी महाराज कृत

श्री सूरदास जी महाराज कृत

श्री रामराय जी महाराज कृत

श्री गुन मंजरी जी महाराज कृत

श्री हरि प्रिया जी महाराज कृत

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज

पद-सूची

अशुद्धि शुद्ध पत्रम्

पृष्ठ सं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ सं०	पंक्ति	अशुद्ध
१७	८	विटत	विटव	१७२	६	जवती
१८	१४	सर्वोपरि	सर्बोपरि	१७३	४	कीरिनि
१८	२२	परजन्सहि	परजन्यहि	१८३	८	सुनाऊ
२१	१६	उद्धव	उद्भव	१८४	२०	हाथ
३३	१८	मित्तंत	निर्तीत	२०२	५	भामी
३६	२४	राजराइ	रामराइ	२०३	१३	भामी
४०	३	आप	ओप	२०५	१	काई।
४५	२४	चन	कंचन	२१२	१०	साला
५५	२०	उद्धव	उद्भव	२१६	२३	दुलराव
६१	६	टेक	टेक ॥	२२४	२२	नना
७०	२	दीजै	दीजै।	२२४	२४	हां
७४	२४	लेहौं	लैहौं	२४१	३	परिचावौ
७६	१८	विभुवन	त्रिभुवन	२४५	२	ठहराइँ
७७	११	देति	देति	२५२	८	लड़ावौ
८१	१	सेष।	सेष	२५८	१५	फुल्यौ
८७	१२	उद्धव	उद्भव	२८८	२३	कीरिति
९०	२४	भगी	भरी	२९९	२२	विविधि
९५	१६	षहिरायौ	पहिरायौ	३०६	२३	दासरी
१००	१६	उद्धव	उद्भव	३१२	११	अंजल
११७	४	परस्तर	परस्पर	३१२	१६	अंज
१२०	१८	प्रगज	प्रकट	३१६	१२	महा
१२१	२०	मंडल	मंडन			
१३३	४	लाल	लला	३२३	८	डारियाँ
१५१	११	दिन	दिन	३३६	१७	श्दाम
१५२	१२	अमंल	अमंगल	३४१	१०	स्याया
१५३	१८	सम	सब	३४२	२२	स्वामी
१५८	६	मंडल	मंडन	३५४	१५	अखरत
१६१	२३	है	रे	३६१	१७	सिंगार
१६४	२०	वधाई	वधाई।	३६२	१	फुलन
१६७	२४	बौद्यौ	बढ्यौ	३६३	१	झंझा

। श्री हित राधा वल्लभो-जयति

❀ श्री हित हरिवंश चन्द्रो जयति ❀

श्रृंगार-रस-सागर

(तृतीय खण्ड)

(श्री वृन्दावन के ५०० रसिकों की वाणियों का संग्रह)

श्री लाल जू की जनम बधाई

श्री लाल जू कौ जनम भादौं वदी अष्टमी कौ ।

उत्सव प्रारम्भ--सावन सुदी पूर्णमासी से--बधाई गान कीर्तन ।

गो० श्री हित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु जी कृत--(बधाई) राग बिलावल

आनन्द आजु नंद कें द्वार । दास अनन्य भजन रस कारन प्रगटे लाल मनोहर ग्वार ॥ चंदन सकल धेंनु तन मंडित कुसुम दाम सोभित आगार । पूरन कुंभ बनैं तोरन पर बीच रुचिर पीपर की डार ॥ जुवति जूथ मिलि गोप विराजत बाजत प्रणव मृदङ्ग सु तार । जय श्री हित हरिवंश अजिर वर वीथिनि दधि मधु दूध हरद के खार ॥१॥

गो० श्री कमल नैंन जी महाराज कृत--(बधाई)

मङ्गल आज नंद के धाम । अखिल लोक पति सुत ह्वै जनम्यौ हित करि नाम धरायौ स्याम ॥१॥ सुरपुर नरपुर बाजे बाजें ब्रज में घर घर घोष रसाल । प्रगट्यौ पुन्य पूरब लौ जसुदा गोद खिलावत मोहन लाल ॥२॥ नंद आनंद भरे अति राजत नृप कुल देखि लज्याही । दाननि देत सम्हारत नाहिन फूले मन मन माही ॥३॥ ता पाछें इक बरनी कपिला कुल पून्यन्यौ

विप्रनि दीनी । वहुत दूध की एक वैस सव सूधी निपट नवीनी ॥४॥ द्वै लख धौर द्विजनि कौ दीनी और गनी नहिं जाति । रूप सुभाव सील गुन दाता काम धेंनु सव गात ॥५॥ द्विज वंदी जन सूत रु चारन जै जै निगम उचारैं । जसुदा सुख मुख देखि लाल कौ मुक्ता रतन मणि वारैं ॥६॥ आवत गोपी गोप रंग भीने हाथनि थार सुहाये । मनु रति पति इंदीवर इंदहि करि मनुहार मिलाये ॥७॥ दधि घृत दूध हरद मधु केशर छिरकत अति सुख पावैं । हरषत वरषत पट भूषन अति आनंद मोद वढ़ावैं ॥८॥ जन्म कर्म हरि के सुखकारी गावैं सुनैं सु नीकौ । जै श्री कमल नैंन हित वसि वृन्दावन लड़ावैं जीवन जीकौ ॥६॥२॥

राग मारू—आज ढाढ़ी ढाढ़िनि रंग भीनैं । दांन मान कछुवै नहिं चाहत विधना मनोरथ कीनैं ॥ नाचत गावत प्रेम वढ़ावत पहिरैं वसन नवीनैं । रीझि परस्पर भूषन वारत चारन वंदी जन दीने ॥ देखत सोभा नर अरु नारी सुर पति पतिनी अधीनैं । धन्य धन्य ये सव व्रजवासी नैंननि पल नहिं लीनैं ॥ नंद गांव वरसानौं गावैं ते कवि परम प्रवीनैं । जै श्री कमल नैंन हित जे अरु वरनत ते किये विधि मति हीनैं ॥३॥

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत– राग मारू –दोहा (वंशावली वरनन)

दोहा–वरन्यौं चाहत कछुक अव कृष्ण चंद्र परिवार । देहु वुद्धि मति सुद्ध अति श्री हरिवंश उदार ॥१॥ गन उद्देश जु दीपिका मध्य कही कछु रीति । जै श्री रूप लाल हित सौं लिखत सुनहु रसिक दै प्रीति ॥२॥ चौतुका–विमल जस ढाढ़ी करत वखान । वजति वधाई नंदराइ ग्रह प्रगट भयौ मुख दान टेक ढाढिनि

संग समाज साज लै सिंघ पौरि मैं नाचै। लै लै नाम गोपवंशनि सात साषि तें वाचैं॥ आये सिमिटि सवै नर नारी कहत देहु जो जाँचै। मोहि चाउ जसुदा सुत निरखन वात यहै सुनि साँचै॥१॥ दोहा—सिंह पौरि बृजराज की वड़ी भीर भई आनि। विविधि भाँति सौं गोप कुल ढाढी कहत वखानि॥३॥ चौतुका—तीन भाँति के गोप बसैं ब्रज तिनकी वात वखानौं। उत्तम वैश्य धरम गौ रच्छा करि विवेक पहिचानैं॥ तिनहू तें अहीर मध्यम गो गाय भैंसि धन धानौं। ब्रज कैं छोर वसत जे गूजर इनहू तें घटि जानौं॥२॥ दोहा—सुनत नंद उपनंद सव बैठे सभा वनाइ। वरनि आदि तें गोप कुल ढाढी लियौ वुलाई॥४॥ चौतुका—वरनतु करत गोप वंशनि कौं ढाढी मन हुलसाई। देव मीढ़ जदुकुल नरेस की कथा पुरातन गाई॥ जजन दान व्रत छत्र धर्म सव विधि सौं करत सदाई। कुँवर कान्ह के परदादे भये सोम वंश के राई॥ दोहा—देवमीढ घर द्वै जु भई पति व्रता पटरानि। इक कन्या छत्रीनि की एक वैश्य की जानि॥५॥ चौतुका—छत्री कन्या तें उपजे सुत सूर सैन सुख दाता। अति ब्रह्मन्य सील सुभ कर्मा वेद अर्थ के ज्ञाता॥ तिन तें श्री वसुदेव भाग की कहत न आवै वाता। नंदराय के मित्र पियारे रचि पचि किये हैं विधाता॥४॥ दोहा—जादव कुल वसुदेव लौं ढाढी कह्यौ सुनाइ। अब वरनौं कुल गोप कौ ब्रज पति कौं सिर नाइ॥ चौतुका—वैश्य कन्यका तें जु भये परजन्य धर्म आधारा। नारद कौ उपदेश पाइ लक्ष्मी पति भजे भुवारा॥ नंदीश्वर पुर वास करत तप संतति हेत विचारा। भई अकास विमल वानी सुनि तन मन रही न सँभारा॥५॥ सोरठा—वानी भई अकास सुफल फल्यौ

अभिलाष सब। ब्रज कौ निहचल वास पाँच पुत्र है हैं जु अब ॥७॥ चौतुका-पाँच पुत्र है हैं तुम्हरे तिनमैं अति नंद प्यारौ। ताकैं लाल प्रगट है ऐसौ तीन भुवन उजियारौ ॥ यह सुनि हरषि भयौ मन मैं जु महावन वास विचार्यौ। केशी कें डर डरपि गाँव सब जमुना पार उतार्यौ ॥६॥ दोहा-पाँच पुत्र परजन्य के राज करत ब्रज माँहि। सात दीप के भूप जे इन सम कहुं न जाँहिं ॥८॥ चौतुका-बड़ भैया उपनंद सबनि तें गौर सुभग अंग ताकौ। हरित वसन तन लाँवी डाढ़ी नौ लख गोधन जाकौ ॥ तुंगी त्रिया सुभग लच्छन जुत जासौंहित जसुदा कौ। लै लै गोद निरखि मुख हरि कौ धनि धनि बोलनि वाकौ ॥७॥ दोहा-बड़ भ्राता उपनंद जू तिनकी संपति गाइ। अब बरनौं अभिनंद कौं भरे कृष्ण के भाइ ॥६॥ चौतुका-इक अभिनंद नंद तें जेठै गौर बरन अँग सोहै। भरे खरिक सत गाइ लच्छि दस दान समान न कोहै ॥ कृष्ण प्रेम सौं छक्यौ कहत यौं बात नंद सुनि होहै। तिहरे सुत तें या ब्रज में कछु प्यारौ नाहिन मोहै ॥८॥ दोहा-नंदन एक सुनंद एक कका कृष्ण के गाइ। रीझि रीझि ब्रज ईश तब देहै दान बुलाइ ॥१०॥ चौतुका-एक सुनंद नंद तें लहुरे बहुत देह के भारे। षोडस लख गोधन ताकें घर वकुला नाम त्रियारे ॥ इनहूँ तें लहुरे नंदन इक दोऊ कृष्ण कका रे। साल लाख गोधन धन जाकें नंदहि बहुत पियारे ॥६॥ दोहा-सानंदा अरु नंदिनी बहिन नंद की जानि। अब स्वरूप श्रीनंद कौ कहौं सुनौं धरि ध्यान ॥११॥ करषा-ढाढी गाइ नन्दराइ कौ ध्यान धरि कैं। द्वार ताकें परी सिद्धि नव निद्धि सब मांगि तापै जाहि दरिद्र टरि कैं ॥१॥ सुभ्र चंदन पौरि

अंग छवि जग मगति सजल घन सम वसन तनहि साजै। फवी सिर पाग सौभाग्य लोचन विशद भाल पर तिलक केशरि विराजै ॥२॥ श्रवन मणि जलज की जोति झलकति लसत सेत अरु स्याम डाढी विराजै। वाहु अजांन वड़ दान दानेश कौ देखि मुख सकल दुख दूरि भाजै ॥३॥ दोहा—सव गोपनि कौ जस कहत ढाढी मन न अघाइ। अव वैभव श्री नंद कौ वरनत रह्यौ लुभ्याइ ॥१२॥ चौतुका—सहस्र खरिक दस सहस्र ग्वाल पै गैंया जाइ न वरनी। कामधेनु पय श्रवित फिरति सव स्वेत करी ब्रज धरनी ॥ जमुना तीर नीर पीवत नित सदा हरित तृन चरनी। कृष्ण कमल कर फिरत पीठि पर कहा करी इन करनी ॥१०॥ दोहा—ये गैंया नंदराइ की चरति रहति ब्रज माँहिं। शिव विरंचि मन चिंतवत पद रज परसत नाहिं ॥१३॥ चौतुका—इन गैयनि कें काज स्याम ऐस्वर्ज सवै विसरायौ। अमृत छाड़ि गौलोक धाम तें ब्रज कौ गोरस भायौ ॥ मुनि मन ध्यान ग्यान पचि हारे परै न क्योंहू पायौ। महा भाग वड़ भाग जसोमति ऐसौ सुत निज जायौ ॥११॥ अद्भुत रूप निरखि नख सिख तें थके नैंन मन हारौ। कोटि चंद की जोति सार कौ वन्यौं इंदु इक न्यारौ ॥ चंचल नैंन सरद अंवुज मनु महा मनोहर प्यारौ। नन्दराइ सुनि आइ भवन धन वांटत खोलि भंडारौ ॥१२॥ तव रीझे ब्रज ईश नन्द जू भवन भंडार लुटायौ। रतन जटित टोडर मणि नूपुर ढाढी कौं पहिरायौ ॥ लहर विडार दिये वहु गोपनि भयौ विदा घर आयौ। जै श्री रूपलाल हित नव किशोर कौं गाइ गाइ सुख पायौ १३ ४

तन मन उर आनंद उमगि नमाईं सुर विमान कुशुमावलि बरषत जय जय वानी छाई ॥ उदित मुदित व्रज चंद चकोरी व्रज वनिता उठि धाईं। जै श्री हित अलि रूप सिंधु सुख वाढ्यौ नेम मैंड़ विसराई ॥५॥

राग रामकली—आजु व्रज मङ्गल मोद भयौ। जसुमति कूषि कमल तें प्रगटे मोहन जनम लयौ ॥ जैसें पूरन ससि प्राची दिसि उड़गन जुत उदयौ। आनंद किरिनि प्रकाश तिमिर हर त्रिभुवन ताप गयौ ॥ सींचैं प्रेम सुधा नर नारी अमर विमांन छयौ। जै श्री रूप लाल हित ललित त्रिभंगी रंगी रंग नयौ ॥६॥

राग धनाश्री—व्रज वनिता मिलि मङ्गल, गावति नंद सदन में आईं। रमा उमा रति सची सरस्वती निरखत रहीं लुभाई ॥ जसुमति कूषि मल्हाइ गाइ गुन आनंद उर न समाई। मुख मुख सुंदर स्याम विलोकत तन मन नैंन सिराई ॥ धनि श्री कृष्ण जनम दिन मङ्गल धनि जे करत सदाई। जै श्री हित चित रूप विलोकि त्रभंगी उर अभिलाष पुजाई ॥७॥

राग चैती गौरी—व्रधावौ नंद राइ कैं, अहो हेली, प्रगट्यौ है व्रज चंद ॥टेक॥ अहो हेली सानंदा औरु नंदिनी, सुनि लारें गवावति आइ ॥वधावौ०॥ अहो हेली वाजे वहु विधि वाजहीं रानी जसुमति कूषि मल्हाइ ॥वधावौ०॥१॥ अहो हेली मोतिनु चौक पुराइ कैं, संग लीयें सकल व्रज नारि ॥वधावौ०॥ अहो हेली मेवा अरु तिल चाँवरी वाँटति भरि भरि थारि ॥वधावौ०॥२॥ अहो भाभी मन भायौ हम लैंहिगी तव धरि है साथिये द्वार ॥वधावौ०॥ अहो वेटी चित चिंतत विधनां

किये धन्य धरी यह वार वधावौ० ३ अहो भाभी माँडि धरौं अव साथिये अरु खिचरी चरुवा गाइ ॥वधावौ०॥ अहो वेटी भूषन नख सिख लीजियै अरु पहिरि पटंवर आइ ॥वधावौ०॥ ॥४॥ अहो भाभी लैंहुगी हाथनि कौ मूंदरा अरु नौसर हार मंगाइ ॥वधावौ०॥ औरु राइ चढ़नि कौ घोरिला गंज राज सहित मन भाइ ॥वधावौ०॥५॥ अहो वेटी जो चाहियै सो लीजियै विधि पूरे है चित चाइ ॥वधावौ०॥ वेटी मेवा औरु तंवोल कौं देहु ऊखल कोऊ न जाइ ॥वधावौ०॥६॥ अहो भाभी धरे हैं हुलासनि साथिये औरु गनि गनि रोपीं हैं सीक ॥वधावौ०॥ औरु चीतौ नागर पांन है गज मुकतनि की करीं लीक ॥वधावौ०॥७॥ अहो वेटी देहु असीस सुहावनीं प्रभु कीनैं वंछित आजु ॥वधावौ०॥ अहो भाभी चिरुजीवौ तेरौ लाड़िलौ सुख संपति सहित समाजु ॥वधावौ०॥८॥ पहिराइं सकल सवासिनीं वे तौ देति चलीं हैं असीस ॥वधावौ०॥ जै श्री रूपलाल हित हिय वसौ यह प्रगट्यौ है ब्रज ईस ॥वधावौ०॥६॥८॥

गो० श्री किशोरी लाल जी महाराज कृत—राग आसावरी ताल रूपक

मोहन जनमत माई, आजु वजति वधाई घोष नृपति घर। जसुमति सब सुख फलनि फली की कहा कहौं भाग निकाई ॥आजु०॥टेक॥१॥ नहीं सम तूल सची रति रंभा पन्नग नाहिं कुँवारी। कृष्ण जनम दिन ते मग गवनीं किन धौं विरंचि सँवारी ॥२॥ वगरि वगरि तें वनि वनि वनिता निकसी भाँति भली है। नन्द सदन मनु रूप उदधि छवि सरिता मिलन चली है ३ उर दृग आरति कूल विदारति

सुनि सुत जनम सिहानीं । रुकि गये पथिक अमङ्गल जग के सुजस नीर सरसानीं ॥४॥ वारिज वदन अलक अलि श्रेंनी कटि तट शब्द मराला । नौका नैंन कटाच्छि सु खेवक कौतिक सरिता वाला ॥५॥ मुख ससि जोति चंद्रिका मंदिर अतिसै ओप भई है । लखि हरि धन्य कहति सब जसुमति कुल मणि दयौ दई है ॥६॥ पुनि पुनि पद वंदन करि गावति निर्त्तति पुलकित हीयें । हरि सिसु रूप त्रषित दृग भरि भरि रहि रहि सादर पीयें ॥७॥ वलि हित रूप चरित गुन वारिध क्रीड़त ब्रज जन माहीं । जै श्री किशोरी लाल हित देव विमाननि जा सुख कौं पछिताहीं ॥८॥६॥

गो० श्री गोपी लाल जी महाराज कृत--राग झंझौटी ताल मूल

नन्द महर घर आजु वधाइयाँ । वड़ भागिनि जसुमति महारानी जाकी कूषि सिराइयाँ ॥ वजति मृदंग तँवूरा नौवत मीठी धुनि सहनाइयाँ । गावत गुनी विरद पढ़ैं वंदी कुल कीरति मन भाइयाँ ॥ मगन भये नाचत नर नारी दधि कादौं जु मचाइयाँ । गोपी लाल हित रूप असीसत जुग जुग रहौ ठकुराइयाँ ॥१०॥

श्री हित किशोरदास जी महाराज कृत--राग विलावल-सूहौ

आज सखी ब्रजराज कें आँगन दुन्दुभी वाजै । ब्रज नारी सब गावहीं देखत गोप समाजै ॥ सात सींक द्वारनि धरी रतननि जटित सुहाई । जसुमति कूषि उदित भई वाजति विविधि वधाई ॥ मोतिन चौक पुराइ कें विप्र वेद धुनि कीनीं । अमर नगर तें वरषहीं सुर वधू पुहुप नवीनी ॥ भिच्छुक जन पूरन किये मन वाँछित निधि दीनीं । हित किशोर मुख निरषि कें हरषि वलैया लीनीं ११

श्री व्यास जी महाराज कृत राग गौरी

चलौ भैया हौ नन्द महर घर वाजति आजु वधाई। जायौ पूत जसोदा रानी गोकुल की निधि आई॥ कोऊ वन जिनि जाहु गाय लै आवहु चित्र वनाई। करौ कुलाहल नाचौ गावौ हेरी दै दै भाई॥ छिरकत चोवा चंदन वंदन हरदी दूव धराई। माखन दूध दही की कादौं भादौं मास मचाई॥ नाचति गोपी मंगल गावति घर घर तें सव आई। विहसित वदन नैंन तन पुलकित उर आनंद न समाई॥ वाजत झाँझि मृदंग ताल डफ वीना वैंन सुहाई। जै जै धुनि वोलत डोलत पुनि कुशुमावलि वरषाई॥ परम उदार सकल ब्रजवासिनि घर घर वात लुटाई। जाचक धनी भये वड़ भागी व्यास चरन रज पाई ॥१२॥

राग सारंग—नन्द वृषभांन के हम भाट। उदौ भयौ ब्रजवल्लव कुल कौ मेटि हमारी नाट॥ भूषन वसन जु आजु लुटावौ अरु गाइनि के ठाट। इतौ देहु जो मोल लैंहिं हम सव मथुरा की हाट॥ इन्द्र कुवेर हमारें भायें ब्रज के गूजर जाट। वस्यौ वंश हरिवंश व्यास कौ वास चीर कें घाट ॥१३॥

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग आसावरी

वाजत वधाई सुनि आईं जुरि जुरि। आँगन महरि कें नाचति मुरि मुरि॥ सुत जनम्यौं सुनि हर्षे उर उर। दुन्दुभी वाजें सुनि धुनि पुर पुर॥ घोष कुलाहल मंगल घर घर। फूले सव हिये आनन्द भरि भरि॥ ब्रज रवनी सिंगार सु करि करि। आईं सव कर थारनि धरि धरि॥ फूली भूली सव शोभा दिखि दिखि मानौं चित्र राखी हैं लिखि लिखि गोप छवीले

आये वनि वनि बोलत सव यह वासर धनि धनि नन्द महाँ मन दै धन हँसि हँसि। पुत्र जनम आनन्द धसि धसि ॥ मोद मगन मन आनंद घुरि घुरि। दामोदर हित गये दुख दुरि दुरि ॥१४॥

राग सारंग—परम सुख भर्यौ मुदित व्रजराज। अखिल भुवन मणि सुत ह्वै जनम्यौं वजत वधावो आज ॥ भवन भवन मानौं सुत जनमैं यौं फूले व्रजवासी। निधि सिधि डोलति सदन सदन प्रति गोकुल आनन्द रासी ॥ त्रिभुवन छवि मोहन नव गोरी नवल किशोरी वाल। मंगल वस्तु लियें कर थारनि देखन चली नन्दलाल ॥ फूली तन मन सब जुवती जन निरख्यौ आनन्द कंद। असीस देत हैं दामोदर हित जय वृन्दावन चंद ॥१५॥

राग भैंरौं—राजै सव राजनि मणि आज नन्दराइ जू। सकल विभूति पति कोटि ब्रह्माण्डनि पति संत गति सुत भयौ ताके ग्रह आइ जू ॥१॥ वाजति दुन्दुभी द्वार मधुर मृदंग तार किन्नरी सुभेरि वाजैं और सहनाइ जू। नाचत मगन ग्वार आनन्द वढ्यौ अपार घोरत हरद दही घृत धाइ धाइ जू ॥२॥ गावति मंगल नारि आभूषण देति वारि देखि प्यारौ मुख कोऊ घर हूं न जाइ जू। मची है मंगल भीर तजति न गोपी तीर नैंन प्रांन रहे लाल रूप में समाइ जू ॥३॥ पढ़त है विप्र वेद तन मन गयौ खेद वंदी जन मागद पढ़त भले भाइ जू। सवकौ दरिद्र भाज्यौ जस तिहूँ लोक गाज्यौ फूले हैं मंगित सव मन भायौ पाइ जू ॥४॥ करैं वहु सनमान हरषि हरषि दांन सोभा कहा कहौं जव लाग्यौ दैंन न्हाइ जू सौनैं सौं सींग

मढ़ाइ तांवे सौं पीठि वनाइ रूपें खुर छाइ दीनी दोइ लच्छि गाइ जू ॥५॥ सक्र लोक विधि लोक दूरि भयौ सव सोक गावति कीरति मन आनन्द वढ़ाइ जू । मन वच क्रम नित जाँचत दामोदर हित दीजिये वधाई गाऊँ सुजस अघाइ जू ॥६॥१६॥

राग जै जैवंती भैरौं—वाजति वधाई आजु द्वार नन्दराइ कैं । नेति जाकों कहैं छंद ऐसौ वृन्दावन चंद भयौ है महरि कें भवन सुत आइ कैं ॥१॥ मनोरथ भये सिद्ध नाचत तरुन वृद्ध भयौ है उछाह अति हँसत हँसाइ कैं । कछु न परति कही दूध घृत हरद दही घोरि भई ऐसी दई सरिता वहाइ कैं ॥२॥ वाढ्यौ है अपार सुख दूरि भयौ सव दुख पायौ दान द्विज वंदी जन हूं अघाइ कैं । आँन जे मंगित जन सवनि के पूरे मन मुदित उदार महा राज वेटा पाइ कैं ॥३॥ सुनि कैं ब्रज की नारि नव पट तन धारि वदन उवटि मन आनन्द वढ़ाइ कैं । राजत करनि थार रुरकत उर हार चलीं ऐसी छवि सौं मदन चौंधि लाइ कैं ॥४॥ आई जसुधा के धांम जायौ जहाँ लौंनौं स्याम देखि द्दग अंग अंग रही छवि छाइ कैं । देति है असीस वाल चिरुजियौ तेरौ लाल पूरि है कामना कान्ह सवहीं की भाइ कैं ॥५॥ वाढ़ी तव ही तें प्रीति दिन दिन औरै रीति घिरि रहे आंगन सुमंदिर विहाइ कैं । जाइ जो कवहूँ भौंन रह्यौ तहाँ परै तौंन मीन ज्यौं मन की व्रत्ति जो न देखै जाइ कैं ॥६॥ ऐसी भाँति सुख धांम प्रगटे जहाँ सुंदर स्याम वृषभांन गोप ग्रह वधाई वजाइ कैं । दामोदर हित जोरी स्याम पिय राधा गोरी वसौ मेरे हिय नित जाऊँ जस गाइ कैं ७ १७

राग रामकली वाजन लागे आली बाजे सुहाये नन्द महर के धाम मनोहर मंगल निधि परमेस्वर आये ॥१॥ आनन्द भयौ श्रवन सुनि सबकें नारिनु मिलि महा मंगल गाये। लै लै तिलक गोप गोपी सब सदन सदन तें गावत आये ॥२॥ ना ना रंग विचित्र बिछौना वगर मुढारि सुधारि विछाये। झलकति मुक्ता माल चहूँ दिसि सोभित सुभग वितान तनाये ॥३॥ चटक छबीली अटकत लोचन लटकत तोरन रतन वनाए। कंचन भीति सु विद्रुम देहरि मन्दिर दिपत दिनेश छिपाऐ ॥४॥ फटिक जटित मर्कत मणि विद्रुम प्रति विंवित ऊपर छवि छाऐ। रंभा रोरी अंकुर अच्छत फल दीपावलि कलश भराऐ ॥५॥ वडडे गोप सभा जुरि वैठे तिनमें नन्द विराजत भाए। मन की फूल दुकूल अनूपम पहिरें सुख सागर में न्हाए ॥६॥ इक नाचत इक दिखि दिखि फूलत इक बैठे नाचत उठि धाऐ। कौतिक भयौ गयौ सब कौ दुख सुख वरष्यौ सव लोक अघाऐ ॥७॥ कर्दम मची अजिर छवि वाढ़ी गोरस मांटनि कर ढरकाऐ। निर्त्तत रपटत लपटत अंकनि हँसत लसत मन मोद वढाऐ ॥८॥ महा महोत्सव नन्द महर घर दान मान सव जन पहिराऐ। देत असीस ईश व्रज सुत कौं मांगि विदा सव सदन सिधाऐ ॥९॥ जै जै जै वानी तिहूँ पुर में उर उर के सब सूल नसाऐ। दामोदर हित साधु अमर हरि अपनी वाँह छाँह वसाऐ।१०।१८।

राग विहागरो—आज व्रज मंगल वजति वधाई। प्राची दिसि जसुमति कें पूरन प्रगट्यौ हरि ससि माई ॥१॥ फूले कुमुद साधु सुर जहाँ तहाँ मीन उठै सरसाई। खल राजा अरु राक्षस कुल मनु कमल गऐ मुरझाई २ आनन्द सागर वाढ्यौ गोप कुल

प्रेम किरिनि दरसाई। आई निकट चकोरी गोपी पीवति सुंदर ताई ॥३॥ पाप ताप तन नास्यौ जग कौ सुजस सुधा वरसाई। दामोदर हित गगन नन्द ग्रह वसत सदा सुखदाई ॥४॥१६॥

राग देव गंधार—आजु वधाई मंगल गावत। जायौ जसुमति लाल मनोहर सुनि सुनि सब सचु पावत ।१। ताल मृदंग दमामें-गौ मुख भेरी ढ़ोल वजावत। आनन्द वरष्यौ सब व्रज हरष्यौ जहाँ तहाँ तें धावत ॥२॥ हाथनि भेंट ललित गति कामिनि नन्द सदन में आवत। निरखि निरखि मोहन सोहन मुख फूलत नैंन सिरावत ॥३॥ आंगन नाचत गोप छवीले अद्भुत रंग वढ़ावत। लै लै छिरकत दूध दही घृत हरदी कीच मचा-वत ॥४॥ रोरी तिलक दुकूल सु भूषन नन्द सवनि पहिरावत। जस गावनि कौ हित दामोदर दास वधाई पावत ॥५॥२०॥

राग आसावरी—चलौ मिलि मङ्गल गावहु माई। नन्द जसोदा के घर आनन्द प्रगट्यौ पूत कन्हाई ॥१॥ वंदी जन मागद धुनि जै जै मङ्गल वाजे वाजैं। पढ़त वेद द्विज मङ्गल वानी सुनत अमङ्गल भाजैं ॥२॥ करि सिंगार थार धरि कामिनि चलीं हे देखन नंदलाला। मानौं घन कौं मिलन आवति है चंचल दामिनि माला ॥३॥ छवि सौं छिरकत गोप छवीले हरद दही घृत घोरि। प्रेम मगन नाचत गावति है भुजा परस्पर जोरि ॥४॥ नन्दराइ आनन्द भयौ मन देत न मानैं संक। ते मंगित राजा से राजत आये ते मांगन रंक ॥५॥ आनंद फूल्यौ फिरत सकल व्रज घर घर मङ्गल चार। दामोदर हित ताही दिन तें असुभ मिट्यौ संसार ।६ २१।

श्री हित अनूप जी महाराज कृत—राग विलावल-सूहौ

मिलि आवौ री सजनी मङ्गल गाइये ॥टेक॥ महरि यशुमति कें भयौ सुत वेगि वधाये जाइये। आजु कौ सौ द्यौस सुभ सखी बड़े भागनि पाइये ॥१॥ घसि चारु चंदन लीपि आंगन मोतिनु चौक पुराइये। सींक सहित सँवारि सँथिया वंदन माल वँधाइये ॥२॥ ललन मुख लखि लै वलैयाँ नैंन हियौ सिराइये। प्रान सर्वसु वारनैं करि फूली अंग न माइये ॥३॥ जिय हुती सो द्दगनि देखी भई सवनि मन भाइये। हित अनूप हमारी जीवन विधना तू चिरु ज्याइये ॥४॥२२॥

राग विभास—आजु हमारे माई मङ्गल री मदिलरा री वाजैगो। इच्छा पूजी मो मन की गह गहाई गाजैगो ॥ नन्द लला कौ जनम होत ही ब्रज जन आजु विराजैगो। घर-घर तोरन वंदन माला हित अनूप सुख साजैगो ॥२३॥

श्री गरीवदास जी महाराज कृत—राग विभास

आज वधावौ माई री नंद दरवार। ब्रज वनिता मिलि मङ्गल गावौ सजि चलौ कंचन थार ॥ धुजा पताका कदली रोपौ द्वारनि वंदन वार। सकल सवासिनि धरौ साथिये जसुमति परम उदार ॥ कंचन सींक रुपीं अति राजति मुक्ता लगे हैं सुढ़ार। कमल मुखी प्रफुलित भई मानौं दिनकर किरिनि अधार ॥ कुँवरहिं देखत अति सुख उपज्यौ वारति मणि गन हार। गरीव दास कौं दई है पंजीरी बोलि सकल परिवार ॥२४॥

राग जैतश्री—आजु सुहेलरा श्रीनन्द महर घर रानी जायौ है पूत ॥टेक॥ जात करम कौं ब्रज पति आये लियें विप्रनि की भीर। गाइ सवच्छ पंच लख वोली जिनके संग अभीर १ नांदी मुख

करि दई ब्राह्मननि हरषि असीस सुनाई पंच शब्द मिलि वाजे वाजें सब मिलि हेरी गाई ॥२॥ जब यह बात सुनी सुख की बरसानैं बजी बधाई । कीरति सहित नन्द ग्रह आये भई है सजन मन भाई ॥३॥ तब जसुमति सुनि सुनि ये वातैं अरघ पाँवडे कीनैं । मंगल बहुत गवाइ घोष में भांन भवन में लीनैं ॥४॥ बालक देखि परिकरमा कीनी टीकौ भेट मगाई । अति आनन्द भयौ सबहिनि कें मन में धरी है सगाई ॥५॥ अपनी अपनी काँवरि काँधें धरें सिरनि पर माट । देस देस के दूब बँधावत विरत्ती स्वर अरु भाट ॥६॥ रिषि के वचन सत्य करि मानैं विदा महर पें मांगी । गद गद पुलक रोम भये ठाड़े दरसन दें वड़ भागी ॥७॥ गरीबदास कछु यह जस बरन्यौं लघु मति अपनी घातैं । जसुमति वोलि पँजीरी दीनीं व्यास वंश के नातैं ॥८॥२५॥

श्री किशोरी दास जी महाराज कृत--(वंशावली वर्णन) दोहा--राग मारू

श्री गुरु श्री गोविंद पद मंगल हित करों ध्यान । मंगल श्री ब्रजराज घर ज्यौं पाऊँ सनमान ॥१॥ विघन हरन मंगल करन जे कहियत हैं और । तिन हौं चरननि कौं नवौं पूजौ आसा मोर ॥२॥ श्री रूप सनातन जीव जुत कीनौ भक्ति प्रकास । जनम जनम निजु चरन कौ कीजै मोकौं दास ॥३॥ मित्र वंधु के चरन गहि लैहौं अपनें साथ । जातें हौं नीकौ लगौं आदर दैंहि ब्रज नाथ ॥४॥ गोप सभा बैठी विशद मध्य नंद ब्रजराइ । सभा सुधर्मा इंद्र की जा देखतें लज्याइ ॥५॥ इंद्र के नाम --सक्र सतक्रत सचीपति संक्रन्दन पर हूत । कोशिक वासव वृत्तिहा मघवा मातलि सूत ॥६॥ जिस्नु पुरंदर वज्र धर आषंडल रिपु पाक । सोहैं जहाँ ब्रजराज जू को है इंद्र वराक ॥७॥

जाचक देस विदेस के जाचन आये दांन, मो आये फीके लगे ज्यौं दीपक उदै भांन ॥८॥ मंगल देवनि सेवहूं मंगल सुमिरौं नाम । गोप राज कैं पुत्र सुनि आयौ ब्रज पति धाम ॥९॥ हँसि बोले ब्रजराज जू ढाढी हौंडौं आव । मुह मांग्यौ तुहि दैऊगौ कछु गोपनि कौ जस गाव ।१०। श्री हरिवंश चंद्र वर सुमिरि कैं मन में कियौ विचार । अपनी मति अनुमान कछु वरनौं ब्रज रस सार ॥११॥ कोस चौरासी भूमि कौ को करि सकै वखानि। गिरि वन वीथी द्रुम लता लीलामय सब जानि ॥१२॥ द्वै राजा या देस के धर्म इष्ट स्व ग्यांन । प्रगट नाम तिनके सुनौं श्री नंदराइ वृषभांन ॥१३॥ तिनकौ वैभव कहनि कौं कोउ सम सरि नाहि । द्रुम लेखनि मसि सिंधु करि छिति पर लिखे न जाहिं ॥१४॥ लोक चतुर्दस तन धरैं सेवत हैं या ठौर । निज वैभव वैकुंठ तजि आवत ब्रज में दौर ॥१५॥ कोटि कोटि ऐस्वर्ज सुख इन ब्रज वासिनि के द्वार । ब्रज वासिनि के दास पर कोटि इन्द्र सुख वारि ॥१६॥ चौपाई–श्री गुरू गोविंद चरन रज वंदौं । मंगल रूप ध्यान आनंदौं ॥१७॥ पाऊँ श्री हरिवंश सहाय । वरनौं कछु परिकर ब्रज राय ॥१८॥ जद्यपि अलप बुद्धि है मेरी । लीला गुन सागर करि हेरी ॥१९॥ कैसैं करि तरि सकौं अपार । विनु साधु जननि चरननि आधार ॥२०॥ सोई जानि आसरौ कीन । और उपाइ नहीं मन दीन ॥२१॥ इनकी कृपा पार भव करैं । दुर्ल्लभ सुलभ होहि दुख हरैं ॥२२॥ दोहा–परम हंस श्री रूप जु परम कृपा मन धार । वरन्यौं परिकर घोष पति जो ब्रजराज कुँवार ॥२३॥ सोई भाषा करि कहौं लहौं कृपा इन पास । श्रीहरिवंश प्रताप तें कहत किशोरीदास ।

२४ कृपा अनुग्रह जानि कैं घटि वढि लेहु सँवारि साधु परम उपकार करि अनुकंपा मन धारि ॥२५॥ सकल वैकुंठनि तें सरस नंदीसुर व्रजराज। कोटि कोटि जहाँ लक्ष्मी वसति करति कृत काज ॥२६॥ कंचन मय मंदिर खचित चित्र चित्र कल मोर। पावन सर आनंद निधि वँध्यौ मनिनि चहुँ ओर ॥२७॥ आस पास कुंजैं सुभग अरु अँगनाई चार। मणि कंचन करि खचित भुव द्रुम समूह मंदार ॥२८॥ सनु तीरथ है प्रेम कौ उद्दीपन सुख कार। भाँति भाँति के विटत नव द्रुम जातिनु में सार ॥२९॥ सैलासन अरु पांडु यह नाम दुहुँनि मन आंनि। महाराज व्रजराज की प्रगट अथाई जांनि ॥३०॥ अव वंशावलि नंद की कहौं कछू विस्तार। आगम उक्ति जु संहिता ताकौ अर्थ विचार ॥३१॥ चौपाई—कुल आभीर नृपति महा वाहु। तिनकें कंज नाभि लौं चाहु ॥३२॥ भुव वल चित्र सैंन जो जानौं। ये राजा अति ही परिधानौं ॥३३॥ परम धर्म धुज भक्त सिरोमनि। देव मीढ लियौ हरि सेवा पनि ॥३४॥ लक्ष्मी अरु नारायन इष्ट। तिनतें वर पायौ जु अभिष्ट ॥३५॥ तिनके पुत्र नाम परजन्य। परम वैष्णव महा अनन्य ॥३६॥ मेघ समान दया मनमान। वरषत सकल प्रजा पर दान ॥३७॥ गुन लक्षण परजन्य समानौं। पतिनीं तिन वरेयसी जानौं ॥३८॥ जथा नाम गुन श्रेष्ठ जु महा। दादी कृष्ण चन्द्र गुन लहा ॥३९॥ पांच पुत्र तिनके कुल दीप। मध्य पुत्र हैं नंद महीप ॥४०॥ वड़े उपनंद और अभिनंदन। भैया वड़े वली श्री नंदन ॥४१॥ छोटे हैं सुनंद अरु नंदन। भैया चारि नंद जग वंदन ॥४२॥ तुंगी और पीगरीं जानौं। कुवला अरु अतुला पहि-

चानौं ॥४३॥ ये इनकी पतिनी क्रम चारि। परम सुसीला अरु वर नारि ॥४४॥ वहिन सुनंद नंदिनी नांम। भर्त्ता तासु नील सुभ कांम ॥४५॥ नंदराइ कुल दीपक धीर। मध्य पुत्र परजन्य गंभीर ॥४६॥ श्री जसुदा जग में विख्यात। जसु की दाता अरु जग मात ॥४७॥ गोपनि कौ कुल दीपक मानौं। धरैं पति व्रत सील महानौं ॥४८॥ ब्रज रानी नंद घरनि विख्यात। तिनके गुन वरनैं कित जात ॥४९॥ लक्ष्मी अरु नारायन सेइ। तिनकी भक्ति लहे वर एह ॥५०॥ कृष्ण पुत्र पाये घनस्याम। मन वाँछित फल पूरन काम ॥५१॥ अष्टमी कृष्ण पक्षि अधराति। भादौं मास जनम सुख दाति ॥५२॥ इन पायौ नारद उपदेस। इष्ट भजे नंदीश्वर देश ॥५३॥ सुख संतति की करी कामना। नारायन विनु और नामना ॥५४॥ अंतरीक्ष वानी जव भई। सुनत वचन तन की सुधि गई ॥५५॥ पांच पुत्र ह्वै है या तप करि। तिनमें नंद विदित सर्वोपरि ॥५६॥ तिनकें नंदन ह्वै हैं ऐसे। ब्रज मंडल त्रिभुवन नहिं तैसे ॥५७॥ देव सेव जाकी निज्ञु करि हैं। चरन रेंन मुकटनि पर धरि हैं ॥५८॥ दोहा—यस सुनि मन संतोष भयौ वसे सहित परिवार। केशी के डर महा वन उतरे जमुना पार ॥५९॥ इनकी प्रिया वरेयसी कसूँभी फूल कें रंग। हरित वसन तन ठैंगनी सेत केश शुभ अंग ॥६०॥ दादी गिरधर देव की पुन्य पुंज सुख धांम। पांच पुत्र संपति वहुत नाती सुन्दर श्याम ॥६१॥ चौपाई—परजन्महि लहुरे अरजन्य। तिनहुँ तें लहुरे राजन्य ॥६२॥ तिनकी प्रिया नटी अरु सूरा। श्री हरि राइ प्रेम कौ पूरा ॥६३॥ वहिन सुजन्या पति गुण वीरा। श्री वृषभांन राइ के मातुल

धीरा ६४ श्री ब्रज राज जनक हरि जू के। नंद अनंदित लोक तिहूं के ॥६५॥ नंदराइ वृषभांनहि भावे। किशोरी दास यह मंगल गावे ॥६६॥२६॥

श्री खेम हित जी महाराज कृत—राग माल

आजु हौं नंदहि जाचत आयौ। जनम सफल करिवे कौं अपनौं रहसि वधावौं गायौ ॥१॥ महरि कहति या वालक कौं गुन किनहूँ न भेद वतायौ। भलौ भलौ सव लोग कहत हैं सोई ग्रंथनि गायौ ॥२॥ प्रथम रूप संखा सुर मार्‌यौ कमठ पीठि ठहरायौ। श्री वाराह नृसिंघ औतर्‌यौ वलि पाताल पठायौ ॥३॥ परसराम छत्रिनु के कारन कैऊ वार छुटायौ। रघुपति रावन सीस भुजा हति सीता लै घर आयौ ॥४॥ विभीषण कौं राज तिलक दै लंका मैं वैठायौ। अव श्री कृष्ण प्रगट पुन्यनि तें तुम्हारौ पुत्र कहायौ ॥५॥ वाल केलि सौं केलि करैंगे नटवर वेष वनायौ। कर गोवर्धन सात द्यौस लौं वाएँ अग्र उठायौ ॥६॥ रास विलास करे वृन्दावन गोपिनि प्रेम वढ़ायौ। मार्‌यौ कंस केशी खल मार्‌यौ औरै साल सवायौ ॥७॥ जस अपार लीला अनंत ब्रह्मा हू पार न पायौ। महरि कहति यह भलौ जसौंधी सवहिनि के मन भायौ ॥८॥ वावा जू हँसि कैं मंदिर तें वकुचा वेगि मगायौ। झगा पगा अरु पाग पिछौरा नीकैं करि पहिरायौ ॥९॥ हरी दरयाई कौ दगला ऊपर उपनंद उढ़ायौ। सुखानंद सौनैं कौ टोडर ढाढी हाथ गहायौ ॥१०॥ महानंद महँगे मोलनि कौ ग्रीव हार पहिरायौ। परमानन्द प्रीति करिकैं काननि कुंडल चमकायौ ॥११॥ धरानंद धाराधर कें सम कंचन धन झरलायौ सीधो वहुत सुरसुरानंद

नैं गाड़ीनि भरि पहुँचायौ ॥१२॥ नित्यानंद सवनि सौं कहि कैं सब पै दान दिवायौ। कनक माल कंकन मुंदरी सौं उभै भार भर वायौ ॥१३॥ वड़े नंद ठठके वड़ता जी सेवक हाथ गहायौ। दीनौं वड़ौ डोरि कौ हाथी घन घनाइ घन नायौ ॥१४॥ गाइ भैंसि खैलनि के लहँडे गोकुल गाऊँ जतायौ। दस हजार मन गैंहुँनि कौ तव एकै खेत वतायौ ॥१५॥ वेसक उठ्यौ वंव धरि कैं चढ़ि कैं निसान वजायौ। ढाढिनि हूँ पहिरी मंदिर तैं सो दुःख जात न गायौ ॥१६॥ इहिं विधि विदा भयौ जव ढाढी कीरति जस सौं छायौ। व्रज वासीनि विचारि खेम हित लिखि पट्टौ पकरायौ ॥१७॥२७॥

श्री यादौं भगत जी महाराज कृत—राग धनाश्री

नंद जू मेरे मन आनंद भयौ हौं वरसानैं तैं आयौ। श्री वृषभांन कह्यौ सुनि मोसौं पूत जसोदा जायौ ॥टेक॥ कीरति जू हूँ कह्यौ टेरि कैं सुनि रे ढाढी आइ। जसुमति सौं कहियौ पालागन पाछैं वात चलाइ ॥ दई करै मेरौ मन भायौ तव मैं पकरौं पाइ। तीन काल तिहूँ लोक कौ यह सुख नैननि देखौं आइ ॥१॥ तुम तौ परम प्रवीन नंद जू वड़े गोप के जाए। हौं तुम्हरौ जस कहौं कहाँ लौं वेद पुराननि गाए ॥ जो प्रभु अखिल लोक चूडामणि मो घर वैठें पाए। गई सूल व्रज जन आनंदित भये सकल मन भाए ॥२॥ परवत मात रतन के दीनैं द्वै लख धैंनु न्हवाई। औरौ दान दिये वहुतेरे तिनकौ पार न पाई ॥ लैहौं सोई जोई हौं जाचौं चिरजीवौ जु कन्हाई। वैठे गोद सभा मैं राजैं तव हौं दैऊ वधाई ॥३॥ पकरि वाँह ढाढी की लीनीं भीतर भवन पधारे। सुनौं महरि कीरति की वातैं

ढाढी कहत सुधारे जो यह मांगै सोई दीजै जीवन प्राण हमारे
श्री मोहन प्रभु कौ मुख निरषत जादों तन मन वारें ॥४॥२८॥

श्री हित लाल जी महाराज कृत—(हेली) वधाई छंद

आनंद ऊग्यो री हेली मंदिर नंद के । हित जल पोषौ री हेली चलि मिलि वृन्द के ॥ कर वृन्द चलहि न मंद सजनी द्वन्द दुख सब कौ गयौ । यह रूप निधि सुकुमार सुंदर पुन्य पूरव तें भयौ ॥ नँद ग्राम शोभा अमित वाढ़ी देखि विधि जकि थकि रह्यौ । जहाँ शारदा सुधि भूली डोलै, जात कहौ कापर कह्यौ ॥१॥ सरस सुहायौ री हेली है दिन आजु कौ । जन्म वधावौ री हेली श्री बृजराज कौ ॥ बृजराज को दिन जन्म आली लोक लोकन में छयौ । ढिग आन सुर गन फूल बरसैं गान मन रस नित नयौ ॥ लखि श्याम अति अभिराम की गति मपति रति वौरी भई । कहत न वनैं बड़ भाग गोकुल संपदा जो प्रभु दई ॥२॥ हिय हुलसानौं री हेली मंगल गाय कैं । विलम न लावौ री हेली औसर पाय कैं ॥ प्रिय पाय औसर को न फूल्यौ देव दिवि दुन्दुभि वजैं । जहँ होत धुनि चहुँ ओर वासी घोष अवहीं ते गजैं ॥ रिझवारि रीझी नारि भींजी ललित लाल निहारि कें । गहि मौन गोरी नव किशोरी जाति वलि त्रृन वारिकैं ॥३॥ उद्धव लेखो री हेली बृज पति भाग कौ । इन फल पायौ री हेली पहिली लाग कौ ॥ कर लाग कीन्हें जाग तव शिशु लाभ कौं लोचन लह्यौं । तज नेह जग दिन रैंन चिंतत निरधनी लों धन गह्यौ ॥ जस होहु दूनौ चन्द पूनौ भांवतौ हरिवंश कौ । चिरुजियौ जसुमति प्रान जीवन हित लाल प्यारौ वंश कौ ४ २६

राग सारंग-ताल आड़—बजति बधाई ब्रज पति मंदिर प्रगट भयौ सुत स्याम सलौना। महारानी जसुमति बड़ भागिनि लाल जन्यौं हिय दृग उरझौंना ॥ मंगल रचना भवन भवन पुरु अतिमै ओप नंद जू के भौंना। जै श्री हित लाल सकल सुख दायक लायक घोष नृपति कौ छौंना ॥३०॥

श्री जन त्रिलोक जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

सब ग्वाल गावैं गोपीं नाचैं। प्रेम मगन कछु कहत न वाचैं ॥ नंद महर घर ढोटा जायौ। सुनि सब लोक बधायें आयौ ॥ दूध दही घृत काँवरि जोरी। आछित दूब अलंकृत रोरी ॥ ताल पखावज दुन्दुभी ढोला। हँसत परस्पर करत कलोला ॥ हरद दूध दधि छिरकत अंगा। लसत पीत पट बसन सुरंगा ॥ अजिर पंक गुलफनि चढ़ि आई। रपटतु फिरत पगु न ठहराई ॥ वारि वारि पट भूषन दीनैं। लटकत चलत महा रस भीनैं ॥ सुधि न परति को काकी नारी। हँसि हँसि देत परस्पर गारी ॥ सुर विमान सब कौतिक भूले। जन त्रिलोक आनंद मैं भूले ॥३१॥

राग सारंग—जसुमति मुदित मुदित भयौ गोकुल नंद मुदित मन अधिक भाव री। खग मृग मुदित मुदित द्रुम वेलीं महा मुदित जहाँ धरत पावरी ॥ वालक मुदित भवन मैं खेलैं हलधर मुदित मुदित जु सुभाव री। जुवतीं मुदित भईं छबि निरखत हमारैं तरन है एही नाव री। जमुना मुदित भई इहिं औसर मुदित भये तृन परवत बावरी। जन त्रिलोक प्रभु का है न मुदित होइ उदित भयौ ब्रज कुल कौ रावरी ॥३२॥

श्री राम कृष्ण दास जी महाराज कृत—राग गौरी

ढाढिनि वारनैं कीनी लला पर वारनैं कीनी ।टेक। गौर वरन इक स्याम वरन तन दोऊ सोभा के ऐंन । रोग दोष लागौ मेरी अँखियनि दृष्टि लगौ जिनि नैंन ॥१॥ रतन जटित आँगन में खेलत कव देखौंगी आइ । झूँमक नांच नचौंगी ता दिन मुरि मुरि लैंउ वलाइ ॥२॥ ढाढिनि कौं जसुमति पहिराई ढाढी कौं नंदराइ । करहल नांच नचे जव दोऊ रति पति निरखि लज्याइ ॥३॥ ब्रज के निकट वास देउ मोकौं नित प्रति आसिष देहौं । नंदरानीं कीरति रानी पै दूनी वधाई लैहौं ॥४॥ ब्रह्मा-दिक सनकादिक सारद नारद से मुनि रीझै । ढाढी क्यौं न भये या ब्रज के राम कृष्ण रस भीजे ॥५॥२२॥

श्री लाल दास जी महाराज कृत—राग गोधनी-गौरी

चलहु वधायें जाँइ हो ढोटा जायौ नंद कैं ॥टेक॥ चली जाति ही खरकि कौं हो पंच शब्द पर्‌यौ कान । इक आवत इक जात हैं मागद लै लै दान हो ॥ढोटा०॥१॥ हौं उलटी अति मोद सौं हो सव सौं कह्यौ सुनाइ । चलौ व चलौ न चलौ कोऊ मोपै रह्यौ न जाय हो ॥२॥ सुनि सुनि ब्रज वनिता सवै लिये भूषन वसन वनाइ । लाल मुनिनु की छवि लई जनु पिंजरा दई मुकराइ हो ॥३॥ भई सुरति गति पांगु री हो निरखि थकित भयौ मैंन । जोग जुगति तजि कैं कहैं वारि अपन पौ दैंन हो ॥४॥ गोप तरुन वालक लियें हो भांन राइ चले धाइ । दूध दही घृत साजि कैं लीनैं माट भराइ हो ॥५॥ नाँचत गावत आवहीं हो सर्वसु देत निसंक । प्रगट्यौ ससि नसि तम गयौ मनु निधि पाई रंक हो ॥६ छिरक्त

पीत दूध दधि आँगनि रंग भरे नर नारि । रानी कीरति जसु-
मति नंद पै देति व सर्वसु वारि हो ॥७॥ गोकुल गोप वधुनि
कौ हो आनन्द कह्यौ न जाइ । मनु घर घर बालक भये दई
घर घर वात लुटाई हो ॥८॥ अति उदारता नन्द की हो
सकुचे इन्द्र कुवेर । जाचक भुव पति हैं भये मानी संक सुमेर
हो ॥९॥ पित्र कर्म करि नन्द नन्दीमुख पूजे विप्र बुलाइ ।
लालहि दई कृपा करि नीकैं ब्रज में सदा वसाइ हो ॥१०॥२४॥

श्री प्रेम दास जी महाराज कृत—राग भैरों

अरी सुनि आजु वधाई नंदराइ कैं वाजत मंदिलरा द्वार ।
प्रगटे श्री मोहन सोंहन अति फूल्यौ ब्रज परिवार ॥ आनंद
वढ्यौ तिहूँ पुर छाई दिवि दुन्दुभी झनकार । प्रेम सहित सुत
निरखि महर जू दये वारि भंडार ॥३५॥

राग मधु माधव—नाचत ब्रज रानीं जू कें आगैं मंगल मुखी
रंगीले । नंद सुवन के जनम सोहिले गावत छैल छवीले ॥
चारि पदारथ छुवत न हीरा लाल लुटावत लै गरवीले । प्रेम
सहित विनु लखैं कुँवर कैं टरत न हठनि हठीले ॥३६॥

मंगल छंद राग सूही विलावल—श्री वृन्दावन वजति वधाई ।
नवल कुंज नव फूलनि छाई ॥ वरस गाँठि दंपति की आई ।
जोरी उवटनि उवटि न्हवाई ॥ न्हवाइ उवटनि उवटि जोरी
कुशुम भूषन सखि सजें । पहिरि पीत दुकूल फूलत गौर स्यामल
छवि छजैं ॥ वनैं सुभग सिंगार नख सिख परस्पर छवि यौं
वढ़ैं । केशरी वागे पहिरि मनु सूर रति रन कौं चढ़ैं ॥१॥
गावति मंगल अली सुहाईं । झूमक सारी सजि सजि आईं ॥
लैंकर कुम कुम अजिर लिपायौ गज मोतिनु सौं चौक

पुरायौ ॥ पुराइ मोतिन चौक चहूँ दिस धुजा रंग रंग की धरैं। रतन वंदन माल बाँधति कुंभ कंचन के भरैं ॥ कनक कदली रोपि तिनमें धरी चौकी हेम की । तहाँ स्यामा स्याम राजत करत बरषा प्रेम की ॥२॥ नव जुवती केसरि घसि ल्याई । लाल भाल पर खौरि बनाई ॥ कोऊ अरगज लियें विराजैं । अरस परस छिरकति सुख साजैं ॥ साजैं सुखै रँग छिरकि सुंदरि मनौं खेलैं फागरी । होत सूहे भांन सुनि सुनि करति सूहौ रागरी ॥ वीनि वीनि नवीन वीननि परनि पर वीननि लई । ताल चंग मृदंग बाजत चंद्र गति उपजति भई ॥३॥ नाचति अलीं भलीं सुकुँवारी । वदि वदि अपनी अपनी वारी ॥ जब जब अलग लाग गति लैंहीं । तब तब रीझि उभय सब दैंहीं ॥ दैंहि रीझि सु उभय अभरन लैहि इहि चिर सहचरी । नन्द जसुदा भांन कीरति कहति तिनकौ जस खरीं ॥ करति ये नित चोज सजनी लै पुहुप लावति झरीं । प्रेमदासि हित जुगल वर हँसि गोद मेवनि सौं भरी ॥४॥२७॥

गो० श्री हित गोवर्द्धन लाल जी महाराज कृत—राग जोगिया-आसावरी

एरी आज नंद भवन में मच्यौ है कोलाहल प्रगट्यौ जसुमति पूत । शिव विधि सनकादि सुरेश शेष न पावत वरदे अवधूत ॥१॥ दुन्दुभि झांझ भेरि सहनाई ढोलक बाजत मुरज उपंज अकूत । वंदी भाड कलामत ढाढी ढाढिनि नाचैं गावत यशहि वखानत सूत॥२॥ वनि वनि वनिता भवन भवन तें आवत कर सोहैं थार अभूत । मंगल मोद वधाये गावत टीके देत सब निर्तत मिलि वधू नूत ॥३। कहत नंद सों सबै सवामी

आज भयौ दिन करि लै कछू करतूत । जै श्री हित गोवर्धन निशि दिन जांचत मेरी पकरि वाँह मजबूत ॥४॥३८॥

श्री ललित त्रिभंगी जी महाराज कृत—राग मलार

वधाई माई नंद महर घर वाजै । वरस गांठि आई मन भाई कान्ह कुँवर सुख साजै ॥ टीके भेट समेटि सकत नाहिं ग्रह ग्रह मंगल राजै । मोद विनोद समात न तन मन गोपी गोप समाजै ॥ धनि धनि कृषि जसोदा वरनैं चढ़े प्रेम चित छाजै । ब्रज मोहन हित रूप त्रिभंगी रंगी रंगनि गाजै ॥३६॥

राग जैतश्री—आजु वधावो ब्रजराज कें, प्रगट्यौ आनन्द कंद ॥टेक॥ स्याम सुंदर कमल लोचन जायौ है जसुमति पूत । लाल कुल कौ भांवतौ री जा विनु जगत अऊत ॥१॥ कुँवर सूप अनूप पौढ्यौ दिपत दीपति धाम । ललित मुख कें वारनैं री अंग अंग अति अभिराम ॥२॥ मुदित ब्रज पति भवन आये सकल गोपी गोप । दूव वँधाइ जुहार करि करि भई है कुटंव की ओप ॥३॥ भुवन मंगल रूप सुत कौ निरखि वारति प्रांन । तृन तोरि लेति वलाइ वनिता जीवहु जसुमति जांन ॥४॥ छिरकि दधि मुख माड़ि हरदी माट देत लुढाइ । अजिर गोरस पंक पूरित रपटि टिकत नहीं पाइ ॥५॥ पुलकि तन नर नारि निर्तात वाहु कंठ लगाइ । मत्त गद गद सुरनि गावत हरषि व हिय सिराइ ॥६॥ कौलाहल कौतूहल मंगल महा महोछौ द्वार । नंदराय अनुराग मगन ह्वै रीझि अपन पौ वार ॥७॥ हाटक हीर ठाठ गोधन के रतननि कूट लुटाये । जाचक धनिक अजाची कीनैं मन कामना सिराये ॥८॥ भूषन वसन वंधु वधू पहिरे फिरि तव पाइ गहे यह मुख सुकृत सुहृद हौ

तिहारौ लोचन वारि वहे ॥९॥ नागरीदासि कोऊ न गयौ घर सुधि वुधि विसरी देही । अलब्धि लब्धि प्रापति वड भागी सनि रहे सजन सनेही ॥१०॥४०॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत—राग आसावरी (नौमी के दिन कौ)

व्रजभयौ महरि कें पूत जब यह वात सुनी । सुनि आनन्दे सव लोक गोकुल गुनित गुनीं । ॥ ग्रह लगन नक्षत्र वल सोधि कीनी वेद धुनी । सुभ पूरव पुरे पुन्य रची कुल अटल थुनी ॥१॥ सुनि धाईं सव व्रज नारि सहज सिंगार कियें । कर कंकन कंचन थार मंगल साज लियें ॥ तन पहिरें नौतन चीर काजर नैंन दियें । कसि कंचुकी तिलक लिलाट शोभित हार हियें ॥२॥ सब अपनें अपनें मेल निकसी भाँति भली । मनौं लाल मुनिनु की पाँति पिंजरनि चूरि चली ॥ हँसि गावति मंगल गीत मिलि दस पाँच अली । मनु भोर भये रवि देखि फूलीं कमल कली ॥३॥ दोऊ शोभित तरल तरौंना बैंनी सिथिल गुही । मुख माँड़े रोरी रंग सैंदुर माँग छुही ॥ उर अंचल उड़त न जानैं सारी सुरङ्ग सुही । अति श्रम जल मुखहि प्रस्वेद मानौं मेघ फुहीं ॥४॥ इक पहिलैं पहुँचीं आइ अति आनन्द भरीं । लई भीतर भवन बुलाइ सवै शिशु पाँइ परी ॥ ते वदन उघारि निहारि देति अशीश खरीं। चिरुजियौ यशोदा नन्द पूरन काम करीं ॥५॥ धनि धनि दिन धनि यह राति धनि यह पहर घरी । धनि धनि महरि की कूषि भाग सुहाग भरी ॥ जिन जायौ ऐसौ पूत सव सुख फलनि फरी । थिरु थाप्यौ सव परिवार मन की सूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालनि गाइ बहोरि वालक बोलि लये गुहि गुंजा घसि वन धातु अंगनि

चित्र ठये ॥ सिर दधि माखन के माठ काँवरि कंध लये । इक झाँझि मृदंग बजावत सब नन्द भवन गये ॥७॥ इक नाचत करत कुलाहल छिरकत हरद दही । मनु वरषत भादौं मास नदी घृत दूध वही ॥ जाकौ जहीं जहीं मन जाय कौतुक तहीं तहीं । अति आनन्द मगन ग्वाल काहू वदत नहीं ॥८॥ इक धाइ नन्द पै जाय पुनि पुनि पाँइ परैं । इक आपु आपुही माँहि हँसि हँसि अंक भरैं ॥ इक दधि रोचन अरु दूब सबनि के सीस धरैं । इक अंवर औेर मगाइ देत न संक करैं ॥६॥ जब न्हाइ नन्द भये ठाड़े अरु कुश हाथ करें । नाँदी मुख पितर पुजाइ अंतर सोच हरें ॥ वर गुरु जन द्विज पहिराइ सबनि कें पाँइ परें । घसि चंदन चारु मँगाइ सवनि कें तिलक करें ॥१०॥ गन गैयाँ गनीं न जाँय तरुन ते वच्छ बढ़ीं । ते चरैं जमुन के कूल दूनें दूध चढ़ीं ॥ खुर रुपें तामें पीठि सौनें सींग मढ़ीं । ते दीनीं द्विजनि बुलाइ हरषि आशीस पढ़ीं ॥११॥ तब अपनें मित्र सुवन्धु हँसि हँसि वोलि लियें । मथि मृग मद मलय कपूर माथैं तिलक कियें ॥ उरमणि माला पहिराइ वसन विचित्र दिये । मनु वरषत मास असाढ़ दादुर मोर जिये ॥१२॥ (वर) वंदी मागद सूत आँगन भवन भरे । ते वोलें लै लै नाम हित कोऊ नहिं विसरे ॥ ते दान मान परिधान पूरन काम करे । जिन जोई जाच्यौ सोई पायौ रस नँदराइ ढरे ॥१३॥ तब अंवर और मगाइ सारी सुरंग घनीं । ते दीनीं वधुनि बुलाइ जैसी जाहि वनीं ॥ ते अति रुचि सौं हित मानि निज ग्रह गोप धनी । ते निकसी देति असीस रुचि अपनी अपनी ॥१४॥ तब घर घर भेरि मृदंग पटह निसांन वजे । वर वाँधी वंदन माल कंचन

कलश सजे ॥ ते ता दिन तें वे लोग सुख संपति न तजे । कहि सूर सवनि की यह गति जिन हरि चरन भजे ॥१५॥४१॥

असीस कौ पद—तेरौ माई चिरुजीवौ गोपाल । वेगि वढ़ौ वढ़ि होहु वृद्ध लट महरि मनोहर ग्वाल ॥ उपजि पर्‍यौ इहिं कूषि कमल तें सिंधु सीप ज्यों लाल । सब गोकुल कौ प्राण जीवन धन वैरिनु कै उर साल ॥ सूर कितौ जिय सुख पावत है निरखत श्याम तमाल । आरज रज लागौ मेरी अँखियनि रोग दोष जंजाल ॥४२॥

राग विलावल—आजु नंद कें द्वारें भीर । इक आवत इक जात विदा ह्वै इक ठाढ़े मंदिर के तीर ॥ एकनि दान देत गाइनु कौ एकनि कौं पहिरावत चीर । एकनि माथें दूव रोचनां एकनि कौं वंदत ह्वै धीर ॥ एक जु वंदन माला वाँधात पौरिनि सथिया देत अहीर । सूरदास मिलि सब वृजवासी नाचत गावत गुन गंभीर ॥४३॥

राग आसावरी—देखौ अद्भुत अवगति की गति कैसौ वेष धर्‍यौ है हो । तीनि लोक जाकें भवन उदर सोई सूप कें कौंन पर्‍यौ है हो ॥१॥ जाके नाल भयौ ब्रह्मादिक सकल विस्व वस साधैं हो । ताकौ नाल छेदि व्रज जुवती वांटि तगा सौं वाँधैं हो ॥२॥ जा मुख कौं सनकादिक तप कियौ सकल चातुरी सानैं हो । सो मुख स्तननि पांन करावति दूध धार लपटानैं हो ॥३॥ जिन श्रवननि सुनि गज की आपदा गरुडासन तजि धाये हो । तिन श्रवननि के निकट जसोदा हरषि-हरषि हुलसाये हो ॥४॥ को व्यापक पूरन अविनासी पलनां मांझ पर्‍यौ है हो । सकल लोक जाकी आस करैं सो तौ सूप कें कौंन पर्‍यो है हौ ५

जिन भुज वल प्रहलाद उवारे हिरण्यकसिप उर फारे हो। तिन भुज पकरि कहैं व्रज जुवती ठाड़े होहु दुलारे हो ॥३॥ सुर नर मुनि जाकौं ध्यान धरत हैं शिव समाधि नहिं टारी हो। ते अव सूर प्रगट या व्रज मैं गोकुल गोप विहारी हो ॥७॥४४॥

राग मलार–री हौं तौ इक वात भली सुनि आई। महरि जसोदा वालक जायौ आंगन वजति वधाई॥ कहियै कहा कहत नहिं आवै रतन भूँमि सव छाई। नाचत विद्ध तरुन अरु वालक गोरस कीच मचाई॥ द्वारैं भीर गोप वालनि की वरनौं कहा री वड़ाई। सूरदास प्रभु अंतरजामी नन्द सुवन सुख दाई ॥४५॥

राग विलावल–मोद विनोद आजु घर नन्द। कृष्ण पच्छि भादौं निस आठैं प्रगटे हैं गोकुल के चंद॥ भवन द्वार गोमय वर मंडित वरषत कुशम उमापति इंद। गोपी ग्वाल परस्पर गावत पुलकित विहरत मत्त गयंद॥ वंदन वारैं वृंद मनोहर वीच वन्यौं पट की रसु छंद। सूरदास हरदी दधि मधु घृत रंजित पांन करत मकरंद ॥४६॥

राग देव गंधार (दाई कौ वरनन)—जसोदा नाल न छेदन दैहों। मणि मय जटित हार ग्रीवा कौ वहै आजु हौं लैहौं॥ औरनि कैं हैं लच्छिक गोप मेरैं ग्रह एक तुम्हारो। मिटि जु गये संताप जनम के देख्यौ नंद दुलारो॥ वहुत दिननि की आसा लागी झगरनि झगरौ कीनौं। मन मैं विहसि तवै नन्दरानी हार हिये कौ दीनौं॥ जाकैं नाल आदि ब्रह्मादिक सकल विस्व आधार। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मेटन कौं भुव भार ॥४७॥

श्री सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत–राग धनाश्री

नन्द जू मेरे मन आनंद भयौ हौं गोवरधन तें आयौ

तुम्हारें पुत्र भयौ हौं सुनि कैं अति आतुर उठि धायौ ॥टेक॥ वंदी जन अरु भिक्षुक सुनि सुनि देस देस तें आये। इक पहिलैं ही आसा लागे वहुत दिननि तें छाये॥ ते पहिरें कंचन मणि मुक्ता ना ना वसन अनूप। मोहि मिले मारग में मानौं जात कहूं के भूप॥१॥ तुम तौ परम उदार नंद जू जोई मांग्यौ सोई दीनौं। ऐसौ और कौन त्रिभुवन में तुम सरि साकौ कीनौं॥ लच्छि देहु तौ परचौ रहौं हौं विन देखें नहिं जैहौं। नन्दराइ सुनि विनती मेरी तवहिं विदा भलैं ह्वै हौं ॥२॥ दीजै मोहि कृपा करि सोई जो हौं आयौ मांगन। जसुमति सुत अपनैं पाइनि चलि खेलन आवै आंगन॥ जव तुम मदन मोहन कहि टेरौ यह सुनि हौं घर जाऊँ। हौं तौं तेरे घर कौ ढाढी सूरदास मेरौ नाऊँ ॥३॥४८॥

राग देव गंधार—झगरनि तैं हौं वहुत खिझाई। कंचन थार दियौ नहि मानति तुही अनोंखी दाइ॥ वेगि तू नाल छेदि वालक कौ जाति है व्यारि भराई। सत संजम तीरथ ब्रत कीनैं तव यह संपति पाई॥ करियै विदा जाऊँ घर अपनैं कहति सांझ की हौं आई। सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे भक्तनि कौं सुखदाई ॥४९॥

राग आसावरी—धन्य जसोदा भाग तिहारौ जिन ऐसौ सुत जायौ। जाके दरस परस सुख तन धन कुल कौ तिमर नसायौ॥ विप्र सुजन वंदी चारन जन सवै नन्द ग्रह आये। करतल सुभग दूध हरदी दधि हरषि असीस पढ़ाये॥ गर्गनि रूप कह्यौ सव लच्छन अवगति है अविनासी। सूरदास प्रभु जनम होत ही आनंदे व्रजवासी। ५०

राग आसावरी मै तौ तिहारे घर कौ ढाढी मो सरि करै को आंन । सोई लैहौं जोई मन भावै नंदराइ की आंन ॥ढाढी०॥ ॥टेक॥१॥ धन्य भूँमि ब्रजवासी धनि धनि आनन्द करत अभूत । धन्य नंद जू धन्य जसोदा धनि धनि जायौ पूत ॥२॥ घर घर होत आनंद वधाई जहाँ तहाँ मागद सूत । मणि मानिक पाटांवर लै लै देत वनैंन कहूत ॥३॥ हय गय सहित भंडार दिये सव फेरि भरे सव भाँति । तवै देत हीं फिरि देखत हीं संपति घर न समाति ॥४॥ ते मोहि मिले जात अपनैं ग्रह में वूझी तव वात । हँसि हँसि दोरि मिले अंकनि भरि हम तुम एकै जात ॥५॥ संपति देहु लेंऊ नहिं एकौ अन्न वस्त्र किहिं काज । जोहौं तुम पै मांगन आयौ सोई लैहौं ब्रजराज ॥६॥ अपनैं सुत कौ वदन दिखावौ वड़े महा सिरताज । तुम साहिव मैं ढाढी तुम्हरौ प्रभु मेरे नँदराज ॥७॥ कृष्ण वदन दर्शन संपति दै मो लै मैं घर जाऊँ । जो संपति सनकादिक दुर्ल्लभ सो सव तुम्हारे ठाऊँ ॥८॥ जाकौं नेति नेति श्रुति गावति तेई कमल पद ध्याऊँ । हौं तौ तिहारे जनम कौ ढाढी सूरदास मेरौ नाऊँ ॥९॥५१॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

महर कें मंदिर वेगि चलौ री, नंदरानी सुत जायौ ॥टेक॥ चलीं जाउ उहिं धांम सांमुही जाकी ऊँची पोरी ॥१॥ माली वंदन माल वनाई बीच आंव की मौरी । देति महावर पाइनि चाइनि नाइनि. डोलै दौरी ॥२॥ उठौ सदन तें वदन पखारौ भूषन वसन सजौ री । वीथि वधायैं काज परायैं ढील न कीजै वौरी ३ हाथनि कंचन थार लेहु सजि मधि मोती

सौ सौरी । गावति आवति मंगल मानौं पूजति संकर गौरी ॥४॥ सब वनितनि की सुभग मंडली सिमिटि भई इक ठौरी । बालक विर्द्ध तरुन अरु तिनमें कोऊ कोऊ लरिकौरी ॥५॥ उठि आई ब्रज पति के आंगन किनहुँन कीनी वौरी । जन गोविंद बलवीर दरस की सवहिनि लागी ढौरी ॥६॥५२॥

श्री अग्रदास जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

आजु ब्रज अतिसय है आनन्द । सुत जायौ घर नन्द गोप कें बिसरि गये दुख द्वंद ॥१॥ झुंडनि झुंडनि नारि अलंकृत मंगल गावति आई । कनक थार गोरोचन अच्छित दधि अरु दूब वँधाई ॥२॥ पुनि पुनि पाइ परति रानी कें वधू परस्पर हरषैं । एक कहैं देखौ री देखौ सुत सोभा सुख वरषैं ॥३॥ धांम धाम हथिया जुत साजे वंदन वार वनावैं । अहली महली फिरति महल में चंदन चौक पुरावैं ॥४॥ आपुन वनैं वनावैं गोधन आये नंद दुवारैं । गोकुल मध्य भीर भई भारी गोप न पावत पारैं ॥५॥ विहसि विहसि संपति सब खरचैं एक एक तें आगर । छिरकत हरद दही अरु माखन ह्वै व रह्यौ पय सागर ॥६॥ बाजत वैंन वासुरी महुवरि जहाँ तहाँ मिलति ग्वाल । हेरी दै दै टेरि सुनावैं भयौ नंद कें लाल ॥७॥ विधि विधान जो कहत गरग रिषि सोव करत ब्रजराज । भूँमि दान गोदान द्विजनि कौं देत रतन नग वाज ॥८॥ मागद सूत भाट वंदी जन पर पूरन भये कांम । अग्रदास त्रैलोक मुदित भये कृष्ण जनम सुख धांम ॥९॥५३॥

श्री कल्यान मुकुन्द जी महाराज कृत—राग धनाश्री

हौं ब्रज मांगनौं जू ब्रज तजि अनत न जाऊँ टेक

वड़े वड़े भूपति भूतल पर दाता सूर सुजांन जू। कर न पसारौं सीस न नाऊँ या ब्रज कें अभिमान जू ॥१॥ सुरपति नरपति नाग लोक पति मेरे रंक समान जू। भाँति भाँति मेरी आसा पुजवत ये ब्रज जन जजमांन जू ॥२॥ मैं अपनौं मन भायौ लैहौं कत वहरावत जू। औरनि कौ धन घन लौं वरषत मो देखैं हँसि जात जू ॥३॥ मैं ब्रत करि करि देव मनाये अपनी घरनि सँजूत जू। दियौ विधाता सव सुख दाता गोकुल पति कें पूत जू ॥४॥ अष्ट सिधि नव निधि मेरे मंदिर तुव प्रताप ब्रज ईस जू। कहि कल्यान मुकुन्द तात कर कमल धरौ मो सीस जू ॥५॥५४॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत–राग देवगंधार

आजु वधाई गोकुल वाजत। पुत्र भयौ जसुमति रानी कें विप्र वेद धुनि गाजत ॥ ग्रह ग्रह तें आई सुंदरि कर कंचन थारनि साजत। फरहरात अंचल चंचल वर अंग अंग छवि छाजत ॥ विविधि वसन टोडर रतननि के धरे अधिक ढिंग राजत। नंदराइ लै लै पहिरावत नाचत सकल सु भ्राजत ॥ उमगि कहत नर नारि सवै मैया आजु भलौ दिन लागत। हरि कृष्णदास प्रभु कमल नैंन की छवि निरखत दुख भागत ॥५५॥

श्री ठाकुर दास जी महाराज कृत–राग आसावरी (नौमी कौ नंद गाँव में)

वाला मैं जोगी जस गाया। धन्य जसोदा तेरे तन कौं, जिन ऐसा सुत जाया ॥१॥ गुननि वड़ौ छोटौ जिनि जानौं, अलख पुरुष घर आया। जाकौ ध्यान धरत है मुनि जन, निगमन खोज न पाय ॥२॥ जो चाहै सो लीजै रावल, कीजै

अपनी दाया देहु असीस मेरें या सुत कौं, वाढैं अविचल काया ॥३॥ ना लेहौं मै पाट पाटम्बर, ना लेहौं मै कंचन माया । अपनें सुत कौं दरस दिखावौ, जो मोहि गुरु ने बताया ॥४॥ विनती कीयैं कहति नन्द रानी, सुनि जोगिन के राया। तोहि न देखन दैऊँ दिगम्बर, वालक जाय डिराया ॥५॥ माता जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर, सो क्यौं जाय डिठाया। अलख पुरुष है मेरा स्वामी, सो तेरे भवन छिपाया ॥६॥ बाल कृष्ण कौं लाय जसोदा, करि अंचल की छाया । दरसन पाय चरन रज वंदी, सींगी नाद वजाया ॥७॥ निरखि निरखि मुख पंकज, लोचन नैननि नीर बहाया । देखति बनैं कहत नहिं आवत, नाटक भला वनाया ॥८॥ ठाकुरदास महा प्रभु लीला महादेव लौं लाया । लीला ललित ललित गुन अटक्यौं, चित नहीं चलत चलाया ॥९॥५६॥

श्री रामराय जी महाराज कृत—राग विहागरौ

श्रवन सुनि सजनी वाजै मंदिलरा आजु निसि लागति परम सुहाई । अति आवेस होत तन मन यह गोकुल वजति वधाई ॥१॥ दै दै कान सुनैं अरु फूलैं रावलि के नर नारी । व्रज रानी ढोटा जायौ है होत कुलाहल भारी ॥२॥ अति ऊँचें चढ़ि चढ़ि टेरत हैं पसर उठे जे ग्वाला । गैया वगदावौ रे भैया भयौ महर कें लाला ॥३॥ खग मृग नग द्रुम दिस नभ सवही दिखियत हैं सुख सानैं । प्रांननि कें आयें इन्द्री ज्यौं यौं व्रज जन हुलसानैं ॥४॥ आनंद भरि अकुलाइ चलीं सव सहज संदरी गोपीं । आदर भाव जसोदा सुत कौं तासौं तन मन ओपीं ॥५॥ मंगल साज सिंगार मंगल मुख चंचल कुंडल हारा हाथनि कंचन थार विराजत पग नूपुर झनकारा ६

वरषत कच कुशुमनि सोभित गली दरस चौंप जिय धाईं।
गावत गीत पुनीत करति जग जसुमति मंदिर आईं ॥७॥
धनि दिन धनि यह राति आजु शुभ कछु धनि धनि कहैं गोरी।
स्याम सुंदर चंदहि देखत भईं अँखियाँ त्रिपित चकोरी ॥८॥
सोभा जुत आई कीरति अपनैं घर मानि वधायौ। जाचक धन घन लौं वरषत वृषभांन नन्द पै आयौ ॥९॥ आइ जुरे सव गोप ओप सौं भयौ जु मन कौ भायौ। पंचामृत सीसनि ढ़ारत नाँचत गहि नन्द नचायौ ॥१०॥ नाचत शिव सनकादिक नारद हरद दही भरे राजैं। इत निसान उत देव दुन्दुभी हरषि परस्पर वाजैं ॥११॥ अति उदार ब्रज राज नन्द जिन जोई मांग्यौ सोइ पायौ। जाकैं ऐसौ पूत होइ ताकौ न्याइ जगत जस छायौ।१२। धुज वंदन मालानि अलंकृत नंद भवन अति सोहे। व्यौंम विमाननि छाइ रह्यौ देखि अमरनि कौ मन मोहे ॥१३॥ जाकौ सुख सुमिरैं सनकादिक यौं विलसैं ब्रज ग्रेही। कहि भगवान हित रामराइ प्रभु प्रगट्यौ श्याम सनेही ॥१४॥५७॥

राग मारू–ढाढी नंद कौ वन्यौं सुरपति की छवि जीत्यौ। फूल्यौ अंग समात न सुंदर भयौ जु मन कौ चीत्यौ ॥१॥ सुंदर स्याम कमल दल लोचन नंदरानी सुत जायौ। यह सुनि तन मन वारि आपुनौं नन्दहि जाचन आयौ ॥२॥ जसुमति के भागनि कौं वरनत मगन भयौ कहा गावै। अष्ट सिद्धि नव निद्धि मुकति सव चरननि लगी वतावै ॥३॥ ढाढी गोप सभा परसंशित सवै कृष्ण रँग भीनैं। उनके गुन इनके गुन आगैं गाइ सुनावत हीनैं ॥४॥ जिन जो मांग्यौ तिन सो पायौ अति उदार ब्रज ईश। राजराइ प्रभु गिरधर की रज भगवानैं वकसीश।५ ५८

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज कृत– राग मारू

आजु कहाँ तें या गोकुल में अद्भुत वरषा आई रे । मणि गन हार हेम धारा की व्रज पति अति झर लाई रे ॥१॥ वानी वेद वदित द्विज दादुर हियें हरषि हरियारी रे । दधि घृत छीर नीर ना ना रंग वहि चले खार पनारी रे ॥२॥ पटहि निसान भेरि सहनाई महा गरज की घोर रे । मागद सूत वदित पिक चात्रक वोलत वंदी मोर रे ॥३॥ आनंद भरि नाँचति व्रज नारी पहिरें रँग रँग सारी रे । वरन वरन वादरनि लपेटी विद्युति न्यारी न्यारी रे ॥४॥ भूषन वसन अमोल नन्द जू नारी नर पहिराये रे । साषा दल फल फूलनि मानौं उपवन झालरि आये रे ॥५॥ दरद दवानल वुझे सवनि के जाचक सरवर पूरे रे । वाढ़ी सुभग सुजस की सरिता दुरित तीर तरु चूरे रे ॥६॥ उलह्यौ ललित तमाल वाल इक भई सवनि मन फूल रे । छाया हित अकुलाइ गदाधर तक्यौ चरन कौ मूल रे ॥७॥५६॥

श्री गोपाल स्याम दास जी महाराज कृत–राग चैती गौरी (दाई वरनन)

जसुमति वोलैं हर वाई । एहो वचन सुहाई । सखी सुनि धाई । लै दाई है आई ॥ वहो पौढी महल व्रजरानी आनि पग परसई ॥१॥ तिहिं छिन काढ़्यौ है तेलै । सरस फुलेलै । तुरत सिर मेलै । खरो मत वेलै ॥ वहो मरदन सुभग सुहायौ कह्यौ अनखाइ कैं ॥२॥ भादौं निसि अँधियारी । घन वरषै भारी । दामिनि दुति न्यारी । वार वुध वारी ॥ वहो रोहिनीं नक्षत्र संजोग तौ आई है सुभ घरी ॥३॥ जसुमति पलक लगाई । नींद उपजाई । जोग माया आई । गयौ गर्भ विसराई ॥ वहो मोह्यौ सव परिवार सु कोऊ न जागई ४

वसुदेव ठाढे द्वारैं लियें प्रान अधारैं खुले वज्र किवारैं भयौ भवन उज्यारैं ॥ वहो मोहन सज्या स्वाइ सु कन्या लै चलै ॥५॥ नंदरानी तव जागी । सु अति वड़ भागी । परम अनु- रागी । चरन हरि लागी ॥ वहो लीनैं नंद वुलाइ आइ दरसन करौ ॥६॥ सुवरन भाजन मंगाये । नग-रतन जराये । मन मुदित भराये । तामैं लालहिं न्हवाये ॥ वहो गज मोतिनु सौं पूरित दाई कौं दये ॥७॥ कर जोरि विनवै दाई । वोलति हरवाई । वातनि की सुहाई । मांगति है वधाई ॥ वहो देहु समद ब्रजराज वधाई लाल की ॥८॥ नख सिख भूषन साज । देहु ब्रजराज । पुत्र हित काज । धन्य दिन आज ॥ वहो सो गहनौं नंद रानी आइ सब सौंपियौ ॥९॥ पहिरत भई पुनीत । गाइ गुन गीत । पुजई मन चीत । देत विधि रीत ॥ वहो अरुन चीर परधांन तौ सोरह सिंगार लै ॥१०॥ अहो अहो जसुमति गोरी । सुहृद मन भोरी । हरि हलधर जोरी । जिवौ जुग कोरी ॥ वहो तीन लोक प्रभु होहु असीस दाई दई ॥११॥ जो यह दाई गावै । अति हरि मन भावै । प्रेम उप- जावै । वृन्दावन वसावै ॥ वहो दिव्य गुपाल स्यांम की चरन रज पावई ॥१२॥६०॥

श्री माधौमुकुन्द दास जी महाराज कृत—राग चैती-गौरी

आजु वधावौ ब्रजराज कैं । अहो रानी जायौ है मोहन पूत ॥वधावौ०॥टेक॥ मास भादौं द्यौस आठैं रोहिनी वुधवार । जसोदा की कूषि जनमैं कृष्ण लियौ अवतार ॥१॥ वहुत नारि सुहाग सुंदरि और गोप कुँवारि । सजन प्रीतम नाम लै लै देत परस्पर गारि २ साथिये दिये नंद द्वारैं सात सीक वनाइ

नव किशोरी मुदित ह्वै ह्वै लगति जसोदा जू के पाइ ॥३॥ वहुत मगन उमंग लीला करहिं गोपी ग्वाल। माट माखन दूध दधि लै छिरकत सव ब्रज वाल ॥४॥ करि अलंकृत गोपिका पहिराइ नौतन चीर। गाइ वच्छ सिंगार लाये ग्वालनि की भई भीर ॥५॥ एक हेरी दै दै माचैं एक भेटहि धाइ। एक वदत न गनत काहू एक खिलावत गाइ ॥६॥ एक तरुन किशोर वाला एक जोवन जोग। कृष्ण जनमत प्रेम सागर क्रीडत ब्रज के लोग ॥७॥ पुत्र मानौं भये घर घर निर्त्त ठावैं ठाँव। नंद द्वारैं भेट लै लै उमह्यौ है गोकुल गाँव ॥ ८॥ चौक चंदन पूरि कैं आरतौ धर्यौ है सँजोइ। कहति गोप कुंवारि असौ मंगल जो नित होइ ॥९॥ मुकुंद के प्रभु नित्त नौतन करौ भोग विलास। देखि ब्रज की संपदा जन फूले हैं माधौ दास ॥१०॥६१॥

श्री नंददास जी महाराज कृत-राग आसावरी (नौंमी के दिन)

सुंदरि ब्रज की वाला, जुरि चलीं हैं वधाये नन्द महर घर। कंचन थार हार चंचल छवि कही न परति तिहिं काला ॥ जुरि चली०।टेक।१। डह डहे मुख कुम कुम रंग रंजित राजत रस के ऐंना। कंजनि पर खेलत जुग खंजन अंजन जुत वनैं नैंना।२। दमकत कंठ पदिक मणि कुंडल नवल प्रेम रस वोरी। आतुर गति जैसैं चंद उदै भयें धावति त्रिषित चकोरी ॥३॥ खसि खसि परत कुसुम सीसनि तें उपमा कौंनं वखानौं। चरन चलनि पद रीझि चिकुर वर वरषत फूलनि मानौं ।४। गावति गीत

लै लै देति असीस सुहाई ॥५॥ मङ्गल कलश निकट दीपावलि ठाँइ ठाँइ देखि मन भूल्यौ । माँनहु आगम नन्द सुवन कें सौंनैं फूल ब्रज फूल्यौ ॥६॥ ता पाछैं गन गोप आप सौं आये अतिसै सोहैं । परमानंद कंद रस भीनें निकर पुरंदर को हैं ॥७॥ आनन्द घन ज्यौं गाजत राजत वाजत दुन्दुभी भेरी । राग रागिनीं गावत हरषत वरषत सुख की ढ़ेरी ॥८॥ परम धांम सुख धांम स्याम अभिराम सुगोकुल आये । मिटि गये द्वंद नंददासनि के भये मनोरथ भाये ॥९॥९२॥

राग धनाश्री—आजु वधाई री माई । ब्रज की नारि सवै मिलि आई ॥१॥ सुंदर नंद महर जू कें मन्दिर । प्रगट्यौ पूत सकल सुख कंदर ॥२॥ जनमत ढोटा ब्रज की सोभा । देखहु सखी कछु औरैं ओभा ॥३॥ द्वार वुहारति फिरत अष्ट सिधि । कौरिनि सथिया चीतति नव निधि ॥४॥ लक्ष्मी सी जहाँ मालिनि लोलै । वंदन माला वाँधति डोलै ॥५॥ कंचन कलश जग मगे नग के । भागे हैं सकल अमंगल जग के ॥६॥ ग्रह ग्रह तैं गोपी गवनीं जव । रँगीली गलिनि विच भीर भई तव ॥७॥ हाथनि कंचन थार रहे लसि । कमलनि चढ़ि आये मानौं ससि ॥८॥ वीथी प्रेम नदी छवि पावैं । नंद सदन सागर कौं धावैं ॥९॥ परम उदार नंद रस भीनैं । परवत सात रतन के दीनैं ॥१०॥ काम धेंनु तें नैंकु न हीनी । द्वै लष धैंनु द्विजनि कौं दीनी ॥११॥ फूले ग्वाल मनौं रन जीते । भये सवनि के मन के चींते ॥१२॥ नन्द द्वार जे मांगन आये । ते वहुरचौं मांगन न कहाये ॥१३॥ घर के ठाकुर कें सुत जायौ । नंददास तहाँ सव कछु पायौ १४ ९३।

श्री परमानन्द दास जी महाराज कृत—राग देव गधार

आजु नंदराइ कैं आनंद भायौ । नाँचत गोपी ग्वाल परस्पर मंगल चारु वधायौ ॥१॥ राती पीरी चोलीं पहिरैं नौतन झूँमक सारी । चौवा चंदन अंग लगाए सैंदुर मांग सँवारी ॥२॥ माखन दूध दही भरि भाजन सकल गोप लै आए । बाजत बैंन विशाल महुवरीं गावत गीत सुहाए ॥३॥ हरद दूध अच्छित दधि कुम कुम आँगन वादी कीच । हँसत परस्पर प्रेम मगन तन लागि लागि भुज बीच ॥४॥ चहूँ वेद धुनि करत महा मुनि पंच शब्द धुनि बोल । परमानंद बढ्यौ गोकुल में आनंद हृदै कलोल ॥५॥६४॥

राग सारङ्ग—आज वधाई कौ दिन नीकौ । नंद घरनि जसुमति जायौ है लाल भाँवतौ जीकौ ॥१॥ पंच शब्द बाजे बाजत घर घर तें आयौ टीकौ । मंगल कलश लियें ब्रज सुंदरि ग्वाल बनावत छींकौ ॥२॥ देति असीस सकल ब्रज सुंदरि जीवौ कोटि वरीसौं । परमानंद दास कौ ठाकुर गोप वेष जगदीसौ ॥३॥६५॥

राग सारङ्ग—यह धन धर्म हीं तें पायौ । नीकैं राखि जसोदा मैया नारायण ग्रह आयौ ॥१॥ जा धन कौं मुनि तप साधत हैं वेद उपनिषद गायौ । सोई धन वसत चीर सागर में ब्रह्मा जाइ जगायौ ॥२॥ जा धन कौं खोजत सनकादिक नारद मुनि जन गायौ । सोई धन है भक्तनि प्रतिपालक जसुदा हाथ बँधायौ ॥३॥ जोई धन है भक्तनि के वस सब विगरे काज सँवारें । सो धन हियें दास परमानन्द वारहूँ वार सम्हारे ॥४॥६६॥

राग धनाश्री ब्रज रानी आपुन मंगल गावै आजु लाल कौ जनम द्यौस है मोतिनु चौक पुरावौ ॥ गांव गांव तें ग्याति आपनी ग्वालनि न्यौंति बुलावै । नाम करन कौं गरग परासर तिनपै वेद पढावै ॥ हरद दूव दधि अच्छित रोरी सबके सीस धरावै । अपनैं लाल पर करि न्यौछावर जन परमानंद पावै ॥६७॥

राग सारंग—गोकुल में बाजति कहा वधाई । भीर भई अति नन्द दुवारैं अष्ट सिधि महा आइ ॥ ब्रह्मादिक इन्द्रादिक जाकी चरन रेंनु नहीं पाई । सोई नंद कौ पुत्र कहावत कौतुक सुनि मेरी माई ॥ ध्रुव अंबरीष प्रहलाद विभीच्छन नित्य महातम गाई । सो हरि परमानन्द को ठाकुर ब्रज जन केलि कराइ ॥६८॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत— राग काफी

वाजैं वधाईयाँ वो सैंयो नन्द दें दरवार ॥ हुवा सुत सौंहना वो मनदा मोंहना सुकुंवार ॥ आई सब गोपियाँ वो हिलि मिलि गावदीं खुसियाल ॥ जुरे सब लोक मंगल वो गुनी गन बोल दै दै ताल ॥ गुनी दै ताला नाचैं ॥ वाह वा ॥ आंगन पह पट माचैं ॥ वाह वा ॥ खुसी दिल पांवां झूँमां ॥ वाह वा ॥ लाला दी टुंनीं चूँमां ॥ वाह वा ॥ उसीदा मंगल गांवां ॥ वाह वा ॥ दान दुपट्ट पांवां ॥ वाह वा ॥ पावा पट दान मोती वो जांवां दिल फूल दे घर माँहि ॥ असाढा हथ्थ टोडर वो वाजू वंद झूल दै विच वांह ॥ तुझि पर घोलियां वो जसोदे वोलियां दे सुनाय ॥ धनि धनि आजुदा दिन वो दै दी दान क्यों न मंगाइ महरि नें दान मंगाया वाह वा

करी मुरादां पूरी ॥वाह वा॥ वीच खुशी दिन गाढ़े ॥वाह वा॥ मंगल मुखी तुसादे ॥वाह वा॥ जनम जनम गुन गांवां ॥वाह वा॥ नागर दरसन पांवां ॥वाह वा॥६६॥

श्री वृज निधि जी महाराज कृत—वधाई

आज उन्मादियाँ वे वधाई दै दाँ वृज भूपाल । हुवा वृज चन्द छौंना वे सलौंना साँवला गोपाल ॥ वृज में मादियाँ वे कराई जादियाँ कुल रीति । उतारैं नौंन राई वे सखी सब गावैं मंगल गीत ॥ सखी सब मंगल गावैं ॥वाह वा॥ गुणी मिलि चोहल मचावैं ॥वाह वा॥ वजावैं ढोलक झाँझे ॥वाह वा॥ मजे में गावैं माँझें ॥वाह वा॥ सुनावैं वात अछूती ॥वाह वा॥ सदा तू रहौ सपूती ॥वाह वा॥ लाल के सदके जामा ॥वाह वा॥ कुँवर पर घोल घुमाया ॥वाह वा॥ इस दी वलाइयाँ वे परौ खारे समुंदर जाईं । रहौ दिन रात खुशिया वे लड़ावौ लाड़ गोकुल राय ॥ करौ नित रंग रलियाँ वे खिलावैं कान्हे कंठ लगाय । यह अरदास में दीवे तुसाढ़ा कुँवर नें दिखलाय ॥ खुलाया माल खजाना ॥वाह वा॥ लुटाया माल अमाना ॥वाह वा॥ भरे सो भये न रीते ॥वाह वा॥ गुणी सब भये निचीते ॥वाह वा॥ कहीं वेफेर न नच्चे ॥वाह वा॥ भये हैं वृज निधि सच्चे ॥वाह वा॥७०॥

श्री कृष्ण जीवन जी महाराज कृत—वधाई (नकल ढाढी व गान)

मोहि नंद घर लैं चलौ ढाढीनियाँ मचल रही ॥टेक॥ पुत्र भयो सब जग ने जानीं, तैंनें मोसे नाय कही । मोहि मिलैगो नख सिख लौं गहनौं लाऊ तौ वात सही ॥ जर दोजी के वस्त्र मिलैगें फरिया चोली नई । कृष्ण जीवन विन सब जग सुन्यौ जिन मेरी वाँह गही ७१ ।

(वधाई)—गोप सभा में आये भडेला सवकी नकल वनावै। जैसो जाको होवे मौंढो ताकौ ताही दिखावै ॥७२॥

पद—नंद के आनंद भये जय कन्हैया लाल की। हाथी दिये घोड़ा दिये और दीनी पालकी॥ साल दिये दोसा दियो वह भी नई मोल की। पाट दिये पाटम्बर दियें वह भी सवा लाख की॥ वहली और छकड़े दिये वह भी नये हाल की। वाह वाजी वाह वाजी वाह वाजी ॥७३॥

श्री आनन्द घन जी महाराज कृत—वधाई

गोकुल वधाई माई वगर वगर। प्रेम चुहुल मची डगर डगर॥ व्रज कौ चन्द नंद प्रगट्यौ चहूँ दिस होति जोति जगर जगर। सोभा सदन वदन मोहन को देखि देखि जिय ढगर ढगर॥ जसुमति भाग धन्य आनंद घन जस को वितान छायौ नगर नगर ॥७४॥

श्री चतुर्भुज दास जी महाराज कृत—राग देव गंधार

नैंन भरि देखौ नंद कुमार। जसुमति कूषि चन्द्रमा प्रगट्यौ या व्रज कौ उजियार॥१॥ वन जिनि जाहु भैया रे लावौ गो सुत गाइ रु ग्वार। अपनें अपनें भेष सवै वनि लावौं विविधि सिंगार॥२॥ हरद दूव अछित दधि कुम कुम मंडित करहु दुवार। पूरौ चौक विविधि मुक्ता वलि गावहु मंगल चार॥३॥ करत वेद धुनि सवै महा मुनि होत नछत्र विचार। ऊग्यौ पुन्य कौ पुंज साँवरो सकल सिद्धि दातार॥४॥ गोकुल वधू निरखि आनंदित सुन्दरता कौ सार। दास चतुर्भुज प्रभु चरुजीवौ गिरिधर प्रान अधार ५ ७५

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग सूहौ विलावल-मंगल छंद

मंगल गावौ री हेली व्रज पति नंद कें। जनम वधायें री हेली गोकुल चंद कें॥ अति मन भायौ री हेली सुभ दिन आज कौ। वंश उदौ भयौ री हेली श्री व्रज राज कौ॥ व्रजराज वंश उदौ भयौ अव प्रेम वेली लह लही। अति भाग भरी सुहाग जसुमति दै वधाई गह गही॥ सिंगार नव सत भेंट लैं रंग रली आनंद कंद कें। मंगल गावौ री हेली व्रज-पति नंद कें॥१॥ मंगल रचनां री हेली कछु परति न कही। नंद सदन लखि री हेली हौं अचिरज रही॥ मणि मय दीपक री हेली अवलि विराज हीं। वंदन मालनि री हेली अति छवि राजहीं॥ राजहीं छवि अधिक जलज वितान झालरि कोर के। फहराति धुज पट कनक मय वल हरति दामिनि मोर के॥ अगर धूप सुवास पूरित अरगजा मंडित मही। मंगल रचना री हेली कछु परति न कही॥२॥ चौक पुरावति री हेली सहज समीति सौं। चीतति सथियनि री हेली गाढ़ी प्रीति सौं॥ गान गहर अति री हेली कछु परति न सुनीं। गोकुल छाये री हेली जित तित वहु गुनी॥ गुनिनु हित व्रज ईश अंवुद सुत जनम दिन ऊनयौ। धन वरषि जाचक वृन्द सरवर पूरि सुख त्रिभुवन दयौ॥ हठि नेगु श्री व्रजराज अनुजा लेति हैं रस रीति सौं। चौक पुरावति री हेली सहज समीति सौं॥३॥ वदन लला कौ री हेली देख्यौ कीजियै। चंद सुधा ज्यौं री हेली दृग भरि पीजियै॥ कृषि महरि की री हेली विधि सुकृत सच्यौ। लोचन गहनौं री हेली सव व्रज कौ रच्यौ॥ रच्यौ लोचन लाभ व्रज जन नित विनोद वढ़ावनौं चिरजियौ हरि हित रूप

जसुमति नंद अति मन भावनौ ।। वृन्दावन हित ओटि अंचल नित असीस सु दीजियै । वदन लला कौ री हेली देख्यौ कीजियै ॥४॥७६॥

राग विलावल—इहिं ब्रज घर घर आजु वधाई । नंद सदन नभ चंद उदै भयौ मिट्यौ ताप तम जग कौ माई ॥१॥ सुकृत पुंज सुत जसुमति जायौ वरनौं कहा बड़ भाग निकाई । प्रफुलित गोपी गोप कुमुद गन त्रिभुवन सुजस चाँदनी छाई ॥२॥ दान मान द्विज गुरु पद वंदे ब्रज पति सबकी आस पुजाई । वलि हित रूप सकल सुख मंदिर वृन्दावन हित कुँवर कन्हाई ॥३॥७७॥

राग रामकली—कृष्ण जनम सुनि गोपी धाई । करत कुलाहल रावर आई ॥१॥ आदरु दै मंदिर बैठाई । ते मिलि गावत विविधि वधाई ॥२॥ धन्य कूषि जसुमति सुखदाई । जिन यह जायौ कुँवर कन्हाई ॥३॥ भाग भरी कीरति सुधि पाई । तिन आवनि छवि वरनी न जाई ॥४॥ मंगल गान महा धुनि छाई । रचित पाँवड़े भवन वुलाई ॥५॥ मिली हरि जननी कंठ लगाई । सो आनंद हिय न समाई ॥६॥ सिसु कौ वदन निरखि मुसिकाई । विधना तन कछु गोद उचाई ॥७॥ प्रथम वचन दोऊनि सुधि आई । सैननि ही में महरि जताई ॥८॥ पुनि हँसि गोरस कीच मचाई । नाचत मुदित प्रेम वौराई ॥९॥ खरचत धन मन हरषि महाई । सुर वनिता देखत पछिताई ॥१०॥ वरषत कुसुम निसान वजाई । धनि धनि वरनत भाग निकाई ॥११॥ दान दियौ सब श्रृष्टि अघाई । अखिल लोक जिहिं कीरति गाई १२ जनम पत्रिका नंद

लिखाई विप्रन पद वंदे सिर नाई ॥१३॥ दै बहु मेवनि गोद भराई । भूषन बसन बधू पहिराई ॥१४॥ हरि हित रूप महरि सुत माई । जुग जुग जियौ असीस सुनाई ॥१५॥ करज चटाके पुनि लेति बलाई । वारति सबहि लौंन लै राई ॥१६॥ बृन्दावन हित सौभग ताई । वारिध क्यों दृग सीप समाई ॥१७॥७८॥

राग विभास—प्रगटे गोकुल चंद, मो मन भायौ माई री आजु भयौ । घर घर रचना घर घर मंगल ब्रज आनंद छयौ ॥१॥ हरि सिसु रूप अनूप निहारत हिय जिय ताप गयौ । भूर भाग जसुमति महारानी सुख वारिध बढ्यौ ॥२॥ जन चात्रक पोषन हित जलधर स्याम नाम उनयौ । बरषत प्रेम पियूष हितुन उर मंगल विशद ठयौ ॥३॥ कृष्ण कमल दल नैन जनम दिन सर्वस नन्द दयौ । बृंदावन हित रूप ललित मुख नित नित निरखि नयौ ॥४॥७९॥

राग रामकली—नन्द उदौ देखि ढाढी धायौ, गोप सभा में विहसत आयौ । ज़रकसी पाग श्रवन मणि कुंडल रतन पेच माथैं झलकायौ ॥१॥ घेरदार कंचुक जु छबीलौ पटुका छोर दार ढरकायौ । कलँगी झुकनि हसनि नैंननि में केशरि तिलक लिलाट बनायौ ॥२॥ बाहु अजांन जटित मणि बाजू टोडर कंचन नगनि जरायौ । उर पर रुरति माल मोतिनु की कंठी ग्रीव अधिक छबि पायौ ॥३॥ चरननि नूपुर पीत उपरना हुरक बजावतु मधुरें गायौ । रति रंभा छबि देखत लाजैं ऐसी ढाढ़िनि संग सजि लायौ ॥४॥ दई बधाई गोपराज कौं कुटुम्ब सहित जिन माथौ नायौ । ढाढ़ी किधौं प्रेम की मूरति नैंननि आनंद नीर चुचायौ ॥५॥ मेरौ भलौ रमापति कीनौं तुम घर

मंगल मोहि दिख.यौ । आसा वेलि फली यह मेरी भयौ तुम्हारे मन कौ भायौ ॥६॥ भुव नभ दिसनि हरषि अति वाढ्यौ व्रज मैं घर घर आनंद छायौ । धन्य धन्य तुम भये लोक में भली भाँति रिन पितर चुकायौ ॥७॥ मो मन अभिलाषनि कौ सागर निर्जल हो सो गहर वहायौ । आजु भयौ सर्वोपर हौं धनि महरि भाग कौ उदौ मनायौ ॥८॥ मणि मंदिर कौतिक मय रचनाँ ऊपर जरी वितान तनायौ । नवल नूत दल कुशुमनि भौंरा वंदन मालनि दिपतु सुहायौ ॥६॥ ऊँचे आसन ब्रज पति वैठे दान देत अति मन मरसायौ । पुत्र जनम उत्साह वदन पर मनु रवि उदै कमल विकसायौ ॥१०॥ कृपा दृष्टि चितवत ढाढ़ी तन वार वार कर दैंन उचायौ । ओप सतगुनी फूलनि तन मन अपनें कौं कर धरि अपनायौ ॥११॥ नाचत मगन भयौ तव ढाढ़ी आपु छक्यौ अरु सवहिं छकायौ । भर्‌यौ कृष्ण अनुराग हियें अति लाल जनम पुनि पुनि दुलरायौ ॥१२॥ सोम वंश निर्मल गंगा जल नारायण ता आदि वतायौ । अगनित भूप भये तिनकौ जस न्यारौ न्यारौ वरनि सुनायौ ॥१३॥ दै कर ताल उघटि संगीतहिं ढाढ़िनि कौं इहिं भाँति नचायौ । रीझि रीझि कैं गोप छवीलेनु ढाढ़ी पै धन घन वरषायौ ॥१४॥ भयौ परम कौतूहल मंदिर जसुमति अपनें निकट वुलायौ । रूप प्रकाश भयौ जव रानी खोलि लाल कौ मुख दरसायौ ॥१५॥ सरस्यौ प्रेम तामरौ तन में वार वार आनंद निधि न्हायौ । गनीं तुच्छ लोकनि की संपति इहिं सुख हरि पुर हू विसरायौ ॥१६॥ वाढ्यौ रंग प्रेम कौ गह गड़ आजु वहुत कछु नन्द लुटायौ । मचलि पर्‌यौ ढाढ़ी इहि पौरी वहुरि अनत चित चल्यौ न चलायौ १७॥

गायौ वृन्दावन हित रूप मगन भयौ ब्रज पति हूं गहि बाँह बसायौ १८।८०

(हेरी वरनन) राग देव गंधार—ग्वाल सब हेंरी दै गावैं। ब्रजरानैं कें पुत्र भयौ सुनि गैयनि वगदावैं ॥१॥ काहू जान न देत भैया वन गहि गहि कैं लावैं। कौलाहल अति करत गोप सुत रंगनि उपजावैं ॥२॥ लकुटनि पर धरि धरि जु पिछौरी टोलनि मिलि आवैं। ऊँचे करनि उठाइ फिरावत मंदिर कौं धावैं ॥३॥ लटकत फिरत घोष वीथिनु में कर भुज पटकावैं। भैया भयौ आज मन भाँवतौ ब्रज पति सिर नावैं ॥४॥ महुवरि पुनि मुखचंग वाँसुरी धुनि सौं ब्रज छावैं। नाचत कौतिक करत महा घट गोरस ढ़रकावैं ॥५॥ खसि खसि परति मणिनु के भूषन अंकनि लपटावैं। अद्भुत अखिल मनोभव तन मनु खेलत दरसावैं ॥६॥ प्रमुदित नंद महा मन भूषन पट दै पहिरावैं। ग्वालनि कूक सुनत ब्रजरानी मेवा पहुँचावैं ॥७॥ हरि हित रूप जनम मंगल सब मन वाँछित पावैं। वृंदावन हित जस गाइक वृषभांन नन्द भावैं ॥८॥८१॥

राग देव गंधार तथा विहागरौ—मो घर कृष्ण जनम कौ मंगल। गावौ सकल सवासिनि मिलि कैं तुम प्रसाद पायौ फल ॥१॥ सथिया धरौ चौक रचि पूरौ लेहु लीक अपनी भल। धन्य जनम मेरौ ब्रज पति कौं दई कियौ इहिं भूतल ॥२॥ देहु असीस लाल मेरे कौं विधि तन ओटौ अंचल। ब्रज गरुऔ आनंद वढ़ावन मोहन नैन कमल दल ॥३॥ सब गावैं सब नाचैं वनिता महरि वचन सुनि निर्मल हरद दही घोरैं

सिर ढ़ोरैं मच्यौ परम कौतूहल ॥४॥ एक रीझि लागति है चरननि एक मिलत लगि लगि गल । होहु सुख विद्धिं नन्द घर नित नित राज रह्यौ नित अविचल ॥५॥ क्रीडा करौ नई नित जहाँ तहाँ ब्रज कांनन कमनीं थल । सुर नर मुनि सुमिरेंगे ऐसे करि है री कौतिक कल ॥६॥ साधुन के उर सीतल करि है जरि जरि मरैं महा खल । अपनैं पाप आपु दुख पावैं जो यासौं करि हैं छल ॥७॥ निर्धन की सी थाती रानी रहौ सम्हारति छिन पल । होहु सकल ग्वालनि जु मुकट मणि तन चटकीलौ साँवल ॥८॥ वड़े सजन घर होहु सगाई अरि दल गंजौ भुज वल । व्याहि दुलहिनि लावौ ऐसी नहीं लोक ब्रज मंडल ॥९॥ ऐसी नहीं नागपुर सुरपुर नाहिंन सुनी रसातल । वृंदावन हित रूप आगरी हम लखि पिंयैं वारि जल ॥१०॥८२॥

राग आसावरी ताल रूपक—भूर भाग ब्रज गोपी, आजु सव सुख ओपी, कृष्ण जनम दिन । आतुर धाई देति वधाई जिन कुल थूनी है रोपी ॥ कृष्ण जनम दिन ॥टेक॥१॥ मषि लखि रेष विशेष ठनीं दृग गोकुल गलिनु रवानीं । भूषन वसन लसनि अंगनि की उपमा लखि विलखानी ॥२॥ अति कमनीं गवनीं गति भाँमिनि अभिरामिनि नव वाला । मानौं घन घनश्याम ऊँनयैं दरसी दामिनि माला ॥३॥ सौरभ स्वाद नदित अति आवत उपमा वरनौं आछैं । मानौं देह चली हरि देखन प्रान पुकारत पाछैं ॥४॥ गान रचति कटि लचति मचति छवि नचत नासिकनि मोती । मानौं कृष्ण उदित गोकुल विधु चले हैं जुहारी गोती ।५। सीस फूल चंद्रिका चलनि में हलनि भली

छवि पाई । हरि प्रगटित सौभाग्य मंजरी कै रूप धुजा फहराई ॥६॥ फूले वदन चपल गति लोचन लट तार्टक विलोलैं । मानों राहु दिनेश कमल ससि नंद सदन संग डोलैं ॥७॥ कर वर भेंट सोहिले गावैं जसुमति कुषि मल्हावैं । रति ठकुराइनि सी ब्रज वनिता नंद भवन कौं आवैं ॥८॥ मंदिर पैठि स्याम अविलोके करज चटक मन फूलीं । मनु आनंद हिंडोर रच्यौ विधि प्रेम हिलोरनि झूलीं ॥९॥ इक दिस ओप गोप गन राजैं गाजैं जाचक द्वारैं । चाहत नहीं अष्ट सिद्धि नव निधि जद्यपि लागी लारैं ॥१०॥ जा लीला कौं रमा उमा नित दरस चाह मन माहीं । ता ग्रह दांन मांन को वरनैं सारद विधि सकुचाहीं ॥११॥ देत अखिल आनंद स्याम घन प्रमुदित गोप कुमारा । वृंदावन हित रूप स्वामि की लीला ललित उदारा ॥१२॥८३॥

राग आसावरी ताल रूपक—ब्रज रवनीं सुनि धाई जसुमति सुत जनमत भाग भरी है । ललित वदन मंजन करि अंजन ग्रह ग्रह तें निकरी है ॥ जसुमति सुत०॥टेक॥१॥ सुरंगित सारी पीत कंचुकी अतलस लहँगा सोहैं । अंग अलंकृत मणि मय भूषन निरखि रमा रति मोहैं ॥२॥ हुलसी आवति विधिहि मनावति कर वर भेंट भली है । मंगल गावति रंग वढावति सोभित करति गली है ॥३॥ लटकति चरन धरति ब्रज वनिता मद गज गति गवनी हैं । पद तल अरुनाई अनुरागहि द्रवित मनों अवनी हैं ॥४॥ अति कमनीं नूपुर पुनि किंकिनीं रव रस रंग रली हैं । मानौं निगम रिचा मूरति धरि आसिका पढ़ति चलीं हैं ॥५॥ दिसि दिसि तें वर वृंदनि भामिनि धावति यौं

छवि पावैं । गोकुल गहर उदधि अति सुख भयौ सरिता उमगी आवैं ॥६॥ अति अभिलाष स्याम घन देखन सबके दृगनि वढ़ी है । उपमा को जो वरनि सुनाऊँ रैंनी प्रेम चढ़ी है ॥७॥ रसना हुलसी गान गहर सुख जसुमति कृषि मल्हावैं । रति रंभा ठकुराइनि सीं सब राग सरूप दिखावैं ॥८॥ नंद निकेत विविधि वाजेनु धुनि सुनि अति मुदित भई हैं । मन उतकंठित भीर रुकी हिय आँनि प्रेम भिजई हैं ॥६॥ मंडित मांग जलज मणि सैंदुर कछु कच चलनि हले हैं । खेलत मनु राती निसि उडगन सोभा देत भले है ॥१०॥ महर महा मन कें मणि मंदिर वाला सवहि धसीं हैं । मन घन स्याम आगमन अगनित दामिनि ओप लसीं हैं ॥११॥ सादर भेटति सुखहि समेटति मुदित वधाई दीनीं । करज चटकि ब्रजरानी जू की पद रज वंदन कीनीं ॥१२॥ गाढ़ प्रीति सौं सिसु मुख देखति रूप अवधि यह वारौ । देत असीस लाल चिरुजीवौ जौ लौं अटल ध्रुव तारौ ॥१३॥ पुनि पुनि वदन निहारति वनिता फूलीं कौतिक भूलीं । जसुमति नन्द भाग महिमा सुख रचित हिंडोरे झूलीं ॥१४॥ चेटक रूप दृगनि भरि घूमति भूषन वारि दिये हैं । कछुक डीठि डर संकित ह्वै पुनि जल सब वारि पिये है ॥१५॥ दूध दही हरदी करि रंजित गोपी गोप सनैं हैं । मंगल अमित महीतल मोहन प्रगटित लखि उफनैं हैं ॥१६॥ गोप सभा सोभित ब्रज पति पट हय गय रतन दये हैं । उद्धव भूरि कियो जिन त्रिभुवन सुख के छत्र छये हैं ॥१७॥ गोधन वृंद द्विजनि दिये विधि सौं तिननि असीस सुनाई । देवमीढ परजन्य वंशधर रहौ कुल वृद्धि सदाई १८

पट भूषन पहिरावति वनितनि हरषित अति ब्रजरानी । जाके प्रवल भाग की महिमा निगम हू परी न वखानीं ॥ १६॥ सोभा निकर निहारि महरि उर हँसति लसति निकसी हैं। उदित महा ससि नन्द नंदन कें मनु कुमुदनि विकसी हैं ॥२०॥ आनंद कृष्ण जनम मनु पावस प्रेम जलद उनयौ हैं । वरषत अति अनुराग सिषंडी ब्रज जन मोद भयौ हैं ॥२१॥ रसिक अनन्य महा नद पूरे सव विधि सुखित किये हैं । वृंदावन हित रूप जाऊँ वलि यह जस गाइ जिये हैं ॥२२॥८४॥

राग आसावरी—ए चलि ब्रज पति मंदिर वेगि मोहन जनम लियौ । आजु मंगल विपुल उदोत घर घर घोष कियौ ॥ दृग देखन कौ जो लाभ विधि वाँछित जु दियौ । अंग अंग परम अभिराम महरि सिसु हरित हियौ ॥१॥ वे करि करि सुभग सिंगार घर घर ते उमहीं । इक आतुर ह्वै तिहि काल उठि उठि गैल गही ॥ इक सुनत भई वस प्रेम जे छिन गनति रहीं । वर वानक वनिता वृंद वरनी जात नहीं ॥२॥ धन न्यारौ प्यारौ एक खरचन लै जु चलीं । इक मंगल साज वनाइ सोभित करति गलीं ॥ इक मल्हकि मल्हावति आज हरि ससि उगन थली । वर वीथिनु सोभा भीर वाढ़ी रंग रली ॥३॥ इक निरखनि कें चित चाइ मारुत गति गवनीं । जहाँ उड़े हैं असुभ त्रन तूर निधि सिधि वरषि घनी ॥ दुलरावति जसुमति कूषि वल्लव कुल रवनीं । उनयौ धारा धर रूप सींचत दृग अवनीं ॥४॥ मिलि गई हैं महरि कें धांम धनि धनि कहति भई । अवलोकत सुंदर स्याम तन सुधि विसरि गई ॥ अति मोहन सोहन रूप सव आश्चर्य मई । ते विनवति है कर जोरि भाग्यनु दयौ है

दई ५ सब देति वधाई ताहि विधि दाहिनौ भयौ। जाके पुत्र जनम जग मांहि दुख दुरि दूरि गयौ॥ ब्रज भर्यौ है परम अनुराग पुर पुर मोद नयौ। रुचि वरषत कुसुमनि देव व्यौम विमान छयौ॥६॥ गोकुल पति सदन सुदेश रचना विविधि रची मणि मानिक कुंदन माहिं मंदिर अजिर खची॥ मनु रमा रवन पुर जीति सोभा आनि सची। तहाँ प्रमुदित गोपी ग्वाल हरद दधि कीच मची॥७॥ द्विज सोधत ज्योतिष भेद लगन नक्षत्र सवै। संकल्पत गोधन वृन्द नन्द उदार तवै॥ रथ हय गय भवन भंडार देत सम्हारि अवै। ब्रज ईश दोऊ कर जोरि विप्रनि चरन नवै॥८॥ यह हितू हेत की वात सुनि कीरति धाई। तव निज पुर सहित समाज जसुमति ग्रह आई॥ अति करति महरि सनमान जव यह सुधि पाई। मिलि वाढ्यौ अतिसै रंग मोहन लखि माई॥६॥ रावलि पति गोकुल राइ कंचन झर वरषैं। सर सरिता जाचक वृंद पूरन ह्वै वरषैं॥ दोऊ सजन सच्चिदानन्द रूप द्दगनि परषैं। सुख प्रापति पूरन काम मिलि चित आकरषैं॥१०॥ पट भूषन वारति देति रावलि पति घरनीं। अति सजल नैंन भरि भेटति जग मंगल करनीं॥ हरि जननी जनक महा मुनि महिमा मन हरनीं। ब्रजरानी अति वड़भाग निगमनि हू वरनी॥११॥ कहूँ चाइनु खेलति गाइ थननि तें दूध श्रये। कहुँ हेरी गावत ग्वाल निर्त्तत नाच नये॥ कहुँ रचना कौतिक रूप ठाठ विचित्र ठये। कहुँ मान सहित वहु दान वंदी जननि दये॥१२॥ पहिराई गोपी गोप जाचक और जिते। मणि भूषन वसन अमोल गनत न वनत तेते दिये खोलि कनक नग कोश वरनौं साज किते। गोकुल

पति पुन्न प्रताप रंचक नाहिं रिते १३ जस गावत चारन भाट अपने भवन चले। वनिता मुरि देति असीस वोलत वचन भले ॥ जियौ जुग जुग गोकुल चंद जसुमति भाग फले। व्रज देहु अखिल आनंद सवके दुरित दले ॥१४॥ श्री कृष्ण जनम व्रज राज मंदिर होत अरी। सुख संपति नव निधि सिद्धि घर घर सुभर भरी ॥ नित वंदौं हरिहित रूप चरित सरिता गहरी। वृंदावन हित व्रज भूँमि लीला ललित करी ॥१५॥८५॥

राग धनाश्री—मंगल गावौ री वाला। देहु असीस महरि जन्यौं लाला ॥१॥ आवौ सव व्रज वनिता जुरि जुरि। नाचौ नंद महर घर मुरि मुरि ॥२॥ फिरति वुलावति नाइनि दौरी। व्रज पति मंदिर वेगि चलौ री ॥३॥ नव सत साजौ भेटैं लै कर। मंगल साज अलंकृत करि वर ॥४॥ धाईं सुनत नन्द ग्रह ऐसैं। सावन सरिता सागर जैसैं ॥५॥ गावत गीत महा रंग भीनी। पुर वीथिनु अधिक छवि दीनी ॥६॥ जसुमति कूषि मल्हावति गहकी। मनहुँ वसंत कोकिला पहकीं ॥७॥ सुत मुख देखन की अभिलाषा। वाढी गहकि प्रीति उर साषा ॥८॥ नन्द महर कें भवन धसीं हैं। चहलैं दहलैं प्रेम फसी हैं ॥९॥ सुत मुख देखि देखि सव आवैं। वारति धन करजनि चटकावैं ॥१०॥ निरखत वदन भाग्य अनुकूलीं। मनु ससि उदित कमोदिनि फूली ॥११॥ वंदति चरन जसोदा रानी। जिन यह व्रज धरु करी रवानी ॥१२॥ कौतिक अवधि जन्यौं जिनि ढोटा। कोधौं सुकृत गोप कुल मोटा ॥१३॥ जाकें जनम घोष सुख सरस्यौ। मंगल पुर पुर घर घर दरस्यौ ॥१४॥ धरति साथिये भाग उदित हैं झगरति सकल सवासि मुदित हैं १५

सव मन भायौ महरि देति है । अंचल ओटि असीस लेति ॥१६॥ हैं वंश उदौ लखि ब्रज पति हरषे । इन्द्र समान आजु धन वरषे ॥१७॥ कीरति श्री वृषभांन सुनी जव । आये मंगल भूर सच्यौ तव ॥१८॥ मिलि वैठे रावलि पति ब्रज पति । गोप सभा मैं छवि वाढी अति ॥१६॥ जो आनन्द वढ्यौ तिहिं वारी । वरनत सुमति सारदा हारी ॥२०॥ कीरति दीनी महरि वधाई । निरखति कृष्ण प्रेम निधि न्हाई ॥२१॥ न्यौछावरि करि वहु धन दीयौ । सजन उदौ लखि सरस्यौ हीयौ ॥२२॥ मैं असीस तिहिं वार सुनाई । दुहूँ कुल गांन लीक लिखि पाई ॥२३॥ वृंदावन हित रूप वलि गई । ब्रज वाढी सुख वेलि नित नई ॥२४॥८६॥

राग धनाश्री ताल रूपक आड़-चौतालो (श्रीजसोदा जू कौ दसमास गर्भवरनन)

मेरे री मन कौ भायौ आज । नन्द घर सोहिलौ ॥ नाचि हौं मणि अजिर मुरि मुरि सफल भये सव काज । नंद घर सोहिलौ ॥टेक॥ श्री कृष्ण जसुमति गर्भ आये प्रथम मास पुनीत । ता दिन तें मन दै रमा पति मैं भजे रस रीति ॥ मास दूजैं सगुन मोकौं सब भये चित चीत । अव भयौ विधि दाहिनौं नित गाइ हौं मंगल गीत ॥ नन्द घर०॥१॥ मास तीजौ लगत हरषी हौं सहित परिवार । इष्ट कौं आराधि सुचि रुचि करौं यही विचार ॥ होहि सुत ब्रज ईश कैं सव जननि प्रांन अधार । जाइ मुख लखि ताप तन कौ विनवति वारहूँ वार ॥ नंद घर०॥२॥ मास चौथैं मैं मनायौ देव ब्रज गिरि राइ । दूध काचैं नित न्हवाऊँ भोग पाक धराइ ॥ तिन दियौ वर मोहि साँचौ सवहि भेद वताइ । जा चरित प्यारे देव मुनि सो प्रगटै महर घर आइ ॥ नंद घर० ३ पांचये मास विचारि

जसुमति मोहि निकट वुलाइ। कियौ मंगल भूर सकल सवासिनी पहिराइ ॥ द्विजनि कौं वहु दान दियौ आसिका पढवाइ। पुत्र फल तुव लहौ रानी नारायन जु सहाइ ॥ नंद घर०॥४॥ छह मास वीतें छवि न थोरी नंद घरनी अंग। कुंदन अमल मनु छिप्यौ झलकै स्याम नग कौ रंग ॥ सोभा न वरनी जाइ जा उर दिपत कृष्ण अभंग। सातयें मास अनेक वनिता सेवति मन दै संग ॥ नंद घर०॥५॥ आठयें मास विलोकि ब्रज पति भवन वानिक नई। मंगल अमित अंकुरित जित कित भूँमि हरषित भई ॥ पय श्रवति सुरभीं आपु रस हरि जनम आगम ठई। वड़ भाग विप्र प्रसाद जसुमति लखि आनंद छई ॥नंद घर०॥ ॥६॥ नवये मास गये सवनि के ताप तन मन दूरि। अष्ट सिद्धि नव निद्धि घर घर रही ब्रज में पूरि ॥ अभिलाष दृग नियरे भये सव दुरित डारे चूरि। नंद मंदिर दास दासी सव फिरैं प्रेम गरूर ॥ नंद घर०॥७॥ आरंभ दसयों मास भादौं अष्टमी अधराति। दमकैं तौ दामिनि मेघ वरषैं ऊनई घन पाँति ॥ जनमत ब्रजेश कुमार आनंद कह्यौ कापै जात। सव लोक अपु वस वजे वाजें जे जे हैं जहाँ जिहिं भाँति ॥ नंद-घर०॥८॥ दै मान ब्रज पति विप्र वोले जनम पत्र लिखाइ। वहु दान विधि सौं धैंनु दीनी प्रेम सागर न्हाइ ॥ आईं सकल पुर वधू मंगल साज विविधि वनाइ। अवलोकि लौंनौं ललन कौं सुख वंदैं महरि जू के पाइ ॥ नंद घर०॥९॥ ब्रज राज अनुजा धरति कौरिनु साथिये हित मानि। इक वाँधि वंदन वार जलज वितान रुचि सौं तानि ॥ इक महरि कृषि मल्हावहीं रस रीति सौं करि गांन। इक रीझि वारति आपनौं धन विपुल

फली मेरी आस । अब देहु जसुमति नन्द मो मन भाँवतो ग्रह वास ॥ टहल चित चाहनु करौ सुत निरखि अधिक हुलास । वृन्दावन हित रूप वन्दौं कीरति पठई हौं पास ॥ नन्द घर सोहिलौ ॥११॥८७॥

राग धनाश्री ताल मूल (जगा बरनन)—लैहौं मन भाँवतौ भयौ कुल मंडन सुंदर स्याम । हौं कुल जगा उदौ नित चाहौं पोथी लिखि हौं नाम ॥टेक॥ गोप वंश कौं जाचौं राचौं ब्रज मंडल मैं वास । पुत्र वड़े घर भयौ सुनत मौं हिय में वढ्यौ हुलास ॥ गोकुल ग्राम भवन ब्रज पति कैं दरस्यौ विपुल प्रकाश । भयौ कुल इष्ट दाहिनौं मोकौं सब विधि पूजी आस ॥ लैहौं०॥१॥ लला नाम लिखवाई लैहौं वड़े खरिक भरि गाइ । सब पहिले जु ख्यात की दीजै गल घंटा पहिराइ ॥ सिर मणि पट्टी पगनि पैजनीं देहु इक वरन मंगाइ । सुँदर ग्वाल संग करि देहु जे लावैं दूध दुहाइ ॥लैहौं०॥२॥ दादी नाम वरेयसी रानी दादौ श्री परजन्य । देवमीढ़ परदादौ सो जदुवंश भयौ उतपन्य ॥ नंद महा मति पिता जसोमति जननी भई धनि धन्य । सुत सोहिलैं दान आदर सौं देहु मो व्रत जु अनन्य ॥लैहौं०॥३॥ ब्रज पति सुतहि गोद लै वैठे सादर जगा वुलायौ । सोधि सुभ घरी चौंक पूरि मणि पट्टा महरि विछायो ॥ मंगल गावति वधू रोहिनीं आगैं अरघ वढायौ । कर गहि कैं उपनंद महा मन मुदित ह्वै जु वैठायो ॥लैहौं०॥४॥ वड़ैं नगर इक देहु महाराजा तव हौं पोथी खोलौं । कनक रतन अनगिनती देहु भरि भरि जु तराजू तोलौं ॥ कृष्ण जनक कौं जाच कहा अब गाम गाम हौं डोलौं

यह दत्त पाइ घोष पति घर तें विरद सोम कुल वोलौ लैहौ० ५
जगा नाम पोथी मैं लिखि गोपनि तें वाँछित पायो । महरि वारि दीनैं मणि भूषन पुनि वागौ पहिरायो ॥ इच्छा भोजन दै वड़ भागिनि वूढ़ौ जगा जिमायौ । सुखित भयौ सव भाँति आसिका दै हिय अधिक सिहायौ ॥लैहौं०॥६॥ सुमुख नाम नाना कौ लिखि कैं लिखी जु पटुला नानी । जिनकी सुता परम वड़ भागिनि नंद महर की रानी ॥ ताकैं सुत त्रैलोक्य महा मणि जा गति निगम न जानी । छकि गयौ वदन विलोकि लाल कौ गद गद निसरत वानी ॥लैहौं०॥७॥ पीहर पुरी की कल कीरति वरनि असीस सुनाई । वड़े सजन घर होहि वेगि दै रानी सुत जु सगाई ॥ श्री हरिवंश प्रसंस करन कौं जोरी विधि जु वनाई । वृंदावन हित रूप मोहि यह सगुन परीक्षा आई ॥लैहौं०॥८॥८८॥

राग धनाश्री—चलि चलि री आजु विचक्षन मंगल गावनौं । गोप इन्द्र कौ वंश उदै भयौ काहें गहर लगावनौं ॥१॥ उत्सव अवधि नगर गोकुल में सुर अचिरज उपजावनौं । भाग अवधि जसुमति सम को जिन अैसौ ढोटा जावनौं ॥२॥ मंगल धुजा निकर सोभा कौ फहर फहर फहरावनौं । भुज उचाइ आदरु दै सवकौं मानौं हरषि वुलावनौं ॥३॥ मंगल रूप धैंनु या ब्रज की देखौ हेज वढ़ावनौं । जग पालक गोपाल भयौ थन दूध धार वरषावनौं ॥४॥ नाचति गाँव गोइरें हूंकति ऊँचे कान उचावनौं । खरिकनि मुदित वछरुआ देखौ अति कौतिक उपजावनौं ५ गोपनि सुत भये वदन डहडहे हेरी दे दे

धावनौं । आरज गोप जुहारीं आये नंदहि माथौ नावनौं ॥६॥ वनितनि भीर भई वीथिन में मंगल धुनि ब्रज छावनौं । सिंघ पौरि कौंतूहल अतिही नीठ नीठ होइ आवनौं ॥७॥ वाजत है वाजे ना ना विधि रागिनी राग सुहावनौं । थकित विमान देव वनितनि जुत रीझि कुशुम वरषावनौं ॥८॥ जसुमति अंक मयंकनि निंदतु ढोटा नैंन सिरावनौ । जाकें जनम घोष वसि सजनी हरि पुर हूँ विसरावनौं ॥६॥ रचति साथिये पौरि सींक धरि नागर पान चितावनौं । भगरति वंश सवासि मानि दै तिनकौं रुचि पहिरावनौं ॥१०॥ नव पल्लव कुशुमनि की माला पौरिनु सुविधि वँधावनौं । डाली रतन भरी मालिनि की आसा सुविधि पुजावनौं ॥११॥ नाइनि पाइ महावर चीतति सब घर देति वुलावनौं । मनु सोभा कौ अंवुद उमड्यौ एक जात इक आवनौं ॥१२॥ इक पहिरी पहिरावति एकनि एकनि,सुविधि मनावनौं। इक अंचल लै कहति जसोदा चिरजीवौ सुत कुशरावनौं ॥१३॥ गाजत है जाचक धन लै लै वंश वखान सुनावनौं । वारौं इंद्र सभा जु गोप कुल ऐसौ लगतु सुहावनौं ॥१४॥ अजिर भयौ पय दधि कौ सागर ऐसौ खेल मचावनौं । लटकि लटकि नाँचत जु परस्पर आँकौं भरि लपटावनौं ॥१५॥ संकर विधि नारद सनकादिक आये दैंन वधावनौं । वेद उपनिषद रूप वदलि कैं गोपनि विरद लड़ावनौं ॥१६॥ तंत्र पुरान भये सुक सारौ लीला चरित चितावनौं । थिरचर सवै प्रेम भये पूरित प्रगट्यौ दृग उरझावनौं ॥१७॥ नीरस वदन परि गये फीके रस मय वपु दरसावनौं । वृन्दावन हित रूप अमी रसिकनि दृग धापि पिवावनौं १८ ८६

धनाश्री (ढाढी) आजु ब्रज सोहिलौ भयो वंश उदौ मम ईस। हौं ढाढ़ी कैऊ पीढ़िनु कौ नंदहि नाऊँ सीस॥ आज ब्रज सोहिलौ ॥टेक॥ गोप वंश कौं ब्रज में जाचौं यह मेरैं जु विवेक। और वरन पै हाथ न ओटौं जानत लोक अनेक॥ तुमकौं हैं भिक्षुक वहु तेरे मोकौं तुम प्रभु एक। हौं अनन्य गलपरा निवाहौं कृष्ण जनक यह टेक आजु०॥१॥ मैं यह सुनीं नंद घर बाजी सुत कें जनम बधाई। प्रेम प्रवाह घेरि मुहि लीनौ ढाढ़िनि नाँचत आई॥ इन्द्र विभौ पायें नहिं जो सुख चारि मुक्ति विसराई। हौं जजमान उदौ लखि फूल्यौ मन वाँछित निधि पाई ॥आजु०॥२॥ मेरौ मान रमापति राख्यौ सत्य फली मुखवानी। नेंम धर्मव्रत कौ फल देख्यौ कृपा परै न वखानी॥ पालक घोष दुष्ट घर घालक सुत जायौ ब्रज रानी। निर्मल गोप वंश की कीरति लोकनि चलैं कहानी ॥आजु०॥३॥ इक दिन हौं जसुमति गृह आयौ मोहि वहुत कछु दीयौ। पुत्र जनम अभिलाषा करि कैं गहवरि आयौ हीयौ॥ तव मैं अपनौं इष्ट अराध्यौ हरि पूजन पन लीयौ। ऊगि उग्यौ वृजपति कौ सुकृत जो हो पाछिलौ कीयौ ॥आजु०॥४॥ ढाढिनि संग लै चल्यौ भोर ही सगुन भले मुहि आये। ताही विधि मंगल समूह के विधना सुख दरसाये॥ महा दान वरषत जाचक पै मैं तुम बैठे पाये। सीतल श्रवन भये सुनि करनी धनि हरि जनक कहाये ॥आजु०॥५॥ नंद उतारि आपनौं वागो ढाढ़ी कौं पहिरायौ। मोतिन की माला दै कैं उपनंद पीठि कर लायौ॥ धरानंद मणि कुंडल दीनैं टोडर नगनि जरायौ। निकट वोलि ध्रुवनंद दुशाला ढाढिनि कौं जु उढ़ायौ ॥आजु०॥६॥ रतन

पेच अभिनन्द सीस पर अपनैं हाथ बँधायौ । दई सुठि नन्द अमोल धुक धुकी आदर बहुत करायौ ॥ निर्मल नन्द डवा गहनैं कौ ढाढ़िनि हाथ गहायौ । करमा धरमा नंद हेत करि व्रज पति पौरि वसायौ ॥आजु०॥७॥ भीतर जाइ असीस सुनाई मोहि दियौ मन भायौ । व्रज वनितनि कौ दत्त कहा वरनौं केऊ भार भरायौ ॥ महरि गोद भरि दई पंजीरी सुत कौ वदन दिखायौ । वृन्दावन हित रूप स्याम कौ जनम वधावौ गायौ ॥आजु व्रज सोहिलौ॥८॥६०॥

राग धनाश्री तथा सारंग—आज नन्द के सदन वधावनौं । महरि सभागिनि ढोटा जायौ भयौ री सखी मन भावनौं ॥१॥ वालक वृद्ध तरुन मिलि उमहीं गाम गाम तें आवनौं । कियें सिंगार भेट कर लीयें उमगि उमगि कैं गावनौं ॥२॥ सोभा वरषति लटकि चलनि लगै धाम परम अभिरावनौं । सुनि सुनि सीतल होत श्रवन रानीं जसुमति कूषि मल्हावनौं ॥३॥ पौरी भीर कुलाहल मंदिर गोरस घट ढरकावनौं । वड़े वड़े आरज गोप जहाँ नाचत व्रजराज नचावनौं ॥४॥ मनु छवि करति प्रवेश घोष जन यौं चहुँ दिसि तें धावनौं । वाजति देव दुन्दुभी उत इत गहकि निसान घुरावनौं ॥५॥ देत दान व्रज इन्द्र महा मन सर्वसु हरषि लुटावनौं । करति विविधि सनमान रोहिनी वनितनि कौं पहिरावनौं ॥६॥ देखि देखि आवति मोहन मुख मुदित असीस सुनावनौं । चिरुजीवौ जौ लौ ध्रुव तारौ व्रज आनन्द वढावनौं ॥७॥ सुख की निधि सोभा निधि गोकुल मंगल निधि दरसावनौं । गोप राइ कुल मंडन हौं वलि नित नव विरद वुलावनौं ॥८॥ सव व्रज जीवन सव दृग थाती सव

हिय जिय हरषावनौं वृन्दावन हित रूप पुंज कौ धुरवा रंग वरषावनौं ॥६॥६१॥

राग धनाश्री तथा मेवारी-मंगल छंद—नंद जू के मंदिर हो आजु वधावनौं । यह दिन रूरौ हो सव मन भावनौं ॥ भावनौं धनि यह द्यौस सजनी पुत्र जनम दई दयौ । पाछिलौ कोऊ ब्रजराज सुकृत आनि सो जु उदै भयौ ॥ तन स्याम लौनौं दृग लगौंनौं अहा कहा विशेषिये । धन्य जसुमति कूषि कौ फल चलहु नैंननि देखिये ॥ निसान वाजें गुनी गाजें सुनि सुनि हियौ सिरावनौं । नंद जू के मंदिर हो आजु वधावनौं ।१। गोकुल नगर में हो गह गड प्रेम कौ । कृष्ण जनम घन हो वरषत हेम कौ॥ हेम कौ घन हरषि वरषै और दाननि को गनौं । जहाँ विधि रचनां लज्यानी भवन सोभा कहा भनौं ॥ लै लै वधाई वधू आवैं महरि भाग वदैं वलीं । जुरि मिलि सवै सोहिले गावैं छवि वढ़ी पुर कीं गलीं ॥ अति सुखहिं झेलैं रंग मेलैं कहा सुधि तहाँ नेंम कौं । गोकुल नगर में हो गह गड प्रेम कौ ॥२॥ विधिहि मनावौ हो, अंचल छोर लैं । पूजौ भुव देवनि हो विधि सौं धैंन दै ॥ धैंन विधि सौं देहु वंदौ विप्र गुरजन माइ सौं । हौंती रु अनहोंती करौ रस रीति चित के चाइ सौं ॥ लरज्यौ दई किहिं कृत्य दरस्यौ रूप दृग उरझाँवरौं । लोक में जस गोप कुल कौ वढ़ि है यह साँवरौ ॥ वृज ईस घर सोहिलौ डीठ्यौ भई सुख की विढ़ि है । विधिहि मनावौ हो अंचल छोर लै ॥३॥ कृष्ण जनम दिन हो दुन्दुभी वाजियौ । पुर पुर घर घर हो उत्सव साजियौ ॥ साजियौ पुर (पुर) उत्सव नन्द के सुत अवतर्यौ । वारनैं जसुमति कूषि मन-अभिलाष सब पूरन कर्यौ ॥ उमग्यौ विपुल आनंद सागर पूरि

लोकनि मे गयौ । देखि बृज कौतिक अलौकिक देव मन विस्मय भयौ ॥ वृन्दावन हित रूप स्वादी भृत्य हरि जस गाजियौ । कृष्ण जनम दिन हो दुन्दुभी वाजियौ ॥४॥६२॥

राग काफी(भांड वरनन)—हां छगन मगनुवा जीवौ । हाँ लला पय धापि जु पीवौ ॥१॥ हां भाग्य भाँडनि कें आयौ । हां सवनि पै दान दिवायौ ॥२॥ हां उदार लला की मौसी । हां फिरत है हौंसी हौंसी ॥३॥ हां वहुत आदरु दै वोली । हां पँजीरी भरि दई ओली ॥४॥ हां नइनियां पह पट दैनीं । हां करत कछु सैंना वैनीं ॥५॥ हां पुजायौ दाई खपरा । हां लियौ भरि धन सौं टपरा ॥६॥ हां मलिनियां डोलत रूरी । हां अधिक भागिनि की पूरी ॥७॥ हां महर घर मिली वधाई । हां प्रेम छकि गई महाई ॥८॥ हाँ वड़े घर ढ़ोटा जायौ । हां सवनि मन वाँछित पायौ ॥६॥ हां वड़ौ यह भांडनि लहनौं । हां सवनि पहिरावौ गहनौं ॥१०॥ हां देवता भांड कहावैं । हां जु पूजैं तें फल पावैं ॥११॥ हां हँसे हर हर गोपाला । हां नंद दई मोतिनु माला ॥१२॥ हां भांड भये हरषित हीये । हां महर मणि कुंडल दीये ॥१३॥ हां कहत जीवौ जुग लाला । हां दिये गोपनि जु दुशाला ॥१४॥ हां आसिका जसुमति लीजौ हां लला की झुगुली दीजौ ॥१५॥ हां कुँवर की पटुला नानी । हां वड़ी दाता महारानी ॥१६॥ हां कछू अव गहरु न कीजै । हां कोरचा कौ धन दीजै ॥१७॥ हां वड़ी वड़ी थौंदनि वारे । हां सवै जजमान हमारे ॥१८॥ हां मनोरथ सवके रूरे । हां विधाता पारे पूरे ॥१९॥ हां महा मंगल इहिं राचौ । हां सवै उठि कैं अव नाचौ २० हां नचतु छोटे रु वड़ेरे हां प्रेम झ़लकैं उर

भेरे २१ हां दुहूँ कर पटके ताला। हां देहि हेरी गोपाला २२। हां भांड भड कूद्यौ लावैं। हां वदन वांके जु दिखावैं ॥२३॥ हां कहै को हम सम तपसी। हां जिमावौ भाँडनि लपसी ॥२४॥ हां वजत है ढोलक ढोला। हां पढ़त पंछी मिठ वोला ॥२५॥ हां लला की पाई वधाई। हां भांड भये मुदित महाई ॥२६॥ हां भये प्रफुल्लित मुख वारिज। हां कहत चिरुजीवौ आरज ॥२७॥ हां तुरंगनि भाँड चढ़ाये। हां जाचकनि मान वढ़ाये ॥२८॥ हां सोहिलौ नंद कुँवर कौ। हां जहाँ भयौ आनंद भर कौ ॥२९॥ हां महा मंगल यह गायौ। हां जनम हित रूप लड़ायौ ॥३०॥ हां भाल मणि व्रज जन जागी। हां भये सवहीं अनुरागी ॥३१॥ हां वृन्दावन हित यह पावै। हां भांन व्रज पति जस गावै ॥३२॥९३॥

राग आसावरी—धनि भादौं मास पुनीत मंगल उदित कियौ। वदि आठैं अरु वुधवार अति आनंद दियौ॥ रोहिनीं नच्छत्र संजूत सुख सरस्यौ जु हियौ। सुभ वेला आधी रात हरि अवतार लियौ ॥१॥ आजु देखि अवनि सौभाग औरै गति वदली। औरै विधि दिसनि प्रकास लागत मोहि अली॥ कछु व्यौम विचित्र जु रीति दरसतु भाँति भली। सतगुनी नंद ग्रह जोति अति सोभा उझली ॥२॥ घन गरजत वरषत मंद मानौं प्रेम झरैं। दामिनि मानौं पुनि पुनि कौंधि अति कौतिक जु करैं॥ उझकति वर वदनहि खोलि जनु याहि कल न परैं। मंगल जु भयौ व्रज भूरि देखन कौं उतरैं ॥३॥ इन गैयनि मन उत्साह दरसतु आजु नयौ। खेलत है अपनैं चाइ थननि तें दूध श्रयौ॥ गोपनि कुल पूजि अनादि सुधि आगम जु दयौ पालक

प्रगट्यौ यह जान उर अहिलाद भयौ ॥४॥ बाजति जु दुन्दुभी देव बरषन कुशुमन लगे। निर्त्तत सुर वधू विलोकि कौतिक चित्त ठगे ॥ गोकुल मंगल जु अभूत पुर के भाग जगे। जसुमति सुत आविरभाव सब जग दुरित भगे ॥५॥ सर सरितनि निर्मल वारि पावस रितु जु भई। द्रुम वेलिनु फूलनि और फल आश्चर्य मई ॥ गिरि दरसी ना ना धातु जननि समीति नई। यह कारन जसुमति कूषि हौं वलि वलि जु गई ॥६॥ रानी लेंऊ वारनैं भूर मोहन सुत जायौ। जाहि खोजत निगम मुनीश सो सोवत पायौ ॥ बानी हूँ न परसति ताहि जो उर दुलरायौ। घुमड्यौ अंबुद आनंद ब्रज धरु वरषायौ ॥७॥ आईं वधू बधाई दैंन बानिक कहा भनौं। सोभा तन धरैं अनंत उमगी आजु जनौं ॥ जित देखौं तित इहिं रीति साहिश कैं सपनौं। अस गावत मदन सदेह सुनि ह्वै है जु मनौं ॥८॥ नख सिख किये सिंगार एक तें ऐक बनीं। पग धरति मंद गति गैंन सौरभ अंग सनी ॥ झिझकति है भँवरनि भीर कौतिक कनक तनी। मानौं छवि सागर माँहि बाढ़ी लहरि घनीं ॥९॥ लसैं वदन घूँघटनि माँहिं अंचल छोर हलैं। ससि पूरन मनु अनुराग अंबुद दबे तलैं ॥ अंजन युत लोचन लोल पैंनी कोर चलैं। देखन कौं सुत ब्रजराज आतुर होत भलैं ॥१०॥ सीतल दामिनि रसवंत मनु अनुराग भरीं। नित चाहत मनु संजोग पूजनि कौं निकरीं ॥ वृन्दनि वृन्दनि मिलि साथ हाथनि भेट धरी। मनु फले मनोरथ गूढ़ असैं जान परी ॥११॥ आज भवन भवन की पौरि वंदन वार लसे। मनु कृष्ण जनम उत्साह हर हर धाँम हँसे ॥ ज हाँ धुज पताक फहराति भाग्य हुलसि दरसे रचनां वीथिनु

विलोकि सब के मन सरसे १२ छवि जुत कियो भवन प्रवेश परम मुदित अवला । मंगल सुख सोभा मूल जनम्यो जहाँ लला ॥ सुत आवै वदन विलोकि मनु ससि निकर कला । परसंशति वारंवार प्रेम वढ्यौ सवला ।१३। रानी कूषि सुधा कौ सिंधु यह रस रतन धर्यौ । जाहि देखत व्रज नर नारि उर आनंद भर्यौ ॥ ऊग्यौ मंगलनि समूह जग कौ तिमिर हर्यौ । गोपनि कुल जस कमनीय लोकनि विदित कर्यौ ॥१४॥ लछिमीं धरि ना ना रूप व्रज अवनी विचरैं । व्रज राज लुटावत ताहि त्यौं त्यौं भवन भरैं ॥ भाजी जाचकता भूख दान उलैंड परैं । सव ह्वै गये इन्द्र समान को किहिं आस करैं ॥१५॥ चरुवा जु चढ़ायो आइ वरेयसी भाग वली । जो निगम अगह फल गूढ तिहिं सुत वधू फली ॥ मणि कंकण जसुमति देति लेति असीस भली । चौतति साथिये सवासि रचि मंगल अवली ॥१६॥ गुरजनि द्विज सादर पूजि सवकौं सिर नावैं । इक पहिरि विदा ह्वै जात इकनि पहिरावैं ॥ भूषन पट दै सनमान हँसि हँसि उर लावैं । ते छके प्रेम आवेस कृष्ण चरित गावैं ॥१७॥ पहिराई वनिता वृन्द ऐसैं वैंन कहैं । चिरुजीवौ राज कुमार हम सुख नैंन चहैं ॥ विधना तन ओटति गोद अंचल छोर गहैं । वंदति जसुमति के पाइ लोचन वारि वहैं ॥१८॥ श्री कृष्ण जनम आनंद लोकनि पूरि रह्यौ । यह श्री हरिवंश प्रसाद मैं लघु मति जु कह्यौ ॥ अति निरवधि सागर प्रेम व्रज वीथीनु वह्यौ । वलि वृन्दावन हित रूप नैंननि लाभ लह्यौ ॥१९॥६४॥

राग जैतश्री—कृष्ण जनम आजु मङ्गल माई । उमगि लग्यौ आनंद घोष झर जसुमति रानी कूषि सिराई १

वह दिखि धवल महल बृज पति कें सुंदर पीत धुजा फहराई। सुरंग वितान मोतियनि झालरि अवनी रंग विछौंननि छाई ॥२॥ कनक कलश उद्दोत रतन खचि जहाँ तहाँ सौरभ छिरकाई। फहर फहर फहराति पताका वहु विधि रचनां रुचिर वनाई ॥३॥ मणि मय देहरि सदन अलंकृत द्वारनि वंदन माल सुहाई। कृष्ण जनम मनु हँसत मोद भरि कौतिक सोभा वरनीं न जाइ ॥४॥ भाँति भाँति पुर नन्द अलंकृत कमला हू उझकत वौराई। हरि आगम ब्रज भूँमि हरषि भयौ कहा कहौं इहिं भाग्य निकाई ॥५॥ गावति वधू सोहिले आवत सब मन डोरी प्रेम लगाई। अस भई भीर गलिनु में मानौं सोभा सिमिट तिहूं पुर आई ॥६॥ ज्यौं ज्यौं रुकति रंग त्यौं सरसत कहा कहौं उतकंठा अधिकाई। भूषन खसत वदन श्रम जलकन नेह ललक लीयें सोई जाई ॥७॥ आगें ह्वै ह्वै लेति रोहिनीं दै आदर मंदिर वैठाई। देखत मुख जसुमति नन्दन कौ हरषति मनहुँ रंक निधि पाई ॥८॥ धनि धनि भादौं मास कृष्ण पछि धन्य अष्टमी तिथि वरदाई। री यह धन्य नछत्र रोहिनीं जिन जसुमति की आस पुजाई ॥९॥ गरजनि गहर गंभीर चहूँ दिस घुमड़ी स्याम घटा जु महाई। विहसि परी ब्रजराज इन्द्र कौं उन जल इन रतननि झरलाई ॥१०॥ उन सर सरिता भरे नीर वहु इन जाञ्चकता भूख मिटाई। उन करी हरित मही तल वेलीं इन त्रिभुवन जन हरषि वढ़ाई ॥११॥ उन तोरीं मेंड़ैं वारू कीं इननि प्रेम वल विधि जु वहाई। उन रोके जु पंथ पथिकनि के इननि प्रेम कौ पथ दरसाई ॥१२॥ जयति जयति ब्रज ईश पुत्र के जनमत संपति अधिक लुटाई। इक पहिरे पहिरावत एकनि आइ

आइ इक देत वधाई ।१३। पट भूषन वनितनि दिये जसुमति पुनि वहु मेवा गोद भराई । सव मिलि देति असीस महरि सुत जुग जुग जीवौ कुँवर कन्हाई ॥१४॥ वार वार मुख देखि कुँवर कौ ह्वै रही चक्रत कौंन घर जाई । वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि पलक धरन हूं गति विसराई ॥१५॥६५॥

राग धनाश्री दीप चंदी—वलि वलि आजु के दिन की । महरि देत मन भायौ फली असीस सु जिन जिनकी ॥१॥ आजु भयौ मंगल दिन सजनीं सुख भीज्यौ सव कोई । जसुमति उर भयौ रतन प्रगट ग्रह अँगना जग मग होई ॥२॥ दिन जु सौंहनौं सुत जु सौंहनौं नगर सौंहनौं एरी । गावति हैं मंगल जु सौंहनी वजति दुन्दुभी भेरी ॥३॥ धन्य धन्य भई राति सौंहनी जसुमति वाँछित पायौ । भयौ न है पुनि ह्वै है असो सुत सोभा हद जायौ ॥४॥ तन हरषैं मन हरषैं व्रज जन देवि मुनीश जु हरषैं । हरषति है अवनीं पद परसन फूल गगन ते वरषैं ॥५॥ हरषति है रविजा वढ़ि लहरिनु गऊनि हरषि भयौ भारी । मो सुत पालक होहि महरि कहि विधि तन गोद पसारी ॥६॥ भयौ गिरि देव दाहिनौं मोकौं यह दिन नैंन दिखायौ । पुत्र जनम सव कोऊ मो घर दैन वधाई आयौ ॥७॥ देहु रोहिनीं वांछित सवकौं सुकृत फल्यौ जु मेरौ । दै दै जाँहिं असीस लाल कौं कहैं होहु वड़ौ वडेरौ ॥८॥तरज्यौ दई सुनौं रानी जू तुम फल अगह गह्यौ है । यह आनन्द सिंधु विनु मित कौ किनहूं न पार लह्यौ है ॥९॥ याहू तें मंगल अति गरुवौ ह्वै है इहिं व्रज माहीं । जव तव सगुन होत सुभ असैं दिखियत जहाँ तहँ हीं ।१०। धन्य जनम मान्यों व्रज पति जू वंश

धरन भयौ जाकैं। त्रिषित होतु है सीतल जैसैं पीयैं धापि सुधा कैं ॥११॥ नंद भांन पुर सुख संपति कौं को सम उपमा दीजै वृन्दावन हित रूप पौरि वसि नितही देख्यौ कीजै ॥१२॥६६॥

राग जैत श्री—मंगल सव ब्रज सुंदरि गावैं जसुमति कूषि मल्हावैं जू। रचि रचि धरति साथिये कौरिनु झगरत रुचि उपजावैं जू ॥१॥ मांगति लागभाग वड़ भाँमिनि सकल सवासिनि आईं जू। देहु महरि विधि भयौ दाहिनौं लीकैं हम मन भाई जू ॥२॥ चिरुजीवौ मेरौ वीर घोष पति वंश उदौ प्रभु कीनौं जू। वड़ी वैस वड़ पुन्य जसोदा पुत्र जनम विधि दीनौं जू ॥३॥ लैहैं हय गय गोधन गनि गनि भूषन वसन अपारैं जू। दैहैं तव असीस मन भाई गोकुल राज कुँवारैं जू ॥४॥ सुनि वातैं ब्रज पति ब्रज रानी विनवत हैं कर जोरैं जू। देत सवै इच्छा परिपूरन आनन्द उदधि कलोरैं जू ॥५॥ हौं वलि हरि हित रूप जनम दिन ब्रज जन सुकृत फल्यौ है जू। वृन्दावन हित लोक ओक भुव आनंद उमगि चल्यौ है जू ॥६॥६७॥

राग चैती गौरी—साथियें(सवासिनि वरनन)—आजु लला कौ सोहिलौ॥ अहो भई गोप वंश अति ओप ॥लला कौ सोहिलौ ॥टेक॥ अहो वेटी सुनहु सुता परजन्य की। अहो वेटी सथिये धरहु वनाइ ॥लला०॥ अहो वेटी सुभ दिन विधना दाहिनौं। अहो वेटीं लीकनि लेहु गनाइ ॥लला०॥१॥ अहो भाभी हौं नित उदौ हो मनावती। अहो भाभी पूजत ही गिरिराज ॥ लला० ॥ अहो भाभी जिहिं सुकृत इहि फल फली अहो भाभी मो झगरन दिन आज लला० २ अहो भाभी

विप्रनि के पद वंदती । अहो भाभी मांगति ही पट ओटि ॥लला०॥अहो भाभी गोधन खरिकनि पूजती । अहो भाभी और जतन किये कोटि ॥लला०॥३॥ अहो भाभी पुत्र जनम घर वीर कैं। अहो भाभी जाचति ही दिन रैंन ॥लला०॥ अहो भाभी ब्रज पति पुन्य प्रताप तें । अहो भाभी यह दिन देख्यौ नैंन ॥लला०॥४॥ अहो वेटी कुल परजन्य सफल कियौ। अहो वेटी साधन वहु विधि साधि॥लला०॥ अहो वेटी विपुल वधावो वीर घर। अहो वेटी तुम कियौ प्रभु आराधि ॥ लला० ॥५॥ अहो वेटी पहिरि कुँवर के जनम दिन। अहो वेटी जो मन इच्छा होइ ॥लला०॥ अहो वेटी वीर तुम्हारौ देस पति । अहो वेटी वस्तु न दुर्ल्लभ कोइ ॥लला०॥६॥ अहो भाभी धनि तेरौ जनक उदार अति । अहो भाभी धनि तेरी पटुला माइ ॥लला०॥ अहो भाभी तुम मोहि अति सनमान सौं । अहो भाभी सब विधि देहु गनाइ ॥लला०॥७॥ अहो भाभी इक वरनीं दै धेंनु लखु । अहो भाभी इतनें ही पट आभरन ॥लला०॥ अहो भाभी वाटौंगी घर आपनैं। अहो भाभी तुम जस जग विस्तरन ॥लला०॥८॥ अहो भाभी ग्वाल सिंगारौ संग तिन। अहो भाभी वहु दासी मो लार ॥लला०॥ अहो भाभी रतन देहु वहु सकट भरि। अहो भाभी इतनौंई सुवरन भार ॥लला०॥९॥ अहो भाभी घोष नृपति परजन्य कैं। अहो भाभी जब जनम्यौ मो वीर ॥लला०॥ अहो भाभी देवमीढ़ नृप की सुता। अहो भाभी लिये है सकट सत चीर ॥लला०॥१०॥ अहो भाभी मो जननी वहु विधि दिये । अहो भाभी पट भूषन गो रतन ॥लला०॥ अहो भाभी कृष्ण जनम हौं चौगुनौं अहो भाभी लैहौं हठि

वहु जतन ॥लला०॥११॥ अहो वेटी इतनें कौं कहा मांगनौं। अहो वेटी ब्रजपति प्रवल प्रतापु ॥लला०॥ अहो वेटी खोलि वड़े नग कोष कौं। अहो वेटी लै मन भायौ आपु ॥लला०॥१२॥ अहो वेटी गोधन ब्रज मंडल छये। अहो वेटी इक वरनौं गनि लेहु ॥लला०॥ अहो वेटी कंचन दासी ग्वाल वहु। अहो वेटी लेहु असीसनि देहु ॥लला०॥१३॥ अहो भाभी जो माँग्यौ सो सो दियौ। अहो भाभी सुनहु असीस अनेक ॥लला०॥ अहो भाभी सव जन पालक स्याम घन। अहो भाभी होहु कुल मंडन एक ॥लला०॥१४॥ अहो भाभी इहिं सम जो अव विधि रचै। अहो भाभी वड़े हो सजन घर जोर ॥लला०॥ अहो भाभी त्यौंही सवनि मनाइ हौं। अहो भाभी लै कर अंचल छोर ॥लला०॥१५॥ अहो भाभी स्याम सुभग हित रूप के। अहो भाभी चिंतत सुखद उपाइ ॥लला०॥ अहो भाभी वेगि दृगनि भरि देखि हौं। अहो भाभी सत्य कहौं समुझाइ ॥लला०॥१६॥ अहो भाभी तव मन भायौ मांगि हौं। अहो भाभी हौं परकारज नीक ॥लला०॥ अहो भाभी वृन्दावन हित दुहुँनि की। अहो भाभी दासि देहु लिखि लीक ॥लला कौ सोहिलौ॥१७॥६८॥

राग गौरी, टेर—महरि सभागिनि जायौ लोक मणि त्रिभुवन मोहन रूप। सव मन इच्छा हो पुजई दान दै या ब्रज कें वड़ भूप ॥१॥ गावति आवति हो चहुँ दिसि गोपिका सव उर प्रेम उमाह। उदधि नंद ग्रह हो छवि सलिता मनौं आई उमगि प्रवाह ॥२॥ भौंर परत हैं हो रुकि रुकि भीर मनु ढहत अमंगल कूल। धारा प्रेम जु हो छिन छिन वढ़नि मैं मिलन जु मंगल मूल ॥३॥ गोकुल गहर जु हो अति आनंद कौ क्रीडत

हैं सब कोइ। नंद भवन में हो अस रचना रची जो विधि शृष्टि न होइ ॥४॥ देति बैठना हो रानी रोहिनीं सादर भेटनि लेति। वदन उघारि जु हो देखति लाल कौ ते हौंइ प्रेम अचेत ॥५॥ वैस बड़ी मैं हो विधि ढौटा दयौ भयौ सुकृत अनुकूल। गोकुल पति घर हो दासी दास जे तिन उर मेटी सूल॥६॥सोभा निकर जु हो सबही अंग अंग मुख लखि वारि मयंक। दृष्टि लगौ जिनि हो जसुमति अति लड़े यह जिय आवति संक ॥७॥देहु असीस जु हो जननी गह गही दई सुनें ज्यौं कांन। यह ब्रज पालक हो बालक हूजियौ ब्रज पति कौं सुख दांन ॥८॥ अतिमै गह गड़ हो माच्यौ प्रेम कौ दधि कादौं धांम। आविर्भाव जु हो ईशनि ईश कौ स्याम परम अभिरांम ॥६॥ अवनीं मंगल हो मंगल लोक सुर अति मंगल गौलोक। रसिकनि मंगल हो रस बारी फली मिटि गयौ नीरस सोक ॥१४॥ गिरि द्रुम रविजा हो कूप तडाग जे उमगे मंगल मानि। खरिकनि खेलैं हो गाइ बाछरु पालक प्रगट्यौ जानि ॥११॥ ब्रज धरु सगुन जु हो पुनि सुभ होत है मंगल आगम और। वृन्दावन हित हो रूप उदौ निकर प्रगटैगी तन गौर ॥१२॥६६॥

राग चेती गौरी (जसोदा जू कौ दस मास गर्भ वरनन तथा दाई)—

ब्रज वनितनि मांण गोपी। हरि उर धरि ओपी। सूल हिय लोपी। कुल थूनी हैं रोपी। अहो प्रथम मास आरंभ सुलाग्यौ सुकृत फल ॥१॥ निगम नेति नेति गायौ। आगम हूं बतायौ। अंत नहीं पायौ। गर्भ सोई आयौ। अहो दुतिय मास ब्रज मंगल अमित उदै भयौ॥२॥ ग्यानी खोजत ग्यानैं। शिव धरैं जाकौ ध्यानैं॥ विरंचि हू के प्रानैं। सुक सारद वखानैं अहो

सो ब्रज रानी की कूषि मास तीजौ लग्यौ ॥३॥ चौथैं मास अंग अंगै । छवि वढ़ी है अभंगै । सखी जन संगै । भरीं रस रंगै। अहो प्राची दिस ज्यों चंद यौं कृष्ण उदर धरे ॥४॥ कहति सखी अभिरामिनि । सुनि मेरी स्वामिनि । तुव वर भाँमिनि । कहा दिन जामिनि । अहो पंचयें मास की है वरिया अछन पग धारियै ॥५॥ छठयें मास अंग रवनी। वदन राजै कमनीं । कंचुकी कसि वनी । कूखि सुख श्रवनीं । अहो अमल कनक मनु छिप्यौ स्याम नग जग मगै ॥६॥ सतयें मास मन सरसै । अंग छवि वरसै । मुकर उर दरसै । अवनि नहीं परसै । अहो राजै सदन ब्रजरानी सखी सेवा करैं ॥७॥ अठयें मास ब्रज तरुनीं । रमा मन हरनीं । वूझति नंद घरनीं । रानी मंगल करनीं । अहो वहुत दिननि की मन साधि सु कवहिं पुजाइ हौं ॥८॥ नवयें मास गोपी आईं । सव वोलि पठाईं । वहु विधि पहिराईं । ते देति वधाईं । अहो हम मन भायौ होहु विनय प्रभु सौं करीं ॥९॥ दसयों मास अभिरामैं । गिनत छिन जामैं । सव ब्रज की भांमैं । जसुमति पौढी धांमैं । अहो भादौं मास तिथि आठैं कृष्ण पछ अरध निस ॥१०॥ आई दाई भवन में । लाल जव जनमैं। धनि महरि त्रियन मैं । मुदित गोपीं मन में । अहो स्याम अंग अभिराम कुँवर कौतिक जन्यौं ॥११॥ दाई लला जू की लौंनी । सव गुननि सलौंनीं । धरि रही मुख मौंनी । असी भई हू न हौंनीं । अहो भाग भरी सुख भरी ललन मुख निरषहीं ॥१२॥ वोली सो तिहिं काला । सुनौं ब्रज वाला । जसुमति जन्यौं लाला । गावौ गीत रसाला अहो हौं आपु मन भायौ तव वदन दिखाइ हौं

१३.. अहो अहो जसुमति रानी . सुनत मुसिकानी . कहति मृदु वानी। वोलौ सखीय सियानी। अहो देहु मेरौ उर हार रतन खपरा भरौ॥१४॥वड़े गोप की जाई। नंदिनी वुलाई। निकट सो आई। रानी कहि समुझाई। अहो वेटी कोरिनु रोपौ सथिये लेहु मन भाँवतौ ॥१५॥ अहो मेरी भाभी उदारा। तेरौ वढो परिवारा। जियौ प्रान अधारा। लैंहौं वहु परिकारा। अहो मेरौ जीवहु घोष पति वीर सुता घर वँधावनौं ॥१६॥ नंद भवन में वुलाये। द्विज वर लै आये। वेद पढ़वाये। वहु दान कराये। अहो जनम पत्र द्विज लिखत प्रेम पूरित भये ॥१७॥ गरजि गरजि घन आवैं। सुर दुन्दुभी वजावैं। पहुप वरषावैं। देव नारी गावैं। अहो अखिल लोक वृज ईश सुजस पुरित भयौ ॥१८॥ दाई विदा जब कीनी। असीस तिन दीनीं। हियें रस भीनीं। भई रूप लौ लीनीं। अहो दाई रीझि लला पै कियौ सर्वसु वारनैं ॥१९॥ परी रहौं दरवारैं। सुनि नृपति उदारैं। देखौ प्रान अधारैं। पुनि पुनि यौं पुकारैं। अहो मो दृग भये हैं चकोर चंद विनु क्यौं जियैं ॥२०॥ रूप वसौ मेरे नैंना। नाम रटौं वैंना। आन गति है नां। यहै दान दैना। अहो श्री हरिवंश धरन ब्रज मंडन प्रगटियौ ॥२१॥ वास मेरौ वरसानैं। विदित जग जानैं। मेरे जजमानैं। गोप वृषभानैं। अहो तिन घर ह्वै है कन्या तव जैहौं तिलक करि ॥२२॥ उदौ दुहूँ घर जाँचौं। हित रूप गुन राचौं। भजन धन साँचौं। मगन ह्वै तव नाँचौं। अहो वृन्दावन हित गावैं दुहुँ कुल सुजस नित २३॥१००॥

(दाई वरनन) राग चैती गौरी—पौढी भवन नंद घरनीं। जगत जस करनीं। कृष्ण उर धरनीं। भाग्य वड़ वरनीं। अहो सुपनें अचिरज देखि सखीय जगाइयौ ॥१॥ सुनि री भट्ट हित कारी। कहौं धौं कहा री। इहिं औसर वारी। अचंभौ महारी। अहो पुत्र जनम की है वेर सु गहरु न कीजिये ॥२॥ इहिं छिन सुपनौं आयौ। मोहन सुत जायौ। हँसि कंठ लगायौ। जगि तोहि जगायौ। अहो यह सुपनौं सखि साँचौ उठि आलस छाडि कें ॥३॥ भयौ री कुलाहल भारी। जगे नर नारी। रैंनि अँधियारी। दामिनि कौंधै न्यारी। अहो ऊँचें चढ़ि चढ़ि टेरैं तौ दाई वुलाइयौ ॥४॥ दाई मंदिर आई। सुकूषि सिराई। भई मन भाई। भवन छवि छाई। अहो मिलि दस पाँच सहेलिनु मंगल गाइयौ ॥५॥ मनु छवि तनु धरि आई। लला जू की दाई। भरी चतुराई। तियनि मन भाई। अहो को वरनैं ताके भाग्य प्रथम दरसन कीयौ ॥६॥ तिहिं छिन उग्यौ है चंदा। प्रगटे नंद नंदा। सकल सुख कंदा। तिमिर भयौ मंदा। अहो निरखि वदन छवि सदन सवै विस्मय भई ॥७॥ दृष्टि न थिरु ठहराई। चकचौंधी छाई। अंगनि की लुनाई॥ सोभा हूँ लज्याई। अहो त्रिभुवन उपमा कौंन सुतिहिं मम दीजियै ॥८॥ रूप लाल कौ देखैं। जनम सुभ लेखैं। सुभाग्य विशेषै। लगत न निमेषैं। अहो रही है अपुन पौं हारि रूप चहलैं परीं ॥९॥ सोवत नंद जगाये। आतुर उठि धाये। सु विप्र वुलाये। नक्षत्र सुधाये। अहो जनम पत्र लिखवाइ दान अगनित दये ॥१०॥ वोलत द्विज शुभ वानीं। सुनौ नंद रानी पुनीत कहानी पुत्र सुख दानी अहो अखिल लोक

कौ ईश सु तौ तुम उर धर्‍यौ ।११ वंदी विरद उचारैं खरे दरवारैं । गुननि विस्तारैं । नाम लै पुकारैं । अहो धनि गोकुल के ईश कीरति जग जग मगै ॥१२॥ नंद राइ जू की पौरी । सवै उठि दौरी । नव गोप किशोरी । नवल रस वोरी । अहो विधि तन गोद पसारि महरि पद वंदहीं ॥१३॥ जसुमति नंद वुलाये । पुत्र ढिंग आये । लाल अन्हवाये । परम सचु पाये । अहो धूप दीप आरतौ सु धर्‍यौ है संजोइ कैं ॥१४॥ मुदित जसोमति मैया । पुनि लेत वलैया । जियौ मेरौ छैया । यह कुँवर कन्हैया । अहो लगति विप्र कैं पाइ महरि वड़ भागिनी ॥१५॥ रतननि खपरा भरायौ । गनि नेग धरायौ । दियौ मन भायौ । अभिलाष पुजायौ । अहो दाई हेति असीस विदा ह्वै घर चली ॥१६॥ चिरुजीयौ नंद दुलारौ । यह प्रान पियारौ । अरी तेरौ वारौ । तुव भवन उज्यारौ । अहो ब्रज जन मुदित चकोर उदित कुल चंद्रमा ॥१७॥ जै जै धुनि परकासी । कहत नभ वासी । सु श्रविन सुधा सी । धन्य बृजवासी । अहो धन्य भयानौं देस सदा मंगल जहाँ ॥१८॥ नंद सदन सुख जैसौ । सुन्यौं न देख्यौ तैसौ । पावै जो अज वैसौ । कहि न सकै लैसौ । अहो श्री हरिवंश कृपा वल लघु मति कछू कह्यौ ॥१६॥ कृष्ण जनम जस वरनैं । हित रूप मन हरनैं । जग मंगल करनैं । देहु पद सरनैं । अहो वृन्दावन हित रूप पावै वधाई वास वन ॥२०॥१०१॥

राग चैती गौरी (खिचरी वरनन)—हँसि ब्रजरानीं वोली । वचन निरमोली । ग्रंथि हिय खोली । विधि तन करि ओली । अहो खिचरी देहु ब्रजराज लला कैं सोहिलैं १ सुनत नंद

मुसिकाये वचन मन भाये निकट चलि आये वड़ भाग्य मनाये । अहो किहिं विधि खिचरी चहियै कहौ समुझाइ कैं ॥२॥ दाख चिरौंजी मिलामें । पिस्ता वादामें । कोपरा तामें । मेवा सव जामें । अहो सचे हैं तुम्हारें भवन हमें गनि दीजियै । ॥३॥ व्रज पति सव विधि करत । हियैं सुख भरत । प्रेम अरवरत । रंग रस ढरत । अहो मेवा सकल मगाइ घोष रानीं दियौ ॥४॥ अहो अहो गोकुल राइ । सुनौं चित लाइ । वरेबसी वुलाइ । तुम्हारी माइ । अहो चरुवा आनि चढावैं तौ भाग्य उदै भयौ ॥५॥ भाग्य भरी सो आई । जवहि सुधि पाई । सव देति वधाई । मंगल धुनि छाई । अहो जननीं नंद व्रजेश प्रेम पूरित भई ॥६॥ आनंद हिय न समात । लाल ढ़िग जात । निरखि छवि गात । कहति यह वात। अहो धन्य जसुमति तेरी कूषि भुवन भूषन जन्यौ ॥७॥ चरुवा चीति चढ़ायौ । मुनि वेद पढ़ायौ । मन मोद वढ़ायौ । दान झर लायौ । अहो पहिरत कर मणि कंकन पुत्र वधू दये ॥८॥ विप्र वधुनि धन देत । असीसनि लेत । जनम सुत हेत । दया कौ निकेत । अहो दादी मोहन लाल सुजस मूरति मनौं ॥९॥ खिचरी चरुवा गान । महरि सुनि कांन । देति सनमान । यहै चाहौं दान । अहो वृन्दावन हित रूप स्याम दृग देखिवौ ॥१०॥ १०२॥

राग चैती गौरी—गोप नृपति घर सोहिलौ । अहो आज सफल फली व्रजरानीं ॥ नृपति घर ०॥टेक॥ जिहिं छिन व्रजेश कुँवार जनम्यौं सुभ महूरत पाइ । भुव ओक लोक अनंत वाजे वाजत अपनैं चाइ ॥ नृपति घर०॥१॥ व्रज मही सुख सरिता वही मति रही अचिरज पेखि गोविंद गोकुल गोप

नंदन चलि सखि नैननि देखि ॥२॥ इक भवन गवनी रूप रवनी चलति आतुर चाल। इक लहति लोचन लाभ पहिलैं निरखति मुख नन्द लाल ॥३॥ अजिर वनिता वृन्द राजैं रचति मंगल साज । ब्रजराज अनुजा लाग अपनीं मांगति है हठि आज ॥४॥ मेरी भाग भरी सुहाग भाभी घोष ईश उदार । लैऊँगी मन भाँवतौ कियौ मो वांछित करतार ॥५॥ सुनि मुदित जसुमति विधि मनावति लगति पुनि पुनि पाइ । हरि जनक जननीं मान वर्द्धत पहिरावत चित चाइ ॥६॥ पढ़त वंदी विरद पौरी विप्र उचरत वेद । गोप हेरी देत नाचत गोपी सुगतिन भेद ॥७॥ इक छकीं जसुमति भाग्य महिमा देखि परम अभूत। इक लेति हरखि वलाइ कहि यौं महरि पुन्य फल पूत ॥८॥ इक वैठि खरचति चाइ भाइनु आपनौ धन खोलि । इक देति सकल सवासिनिनु कौं पट आभूषन वोलि ॥९॥ वलि जाऊँ हरि हित रूप जनमत असुभ डारे चूरि । वृन्दावन हित सकल ब्रज तैं गये हैं सवै दुख दूरि ॥१०॥१०३॥

राग गौरी—दोहा टेक वंध हेरो की तरह में (गोपी गोप ग्वारनि कौ निर्त्त)

दिन सौहनौं दिन सौंहनौ भैया ॥टेक॥ आज भयौ दिन सोंहनौं हो पसर जाहु जिनि ग्वाल । लै चलौ गाइ सिंगार कैं रानी जसुमति जायौ लाल ॥ रे भैया दिन सोंहनौं, दिन सोंहनौं ॥१॥ जुरि मिलि ग्वाल सवै गये हो कहत सुनौं ब्रज भूप । दान देहु उठि द्विजनि कौं जनम्यौं कुँवर अनूप ॥ रे भैया दिन०॥२॥ मागद चारन जस पढ़े हो ढाढी वरनतु वंश । प्रगट्यौ सुंदर साँवरौ देव करत परशंस ॥रे भैया०॥३॥ सुर नर मुनि नाचत सवै हो उदित घोष लखि चंद गोप छवीलेनु संग लियें नाचत

वावा नन्द । रे भैया० ॥४॥ अग्रज अनुजनि मध्य में हो विहसत गोकुल राइ । कंचन गिरि सौ तन लसै हलै थौंदा सहज सुभाइ ॥रे भैया०॥५॥ हरी दूव सिर पर लसै हो रोरी तिलक जु भाल । कृष्ण जनक मुरि मुरि नचै उर रुरति जलज मणि माल ॥रे भैया०॥६॥ वाहु ढुरै ग्रीवा मुरै हो सजल प्रेम सौं नैंन । मनहुँ कृपा मूरति धरैं गद गद निसरत वैंन ॥रे भैया०॥७॥ पीत उपरना राजही हो दीरघ तन कमनीय । सुकृत पुंज व्रजपति लह्यौ धन्य जनम अवनीय ॥रे भय्या०॥८॥ आंनन अति ही डह डह्यौ हो पुत्र जनम उत्साह । भवन भंडार लुटावतें मन गोकुल पति जु उमाह ॥रे भय्या०॥९॥ मणि मंदिर अति जग मगैं हो जहाँ धुजा फहराति । कृष्ण जनम छवि मनु वढ़ी लोकनि जीतनि जाति ॥रे भय्या०॥१०॥ गौर वरन सोभा धरन हो सव गोपनि सिरमौर । प्रभु सुख सींव जहाँ रची उपमा कौ नहि ठौर ॥रे भय्या०॥११॥ नौ जु नंद नौ भांन मिलि हो अरु सव गोप समाज । हरद दही सौं तन सनैं भूँमक निरतत आज ॥रे भैया०॥१२॥ नांचत गोपीं भवन में हो गोप अजिर के माँह । गावत करतल पटकि कैं झुकि लागत गरवाँह ॥रे भैया०॥ ॥१३॥ सिर टोपीं कटि काछिनी हो तनियां परसत पाइ । धरैं पिछौरी लकुट पर नचत ग्वाल समुदाइ ॥रे भैया०॥१४॥ माखन के लौंदा चलैं हो दधि की होति उलैंड । सिंधु वढ़ि चल्यौ प्रेम कौ नेंम वहाई मैंड ॥रे भैया०॥१५॥ गाइ छवाई गोइरें हो चीते जिनके अंग । मनौं सरस्वती रवि सुता चक- फेर वही मनु गंग ॥रे भय्या०॥१६॥ जरी वितान जु झलमलैं हो मोती झालरि कोर । कृष्ण जनम मनु मोद भरि हस्यौ

गगन छवि जोर ॥रे मैया०। १७॥ सुर नर शिव मुनि सेप। विधि हो खोजत जाकी वाट। सो जसुमति गोदी धरें कोधौं सुकृत लिलाट ॥रे मैया०॥१८॥ कहाँ लगि वरनि सुनाइये हो मंगल ब्रज पति धाम। वृन्दावन हित रूप जहाँ पय पीवन जनम्यौ स्याम ॥रे मैया दिन सोहनौं ॥१६॥१०४॥

राग गोरी—चलौ री वेगि भलौ दिन माई। गोकुल नृप घर वजति वधाई ॥टेक॥ गहरु न करु री नागरि नारि। मन दै मेरौ वचन विचारि॥ वहुत दिननि की यह जिय आस। नंद रानी कुल कियौ है प्रकास ॥१॥ वाजे वाजत सुनि धुनि कान। जहाँ तहाँ छाये गगन विमान॥ वरषत कुशुम निसान वजाइ। रह्यौ कुलाहल सव ब्रज छाइ ॥२॥ गोप नारि यौं करति विचार। जुरि मिलि चली हैं नंद दरवार॥ गावति गीत गईं निज भौंन। सो सोभा वरनैं कवि कौंन ॥३॥ दुलरावति जसुमति की कूषि। कृष्ण जनम भरैं प्रेम पियूष॥ अति मन मगन भईं ब्रज वाल। रोपति सथिये मणि गण माल ॥४॥ पूरित चौक वितान तनाइ। कनक कलश अरु कदलि धराइ॥ छिरकति दधि मधु चित के चाइ। दीपनि अवली रचित वनाइ ॥५॥ सुंदर स्याम दृगनि भरि देखि। जीवन जनम सफल करि लेखि॥ जसुमति कें झुकि लागति पाइ। नैंननि आनंद नीर चुचाइ ॥६॥ महा महोत्सव ब्रज पति पौरि। सजन वंधु सुनि आये दौरि॥ पहिराये करि अति सनमान। भुज भरि मिले नन्द वृषभांन ॥७॥ तन भये पुलकि सजल भये नैंन। मुख निसरत नाहिंन कछु वैंन॥ देखि देखि मुनि देव महेश। कहत धन्य ये गोप नरेश ॥८॥ महरि जसोदा गोद पसारि कीरति की कीनी

मनुहारि गूढ वचन कहि तन मुसिक्याइ । मिलति अंक भरि कंठ लगाइ ॥९॥ आनंद वढ्यौ सु कह्यौ न जाई । वरनत मेरी मति अरुझाइ ॥ न्यौछावर किये रतन भण्डार । दिये जाचकनि नंद उदार ॥१०॥ वंदौं गोकुल ईश कुँवार । भक्तनि हित लीनौं अवतार ॥ श्री हित रूप चरित्र अपार । वृन्दावन हित श्रुति कौ सार ॥११॥१०५॥

राग गौरी—वाजत वधाई आज नन्द जु के धाम री । प्रगट भये हरि सुंदर स्याम री ॥१॥ अष्टमी अँधेरी भादौं आधी रात री । रोहिनीं नछत्र आये घन ऊनें पाति री ॥२॥ गाइ उठीं वनिता सिहाइ उठी मात री । जसुमति भागिनु की कहा कहौं वात री ॥३॥ ताही छिन परे हैं निसाननि घाव री । देखत लला कौ रूप भई प्रेम वावरी ॥४॥ दाई हूँ रही है चौंधि पायौ फल नैंन री । झूमत सी घूँमत सी कहै मृदु वैंन री ॥५॥ रूप अवधि ढोटा जायौ धनि भाग री । जाकौ मुख देखैं जग वाढ़ै अनुराग री ॥६॥ गोकुल की मणि मुनि करहिं प्रसंस री । सुकृत फल्यौ है गोपनि कौ वंश री ॥७॥ सुनि ब्रजरानीं मन मुदित अपार री । रीझि कैं दयौ है ताहि आपु हिय हार री ॥८॥ गावति वधाये वाला लै लै कुल नाम री । घर घर मंगल नंदीश्वर ग्राम री ॥९॥ नाँचति हैं गोपीं औरु गोपनि समूह री । गगन विमान छाये परम कौतूह री ॥१०॥ माची दधि कादौं रही तन न सम्हार री । भवन भवन वहे गोरस के खार री ॥११॥ गाइनु सिंगार आये हेरी देत ग्वार री । वसन भूषन दीनें नन्द उदार री ॥१२॥ देत असीसें गोपीं भरीं हैं हुलास री । जुग जुग फल्यौ ब्रजरानी की आस री ॥१३॥ पुनि पुनि वंदत हैं नन्द जू के

पाइ री पुत्र जनम देखै कौतिक न अघाइ री १४। वृन्दावन हित भयौ नन्द जू कें पूत री। लोकनि आनंद वाढ्यौ परम अभूत री ॥१५॥१०६॥

राग गौरी तथा झझौटी—मेरी सजनी आजु वधाई वाजै। ऊग्यौ सुख सोभा कौ विरवा जसुमति अंक विराजै ॥१॥ ह्वै जु रह्यौ गह गड मंदिर मैं कहत कह्यौ नहिं जाई। परम अलौकिक कौतिक देख्यौ तोहि सुनावन आई ॥२॥ वरनौं कहा भट्टू री कीनीं महरि कूषि वलिहारी। नैंन धरे कौ फल जो चहियै तौ उठि चलि इहिं वारी ॥३॥ आये सकल गोप महारानैं नन्द जुहारी दीनीं। गोपी सकल घोष की सिमिटी भीर भई रँग भीनी ॥४॥ ढोटा जन्यौं किधौं कछु चेटक मोपै कहत न आवै। जो कोऊ जात महर के मंदिर फिरि अैवौ नहिं भावै ॥५॥ तनक वदन की वनक छवीली लोचन चपकि लगै री। जद्यपि हौं तौ लगि ह्यां आई रहे ह्वां प्रान खगे री ॥६॥ स्याम पुंज कौवीज उदै भयौ कहा कहौं अंग निकाई। जनमत रौर प्रेम की ब्रज में पुनि नित वढ़हि सवाई ॥७॥ वड़े वड़े गोप महा मुनि ग्यानी नाचत हैं सव कोई। अैसो मंगल इहिं ब्रज अवनीं भयौ शृष्टि सुख भोई ॥८॥ कौंन सुकृत ब्रजरानी वृज पति कीनौ दरसि पर्‌यौ री। सुत कैं जनम लग्यौ आनन्द झर सव जग सुखित कर्‌यौ री ॥९॥ कै जानैं ये नैंन भट्टू जिन जसुमति जायौ देख्यौ। वृन्दावन हित रूप अवधि फल भूर भाग मैं लेख्यौ ॥१०॥१०७॥

(मंगल मुखी वरनन) राग गौरी—लला पर वारनैं हौं तौ वारनैं लला पर ।टेक होत लला पर वारनैं हो मन क्रम

वचन सुनाइ नाचत हैं मङ्गल मुखी भीर न भवन समाइ ॥री लला०॥१॥ सुत जायौ मन मोहन हो सब ब्रज दीनी ओप । छगन मगनुवां चिरुजिवौ जस बढ्यौ कुल गोप ॥री लला०॥२॥ फैंटा झंगा इजार रचि हो बनैं मनोहर भेष। पहपट रङ्ग मचावहीं महरि भाग वड़ देख ॥री लला०॥३॥ नहिं वनिता नहिं पुरुष तन हो रवत अनौखे ख्याल । ह्वै जु रह्यौ गह गड़ वड़ौ हँसत गोपिका ग्वाल ॥री लला०॥४॥ जच्चा कूषि मल्हावहीं हो जनम सोहिलौ गाइ । छला अँगूठी आरसीं वनिता देति वुलाइ ॥री लला०॥५॥ वाजे वाजत गह गहे हो होत कुलाहल धाम । लटकि लटकि मंगल मुखी दुलरावत सुंदर स्याम ॥री लला०॥६॥ धन वरष्यौ रनवास मैं हो भूषन वसन अपार । जसुमति रीझि इतौ दियौ सिमिटे कैऊ भार ॥री लला०॥७॥ इहिं कौतिक व्रज जन छके हो कृष्ण जनम लहि मोद । पुनि पुनि देति असीस वहु विधि तन ओटत गोद ॥री लला०॥८॥ इहिं गोकुल सुख सरसनौं हो रूप वरषनौं लाल । वृन्दावन हित नित वढ़ौ होहु निपुन गोपाल ॥री लला०॥९॥१०८॥

[मालिनि वरनन] राग गौरी—री मलिनियाँ आई री वनि आई री मलिनियाँ ॥टेक॥ वनि ठनि आई मलिनियाँ हो लीयें साज समाज । रति रंभा जिहिं रूप लखि पग लागति गई लाज ॥री मलिनियाँ०॥१॥ देति वधाई महरि कौं हो फूली माति न अंग । गावति वैठि वधावनैं वरषावति रस रंग ॥री मलिनियाँ०॥२॥ वंदन माला वाँधई हो परम चतुर चित लाइ । मंदिर अस रचना रची विधि देखत सकुचाइ

। री मलिनियाँ० ३ झगरति अपनी लीक कौ हो मन अभिलाषा और । महरि वोलि भीतर लई जग जीवन जिहिं ठौर ॥री मलिनियाँ०॥४॥ देखि लाल मुख चाँदनौं हो ह्वै गये नैंन चकोर । चकित थकित गति मति भई परी प्रेम झक झोर ॥री मलिनियाँ०॥५॥ पहिरावति परिवार जुत हो जसुमति भरि अनुराग । रतननि सौं डाली भरी वरनौं कहा वड़ भाग ॥री मलिनियाँ०॥६॥ अंचल ओटि असीम दै हो लगति महरि कें पाइ । लेति कुँवर के वारनैं प्रेम सिंधु में न्हाइ ॥री मलिनियाँ०॥७॥ फूलनि पलटैं अगह फल हो पायौ परम अनूप । यह महिमा लखि गोप कुल वृन्दावन हित रूप ॥री मलिनियाँ आई री वनि आई ॥८॥१०६॥

राग गोधनी गौरी—आजु वजति वधाई नंद घर मदिलरा धुनि सुनियति कान री । सखी घट घूँमत थिरचर सवै मिलि वधू करति अस गान री ॥आजु०॥१॥ सखी अभिलाषा दिन वहुत की विधना करी पूरन देखि री । सखी, वंश वढ्यौ व्रज-राज कौ व्रजरानी सुकृत विशेषि री ॥२॥ सखी पीत धुजा मंदिर सिखिर सौं तौ ऐसी विधि फहराति री । सखी, नंद उदौ लखि छबि सुता मुरि मुरि लेति वलाइ री ॥३॥ सखी, अंवुद उमड्यौ प्रेम कौ अरु जहाँ तहाँ परति उलैंड री । सखी, कुल वनिता नाँचति सवै गईं टूटि लाज की मैंड री ॥४॥ सखी, अरवराति अति चलनि कौं करौं वारंवार विचार री । सखी, विवस कियौ मुहि प्रेम नैं तन वनत नहीं सिंगार री ॥५॥ सखि, लै चलि मंदिर महरि कें हौं तौ दैंऊ वधाई जाइ री । सखी दृग सीतल तव होंहिगे सुत जसुमति वदन दिखाइ री

॥६॥ सखी, जूथनि वनिता जाति है हौं तौ घर वैठी अकु-लाति री । सखी, पहिलैं पहुँचौं कौन विधि सुख दहलत हैं सब गात री ॥७॥ वाहि चाह नवेली लै गई गोकुल पति धाम सुभाइ री । वलि वृन्दावन हित रूप निधि दृग क्रीडत मीन अघाइ री ॥८॥११०॥

राग परज-मङ्गल छंद—रूप जलद कौ री हेली धुरवा ऊनयौ । व्यौंम मनोहर री हेली नन्द भवन भयौ ॥ व्यौंम नन्द निकेत वरषत आजु परमानन्द है । चहूँ ओर मारुत प्रेम वाढ्यौ प्रवल उरनि अमंद है ॥ केकी कुलाहल सूत मागद गरज वहु वाजे मनौं । जन घोष चात्रक मुदित अति हिय लाग सुख कहाँ लौं भनौं ॥१॥ सुचिर अलंकृत री हेली ब्रज तरुनी भई । इंदु वधू सी री हेली मिलि मन्दिर गई ॥ गई मन्दिर गोप वनिता दामिनी दुति देह की । नद नदी सागर मिलति उपमां आजु ब्रजपति ग्रेह की ॥ रोमांचि मानौं महीरुह नर नारि ब्रज एकत भये । वरषा अभूत विलोकि व्यौंम विमान कृष्ण जनम छये ॥२॥ प्रीति अलौकिक री हेली सव हिय देखियै । गगन महीतल री हेली सगुन विशेषियै ॥ विशेषियैं सुभ सगुन दिस दिस संपदा वरनौं कहा । आगमन गोकुल चंद मंगल निकर ब्रज प्रगटे महा ॥ गोप सभा वनाइ बैठे नन्द अति सोभित भए । मुनि देव दुर्ल्लभ सुधन पायौ विविधि दान द्विजनि दये ॥३॥ मुरि मुरि गोपीं री हेली देति असीस हित । विधि तन गोदी री हेली ओटति जियहु नित ॥ नित जियहु देत असीस जसुमति वंदि पद सुख मैं भिलीं । गावति वधाये विविधि प्रीति प्रेम सव सादर मिलीं ॥ वृन्दावन हित रूप

निरवधि लाभ लाभ लोचन पाइयौ। ब्रज ईस सुत जनमत सिमिटि सब घोष कौतिक आइयौ ॥४॥१११॥

राग परज मंगल छन्द—आनन्द वरषत री हेली मन्दिर महर कैं। क्रीडत ब्रज जन री हेली सुख निधि गहर कैं ॥ गहर कैं सुख सिन्धु क्रीड़त वढ़तु छिन छिन चावरौ। भयौ प्रगट जसुमति कूषि कमनी दृगनि कौ उरझावरौ ॥ सुत जनम कै चेटक सखी कियौ प्रेम नें मनु घावरौ। घर घर परम कौतूह ब्रज में निरखि ब्रज पति छावरौ ॥१॥ यह अनहौंतौ री हेली लाभ दई दयौ। वैस वड़ी में री हेली वंश उदै भयौ ॥ भयौ वंश उदोत वानी सत्य कीरति की फली। होहु विधि:अनुकूल उनकी कूषि अव जनमौं लली ॥ इत उत वढ़ौ नित नयौ मङ्गल सवहि भाग्य विशेषि हैं। कौतिकनु कौ उद्भव महा सुकृती दृगनि भरि देखि हैं ॥२॥ सव दृग फूलैं री हेली सव मन हरषिहीं। सुदिन सोहिलौ री हेली सब धन वरषिहीं॥ वरषिहीं धन प्रेम पन गोकुल सुघमच्यौ रंग है। इहिं लाल वदन विलोकि सजनी होति गति मति पंग है ॥ झूमरिनु दै दै गोप गोपी नचत दधि कादौं मची। अनुराग चहलैं प्रेम दहलैं महा मङ्गल विधि रची ॥३॥ रङ्ग मतगुनैं री हेली भई हिय पट चढ़नि। नेह लपेटनि री हेली भई सोभा वढ़नि ॥ भई सोभा वढ़नि अवनीं व्योंम दिस जग मग महा। नर नारि मन उत्साह जेतौ कहन समरथ विधि कहा ॥ पूजी सकल अभिलाष सापा-नन्द कुल जु हरी भई। वृन्दावन हित रूप सरसानि आजु हौं वलि वलि गई ४ ११२

राग बिहागरौ—आजु ब्रज मङ्गल ठावैं ठाँम अहा कहा गोकुल रङ्ग रली है। मैं जानी रानी जसुमति की सुकृत कृषि फली है ॥ अहा कहा गोकुल० ॥टेक॥१॥ बाजति गहकि दुन्दुभी धुनि सुनि आतुर गति सहनाई। अतिसै भाग भलौ दिन सजनी ब्रजपति सदन बधाई ॥२॥ हुलसि चलीं भांमिनि अभिरामिनि नौतन साजि सिंगारा। रचि रचि सरस सोहिले गावति आवति रूप उदारा ॥३॥ रवकति चरन धरति कटि लचकति वीथिनु बनिता धावैं। मनहुँ रूप धारा धर बरषत कृष्ण जनम यौं आवैं ॥४॥ फरहरात अंबर मारुत बस श्रम कन बदन भले हैं। मानहुँ कोटिक चंद धुजा धरि अमृत श्रवित चले हैं ॥५॥ लोचन चपल दरस उतकंठा सहत न पलक धरन कौं। अरबरात मनु मीन चढ़े ससि हरि छबि सिंधु तरन कौं ॥६॥ गहरें नाद किंकिनीं बाजत यौं आवति मन माहैं। मानौं प्रान खिझत चरननि सौं आतुर चलनि उमाहैं ॥७॥ सींचीं भलीं गलीं सौरभ जल बिबिधि बितान तनैं हैं। मानौं आजु मही ब्रज मंडल भाग जागि उफनैं हैं ॥८॥ मङ्गल मूरति वंत बिराजत रचनां रुचिर सँवारी। जित तित अगनित रूप रमा धरि वैभव ब्रज बिस्तारी ॥९॥ परसे जाइ चरन जसुमति के गहकि बधाई दीनी। देत असीस ईश चिरुजीवौ हियें प्रेम सुख भीनीं ॥१०॥ खेलति हरद दही मिलि मेलति मुरि मुरि नाचन लागीं। कृष्ण जनम दिन मङ्गल क्रीड़त ब्रज गोपीं बड़ भागी ॥११॥ दियौ नन्द वसु विदित जगत जसु लोक लोक सुनियतु है। जाकैं पुत्र पुरुष पुरुषोत्तम निगमनि हूँ गुनियतु है ॥१२॥ सो लीला सुख सहज भोगवत ब्रजजन अनुरागी। वृन्दावन हित रूप जाऊँ बलि सूर भाग्य मणि जागी ॥१३॥११३॥

राग मारू ढाढी बरनतु जसुमति भाग। जाके पुत्र जनम ब्रज घर घर छाइ रह्यौ अनुराग ॥१॥ गोकुल भई और कछु बानिक बरषत परमानन्द। आवत नारी नर यौं ज्यौं लखि सागर उमगत चंद ॥२॥ ठाड़ौ बड़ी पौरि ब्रज पति की गुननि करति प्रसंस। लै लै नाम आदि जस गावत जे नृप भये ससि वंश ॥३॥ सुनि निकसे अकुलाइ भवन तें प्रेम पुलकि भये गात। नसि गयौ तम दरिद्र ढाढी कौ मनु रवि ऊग्यौ प्रात ॥४॥ बैठे सभा गोप आरज सब ढाढी लयौ बुलाइ। दीनौं दत इतनौं जाहि देखत कमला मन जु लज्याइ ॥५॥ दै असीस बोल्यौ तब ढाढी दई कर्यौ मो भायौ। भीतर भवन बोलि ब्रज रानी सुत कौ बदन दिखायौ ॥६॥ अपनौं भाग बदतु तब धनि धनि कौतिक रूप निहारि। मचलि पर्यौ द्वारैं ता दिन तें छाडि आस फल चारि ॥७॥ नित उठि रावर जाइ कुँवर मुख निरखि निरखि आनन्दै। वृन्दावन हित रूप प्रेम सौं नन्द नन्दन पद बंदै ॥८॥११४॥

राग मारू—तेरौ ढाढी ठाड़ौ द्वार अहो राजनि के राजा। अखिल लोक निधि तुम गृह आई सफल करौ मम काजा ॥ अहो राजनि के राजा ॥टेक॥१॥ मैं अपनौं निजु इष्ट अराध्यौ माग्यौ यह बरदान। मेरौ बचन सत्य प्रभु कीनौं प्रगटे तुम ग्रह आन ॥२॥ इतहि नन्द उत भांनराइ मुहि इन द्वै घर की आसा। उदित उदार सोंम सूरज कुल पाँऊ चरन निवासा ॥३॥ ढाढी बचन गोप सब सुनि सुनि साधु साधु कहि बोले। भूषन बसन देत मणि मानिक नन्द महा धन खोलें ॥४॥ ढाढी कहै दर्बि नहिं लैहौं जो मागौं सो पाऊँ दीजै दरस स्याम सुंदर

कौ हरषि हरषि जस गाऊँ ५ हढ़ ब्रत जानि नन्द जसुमति नैं कियौ जु ढाढी भाख्यौ । वृन्दावन हित आपनौं करिकैं पौरि भानु जू राख्यौ ॥६॥११५॥

राग मारू दोहा अलाप चारी—प्राची दिस जसुमति भई अमल गगन ग्रह नन्द । वृन्दावन हित तहाँ उदित भयौ हरि गोकुल चंद ॥१॥ चंद प्रकास्यौ नन्द घर लोकनि वढ्यौ उछाह । चारु चकोर जु अरवरे ब्रज जन दरसन चाह ॥२॥ राग मारू-दई दाहिनौं आजु ढाढी नन्द कौ जस गाइ । ढाढिनि कहति भयौ हम चीत्यौ महिमा भाग्य मनाइ ॥ढाढी नन्द कौ जस गाइ॥टेक॥१॥ सुन्यौं न देख्यौ अैसौ बालक जो प्रगट्यौ ब्रज आइ । रसना कैं लोचन जो होते तौ कहती समुझाइ ॥२॥ हौं आई मंदिर तें अवहीं सुत मुख निरषि अघाइ । गोप वंश अवतंस जसोदा जायौ लैऊँ वलाइ ॥३॥ मणि मंदिर वैठ्यौ ब्रज रानौं गोपनि सभा वनाइ । ढाढी दई वधाई ता छिन वंदि महर के पाइ ॥४॥ अपनौं जानि कृपा करि ता तन चितयौ सहज सुभाइ । वागौ दयौं आपनौं ताकौं टोडर नगनि जराइ ॥५॥ वहुरि कह्यौ मुसिकाइ आपु मुख सुनि ढाढी मन लाइ । अव कछु वरनि गोप कुल कौ जस देहौं वहुत मंगाइ ॥६॥ जव ये वचन सुनैं ढाढी नैं फूल्यौ अङ्ग न माइ । देव मीढ़ कौ चरित वखान्यौं रीझै गोकुल राइ ॥७॥ नृप परजन्य महा तप कीनौं गिरि गोवरधन आइ । श्री नारायन पद आराधे संतति हित चित लाइ ॥८॥ नारद कें उपदेस लह्यौ वरनौं सुत गुन समुदाइ । तिनमें कृष्ण जनक ब्रज पति कौ वैभव वरनी न जाइ ९ जननीं नन्द वरेयसी रानी भगी कृष्ण रस भाइ

ताके भूर भाग की महिमा सारद कहत लज्याइ ॥१०॥ अब गाऊँ ननसार कुँवर कौ सबकौं श्रवन सुनाइ । सुमुख गोप की सुता जसोदा पटुला जाकी माइ ॥११॥ जसा और जसवंस जु जसधर सुंदर सील सुभाइ । ये जसुमति के बंधु सहोदर मुहि दियौ दान रिझाइ ॥१२॥ नाना सुमुख स्याम तन हरि कौ ताहि उनहरे जाइ । दुहुँ कुल कृष्ण सुकृत फल लाग्यौ निरखौ नैंन सिराइ ॥१३॥ इत उत है परिवार बड़ौई कहाँ लगि कहौं बनाइ । सो वाँछित कीनौं अब विधिना श्रीपति भये सहाइ ॥१४॥ साधु साधु कहि गोप प्रसंसित नंद उठे मुसिकाइ । ढाढी पै कंचन झर बरषैं दीनैं भार भराइ ॥१५॥ पुनि भीतर बोल्यौ ब्रज रानीं स्यौं घरनी पहिराइ । शिव समाधि कौ फल जो सुत मुख सो दियौ निकट दिखाइ ॥१६॥ मुरि मुरि अजिर माँहि दोऊ नाँचत टेरत भुजनि उचाइ । धन्य कृषि जसुमति जिन मेरौ दयौ दरिद्र बहाइ ॥१७॥ स्याम कमल दल लोचन जनमत दिन दिन सुख अधिकाइ ॥ जाके गुन चरित्र जग पावन लिखि हौं चित चढ़ाइ ॥१८॥ दै असीस घर चल्यौ विदा ह्वै प्रेम सिंधु में न्हाइ । चिरुजीवौ जसुमति कौ जायौ बढ़ौ धन धर्म सदाइ ॥१९॥ बाँह गही वृषभांन नंद दियौ मंदिर निकट बताइ । भलौ भलौ कहैं दुहू नगर के राखौ पौरि बसाइ ॥२०॥ आदरु दियौ बहुत जसुमति जू कीरति मान बढ़ाइ । वृन्दाबन हित रूप गोप कुल वंदतु सीस नवाइ ॥२१॥१६॥

राग मारू प्रथम अलाप चारी के दोहा [वंशावली श्री नारायन जी तें वरनन]

श्री हरिवंश सरोज पद सुमिरौं चित्त लगाइ । सौम वंश कौं वरनि हौं कृपा जथा मति पाइ १ श्री रूपलाल गुरु

गुन गहर परम धर्म दृढ़ टेक । अगनित जन पावन किये व्रत अनन्य वल एक ॥२॥ ते सुदृष्टि मोतन करौ वरनौं व्रजपति वंश । सुर नर मुनि ब्रह्मादि शिव जाकी करत प्रसंश ॥३॥ श्री भागौत जु शुक कह्यौ सौंम वंश विस्तार । तिन राजनि कौ विपुल जस विदित सकल संसार ॥४॥ या कुल तें जानी परति वैश्य वंश की ओप । श्री परजन्य व्रज ईश कें नंदादिक सुत गोप ॥५॥ जिनके नामनि आदि तें कहौं सुनौं जजमांन । कृष्ण जनम मंगल भयौ मान सहित देहु दांन ॥६॥ ढाढी वल्लव वंश कौ उदौ ईश कुल जानि । परम भागवत नृपनि के नामनि करति वखानि ॥७॥ राग मारू- ढाढी कृष्ण जनम सुनि आयौ । वरनतु आदि सौंम कुल निर्मल व्रज पति कौं सिर नायौ ॥टेक॥ श्री नारायन नाभि कमल तें ब्रह्मा जनम जु लीयौ । तिनकें भये अत्रि रिषि जिहिं कुल सोंम उदोत जु कीयौ ॥ तिनकें वुद्ध विपुल मति नंदन औलि इला सुत जायौ । तिनकें आयु महावल कें सुत नहुष सुरेश कहायौ ॥१॥ नृप जजादि तप तेज उग्र अति धर्म महा रति ज्ञाता । पांच पुत्र तिनकें जग पालक कीरति जदु विख्याता ॥ तिनकें भयौ क्रोष्टा नंदन ब्रजन वान सुत ताकौ । स्वाहिः सपुत्र तासु घर जनम्यौ रु सेक कुल धर जाकौ ॥२॥ तिनकें भये चित्र रथ भुव पति तिन जातक ससि वृन्द । पृथु श्रवा सुत धर्म प्रगट भयौ उसनां तासु नरिंद ॥ ताकें भयौ रुचीक महारथ ज्यामघः पुत्र विदर्भ । तिनकें कृथु तें कुंति घरनि सुत विस्नि प्रगट भयौ गर्भ ॥३॥ विस्नि सुवन निर्वृत्ति नाम सुनि सारह तिन कुल दीप । जाकें व्यौंम जी मूत तासु सुत ताकें विकृति महीप ॥ तिनकें

भयौ भीमरथ नंदन नवरथ सुत वलवांन । दसरथ तिनकें शकुनि वंश धर तासु करंभी जांन ॥४॥ देवरात जाकें कुल उतपति देव छत्र तिन वंश । मधु सुत तें कुर वस मुत प्रगट्यौ ताकें अनुसु प्रसंश ॥ अनु कें सुत पुर होत्र भयौ नृप आयु पुत्र तिन धीर । तिनकें सात्वत पर्म धर्म रति तिन कुल अंधक वीर ॥५॥ अंधक कें भजमान तासु कें शिनि सुत परम उदार । ताकें स्वयंभ सुभग गुन लच्छन हृदीक सुत दातार ॥ देवमीढ़ तिन भुवन विदित जग द्वै जिन घर पटरानीं । एक वैश्य कुल तें जु विवाही दुतिय जानि छत्रानी ॥६॥ तातें सूर सैंन सुत जनमैं पावन जस नर भूप । तिनकें श्री वसुदेव प्रगट भये मुनि गन मुदित अनूप ॥ जिनकें जनम देव मन हरषे वाजे गहकि वजाये । श्री देवकी घरनि वड़ भागिनि वासुदेव सुत जाये ॥७॥ जदुकुल जस निर्मल विस्तारन सुजन वढ़ावन मोद । अव वरनौं कुल गोप जहाँ प्रभु पूरन प्रेम विनोद ॥ वैस्य सुता तें देवमीढ़ कुल पुत्र भये उतपन्य । जनक समान सवै गुन लच्छन वेद वदित परजन्य ॥८॥ तिनकें नव नंदन जु महा मति तिन-में नंद व्रजेश । जाके भूर भाग की महिमा वरनत हार्‌यौ सेश ॥ सुकृत पुंज की मूरति तिन घर श्री जसुदा जस धाम । ताकी कूषि कलप तरु प्रगट्यौ स्याम परम अभिराम ॥६॥ जाकें जनम गोप वनि वैठे मम सरि उपमा कौंन । कंचन मणि मय जटित अथाई सुर पुर कीनौं गौंन ॥ वरषत व्रज वैभव जाचक सर सव विधि सुभर भरे हैं । मैं पूज्यौ गिरि देव गोवर्द्धन अव मन काज सरे हैं ॥१०॥ वड़ी वैस मन वाँछित विधना यह सुख मोहि दिखायौ त्रिभुवन जन लोचन कौ भूषन नंद

घरनि सुत जायौ। गहकि वजे वाजे सव लोकनि कृष्ण जनम दिन आज। इत ब्रज परम मुदित नारी नर घर घर मंगल साज ॥११॥ नंद जनक परजन्य नृपति कुल वेली फली अभूत। गुन लावन्य रूप हद जा घर दियौ रमा पति पूत ॥ वरन्यौ वंश जनम सुत वरन्यौं ब्रज पति रीझि वुलायौ। अपनौ जानि पीठि कर वर धरि आदरु दै पहिरायौ ॥१२॥ तव वोल्यौ ढाढी असीस दै अव मन भायौ पाऊँ। जनम जनम कीरति तुव सुत की प्रेम विवस नित गाऊँ ॥ टेरि टेरि सवहिनि सुनावतु गोप इन्द्र मन भायौ। कछु इक टेर सुनी जसुमति तव सुत मुख वोलि दिखायौ ॥१३॥ अव हरि जननी भाग प्रसंसित वड़े गोप की जाई। जाकौ पुत्रि उफनि उठ्यौ वारिध लोकनि जसु न समाई ॥ वलि हित रूप ब्रजेश कुँवर मुख निरखि परम अनुराग्यौ। वृन्दावन हित भांन वंश अव उदौ मनावन लाग्यौ ॥१४॥११७॥

राग मारू—सुनि प्रजन्य कुल दीप हौं तौ सौंम वंश ढाढी। जव तें गर्भ धर्यौ ब्रजरानीं आसा जिय वाढ़ी ॥ हौं तौ सौंमवंश ढाढी ॥सुनि०॥टेक॥१॥ नृप हृदीक कें देवमीढ़ सुत जनमत वहुत सिहायौ। श्री परजन्य भये तिन नंदन तव धन अमित लुटायौ ॥२॥ धरानंद ध्रुव नंद जनम सुनि पुलि उपनंद सुहाये। अव अभिनंद अनुज श्री ब्रज पति नंद जनम दत पाये ॥३॥ सुठि नंद निर्मल नंद सहोदर करमां धरमां नंद। ये नव नंदन श्री प्रजन्य के वल्लव कुल जग वंद ॥४॥ जननीं परम दया की मूरति नाम वरेयसी रानीं। पांच पुत्र तिन कुषि प्रगट ब्रज ईश नंद वड़ दानीं ५ नंदन चारि

दुतिय तिन घरनी लघु भ्राता जु ब्रजेश। इनके गुन गन वरनत हारे सुर मुनि सेश महेश ॥६॥ अव महाराज नंद कुल नंदन श्री ब्रज रानीं जायौ। देखत मन जाचंगा भाजी हगनि लाभ फल पायौ ॥७॥ धनि जसुमति की पटुला मैया मोहि वहुत धन दीनौं। श्री ब्रजेश परजन्य नृपति जव व्याह नंद कौ कीनौं ॥८॥ ताकी कूषि घोष जन पालक वालक भेप धर्‌यौ है। को जानैं इहिं गोप वंश नैं कहा धौं सुकृत कर्‌यौ है ॥६॥ पद सुकुँवार मही तल भूषन आंनन सोभा धाम। सूर भाग जन घोष निवासी जिन लोचन विश्राम ॥१०॥ सुनहु गोप जजमान सवै मिलि सवकौं टेरि सुनाऊँ। ब्रज कौ वास महर मंदिर ढिंग यहै वधाई पाऊँ ॥११॥ दै उचिष्ट मेरौ प्रति पालन कीनौं श्री वृषभांन। द्वै भूपनि कुल उदौ मनाऊँ वाट परे जजमांन ॥१२॥ अव हौं भयौ निशंक गोप पति घरनी कूषि सिरानी। देहौं वहुरि असीम वेगि करै उदौ भांन जव रानी ॥१३॥ औरौ सगुन होत सुभ ब्रज में दई करै मो भायौ। वृन्दावन हित रूप वचन सुनि नंद रीझि पहिरायौ ॥१४॥११८॥

राग मारू—ढाढी आजु भयौ मन भायौ। भाग भरी वोली तव ढाढिनि मोहि सगुन शुभ आयौ ॥१॥ देखत उदौ प्रेम अति भीज्यौ श्रवन सुनत उठि धायौ। सिंघ पौरि वंदन करि हित सौं आपनौं वोलि सुनायौ ॥२॥ लै लै नाम गोप कुल टेरतु ब्रज पति निकट वुलायौ। श्री प्रजन्य की निर्मल करनीं वरनि नाथ सिर नायौ ॥३॥ वैठी सभा गोप रानैं की लखि सुर राज लज्यायौ। तिनके भाग प्रसंसितु पुनि पुनि आनंद वारिध न्हायौ ४ जोग जग्य तीरथ व्रत जप तप कहतु धन्य

फल पायौ कृष्ण जनम गोकुल पति मंदिर विधना मोहि दिखायौ ॥५॥ मेरे अभिलाषनि कौ अंबुद प्रभु वाँछित वरषायौ। हौंहू परम धन्य भयौ जग में हीयौ तपित सिरायौ ॥६॥ घोष नृपति रावलि पति घर कौ कुल ढाढ़ी जु कहायौ। मैं जान्यौं मुहि दई दाहिनौं भयौ कोऊ सुकृत कमायौ ॥७॥ मुक्ति अचाहक हू इहिं कौतिक देखन मन ललचायौ। कहा कहौं अनुरागिनु की गति रसनां परतु न गायौ ॥८॥ कृष्ण जनक महाराज आजु हौं इहिं घर रीझि विकायौ। मन की भूख गई अव मेरौ धोइ दरिद्र वहायौ ॥९॥ वंश वेलि जजमान वढी यह जसु सव लोकनि छायौ। दीनौं दान नंद चित चौंपनि हौं रुचि मानि अघायौ ॥१०॥ धन्य ब्रजेश धन्य श्री जसुमति जिन कुल तिमर नसायौ। मंगल महा धन्य ब्रज अवनीं महिमा महँत वढ़ायौ ॥११॥ सुर वाँछित दरसन इहिं उत्सव मुनि मन ध्यान लगायौ। कमल नैंन वालक ब्रज पालक महरि लोक मणि जायौ ॥१२॥ सुमुख पिता जननीं श्री पटुला ता कुल कलश चढ़ायौ। ब्रज रानीं जसुमति जस सागर अहा कहा सरसायौ ॥१३॥ वार वार वंदौं पद सुत जग जीवन दृग दरसायौ। मुहि फल्यौ इष्ट अराधन जव तैं नारद भेद वतायौ ॥१४॥ गोधन अन्न वसन मणि भूषन लै धन अधिक सिहायौ। वृन्दावन हित रूप लाल मुख निरखत सवहि लुटायौ ॥१५।११६॥

राग ब्रज वासिनीनु की टेर—जनमैं हो पिय मोहन हो पिय मोहन लाल वंश उदौ प्रभु नैं कियौ। जागे हो पिय भाग अहो पिय भाग विशाल वड़ी वैस विधि सुत दियौ ॥१॥ देखौ हो पिय अचिरज हो पिय अचिरज रूप तिमर हरत सव सदन

कौ। अंग अंग हो पिय परम अहो पिय परम अनूप ससि समूह दुति वदन कौ ॥२॥ उर पर हो पिय रेष अहो पिय रेष विशेषि पीत वरन भौंरी लसै। कौतिक हो पिय और अहो पिय औरहु देखि सुत के जनम भवन हँसै ॥३॥ ऊँचौ हो पिय सुभग अहो पिय सुभग लिलाट ललित कपोलनि दुति दिपै। खुलि गये हो पिय सुकृत अहो पिय सुकृत कपाट दुख उडगन रवि लखि छिपै ॥४॥ चरननि हो पिय चिन्ह अहो पिय चिन्ह सुदेश सुजस वढ़ावन वंश कौ। करवर हो पिय लच्छन हो पिय लच्छन भूर नृप कुल गुननि प्रसंश कौ ॥५॥ दाहिनौं हो पिय भयौ है अहो पिय भयौ है विरंचि वाएं अशुभ पलाइयौ। सनमुख हो नारायन हो नारायन देव जिन सिसु जनम दिखाइयौ ॥६॥ सांचौ हो गिरि गोधन हो गिरि गोधन राइ जिन प्रसाद यह सुत लह्यौ। पूज्यौ हो पिय मम त्रित हो पिय मम चित लाइ गरग गौतम ज्यौं कह्यौ ॥७॥ दच्छिन हो पिय चीर अहो पिय चीर मगाइ मधु मेवा रस रीति सौं। सुत कौ हो सोहिलौ अहो सोहिलौ मनाइ गिरवर पूजौं प्रीति सौं ॥८॥ सुनियौं हो पिय गोकुल हो पिय गोकुल राइ देव सकल सनमानैंई। विप्रनि हो पिय वेगि अहो पिय वेगि बुलाइ जे सुभ लच्छन जानैंई ॥९॥ तिनकौं हो पिय दीजै अहो पिय दीजे दान जनम पत्र लिखवाइ कैं। कीजे हो पिय विविधि अहो पिय विविधि विधान श्री पति कृपा मनाइ कैं ॥१०॥ वोलौ हो पिय वंश अहो पिय वंश सवासि जिन असीस मोकौं फली। पुरवौ हो पिय तिनकी अहो पिय तिनकी आस जे मंगल रचैं विधि भली ॥११॥ व्रज पति हो सुख सागर अहो सुख सागर न्हाइ

वोले मधुरे वैंन तव । करि हौं हो विधि रीति अहो विधि रीति वनाइ जो तुम मन अभिलाष सव ॥१२॥ धनि दिन हो धनि धनि यह हो धनि धनि यह राति पूरव पुन्ननि पाइयौ । यौं कहि हो भये वेपथ हो भये वेपथ गात परम प्रेम उर छाइयौ ॥१३॥ भादौं हो निशि गहर अहो निशि गहर गंभीर चहूँ दिस दमकति दामिनीं । रिमि झिमि हो सुख वरषत हो सुख वरषत नीर आठैं तिथि अभिरामिनीं ॥१४॥ तामैं हो हरि उदित अहो हरि उदित मयंक सव दुति धर की दुति हरी । देखौ हो रानी जसुमति हो रानी जसुमति अंक त्रिभुवन सौभगता धरी ॥१५॥ आई हो सव व्रज की अहो सव व्रज की वाल नंद सदन सुत जनम सुनि । लै लै हो कर भेट अहो कर भेट रसाल अति उतकंठित मुदित पुनि ॥१६॥ वीथिनु हो छवि भीर अहो छवि भीर वहीर मंगल गावति गति नई । सोभित हो तन सुरँगित हो तन सुरँगित चीर नंद भवन आवति भई ॥१७॥ जसुमति हो दुलरावति हो दुलरावति कृषि प्रेम विवस चरननि लगी । झरत वहो मनु प्रेम अहो मनु प्रेम पियूष सुत सनेह सव सग वगी ॥१८॥ पूरन हो रानी पूरन हो रानी पूरन भाग जिन ऐसौ सुत उर धरयौ । धनि धनि हो रानी विपुल अहो रानी विपुल सुहाग जिन जग मंगल विस्तरयौ ॥१९॥ सङ्ग लै हो पुर वधुनि अहो पुर वधुनि समाज कीरति जू सुनि धाइयौं । लीयें हो गन गोप अहो गन गोपनि साज रावलि पति तहाँ आइयौ ॥२०॥ लीनैं हो ग्रह अरघ अहो ग्रह अरघ वढाइ सिसु मुख कीरति देखि कैं । विधि की हो अति कृपा अहो अति कृपा मनाइ सत्य वचन उर लेखि कैं २१ जो विधि

हो मम होहि अहो मम होहि दयाल तौ यह व्रत साँचौ सही। करि हौं हो यह प्रन प्रति हो यह प्रन प्रति पाल यौं मनहीं मन में कही ॥२२॥ पूरित हो अति पूरित हो अति पूरित प्रेम कीरति जसुमति उर लगीं। मानौं हो द्वै मूरति हो द्वै मूरति हेम रूप लता कै तन खगीं ॥२३॥ वलि वलि हो हित रूप अहो हित रूप व्रजेश कृष्ण जनम घन ऊनयौ। वरषत हो धन अमित अहो धन अमित सुदेश सव जग कौ दारिद्र गयौ ॥२४॥ धुरत वहो भुव व्यौंम अहो भुव व्यौंम निसान सुर कुशुमनि वरषत भयौ। वृन्दावन हित सजन अहो दुहूँ सजन निदांन मुहि कुल जस गावन दयौ ॥२५॥१२०॥

टेर सिपाहीरा की तरह में—महरि जसोदा हो धनि धनि तेरी कूषि अहो रानी जग मोहन सुत जाइयौ हो। व्रज पति रानी हो हगनि जगाई भूख अहो रानी आनन्द उदधि वढ़ाइयौ हो ॥१॥ अति वड़ भागिनि हो सोभित चहूँ दिस वाट अहो रानी वृन्दनि गोपीं आवइं हो। हरि उर धरनी हो कीनौं मंगल ठाट अहो रानी सुर नर मुनि जस गावइं हो ॥२॥ पीहर पूरी हो धन्य सुमुख तो तात अहो रानी धनि पटुला कुल ओपनीं हो। व्रज सुख वर्द्धनि हो कहा कहौं इहिं मुख बात अहो रानी सुजस धुजा व्रज रोपनी हो ॥३॥ विरद वुलावनि हो सवकी फली हे असीस अहो रानी इहिं घर विपुल वधावनौं हो। लोक उज्यागर हो कियौ गोकुल कौ ईश अहो रानी दुर्ल्लभ अस सुत जावनौं हो ॥४॥ पुत्र जनम दिन हो सुकृत मोटैं भाल अहो रानी तामैं गोकुल भूप कैं हो। उमड्यौ आनंद हो मो मन जो इहिं काल अहो रानी लखि कुल मंडन रूप कैं हो

।५।। आरज गोपिनु हो तू चूड़ामणि आजु अहो रानी सव के दृग वाँछित कियौ हो । सर्वोपर भये हो धनि धनि अव व्रज-राज अहो रानी अलभि लाभ प्रभु फल दियौ हो ॥६॥ सुविधि मनायौ हो तुम नारायन देव अहो रानी धन्य धन्य भुव तल भई हो । भूर मनोरथ हो पायौ करि जिहिं सेव अहो रानी निर्मल कीरति निर्मई हो ॥७॥ व्रज जीवनि जन्यौं हो तुव गुन जगत प्रसंश अहो रानीं जग मग तेरें धांमरें हो । रचौ सवासिनि हो सथिया ओप्यौ वंश अहो रानीं आनन्द वरषत आमरें हो ॥८॥ नंद महामन हो गोप सभा के माँहिं अहो रानी वैठे अति छवि पावहीं हो । दान विविधि विधि हो दीनैं उपमां नांहि अहो रानीं सुरपति सभा लज्यावहीं हो ॥९॥ तेरें मंदिर हो रचनां रची है अभूत अहो रानी लोकनि संपति वारनैं हो । होहु गोपालक हो सव अंग लोंनो पूत अहो रानी वहु व्रत किये तिहिं कारनैं हो ॥१०॥ तो करनी की हो जसुमति मिलति न थाह अहो रानीं अस कौतूहल नगर मैं हो । अतिसै वाढ्यौ हो सव उर प्रेम प्रवाह अहो रानी आवत छेह न डगर मैं हो ॥११॥ को जप को तप हो को दत वरनौं वैंन अहो रानी को पूजन कहौं इष्ट कौ हो । कौंन अपूरव हो सुत मुख देख्यौ नैंन अहो रानी उद्भव तत्व गरिष्ट कौ हो ॥१२॥ जिन व्रज वनितनि हो उझकि न देखी पौरि अहो रानी वीथि वधाये न मग चलीं हो । ते सव आवति हो तेरे मंदिर दौरि अहो रानी अति सोभित गोकुल गलीं हो ॥१३॥ वैठि अजिर मैं हो विधि तन अंचल लेति अहो रानीं देव मनावति नेंम सौं हो । अजर अमर होहु हो गहकि असीसैं देति अहो रानी

पुनि हिय भीजीं प्रेम सौं हो ॥१४॥ महा अचिरज मय हो कृषि अर्मी कौ खेत अहो रानी जहाँ यह रतन प्रगट भयौ हो। परम डह डहौ हो विरवा उपज्यौ हेत अहो रानी जग नीरसता मिटि गयौ हो ॥१५॥ आई कीरति हो श्री जुत तेरैं धाम अहो रानी तन मन अतिही हरषि ही हो। निरखि मुदित भई हो सोभा निधि मुख स्याम अहो रानी रावलि पति धन वरषहीं हो ॥१६॥ अव विधि करि है हो सत्य वचन सुनि लेहु अहो रानी वेगि वधाई सजन घर हो। इत उत वढ़ि है हो दिन दिन अधिक सनेह अहो रानी जिहिं सुख भीजैं नारि नर हो ॥१७॥ लोक मुकट मणि हो जोरी दोऊ वंश अहो रानी लीला जिनकी रस मई हो। तिन जस गाइक हो कोविद हित हरिवंश अहो रानी सगुन परीक्षा मैं लई हो ॥१८॥ कीरति जसुमति हो सुनिये वचन अनूप अहो रानी प्रेम उदधि पैरति मनौं हो। यह आनंद लखि हो वलि वलि श्री हित रूप अहो हित वृन्दावन सुख कहा भनौं हो ॥१६॥१२१॥

राग झझौटी गौरी—मंगल कृष्ण जनम यह देख्यौ। मैं तौ जनम सफल करि लेख्यौ ॥१॥ विरवा जहाँ रूप भयौ है। रानी पोष सनेह दयौ है ॥२॥ देख्यौ धन्य सुदिन कौ सोहिलौ। पायौ निगमनि जो सुख दोहिलौ ॥३॥ भई धन्य धन्य जग माहीं। औसौ सुत त्रिभुवन मैं नाहीं ॥४॥ कहा लिखौं भाग की पाती। परमानंद पाई थाती ॥५॥ तव कष्ट ध्यान नहिं आयौ। सो विनु श्रम घर वैठें पायौ ॥६॥ औसौ घर वज्यौ है वधावनौं। मन देवनि हूँ ललचावनौं ॥७॥ ऊग्यौ जग तिमर नसावनौं। गोपीं गोपनि मन भावनौं ॥८॥ मंदिर छवि जोति

प्रकासी । कहैं धन्य धन्य नभ वासी ॥९॥ यह प्रबल पुन्नि की बिरिया । रानी गोद आजु विधि भरिया ॥१०॥ मैं तौ बाजेनु धुनि सुनि फूली । सुख प्रेम हिंडोरैं झूली ॥११॥ मोहि मिली लला की दाई ।। हँसि हँसि सो कंठ लगाई ॥१२॥ कर चूँमि वारनौं लीनौं । मैं तौ वारि अपुन पौ दीनौं ॥१३॥ मोहि मिली सवासिनि पौरी । फिरैं रचति साथिये दौरी ॥१४॥ लगि लगि चरननि मुख देखौं । हौं तौ अपनौं भाग्य विशेषौं ॥१५॥ निरखी छवि ब्रज पति ग्रेह की । मोहि बिसरी सुधि बुधि देह की ॥१६॥ गई जहाँ जसोदा मैया । मैं तौ पुनि लई वलैया ॥१७॥ मुख खोलि दिखायौ साँवरौ । भरि प्रेम भयौ तन ताँवरौ ॥१८॥ कौतिक कौं कौतिक लाला । वरनौं कहा रूप रसाला ॥१९॥ विधनाँ रचि रेष जु काढी । लखि इक टक रहि गई ठाढ़ी ॥२०॥ मेरी सी गति सब की भई । छवि चेटक धाम दयौ दई ॥२१॥ भई भीर नंद कें अँगना । सुर दुन्दुभी वाजैं गगना ॥२२॥ मंगल धुनि वगर वगर में । कौतूहल वढ्यौ नगर में ॥२३॥ हरदी दधि छिरकैं नारी । भवननि वहि चली पनारी ॥२४॥ रचि प्रेम वधावौ गायौ । मोहि रीझि निकट वैठायौ ॥२५॥ मन भायौ दैहुँ तोहि ऐरी । सुनि वात कान दै मेरी ॥२६॥ जाइ कीरति कौं लै आवौ । मेरौ सुख उनहि सुनावौ ॥२७॥ ताही छिन हौं उठि धाई । मैं दीनी गहकि वधाई ॥२८॥ यह सुनि कीरति भई राजी । नौवति वृषभांन घर वाजी ॥२९॥ लियें अगनित सङ्ग ब्रज वाला । कीरति आई तिहिं काला ॥३०॥ अङ्ग अङ्ग जिनकैं श्री वरषै । पग धर तैं अवनीं हरषै ॥३१ मङ्गल धुनि सौं ब्रज छायौ

कीरति वहु दर्वि लुटायौ ॥३२॥ छवि तेज पुंज तन सोहनां । जसुमति ढिंग निरख्यौ मोहनां ॥३३॥ मिलीं हरषि हरषि दोऊ रानी । गाथा कछु गूढ़ वपानी ॥३४॥ कीरति जसुमति की वतियां । मैं लिखीं अपनी छतियां ॥३५॥ वे जानति कै हिय होंहीं । हित करैं महरि अपु गोंहीं ॥३६॥ अभिलाष दुरी यह हिये । हौं चलौं दुहू रुप लीये ॥३७॥ सेऊँ नित चित जु हुलासा । हित रूप उदै की आसा ॥३८॥ दुहुँ रानीनु कही हे पहेरी । मुहि राख्यौ अपनैं नेरी ॥३९॥ नित प्रेम प्रसादहि पावै । जो गोपनि कुल जस गावै ॥४०॥ वृषभांन नंद कुल जाचौं । वृन्दावन हित रंग राचौं ॥४१॥१२२॥

राग जोगिया आसावरी (नाइनि कौ झगरौ)—रानीं अव चरन महावर दैहों । फली असीस लाल तुम जायौ मन भायौ सव लैहौं ॥१॥ स्यौं गहनैं देहु वसन उतीरन तव जु वुलायें जैहौं । हौं नाइनि तुम मो ठकुराइनि तदपि न आजु डरैहौं ॥२॥ सव तें लीक सतगुनी लैहौं जादिन तुम्हैं न्हवैहौं । एडी माजि सँवारौं नख तव रतननि थार भरैहौं ॥३॥ गूँदौं केश सिंगारौं नख सिख लै आरसी दिखैहौं । पति परिवार सहित पहिरौंगी पुनि पुनि माथौ नैहौं ॥४॥ जादिन सुतहिं गोद लै वैठौ ता दिन दान अघैहौं । छटी पूजनी मंगल वरियाँ हौं धनवंत कहैहौं ॥५॥ नाम करन जव होहि लाल कौ उमगि उमगि गुन गैहौं । जा दिन आवै छोछक ता दिन फूली अंग न मैहौं ॥६॥ काकीं ताईं जिती कुँवर कीं तिनकौं सुविधि रिझैहौं । न्यौछावरि सौं भवन भरौंगी दारिद्र धोइ वहैहौं

पुर वनितनि की हौ जु भाँवती तिनतें वाँछित पैहौ। वृन्दावन हित रूप व्याह दिन देखन उदौ मनैहौं ॥८॥१२३॥

[पटविन कौ झगरौ]–राग जोगिया आसावरी—पटविन तौ भायौ जु भयौ है। मेरैं लाल मोहना प्रगट्यौ विधि सु दृष्टि चितयौ है ॥१॥ सुकृत उदोत भयौ ब्रज पति जो पूरव सुविधि वयौ है। वाँधि पाट की वंदन माला कुल मणि जनम लयौ है ॥२॥ मो घर भयौ सोहिलौ सव मन वाढ्यौ मोद नयौ है। देवनि हूँ मान्यौं मंगल दिखि व्योम विमान छयौ है ॥३॥ यह सुनि वंदन माला वाँधति प्रेम हियौ भिजयौ है। इतौ दियौ ब्रजरानीं ताकौ नसि जु दरिद्र गयौ है ॥४॥ ब्रज पति भवन अलंकृत करिकैं जसुमति कौं रिझयौ है। वृन्दावन हित रूप अवधि सुत वदन दिखाइ दयौ है ॥५॥१२४॥

[बढ़इनि कौ झगरौ]–राग जोगिया-आसावरी——बढ़इनि मङ्गल गावति आईं। चित्र विचित्र करी बहु रचना औसौ पलना लाईं ॥१॥ पाइ लगी जसुमति कैं पुनि पुनि रहसी देति वधाई। करज चटकि कैं लेति वारनैं विधि तन गोद उचाई ॥२॥ नैंननि भूख गई मुख देखत लौनौं लाल महाई। पलना में पौढ़ाइ लाल कौं डोरी हाथ गहाई ॥३॥ भाग्य भरी वह लगी झुलावन फूली अंग न माई। वृन्दावन हित रूप महरि पट भूषन दै पहिराई ॥४॥१२५॥

[दाई कौ झगरौ]–राग जोगिया-आसावरी——झगरति जसुमति आगैं दाई। सुनि लाइक मोहन की मैया मैं तुम कूषि सिराई ॥१॥ छेद्यौ नाल तगा सौं वाँध्यौ कीनी वहु चतुराई। ससि तें वदन सतगुनौ वालक मैं दियौ दृग दरसाई २ और लौक

पुनि लैहौ प्रथमही खपरा देहु पुजाई । देहु सभागिनि मोकौं इहिं घर जैसी तुम प्रभुताई ॥३॥ मैं हूँ देव मनाये यह दिन दियौ दई दिखाई । सोभा सौं भरि गयौ भवन कहा कहौं सिसु सुंदरताई ॥४॥ को है भागवती जग मोसी सोधि सुभ घरी आई । रतन अमोलक कृषि सिंधु तें हाथ लग्यौ री माई ॥५॥ वैठी मचलि नंद मंदिर में हिय जिय मुदित महाई । महरि करति मनुहारि लेहु तू मन वाँछित जु वधाई ॥ ॥६॥ स्यौं गहनैं दिये वसन उतीरन नख सिख लौं पहिराई । रतननि खपरा पूजि पँजीरी गोदी भरि जु दिवाई ॥७॥ अलभि लाभ दरसायौ मोकौं विधि तुहि प्रेरि पठाई । तेरौ नाम होहि धनवंती देंहु धन भार भराई ॥८॥ वड़े गुमान भरी जु सोहिलै औसी संपति पाई । वारौं अमर नगर की यापै लखि तन की सुथराई ॥९॥ हौं चाहौं सनमान नंद ते कहति प्रेम वौराई । उर भरि गई रूप मादिकता कहा कहौं भाग निकाई ॥१०॥ चटकति करज वारनैं लैकैं दृग सुख वारि वहाई । वृन्दावन छवि रूप विलोकति पुनि पुनि कुँवर कन्हाई ॥११॥१२६॥

[दरजिन कौ झगरौ]—राग जोगिया आसावरी—लाल जनम सुनि तन मन फूली दरजिन नंद महरि की री । वंदन माला रची मनोहर रँग रँग पाटंवर की री ॥१॥ हय हाथी शुक सारौ मैंना सुभग जरी वस्तर की री । करी कसीदा वहु विधि रचना सारी पीतांवर की री ॥२॥ हिय जिय वढ़ी अधिक उतकंठा देखन स्याम सुंदर की री । लै चलीं भेट राज घर कौं सव वनिता जोरि नगर की री ॥३॥ गावत चलौं सोहिलै देखौ गलिनु भीर भई भर की री महरि पाइ लगि सुत मुख

निरख्यौ रूप चटकि उर अरकी री ॥४॥ रानी कौं दरसावति बहु विधि रचना अपनैं कर की री। कृष्ण जनम सुख भीजी बरनति प्रीति जु उर अंतर की री ॥५॥ सदननि बदन अलंकृत कीनैं होति प्रसंस सुघरि की री। पंछिनु की सैंनी मालनि मैं लरी फौंदननि लर की री ॥६॥ बैठी मचलि महरि कें आँगन माँगति लीक अगर की री। नित उठि उदौ मनाऊँ तुम कुल हौं भूखी आदर की री ॥७॥ विविधि खिलौंना धरति पालनैं आवति है ढिंग सरकी री ॥ दृग उरझे जु स्याम सिसु छबि मैं बातनि आवति तरकी री ॥८॥ रानी जू दासि दीजियै मोकौं टहल करौं तुम घर की री ॥ आदर दै पहिरावति ताकौं जननी जो हलधर की री ॥९॥ जाकौ प्रेम देखि धनि धनि कहैं बनिता नगर अमर की री। तन मन दहली चहली दृग जक लागी टगर टगर की री ॥१०॥ बरनौं कहा प्रेम भुव तल मैं यह गति भई थिरचर की री। वृन्दावन हित रूप मगन अस सुधि नहिं डगर बगर की री ॥११॥१२७॥

राग सोरठ-ताल आड़—अरी हेली नौबत बाजी नन्द घर उठि चलि आलस डारि। धन्य सुदिन भयौ आजु कौ हेली धनि यह राति निहारि ॥हेली०॥१॥ अति कौतिक देखें बनैं हेली जो गवनैं मो संग। नगर नंदीश्वर सुख मन्यौं हेली बरषतु है रस रंग ॥हेली०॥२॥ गांव गांव ते नव वधू हेली आवति सोभित बाट। नंद नंदन के जनम दिन हेली भई मणि उदित लिलाट ॥हेली०॥३॥ गहकि गहकि गावति सबै हेली कोकिल कंठी बाल। लोचन भूख गई तबै हेली रूप अवधि लखि लाल ॥हेली०॥४॥ बंदन माला थरहरैं हेली

धुजा फरहरे द्वार आजु भवन ब्रजराज कैं हेली सुर मुनि कौतिक हार ॥हेली०॥५॥ चंद्र मुखी नव जोवनी हेली मुरि मुरि नाचति नारि। पहिरावति तिनकौं महरि हेली बहुत करति मनुहारि ॥हेली०॥६॥ पुर कौतिक कौतिक सदन हेली रचना रची है अभूत। तामैं पुनि कौतिक अवधि हेली जसुमति जायौ पूत ॥हेली०॥७॥ महा भाग ब्रज राज कौ हेली वरनौं कौंन समान। शिव विधि देव नरेश भुव हेली जाचत जा घर दान ॥हेली०॥८॥ रमा रमन पुर छाड़ि कैं हेली खेलति हैं ब्रज माहिं। कृष्ण जनम अव गोप कुल हेली महिमा की मिति नाहिं ॥हेली०॥ निरखि निरखि मुख लाल कौ हेली भूर वलैया लेति। वृन्दावन हित रूप वलि हेली मुदित असीसनि देति ॥हेली०॥१०॥१२८॥

राग आसावरी ताल आड़ [श्री नारद जू कौ आइवौ वरनन]

मो घर आयौ री वैरागी उझकतु डोलत इत उत। गावत फिरत चरित श्री पति के सुनि सुनि किलकत री सुत ॥१॥ माला तिलक काँधे धरैं वीना लखियतु अति अनुरागी। चतुर चेटकी सौ कछु दीसत सुरति स्याम सौं लागी ॥२॥ मधुर मधुर वीना बजाइ पुनि तन पुलकित भयौ भारी। मुख तैं पढ़त मंत्र से मृदु मृदु नाचत दै दै तारी ॥३॥ नैंननि तैं पानी सौ वरषतु दैउँ सु चितवत नाहीं। किधौं उनमत्त किधौं यह भोरौ किधौं कौतुक या माहीं ॥४॥ जव तव देखत मेरे सुत तन को चिन्हार धौं यासौं ॥ लोटत फिरत अजिर में सजनी विदा होहि कहि तासौं ॥५॥ इक आवति दस वीस जुरीं जव घर घर तैं ब्रज वाला ईहिं नगरी किहिं काज पधारे कहो अवधूत कृपाला

॥६॥ सुनि माता पूरब पुन्ननि तें तै सुन्दर सुत जायौ । जाके जनम आइ जिनि जाच्यौ तिन मन वाँछित पायौ ॥७॥ मुहि दै बहुत पँजीरी झँगुली अरु सुत बदन दिखाई । लै नख बाघ बाँधि बालक कें डीठि लगै नहिं माई ॥८॥ तब अति मुदित भई ब्रज रानी लाल गोद लै आई । फेर्यौ हाथ शीश चरणनि लगि लीनौं प्रेम दवाई ॥९॥ कहूँ वीना कहूँ आप परे धुकि तन की सुधि विसराई । यशुमति देखि दया उर भीजी किलके कुँवर कन्हाई ॥१०॥ पुनि सचेत ह्वै कहत महरि सौं आज्ञा देव दई है । कबहूँ न डरि है बालक तेरौ वाणी सत्य भई है ॥११॥ सींच्यौं बहुत सुगंधि नीर तन औरु दियौ मन भायौ । तब बीणा धरि भाग महरि कौ प्रेम छकनि सौं गायौ ॥१२॥ बार बार सुत के शुभ लच्छण बूझति है ब्रजरानी । वृन्दावन हित रूप नाम गुण वरणत हैं मुनि ज्ञानी ॥१३॥१२६॥

राग आसावरी ताल आड़ [ब्रह्मा जू को आइबो वरनन]

पंडित नंद महर घर आयौ तिन कछू बाँचि सुनायौ । आसन दियौ हरखि ब्रज रानी आदर करि बैठायौ ॥१॥ आठ नैंन मुख चारि सखीरी आगम बात बखानैं । सुनन चाह बाढ़ी सबहिनु कें बहुत कछू यह जानैं ॥२॥ सुनि सुनि नर नारी उठि धाये बूझत ताके नामैं । अचिरज सौ तिनकौं लागतु है तजि आवत धामैं ॥३॥ नन्दहि आनि आसिका दीनी यशुमति भाग मल्हावै । बीच बीच मुख निरखि श्याम कौ विप्र परम सुख पावै ॥४॥ बार बार किलकतु है बालक या तनु रहत निहारी । भरि भरि आवतु हियौ प्रेम सौं विप्र विवस अति भारी ॥५॥ वरनत है लच्छण शुभ जे जे कछु मन ही मन गावै

देखि देखि कर चरन लाल के विपुल प्रताप वतावै ।.६।। पुस्तक हाथ विचारत पुनि पुनि परखतु है मृदु अंगा । व्रज जन सकल कलेश तरैंगे रानी तुव सुत संगा ।।७।। जननी महिमा महत भाग्य सुनि कहत लिलाट निहारी ।। तुव सुत आस करैंगे तेऊ जिनन तजे फल चारी ।।८।। चकित थकित सौ ह्वै रहे कवहूँ भरि उर अधिक हुलासा ।। कवहूँ नन्द सदन की रज लै धरि सिर भरि वड़ स्वासा ।।९।। इक कौतुक रानी सुत जायौ दूजौ कौतिक एहा ।। विप्रकि आयौ नगर पेखनौ परम कुलाहल गेहा ।।१०।। दै दै कान सुनत है वालक रिषि के मधुरे वैना ।। चितवत भरत हूँकरा पुनि पुनि गूँगे की सी सैना ।।११।। नाम चौमुखा या द्विज वर कौ लखियतु परम सुजानै ।। कौन पुरुष आयौ व्रज पति घर देति महर वहु दानै ।।१२।। हरि हलधर दोऊ पय पालौ कहति विप्र सुनौ माई । वड़ौ रोग कोउ देखि सखी याके नैनन नीर चुचाई ।।१३।। जुग जुग वदलत रंग वहुत यह ना ना रूप धरे है ।। अव तुम सुत साँवरौ प्रथम इन साके वहुत करे हैं ।।१४।। जननी निकट लाउ वालक कौं मो अशीष सुनि लीजै ।। करि हौं जाप होहि वड़ भागी मोहि विदा अव दीजै ।।१५।। पीत उपरना पाट धोवती अरु धन वांछित देई ।। चारि वदन की विविधि आशिका महरि ओटि पट लेई ।।१६।। अज्ञा अचल गुपाल लाल की धरें गोप सव सीसा ।। चिरुजीवी तेरौ सुत रानी कहि भयौ विदा मुनीशा ।।१७।। नगर दाहिनौ दै फिरि आयौ ग्वालनि संग लगाई । पुर पौरी व्रजराज नन्द की पुनि पुनि रज में न्हाई ।।१८।। कौतुक भये सुखित व्रज वाला मुनि जु अपूरव देख्यौ । वृन्दावन हित रूप श्याम लखि धन्य जनम विधि लेख्यौ १९ १३०

राग आसावरी ताल आड [सदा शिव कौ आइवौ वरनन]

नन्द भवन में डोलै जोगी निपट हठीलौ आयौ । उझकत सौ कछु फिरत कौतिकी सींगी नाद वजायौ ॥ जोगी निपट हठीलौ आयौ ॥टेक॥१॥ कर डौरू वाघंवर कांधैं भस्म लपेटैं काया । पुरुष अलष वदन तें वोलत छुवत न कंचन माया ॥२॥ सीस जटा माथैं कछु चमकतु काननि मुद्रा भारी । जसुमति के आँगन मैं मचल्यौ वहुत जुरीं ब्रजनारीं ॥३॥ ब्रजरानी कर जोरि कहति यों नाथ वात सुनि मेरी । जो चाहौ सो लै पगु धारौ नगरी वसत घनेरी ॥४॥ भौंह चढ़ाइ अनषि मुख मोर्‍यौ देखि डरीं नव वाला । मोरि कपाट जाइ मणि मंदिर महरि दुरायौ लाला ॥५॥ हौं वलि नाथ कहौ तुम मन की कौन काज हठ एतौ । तुम प्रसाद मो भवन सव कछु लेहु चाहियै जेतौ ॥६॥ अमल छके लोचन रतनारे वोल्यौ रावल वानी । तेरौ भलौ करन मैं आयौ वचन मानि नंदरानी ॥७॥ एक पुत्र तेरैं सुनि मो मन करुना उपजी आई । ता कारन वन खंड भ्रमत तैं तो घर आयौ माई ॥८॥ जंत्र कराइ लेहु वालक कौं डरै न अमर होइ काया । जौ मो सीस चरन सुत छुवावै लगै न कवहूँ छाया ॥६॥ गुरु प्रताप हौं जतन घनेरे जानत तोहि सुनाऊँ । अरु जौ सुत कौ हाथ दिखावै लछन सवहि वताऊँ ॥१०॥ कछू मन लोभ कछू मन संकित महरि विचारि रही है । जोगी देखि डरै जिनि वारौ चरननि लागि कही है ॥११॥ वालक-कौ परताप वड़ौ है तू जिनि जानैं छोटा । आगम देखि सत्य हौं भाषत सकल गुननि है मोटा १२ पौढे छोटी चंदन पलकियाँ चरन अँगूठा चौंसैं कन

ऑखियनि चितवत जोगी तन मन ही मन अति हौसै १३ गौंदी ढापि महरि सुत लाई नाथ चरन सिर राखे। दई भभूति वदन तन निरखत अमृत वचन मुख भाखे ॥१४॥ अन्तर प्रेम घुमायौ रावल भये प्रभु वाल विहारी । अधरनि मैं मुसिकानि स्याम की देखि थकित भये भारी ॥१५॥ मंदिर तें मुहि देहु पँजीरी पीत झगुलिया पाऊँ। आदि नाथ की धुजा चढ़ावौं तेरौ उदौ मनाऊँ ॥१६॥ अलख पुरुष रच्छा करै याकी वालक है वड़ भागी। सव व्रज पालक माता तुव सुत होहि परम अनुरागी ॥१७॥ वहुत पँजीरी पीत झगुलिया रावल गोद भराई । धन्य कूषि तेरी री माई जिन मेरी आस पुजाई ॥१८॥ वार वार जसुमति भाग्यनु की रावल करत वड़ाई । वृन्दावन हित रूप गोप कुल शिव वंदत सिर नाई ॥१९॥१३१॥

राग आसावरी ताल आड़ [द्वितीय महादेव लीला]

माता जंत्र करन हौं आया । सुत कौ वदन दिखाइ जसोदा ज्यौं न लगै तन छाया ॥१॥ तू जिनि जानैं देस वसत इहिं नहिं प्रयाग नहीं कासी । उत्तराखंड तहाँ कौ जोगी महा विकट गिरि वासी ॥२॥ सिंह सर्प मेरैं ढिंग खेलैं रंचक संक न मानौं । गुरु प्रताप तें मैं सव पायौ जंत्र मंत्र वहु जानौं ॥३॥ राखि प्रतीति वचन मेरे की जो कछु मन में भाया । तनक भभूत पिंड लपटाऊँ तौ अजर अमर होय काया ॥४॥ पलना तें ललनां कौं रंचक लाउ मानि मो वानी । रचि वाँधौं गंडा वालक कैं सुनि व्रज पति की रानी ॥५॥ मैं अव लगि जाचौ नहिं कोई औघरनाथ कहाऊँ। अलष पुरुष व्रत करि तें पूज्यौ तव तोकौं समझाऊँ ६ वाघंवर कांधैं कर डौंरू भस्म लगायें

अंगा। लोचन अरुन चंद्रमा माथैं झरति जटनि तें गंगा ॥७ देखत भईं चकृत नंदरानी जोगी चेटक धारी। जो मांगै सो देहु रोहिनीं हौं संकति जिय भारी ॥८॥ मचले कान्ह कुँवर गोदी मैं पुनि पुनि रुदन कराई। नाथ कहत लै आउ वेगि दै मैं तोहि पहिल चिताई ॥९॥ राख्यौ रहतु न वालक क्यों हूं वहुत जतन करि हारी। तव डरि चरन लगीं रावल कें आनि जुरीं ब्रजनारी ॥१०॥ अलख पुरुष रच्या करैं याकी सुनौं सकल ब्रजवाला। फेरत हाथ वजावत डौंरू कहत जियौ जुग लाला ॥११॥ सीस जटा लै चरन छुवावत मुदित नाथ मन माहीं। आदि नाथ कौ वंदन कीजौ अव डरपन कौ नाहीं ॥१२॥ देखि देखि जोगी तन किलकत जननीं गोद कन्हाई। पूरित प्रेम भये उर अंतर सींगी गहकि वजाई ॥१३॥ हठि कैं लीनी पीत झगुलिया खपरा हरषि भरायौ। इहिं ब्रजराज करैं नँद नंदन मैं आगम लखि गायौ ॥१४॥ करि मिस मंत्र चरन रज लै लै चुटकीं दै दुलरावैं। अपनैं स्वामीं वाल विनोदी लीला लखि सचु पावैं ॥१५॥ नीकैं पय पालौ नित जननी पुत्र परम वड़ भागी। देत असीस चले मंदिर तें रावल अति अनुरागी ॥१६॥ यौं सुख विवस भये गोकुल पति पौरी वंदन कीयौ। वृन्दावन हित रूप स्याम कौ प्रेम विलोवत हीयौ ॥१७॥१३२॥

राग आसावरी ताल आड़ [तृतीय महादेव लीला]

री एक जोगी मचल्यौ मेरे आंगन मानत नहि समुझायौ। भिच्या लेइ न मुख तें वोलै इनको मतौ उपायौ ॥१॥ वूढ़ीं वड़ी भेद कहौ याकौ मुहि संदेह दवायौ। पुत्र भये पै पहिलैं कवहूं काहू कैं हो आयौ ॥२॥ सुन्यौ न देख्यौ असौ कवहूँ जैसौ भेष

वनायौ । पलना ओर चितै कें इन कछु आक धतूरौ खायौ ॥३॥ देखि जटनि तें वरषत पानी गरें नाग लपटायौ । चंदा सौ चमकत है माथें सब तन भस्म लगायौ ॥४॥ वाघंवर ओढें यह सजनी डौंरू हाथ वजायौ । किलकत है सुनि कुँवर कन्हैया ऐसौ इन कछु गायौ ॥५॥ आवौ री आवौ सव वूझौ कौन वात हठ लायौ । जिहिं तिहिं भाँति टरै मो घर तें देहु याहि मन भायौ ॥६॥ हौं संकति धीरज धरि तद्यपि तुमकौं टेरि बुलायौ । वालक की जौ दृष्टि परैगौ निश्चैं जाइ डरायौ ॥७॥ तव वोलीं गोपी सुख ओपी मधुरौ वचन सुनायौ । कौंन काम तुम नाथ हमारी नगरी मन विरमायौ ॥८॥ मैं तपसी वन खंड निवासी जनमत जोग कमायौ । ताकौ फल लाग्यौ इहिं नगरीं सुधि पायें उठि धायौ ॥९॥ कौंन वृक्ष अरु वेलि लग्यौ फल ताकौं तुम जु वतायौ । नहिं वन नहीं वाग ह्यां वलि जाउँ आसन जहाँ जमायौ ॥१०॥ हर हर हँसे नाथ यह सुनि कैं लाग्यौ वचन सुहायौ । कौंन वृक्ष कौ वाग वताऊँ जसुमति भवन दुरायौ ॥११॥ सुकृत पुञ्ज की लता जसोमति परम तत्व फल जायौ । मोहि देखि मणि मंदिर रानी मोरि कपाट छिपायौ ॥१२॥ अलख पुरुष मेरौ अंतर जामी तिन मोहि प्रेरि पठायौ । वहुत जतन करि जंत्र मंत्र सौं गंडा इक रचि लायौ ॥१३॥ पुत्र जनम तैं दान वहुत दियौ सुजस सकल जस छायौ । तेरे भूर भाग की महिमा वरवस चित्त जु चुरायौ ॥१४॥ काया अमर करन तुव सुत की मेरौ मन अकुलायौ ॥ खोजि विकट गिरि वूटी लायौ तैं आदरु न दिवायौ ॥१५॥ मेरी वानी अमृत सानी जौ न मोद उपजायौ तौ पाछैं सुधि करि है रानी आगम०

तोहि जतायौ ॥१६॥ उझकि उझकि देखति मंदिर तें जननी मन ललचायौ । सुनौं रोहिनीं रावल वानी महा पुरुष दरसायौ ॥१७॥ नाथ समझि सींगी में रुचि सौं राधा नाम सुनायौ । पहिल लाल नैं भरचौ हूंकरा पुनि कै रुदन करायौ ॥१८॥ कहाँ कहाँ यौं कहत स्याम घन रावल मरम जनायौ । रवकि पालनैं तें तव मैया गोदी धरि दुलरायौ ॥१९॥ गहरे लेत उसास अति लड़ौ समुझि नाथ मुसिकायौ । महरि अधिक संकित ह्वै जोगी वोलि हाथ फिरवायौ ॥२०॥ महा मंत्र स्यामा नामावलि शिव रसना सरसायौ । लाल अमीं श्रवननि पीयौ पुनि पुनि हूंकरा भरायौ ॥२१॥ तव रानी अंचल उघारि कैं सुत विधु वदन दिखायौ । चितये दृष्टि जोरि रावल तन अंतर प्रेम घुमायौ ॥२२॥ माता मेरे सीस जंत्र है यौं कहि चरन धरायौ । वेपथ भये अजिर मैं लोटत नाथ सिंधु सुख न्हायौ ।२३। वड़ी वार मैं चैत्यौ रावल गंडा गर पहिरायौ । लै कर चरन निहारत पुनि पुनि मन करि माथौ नायौ ॥२४॥ तनक भभूति काढि वटुआ तें नख पुनि नाभि छुवायौ । माता अमर भयौ यह वालक मेरे गुरू लखायौ ॥२५॥ आदि नाथ की धुजा चढ़ाई पुनि खपरा भरवायौ । हठि कैं लई पँजोरी अंगुली सींगी नाद करायौ ॥२६॥ देत असीस जियौ सुत जुग जुग मो अभिलाष पुजायौ । वृन्दावन हित रूप चरित लखि उर आनन्द वढ़ायौ ॥२७॥१३३॥

राग धनाश्री, दीपचंद—वधाई वाजै नंद कैं आँगना, सुनि देव गगन मगनां ॥वधाई०॥टेक॥ आजु वधाई नंद कैं सजनी भाग वड़ौ अति मोटा । उदित भई गोकुल मणि देखौ जसुमति

जायौ ढोटा ॥१॥ मंगल विपुल वढ़ावति रजनी दरसि परी विधि ऐसी। गोकुल उमगि बहे सुख सागर मुनि आगम कही जैसी ॥२॥ औरै विधि बाजे बाजैं सजनी औरै रीति नई है। औरै प्रेम बढ्यौ सबकें हिय भयौ अनुकूल दई है ॥३॥ औरै आजु ऊनई सजनी ये मेघनि की माला। बरषत मंद और कछु गरजनि सुनि आगम नंद लाला ॥४॥ औरै गान सुनत मति विथकित गावति ये ब्रजनारी। औरै भाग्य जनक जननी सुर नर मुनि कहत विचारी ॥५॥ धनि दाई धनि घरी जिहिं आई धन्य सवासिनि लहनौं। धन्य कूषि उतपन्य भयौ जहाँ ढोटा त्रिभुवन गहनौं ॥६॥ धन्य नैंन मेरे री सजनी सुंदर वदन विलोक्यौ। छगन मगनुवा मन हरि लीनौं अब यह रहतु न रोक्यौ ॥७॥ अब तू परम धन्य होहु सजनी देखि नैंन मन भायौ। वृन्दावन हित रूप बलि गई मैं तुहि बरनि सुनायौ ॥८॥१३४॥

राग गौरी—दोहा—टेक बंध लाल मूल—ब्रजरानी अस सुत जायौ। जोगिनु जागत ना मिल्यौ सो जसुमति सोवत पायौ ॥टेक॥ कहा धौं अधिक विशेषियै दाई भाग्य अनूप। और लीक पाछैं रही यह पहिलैं छकि गई रूप ॥१॥ पहिलैं पारस रूप कौ रावर वनिता लेति। चटकति हैं करजावली न्यौछावरि प्रान जु देति ॥२॥ ग्रह अँगना जग मगि रह्यौ लला माइ कें अंक। मनहुँ कनक गिरि तें सखी भये उदित जु निकर मयंक ॥३॥ अरबरात पय पांन कौं कौतिक परम अभूत। सब रचना जातें भई सो भयौ नंद घर पूत ॥४॥ सुत जायौ कै मोहनी सबै कहैं अस बैंन। निगम अगोचर जो भन्यौं ताहि देखत भरि भरि

नैंन ॥५॥ तत्व तत्व कौ छानि कैं विधना काहूं श्रौर । शोभा की सींवा रच्यौ नंदलाल लोक सिरमौर ॥६॥ सब मन ढोंरी यह लगी चलौ नंद कें धाम । मेवनि गोद भरावहीं दुलरावैं सुंदर स्याम ॥७॥ तात मात आनन्द कौ कीजै कहा प्रमान । दैंन वधाई आवही ते भूले सब घर जान ॥८॥ न्याइ प्रेम ब्रज जन छके यह जु बात अनुकूल । दुन्दुभी देव वजावही भये मगन जु वरषैं फूल ॥९॥ ऐसे सुत कें वारनैं हूं जय जय वारंवार । दूजौ नहिं विधि श्रष्टि मैं अस कौ याकौ करतार ॥१०॥ धन्य धन्य जननीं भई लाल अनौखौ पाइ । अति लौनौ दृग लागनौं कुल मंडन गोकुल राइ ॥११॥ वड़े सजन घर अव रचौ विधना इहिं सम जोर । मन क्रम वचन असीस दै कहैं लै लै अंचल छोर ॥१२॥ और कहाँ लगि कीजियै या सुख की परसंश । रस मूरति अहिलादनी होहु स्वामिनि श्री हरिवंश ॥१३॥ वचन जसोमति रोहिनीं सुन्यौं वधुनि कौ कांन । प्रवल प्रेम हिय में वढ्यौ ताकी सव पै फिरि गई आंन ॥१४॥ लाल हूंकरा भरचौ पुनि वानी भई अकास । सव मुख वचन अमीं श्रवैं चाहैं भांन वंश परकास ॥१५॥ कमनीं वपु धरचौ गोप ग्रह कौतिक रचन अनन्त । वृन्दावन हित रूप रस जस गावौं रसिक गुनवंत ॥१६॥१३५॥

राग देव गंधार—आजु ब्रज खेलत वछरा गाइ । मंदिर नंद मूल मंगल कौ पुत्र प्रगट भयौ आइ ॥१॥ निर्मल गगन दिसा सब सोभित अवनि ललित छवि छाइ । वरषत कुसुम विमान छये नभ इंद्र निसान वजाइ ॥२॥ नित्तं करत गंधर्व उरबसी जै धुनि श्रवन सिराइ । इत व्रजराज विपुल धन वरषत

भीर न भवन समाइ ३ ना ना भेप ग्वाल सब काछे नाँचत भुज पटकाइ। कुंडल मणि टोडर पहिरावत महा मुदित ब्रजराइ ॥४॥ आइ आइ सब कोऊ वंदत नंद महर के पाइ। गोकुल ग्राम अधिक कौतूहल मिलत परस्तर धाइ ॥५॥ देखि देखि आवति मोहन मुख पुनि पुनि लेति वलाइ। चिरुजीवौ ब्रजराज जसोदा जिन सुख दिये अघाइ ॥६॥ इक फिरि फिरि आवति धन खरचति घर जैवौ न सुहाइ। गावति हैं मिलि सुघर सोहिले जननी कृषि मल्हार ॥७॥ सागर रंग वढ्यौ भूतल पर कृष्ण जनम कें चाइ। वृन्दावन हित रूप रसिक अब वरनौं चरित अघाइ ॥८॥१२६॥

राग जैतश्री—सब मिलि आवौ मंगल गावौ आजु भाग अनुकूलौ जू। नंद सुकृत की वेलि लह लही देखि सकल ब्रज फूल्यौ जू ॥१॥ वाढ़ी गहकि लोक लोकनि मैं फैलि गई हरि-यारी जू। सींची नेह नीर छिन छिन प्रति गोभा उलही भारी जू ॥२॥ सोभा अवधि अवधि सब सुख की ऐसौ फल दरसायौ जू। भयौ न हौंनौ ढोटा लौंनौं धनि ऐसौ सुत जायौ जू ॥३॥ जाकैं जनम महा मंगल दिन घोष सिमिटि सब आयौ जू। शिव समाधि कौ तत्व निगम गथ विनु ही श्रम सो पायौ जू ॥४॥ री यह ब्रज जन लोचन थाती धनि विधना जिन दीनी जू। अति कमनीय वदन वानिक की हौं न्यौछावरि कीनी जू ॥५॥ पट उघारि मुख अंक महरि कें भट्ट देखि हौं आई जू। मेरी दसा भई कछु औरै वैंननि वरनी न जाई जू ॥६॥ नीकी विधि पूरव कोऊ पूजन कीनौं है ब्रजरानी जू। ता कृत कौ फल पूरन पायौ मैं निश्चैं जिय जानी जू ७

दरसतु है ब्रज प्रेम नई विधि सरसतु है सब हीयें जू । बरसतु है अति रंग अलौकिक बनति न उपमा दीयें जू ॥८॥ ये देखि मगन भये सुर कौतिक व्योंम विमाननि छायौ जू । इत ब्रज पति कौ धांम अलंकृत विधि विस्मैं उपजायौ जू ॥९॥ कृष्ण आगमन इहिं ब्रज अवनी बरषति जहाँ तहाँ सोभा जू । वृन्दावन हित रूप प्रेम की उलही सब मन गोभा जू ॥१०॥१३७।

कवित्त—मर्कत मणि ओभा किधौं सोभा हू की सोभा कै, सिंगार तरु गोभा कै प्रेम उर भाँवरौ । सुकृत कौ सार कै अधार प्रांन जसोमति कै रस मैं सरूप कैधौं जन सुख थांवरौ ॥ किधौं वपु लाड़ किधौं चाड़ ब्रज जन फली किधौं घन घमड्यौ अनुराग कौ धांवरौ । नंद कौ आनंद निधि लोक लोक उफन्यौं कै वृन्दावन हित कैधौं रूप बीज साँवरौ ॥१३८॥

राग चैती गौरी—अहो आजु नंद भवन आनंद बधाई बाजै रंग भरी । अहो चलि निरखौ गोकुल चंद धन्य यह सुभ घरी ॥१॥ चली मिलि ब्रज सुंदरी उर बढ्यौ अधिक हुलास । भई जोति उदोत मंदिर कियौ कुल कुँवर प्रकास ॥बधाई बाजैं०॥ ॥टेक॥२॥ गावैं तौ गीत सुहावनैं लै गोप कुल के नाम । सजे हैं मंगल साज सबहिनु आई नंद जू के धाम ॥३॥ मणि फटिक जटित अमोल नग जग मगत ऊँचे द्वार । तनैं हैं कुशुम वितान जहाँ तहाँ सौरभ की उदगार ॥४॥ गौर तन प्रतिबिंब तिनमैं दामिनी ज्यौं कौंधि । पग धरैं जकि थकि रहैं नैंननि छाई है चक चौंधि ॥५॥ वैठीं भवन भरि पूरि सुंदरि सकल गुन अभिराम । महरि कूषि मल्हावहीं जिन जायौ है सुंदर स्याम ॥६॥ इक भांन घर की ढाढिनीं यौं कहति वचन सुनाइं

आगम कथौं मवही सुनो जाहि सुनत ही हियौ सिराइ ७ जजमांन मेरौ महाराजा भांन गोप नरेश। तिहिं भवन कीरति कृषि कन्या कीनौं है परवेश ॥८॥ दस पांच दिन वीतैं प्रगटि है जासु राधा नाम। सेश शिव विधि सेव्य कन्या वे स्यामा ये स्याम ॥६॥ महा भाग्य महरि जसोदा सुनत हरषी हीय। लई कर गहि भवन ढाढिनि पुत्र दरस ताकौं दीय ॥१०॥ दधि दूध माखन भरे भाजन हरद कुम कुम घोरि। नंद मंदिर छिरकहीं नर नारी करि वर जोरि ॥११॥ चुह चुहे चीर अमोल भूषन कंचुकी वहु भांति। मुदित ह्वै पहिराइ रानी फूली अंग न माति ॥१२॥ अवलोकि स्यामहि सुंदरी दुहूँ करनि अंचल लेति। होहु ब्रज सिरमौर सब कौ हरषि असीसहि देति ॥१३॥ जै श्री रूप लाल कृपाल जीवनि अवतरे नँद नंद। वध्यौ जसु सब लोक पावन छायौ है ब्रज आनंद ॥१४॥ धन्य नंद महरि जसोदा सुत जन्यौं ब्रज ईस। होहु भूषन पाद पल्लव वृन्दावन हित सीस ॥१५॥१३६॥

राग सारंग चौतालौ [असीस]—नित नित होहु वधाई घोष पति मंदिर नित हौं असीस सुनाऊँ। नित वढ़ौ राज कुँवर यह जसुमति सुकृतनि कौ फल नित हौं देखन आऊँ॥ नित सुख वृद्धि होहु गोकुल में नित हौं आंगन सोहिले गाऊँ। वृन्दावन हित रूप अनहोतौ या घर प्रगट्यौ नित नित ही हौं प्रेम पँजीरी पाऊँ ॥१४०॥

सारंग तथा सोरठ—नंद जू कौ चिरुजीवौ यह छैया। आंगन वैठि वेगि दै खेलौ हरि हलधर दोऊ भैया॥ सुकृत उदौ कोऊ भयौ पाछिलौ लरज्यौ है मन दैया। वृन्दावन हित रूप महरि जानौ परमेश्वर की मैया १४१

गोरी हेरी की तरह मे तथा राग धनाश्री [असीस बरनन]

चिरुजीवनौं चिरुजीवनौं लला ॥टेक॥ होहु लला चिरु-जीवनौं हो न्हात खसौ जिनि बार। राज करौ या घोष कौ कुल मंडन नंद कुँवार ॥ री लला चिरुजीवनौं ॥१॥ जनमत सुख सागर बढ्यौ हो धन्य सभागिनि कूषि। बिरवा उपज्यौ रूप कौ लखि नैंननि जागी भूखि ॥री लला०॥२॥ मंदिर में गोपीं नचैं हो आँगन नांचत गोप। तन मन रँगि रहे प्रेम सौं कहत भई कुल ओप ॥री लला०॥३॥ देखि देखि आवति सबै हो अति लौंनौं मुख स्याम। विधि तन अंचल छोर लै देति असीसैं भाम ॥री लला०॥४॥ जसुमति सोभा पुंज सौ हो गोद रूप निधि लाल। लोचन कौ फल लेति हैं परम धन्य ब्रज बाल ॥री लाला०॥५॥ नंद बदन पानिप चढ़ी हो हियें बढ़ी अति फूल। निगमनि फल प्रापति भयौ देखि दई अनु-कूल ॥री लला०॥६॥ बहुत दिननि तें होत हे हो ब्रज में सगुन अपार। अब विधिना सांचे करे लखि जसुमति प्रान अधार ॥री लला०॥ नैंननि कौ अरुझावरौ हो अँग अँग परम अनूप। नित उठि राज कुँवर बढ़ौ वृन्दावन हित रूप ।री लला०।८।१४२।

राग गौरी—नौबति नंद कें घर बाजी प्रगज भयौ मन मोंहना। गोकुल अमल उदै भयौ चंदा चलि सुंदरि मुख जोंहना ॥ गाइ अलंकृत करी गोप सुत लाये कर गहि दोहना। विधि सौं दई नंद विप्रनि कौं पुत्र जनम लह्यौ बोंहना ॥ ग्रह ग्रह तें निकसीं बर भामिनि लगि चलीं धुनि कें गोंहना। वृन्दावन हित रूप पुंज लख्यौ आजु धन्य दिन सोंहना ॥३॥१४३॥

राग सोरठ [असीस] लला चिरुजीवनौ रानी हित सौं देति असीस वधू जन अमीं अवित वानी ॥ गोकुल पति मंदिर कौ गहनौं ब्रज जन सुख दानी । वृन्दावन हित रूप कौतिकी ह्वै है हम जानी ॥१४४॥

राग सोरठ—जसोदा तेरैं सुख वरस्यौ अनहोतौ । सव ब्रज जन लोचन कौ गहनौं तैं पायौ सुत सोतौ ॥१॥ तेरौ भाग कौंन सम गनियैं दरस्यौ रतन अछोतौ । नहिं समात आनन्द घोष आजु भयौ प्रजन्य कैं पोतौ ॥२॥ नग अमोल मारग मिल्यौ जो नहिं मिल्यौ सिंधु लियैं गोतौ । सोभा रासि भरि गई मंदिर दृग मन भावै जो तौ ॥३॥ सव तें परैं निकर रस मय वपु तिन कुल कियौ उदोतौ । वृन्दावन हित रूप दाहिनौं भयौ विधि वर जै कोतौ ॥४॥१४५॥

राग देव गंधार (असीस कौ)—महरि पट ओटि असीसनि लेति । सत्य होहु वानी तुम मुख की हँसि वहु आदरु देति ॥१॥ महा भाग मन मुदित जसोमति पूरन प्रेम निकेत । पहिरावति परिजन्य सुता कौं भूषन वसन समेत ॥२॥ वलि हित रूप चरित प्रभु कौतिक जननी वारिध हेत । वृन्दावन हित तिहिं पय पालति निगम कहति जिहिं नेति ॥३॥१४६॥

राग देव गंधार—सुनत ब्रज रानी मुदित असीस । चिरुजीवौ तेरौ कुल मंडल कहति वधू दस वीस ॥१॥ तेरी कूखि रूप निधि उमग्यौ सवै पर्च्यौ जगदीस । जहाँ भूल्यौ विधि हू चतुराई देखि डुलावति सीस ॥२॥ गो गोपनि प्रति पालहु तुव सुत कोटिनु कोटि वरीस । वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि होहु घोष कौ ईश ३ १४७

जियौ माई जुग जुग गोकुल चंद । गह गही देति असीसें हित सौं मुरि मुरि वनिता वृन्द ॥१॥ जाकें जनम पवित्र गोप जस गावत रिषि श्रुति छंद । री यह होहु सकल ब्रज भूषन जीवनि जसुदा नंद ॥२॥ वढ्यौ मान साधु द्विज गुर जन देहु अखिल आनन्द । वृन्दावन हित रूप महरि सुत वंदहु सनक सनंद ॥३॥१४८॥

राग देव गंधार—महा मुनि देत असीस ब्रजेश । चिरजीवौ कुल मंडन तेरौ सुवस वसौ यह देश ॥१॥ वाढ़ौ धर्म धाम धन गोधन नासौ सकल कलेश । वाढ़ौ आयु विपुल तुव सुत की गावौ सुजस महेश ॥२॥ वढ़ौ प्रताप नंद नंदन ज्यौं सुकल पच्छि राकेश । निधि सिधि रहौ भवन नित सेवति लछिमीं करहु प्रवेश ॥३॥ हरि हित रूप नाम गुन नित नव कहौ सहस मुख सेश । वृन्दावन हित सीस चरन रज वंदौ भूमि नरेश ॥४॥१४६॥

राग देव गंधार—भैया हो मोहन जनम लियौ । सुकृत पुंज की रासि जसोदा कुल उद्दोत कियौ ॥१॥ सुत मुख देखि थकित नर नारी प्रेम सुद्रवित हियौ । अमित कला धर तें अति अधिकौ नैंननि अमी पियौ ॥२॥ रमा रवन पुर तें कोटिक विधि ब्रज धरु ओप दियौ । याके जनम चरित गुन गावौ जिन कोऊ और छियौ ॥३॥ नंद निकेत रूप रस वहलौ दहलत हियौ जियौ । वृन्दावन हित रूप जसोदा सम कौ भाग वियौ ॥४॥१५०॥

मांझ-प्रथम दोहा—महरि भाग कहाँ लगि कहौं त्रिभुवन सम कोउ नाँहिं । शिव विधि करत प्रसंस अस रतन कढ्यौ उर माँहिं ॥१॥ त्रिभुवन वाजे वाजनैं भाजन धातु सँजूत मंगल

निधि जनम्यौ जवहि नंद महर घर पूत ..२.. मन क्रम वच करि देति हैं गोपी सवहि असीस। होहु घोष जन लाड़िलौ प्रांन सुधन ब्रज ईश ॥३॥ रूप वढ़ै छिन छिन सखी यह अचिरज कहै कौंन। इहि घर भावै आइवौ भूली अपनैं भौंन ॥४॥ (गाइवे की टेक) श्री कृष्ण जनम गुन गावैं ब्रज जन अनुरागी। प्रेम छके दुलरावैं धनि धनि वड़ भागी॥ (छंद मांझ के) आविर्भाव नंद नंदन कौ रचैं सोहिले भल्ले। गोकुल पति की सिंघ पौरि पै घाव निसाननि घल्ले ॥ सजैं सिंगार भेट लियैं आवति ब्रज वनितनि के रल्ले। वृन्दावन हित रूप असीसति लै कर अंचल पल्ले ॥१॥ अहो जसोदे हम कहा वरनैं भाग तुम्हारो मोटा। अजिर रूप कौ वाग फूलि है हरि हलधर को जोटा॥ सकल गुननि करि कहत वड़ौ मुनि तुम जिनि जानौं छोटा। वृन्दावन हित रूप हूजियौ ब्रज पालक तुम ढोटा ॥२॥ गरग कहि गयौ गोप सभा याहि नारायन सम जानौं। जनम्यौं वली नक्षत्र रोहिनीं गुन कहाँ लगि जु वखानौं॥ सुरपति से विधि से नैं चलि हैं सत्य वचन रिषि मानौं। वृन्दावन हित रूप असीसैं देत हियौ जु सिहानौं ॥३॥ कृष्ण जनम सुख गहरौ सागर कोऊ थाह न पावैं। ब्रज जन सवहि करत मन मज्जन उमगि उमगि जस गावैं॥ ब्रह्मादिक शिवादि नारद शुक मर्नाह अधिक दौरावैं। वृन्दावन हित रूप महा गरुवोई सवहि वतावैं ॥४॥ दै असीस घर जाहि वहुरि दैवे कौं दौरी आवैं। लाल जन्म लखि प्रेम छकी सव हुलसीं मंगल गावैं॥ रूप कलप तरु कृषि महरि की पुनि पुनि ताहि मल्हावैं वृन्दावन हितरूप सिंधुमें नैंन मीन पेरावैं ५ १५१

छप्पै बढ़ौ विपुल परिवार सकट बाढ़ौ अपार वर । अनगन गोधन ठाट बढ़ौ भंडार रतन भर ॥ कनक कोश अति होहु वृद्धि हूजौ हय गय की । सफल बढ़ौ मन काम बढ़ौ पूरित दधि पय की ॥ परम धरम बाढ़ौ सुजस लक्ष्मीं ब्रज सेवन करौ । ढाढी देत असीस नित वल्लव कुल जस विस्तरौ ॥३॥१५२॥

राग विहागरौ लाल सूल–[मंदरवजै की तरह में गाइयै]

ढोटा जायौ रानी घोष की मंगल अवनि उदोत । कुल मंडन के रूप सौं मंदिर जग मग होत ॥ढोटा०॥१॥ धनि धनि वासर आजु कौ धनि रजनी सुख मूल । अलभि लाभ जसुमति दीयौ विधि जु भयौ अनुकूल ॥२॥ नंद भाग्य सागर सुभग नाहिन जाकी कूत । दृग देख्यौं न सुन्यौं कहूँ भयौ अस जा घर पूत ॥३॥ धन्य मही ब्रज लोक की जहाँ यह मंगल भूरि । आनक वाजे सुनत ही गये सकल दुख दूरि ॥४॥ या ब्रज की महतौंन के कहा करौं भाग्य वखानि । अब सब वाँछित पाइ हैं राज भवन सनमान ॥५॥ अभिलाषा जु सुमेर सम सोवत फलीं जु सोइ । ता जसुमति के सुकृत की कहौं मित कापै होइ ॥६॥ अनहौंनौं लौंनौं लला हौं लखि आई गोद । रसना एक कहा कहौं जननीं मन कौ मोद ॥७॥ नंद भवन कौतिक ठगे नर नारिनु के चित्त । गोद पसारि सबै कहैं होइ अस मंगल नित्त ॥८॥ गोधन पालक विधि दियौ भट्ट गोप पति वंश । नंद दांन विनुमित दियौ लोकनि होत प्रसंस ॥६॥ नांचत गोपीं गोप मिलि अजिर दूध दधि पङ्क । वृन्दावन हित रूप कौ निकर महरि लखि अंक १० ।१५३

राग विहागरौ आजु इहि गोकुल मदिलरा वाजै। अतिसै ओप ललित ब्रज वीथिनु व्यौम दुन्दुभी गाजै ॥१॥ नर नारिन के वृन्द मनोहर सनि रहे सुखद समाजै। लौंनौं लाल जसोमति जायौ सब विधि पुजये काजै ॥२॥ अजिर दूध दधि हरदी रंजित ग्रह ब्रज चंद विराजै। चाइनु फिरति घोष की वनिता सींक साथिये साजै ॥३॥ जाचक लार अष्ट सिधि नव निधि लागी डोलत आजै। लेत न गर्व गुमानी चाहत दरस सुवन ब्रज राजै ॥४॥ कृष्ण जनक जननीं वड़ भागिनि अखिल लोक जस भ्राजै। वृन्दावन हित कृपि महरि की हरि हित रूप निवाजै ॥५॥१५४॥

राग विहागरौ चौतालौ—कहा नीकौ आजु लगतु दिन भागिनि पूरी जायौ ब्रज रानीं पूत। ब्रज भयौ छीर उदधि री माई तामें दरस्यौ रस मय चंद अभूत ॥ आनंद कौ अंत न पावत नारीं नर देव मुनि हूं जाकौं कहत अकूत। वृन्दावन हित रूप कौ उदोत अति घोष पति घर भयौ मंगल अखिल संजूत ॥१५५॥

राग झंझौटी गौरी—आजु वधाई री वाजै नंद महर कैं अंगना। ब्रज पति वंश उदौ लखि अति ही ग्वाल फिरत है मंगना ॥ वैठे आरज गोप शुभ घरी विप्र विचारत लगना। गोरस कीच मची जहाँ ऐसी नाँचत ठहरत पग ना ॥ द्वारैं भीर रँगीली वाजति देव दुन्दुभी गगना। वृन्दावन हित रूप अवधि सुख वरण्यौ उपमा जग ना ॥१५६॥

राग झंझौटी गौरी—जसुमति ढोटा जायौ गह गहे घुराहिं निसान। सौहना मौंहना हगनि लगौंहना करैं मुनि नाम

वखान । सोभा आगर वंश उजागर गुरु जन वर्द्धन मान आनंद वरसन जन मन हरषन नंद नँदन सुख दान ॥ गो प्रति-पाल लाल चिरुजीवौ कहैं ब्रज वाल सुजान । जासु सोहिलौ जगत मोहिलौ सुर भये थकित विमान ॥ मची दधिकांदौ मनु झर भादौं विनमित दीजत दान । भरि भरि मागैं अंकनि लागैं अनुरागैं गुन गान ॥ दिखि दिखि आवैं अति सचु पावैं वारति तन धन प्रान । वृन्दावन हित रूप लाल कौ करति अमीं दृग पान ॥१५७॥

राग टोड़ी चौतालौ—नंद जसुमति भागिनु कौ सोभा घन ऊनयौ हरषत है देखि शृष्टि । घोष भयौ गगन प्रेम भयौ मारुत पावस सुकृत होति महा सुख वृष्टि ॥ ब्रज वधू चात्रक कोकिल कुहुकैं सोहिलेनु गावैं मनावैं इष्ट । वृन्दावन हितरूप कौ विरुवा देखि मुदित हिय भरे रंग सर जु गरिष्ट ॥१५८॥

राग नाइकी—लाल जनम लियौ वजत्ति वधाई अति रंग भरी । तेरी सुकृत वेलि ब्रजरानीं गहकि वढ़ी त्रिभुवन पसरी ॥ ता दिन तें इन ब्रज वीथिनु में मुक्ति चारि विधि फिरति परी । अष्ट सिद्धि नव निद्धि वापुरी नांचत घर घर द्वार खरी ॥ ललित वदन गुन रूप निकाई जसुमति सुत तन सचि कैं धरी । वृन्दावन हित रूप जाँऊ वलि मो मन भाई विधि आजु करी ।१५९।

राग माल कोस ताल सूर फाकता—गोकुल सुख कौ गहरु वहतु है । लाल जनम मंगल भयौ गरुवौ विधना हूं देखन जु चहतु है ॥ महरि कूषि के लैंऊ वारनैं सुत सुभ लच्छन विप्र कहतु है । वृन्दावन हित रूप उदौ भयौ सब कोऊ लोचन लाभ लहतु है १६०

महरि कूषि भई सब सुख श्रवनी . धन्य नक्षत्र रोहिनी आठै भादौं कृष्ण पच्छि अति कमनीं ॥ अर्ध निसा भयौ उदित महा ससि गाइ उठी मंगल ब्रज रवनीं । वृन्दावन हित रूप रसीलौ जनम्यौ लखि नीरसता गवनीं ॥१६१॥

राग बिलावल—तेरे सदन वधावनौ सुनि कैं हौं आई । भयौ महरि विधि दाहिनौ वाँछित निधि पाई ॥१॥ जो आनंद मो मन वढ्यौ सो कह्यौ न जाई । लाल ललित मुख देखि कैं हिय ताप नसाई ॥२॥ काहू पुन्य प्रताप तें फल प्रापति माई । पूजति ही गिरि देव नित तिन आस पुजाई ॥३॥ ताहि महरि वहु भाँति सौं नख सिख पहिराई । दै असीस घर कौं चली चिरुजियहु कन्हाई ॥४॥ एक चलीं इक आवहीं घर नंद वधाई । वृन्दावन हित रूप वलि इक रीझि बिकाई ॥५॥१६२॥

राग बिलावल—भाग निकाई महरि की कापै कहि आवैं । जिन उर सुंदर वर धर्यौ छबि चितहिं धुमावै ॥१॥ ब्रज पति सुकृत सिंधु की मित कौंन वतावै । सुर नर मुनि ब्रह्मादि शिव कोऊ पार न पावै ॥२॥ सुत जनमत वैभव घनी हरि जनक लुटावै । निधि सिधि जा घर टहलनी पुनि कोश भरावै ॥३॥ नंद नंदन त्रैलोक मणि जसुमति दुलरावै । वृन्दावन हित रूप वलि जग देखन आवै ॥४॥१६३॥

राग भैरौं—अहो आज नंद सदन नभ चंद उदै भयौ घर घर वजति वधाई । प्राची दिसि जसुमति उर दरस्यौ ताप गयौ लखि माई ॥ सागर रूप वढ्यौ पुर वीथिनु आतुर गति वनिता सुनि धाई । वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि भई सवनि मन भाई १६४

राग भैरो आजु विधनां दृग वाँछित गोकुल माँहि करयौ है। कौन प्रसंसा करौं भाग तुम सुकृत अवधि फल व्रज पति दरसि परयौ है॥ सुर नर मुनि अचिरज उपजावतु भिक्षुक जननि दरिद्र टरयौ है। वृन्दावन हित रूप रसिकनि जु भक्तनि सर्वसु जसुमति गोद धरयौ है॥१६५॥

राग भैरौं—विलोकि नैंननि आई जसुमति जायौ जो है। नंद भवन औरै कछु लागतु औरै रचनां पंच नाद जुत सो है॥ महरि भाग कहौं कै वा सुत कौ वदन निहारत को जु न मो है। वृन्दावन हित रूप निकर कहि सकै न सारदा और कहन कौं को है॥१६६॥

राग सारङ्ग—सुत को मंगल गाइ सुनाऊँ। तुव व्रज पति वड़ भागिनि रानी जो मागौं सो पाऊँ॥१॥ नहिं चाहतु गज वाज धेंनु धन पहिलैं कहि समझाऊँ। सुंदर स्याम कमल दल लोचन गोदी मोद खिलाऊँ॥२॥ पौरी परयौ रहौं मंदिर की देखन नित उठि आऊँ। वृन्दावन हित रूप नंद नंदन नित दास कहाऊँ॥३॥१६७॥

राग विभास—सुभ दिन माई आजु मंगल गावौ घोष नृपति कें धांम। व्रज अति ओभा वरसत सोभा प्रगटे सुंदर स्यांम॥१॥ नगर नगर अरु वगर वगर तें डगर डगर आवति मिलि भांम। मल्हकि मल्हावति कूषि महरि की लै लै हित सौं नांम॥२॥ मङ्गल रचति मनावति विधनां जिन कीयौ मन वाँछित कांम॥ वृन्दावन हित रूप ललन मुख निरखि परम अभिरांम॥३॥१६८॥

देव गधार—आजु माई गोकुल बानिक और । नंद भवन मंगल धुनि सुनियति रचना ठौर हीं ठौर ॥१॥ कहा कहौं सुत वदन निकाई देखि भई मति बौर । विधना कादि पच्यौ सब जग रचि को पटतरि नष कोर ॥२॥ कृष्ण जनम नभ दिस भुव हरषित सरवर भरे हिलोर । हुलसे आवत ब्रज नर नारी ज्यों घन घुमड़नि मोर ॥३॥ गावति सुघर सोहिले सुंदरि लै लै अंचल छोर ॥ वृन्दावन हित यातें अधिकी देहु दई अब जोर ॥४॥१६६॥

(मालिनि को वरनन) राग देव गंधार—मलिनियां सुनि धाई इहिं वार । ब्रज रानी की कूषि सिरानी बाँधति वंदन वार ॥१॥ मांगन लीक गई मंदिर में जसुमति रानी लार । निरषत वदन नंद नंदन कौ रूप छकी रिझवार ॥२॥ घूँमति झूँमति फिरति सदन में भूलीं देह सम्हार । हग फल पायौ री सुनि सजनी बढ़ौ महरि परिवार ॥३॥ नख सिख पट भूषन पहिरावति महरि करति मनुहार ॥ वृन्दावन हित तासु भाग कौ विधि हू न पावै पार ॥४॥१७०॥

राग सारङ्ग—दधि की कीच महर की पौरी । कृष्ण जनम सुनि गोपी दौरी ॥१॥ भवन भवन तें वही पनारी । सोभित गोकुल गली महारी ॥२॥ आजु जनम दिन नंद कुँवर कौ । नाचति भामिनि आनंद भर कौ ॥३॥ मुदित परस्पर हँसि हँसि भेटैं । लै लै माखन वदन लपेटैं ॥४॥ झूँमक नाचैं ब्रज की जुवती । मनु चकोर विहसीं ससि उवती ॥५॥ गोरस हरदी मंडित अंगा । भींजि लगे तन वसन सुरंगा ॥६॥ कौतिक निरषि देव मन हरषैं । नंद सदन पर कुशुमनि वरषैं ॥७॥ भयौ कुलाहल गोकुल

नगरी। आवति गाम गाम तें डगरी ॥८॥ ब्रज पति भवन पंक पय दधि की। उपमा हूँ नहि बनत उदधि की ॥९॥ देति असीस छोर गहि अंचल। तुव सुत राज करौ इहिं भुव तल ॥१०॥ बलि हित रूप गोप आनंदन। वृन्दावन हित जसुमति नंदन ॥११॥१७१॥

राग सारङ्ग [हेरी]—ग्वाल नाचैं हेरी बोलैं। पुर बीथिनु में लटकत डोलैं ॥१॥ हे री हेरी कहि कहि टेरैं। धरि धरि लकुट पिछौरी फेरैं ॥२॥ बार बार उछरत हैं ऐसैं। छवि सागर की लहरी जैसैं ॥३॥ धाइ धाइ सब कौं गहि लावैं। गोरस माट सिरनि ढरकावैं ॥४॥ करतल भुज पटकावैं गावैं। महर धाम कौं धाये आवैं ॥५॥ आजु भयौ सब कौ मन भायौ। ब्रज की रानी ढोटा जायौ ॥६॥ नन्द बबा कौ कर गहि लीयौ। झूँमक नांच अधिक छबि दीयौ ॥७॥ अजिर भीर सोभा भई भारी। कौतिक छकीं देखि सुर नारी ॥८॥ कुँवर वदन लखि वाढ्यौ मोदा। दई पंजीरी भरि भरि गोदा ॥९॥ बलि हित रूप प्रेम ब्रज सरस्यौ। वृन्दावन हित अति सुख दरस्यौ ॥१०॥१७२॥

राग मलार—रानी जसुमति जायौ लाल, सु आजु वधावनौं। पुर पुर घर घर सब नारी नर मुदित भये इहिं काल ॥ सु आजु वधावनौं ॥टेक॥१॥ सुभग वितान जलज मणि झालरि पौरिनु वंदन वार। सुनि ब्रज तरुनी भाग्य वड़ वरनी आंपे कर वर थार ॥२॥ लगि लगि पाइनि वारति चाइनु दुलरी अरु मणि चौकी। कोऊ न कहैं घर जानि वदन लखि सुंदरता

वधाई वाजै वृन्दावन हित रूप चरित वलि जनमत सवहि निमाजै ॥४॥१७३॥

[वरस गांठि] राग विलावल—वरस गांठि नंदलाल की आजु उवटि न्हवावौ । मोतिन चौक पुराइ कैं मणि चौकी विछावौ ॥१॥ घसि घसि सकल सुगंधि कौ केसरि जु मिलावौ । सोधि सुभ घरी स्याम कें लै अंग लगावौ ॥२॥ मंगल कलश वितान रचि लै धुजा धरावौ । विप्रनि वेद पढ़ाइ कैं अविषेक करावौ ॥३॥ सुंदर अंग अँगौछि कैं सुचि पट पहिरावौ । मणि भूषन अँग अँग सचौ रचि तिलक वनावौ ॥४॥ विविधि पाक मेवा विविधि मोहनहि जिमावौ । त्रिपति होहि मेरौ लाड़िलौ लै जल अचवावौ ॥५॥ रोरी अछित लाल कें माथें जु लगावौ । वोलौ भूवा नंदिनी आरतौ सजावौ ॥६॥ गंत्र सब्द जै धुनि करौ कुशुमनि वरषावौ । सुख ओपीं सव भामिनीं मिलि मंगल गावौ ॥७॥ द्विज भिछिक आये घनें तिन आस पुजावौ । बोलौ श्री व्रजराज जू वहु दर्वि लुटावौ ॥८॥ आवौ सजि मंगल मुखी गुन सवहि दिखावौ । मागद चारन भाट मिलि कुल सुजस वुलावौ ॥९॥ लेहु मन वाँछित जुवति जन मोपै जुरि आवौ । होहु कुल वर्द्धन स्याम कौं जु असीस सुनावौ ॥१०॥ चोवा चंदन अरगजा सव तन चरचावौ । वीथीं नीर गुलाव सौं चहूँ दिस छिरकावौ ॥११॥ कौतिक ना ना विधि रचौ मेरे ललहिं दिखावौ । दूध दही घट भरि घनें तुम खेल मचावौ ॥१२॥ धांम गाँम मङ्गल महा मन मोद वढ़ावौ । पट भूषन मेवा वधुनि दै गोद भरावौ ॥१३॥ करहु सुखित पुर जन सवै मेरे सदन वधावौ । वृन्दावन हित रूप वलि अति लड़ दुलरावौ १४ १७४

❀ श्री लाल जू के पलना के पद ❀

श्री मथुरा दास जी महाराज कृत—राग आसावरी

सुंदर मंदिर पालनौं वन्यौं कंचन कांच सुढार । झालरि झूमरि झुरमये झूमक घूँघुर झनकार ॥ सुभग सुहावनैं कान्ह लला ॥१॥ मंजन अंजन नैंन दै जसुदा पय पान कराइ । पारे सुंदर पालनैं हिय हुलसि हरषि दुलराइ ॥ नंद के नंदन कान्ह लला ॥२॥ साँवल रूप अनूप है अनुरूप सकल परिवार । झलकत झाई जग मगै सुभ दर्पन आकार ॥ भव तम खंडन कान्ह लला ॥३॥ स्याम चखौंडा सोहनौं घुँघरारी अलक सुदेश । चरन चलावत जोरि कैं तव कंपित सेष दिनेश ॥ सुर मुनि वंदन कान्ह लला ॥४॥ झीनीं झंगुली झलमलै जरतारी टोपी भाल । वाजत भूषन किलक हीं सब वैरिन के उर साल ॥ दुष्ट निकंदन कान्ह लला ॥५॥ गोपी तन मन वारहीं नंदलाल सरूप निहारि । रुचिर झुलाइ मल्हाइ कैं गुन गावति गोप कुमारि ॥ है गुन नागर कान्ह लला ॥६॥ शिव विरंचि हरि सेइ कैं तप तीरथ करि जप जाग । पूरव पुन्य प्रताप तें जसुदा जायौ बड़ भाग ॥ है वरदाइक कान्ह लला ॥७॥ गोकुल जनम गुपाल कौ गोप ग्वाल अनुकूल । असुर संघारन कृष्ण है निज भक्तनि के मन फूल ॥ भक्त सहायक कान्ह लला ॥८॥ वकी सकट कौं टारहीं तृनावर्त्त संघारि । माखन चोर कहाइ है जमला अर्जुन कौं तारि ॥ सव दुख मोचन कान्ह लला ॥९॥ अघ तें ग्वाल वचाइ है वक चुंच विदारन हार । ब्रह्मा वच्छ चुराइ है तव ह्वै है तिन उनिहार ॥ गौ प्रति पालक कान्ह लला ॥१०॥ धैनुक काली दंड दै दावानल करि है पान

चीर चोर द्रुम लै चढ़े जज्ञ पतिनी दै वरदान ॥ वांछित दायक कान्ह लला ॥११॥ मघवा पूजा मेटही गोवर्धन धरि नंदलाल। सुरभी लै पाइनि परै सुभ नाम धर्यौ गोपाल ॥ है मद भंजन कान्ह लाल ॥१२॥ वरुन लोक तें नंद लै व्रज वासिनि धाम दिखाइ। रास विहार मचाइ है मिलि गोपिनि वैंन वजाइ ॥ सव सुख दाइक कान्ह लला ॥१३॥ संख चूण वधि करहिंगे अजगर तें नंद वचाइ। केशी हति अक्रूर कौं निज विश्व स्वरूप दिखाइ ॥ मोद वढ़ावन कान्ह लला ॥१४॥ माली कुविजा रूप दै गज मल्ल कंश कटिराइ। समाधान वसुदेव कौ पुनि उग्रसैंन करै राइ ॥ वंश उजागर कान्ह लला ॥१५॥ सुधा धाम सिसु चरित हैं कर्यौ षोडस कला प्रकास। मथुरा दास हुलास सौं सुर नर मुनि पीवत जास ॥ है जग जीवन कान्ह लला ॥१६॥१॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत–राग रामकली

लाल माई पालनैं झुलायौ। सुर नर मुनि गन कोटि तेतीसौ कौतिक अंवर छायौ ॥ जाकौ अंत न ब्रह्मा जानैं शिव सनकादि न पायौ। सोई देखौ नंद जसौदा गोदहिं घालि खिलायौ ॥ हुलसत हँसत करत किलकारी मन अभिलाष वढ़ायौ। सूरदास भक्तनि कें काजें ना ना भेष वनायौ ॥२॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत–राग आसावरी

तुम व्रज रानी के नीके लला। दधि मथति सुहाई के लला ॥टेक॥ दिव्य कनक कौ पालनौं लाल रतन खचित नग हीर। गज मोतिनु के झूमिका लाल ऊपर दछिन कौ चीर ॥१॥ घुटुरनि चलत सुहावनैं लाल पग नूपुर कौ नाद कटि

किंकिनि रुनझुन करैं लाल सुनत जननी अहिलाद ॥२॥ आधे आधे वचन सुहावनैं लाल सुनत श्रवन मन मोद। मुख चुंबन स्तन पान दै लाल लै बैठावति गोद ॥३॥ तिलक बन्यौं गोरोचनां लाल घुँघर वारे केश। नान्हीं नान्हीं दतियां दूध कीं लाल देखत हँसत सुदेस ॥४॥ काजर लोचन आँजि कै लाल भौंह कमठ दै पीठि। अपनैं लला कौं छुवन न दैहौं जिनि कोऊ लावै डीठि ॥५॥ कुलह सुरंग सिर ताफता की लाल झंगुली पीत सुदेश। कंठ वघन कर पहुँचिया लाल सोभित सुंदर वेश ॥६॥ प्रथम हती तुम पूतना लाल सकट भंजि त्रिन मार। जमला अर्जुन छोरि कैं लाल अव किनि छाड़ौं आरि ॥७॥ मेरे लाल की गैया अति वढ़ीं वे चरन वृन्दावन जांहिं। पानी पीवैं श्री जमुना कौ वे आज न खर वे खांहि ॥८॥ मेरे लाल की मैया ब्रजरानी वाप गोकुल कौ राज। धनि धनि तुम्हरे वलभद्र भैया लाल करत सुकुल सुख काज ॥९॥ मेरे लाल हो मेरे लाल तुम कंश मारि गढ़ लेहु। मथुरा फेर्यौ ब्रजराज दुहाई गोप सखनि सुख देहु ॥१०॥ कहति जसोदा सुनि मेरे गोविंद लेंऊ कंधैया चढ़ाइ। जो पौढ़ौ तौ पालनैं झुलऊ ना तरु आँगन वैठि खिलाइ ॥११॥३॥

श्री जन हरिवंश जी महाराज कृत—राग आसावरी

जसुमति पलना देति झुलाइ। वार वार निहारि जननी मुख स्याम उठै मुसिकाइ॥ मैं वलि जाऊँ स्याम सुंदर की कवहिं चलौगे धाइ। सर्वसु वारि करौं न्यौछावर जादिन दुहुगे गाइ॥ अंचल वारि वारि अपनावै कहि कहि हितहि सुनाइ। तुम चिरुजियौ नंद के नंदन जन हरिवंश जस गाइ ॥४॥

चाचा श्री वृन्दावन दासजी महाराज कृत-राग रामकली तथा जोगिया आसावरी

जसोदा हरिहि पालनैं झुलावै । मोहन वदन माधुरी निरखति फूली मंगल गावै ॥१॥ कबहूँ रुचिर खिलौंना लै कर लालहिं खेल खिलावै । कबहू मुदित होत मन हीं मन प्रेम भरी दुलरावै ॥२॥ कबहू महा भाग की महिमा समुझि आपु सुख पावै । कबहू वारि वारि मणि भूषन विप्र वधुनि पहिरावै ॥३॥ कबहू अखिल लोक हरि भूषन अंचल मांहि दुरावै । वृन्दावन हित रूप स्याम कौ नंद घरनि यौं लड़ावै ॥४॥५॥

राग देव गंधार—बन्यौं मणि पलनां नंद निकेत । तामैं ललहिं झुलावति रानी निरषि वलैयाँ लेति ॥ छिन में लै पय पान करावति छिन पलनां धरि देति । छिन में प्रेम विवस व्रज रानी छिन में होति सचेत ॥ यह सुख नंद घरनि भागिनु कौ निगम थके कहि नेत । वृन्दावन हित रूप स्याम दुलरावति वारिध हेत ॥६॥

श्री चत्रभुज दास जो महाराज कृत--राग रामकली

अपनैं लला कौं झुलाऊँगी । सुंदर रतन जटित पलना में छगन मगन कौं हुलराऊँगी ॥ लाल कौं कुलही पीत झंगुली नाँक नथुनी पहिराऊँगी । कंठसिरी मणि माला नीचैं कटि कौंधनी वनाऊँगी ॥२॥ रुनुक झुनुक पैजनी घूँघुरू निरखि निरखि सचु पाऊँगी । लट गूँथौं उज्जल मोतिनु सौं भृकुटी भौंह वनाऊँगी ॥३॥ हुलसि हुलसि लै लै पलना तें कनियां गोद खिलाऊँगी । चत्रभुज प्रभु गिरिधरन लाल कौं आंगन वैठि मल्हाऊँगी ॥४॥७॥

राग रामकली तथा आसावरी—अपनें वाल गोपालै, रानी पालनें झुलावै। वार वार निहारि कमल मुख प्रमुदित मंगल गावै ॥ रानी पालनें झुलावै ॥टेक॥१॥ लटकन भाल भृकुटि मसि बिंदुका कठुला कंठ बनावै। सद माखन मधु सानि अधिक रुचि अँगुरिनु कै कै चखावै ॥२॥ कबहूं सुरंग खिलौंना लै लै ना ना भाँति खिलावै। देखि देखि मुसिकाइ साँवरौ दुति दतियाँ दरसावै ॥३॥ सादर चंद चकोर ज्यौं नैननि रूप सुधा अचवावै। चत्रभुज प्रभु गिरिधरन चंद कौं हँसि हँसि कंठ लगावै ॥४॥८॥

श्री आस करन जी महाराज कृत—राग रामकली

झूलत पालनें गोविंद। दधि मथौं नव नीत काढ़ौं तुमहिं आनंद कंद ॥ कंठ कठुला ललित लटकत भृकुटी मन कौ फंद। निरखि छवि छिन छिन झुलावै गावै लीला छंद ॥ दोऊ दूध की दतियाँनि की दुति हसनि कछू मुख मंद। आस करन प्रभु मोहन नागर गोकुल गिरधर चंद ॥९॥

श्री विट्ठल नाथ जी महाराज कृत—राग सारंग

चौक तें उठि कें नंदरानी नें ढोटा पलना मांझ सुवायो। पहलें डोरि लई जसुमति कर थोरैंथोरैं बैठि झुलायो ॥ झंगुली पीत कुलह पहराई तासौं लटकन गूँथि बनायौ। नैंन आंजि के दियौ दिठोना औरु पायन नूपुर पहरायौ ॥ फिरि फिरि निरखि निरखि सुंदर मुख डारति राई लौंन उतारी। श्री विट्ठल गिरिधरन लाल के मंगल गावति सब ब्रज नारी ॥१०॥

—****—

❀ श्री लाल जू की छटी के पद ❀

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत-(मंगल) राग सूहौ बिलावल

मो अति लड़ की छटी पुजावौं । आरज गोपी सब जुरि आवौं ॥ मंगल सौंज सबै सजि लावौं । गोपनि के कुल कौं दुलरावौं ॥ दुलराइयै कुल गोप विधिना आस मो पूरन करी । रचौ ना ना पाक आई छटी पूजन सुभ घरी ॥ अनुराग भीनैं गोप गोपी मंगली विधि करत हैं । धन्य भयौ कुल गोप भुव नभ जै धुनि सब उच्चरत हैं ॥१॥ घर घर तें बनिता मिलि आवैं । भेंट अपूरब सब सजि लावैं ॥ गह मह ह्वै रही वीथिनु माही । सुर वनिता देखनि पछिताही ॥ पछितात देखनि देव वनिता नंद ग्रह उत्सव महा । त्रैलोक मणि सुत जहाँ जनम्यौं सुख सम्पति बरनौं कहा ॥ अगनित धुरैं नीसान जहाँ नर नारी फिरैं अति मगन हैं । होति कुशुमनि वृष्टि वाजैं देव दुन्दुभी गगन है ॥२॥ पाक विविधि तहाँ साजि धरे हैं । मंगल दीप अनेक बरे हैं ॥ टोपी तास जु पीत झंगुली । भूवा तन पहिराइ सुफूली ॥ फूली भूवा नंदिनी वीरन वंश भयौ उद्दोत है । छोटे कनक भूषन सजे तन स्याम जग मग जोति है ॥ गावैं जु मंगल गहकि जुवती धन्य भई आजु सरवरी । अखिल मङ्गल रासि विधना नंद मंदिर सचि धरी ॥३॥ छटी पुजावैं विधिहि मनावैं । ब्रजरानी की कूषि मल्हावैं ॥ यह रस रतन जहाँ तें दरस्यौ । अति आनंद जलद ब्रज बरस्यौ ॥ बरस्यौ जलद आनन्द कौ को सुकृत पूरब लेखियै । अहा महा अतर्कि रचना नंद कौ सुत देखियै ॥ भाल चखौडा कंठ बघ नख निकर सोभा तन धरयौ वारि राई लोंन सजनी डीठि

डर मन अरवरयौ ।४।। जिहिं छिन मोहन छटी पुजाई । जननीं प्रेम गहर निधि न्हाई ।। यह वासर यह रजनी माई । रीति अपूरव देति दिखाई ।। दरस्यौ अपूरव रंग धनि ब्रज प्राण वल्लभ अवतरयौ । वृन्दावन हित रूप कौतिक सृष्टि मन वरवस हरयौ ।। कीरति जसोमति रोहिनीं मुखरा जु पटुलादिक तहाँ । वारति रतन मणि मूँठि राज कुँवार पें पुनि पुनि जहाँ ।।५।।१।।

श्री परमानन्द जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

मंगल द्यौस छटी कौ आयौ । आनंदे ब्रजराज जसोदा मनहुँ अधन धन पायौ ।। कुँवर न्हवाय जसोदा रानी कुलदेवी के पाय परायौ । वहु प्रकार विंजन धरि आगैं सब विधि भलौ मनायौ ।। सव ब्रज नारि वधावन आईं सुत के तिलक करायौ । जय जय कार होत गोकुल में परमानंद जस गायौ ।।२।।

पद—आजु छटी जसुमति के सुत की चलौ वधावन माई । भूषन वसन साजि मंगल लै सकल सिंगार वनाई ।। भली वात विधि करी वैस वड सुत पायौ नंदराई । पुन्य पुंज फूले ब्रजवासी घर घर होत वधाई ।। पूरन काम भये निज जन के जीवेंगे जस गाई । परमानंद मूरति आनंद की कहू न देखन पाई ।।३।।

श्री सूरदास जी महाराज कृत पद

पूजत छटी कान्ह कुँवर की थापे पीत लगाये । कंचन थार लीये ब्रज वनिता रोचन देति सुहाये ।। पनवारो भरि खीर खांड घृत पापर वरा वनाये । मेवा दाख वदाम छुहारे सव के गोद भराये ।। आँजति आँखि सवासिनि रुचि सों मांगत नेग वनाये । सूरदास प्रभु तुम चिरुजीवौ घर घर मंगल गाये ४

श्री लछीराम जी महाराज कृत—पद

गोद लिये गोपाल जसोदा पूजत छटी मुदित मन प्यारी। वडडे वार सनेह चुचाते चूँवत मुख दै दै चुचकारी॥ कुल देवता मनाइ सबन कूँ वरन वरन पहिरावत सारी। गोपी ग्वाल हरषि गोकुल के नाचत हँसत दै दै कर तारी॥ कंचन थार आरती सजि सजि लै आई सब ब्रज की नारी। वारि लाल पर लछीराम को हरखि नंद दई नव निधि वारी॥५॥

—※※※—

श्री लाल जू की दसूठन कौ-मंगल छंद

चाचा श्री वृन्दावनदासजी म० कृत—राग सूहौ बिलावल [भादौं सुदी दोज कौ]

लाल दसूठन आजु सु मंगल गाइये। नगर बुलावौ देहु वधुनि लै आइयै॥ गो गोवर सौं आंगन भवन लिपाइयै। पूरौ चौक सवासिनि कलश धराइयै॥ धराइ मङ्गल कलश कदली अवलि दीपनि की रचौ। विविधि रंग वितान तानौं झालरिनु मोती सचौ॥ पौरीनु वंदन माल रचि वीथीं सुगंधि सिंचाइयै। लाल दसूठन आजु सु मंगल गाइयै॥१॥ रचियत ना ना पाक नंद अग्या दई। न्योंते गुरुजन विप्र फूल हिय जिय भई॥ घर घर परम उछाह नंद पुर देखियै। जननीं मन आनंद कितौ सुविशेषियै॥ विशेषिये आनंद केतौ चहूँ दिस सोभित गलीं। सिंगार नव सत अंग वनिता भेट लै लै कैं चलीं॥ गावैं मल्हावैं कूषि जसुमति वढ़ति अभिलाषा नई। रचियत ना ना पाक नंद अग्या दई॥२॥ अंग अलंकृत करि करि आये गोप जू। ब्रज पति मंदिर दरसत औरै ओप जू॥ वारौं सुरपति सभा और उपमा कहाँ। वैठ्यौ वंधुनि सहित घोष

रानौं जहाँ ॥ वड़ भाग रानौं घोष कौ रनिवास आये ता घरी। गँठि जोरनौं करि महरि सौं कुल वेद विधि सवही करी ॥ मुनि गरग लगन विचारि वोले भई कुल जस रोप जू। अंग अलंकृत करि करि आये गोप जू ॥३॥ ताऊ श्री उपनंद लाल गोदी धर्‍यौ। मंगल घरी विचारि तौ नाम करन कर्‍यौ ॥ वाल कृष्ण वंशीधर व्रज वल्लभ वली। व्रज वर्द्धन आनंद प्रनित जन कौ पली ॥ प्रनित पाल व्रजेश नंदन वन विहारी वहु गुनी। मांन पात्र वड़े सजन कौ हरषि यौं वोले मुनी ॥ देत लेत जू भेट सव कौ हियौ अति आनंद भर्‍यौ। ताऊ श्री उपनंद लाल गोदी धर्‍यौ ॥४॥ पहिलैं विप्र जिमाये विधि जु विधान सौं। पुनि जैंवत हैं गोप अधिक सनमान सौं ॥ कौतूहल व्रजराज पौरि पै अति भयौ। असन वसन वहु दान उचित सवहिजु दयौ ॥ दान सुत जनमत दयौ वनिता उठावति मूँठि कौं। ऐसौ दसूठन नंद सुत कौ देव तरसत जूँठि कौं ॥ गोकुल छतीसौं पौनि सव किये सुखित वाँछित दान सौं। पहिलैं विप्र जिमाये विधि जु विधान सौं ॥५॥ सुख उभिलनि कहा कहौं नंद रनिवास की। आस करत मुनि देव पौरि जिहिं वास की ॥ मणि चौकी पर वैठी रानी नंद की। गोद खिलावति ललहिं भरी आनंद की ॥ भरी परमानंद वरनी लोक जो वड़ भाग री। वृन्दावन हित रूप जोरी चहति सुत तें आगरी ॥ तन स्याम भंगुली पीत सोहै सीस टोपी तास की। सुख उभिलनि कहा कहौं नंद रनिवास की ॥६॥१॥

—:※:※:※:—

❀ श्री वलदेव जू की जनम वधाई ❀

श्री चतुरदास जी महाराज कृत—राग सारङ्ग

रोहिनी नंदन प्रगटे आज। सामन शुक्ल पंचमी सुभ दिन सवहिन के सिरताज ॥ ग्रह ग्रह ते गोपी सब धाईं लीन्हें मंगल साज। नाचति गावति करति कुलाहल मानहुँ रागिनि राज ॥ नाम धरन कौं विप्र वुलाए नीकौ वन्यौं समाज। चतुरदास कीन्यौं न्यौछावर पूजो मन के काज ॥१॥

राग सारङ्ग—चलौ सखी रोहिनी पुत्र भयौ। गोप सवनि की मनसा पूजी प्रेमानंद छयौ ॥ मंगल गावति चली ब्रज वासिनि तें घृत दूध दह्यौ। जसुदा रोहिनी देति वधाई देवकी आनंद कह्यौ ॥ नारद गरग परासर गौतम वलदेव नाम धरयौ। आभूपन पाटंवर भूषन गो सुत दान करयौ ॥ ब्रज पति के प्रभु वलदेव निरखि शिव विरंचि हरष्यौ। भेरि मृदंग दुन्दुभी वाजति इन्द्र पहुप वरष्यौ ॥२॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग आसावरी

रोहिनी भाग वली है हलधर सुत जायौ। सुभ वासर सुभ लगन सुभ घरी मदिलरा गहाक वजायौ ॥१॥ वरषतु है आनंद सकल ब्रज भयौ सव कौ मन भायौ। आनक धुरे अनेक देखियतु व्यौम विमाननि छायौ ॥२॥ ब्रज पति भवन उदौ भयौ आगम मोहि सगुन सुभ आयौ। कहा कहौं वानिक गोकुल की वधुनि सिंगार वनायौ ॥३॥ हरषीं गावति आवति वाला सोभा निधि सरसायौ। इहिं विधि मंगल सज्यौ घोष पति सुर

संभ्रम उपजायौ ॥४॥ विप्र वेद उच्चारत वंदी जननि ललित जस गायौ। सूत पुराननि बांचत निर्मल कुल जस बरनि सुनायौ ॥५॥ घर घर रचना घर घर मङ्गल दान महा झर लायौ। आवति भेट चली घर घर तें लै अति मान बढ़ायौ ॥६॥ रोहिनीं कूषि मल्हावति पुनि पुनि जिन कुल बिरद बुलायौ। जसुमति दै सनमान सबनि कौ विविधि भाँति पहिरायौ ॥७॥ वैठे सभा बनाइ गोप पति सब सिर तिलक करायौ। भूमि दान गज दान बसन भूषन दै हियौ सिरायौ ॥८॥ श्री बलिराम प्रगट भये भूतल मङ्गल अवधि दिखायौ। नंद भाग परसंशत सबही अलभि लाभ यह पायौ ॥९॥ नाचत गोपी गोप बहुरि दधि कादौं खेल मचायौ। देत असीस सबै नर नारी औरो उदौ मनायौ ॥१०॥ सत्य सत्य बानी भई इहिं घर दिन दिन होहि बधायौ। वृन्दावन हित रूप अवधि सुख आजु दई दरसायौ ॥११॥३॥

राग देव गंधार—धन्य माई रोहिनीं भाग बली। मङ्गल कियौ नन्द मन्दिर आजु जस की विद्धि चली॥ सावन सुदी पंचमी सुभ तिथि सुकृत कूषि फली। भाँति भाँति गोकुल मैं उम्द्व लखियतु विधि जु भली॥ आरज गोपी गावति आवति सोभित घोष गली। जसुमति भाग प्रसंशति अपनौ मानति रङ्ग रली॥ कुँवर निरषि सब देति असीसैं प्रेम गहर दहली। वृन्दावन हित रूप हूजियौ हलधर प्रनित पली ॥४॥

—(*)(*)(*)—

❀ श्री प्रिया जू की जनम वधाई ❀

श्री राधा जू कौ जनम भादौं सुदी अष्टमी कौ

उत्सव प्रारम्भ—भादौं वदी चौदस से—वधाई गान रूप गुण कीर्तन

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कृत—राग सारङ्ग (नित्य होय है)

चलौ वृषभांन गोप कें द्वार । जनम लियौ मोहन हित स्यामा आनन्द निधि सुकुमार ॥१॥ गावति जुवति मुदित मिलि मङ्गल उच्चि मधुर धुनि धार । विविधि कुसुम कोमल किशलय दल सोभित वंदन वार ॥२॥ विदित वेद विधि विहित विप्र वर करि स्वस्तिनु उच्चार । मृदुल मृदंग मुरज भेरी डफ दिवि दुन्दुभि रवकार ॥३॥ मागद सूत वंदी चारन जस कहत पुकारि पुकारि । हाटक हीर चीर पाटम्बर देत सम्हारि सम्हारि ॥४॥ चंदन सकल धैंनु तन मंडित चले हैं ग्वाल सिगार । जय श्री हित हरिवंश दुग्ध दधि छिरकत मध्य हरिद्रागार ॥५॥१॥

गो० श्री दामोदर वर जी महाराज कृत—राग बिलावल

प्रगट भई वृषभांन कें आज । सकल तिमिर त्रिभुवन कौ भाज्यौ भवन भांन कें संतत राज ॥१॥ वंदन वार द्वार कल राजैं गान करति मङ्गल व्रज वाल । चित्रित चौक वनैं जित तित हीं नव निधि रंग सुगंधि सुमाल ॥२॥ नाचति गावति वर जुवती जन हरषि हरषि उर वहु कुलकात । नव नव जूथ वनी वनिता वर महा प्रेम वोलति मृदु वात ॥३॥ कंचन कुंभ वनैं सिर ऊपर वीच रुचिर चल दल की डार । दधि मथि हरद लेप कृत छिरकत अवनी पर मोरस के पार ॥४॥ टूटे हार वहुत नग भूपन देति परस्पर प्रमुदित नारि । ताल मृदंग उपंग वजावत मोद विनोद कहत हँसि गारि ५ महा भीर

वनिता सब फूलीं निरखत मुख वारति तन प्रांन। उड़त गुलाल वजति दुन्दुभि धुनि कोलाहल सुनियति नहिं कांन ॥६॥ अंस वाहु मिलि मुदित परस्पर सुख वरषत अति आनन्द तन मन। कवहूं चरन कमल छवि पेखन कवहूँ जुग कर कंज छुवत तन ॥७॥ सहज सदा वपु रहत निरंतर कारन प्रगट रसिक जन हेत। जय श्री दामोदर हित नित्य किशोरी जुगल वसत वृन्दावन खेत ॥८॥२॥

गो० श्री कमल नैंन जी महाराज कृत—राग आसावरी

नवल नृपति वृषभांन राइ कैं वाजति आजु वधाई री। घुरत निसांन करत कौतूहल कीरति कन्या जाई री॥ अपनैं अपनैं ग्रह तें सुनि सुनि कंचन थार सजाई री। भूषन वसन पहिरि विविधि भाँतिनि के गोपराज घर आई री॥ कीरति रहसि रहसि सुख फूलीं आनंद उर न समाई री। इच्छा सुफल भई मन में की पूरव लौं दिन पाई री॥ जसुदा सुनि आनंद अति वाढ्यौ मोहन की करौं सगाई री। जै श्री कमल नैंन रसिकनि की प्यारी प्रांन जीवनि सुखदाई री॥३॥

राग आसावरी—प्रगटी श्री वृषभांन गोप कें सोभा की निधि आई री। धन्य भाग कीरतिदा रानी जिन यह कन्या जाई री॥ सुनत हीं धाईं सखी सहेली मन वाँछित फल पाई री। हाथनि कंचन थार विराजत मङ्गल गावति आईं री॥ महारानी कीरति आदर दै भीतर भवन वुलाई री। भूषन वसन विविधि ना ना रँग नख सिख तें पहिराई री॥ दधि कादौं भादौं भरि लायौ आँगन कीच मचाई री। राधा मोहन जोरी अविचल जै श्री कमल नैंन सुखदाई री॥४॥

राग धनाश्री आजु वधावनौ वृषभांन नृपति दरवार । वड़े वड़े गज राज इन्द्र पद देत न लायौ वार ॥ जाचक तौ वहुतै सुनि आये गावत मंगल चार । देखत सोभा सुरपति भूल्यौ पावत नाहिन पार ॥ जस वितान तान्यौं जु सभा मधि दिये रतननि भरि थार । जै श्री कमल नैंन हित यह रसिकनि की संपति प्रांन अधार ॥५॥

गो० श्री हरिलाल जी महाराज कृत—राग मारू

ढाढी रङ्ग भरयौ गावै । नाचत लै लै नांम गोपनि के पुनि पुनि ललीय मल्हावै ॥ गाजत राजत सिंघ पौरि में शुक सारोहि पढ़ावै । जै श्री हित हरिलाल वढ्यौ सुख सागर कहत कह्यौ नहिं आवै ॥६॥

गो० श्री ब्रज भूषण लाल जी महाराज कृत—राग रामकली

नंदराइ कौ ढाढी आयौ, कुँवरि जनम कौ मङ्गल गायौ ॥टेक॥ वड़े सिंघासन बैठि भांन जू विप्रनि दान दियौ मन भायौ । कनक रतन मुक्तनि के भूषन दै जाचक कौ मान वढ़ायौ ॥१॥ महाराज वृषभांन जांन वड़ स्यौं घरनी वहु विधि पहिरायौ । मागद चारन अरु वंदी जन मान राषि कंचन झर लायौ ॥२॥ नाचत गावत करत कुलाहल माखन हरद दही ढरकायौ । देत असीस सकल नर नारी धन्य कृषि कीरति फल पायौ ॥३॥ अष्ट सिधि नव निधि द्वार वुहारति रमा सहित संपति सिरनायौ । जसुमति कैं व्रज भूषन हित उत इत राधा रस नाम कहायौ ॥४॥७॥

राग मारू—ढाढिनि नंद गांव तें आई । श्री वृषभांन राइ की रानीं कीरति कन्या जाई ॥१ आपुन झाँझि वजावति

गावति ढाढी हुरक वजाई। कीरति रानी अति आदर दै भीतर भवन वुलाई ॥२॥ ढाढिनि जाइ महल में नाची अति आनन्द रस भीनीं। श्री वृषभांन राइ की ढाढिनि संग गावति परवीनी ॥३॥ दोऊ मिलि रहसि वधाई गाई आनन्द मोद वढ़ाये। तव कीरति जू रीझि आपनैं भूषन सव पहिराये ॥४॥ श्री वृषभांन राइ ढाढी कौं अभरन अंवर दीनैं। विदा भये वहु दांन मांन दै दै असीस परवीनैं ॥५॥ श्री वृज भूषन यह ढाढिनि गाई परम प्रेम रस भीनीं। श्री कीरति जू जानि मनोरथ रज चरन लली की दीनी ॥६॥८॥

गो०श्री रूपलालजी महाराज कृत–राग धनाश्री-वन्शावली-दोहा (सैंन भोग में)

नमो नमो पावन करन हित अनन्य हरिवंश। जुगल ध्यान गुन गान करि हरी सूल जिय संश ॥१॥ वरनौं चाहत कछुक अव श्री राधा परिवार। देहु वुद्धि हित रूप कौं श्री हरिवंश उदार ॥२॥ आगम आदि पुरान मथि वाँचि साँचि उर धारि। वंश कहौं वृषभांन कौ ताही मत अनुसारि ॥३॥चौतुका॥ ढाढ़िया वृषभानु राइ कौ कुँवरि जनम सुनि आयौ हो। सभा विराजत सिंघ पौरि सव गोपनि कौं सिर नायौ हो ॥ मही भांन सुख भांन जू रतन भांन मन भायौ हो। श्री वृषभांन वहुत कछु दीनौं ढाढी निकट वुलायौ हो ॥१॥दोहा॥ वंश कह्यौ वृषभानु कौ कछु संछेप वताइ। अव कीरति के पिता कौ कहौं सुजस समुझाइ ॥४॥चौतुका॥ इंदुसैंन की मुखरा रानीं ताकौ सुजस सुनाऊ जी। तिनकी सुता भई कीरतिदा गुन गन कहत लज्याऊँ जी ॥ अष्ट सिधि नव निधि ताकें पाइनि लागी नैंकु न सोहै जी कोटि कोटि रति सची

उमा सी इन्हें गनैं तहाँ को है जी २ दोहा। भवन नृपति वृषभानु कौ कीरति जू कौ राज। अष्ट सिद्धि नव निधि तहाँ सेवत लियें समाज ॥५॥चौतुका॥ महाराज वृषभांन राइ जू कीरति जी वरु पाये जू। प्रथमहीं सुभग सुघर सुंदर अति श्रीदामा सुत जाये जू ॥ साधु सुभट वड़ सील चतुर वर सखा कृष्ण कौ प्यारौ जू। ताकें जनम दान वहु पायौ भवन भवन तें न्यारौ जू ॥३॥कवित्त॥ सहस्र गोप कौ जूथ जूथ पति एक जु ताकौ। जूथ संग सत रहैं नाम जूथेश्वर ताकौ ॥ पसु चारक जूथे सुजस श्रीदामा सम नांहिं। मधि नायक श्री कृष्ण संग चलत दियें गलवांहिं ॥१॥चौतुका॥ अव प्रगटी श्री कुँवरि लाड़िली सुंदरता की ग्रैंना जू। नख सिख आनंद पुंज अंग अँग अमृत श्रवित मुख वैंना जू ॥ जिहिं रस पान करत मन मोहन अविनासी पद पायौ जू। जाकौ रूप निहारि हारि हरि औरु न कछू सुहायौ जू ॥४॥दोहा॥ रूप सिंधु गुन अवधि सुनि वचनामृत रसखानि। जोग जग्य तप दान व्रत ये नहि नाम समान ॥६॥चौतुका॥कोटि कोटि लच्मी कर जोरैं सनमुख रूप निहारैं जू। निरखि निरखि मुख प्रांन प्रिया कौ तन मन सर्वसु वारैं जू ॥ पूरन पुरुष पुरान भयौ पुरुषोत्तम नाम कहायौ जू। श्री राधा राधा नाम रटत ही नव किशोर पद पायौ जू ॥५॥दोहा॥ नित्य सुद्ध अहिलादिनी सक्ति अनंत अपार। नंद नंदन हित जन्म लै प्रगट भई सुकुँवार ॥७॥चौतुका॥ भीर भई वृषभानु भवन मैं नाँचति नारि सुहाई जू। गावत ग्वाल सवै हेरी मङ्गल मोद वधाई जू ॥ श्री वृषभांन राइ वड़ भागी दान देत नहीं हारैं ज चारि लच्छि दई धेंनु द्विजनि कों औरनि

लहर विडारै जू ॥६॥दोहा॥ चारि लाखि विप्रनि दई गाइ सिंगारि सिंगार। और द्वार मांगन गये तिन दिये लहर विडार ॥८॥चौतुका॥ ढाढिहि दियौ हार मुक्ता कौ कुँवरि जनम जस गायौ जी । जुगल नाम कौ वागौ दै हित रूपलाल पहिरायौ जी ॥६॥६॥

राग आसावरी—नवल प्रेम भरी बाला ॥ जुरि चलीं भांन घर। कंचन वरन वसन पहिरें तन गावत गीत रसाला ॥१॥ कवरी गुही जुही फूलन सौं श्रेनी चढ़ी हजारा। चिकुर चंद्रिका राजत गाजत छबि कौ राज दुवारा ॥२॥ गौर छटा दामिनि ज्यौं राजत नीलाम्बर के माँझ। मानौ इन्दु किरिनि चहुँ दिसि तें उदित भई है साँझ ॥३॥ दुलरी हार हमेल वजौठा वाजूबंद अति राजैं। पहुँची गजरा रतन चौक कर मुँदरी नग छबि छाजैं ॥४॥ रतन जटित कंचन के नूपुर सुंदर मृदु पग सोहैं। मनु नख चंद किरिनि प्रकासी त्रिभुवन कौ मन मोहैं ॥५॥ गज गवनी कवनी अवनी पर चलति छबीली चाल। कंचन थार लसत कर कमलनि वारौं इंदु रसाल ॥६॥ पहुँची श्री वृषभांन भवन मैं आनन्द उमग्यौ भारी। नाचत गावत करत कुलाहल प्रेम छके नर नारी ॥७॥ गुन निधि छबि निधि सुख निधि राधे की कीरति कीरति छाई। हरषत वरषत सुमन देव मुनि देत असीस सुहाई ॥८॥ इहिं विधि छबि की छटा छबीली कापै वरनी जाई। जै श्री रूपलाल हित हिय में राखी नैंननि मांझ समाई ॥६॥१०॥

राग विभास—आजु सुनि मङ्गल मोद भयौ। मोहन के आनन्द की मूरति राधा जू जनम लियौ १ हरषित ब्रज

बनिता बनि आई उपजत प्रेम नयौ नाँचत नंद जसोदा गोपी कान्हर वारि दयौ ॥२॥ दुन्दुभि व्योम विमान कुसुम झर सुजस वितान छयौ । भये मनोरथ रूपलाल हित दुरित विनास गयौ ॥३॥११॥

राग चैती गौरी—अहो हेली मंगल रूप निधान वधावौ मिलि गावौ री ॥टेक॥ सकल सुख की खानि स्वामिनि लाड़िली रस रासि । सक्ति सर्वेश्वरि सिरोमनि प्रगटी है प्रेम प्रकासि ॥ वधावौ मिलि गावौ री ॥१॥ सुनहु अद्भुत चरित इनके रसिकमनि कें हेत । नित्य नैमित्यक प्रगटि हित लीला नेह निकेत ॥२॥ विविधि रास विलास हास प्रकास ब्रज वन कुंज । दियौ सवनि सुहाइ विधनां निरखौ आनंद पुंज ॥३॥ मगन तन गोपिका सजि चलीं कंचन थार । मनौं सलिता प्रेम की छवि सागर मिलीं हैं निहार ॥४॥ ललित मुख लखि वारनैं लै नैंन हृदय सिराइ । दुग्ध दधि नवनीत हरदी छिरकत प्रिये गुन गाइ ॥५॥ पंच शब्द निसान वाजैं नृत्य गोपी गोप । ओटि पट अंचल कहत सव भई है मनोरथ रोप ॥६॥ सुनि वधाई दैंन आये नंद जसुमति साज । गोद कान्हर लिये निरतत पूरे वाँछित आज ॥७॥ पाँवड़े दै भवन लीनैं मांन अति चित चाइ । सजन दोऊ मिलत आनंद वढ्यौ सु कह्यौ न जाइ ॥८॥ निरखि शोभा सिंधु प्यारी वारि लालहि देति । हरषि प्रेम मगन जसोमति कीरति लालहि लेति ॥९॥ गुनी जाचक सूत मागद देत उमगि असीस । रतन भूषन हय पटंवर मांन करत वकसीस ॥१०॥ रमा संकर विधि सनक मुनि नारदादिक आइ । कहत हम व्रज क्यौं न प्रगटे निरखत नैंन सिराइ ११ अमर

गन वनिता सहित जय जय रही धुनि पूरि । पुष्प वृष्टि करत कहत हैं ब्रज जन भाग हैं भूरि ॥१२॥ आरतौ हित रूप अलि लै करति वारंवार । निरखि यह सुख संपदा तन प्रान करत वलिहार ॥१३॥१२॥

राग विभास—आजु वधावौ गावौ मंगल चार । मन मोहन की आनंद मूरति प्रगटी रस आगार ॥१॥ सिधि रिधि निधि ग्रह ग्रह प्रति राजैं द्वारनि वंदन वार । पंच शब्द धुनि दिवि भुव सोभा सकल सुखनि कौ सार ॥२॥ सुर विमान कुशुमावलि वरषत जै जै शब्द उचार । रमा उमा रति सची सरस्वती दरसन पावैं वार ॥३॥ धनि कीरति वृषभांन धन्य वरसानौं ब्रज नर नारि ॥ महा मोद हित रूप अनूपम निरखि हरखि वलिहारि ॥४॥१३॥

राग कान्हरो ताल रूपक—महा वड़ भागिनि हो कीरति रानी गोद खिलावै श्री राधा । नंद नँदन हित प्रगट भई है सब सुख संपति साधा ॥ ब्रज वन रास विलास केलि कल प्रीतम प्रीति अराधा ॥ जै श्री हित अलि रूप अनूप ध्यान धरि मिटैं सकल भ्रम वाधा ॥१४॥

राग विभास—आवौ आवौ हो वृषभांन जु कैं द्वार । सुजस वधावौ मंगल गावौ कीरति कुँवरि निहारि ॥१॥ शिव विधि शुक सनकादिक नारद जै जै कहत पुकार । आगम निगम अगोचर राधे रसिक सिरोमनि सार ॥२॥ नंद नँदन हित जनम लियौ है गोपनि प्रान अधार । सुर नर मुनि जाकौ ध्यान धरत है सो ध्यावत निर्धार ॥३॥ ग्रह ग्रह पुर पुर सव ब्रज वीथिनि आनंद वढ्यौ अपार । जै श्री हित अलि रूप अनूप प्रेम छकि छाई लखि वलिहार ॥४॥१५

राग विभास—मोहनी मोहन जू की आई, अद्भुत रूप अनूपम कन्या कीरति रानी जाई ॥१॥ महा मोद मंगल कौ उदभ्व प्रगट भयौ सुख दाई। फूले नंद जसोदा गोपीं फूले कुँवर कन्हाई ॥२॥ सुर विमान कुशुमावलि वरसत जै जै धुनि रही छाई। हरदी दूध दही की कादौं गोपी गोप मचाई ॥३॥ पंच शब्द धुनि वाजे वाजें गान वैंनु धुनि लाई। अष्ट सिद्धि नव निद्धि सुख संपति रमा सहित सिरनाई ॥४॥ धुजा पताका तोरन ग्रह ग्रह मङ्गल कलश सुहाई। जै श्री हित अलि रूप निरखि सुख सुख मय कुँवरि लई अपुनाई ॥५॥१६॥

राग गौरी—व्रज पुर पुर नर नारि महा मङ्गल छायौ। धनि यह लगन महूरत सुभ दिन श्री राधा जनम सुहायौ॥ महा मङ्गल छायौ ॥टेक॥१॥ शिव विधि नारद सारद सुर मुनि कुशुमावलि वरसायौ। दिवि भुव दुन्दुभि जै जै जै धुनि इंद्र निसान वजायौ ॥२॥ धुजा पताका ग्रह ग्रह राजति वरसानौं सरसायौ। कीरति श्री वृषभानु नंद जसुदा कंचन भर लायौ ॥३॥ अष्ट सिधि नव निधि डगर वगर मैं जाचक मान वढ़ायौ। मन वाँछित हित रूप त्रिभंगी भयौ मनोरथ भायौ ॥४॥१७॥

राग देव गंधार [वरस गांठि]—वरस गांठि दिन जनम वधाई। सुनि हो कीरति कुशल छैम सौं कुँवरि कृपा तें आई ॥१॥ सुदिन आजु वड़ भाग तिहारौ सुकृत घरी यह पाई। महा मोद मङ्गल की मूरति निगमनि अगम वताई ॥२॥ मृदु मुसिकाइ समाज साज सव मंगल घोष गवाई। पट भूषन उर माल वाल सव गोपीं जन पहिराई ॥३॥ वनि वनि वनिता भवन भवन तें वरसानैं छवि छाई। तैसेई गोप ओप सौं राजत फूले अं

न माई ॥४॥ नाँचत गावत प्रमुदित ह्वै ह्वै दधि कादौ भर लाई। जसुमति नंद वधाई लाये आनंद उर अधिकाई ॥५॥ कान्हर गोद मोद अंग अँगनि मन मैं धरी है सगाई। ग्रह ग्रह धुजा पताका तोरन दिवि दुन्दुभि सुखदाई ॥६॥ सुर विमान कुशुमावलि वरषत जै जै धुनि मन भाई। शिव विधि शुक सनकादिक सारद नारद मुनि गन गाई ॥७॥ अष्ट सिधि नव निधि ग्रह ग्रह पूरित मन वाँछित निधि पाई। जै श्री हित अलि रूप अनूप निरखि सुख सोभा रही लुभाई ॥८॥१८॥

राग रामकली—श्री व्रषभांन भवन में वधाई री वाजै। आनंद निधि प्रगटी भुव तल में नंद नंदन हित काजै॥ महा मोद ब्रज वन तरु वेली गोपी गोप समाजै। जय जय जय धुनि दिवि भुवि दुन्दुभि सुनत अमंल भाजै॥ चित चिंतत यह सुख विधि संकर कहत सारदा लाजै। जै श्री हित अलि रूप निरखि मुख सुख मय सुफल किये द्रग आजै ॥१६॥

राग विभास—ब्रज जुवती मिलि गावति मंगल मोद भयौ। आठैं तिथि गुन नछत्र विशाषा श्री राधा जनम लयौ॥ दिवि दुन्दुभि अरु धुजा पताका सुजस वितान छयौ। कीरति भांन जसोदा नंद नँदन आनंद दयौ॥ दधि कादौं भादौं वरसानैं गोपी गोप ठयौ। कोटिक सुत अवतारनि वारौं प्रेम सिंधु उमयौ॥ भांनमती रचि धरे साथिये जग त्रय ताप गयौ। कीरति दई पँजीरी रूपहि अंकुर भक्ति वयौ ॥२०॥

राग सारङ्ग—आजु महा मङ्गल निधि माई। मन मोहन आनंदनि प्रगटी श्री राधा सुखदाई॥ सव सुकृतनि की संपति आई ब्रज जुवती मन भाई। हरषि हरषि नाचत सव ब्रज जन

बांटत विविधि वधाई ॥ पंच शब्द वाजे वाजत धुनि दिसनि दिसनि रही छाई । नंद जसोमति सर्वसु खरच्यौ फूले कुँवर कन्हाई ॥ सुर विमान छायौ नभ जय जय कुशुमावलि वरषाई । जै श्री रूपलाल हित मन वांछित फल परिपूरनता पाई ॥२१॥

राग सारङ्ग—आनंद आजु वधाई अरी वृषभांन जु कैं आई । सर्वस्वरि सुख दाइक लाइक कीरति कन्या जाई ॥ सखी सहेली मंगल गावौ लावौ थार सजाई । जित तित दुन्दुभि रव सुनियत हैं सुर विमान रहे छाई ॥ गरजि गरजि घन वरषत हरषत भादौं झरी लगाई । फूले नारी मिलि निर्तत दधि की कीच मचाई ॥ धरति सवासिनि सथिये रचि रचि मांगति नेग चुकाई । मागद सूत पढ़त विरदावलि मन वांछित फल पाई ॥ नंद जसोमति सर्वसु वारति किलकत कुँवर कन्हाई । त्रिभुवन मोद वढ्यौ सवहिनु कैं वरनत कवि न अघाई ॥ पूरन भई कामना सवकी गोपनि हेरी गाई । जै श्री रूपलाल हित ललित त्रभंगी जोरी अविचल माई ॥२२॥

गो० श्री निशोरी लाल जी महाराज कृत—राग धनाश्री

मो मन भायौ री माई । कीरति रानी कूपि सिराई ॥१॥ रूप अवधि जनमी जहाँ राधा । देखत पूजी सम मन साधा ॥२॥ भवन भवन पर धुजा पताषा । प्रगट भई मनु शोभा साषा ॥३॥ वंदन माल जलज मणि तोरन । हँसत सदन मनु आनंद ओरन ॥४॥ नवल नूत दल माल ठये है । मंगल मनु अंकुरित भये है ॥५॥ चंदन मुक्ता चौक झलमले । मनु अजिरन के भाग कलमले ॥६॥ दीप अवलि मणि धरु मधि झाई । मानौं ऊगि उठी चतुराई ७ वीथिनु रचना रुचिर वनाई

कमला हू उत्कंठत बौराई ..८.. चहुँ दिस तें वर भाँमिनि गवनीं। अंबुद रूप ऊनयौ मनु अवनीं ॥९॥ गौर तेज तन निरखति गोपी ॥ श्री हू तें अधिक भाग्य जे ओपी ॥१०॥ आईं महरि भयौ मन भायौ। निगम तत्व जिन गोद दुरायौ ॥११॥ सर्वसु खरचति मोहन जनिता। गहि गहि बाँह नचावति वनिता ॥१२॥ खेलत गाइ गोप जहाँ ठाढ़े। निरति ग्वाल प्रेम पथ बाढ़े ॥१३॥ श्री वृषभान उदार महा मन। मान सहित दियौ दान अमित धन ॥१४॥ गोरस वहत पनारे भवननु। आनंद वारि वहत भुव दृग जनु ॥१५॥ जसुमति सुत कीरति सुठि कन्या। जनमत भयौ सकल व्रज धन्या ॥१६॥ कौतुक मुख लखि गये ताप दलि। जै श्री किशोरी लाल हित रूप जाऊ वलि ॥१७॥२३॥

गो० श्री रसिकानंद जी महाराज कृत—राग सारङ्ग ताल आड़

श्री वृषभांन भवन महा मङ्गल राधा जनम लयौ है हो। नंद नंदन अहिलाद हिये कौ सो अब प्रगट भयौ है हो॥ अब नित नित सुख बाढ़ै है ब्रज वन त्रिभुवन मोद छयौ है हो। जै श्री रसिकानंद हित रूप लली लखि तन मन ताप गयौ है हो॥२४॥

गो० श्री दयासिंधु जी महाराज कृत—राग आसावरी ताल आड़

श्री वृषभांन भवन में सजनी वाजति आजु वधाई। जनमीं राधा रूप अगाधा नंद नँदन सुखदाई ॥ धुजा पताका वंदन माला भवन भवन छवि छाई। जै श्री दयासिंधु हित नंद जसोदा सुनि मुद भरे महाई ॥२५॥

गो० श्री कृपा सिंधु जी महाराज कृत—राग धनाश्री ताल आड़

आजु भांन भवन मैं उदौ भयौ कीरति कूषि सफल भई

देखौ लोक लोक मैं जस छयौ ।। श्री राधा कैं जनम होत ही सव ब्रज कौ दुख नसि गयौ । याही लली की पद रज सेऊँ जै श्री कृपा सिंधु हित पन लयौ ॥२६॥

श्री व्यास जी महाराज कृत–राग देव गंधार-सारङ्ग

आजु वधाई है वरसानैं । कुँवरि किशोरी जनम लियौ सव लोक वजे सहदानैं ॥१॥ कहत नंद वृषभांनराय सौं और वात को जानैं । आजु भैया ब्रजवासी हम सव तेरेई हाथ विकानैं ॥२॥ या कन्या के आगैं कोटिक वेदनि कौ अव मानैं । तेरें भलैं भलौ सवहिनु कौ आनंद कौंन वखानैं ॥३॥ छैल छवीले ग्वाल रँगीले हरद दही लपटानैं । भूषण वसन विविधि पहिरें तन गनत न राजा रानैं ॥४॥ नाचत गावत प्रमुदित ह्वै नर नारिनु को पहिचानैं । व्यास रसिक सव तन मन फूले हैं नीरस सवै खिसानैं ॥५॥२७॥

राग सारङ्ग—भैया आजु रावलि वजति वधाई । ढोल भेरि सहनाइनु धुनि सुनि खवरि महावन आई ॥१॥ वह देखौ वृषभानु भवन पर विमल धुजा फहराई । दूव लियें द्विज आयौ तवहीं कीरति कन्या जाई ॥२॥ नंद जसोदा फूले तन मन आनंद उर न समाई । मंगल साज लियें वृज सुन्दरि गावति गीत सुहाई ॥३॥ चोवा चंदन अगर कुम कुमा भादौं कीच मचाई । व्यास दास कुँवरि मुख निरखत कुसुमावलि वरसाई।४।२८।

राग सारङ्ग–वाजति आजु वधाई वरसानैं में । श्री वृषभांन राइ जू की रानी कुँवरि किशोरी जाई वरसानैं में ॥१॥ गोपी संग लै महरि जसोदा मङ्गल गावति आइ वरसानैं में । नंदीश्वर तें नाचत नंद महर घर वात लुटाइ वरसानें में २ फूले,

ब्रजवासी सब नाँचत दधि की कीच मचाई बरसानें में । लटकत फिरत श्रीदामा हँसि हँसि दीनी है नंद दुहाई बरसानैं में ॥३॥ व्यौंम विमान अमर गन छाये कुशुमावलि बरसाई बरसानैं में । भये मनोरथ व्यास दास के फूल भई अधिकाई बरसानैं में॥४॥२६॥

राग सारंग—आजु बधाई बाजति सबलि । श्री-वृषभांन राइ घर प्रगटी स्यामा स्याम सुखावलि ॥ ग्रह ग्रह तें गोपीं बनि आईं आनंदित नंदावलि । मानौं कनक कंज मकरंदहि पीवत जीवत मधुपावलि ॥ नांचत गावत वैंन बजावत हेरीं देत गुपावलि । दधि कादौं भादौं झर लायौ प्रेम मुदित व्यासावलि ॥३०॥

राग सारंग—आजु वृषभांन कें आनंद । वृन्दावन की रानी राधा प्रगटी आनंद कंद ॥ जसुदादिक आईं सब गोपीं प्रमुदित आनंद चंद । गोधन गाइ सिंगारि लै आये ब्रजपति बाबा नंद ॥ फूले ब्रजवासी सब नांचत प्रफुलित गावत छंद । माखन दूध दही की कादौं तन कुम कुम मकरंद । देत परस्पर आभूषन अरु हाटक सुरभि अमंद । प्रगट भये सुख पुंज व्यास के दूरि भये दुख द्वंद ॥३१॥

राग गौरी—प्रगटी श्री वृषभानु नंदिनी चलहु बधाई बाजै । भादौं मास उज्यारी आठैं मंद मंद घन माला गाजै ॥ ब्रज वनिता धावति आवति कल गावति गांव गांव तें राजैं । विगलित वसन रसनि लट लटकति नाचति पुरुषै नहिं लाजैं ॥ आनंद भरी नंद जू की रानीं देत वसन पसु भाजैं । उद्दौ भयौ ब्रज वल्लव कुल कौ व्यास वचन परि छाजैं ॥३२॥

राग मारू—ढाढिनि ब्रजरानी जू की कीरति जू पै आई जू । भवन प्रकास करन कुल कन्या भांन नृपति घर जाई जू

।१।। मम पति हौं हरषी आनंद सुनि उर आनंद न समाई जू । उमहे सब जाचक त्रिभुवन के सुनि यह सुजस वधाई जू ।।२।। कीजै ममहि अजाचक कुल रानी जाचक अनत न जाई जू। दीजै रतन मुक्ता मणि मानिक नग निरमोल मगाई जू ।।३।। तौ दीजै जौ सात पीढ़ी के दोऊ वंश वखानौं जू । नंदराइ वृषभांन राइ की कुल परपाटी जानौं जू ।।४।। वंश अभीर महा वाहु नृपति भये कंज नाभि कौं गाऊ जू । भुव वल चित्रसैन अज मीढ़ौ जस परजन्य सुनाऊ जू ।।५।। महा भाग कुल तिलक नंद जू तिहिं कुल कीरति गाई जू । तिहिं घर सुभग स्याम घन सुंदर मङ्गल मोद सदाई जू ।।६।। अब सुनि गोप वंश कौं रानी सर्वोपरि रजधानी जू। अष्ट सिद्धि नव निधि कर जोरैं कमला निरषि लज्यानी जू ।।७।। भये रति भांन सुभानु मेरुसम उदैभांन रति मानी जू । भांन अरिष्ट मही भांन जाइ वड़ कंज भांन सुख दानी जू ।।८।। वंश तिलक प्रगटे जाकें कुल श्री वृषभांन विनानी जू । वड़ा वंश वरनन कौं लघु मति कीरति जाति न जानी जू ।।९।। अति आनंदित प्रेम मगन तन जस गाइ सुनाऊ जू । कीरति रानी की कल कीरति आनंद मोद वढ़ाऊ जू ।।१०।। अब तुम मोकौं देहु कृपा करि जो हौं मांगन आइ जू। अपनी लली पर करि न्यौछावरि दीजै रहसि वधाई जू ।।११।। लै ढाढिनि पाटंवर अंवर नग निरमोल मगाई जू। देति असीस कहति ढाढिनि यौं दिन दिन रहसि वधाई जू ।।१२।। नांचति गावति चली भवन तें उर आनंद न समाई जू । तिहिं कुल श्री वृषभांन नृपति की कन्या व्यास जु गाई जू ।।१३।।३३।।

राग मारू—नांचत गावत ढाढिनि के संग ढाढी हुरुक बजावै रे। नंदराइ कौं सत सखिया वृषभांनहि माथौं नावै रे ॥१॥ गोप राजकुल मंडन जु की कीरति को कवि गावै रे। बरनत बदन थके फनपति शिव सारद पार न पावै रे ॥२॥ यहै मनोरथ सब काहू कें कीरति कन्या जावै रे। होंहि सफल सब सुकृत सबनि के मंगल मोद बढ़ावै रे ॥३॥ गोपीं संग लै महरि जसोदा मंगल गावति आवै रे। व्रजवासी उपनंद नंद सब घर घर बात लुटावै रे ॥४॥ यह सुनियति सब काहू कें सुत जायैं जाचक आवैं रे। यह कन्या कुल मंडल व्यास वचन सांचौ मुहि भावै रे ॥५॥२४॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत—राग जैतश्री

आजु लली कौ सोहिलौ कुँवरि मेरी प्रगटी है आनन्द कंद ॥टेक॥ धन्य कूषि कीरतिदा रानी कीनौं कुल परकास। कौतिक अवधि कुंवरि यह जाई सफल भयौ व्रज वास ॥१॥ जग उद्योत ललित सुख सुंदर है सोभा कौ धांम। देखी सुनी न ऐसी कन्या अँग अँग अति अभिरांम ॥२॥ आजु उदौ वृषभांन भवन कौ निज सुख निरख्यौ नैंन। सब सुकृतनि की संपति पाई कहत बनें नहीं बैंन ॥३॥ होत कुलाहल गावत मङ्गल घोष वधायें आयौ। पुन्य पुंज वृषभांन नृपति कौ पायौ मन कौ भायौ ॥४॥ मोतिनु चौक मोल मणि चंदन गलीं सुगंधि सँवारी। रावलि रमित रवानीं राजति जनमीं है सुकुंवारी ॥५॥ रतन जटित बहु भाँति पताका मारग छाये फूल। मानिक चौकनि दिपत दुवारे रोपे हैं कदली मूल ॥६॥ महा महोत्सव गोप राज घर दूध दही की कादौं कुम कुम चोवा चंदन छिरकत

झर लायौ भर मादो ७ गोरस माट लुढावत आंगन नांचत मगन भये। वल्लवराज हिता चिरु जोरी उपजत चोज नये ॥८॥ दधि घृत माखन भिले गिरारे अजिर मुदित नव वाला। नर नारी हँसि भरत परस्पर मानौं मत्त मराला ॥६॥ गोपी ग्वाल मिले मधि निर्तत लटकत मगन भये। भूखन वसन गिरत नहिं जानत क्वरिनु कुसुम ढये ॥१६॥ गद गद सुर तन पुलक हरषि वर झूमत ग्रीवा वाहु। अति आवेश सुदेश सोभियत उमग्यौ है प्रेम प्रवाहु ॥११॥ तवहि हरषि रावलि रानैं जू हाटक हीर मगाये। चीर अमोल विविधि ना ना रंग वधू वंधु पहिराये ॥१२॥ भूपन वसन वंधु वधू पहिरे फिरि तव पाइ गहे। यह सुख सुकृत सुहृद हौ तिहारौ लोचन वारि वहे ॥१३॥ तव मागद वंदी जन सव दै जाचक धनिक करे। भवन भंडार उखेरि सौंज सव कसे है सकट भरे ॥१४॥ आइसु भयौ खदिक लख द्वै कौ ग्वाल हँकारि लये। महाराज राजनि के राजा लहरि विडार दये ॥१५॥ पूरन करी कांमना सव विधि रसिक सुरस आनंदे। नागरीदासि वास वरसानैं गौर चरन रज वंदे ॥१६॥२५॥

राग गौरी—नांचत रंग भरे रावलि आये। जसुमति नंद सहित सव गोकुल सौंजनि सकट भराये ॥१॥ तोरन कलश जलज मणि झालरि धुजा पताकनि द्वार वनाये। चंदन गलीं नगर की छिरकीं अजिरनि वरन वितान तनाये ॥२॥ जित कित श्रवन सुजस धुनि सुनियत जन्म नछत्र विमल गुन गाये। सुभ सुकुमारी प्यारी प्रगटी धन्य हिता जिन सच सहताये ३ श्री वृषभांन नृपति जू के घर पूरति मङ्गल

विविधि वधाये । यह सुख सपनें हूं नहिं भैया हो कहा भये वेटा हू जाये ॥४॥ धन्य कृपि कीरतिदा रानीं वल्लव कुल के तिमिर नसाये । सुंदरि सकल घोष परकासक अतुलित आनन्द नैंन सिराये ॥५॥ सोभा निधि उर धरी सिरोमनि ब्रज वन दिन दिन कौतिक छाये । रूप अवधि है सुता छबीली सुकृत पुंज वड भागिनि पाये ॥६॥ कुम कुम चोवा भर नर नारीं दूध दही के मांट लुढाये । निर्त्तत वाहु परस्पर कंधनि अव कल कारज मन के भाये ॥७॥ हँसत लसत लटकत रस भीजे कोलाहल वर भवन वढ़ाये । प्रेम मगन पट भूषन छूटत वोक वोघ गोरसनि वहाये ॥८॥ व्यौम विमांन अमर गन देखत सकल समूह कुशुम वरसाये । जय धुनि कह धनि मांनि अपन पौ हरषि हरषि नीसांन वजाये ॥९॥ अति उदार राजनि के राजा मानिक मणिनु सकल अघवाये । निपट निसंक दान नहिं उसरतु हाटक हीर चीर वगराये ॥१०॥ भांन नरिंद्र कुटुंव कौ मंडन सुहृदनि पट भूषन पहिराये । नागरीदास धनिक भये जाचक गोधन भवन भंडार लुटाये ॥११॥२६॥

राग गौरी—मंङ्गल है वृषभांन राज घर । जाई कुँवरि कीरतिदा रानी छवि अगाध अतुलित आनन्द भर ॥१॥ नन्दीश्वर तें सौंज सकल भरि आये वधायें महरि महा महर । वड़े भाग वल्लव कुल मंडन दूव वंधावत भेंटि परस्पर ॥२॥ सिर दधि ढोरि हरषि मुख मांडति सुकृत समूह फले इहिं औसर । लटकत फिरत रंग रस भीनें हरषि उछाहु वाहु अंसनि पर ॥३॥ गोरस मांट लुढावत आंगन नांचत प्रेम मुदित नारी नर घृत मधु माखन दधि अजिर भिने मानहु मुदित मराल

सबांपर सुत समेति वारि जसुमति कौ रहे सीस दै सुता चरन तर ५ धन्य हिता जिन कुँवरि कूंषि धरी रूप अनूप कुशल कौतिक वर । कुल परकास रसिक जन जीवन नागरीदास सिराने थिर चर ॥६॥३७॥

राग गौरी—वजति वधाई वृषभांन राज घर । वर वरसानैं सुख सरसानैं नाचत मेल मिले नारी नर ॥ दूव हरद रोचन मुख मांडत हँसि हँसि भरत जु फूल परस्पर । गोपी ग्वाल महा मद माते गाइ जनम मङ्गल गद गद सुर ॥ गरैं वाहु दै लट-कत डोलत महा मुदित अनुराग रंग भर । भूषन वसन गिरत नहिं जानैं नागरीदास लग्यौ आनंद झर ॥३८॥

राग गौरी—वजति वधाई वृषभांन जू के रावर । व्रज सव सिकिलि महोछैं आयौ भये मनोरथ मन के भावर ॥ नन्द जसोदा सर्वसु खरच्यौ पग गहि कुँवर कियौ न्यौछावर । कछु न सम्हार गोप कुल मंडन फूले फिरत प्रेम लड वावर ॥ धन्य कूषि कीरतिदा रानी कुँवरि रूप निधि जनमीं जावर । कोऊ न कृपन रह्यौ इहि अवसर नागरीदास पोषे जंगम थावर ॥३९॥

राग सोरठ—वरसानौं हमारी रजधानी रे । महाराज वृषभांन नृपति जहाँ कीरतिदा सुभ रानी रे ॥ गोपी गोप ओप सौं राजत वोलत मधुरी वानी रे । रसिक मुकट मणि कुँवरि राधिका वेद पुरान वषानी रे ॥ खोरि साकरी मोहन ढूंक्यौं दान केलि रति ठानी रे । गहवर गिरि वन वीथिनु विहरत गढ़ विलास सुख दानी है ॥ दूध दही माखन रस घर घर रसना रहति लुभ्यानी रे पान करन कौं अमृत सर पर भांनोखरि

कौ पानी रे ॥ सदा सर्वदा परवत ऊपर सोभित श्री ठकुरानी रे। अष्ट सिद्धि नव निधि कर जोरैं कमला निरखि लज्यानी रे ॥ दीनैं लेत न चारि पदारथ जाचक जन अभिमानी रे। नागरीदास वास दृढ़ कीनौं भागमती जग जानी रे ॥४०॥

श्री नागरीदास (नागरिया) जी महाराज कृत—राग काफी

आज वृषभांन कें दरबार खुस वखतियां। लिया जनम जहांन की साहिब घोखियां मैं उस वखतियां ॥ खरे ख्वांन भरि भरि कें आगैं कीयैं फरस फरूस। नागर शुनीं गवइये गावैं अजब जलूस जलूस जलूस ॥१॥ हुई अजब जलूस जग मगी। आई गोपियां सकल रंग मगी ॥ गोपा घर घर मङ्गल काज। वकसत जरी जवाहर आज ॥२॥ एहो ऐसीं होइ सदाई सादियां, सादियां दिल उदमादियां। लै लै नजर फजर मिलि आई वडडी साहिब गोप जादियां ॥ अगर धूप अरु वटैं अरगजा अतर वरग तंमोल। नागर अंदर महल महल में चहल पहल कल्लोल ॥३॥ चहल पहल कल्लोलनि डोलनि। झनक मनक पग नूपुर वोलनि ॥ नग मोती पट लेहो लेहो। रावर यह धुनि सुनियत एहो ॥४॥ हाँ हाँ मुबारक वादियाँ। अरी रानीं ऐसीं होय नित सादियाँ ॥ राधा चन्द्र मुखी प्रगटी विटियां और तारनि सीं गोप जादियाँ। फूलियाँ आँगन माँहि सलौनियाँ रङ्ग भरी रस वादियाँ। नागरीदास खुशी जिय में आजु गोपीं फिरैं उदमादियाँ ॥५॥४१॥

राग परज—हेली आजु की घरी छिन भलियाँ। घन आनन्द सकल ब्रज बरसत कीरति-वेलि सुफलियाँ ॥ इत प्रगटी गोरी उत स्याँम हिय आनन्द कलमलियाँ। नागरिया जोरी अति लौनीं हौनीं है रङ्ग रलियाँ ॥४२

राग काफी—बाजैं बधाईयाँ वो सैंयो भानु दें दरबार ॥ हुई सुता सोहिनी वो मनदी मोहिनी सुकुँवार ॥ आई सब गोपियाँ वो हिलि मिलि गावदीं खुसियाल ॥ जुरे सब लोक मङ्गल वो गुनीं जन बोल दै दै ताल ॥ गुनी दै ताला नाचैं ॥ ॥वाह वा॥ आंगन पहपट माचैं ॥वाह वा॥ भानुदी लाली जीवौ ॥वाह वा॥ दूधा अमृत पीवौ ॥वाह वा॥ खुशी दिल पांवां झूमां ॥वाह वा॥ लली दी टुंनीं चूँमां ॥वाह वा॥ उसीदा मङ्गल गांवां ॥वाह वा॥ दांन दुपट्टे पांवां ॥वाह वा॥ पावा पट दान मोती वो जांवां दिल फूल दे घर माँहि ॥ असादा हथ्थ टोडर वो बाजू बंद झूल दे बिच बाँहि ॥ तुझि पर घोलियाँ वो कीरति (दे) बोलियाँ दे सुनाइ ॥ धनि धनि आजुदा दिन वो दे दी दान क्यों न मंगाइ ॥ रानीं नें दाँन मंगाया ॥वाह वा॥ कंचन झर बरषाया ॥वाह वा॥ है वड भागिनि तूरी ॥वाह वा॥ करी मुरादाँ पूरीं ॥वाह वा॥ बीच खुशी दिन गाढ़े ॥वाह वा॥ मङ्गल मुखी तुसाढ़े ॥वाह वा॥ जनम जनम गुन गाँवाँ ॥वाह वा॥ नागर दरसन पाँवाँ ॥वाह वा॥४३॥

श्री अलि हरिलाल जी महाराज कृत—बधाई-पद

बेटी हुई भाँन कें अरु नन्द के फरजंद ॥ येही वाह वा है ॥ गया है दुख द्वंद अजू ब्रज में आनन्द ॥१॥ हम तौ गुनीं ब्रज के है तुम ब्रज के सिरताज । हमसे नहीं गुनी है अरु तुमसे महाराज ॥२॥ नाचैं ग्वालिनीं अरु नाचैं है सब ग्वाल । कीरति कें कन्या भई जसुदा के लाल ॥३॥ गावैं कौतूहल करि नाचैं खुशियाल । दूध दही हरद जरद रँगे सब ग्वाल ॥४॥ बैठे हैं आय कें वृषभाँन राय बाहर बखशे दिल

खुशी हुए जरजरी जवाँहर ॥५॥ नित नित होय सादियाँ जैसी हैं आज । भाँनराय नंदराय जीवौ महाराज ॥६॥ अरे लोगों आजि ह्वाँ सादियाँ सी क्या है । गोपी अरु गोप दान दें दाँ लाय लाय क्या है ॥७॥ नन्हीं सी मौंज पावें नन्हें से भाँड़। कोइ भक्तनि की खूब सूरति नन्हीं सी राँड़ ॥८॥ वृज में उत्साह आज सब कें मन भाया । जिसके मन न भाया सो पकरौ मेरौ खाया ॥६॥ सादी श्री ब्रजराज जू कें रोसनी लगाई । फा रिरीं रिरीं रिरीं छूटती हवाई ॥१०॥ गाय वकसे वैल वकसे, वकसे हैं घोड़े । हुये निहाल अमलदाँ ढोढे और खोड़े ॥११॥ खुशी सवहीं कौं हुई वृषभानु के उत्साह । जड़ौजी के लड़ा जो इनका चन्द ख्याह ॥१२॥ ठाड़े हैं भट्ट चट्ट और देखते मिसर्र । सुवा सारो मोर मैंना उड़ि गये सब फुर्र ॥१३॥ इततें आई भट्टनीं उततें आये भट्ट । चारौं चूतर मिलि गये चाकी कैसे पट्ट ॥१४॥ लाल कौं हँसावैं गौरी कानी मानी कुर्र । लौरी दें दुलरावती करती हैं हुर हुर्र ॥१५॥ भौंरा की फुर्र और फिर्की की फुर्र । झूमक की झनक झन्न वजती है खिर्र ॥१६॥ ढाढी भये जनम जनम आये अव शरण । अली हरिलाल कौं जु राखौ अव चरण ॥१७॥४४॥

श्री किशोरदास जी महाराज कृत—राग विभास

आजु वरसानें रङ्ग वधाई गुन निधि सुख निधि रूप प्रेम निधि कीरति कन्या जाई ॥१॥ वजत निसान झाँझ झालरि डफ भेरि प्रनव सहनाई । द्वार द्वार प्रति धुजा पताका भाँति भाँति फहराई ॥२॥ करनि रतन मनि जटित थार लै गोपीं सव मिलि आईं गावत गीतनि विविधि भाँति सौं

वंदन माल धराई ३ छिरकत फिरत दूध दधि घृत सौं आंगन कीच मचाई। जाचक जन मन पूरन कीनैं मन वांछित निधि पाई ॥४॥ कीरत रानीं अति उदार मन गोपी सब पहिराईं। देत असीस चलीं अपनैं ग्रह जीवहु लली यह माई ॥५॥ टेरि टेरि धन देत सबनि कौं लेहु लेहु धुनि छाई। ढाढिनि श्री वृषभानु कुँवरि पै हित किशोर बलि जाई ॥६।४५।

श्री दामोदर स्वामी जी महाराज कृत—राग आसावरी

भादौं सुदि आठैं उजियारी। श्री वृषभांन गोप कें मंदिर प्रगटी राधा प्यारी ॥१॥ नाँचति नारि नवेली छवि सौं पहिरैं रँग रँग सारी। मंगल घर घर दिखि वरसानैं कहत रमा हौं वारी ॥२॥ इक आई इक आवति गावति इक सुनि साजत नारी। चंचल कुंडल अलकैं झलकैं करनि विराजति थारी ॥३॥ भई वधाई कही न जाई छवि छाई अति भारी। अस भई खौंरि पौंरि ह्वै दधि घृत वहि चले उमगि पनारी ॥४॥ कीरति की कल कीरति जग में भाग सुहाग दुलारी। दामोदर हित वृन्दावन मिलि विहरत लाल विहारी ॥५॥४६॥

राग मारू—आंगन आजु वधाई वाजै। भूपति मणि वृषभांन भवन में सुता सुलच्छन राजै ॥१॥ जाकी रूप छटा की सोभा सब लोकनि मैं छाजै। जाके प्रेम बँध्यौ मोहन दिन वृन्दाविपिन विराजै ॥२॥ जाकी भृकुटिनि की छवि निरषत कोटि मदन रति लाजै। जाके वल आनंद मगन मन रसिक सभा नित गाजै ॥३॥ सुंदर रस की रास विलासिनि प्रगटी वल्लभ काजै। गावत यह जस दामोदर हित मंगल मोद सदा जै ४ ४७

राग देव गधार श्री वृषभांन कें आजु वधाई। आनंद निधि सोभा निधि कीरति कन्या जाई ॥ फूले नर नारी वर-सानैं घर घर वजी वधाई। फूले नंद जसोदा मन में फूले कुंवर कन्हाई ॥ फूली आंगन नाँचति जुवती अंग अंग छवि छाई। फूले रसिक दामोदर हित अति आनन्द उर न समाई ॥४८॥

राग धनाश्री—कुँवरि किशोरी जनमत ही व्रज जन फूले तन मन माई। श्री वरसानैं गोपराज घर वाजत सुनी है वधाई ॥टेक॥ रानी जग जानी श्री कीरति भाग भरी छवि छाई। रूप प्रेम रस अवधि ललित मुख सुख निधि कन्या जाई ॥ सदन सदन आनँद महा मंगल शोभा कही न जाई। नर नारी हरषे सव ऐसें मनौं रंक निधि पाई ॥१॥ बनि वनि वनिता भवन भवन तें चलीं जुरि छवि सौं राजैं। वदन चन्द आनंद भरे मानौं हाथन थार विराजैं ॥ सौरभ जल सौं सींची वीथी मह महाति मन मोहैं। चंचल गति दामिनि सी भांमिनि गावति गीतनि सोहै ॥२॥ आईं श्री वृषभांन भवन जहाँ ऊँचे अटा अटारी। कनक कलश पर धुजा पताका जगमगाति छवि न्यारी ॥ बाजत द्वारें ताल पखावज गोमुख दुंदुभि भेरी। गोप कुमार मैंन से डोलत बोलत दै दै हेरी ॥३॥ कंचन धरनी मणिमय आँगन रँग भरी नारी नाचैं। हरषैं वरषैं दधि घृत हरदी छिरकत काहू न बाचैं ॥ इक गहि चोवा चंदन छिरकैं इक पय भाजन ढारैं। एक परस्पर माखन लै लै तकि तकि हँसि हँसि मारैं ॥४॥ इक गावैं इक जंत्र बजावैं इक लै भेटनि आवैं। इक निकसैं एक पैठैं मंदिर निरखि लली

उचारैं एक कुंवरि कौ रूप विलोकति तन मन धन कौं वारैं ॥५॥ एक रहीं इक टक लखि शोभा इक तन फूली डोलैं। इक दिखि आवैं आँगन छवि सौं जै जै बानी बोलैं॥ इक पुनि लै लै मंदिर में तें गोरस घट ढरकावैं। बहे पनारे न्यारे न्यारे वीथिन कीच मचावैं ॥६॥ कनक भीति विद्रुम मणि देहरि नग खचे खंभ विराजैं। लटकत तोरन रतन जगमगैं हाटक फाटक राजैं॥ कहा कहौं सुन्दर मंदिर की सोभा कहत न आवै। दमकति बनितनि के तन चंचल प्रतिबिंबत दरसावैं ॥७॥ चारु चँदोवा मुक्ता झालरि घर घर आँगन सोहैं। झलमलाइ रही चहुँ दिसि सोभा जो जोहैं सो मोहैं। को कवि बरनैं महा महोत्सव सुर तिय हिय सरसानैं। निर्तति गावति कुसुमनि वरषति सुन्दर श्री बरसानैं ॥८॥ बावा नँद रु महरि जसोदा सुनि सुनि अति हरषाहीं। नंद लला आनंद भयौ मन फूले मन हीं माहीं॥ द्विज मागद वंदी जन फूले जै जै बानी राजैं। गोप सभा के मध्य नृपति मणि श्री वृषभांन विराजैं ॥९॥ जहाँ तहाँ जाकी चलति सुधा सी निर्मल सुजस कहानी। इन्द्र समान सबनि पर बरषैं महा मुदित बड़ दानी॥ विप्रनि धैंनु दई बहु विधि सौं कनक सींग खुरु रूपैं। निरधन धनी किये धन दै दै देत विचार न भूपै ॥१०॥ भ्राता बन्धु सबै पहिराये दै केशरि के टींके। भये विदा सुख भीजे तन मन चलत विराजत नीके॥ दांन मान सबहिनु कौं दीनौं जुवती जन पहिराई। मुक्तामणि मय कंचन भूषन सारी सुरंग सुहाई ॥११॥ सब काहू कौं मोद चौंद्य अति भयौ जु मन कौ भायौ। पुर पुर घर घर नर

नारिनु मिलि लोक लोक जस गायौ श्रीराधा रसिकन की जीवनि प्रगटी सब सुखदाई। दामोदर हित श्री वृन्दावन वास बधाई पाई ॥१२॥४६॥

राग आसावरी—श्री बरसानैं आजु सोभा सकल नई। श्री वृषभांन निकेत राधा प्रगट भई ॥ श्री कीरति वेलि सुवेलि उपजी रूप जई। मन नैननि कौ अभिराम सब सुख प्रेम मई ॥१॥ पंडित वृषभांन बुलाइ बरती विमल घरी। तब बोले द्विज सब सोधि कन्या सुहाग भरी ॥ अब जनमत याके रूप कुल की ताप हरी। रिधि निधि सिधि तुम्हरें द्वार रहि हैं सहज परी ॥२॥ नित अचल पदारथ चारि सेवत चरन रहैं। सुर किन्नर मुनि गंधर्व तुम जस अनत कहैं ॥ बड्डे नृपति समूह तुव पद आनि गहैं। या कन्या प्रबल प्रताप ब्रज सुख सिंधु बहैं ॥३॥ तब बाज्यौ मन आनंद दुंदुभि द्वार धरे। गोमुख चंग उपंग वीना ठाठ करे। जस गावत मागद भाट वेद द्विजन उचरे। सजि तोरन धुजनि पताक द्वारें कलश भरे ॥४॥ कदली अाछित अरु दूब अंकुर दीप वरे। सब मंगल सूरत वंत आंगन आजु खरे ॥ झल्लरि झांझि अनेक सुर इक संग ररे। भेरी ढोल मृदंग बजैं जग असुभ टरे ॥५॥ मिलि साथनि हाथनि थार सुनि सुनि उमगि चली। छवि पावति गावति गीत सोहत घोष गली। दृग चारु विशाल रसाल कंठनि माल भली। बनि ठनि आई नव बाल भई जहाँ ललित लली ॥६॥ भई जुवति भीर सुख भीर बरनी कछु न परैं। कोऊ मुख सुख रासि विलोकि इक टक तें न टरैं। कोऊ तन मन फूली बाल सथिये द्वार धरैं। कोऊ हरद

दहीं कोऊ दूध कोऊ नवनीत भरैं ७ कोऊ मृग मद भूर कपूर लेपन करति फिरैं। कोऊ केशरि चंदन गारि छिरकत रंग ढरैं ॥ कोऊ लटकि लटकि करतार दै छवि सौं उचरैं। कोऊ हरषि हरषि आनंदि जै जै शब्द करैं ॥८॥ अति फूले गोपी गोप विमल उदार हिये। सब हीर चीर धन देत जाचक लोग जिये ॥ हँसि महा दान वृषभान सवनि समूह दिये। ऐसे कौतुक जायैं पूत काहू नाहिं किये ॥९॥ सब लोकनि वाढ्यौ मोद दुख संताप गए। ब्रज पूरन आजु विनोद सुख के छत्र छए ॥ सब रसिकनि के हिय माहिं विरवा प्रेम वए। सुनि हरपे जसुदा नंद मन भाए जु भए ॥१०॥ सुन्दर वर स्याम सुहेत प्रगटी वेद भनी। यह जोरी सुखद अभूत अनुपम एक ठनी। दोऊ ललित लड़ैती लाल मम सिर मुकट मनी। दामोदर हित जन की सब विधि आजु वनी ॥११॥५०॥

राग आसावरी—नाँचत प्रेम मगन ब्रज नारी। प्रगटी सुख निधि राधा प्यारी ॥१॥ आँगन श्री वृषभांन कैं माई। वरषत सुख कछु कहत न जाई ॥२॥ छिरकति हरद दही घृत भांमिनि। चंचल दमकति मानौं दामिनि ॥३॥ विशद विशाल चपल कल नैंना। मोहन मन मृदु मधुर सु वैंना ॥४॥ गावत छवि चमकति दसनावलि। सोभित चिकुर किरत कुशुमावलि ॥५॥ भूषन गिरत सम्हार न तन की। सुख की उमगि वढ़ति नई मन की ॥६॥ भरि भरि गोरस भाजन ढारे। कीच मची वहि चले पनारे ॥७॥ दामोदर हित हिय में सदाई। वसौ यहै सुख मांगति वधाई ॥८॥५१॥

राग मारू—मंगल दुंदुभी भेरी वाजैं। मंगल भवन रवन

हित प्रगटी विश्व अमंगल भाजैं ॥१॥ कीरति कें कन्या भई सुनि ब्रज जुवतीं टीके साजैं । छवि सौं आवनि चावनि चावनि मुख कुम कुम रस माजैं ॥२॥ द्विज मागद वंदी जन गुरुजन वचन मनोहर राजैं । नांचत गोपीं गोप रँगीले आंगन सुभग विराजैं ॥३॥ श्री वृषभांन महा महिमा दिखि इंद्र पुरंदर लाजैं । चारि पदारथ दिये भिखारिनु सबै गरीब निवाजैं ॥४॥ हरषे तन मन सब नर नारी अवर वसन धरि राजैं । दामोदर हित जै जै धुनि सौं घोष निवासी गाजैं ॥५॥५२॥

राग मारू—जसुमति रानी की हौं ढाढिनि कीरति जू पै आई जू । सुनत बुलाइ लई मंदिर में ग्रींवा आनि नवाई जू ॥१॥ बोली श्री वृषभांन घरनि सौं बानी सरस सुहाई जू । कहा कहौं आनंद नदीस्वर कौ जब ह्याँ बजी बधाई जू ॥२॥ पुन्नि पुंज मय कूखि तिहारी भाग भरी सुखदाई जू । जनमी जहाँ कन्या कुल मंडन सब ब्रज सोभा पाई जू ॥३॥ हमरे भये मनोरथ पूरन यौं कहि महरि पठाई जू । नंद महा आनंद भयौ सुनि फूल न अंग समाई जू ॥४॥ इत तुव कन्या उत उनकौ सुत ये चिरुजियौ सदाई जू । दामोदर हित सुनि कीरत जू बहु धन दै पहिराई जू ॥५॥५३॥

श्री गरीब दास जी महाराज कृत—राग चैती गौरी

आजु बधावौ वृषभांन कें ॥ टेक ॥ अहो बेटी धरहु भांनमती साथिये, अहो बेटी गनि गनि रोपौ सींक । अहो बेटी उदौ भयौ तेरे बीर कैं, अहो बेटी लेहु आपनी लीक ॥१॥ अहो भाभी तोपै धरिहौं री साथिये, अहो भाभी नेग हमारौ देहु । अहो बेटी माल तिहारे बाप कौ, अहो बेटी जो

भावै सो लेहु ।२।। अहो भाभी भांन चढ़नि कौ घोरिला, अहो भाभी सकट जु सौंज भराइ । अहो भाभी दासी देहु वहु सुंदरी, अहो भाभी भूषन पट पहिराई ।।३।। अहो भाभी रतन जटित की घूँघरी, अहो भाभी औरु हिये कौ हार । अहो भाभी लैऊँगी हाथ कौ मूँदरा, अहो भाभी अरु मोतिनु भरि थार ।।४।। अहो भाभी सौनौं तौ लैउँगी लंक कौ, अहो भाभी जात करम की गाइ । अहो भाभी घन लौं वरष्यौ हेम रतन, अहो भाभी वरसानैं कौ राइ ।।५।। अहो भाभी सकल सवासिनि वंश की, अहो भाभी झगरति मांगति आइ । अहो भाभी भूषन वसन सव कौं दिये, अहो भाभी मो मन भायौ मंगाइ ।।६।। अहो भाभी अरु एक मांगति हौं अवै, अहो भाभी गरीव दासि पहिचानि । अहो भाभी दासिनि की दासी करौ, अहो भाभी व्यास वंश की जानि ।।७।।५४।।

राग विहागरौ—मंदर वजै श्री वृषभांन कैं, वाजै माई अन अन भांति ।।टेक।। अैसौ द्यौस माई आजु कौ अैसौ जो नित होइ ।। मंदर० ।।१।। धरती पर माई द्वै वड़े वरसानौं नँदगाँव। वरसानैं श्री वृषभांन जू नंदीश्वर नँदराव ।।२।। जुगनि जुगनि माई द्वै वड़े एक जसुदा अरु नंद । तिनकैं श्री मोहन प्रगटियौ व्रज कौ पूरन चंद ।।३।। जुगनि जुगनि माई द्वै वड़े इक कीरति वृषभांन । तिनकैं श्री राधा जू अवतरी वर भैया परवांन ।।४।। देव कुशुम वरषैं सवै दुंदुभि वजैं अकास । व्रज जुवतीं फूली सवै वरसानैं के वास ।।५।। गन गंधर्व गावैं सवै निर्तक नाचैं नांच । ताल पखावज वाजहीं अपनैं अपनैं सांच ।।६।। जूथ जूथ जुवतीं मिलीं तिनमें वहुत सवास । हँसि हँसि रोपे साथिये

मन मे अधिक हुलास ७ ब्रज जुवती आई सवै वैठी आँगन माँझ। जग मगात भूषन सवै मानौं फूली है साँझ ॥८॥ भांनमती तव वोलि यौं मेवा रहसि मंगाइ। भरि भरि ओलिनु दै सवै ऊखिल कोऊ न जाइ ॥९॥ एक जु कुम कुम छिरकहीं एक जु वीरी लेति। एक अरगजा लेपहीं एक तंवोरहिं देति ॥१०॥ वृन्द वृन्द जवतीं चलीं यौं कहि देति असीस। मोहन जू अरु लाड़िली जीवौ (माई) कोटि वरीस ॥११॥ कीरति जू हँसि यौं कह्यौ गरीवदासि पहिचानि। निज दासी इनकी करौ व्यास वंश की जानि ॥१२॥५५॥

राग धनाश्री—वाजै वाजै मंदिलरा श्री वृषभांन नृपति दरवार। जनमी है सुभ लगन नक्षत्र ब्रज रोपौ वन्दन वार ॥ सखी सहेली मंगल गावौ नाचौ साजैं तार। गरीवदास की स्वामिनि प्रगटी आनंद वढ्यौ अपार ॥५६॥

राग गौरी—मेरे मन आनंद भयो हौं तौ फूली अंग न माई ॥ ॥टेक॥ सात साषि कौ मेरौ री राजा ताकें वजति वधाई। कुँवरि भई वृषभांन वड़े घर अष्ट सिद्धि ब्रज आई ॥ चलौ सवासिनि सव मिलि सथिये कंचन थार सजाई। भाभी जू सौं झगरौ कीजे वात भली वनि आई ॥ हय गय हीर चीर मणि मानिक भादौं झरी लगाई। देव कुसुम वरषत अति नीकें कीरति कन्या जाई। वाजे वाजत रुचि सौं नीकें यशुमति भली नचाई ॥ गरीवदास कौं बुद्धिमती जू सरस पँजीरी खाई ॥४॥५७॥

राग विभास—आजु वधावौ री माई भांन दरवार ब्रज बनिता मिलि मंगल गावौ सजि चलौ कंचन थार १

धुजा पताका कदली रोपौ द्वारनि वंदनवार मकल सवासिनि धरहु साथिये कीरति परम उदार ॥२॥ कंचन सींक रुरी कल राजति मुक्ता लगे हैं सुढार । कमल मुखी प्रफुलित भई मानौं दिनकर कीरिनि अधार ॥३॥ कुँवरिहिं देखत अति सुख उपज्यौ वारत मणि गन हार । गरीबदास कौ दई पँजीरी बोलि सकल परिवार ॥४॥५८॥

श्री ध्रुवदास जी महाराज कृत–दोहा

प्रथम नाम हरिवंश हित, रटि रसना दिन रैंन ।
प्रीति रीति तब पाइये, अरु वृन्दावन ऐंन ॥१॥
चरन शरन हरिवंश की, जब लगि आयौ नाहिं ।
नव निकुंज निज माधुरी, क्यों परसै मन माहिं ॥२॥

(वंशी अली)

छकनि छके जे राधिका, तिन्हे न और सुहाय ॥
रसना चाखि अंगूर फल, कहा निवोरी खाय ॥३॥

ध्रुवदास) श्री राधा वल्लभ लाल की, विमल धुजा फहरन्त ।
भगवत धर्महुँ जीत के, निज प्रेमा ठहरन्त ॥४॥५६॥

श्री किशोरी दास जी महाराज कृत–राग मारू [ढाढी]

जदुवंशी जजमांन तिहारौ ढाढिया हो । कुँवरि जनम सुनि कैं हौं आयौ राखि हमारौ मान ॥ तिहारौ० ॥टेक॥१॥ एक वार हौं पहिलैं आयौ कहन वधाई ताकी । नंदीस्वर व्रज-राज घरनि घर कूखि सिरानी जाकी ॥२॥ अब तौ मेरे मन के भायौ दोऊ नेग चुकावौ । नंदरानी कीरतिदा रानी ढाढिनि कौं पहिरावौ ॥३॥ वहुत भांति ढाढी पहिरायौ गोपराज वड़ दानी । किशोरीदास कौं निर्भय करि कैं व्रज राख्यौ व्रजरानी

राग मारू—हौं ब्रज वासिनि कौ मगा। वल्लव राज गोप कुल मंडन इन द्वै घर कौ जगा ॥१॥ नंदराइ इक दियौ पिछौरा तामैं कनक तगा। श्री वृषभांन दियौ इक टोडर कंचन जटित नगा ॥२॥ कीरति दई कुँवरि की झगुली जसुमति अपनैं सुत कौ झगा। किशोरीदास कौं लै पहिरायौ नील पीत कौ पगा ॥३॥६१॥

राग मारू—रानी मांगनौं हौं आयौ। कीरति जू की कुँवरि राधिका ताकौ सदिका पायौ ॥टेक॥ पुरुष जाति वहु दांन मांन देइ तिन तन नैंकु न हेरौं। वेशरि वलय महावर मंडित इनकौं अलप न फेरौं॥ राज सिंघासन हेम रु हाथी लैउँ न नर कर ओटि। अँगिया डँडिया लहँगा मुँदरी इनकौ मेरैं कोटि ॥१॥ महाराज ब्रजराज नंद वृषभांन वड़े अतिदाता। सुवल सुवाहु श्रीदामा अर्जुन कृष्ण तोक वल भ्राता ॥ इनको दत्त कवहूँ नहिं लैहौं गोधन धन जु अपारा। रानी दियौ सवै कछु लैहौं दुलरी मुक्तन हारा ॥२॥ वरेयसी श्री ब्रजराज की माता सुख सागर की करनी। श्री वृषभांन नृपति की जननीं सुखदा सव सुख ढरनी ॥ पटुला श्री जसुमति की मैया मुखरा कीरति जननीं। रोहिनीं श्री वलराम प्रगट भये ये वड़भागिनि गननीं ॥३॥ रमा आदि दै और त्रियनि पै हौं कवहूँ नहिं जाचौं। ब्रज वनिता जाचक अभिमानी ह्वै निसंक हौं नाचौं॥ सखी सहेली और सहचरी इनके गुन हौं माचौं। जिनकैं कीरति कुँवरि पियारी तिनके दानहि राचौं ॥४॥ वरसानैं वृषभांन गोप कौं कीरतिदा सुभ नारी। ताकी कृपि मुकट मणि राधा वंदत चरन विहारी ॥ जोग जज्ञ तीरथ व्रत संजम इनकौं नैंकु न

साधौ दुर्लभ सुलभ वाम वृन्दावन राधा पद आराधा। ५
वरस गांठि दिन जनम वधाई श्री राधा की होई। सदिका
दियौ वृन्दावन रानी औरु न जाचौं कोई ॥ आदर करि कें
निकट वुलायौ मन में इच्छा सोई। रानी मगा अनन्य जानि
कें कृपा दृष्टि भरि जोई ॥६॥ ललित विशापा चंपक चित्रा
इनहीं के गुन गैहों। इन्दु लेखा तुंग विद्या रंग देवी सुदेवी
आदि सुख पैहों। वड़ी दांन पूरन वृन्दा जू इनतें सव सुख
लैहों। यह परिकर वृषभांन लली कौ ताकौं माथौं नैहों ॥७॥
संग्रह करयौं न जाचौं कवहूँ तुव पद धन निजु पाऊँ। सीस
नाइ कें दीनन भाषौं ललित लली गुन गाऊँ ॥ यह ब्रत कौं
तुमहीं निरवाहौ और कछू नहिं आसा। दीजै कछु इक टहल
आपनी रास विलास निवासा ॥८॥ हौं अति पांवर कृपा दृष्टि
वल और कछू नहिं जानी। वृन्दाविपिन वास देहु रानी निरभै
करि मनमानी। किशोरीदास के नाम धरे की लाज राषि वड़
दानी। ब्रज वनिता तजि और न जाचौं हौं जाचक अभि-
मानी ॥९॥६२॥

राग दोहा-(वंशावली) वरसानौं गिरिवर सुखद तिहिं ढिंग
वास अवास। कंचन मय रचना रुचिर गोपुर ग्रह सुख रासि
॥१॥ रमा उमा सव आदि दै टहल करैं नित आइ। कोटि
कोटि वैकुंठ हू तिहिं सम कहे न जाइ ॥२॥ स्वच्छासन अरु
सुहृद इक नाम दुहुँनि मन आंनि। महाराज वृषभांन की प्रगट
अथाई जानि ॥३॥ अव वंशावली भांन की कहौं कछू विस्तार।
गन उद्देश जु दीपिका ताकौ अर्थ विचार ॥४॥ सूर्ज वंश में
प्रगटियौ सोमवंश सुख सार। तिन राजन कौं वरनतें होत वहुत

विस्तार ॥५॥ जासौं मेरौ काज है ताकौ वरनौं वंश । जाके वरनत सब करैं देव आदि परसंस ॥६॥ महाराज भये नीप जू जग में तिनकी आंनि । तिनके नृप भये जूप जू सबकौ राखत मांन ॥७॥ नृप दयाधि तिनके भये दया दीन सौं लीन । धर्म धीर तिनके भये कछु संतति करि हीन ॥८॥ कठिन तपस्या तिन करी तेरह वर्ष प्रमांन । गोवर्द्धन परवत विषैं शिव दीनौं वरदांन ॥९॥ भुव भूषन तिनके भये राजा श्री महीभांन । सुखदा पतिनी जासु की तासु कूषि वृषभांन ॥१०॥ चौपाई ॥ महीभांन दादे कौ नाम । सुखदा दादी अति अभिराम ॥ श्री वृषभांन उदार गंभीर । पिता राधिका अति कुल धीर ॥११॥ कीरतिदा माता विख्यात । कहत रतन गर्भा सुखदाति ॥ नाना इंदु नाम है जाकौ । मुखरा नानीं कहियति ताकौ ॥१२॥ वड़ौ भैया श्रीदामा नाम । अति सुकुँवार परम अभिरांम ॥ भादौं अष्टमी तिथि उजियारी । नक्षत्र विशाषा रुचिर महारी ॥१३॥ जा दिन जनम लियौ श्री राधा । कीरति वेद पुरान अगाधा ॥ शुभ नक्षत्र गुरुवार है आई । अरुनोदय प्रगटी सुखदाई ॥१४॥ घर घर महा महोछौ होहि । नर नारिनु कैं आनंद जोहि ॥ घर घर तोरन वंदन वार । मंगल गावति व्रज की नारि ॥१५॥ पंच शब्द वाजैं नीसांन । राखत सब काहू कौ मांन ॥ गयौ वधौवा नंद की पौरि । सव नंदीश्वर आयौ दौरि ॥१६॥ जसुमति नंद वधाई लाये । श्री वृषभांन अजिर में आये ॥ मिलत परस्पर आनंद वाढ्यौ । सो सुख हम पर परत न काढ्यौ ॥१७॥ नांचत नंद और वृषभांन । जसुमति वारति अपनैं प्रांन । पहिले वोल किये हे सारे आजु विधाता पूरे

पारे १८ दुहू सजन मन आनंद भावै। किशोरीदास यह मंगल गावै ॥१६॥६३॥

राग मारू—ढाढिनि नंदीस्वर तें आई। अपनें पति कौं संग लियें है अति उदार उठि धाई ॥१॥ उदौ देखि ब्रज वल्लव कुल कौ फूली अंग न माई। नांचति गावति प्रमुदित ह्वै ह्वै टेरि असीस सुनाई ॥२॥ रतन भांन रतननि की पहुँची ढाढिनि हाथ गहाई। उदै भांन सौनें कौ टोडर देत वहुत सकुचाई ॥३॥ महारानीं कीरति आदर दै भीतर भवन वुलाई। कंचन मय भूषन पाटंवर नख सिख लौं पहिराई ॥४॥ दिये खता धाननि के अगनित ललित भांन जु लुटाई। कंज भांन अरु अरिष्ट भांन जु गोधन ठाठि वताई ॥५॥ महाराज वृषभांन वहुत विधि मन की आस पुजाई। किशोरीदास कौं वाँह पकरि कैं वरसानैं जु वसाई ॥६॥६४॥

श्री वली जी महाराज कृत—राग मारू

जनम वधाई कुँवरि लली की। प्रगटी प्रभा अभूत सुगंधनि हरि अलि कंज कली की ॥१॥ सुमुख समूह सिहात हियें सुनि इहिं विधि वात भली की। कीरति रानी की कल कीरति गावत सुफल फली की ॥२॥ भायौ भयौ नंद जसुमति कौ प्रथमहिं वात चली की। भयौ भायौ वृपभांन नृपति कौ वचन भयौ दृढ़ लीकी ॥३॥ कनक थार भरि रतन वारनैं आवनि गली गली की। रावलि रावर पर कुशमनि झर सुर भरि डला डली की ॥४॥ गावति गोपी गोप ओप सौं घाव निसान घली की। दधि कादौं मादौं सिर दूवैं आठैं पछि पिछली की ५ वाँधत वदन वार द्वार वर रुपी अवलि कदली की

रोपत सीक सवासिनि सथिये सिख नहीं सुनत अली की ६॥ अगनित सुत अवतारनि वारौ कौ भयौ प्रनित पली की। यह भयौ दान अमान मान दै रुर मरजाद मली की ॥७॥ बिनु बछरनि गैया खेलति है सगुन दसा कुशली की। महा मोद मूरति कौ उद्भव लाल अनुज मुसली की ॥८॥ श्री राधा नाम कहति रिषि वर पढ़ि आगम निगम थली की। वल कौ चार सार सोई सजनी दानव दलनि दली की ॥९॥ वेगि वधौवा गयौ महावन विदा भई महली की। हेरी देत अघैहे नाहीं अब चढ़ि वनीं वलीं की ॥१०॥६५॥

राग दोहा—अलाप चारी—श्री गोवर्द्धन राज गिरि तहाँ ढाढिनि कौ वास। सुनि कीरति कन्या चली मन में भयौ हुलास ॥१॥ सहजहीं सुंदर देहरी तापै कर्यौ सिंगार। रंभा मैंना उरवसी रति मोही अरु मार ॥२॥ व्रज मंडल सवरौ जितौ जितनीं व्रज में नारि। इन बिनु और न जाचऊँ जौ जाचौ तौ गारि ॥३॥ निकट महावन गाँव की ये मेरी जजमांन। जनम वधाई राधिका लै आई हित मांन ॥४॥ जैसौ याकौ सहज जसु हौं गाऊँगीं आज। कृपा दृष्टि इत देखियौ ह्वै है मेरौ काज ॥५॥ श्री राधा के जनमहीं चढ़ी चौगुनी जोति। व्रज मंडल सिगरौ जितौ फूलनि वरषा होति ॥६॥ धनि धनि रावलि गाँव है धनि धनि व्रज की नारि। हौं हू धनि अब होहुंगी सु इन पर डारी वारि ॥७॥ जे ढाढिनि त्रैलोक की तिनमें हौं सिर-मौर। गोपीं सीं जजमान हैं वास वड़े गिरि ठौर ॥८॥ पंथ चलति ढाढिनि मिली तितही कौं हौं जाति। भूषन वसन जु तुम दिये देखि देखि विहसाति ९ हौं उनके पाइनि परी

दीनी मोहि असीस तू राधा दरसन पाइ है निश्चै विस्वै वीस ॥१०॥ सावधान सव होइ कैं सुनिये मेरौ गांन। नाचि नाचि हौं गाइ हौं दीजै मोकौं दांन ॥११॥६६॥

श्री माधुरीदास जो महाराज कृत–राग आसावरी

जनम द्यौस वृषभांन कुँवरि कौ सव घर वजी वधाई री। ताल मृदंग झांझि झालरि धुनि लागति परम सुहाई री ॥१॥ मंगल साजि कियें तन सोभित वानिक सरस वनाई री। नाँचति गावति सकल जुवति वृषभानु भवन में आई री ॥२॥ कंचन थार चौक मोतिन के रचे विचित्र वनाई री। कंचन कलश भरे दधि सों सिर देत सवनि कें नाई री ॥३॥ नर नारी कछु सुधि न परै मिलि मुदित कंठ लपटाई री। वरसानैं रस विवस भयौ सुख कहत कह्यौ नहिं जाई री ॥४॥ तव व्रजराज सकल व्रजनारी विविधि भांति पहिराई री। हीरा हेम रतन मणि माला दये सवनि मन भाई री ॥५॥ नँदरानी तव अति आनंदित भीतर भवन वुलाई री। कीरति रानी जसुमति दोऊ कछु मिलत मनहिं मुसकाई री ॥६॥ उत नंदलाल रु इतहि राधिका ए चिरजीवौ सदाई री। यह वानिक मन समझि माधुरी फूली अंग न माई री ॥७॥६७॥

श्री सहचरी सुख जी महाराज कृत–राग ललित

हेली (वरसानैं) रंग वरसानैं रस सरसानैं जस दरसानैं। सुभ छकसानैं जनम होत ही ललित लली के रूप कली कें रली वढ़ी अति गली गली व्रज घर घर मंगल गानैं ॥१॥ कीरति कूष सिरानी जानी सुनि नँदरानी हिय हुलसानी विरधि सुहानी सजि आई सा दानैं रीझि गहल वृषभांन महल

में चहल पहल मोदनि की टहल कर करति विनोदनि सुभ सोभा में सानैं ॥२॥ विरदावलि इक विरद पुरानैं इक नव वानैं इक कहि तानैं मंगल गानैं वंशावली वखानैं। विरद अमानैं श्रवन सुहानैं सब सनमानैं दै बहु दानैं किये अयाची हँसि रावलि पति रानैं ॥३॥ बाँधति वंदन माल बाल कर कनक थाल मधि दीप जाल फल दल रसाल देखत दृग रूप रचानैं। सहचरि मुख वारी आँगन में नचत नंद जिय भरे अनंद परे प्रेम फंद गति मंद मंद अति मल्हकत थौंदा हरद दही लपटानैं ॥४॥६८॥

राग विभास—जसोदा मंगल गावति आई। कुँवरि जनम सुनि कीरति मंदिर फूली अंग न माई ॥१॥ महा मोद मान्यौ अपनें घर दूनी करी बधाई। बहुत दिनन की हौंस सफल भई सुधि करि हियें सगाई ॥२॥ झँगुली कुलही चूरा हँसुली कनक थार सजि लाई। श्रीफल मुहुर रुपैया अच्छित केशरि मिहीं पिसाई ॥३॥ मेवा मिश्री नये वतासे रोचक मधुर मिठाई। तिल चाँवरी रु चाव चिरौंजी विविधि परात भराई ॥४॥ सरस सवागे सुरंग ओढ़नी बहु पामरी छपाई। पटुका झगा जरकसी पगिया भूषन माल सुहाई ॥५॥ चंद मुखी छवि रूप दामिनीं गोपी नवल बुलाई। वीना बैंनु मृदंग ताल दुंदुभी भेरी सहनाई ॥६॥ नाचत नंद चले गोकुल तें संग लीनैं ठकुराई। दूध दही घृत काँवरि जोरीं ग्वालनि कंध धराई ॥७॥ रावलि पति पाँवड़े विछाये शोभा छके सजनाई। कलश आरते चरचै सौरभ भाल खौरि मँड़वाई ॥८॥ उमगि राग लीनैं पुर में चरननि कौं नारि नवाई। भेंटे अंक अधिक सनमानैं संपति

वारि लुटाई ६। लै गये भीतर रतन पालने नैननि लली दिखाई। सफल जनम मान्यौं ब्रजपति नें जोरी जानि सुहाई ॥१०॥ दोऊ भूप हँसि हँसि इत उत तें सबे जाति पहराई। मागद सूत भाट विरदावलि संपति झरी लगाई ॥११॥ कनक घटनि ढोरत गोरस दधि कादौं रीझि रिझाई। सुरंग गुलाल गंधि पिचकारी रोरी रंग सुहाई ॥१२॥ चोवा चंदन वंदन वूका होरी खोरि मचाई। काहू की तिय काहू कों पिय छल सौं गांठि जुराई ॥१३॥ कुल वधून के मुख मीठे स्वर रस वत गारि गवाई। रावलि पति रानी नें आँगन ब्रजरानी नचवाई ॥१४॥ चिरुजीवौ यह मित्र मंडली लखि हिय भई सियराई। लीला अमित कछुक रसना छकि सहचरी सुख दुलराई ॥१५॥६६॥

राग सूहौ-विलावल—रंग बरसै री हेली कीरति महल में। जस दरसै री हेली रस की चहल में॥ आजु ब्रज फूल्यौ सबै रावलि विनोद सुहावनौं। उदौ सूरज वंश कौ नँदराय मन कौ भावनौं ॥१॥ सुकृत फूल्यौ री हेली श्री महीभांन कौ। आनंद फूल्यौ री हेली श्रुतिनु वखांन कौ॥ गोपी गोप सु विमल आँगन अनूठी अति मानी रली। वारति रतन मणि देत भूषन निरखि पलना में लली ॥२॥ रँगीलौ बधावौ री हेली जिय छकि दैन कौ। मृदंग बजावौ री हेली मंगल चैन कौ॥ वृषभानु घर कन्या भई महा मोद गोकुल में छयौ। पलना में किलकतु साँवरौ रति बीज जसुमति हिय वयौ ॥३॥ बड़े गुमान के री हेली दांन बहुत दये। जाचक जन पै री हेली घन लौं ऊनये॥ अष्ट सिद्धि जु संग लै टहल में रमा निहारिये। आजु

वल्लवराज पै एश्वर्य कोटिक वारिये ४ सौज सजावौ री हेली कंचन थार में। विधिहि लज्यावौ री हेली रचि सिंगार में॥ चलहु कौतिक देखिये ब्रजराज जहाँ नाचत खिले। सोहिलौ में दोऊ समधी अंक भरि भरि कें मिले॥५॥ केशरि भींजे री हेली सौरभ सौं सनैं। हरद दही के री हेली घट ढोरत घनैं॥ रसिक वारत नैंन इत उत चलत गज की चाल पै। वारयौ चरण की रैंनु झलकत सुख सखी के भाल पै॥ ६॥७०॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत–राग गेव गंधार

आजु व्रज घर घर वजति वधाई। भयौ उदय वृषभांन राइ कें नवल किशोरी जाई॥१॥ घर घर धुजा पताका राजति वंदन माल सुहाई। घर घर नर नारी मिलि नाचत मिलत मंगली गाई॥२॥ घर घर तें वनि ठनि वर वनिता भांन भवन में आई। गोपी ग्वाल दुग्ध दधि छिरकत हेरी दै दै भाई॥३॥ वीनि वीनि जाचक त्रिभुवन के देत नृपति ठकुराई। कीरति जू की कीरति सुनि सुनि कमला फिरत लज्याई॥४॥ देव बधू सुमननि वरषावति सुर दुंदुभी वजाई। फूले रसिक रँगीले तन मन प्रेम सहित निधि पाई॥५॥७१॥

राग मारू—जाचक अभिमानी नहिं मोसौ। सुन्यौं आजु वृषभांन नृपति में दाता औरु न तोसौ॥टेक॥ कीरति जू की कूषि सिरानीं तिहुँ पुर आनंद छायौ। वहु दिन की मैं आसा कीनी भयौ आजु मन भायौ॥ कुँवरि लली कौ जनम सुनत हौं फूलत अंग न मायौ। यह दिन अविचल रहौ तिहारें जिन

मुहि परम सिहायौ १ तुम तौ महा उदार गोप नृप घन लौं कंचन वरसे । मोती हीरा लाल रतन के लाइ रहे वर झरसे ॥ अब कहौ कृपन रहैगौ को जग जब तुम ऐसे सरसे । औरौ दांन देत अति अद्भुत तुम से तुमहीं दरसे ॥२॥ अष्ट सिद्धि नव निधि जे चाहत तिनकौं दै निरवेरौ । अरु जे चाहत इन्द्र लोक कौं ताकौं देहु घनेरौ ॥ ब्रह्मा के पद कौं जो मांगत दीजै ताहि सवेरौ । हौं तौ इनमें कछू न चाहौं गर्व गुमानी तेरौ ॥३॥ नहिं चाहत वैकुंठ वास कौं अरु कहि कहा सुनाऊँ चाहतु हौं इक द्वार तिहारौ ताकौ सेवन पाऊँ ॥ या पन कौं निरवाहु करौ प्रभु तुव पद सीस नवाऊँ । देहु सुता की चरन रैनु मुहिं प्रेम सहित गुन गाऊँ ॥४॥७२॥

राग आसावरी—आजु प्रगटी श्री वृषभांन भवन में श्री वृन्दावन रानी । रसिकनि हित रस सागर नागरि व्रज धरु करी रवांनी ॥ सत चित आनंद लली लला वन यह मति विरले जानी । निस्य विहार प्रगट करिवे कौं प्रगटे आनंद दानी ॥ कीरति भांन नंद जसुमति मिलि सुभग सगाई ठानीं । संपति सकल लुटाइ चाइ सौं दै दै मान अमानी ॥ सुर सुमननि वरषावत गावत बोलत जय जय वानीं । प्रेमदासि हित गौर स्याम की नित नित वसौ कहानी ॥७३॥

राग सारंग—हमारें माई नित ही मंगल चार । नित जसुदा नित नंदराइ नित मोहन जनम विचार ॥१॥ नित कीरति वृषभांनराइ नित कुँवरि जनम उदगार । नित फूलनि सौं भवन छवावत नित चित्रित आगार ॥२॥ नित मोतिनु सौं चौक पुरावत नित धरि धुजा अपार नित कंचन के कुंभ

भरत नित बाँधति वंदन वार ॥३॥ नित कदली रोपत सौनें के नित धरि दीप सँवार। नित गुलाब छिरकत नित तानत सुरँग वितान उदार ॥४॥ नित घर पंच शब्द बाजत नित फूलत ब्रज परिवार। नित सब सजन वधाई गावत नित हिय सुख विस्तार ॥५॥ नित छिरकत दधि मधु हरदी नित नांचत गोपीं ग्वार। नित वरषावति सुर सुमननि नित करि दुंदुभि झनकार ॥६॥ नित जाचक आवत तिनकौं नित देत भंडारनि वार। नित द्विज आइ लेत धैंनानि कौं नित करि जै जै कार ॥७॥ नित वृन्दावन नित ताके समि लाल बाल सुकुँमार। प्रेमदास हित स्याम स्वामिनी नित नव करत विहार ॥८॥७४॥

श्री रामदास जी महाराज कृत—राग गौरी

हेरी हेरी रे हेरी हेरी रे भैया ॥टेक॥ हेरी दै क्यों न गावहू हो भलौ बन्यौं है काज। कीरति कन्या है जनी आयौ ब्रज में राज ॥रे भैया०॥१॥ पट पियरौ प्यौसार कौ हो रानी पहिरैं ताहि। दामिनि कैं भोरैं गयौ मो मन धोखौ आइ ॥रे भैया० ॥२॥ कीरति कूखि सुलच्छनीं हो प्रगटी श्री राधा बाल। तन मन मोद वढाइ कें नाँचत गोपी ग्वाल ॥रे भैया०॥३॥ जसुमति सुनि हरषित भई हो रोम रोम आनन्द। गोपी संग लै उठि चलीं नांचतिं गावति छंद ॥रे भैया०॥४॥ मोहन कहै सुनि गोआला हो चलि वरसानैं जाहिं। कोरति जू के हाथ मांगि खुरचनी खाहिं ॥रे भैया०॥५॥ इन्द्रलोक जाचौं नही हो ब्रह्मलोक नहिं जाऊँ। वरसानैं कौ घूगै सेऊँ कीरति जूठनि खाऊँ ॥रे भैया०॥६॥ वरसानौं सरस्यौ सबै हो घर घर आनंद खानि। जसुमति कीरति रस भरीं देति परस्पर दानि ।

७ इत ठाड़े सब ग्वालिया हो उत ठाड़ी सब पौनि पहिरावति मधु मंगलै या व्रज की महतौंनि ॥रे भैया०॥८॥ रहसि रहसि मन में रसे हो फूले अंग न मात । देति वधाई सवनि कौं हरद दही लपटात ॥रे भैया०॥९॥ केशरि अरगजा छिरकहीं हो भीजि रहे नर नारि । नांचत गावति रंग भरीं देति परस्पर गारि ॥रे भैया०॥१०॥ वृषभांन घरनि कन्या जनीं हो तन मन वढ्यौ आनंद । निरखि निरखि फूलीं सवै पून्यौं कौ सौ चंद ॥रे भैया०॥११॥ जनम सुता कौ सौधि कै हो गौतम भाषा जानि । व्रजवासी फूले फिरैं बड़ी भई व्रज कानि ॥ रे भैया०॥१२॥ भांन कहैं लड़काइ कैं हो ढाढी हौंडौ आइ । मुँह मांग्यौ तुहि दैऊँगी कछु गोपनि कौ जस गाइ ॥रे भैया०॥ धौरी धूमरि रातुली हो सोहत उज्जल ठाठ । न्हाइ भांन ठाड़े भये विप्रनि दीनीं वाट ॥रे भैया०॥१४॥ कुटुंव सहित वावा नचे हो परयौ निसानैं घाव । नंदीस्वर तें नंद जू सुनि वर राधा नांव ॥रे भैया०॥१५॥ काहू तौ चादरि दई हो काहू दीनीं खोर । काहू दीनीं धोवतीं करि करि पीरे छोर ॥रे भैया० ॥१६॥ नंद नचे जसुमति नची हो फूले अंग न मात । वृषभांन लली पर वारि कैं वकसत घर घर वात ॥रे भैया०॥१७॥ धनि कीरति वृषभांन जू धनि वरसानौं गाँव । धनि व्रज की सव गोपिका जाकौं भयौ सहाव ॥रे भैया० ॥१८॥ काहू पट पियरौ दयौ हो काहू कुलह कवाइ । रामदास कौं पामरी स्यौं वागे दई मंगाइ ॥रे भैया०॥१९॥७५॥

श्री हित गोवर्धन दास जी महाराज कृत—राग विलावल

श्री वृषभांन के हो आँगन मंगल भीर देस देस के भिक्षुक

आये पढ़त विरद आभीर ॥टेक॥ दोहा—जनम सुन्यौं श्री कुँवरि कौं भिक्षुक आये धाइ। देस देस तें गुन आप अपनैं लाये भेट वनाइ ॥१॥ सवैया—ब्रज में सब ढाढी लियें वहु पंछिनु देसनि तें चलि रावलि आये। सुक सारो कोइल मैंना लियें वग मोरनि पैं मुख नाम वुलाये ॥ नचे मृग वांदर प्रेम भरे अति हाथी तुरंग चढ़े मन भाये। रीझि भई वृषभांन जू की इन ढाढिनु कौं वहु दान दिवाये ॥१॥ चौपाई—इक सूवा हाथ पढ़ावैं। राधे जू कौ सुजस सुनावैं ॥ या ढाढी निकट वुलावो। शुक कंचन चौंचि मढ़ावौ ॥१॥ दोहा—चौंचि लाल अरु रँग हरयौ ग्रींवा तौ पचरंग। वोलत मुख श्री राधा मोहन अच्छर परतु न भङ्ग ॥२॥ वहु रीझे वृषभांन जू हाटक खरौ मगाइ। सुवा चौंचि कीनी जटित वहु विधि मानिक लाइ ॥३॥ चौपाई—इक कोइल मधुर सिखाई। राधे कहि लेति वलाई ॥ तव रीझि भांन जू ताकौ। पग पैंजन दीनैं याकौं ॥२॥ दोहा—जटित लाल हीरा नगनि सुंदर कल धुनि गोल। कोइल पग कौं पैंजनीं उदै अस्त कौ मोल ॥४॥ चौपाई—इक मैंना मोद वढ़ावै। कीरति जू की कृपि मल्हावै ॥ रावलि पति मृदु मुसिक्यानैं। कछु वारि देत वहु दानैं ॥३॥ दोहा—मैंना मन आनंद भयौ पायौ छल्ला मेल। दै असीस वृषभांन कौं लगी आपनी गैल ॥५॥ चौपाई—इक ढाढी सारो पाली। वोलन सिखई मनु आली ॥ खिचरी चरुवा जस गायौ। उनि लियौ आपु मन भायौ ॥४॥ दोहा—खिचरी तौ वहु भांति की गाई भलैं वनाइ। सारो सवनि रिझाइ कैं लीनैं नेग अघाइ ॥६॥ चौपाई—इक ढाढी वगुला लायौ वह देखत सब मन भायौ वे रीझी व्रज की वाला

ताहि दीनी मोतिनु माला ५॥ दोहा–उज्वल बड़े सुढार अति पानिप भरे सुचारु । थारी पर थिरकत रहैं असे मुक्ता हार ॥७॥ चौपाई–इक मोर नचावत आये । तिन कुहुकि कुहिक सुर गाये ॥ सोई भांन राइ मन भाये । लै मोती ताहि चुगाये ॥६॥ दोहा–उतपति तिनकी सिंधु तें स्वच्छ अवीध अमोल । वरही आगें हरषि कें डारे भरि भरि झोल ॥८॥ चौपाई–काहू मृग छौना है आन्यौं । वह नख सिख छबि सौं वान्यौं ॥ वृषभांन चरन तर लोटै । सब गोपनि के चित पोटै ॥७॥ दोहा–देष्यौ सुन्यौं न आजु लौं असौ सारँग नैंन । को कवि सो छवि कहि सकै मनु तनु पलट्यौ मैंन ॥६॥ मृग के मन की जानि कैं भांन जू राष्यौ ग्रेह । ढाढ़ी कों धन अमित दै कीनौं अधिक सनेह ॥१०॥ चौपाई–कोऊ जरकसी पट सिर बांधैं । बन चर धरि लाये कांधैं ॥ कूदत गोपनि मन भोरैं । वन चर लै वलाइ त्रृन तोरैं ॥८॥ दोहा–वहुत हँसे वृषभांन जू वनचर लियौ वुलाइ । डला भरयौ पकवान कौ दीनौं ताहि मगाइ ॥११॥ अन्न धन भूषन वसन पाटंवर वकसीस । यह लाली चिरुजीवनी जीवौ कोटि वरीस ॥१२॥ चौपाई–इक नंद गाँव ते आये । वे ढाढी परम सुहाये ॥ तिन चढ़ि गज अति दौराये । रावलि पति दिये मन भाये ॥६॥ दोहा–दिग्गज औरापति सरस कज्जल गिरि घन रूप । चौंर झूल वर स्वरन की दई अंवारी भूप ॥१३॥ ढाढी कों कलँगी दई हीरा लगे अमोल । इन्द्र चंद्र सम वैठि कैं बोलै मीठे बोल ॥१४॥ चौपाई–कोऊ घोरनि चढ़ि करि धाये । वे सुनत वात मन भाये ॥ कीरति उर जनमीं राधा अब देंहु भांन मन माधा १०

दोहा–उच्चिश्रवा अस्व सूर के गरुड वज्र कहा पौंन। मनसा हू जहाँ थकि रहे देखि देखि दुति गौंन ॥१५॥ जीन जराऊ साज सौं चौरासी गज गाह। ढाढी कौं टोडर जलज रीझि दिये ब्रज नाह ॥१६॥ चौपाई–इक लरकनि गोदनि लींनैं। तन चित्र विचित्रत कीनैं। प्रमुदित रावलि के रानैं। अब देहु इन्हैं वहु दानैं। इक ढोलक ताल वजावैं। इक महुवरि में जस गावैं॥ नाचनि वृषभांनहि भावैं। वे तान परैं सिर नावैं ॥१२॥ इक नट विद्या वहु खेलैं। वे निजु ग्रींवा भुज मेलैं॥ वृषभांनहि नाए माथै। टोडर भरि दीनैं हाथै ॥१३॥ इक कूदत तंवक तंवे। इक डगनि भरैं अति लंवे॥ चिरुजियौ कुंवरि की मौसी। वह देति दान मन हौंसी ॥१४॥ द्विज वेद पढत हैं साथनि। वे कुश लियें सव हाथनि। यह कुँवरि सु आनन्द कंदे। सुनि भांन विप्र पद वंदे ॥१५॥ इक नक्षत्र जोग वल साधें। जोतिष देवनि आराधें॥ निरदूषित भई सुकुँवारी। तिन दान दिये अति भारी ॥१६॥ वहु नाचति गोपी सोहैं। तन छवि दामिनि अति मोहैं॥ वृषभांन आइ ढिग तिन पै। मणि मोती बारे इन पै ॥१७॥ तव कहू वछरा कहू गैया। कूदत मन में अति चैया॥ ये कुँवरि जनम सव फूली। आँगन खेलत सुधि भूली ॥१८॥ कहुँ गोपनि के सुत किलकें। अति छबि अंगनि में झलकें। मन प्रमुदित जनम लली के। काहू कही सु आनि अली के ॥१९॥ कहूँ गोप जु हेरी गावैं। वे दूध खुरचनी पावैं॥ वे दधि हरदी कों वरषैं। सव देवनि मन करषैं ॥२०॥ कोऊ वंदन मालनि बांधैं। ऊँचे द्वारनि चढ़ि कांधैं वे लेत नेग हैं अपनौं सखी आजु भयौ मुहि

सपनौ २१ कहूं मोतिनु चौक पुरावैं कहूँ ठाड़ी भई वतावैं ॥ नव धरनि ललित छवि छाई। मनु निपजी है चतुराई ॥२२॥ तव रँगी वांस की डरिया। वे फल फूलनि सौं भरिया ॥ द्विज दूत्र लियें इक आवैं। श्री वृषभांन के सीस वँधावैं ॥२३॥ अपनी निधि जो जिहिं प्यारी। लै लै आये व्यौपारी ॥ वृषभांन लिये वहु दिये। उनके मन भाये कीये ॥ कोऊ वांधत धुजा पताषा। मन में वाढ़ी अभिलाषा ॥ वे सुर विमान चढ़ि आये। वृषभांन जू वाँह वसाये ॥२५॥ यह सुख व्रज देखि समाजैं। सुर पति मन में अति लाजैं। गोप देह करि हीनैं। विधि नें हम वंचित कीनैं ॥२६॥ जै जै फूलनि कर वरषैं। सब देखि देखि मन हरषैं ॥ इहि कुँवरि किशोरी जनमें। वृषभांन धन्य गोपनि मैं ॥२७॥ एकांत वास मुनि रहते। राधा हरि सुमिरन करते ॥ ते जनम सुनत उठि धाये। कुँवरि पद सीस नवाये ॥२८॥ यह सुख समूह कौ सागर। नृप वृषभांन उजागर ॥ नीरस भक्त अँधेरौ। ताकौं तुम सुता भयौ उजेरौ ॥२९॥ यह आनंद मंगल जितनौं। कापै कहि आवै तितनौं ॥ अपनैं हित कौं जो गावै। मन वंछित फल सो पावै ॥३०॥ श्री स्यामा दरस हित गावै। वृषभांन गोप मन भावै। गोवर्द्धन गाइ हुलासा। व्रज जन दासनि कौ दासा ॥ ३१॥७९॥

श्री गदाधर भट्ट जी महाराज कृत—राग सारंग

आजु आनंद नंद घर भारी। प्रगटी श्री वृषभांन राइ कैं कुंवरि सुभग सुकुँवारी ॥ जसुमति मंगल गीत गवावति वोलि सकल व्रज नारी तिल चाँवरी भरी ओलिनु में पहिराई

सुभ सारी यहै वात सवहिनु के मुख ते सुनियति है सुभ-कारी। जोरी भली गदाधर प्रभु यह विधनां रचि अवतारी ।७७।

श्री स्याम अली जी महाराज कृत—[असीस कौ]

रानी तेरी चिरजीवौ कुँवरि लली । छवि जल पूरण कूषि तिहारी में, प्रगटी कंज कली ॥ भाग सुहाग सुगंधि मई लखि हरषित श्याम अली । हितू दया करि चाहत सोई जोई असीस फली ॥७८॥

श्री सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत—राग हमीर

प्रगट भई री सोभा त्रिभुवन की भांन गोप कें आइ । अद्भुत रूप देखि व्रज वनिता रीझी लेति वलाइ ॥ नहिं कमला नहिं सची नहिं रति उपमा हूं न समाइ । तिन हित प्रगट भये व्रज भूषन धन्य पिता धनि माइ ॥ जुग जुग राज करौ दोऊ जन इत तुव उत नंदराइ । उनकें मदन मोहन तेरें स्यामा सूरदास वलि जाई ॥७६॥

राग माल कोश—वरसानौं वर सरोवर प्रगट्यौ अद्भुत कमल री । श्री वृषभांन किरिनि प्रकास पोष रहत प्रफुलित सदाई यह सरस सुंदर अमल री ॥ सखी चहूँ दिसि केशरी दल करनिका आकार राजत राधिका जस धवल री । सूरदास मदन मोहन पिय रसिक मकरंद हित सेवत सदा अलि नवल री ॥८०॥

श्री स्यामा दासी जी महाराज कृत—राग ईमन

रावलि पति रावल में ढाढिनि नाचै अरु गावै । अपनी सुता वधू संग लीयें कीरति जू के आगें मांथौ नावै ॥१॥ वैठीं गोपी वृन्द निकट हीं लै लै नाम मल्हावै । जाकें जनमत जो कछु पायौ ताकौं पुनि दुलरावै ।२ ललिता जनम गई हौं

माँगन मुहि दीनीं मनि माला ताकी किरिनि समूह देखि कैं पूरन ससि परयौ चाला ॥३॥ चंद्रावलि मैया नें मोकौं दीनीं उर की चौकी। ताकी छवि कापै कहि आवै गति रोकी ग्रह नौकी ॥४॥ जनम विशाखा शाषा कुल कहि मैं जननी ताकी गाई। त्रिभुवन मोल मुद्रिका कर की रीझि मोहि पहिराई ॥५॥ पूरनमा के जनम महोत्सव शीश फूल मैं पायौ। ताकी किरिन देखि दिनपति नैं अपनौं रथ विरमायौ ॥६॥ चंपक कुँवरि प्रसूत होत ही हौं ग्रह बोलि पठाई। दुलरी कंठ छोरि दामिनि द्युति मोकौं दई वधाई ॥७॥ चित्रा लली जनम दिन मंगल सवनि दये मन भाये। उदय अस्त लौं मोल है जिनकौ कंकन मोहि पहिरायौ ॥८॥ वृन्दावलि कौ गर्भ धरत ही गोपी अति मन फूली। मोहत अमर समर छवि देखत दई मोहि नक फूली ॥९॥ तारावली लली की मैया निज कटि किंकिनि दीनी। मंजुल रव रवनीं रति मोहे कौन धौं रचि पचि कीनी ॥१०॥ पद्मावती पद्म दल नैंनी देखि सिहानी माता। दीनें करन फूल फूलनि सौं अति उदार वढ़ि ज्ञाता ॥११॥ जनीं श्यामला बेटी जेठी तब हौं ग्रह बोलि नचाई। दीनें वसन किरिनि रवि की छवि नख सिख लौं पहिराई ॥१२॥ बड़े गोप की सुता मंगला मंगल निधि जाकी मैया। मंगल प्रथम लीक मोहि दीनी याकी लगौं वलैया ॥१३॥ आनंदी इन्दी मुख सुंदरि जनमत ही कुटुम्ब सिहानों। इतनों दियौ मोहि ता दिन तें जो मेरे मन मान्यौं ॥१४॥ जे व्रज-मंडल सुता गोपिका ते मेरी जजमानैं। लिखि कें लीक सुनंद भांन जू दई मोहि हित मानैं १५ अब कीरति की कूषि सभागी जिहि राधा

अवतारी मंगल नाम रूप गुन मंगल मंगल जस विस्तारी १६ सुत के जनम जाय नहिं जाचौं जाचौ भये वृज कन्या या व्रत कौ फल पूरन पायौ कुँवरि देखि भई धन्या ॥१७॥ अब कीरति की सुता वधाई जो माँगौं सो पाऊँ। जितने नाम धरे तितनैं कछु मांगत सब मन भाऊँ ॥१८॥ श्री वृषभांन कुँवरि के ऊपर वारों कोटिन अमरी। कीरति हरषि आपनैं कर सों भूषन दीनें कवरी ॥१६॥ श्री राधा मुख ससि छवि देखत ससि की घटि गई जोति। प्रमुदित जननी बुलाय ढाढिनि कों दीनें अलकनि मोती ॥२०॥ कुल मंडन खंडन दुख जग के लै लै नामनि लाड़ै। सुनि वृषभांन घरनि तव रीझी दई लिलाट कों आड़ै ॥२१॥ सब वृज मीन सरोवर रावलि राधा छवि जल जीवैं। अपनें उर की लैं हमेल रानी मेली ढाढिनि ग्रीवैं ॥२२॥ कुँवरि तिहारी छवि उजियारी रति निरखत बल छाड़ें। श्री राधा जनम साध मो पूजी दीनीं भुज कों टाड़ें ॥२३॥ कुँवरि चरन पर वारों पंकज नख छवि रवि ससि सगरे। निजु कर सों कर गहि ढाढिनि कों कीरति दीनैं गजरे ॥२४॥ वेद अगोचर राधा गावत भाग वड़े व्रज आई। यह सुनि बात माँत ढाढिनि की नींवी गाठि दिवाई ॥२५॥ जो जो गुन ढाढिनि कल वरनैं गोपी सुनि भई लटुवा। रतन जटित वहु भांति पुहायौ कीरति दीनों वटुवा ॥२६॥ शिव विधि जाकौ ध्यान धरत हैं श्री राधा पद भजते हरि। अद्भुत सुजस सुनत यह रानी दीनी पग की जेहरि ॥२७॥ राधा मोहन सहज सनेही मोसौं कह्यौ मेरे देवर। सुन्यौं समान नाम कीरति नैं दीनैं पगनि कों तेवर ॥२८॥ देखी सुनी न

ऐसी कन्या स्वर्ग रसातल भूपर ॥ रव कमनीय जीय सुख बाढ्यौ दीनैं मनि मय नूपुर ॥२६॥ जोई जोई माग्यौ सोइ सोइ पायौ जनम बधाई राधा। नख सिख लौं ढाढिनि पहिराई पूजी मन की साधा ॥३०॥ जे जे भूषन कीरत दीनैं मोल करै को ताकौ। अपनी बुद्धि विचारत हारयौ जगत विभौ है जाकौ ॥३१॥ पग वंदन सब गोपिनु के करि जीवहु कीरति वाला। याके नाम रूप गुन की हौं करि हौं अंतर माला ॥३२॥ ब्रज कन्या जस ढांढिनि गायौ सवनि भयौ सुख भारी। सुर की वधू पहुप वरषा करैं धन्य धन्य ब्रज नारी ॥३३॥ पूछति श्री राधा की मैया कहा नाम ढांढिनि कौ। मो मन भावति नीकैं गावति आवति यहाँ दिन दिन कौ ॥३४॥ अपनौं नाम कहति कीरति सौं ढांढिनि सुख की रासी। ढाढी संग गोवर्द्धन मेरे हौं निज श्यामा दासी ॥३५॥८१॥

राग चैती गौरी (दाई)—गोपिनि सिरमौर रानी। मृदु मुसिकानी। सखीनि यह जानी। वहो सैननि दाई बुलाई भाग सुहाग भरी ॥१॥ दाई कौ रूप को वरनैं। तियनि मनि तरुनैं। पहिरि आभरनैं। वहो रंग महल में आई निकट पग परि रही ॥२॥ राय सुगंध मगायौ। गुलाव छिरकायौ। चँवेली मिलायौ। वहो मरदन सुभग सुहायौ अनखि जिय चुपुरही ॥३॥ कीरति कन्या जाई। सवनि मन भाई। उठि मंगल गाई। अहो परे हैं निसाननि घाउ तौ अरुन उदौ भयौ ॥४॥ भादौं पाँख पिछवारी। सुभ दिन अठवारी। विश्व उजियारी। वहो निगमनि अगम अपार सव लोकनि दुंदुभि वजी ॥५॥ तवहि सु खपरा मगायौ। वहु रतन जरायौ मोल

कहत न आयौ। वहो तामें ललीहि न्हवाइ माइ की गोद दई ॥६॥ दाई असीस सुनाई। कान्हर जोरी आई। श्रीदामा भाई। वहो रतन अमोल मगाइ सकट सत भरि दई ॥७॥ गुरु जन द्विज सब आये। श्री वृषभांन बुलाये। ग्रह लगन सुधाये। वहो रहे हैं समाज विचारि घरी जब द्वै भई ॥८॥ नाँव लली कौ श्रीराधा। गुननि अगाधा। सुनत मिटै वाधा। वहो वृन्दा विपिन विलासनि सखियनि जीवनि मई ॥९॥ सुनि भंडार लुटाये। जगत जस छाये। सुनि नीरस खिसाये। वहो कोटि कुबेर की सम्पति घर घर भरि रही ॥१०॥ हित अलि श्यामां जू ठाढी। गुननि गहै गाढ़ी। रूप मथि काढ़ी। वहो देखि लली कौ जनम सुतौ जकि थकि रही ॥११॥ जो यह दाई गावै। परम सुख पावै। मन हियौ सिरावै। वहो होय जुगल कौ उपासिक विपिन कृपा करैं ॥१२॥८२॥

श्री नंददास जी महाराज कृत—वधाई

वरसानैं तें दौरि नारि इक नंद महरि घर आई री। आजु सखी मंगल में मंगल कीरति कन्या जाई री ॥१॥ सुनि जसुमति मन हर्ष भयौ अति वोलि लई ब्रजवाला। मुक्ता मणि माला भूषण वर पठई सौंज रसाला ॥२॥ चलीं गज गामिनि साथनि हाथनि कंचन थार सुहाये। कमलनि के ऊपर खेलत मनु अगनित चन्द सुआये ॥३॥ डह डहे मुख छवि छाजत राजत लाजत कोटिक मैंना। कंजनि पर निर्तति मनु खंजन अंजन रंजित नैंना ॥४॥ कुंडल मंडित गंड वनें अति उपमां अधिक विराजै। हार सुढार चरन पर सोहैं निरखि सची छवि लाजै ५ गावत गीत कीरति जग पावन

भांमिनि मंदिर आई आनंद के आंगन मनु आनंद सानंद वजति वधाई ॥६॥ देखि मुदित वृषभांन भये अति भेटैं रुचि सौं लीनी। गद गद कंठ सवनि सौं बोले वीथी पावन कीनी ॥७॥ कीरति ढिंग निरखी सुठि कन्या धन्या अधिक अपारा। कौतिक में कौतिक रस भीनीं वरषति सीसनि धारा ॥८॥ सब जग धांम धांम पुनि जाकौ सो सुधाम जाहि मानैं। नन्ददास सुख कौ सुख सागर प्रगटी है वरसानैं ॥९॥८३॥

राग आसावरी—वाजति आजु वधाई वृषभानु नृपति घर। कीरतिदा रानी सुख सानी सुता सुलच्छन जाई वृषभांन नृपति घर ॥१॥ निरवधि प्रेम अवधि करुना मय प्रगटी सब सुखदाई। मुदित भये शिव शारद नारद आनंद उर न समाई ॥२॥ सकति सबै दासी हैं जाकी श्री हू तें अधिक सुहाई। नंददास पलनां में पौढे किलकत कुँवर कन्हाई ॥३॥८४॥

श्री कल्याण प्रभु जी महाराज कृत—राग आसावरी

वरसानैं वृषभांन गोप घर सोभा की निधि आई री। धनि धनि कृषि महरि कीरति की जिन यह कन्या जाई री॥ अखिल लोक भुव नाग लोक में देखी सुनी निकाई री। सिंधु सुता गिरि सुता सची रति नहिं समान कोऊ पाई री॥ आनंद मुदित जसोदा रानीं कान्ह की करौं सगाई री। प्रभु कल्यान गिरधर की जोरी विधनां यहै बनाई री ॥८५॥

श्री वंशी अली जी महाराज कृत—राग विभास

कुँवरि कृपा की दृष्टि भई। आज सखी मंगल कौ मंगल मोद विनोद मई ॥ मोहन हित प्रगटी श्री स्यामा सिधि निधि सबनि दई वंशी वंश रूप हित जानी निजु अपनाइ लई ८६

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग विहागरौ (चाव कौ पद)

चाव जसोमति लै चली राधा जनम उमाह ॥ टेक

गोपीं गोप वनैं ठनैं भूषन वसन सिंगार । लटकि लटकि नाचत सवैं तन मन फूले ग्वार ॥१॥ मेवनि भार भराइ कैं और लिये वहु साज । मंगल गावति नव वधू आवति मंदिर राज ॥२॥ चूरा हँसुली कनक की झंगुली कुलही तास । कान्ह कुंवर गोदी लियें आवति भरी हैं हुलास ॥३॥ घर घर गह मह ह्वै रही श्री वरसानैं ग्रांम । देखि महरि कौतिक छकीं आइँ कीरति धांम ॥४॥ भीतर रँगे हैं सनेह सौं इत उत गोपीं गोप । छिरकत कुम कुम अरगजा तन अति वाढ़ी है ओप ॥५॥ वदन विलोकति कुंवरि कौ पुनि पुनि परम अनूप । धन्य कीरति जिन उर धरी कौतिक अचिरज रूप ॥६॥ पगनि वनैं मणि घूँघरू चूरा सुभग सुढार । हँसुली कठुला कंठ में झंगुली कुलही चार ॥७॥ नंद घरनि पहिराइ कैं मन वांछित कछु और । सगुन भये सुभ ता घरी सुख वाढ्यौ नहिं थोर ॥८॥ परम प्रेम सागर झिले काहू तन न सम्हार । वृन्दावन हित रूप रस भयौ उदित श्रुति सार ॥९॥८७॥

राग मारू—रावलि पति जजमांन तिहारौ ढाढिया महाराज । ठाढौ पौरि रावरी टेरतु सुनियौं गोप समाज ॥ तिहारौ ढाढिया महाराज ॥टेक॥ अरवराइ मंदिर तें निकसे सुनि ढाढी की वानीं । मानौं तरनि प्रभात उदै भयौ निसा दरिद्र विहानीं ॥२॥ प्रथम ही प्रेम उदधि करि मज्जन कुल ढाढी पहिचानि । वहुत कृपा करि निकट वुलायौ अपनैं कौं दै मांन ॥३॥ कछु इक टेर सुनी कीरति हूं प्रेम गरौ भरि आयौ वकुचा खोलि

जरी तारनि कौ वागौ तुरत पठायौ ४ ढाढी देत वधाई पुनि पुनि बड़े गोप की जाई । वसन अमोल काढि भीतर ते ढाढिनि कौं पहिराई ॥५॥ राधा जनक चितै ढाढी तन सींचत प्रेम पियूष। सुनि रे ढाढी आज मिटाऊँ तेरे मन की भूँख ॥६॥ तव वह हस्यौ लस्यौ सुरपति ज्यौं दीनीं हरषि असीस । डवा भरयौ गहनौं जराइ कौ भांन कियौ वकसीस ॥७॥ माथ नवाइ नाथ अपनैं कौं महिमा भाग मनाइ ॥ छक्यौ देखि वैभव वर-सानैं वरनत हूं न अघाइ ॥८॥ साजे सिंगार घरनी लै निर्त्रीति मानिक चौक मझार । सभा विराजति गोप इन्द्र की वंश करतु विस्तार ॥९॥ दिन मणि कुल उद्योत महावल नीप नृपति जस गाऊँ । धर्म सील सुत भये जूप जू तिन गुन पार न पाऊँ ॥१०॥ नृप दयाधि तिनके कुल मंडन कहाँ लगि चारित वखानौं । धर्म धीर गंभीर सकल विधि तिनके नंदन जानौं ॥११॥ तिनके सुवन भये भुव भूषन भक्ति सुमति रति जांन। विरद पुनीत सुनौं तिनके सुत जग पालक महीभांन ॥१२॥ तिन घर दया सील सुभ लच्छन सुखदा रानी जानौं । सुकृत पुंज फल कूपि प्रगट यह मेरौ रावलि रानौं ॥१३॥ अब वरनौं राजनि महराजा सब लाइक वृषभांन । जा पद रज लोकेश भिखारी को सरवरि को आंन ॥१४॥ अर्थ धर्म अरु काम मोच्छि फल निधि सिधि जाहि गनीन । जाकी पौरि सहज सब सेवत बिनु आदर आधीन ॥१५॥ तिन कुल भयौ प्रथम श्रीदामा नंद नंदन हितकारी। पुनि अब वंश तिलक भई राधा सफल फली मम वारी ॥१६॥ कीरति कूखि उदधि तैं प्रगट्यौ कौतिक रस मय चंद निसि दिन उदित मुदित पोष्न हित दृग

चकोर सुख कंद १७ पुनि रस दान रसिक मंगल हित वहु गुन रूप अगाधा। मिटि गई वाधा जनमत राधा पूजी सब मन साधा ॥१८॥ यौं कहि विवस भयौ जब ढाढी रहि गयौ भुजा उचाइ। देखत उदौ ईश अपनैं कौ दृग जल प्रेम चुचाइ ॥१६॥ ब्रज रज के अभिमान भर्यौ तब वोल्यौ वचन निसंक। गोपराज कौ घूरौ सेऊँ गनौं लोक पति रंक ॥२०॥ ये दृढ वचन सुनैं महारानी कीरति निकट वुलायौ। सजल नैंन भरि चितै कृपा सौं मंदिर निकट वतायौ ॥२१॥ नेति नेति कहि निगम रह्यौ वचि मुनि जन पार न पायौ। वेदांत ग्यांनिन हूं ढूँढ्यौ पचि पचि जनम गंवायौ ॥२२॥ सो रस रूप सरूप उभै कीरति जसुमति दुलरायौ। रीझि मोहि जजमांन दुहुँनि कौ सहजहिं वदन दिखायौ ॥२३॥ कीरति कहति आपु ढाढी सौं अनत कहूं जिन जाइ। पौरी वैठि लली जस नित नित मोकौं वरनि सुनाइ ॥२४॥ वलि हित रूप सुनत आनंद्यौ कीयौ यहै विचार। वृन्दावन सित सेइ सदाई गोपराज दरवार ॥२५॥८८॥

(दाई वरनन) राग चैती गोरी—गोपिन सिरमौर रानी। मृदु मुसिकानी॥ सखीन यह जानी। वहो सैंननि दाई वुलाई भाग सुहाग भरी ॥१॥ दाई कौ रूप को वरनैं। तियन मन तरनैं॥ पहिर आभरनैं। वहो रंग महल में आइ निकट पग परि रही ॥२॥ राइ सुगंध मंगायौ। गुलाव छिरकायौ॥ चँवेली मिलायौ। वहो मरदन सुभग सुहायौ अनखि जिय चुपुरही ॥३॥ कीरति कन्या जाई। सवनि मन भाई॥ उठि मंगल गाई॥ वहो परे हैं निमाननि घाउ तौ अरुन उदै भयौ ॥४॥ भादौं पाख पिछ- वारी सुभ दिन अठवारी विश्व उजियारी वहो निगमनि

अगम अपार सब लोकनि दुंदुभी बजी ५ तबहि सु खररा मगायौ। बहु रतन जरायौ ॥ मोल कहत न आयौ । वहो तामैं ललीहि न्हवाइ माइ की गोद दई ॥६॥ दाई असीस सुनाई । कान्हर जोरी आई ॥ श्रीदामां भाई । वहो रतन अमोल मगाइ सकट सत भरि दई ॥७॥ गुर जन द्विज सब आये । श्री वृष-भांन बुलाये ॥ ग्रह लगन सुधाये । वहो रहे हैं समाज विचारि घरी जब द्वै भई ॥८॥ नांव लली श्रीराधा । गुननि अगाधा ॥ सुनत मिटै बाधा । वहो वृन्दा विपिन विलासिनि सखियनि जीवनि भई ॥६॥ सुनि भंडार लुटाये । जगत जस छाये ॥ सुनि नीरस खिसाये । वहो कोटि कुवेर की संपति घर घर भरि रही ।१०। हित अलि स्यामा जू ठाढीं । गुननि गहे गाढीं ॥ रूप मथि काढ़ीं । वहो देखि लली कौ जनम सुतौ जकि थकि रहीं ॥११॥ जो यह दाई गावै । परम सुख पावै ॥ मन हियौ सिरावै । वहो होइ जुगल को उपासिक विपिन कृपा करै ।१२।८६

राग चैती गौरो [दाई तथा कीरति जू कौ दस मास गर्भ वर्णन]

प्रथम मास जब लाग्यौ । हियौ अनुराग्यौ ॥ भाग्य बढ़ जाग्यौ । अमंगल भाग्यौ ॥ अहो ऊग्यौ है बिरवा प्रेम मुदित रानीं भई ॥१॥ दुतिय मास जब आयौ । कह्यौ वचन सुहायौ ॥ सखी सौं जनायौ। परम सुख पायौ ॥ अहो गति मति तौ भई और कहत नहीं आवहीं ॥२॥ तृतीय मास गोप रानीं । परम सुख सानी ॥ कहति मृदु बानीं। लली उर आनीं ॥ अहो लच्छन देखि अभूत परम हर्षित भई ॥३॥ चौथें मास मन फूल्यौ । भाग्य अनुकूल्यौ ॥ महा रस भूल्यौ । सकल दुख भूल्यौ ॥ अहो गोपराज कुल वधू हो परम सोभित भई ४ पँचयौं मास

जब आन्यौ । देखि कुटुम्ब सिहान्यौ ॥ नगर जब जान्यौं । मोद मन मान्यौं ॥ अहो फूलीं सकल सवासि अंचल लै असीस दै ॥५॥ छठयें मास छवि वाढ़ी । अंग अंग आढ़ी ॥ कंचुकी भई गाढ़ी । भवन मधि ठाढ़ी ॥ अहो आलस कछुक जनायौ धरत पग डग मगे ॥६॥ सातयें मास सहेली । नहीं तजति अकेली ॥ कहति सुनौं हेली । रहौ संग भेली ॥ अहो भांति भांति समुझाइ गर्भ रच्या करी ॥७॥ अठयैं मास द्विज आये । वोलि पठाये ॥ न्यौंति जिमाये । सजन पहिराये ॥ अहो वोले सजन सौं बोल सोई प्रभु कीजिये ॥८॥ नवयें मास गोप वाला । कहैं वचन रसाला ॥ अजू कीरति कृपाला । बूझति इहिं काला ॥ अहो कब ह्वै है वह द्यौस सु मंगल गाइ हैं ॥९॥ पूजे हैं दसयौ मासा । उर वढ्यौ है हुलासा ॥ सफल भई आसा । कियौ भवन प्रकासा ॥ अहो तिहिं छिन दाई वुलाई तौ कूपि मिराइयौ ॥१०॥ दाई लली की उजागर । रूप की आगर ॥ सव गुन नागर । प्रेम कौ सागर ॥ अहो देखि त्रियां भई थकित कहाँ लौं वखानियें ॥११॥ भांन घरनि भई धन्या । जनी जब कन्या ॥ न तिहिं सम अन्या । सेस शिव मन्या ॥ अहो लोकनि वजे हैं सदानैं लली जब औतरी ॥१२॥ भांन अथाइँ तें टेरे । आये जब नेरे ॥ कुँवरि तन हेरे । भूले देखि उजेरे ॥ अहो आनंदे पुरवासी भीर रावर भई ।१३। नारिनु मङ्गल गाये । सु सथिये धराये ॥ वितान तनाये । कदलि रुपवाये ॥ अहो धुजा कलश धरि धाम सु चौक पुराइयौ ॥१४॥ विप्रनि वेद उचारे । नक्षत्र विचारे ॥ सुभ गुन विस्तारे । धनि सुदिन तिहारे ॥ अहो भवन चतुर्दस सेव्य सु

तुम ग्रह आइयौ १५ सुनि सुनि कीरति हरषैं चित्त आकरषै ॥ सुता मुख परसैं । रतन पट वरषैं ॥ अहो भादौं आठैं उजेरी सुविरद बुलाइयौ ॥१६॥ दधि मधु घोर मिलाये । वहु माट भराये ॥ लै अजिर धराये । गहि सिरनि ढुराये ॥ अहो माची है गोरस कीच खार वीथिनु वहे ॥१७॥ छिरकत काहू न वाचैं । कुलाहल माचैं ॥ गोप गोपी नाचैं । प्रेम वस साचैं ॥ अहो देखि देखि नभ वासी पुहुप वरषा करैं ॥१८॥ कर गहैं कंचन थाला । भरे रतन रसाला ॥ वारति मणि माला । छवि निरषि विशाला ॥ अहो दयौ है अमित धन भांन विदा दाई भई ॥१९॥ यह मंगल सुखदाई । उर वसहु सदाई ॥ लली की बधाई । भवन तिहूँ छाई ॥ अहो श्री हरिवंश कृपा वल कछु जस वरनियौ ॥२०॥ जनम जनम गुन गाऊँ । हित रूप दुलराऊँ ॥ यह टेरि सुनाऊँ । वास वन पाऊँ ॥ अहो वृन्दावन हित देहु वधाई चरन रति ॥२१॥९०॥

राग आसावरी—रतन जटित चौकी पर बैठी लाडति कीरति ललित लली है । त्रिभुवन भाग्य भरी को ऐसी रस मयंक की उगन थली है ॥ वदन विलोकि करज चटकावति सुकृत अवधि के फलनि फली है । वृन्दावन हित रूप जासु कें श्री हू की स्वामिनि दूध पली है ॥९१॥

जोगिया चौतालौ—अरी मेरी वारी राधा या जोगिया कौं देखति तुरत डरैगी । अंग भसम वाघंवर धारैं व्याल गरैं लखि को धौं री धीर धरैगी ॥ गद गद गावै अलख मनावै विनु परचे को प्रतीति करैगी । वृन्दावन हित रूप दरस चाहतु गोप कन्या कैसौ तू रावल फिरि जाहु कोऊ लरैगी ।९२।

राग चैती गौरी (साथिये वरनन)—आजु लली कौ सोहिलौ, अहो ब्रज ओप्यौ मंगल भूर ॥ लली कौ सोहिलौ ॥टेक॥ अहो वेटी सुनहु सुता महीभांन की । अहो वेटी हित वचननि दें कांन ॥ लली०॥ अहो वेटी पौरि गोप पति वीर की । अहो वेटी सथिया रचि रुचि मांनि ॥लली०॥१॥ अहो भाभी गरग गऊ-तम ज्यौं कह्यौ । अहो भाभी मो हिये वचन प्रमांन ॥ लली०॥ अहो भाभी गोप सभा वैठे सवै । अहो भाभी आगम कियौ हो वखांन। लली०।२। अहो भाभी तुव कुल विपुल प्रताप कौं । अहो भाभी गावत वड़े हो मुनीस ।लली०। अहो भाभी ता दिन तें भुव देव पद । अहो भाभी हौं वंदति रज सीस ॥लली०॥३॥ अहो भाभी मो अभिलाष सफल भयौ । अहो भाभी तेरौ भाग अनूप ॥लली०॥ अहो भाभी लली जनम कौतिक निरखि । अहो भाभी भवन समात न रूप ॥लली०॥४॥ अहो भाभी अलभि लाभ विधनां दयौ । अहो भाभी देहु लीक वहु भांति ॥लली०॥ अहो भाभी सथिया रोपे सींक जुत । अहो भाभी धरे हैं जलज मणि पांति ॥लली०॥५॥ अहो भाभी श्रीदामा के जनम तें । अहो भाभी देहु सतगुनौं साजु ॥लली०॥ अहो भाभी ब्रज-रानीं सौं वचन जे । अहो भाभी सत्य किये प्रभु आजु ।लली०। ॥६॥ अहो भाभी नौ नंदन मही भांन के । अहो भाभी या ब्रज में कुल दीप ॥लली०॥ अहो भाभी तिनमें जन लोकनि कियौ । अहो भाभी श्री वृषभांन महीप ॥लली०॥७॥ अहो भाभी भूमि रतन गोधन कनक । अहो भाभी हय गय वसन अपार ॥लली०॥ अहो भाभी मुंह माग्यौ लैहौं सवै । अहो भाभी मोहि झगरन की वारि लली० ८ अहो रानीं कीरति

वहु बिधि सौ दियौ अहो जो माग्यौ लली अवतरति लली०
अहो वेटी औरु लेहु जो चाहियै । अहो मनुहारि वहुत विधि
करत ॥लली०॥६॥ अहो भाभी धनि मुखरा जिन तू जनीं।
अहो भाभी धनि तेरौ जनक उदार ॥लली०॥ अहो भाभी
इंदु सैंन नृप जग विदित । अहो भाभी तिन कुल तुम दातार
॥लली०॥१०॥ अहो भाभी देति असीस अनेक विधि । अहो
भाभी रहौ हो अचल सुख धांम ॥लली०॥ अहो भाभी कुल
मंडनि जुग जुग जियौ । अहो भाभी हौं वलि राधा नाम
॥लली०॥११॥ अहो भाभी पहिरी वंश सवासि सव । अहो
भाभी हौं पहिरी हिय हेत ॥लली०॥ अहो भाभी अति लडि
तेरी नंदिनीं । अहो भाभी मंगल अमित निकेत ।लली०।१२।
अहो भाभी अव सुनि मेरें लार यह । अहो भाभी राखति तुव
कुल आस ॥लली०॥ अहो भाभी वृन्दावन हित रूप वलि ।
अहो भाभी देहु कुँवरि पद दासि॥ लली कौ सोहिलौ ॥१३॥६३॥

राग आसावरी—आजु लली कौ जनम सोहिलौ वाजत
रंग वधाई । माचि रह्यौ गह गड रावलि में कीरति कन्या
जाई ॥१॥ वरषति है निधि सिद्धि घोष में अवनि ललित
छवि छाई । सरसतु है आनंद सतगुनौं कहत कह्यौ नहि
जाई ॥२॥ औरै ओप भांन मन्दिर की देखौ दृष्टि लगाई ।
उभिलतु है अनुराग हियें अति कौंन महामणि आई ॥३॥
लेहु लेहु वानी भई जित तित भांन दांन झरलाई। राजत हैं
जाचक सुरपति से गाजत है धन पाई ॥४॥ टेरत ग्वाल कदंव
चढि चढि वन गाय जात वगदाई । फेरी सुनत गांम दिस
सवहिन सो छवि हियहि समाई ५ वह टेरनि वह लकुटनि

फेरनि वह आवनि मन भाई। मानौं उमगि सुरसरि धारा सिंधु मिलन कौं धाई ॥६॥ गोधन छये गोप पति पौरी ग्वालनि भीर मचाई। अति कौतूहल हरद दूध दधि वरषत कीच मचाई ॥७॥ नांचत लटकि लटकि वीथिन में गैंया सुविधि खिलाई। विझुकति लहरि उठति मनु सागर अति सोभा सरसाई ॥८॥ जोजन कई धौर इक वरनी श्री वृषभांन मगाई। दई सवच्छ दोहनी कंचन हरषि असीस पढाई ॥६॥ गोपी रचति धांम रचना लषि विधना मति वौराई। मालिनि महा भाग्य महिमा लषि रति रंभा पछिताई ॥१०॥ नाइनि कै ठकु-राइनि सुर पुर फूली अंग न माई। कीरति पाइ महावर मांडति को सम भाग निकाई ॥११॥ छीपिनि छीपि पीत सारी लै रानी कौं पहिराई। ताकौं रीझि इतौ दीनौं लखि इन्द्र कुवेर लज्याई ॥१२॥ नांचत है रनिवास ढाढिनी कुंवरि सोहिलौ गाई। वहु संपति दीनी कीरति ताहि अपनैं निकट वसाई ॥१३॥ सुपदा आनि चढायौ चरुआ लगि लगि चरन मनाई। रतन जटित सौनैं के कंकन पहिरि असीस सुनाई ॥१४॥ भांनमतीं रचि धरे साथिये भगरत रुचि उपजाई। मुहुँ माग्यौ वृषभांन ताहि दै अतिसै मान वढाई ॥१५॥ शुक सारो की रचना करि करि दरजिन भैट चढाई। वंदन वार पाट पचरंग की पटवनि आनि वँधाई ॥१६॥ वनिता चारु वधाये गावति चाव छवीली लाई। निरखि श्री राधा रूप अगाधा देति असीस सुहाई ॥१७॥ जग मग जोति भवन में आंगन मोतिनु चौक पुराई। द्वारैं विरद पढ़त वंदी जन सूरज वंश मल्हाई ॥१८॥ सर्वेस्वरि अवतरीं गोप कुल महा प्रेम अधिकाई

काई भरे परम आवेश नारि नर चित की वृत्ति घुमाई १९ गोदी ओटि में जु यह मांगी सुनि कीरति मुसिकाई । वृन्दावन हित रूप लली की दासि लीक लिख पाई ॥२०॥९४॥

राग परज–छंद—रावलि ऊग्यौ री हेली वीज सुहाग कौ । चलि सुख देखौ री हेली हिय की लाग कौ । हिय लाग कौ सुख देखि सजनी उदौ कीरति भाग कौ । कहत न वनैं व्रज आजु अंवुद ऊनयौ अनुराग कौ ॥ वृखभांन घरनीं कृषि अवनीं रूप विरवा है भयौ । हिता वल्लव राज प्रेम पियूष कौ पोपन दयौ ॥१॥ विशद वधावौ री हेली तिहिं सुभ दरस कौ । सव व्रज आनंद री हेली आगम सरस कौ ॥ आगम सरस वृप-भानु कुल कौ लोक लोकनि जस छयौ । जिहिं पौरि रज वंदन करन विधि प्रेम सौं वांछित भयौ ॥ इहिं लली कौ मुख ललित सजनीं निरखि हौं वलि वलि गई । मनु कनक अंवुज कली मुकुलित श्रवति छवि नित नित नई ॥२॥ यह सुख उझिल्यौ री हेली कीरति दान कौ । सुकृत उदधि सम री हेली श्री वृषभांन कौ ॥ वृषभांन सुकृत उदधि की सम कोऊ पार न पावई । इहिं कुँवरि कैं दिन जनम उमग्यौ विश्व प्रेम छकावई ॥ व्रज भूमि मंगल अमित उफनैं थकित वरनत सारदा । चिरु-जियौ कीरति प्रांन जीवनि घोप सुख वढ़ौ सदा ॥३॥ लाड़ गहेली री हेली रावलि भूप की । दिन दुलरावौ री हेली गरुवै रूप की ॥ रूप की गरुवी लड़ैती अंक जननी कैं दिपै । मनहुँ शोभा पुंज में छवि निकर सिसु दामिनि छिपै ॥ वृन्दा-वन हित रूप उद्भव रसिक जननि प्रसंश कौ । सोई वसी द्दग पतरिन राधा सुधन श्री हरिवंश कौ ४ ९५

राग धनाश्री आवौ मिलि मंगल गावौ राधा जननी कूषि मल्हावौ ॥१॥ सत्य वचन कीरति भये एरी। यह जग चलि है प्रेम पहेरी ॥२॥ मंगल भेट करनि लेहु माई। भाग भरी कौं देहु वधाई ॥३॥ कौंन सुकृत इहिं दाई कीयौ। कुँवरि दरस भयौ सीतल हियौ ॥४॥ जो कछु दत्त इहिं ढाढिनि पायौ। मो रसना करि जातु न गायौ ॥५॥ परम धन्य ये ब्रज की नारी। जे आजु कीरति भवन सिधारी ॥६॥ कहा कहौं मालिनि भाग निकाई। जो लै वंदन माला आई ॥७॥ धन्य विप्र धरयौ नाम सु राधा। जामें भरयौ अमी जु अगाधा ॥८॥ देखि सखी लागतु दिन कमनी। अति आनंद वरषत ब्रज अवनी ॥९॥ रावलि छवि जु निकेत भयौ है। मनु ससि निकर उदोत लयौ है ॥१०॥ भांन धरनि पूजी अभिलाषा। भवन प्रकासी सोभा साषा ॥११॥ भांति भांति कीरति सुख ओपी। सुजस धुजा लोकनि जिन रोपी ॥१२॥ सव मन बाढी रंग रली है। दुहूँ भूपनि कुल वेलि फली है ॥१३॥ धनि कीरतिदा धनि नँदरानी। जिनकी महिमा विश्व वखानी ॥१४॥ ब्रज में मंगल भूर भयौ है। सुर नर मुनि आनंद दयौ है ॥१५॥ जसुमति की निर्मल देखि करनी। सुत मंगल निधि कौं उर धरनीं ॥१६॥ अलभि लाभ मणि ब्रज दरसायौ। ताकौ सुधन सु कीरति पायौ ॥१७॥ उत घनस्याम गौर इत कन्या। निरखि भये नर नारी धन्या ॥१८॥ अव विधि वांछित करौ हमारौ। जुग जुग जियौ जौलौं ध्रुव तारौ ॥१९॥ घट घट प्रेम भरयौ भुव पुर पुर। भये रस विरवा रसिकनि उर उर ।२०। वृन्दावन हित रूप वलि गई मोहि दासि की लीक लिखि दई ९६

राग आसावरी—ए सुनि सजनी ब्रज धरु आजु अति आनंद मई। वृषभांन घरनि की कूषि कन्या प्रगट भई॥ कछु सदन सदन प्रति और रचनां देखि नई। रावलि पति अति अनु-कूल दाहिनौं भयौ है दई॥१॥ इहिं गिरि द्रुम वेलि आजु फूल फल लै उमहीं। पुर वीथिनु परम विनोद निधि सिधि पूरि रहीं॥ जल पूरित सरवर वृन्द सरिता उमगि वहीं। चलि देखि लली कौ रूप रसना पर न कही॥२॥ सुनि गवनीं रवनीं नारि लै लै भेट भलीं। तन सजि सजि सुभग सिंगार ह्वै वस प्रेम चलीं॥ दुलरावति कीरति कूपि जो सुख सार फली। आजु गली भली छवि भीर वाढी रंग रली॥३॥ ब्रज गये वधौवा दौरि वहु नगरी नगरी। चहुँ दिस तें वनिता वृन्द आवति सुनि डगरी॥ ऊनयौ मनु जलद अमोघ गांन गर-जति सगरी। वरसत रस रूप अखंड भरति हग धरि अगरी॥४॥ कटि लचकति जोवन भार आतुर गति धाई। सुख सागर भांन निकेत छवि सरिता आई॥ मग भीर रुकनि परैं भौंर गहर सोभा पाई। डरे पथिक अमंगल देखि सुजस जल सरसाई॥५॥ लखि पीत धुजा फहराति मंदिर सिखिर वनीं। मनु टेरति भुजनि उचाइ सोभा सुता जनीं॥ ढिंग रतन कलश उदोत उग्यौ मनु ससि कमनीं। वृषभांन भवन छवि रासि वानिक परै न गनीं॥६॥ जाकी पौरि परम अभिराम जलज वितान तनैं। जहाँ नवल नूत दल माल वंदन वार ठनैं॥ दीपावलि दिपति सुदेश कनक घट वृन्द वनैं। मनु हँसत सदन वर वदननि लहि आनंद घनैं॥७॥ रहीं चकित थकित वर भांम प्रेम उर प्रवल भयौ हग देखन कौ अनुराग सो लै

भवन गयौ ॥ जब ललित लली मुख देखि उपज्यौ मोद नयौ । झुकि लागति कीरति पाइ मंगल विशद ठयौ ॥८॥ मणि अजिर मलय घसि लीप कुम कुम चौक रची । बहु मोल जलज मणि वीनि बिच बिच पांति खची ॥ मनु पूरब सुकृत उदोत अजिर लिलाट सची । विधि गयौ है चतुरई भूलि मो मति वादि पची ॥९॥ अनुजा वृषभांन बुलाइ कीरति भाग भरी । वेटी धरहु साथिये द्वार तुम अभिलाष फरी ॥ मन भावै सो सो लेहु देहु असीस खरी । आजु जियौ है सजन सौं बोल धनि यह सुभग घरी ॥१०॥ हठि मागति अपनी लीक औसै वदन लसी । पूरन ससि होत उदोत मनु कुमदिनि विकसीं ॥ रचि धरे हैं साथिये पौरि भाग मनाइ हँसीं । मर्कत मणि मधि प्रतिबिंब दामिनि मनहुँ लसीं ॥११॥ ते बैठीं चहुँ दिस घेरि लली लै गोद धरी । पट भूषन कीरति देत अति सुख सिंधु ढरी ॥ पद वंदि परम आनंद मेवनि गोद भरी । तब अंचल छोर पसारि असीस देति निकरी ॥१२॥ जहाँ गह गहे घुरहिं निसान रुचि सौं सहनाई । गन विप्रनि उचरत वेद मिलि पर-वत झांई ॥ घन गरजनि गई है लज्याई कौलाहल माई । बहु ढोलक ढोल मृदंग झालरनि धुनि छाई ॥१३॥ अति नंद भरे आनंद जब यह सुधि पाई । लै निजु पुर सहित समाज जसुमति उठि धाई ॥ धरि मोंहन सोंहन गोद बरसानैं आई । आगैं निकसे वृषभांन सजन आगम भाई ॥१४॥ दोऊ मिलत प्रेम भरि अंक नंद रावलि रानौं । अति उभै तेज अनुराग धरैं मूरति मानौं ॥ ये एक प्रांन द्वै देह भांन ब्रज पति जानौं । पट जरी वजार त्रवाइ छयौ छवि बरसानौं ॥१५॥ बहु भाग

फूल विछाइ पुनि पाँवड़े किये । मंगल धुनि वेद कराइ ब्रजपति भवन लिये ॥ ब्रज रानी कीरति भेटि प्रेम भरी जु हिये । पुनि विपुल करति मनमांन हरि हँसि गोद दिये ॥१६॥ राधा मुख महरि विलोकि अति कौतिक भूलीं । कछु विधि तन गोद पसारि आनंद में भूलीं ॥ कियौ अपनौं सुकृत विचार भागिनु अनकूलीं। पुनि मन मन प्रभुहि मनाइ हिय वारिज फूलीं ॥१७॥ तव कीरति तन मुसिकाइ गूढ़ कहति वानी । लखि गौर स्याम सुख धांम वारि पीवति पानी ॥ वहु रतन आभरन देति कीरति ब्रज रानी । ता सुकृत उदधि में न्हाइ जुगति निगमनि जानी ॥१८॥ सिसु रूप अनूप किशोर उभै जिन गोद दुरे । दै जननीं जनकान मोद चरित विस्तरन दुरे ॥ सुर वरषत कुशम सुगंधि व्यौंम विमान जुरे । जिन जनमत लोक अनंत हरषि निसान धुरे ॥१६॥ वृषभांन सुता सुत नंद असीसति यौं कहनौं । यह जोरी श्री हरिवंश लोचन कौ गहनौं ॥ रस लीला ललित निकेत रसिकनि कौ लहनौं । वृन्दावन वाल हित रूप या रस में रहनौं ॥२०॥६७॥

राग मांझ (प्रथम अजार चारी के दोहा)—भांन भवन गह गड वडौ सिमिटे गोपीं गोप । कीरति अंक जु अति लड़ी भई सतगुनी ओप ॥१॥ भादौं सुकला अष्टमीं अति पुनीत गुरुवार । अरुन उदैं आंनक धुरे वल्लव राज दुवार ॥२॥ श्री रावलि रविजा निकट राजत पुर अभिराम । तहाँ सर्वेश्वरी औतर श्री वृषभांन सुधाम ॥३॥ श्री कीरति भागिनु भरी मैया कृपा निकेत । ताकी कूषि प्रगट भई अहिलादनि हरि हेत ॥४॥ ॥गाइवे की टेक॥ हरि अहिलादनि जनमीं मंगल ब्रज छायौ ।

देव दुंदुभी वाजैं आनंद सरसायौ ॥टेक॥छंद॥ देव दुंदुभी वाजैं इत ब्रज रावलि गह गड भारी। चोवा चंदन वंदन छिरकैं निर्त्त करैं नर नारी॥ वाजत वाजे वहु विधि सवहिनु जै जै धुनि उच्चारी। वृन्दावन हित रूप धन्य दिन प्रगटी है सुकुँवारी॥१॥ आजु सोहिलौ भांन भवन में वरषत रंग अगाधा। नांचत मंगल मुखी दांन दै तिन मन पुजई साधा॥ नीकैं गावैं वधुनि हँसावैं। वचन कहैं मुख आधा। वृन्दावन हित रूप औतरी सर्वेश्वरि श्री राधा॥२॥ गोप सभा में आये भँडेला सवकी नकल वनावैं। वांके वदन वंक रचि फैंटा वंक नैंन मटकावैं॥ हम प्रोहित जजमांन वानियां कवहूँ न न्यौंति जिमावैं। वृन्दावन हित रूप ललौरे गोपनि अधिक हँसावैं॥३॥ आयौ इक वाघंवर ओढ़ैं करतु नगर में फेरौ। सीस जटा तन भसम रमाये आयौ रावरि मांहि दरेरौ॥ श्री वृषभांन अजिर में ठाढ्यौ कुँवरि दरस उरझेरौ। वृन्दावन हित रूप डरै नहीं हाथ दिवावौ मेरौ॥४॥ अरी कहाँ ते आयौ जोगी नाटक चेटक धारी। भिक्ष्या दै फेरौ जु पिछौंडौ डरै न राधा वारी॥ माता हौं गंडा रचि लायौ सुनि यह सीख हमारी। वृन्दावन हित रूप अमर होइ करै नाथ रखवारी॥५॥ हित कौ वचन कहत है जोगी मन जु विचारयौ रानीं। कुँवरिहि ढांपि वसन सौं लाई नाथ वारि पियौ पानीं॥ सीस जंत्र कहि चरन धरायौ मुख मृदु उचरत वानीं। वृन्दावन हित रूप विदा भयौ भिक्ष्या लै मन मानी॥६॥ भेष वदलि सुर वनिता भुव तल स्वर्ग लोक तें उतरीं। ब्रज वनितनि कौ रूप देखि भईं चक्रत दारु मनु पुतरीं॥ ये जु अलौकिक शृष्टि औतरीं एक

एक ते सुथरी वृन्दावन हित वे जु लोक वत रची कमल के सुतरीं ॥७॥ श्री कीरति जू कन्या जाई जसुमति जायौ लाला। प्रेम सिंधु में पैरति नाना खेल रचति ब्रज वाला ॥ ऐसीं रूप आगरी वारौं कोटिनु दामिनि माला। वृन्दावन हित कुँवरि जनम ब्रज वाढ्यौ प्रेम रसाला ॥८॥ ब्रज वनितनि कौ भूर भाग्य विधि करत प्रशंस सदाई। राधा जनम सोहिलै नाचति कहति वधाई वधाई ॥ देत असीस लली चिरुजीवौ भीजीं प्रेम महाई। वृन्दावन हित रूप सिंधु वढ्यौ वेहद वरन्यौं न जाई ॥९॥ सर्वेश्वरी रासेश्वरी श्यामा उदौ घोष में कियौ। रसिक अनन्यनि पै जु अनुग्रह तात मात जस दीयौ ॥ कौंन कृपा वरनौं यह श्री हरिवंश सिरायौ हियौ। वृन्दावन हित रूप स्वामिनी गाइ जनम जस जीयौ ॥१०॥९८॥

राग गौरी (मंगल मुखी वरनन)—जुग जीवनी जुग जीवनी लली ॥टेक॥ होहु लली जुग जीवनी हो हरषि असीसनि देत। नांचत हैं मंगल मुखीं कुँवरि वारनैं लेत ॥री लली जुग०॥१॥ भीजे कौतिक रंग में हो नचत अनोखे खेल। जुवतिनु जूथ जुरे जहाँ दैंहिं पट हार हमेल ॥ री लली०॥२॥ जियौ लली की मौसी हो जो वरषी वहु दांन। लटकि लटकि चरननि लगैं कीरति दैंहिं सनमांन ॥री लली०॥३॥ गल कंचुक सूथनि हरी हो सिर फैंटा जरी तार। झूंमिक लै निर्त्तति सवै पावत रीझि अपार ।री लली०।४। भौंह मोरि मुख मोरि कैं हो नकलैं रचत विशेषि। हँसति भाग भरीं गोपिका तिनकी ओरी देखि ॥री लली०॥५॥ तार जंत्र ढोलक वजैं हो पग नूपुर मिलि संग। श्री राधा कें जनम दिन रावलि वरषत रंग री लली० ६

ब्रज अति ओप बढ़ावनीं हो यह अनुजा श्रीदाम। भांन वंश जस वर्द्धनीं रस मय राधा नाम ॥री० लली॥७॥ रतन अंगूठी आरसीं हो वनिता देति बुलाइ। वृन्दावन हित रूप बलि भीर न भवन समाइ ॥ री लली०॥८॥६६॥

राग गौरी (मालिनिया बरनन)—फूली लखि फूली री मलिनियां ॥टेक॥ तन मन फूली मलिनियां हो यह पियरी की वार। कन्या जनमी भांन घर आजु बांधति वंदन वार ॥री मलिनियाँ०॥१॥ देखि वधू अचिरज छकीं हो करत विचार जु गोप। भवन उज्यारो ह्वै रह्यौ दाह कनक तन ओप ॥री मलिनियाँ० ॥२॥ वंदन माला बांधि तू हो सब कैं घर घर जाइ। हौं देहौं मन भांवतौ कीरति कह्यौ समुझाइ ॥री मलिनियाँ०॥ ॥३॥ रमकी झमकी फिरत है हो उभकति कीरति अंक। नैंन रहे चक चौंधि कैं लखि राधा वदन मयंक ॥री मलिनियाँ० ॥४॥ किधौं सची रति मैंनका हो कौतिक रचत अनंत। किधौं कमला खेलै भवन किधौं छवि मूरति वंत ॥री मलिनियाँ०॥५॥ सदन सदन रचनां करी हो भाग भरी इहिं भांति। मनु पुर तें सोभा उमगि लोकन जीतन जाति ॥ री मलिनियाँ० ॥६॥ भाग्य छकी सोभा छकी हो छकी सुख नैंन अघाइ। अधिक मान पायें छकी प्रेम छकी बौराइ ॥ री मलिनियाँ० ॥७॥ फूल दलनि पलटैं मिल्यौ हो अगम निगम फल सार। कृपा अवधि वृषभांन कुल मुनि जन करत विचार ॥री मलिनियाँ॥८॥ देत असीसनि मुद भरी हो डाली रतन भराइ। कुंवरि जनम भई धन्य हौं रीझी लेति बलाइ ॥री मलिनियाँ० ॥६॥ देखि प्रशंसत देव गन हो मालिनि कौ अनुराग वृन्दावन हित

रूप वलि लह्यौ भूर फल भाग ..री मलिनियाँ० ।.१०.।१००।.

राग सारंग—रावलि पति घर जनमीं राधा । वाढ्यौ लोकनि प्रेम अगाधा ॥१॥ नांचत जहाँ मिले नर नारी । रावलि नगर कुलाहल भारी ॥२॥ हमरे नृपति घर कन्या जाई । सब मिलि कहत वधाई वधाई ॥३॥ कीरति कूषि भई मंगल मनि । निरखि कहत ब्रज वनिता धनि धनि ॥४॥ निर्त्त करत कौंधत तन गोपीं । अगनित मनहु दामिनीं ओपीं ॥५॥ मांची दूधु दही की कादौं । भादौं तें अधिकी भई भादौं ॥६॥ केशरि वँदन रँगत दुकूलनि । विनु रितु मनु वसंत भई फूलनि ॥७॥ वहु वाजे वाजैं सहनाई । धौंसनि की धधकार महाई ॥८॥ सुनत देव चकृत भये गगना । औसौ कौतिक कीरति अँगना ॥९॥ दुंदुभी वाजैं कुशुमनि वरषैं । दांन देत रावलि पति हरषैं ।१०। हरद दही की वढ़ि गई पंका । थुकि थुकि परैं भरैं पुनि अंका ॥११॥ अखिल लोक की जीवनि आई । प्रेम न काहू हियें समाई ॥१२॥ रस चिंतामणि उदित जग भई । वृन्दावन हित रूप वलि गई ॥१३॥१०१॥

राग मलार खंमाइचो तिताला—रावलि अति आनंद लली कौ सोहिलौ । कीरति कूषि कुँवरि ससि वदनीं प्रगटी सब सुख कंद ॥लली कौ०॥टेक॥१॥ घर घर धुजा पताका राजति घर घर वंदन वार । घर घर मंगल गांन घोष में वाढ्यौ रंग अपार ॥२॥ घर घर दांन मांन सब विधि सौं घर घर अति उत्साह । घर घर तें निकसीं भेटनि लै घर घरं चलनि उमाह ॥३॥ घर घर तें दधि दूध मांट लै आवति टोलनि संग घर घर

आवति गाँम गाँम तें श्री वरसानैं आजु। देखत सुर ब्रह्मादि छके मुनि ब्रज जन प्रेम समाजु ॥५॥ एकत भये राज मंदिर सव परम रँगीली भीर। तैसेई मिलि परवत सुनि गाजत वाजे गहर गंभीर ॥६॥ रचनां रचति सुविधि ब्रज वनिता श्री वृष-भांन निकेत। वारिज वदन विलोकि सुता कौ भूर वलैया लेत ॥७॥ अंचल ओटि असीस सुनावति परम मुदित ब्रज भांम। वृन्दावन हित रूप चिरुजियौ राधा सुंदर स्याम ॥८॥१०२॥

राग विहागरौ—आजु ब्रज मंगल भूर सच्यौ है। मेरे जान भाग कीरति सम काकौ दई रच्यौ है ॥ जाकी कूषि प्रगट राधा जस निगम हूं वरनि वच्यौ है ॥ निरवधि रूप सहस्र फन गावत शेश विचारि पच्यौ है। शिव सारदा नारद विरंचि हू जाके जनम नच्यौ है। वृन्दावन हित रूप लली लखि विधि चातुरी लज्यौ है ॥१०३॥

राग विहागरौ—वजति वधाई रावलि राज घर नांचत मगन गुवाल ॥टेक॥ कीरति कूषि सफल भई जाई कुँवरि अनूप। नर नारी विथकित भये देखि लली कौ रूप ॥१॥ धनि धनि श्री वृषभांन जू धनि कीरतिदा माइ। मोहन कौ मन मोहनी सो निधि प्रगटी है आइ ॥२॥ लागतु परम सुहावनौं सकल भयानौं देस। घर घर प्रति आनंद वढ्यौ वरषत सुमन सुरेस ॥३॥ खवरि नंदीश्वर पहुँचियौ जसुमति वधुनि वुलाइ। यह सुख नैंननि देखियै चलौ वरसानैं जाइ ॥४॥ उमगि सजीं ब्रज सुंदरी भूषन वसन वनाइ। भांन भवन सुख सिंधु कौं मनु सलिता चलीं है धाइ ॥५॥ प्रथम पौरि पग धरत हीं सुधि पाई वृषभांन। आगैं भेट पठाइ कैं कीनौं वहु सनमांन ॥६॥

जटित फटिक मणि जग मगैं डगर वगर सब ठार मणि मूँगनि की देहरी सोभित ऊँची पौरि ॥७॥ पसु पंछिनु के चित्र वहु सजि धरे अमल अगार । मनमथ हू कौ मन हरैं रचे हैं सुघर श्रुति धार ॥८॥ कौतिक भूलीं सुंदरी रचनां ठाँवहीं ठाँउ । पंगु भई गति मति सवै आगैं धरति न पाँउ ॥९॥ शुक सारो प्रतिविंब लखि गहन चली कोउ नारि । फिरि पाछैं सकुचीं सवै कीरति हँसी हैं निहारि ॥१०॥ भेटति अंक लगाइ कैं पुनि पूछति कुशलात । गावति रहसि वधावनैं फूलीं अंग न मात ॥११॥ गौर तेज तन निरषि कैं पुनि निरखति सुत ओर । यह मन में वांछित भई प्रभु कीजौ यह जोर ॥१२॥ हेत महरि कौ जानि कैं हरषि लली की माइ । कर पर कर धरि वोलि यौं गूढ वचन मुसिकाइ ॥१३॥ नेह परस्पर अति वढ्यौ वरनत वरन्यौ न जाइ । गारी गावति ब्रज वधू जसुमति नंद लगाइ ॥१४॥ वड़ दानी वृषभांन जू कीरति परम उदार । पट भूषन वनितनि दये वहुत करी मनुहार ॥१५॥ देत असीसैं घर चलीं अंचल छोर पसारि । कोऊ इक चकत ह्वै रहीं मुख सुख रासि निहारि ॥१६॥ रीझि कहति यौं चिरजीयौ ललित लडैती लाल । होहु सकल ब्रज ईश ये गो गोपनि प्रतिपाल ॥१७॥ उदित दोऊ कुल चन्द्रमा राधा नंद कुंवार । सर्वसु श्री हरिवंश को श्रुति सुमृत्ति कौ सार ॥१८॥ ऊगे विरवा प्रेम के नंद भांन ग्रह आइ । वृन्दावन हित रूप रस जस को वरनि अघाइ ॥१९॥१०४॥

राग विहागरौ—कदंव चढ़ि ग्वालनि कूक दई है ॥टेक॥ आज कछु रावलि ओप नई है ॥ चलहु भैया वृषभाँन भवन

अति ह्वै रही रंग मई है ॥१॥ इक पट फेरत इक दिसि हेरत इक धुनि श्रवननि लावैं। एक अगमनैं जाइ गाँम दिस गाइनु कौं वगदावैं ॥२॥ इक मीठीं सहनाइनु टेरनि सुनि सुनि तन मन फूले। इक सुनि मंगल गान जील स्वर देह दसा सब भूले ॥३॥ इक ऊँचे पलास विटपनि पर चढ़ि चढ़ि औसें बोलैं। वे देखौ वृषभाँन भवन कौं जाति वधू मिलि टोलैं ॥४॥ एक कहैं सुनि रे सुनि भैया बात परी यह जानी। ता दिन हू तें मंगल दूनौं कीनौं कीरति रानी ॥५॥ भोर गये जे ग्वाल पसरि उठि ते ये वचन वखानैं। इक कहैं देंहिं वधाई नंदहि इक कहैं श्री वृषभानैं ॥६॥ यौं अरवरत ग्वाल वन सवही उनमद प्रेम भये हैं। श्री राधा जनम आजु ब्रज मंडल सुख के छत्र छये हैं ॥७॥ अंग अलंकृत करत धातु वन गाइनु वृन्द सिंगारैं। हेरी देत गोप सुत आये गोपराज दरवारैं ॥८॥ नाचत लटकि लटकि आनंद भरि वीथिनु अति छवि दीनीं। इत ब्रज वधू सोहिले गावति आवति अति सुख भीनीं ॥९॥ गोप राज मंदिर की रचना देखत गति मति हारी। जाकें घर श्री हू की स्वामिनि जनमीं है सुकुँवारी ॥१०॥ इक मन भरीं उमाहैं चलिवें इक जाहिं इक आवैं। सब ब्रज फिरी प्रेम दोही घर रहिवौ काकौं भावैं ॥११॥ राधा जनक उदार महा जिन दान वजार छवाये। लेहु भैया मन भायौ सादर जाचक टेरि वुलाये ॥१२॥ गौर तेज छवि निकर लली अति उपमा को सम तूलीं। जिन देखी वह रूप माधुरी ते घर जैवौ भूलीं ॥१३॥ हित सौं लेति वारनैं सवही जकीं थकीं सी ठाढी। मानौं प्रेम चितेरें रचि पचि चित्र पूतरी काढी १४ पुनि सचेत

है कीरति चरननि वंदति नेह नवेली । वृन्दावन हित रूप रंग रस फली सुकृत जो वेलीं ॥१५॥१०५॥

राग बिहागरौ—रँगीली भांमिनि चलीं हैं बधाईं । भांन भवन सुख सिंधु मनौं छबि पावस सरिता धाईं ॥१॥ लटकि चलनि में हलनि पीठि पर वैंनीनु की छवि भारी । मानौं कनक लता चढ़ि झूलति पन्नग सुभग कुंवारी ॥२॥ सोभा सर मनु वदन डह डहे वारिज दल द्दग लौंनें । तिनमें पुतरिनु की छवि मनु छिपि बैठे षठ पद छौंनें ॥३॥ आतुर चरन धरति कटि लचकति वाला रूप गहेलीं । मानौं पवन गवन में विलुलित नव कंचन की वेलीं ॥४॥ प्रेम विवस श्रम स्वेद वदन पर कहा कहौं कौतिक सोभा । मानौं ससि मंडल में अवहीं जमें हैं जलज मणि गोभा ॥५॥ इहिं छवि जुत वृषभांन भवन कौं दिस दिस तें सब आईं । भेंटैं देति सोहिले गावति प्रमुदित तन न समाईं ॥६॥ लौंनौं वदन विलोकि लली कौ हिय अति प्रेम भरी हैं । नवि नवि लगति चरन कीरति कें सुख निधि गहर परी है ॥७॥ रस गुन रूप प्रेम सर्वेश्वरि प्रगटी हरि हित करनीं । वृन्दावन हित धन्य कूषि वृषभांन गोप की घरनीं ॥८॥१०६॥

राग आसावरी—ए सुभ सगुन सोहिलौ आजु कीरति महल भयौ । आनंदनि ब्रज सुख रासि कन्या जनम लयौ ॥ वनिता उठीं मंगल गाइ जै धुनि व्यौंम छयौ । सुनि सुनि फूले नर नारि दई वांछित जु दयौ ॥१॥ मुरझी तारा गन जोति घटि रजनी जु गई । वरिया अति परम पुनीत मंगल मूल मई ॥ पीरी पह होत उदोत देखि रचना जु नई प्रह अंगना

जग मग होत सोभा प्रगट भई २ इक सोवत तें परी चौकि
ते पहिलैं गवनी। नौवति धुनि मंजुल कान आनि परी कवनी॥
इक गई वुलावन दौरि वचन मुख सुख श्रवनीं। इक मुदित
वधाई देति करि करि पद नवनीं ॥३॥ इक करति अलंकृत
अंग पूरित प्रेम महा। इक लली जनम सुनि आजु अचिरज
छकी अहा॥ इक तन मन भरी उमाह वांछित अलाभ लहा।
सवकें चित चौंप अपार आवनि कहौं कहा ॥४॥ नव तरुन
वृद्ध अरु छोट अति अनुराग भरीं। सव रूप वंत गुन वंत
मिलि जूथनि निकरीं॥ छवि मूरति मनहुं अनंत इहिं औसर
जु धरीं। गावति सोहिले मल्हाइ लागी रंग झरीं ॥५॥ जहाँ
राग रागिनी आजु मूरति वंत खरे। तिनहूं मन दिये आनंद ऐसे
स्वर उचरे॥ सुनि मुरझ्यौ मदन महीप पंच सर खसि जु परे।
जड़ चेतन चेत अचेत भाग भरीनु करे ॥६॥ पट मिहीं घूँघटी
काढि रवकति चरन धरैं। तिनमें दृग परम सलोल अति
कौतिक जु करैं॥ देखन की वाढ़ी प्यास आतुर गति हहरैं।
सुख सिंधु भांन मनु धांम उररें मीन परैं ॥७॥ कहा वरनौं
आवनि प्रेम नचायौ व्रज सगरौ। रावलि पुर वीथिनु रंग वह्यौ
सव तें अगरौ॥ धनि भाग सवासिनि मानि चलीं जु करन
झगरौ। वलि जाऊँ छवीली भीर नीठ चलतु दगरौ ॥८॥
सर्वेस्वरि अवनि प्रकाश अस अचिरज न गनौं। अवला भरीं
परम सनेह वढ्यौ मन मोद घनौं॥ सावन सरिता वढि धार
चली सागर जु मनौं। यौं पहुँची मंगल धाम सो छवि कहा
भनौं ॥६॥ जहाँ सुरंगित तनें हैं वितान झालरिनु जलज मनीं।
तौरन घर रतननि पांति फैली जोति घनीं वह मणि मय

खंभ अनूप कनक मय भीति वनीं । किये नाना नगनि जराइ मुकर दुति हरें अवनीं ॥१०॥ दमकैं देहरि वहु भांति मणिनु जारी श्रैनीं । रचे चित्र विचित्र अनेकन सम उपमा दैनीं ॥ नग ललित जु वलित किवार दिपति मन हरि लैंनीं । चक्रत प्रतिविंव विलोकि वाला मृग नैंनी ॥११॥ पट कुशुम नूत दल माल मोतिनु रचित लरीं । सव सदन सदन कें द्वार अस रचनां जु करीं ॥ दीपावलि दिपति सुदेश कदलिनु पांति धरीं । घट वृन्द विराजत चौक चीतति भाग भरी ॥१२॥ मणि छज्जे छाजत राजत ऊँचे धवल अटा । महकी जु अगर वर धूप उठी मनु रूप घटा ॥ कंचन पट धुज फहराति मनु दामिनिनु छटा । सवलि सुख वरषत भूर सुभग रविजा जु तटा ॥१३॥ पौढी कीरति जिहिं धांम कहि न परैं छवि ताकी। लियें अंक निगम गथ सार को उपमा जाकी ॥ गई निकट तहाँ वर भांम लखी लखि मति छाकी । ते भई पूतरी चित्र चलनि गति हू थाकी ॥१४॥ सुनि री सुनि महिमा भाग जननी जनक सखी । जग सुजस वढावन गोप भई अस सुनीं न लखी ॥ जाकें प्रगटत प्रेम प्रचार भयौ मति आकरषी । त्रिभुवन पूरित अनुराग विधि मरजाद नखी ॥१५॥ हरषैं वरषैं दधि दूध भूमिक अजिर मच्यौ । अवतरत कुँवरि वृषभांन ग्रह जो को न नच्यौ ॥ विधि संकर सारद नारद इहिं सुख कौं ललच्यौ । मंगल इहिं वांछित दांन लोकनि कौंन रच्यौ ॥१६॥ सुख दिखि दिखि आवैं एक एक देखन धावैं । वारति हैं सर्वसु एक चाइनु दुलरावैं ॥ इक राई लौंन उतारि कर-

अमोल पहिराईं चोली ॥ करि प्रीति अधिक रस रीति दई पाननि ढोली । मेवनि भंडार खुलाइ भरी सबकी ओली ॥१८॥ मन क्रम वच देति असीस मिलि जूथनि जु अली । आसा करौ सो इहिं पौरि जो व्रज देव वली ॥ नित लाड़ौ कीरति माइ रहौ नित रंग रली । वड़े सजन बुलावनि होहु जियौ जुग कोटि लली ॥१६॥ भये सत्य वचन दुहुँ ओर कहति कर छोर लियें । वहुरचौ अव सत्य सु होहु व्याह दिन देखि जियें ॥ वृन्दावन वलि हित रूप जाचत मन जु दियें । यह जोरी श्री हरिवंश ललित आभरन हियें ॥२०॥१०७॥

राग आसावरी—आजु भानवंश उद्दोत मंगल भूर भयौ । जाकौ पूरव सुकृत अभूत जग अंबुद उनयौ ॥ रुचि गरज विपुल आनंद जन वरहीनु दयौ । अति दांन मांन सनमांन वरषत ताप गयौ ॥१॥ भई यह पियरी की वार चुहुकनि त्रिरीं लगीं । दाई पायौ वहु मांन आई सुनत भगी ॥ ताही छिन कीरति कूषि सोभा निधि उमगी । प्रगटी प्रजपति सुत हेत मंदिर जोति जगी ॥२॥ मंगल दरस्यौ सव लोक भाजन धातु वजे । नृप भवन सोहिलौ मानि वंदनवार सजे ॥ रावलि गोकुल दुहुँ ओर आंनक गहकि वजे । रस ग्राहीनु वाढ़ी फूल नीरस देखि लजे ॥३॥ नाना विधि रचनां धांम जरी वितान तनैं । रंग रंग धुजा फहराति तोरन रतन घनैं ॥ जहाँ अजिरनि चित्रित चौक मोती पांति वनैं । दीपावलि कदलि सुदेश घट मंगल रचनैं ॥४॥ आरज गोपनि की भीर अरु भुव देव जुरे

वृषभांन प्रभु मो ओर दुरे । बैठे तव सभा वनाइ पौरि निसान घुरे ॥५॥ गायें दई खरिक अनेक धनि रावलि जु धनी । पुनि दिये भरे भंडार दानिनु मुकट मनीं ॥ ऊँचौ कर कियौ जिहिं वार वर्षें दर्वि घनीं । जाकी प्रभुता लोक गरिष्ट काहू कहाते न वनी ॥६॥ गोपी ओपी इहिं भांति सोभा वपु जु मनौं । निकसीं जुरि जूथ अनेक आवनि कहा भनौं ॥ मंगल कौं मंगल देति को वड भाग गनौं । राकापति कला प्रकास मिलि:नैं चली जनौं ॥७॥ कछु गावति औसी रीति सवकौ हियौ हयौ । अवतरत सुता वृषभांन प्रेम उदोत भयौ ॥ चहुँ दिस छवि कौ नहिं छेह वानक वन्यौ नयौ । अनुराग अलौकिक वीज सव उर आजु वयौ ॥८॥ कीरतिहि वधाई देति भाग प्रसंस करैं । अति लडि को वदन विलोकि अंगुरी चिवुक धरैं ॥ कोऊ वारति राई लौंन लागनि ठीठि डरैं । कोऊ भूर वलैया लेति देति असीस खरैं ॥९॥ को जप तप को वड़ दांन को प्रभु हित करनी । व्रज जननु महा अभिलाष सागर सुख भरनीं ॥ कन्या अस सींवा रूप धनि धनि उर धरनी । महिमा अगाधि कुल गोप क्यौं आवै वरनीं ॥१०॥ वाला माला मनु रूप कीरति पास लसी । किधौं सोभा पुंजहि घेरि दामिनि निकर वसी ॥ ये तौ भगरति वंश सवासि करनि नचाइ हसी । रानी दै मन भायौ आजु कृपि सुधा वरसी ॥११॥ इक भूषन वसन अमोल मन रुचि लैं जु धरैं । इक पहिरावति हित मानि पुनि मनुहारि करैं ॥ इक प्रेम पुलकि अंग अंग मुरि मुरि चरन परैं । इक आनंद वारिध न्हाइ एकनि लगति गरैं ॥१२॥ इक परम विचच्छन वाल खेल अनेक रचैं इक दधि हरदी अरु दूध

विरकत नाहिं बचैं ॥ इक करैं कौतूहल रंग सजि संगीत नचैं । इक पट भूषन बहु वारि ढाढिनि अंग सचैं ॥१३॥ ब्रज रानी लाई चाव बाढी रंग रली । मंगल धुनि छुवति अकास रावलि दिपति गली ॥ इत उत सागर उत्साह संगम विधि जु भली । रस रतन राधिका लाल दरसे सुदिन वली ॥१४॥ वृषभांन नंद रनिवास मिलि सुख विर्द्धि भई । न्यौछावरि रतननि मूँठि जाचक जननि दई ॥ कीरति लये मोहन गोद राधा महरि लई । यह जोरी श्री हरिवंश लखि दृग भूख गई ॥१५॥ दोऊ लाडति परमानंद निगम दुराधि कह्यौ । गोपिनु मन सुखता माहिं अति ही भीजि रह्यौ ॥ हौं नाची ताही वार कृपा सुदृष्टि चह्यौ । वृन्दावन वलि हित रूप लाहौ दासि लह्यौ ॥१६॥१०८॥

राग आसावरी—कीरति महल वधावौ गावति मिलि मंगल जनमी राधा । हुलसीं प्रेम उमाहैं आवति देखन दृग अति साधा ॥गावति मिलि०॥टेक॥१॥ मंजुल रव किंकिनि पद नूपुर चलनि महा छबि छाजैं । फूलीं कनक लतनि मनु बोलति मैंन मुनी सी राजैं ॥२॥ मणि तार्टक कपोलनि झाईं सीस फूल छबि रूरा । खकि धरनि पग सोभा बाढ़ति हलति सिरनि पर जूरा ॥३॥ फूले वदन सुनत सुठि कन्या सर्वेश्वरि ब्रज आई। निरवधि घोष बढ्यौ आनंद निधि काकें उर जु समाई ॥४॥ भांति भांति रावलि अति कमनी लखि अवनी बहु ओभा । वरनौं कहा रमा कौ उद्भव वरषति सब ब्रज सोभा ॥५॥ वीथिनु भीर भांन मंदिर में पहुँचि दृगन फल पायौ । रूप अवधि कीरति अंकनि लखि प्रेम सरसि उर आयौ ॥६॥ भुव मंगल मंगल नभ पूरित मंगल घुरहिं निसाना मंगल पुह्प

वृष्टि रावलि पर छाये हैं देव विमाना ॥७॥ अखिल लोक मणि की मणि रस मय गोप वंश जस दीयौ। भूरि उदोत भाग्य रावलि पति कुँवरि जनम दिन कीयौ ॥८॥ कौतिक अवधि अवधि सुख घर घर सब मन अवधि सनेहा। वृन्दावन हित रूप अवधि रची धनि विधनां जिन एहा ॥९॥१०९॥

राग मेवारौ ताल रूपकछंद—रावलि रवानी हो श्री राधा जू औतरी। रूप घन ऊनयौ हो विधि वांछित करी ॥ करी विधि वांछित जु नीरस जगत तम मेट्यौ महा। रसिक चातक मोर हरषे विर्द्धि भई रस की अहा ॥ भयौ प्रेम प्रचार भुव पर जनम गौरंगी लियौ। वृषभांन कीरति कुल उज्यारी विश्व में मंगल कियौ॥ गह गहे अति आनक जु वाजे आजु धनि यह सुभ घरी। रावलि रवानी हो श्री राधा जू औतरी ॥१॥ कीरति महल में हो जग मग ह्वै रही। कन्या मणि त्रिभुवन हो छवि परति न कही ॥ परति रसना छवि न वरनी तेज पुंज उदै भयौ। अचिरज विशेषैं वदन देखैं भाग्य फल जननी लयौ ॥ मंगलनु मंगल मूल अति आनंद कौं आनंदिनी। जनक जस कौ सिंधु उमग्यौ जुवति कुल यह वंदनीं ॥ जीवन जगत समुदाइ सुख दाइक लवधि लोचन लही। कीरति महल में हो जग मग ह्वै रही ॥२॥ सुभ दिन देखनौं हो भांन कुल गोप कौ। सोहिलौ अनौंखौ हो व्रज सुख ओप कौ ॥ ओप व्रज सोहिलौ अति रावलि झिली रस रंग में। कौतिक सिमिट सब घोष आयौ अति लड़ि दरस उमंग में ॥ अहिलादिनी उद्दोत जग सींवा अवधि गुन रूप की। उपमां डरीं लखि लोक में अस कुंवरि रावलि भूप की ॥ नरदेव मुनि हरषित भये उत्साह मनु

धुज रोप कौ । सुभ दिन देखनौं हो भांन कुल गोप कौ ॥३॥ प्रगटी है ता हित हो जु ब्रजपति वंश धर । रीझि रीझि वारनैं हो लैंहि सब नारि नर ॥ वारनैं सब लै प्रसंसैं निकर तन सोभा सची । कौंन विधनां धन्य कौ धनि धरी जब मन दै रची ॥ लोक सर्वेश्वरी आगम थिरचर मानौं रँग रली । कूषि कीरति सुधा अवनीं मोद की उपजी कली ॥ वृन्दावन हित रूप दिन दिन बढति मैया पोष कर । प्रगटी है ता हित हो ब्रज पति वंश धर ॥४॥११०॥

राग जैतश्री—आजु उदित वृषभांन कुल ससि वदनी सुकुँवारि ॥टेक॥ विगसे कुमुद समूह जहाँ तहाँ ब्रज जन गोपी ग्वाला । नाचत गावत आवत मन्दिर परम मुदित नव वाला ॥१॥ त्रिषित चकोर नैंन सवहिनु के फूले देखि उजेरौ । नसे सकल संताप हियें तें भयौ है भाँवतौ मेरौ ॥२॥ कोऊ इक कहति देखि री माई लागतु परम सुहायौ । मङ्गल उदित आजु अवनीं पर देस भयानैं छायौ ॥३॥ कोऊ सुनि गई भवन ब्रजपति कें कहति सुनौं नंदरानी । यह भई हुती जोई मन तुम्हरें जोट कुंवर की आनी ॥४॥ जिन मुख कह्यौ वचन ऐसौ पुनि ताकी लेति वलैया । पट भूषन पहिराये नौतन मुदित लाल की मैया ॥५॥ निकसी डला भराइ चाव के जोरि सकल ब्रज वाला । सुनि सुनि श्रवन कुलाहल रावलि गोद मुदित नंदलाला ॥६॥ मारग मिली आवती ढाढिनि जोही खवरि पठाई । अति आतुर बूझति नँदरानी ढाढिनि देति वधाई ॥७॥ ढाढिनि कही सत्य हौं भाखौं जो देख्यौ इन नना । कोटि उपाइ करौ किनि रानी मोपैं कहत वनैंना ८ हां अपनें जिय

हेरि हिरानी कौंन विरंचि सँवारी। गोरे गात सींम सोभा कै कौतिक रूप महारी ॥९॥ वैसी सुता न सुत तुम्हरौ सौ अवलौं सुन्यौ न देख्यौ। हौं भई धन्य आजु इहिं औसर जनम सुफल करि लेख्यौ ॥१०॥ पाई खवरि भांन जू की रानीं आई महरि वधायें। करि सनमांन लईं मंदिर में भेटति कंठ लगायें ॥११॥ कन्या ओर निहारि मुदित भई वारति मणि गन माला। प्रथम वचन की जव सुधि आई वोली कछू तिहिं काला॥१२॥ धन्य सुदिन कीरति जू तिहारे यह सुख दृग दरसायौ। सत्य प्रतिज्ञा जांनि तिहारी विधि यह वांन वनायौ ॥१३॥ गावति गारि जुवति रावलि की सुनि जसुमति मुसिकायौ। तात मात तें लच्छन न्यारे यह सुत कैसौ जायौ ॥१४॥ व्यौंम विमान मगन सुर वनिता इत प्रमुदित व्रज भांमें। वृन्दावन हित रूप स्वामिनी जनमीं है सुख धांमें ॥१५॥१११॥

राग विहागरौ—सवनि कौ चीत्यौ आजु भयौ है। वाज्यौ गहकि मँदिरला रावलि अतिसै रंग छयौ है॥ वह देखि जातु वधौवा दौरयौ गोकुल मांहिं गयौ है। सुनत हीं गोप सभा आनंदित राधा जनम लयौ है॥ लै लै भेंट चले नर नारीं मन में मोद नयौ है। इत उत उदौ देखि हिय अवनीं विरवा प्रेम वयौ है॥ व्रजपति रावलिपति मिलि सवकौं सुख वारिध भिजयौ है। वृन्दावन हित रूप जु इत उत मुहि जस गांन दयौ है ॥११२॥

राग सारंग—आज कौ धनि भयौ वासर दरसी राधा कीरति कूषि सभागी। परम धन्य भई रावलि अवनीं जहाँ कैं मंगल शृष्टि करी अनुरागी सुरपति से विधि से संकर से

नारद से मुनि जा घर भिच्छिक पद रज परसन आसा लागी। वृन्दावन हित रूप महा रस प्रेम उदै भयौ निरवधि आनंद रसिक भाल मणि जागी ॥११३॥

राग चैतो गौरो—अहो वृषभांन नृपति कें सदन सुहायौ आजु सौहिलौ। अहो यह पायौ (है) पूरन पुन्नि जनम दिन दोहिलौ ॥१॥ पायौ है पूरन पुन्नि यह दिन सुनौं सब दै कांन। होत जै जै शब्द जहाँ तहाँ छाये हैं गगन विमांन ॥ सुहायौ आजु सोहिलौ ॥टेक॥२॥ और अद्भुत देखि सजनीं कहत कही हू न जाइ। विटप वेली फले हैं बिनु रितु आये हैं भ्फल-राइ ॥३॥ बजैं बाजे सोंहनैं गहरे घुरें नीसान। करत कुशमनि वृष्टि सुर नभ वनितनि जुत गुन गान ॥४॥ और मंगल देखियै सखि यह विलच्छन रीति। ललित छबि ब्रज भूँमि छाई बढ़ीं हैं परस्पर प्रीति ॥५॥ कहौं लच्छन और हू सुभ सुनि भद्र चित लाइ। कहा व्याई बाखरी सब दूध चढ़ी हैं गाइ ॥६॥ वृषभांन गोप नरेश मंदिर कोटि चन्द्र प्रकास। देखि विहसीं सुंदरी जिय बहुत दिननि की आस ॥७॥ कहति सब ब्रज नारि ऐसैं जुरी मेलनि आइ। चलीं बनि ठनि सुनि कुलाहल मंगल साज बनाइ ॥८॥ गलिनु आवति गीत गावति महा भाग कुँवारि। कियौ भवन प्रवेश भांमिनि निरखी है प्रांन अधारि ॥९॥ रूप पुंज अभूत कन्या नहिंन तिहिं सम और। मोहनी मन हरन मूरति ललित लड़ैती जू गौर ॥१०॥ अति अनूपम माधुरी छबि निरखि कौंभ अघाइ। परम रस मय जासु सुख निधि प्रगटी है ब्रज में आइ ॥११॥ विविधि भांति विचित्र रचनां रचति सुंदरि धांम धरे पौरिनु सींक सथिया रोपे हैं

मणि गन दांम ॥१२॥ भवन भीर कुँवारि डोलति जनम मंगल चाइ । महा भाग सुहाग सुंदरि लखि मुख लेति वलाइ ॥१३॥ जनम राधा कुँवरि ब्रज जन करत विविधि विनोद । दूध दधि नर नारि छिरकत फिरत भरे मन मोद ॥१४॥ वृषभांन भाग उदौ भयौ कुल कियौ कुँवरि प्रकास । धन्य कीरति कूषि धनि दिन धनि यह भादौं मांस ॥१५॥ सुकृत पुंजनि फली रानीं परम हरषित हीय । रतन भूषन वसन वहु विधि वोलि वधूनि कौं दीय ॥१६॥ कुल वधू कुल गोप कन्या लेति अंचल छोर । महरि सुत अरु सुता कीरति अविचल रहौ यह जोर ॥१७॥ जै श्री रूपलाल कृपाल स्वामिनि अवतरी सुख रासि । वृन्दा-वन हित देहु वधाई चारु चरन निजु दासि ॥१८॥११४॥

राग गौरी ताल मूल—रावलि वाढ्यौ है रंग जनमीं श्री राधा । सोभा निकर उदोत दिखि पूजी साधा ॥टेक॥ पूजी मन की साध मुदित भये सब नर नारी । जाकौं उपमां नाहिं अवनि भयौ मंगल भारी ॥ सुदि भादौं तिथि अष्टमी पुनि अति पुनीत गुरुवार । नव ग्रह वली नक्षत्र विशाखा अरु शुभ जोग विचार ॥ जनमीं श्री राधा ॥१॥ अरुन उदय की वार गान जुवतिनु उच्चरिवौ । गहकि मदरला वज्यौ घाव निसांननि परिवौ ॥ अति कोविद जे जोतिसी लिये रावलि पति जु वुलाइ। सादर वूझत सवनि सौं कहैं जोग लगन समुझाइ ।जनमीं०।२। वैठे जोग समाज और भई आंनन ओभा । अहिलादनि अव-तरी घोष अति वरषति सोभा ॥ धुजा पताक पुर फरहरैं लसैं पौरिनु वंदन वार । गलीं भलीं अजिरनि भवन उठैं सौरभ की उदगार जनमीं० ३ लै लै आये भेंट सवनि कौं हरषित

हियौ । महाराज वृषभांन अधिक सनमांन जु दीयौ । पौनि छतीसौ नगर जे सब आइ जुहारी देत । ओप सहस गुन देखियैं आजु श्री वृषभांन निकेत ॥जनमीं०॥४॥ मंगल रचनां धांम करति गुनवंती भामिनि । आतुर फिरति सदेह मनौं विचरति भुव दामिनि ॥ कोऊ पूरति हैं चौक रचि कोऊ धरति साथिये सींक । झगरति भाभी सौं भलैं मांगति जु सवासिनि लीक ॥जनमीं०॥५॥ पुर पुर गये वधौवा पुनि गोकुल में जवहीं । नौवति व्रजपति पौरि गहकि कैं वाजी तवहीं ॥ सुतहिं झुलावति पालनैं बड़भागिनि रानी नंद । सुता भई वृषभांन कैं सुनि छकि गई परमानंद ॥जनमीं०॥६॥ वैठी चौकी कनक कृपा की मूरति मानौं । लई प्रेम नें जीति हिय कौं हिय हुलसानौं ॥ चेत करावति रोहिनीं रानीं चलहु वधाई दैंन । वचन किये ते दृढ़ भये अव यह सुख देखें नैंन ॥ जनमीं०॥७॥ विधि तन ओटी ओली वोली जसुमति अैसैं । सत्य सत्य प्रभु कियौ वचन कीरति मम जैसैं ॥ मेरौ कान्हर सुभ घरी व्रज जनम्यौं कहत मुनीस । सुनौं रोहिनीं होहिगौ यह कारज विसे जु वीस ॥जनमीं०॥८॥ मेवनि डला भराइ वहुत पट भूषन साजे । जूथनि वनिता जुरीं संग लीनैं वहु वाजे ॥ गोप वहुत टोलनि चले वनि गोकुल पति के लार । मंगल गावति नव वधू पाइल विछुवनि झनकार ॥जनमीं०॥९॥ सोभा अंवुज उमड़ि मनौं अवनी दरसायौ । वरषैगौ सुख अमित परै नहिं विधि मुख गायौ ॥ वाजे सब आतुर वजैं सुत गोप करैं किलकार । हेरी दै गावैं सवै स्वर उच्च करत उच्चार ॥जनमीं०॥१०॥ इत घर मंगल भूर वहुरि उतकी धुनि आई सबहि भींजि गये प्रेम

सु आनंद हिय न समाई .. चले अगमनैं लैंन कौं सब मङ्गल साज बनाइ। देव कुशुम वरषैं जबै मिले गोकुल रावलि राइ ॥ जनमीं०॥११॥ मानौं सागर उभै उमगि कैं मेल भयौ है। वाढ़ी सोभा लहरि चैंन सब नैंन दयौ है॥ नाचत गावत छवि छके आये रावलिपति कें ग्रेह। कीरति जसुमति कौ मिलन गरुवौ जु अलौकिक नेह ॥जनमीं०॥१२॥ गौर तेज अति मधुर मयूषैं मनहुँ निकर ससि। सोभा की मिति नाहिं रही जननीं अंकनि लसि ॥ जसुमति कीरति सौं कह्यौ नैंक मेरी गोदी देहु। मो सुत मोहन मदन कौं रानी तुम अपु आंकौं लेहु ॥जनमीं०॥१३॥ कीरति मुसिकीं मंद समुझि जसुमति की वानीं। जिनि अति आतुर होहु अहो ब्रजपति की रानीं॥ इनि हँसि लीनौं स्यांम कौं उनि कुँवरि लई हँसि गोद। मंगल औरै रीति के लगीं गावन भरि मन मोद ॥जनमीं०॥१४॥ लली लला लिये वदलि महरि कीरति दुलरायौ। नर लीला जु अभूत देव संभ्रम उपजायौ॥ निगम दुरयौ आनंद जो अरु दुर्ल्लभ मुनिनु समाज। अतर्कि रचनां नाथ की कियौ प्रगट घोष जन काज ॥जनमीं०॥१५॥ कीरति अब हां करौ लली मो गोदी आई। हौं लाइक सब भांति कुशल करुना जु महाई॥ जाचति घरनी नंद की वहु बजत दमामैं ढोल। अब विधनां सांचे किये जे प्रथम हमैं तुम्हैं बोल।जनमीं०।१६। ये पहिरावति स्याम वसन भूषन वे राधा। मुंदरी कर पहिरावत पूजी सब मन साधा॥ लगन महूरत सुभ घरी ताछिन जु भये अनुकूल। प्रमुदित गोपीं गोप सब वरषैं जु गगन ते फूल ॥ जनमीं०"१७" प्रथम जु मंगल जनम भई तामैं जु सगाई

हरषैं मुनि नर देव दिसनि औरैं छवि छाई' लाल वदन वढ़ी और छवि वढ़ी कुँवरि अंग छवि और। मंगल मय त्रिभुवन भयौ झूलैं पलनां सांवल गौर ॥जनमीं०॥१८॥ गावति गारीं वधू सवनि मन वांछित पायौ। नंद और वृषभांन दर्वि वहु भांति लुटायौ ॥ दास अनन्यनि कौ सुधन रचि वंदनि करहि प्रसंश। लीला मिथुन किशोर की यह सर्वसु श्री हरिवंश ॥ जनमीं०॥१९॥ इत लाडी उत वरना गावति भांन वगर में। अति कौतूहल वढ्यौ आजु रावलि जु नगर में ॥ कमला पुर गोलोक नहिं जो ब्रज गरुवौ अनुराग। वृन्दावन हित रूप रस यह दरस्यौ रसिक जन भाग ॥जनमीं श्री राधा॥२०॥११५॥

राग गौरी—श्री वृषभांन घरनि सुनि सजनी जाई है कुँवरि अनूप। एरी तू तौ चलि नैंननि क्यौं न देखै महा मोहनीं रूप ॥१॥ एरी जाहि देखत ही हिय हरषै लोचन रहत लुभाइ। एरी ब्रज जन जीवनि की जीवनि ताकी लागौं मोहि वलाइ ॥२॥ एरी ब्रज कन्या घर घर देखी वहुत सुनी अरु कांन। एरी यह अचिरज सौ जिय आवतु कहियै कौंन समान ॥३॥ एरी ब्रज वास सफल मैं मान्यौं कीरति सुता निहारि। एरी याके चारु चरन पर कोटिक रति हू डारौं वारि ॥४॥ एरी जाकौ मुख सुख रासि निहारति मिटत हियै की सूल। एरी नहिं सुर नर नाग लोक हूँ कन्या तिहिं सम तूल ॥५॥ एरी ब्रज राज घरनि सुत जायौ सवके मन हरि लेत। एरी तातैं वरन विलच्छन कन्या प्रगटी भांन निकेत ॥६॥ एरी इहिं नगर वगर वीथिनु की लखियत औरैं ओप। एरी मिलि अपनैं अपनैं जूथनि आवत गोपीं गोप ॥७॥ एरी सुनि देस

देस तें जाचक तजि तजि आये ग्रेह। एरी आजु गोप नृपति वरसानैं वरसत कंचन मेह ॥८॥ एरी सुनि गाँव गाँव तें आये नर नारिनु के टोल। एरी वृषभांनहि देत वधाई लाये भेट अमोल ॥९॥ एरी जहाँ गुरु जन विप्र सवै मिलि वैठे करत विचार। एरी रावलि पति भाग विशेषित वुधि वल हू रहे हार ॥१०॥ एरी धनि भूरि भाग जाकी मैया जिन जाई है ललित कुँवारि। एरी जाके जनम महोछैं प्रमुदित भई सकल सुर नारि ॥११॥ एरी यह देस रवानौं कीयौ चिरुजियौ लली कौ तात। एरी आजु भांन भवन की सोभा वरनत वरनी न जात ॥१२॥ एरी काहू पुत्र जनम नहिं कीयौ जो कीनौं वृष-भांन। एरी जे जाचक जाचन आये ते भये इन्द्र समांन ॥१३॥ एरी उत नंद सुवन इत कन्या लखि गये हिय के सोक। एरी यह निगम अगोचर जोरी प्रगटी है भुव लोक ॥१४॥ जनम रस रीति वधाई सुनि कें कीरति लई हौं वुलाइ। वहुत हित मानि आपु ग्रह राखी कह्यौ ललित लली जस गाइ ॥१५॥ श्री हरिवंश प्रसंश करन हित मंगल निधि सुख रासि। वृन्दा-वन हित रूप स्वामिनीं कियौ गोप वंश परकासि ।१६।११६।

राग गौरी—गावत गोपी ग्वाल मिलि हेरी। भांन भवन नांचत लैं फेरी ॥१॥ कीरति कूषि प्रगट भई कन्या। तात मात सम को जग धन्या ॥२॥ नेति नेति जाकौं निगम वखानैं। सो वृषभांन गोप वरसानैं ॥३॥ सुनि धाईं सव व्रज की जुवतीं। ज्यौं चकोर आतुर ससि उगतीं ॥४॥ आईं हैं सुनत मोहन जू की जनिता। अगनित साज संग व्रज वनिता ॥५॥ देव कुँवारि औरु देव नारी पतिनु सहित अभिलाष विचारी ६

भाव रूप तन सबहिनु धारे। दरस हेत ब्रज भूमि सिधारे ॥७॥ नारद व्यास सुवन सनकादिक। आये रिषि मंगल जस गाइक ॥८॥ राग रागिनी मूरति धरि कैं। आये सेवन चरन कुंवरि कैं ॥९॥ षट रितु आई मूरति वंता। जिनकौं प्यारे चरित अनंता ॥१०॥ अष्ट सिधि नव निधि पौरी पौरी। चाइनु डोलति दौरी दौरी ॥११॥ गहगहे घुरहिं निसान दुवारैं। विप्र वेद मंदिर उच्चारैं ॥१२॥ वंदी वरनत कुल पवित्र जसु। तिनहि वोलि दियौ भांन वहुत वसु ॥१३॥ अजिर कुलाहल करैं ब्रज भांमिनि। एकत्त भई मनु अगनित दामिनि ॥१४॥ दूध दही मथि हरदी घोरैं। गहि गहि माट सिरनि तें ढोरैं ।१५। इक लखि लली रहि गई ऐसैं। मूरति लिखी चित्र में जैसैं ॥१६॥ इक मुख निरखि परम अनुरागी। इक मुरि कीरति पाइनि लागी ॥१७॥ इक लखि कौतिक जनम लली कौ। कहैं धनि कीरति भाग फली कौ ॥१८॥ इक लाईं जोरयौ धन न्यारौ। चाइनु खरचति जद्यपि प्यारौ ॥१९॥ एक कहैं पूजी आस हमारी। इहिं ब्रज सुख की श्रवित पनारी ॥२०॥ इक छबि निरखि करज चटकावैं। एकनि घर जैवौ नहिं भावैं ।२१। इककहैं धनि कीरति रानी। जिन यह ब्रज धरु करी रवानी ।२२। इक वारति हैं सर्वसु अपनौं। इक कहैं यह वासर नित जपनौं ॥२३॥ इक चुप रहीं मन हीं मन फूलैं। एक खरीं आनंद में भूलैं ॥२४॥ एक कहैं विधि वांछित कीयौ। श्री राधा मोहन जुग जुग जियौ ॥२५॥ इक बोलीं मधुरी मुख वानी। सब विधि सुकृत लह्यौ नंदरानी ॥२६॥ इक असीस दै अधिक सिहानी। इक दिखि कुँवरि वारि पियौ पानी २७ इकचढ़ि

गई ऊंचे चौवारैं। तहाँ तें तकि तकि माखन मारैं ॥२८॥ इक अरगज कुम कुम रज वंदन। हँसि हँसि लेपति चोवा चंदन ॥२९॥ इक तृन तोरति लेत वलैया। इक कहैं जियौ कुंवरि की मैया ॥३०॥ इक राधे राधे कहि लाडैं। एक डिठौंना मुख पर माडैं ॥३१॥ इक रही चितै चरन मृदु ओरैं। एक रही लगि कवकी कोरैं ॥३२॥ कहाँ लौं मंगल वरनि सुनाऊँ। ब्रज वैभव कौ पार न पाऊँ ॥३३॥ श्री वृषभांन सुता सुत ब्रज पति। वलि हित रूप निगम खोजत गति ॥३४॥ यह ब्रज सींच्यौ प्रेम पीयूषनि। कुंवरि भई ब्रज भूषन भूषन ॥३५॥ नाम रसिक जीवनि श्री राधा। लीला रस माधुर्य अगाधा ॥३६॥ मुनि नर देव नारि त्रिभुवन में। वांछित दासि गोप ग्रह मन में ॥३७॥ वृन्दावन हित विशद वधाई। पाऊँ जुग पद दासि सदाई ॥३८॥११७॥

राग गौरी—देखि लली कौ जनम छकीं अचिरज महा। उदित रूप मनु पुंज भाग वरनौं कहा ॥१॥ रावलि अतिसै रंग वरषि है अब अली। वजति दुंदुभी देवनि हरषित ब्रज थली ॥२॥ जो कोऊ उहिं घर जाइ वधाई दैंन हैं। भांन भवन रचनां लखि उरझत नैंन है ॥३॥ सुपनैं कौतिक देखि भांन घर हौं गई। पह पियरी की वार प्रगट कन्या भई ॥४॥ ताछिन तें ब्रज मंगल उदित अपार हैं। घर घर अमित संपदा भरे भंडार हैं ॥५॥ जनम नच्छत्र विचारि विप्र विसमित भये। देखि महा सुभ जोग प्रेम अति छकि गये ॥६॥ कौंन सुकृत वृषभांन वंश कौ यह सखी। आजु घोष कें प्रेम लीक विधि की नखी ॥७॥ मैया निरखि कुंवरि मुख अचिरज होति है मंदिर

किरिनि प्रकास अखंडित जोति है ॥८॥ पुनि पुनि अंचल ओटि मनावति भाग है। उमिल्यौ परतु हिय तें अति अनुराग है ॥९॥ देति वधाई गोपीं सादर लेति है। सर्वेश्वरि कें जनमत वांछित देति है ॥१०॥ वृन्दावन हित रूप भरी उत्साह में। पैरति अपुकृत सुकृत सिंधु अथाह में ॥११॥११८॥

राग गौरी टेर—हरि अहिलादनि अवनीं औतरी थिरचर भरे अनुराग। जस विस्तारन हो श्री वृषभांन कौ कीरति उद्‌भव भाग ॥१॥ छत्र फिरतु है हो ब्रज आनंद कौ वाजति डौंडी प्रेम। रवि दरसी नहीं हो तेऊ उठि चलीं छूटि गई विधि नेम ॥२॥ रचि रचि गावत हो सुंदरि सोहले आवति मंदिर भांन। देव दुंदुभी हो वाजति गहगही वरषत कुशुम विमांन ॥३॥ भेष बदलि आवैं हो संकर विधि सवै या सुख मन अभिलाष। मूरति धरि कें हो आवति वेद हू देखि भरनि कौं साषि ॥४॥ तंत्र उपनिषद हो और पुरान सब आगम भरे हैं हुलास। नीरस ग्रन्थनि हो खंडन वल भयौ उदित भयौ रस रास ॥५॥ शक्ति टहल में हो फिरति जु भेष धरि निधि सिधि भरति भंडार। षट रितु फूली हो मंगल गावहीं अमर वजंत्री द्वार ॥६॥ कीरति जसुमति हो सुकृत पार नहीं महिमा अगम अनंत। गोकुल पति धनि हो रावलि ईश धनि लह्यौ है निगम फल अंत ॥७॥ सुखित भये हैं हो ब्रज नर नारि सब लखि हित रूप प्रकास। दिन दुलरावैं हो राधा स्याम घन हित वृन्दावन दास ॥८॥११९॥

राग ईमन ताल रूपक—श्री राधा दिन जनम आजु ब्रज सोभा सकल नई। सब जग नीरस हुतौ जा बिनां अब जु

रूप रस विधि अति लवधि दई ॥आजु०॥टेक॥ निगम अगो-चर जाहि कहत है मुनि गति दुर्लभ आश्चर्य मई । श्री वृषभांन भवन कीरति पय पीवन प्रगट भई ॥ जननीं जनक भाग की महिमा लोक लोक में पूरि गई । वृन्दावन हित रूप लली मुख निरखि वलाइ लई ॥१२०॥

राग गौरी टेक (दोहा बंध)—बड़ भागिनी माइ लली की । दासि बधाई दीजियै रज वंदौं चरन तली की ॥टेक॥१॥ बड़ भागी रावलि धनी जू रानीनु सिरमौर । तेरे कुल विनु लोक में हौं सुपन न जाचौं और ॥२॥ राधा सी वेटी जनीं मंदिर पूर्यौ रूप । जस की धुज फहराइगी सर्वोपर रावलि भूप ॥३॥ कौंन सुकृत यह फल भयौ कीरति कूषि प्रकास । याहि निरषि काकौं रुचै हेली हरि पुर को अब वास ॥४॥ ब्रज रानीं लाला जन्यौं लली भई तौ कूषि । सब कौ मन भायौ भयौ रानी लोचन भागी भूखि ॥५॥ औरौ कछु करि है दई कहैं देति हौं तोहि । तब लैहौं मन भांवतौ रानी सगुन परीक्षा मोहि ॥६॥ तो उर कौ अह्लाद अति जसुमति उर की लाग । भाग्य वली अव-लोकि हैं यह फल्यौ रूप कौ वाग ॥७॥ विधि से शिव से इन्द्र से औरौं लोकनि ईस । या पौरी की जाचि हैं रज धार्चौ अपनैं सीस ॥८॥ रावलि मंगल की अवधि भई कुँवरि उतपन्य । तेरे भाग्य कहा कहौं हौं निरखि भई धनि धन्य ॥९॥ घर जैवौ भूलीं सबै तेरे मंदिर आइ । कुँवरि कि चेटक रूप कौ बिनु देखैं कछु न सुहाइ ॥१०॥ नंद औरु वृषभांन उर अति गरुवौ जु सनेह । ताही के विरवा भये रानी जानौं निःसंदेह ।११। ब्रज जन कीरति महरि नित सींचौं प्रेम सु तोइ

वृन्दावन हित रूप ये विधि रचित सगाई होइ ॥१२॥१२१॥

राग गौरी आसावरी ताल मूल—श्री राधा जनमीं आजु मंदिरा वाज्यौ री। होइ गहरे सुख की वृष्टि अति ही गाज्यौ री ॥१॥ श्री कीरति जू की कूषि प्रगटी भाग्य भरी। सुदि भादौं मास पुनीत आठैं सुभ जु घरी ॥२॥ रस विरवा भयौ उदोत हिय जिय हरषतु है। पुर रावलि घर वृषभांन आनंद वरषतु है ॥३॥ अवनीं नभ दिसनि विलोकि औरैं ओप नई। यह आनंद कौ आनंद कन्या प्रगट भई ॥४॥ घर घर जु परम उत्साह वढ़ावनि हिता सुता। व्रज रानी वानी सत्य करी अभिलाष जुता ॥५॥ गोकुल दूनौं आनंद दई दरसावतु है। रावलि सुख सिंधु अपार पार कौं पावतु है ॥६॥ आजु श्री वृषभानु समान काकौ भाग्य वली। मंगल मान्यौं सब लोक जा कुल होत लली ॥७॥ रविजा हू मङ्गल मानि उमगी आवति है। मनु तीर खगनि कौतूहल मङ्गल गावति है।८। भूषन पट औरैं भांति अंग अलंकृत हैं। देवनि हूं संभ्रम देति गोपनि भृत हैं ॥९॥ सोभा उभिलत पुर वाट वनितनि वृन्द घनैं। कौतिक व्रज भूमि अनेक आजु न कहत वनैं ॥१०॥ लटकति भरी भाग्य सुहाग आतुर आवति है। गावति रचि छंद प्रवंध कविनु लज्यावति हैं ॥११॥ राधा जु महा मणि होत विद्या गोत जगे। जडता भागी सब विश्व पथ अनुराग लगे ॥१२॥ वृषभांन भवन अहिलाद मङ्गल रूप कथा। विधि शेष महेश मुनीस वरनि न सकैं जथा ॥१३॥ जाचक जन अपनौं भाग्य मानत हैं गरुवौ। रावलि सुख भूर विलोकि और सुख लग्यौ हरुवौ।१४। वहु पाइ दांन सनमांन विरद वखानत हैं

सर्वेश्वरि आदर भाव हिय सुख सानत हैं ॥१५॥ घर घर में रमा सदेह खेलति है मानौं। रावलि रँग उमिल्यौ आजु किहिं रसना गानौं ॥१६॥ हरदी दधि मंडित अंग गोपी गोप सनैं। ब्रज सम उपमा किहिं लोक जहाँ सुख छत्र तनैं ॥१७॥ श्री व्यास सुवन परसाद जथा मति मैं जु भनैं। वृन्दावन वलि हित रूप लखि धनि भाग्य गनैं ॥१८॥१२२॥

॥ सदा शिव जू कौ आइवौ वरनन ॥ श्री जी की महादेव लीला प्रथम ॥

राग आसावरी—माता धनि तू भाग भरी री। मैं आयौ दरसन हित ताकें जो तैं उदर धरी री ॥१॥ रतन थार कीरति भरि लाई लीजै रावल भिच्या। रावल कहै सुनौं री माई इनकी न मेरें इच्या ॥२॥ जब मैं सुन्यौं सुजस ब्रजपति कौ जाकी घरनि सुत जाया। कमल नैंन जग ऐंन जगत पति ताकौ दरस मैं पाया ॥३॥ ता दिन तें खोजत ब्रज घर घर फिरतु परम अनुरागी। जिन उर धरी स्याम हित स्यामा सो गोपी वड़ भागी ॥४॥ जे प्रगटे वालक ब्रज कन्या सवै फिरयौ मैं हेरी। लीला ललित स्वामि मेरे की निरखौं करौं नित फेरी ॥५॥ अब आयौ तेरें घर माई तोसौं कहि समझाऊँ। जौ पुजवै मेरी मन अभिलाषा तौ तेरौ जस गाऊँ ॥६॥ पाट पटंवर मानिक मोती जो चहियै सो लीजै। तुम तौ नाथ सवै कछु जानौं ऐसौ हठ क्यौं कीजै ॥७॥ माई मैं कैलाश निवासी जोगी यौ जानैं कौ नाहीं। मेरा नाथ जगत स्वामी ताकी जीवनि तो ग्रह माहीं ॥८॥ रावल देखि डरैं जो कन्या तौ करौं कौन उपाई। अखिल लोक जाके पद वंदैं सो क्यौं डरैरी माई ॥९॥ तव कीरति मुसकाइ भवन तें लाई गोद भरि कन्या

करि प्रनाम परिकरमा दीनी नाथ निरषि भये धन्या ॥१०॥ नाच्यौ गायौ नाद बजायौ गद गद निसरति बानीं। मेरे ग्यांन ध्यान ब्रत कौ फल सफल कियौ री रानीं ॥११॥ इत निरखी हित रूप स्वामिनी उत सुख रासि कन्हाई। वृन्दावन हित मगन उमा पति करैं कुल गोप बड़ाई ॥१२॥१२३॥

राग आसावरी (द्वतीय लीला)—यह माई कौंन दिसा कौ जोगी मो घर फिरि फिर आवै। हौं डरपौं डरपै जिन कन्या तऊ हठि नाद बजावै ॥१॥ मैं अबलों इहिं नगर न देख्यौ नहिं घर आंगन द्वारैं। जो कछु दैऊँ सो लेइ न माई मो ग्रह उझकि निहारैं ॥२॥ अचिरज कछू भात याकी दमकै चकित थकित सौ डोलै। कहाँ सुन्यौ इन नाम कुँवरि कौ राधे राधे मुख बोलै ॥३॥ तू कहि जाइ गोप जहाँ बैठे मन भावै सो मागौ। भूमि दांन गज दांन अन्न धन लैकैं बाट क्यौं न लागौ ॥४॥ हँसि बोले रावल सुनि रानी तेरौ भाग अपारा। सब विधि सुकृत उदै भयौ पायौ सकल श्रुतिन कौ सारा ॥५॥ श्रवित अखिल आनंद स्याम घन ताकौ उर अहिलादा। सो तुव सुता दरस दै माई भलौ न बहुत विवादा ॥६॥ ग्रह ग्रह तें गोपीं सब आई सुनि रावल की बानीं। री यह निपट हठीलौ जोगी देख्यौ घर नंदरानीं ॥७॥ भोरौ नाथ बात नहिं बूझै कहै न आपु विचारी। मुख गहौ मौंन भीख ज्यौं पावौ सुनि हँसि हैं ब्रज नारी ॥८॥ उत्तर दिसा देव मंदिर तहाँ जाइ दरस सुख लीजै। यह तौ नगर गोप गोपिनु कौ गहर कौंन विधि कीजै ॥९॥ माता देवनि देव ताहि वर दायक मैं सुनीं वेद

पुरानैं । कीरति कहति जाइ कहूँ ढूँढ़ौ सो नहिं तुम तें छानैं ।१०। मंदिर जाइ छिपाइ कुँवरि कौं लाई बहुत पकवानैं । रानी कहै नाथ यह पूरौ बात पुरातन जानैं ॥११॥ माता चंद न छिपै चकोरनि कैं डर रवि नहिं कमलहि त्रासै । सरवर नहीं अनखि मुख मोरै ढ़िग आवै जो प्यासै ॥१२॥ माता लै भभूति सुनि वचन हमारौ जो कछु मन में सांचै । निगम हूँ गूढ मुनिनु गति दुर्ल्लभ सो याकें बस नांचै ॥१३॥ माता नंद घरनि आदरु मोहि दीनौं अरु सुत वदन दिखायौ । अब वह डरै न बालक जब उन मो सिर चरन छुवायौ ॥१४॥ माता पर पूरन सब तें पर रस मय उभै रूप छवि ऐना । दैऊँ असीस जिवै जुग जोरी जो देखौं इन नैंना ॥१५॥ सुनि मन हरषि लली लै आई नाथ निरषि सिर नायौ । जंत्र करौं न डरै यह कन्या माथैं चरन धरायौ ॥१६॥ माता गुन लच्छन तेरी कन्या के बूझ तौ कछु गाऊँ । बहुत काल जो वसौं इहि नगरी तौ नित नये सुनाऊँ ॥१७॥ सुनि मन मुदित भई रानी कीरति याकौ भेद न पायौ । अरी यह परम जानि मणि जोगी भाग बड़े घर आयौ ॥१८॥ तेरी सुता नंद घरनी सुत झंगुली उतारन पाऊँ । दैऊँ असीस दृष्टि नित आवै गुदरी मांहि लगाऊँ ॥१९॥ लै रावल झंगुली कछु औरौ वहुरचौ कीजौ फेरी । विवस भयौ रावल गुन गावै माता कूषि धनि तेरी ॥२०॥ श्री वृषभांन पौरि रज वंदन करि रावल पग धारे । वलि हित रूप चरित मेरी स्वामिनि जनमत जग विस्तारे ॥२१॥ विचरत ब्रज गोपेश मुदित मन निरखी स्वांमि अंग संगी । वृन्दावन हित डोरि सरित की राखि चरन गौरंगी २२ १२४

(जोगीश्वरी लीला तृतीय) राग आसावरी—मैं तपसी बनवासी मात्ता दूरि दिसा तें आयौ। बड़भागिनि तोसी नहिं त्रिभुवन मेरे गुरू बतायौ ॥१॥ मंगल मूल जनी तें कन्या यह सुभ सगुन मनायौ। ता प्रताप तेरौ जस माता जाइ लोक में छायौ ॥२॥ कन्या कौ पूरव सरूप जो सुनि मो चित्त धुमायौ। ता कारन अपनैं आसन ते आतुर गति उठि धायौ ॥३॥ खेलैं रमा घोष में घर घर आगम मोहि जनायौ। परम पुरुष तौ पौरि झांकि है सत्य सत्य मैं गायौ ॥४॥ अलभि लाभ मोटौ सुकृत करि तें घर बैठैं पायौ। सुर नर मुनि अचिरज जु छके यह मंगल महा दिखायौ ॥५॥ तो घर दांन भयौ ऐसौ सब मन अभिलाष पुजायौ। मेरी हू आसा करि पूरन जाचक द्वार कहायौ ॥६॥ सोभा अवधि निकर आनंद कौं तें गोदी दुल-रायौ। सब तें दुल्लंभ दरसन ताकौ निगम दुरयौ जु चितायौ ॥७॥ कहा कहतु यह रावल सजनीं कौन संदेशो लायौ। महा पुरुष आयौ जु अपूरव मो घर वाद मचायौ ॥८॥ रानीं बहुत दया करि ताकौं रतननि थार भरायौ। लेहु असीस देहु पग धारौ कीरति सीस नवायौ ॥९॥ रावल अनखि अनखि मुख मोरयौ अरु कछु भौंह चढायौ। तैं रानी मेरे मन की न जानी एतौ वरनि सुनायौ ॥१०॥ कुंवरि अति लडी गर कौं गंडा बहु विधि रचि जु बनायौ। मेरें हाथ बँधाय कंठ में जो यह वचन सुहायौ ॥११॥ यह सुनि हरषि लली की मैया जोगी निकट बुलायौ। पलना तें लै अंक कुंवरि कौं सादर हाथ दिवायौ ॥१२॥ मनहीं मन स्यामा नामावलि पढ़त प्रेम सर-सायौ। चुटकी दै दै लेत जँभाई गर गंडा पहिरायौ १३

वारि वारि पुनि पुनि जल पीवत मृदु पद कुँवरि धुवायौ अजर अमर अब तौ कुल मंडनि करि मेरौ मन भायौ ॥१४॥ सर्वेश्वरि अरु आदि नाथ कौं मंत्रनि पढ़ि परिचावौ । गुरु प्रसाद वड़भागिनि मैं अब तेरौ भलौ करायौ ॥१५॥ जटनि मांहि तें जल कौं काढ्यौ भांन भवन छिरकायौ । महिमा महँत गोप कुल गावत डौंरू गहकि वजायौ ॥१६॥ काढ़ि भभूति लगावति पलनां जननी कौं समझायौ । विपुल प्रताप भांन कुल वढ़ि है सुभ दिन जंत्र बँधायौ ॥१७॥ रानीं रीझि बहुत कछु दीनौ हिय में अधिक सिहायौ । पुनि हठि लीनी पीत झगुलिया खपरा हरषि भरायौ ॥१८॥ वार वार सींगी में राधा राधा नाम मल्हायौ । धन्य कूषि कीरति रानी तें सुजस वितान तनायौ ॥ १६॥ गद गद कंठ अंग रोमांचित रावल प्रेम दुरायौ । भये अति मगन बाल चरितनि लखि चित्त हू गयौ चुरायौ ॥२०॥ मांगत विदा असीस सुनावत पग नहिं चलत चलायौ । लीला ललित अमीं रस सागर रावल सुमति न्हवायौ ॥२१॥ श्री हरिवंश स्वामिनी जनमत सुख अंवुद वरषायौ । वृन्दावन हित रूप उदै भयौ नीरस तिमिर मिटायौ ॥२२॥१२५॥

अरी माई मेरौ वचन सुनि भागिन पूरी और कछू नहिं लैहौं । जननी जनक प्रताप वढ़ावनि, जनमी अति लड़ी याकौ रूप गुन गैहौं ॥ लटा छुवाइ चरन कन्या के, जंत्र यहै जु अमर करि जैहौं । वृन्दावन हित रूप सत्य मन क्रम वच करि कैं हरषि आसिका दैहौं ॥१२६॥

राग सारंग चौतालौ (श्री ब्रह्मा जी कौ आइवौ वरनन)

रानी एक विप्र वटोही चारि वदन कौ पौरि पुकारत तेरी।

कुँवरि जनम जोग ग्रह सब सोधतु फलनि बतावतु दीसै पढ़ेला सो एरी ॥ उग्र प्रताप कहतु है पुनि पुनि पढ़तु आसकि लेत चक फेरी । वृन्दावन हित रूप राधिका नामनि लै लै अति आनंदतु दृग सुख वारि ढरे री ॥१२६॥

राग सारंग चौतालौ (श्री नारद जी कौ आइवौ वरनन)

राधा राधा नाम वदन कहै अति अनुरागी आयौ एक ब्रह्मचारी । वीना कांध धरैं अति चकृत सौ चहूँ दिस निरखतु मुदित होत मन भारी ॥ कबहूं वंदत कबहूं आनंदतु कबहूं निर्तति दै करतारी । वृन्दावन हित रूप भाग्य कीरति जु प्रसंशतु लोटत अजिर मँझारी ॥१२७॥

राग ईमन चौतालौ—दसा उज्जल अनुरागी वीना कांध धरैं गावै दृगनि जल ढारै । माला कंठी तिलक तन छापे मेरे अजिर आयौ पलनां ओर निहारै ॥ नांचत अंग होत रोमांचित मगन भयौ अपु वपु न सम्हारै । वृन्दावन हित रूप वारहूं वार वदन तें राधा नाम उचारै ॥१२८॥

राग अडानौ चौतालौ—अरी तेरें आंगन मांगन मचल्यौ जोगी दूर दिसा कौ बतावै । लोचन तीन जटनि झरै पानी माथैं चंदा सींगीं में कछु गावै । मेरे हाथ लेत नहीं भिच्या लैंन कहत जो कीरति लावै । वृन्दावन हित रूप अति लड़ी राधा गर कौं रचि लायौ गंडा ताकौं मोहि दिखावै ॥१२९॥

राग धनाश्री—जियौ जुग कीरति जाई जिन सब ब्रज जन आस पुजाई । उमगि लग्यौ आनंद घोष भर घर घर वाजी गहकि वधाई ॥ अहा कहा भयौ सगुन सोहिलौ जब तें जनमें कुँवर कन्हाई ता दिन हू तें मंगल दूनों औरै ओप

आजु व्रज पाई ॥ सुख कौ सिंधु वहत इहिं रावलि गोप वंश कीरति जग छाई। वृन्दावन हित रूप वलि गई श्री राधा मंगल मणि आई ॥१३०॥

राग विलावल—रावलि पति मेरे जजमांन। अचिरज रूप सार सुकृत कौ कन्या प्रगटी ग्रह वृषभांन ॥१॥ जाकें जनम लोक आनंदे वरषत पुहुपनि देव विमांन। इत व्रज विशद वधाई वाजति जै जै धुनि सुनियति है कांन ॥२॥ अब सब असुभ टरे या भुव के मंगल अमित उदै भये आंन। मम कुल परिपाटी चलि आई उदौ भये करौं वंश वखांन ॥३॥ रानीं कीरति कूपि सिरानीं भाग बड़ौं को आंन समान। वंदौं चरन वलैयाँ लै लै अब तुव सुता सुजस करौं गांन ॥४॥ गोकुल ईश स्याम घन जननीं आये सुनत परम हित मांन। वड़े वड़े भूप भेट लै आये मुनि सुनि आये तजि तजि ध्यान ॥५॥ नांचत वधू गोप गन आंगन हरद दही सिर माट ढुरान। कौतिक मगन सारदा नारद शुक सनकादि महा मुनि जान ॥६॥ अब हौं हरषि असीस सुनाऊँ जियौ हित रूप कुँवरि मम प्रान। वृन्दावन हित जनम वधाई श्री राधा पद रज देहु दान।७॥१३१।

राग विलावल—रावलि पति आनंदिनी जनमीं सुकुमारी। कीरति दृग की पूतरी प्रांननि तें प्यारी ॥ हँसत सदन मनु वदन सौं छवि ललौ उज्यारी। जननी कौतिक देखि कैं प्रमुदित मन भारी। दैंन वधाई आवहीं व्रज के नर नारी। रानी पहिरावति सबैं करि करि मनुहारी ॥ देत असीसैं लाड़ सौं वृषभांन दुलारी। वृन्दावन हित रूप वलि जिये वदन निहारी ॥१३२॥

राग विलावल सूहो—मंगल गावति आवति ब्रज की भामिनीं चंचल गति की चलनि विशेषीं दामिनीं ॥१॥ धनि धन्य कीरति कूषि माई रूप निधि कन्या जनी। बैठीं सवासिनि घेरि चहूँ दिसि आजु मन भाई वनी ॥२॥ गावैं सुहाये सोहिले जहाँ अजिर वाढ़ी रंग रली। मुरि लगति कीरति पाइ वनिता कहति चिरुजीवौ लली ॥३॥ करि अगर धूप सुवास लेपन साथिये कदली धरे। चाइनु फिरति वृषभांन अनुजा नीर अमृत घट भरे ॥४॥ लैं लाग भरि अनुराग पुनि पुनि वदन कुँवरि निहार हीं। वृन्दावन हित रूप स्वामिनि पर सकल निधि वारहीं ॥५॥१३३॥

राग सारंग—सोभित रावलि आजु गली री। श्री वृषभांन गोप ग्रह प्रगटी कौतिक रूप लली री ॥१॥ नगर नगर अरु वगर वगर तें आवति भेट चली री। नंद सहित नंदरानी आई सुनि यह बात भली री ॥२॥ हँसि भेटति मोहन की मैया सुधि कीनी पिछली री। मेरे लाल की करौ सगाई कहि सुख सार ढली री ॥३॥ नंद और वृषभांन सजन मिलि यहै बात बदली री। हौं भई धन्य श्रवन सुनि सजनी मन अभिलाष फली री ॥४॥ जित देखौं तित हीं ब्रज वैभव घर घर प्रति उभिली री। चित्रित पौरि माल मणि सोभित धाम कनक कदली री ॥५॥ धनि कीरति की कूषि सुधा निधि ससि की उगन थली री। वृन्दावन हित रूप स्वामिनीं जनमत रंग रली री ॥६॥१३४॥

राग देव गंधार—कुँवरि मुख देखौ हो पिय आइ। सुकृत उदौ कोऊ भयौ पाछिलौ सुनि हो रावलि राइ १ कोटिक

ससि प्रकास मनु दिस दिस औसैं परतु लखाइ। नसि गयौ तिमर भवन भुव तल कौ दृष्टि नहीं ठहराई ॥२॥ चरुवा आनि चढ़ावैं वेगी बोलौ सुखदा माइ। रोपौ पौरिनु सींक साथिये भांनमती समझाइ ॥३॥ अधिक मांन दै विप्र बुलावौ जनम पत्र लिखवाइ। पुत्र जनम तें देहु सतगुनौं कनक बसन धन गाइ ॥४॥ अब जिनि गहरु करौ दानिनु मणि अवसर नीकौ पाइ। हमैं भयौ विधि आजु दाहिनौं सजन बंधु पहिराइ ॥५॥ महाराज वृषभांन मुदित भये प्रेम उदधि में न्हाइ। कौतिक वदन विलोकि लली कौ देत दांन समुदाइ ॥६॥ गावत जस नर देव महा मुनि लोक लोक न समाइ ॥ वृन्दावन हित रूप भांन कुल अनुचर जीये गाइ ॥७॥१३५॥

राग देव गंधार—आजु धनि कीरति भाग भरी। कूषि सिराई कन्या जाई सब मन सूल हरी ॥१॥ जाकें जनम देव मुनि हरषे पुहुपनि वृष्टि करी। ता दिन तें इहिं पौरि अष्ट सिधि नव निधि नचति खरी ॥२॥ कौतिक रूप कोटि रति सो है नाहिंन पाँइ परी। धनि वृषभांन जनक धनि जननीं जिन यह उदर धरी ॥३॥ धनि ब्रज ईश घरनि जसुमति जू मन अभिलाष फरी। धनि ब्रज मोहन हित श्री राधे प्रगटी सुभग घरी ॥४॥ धनि हित रूप स्वामिनी जनमत उपमां सबहि डरी। वृन्दावन हित इहिं सुख ब्रज जन निरखि मुक्ति निदरी ॥५॥१३६॥

राग देव गंधार—आजु अति रावलि सोभा भीर। कीरति कूषि प्रगट भई कन्या कमनीं गौर सरीर ॥१॥ श्री वृषभांन दांन की सलिता वाढ़ी गहर गंभीर। मागद सूत भाट वंदी जन गावत विरद अहीर ॥२॥ जनम जनम दारिद्रता खोई वरषे पट

नग हीर। आये रंक भये सुरपति सम गई जाचकता पीर ॥३॥ आजु भूर मंगल ब्रज घर घर उपजी है सुख सीर। सुकृत कौ सागर उमग्यौ है दुःकृत कटी जंजीर ॥४॥ औसौ भयौ न जगत सोहिलौ जैसौ रविजा तीर। वृन्दावन हित रूप सींव यह जिहिं श्रीदामा वीर ॥५॥१३७॥

राग देव गंधार—आजु माई रावलि अति उत्साह। श्री राधा सर्वेश्वरी जनमीं सब उर परम उमाह ॥१॥ जा मंगल के देखन कौं सुर वनितनि वाढ़ी चाह। क्रीडत गोपीं गोप विनामित सुख के वहत प्रवाह ॥२॥ सागर रंग गहर सुर नर मुनि पावत नाहिंन थाह॥ तन दुति कहा कहौं दरसतु मनु कनक कियौ सौ दाह ॥३॥ विन मित दांन दियौ भिच्छुक जन धनि रावलि नर नाह। सुता सुलच्छन जाके गुन गन शिव विधि करैं अव गाह ॥४॥ आवत दैन वधाई सब कोऊ छैहौ मिलतु न राह। वृन्दावन हित रूप गाइ जस रसनां लहि यह लाह।१३८।

राग भैरौ—अहो वृषभांन नृपति घर आजु वधावौ मंगल गावौ माई। गौर तेज छवि निकर सुभ घरी कीरति कन्या जाई॥ नंद घरनि मन भयौ भाँमतौ हरि उर धरि सुनि कें उठि धाई। वृन्दावन हित रूप उदौ लखि ब्रज जन मुदित महाई ॥१३९॥

राग विभास—रंग वधावौ आजु गोप नृपति घर कीरति कूषि फली। यह वरसानौं सुख सरसानौं रचना गलीहि गली ॥१॥ वजति गहगहौ मँदरा मंदिर सुनि धुनि श्रवन भली। रहि न सकीं भांमिनि गज गामिनि वनि ठनि उमगि चली ॥२॥ कीरति कूषि मल्हावति गावति भाग दसा वदली निरखत

रूप मगन भइँ वनिता दृग सुख वारि ढली ।३ श्रम जल सहित वदन भये सोभित लखि वृषभांन लली । राका निसि मनु चंद प्रकासित विगसी कुमुद कली ॥४॥ पौरिनु पौरिनु रोपे सथिये वंदन माल ललित कदली । भांन भवन मंगल हू कौ मंगल दिपत दीप अवली ॥५॥ इक भेंटति इक चरननि लागति इक असीसैं देति अली । वृन्दावन हित कुँवरि जनम व्रज वाढ़ी रंग रली ॥६॥१४०॥

राग विभास—मंगल गावौ माई कुँवरि जनम दिन पूजी सब मन आस । मोहन जनमत जो व्रज ओभा तातें विपुल प्रकाश ॥१॥ कूपि सभागी कीरति रानीं ताहि मल्हावति गवनीं पास । सुता सुलच्छन जिन यह जाई रूप अवधि गुन रासि ॥२॥ सींकनि सहित सुविधि रचे सथिया उर धरि अधिक हुलास । झगरति मांगति लीकि लाड़ सौं जे कुल भांन सवास ॥३॥ परम उदार लली की मैया पहिरावति मुख जुत मृदु हासि । हरि हित रूप प्रगट भई नागरि वलि वृन्दावन दासि ॥४॥१४१॥

राग विभास ताल आड (भांड वरनन)—भँडेला वनि ठनि आये गोप सभा में नाना नकल बनावैं । वांकोई सिगार सजें तन चलनि वंक गति वांके वदन दिखावैं ॥ दैहै दान लली की मौसी औसैं कहि गोपनि जु हँसावैं । वृन्दावन हित रूप उमगि पट भूषन वरषत रीझि रीझि वे राधा जनम मल्हावैं ॥१४२॥

राग देव गंधार—सोहिलौ व्रज जन मन भायौ । श्री वृषभांन घरनि आनंद कौ उद्भव दरसायौ ॥१॥ सकल सुखनि कौ विरवा सींचन सुकृत पुंज पायौ । देखन ताहि वधाई गावत घोष उमगि आयौ २ कौतिक परम कुलाहल रावलि परत

न मुख गायौ। वाजति गहकि दुंदुभी व्योम विमाननि सौं छायौ ॥३॥ लगन विचारत गरग गऊतम आगम सुधवायौ। अखिल लोक जीवनि की जीवनि मुनि कहि समुझायौ ॥४॥ यह सुनि रतन वसन कंचन भर रावलि पति लायौ। वलि हित रूप लली जस हित वृन्दावन दुलरायौ ॥५॥१४३॥

राग सूहौ विलावल मंगल छंद—कीरति रानी री हेली भागिनु की वली। लवधि अलौकिक री हेली जग जाकौं फली ॥ मणि चौकी पै री हेली बैठी अति लसै। चहुँ दिसि गोपीं री हेली गावति हैं जसै ॥ गावति सुजस सुनि मुदित तन मन निगम गथ गोदी धरैं। ससि वृन्द सीतल रवि निकर पुनि दामिनीं कौ वल हरैं। अंचल गहैं पय पान अति लड़ि करति हँसति हरैं हरैं। निरखि मैया मुदित मुख तें दूध के कनका झरैं ॥१॥ वदन निहारति री हेली अचिरज ह्वै रहै। लोचन जो सुख री हेली सो कासौं कहैं ॥ कवहूँ लडावति री हेली अपनैं अंक धरि। कवहू लावति री हेली वैंदी डीठि डरि ॥ लावति डिठौंना डीठि डर ज्यौं रंक धनहि दुरावहीं। विधि ओर गोदी ओटि सुकृत सिंधु पार न पावहीं ॥ सिर तास टोपी पीत झंगुली नासिका नथुली वनीं। चुटकीनु दै जननी खिलावति दूध की वरषति कनीं ॥२॥ यह सुख देखत री हेली देव विमान गन। अति पछिताहीं री हेली अपनैं मन ही मन ॥ रूप वदलि कैं री हेली लघु पंछी वनैं। गोप राज घर री हेली करैं कौतिक घनैं ॥ करैं कौतिक घनैं जे जे दूध कन अवनी परैं। ब्रह्मादि शिव सनकादि नारद चुनत कन चौंपनि धरैं ॥ उच्चरत राधा नाम तिनकौं देखि कैं किलकति लली गोपीनु

पद की रेंनु में पंछीनु मानी रंग रली ॥३॥ बाल केलि लखि री हेली मुदित विहंग हैं। निर्तत पुलकित री हेली धरें बहु रंग हैं॥ सबहिनु के मन री हेली मोद बढावहीं। कुँवरि चरन दिस री हेली हुलसे आवहीं॥ आवहीं हुलसे विहंगम कुंवरि कर लाडू किरत। लेत चुनि चुनि सीथ आसा लगे पुनि पाछें फिरत॥ परसंस कीरति कृषि की करि धांम गमनत हरषि हीं। दुंदुभी देव बजाइ जै धुनि होत कुशुमनि बरषहीं ॥४॥ कुंवरि दरसि की री हेली रही लगि जाति सी। वारौं कोटिन री हेली विधुत गात सी॥ रूप परावधि री हेली कीरति नंदिनी। जो रस मूरति री हेली तिहिं आनंदिनीं॥ आनंदिनीं रस रंग मूरति घोष मणि सर्वेसुरी। वृषभांन कुल सोई भई महिमा महँत श्रुति हू दुरी॥ माधुर्य रस लीला ललित विस्तार रसिकनि दान की। वृन्दावन हित रूप सेवौं पौरि श्री वृषभांन की ॥५॥१४४॥

राग सारंग—आज चलहुँ बधांयें जाइयै। कौतिक कुँवरि कृषि कीरति की प्रगटी मंगल गाइयै ॥१॥ यह बरसानौं सुख सरसानौं घर घर बजति बधाइयै। ऐसौ औसर सुनि मेरी सजनीं पूरब पुन्ननि पाइयै ॥२॥ कन्या किधौं पुंज सोभा कौ अविलोकत न अघाइयै। पूजी आस नंद जसुमति की विधि कीनीं मन भाइयै ॥३॥ कोटि कुबेरनु हूं ते अधिकी संपति भांन लुटाइयै। जाके दान मान की लोकनि करें मुनि देव बड़ाइयै ॥४॥ अब ब्रज भयौ सबनि कौ चीत्यौ कीरति कृषि सिराइयै। वृन्दावन हित रूप स्वामिनीं जीवनि कुँअर कन्हाइयै ॥५॥१४५॥

राग रामकली—रावलि में वाढ्यौ आजु रंग अपार री। जनमी है राधा पह पियरी सी वार री ॥१॥ विपुल प्रकाश भयौ कीरति कें धाम री। देखत वधाई वाजी गोकुल ग्रांम री ॥२॥ सुनि धाई आई गोप वाला इहिं भांति री। किरिनि मिली हैं राका पति मनु राति री ॥३॥ इक सुधि पाइ करैं चलन विचार री। भई प्रेम वौरी नहीं वनत सिंगार री ॥४॥ दाई हूँ कह्यौ है टेरि हिय कें हुलास री। गोपनि कें कुल आई सोभा सुख रासि री ॥५॥ पुत्र जनम तें विधि कोटि रीति री। जननीं जनक करौ धरि मन प्रीति री ॥६॥ जोतिस विचारि कहैं वड़ेई मुनीस री। जुग जुग जस वढै रावलि ईश री ॥७॥ गोपनि लै संग तहाँ आये वृषभांन री। मुनिनु वचन सुनि दीनैं वहु दांन री ॥८॥ धौंसनि धधाकि जहाँ घुरत निसान री। ढोलनि ढकन सुनी परै नहिं कान री ॥९॥ मंदिर मयूष भरी वदन मयंक री। कन्या किधौं रूप पुंज कीरति कें अंक री ॥१०॥ घर घर संपदा रही भरि पूरि री। खरचत दिन दिन वढ़ति है भूरि री ॥११॥ भुव नभ दिस सोभा भवन अनंत री। मंगल हू ठाडे जहाँ मूरति वंत री ॥१२॥ राधिका जनम फूल्यौ रस सिंगार री। ह्वै है अब रसिकनि रसना कौ हार री ॥१३॥ षट रितु फूलीं यह मंगल मनाइ री। कुँवरि चरित हम जस मिलैं आइ री।१४। घोष आनंद रह्यौ घर घर छाइ री। वृन्दावन हित रूप जीऊँ जस गाइ री ॥१५॥ १४६॥

राग भैरौ ताल मूल—धनि धनि राधा रावलि औतरवौ। कीरति कूषि सुधा कर सजनीं नीरस तिमिर जगत कौ हरिवौ ॥१॥ भादौं सुकल अष्टमीं प्रगटी गौर तेज रस मय वपु धरिवौ

अहा कहा मंगल ब्रज दरसे रसिकनि हित जु कृपा अति ढरिवौ ॥२॥ गरग गऊतम लगन विचारत जोग अभूत बदन उच्चरिवौ। द्वै अच्छर जु अमी तें गरुवे राधा नाम विदित जग करिवौ ॥३॥ मंगल अमित मूल यह कन्या भयौ मुख दरसि अमंगल टरिवौ। लोक लोक में भांन वंश कौ नित नव निर्मल जस विस्तरिवौ ॥४॥ रावलि पति मुनि रिषि मुख वानीं विपुल प्रेम भयौ हीयैं भरिवौ। भूमि दांन गज दांन धैंन धन दै विप्रनि चरननि अनुसरिवौ ॥५॥ दूरि गये दुरि दुरित विश्व के रसिकनि भाग्य कपाट उघरिवौ। गोपीं गोप वधायैं आये नाचत दै दै ताल उछरिवौ ॥६॥ सोभा सदन कुँवरि मुख निरखत आनंद वारि दृगनि भयौ झरिवौ। सथिये सींक सवासिनि रोपति भाभी सौं भरि लाड़ झगरिवौ ॥७॥ राधा जनम भयौ अस आनंद ब्रज वसि चार्यौ मुक्ति निदरिवौ। भये अजाचक जाचक जेते आंन द्वार कर फिरि न पसरिवौ ॥८॥ नंद सुवन अहिलाद हिये कौ देखि रमां घर घर जु विचरिवौ। वृन्दावन हित रूप कुलाहल भुव नभ घाव निसांननि परिवौ ॥९॥१४७॥

राग धनाश्री चौताला परज ताल आड़—कीरति कुषि गगन भयौ कौतिक चंद उदोत। रसिक अनन्य चकोर स्याम हित जग्यौ है सुधा कौ सोत ॥ जाके जनमत ब्रज सुख सागर देखत वाढ्यौ घर घर मंगल होत। वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि जाकी निरवधि जोत ॥१४८॥

राग रामकली—सुनत भुरहरैं ढाढी आयौ। भांन वंश जस वरनि सुनायौ ॥१॥ रावलि पति कौं माथौ नायौ। राधा जनम सोहिलौ गायौ २ सात साखि लै नाम मल्हायौ भांनराइ

तव निकट बुलायौ ॥३॥ बड़ दानी रति भांन कहायौ । आरज मुख प्रताप सुनि पायौ ॥४॥ श्री सुभांन तिन घरनी जायौ । सूरज कुल कौं विरद वढायौ ॥५॥ उदैभांन तिन सुवन सुहायौ । निर्मल चरित सकल ब्रज छायौ ॥६॥ अरिष्ट भांन सवनि मन भायौ । दिन दिन सुख वारिध सरसायौ ॥७॥ कंज भांनवहु दवि लुटायौ । भक्ति तेज रवि ज्यौं दरसायौ ॥८॥ महीभांन कुल कलश चढायौ । परम धर्मरति चित्त लगायौ ॥९॥ सुखदारानी सुकृत कमायौ । कुल मणिसुत वृषभांन लडावौ ॥१०॥ अलभि लाभ कीरति जु दिखायौ । आनंद निधि अवनीं जु वहायौ ॥११॥ श्रीराधा नाम मुनिनु धरवायौ । मो मन साधा सवहि पुजायौ ।१२। अंवुद कृपा मनहु घमडायौ । श्री वृषभांन दान भर लायौ ।१३। जस वितान त्रिभुवन जु तनायौ । राधा चरित अमी अचवायौ ॥१४॥ धापि धापि रसिकनि जु पिवायौ । नीरस पाहन ते जु वचायौ ॥१५॥ मंदिर· गोपिनु खेल मचायौ । घट भरि भरि गोरस छिरकायौ ॥१६॥ ढाढी दतु पायौ जु अघायौ । दै असीस नीसान वजायौ ॥१७॥ गोपराज कौ उदौ मनायौ । नंद भांन ब्रज रीझि वसायौ ॥१८॥ दुहूँ घर आसा मन विरमायौ । समझि समझि हित हाथ विकायौ ॥१९॥ कीरति जसुमति कौं जु मिलायौ । इत उत कहि सनवंध करायौ ॥२०॥ लली लला चाइनु दुलरायौ । वलि हित रूप सिंधु सुख न्हायौ ॥२१॥ अनत कहूं कौं चित्त न चलायौ । ढाढी परम अनन्य कहायौ ॥२२॥ पोरी सेवन आयु वितायौ । मन मधुकर पद कमल लुभायौ ॥२३॥ वृन्दावन हित हिय उरझायौ । जुगल गान गुन गाइ रिझायौ ॥२४ १४६

राग रामकली—रावलि पति घर आजु वधाई । सुता सुभ घरी कीरति जाई ॥१॥ पह पियरी जनमी सुकुँवारी । भादौं तिथि आठैं उजियारी ॥२॥ डगरीं गाँव गाँव तें आवैं । मद गज गति वर वनिता धावैं ॥३॥ गरज गहर वाजे धुनि जानौं । सव व्रज फिरत वुलावति मानौं ॥४॥ मंदिर धुजा फरहरति औसैं । टेरति भुजनि उचायें औसैं ॥५॥ मनु मनसिज तिय कनक दंड चढ़ि । नाँचति कुंवरि जनम आनंद वढ़ि ॥६॥ कुशुम दाम पौरिनु लसे हैं । मनहुँ मोद भरि भवन हँसे हैं ॥७॥ अजिर जलज मणि चौकनि मंडित । अवनि भाग मनु उदित अखंडित ॥८॥ जहाँ तहाँ विविधि वितान रग मगे । झालरि कोरनि रतन जग मगे ॥९॥ सदन सदन अस रचनां सोहै । सुरपति हू के मन कौं मोहै ॥१०॥ वीथिनु वरषति सोभा भारी । गावति आवति तहाँ व्रज नारी ॥११॥ छवि विस्तारति वदन डह डहीं । भरी उमाहैं प्रेम वह वहीं ॥१२॥ पहुँचि भवन जै जै धुनि कीनीं । निरखि लली मुख सुख अति भीनीं ॥१३॥ भरि घट हरद दही लै खेलैं । माखन की गैंदैं तकि मेलैं ॥१४॥ खसि खसि परत अंग पट भूषन । दामिनि ज्यौं कौंधति गोपिनु तन ॥१५॥ रीझि तिनहिं पहिरावति रानी । देति असीस सवै मन मानी ॥१६॥ वृन्दावन हित रूप अगाधा । जियौ चिरुकुल मंडनि श्री राधा ॥१७॥१५०॥

राग जैतश्री—ढाढी श्री वृषभांन राइ कौ वंश उदौ सुनि आयौ जू । नाँचत मानिक चौक प्रेम सौं पौरी माथौ नायौ जू ॥१॥ टेरत लै लै नांम सवनि के रहसि वधायौ गायौ जू । गोप सभा वैठे रावलि पति दै वहु मांन वुलायौ जू २

वरन्यौं वंश आदि तें सुनि सुनि महा मोद मन पायौ जू महीभांन कौ भाग प्रसंस्यौ जिनकौ जस जग छायौ जू ॥३॥ वल्लव कुल भूषन जु महा मणि विरद पुनीत सुनायौ जू। जिन घर जनम लियौ श्री राधा भयौ मेरे मन भायौ जू ॥४॥ जो जो मांगौं सो सो लैहौं मैं व्रत देव मनायौ जू। अखिल भवन मंगल कौ मंगल विधि मुहि नैंन दिखायौ जू ॥५॥ श्री वृषभांन आपनौं वागौ लै ताकौं पहिरायौ जू। टोडर छाप दये मणि कुंडल तरल तुरंग चढायौ जू ॥६॥ गोप सभा कंचन झर वरषत ढाढी आस पुजायौ जू। ललित लली पर करि न्यौछावरि कीरति वहुत पठायौ जू ॥७॥ इंदु सैंन मुखरा रानी कौ लैहौं दान अघायौ जू। कीरति चंद्र कुंवरि के मामा गज सिंगारि दिवायौ जू ॥८॥ कामधेनु सुर लोक विशेषी हौं लखि बहुत सिहायौ जू। भरयौ खरिक पियरी गाइनि कौ वरहानैं जु वतायौ जू ॥९॥ श्रीदामा के जनम प्रथम ही मैं धन खास भरायौ जू। राधा जंनम इतौ कछु दीयौ देखि कुवेर लज्यायौ जू ॥१०॥ जनम जनम अव भयौ अजाचिक हौं धनवंत कहायौ जू। सूरज वंश चढ्यौ अव कलशा कीरति विरद वढायौ जू ॥११॥ मुनि नर देव नवैं इहिं पौरी मुहि सुभ सगुन जनायौ जू। जसुमति नंद कियौ प्रभु वांछित तुम्हारौ वोल जिवायौ जू ॥१२॥ गद गद कंठ भयौ जव ढाढी गहकि निसान वजायौ जू। वृन्दावन हित रूप रीझि कैं पौरी भांन वसायौ जू ॥१३॥१५१॥

राग सारंग—श्री वरसानैं आजु वधाई। सुता सुलच्छन जाई माई १ नाम रसिक जीवनि श्री राधा प्रगट भई

पुजई मन साधा २ वाजत ढोलक ढोल दमामा मुरि मुरि नाचति ब्रज की भामा ॥३॥ उनमद प्रेम नारि नर गावैं। गोरस घट भरि सिर ढरकावैं ॥४॥ मुख मांडत हैं माखन लै लै। उछरत हैं करतारी दै दै ॥५॥ अति आनंद भरे हिय महियां। लटकि लटकि लागत गरवहियां ॥६॥ हरदी मिलि दधि दूध उलैंडैं। टूटति आजु लाज की मैंडैं ॥७॥ मंगल धुनि नभ अवनीं छाई। सव मिलि कहत वधाई वधाई ॥८॥ हँसि हँसि भेटति हैं भरि अंका। रपटि रपटि परै माची पंका ॥९॥ निगम सुधन कीरति जनी धनि धनि। वृन्दावन हित रूप महा मनि ॥१०॥१५२॥

राग धनाश्री (जगा वरनन)—आयौ सुनि सोहिलौ हौं कुल जगा गोप जजमांन। व्रत अनन्य ह्वै घर जाचौं नंद और वृषभांन ॥आयौ सुनि सोहिलौ०॥टेक॥ वसन अमोल अमोल जु भूषन दीजै सहित समाज। वड़ी रासि के घोड़ा दीजै जीन जराऊँ साज ॥ भरयौ खरिक गाइनु कौ लैहौं एहो वल्लव राज। राधा नाम लिखौं तव पोथी मुहि आदर दिन आज ॥आयौ० ॥१॥ अवधि पुरी तें वोलि वसायौ कंज भांन वल वाहीं। अधिक मांन पाऊँ जाकें घर हौं जाचौं जु तहाँहीं ॥ मैं देखी केऊ तुम पीढ़ीं थोरे दिन की नाहीं। रवि ससि वंश नाम जस गाइक उदौ चहौं मन माहीं ॥आयौ०॥२॥ व्रज में गोप वसत हैं जहाँ जहाँ हौं घर घर करौं फेरौ। वहुत भये वेटा अरु वेटी पायौ दांन घनेरौ ॥ श्री राधा सी सुता न दूजी सत्य वचन सुनि मेरौ। पोथी नाम चढ़ाऊँ तव देहु रविजा तट एक खेरौ ॥ आयौ० ३ चलत कह्यौ मोसौं मेरी घरनी तुम पिय रावलि

जैहों। भई कुल मंडनि भाँनराइ कैं हरषि वधाई दैहों। धांन उपजनौं गाम नृपति पै नाम लिखाई लैहौं। मुख में रहे न दांत बैठि कैं दूध भात अब खैहों ॥आयौ०॥४॥ यह परताप वढ़ावनि प्रगटी अधिकोई दत पाऊँ। छांटि दुधारी गायें दीजै हौं हूं खरिक वनाऊँ॥ श्री राधा कौ सदिका न्यारौ पुर इक बड़ौ वसाऊँ। मंदिर देहु वनवाई तहाँ बैठ्यौ याके गुन गाऊँ ॥आयौ०॥ ॥५॥ हौं मंगल वांछौं महराजा वीथि वधायें आऊँ। मेरी लीक सवनि तें भारी आरज नाम मल्हाऊँ॥ ललित लली कौ जनम जोग लखि फूल्यौ अंग न माऊँ। मोहु लाभ होहिगौ अैसौ जाचक फिर न कहाऊँ ॥आयौ०॥६॥ सुभ आगम गौरंग महा मणि मो हिय सुख जु पग्यौ है। त्रिभुवन के जाचक तिन दिस दै पीठि दरिद्र भग्यौ है॥ राधा जनम महा भर रावलि कंचन रतन लग्यौ है। जो माग्यौ सो पायौ मेरौ भाग वली जु जग्यौ है ॥आयौ०॥७॥ श्री वृषभांन गोद लै बैठे राधा नाम लिखायौ। इंदुसैन नाना नानी कौ मुखरा नाम धरायौ॥ दादे तात नाम लिखिवे में दांन वहुत सो पायौ। सुखदा दादी कीरति जननीं जिन कुल विरद बुलायौ ॥आयौ० ॥८॥ वडडे भूप भये भूतल पर पूरी करी कमाई। मैं जानीं वृषभांन नंद सम काहू तें न वनि आई॥ कनक तनीं कीरति उर प्रगटी जसुमति कूषि कन्हाई। त्रिभुवन जन जाचक भये दुहूँ घर कहाँ लगि करौं हौं वड़ाई ॥आयौ०॥६॥ मेरौ ममित तुम्हारे घर सौं साखिनु तें चलि आयौ। तुम दत्त लै अब गोकुल जैहौं जसुमति मोहि वुलायौ॥ लिखि हौं नाम नंद नंदन कौ लै अपनौं मन भायौ आऊँ वेगि विदा ह्वै मन

तुम पौरि वसन ललचायौ ॥आयौ०॥१०॥ देखौं वाल चरित अति लडि के जव लगि होहि वडेरी। वाहू घर की सुधि लै आऊँ आसा गहरी मेरी ॥ दई करै निश्चैं चित चीत्यौ विनती करौं घनेरी। वृन्दावन हित रूप ता दिना वरषैगी सुख ढेरी ॥आयौ०॥११॥१५३॥

राग धनाश्री ताल रूपक—धनि धनि सु दिन सखी आजु वधावौ वृषभांन कैं ॥टेक॥ गौर तेज अनूप प्रगटी कुँवरि आनंद कंद। लखि वदन कौतिक माधुरी सम नाहिं कोटिक चंद ॥ वोलैं तौ वंदी विरद पौरिनु विप्र उच्चरत छंद। उमड्यौ चहूँ दिस घोष घन धन वरषत जसुमति नंद ॥ वधावौ वृषभांन कैं ॥टेक॥१॥ छवि भीर वीथिनु विविधि रचनां वृन्द वनितनि जात। गावति सुहाये सोहिले हरषीं न हियहि समात ॥ थर हरैं पौरिनु माल मणि रँग रँग धुज फहरात। इक लटकि गवनीं भवन भांमिनि दमकति दामिनि गात ॥२॥ निगम गूढ अरूढ गोदी लियें जसुमति माइ। ताकौ परम आनंद रस मय धरयौ वपु जु वनाइ ॥ त्रैलौक जाकी छवि छटा उपमां न वरनीं जाइ। सोई स्याम सुन्दर हेत कीरति कूषि प्रगट भई आइ ॥३॥ हरि जनक जननीं मुदित अति वहु सकट सौंज भराइ। लै गोप गोपिनु संग निकसे भरे हित के भाइ ॥ प्रथम पौरी पग धरयौ वृषभांन जू सुख पाइ। अरघ दैकैं भवन लीनैं पहिलैं भेट पठाइ ॥४॥ निरषत जसोमति हिय सिहानी लली मुख की जोति। रावलि प्रकास अखंड मंडल दवे दुति धर गोत ॥ द्दग धरे कौ फल आजु सजनीं त्रिपित नाहिंन होत। सुकृती सनेही स्याम कारन जग्यौ है सुधा मनु सोत ५

मंगलनि गावत विधि मनावति सवै ब्रज नर नारि। कीरति सुता जसुमति सुवन कौ रूप विपुल निहारि ॥ गिरिराज जौ अनुकूल हमकौं कहत गोद पसारि । वर देहु जुग जुग जियैं दोऊ देत प्रांन धन वारि ॥६॥ ग्रह सोधि लगन विचार तिहिं छिन जनम पत्र लिखाइ । दोंहनी ग्वाल सवच्छ दीनीं कनक सींग मढाइ ॥ रुपैं खुरीं पुनि पीठि तांवैं पाट वसन उढाइ । नौलाख विधि सौं धैंन दीनीं भांन प्रेम निधि न्हाइ ॥७॥ ब्रज पति सहित वृषभांन वैठे राज आसन आइ। खोले कनक नग कोश जे सचि धरे हे रावलि राइ । वंदीरु मागद सूत चारन भाट वहु धन पाइ । परसंश दिन मणि वंश कौ जस गावत भुजनि उचाइ ॥८॥ वर व्यौंम वनितनि सहित वैठे सुर विमाननि छाइ । पावन सुजस ब्रज लोक कौ गावत निसांन वजाइ ॥ भुव लोक ओकनि प्रेम वारिध वढ्यौं सहज सुभाइ । राधा जनम दिन विशद मंगल वरनत कौंन अघाइ ॥९॥ वृषभांन वचन अचल भये कोऊ फूल्यौं पूरव भाग । ब्रजपति घरनि आसा फली जो ही हियें वड़ लाग ॥ वानी फली रस मय भई सारदा हिय तें जाग । लीला फली अवतार पूरन उभय रूप अनुराग ॥१०॥ वंदौं चरन गौरंग श्री वृषभांन ओप्यौ वंश । उत नंद जसुमति कुल उजागर अखिल भवन प्रसंश ॥ वलि जाऊँ श्री हित रूप निवड निकुंज सर के हंश । वृन्दावन हित सोई भूषन लोचन श्री हरिवंश ॥११॥१५४॥

राग जैतश्री——आजु वधावौ रावलि ईश कैं घर घर ब्रज आनंद ॥टेक॥ गौतम सहित महा मुनि आये पूजन करि बैठाये। लगन नछत्र जनम दिन राधा जोग अभूत सुनाये १

चारु विचार करैं मनहीं मन पुनि मृदु वचन अलाप। निरवधि सुजस भांन कुल वढ़ि है कन्या प्रवल प्रताप ॥२॥ ब्रज सुख सिंधु वहै नित गहरो सुनहु गोप महारानैं। ललित लली गुन सुभ मुनि ज्ञाता निस दिन नये हो वखानैं ॥३॥ मंगल मूरति वंत अखिल नित वसहिं कुँवरि पद लार। निधि सिधि शक्ति अनुचरीं कोटिन सेवहि गोप दुवार ॥४॥ श्री वृषभांन रिषिनु पद वंदे हढ करि वचन प्रमानैं। गहकि गहकि मंगल ब्रज सुंदरि गावत घुरे सहदांनैं ॥५॥ राखी वन तें फेरि गाइ सब ग्वाल सिमिटि कैं आये। मनु सोभा वहु मूरति धरि कैं कौतिक रचत सुहाये ॥६॥ महुवरि पुनि मुखचंग वजावैं गावैं रंग वढावैं। चलहु भैया मिलि लैंहिं वधाई भांन भवन कों धावैं ॥७॥ इत गोपी उत ग्वाल परस्पर होत कुलाहल भारी। इतहिं निसान गरज उत कुशमनि वरषत नभ सुर नारी ॥८॥ इत वंदी विरदनि बोलत उत भाट कवित्त वखानैं। इत मागद वंशावलि वरनत उत पढैं सूत पुरानैं ॥९॥ ब्रज चौरासी कोश सिमिटि सब गोप भांन घर आये। भेटनि लेत तिनहिं पहिरावत विविधि भंडार लुटाये ॥१०॥ वधुनि वृन्द लैं जसुमति आईं नंद गोप गन लारैं। आगें ह्वै रावलि पति लीनें भेटति भुजनि पसारैं ॥११॥ अति छवि भरि महा छवि वरषत कुँवरि जनम वरसानैं। सुमिरत जाहि उमापति सुरपति विधि पुनि चिंतत ध्यानैं ॥१२॥ जसुमति गोद स्यांम घन सुंदर कीरति उर सुकुँवारी। मिलति परस्पर दोऊ रानीं प्रेम पुलकि तन भारी ॥१३॥ तेहिं छिन में हँसि दई वधाई पुनि पुनि टेरि सुनाऊँ। वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि दासि दुहुनि की पाऊँ ॥१४॥१५५

राग जैतश्री आज लली कौ जनम सोहिलौ आनंद रंग वढ़ावौ जू । प्रगटी नागरि रूप उजागरि सब मिलि मंगल गावौ जू ॥१॥ याके जनम आजु ब्रज मंडल लखियति औरै ओभा जू । सदन सदन वीथिनु गिरि वन दिस वरषत अतिसै सोभा जू ॥२॥ खेलत गाय वछरुवा खरिकनि नांचत हैं मिलि ग्वाला जू । गाँम गाँम तें टोलनि टोलनि आवति हैं व्रज वाला जू ॥३॥ ये दिखि नभ विमान सुर वनिता चढ़ि चढ़ि कौतिक आई जू । वरनति भूर भाग कीरति कौं आवनि कौं पछिताई जू ॥४॥ वरषत कुसुम देव मन हरषत दुंदुभि गहकि वजाई जू । इत चौरासी कोस सकल ब्रज ह्वै रह्यौ रंग महाई जू ॥५॥ श्री वृषभांन भवन कौलाहल जै जै वानीं छाई जू । एकनि पहिरावति इक आवति एक विदा ह्वै जाई जू ॥६॥ रंग गह गहीं वदन डह डहीं निरखि कुँवरि मुख फूलीं जू । वृन्दावन हित रूप जाऊँ वलि इक घर जैवौ भूली जू ।१५६।

राग चैती गौरी (दाई वरनन)—परम विचच्छन एरी । आऊ तू नेरी । बात सुनि मेरी । वलाइ लैंउँ तेरी ॥ अहो कोविद कमनीय दाई तुरत लै आइयै ॥१॥ रानी जू अग्या लैकैं । गई वेगि दै कैं । अर्मीं सौ अचै कैं । चरन ताकैं नैकैं ॥ अहो सादर लाई है ताहि परम मिठ बोलनीं ॥२॥ भाग्य भरी सुधि पाई । सुनत उठि धाई । मणि मंदिर आई । सुगंधि चरचाई ॥ अहो कोमल कर तन मर्दन मन रुचि लै कियौ ॥३॥ दीपक झमकें महल में । सब फिरति टहल में । प्रेम की दहल में । सुख चहल पहल में ॥ अहो लली जनम की वार महा मंगल उदित ।।४।। सर्वेश्वरि उर धरनीं गोप नृप घरनीं

मोद विस्तरनीं। उदौ कुल करनी। अहो भाग्य बली जग माहिं न असी दूसरी ॥५॥ कहा छवि बरनौं दाई। रति रंभा लज्याई। किधौं वपु चतुराई। धनि सफल कमाई॥ अहो निगमन दरस्यौ रूप ताहि दृग लखि छकी ॥६॥ वरषि परी सुख ढेरी। नसी सदन अंधेरी। सुनौ विनती मेरी। दाई कह्यौ टेरी॥ अहो रूप निकर है महा मणि कन्या न लोक अस ॥७॥ जवहि अवनि वपु परस्यौ। भवन तेज दरस्यौ। प्रेम जग सरस्यौ। विपुल रंग बरस्यौ॥ अहो घर घर धातुनि भाजन वजे सब आपु ते ॥८॥ अमीं अमोघ भरयौ है। मयूष ग्रह भरयौ है। प्रकास यौं करयौ है। तम नीरस टरयौ है॥ अहो रावलि भई है सुखावलि राधा जू अवतरी ॥९॥ आयौ रावलि रानौं। लखि कुँवरि सिहानौं। कहा सोभा बखानौं। कृपा वपु मानौं॥ अहो संकलपीं कई लखि गाइ ग्रह आइ कैं ॥१०॥ आये कुल विरद पढउवा। जोतिस बरतउवा। फिरत हैं वधउवा। भाट वारी नउवा॥ अहो पीरी पह फूलनि में वधू सिगारहीं ॥११॥ घाव निसान परे हैं। घट ओपि धरे हैं। चौक चित्र करे हैं। मंगल उचरे हैं॥ अहो आये गोप गोपिका दधि कादौं मची ॥१२॥ सब कहैं जनमीं राधा। गई दुख वाधा। भांन सुकृत अगाधा। जननीं पूजी साधा॥ अहो वचन वज्र भये लोक सजन सौं जे कहे ॥१३॥ स्यौं परिवार सु दाई। हरषि पहिराई। लोक सब पाई। मुदित है महाई॥ अहो देति असीस जियौ जुग कीरति नंदिनीं ॥१४॥ आनंद निधि नित न्हैवौ। कुँवरि दुलरैवौ। रूप दृग अचैवौ। नित लाडनि लडैवौ॥ अहो लोक महा मणि कन्या भवन भूषन

भई ॥१५॥ हुलसि दांन कौ देवौ । असीसनि लैवौ । उमगि गुन गैवौ । अलभि लाभ पैवौ ॥ अहो यह सुख संपति कीरति भागिनु हीं लिखी ॥१६॥ जहाँ लोकेश भिखारी । आवैं वदि वदि वारी । वनैं भेष धारी । नाचैं अजिर मँझारी ॥ अहो आसा कुँवरि चरन रज सो वृषभांन घर ॥१७॥ वृन्दावन हित भायौ । हित रूप दरसायौ । जग प्रेम सरसायौ । अलभि लाभ पायौ ॥ अहो श्री हरिवंश सुधन गौरंगी दासि देहु ॥१८॥१५७॥

राग चैती गौरी (खिचरी वरनन)—खिचरी हो पिय दीजै । विनय सुनि लीजै ॥ गहरु नहिं कीजै । लली लखि जीजै ॥ अहो कीरति बोले वचन अमीं मनु श्रवि चल्यौ ॥१॥ अहो अहो रावलि राइ । सुनौ चित लाइ ॥ सुभ घरी पाइ । वेगि लेहु न्हाइ ॥ अहो पुत्र जनम तें देहु सतगुनौं दांन अब ॥२॥ वोल सजन सौं जियौ । विधि वांछित कियौ ॥ भर्यौ सुख हियौ । फल्यौ पूरव दीयौ ॥ अहो देखो नैंननि आनि सुता मुख चंद कौं ॥३॥ लली रूप अति भारी । किनि विधि धौं सँवारी ॥ कहौ किहिं उनिहारी । सिंधु जाको विचारी ॥ अहो चहलि दहलि दृग रहे टेरि दाई कह्यौ ॥४॥ बोलौ सुखदा माइ । विप्र बुलाइ ॥ लगन सुधवाइ । रचौ विधि आइ ॥ अहो चरुवा आनि चढावौ उदौ लखि भाग कौ ॥५॥ सकल सवासि बुलावौ । साथिये धरावौ ॥ तिनहि पहिरावौ । वहु मंगल गवावौ ॥ अहो यह कुल मंडनि कुँवरि बुलावनि सजन घर ॥६॥ कहत लली कौ तात । रस भरी बात ॥ मंद मुसिकात । कछुक सकुचात ॥ अहो जो चाहो सो लेहु कुंवरि के सोहिलें ॥७॥ जिहिं विधि खिचरी चहियै रीति सो कहियै । साध मन

लहियै। अनखि क्यों रहियै ॥ अहो तुम धन परम प्रवीन कहौ समुझाइ कैं ॥८॥ बोली कीरति रानीं। हियें बिगसानीं॥ मधुर मुख बानीं। सुनौं बड़ दानीं॥ अहो मेवा बिविधि मगाइ देहु रस रीति सौं ॥९॥ चीर अमोल मंगावौ। रंग गहरे रंगावौ ॥ मणि कोरनि लगावौ। तुरत लै आवौ ॥ अहो ताहि पहिरि ब्रज पूजौं देव गिरिराज कौं ॥१०॥ सुनि भये मुदित महाई। बात मन भाई॥ बिधि सबहि कराई। बांटत हैं बधाई॥ अहो नंद सहित नंदरानी आईं चाव लै ॥११॥ इन्द्र बिभौ बकसीसैं। देंहि रावलि ईसैं॥ करै कौन रीसैं। सुनौं मो असीसैं॥ अहो बंदी बिरद बखानत दिन मणि वंश कौ ॥१२॥ हौं बलि बलि मुख ललित। चरित सुख फलित॥ सुधा संवलित। बिश्व दुख दलित॥ अहो वृन्दावन हित रूप सुधन हरिवंश कौ ॥१३॥१५८॥

राग मारू (ढाढी)—आजु उदौ भांन के बंश भयौ हम चीत्यौ रे ढाढी। सत्य वचन तेरौ भयौ ढाढिनि कहति प्रेम बाढ़ी॥ भयौ हम चीत्यौ रे ढाढी॥टेक॥१॥ गोप सभा रावलि कौ रानौं बैठ्यौ मुदित महाई। मन मान्यौं जु आजु पावैगौ चलि दै बेगि बधाई ॥२॥ औसौ करि सिंगार आपु तन सुर पति देखि लज्याई। तेरे भाग प्रसंशैं वे सब बिधनां भली बनाई ॥३॥ भांति भांति बहु धन करि मंदिर भरे, कियौ प्रभु भायौ। पूरब सुकृत हमारौ कोऊ प्रगट्यौ सगुन मनायौ ॥४॥ प्रेम भरी बानीं ढाढिनि की ढाढी कें मन भाई। अपनौं इष्ट देव आराधत फूल्यौ अंग न माई ॥५॥ सुत जु सहोदर बोलि आपनैं ढाढी अंग सज्यौ है। उपमा कहा दैउँ जिहिं देखत

देव समाज लज्यौ है ॥६॥ ढाढिनि सुविधि अलंकृत करि तन चलनि उमाह भरी है। सुर वनितनि चूड़ामणि कै सोभा ही देह धरी है ॥७॥ निकसीं मंगल गावति कौतिक वीथिनु मांहि करयौ है। निर्त्तति है अैसैं मानौं संगीत सरूप धरयौ है ॥८॥ पहुँची श्री वृषभांन पौरि जहाँ जुरे गोप अरु गोपीं। पति परिवार सहित भई हरषित अधिक कलनि सौं ओपीं ॥९॥ वारंवार असीस सुनावति रावलि पति सुनि लीजौ। तुम भायौ विधनां जु कियौ तुम मो मन भायौ कीजौ ॥१०॥ नौहू भांन निकसि मंदिर तें गोप सभा में आये। दै सनमांन जानि कुल ढाढी महा दान झर लाये ॥११॥ मनु रवि उदै कमल खुल्यौ संपुट यौं ढाढी मन फूल्यौ। बांयौं भयौ दरिद्र दाहिनौं जाहि दई अनुकूल्यौ ॥१२॥ महाराज वृषभांन प्रथम हीं दियौ जर-कसी चीरा। अति अमोल दीनी जु कलंगी रवि छवि छीनैं हीरा ॥१३॥ पुनि नव रतन पेच सिर बाँध्यौ वागौ अपनौं दीयौ। महा भांन मणि कुंडल दीनैं वहुत अनुग्रह कीयौ ॥१४॥ श्री सुभांन मोतिनु की माला निकट बोलि पहि-राई। धर्म भांन इक दई धुकधुकी लखि ससि किरिनि लज्याई ॥१५॥ वल्लव कुल की निर्मल कीरति ढाढी सुविधि वषानैं। वाजू वंध जराइ नगनि कौ सुनि दीनौं वर भानैं ॥१६॥ मही भांन कुल मंडन मेरे मन अभिलाष पुजाये। मणिनु जटित टोडर यह सुनि गुन भांन रीझि पहिराये ॥१७॥ कंज भांन जस वर्द्धन तुम सम को है इहिं जग दानीं॥ सत्य भांन मणि चौकी दीनीं सुनि ढाढी की वानीं ॥१८॥ उदौ भये पै सूरज कुल कौ गाऊ विरद रसाला सुनि रति भांन अधिक आनंदे

दीनी मूँगनि माला ॥१६॥ अपनौं भाग कहाँ लगि बरनौं तुम कुल सेवन पायौ । तब रुचि भांन नयौ जु दुशाला ढाढी सीस उढायौ ॥२०॥ गोधन ठाठ रतन मणि कंचन दियौ ढाढी मन भायौ । जनम जनम की भूँख मिटाई दांन घनेरौ पायौ ॥२१॥ चक्रृत देव गोप दत्त देखत संक कुबेर भयौ है । ढाढिनि कीरति जु पहिराई मन वांछित जु दयौ है ॥२२॥ नित नित बढौ प्रताप भांन कुल हौं नित मंगल गाऊँ । श्री कीरति कुल मंडनि ताकौं नित नित लाड लडाऊँ ॥२३॥ देखि देखि राधा मुख फूलति ढाढिनि भाग वली है । दै असीस रानीं पद वंदति ह्वै तब विदा चली है ॥२४॥ श्री हरिवंश प्रसाद गोप कुल महिमा महँत वषानीं । वृन्दावन हित रूप लली जस गावत नित रुचि मानीं ॥२५॥१५६॥

राग मारू—नृपति तेरौ ढाढी ठाडौ द्वार । त्रिभुवन वंदनीय यह कन्या प्रगटी तुव आगार ॥१॥ प्रथम मास तें जनम द्यौस लगि गनि गनि वितये वार । मेरे मन के सकल मनोरथ सफल करे करतार ॥२॥ धर्म धीर सूरज कुल मंडन तो सम को दातार । करि महाराज मेरौ मन भायौ श्री वृषभांन उदार ॥३॥ अधिक मांन दै निकट बुलायौ ढाढी सभा मंझार । टोडर छाप दये मणि कुंडल बसन अमोल्ल अपार ॥४॥ कंचन रतन दिये मन भाये खोलि वडौ भंडार । महरानी कीरति पहिरायौ ढाढी कौ परिवार ॥५॥ दै असीस ढाढी सिर नायौ बोल्यौ वचन विचार । बाढौ गोप इंद्र की संतति कन्या कुल सिंगार ॥६॥ चिरुजीयौ यह आस हमारी राधा नंद कुँवार । महाराज वृषभांन नंद कौ लोकनि जस विस्तार ॥७॥ शेष महेश

सारदा नारद शुक अरु सनत कुमार। लोकपाल व्यासादि सकल मुनि गावैं चरित सुचार ॥८॥ जै श्री रूपलाल हित जीवनि इत उत गोप वंश अवतार। वृन्दावन हित मगन ढाढिया टेरतु वारंवार ॥९॥१६०॥

राग मारू—हौं अनन्य ढाढो जाचौं एकही कुल गोप। वड़े नृपति वृषभांन वंश भई कन्या सब व्रज ओप ॥जाचौं०॥ ॥टेक॥१॥ मोहि सगुन दिन उगन भये सुभ सो विधि नैंन दिखायौ। गयौ दरिद्र कई पीढिन कौ वांछित मंगल पायौ ॥२॥ गोकुल पति रावलि पति के घर जब जब होइ वधाई। तव तव आंनि हाथ हौं ओटौं यहै लीक लिखि पाई ॥३॥ मेरौ व्रत यह प्रभु प्रति पाल्यौ नीकैं जांनि परी। उदौ भयौ दोऊ घर ऐसौ मन की भूँख टरी ॥४॥ जोगिनु कौ जप सिद्धनि कौ तप ग्यांनी खोजत जाकौं। घर ही बैठें दई दिखायौ निगम प्रसंशत ताकौ ॥५॥ सुनिये वचन भूप दोऊ व्रज के प्रेम दहलि गये गात। ढाढी कौं इतनौं कछु दीनौं देखि कुवेर सकात ॥६॥ नाचत मगन भयौ मुख वोलत हिय पूरित अनुराग। वृन्दा-वन हित रूप उदौ व्रज इत उत मेरैं भाग ॥७॥१६१॥

राग मारू (वंशावली वरनन)—ढाढी कुँवरि जनम सुनि आयौ। श्री वृषभांन मान दै ताकौं अपनैं निकट बुलायौ ॥टेक॥ हँसि कैं कह्यौ वरनि सूरज कुल जहाँ भये वड़ भुव पाला। वेद पुरानन सुनियत निर्मल जिनके जस की माला ॥ छत्री तें गोपालन व्रत कौ किन नृप कियौ प्रति पाला। ये सब चरित आदि मम गावौ गोप सभा इहिं काला ॥१॥ अग्या पाइ नाथ अपनें की भूर भाग अनुकूल्यौ दै असीस पद वंदन

ढाढी तन मन फूल्यौ । २ । श्री नारायन नाभि कमल तें भयौ विधि मंगल कारी । तिनकें सुत मरीच तिन कश्यप प्रजा विपुल विस्तारी ॥ तिन सुत रवि उद्योत तासु सुत वैवस्वत गुनकारी । तिनकें सुत इक्ष्वाकु तेज धर मही धर्म वल पारी ॥३॥ तिन कुल भयौ शशाद वहुरि सुनि ककुदस्थ अति वल मानैं । तिनकें सुवन अनैंना प्रगट्यौ तिहिं कुल प्रथ्व वषानैं ॥ विश्व रंधि कुल थंभनि जिनकें चंद्र चंद्र सम जानैं । तिनकें सुत जु वनाश्व तासु कें साव सुवन गुन गानैं ॥४॥ सुनि वृहदस्व जस्य कुल ताकें सुत सावस्ति सुधीरा । कुवलयाश्व ताकें कुल तिन सुत नांम द्दढाश्व जु वीरा ॥ तिहिं सुत हरि जस तासु निकुंभ जु सकल गुननि गंभीरा । जानि कृशाश्वतस्य सुत ताकें सिनि जित मेटन पीरा ॥५॥ तिन कुल नृप जु वनाश्वतस्य मांधाता सुत जग गायौ । जिनकें पौरुकुतस्त नांम तिहिं कुल अनरन्य कहायौ ॥ ताकें हरि जस नंदन ता सुत अरुण प्रजा मन भायौ । जा सुत भयौ त्रषंख तासु घरनीं हरिचंद सु जायौ ॥६॥ तस्य सुवन रुहिताश्व तासु सुत हरित नांम वड़ भागी । जाकें चंप विजय पुनि ता घर पुत्र भयौ अनुरागी ॥ ताकौ भरुक आतमज तिहि कुल वृक सुत सुकृत विभागी । तिनकें वाहुक तिन सुत सौरभ देखि सकल भय भागी ॥७॥ तिन कुल सगर प्रतापी जिन कुल अस मंजस जोगीशा । तिन सुत अंशमान तिन नंदन नृप जु दिलीप महीशा ॥ जिन सुत भये विश्व हितकारी भागीरथ जु वलीशा भुव तल पावन

कियौ सुरधुनीं जे धरि लाये सीशा ॥८॥ नाभ भये तिन कुल आनंदन सिंधु दीप सुत तेहा। पुनि अयुनायु जांनि तिहिं जातक सुत रति पर्ण सुजेहा ॥ सर्व काम तिनके जु वंश धर सुत सुदास गुन ग्रेहा। तिन सुत अस्मक तिनकें मूलक कुल वर्द्धन भये एहा ॥९॥ तिनके दशरथ जानि महा भट छत्र धर्मं मत गाढे। जिन सुत विदित ऐरविड जानौं परम धर्म रति वाढे ॥ तिन घर सुवन विश्व सह सुन्दर किन विधनां रचि काढे। सुत षट्वांग दिलीप उजागर सकल गुननि करि आढे ॥१०॥ नृप दिलीप की निर्मल कीरति वेद पुराननि गानी। रति रघु धर्म धनंधर तिनके चारि पुत्र सुख दानी ॥ गोपालक भयौ धर्म पिता की सत्य मानि कैं वानीं। वैश्य वंश भई ख्याति विदित यह आरज मुख जु बखानीं ॥११॥ तिनकें भयौ अजित सुत सुंदर गोधन पालक नीकौ। तिनकें देव गंध सुत जनम्यौं मन भावन सबही कौ ॥ तिनकें भव हर नंदन प्रगट्यौ भरथहि प्यारौ जीकौ। अभय करन तिनकें कुल भूषन मोद वढावन हीकौ ॥१२॥ भरथ सत्रघन आइ मधुपुरी लवनासुर वधि कियौ। अभय करन भव हरन लाइ कैं राज तहाँ कौ दीयौं। अभय करन कें मेरज प्रगट्यौ तिन सुंदर व्रत लियौ। महि सोंहन सुत भयौ निरखि कैं तात सिरायौ हीयौ ॥१३॥ धर्मा कर भये धर्म उजागर सुत जुधराधू ताकौ। नेंमाधर ताकें कुल मंडन गोपा-लक व्रत जाकौ ॥ जल्या जय कौ दृढ व्रत नीकौ देउँ सु उपमा काकौ। पुनि विरंज तिनकें कुल जनमें रतनाकर सुत वाकौ ॥ १४॥ रतनाकर कें नौ नंदन भये मुख्य रषंग वषानौं। नौ जोगे-श्वर मनौं प्रगट भये जोग क्रिया दृढ जानौं त्रेता जुग लौं

रहे मधुपुरी पुनि द्वापर नियरानौ वसे रथंग सहित कुल गोधन लखि कमनीं वरसानौं ॥१५॥ जस्य प्रभाकर तिनकुल थंभन अमितावलि जस गाऊँ। परमाजित तिन सुत तिनके सुत उदिया दिनिहिं लडाऊँ ॥ सुत प्रताप तिन कुल प्रकास मुद जिन गुन पार न पाऊँ। पुनि अननवज भये तिनकें कुल वार वार दुलराऊँ ॥१६॥ तिनकें सुत आसा पति जिन कुल अजमङ्गल व्रत धारी। सुभ मङ्गल तिन सुवन सुभकर सवहिनु के हितकारी ॥ तिनकें भये महारुषि जिन सुत भाव वीर सुखकारी। भये जवावर नंदन तिन कुल सुत जु रूप निधि भारी ॥१७॥ आकर्षन जाकें ताकौ सुत अछया व्रत मन मोहे। नाम मगन माधौ तिन नंदन दैंऊँ सु उपमां कोहे ॥ भयौ किल्लोल मगन सुत कमनी सुत जु जैत जय जोहे। सुवन जशालय ताकें प्रगट्यौ सदा धर्म रति सोहे ॥१८॥ उद्दै उदार वंशधर जिनकें अचल मेध सुत जायौ। सुतत ब्रशे प्रतापी तिनकें कुल भूँमेश कहायौ ॥ भुव मङ्गल कुल वर्द्धन प्रगटें सुवन अचल मन भायौ। तिन सुत प्रांन पाल प्रांननि सम सत्यवल सुत दरसायौ ॥१९॥ मोद महा शिव जिनतें जनमैं सुत भग्रो जै धारे। तिनकें लच्छिश तिन अरुणा दुति प्रजा धर्म रखवारे ॥ जिनकें तम नाशिक तिनकें दैत्य उत सव तम टारे। भूँमेसुर तिनकें कुल तिन सुत रमन सुजस विस्तारे ॥२०॥ हिमकर सुत ताकें भयौ गुन निधि ता सुत भ्रत्य सुनांमां तिनकें जोंहन राव उजागर परम भक्ति कौ धांमां ॥ सुख सुँदर परतापी ताकौ सकल गुननि कौ ग्रामा। भोग भुवन सुत जाकौ जानौं सब विधि पूरन कामा २१

सुभ सुख तिनकें भये धर्म रति सुत मणि भूषन दरस्यौ राः
मोघ मति इनकें जानौं महा मोद मन सरस्यौ ॥ तिनकें पुनि
भगवान सनेही सबकौ चित आकस्यौ । दीप उदैसौ तिनकौ
नंदन परम धर्म सुख वरस्यौ ॥२२॥ जनमैं राव देवदल तिन कुल
देवमाल मति पूरौ । राव अनङ्ग तासु कुल दीपक सकल धर्म
रति सूरौ ॥ सरनाध्वज ताकौ सुत कहिये भयौ भक्ति मति
भूरौ । नामराव तिनकें सुत जिन कुल रावध्वज गुन रूरौ ॥२३॥
ताके राव ललित लोचन तिनकें जु भाव मन दाता । जोमाधर
तिनकें जसवर्द्धन भक्ति महा रस ग्याता ॥ मदन मोहन ताकें
सुत ताकौ स्याम सनेही विख्याता । ता सुत जांनि नाम
पुरुषोत्तम राख्यौ समुझि विधाता ॥२४॥ ता सुत राव कुवेश
जासु सुत गो प्रिय सेवन जानौं । धन पति नंदन ताकें ता
सुत विदित धनंजय मानौं ॥ सुवन धनंजित इनकें तिनके
सुत धन पाल वषानौं । तिनकें प्रेम पंख तिन जातक साव सुवन
गुन गानौं ॥२५॥ प्रेम पोष तिन घरनीं जायौ उपमां वनति न
कोई । प्रेम पोष्टि तिन कुल जु महा मति सव गुन लाइक सोई ॥
प्रेमा लै जु पुत्र तिहि ताकैं रस्माकर सुत होई । राव विवेका-
वलि की रासी तिन सुत जानौं जोई ॥२६॥ तिनकें भये भक्ति
वल जिनकें सुत भगवत रति भाष्यौ । जानि सुभक्ति राव
तिनकें कुल प्रेम रसामृत चाष्यौ ॥ इनके राव तेज वल कहियैं
तेज मही में राख्यौ । तिनके पुत्र भये तेजाकर पर्म धर्म
अभिलाख्यौ ॥२७॥ तिन. सुत भये प्रकाश भुवन जु सकल
जंतु सुखदानीं । रूप भुवन तिन सुत सुभ लच्छन दाइक मान
अमानी भांन भुवन पर सिद्धि तासु कुल जाकी मधुरी वानीं

भांन सर्व सुख तिनके जिनकी प्रभुता मो मन मानी २८।
नांम भांन सब रस के भोगी भक्ति भांन तिन केरे। ता सुत राव भांन भक्तनि प्रिय हियें महत गुन हेरे॥ भये रति भांन तासु कुल मंडन तिनमें गुन जु घनेरे। सुवन सुभांन तासु कुल प्रगटे सब सुख दाइक तेरे॥२९॥ उदै भांन तिनके जु आतमज सुजस सकल ब्रज राजै। अरिष्ट भांन भये तिनके कुल नित नव मङ्गल साजै॥ कंज भान तिनके जु वंश धर गोपनि कुल सिरताजै। तिन कुल मही भांन सुकृत कौ सिंधु अधिक वढ़ि गाजै॥३०॥ तिन घर परम दया मनु मूरति सुखदा रानी देखौ। नौ नंदन तिन कूषि प्रगट भये महा भाग्य फल लेखौ॥ महाराज वृषभांन सवनि में महिमा महत विशेषौ। गोप वंश अवतंश निगम गथ लह्यौ कृपा की रेखौ॥३१॥ श्री कीरति कीरति जग पावन सब गुन निधि तिन घरनीं। जाकी महिमा सेश सारदा नारद शिव विधि वरनीं॥ श्रीदामा सुत गोप मुकट मणि जायौ धनि सुभ करनीं। श्री राधा श्रुति आगम दुर्ल्लभ धन्य भाग्य उर धरनीं॥३२॥ प्रथम निकास अवधि पुर वरन्यौं वहुरि मधुपुरी आये। द्वापर मध्य वसे वरसानैं सकल प्रजा मन भाये॥ गोधन पाल धर्म रति जिनके विरद मुनिसिनि गाये। तिन कुल प्रगट भये रावलि पति सुनि मो वचन सुहाये॥३३॥ रावलि वरहानौं वरसानौं तीन ठौर रजधानी। देस भयानैं के प्रतिपालक सदा भक्ति रति मानीं॥ सूरज वंश प्रसंस जानियै निर्मल चरित कहानी। मही भांन कुल विदित महा मणि दान मान सुख दानी॥३४॥ मङ्गल भयौ आजु ब्रज मंडल राधा जनम जु लियौ। भांति भांत

मुहि कियौ अजाचक इतनौं दांन जु दीयौ उतहि नंद वृष-भानु राइ इत कुल विधि उदित जु कीयौ । श्री हरिवंश प्रसाद विमल जस गाइ गाइ हौं जीयौ ॥३५॥ औरौ दत पायौ या घर तें सो समुझतु मन माहीं । कुँवरि देखि सीतल भयौ हिय जिय वरनत आवतु नाहीं ॥ श्री रूपलाल गुरु कृपा कलप तरु राख्यौ मुहि पद छाँहीं ॥ वृन्दावन हित अभय कियौ दै गौर स्यांम वल वाहीं ॥३६॥१६२॥

राग मारू—वंदि वृषभांन नृपति के चरन । अमल कनक दुति तन अति कमनीं तेज भूप मद हरन ॥१॥ खिरकिनु रचित पाग फवी सिर पर रतन पेच छबि जोती । भाल विशाल सुभग अति नासा श्रवन लसत दुति मोती ॥२॥ करुनां छके नैंन अति दीरघ चिवुक चारु वर ग्रींवा । उर पर रुरति सुढार जलज मणि माल किधौं छवि सींवा ॥३॥ नाभि गहर आजांनु वाहु वर पुष्टि थौंदि अति सोहै । तापर गहरी परति छवि लहरी दैउँ सु उपमां कोहै ॥४॥ धोती पीत हरित उपरैंना नख सिख वरषतु रूप । वड़े वड़े गोप सभा मिलि बैठे तिन मधि रावलि भूप ॥५॥ अगनित खिरक ग्वाल पुनि अगनित अगनित गुन जु प्रसंश । कृपा द्रवित हिय रहत निरंतर उतपति दिन मणि वंश ॥६॥ रावलि वरसानौं वरहानौं तीन ठौर रज-धानी । श्री हू की स्वामिनि भई जा उर कीरति जाकी रानीं ॥ ७॥ राधा जनक पौरि रज वंदन शिव ब्रह्मादिक जाचैं । प्रभुता कहा कहौं जु प्रेम वस हरि नटुवा ह्वै नाचैं ॥८॥ महिमां महत भांन कुल जाकी दासि लोक पति चाहैं । वृन्दावन हित रूप महा मुनि जोगी रहत उमाहैं ९ १६३

राग मारू कीरति रानी के पद वंदौं । धर्म सील सब गुन की आश्रय लै वलाइ आनंदौं ॥१॥ मानौं रस वात्सल्य धर्यौ वपु परम प्रेम की ओभा । रावलि पति के भवन निरंतर वरषति पद नख सोभा ॥२॥ करुना अवधि दया मनु मूरति दाता को सम वरनीं । भाग अवधि औसी कौ जैसी रावलि पति की घरनीं ॥३॥ लली लडावनि कौं यह मानौं नेह सदेह भयौ है । राधा रूप वेलि सींचन कैं कृपा जलद उनयौ है ॥४॥ आरज गोपिनु की चूडामणि सुजस प्रकासित जाकौ । अखिल कला की स्वामिनि राधा कियौ पांन पल ताकौ ॥५॥ अष्ट सिद्धि नव निधि जा पौरी सेवति है कमला सी ॥ शक्ति अनंत टहल अभिलाषा सुता चरन की दासी ॥६॥ वल्लव राज भवन कौ भूषन मुनि समाधि नहिं पाई । कोटि कोटि ब्रह्मंडनि पति गति ताकी जीवनि जाई ॥७॥ वार वार आनंदित जननीं रहति लाड में गहकी । कीरति की कीरति सब लोकनि वरसौंधे ज्यौं महकी ॥८॥ कै मंगल समूह की रासी भांन लली की मैया । कै सुकृत कौ उदधि प्रगट भयौ महा रतन दरसैया ॥९॥ जा पौरी देखनि की आसा लगे कमल दल नैंन । वृन्दावन हित रूप कृषि फल कियौ जग रस कौ अैंन ॥१०॥१६४॥

राग मारू—भांन कुल वेली सफल फली है । सोभा निकर सुवन श्रीदामा कीरति भाग वली है ॥१॥ सुरंग पाग सिर फवी लट पटी मणि मय कुंडल कांनन । गोल गरूर भौंह सुठि नासा ससि दुति निंदित आंनन ॥२॥ वारिज दल लोचन छवि वरषत लखि अति चिवुक लुनाई । ललित ग्रीव अति

सौभगताइ बाहु अजांन महाई ॥३॥ उर वर उदर रुचिर रोमा-वलि कटि केहरि छवि छीनीं । जंघ सुठौंन चरन कर मृदुता कमल कोश हरि लीनी ॥४॥ नख सिख भूषन वसन अंग अंग सोभा की मित नाहीं । गोप वृन्द बालक मधि नाइक चलत कृष्ण गरवाहीं ॥५॥ श्री राधा कौ अग्रज नृप सुत व्रज जन मोद वढ़ावै । परम प्रीति श्री नंद नँदन सौं महुवरि मधुर वजावैं ॥६॥ श्री वृषभांन लाड़ के भाजन श्रीदामा श्रीराधा । जिनके प्रेम सदा वरसानैं वरषत सुख जु अगाधा ॥७॥ कृष्ण और श्रीदामा दोऊ नंद भांन कुल ओप । अचित अलौकिक अंग मधुर छवि पीवत गोपीं गोप ॥८॥ नये नये कौतिक नित व्रज में नृप सुत अह वन करहीं । गोधन वृन्द कौंन सम पालक देवनि के मन हरहीं ॥९॥ जा घर रहत रूप रस उत्सव लली लली कौं भैया । वृन्दावन हित सेइ पौरि नित लै लखि भूर वलैया ॥१०॥१६५॥

राग परज मंगल छंद—कुँवरि जनम दिन री हेली आजु वधावनौं । दिन मणि कुल भयौ री हेली विरद सुहावनौं ॥ सुहावनौं अति विरद दिनमणि वंश ओप अधिक दई । पह-पियरी चुहुकीं चिरी तिहिं छिन लली जनमत भई ॥ जगि मगि उठ्यौ नृप गोप मंदिर आगमन रस रास कौ । जननीं परम अचिरज छकी लखि गौर तेज प्रकास कौ ॥१॥ भांन भवन भयौ री हेली मंगल निकर जुत । यह सुख होहि नहीं हेली जनमत कोटि सुत ॥ सुत कोटि वारौं लली पद नख परतु नहिं वानिक कह्यौ । जग हुतौ निरस जा विना अव रस प्रवाह उदधि वह्यौ ॥

दृग भांवती भुव लोक प्रगटी सुकृत कौंन विशेषियै। इहिं अवनि कौ सौभाग पद सुकुँवार गहनौं देखियें ॥२॥ सुख चिंता मणि री हेली रावलि पति लली। सुभ दिन दरसी री हेली कीरति उर थली ॥ उर थली सुख मणि लली दरसी अलभि लाभ सुपाइयौ। जिहिं सुदत कौ आनंद पूरित विश्व प्रेम घुमाइयौ ॥ अंकुरित नाना भाइ रस भये हरित जन रसिकनि हिये। उम्हिल्यौ महा रँग आजु कौतिक विपुल ब्रज घर घर किये ॥३॥ निरवधि मंगल री हेली सुमुख उदोत कौ। जिन वल गंज्यौ री हेली दुति धर गोत कौ ॥ वल गंजि दुति धर गोत सोत सुधा समूह जग्यौ अली। कहि क्यौं न उनमद करैं जन मन तासु उद्भव रंग रली॥ वृन्दावन हित रूप सींवा ललित कीरति नंदिनीं। बलि जाँऊ श्री हरिवंश लोचन विविधि विधि आनंदिनीं ॥४॥१६६॥

राग परज (मंगल छंद)—भाल जग मग्यौ री हेली कीरति कें सुजस। निगम दुरचौ हो री हेली सो कियौ प्रगट रस ॥ कियौ सो रस प्रगट कीरति वेलि मंगल मय भई। रस रूप की अति अवधि हरि अहिलाद की लागी जई ॥ अनुराग गोपी गोप विनुमित सुविधि नित तासौं पली। त्रैलोक थिरचर मुदित अब इहिं भांति जग दरसी लली ॥१॥ व्योंम मनोहर री हेली भांन भवन भयौ। सुख कौ अंवुद री हेली जहाँ तें ऊनयौ ॥ ऊनयौ अंवुद सरस सुख कौ वरषि ब्रज सीतल कियौ। चात्रक चतुर जसुमति सुवन कौ पालनैं हरष्यौ हियौ ॥ पिक मोर मागद सूत वंदी हुलसि विरदनि बोल हीं। नद नदी पूरित रसिक हिय भांमिनीं तडित कलोल हीं २ दृग भरि

देखौ री हेली कीरति उर धरी। कौंन बिधाता री हेली जिन रचि पचि करी॥ करी रचि पचि कौंन विधनां जाति नहीं उपमां दई। निरखि मुख छबि माधुरी अब भूँख लोचन की गई॥ सोभा निकर कै निगम गथ कै अखिल चेटक सार है। बृष-भांन कुल सुकृत अवधि कें होत नहिं निरधार है॥३॥ जाकें जनमत री हेली रही विधि नेम की। घर घर संपति री हेली सब ब्रज प्रेम की॥ प्रेम की संपदा ब्रज में ललित लीला गांन ते। महा नीरस तम मिट्यौ बृषभांन कीरति दांन ते॥ वृन्दावन हित रूप अब करि गोप कुल जु प्रसंश कौ। जहाँ भई रस मय महा मणि राधा सुधन (श्री) हरिवंश कौ॥४॥१६७॥

राग परज छंद—ढुरि ढुरि बरष्यौ री हेली रावलि रंग रस। लोकनि बाढ़ी री हेली सरिता भांन जस॥ जस भांन सरिता बढ़ी लोकनि सुता सुमुख उदै भई। सब लोक लोचन लाभ सजनीं कौंन विधि जिन निर्मई॥ को सुदत जननीं जनक पूरब वेलि सुख त्रिभुवन बढ़ी। चलि दै बधाई वेगि मंगल अवधि रँग रैंनी चढ़ी॥१॥ हुलसि परोंगी री हेली कीरति पग तली। गोद मोद भरि री हेली दुलराऊँ लली॥ दुलराइ हौं नित लली भांति भली अली रस रीति सौं। गाऊँ कुँवरि कौ सोहिलौ जननीं रिझाऊँ प्रीति सौं॥ ह्वै हौं चकोरी वदन विधु की डारि आसा आंन की। सुख लवधि पाऊँ नित नई वसि पौरि श्री बृषभांन की॥२॥ ये दिखि गोपी री हेली जूथनि वनि चलीं। अति छवि दैनी री हेली भई रावलि गलीं॥ छवि दैन रावलि गलिनु वाला गान मंगल उच्चरैं। गति मंद गवनति भीर रुकि दृग कुँवरि दरसन अरवरैं ससि अंक खेलति मीन मानौं

चपल अति मचले परैं। क चंद कें परिफंद खंजन उड़न आतुर तरफरैं ॥३॥ चाह नवेली री हेली लै मंदिर गई। त्रिभुवन गहनौं री हेली जहाँ कन्या भई ॥ कन्या भई कुल भांन मंडनि निरख सुख सागर भिर्जीं। दै दै वधाई भेट भरि भरि अंक सब कीरति मिलीं ॥ मुरि देति झूमिक अजिर भीजनि हियें विपुल सनेह की। श्रम स्वेद मंडित भाल भूषन खिसत नहिं सुधि देह की ॥४॥ जनम लडैती री हेली अति कौतिक भये। सुख के बिरवा री हेली ब्रज घर घर वये ॥ वये विरवा घोष घर घर रमां पुर हरुवौ कियौ। गरुवौ भयौ कुल गोप अब जस गाइ कैं त्रिभुवन जियौ ॥ वृन्दावन हित रूप अंवुद आजु रावलि ऊनयौ। जहाँ रसिक श्री हरिवंश हिय भरि सकल जग पूरित भयौ ॥५॥१६८॥

राग परज खमाइची (छंद)—जनम सोहिलौ री हेली भयौ ब्रज मोहनीं। उमहीं आवति री हेली जे ब्रज सोहनीं ॥ उमहीं जु आवति सोहनीं चेटक कछू रावलि नयौ। कोधौं मही मंगल जु गरुवौ प्रेम उर भीजत भयौ ॥ वर वृन्द नगर जु वगर डगरनि गहकि मंगल गावहीं। नर नारि कोधौं वापुरे अचिरज सुरनि उपजावहीं ॥१॥ रतन अलौकिक री हेली कीरति उर कढ्यौ। तिहिं देखन हित री हेली यह मंगल वढ्यौ। वढ्यौ मंगल व्यौंम भुव तल दिसनि कहा विसेषियै। वृषभांन कीरति सुकृत निधि उफन्यौं चलौ दृग देखियै ॥ नीसान पटहिं मुनीस आये गुनीं छाये पुर घने। उदौ दिन मणि वंश कौ सारदा पै कहत न वनैं ॥२॥ दैंन वधाई री हेली कीरति ग्रह गईं। लली वदन लखि री हेली ते चकृत भईं भईं चकृत वदन लखि

करी प्रेम तन मन घावरी रही अंचल ओटि विधि तन सानंद छवि मनु वावरीं ॥ सुंदर सदन कीरति विराजति तहाँ रस मय जोति है। परखति लली मृदु अंग दाई परम विस्मय होति है ॥३॥ ओप अपूरव री हेली रावलि पुर दई। हरि अहिला-दिनि री हेली सुदिन प्रगट भई ॥ भई सुदिन प्रकास श्री राधा सुमूल सुहाग कौं। कहा लघु मति कहौं ब्रज सागर वढ्यौ अनु-राग कौ ॥ दांन अरु सनमांन विनुमित जनम सर्वेश्वरि लियौ। थिरचर सबै आनंद पूरित रमां ब्रज उद्‌भव कियौ ॥४॥ गयौ वधौवा री हेली गोकुल पति भवन। नंद जसोदा री हेली सुनि कियौ गवन ॥ कियौ गवन व्रजेश रानीं गोद सौभग मणि धरैं। आविर्भाव लली महा मणि सुनि परम कौतिक करैं ॥ वृन्दावन हित रूप मंगल घोष जन सिमटे जहाँ। सुधन श्री हरिवंश कीरति महरि दुलरावति तहाँ ॥५॥१९६॥

राग परज खंमाइची (छंद)—रंग वढ्यौ री हेली रावलि नगर में। छेह मिलतु नहिं री हेली वनितनि डगर में ॥ छेह मिलतु न डगर वनितनि गांन धुनि मङ्गल महा। कीरति सुकृति की वेलि रस मय फल लग्यौ वरनौं कहा ॥ त्रैलोक इहिं कौतिक चकृत पुनि थकित देव विमांन हैं। कोधौं अपूरव यह जु मङ्गल भयौ ग्रह वृषभांन हैं ॥१॥ सव हिय देखौ री हेली हुलसनि प्रेम की। सुधि विसराई री हेली नित कृत नेंम की ॥ नेंम की विसरी जु सुधि जव धाव निसांननि परे। कीरति महल सोभा उदित हग सवनि देखन अरवरे ॥ काहू न भवन सुहात रहिवौ एक संग गवनैं सवै। सुख कें गहर नर नारि क्रीडत प्रगटी सर्वेश्वरि जवै २ मंगल वर्द्धनि री हेली कीरति उर धरी

हरि अहिलादनि री हेली भुव तल औतरी औतरी व्रज की महा मणि जसुमति मनोरथ साधिका। चंद सत वदनीं सखिनु मंडल सु भूषन राधिका ॥ वृषभानु ओप्यौ वंश रावलि आजु जग मग होति है। जननीं विराजति अंक कन्या रूप निरवधि जोति है ॥३॥ कूषि सुलच्छन री हेली जहाँ उतपति भई। हग अचिरज सौ री हेली किहिं विधि निर्मई ॥ निर्मई किहिं विधि अवनि सुर पुर नाग लोक न सूझ ही। कौंन ऐसौ सुमति जाकों जाइ निरनौं बूझ ही ॥ सबकों विलोयौ प्रेम उर सबकें वढ़ी हग चटपटी। मङ्गल अभूत रच्यौ दई घर गोप तरनि सुता तटी ॥४॥ लाल सभागो री हेली सुनि पलनां मुदित। वपु गौरंगी री हेली तेज निकर उदित ॥ निकर तेज उदोत रस सिंगार बीज सुहाग कौ। रसिक अलि आनंद हैं लखि रूप खिलनि सुवाग कौ ॥ वृन्दावन हित रूप श्री हरिवंश गथ रासेश्वरी। गोप कुल सौभाग संपति दरसी जो निगमनि दुरी ॥५॥१७०॥

राग परज—रूप रस उझिल्यौ कीरति कूषि। घर घर श्रवन सुनत सब फूले चाख्यौ प्रेम पयूष ॥ सुखित रसिक हिय सरवर पूरे नीरस डार जवासे सूख। वृन्दावन हित हग हरियारी भई गई सब भूख ॥१७१॥

राग व्रजवासिनीनु की टेर—सुनियौं हो पिय रावलि हो पिय रावलि भूप अरुन उदै वरिया भई। मंदिर हो पिय पूरित हो पिय पूरित रूप सुता सुलच्छन विधि दई ॥१॥ कोटिक हो द्युति विद्युत गात यह अचिरज मो मन हरै। सोभा हो नहिं सदन अहो नहिं सदन समात जग मग ग्रह अँगना करै २ आंनन

हो पिय जोति अहो पिय जोति अपार को मयंक सम दीजियै। देखौ हो पिय प्रांन अहो पिय प्रांन अधार जनम लाभ फल लीजियै ॥३॥ बोलौ हो पिय सुखदा हो पिय सुखदा माइ चरुआ आंनि चढावई । वेटी हो भांनमती हो भांनमती बुलाइ सथिया द्वार धरावई ॥४॥ विप्रनि हो मिलि लगन अहो ग्रह लगन विचार गरग गऊतम बोलि कैं । रतननि हो पिय भरे हैं अहो पिय भरे हैं भंडार दांन देहु वहु खोलि कैं ॥५॥ समदौ हो पिय वंश अहो पिय वंश सवासि जिन प्रसाद यह फल फली । पुजवौ हो पिय तिनकी अहो पिय तिनकी आसि जे मंगल सजैं विधि भली ॥६॥ दाई हो अभिलाष अहो अभिलाष पुजाइ देत न लावौ वार तौ । ननद वहो भांनमती अहो भांनमती आइ वारि लली पर आरतौ ॥७॥ यह सुनि हो रावलि कौ अहो रावलि कौ ईश विपुल प्रेम पूरित भयौ । वंदत हो गौतम पद हो गौतम पद सीस प्रभु मो मन वांछित दयौ ॥८॥ छाये हो वहु व्यौंम अहो वहु व्यौंम विमान इत व्रज मंगल रमि रह्यौ । दीनौं हो रावलि पति हो रावलि पति दांन विधि हू पै परत न कह्यौ ॥९॥ धनि धनि हो रानी कीरति हो रानीं कीरति कृषि रस चिंतामणि ऊपजी । भाजी हो तिन मन की अहो तिन मन की भूँख मुक्ति आदि दै जिन तजी ॥१०॥ कन्या हो इहिं चरित अहो इहिं चरित अनंत कहौं कहौं लगि नित नये । देखौ हो इहिं जनक अहो इहिं जनक सुदृष्टि त्रिभुवन जन्न जाचक भये ॥११॥ जिन हित हो हरि नंद अहो हरि नंद निकेत सिसु सरूप ह्वै अवतरे । वृन्दावन हो हित लीला हो लीला रस खेत उभय चरित वहु विस्तरे १७२

टेर (सिपाहिरा को तरह मे) कीरति रानी हो कौतिक तेरैं धांम कौतिक तेरैं धांम, अहो रानी त्रिपित भये दृग सवनि के हो। जनम सफल भयौ हो, वसि इहि रावलि ग्रांम वसि इहिं रावलि ग्रांम, अहो रानी भाग्य उदित व्रज अवनि के हो ॥१॥ तो घर आनंद हो वरनौं किहिं सम तूल वरनौं किहि सम तूल, अहो रानी त्राइनु मदिलरा वाजही हो। सुदिन सुभ घरी हो विधनां अति अनुकूल, अहो रानी वरनत विप्र समाज ही हो ॥२॥ तो कुल मणि भई हो सत्य वचन मो मांनि, अहो रानी व्रज घर घर संपति नई हो। तो सम को जग हो हिय जिय निश्चैं जांनि, अहो रानी सुकृत अवधि लागी जई हो ॥३॥ कृषि सुधा निधि हो प्रगट्यौ कौतिक चंद, अहो रानी रस जु अपूरव वरषनौं हो। विपुल मनोरथ हो फल्यौ है जसोमति नंद, अहो रानीं तुम चित छिन छिन हरषनौं हो ॥४॥ यह अनहौंतौ हो मंगल अवनि उदोत, अहो रानीं विश्व महा मणि औतरी हो। प्रेम प्रवल अति हो दिन दिन अधिकौ होत, अहो रानीं कौंन महत करनी करी हो ॥५॥ सुख कौं सिरजी हो विधनां तू जग मांहि, अहो रानीं व्रज सुख सिंधु वढावनीं हो। भागवली अति हो जाकौं उपमां नाहिं, अहो रानीं सोभा ससि दरसावनीं हो ॥६॥ जहाँ तहाँ आनंद हो घर घर औरै और, अहो रानीं देवनि मन संभ्रम दीयौ हो। विचरति कमला हो देखौ ठौरैं ठौर, अहो रानी हम चीत्यौ प्रभु नैं कियौ हो ॥७॥ लोचन थाती हो व्रज कन्यानि समाज, अहो रानी सोभा निधि तुम उर धरी हो। विपुल मनोरथ हो सफल भये सव आज, अहो रानीं सुता सुलच्छन लखि परी हो ८ याकें प्रगटित

हो मुदित सवासिनि होति, अहो रानी मन वांछित सब पाइ हैं हो। भुव नभ दिस दिस हो ह्वै रही जग मग जोति, अहो रानी दई दयाल मनाइ हैं हो ॥६॥ गौर वदन पर हो उपमां वारौं कोटि, अहो रानी मृदु पद लोकनि संपदा हो। नख सिख निरषत हो वांधी सुख की पोट, अहो रानी ब्रज जीवनि जीवौ सदा हो ॥१०॥ उत ब्रज पति घर हो इत वृषभांन निकेत, अहो रानी नित नित उठि मंगल वढौ हो। त्यौंही इत उत हो सब हिय वाढौ हेत, अहो रानी जस कलशा सब सिर चढौ हो ॥११॥ जसुमति आई हो गोपिनु वृन्द बनाइ, अहो रानी ना ना मंगल साज लै हो। प्रमुदित तन मन हो यह सुख कह्यौ न जाइ, अहो रानी मंदिर लीजै मान दै हो ॥१२॥ सादर भेंटी हो वैठीं अजिर मझार, अहो रानी राधा वदन निहारहीं हो। लियें सुत गोदी हो पुनि पुनि करति विचार, अहो रानी विधि तन गोद पसारहीं हो ॥१३॥ वहु धन खरचति हो विपुल मनोरथ हीय, अहो रानी रावलि गह मह ह्वै रही हो। कीरति समुझीं हो जो जसुमति कैं जीय, अहो रानी बात रस भरी कछु कही हो ॥१४॥ दुगुनौं मंगल हो मान्यौं जननीं स्यांम, अहो रानी कीरति कृषि मल्हावहीं हो। हौं वलि कीनीं हो रस मय राधा नाम, अहो रानी निरखि करज चटकावहीं हो ॥१५॥ वंश प्रसंशत हो मागद चारन सूत, अहो रानी वंदी विरदनि गावहीं हो। अस दत काहू हो दियौ न जायैं पूत, अहो रानी ज्यौं धन भांन लुटावहीं हो ॥१६॥ त्रिनुमित महिमां हो उमगी वंश अहीर, अहो रानी सगुनी सगुन विचारहीं हो। पौरि रावरी हो भई अति मुनि जन भीर, अहो रानी आसिष वचन

उचारहीं हो ॥१७॥ बजति दुंदुभी हो हरषित नभ कौ ईश, अहो रानी निर्त्तति बधू विमान में हो। बरषत कुशमनि हो रीभि नवावति सीस, अहो रानी छकीं सोहिले गांन में हो।१८। सुभर भरी प्रभु हो कीरति जसुमति गोद, अहो रानी दुर्ल्लभ वांछित फल लहे हो। जिन करि राख्यौ हो ब्रज में घर घर मोद, अहो रानी सत्य वचन इत उत रहे हो॥१६॥ रूप उपजनी हो कूषि दुहूं परिवार, अहो रानी किहिं मुख करौं प्रसंश कौ हो। गौर स्याम मिलि हो जोरी प्रान अधार, अहो रानी जस जीवनि हरिवंश कौ हो ॥२०॥ मुहि रुचि दीजै हो सुता चरन निजु दासि, अहो रानी मन अभिलाष पुजाइयै हो। यह हित रूपी हो संपति कुल जु प्रकासि, अहो हित वृन्दावन जस गाइयै हो ॥२१॥१७३॥

राग देव गंधार (असीस)—जियौ चिरु कुल मंडन वृषभांन। अति मन मुदित लली की मैया सुनत असीसनि कांन ॥१॥ परम पवित्र सुजस सूरज कुल वंदी करत वखांन। जिहिं जनमत सब लोक अघानैं जनक दियौ वहु दांन ॥२॥ मन अभिराम धाम आनंद कौ सुकृत उदौ भयौ आनि। सफल मनोरथ नंद जसोदा सबहि परयौ जग जानि ॥३॥ वल्लव राज भवन कौ भूषन नाहिन और समान। वृन्दावन हित रूप जाँऊ वलि मुहि भावत गुन गांन ॥४॥१७४॥

राग देव गंधार (असीस)—असीसैं देति सकल ब्रज नारि। रावलि पति कुल भूषन कन्या चिरुजिवौ प्रांन अधारि ॥१॥ अबहीं गोप सभा सुनि आई पंडित करत विचार। अखिल लोक मणि सुता तिहारी लोकनि जस विस्तार।२। शिव सनकादि

चरन रज वंदैं देव औरु मुख चारि । वृन्दावन हित रूप ललित मुख लली सकल श्रुति सार ॥३॥१७५॥

राग ललित [ताल मूल]—लली की लागौं मोहि बलैया । चिरुजिवौ कुल मंडनि राधा अरु श्रीदामा भैया ॥ सुबस बसौ रावलि बरसानौं तात जु घोष पलैया । वृन्दावन हित रूप लडावौ दिन दिन कीरति मैया ॥१७६॥

राग ललित—रानी जू यह मन दै लेहु असीस । तुम जस वर्द्धन होहु अति लडी कहति वधू दस वीस ॥ वारौं सुतनि समूह कौन करै या कन्या की रीस । कनक तनी श्रीदामा अनुजा जीवौ कोटि वरीस ॥ विधि तन अंचल ओटति सादर सब हि नवावति सीस । वृन्दावन हित रूप आगरी कुल मणि रावलि ईश ॥१७७॥

राग जैतश्री—देति असीस सवासिनि हित सौं राधा जू जुग जुग जीयौ जू । प्रभु अब ऊचौ बोल सजन सौं राखि सिरायौ हियौ जू ॥ निवड अमी आनंद गरुवे कौ सार मथन करि लीयौ जू । ताकौ मुख मयंक यह रचि पचि चतुर और विधि कीयौ जू ॥२॥ कौतिक रूप दृगनि भरि सादर ब्रज कन्या सब पीयौ जू । वृन्दावन हित रूप जाऊँ बलि मोहू यह व्रत दीयौ जू ॥३॥१७८॥

राग सोरठ [असीस]—लली चिरुजीवनी तेरी । अब इहिं ब्रज सुख सिंधु बहैगौ सुनि असीस मेरी ॥ हौंहू मचलि परौं या पौरी मुख देखौं रहि नेरी । वृन्दावन हित रूप भाग्य फल दई दयौ एरी ॥१७९॥

देखि दृगनि भरि पलकनि गति भूलौ वृन्दावन हित रूप हिडोरैं आनंद नित झूलौ २ १८०

राग सोरठ ताल आड—रावलि श्री राधा औतरी आजु परे हैं निसांननि घाइ हो । पीरी पह फूलनि यह आनंद वरषत सहज सुभाइ हो ॥ हरषित मही महा मंगल कौ उद्भव वरन्यौं न जाइ हो । खेलति रमां रूप धरि नाना व्रज वीथिनु सचु पाइ हो ॥ सुनहु सोहिले श्रवन दै वनिता उठीं मधुरें गाइ हो । वृन्दावन हित रूप जोति मुख निरखौ दृगनि अघाइ हो ॥१८१॥

राग सोरठ—व्रज वाजी है गहकि वधाई । रावलि रँग वढ्यौ है महाई ॥१॥ मंदिर अति जोति जगी है । लखि जडता विश्व भगी है ॥२॥ जनमीं श्री राधा जवहीं । वाजे धातुनि भाजन तवहीं ॥३॥ मंगल दरसतु सव ठौरै । अवनी सोभा भई औरै ॥४॥ प्रगटी छवि अवधि लली है । धनि कीरति भाग वली है ॥५॥ मुनि देव अचिरज उपजायौ । ऐसौ अलभि लाभ रानीं पायौ ॥६॥ जा छिन जु अवतरी राधा । निरस तम मिट गई वाधा ॥७॥ हौंसति जु कुँवरि की मैया । मन ही मन लेति वलैया ॥८॥ अति कौतुक सौ कछु देखै । अपु महिमा भाग विशेषै ॥९॥ मेरी पूरव कोधौं कमाई । वरन्यौं न सहस मुख जाई ॥१०॥ दुति धरनि भयौ वल फीकौ । यह सरस्यौ तेज अमीं कौ ॥११॥ अंकुरित प्रेम उर गोभा । पुर वीथिनु वरषति सोभा ॥१२॥ सव आवति दैंन वधाई । अनु-राग न वरन्यौं जाई १३ अति भीर भांन के अँगना

नर देव मुनि भये मगनां ॥१४॥ गिरि द्रुम दिस अवनीं हरषै। मघवा हू कुशमनि वरषै ॥१५॥ उखटे द्रुम हरित भये हैं। गाइनु थन दूध अये हैं ॥१६॥ कछु रूप वदलि गयौ पुर कौ। दुख भाज गयौ सब उर कौ ॥१७॥ मंगल गावत व्रज रमनीं। धनि वासर लागति कमनीं ॥१८॥ वृषभांन वंश जस माला। आजु विधनां रची है रसाला ॥१९॥ कीरति जु लोक मधि धन्या। हित रूप अवधि जनीं कन्या ॥२०॥ श्री राधा दासि लिखि पावै। वृन्दावन हित जस गावै ॥२१॥१८२॥

राग सोरठ—अरी हेली विरवा रस अरु रूप कौ रावलि भयौ उदोत। जाकैं आगम देखियै हेली व्रज धरु जग मग होत॥ हेली०॥१॥ यह कुल गोप महा मणि हेली मन उत्साह जु देत। औरै ओप लागति नई हेली श्री वृषभांन निकेत ॥हेली०॥२॥ कीरति जू दुलरावहीं हेली धरैं आपनैं अंक। प्राची दिसि सोभित करी हेली कौतिक उदित मयंक ॥हेली०॥३॥ अस गरुवौ जु वधावनौं हेली देख्यौ सुन्यौं न कांन। सुता भयें इहिं लोक में हेली किन अस रच्यौ विधांन ॥हेली०॥४॥ चक्रत देव मुनीस नर हेली मंगल अचिरज रूप। सबकें वदन प्रगट भयौ हेली अस जस रावलि भूप ॥हेली०॥५॥ द्वै अच्छर के नाम में हेली भरयौ अतुल आनंद। रसिकनि रसना पर लस्यौ हेली प्रांन सुधन नँद नंद ॥हेली०॥६॥ सुख देखन वृषभांन पुर हेली आवति है सब शृष्टि। नाचैं गावैं भींजहीं हेली होइ अनुराग सु वृष्टि ॥हेली०॥७॥ अहा कहा भई मोहनीं हेली रावलि पति कें धांम। वंदत हैं ब्रह्मादि शिव हेली ऐसौ धरयौ मुनि नांम ॥हेली०॥८॥ गोकुल मंगल प्रथमहीं हेली भयौ सकल सुख मूल

यह मंगल ऐसौ भयौ हेली उपमां नहिं सम तूल हेली० ६।
गैरत सागर प्रेम कै हेली आजु घोष नर नारि। महिमा इनके भाग की हेली विधि हू न सक्यौ विचारि ॥हेली०॥१०॥ नंद भांन कुल के चरित हेली रसनां करन प्रसंश। वृन्दावन हित रूप वलि हेली कोविद श्री हरिवंश ॥हेली०॥११॥१८३॥

राग केदारौ ताल मूल—कीरति अति लडि जीयौ जागौ। मैया दिन दुलरावौ चाइनु डीठि न कवहूं लागौ ॥१॥ याके जनम वढौ नित मंगल सकल अमंगल ब्रज तें भागौ। वृन्दावन हित रूप होहु याकौ अग्रज तात सभागो ॥२॥१८४॥

राग मालकोश ताल सूरफाकता—रावलि प्रगटी सोभा हद है। जाकौ जनम सोहिलौ सुनि कैं फीकौ लागतु ब्रह्म जु पद है॥ कृष्ण हृदौ अहलादनि स्यामा जिन जग कीनी उपमां रद है। आविर्भाव प्रेम धुरि वरषत वृन्दावन हित रूप जलद है ॥१८५॥

यथा—रावलि आज महा मङ्गल है। तेज निकर आनंद रस मूरति हरि हित प्रगटी सो भुव तल है॥ श्री वृषभांन लोक जस करनी कीरति कीनी कृषि सफल है। वृन्दावन हित रूप सिंधु की श्री राधा छवि सींवा भल है ॥१८६॥

यथा—कीरति सम वड़ भागिनि को है। सोभा निकर लली जिन जाई सुदिन सोहिलौ मुनि मन मोहै। पय प्यावति दुलरावति चाइनु गौर तेज जाकी गोदी सोहै। वृन्दावन हित रूप अवधि फल पायौ निगम दुरयौ धन जो है ॥१८७॥

यथा—कीरति मन्दिर वजति मंदिरला। भयौ उत्साह जनम श्री राधा यातें उतपति करत वहु कला॥ आनंद भरयौ देत सुधि गाजत और ठौर ब्रज रमति चंचला। वृन्दावन हित

रूप अति लडी आगम प्रेम भयौ तेरे सबला १८८

राग केदारौ ताल रूपक—आजु निसान री सुनि वाजै कीरति जू कें ग्रेहरा। जनमीं राधा छवि जु अगाधा वरषतु है सुख मेहरा॥ आवति हैं वनितनि दल उमड़े वाट मिलतु नहिं छेहरा। घर रहिवौ भावतु नहिं काहू अतिसै वढयौ सनेहरा॥ उत प्रगटे कान्हर इत कन्या नसि गये सब संदेहरा। वृन्दावन हित रूप अवधि भई धन्य कृषि फल एहरा॥१८९॥

यथा—तू चलि वेगि री गुनवंती कीरति महल वधावनौं। आविर्भाव श्री मती कन्या रचि रुचि मङ्गल गावनौं॥ मांगति ही विधनां पै रानीं मेरौ बोल जिवावनौं। उझिल्यौ भाग्य देखि ताही विधि आजु भयौ मन भावनौं॥ दरसति है औरें ब्रज ओभा लली भली दुलरावनौं। सब हिय भये आनंद के विरवा छिन छिन सुख सरसावनौं॥ दिन दिन होहु सोहिलौ इहिं घर हरषि असीस सुहावनौं। वृन्दावन हित रूप उदौ लखि वारिध प्रेम वढावनौं॥१९०॥

यथा—कीरति भाग की धनि पूरी ताकौं उपमा जगत कहा। जिन जाई गुन रूप मुकट मणि नैंननि कौ फल निरषौ अहा॥ मङ्गल निकर पौरि आजु सेवत सुर नर मुनि भये मुहुँ जु चहा। वृन्दावन हित रूप वलि गई पूरव दत कोऊ फल्यौ री महा॥१९१॥

यथा—बहुत दिननि तें वांछित यह दिन आजु ही विधि कीयौ। गौर तेज कमनीय मधुर अति निरषि सिरानौं हीयौ॥ सगुन सोहिलौ किधौं ब्रजरानी जब कीरिति सुख दीयौ। वृन्दावन हित रूप उलडि पर्‍यौ धापि धापि दृग पियौ १९२

राग सारग माल कोश—ससि सत वदनी प्रगट भई है। सुकृत वेलि सभागिनि कीरति तहाँ यह लागी रूप जई है॥ जग मग होत जनक घर अँगनां ब्रज में औरै ओप नई है। वृन्दावन हित रूप अहा कहा आजु दाहिनौं भयौ दई है॥१६३॥

यथा—प्रगटी राधा मूरति मोहनीं। आनंद कौ आनंदनि जो है को है ऐसी लोक सोहनीं॥ उत गोकुल इत रावलि महिया विधनां सुख की करी है वोहनी। वृन्दावन हित रूप अंकुरय था गुन रतननि माल पोहनीं॥१६४॥

राग माल कोश—माई रावलि पति ग्रेह गगन दरस्यौ कौतिक चंद री। छवि किरिनि कीरति कूषि प्राची कियौ अमल प्रकास धनि यह जाई आनंद कंद री॥ ललित सर ब्रज मांहि प्रफुलित कुमुदिनीं चहुँ ओर श्री ललितादि सखि जन वृन्द री। वृन्दावन हित रूप चारु चकोर वे घन स्याम सागर हुलसे जसुमति नंद री॥१६५॥

राग माल कोश--माई वहुरयौ ब्रज वाजी वधाई आनंद निधि कुँवरि जाई श्री वृषभांन निकेत री। सब नर नारि मुदित निहारि कहैं यह गौर तेज अनूप प्रगटी स्याम सुंदर हेत री॥ शक्ति सकल निवास जाँचति चरन राधा कुँवरि गावत निगम नेति नेति री। वृन्दावन हित गोप रानीं रूप अचिरज देखि पुनि पुनि वारि सर्वसु देत री॥१६६॥

राग मालकोश सूरफाकता (नौबत)—श्री राधा की जनम वधाई, नौवति वजति भांन घर माई। गिडि गिडि गिडि गिडि झैंगडि झैंगडि धूँ धूँ धूँ धूँ धमकि सुहाई॥१॥ मदन भेरि रणसिंधा तुरही मीठी धुनि वाजत सहनाई। गावत रचि रचि तान सोहिले

झांझि झनक बढ्यो रंग महाई ॥२॥ रावलि पति सुनि सुनि हुलसति मन देत दांन संपति अधिकाई। वृन्दावन हित रूप लली मुख निरखत प्रेम भक्ति सरसाई ॥३॥१९७॥

राग बिहागरौ चौतालौ—भये री मेरे नैंन कौतिकी मंगल अवधि देख्यौ कीरति जू के धांम। रीझि बिकाइ रह्यौ मन इहिं घर चलै न चलायौ निरखि वदन अभिराम॥ यह सुभ सगुन परिच्छा लीनीं ब्रज सुख वर्द्धन स्यामां स्याम। वृन्दावन हित रूप अखिल आनंद कौ कारन हौं बलि राधा नाम ॥१९८॥

यथा—अरी रावलि पति मंदिर वरषत सोभा सिखिर धुजा फरहरति। अति लड़ि जनम सोहिले मानौं पुनि पुनि मुरि मुरि निर्त्तनि पुनि गति करति॥ आंनक धुनि ब्रज वधुनि बुलावति फिरति विपुल उर आनंद भरति। वृन्दावन हित रूप भांन कुल कौ जस वर्द्धनि जग नीरस तम हरति ॥१९९॥

यथा—जनम गौरंगी घंमड्यौ प्रेम कौ अंबुद वरषत कीरति अँगनां। भींजत हैं ब्रज जन सब तन मन छकि रहे कौतिक धाइ धाइ उर लगनां॥ लगन विचारत छके हैं मुनीं जन मंगल देखि देव छके गगनां। वृन्दावन हित रूप निहारत आनंद उदधि बाढ़्यौ तामें होत नारी नर मगनां ॥२००॥

यथा—आजु रावलि सुख ओपीं नीकौ लगै वासर दई दाहिनौ एरी। भांनवंश मंगल जु अपूरव प्रगटी महा मणि कहा कहौं अकह पहेरी॥ कीरति कूषि वारनैं हौं सजनी कन्या जनीं ऐसी लोकनि न हेरी। वृन्दावन हित रूप वदन विधु वदी है मयूषें नीरस मिटी है अंधेरी २०१

राग सोरठ रानी कीरति कन्या जाई रे। वह देखौ वृषभांन भवन पैं लाल धुजा फहराई रे ॥१॥ परवत घुरत निसान गह गहे आतुर गति सहनाई रे। यह बरसानौं सुख सरसानौं बाढ्यौ रंग महाई रे ॥२॥ मोहि सगुन दिन उगन भयौ सबकें सिर दूब धराई रे। बड़े भूप वृषभांन भवन में बाजति आज बधाई रे ॥३॥ ललित लली लखि मैं यह जानीं सुकृती कुँवर कन्हाई रे। ताकें हेत आंनि विधि काहूं अचिरज रूप बनाई रे ॥४॥ जसुमति नंद भाग की महिमा जाइ कौंन मुख गाई रे। दई दाहिनौं जिनहि सबै विधि दिन दिन बिरधि सवाई रे ॥५॥ पूरव पुन्य उफनि उठ्यौ वारिध मरजादा बिसराई रे। पैरति सुमाते सकल सुर नर मुनि थाह न काहू पाई रे ॥६॥ कीरति कूषि कलप तरु हरि हित भई विविधि वर दाई रे। विस्मित होत देखि नर नारी कौतिक सफल निकाई रे ॥७॥ जाकें जनम प्रेम अंबुद झर उर धरि अधिक सिराई रे। वृन्दावन हित रूप स्वामिनीं दुहूँ कुल ओप बढाई रे ॥८॥२०२॥

राग सोरठ ताल आड़—अरी हेली रावलि पति घर सौहिलौ कुँवरि जनम दिन आज। उठि कैं नव सत साजि तन हेली लैकर मंगल साज ॥हेली०॥१॥ कन्या अति लौंनीं जनीं हेली हौं अब आई देखि। चेटक रूप दृगनि गड्यौ हेली हिय भई चाह विशेखि ॥२॥ आविर्भाव लली ललित हेली जै धुनि होति अकास। धरैं महीरुह फूल फल हेली भुव नभ दिसनि प्रकास ॥३॥ घोष सिंधु मरजाद तजि हेली उमड़ि चल्यौ सुख भूर। घर घर पुर पुर नारि नर हेली सब भये प्रेम गरूर ॥४॥ जनक वदन फूलनि विपुल हेली जननीं मोद अथाह जाके

पूरव सुदत फल हेली लोकनि बढ़्यौ है उछाह ॥५॥ मोहि सुभ सगुन पहिले भये हेली गर्भ धरी जब माइ। नित उठि ब्रज मंगल बढ़ैं हेली अब सब परत लखाइ ॥६॥ वरसानैं वृषभांन कैं हेली आजु सतगुनी ओप। महिमा कमला कंत पुर हेली जा आगैं भई लोप ॥७॥ जुरी सकल ब्रज नागरि हेली गहकि वधाई देति। गांन गुननि रचनां करैं हेली श्री वृषभांन निकेत ॥८॥ निकर कला धर उदित मुख हेली प्रगटी कीरति कूषि। ब्रज जन चारु चकोर दृग हेली झिलि सुख श्रवित पयूष ॥९॥ कीरति सुता विलोकि मुख हेली सब भूलीं घर जान। प्रवल प्रेम तन मन छकीं हेली सर्वसु दीजत दांन ॥१०॥ निधि सिधि मंगल राग गुन हेली सब रितु सहित वसंत। आजु पौरि वृष-भानु की हेली ठाढ़े मूरति वंत ॥११॥ वृन्दावन हित रूप जस हेली मुनि जन करत प्रसंश। रस पद्धति भई प्रचुर जग हेली सर्वसु श्री हरिवंश ॥१२॥२०३॥

ह्वै रही रावलि रंग मई री। आनंद वेलि महरि श्री कीरति लागी रूप जई री॥ श्री वृषभांन प्रेम अंबुद झरि बहु विधि पोष दई री। लह लहाति छिन छिन प्रति सोभा बाढ़ति ओप नई री॥ दृग पुतरी करि वारि सकल ब्रज दृष्टि ताप नहीं परस भई री। वृन्दावन हित जाहि निरखि सब लोचन भूख गई री ॥२०५॥

आजु ब्रज दीनीं ओप बड़ी। कीरति भाग्य उदधि सोभा ससि प्रगटी प्रान लड़ी॥ जाकें प्रथम प्रकास गोप कुल महिमां निधि उमड़ी। वृन्दावन हित रूप लली छवि हिय दृग गहकि गड़ी ॥२०५॥

राग सोरठ—आजु माई धनि यह सुभग घरी । कीरति महल सोहिलौ सुभ दिन लागी रंग झरी ॥ कृषि कलप तरु लग्यौ महा फल सब मन सूल हरी । दरसि परी सुख अवधि ललित मुख राधा गुननि भरी ॥ मंगल उदित भये ब्रज घर घर कुँवरि सुढार ढरी । वृन्दावन हित रूप महा मणि कीरति अंक धरी ॥२०६॥

राग सोरठ—आजु ब्रज रावलि ओप दई । जामें रूप कलप तरु दरसी मंगल मोद मई ॥ वांछित जहाँ सकल जन पावत मन की भूख गई । नैंननि कौ गहनौं कीरति जा हरि हित प्रगट भई ॥ खेलत रमा घोष वीथिनु में रचनां नई नई । वृन्दावन हित रूप प्रेम की सब जग वेलि वई ॥२०७॥

राग सूहौ विलावल [वरष गांठि]—वरस गांठि दिन री हेली लाड़ गहेल री । मंगल गावैं री हेली सकल सहेल री । मज्जन सुविधिनु री हेली प्रथम करावही । सौरभ जल सौं री हेली हरखि न्हवावही ॥ न्हवावही जल हरषि सुंदरि पीत अंबर तन धरे । सिंगारि नव सत निपुन सजनीं चौक वहु चित्रित करे ॥ अति भरीं सुख उत्साह डोलत सखी नेह नवेल री । वरस गांठि दिन री हेली लाड़ गहेल री ॥१॥ रंग विताननि री हेली अति सोभा वनी । मुक्तनि झालरि री हेली दुति फैली घनीं । वंदन माला री हेली कुशमनि की लसैं । मंगल दिन आजु री हेली मनहुँ भवन हँसैं ॥ हसैं भवन सुदेश पंकति दीप मणि मय जग मगे । सौरभ मही तल सींचि लपटैं उठति वर कदली लगे ॥ कुशमादि चौकी रचति आसन धरी वैठे धन धनीं । रंग विताननि री हेली अति सोभा वनी ॥२॥ सुभग भाल पर

री हेली कुँवरि तिलक कियौ। रोरी अच्छित री हेली कर ललिता लियौ ॥ मंगल भेटनि री हेली दै आनंद झिलीं। देति वधाई री हेली सब ललितै मिलीं ॥ मिलीं ललितै धाइ असन कराइ प्रानिनि भाँवती। आरतौ मुदित उतारि निर्चाति प्रेम पुलकित गावती ॥ बीरी वसन मणि माल मोहन हरषि सबहिनु कौ दियौ। सुभग भाल पर री हेली कुँवरि तिलक कियौ ॥३॥ वन तरु वेलीं री हेली इहि मंगल रले। वरषत फूलनि री हेली लागत अति भले ॥ खग जस गावत री हेली जहाँ तहाँ वन गली। उमगी रविजा री हेली हरषित भुव थली ॥ हरषित थली भुव आजु रविजा उमगि अति लहरिनु वढी। वलि जाऊँ श्री हित रूप मंगल अवधि रंग रैंनी चढी ॥ वृन्दावन हित रसिक राधा वरस गांठि सुरस फले। वन तरु वेलीं री हेली इहिं मंगल रले ॥४॥२०८॥

राग मारू (वरस गांठि)—व्रज सबके मन भाई वरस गांठि राधा की आई। भादौं सुदि आठैं उजियारी वाजी है गहकि वधाई ॥वरस गांठि०॥टेक०॥१॥ सकल सुगंधि कियौ तन उवटनि अति लडि हरषि न्हवाई। भूषन वसन सिंगारे जननीं रूप न भवन समाई ॥२॥ वहु मेवा पकवान मधुर लै अपनैं हाथ जिमाई। सादर ग्रास देति मुख रानीं पुनि पुनि लेति वलाई ॥३॥ जल अंचवाइ तँवोल वदन रचि मणि चौकी वैठाई। रोरी अच्छत तिलक भाल रचि आरति साजि मंगाई ॥४॥ पंच नाद मंगल धुनि जै जै रचनां भवन महाई। तिलक भेट लै वनिता धाईं भीर न गलिनु समाई ॥५॥ भेटनि लेति भाग की पूरी दै वहु मान वडाई मंगल गौंन निसांन गह गहे घुरत

व्यौंम धुनि छाई ६ मोतिनु चौक माल मणि वंदन केरनि अवलि धराई। वेदनि पढ़ति मुनीश भांन जू दच्छिनां हुलसि दिवाई ॥७॥ हौं वलि राधा नामनि लै लै वनितनि लाड लडाई। वृन्दावन हित रूप लली की दासि लीक में पाई ॥८॥२०९॥

श्री दया सखी जी महाराज कृत

ढाढिनियाँ मचलि रही। कुँवरि भई सब जग नें जानी, मोसों क्यों न कही ॥ मोहि मिले नख सिख लौं गहनौं, लाऊँ तो बात सही। दया सखी उन विन कौ जग में, जिन मेरी वाँह गही ॥२१०॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत—राग पंचम

कुंज महल में आजु सोहिलौ। वरस गांठि गोरी की सब रस गांठि खुली वरसत है स्याम घन रस धन की लागी मोहिलौ। कामिनि दामिनि रहसि वधाई गाई तान मान अद्भुत यह रस रसिकनि ही कौ सोहिलौ। वल्लभ रसिक ज्यौं ज्यौं अंवर आनंद छायौ त्यौं त्यौं भीजे अंवर तन मन दंपति संपति लहि मन मोहिलौ ॥२११॥

श्री रसिक राय जी महाराज कृत—राग सारंग

महा रस पूरन प्रगट्यौ आनि। अति फूली घर घर व्रज नारी.श्री राधा प्रगटी जानि ॥ धाईं मंगल साज सवै लै महा महोच्छव मानि। आईं घर वृषभांन गोप के श्रीफल सोहत पान ॥ कीरति वदन सुधा निधि देख्यौ सुंदर रूप वखान। नाचत गावत दै कर तारी होत न हरखि अघान ॥ देत असीस सीस चरनन धरि सदा रहो सुख दान। रस की निधि व्रज रसिक राय सों करो सकल दुख हानि २१२

श्री सूरदास जी महाराज कृत राग सारग

आज वृषभांन के घर फूल । प्रगटी कुंवरि राधिका जाकैं मिटैं भवन के शूल ॥ लोक लोक ते टीकौ आयौ विविधि रतन पट कूल । सूरदास समता कौ पावै जाके भाग्य अतूल ॥२१३॥

श्री रसिक सनेही जी महाराज कृत—राग रामकली-तिताल
[यह लाल जू की वधाई है]

मंदलरा नंद महर कें भवन में श्रवण सुनि रंग भरी धुनि वाजै । उठि रे ढाढी अब सोवै कहा फिरि कव मिलि है समाजै ॥ रानी जसुमति कूषि सिरानी जायौ सुंदर ढोटा । सकल मनो-रथ मन के होसी अब काहे कौ टोटा ॥ लै लै दान गुनी जन जामैं अप अपनौं सब नेग चुकावैं । नंदराय सिंह पौरि विराजे अषै भंडार लुटावैं ॥ तव ढाढी ढाढिनि राय आंगन मुदित मुदित ह्वै नाचैं । लै लै नाम बडे गोपन कौ यह वंसावलि वाचैं ॥ वोलि लई जसुमति ढाढिनि कौं ढाढी निकट वुलायौ। ना ना भांति भूषण मानिक दै अपने हाथ पहिनायौ ॥ तव ढाढिनि जसुमति सौं वोली रानी अब कहा चाहूं । रसिक सनेही मोंहन गोदी दै यह न्यौछावरि पाऊँ ॥२१४॥

श्री लाड़िली जू के पालनैं के पद

श्री सूरदास मदन मोहन जी महाराज कृत—राग सूहो विलावल

अहो मेरी लाड़िली सुकुँवारि कंचन पालनैं झूलै । मृदु मुसिकांनि निरषि नैंननि सुख कीरति जू मन ही मन फूलै ॥१॥ कवहुँक चटकोरा चटकावति झुंझुनां झुनन झूलनी झूलै । कवहुंक लेति उछंग अंक भरि अंतर गति की हरति सु सूलै ॥२॥ श्री वृषभांन गोद लै बैठे मन क्रम वचन साधनां तूलैं सूरदास मदन मोहन के अंतर निधि की खांनि सुखूलै ३ १

श्री जदुनंदन महाराज कृत–राग आसावरी

वृषभांन लली कौ पालनौं गढ़ि लै आये सुति धार। बीच बीच सित अरुन नील मणि जटित जु सुबर सुनार ॥१॥ पंच पाट बुनवाइ सुहाइ बहु दरस सरस रस भूलैं। मनहुँ सितासित कूल कमल कुल बरन बरन सुभ फूलैं ॥२॥ ता ऊपर पौढ़ाइ नारि बर मंद आनंदि झुलावैं। नव किशोर चित चोर रवनि मिलि सुर मंगल कल गावैं ॥३॥ सुनि रानी सनेह बस तियनि कें दरस वधू सुख पावैं। जदुनंदन रानीं दरसन हित सुर बिमान धरि धावैं ॥४॥२॥

श्री गरीब दास जी महाराज कृत–राग आसावरी

अवनी कुँवरि किशोरी कीरति पालनैं झुलावै। निरखि निरखि छवि अपनी लली कौं पुलकि पुलकि दुलरावै ॥१॥ रतन जटित कौ पालनौं है रेसम डोरि बुनावै। मोतिनु की झालरि चहूँ दिसि तें हीरा लाल लगावैं ॥२॥ नंदीस्वर तें जसुमति रानी मङ्गल गावति आवै। कुंवरि किशोरी पालनां झूलै गरीबदास गुन गावै ॥३॥३॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत–राग बिलावल

बन्यौं पालनौं लाल गुलाल। कीरति की कुल मंडनि राधे तामें झूलत रूप रसाल ॥१॥ कंचन की डोरी में झलकति मोतिनु के झूमक छवि जाल। तापर तन्यौ बितान जरी कौ झालरि में झलकति मणि लाल ॥२॥ लयें गोद में ललितादिक कौं लसति चहूँ दिसि ब्रज की बाल। मनौं चंद चय धरें अंक में दमकि रहीं दामिनि की माल ॥३॥ नित्य किशोरी रसिकनि के हित प्रगट भई सिसु ह्वै सुभ काल। प्रेमदास हित विपिन इंदु कौ नंदराइ कैं करत निहाल ॥४॥४॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—राग रामकली

लड़ैती पालनैं झूलै । रंग महल रुचि रच्यौ है विधाता निरखि निरखि मन फूलै ॥१॥ नव निधि श्री जाकैं आज्ञाकारी सो जाई कीरति वाल । सरस सरोवर भांन भवन में प्रगट्यौ अद्भुत लाल ॥२॥ आजु उदौ व्रज मंडल ही कौ गोरी नवल गुपाल । कृष्णदास हित रसिक आनंदे जोरी जुगल विशाल ॥३॥५॥

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग रामकली

भांन भवन अति सोहै लडैती पालनैं झूलै । कौतिक वदन विलोकि लली कौ कीरति मन फूलै ॥लड़ैती०॥१॥ रही लसि पीत झगूली तन दुति कुलही तास दुकूलै । खुभि रह्यौ सुभग कपोल डिठौंना निरखत गति मति भूलै ॥२॥ चटकि चटकि करजनि तृन तोरति मुदित वलैया हूलै । वृन्दावन हित भाग्य परावधि को जननी सम तूलै ॥३॥६॥

राग विलावल—अरी मेरी ससि वदनी सुकुँवारि झूलति पालनैं माई । मुकर महल मधि रच्यौ है पालनौं कौतिक छवि छाई ॥१॥ दुति में दुति मिलि वदन चरन नख सोभा सदन भरी । कीरति लखि प्रतिविंव चहूँ दिस विधि तन गोद करी ॥२॥ कवहूँ चुटकीं दै सुख पावति गावति मृदु वानीं । कवहूँ वारि दान देह कवहूँ वारि पियै पानी ॥३॥ रावलि पति पतिनीं वड़ भागिनि कहति न वनि आवै । वृन्दावन हित रूप स्वामिनीं चायनु दुलरावै ॥४॥७॥

राग आसावरी—रच्यौ है अनूपम पालनौं हो रावलि पति के धांम । कीरति कुंवरि झुलावहीं हो गावैं सब व्रज भांम ॥ रूप उजागरि भांन सुता ॥१॥ ललित वलित नग पालनौं हो कियौ

जटित वहु भांति । प्रमुदित जननी निहारि कैं हो वदन मनोहर कांति ॥ वरन विलच्छन भांन सुता ॥२॥ गुन वरननि कों सारदा हो आई कीरति गेह । आदर दै भीतर लई हो कीयौ अधिक सनेह ॥ हौं वलिहारी भांन सुता ॥३॥ गुन वरनौं हित मानि कें हो सुनौं लली की माइ । आगम वरनि सुनाइ हौं हो राखौ चित चढाइ ॥ तुव कुल मंडनि भांन सुता ॥४॥ वृन्दा विपिन विलासिनी हो राधा सुर मुनि सेव । आराधन इनकौ करै हो या व्रज कौ वड देव ॥ सव जग वंदनि भांन सुता ॥५॥ आनंद कौ आनंदिनी हो मंदिर सकल कलानि । पूरन प्रेम प्रकासिनी हो अखिल लोक सुख दांनि ॥ घोष निवाजनि भांन सुता ॥६॥ मंगल मंगल दाइनी हो जो जनमीं तुव कूषि । इहिं व्रज जन रच्छया करै हो सींचि है प्रेम पयूष ॥ मैं यह जानी भांन सुता ॥७॥ कुंज कुंज क्रीडा नई हो नित्त वर्द्धन रस रीति । व्रज कन्या देखैं जियैं हो सहज घनेरी प्रीति ॥ सखियन प्यारी भांन सुता ॥८॥ जो धन नंद घरनि लह्यौ हो कौंन सुकृत फल्यौ भाग । ताकौं सुधन सुजानिवै हो यह मूरति अनुराग ॥ तुव उर धारी भांन सुता ॥९॥ गो गोपनि पालन करै हो व्रज सव कौ सिरमौर । सो इहिं कुँवरि प्रताप तें हो झांकै तुम्हरी पौर ॥ मदन लज्यावनि भांन सुता ॥१०॥ कनक कमल ससि वृन्द कौं हो वारौं वदन विलोकि । चारु चरन नख छबि छटा हो उपमा राखी रोकि ॥ इहिं व्रज भूषन भांन सुता ॥११॥ जमुना तट पुलिन स्थली हो करि है विविधि विनोद । सो जस निगम वखानि हैं हो सुनि कीरति मान्यौं मोद पुन्यनि पाई भांन सुता १२। सखी वृन्द पद सेवहीं

हो ज्यौ रितु कुशम वसंत मुनि वर सुख सुमिरैं हियै हो लीला ललित अनंत ॥ यह मम स्वामिनि भांन सुता ॥१३॥ ललित लली जुग जुग जियौ हो उत ब्रजराज कुँवार । जोरी विधि वांछित करी सब लोकनि प्रांन अधार ॥ सजन बुलावनि भांन सुता ॥१४॥ कर गहि डोरी पालनैं हो मुख लाडति राधा नाम । हियें नेह रस सौं भरी रहै कीरति आठौं जाम ॥ ग्रह निधि आई भांन सुता ॥१५॥ सहस फनीं शिव विधि सबै हो रहे थकि करत विचार । मो मति हूं वौरी भई रानीं वरनत पायौ न पार ॥ कहौं कहा गुन भांन सुता ॥१६॥ यह भांमिनि किहिं पुर वसै हो बात कहै अनुरागि । पट भूषन कीरति दये वह चली लली पग लागि ॥ वसौ मम नैंननि भांन सुता ॥१७॥ लोक सुजस सरिता बढी हो जनमीं कुँवरि अनूप । वृन्दावन हित वारनैं हो मम स्वामिनि हित रूप ॥ हरि अहिलादनि भांन सुता ॥१८॥८॥

राग ईमन—रंग महल रच्यौ पालना रानी कीरति कुंवरि झुलावै । मुदित लली की मैया रीझि रीझि लै वलैया सुंदर वदन लखि अति सुख पावै ॥१॥ विधि तन गोद पसारैं पुहुप अंजुली वारै तोरि तोरि तृन नव लाडनि लडावै । वृन्दावन हित वारी देखि देखि सुकुंवारी भांन की घरनि लै लै सर्वसु लुटावै ॥२॥९॥

राग विलावल—ए जू श्री वृषभांन गोप रावलि पति गह मह ताकें धांम । नित नित सुख जु निरंतर वरषत श्री बरसानैं गांम ॥१॥ निगम हू दुरी अगोचर आगम राधा जाकौ नांम । सो खेलति कीरति के आंगन जीवनि सुंदर स्यांम ॥२॥ जननी जनक गोद लै बैठत कुंवरि कुँवर श्रीदांम । वृन्दावन हित रूप अवधि सुख लाड़ति आठौ जांम ३ १०

राग देव गधार [पासनो कौ पद]—लली ले कीरति गोद जिमावे । निरखि निरखि कौतिक मुख ओरी थ्रास देत सुख पावै ॥१॥ उत मचल्यौ श्रीदामां जननी ताहू अंक लगावै । गहि गहि चिवुक लडैती पुनि पुनि मैयै मोद वढावै ॥२॥ दधि ओदन कौ कौर कुँवरि कर रानीं हरषि गहावै । कवहू देइ मैया मुख कवहूँ आपु वदन लपटावै ॥३॥ कवहूँ किलकि लगति जननीं उर अंचल वदन दुरावै । महा भाग की महिमा सुधि करि कवहूँ मंगल गावै ॥४॥ निगम (हूँ) गूढ गति जाहि कहत ताकौ पय पांन करावै । वृन्दावन हित रूप गोप कुल प्रभुता कहत न आवै ॥५॥११॥

श्री लाड़िली जू की छठी कौ मंगल

चाचा श्री वृन्दावनदासजी महाराज कृत—राग सूही विलावल [मंगल छंद]

छठी लली की री हेली आजु पुजावहीं । आरज गोपी री हेली मंगल गावहीं ॥ गाँव गाँव तें री हेली हुलसी आवहीं । भांति भांति सजि री हेली चावनि लावहीं ॥ लावहीं सजि चाव भांमिनि थार कंचन कर धरैं । गलिनु सोभा भीर वाढ़ी रंग अति कौतिक करैं ॥ हँसि करति वहु सनमांन कीरति भवन सुख वरषावहीं । छठी लली की री हेली आजु पुजावहीं ॥१॥ गिरि गोवर्द्धन री हेली दिस मङ्गल मई । रूप घटा सी री हेली आवति ऊनई ॥ सकट अनेकनि री हेली पाट वसन भरे । डवा जराइनु री हेली वहु भूषन धरे ॥ धरे भूषन भार अगनित रेंनु खुर गोधन वढीं । मंगलनि मीठीं धुनि सुनौं गावति वधू सकटनि चढीं ॥ पूजन छठी नानी लली की भेट लै आवति भई । गिरि गोवर्द्धन री हेली दिस मङ्गल मई ॥२॥

मुखरा रानी री हेली आई रंग रली प्रेम विवस भई री हेली मुख निरखति लली ॥ कीरति भेटति री हेली अपनी माइ कैं। गाढ़ प्रीति सौं री हेली कंठ लगाइ कैं ॥ लगाइ जननीं कंठ सौं कीरतिहि पुनि पहिरावहीं। पट पीयरे परधान की छवि वढ़ी कहत न आवहीं ॥ पुरजन सकल पहिराइ पुनि वृषभांन पहिरत विधि भली। मुखरा रानी री हेली आई रंग रली ॥३॥ छठी छवीली री हेली प्रेम सहित धरी। पाकनि रचनां री हेली मङ्गल विधि करी ॥ जसुमति आई री हेली पटुला माइ जुत। मूंठि उठावति री हेली लीयें गोद सुत ॥ उठाइ रतननि मूंठि जाचक जननि धन दीयौ घनौ। मुखरा सभागिनि और पटुला दान कौं कहाँ लगि गनौं ॥ वृन्दावन हित रूप राधा आरतौ कियौ सुभ घरी। छठी छवीली री हेली प्रेम सहित धरी ॥४॥१॥

श्री लाड़िली जू कौ दसूठन कौ मंगल

चाचा श्री वृन्दावन दास जी महाराज कृत—राग सूहौ विलावल (मंगल छंद)

लली दसूठन री हेली सब हिय हरषि हीं। कीरति महल मैं री हेली अति सुख वरषि हीं ॥ जसुमति आई री हेली वधुनि समाज लैं। मंदिर लीनीं री हेली वहु सनमांन दै ॥ सनमांन दै कैं भवन लीनीं गोद छवि सींवा लला। अंग उपमा सवहि वारौं वदन छवि पर ससि कला ॥ कीरतिहि भेटति सुख समेटति घरनि गोकुल भूप की। चितवति जु विधनां ओर इत लखि कुँवरि गरुवे रूप की ॥१॥ जल मज्जन कियौ री हेली कीरति विधि भली। पट भूषन सजे री हेली जो मन मिलि अली ॥ सुविधि सिंगारे री हेली श्री वृषभांन जू। गांठि

जुराई री हेली विप्र सुजान जू गांठ जोरना करि पटा बठे सुविधि देव पुजावहीं । कुल रीति कीनी उचित पुनि गोदांन हरषि करावहीं ॥ चित्रित सु चौक अनेक रचनां भवन रावलि राइ कैं । मंगल हरिष ब्रज वधू गावति रानीं कृषि मल्हाइ कैं ॥२॥ रावलि नगर में री हेली विपुल वधावनौ । नृप घर कियौ री हेली प्रभु मन भावनौं ॥ वसन अपूरव री हेली नर नारिनु तन । सब मिलि आये री हेली बैठे नृप भवन ॥ बैठे भवन भुव देव सादर वेद चारयौ उच्चरैं । कुंडली जनम विचारि विधि सौं नाम अति लडि के धरैं ॥ महा भांन की गोदी विराजति अहा कुल मंडनि लली । भूषन वसन तन जग मगैं मुख मनु कनक वारिज कली ॥३॥ गरग गऊतम री हेली उर आनंद वलित । नाम धरयौ है री हेली श्री राधा ललित ॥ कुँवरि करनि में री हेली भेटैं धरति है । मुदित आसिका री हेली सब उच्चरति है ॥ आसिका पुर परिवार के सब देत कीरति नंदिनी । कीनीं दई मन भांवती यह गोप कुल आनंदिनी ॥ मनुहारि करि वृषभानु जु कुल आरजनि पहिरावहीं । मागद सु वंदी पौरि सूरज वंश कीरति गावहीं ॥४॥ पाकनि रचनां री हेली जहाँ कीनीं घनीं । विप्र जिमावति री हेली रावलि कौ धनी ॥ पुरजन गुरजन री हेली वंधुनि मांन दै । असन करायौ री हेली विप्रनि चरन नै । नमित विप्रनि चरन त्रिपित कराइ पुनि दछिना दई । राधा जनम उत्साह ब्रज में ओप कछु औरै भई ॥ इक जाहिं इक आवैं जु रावलि सिंधु भयौ सुख गहर कौ । लोक पावन जस वढ्यौ आजु अहा कहा कल महर कौ ५ या कन्या कौ री हेली रूप कहा कहौं

देखत कौतिक री हेली अति अचिरज रह्यौ ॥ कुंवरि अवतरति री हेली जग जड़ता गई। हीयैं विद्या री हेली निकर फुरित भई ॥ भई विद्या फुरित जब भयौ उदौ रवि ससि वंश कौ। दुहूँ घर आनंद जो सर्वसु जु श्री हरिवंश कौ ॥ वृन्दावन हित रूप जोरी रचन ब्रज लीला महा। कहत आगम वचन सुनि केहु रसिक यह अलभि जु लहा ॥६॥१॥

राग सूहौ बिलावल (छोछक)—छोछक आजु लली कौ आयौ। नाना इंदुसैंन सजि लायौ ॥ गोप छवीले संग वनैं है। ते सब परम सनेह सनैं है ॥ सनैं परम सनेह श्री वृषभांन घर कन्या सुनीं। जाकें जनम ब्रज रमां खेलति ओप घर घर सतगुनी ॥ बहु सकट चीर अमोल भरि भरि धरे नव नव रंग है। गहनैं जराऊ और गोधन वृन्द जाकें संग है ॥१॥ मुखरा नानी परम सभागी। गोपी संग लई अनुरागी ॥ मारग चलत बधाये गावैं। उमगीं रूप घटा सी आवैं ॥ आवैं घटा मनु रूप मंगल थार कर सोहत भले। रावलि महा ससि उदित मानौं भेट लै ससि गनि चले ॥ अति गांन गहर उमाह तन मन घोष धुनि पूरित भई। लै वधुनि मुखदा माइ अरघ बढाइ कैं मंदिर लई ॥२॥ कीरति कें जननी उर भेंटी। कनक वेलि मनु प्रेम लपेटी ॥ तब लगि जसुमति उततें आई। तिन संग गोपीं वृन्द सुहाई ॥ गोपिनु वृन्द अनेक पटुला माइ नानी स्याम की। वृषभांन भवन प्रवेश कीयौ कहा कहौं छवि धाम की ॥ रनिवास रावलि ईश कैं अति होति मंगल विधि महा। त्रैलोक गहनौं कुंवरि जा घर दान की गनती कहा ॥३॥ भीर रंगीली रावर मांही। सो सुख वरनत आवत नाहीं वरनौं मुखरा भाग निकाई

पुर परिवार सहित पहिराई ॥ पहिराइ पुर परिवार कीरति सहित श्री वृषभांन कौं। लखि लली अचिरज रूप हुलसीं रीझि वरषति दान कौं ॥ पटुला जसोमति देखि कौतिक महा मुदित तन मन भरी। वृन्दावन हित रूप बलि मिलि गोद विधि ओरी करी ॥४॥२॥

दान केलि के पद

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी महाराज कृत--राग सारंग

दान दै री नवल किशोरी। माँगत लाल लाड़िलौ नागर, प्रगट भई दिन दिन की चोरी ॥ नव नारंग कनक हीरावलि, विद्रुम सरस जलज मनि गोरी। पूरित रस पियूष जुगल घट, कमल कदलि खंजन की जोरी ॥ तोपै सकल सौंज दामिनि की कत सतरात कुटिल दृग भोरी। नूपुर रव किंकिनी पिशुन घर, जै श्री हित हरिवंश कहत नहिं थोरी ॥१॥

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज कृत--राग केदारौ

जो कछू कहत लाड़िलौ लाड़िली सुनियै कान दै। जो जीय उपजत तिहारे हित की कहत आन दै॥ जो मोइ पत्याव तौ छाती टकटोरि देखौ पान दै। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी जाँचक कौ दान दै ॥२॥

राग कल्याण—हमारो दान मारयौ इनि। रातिनि बेच बेच जाति घेरौ सखा, जान ज्यौं न पावैं छियो जिनि ॥ देखौ हरि के ऊज उठाइवे की बातैं राति, विरात बहू बेटी काहू की निकसत है पुनि। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा की प्रकृति न फिरी छीया छाँड़ो किनि ॥३॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत—दान के पद

लैहौं दान अंग अंगन कौं। गोरे भाल लाल सेंदुर छवि, मुक्ता वर शिर सुभग मंग कौं॥ नक वेसर खुटिला तरिवन कौं, गर हमेल कुच युग उतंग कौं। कंठ सिरी दुलरी तिलरी उर माणिक मोती हार रंग कौं॥ वहु नग लगे जराव की अँगिया, भुजा चहूटनि वलय संग कौं। कटि किंकिणि कौ दान जु लैहौं, तिन रीझन मन अनंग कौं॥ जेहरि पग जकरयौ गाढ़े, मनो मंद मंद गति यह मतंग कौं। जोवन रूप अंग पाटंबर सुनहु सूर सब यह प्रसंग कौं॥४॥

लैहौं दान इनन को तुमसौं। मत्त गयंद हंस हम सोहैं, कहा दुरावति तुम सौं॥ केहरि कनक कलश अमृत के, कैसें दुरै दुरावति। विद्रुम हेम वज्र के कनुका, नाहिन हमहि सुनावति॥ खग कपोत कोकिला कीर खंजन हू शुक मृग जानति। मणि कंचन के चित्र जरे हैं, एते पर नहिं मानति॥ सायक चाप तुरय वनिजति हो, लिये सवै तुम जाहु। चंदन चमर सुगंध जहँ तहँ, कैसें होत निवाहु॥ यह वनिजति वृषभांन सुता तुम हम सौं वैर वढ़ावति। सुनहु सूर एते पर कहति है हम धौं कहा लदावति॥५॥

इतने सवै तुम्हारे पास। निरख न देखहु अंग अंग सब चतुराई के गाँस॥ तुरत ही निरुवारि डारहु करति कहत अवेर। तुम कहो कछु हमहुँ वोलैं घरहि जाहु सवेर॥ कनक तुम परतछ देखहु सजे नव सत अंग। सूर तुम सौं रूप जोवन धरयौ एकहि संग॥६॥

प्रगट करौ सब तुमहि बतावैं चिकुर चमर घूँघट है

वरवर भ्रू सारंग दिखावैं ॥ वाण कटाक्ष नयन खंजन मृग, नासा शुक उपमाउ । तरिवन चक्र अधर विद्रुम छवि दशन वज्र कनठाँउ ॥ ग्रीव कपोत कोकिला वाणी, कुच घट कनक सुभाउ । जोवन मद रस अमृत भरे हैं, रूप रंग झलकाँउ ॥ अंग सुगंध वसन पाटंवर, गनि गनि तुमहि सुनाँउ । कटि केहरि गयंद गति शोभा हंस सहित यकताँउ ॥ फेर किये कैसे निवहति है, घरहि गए कहा पाँउ । सुनहु सूर यह वनिज तुम्हारे, फिरि फिरि तुमहि मनाउ ॥७॥

छांड़ि देहु मेरी लट मोहन । कुच परसत पुनि पुनि सकुचत नहि, कत आई तजि गोहन ॥ युवती आनि देखि है कोऊ कहत वंक भरि भौंहन । वार वार कहि वीर दोहाई तुम मानत नहिं सोंहन ॥ यतनेही कौं सौंह दिवावत मैं आयौ मुख जोहन । सूर स्याम नागरि वश कीन्हीं, विवश चली धरि कोहन ॥८॥

श्री नागरीदास जी महाराज कृत–पद

मेरे नित चित में वसौ दंपति दान विहार । मुख पर झूँठी झगरई नैंननि करत जुहार ॥ मो मन लागी दुहुँनि की दान केलि वतरानि । नैंननि हा हा खानि इत उत भौंहें सतरानि ॥ गौर घटा अरु साँवरी उनई नीर सनेह । खोर साँकरी गिरि तहाँ दान रंग झर मेह ॥९॥

माँगै घनश्याम दान दई । गोरस दान सुन्यों नहिं कवहूँ यह अव कैसी भई ॥ दीयौ नहीं लेत हाय हँसि हेरत नेक न करत गई । नागरीदास कौन विधि वनि है यह व्रज रीति नई ॥१०॥

नित दान मांगै गहवर गैल में कित जाँउ री। साँवरौ सौ ढोटा अरबीलौ है मन मोहन नाँउ री॥ अंचर गहि हँसि चाहि रहै मुखहूँ जिय में सकुचाँउ री। नागरीदास उतै उरझेरौ इतै चबैया गाँउ री॥११॥

गई हुती गोरस बेंचन कै। रोकी आनि दान मिस मोहन वाकी चितवनि मेरे हिय माँझ कसकै॥ अँचरा गहि फिरि बहियाँ गहि री, कर मेरो मसक्यौ सो अवलौं चसकै। नागरीदास कठिन मोहि बीतत, उन तौ मन लीनौं हँसि हँसि कै॥१२॥

दान दै री वृषभांन कुँवारि। छांड़ि देहु अब चार विचार करत झगरई होत अवार॥ हा हा गोरस प्यारी पाय, क्यों झुकि झझकत है अनखाय। नागरि नैंननि करि सनमान, हरि बस करि लये स्याम सुजान॥१३॥

छांड़ि दै रे अंचल चंचल छैला। इती करत लँगराई लला क्यों रोकि मही कौ गैला। जान न देत दान मांगत हठि ठाढ़ौ ह्वै आड़ौ अरेला। सीखे कहाँ अनोखे नागर, ए जोवन के फैला॥१४॥

श्री कृष्णदास जी महाराज कृत—पद

अहो प्यारी वृन्दाविपुन सुहावनौं जहाँ वंसीवट की छाँह हो। प्यारी राधा दधि लै निकरी, कन्हैया नैं रोकी आनि हो॥ श्री वृषभानु लड़ैती दान दै हो॥१॥ लाला सबई सयाने साथ के, और तुमहुँ सयाने लाल हो। मोय लिख्यौ बतावौ साँवरे कब दान लियौ पछिपाल हो॥ नंदराय लला घर जान दै अहो॥२॥ प्यारी बहुत दिनां बचि जाति ही, मेरौ दाव बन्यौं है आजु हो। दान दिये बिन जाउगी हो तो समझि लेउ सब काज हो॥

श्री वृषभांन० ॥३॥ कब कब के दानी भये और कब तुम लीनौं दान हो। मेरो मारग छोड़ौ साँवरे मोहि जान देउ घनश्याम हो ॥ नंदराय० ॥४॥ प्यारी लै आये तो लैंयगे कछू नई अनकरि हैं आज़ु हो। मोय नित पहिराय पठाय हो नेंक वीरी दै वृजनारि हो ॥ वृषभांन० ॥५॥ लाला कहा हम लादें जात हैं और कहा भरे हम भार हो। तुम टेढ़े ह्वै ठाड़े भये मेरी रोकौ मही की गैल हो ॥ नंदराय० ॥६॥ प्यारी अँग अँग वसन सुहावने और भरे हैं रतन के भार हो। तुम नायक रूप लदैंनियाँ वहु जोवन लादें जात हो ॥ वृषभांन० ॥७॥ लाला देस हमारे बाप कौ, जाकी बाह बसत नंदराय हो। हम घास रखाई साँवरे तेरी सब सुख चरती गाय हो ॥नंदराय० ॥८॥ प्यारी देस तिहारे बाप कौ सब सोवे में दीनौं साथ हो। तुम सब संकलप्यौ जा दिना जा दिन पियरे किये तेरे हाथ हो वृषभांन० ॥९॥ गुजराती डाँकौरिया सब लेत ग्रहन में दान हो। लाला जोवन में हो सांवरे वृषभानु बबा मेरो देय हो॥ नंदराय० ॥१०॥ प्यारी हम दानी वहु भांति के तुम काऊ विधि क्यों न देउ हो। तुम जैसी विधि सौं देउगी हौं तौ तैसी विधि सौं लैंउ हो॥ वृषभांन० ॥११॥ लाला तबई तन कारे भये तुम लै लै ऐसौ दान हो। तुम कैसें छूटौगे भार ते कोऊ तीरथ हू नहिं न्हाउ हो॥ नंदराय० ॥१२॥ प्यारी गऊ रज गंगा में न्हात हौं हम जप तप उनके नाम हो। हम परम पुनीत सदा रहैं नहीं लेत सकुचात हो॥ वृषभांन ॥१३॥ लाला जसुदा बांधे दासरी अरु दामोदर गोपाल हो। तुम हा हा करि पाँवन परे तब हमई छुड़ाये लाल हो ॥ नंदराय० ॥१४॥

तुम गरब करौ मति बावरी और बैठी जमुना न्हान हो। चीर चोर तरु पर चढ्यौ तुम सब मिलि हा हा खाह हो ॥वृषभांन० ॥१५॥ लाल दान लै दान लै कछु गाय बजाय रिझाय हो। हम दान न दैहैं लाड़िले सब बरसाने की नारि हो ॥नंदराय० ॥१६॥ प्यारी नट ह्वै नाच्यौ साँवरौ जैसे विरद बखानत भाट हो। महुवरि में मुरली बजी सो तो मेंटि कुँवरि मेरी नाट हो ॥ वृषभांन० ॥१७॥ मिसई मिस झगरौ भयौ और या वृन्दा-वन माँझ हो। रसिक मिलन दोऊ भये कृष्णदास बलि बलि जाय हो ॥ नंदराय लला घर जान दै हो ॥१८॥१५॥

श्री (रसिक) हरिराय जी महाराज कृत—राग विलावल

तुम नंद महर के लाल मोहन जान दै। रानी जसुमति प्रान आधार मोहन जान दै ॥ध्रु०॥ श्री गोवर्धन की सिखर तें मोहन दीनी टेर। अंतरंग सों कहत हैं सब ग्वालिनि राखौ घेर ॥ नागरि दान दै ॥१॥ ग्वालिनि रोकी नारि है ग्वाल रहे पचिहार। अहो गिरधारी दौरियो सो कह्यौ न मानत ग्वार ॥२॥ चली जात गोरस मदमाती मनौं सुनत नहीं कान। दौरि आये मन भामते सो रोकी अंचल तान ॥३॥ एक भुजा कंकन गहे एक भुजा गहि चीर। दान लेन ठाड़े भये गहवर कुंज कुटीर ॥४॥ बहुत दिना तुम बचि गई हो दान हमारो मार। आज हौं लैहौं आपनो दिन दिन को दान सँभार ॥५॥ रस निधान नव नागरी निरख वचन मृदु बोल। क्यों मुरि ठाडी होत हौ घूँघट पट मुख खोल ॥६॥ हरखि हियें हरि करखि कैं मुख तें नील निचोल। पूरन प्रगट्यौ देखियै मानौं चंद घटा की ओल ७ ललित वचन समुदित भये नेति नेति

रह वैन । उर आनँद अतिही बढ्यौ सो सुफल भये मिलि नयन ।८॥ यह मारग हम नित गईं कबहुं सुन्यौ नहिं कान । आज नई यह होत है सो मांगत गोरस दान ॥६॥ तुम नवीन नव नागरी नूतन भूषण अंग । नयौ दान हम मागनौ सो नयो बन्यो यह रंग ॥१०॥ चंचल नयन निहारिये अति चंचल मृदु बैन । कर नहिं चंचल कीजिये तजि अंचल चंचल नयन ॥११॥ सुंदरता सब अंग की वसनन राखी गोय । निरख निरख छवि लाड़िली मेरो मन आकर्षित होय ॥१२॥ लै लकुटी ठाड़े रहे जानि साँकरी खोर । मुसकि ठगौरी लाइ कैं सकत लई [illegible] जोर ॥१३॥ नेंक दूर ठाड़े रहो कछू ओर सकुचाय । कहा कियौ मन भावते मेरे अंचल पीक लगाय ॥१४॥ कहा भयो अंचल लगी पीक हमारी जाय । याके बदले ग्वालिनी मेरे नयनन पीक लगाय ॥१५॥ सूधे वचनन माँगिये लालन गोरस दान । भ्रूहन भेद जनाइ कैं सो कहत आन की आन ॥१६॥ जैसें हम कछु कहत हैं ऐसी तुम कहि लेहु । मन मानै सो कीजिये ये दान हमारो देहु ॥१७॥ कहा भरे हम जात हैं दान जो मांगत लाल । भई अबार घर जान दे सो छाँडो अटपटी चाल ॥१८॥ भरे जात हौ श्रीफल कंचन कमल वसन सौं ढाँक । दान जो लागत ताही को तुम देकर जाहि निसाँक ॥१६॥ इतनी विनती मानिये मांगत ओली ओड़ । गोरस कौ रस चाखिये लालन अंचल छोड़ ॥२०॥ सँग की सखी सबै फिर गईं सुनि हैं कीरति माय । प्रीति हिये में राखिये सो प्रगट कियें रस जाय ॥२१॥ काल्ह बहोरि हम आइ हैं गोरस लै सब ग्वारी । नीकी भांति चखाइ हौं मेरे जीवन हौं बलिहारी ॥२२॥

सुनि राधे नव नागरी हम न करै विश्वास. कर को अमृत छांडि कै को करै काल्हि की आस ॥२३॥ तेरौ गोरस चाखवे मेरो मन ललचाय। पूरन शशि कर पाय कैं चकोर न धीर धराइ ॥२४॥ मोहन कंचन कलशिका लीनी सीस उतार। श्रम कन वदन निहारि कैं सो ग्वालिनि अति सुकुमार ॥२५॥ नवल विजन गहि लालजू श्री कर देत ढुराय। श्रमित भई चलौ कुंज में नेंक पलोटूँ पाँय ॥२६॥ जानत हो यह कौन हैं ऐसी ढीठ्यों देत। श्री वृषभानु कुमार हैं तोहि बीच को लेत ॥२७॥ गोरे श्री नंदराय जू गोरी जसुमति माय। तुम याही ते सामरे ऐसे लच्छिन पाय ॥२८॥ मन मेरौ तारन वसे और अंजन की रेख। चोखी प्रीति हिये बसे याते साँवल भेख ॥२९॥ आप चाल सो चालिये यहै बड़ेन की रीति। ऐसी कबहूँ न कीजिये हसैं लोग विपरीति ॥३०॥ ठाले ढूले फिरत हो और कछू नहिं काम। बाट घाट रोकत फिरै आन न मानत स्याम ॥३१॥ यही हमारौ राज है ब्रज मंडल सब ठौर। तुम हमारी कुमुदनी हम कमल वदन के भौंर ॥३२॥ ऐसे में कोऊ आइ है देखै अद्भुत रीति। आज सबै नंदलाल जू प्रगट होयगी प्रीति ॥३३॥ ब्रज वृन्दावन गिरि नदी पशु पंछी सब संग। इनसों कहा दुराइये प्यारी राधा मेरो अंग ॥३४॥ अंज भुजा धरि लै चलौ प्यारी चरन निहोर। निरखत लीला रसिक जू जहाँ दान की ठौर ॥३५॥१६॥

श्री आस करन जी महाराज कृत–पद

ठाड़ी रहि री ग्वालिनी तू देजा मेरौ दान। ढिंग भई आवत निकसि जात हो फोरूँ तेरी मटुकिया लकुटिया तान

॥ठाड़ी०॥१॥ यह मारग हम हीं नित आवैं, कबहुँ न दीनौं दधि कौ दान। काहे कौं हो रारि बढ़ावति मोहन लाज न आवत माँगत दान॥ ठाड़ी० ॥२॥ लाज करौं या ब्रज कौ बसिवौ निपट अनौखे प्रगटे कान्ह। आनि कानि काहू की न मानत बरबस मोसों झगरौ ठान॥ ठाड़ी० ॥३॥ काहे कौं तुम हाथ नचावति काहे कौं येतौ करत गुमान। दान काज हौं ब्रज में आयौ छांड़ि दियौ बैकुण्ठ सौ धाम॥ ठाड़ी० ॥४॥ जो तुम भये त्रिभुवन के नायक नँद के नंदन क्यों भये आनि। माखन कारन मैया रिसाई ऊखल बाँधे कहा करी कान॥ ठाड़ी० ॥५॥ नंद जसोदा अति तप कीनौं हमहीं नें वर दीनौं आनि। भक्त हेत में आपु बँधायौ मैं भक्तन कौ राख्यौ मांन॥ ठाड़ी० ॥६॥ घर घर डोलत माखन चोरत साँकर खोलत पाये सुजान। पीछें ते जब ही गहि लीने तब तुम लागे हा हा खान॥ ठाड़ी० ॥७॥ हा हा खात दया मोहि आई तब लाग्यौ मघवा बरषान। डिगत देखि गिरिवर कर धारयौ हौं तौ जानौं सब के प्रान॥ ठाड़ी० ॥८॥ माखन जोर कियौ गिरि कर पर मोहन येतौ करत गुमान। सोई गिरिवर डिगन लग्यौ तब टेक लगाई गिरतौ जान॥ ठाड़ी० ॥९॥ जब वह बालक चहुँ दिसि बाढ्यौ अति आतुर सब लगे वेगि गान। अजहूं समझति नांहि गुवालिनी दावानल कौ कीनौं पान॥ठाड़ी०॥१०॥ घूँघट खोलि ग्वालि मुसिक्यांनी माखन लीजै श्री भगवान। आस करन प्रभु गिरधर नागर मोहि लई जिन प्रेम की बांन॥ ठाड़ी रहि री ग्वालिनी तू दै जा मेरौ दान॥११॥१७॥

श्री माधौदास जी महाराज कृत--राग बिलावल

हमारें गोरस दान न होय मोहन लाड़िले हो। महा मद फिरत गुवाल लाल हठ छाड़ि दै हो ॥१॥ कब के तुम दानी भये कब हम दीनो दान। गाय चरावो नंद की तुम सुने अनोखे कान्ह ॥२॥ हम दानी तिहुँ लोक के तुम चार्यौं जुग की ग्वार। दान न छोड़ों आपनो तेरो राखों गहने हार ॥३॥ रतन जटित की ईडुरी मेरो हीरा जरायो हार। सो तुम राखन कहत हो कमरी के ओढ़न हार ॥४॥ ब्रह्मा तानो पूरियो बुनीयो बैठ महेश। सो हम ओढ़ी कामरी जाको पार न पावें शेष ॥५॥ भौंह नचावत चातुरी बोलत अटपटे बोल। मेरो हार किरोर कौ तेरी सब गईयन कौ मोल ॥६॥ ये गैया तिहुँ लोक तारनी चार्यौं जुग परमान। दूध देंहि तिहुँ लोक कूँ तेरो हार लेहुँ दशदान ॥७॥ काहे को बाद करत हो काहे करत अति सोर। जैसी बाजै तेरी बांसुरी मेरे नेवर की घनघोर ॥८॥ या वंशी की फूँक पै मैं पर्वत लियो उठाय। ढीठ बहुत ये ग्वालिनी इनकी मटुकी लेहु छिड़ाय ॥९॥ हम ही सुता वृषभानु की तुम नंद महर के कान्ह। प्रेम प्रीति रुचि मानि लै अब जिनि करहु गुमान ॥१०॥ वृन्दावन क्रीड़ा करी कीनो रास विलास। सुर नर मुनि जै जै करैं जस गावैं माधौदास ॥११॥१८॥

श्री धोंधी जी महाराज कृत--राग टोड़ी

तेरो कोऊ है रे कन्हैया सुनैया कन्हैया। दधि मेरो खाय मटुकिया फोरी और प्रानन के लिवैया ॥ हार मेरो तोर्यो कमल कर मोर्यौ और फारी है उर की कंचुकिया। धोंधी के प्रभु तुम बहु नायक जानैगी सास ननदिया ॥१९॥

श्री कुंभनदास जी महाराज कृत—राग सारंग

चलन न देत हो यह बटियाँ। रोकत आय स्याम घन सुंदर जब निकसत गिरि घटियाँ ॥ तोरत हार कंचुकी फारत माँग निहारत पटियाँ । पकरत बाँह मरोर नंद सुत गहि फोरत दधि चटियाँ॥ कुंभनदास प्रभु कब दान दीनो नई बात सब ठनियाँ । गिरधर पाँय पूजिये तिहारे जानत हो सब गटियाँ।२०।

श्री छीत स्वामी जी महाराज कृत—राग गोरी

अहो विधिना तोपै अचरा पसारि मागौं जन्म जन्म दीजै याही ब्रज बसिबौ । अहीर की जाति समीप नंद घर घरी घरीन स्याम हेर हेर हसिवौ ॥ दधि के दान मिस ब्रज की वीथिन मैं झक झोरन अंग अंग कौ परसवौ । छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल सरद रैन रस रास कौ विलसवौ ॥२१॥

श्री परमानंद स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

कहि दधि मोल आज हौं लैहौं । यह गज मोतिन हार कंठ ते चन्द्रावलि गुप्त तोहि देहौं ॥ पान पान गहि ठाड़ी कीनी बाट मांझ कियो झगरो । बाबा की सौं जान न दैहौं गिरधर लाल हठीलो अचगरो ॥ लोभ दिखाय प्रीति जो कीनी नीकी ये बात और सब फीकी । परमानंद प्रभु जान महातम जो हरि भजै चतुर सोई नीकी ॥२२॥

आज दधि कंचन मोल भई । जा दधि कौं ब्रह्मादिक इच्छित सो गोपन बाट दई ॥ दधि के पलटैं दुलरी दीनी जसुमति खबरि भई । परमानन्द दास को ठाकुर वरवट प्रीति नई ॥२३॥

ग्वालिनी मीठी तेरी छाछि । कहा दूध में मेलि जमायो

सांची कहो किनि बाछि । औरै भांति चितैवौ तेरौ भौंह चलत हैं आछि । ऐसौ टक झक कबहुँ न देख्यौ तू जो रही कछि काछि ॥ रहसि कान्ह कर कुच गहि परसत तू जो परति है पाछि । परमानंद गोपाल आलिंगी गोप वधू हरि नाछि ॥२४॥

राग कान्हरौ—काहे कों सिखल कीये मेरे पट । नंद गोप सुत छांड़ि अटपटी वार वार बन में रोकत वट ॥ कर लंपट परसौ न कठिन कुच अधिक व्यथा तन रहे निधरक घट । ऐसौ विरुध है खेल तुम्हारौ पीर न जानत गहत पराई लट ॥ कहूँ न सुनी कबहुँ नहिं देखी वाट परत कालिंदी के तट । परमानंद प्रीति अंतर की सुंदर स्याम विनोद सुरत नट ॥२५॥

श्री गोविंद स्वामी जी महाराज कृत—राग सारंग

कृपा अवलोकन दान दै री महा वृषभानु कुमारी दानि दै । त्रिषित लोचन चकोर मेरे तुव वदन इंदु किरन पान दै री ॥ सब विधि सुघर सुजान सुंदरि सुनि विनती कान दै री । गोविंद प्रभु पिय चरण परस कहैं जाचक कौ तू मान दै री ॥२६॥

अब हौं या ढोटा तें हारी । गोरस लेत अटक जब कीनी हँसत देत फिर गारी ॥ निस दिन घर घर फेरो करत है बालक यूथ मँझारी । गोविंद बलि इमि कहत ग्वालिनी ये बातें कैसें जात सहारी ॥२७॥

श्री जन त्रलोक प्रभु जी महाराज कृत—राग धनाश्री

माई मेरो मन मोह्यौ सामरे अब घर हो मोपै रह्यौ न जाइ । चपल तिरछी भौंह सों सर्वसु हो मेरौ लियौ है चुराय ॥१॥ माई हों गोरस लै निकसी श्री वृन्दावनहि मँझार । आय अचानक औचका मटुकी हो मेरी दीनी ढार २

गहि अचरा मोसों यों कह्यौ कोन वहू तू काकी नारि . कै विरियाँ यह मग गई दान वहू हमारो मार ॥३॥ कंचुकी पट नींवी गही लई बहुते केतिक मोल । कनिक खूभी के व्याज में परसे वहु मेरे पान कपोल ॥४॥ हँसि वीरी मुख में दई ग्रीवा हो मेरे मेली बाँह। मिस ही मिस मोहि लै चले गहवर हो अँधियारे माँह ॥५॥ जिय औरै मिस दान के वतियन हो मेरे परसे पाँय । करत वसीठी मिलन की सनमुख री मेरे नैंन चलाय ॥६॥ और कहा लगि वरनिये कहत बहु मोहि आवै लाज। जन त्रिलोक प्रभु सों रमी देखि सखी मेरे तन को साज ॥७॥२८॥

श्री कृष्ण जीवन लक्षीराम जी महाराज कृत–पद

मोहन मैं गूजर वरसाने की मोतैं नाहक मांड़ी रार ॥ पाँच टका की कामर ओढ़ें तापर करत गुमान। गाय चरावत नन्द की मोपै मांगत दधि कौ दान ॥मोहन०॥१॥ रत्न जटित मेरी इंडुरी हीरा लगे करोर। एक हीरा गिरि जायगो तेरी सब गायन कौ मोल ॥मोहन०॥२॥ कृष्ण जीवन लच्छीराम के प्रभु प्यारे मोरे नाहक माँड़ी रार। नेक चितै वलि जाँउ साँवरे मेरौ विमल विमल दधि खाय ॥मोहन०॥३॥२६॥

श्री नारायन स्वामी जी महाराज कृत–पद

हमरौ दान देहु ब्रज नारी। मदमाती गज गामिनि डोलै तू दधि बेचन हारी ॥ रूप तोहि विधना नें दीयौ ज्यों चंदा उजियारी। मटुकी सीस कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गले में राजै अलकैं घूँघर वारी। या बृज में जेती सुंदरि हैं सब हम देखी भारी। नारायण तेरी या छवि पर नंद नँदन वलिहारी ३०।

श्री वामन जी के जनमोत्सव के पद

भादौं सुदी द्वादसी के दिन श्री वामन भगवान के पद—राग धनाश्री-सारंग

प्रगटे श्री वामन अवतार। निरखि अदिति मुख करत प्रसंसा जग जीवन आधार ॥ तन घनश्याम पीत पट राजत शोभित हैं भुज चार। कुंडल मुकुट कंठ कौस्तुभ मणि औ भृगु रेखा सार ॥ देखि वदन आनंदित सुर मुनि जै जै करैं निगम उच्चार। गोविंद प्रभु वलि वामन ह्वै कैं ठाड़े वलि के द्वार ॥१॥

राग धनाश्री सारंग—राजा एक पंडित पौरि तिहारी। चारौं वेद पढ़त मुख पाटी है वामन वपु धारी ॥१॥ अपद द्विपद पशु भाषा जानत सूरज कोटि उजारी। नगरन में नर नारी मोहे अविगत अलप अहारी ॥२॥ सुनत वचन राजा उठि धाये आहुति यज्ञ विसारी। देखि स्वरूप महा मोहन कौ करि दंडवत जुहारी ॥३॥ चलौ विप्र जहाँ यज्ञ वेदी है वहुत करी मनुहारी। जो माँगौ सो देहुँ तुरंतहि हीरा रतन भँडारी ॥४॥ रहौ राजा ऐसी अधिक न वोलिये लागत दूषन भारी। तीन पैंड़ वसुधा मोहि दीजै जहाँ रचौं धर्म सारी ॥५॥ शुक्र कहैं सुनिये वलि राजा भूमि को दान निवारी। ऐतो विप्र न होइ आपुही आये छलन मुरारी ॥६॥ कीजै कहा जगत गुरु जाचैं आपुन भये भिखारी। करि संकल्प उदधि जल छाँड्यौ विप्र जु देह पसारी ॥७॥ जय जय कार भयौ भू ऊपर द्वय पैंड़ भई सारी। एक पैंड़ तुम देहु तुरत ही कै वचनन सत हारी ॥८॥ सत नहीं छाँड़ौं सत गुरु मेरे नापौ पीठ हमारी। सूरदास प्रभु सर्वस दीनों पायौ राज पतारी ॥ ९ ॥ २

साँझी उत्सव के पद

सांझी उत्सव प्रारम्भ–भादों सुदी पूर्णमासी से, कुवार सुदी १ परवा तक

गो० श्री हित हरिवंश चन्द्र महाप्रभु जी कृत–(यह पद नित्य होय है)

राग सारंग—बन की लीला लालहि भावै। पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहि नख सिख प्रियहि जनावै ॥ सकुचि न सकत प्रगट परिरंभन अलि लम्पट दुरि धावै। रंभ्रम देत कुलकि कल कामिनि रति रन कलह मचावै ॥ उलटी सबै समझि नैंनन में अंजन रेख बनावै। जय श्री हित हरिवंश प्रीति रीति बस सजनी स्याम कहावै ॥१॥

श्री नागरीदासजी महाराज कृत–राग गौरी (यह पद नित्य होय है)

फूलन वीनन हौं गई जहाँ जमुना कूल द्रुमनि की भीर। अरुझि गयौ अरुनी की डरिया तेहि छिन मेरौ अंचल चीर ॥१॥ तब कोउ निकसि अचानक आयौ मालती सघन लता निरवारि। विन ही कहैं मेरौ पट सुरझायौ इक टक मो दिसि रह्यौ री निहारि ॥२॥ हौं संकुचनि झुकि दबी जात इत उत वह नैननि हा हा खात। मन उरझाय वसन सुरझायौ कहा कहौं और लाज की बात ॥३॥ नाम न जानौं श्याम अंग हो पियरे रंग वाकौ हुतौ दुकूल। अब वही वन लै चलि नागरि सखि फिरि साँझी वीनन कौं फूल ॥४॥२॥

गो० श्री रूपलाल जी महाराज कृत–राग गौरी (श्याम सहचरी साँझी लीला)

खेलत साँझी लाड़िली सोहै अति अलबेली भांति हो। रूप अनूपम मोहनी संग सखी गगन की पांति हो ॥१॥ ललिता ललित सुगंध तेल लै कवरी गूँथि सम्हारी। फूलनि सों फूलन की रचना रतन फोंदना भारी २ सजल सुढार

माँग मुक्ता की रचि सिन्दूर बनाई । सखी विसाखा जिय अभिलाषा सजनी आप पुजाई ॥३॥ शीश फूल सुख मूल लाल कौ छत्र सुहाग बिराजै । बड्डे रतन अमोल जग मगैं कोटि भानु शशि लाजै ॥४॥ रतन बंगना लखत अंगना नैना रहे लुभाई । दीप शिखा सम रतननि बौरी लागत परम सुहाई ॥५॥ झिल मिल जुत सखि रतन बंदनी झल मलाति दुति नीकी । चित्रा चित्र विचित्र बनाई प्यारी प्रीतम जीकी ॥६॥ नील पीत मणि मानिक अद्भुत बैना सुभग सम्हारौ । मुक्तावलि तासों लगि निर्तत रति पति कौ मन हारौ ॥७॥ रतन जटित करननि में सोहै कर्णफूल रस झूलैं । झूमक मुक्ता लगे ढढारे प्यारे अलि अनुकूलैं ॥८॥ चंपक लता सँवारी रचि-रचि मगर पत्रिका प्यारी । चंदन वंदन विविधि सुगन्धनि मृग मद बेंदी प्यारी ॥९॥ वड्ड़े विमल सजल द्वै मोती मधि नथ लालहि लीयें । परम सुहाग भाग की मूरति बसत सदा पिय हीयें ॥१०॥ हरित जराइ रतन कौ टीकौ नीकौ कहत न आवै । सुरख नील-मणि फवी अनूपम लखि सखि हियौ सिरावै ॥११॥ जग मगात मुख शशि उजियारी प्यारी कुंजनि छाई । निरखत सदा चकोर लाल दृग छिन-छिन लेत बलाई ॥१२॥ कंठसिरी दुलरी मधि चौकी दुति दीपति अरुनाई । पोत गुंज गति तुंज करत लखि प्रीतम प्रीति बढ़ाई ॥१३॥ अद्भुत जोति होत पदकनि की पंकति ऊपर आई । निज प्रतिविम्ब झलमलै तिन मधि लालन रह्यो बिकाई ॥१४॥ अगनित चन्द मणिनु कौ नीकौ चन्द्र हार मनहारी । सखी तुंग विद्या पहिरायौ मायौ अति सुखकारी १५ मुक्तनि हार हमेल नगनि की

लाली चहुँ दिशि छाई सखी इन्द्र लेखा जू ने अरपी निरखि निरखि न अघाई ॥१६॥ अंगद जुत मखतूल सुहाये भाये सुख के राशी। लटकत झूमक झूम झुमारे कारे प्रेम प्रकाशी ॥१७॥ जटित नील मणि दुहूँ करनि में वलया बलि छवि सीवाँ। हरित जंगाली छनु पछेली मणिमय लखि सखि जीवाँ ॥१८॥ अद्भुत लाल मणिनु के कंकण हरिन सहित सुहाये। गजरा द्वै लर बड़े मोती गोती लाड़ लड़ाये ॥१६॥ पद्मराग मणि रतन चौकरी पन्नन चहुँदिशि जरिया। अँगुरिन मुद्रावलि बहु विधि की नगनि अमोलनि भरिया ॥२०॥ छल्ला हरित हरत मन प्रीतम उपमा कहा लगाऊँ। महँदी लाल पानि नख मणि दुति निरखि निरखि बलि जाऊँ ॥२१॥ अरस परस छबि कौं दरसावत सरसावत मनु प्यारी। फबी आरसी अनुपम अरपी श्रीहित रूप निहारी ॥२२॥ मन मोहिनी रुणित कटि किंकिणि जटित जराइ विराजी। जेहरि तेहरि पायल नूपुर निरखि निरखि रति लाजी ॥२३॥ जारी मनुहारी प्रीतम की जरित जराइ जु विछुवा। अनवट फूल फूल मणि मानिक देत मनोजनि सिछुवा ॥२४॥ सखी इंदु लेखा लिखि जावक चित्र विचित्र बनायौ। चरण कमल नख मणि दुति दीपति पत्र-पत्र प्रति छायौ ॥२५॥ सखी रंग देवी जू रचि-रचि तरुवनि रुचिर ललाई। चरण कमल सुकुँवार सार ये महँदी लगत सुहाई ॥२६॥ दसन दाड़िमी कुसुम रंग की सारी प्यारी पहिरें। लगी किनारी झूम झुमारी उठत छविनु की लहरें ॥२७॥ जग मगात है लहँगा जरकसि अरप्यौ सखी सुदेवी। अति छवि कहत बनैं ना बैंना नैंना प्रीतम सेवी ॥२८॥ नख सिख शोभा

सिंधु लड़ैती बनक बनी सु बनी है । हित अलि रूप निरखि ललचाने मोहन श्याम धनी है ॥२६॥ रतन जटित चौकी पर इहि विधि कुंज विहारिनि राजैं । शोभा कहत न आवत बैननि कोटि काम रति लाजैं ॥३०॥ हितू एक सहचरि प्रीतम की तानें जाइ सुनाई । अति उतकंठित लाल विहारी छिन छिन लेत बलाई ॥३१॥ क्यों हूँ मैं अवलोकौं यह छबि सफल करौं दृग जाई । जो छिन जात सुफेर न आवत तातें चित अकुलाई ॥३२॥ सहचरि भेष धरौ जो प्रीतम तौ निज रूप निहारौ । और उपाय नहीं जिय आवत आपुन बुद्धि विचारौ ॥३३॥ चाह जानि तब लालन मन की ललिता लई बुलाई । पहिलौ जो शृंगार प्रिया कौ सो सबही लै आई ॥३४॥ मन भावन अति चावन पहिरौ शोभा कही न जाई । नख सिख भूषण भूषित अँग अँग उपमा गई लजाई ॥३५॥ ललित छैल गति ललित त्रिभंगी चलत चाल अलवेली । सहचरि सँग आई जहँ प्यारी अद्भुत रूप सहेली ॥३६॥ सरस सुगंध मालती माला लाला अलि ने अरपी । ललिता पाइनि डारि बिनय करि निज सहचरि कर धरपी ॥३७॥ अति सोहन मन मोहन की उनहारि लखी मन मानी । निज कर सों कर गहि बैठारी निकट प्राण सम जानी ॥३८॥ गरबहियाँ दै रूप निहार्यौ विवि कर दर्पन लीनें । मुसिकनि नैन बैन अवलोकन अदल बदल मन कीनें ॥३९॥ तब रिझवारि रीझि श्री हित अलि दम्पति लाड़ लड़ायौ । रूप मंजरी कनक थार सजि व्यंजन विविधि पवायौ ॥४०॥ बीरी दई बिसाखा रुचि सों ललिता सौंधौं ढार्यौ महक्यौ सौरभ कुंजनि कुंजनि अलिगन सर्वस

वारयौ ४१ चंपकलता चतुर कर जोरे बिनती करी पधारौ, अहो लाड़िले अलक लड़ीले साँझी सुख विस्तारौ ॥४२॥ रूप नेह छवि छके छवीले अंश भुजा विवि दीने। चलत चाल गज गति अलबेली विवि कर कमलनि लीने ॥४३॥ लटकि लटकि मुसिकात जात बतरात कछू मन खोलैं। चितवनि रूप सनेह प्रेम की चितै चितै चित तोलैं ॥४४॥ पहुँचे फुलनि मों फूलनि की कुंज लली गुन गावैं। निरखत पुष्प विविधि वहु रँग के दंपति प्रेम बढ़ावैं ॥४५॥ रँग-रँग की डारियाँ वहु भरियाँ फूलन फूलन अलियाँ। नवल सखी प्यारी सँग तोरति फूलनि मानी रलियाँ ॥४६॥ जुही मालती जाती मल्ली कुंद कदंव निहारैं। गेंदुक नवला सी कर कंजनि खेलत प्राणनि वारैं ॥४७॥ मृग नैंनी गज गैंनी वाला लाला अलि मन जीती। धनि धनि भाग सुहाग आज यह धन्य प्रीति रस रीती ॥४८॥ प्रिय गुन गावति कमल फिरावति अलि दंपति लै आई। पत्र पत्र प्रति लतनि लतनि में रूप घटा छवि छाई ॥४९॥ साज समाजनि सहित युगल वर पहुँचे निभृत निकुंजा। निज कर कंज भीत कंचन की लीपी मृग मद पुंजा ॥५०॥ चंदन अतर अरगजा चोवा सरस सुगंध मिलायौ। कामधेनु के गोवर सौं रचि साँझी चित्र बनायौ ॥५१॥ चीतत फूलनि सौं फूलनि सौं अलि गनसुवटा गावैं उमग्यौ हिय अनुराग रंग रस प्रीति रीति दरसावैं ॥५२॥ छके छवीले रूप रसासव विवि मुख चन्द्र चकोरी। सहचरि गण उड़ गण चहुँ दिशि तें चितै चितै चित चोरी ॥५३॥ धूप दीप करि अर्घ भोग धरि अंचर वारति माई। करत आरती तन सिंगारती रूप घटा छवि छाई ५४ भरि भरि

ओतिनु सुमनन वारत करि प्रणाम सिर नायौ। विनती करी दुहुँनि कर जोरें मन अभिलाष पुरायौ ॥५५॥ लाल लड़ैती इहि विधि साँझी थरपी संध्या देवी। रस संकेत होत हित चित कौ दंपति सुख की सेवी। ॥५६॥ नवल सखी अरु कुँवरि लाड़िली करि ब्यारू सुख लीनौं। जूठन थार नवल सखी वागो हित अलि रूपहिं दीनौं ॥५७॥ बीरी माल लाल सब कौं दई विदा भईं अलि सबहीं। शरद निसा सुख विलसैं दंपति तलप विराजे जबहीं ॥५८॥ निभृत निकुंज सहचरि बंशी जू ततसुख सेवा कीनी। उद्दीपन संपत्ति सकल सुख अरपी सेज नवीनी ॥५९॥ हित अरु सुरत सनेह चाह सुख सहचरि श्रीहित संगा। रूप मंजरी चरण पलोटति नव नव प्रेम अभंगा ॥६०॥ जो यह साँझी फूलनि पूजै फूल सहित फल पावै। नित्य विहार उपासनु आस न और कहूँ ठहरावैं ॥६१॥ विष्णी वृज दासी विवि मिलि कैं बिनती अतिसय कीनी। साँझी नित्य विहार प्रकासी श्री हित रूप प्रवीनी ॥६२॥ जो इहि विधि या साँझी ध्यावै गावै वाँछित पावैं। जैं श्री रूप लाल हित कुंज बिहारी बिहारिन जू अपनावैं ॥६३॥३॥

श्री प्रेमदास जी महाराज कृत—राग गौरी (श्री राधा दासो सांझी लीला)

रंग रंगीली लाड़िली प्यारी खेलति साँझी साँझ हो। लियें ललित सँग सहचरी नव कुंज महल के माँझ हो ॥१॥ लाल रसाल-रुमाल माँहिलै फूले फूल सुरंग हो। मदन सदन को रवन चले रचि रचत तलप नव रंग हो ॥२॥ तब लगि ललिता ललित लली सों कही बात हित जानि। सुनौ कुँवरि मिलि खेलैं साँझी यहै खेल रसखानि ३ सुनत सखी के

वचन छबीली फूल उठी मन माँहि रमकि झमकि चमकति चपलासी हँसि हँसि परति उमाँहि ॥४॥ नीलाम्बर सारी तिय तन युत हेत पहुप अस सेत । सुंदर सरस श्याम घन में मनौं नग उड़गन छवि देत ॥५॥ अँगिया अरुण बनी कटाव की कसी कुचनि पर खैंचि । मनु अनुराग जाल में लीने चक्रवाक से ऐंचि ॥६॥ लहकि हरित लहँगा लाग्यौ कटि लेत घेर मन घेर । लावनि लागे मुक्तावलि फिरैं लगि लावनि के फेर ॥७॥ शीश फूल सों लगि मुक्ता लर लगी तरौननि जोर । मनौ सूर छवि चकरिनु खेलत किये रूप की डोर ॥८॥ चंचल नैंन समात न अंचल विहँसत वदन अनूप । मानौ चंद फिरावत कमलनि वरसावत रस रूप ॥९॥ नासा कौ तिल तूल न पावत फूल्यौ तिल तिल होय । तनु पिसाइ तऊ नेह भयो इति मुँह न हिलायौ सोय ॥१०॥ कंचन की बनी नील मणी सो नासा ललित लवंग । सुवरन चंपक लियें भली विधि पियत रंग सों भृंग ॥११॥ आतप में तपि जपा जप्यौ जब होन अधर सम आय । सूर प्रवीन भांति हिय वाके दई कलाँस छुटाय ॥१२॥ रचित पान रसखान दसन दुति रहे अरुणता पूर । मानौ रूप सिंधु में पैरत मुक्ता रँगे सिन्दूर ॥१३॥ कर महँदी महँदी की वेंदी वाढ़ी अमित उदोति । मनौ कमल में बैठी बन ठनि चन्द्र वधू करि जोति ॥१४॥ पग की सम करिवे कों आये थलज जलज छवि सींव । जाही ते कंटक में डारे उंपजत तहीं सदीव ॥१५॥ कुसुम छरी सी खरी छर छरी कुसुम छरी कर लेत । अली भली रस रलीं लियें सँग आई कसम निकेत १६ अलवेली इक धाई आई कहति श्याम

सों वैन। चलौ कुँवरि कौ कौतुक देखौ सफल करौ निज नैन ॥१७॥ अरबराइ चल्यौ लाल ख्याल हित बाल भेष धरि प्रीति। मनौ बाल के ध्यान लाल भयौ कीट भृंग की रीति ॥१८॥ श्याम सखी कों लखि श्री श्यामा मोहत ह्वै बतराय। को हैरी तू रहति कहाँ तेरौ नाम कहा सुखदाय ॥१९॥ सुनि प्यारी हौं तोपर वारी. तूही मेरे प्रान। मोहि कहत सब राधा दासी तेरी सखी सुजान ॥२०॥ तब ललना लड़काय बाहु निज पिय अलि ग्रीवाँ डारि। श्याम फूल चुनै गौर चुनति त्यों गौर श्याम फुलवारि ॥२१॥ रँग रँलियाँ अलियां रिमि-भिमियां लै रंग डलियाँ पान। बीनत कलियाँ बहु विधि खिलियाँ करत मधुप सँग गान ॥२२॥ सौन जुही के सौन जुही के सौन जुही लै फूल। वैनी छवि सैनी गुहि अलकनि धरति जुही के फूल ॥२३॥ चुनत मोतिया चंद जोतिया मोतिया रद चमकाय। करत ख्याल रचि माल बाल कौं पहि-राई हुलसाय ॥२४॥ पीत चमेली सित रस भेली अलवेली अलि बीन। पाइजेव रचि पाइनु डारी पहुँची पहुँचनि कीन ॥२५॥ मृदु मल्ली चन्दन मल्ली की कल किंकिण अलि ल्याई। बाँधत कटि में कटे झुके हरि लखि लखि तिय मुसिक्याई ॥२६॥ मौलसिरी को सिरी दई अलि ताके फूलनि तोरि। तिनकी बेंदी रची भाल पर लाल बाल रँग बोरि ॥२७॥ फूली डारि निवाइ नारि नव चुनति फूल रस मूल। ललित लतनि गहि लटकति तिन पर झमकत भौंरा फूल ॥२८॥ फूली फुलवारी में सजनी फूली साँझ सुहात। अरस परस फूलनि के भूषन पहिरत फूली गात २९। फूलनि की गेंदैं

नवलासी रची नवल नव भाँति । खेलति खेल बनाय धाय धपि कुलकि कुलकि किलकाँति ॥२०॥ कमल मुखी दृग कमल नचावत ल्याइँ कमलनि भाम । लैकर कमल फिरावत गावत आइँ साँझी धाम ॥२१॥ हीर भीति लै नीर सुगंधनि धोई पोंछि बनाय । लाल गुलाल अरगजनि लै लै लीपति बाहु चढ़ाय ॥२२॥ मृग मद घोल अमोल अनूपम केशरि कलित पिसाय । रचित उभय मूरति मन मोहन गौर स्याम छवि छाय ॥२३॥ कंचन के फूलनि सों चीती मूरति साँवल वाम । मूरति गौर स्याम कर चीतत लै लै फूलनि श्याम ॥२४॥ हित रूपा अलि कहत लली सों ये हित देवी देव । मन बच क्रम करि पूजौ इनकौं सफल होंहि सब सेव ॥२५॥ धरत भोग भामिनि गज गामिनि भरि भरि कंचन थार । मोदक मकरंदी मधु मेवनि रचि रचि धरत सँवार ॥२६॥ कनक कचौरा धरे भोग धरि दिपत थार मधि चारु । मानौ विमल चन्द सौं चमकत पहिरे उड़गन हार ॥२७॥ शीतल जल पिवाय अचवन दै वीरी धरी रचाय । हित आरति आरती उतारति बाजे विविधि बजाय ॥२८॥ श्यामल सखी विनय कर माँगति नेह कुँवरि सँग देहु । करि दण्डवत कहति तिय दै मोहि देवी पिय सँग नेहु ॥२९॥ पूजि पूजि करि सखी सहेली मिलत सु भरि भरि अंक । देत वधाई गावति माई फूली फूलति निशंक ॥४०॥ श्याम सहेली गौर नवेली मिलति मानि सुख चैन । मिलत वाल सों लख्यौ लाल के अंग अंग में मैन ॥४१॥ छल सौं जानि हाल दै पिय की छाती छुवति सुछंद । कुँवरि लखे मुख मोरि हँसि तिय जान्यौ पिय को फंद ४२ हँसि हँसि परीं

सखीं सब लखि लखि बाढ़्यौ आनँद पुंज। ललिता ललित विनय सौं ल्याई दम्पति कौं रति कुंज ॥४३॥ भोजन भलैं कराय दुहुँनि कौं बैठारे सुख सैन। दोऊ मैन के चैनन भीने निरख शरद की रैंन ॥४४॥ भरि भरि गोदनि बांटत मेवनि सहचरि चहचर छांड़। खात खवावत हँसत हँसावत भरौ दुहुँनि कौ लाड़ ॥४५॥ यौं कौतूहल करति सहचरी नित प्रति चोज बढ़ाय। सदा सखी दम्पति के सुख सौं और न इन्हें सुहाय ॥४६॥ जो यह साँझी पढ़ै पढ़ावै गावै हित के भाय। प्रेमदास सौं साझौ पावै या सांझी में आय ॥४७॥४॥

श्री घनश्याम जी महाराज कृत–राग गौरी।

श्री वृषभानु लड़ैती गाइयै कीरति कुल मंडन बाल हो। सोंने कीसी वेलि है तन चंपे की सी माल हो ॥१॥ हंस गवनि मृग लोचनी श्यामा शोभित सहज सिंगार हो। चमकत चंचल चीकने सिर सटकारे बार हो ॥२॥ प्रति विंवित कच श्याम सीस पर शोभित सुंदर सार हो। चंद के फंद परे अहि नंदन अरुझे कंजन जार हो ॥३॥ अतलस कौ लहँगा फब्यौ दरियाई की आँगिया पीत हो। उरज सुभट कंचन कवच सजि आए रति रन जीति हो ॥४॥ कृश कटि केहरि देखि दुरे हरि जेहरि तेहरि पाँय हो। गज गवनी अवनी कवनी रवनी लेति वलाय हो ॥५॥ कर चूरौ रलकैं झलकै पलकैं न लगैं पिय देखि हो। अँगुरिनि मुँदरी पहुँचिन गजरा बाजू वंद विसेषि हो ॥६॥ चंपकली-चौकी चमकै दमकै दुलरी पिय पोति हो। चित कौं लेति चुराय चाहि कैं वदन चंद की जोति हो ७ अधर अरुन दमकैं दसनावलि श्याम चपलता चारु हो

मनि कनक की तनक तरकुली कान हो ६ पिय त्रिष मोचन रति रस रोचन चंचल लोचन चारु । कुँवर किशोर चकोर चैंदुवा पढ़त चंद चटसार ॥१०॥ अलि कुल गंजन रति रस रंजन नैननि अंजन दीन । क्रीड़त सुधा सरोवर महियाँ जनु मनसिज के मीन ॥११॥ समर सहायक सायक घायक नव रस नाइक नैन । कुँवर कुरंग सुरंग कँवल कोंननि सौं ठाँनत ठैन ॥१२॥ कारी झपकीरी भारी वरुनी वरनै कवि कौन । भौंहैं मन मोहैं सोहैं मनो हाय भाइ के भौंन ॥१३॥ सीस फूल सोहै मोहै बनी तनिक कनक की आड़ । चिबुक चारु मुसिकाय हँसति जब परति कपोलनि गाड़ ॥१४॥ सुभँवरिया दुपहरिया के फूल की वेंदी दीनी भाल । चंद वधू मानौं नवल चंद कौं आय मिली नव बाल ॥१५॥ इहिं विधि छवि अगाधा साधा राधा जू सखियनि माँझ । विटियाँ बहुत अहिरिनि की मिलि खेलत साँझी साँझ ॥१६॥ गोधूरक विरियाँ डलियाँ फूलन की लै चलीं हाथ । वीनत फूलनि जमुना कूलनि श्यामा जू कै साथ ॥१७॥ एक कियें ओली चोली पर चाँपि चिवुक तर चीर । फूलहि तोरति तनहि मरोरति जहाँ भँवरन की भीर ॥१८॥ एकनि लावनि ललित सुपट की अटकी करि सौं छीन । रमकि झमकि पल्लव बनाइ तरु वीनति फूल प्रवीन. ॥१९॥ जाय जुही केतकी निवारी चंवेली अरु वेलि । फूलनि की गुहि गेंदैं बाला खेलत वन में खेलि ॥२०॥ कुंदी कुंद करनि कोमल निवारति अवला वेलि । ललित लवंग लता बनिता पर रहे

झूँमिका झेलि २१ मौलसिरी के फूलनि की नक फूलि बनावति एक । श्यामा सुख धामा अभिरामा खेलत खेल अनेक ॥२२॥ कुंजबिहारी जू तिहि छिन दुरि देखत कुंजनि वोट । रहे चित्र कैसे चीतै दृग लगी दृगन की चोट ॥२३॥ कियौ सखी कौ रूप लाल भरि लै गुलाव दल गोद । तिया रूप धरि दरस कियौ हरि मान्यौ मन में मोद ॥२४॥ निरखि निरखि वृषभानु नंदनी बोली बचन रसाल । सब सिंगार सोहै मोहै तू कौहै री नव बाल ॥२५॥ क्यौं है फिरति अकेली हेली इह बन जमुना कूल । नंद गाँव घर साँझ कौं हौं वीननि आई फूल ॥२६॥ उतकंठित वृषभानु नंदनी कंठ भुजा गहि मेलि । आजु अवार भई साँझी कौं संग हमारैं खेलि ॥२७॥ सखी लईं सब बोलि बोलि गोरंभन धुनि सुनि कांन । बड़ी बेर जैहैं घर तौ खिजि हैं बाबा वृषभांन ॥२८॥ कमल फिरावति गीतनि गावति आवति घर ब्रजबाल । फूलन की करि गैंद लकुटिया फूलन की उरमाल ॥२९॥ चंद्रभगा चंद्रावलि चंचल नैंनी चली हैं धाम । वहुत फूल वीनैं भट्ट अरु पूजे मन के काम ॥३०॥ माय धाय उर लाय लई कीरति जू परम प्रवीन । अरघ वढ़ाय लई घर भीतर आपु आरतौ कीन ॥३१॥ मृग मद केसरि चंदन सौं श्यामा जू लीपी भीति । कामधेनु के गोवर सों रचि साँझी फूलन चीति ॥३२॥ धूप दीप अर्ग भोग अमृत धरि आपु आरतौ उतारि । गावति गीत पुनीत किशोरी श्री वृषभानु कुँमारि ॥३३॥ करि व्यारू सँग खेलि चलीं सब अपनैं अपनैं धाम । राधा जू अरु नवल सखी सुख विलस्यौ चारयौ जाम ३४ तिय वागौ

ललिताहि दियो राधा पिय चतुर सुजान रसिक रूप धरि क्रीडत हरि रस सागर प्राननि प्रान ॥३५॥ शरद निशा सुख इहिं विधि राधा माधौ नित्य विहार। सोभा परि वलि जाइ श्याम घन अवलोकत सुख सार ॥३६॥५॥

राग गौरी—कुँवरि लड़ैती खेलहीं सब सखियनि लीयें संग हो ॥टेक॥ कोइल केकी लै फूलनि कौं अली लली लै आवैं। शरद सुहाये गीत क्वार के घर घर सुवटा गावैं॥१॥ मोपै कहिय न जाई भटू दुपहरिया की शोभा। फूलनि के देखैं मन फूलैं साँझी लाइक लोभा ॥२॥ तिल के फूल त्यौरिया के तोरईयनि के सब तोरैं। सन केसरि खंडी के शीतल साँझी कौं सब जोरैं ॥३॥ सूरज मुखी फूलन कौं फूलीं चंद मुखी लै आवैं। पगुला के फूलन कौ गहनौ सुंदरि सबै बनावैं ॥४॥ पियबाँसे के फूलनि गुहि पहिरैं नव माला। सिंगार हार के फूलनि कौ सिंगार करैं ब्रजबाला ॥५॥ पीयाबाँसे कैसे तन के पीत फूल लै धाईं। मधुर माधुरी के फूलन गुहि सखी माधुरी लाईं ॥६॥ जूही जाही माला लै आईं जुही प्राण की प्यारी। चंवेली चंपे के फूलनि की गुहि ल्याईं सारी ॥७॥ सदा सेवती श्री श्यामा कौं फूल सेवती आनैं। रायवेलि कौ सब गहनौं सखी रायवेलि गुहि जानैं ॥८॥ दल गुलाब के तोरि गोद में तिय गुलाब लै दौरी। मौलसिरी कौं सिरी चढ़ी सखी मौलसिरी सी मौरी ॥९॥ सखी मालती की माला की फूल मालती-फूले। कुंदन कैसे तन की कुंदी के दसन कुंद सम तूले ॥१०॥ कमलासौकर कमल फिरावति सखीं कमलनी ठाढ़ीं। कमल कुचनि पर चंदन चोली साँचे सौं भरि काढ़ीं ११ नैनन की नवलासिनि

मारति सखी निवारी प्यारी । आपुस में की फूलन की अरबी सवै निवारी ॥१२॥ सौंनें कैसे फूल सखी री सौंन जाय के सोहै । सौंनौ और सुगंध सखी जाकी पटतर कौ कहि को है ॥१३॥ पाडर सखी लखी सखियनि में करि पाडर की माला । पाडर के पायनि तर लोटति पंचवान की वाला ॥१४॥ प्रेम प्रिया रुचि सौं लै आई पारजात की बौंड़ी । सवही कौ मन मथ्यौ सखी मनमथ माली की मौंड़ी ॥१५॥ मुकलित कली मोगरे की गुहि गुहि कै गैंद वनाय । सुंदरि सवै साँझ सी फूलीं खेलन साँझी आय ॥१६॥ डरियनि में फरियनि में फूलौ फूल गोद में लीनैं । चूरी खुँभी पिय पोति जोति सादा सिंगारहिं कीनैं ॥१७॥ एक एक वेंदी वंदन की चिवुक विंदु छवि लीले । ससि वाला अलि लाला मानौं चंद मध्य चटकीले ॥१८॥ कंठनि में दुलरी सौंनें की पाँयनि चूरा चमकैं । झरत फूल मन हरत हँसनि में दसन दामिनी दमकैं ॥१९॥ चम चमानि चंद्रमान की चकचौंधी चित चुभि चोरौ । उज्जल उरजनि में गुरजनि में रपटि परयौ मन मेरौ ॥२०॥ निरखि निरखि नक फूली नाक की लोभी मन ललचायौ । वारिन सौं मन वार वार लै वारनि में अरुझायौ ॥२१॥ जिते फूल फुलवादि कही सब सखी रूप ह्वै आईं । हँसि हँसि कै वृषभानु सुता आँखिनि सौं आँखि सिराई ॥२२॥ साँझी रचत गाय गोवर सौं पुनि कोइल ज्यौं कूजैं । वृंदनि वृंदनि मनहु वीजुरी श्याम घटा कौं पूजैं ॥२३॥ जो साँझी फूलनि सौं पूजैं फूलनि फूल चढ़ावैं । साँझी के पूजे कौ यह फल सकल फूल सौं पावैं ॥२४॥ लाल लट्टू ह्वै रहौ भट्टू यौं झमकि लियें भुज झेली । करति आरतौ कुँवरि कुँवर कौं श्री घनश्याम सहेली २५ ६

श्री हरिदास जी महाराज कृत—राग गौरी

कीरति कुल मंडन गाइये वृषभांन नृपति की बाल हो। कंचन तन सोंहे मोहे उर पहिरें मुक्ता माल हो ॥१॥ सखी वृंद सब आय जुरी वृषभांन नृपति के द्वार। बीनन फूल चलौ बन राधे नव सत साजि सिंगार ॥२॥ यह सुनि कीरति जू हँसि कें प्यारी को कियौ है सिंगार। कवरी कुसुम गुही हैं मानौं उड़गन की अनुहार ॥३॥ सीस फूल जिमि चंद विराजत शोभा कही न जाय। कोटि चंद वारों मुसिकन पर काम रह्यौ मुरझाय ॥४॥ बंक विराज रहे भृकुटी तट खुटिला श्रवनन पास। यों लपटाय रहे दोऊ जन नयन दरस की आस ॥५॥ करन फूल झूमक अरु बंदी लटकन बैंदि लिलार। नक वेसर मोती अति सोहै लटकन परम सुढार ॥६॥ मुखहि तंमोल अधर अरुनाई दसन लसन अति सार। चिबुक बिंदु मधुकर सुत मानौं बैठे आसन मार ॥७॥ अंजन ऊपर खंजन वारों नयन चपलता मीन। कीरति जू छवि निरखि कें दीठ दिठोना कीन ॥८॥ चोकी चमकत मनियां दुलरी चंप कली उर हार। बाजू बंद पछेली चूरी कंकन गजरा हार ॥९॥ पोंहची रत्न चोक और मुंदरी नख भूषन छवि देत। श्री कर कमल विराजत मानों उडुगण चंद समेत ॥१०॥ छुद्र घंटिका कटि तट राजत जेहरि नूपुर पाय। अँगुरिन बिछिया अनवट सोहें शोभा कही न जाय ॥११॥ हरे कसब कौ लहँगा सोहै कंचुकी केसरी अंग। सारी सुही रँगी है मानों गुलाबाँस के रंग ॥१२॥ करि सिंगार कह्यौ कीरति जू जाउ लड़ैती साथ। अली यूथ में चली परस्पर फूलन डलिया हाथ १३ चलत चाल

मराल बाल श्री राधा जू सखियन मांझ । वीनत फूलन यमुना कूलन खेलत साँझी साँझ ॥१४॥ जाल रंध्र देखत मन मोहन दृष्टि परी व्रज बाल । त्रिया रूप कियौ है तबही आय मिले ततकाल ॥१५॥ छवि निरखत वृषभानु दुलारी वहुत करी मनुहारि । वीनत फूल अकेली हेली तू कोहे सुकुमारि ॥१६॥ कौन गाम वसत हौ सुंदरि कहा तिहारो नाम । आज अवार भई है प्यारी चलो हमारे धाम ॥१७॥ नंद गाम में वास वजति हूँ साँवरी मेरो नाम । सांझी मिस आई हौं या वन पूजे मन के काम ॥१८॥ सोंन जुही चमेली चंपा रायवेलि अरु वेलि । गुलाबाँस के गेंद करे कर करत परस्पर केलि ॥१९॥ कमल कनेर केतकी निवारौ सेवती सदा गुलाव । गुलतुर्रा सदा सुहागिन फूलन की भरि छाव ॥२०॥ ललिता चंपक लता विसाखा स्यामा भामा जेह । चंद्रभगा तुंगा चंद्रावलि राधा माधव नेह ॥२१॥ ठौर ठौर सब कहत सखिन सों चलौ भद्र घर जाँहि । स्यामा जू अरु नवल सखी दोऊ गहे परस्पर वाँह ॥२२॥ सोंधे गंध मध्य चंदन मिलि करत केलि मन भाये । निरख देव दुंदुभी वजावत पुष्पन वृष्टि कराये ॥२३॥ फूलन गेंद सब लिये कर आवत गावत सांझी गीत । गज गति चाल चलति व्रज सुंदरि बढ़ी परम रस प्रीत ॥२४॥ चहुँ दिस ते सब आय जुरीं वृषभांनु नृपति के द्वार । कीरति जू तब करत आरती राई लौंन उतार ॥२५॥ कीरति विहँसि कह्यौ मृदु बानी लली अली यह कौंन । प्यारी कह्यौ नँदगाम वसति है खेलन आई भौन ॥२६॥ केसर चंदन अगर अरगजा मृग मद कुंकुम गार । कामधेनु कौ गोवर लैकैं साँझी धरत सँवार ॥२७॥

धूप दीप करि भोग धर्यौ आरती करी है बनाय। माँगत सीख सबै ब्रज बाला हाथ जोर सिर नाय ॥२८॥ व्यारू आज करौ मिलि ह्याँहि राधा जू के साथ। कीरति जू यौं कहत सबनि सौं परसूँ अपने हाथ ॥२६॥ करि व्यारू गृह गईं सहेली रह्यौ खेल कौ रंग। कमल सेज पर पौढ़े दोऊ मिलि साँवरी राधा संग ॥३०॥ कहा कहूँ कछु कहत न आवै प्रभु को यही स्वरूप। त्रिया वसन ललिता ही दीये कीये है निज रूप ॥३१॥ वरनौं कहा यथामति मेरी रसना एक बनाय। हरिदास प्रभु की यह शोभा निरखत मन न अघाय ॥३२॥७॥

श्री हरिराम व्यास जी महाराज कृत—साँझी

श्याम सनेही गाइये तातें श्री वृंदावन रज पइये हो ॥ध्रुव॥ राधा जिनकी भाँमती कुंजन कुंजन केलि। तरु तमाल ढिंग अरुझी मानों लसत कनक की बेलि ॥१॥ महा मोहिनी मन हर्यौ रस वस कीने लाल। कुच कमलन कर मन मिल्यौ लट बाँध्यौ मैन मराल ॥२॥ नयन सैन दै तन वेध्यौ मन वेध्यौ कल गान। अंजन फंदन कुँवर कुरंगन चलें दोउ भौंह कमान ॥३॥ नव वेसर वरछी लगी चित चंचल मन मीन। अधर सुधा दै वेधियौ चकृत किये आधीन ॥४॥ अंग अंग रस रंग में मगन भये हरि नाह। व्यास स्वामिनी सुख दियौ पिय संगम सिंधु प्रवाह ॥५॥८॥

श्री नागरीदास (नागरिया) जी महाराज कृत—राग गौरी

जमुना के कूल फूल लता रही भूल री। तहाँ द्वै सखी हैं नील पियरे दुकूल री ॥ गो धूरक वेर इतै ह्वै गई अवेर में देखत ठगी सी रही में दोऊ तेहि वेर में बीनत

हैं फूल फूल फलहि लहत हैं। झुमक झुकावै झूम डारनि गहत है॥ सांवरी औ गोरी छबि सो है अलवेली है। सबही ते न्यारी न्यारी डोलत अकेली है॥ वेसर अलक मांझ लट अरुझात है। ताकी सुरझावन में अरुझी ही जात है॥ मेरी सौं कपट तजि खोल मुख मौन है। नागरिया मोसौं कहि सखी यह कौन है ॥६॥

राग गौरी–एरी आज सांझ समय जमुना के कूल फूल लेत फल पाये। हेरत हेरत सघन द्रुमन चितवत ही ताहि चायनु चिकनाये॥ महा मुदित वृषभानु भवन कौं गावत चली हैं वधाये। नागरिया साँझी के पूजत इहि वृन्दावन भये मनोरथ भाये।१०।

राग पूरबी–रहे दोऊ वदन निहारि निहारि। फूलन वीनत श्याम सखी उत इत श्यामा सुकुँवार॥ लता करनि में रह गई इत उत सकै कौन निरवार। नागरिया मिलि नैन दुहुँन के वड़े ठगनि ठगवार ॥११॥

तिताला–दुहुँनि की अँखियाँ अँखियनि माँझ। अँखियन में ही साँझी खेलत अँखियन फूली साँझ॥ रूप वगीचनि फिरत फूल भरी गलवँहियाँ दै अँखियाँ। गौर श्याम अँखियनि। की उरझनि उरझनि नागरि सखियाँ ॥१२॥

कवित–साँझी फूल लैन सुख दैन मन मैननि कौ श्यामा जू साथ यूथ युवतिन के धाये हैं। चलत अधिक छवि छाजत छवीलिनि के, रँगीलिनि के रंग रंग पट फहराये हैं॥ नागर निसान नाद नूपुर समूह वाजैं, अंग की सुवासनि भ्रमर छुटि आये हैं। वृन्दावन बीच पाँइ धरत उठी यों गाइ, मानौं घनश्याम जान मोर कुहकाये हैं १३

कवित्त–ऐसैं या सघन वन निर्जन के माँहि मैं तो, आवती तौ जानी नाहि जानी जब गाई हो। और है न संग कोऊ एक जाति युवती हो, विना ही विचारे जोर जोवन के धाई हो॥ अब फिर जाहु आप अपने भवन सब, ठौर सु इकौसी फिरौ मदन दुहाई हो। किधौं तुम नागरि हो हमैं समुझाय कहौ, कौन की पठाई यहाँ कौन काज आई हो ॥१४॥

कवित्त–फूलन के वीनने को आई इहि वन मिलि, वूझिवे की हिय ऐसी धरनि व क्यौं धरी। टेढ़ी ये चितौन दीसैं टेढ़ी टेढ़ी बातैं कहौ, टेढ़े ह्वै के ठाढ़े छली छैल रोपि के छरी॥ उचित नहीं यहाँ अकेले हो युवतिन में, नागर निकस जाहु याहि साँकरी गरी। ना तौ अनबोले रहौ छाँड़ि मग मेरे, हम आवेंगी हजार वेर तुमकों कहा परी ॥१५॥

कवित्त–हमही को चिंता इहि वन की रहत नित, नित रखवारे रहैं लाग्यौं चित चेत है। हम आठौयाम सेवैं काम नृप धाम यह, सहैं घन घाम अति तातैं हिय हेत है॥ हमहीं ते गहवर हरौ ह्वै रह्यौ है महा, नागरिया प्यारौ मीनकेत रस खेत है। हम ही कों दैकैं कछू लैनो होय सो लेहु, यों पराये फल फूलन कों कौन लैन देत है ॥१६॥

कवित्त–कहा है परायौ सब दीखत है राधे जू कौ, बिना ही बिचारे झूठे वचन उचारे जू। राधे ही की भूमि यह राधे ही के खग मृग, राधे ही कौ नाम रटैं साँझ औ सवारे जू॥ राधे ही के सरवर ये तरुवर हैं राधे जू के, राधे ही के फल फूल नागर निहारे जू। राधे की दुहाई फिरै राधे ही को वृन्दावन, तुम कौन लाला बीच हटकन हारे जू १७

कवित्त—हम हूँ हैं राधे जू के हमैं अपनाय लेहु, पीवैं मुख सुधा रस देखि देखि जीजिये। निकट बुलाइ मोहि पायनि लगाइ राखौ, सखी हौं कुँवरि जू की खुनसि न कीजिये॥ हारे तुम आगे ये वन द्रुम तुम्हारे, अब नागरिया दुहू रस घन भीजिये। नीके सनमान कछू करि रखवारन कों, पाछे वहु फूलन सों फूलनि को लीजिये॥१८॥

कवित्त—फूल हैं हमारे हम लेहिंगी पै तुम्हैं कहा, ऐसें टोकिवो न कीजै बलिहारी जू। दीनता करत बृजराज के कुँवर अब, पहिले जे कही तें सब विसारी जू॥ नीके हौ नागर हो विमन न होहु तातें, ह्वैकें निसंक दिस आइये हमारी जू। वन के विहारी बारी लीजे द्रुम रखवारी, लाल यें तुम्हारी मनुहारन सो हारी जू॥१६॥

कवित्त—साहस सँभारि श्याम आगें आये प्यारी जू के, रूप कौ अतुल भार परत न सह्यौ है। वीच नील अम्बर के वदन मयंक लखि, चकित चितौन में चकोर वृत्त लह्यौ है॥ पाँय डिगुलात जात पीत पट छूटि गयौ, नागरिया परति हिये धीरज न गह्यौ है। पगे रूप चेतन में वैन न फुरत मन, लियौ चाहें हाथ मन हाथ में न रह्यौ है॥२०॥

कवित्त—फूलनि कों गई उत सखी जहाँ तहाँ, इत को रँगीले कछु औरै ढार में ढरे। रसिक रसाल वाल दयौ चाहें उर माल, जब नंदलाल हँसि आगे हाथ लै करे॥ उरझी चितौन कंप स्वेद स्वर भंग भये, नागरिया नागर अनंग रंग सों भरे। राधे जू दयौ हार मोतिन को मोहन कों, मोहन जू हार होय राधे के गरे परे २१

कवित्त—जेते द्रुम कुंजनि कल्प वृक्ष ये प्रतिक्ष, दुहुँन को वाँछित दई है निधि अलियाँ। स्यामा स्याम करैं केलि आनँद अलोल मत्त, वेलि नये नेह की अछेह फूल फलियाँ ॥ दम्पति कों सुख सोई सम्पति है नैननि की, नागरिया देखि देखि जीवत हैं अलियाँ । नैंक दिन रात के विहात की न जानी जात, वृन्दावन होत नित नई रंग रलियाँ ॥२२॥

कवित्त—राधा मन मोहन अगाधा रूप रंग भरे, भुज भरि झेलि काम केलि सरसाय दी । खग शुक सारिकादि जकि थकि करि डारे, नूपुर औ किंकिनी की झनक सुनाय दी ॥ दूर ही हटक राखी कुंज द्वार अलि सैंनी, स्वेद अंग मिली लै सुवास पहुँचाय दी । हुती ललितादि जे लतान ओट नागरि ते, देख न सकत प्रेम छकनि छकाय दी ॥२३॥

कवित्त—वृन्दावन आनँद विहार चारु दंपति के, ताकी दिन रात बात सो सुनि जियौ करौं । ललित हिंडोरा सांझी रास रंग दीप माला, फूलनि की कुंज रुचि रचना कियौ करौं ॥ नित ही वसंत इहाँ होरी चित चोरी चाव, नागरिया केलि ये सकेलि कैं लियौ करौं । दियौ करौ येई अरु येई सुख लियौ करौं, येई दिन रैंन रस रसिक पियौ करौं ॥२४॥

कवित्त—सोहैं मुख कमल पै भौंहैं लट भृंग पांति, नैन अलसौंहैं कलँगा की जनु पखियां । नासिका सरूपी क्यारी अधर दुपैरिया की मुसकनि मंद मकरंद सी मैं लखियां ॥ प्रीति सांझी काज कीनी काम काछी छबि आछी और साची को है ताकी साची सब सखियां । फूली बय संधि सांझ राधा रूप बाग मांझ डोलैं आज फूल भरी नागर की अँखियां ।२५।

राग झंझोटी–साँझ समें जमुना के कूलें फूल लेत फल पाये री। ललन ओट सों निकसि अचानक नैंन सों नैंन मिलाये री॥ महा मुदित वृषभानु भवन में गावति गीत सुहाये री। नागरिया साँझी के पूजन वृन्दावन आवत भये मन भाये री।२६।

पद–मनहुँ लता अनुराग की पूजत साँझी साँझ। ज्यौं उड़गन में चन्द्रमा त्यौं श्यामा अखियन माँझ॥ श्यामा जू सखियनि माँझ छबि भरी आरती आइ उतारैं। शोभा रहि सब देखि तिहि समें अपनो मन धन वारैं॥ बजि उठै बीन मृदंग महुवर गीत महरि गाये। अर्चित देवी गह गड़ माच्यौ तियनि पुहुप बरसाये॥ यह शोभा दुरि देखत हे पिय धरनि धुक तेहि बार। नागरि सखी हाथ दै कखियाँ राखे श्याम सम्हारि॥२७॥

पद–आई है मालिनियाँ कोऊ फूल लिये रंग रंग। नख सिख लौं अति सोहनी मानौं मोहिनी साँवरे अंग॥१॥ ललित ललित गति हंस की तन ओढ़े झीने चीर। रूप अचम्भौ ह्वै रह्यौ वाके चहुँ दिसि माँची भीर॥२॥ फूल फूल सों भेट किये जहाँ साँझी रचैं सुकुँवारि। ताहि लाड़िली रीझि कैं दई मोतिन माल उतारि॥३॥ बाला माला परसि कैं भये कंपित रोमांचित गात। विसमय ह्वै सखियाँ रहीं लखि कन अँखियाँ मुसिकात॥४॥ क्यों कंपित बूझयौ अली बुहि कह्यौ जोरि विवि पानि। तू महींद्र वृषभानु कुँवरि हौं दीन प्रजा भय मानि॥५॥ ज्यौं ज्यौं कर प्यारी गहैं कहैं तू मति मानैं भीत। साँझी चीतन चीत ह्वै सकैं न साँझी चीत॥६॥ स्वेद सिथिल सियरी भई वह रहे थहरि थहराय छुवत छबीली की छाँह

को वाकौ तन पिघल्यौ सौ जाय ७ रीझि व्यथा प्रगटन लगी जब श्यामा श्याम निहारि। निज मंदिर लै आइ कैं भरी रंग अँकवारि ॥८॥ नागरिया रस रंग रग मगे दोऊ कुसुम सेज के माँझ। साँझी पूजत पिय मिले परम सलौनी साँझ ॥९॥२८॥

सवैया—फूलन के उर हार हमेल लियें कर पंकज फूल फिरावैं। फूलन की नवलासिन सौं कई फूलन की गुहि गेंद चलावें॥ फूल हियें बिच पीय लीयें अलि नागर रंग अलेल सों गावैं। मेलि कें अंस भुजा सुख झेल यों खेलि कैं साँझी यों स्याया जू आवैं ॥२९॥

दोहा—नागरि मन भाये भये चली भवन मिलि बाल।
पायौ फूलन बीनतें इक रतन अमोलक लाल ॥३०॥

श्री ललित किशोरी जी महाराज कृत—पद

कीजें गमन भवन में वृषभानु की दुलारी। देखौ वहार कैसी वड़ गोप की कुमारी॥ फूले गुलाव चंपा केसर की फूली क्यारी। सुंदर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी॥ चहुँ ओर मोर बोलैं कोयल की कूक प्यारी। पहिरौ सम्हार भूषण ओढौ सुरंग सारी॥ जल्दी चलौ किशोरी अरजा यही हमारी। माखन कौ चोर ठाढ़ौ विनती करै तिहारी ॥३१॥

श्री कृष्ण वल्लभ जी महाराज कृत—साँझी कौ पद

यह वन तुमहीं सौं सुहात। परत तुमरे चरण जहाँ कछु होत अद्भुत बात॥ फूल फल द्रुम वेलि वीरुध सवहि अति सरसात। वृक्ष चढ़ि शुक सारिका पिक बोल फूल झरात॥ डार द्रुम फल भार सौं झुकि झूमि भूपर जात। मनहुँ फलकी

भेट लै तुव पद कमल सिर नात ॥ मत्त मधुकर दल सहित मिलि मधुर शब्द सुनात। मनहुँ वल्लभ आगमन लखि विमल तुव जस गात ॥३२॥

मोय अति लागत यह वन नीको। सुंदर कुसुम सुवासित चहुँ दिशि सुन्दर शब्द अली कौ ॥ बोलत शुक पिक डोलत खग मृग अद्भुत नृत्य शिखी कौ। सीतल मंद सुगंध समीरें ताप हरति सब जीको। वल्लभ कृष्ण यदपि सुख सागर प्रिया विना सब फीको ॥३३॥

श्री सूरदास जी महाराज कृत—पद

प्यारी, तुम कौंन हो री फुलवा वीनन हारी। ॥ प्यारी० ॥ नेह लगन कौ वन्यौं वगीचा फूलि रही फुलवारी। आपु कृष्ण वनमाली आये तुम वोलौ क्यौं न प्यारी ॥१॥ हँसि ललिता जब कह्यौ स्याम सौं ये वृषभानु दुलारी। तुम्हरौ कहा लगै या वन में रोकत गैल हमारी ॥२॥ स्याम सखा सखियन समझावै हठ न करौ मेरी प्यारी। फल द्रुम वन वाटिका सुघर के हमहीं हैं रखवारी ॥३॥ राधे जू फल फूल लीयें हैं विविधि सुगंध सम्हारी। सूरस्याम राधा मुख निरखत एक टक रहे है निहारी ॥३४॥

रागगौरी—सखियन संग राधिका वीनत सुमनन वन माँह। साँझी पूजन कों आतुर ही ठाड़े कदँव की छाँह ॥ सखी भेष दै मोहन कों लै चली आपने गेह। पूछी कीरति यह को सुंदरि तब कह्यौ मेरी सनेह ॥ साँझी खेल विदा करि सब कों दोऊ पोढ़े सेज मझार। सगरी राति सूर के स्वामी बस सुख कियो अपार ॥३५॥

राग गौरी—राधा प्यारी कह्यौ सखिन सों साँझी धरो री

माई बिटियाँ वहुत अहीरन की मिलि गई जहाँ फूल अथाई ॥१॥ यह बानी जानी मन मोहन कह्यौ सवन समुझाय । भैया वछरा देखे रहियों मैया छाक धराय ॥२॥ ऐसें कहि चले स्याम सुँदर बर पहुँचे जहाँ सब आई । सखी रूप ह्वै मिली लाड़िली फूल लिये हरषाई ॥३॥ कर सों कर राधा सँग शोभित साँझी चींती जाय । खट रस के विजन अरपे तब मन अभिलाष पुजाय ॥४॥ कीरति रानी लेत वलैया विधि सों विनय सुनाय । सूरदास अविचल यह जोरी सुख निरखत न अघाय ।५।३६।

श्री रामराय जी महाराज कृत—राग गौरी

मुरली वारे सांवरे नेंक मारग मोहि बताव रे । संग न सहेली फिरों अकेली कित नंदीसुर गांव रे ॥ भूलि परी संकेत सघन वन हों अबला कित जाँऊ रे । मृग नयनी के वचन सुनत ही आइ मिले तिहिं ठाँऊरे ॥ मारग मिले अंक भरि भेटे भलो वन्यौ है दाँउ रे । कहिं भगवान- हित रामराय प्रभु राधा रवन जाकौ नाँउ रे ॥३७॥

श्री गुन मंजरी जो महाराज कृत--साँझी कौ पद

फूलन बीनन आली आज कैसें होय री । पीत पट वारौ आड़ौ ठाढ़ौ मग जोय री ॥ पट उरझावै हेली बेलिन माँहिं री । सुरझावन मिस छियै पट वाँहि री ॥ वातन कों पातन में लिखि लिखि देय री । हाथन बलैया मेरी बेर बेर लेय री ॥ गुनि मंजरि देखि भई है अवार री । ज्यौं ज्यौं वरजौं त्यौं त्यौ होय हीय हार री ॥३८॥

श्री हरि प्रिया जी महाराज कृत—साँझी-राग इकताल

सांझी मांझ मिलि खेलहीं दोऊ नव जोवन सम तूल हो ।

चित्र विचित्र वनाव के वहु चुनि चुनि फूले फूल हो ॥टेक॥ ॥१॥ पहरे वागे तन सुखी अति लागै मन रुचि दाई हो। वरन वरन आभरन की कछु कहि नहि जात निकाई हो ॥२॥ गौर श्याम अभिराम रँग भरे अंग अंग छवि देत हो। वदन चंद की चन्द्रिका चित वितहिं चुराये लेत हो ॥३॥ नव नव पल्लव प्रीति के सखि देत कमल कर आय हो। अति सौरभ सौं सोहने मन मोहन सहज सुभाय हो ॥४॥ गावत गोरी गुन भरी सहचरी सकल कल कूजि हो। रंग रह्यौ न कह्यौ परै प्रति प्रति प्रतिमा कों पूजि हो ॥५॥ महल महल में धुनि छई सुनि श्रवन भई गति गञ्ज हो। चकित थकित सब ह्वै रहीं लखि अद्भुत सुख मन रञ्ज हो ॥६॥ रतन जटित रति मंजरी कर लै कंचन को थाल हो। आरति वारति दुहुँन की लखि लखि छवि नैन विशाल हो ॥७॥ हरनी हारिनी हीण हरिता मुग्धादि मनोहर वेश हो। इनको सुख इनहीं वनैं मुख वरनैं कहा विशेष हो ॥८॥ यह सांझी कौ सुख समय समुझै जे समुझन हार हो। हितू सहेली श्री हरि प्रिया जीवत नित नैन निहार हो ॥३६॥

श्री वल्लभ रसिक जी महाराज कृत--सांझी राग गौरी

मेरी छैल छवीली लाड़िली मेरौ छैल छवीलौ लाल हो। लियें छैल छवीली सहचरी खेलै छैल छवीले ख्याल हो ॥मेरी०॥ ॥१॥ वानी बानी यों भई धन वनरानी रंग। सांझी महल मांझी वनिज अलि मिलि पिया सांझी संग ॥२॥ कह्यौ विसाखा सुख द्रुम साखा मंजुल भाषा चैंन। आजु सुकुँवारी जू कुँवारी सांझी वारी परिवा ऐन ॥३॥ सजि सिंगार बैठी ही चौकी चौंकी थेंकी प्रीति जो परिवारी तोपर वारी फुलवारी

चलि मीति ॥४॥ भूषन छौनी मद गज गौनी धरि स्याम सलौनी नाम । ललिता रस सलिता हित बलिता ल्याई पूरन काम ॥५॥ भोरी गोरी यों कह्यौ यह कोधौं री तेरैं संग । मोतन निरखति हरषति परखति वरषि श्याम घन रंग ॥६॥ कही ललिता यह साँझी चीतनि रीतनि नीतनि जोर । गीतनि सौं जीतनि जीतनि सौं ल्याई इहिं ओर ॥७॥ श्याम सलौनी सखी लखी हरषी राखी अपनैं साथ । कुंज बाग अनुराग भाग भरी चली हाथ धरि हाथ ॥८॥ करैं मोद विनोद कमोदिन निकसी संग अली अनेक । हुलसीं हुलसीं लसी अतुल जुग वदन शशी रस एक ॥९॥ मन लैंनी पिक वैंनी की बैंनी सुदेनी की रही झूलि । ऊँची गुही जुही के फूलनि सों जुही के फूलनि सों फूलि ॥१०॥ श्याम रंग रैंनी चढ़ी तनैंनी वैंनी मैंनी की ढार । छुटी है अपार सिंगार भार रस कैं नाहिं टूटी धार ।११। चोटी हेम रतन जोटी नितंब पर लोटी आँनि । मानौं भूषन लपटे लंपट भुज की लटकि लटकि लपटाँनि ॥१२॥ देखी चोटी श्याम फोंदा सँग लोटी झँझोटी सी काहुक पाइ । गोरी दई पीठि पाछें तऊ लेति है पीठिहि दीठि लगाइ ॥१३॥ वैंना मैंना छवि सैंना लै लूटति रस ऐंनानि । पिय हीरा लै लै हीरा निजु-भरि राख्यो हीरानि ॥१४॥ करन फूल करनन झूलत इहि तूलन भूषन जाँनि । स्याम पननि मिसु स्याम पननि सों वाम कान लगे आँनि ॥१५॥ रूप भूप पकरीं सकरीं जकरीं निंकरीं इक जाति । बाँधी मुक्तनु की बुँदी बंदी वारनतु की पाँति ॥१६॥ झूमि झूमि रहै झूमक घूम करत कपोल पर आय ।

नैन लैन छवि पाइक नाइक सायक सम चल्यौ है उमंग । त छवि पाइक के पाइक की आँकैए झूमक मिस झमकी है जंग ॥१८॥ सुरक जु उरकहँ धुरकहँ पेठि चतुरकहँ जीत्यौ जाइ । बैठे आड़ो दै तकिया छकिया ताकि याहि पिया सरसाइ ॥१९॥ कबहूँ चोवा वेंदी वाल भाल जोवा जोवा कौ साम । सो वाकें बस होवा घर खोवा कौ वाकें धाम ॥२०॥ लाल लाल दल की वेंदी ललकी भलकी दई वाल । लिख्यौ विधाता भाल विसाल सु झलकत लाल रसाल ॥२१॥ हारे अनियारे विषहारे सानंनि धारे वान । वे अजान लैनही जानत चख लै दै जानत प्रान ॥२२॥ खंजन मीन प्रवीन लीन बन हीन लीन उपमान । कुँवर कुरंग तुरंग दौर चख और चकोरन आन ॥२३॥ चख उपमा आसन कमलासन आसन निजु तनु कीन । विमल जु हृदय कमल कमलज को धूलि कमल मुख दीन ॥२४॥ मदन सिंगारे चख मतवारे कजरारे कजरा दीन । तारे मधि धारे प्यारे कौं भारे कारे कीन ॥२५॥ जिनि अँखियाँ में वखियाँ सीं दै रखियाँ अखियाँ की दौर । तिनि सखियाँ ये अँखियाँ लखियाँ आखियाँ लखियाँ नहिं और ॥२६॥ नैननि राजति नव युवराज विराजति सैननि क्रांति । तानें पलक वितांन तरुनी अरु नीकी वरुणी झालरि झुलि जाँति ॥२७॥ लह लहाति सी जुटीं जुटी भृकुटीं कुटिल लकुटीं कर फेरि । नायक अनंग नचावत अंग नाइक नाइक मति हेरि ॥२८॥ भौंहें चढ़ीं गढ़ी धों किहि विधि पढ़ीं कुटिलता कोरि । गरब अरब छवि वढी कढीं मति वढी गढीं लोंहि तोरि ॥२९॥ शुक नासा स्वाँसा सुगंधि आसा अलि फिरें चहुँ कोद नासा हँसि वैठे नासा दासायित लहि आमोद

मनमथ को रथ रसिकन की दृष्टि पथन चल्यौ जाय यह अकथ कौतुक जु थक्यौ है दृष्टि पथ कौ लेत चढ़ाय ..३२.। गोल जु-गोल कपोल अमोल तमोल रँगनि झलकें। लेत है मोल तोल विनु पल में लोल परनि पलकें ॥३३॥ दर्पन सम सुनि दर्पन पन गहि गई कपोलनि भूमि। निपटु सुपटु दृष्टिनि पग रपटत चपटि रही तिहिं भूमि ।३४। लाल अधर लालन मन अधरहि अधर सुरँगि धरें। हसन में श्याम दसन दरसनि कैसे उज्वल रसनि भरें ॥३५॥ पिय चोंपनि चोंपनि सों निरखत चख सोंपनि पन लीन। खोंपनि खोंपनि कर कों मन्मथ मन कों पनि पण कीन ॥३६॥ तिल तिल में लखि तिल तिल सम किय वदन प्रयागहि पीय। आइ तिल ह्वै कपोल चढ्यौ सुचढ्यौ सुचि रस मढ्यौ सोवत जीय ॥३७॥ आयौ सुख गहनें चहनें मन चिबुक लेसुचि रस मह नेंकु बोरि। गहनों सो लखि करि गहनों लहनों जु विंदु कियौ मोरि ॥३०॥ लटकी लट खटकी अटकी मन कहों घटकी उपमान। चक्र फेरनि सों चख के फेरन की खेलन की मदन चौगान ॥३६॥ श्याम सारी में मोतिन वारी हेम वारी कानन माँझ। तासों जुरी जु अलक मनों घन विजुरी अरु फुरीं तारा धुरी साँझ ॥४०॥ ककरेजी सारी में सुघर करे जी सोहे हेम फूल। जकरेजी जार सिंगार रसिक अकरेजी मानत फूल ॥४१॥ उरजनि पर जनु परति लखी कंचुकी पर वंद सुदेस। पच्छि किशोर वे ह्वै उड़े सपच्छ गिरि परे विपच्छ शिशु देस ४२ अतलस लहँगा हेम रक्त लसत

लिखे मत लसत हैं प्रेम । लखि पिय मन घूमत घूमत यह क्यौं धौं घूमत गहि नेम ॥४३॥ एक ओर तें उलटि छोर सिर धरयौ जोवन के जोर । मिले अलक झलकनि सवाद ले हले वादले छोर ॥४४॥ कियो उद्योत स्याम पोतिनु की ज्योतिनु की वसि लाल । मांह सिंगार नदी न झंपतु तप तपतु जपतु मन लाल ॥४५॥ लरीं लरीं जु सतलरी की धरी ग्रीव छवि भरी तीय । लियें सिंधारे भारे व्रत धारे प्यारे मिलि टूटनि जीय ॥४६॥ लखि चंपक वरनी के भली चंपकली निकली कहें लाल । भई तरुनी यह तरुनीन में कौतिक चंपक तरुनी डाल ।४७। जिहि जगमगाति मधि नायक क्रांति सुभांति उरवसी पांति । सोहैं सो हमेल करि केलि अंस उर झेलि झुली झल कांति ॥४८॥ सकल कला रस गुन उर वाला हाला रसाला दीन । झुली है विहाला मुक्तनि माला लाला मतवाला कीन ॥४६॥ चोली गहे चख पै द्विवली त्रिवली रस अति वली मैंन । लखि चोरी तहां ऐंन बनी निकसैं न मैंन सैंन वैंन ॥५०॥ मोरनि लगिया अँगिया लगिया कौ, पिया कौ हिया भयो वोर । धरयौ मोरि मरोरि करोरि रसिक वर मोर मरोरत मोर ॥५१॥ मुहरा कंचुकि मुहरा धरि जु हरावे वुधि बल मीन केत । पिय मन सूवन दुहरावे मुहरा तन मुहरा जेहेत ॥५२॥ बैठ्यौ बांह माह गड़ि पैठ्यो ताइत ऐंठ्यौ स्याम स्वतंत्र । तामें सुवरण चित्र मित्र चख चित्र समान करण के मंत्र ॥५३॥ बाजू में बाजूबंद रतन झवा झूलत मखतूल । करैं इहि बाजू को बाजूहि बंद शोभा जु चढ़ैन डीठि मूल ॥५४॥ स्याम पोत सुवरण पोतिनु मिली को तिहिं उपमा होति रीझि लपटनि भुज लपटनि दंपति अंग जोति ५५

कर गुजरीं मकरध्वज री जरियाँ जु जरी मनो जानि मणि बेलि गची रति केलि सची ललची चख लाल की आनि ।५६। लाल मूँगा ह्वै विध्यौ गूँगा काहू गायो न नवीन । कर मोतिन छर सित जोतिनु होतिन हूँ करत रँगीन ॥५७॥ रतन चौक मधि लाल नोंक छबि रतन सोक की भाँति । हाथ लालन कियौ हाथ लालन की वद्धी के लालन की क्रांति ॥५८॥ मिहदी हाथ महंदी तिहिं दीये हाथ लाल करि चित्र । तासों नेह लगाइ जगाइ रँगनि सों रँगाइ नैंन करे मित्र ॥५६॥ स्याम छलनि की छबि वलयनि उछलनि पहुँची पहुँची जाय । पिय अँगुली रँगुली सँगुलीय पहुँचनि पकरनि के भाय ॥६०॥ रतन मुद्रिकनि मुद्रित किय नृप चुद्र करन दान गान । निज कर निकरनि सों जु करन कों दिये सुवरण को दान ॥६१॥ मीना रंगीना आरसी नवीना सखी प्रवीना जानि । यह आगें ह्वै ह्वै वदन मदन सदनहि वनवावति आनि ॥६२॥ छिंगुनी ऊपर छल्ला नूपुर झूले झूपर मनौं छबि जात । गाढी तार बँधी कौतिक ह्वै गोल बोलत डोलति न चुचाति ।६३। कटि अटके कटि अटके सफा नेफा मैं नफा चख जाँनि । राखे सँवारि करि वर नितंव अंबर ह्वै जघननि आनि ॥६४॥ सघन जघन सु मदन के सदन लखि रीझ पचाई न जाय अतरौटे की सलौटें ह्वै चेख लोटे पाँइन आय ॥६५॥ रतन गूजरी लखि छवि जोरा जो राख्यौ ठौरानि । नृप रसिक महा उर वस्यौ लस्यौ दरस्यौ लै छत्र मुक्तानि ॥६६॥ पाँइनि पायजेव सौं वजायं मुल्याइ लिये है जेव । तिनि मन रतनन की धन की धरन की पाइजेव करी जेव ॥६७॥ जाली की चुटकी ह्वै गौर छबि छुटकी घुटकी

नैन। मनों मित्र कमल दल अमल अंगुलिनु छाँनि अमल लग्यौ दैन ॥६८॥ रागी अनवट भट छवि लागी पागी ज्ञान डरात। ये चढ़े अंगूठन गूठन परवत मनि कूटनि चढ़ि जात ।६६। इहिं विधि वनि ठनि चली अली रँग रली भलीं छबि भीर। पुंजनि पुंजनि गुंजत अलि जित मंजुल कुंज समीर ॥७०॥ भई झनक झनक पुनि ठनक उपवन में वनक अपार। मोहद धुनि दोहन सों हद तजि फूल्यौ षट ऋतु सार॥७१॥ भई फूलन फलनि दलनि पल्लवनि लता वनिता इक सार। वहु फूलनि लहि फूलीं फूलीं झूलीं झूलीं गहि डार ॥७२॥ लता प्रता-ननि मध्य भुज लता गहत लता भ्रम भूलि। कुसुम दलनि भ्रम अधर दलनि की होति दल मलनि फूलि ॥७३॥ अधर रस चखी श्याम सखी लखी वोली ठोली भापि। करें तमासे मधु रस गाँसे वासे फूलनि चाखि ॥७४॥ श्याम सलौनी भई अगौनी वौनी के सम तूल। लौनी अंस चढ़ी नीकें धुर फूल ॥७५॥ तब रही पीडुरी करनि मीडुगी कहीं न हींडुरी मूल। बीनत एक चढ़ीहि चढ़ी पुनि चढ़ी दुहुँनि कर फूल ॥७६॥ गुलतुर्रा की डाँड़ी बैना पै माँड़ी छाँड़ी भुलाइ। मद गज गौनी की गज गौनी अलि, निजु गौं लीनी वलाइ ॥७७॥ एकनि फूलनि सों री चोंरी रचि गोरी पर ढोरी आँनि। मोंधें डोरी डोरी भोरी भोंरिनि में भई भँहराँनि ॥७८॥ पटुका फूल सुपट काहू लटकाए अंस दुहूँ ओर। वद्धी की भाँतिनि लटकें मटके सटके कटि छोर ॥७६॥ भरि भरि झालनि मालनि गुहि गुहि मालिनि ल्याइ न थोर। लै लै जनेउवाँ डारी वालनि व्यालिनि हालनि जोर ॥८०॥ चलीं खेलि फूल लै लटकति

मटकति अटकति साँझी रंग । तब नवल लालसी अवलां लसी नवलासी फेरी संग ॥८१॥ गोरी गोरी गावहिं चौरि दुरावहिं आवहिं साथ । कोइ सिंगार हार की गेंद खिलार उछारहि मारहिं हाथ ॥८२॥ कोयल सी नरगिस के कूँजनि लै कोई लसीं कूँजि उमंग । धरें संसित अवतंस रसिक अवतंस अंस धरि अंग ॥८३॥ इहि विधि अलवेली वेली सी खेली अलि अलि रंग । आईं महल माँझि साँझी कों चहल पहल लियें संग ॥८४॥ एकनि पन्ना की भीतिनि पै गुलाव रस भिन्ना छत्र फेरि । मृग मद गारे सों लै सुधारे चंदा तारे हेरि ॥८५॥ जे करत उज्यारे हरत अंध्यारे सब सिर धारे जांनि । ते तिय सन्मुख लागे कारे विधु तारे धारे मानि ॥८६॥ पीत फूल सनके चीतति रँग चीतति मीत सहेलि । तरें कोईलै कोइल फूल धरें भरें कोई लखि चखि झेलि ॥८७॥ चीतति नीके लाल वनी के फीके लागत फूल । तब ढाँपति नीकें अँगुरी के गोरी के अधरनि मूल ॥८८॥ हँसि हँसि परति अधर परसत दरसत सित कुसुमन आँहि । तब कहें होति है वरजनि चीतनि गर-जनि वरजनि अलि वलि जाँहि ॥८९॥ तब कर उचाइ वर चाइ धाइ चौकी चढ़ि चीतति आइ । अलि उर चौंकी उकसत गौंकी कर चौकी देति बैठाइ ॥९०॥ रंजित चलित ललित कर पल्लवनि हरित पल्लवनि लाइ । वचे वीच में सचे रचे गचे सुवरन पत्र मगाइ ॥९१॥ यों चीते पचरंगे अंगनि में जेगमगे रँगमगे लगे विधु विंव । मनो भूषन भूषित निरदूषन वहु मुख भूषन प्रतिविंव ॥९२॥ फेरि करैयनि चीते तरैयनि लेंहि वलैयनि आलि छला छन्न धुनि जीति अमीतनु जीतनु

जीत निहालि ॥९३॥ दूजी अलि मिलि चीतनि पूजी पूजी सब की आस । गीतनि गावहि मीत मल्हावहि प्रीति बढ़ावहिं हास ॥९४॥ श्याम सखी कर करषी हरषी सखी मंगली आइ । सेवी कों सुख देवी देवी की मूरति धरी मध्य बनाइ ॥९५॥ षोडस विधि सौं नव निधि रिधि सौं सिधि सों पानि पुजाइ । भोग धरे वाकों मेवा सेवा फल कहि मुसिक्याइ ॥९६॥ करत आरती लियें थारती जै जै भारती संग । दीप दीप की दीपति रीझी दीपनि मिसु वारत अंग ॥९७॥ सबनि सीस नवायौ गोरी पै कहायो मंत्र सुहायौ येह । नमो देवि जय देहि देहि मम श्याम सनेह अछेह ॥९८॥ तब श्याम सखी मन उमह्यौ प्रेम गह्यौ ज्ञान रह्यौ नहिं देह । देवि जय देहि देहि मम गोरी नेह अछेह ॥९९॥ तव चौंक परी चितई हित वचन नचन में रचन पण जोर । विहँसि परी रस भरी खरी सिगरी लखि नवल किशोर ॥१००॥ कोऊ दीपहि ल्यांई ढिग घिरि आईं हुलसाईं सुकुँवारि । वदन निहारें उरज उघारें हारें हारें वारें रिझवारि ॥१०१॥ तब अलि काहू चलि काहू मिसु पलका हू लिये वैठाइ । पाग जरकसी कसी लसी सिर कल कलँगीहि झुलाइ ॥१०२॥ नीमा छवि सीमा ग्रीवा धरि ग्रीवा धारयौ पीय । सुवरण वूटी पर चख टूटी लुटी छुटी नहि तीय ॥१०३॥ सोहें सिर जूरे कर चूरे मोती चूरे मोदक पानि । वाँटहि मोदनि सों चहुँ कोदनि गोदनि भरि मेवानि ॥१०४॥ धरे रतन थार में आनि आनि पकवान थान अलि आनि । सोहें आनन ही सों लगे हिलगेहि खवावनि खानि ॥१०५॥ तहाँ लीन अली अलिनि जु लीन ह्वै वीना में मीनकेन की वात पान स्वात

लपटात गात उरजात परस सरसात ।१०६ आसव झोकनि आसन रोकनि हँसि अवलोकनि मोद। कोक कलानि के ओक दुहुँनि के को कहि सकै विनोद ॥१०७॥ लखि साँवल गौर अमंद चंद रति द्वंद सुछंद विहार । बढ़े रस सागर परनि पढ़े मन कढ़े चढ़े न करार ॥१०८॥ जिनके इहि रस मन गसि जुगल महल वसि निकसि न वनहुँ लखाँहि । वल्लभ रसिक ते महल माँझी साँझी माँझी छकि जाँहि ॥१०६॥४१॥

चाचा श्री वृन्दावनदास जी महाराज कृत-(सुंदर गौर स्याम साँझी लीला)

सब ब्रज की शोभा लाड़िली श्री राधा जाकौ नाम हो । नित आनन्द नयौ बढ़ै श्री रावलि पति के धाम हो ॥१॥ साँझी चीतन के मते बन निकसीं भरि अनुराग हो । गोप सुता हुलसीं सबै देखन बन कौतुक बाग हो ॥२॥ नख सिख नव सत साजि कैं जननी पै आज्ञा लेत हो । घर घर विपुल वधावनौ सुख द्रवत कुँवरि के हेत हो ॥३॥ कीरति पौरी आइ कैं ललिता सौं कही समुझाइ हो । हौं वलि बेगहिं आइ हौ वन लावौ फूल विनाइ हो ॥४॥ वृन्दनि वृन्दनि सहचरीं वनि आईं श्री राधा लार हो । रानी दृग शीतल भये मन बाढ्यौ मोद अपार हो ॥५॥ ओलिनु भरि मेवा दई कीरति कहे बचन पियूष हो । सब मिलि भोजन कीजियो वन फिरत लगै जब भूख हो ॥६॥ उमड़्यौ छवि वारिध मनौं अरु जब गवनी मिलि संग हो । सहज निकाई छवि छटा जहाँ मुरझत निकर अनंग हो ॥७॥ गिरि गोवर्धन तरहटी जल झरना रोचक नाद हो । शुक पिक मोर मराल बहु कोलाहल सुर सुख स्वाद हो ॥८॥ उपवन फूल जहाँ बने श्री राधा आगम जानि हो तहाँ विहरत नव

लाड़िली रचे खेल विविधि रुचि मानि हो ॥९॥ फूल मुकट रचि काछिनी ललिता अति गुन गन ग्राम हो। प्यारी तन सिंगार कैं करैं लीला सुन्दर श्याम हो ॥१०॥ चरण चरण पर राखि कैं नागरि कटि ग्रीवा मोरि हो। भुज तर चापैं लकुटि कों मृदु वचन कहत दृग ढोरि हो ॥११॥ धरी अधर मृदु बाँसुरी पुनि सप्त स्वरनि आलाप हो। शिव समाधि त्रिथकित भये विधि कौ भूल्यौ सुनि जाप हो ॥१२॥ सखी सुघर संगीत गति पुनि उघरत करुणा भाइ हो। निरतत कीरति नन्दनी नन्द नँदन भेष बनाइ हो ॥१३॥ पुनि कोऊ माननि भई तिनकों वंदत ह्वै दीन हो। हँसैं लसैं कौतिक करैं सखी अति ही गुननि प्रवीण हो ॥१४॥ आगें भानु सुता छली गिरि घाटी रोकी आन हो। भरी खेल आनंद अति दानी ह्वै मांगत दान हो ॥१५॥ ये कौतिक सब नन्द सुत हो देखि छके अति रूप हो। छल कोविद तन साँवरे कियो सहचारि वेष अनूप हो ॥१६॥ मिलन चौंप हिय अखरत हो ताकत विविधि उपाइ हो। ललितैं लखि एकंत में सब दीनों मरम जनाइ हो ॥१७॥ तब ललिता तिहि संग लै प्यारी सों बोली आइ हो। यह कन्या काहू गोप की गिरि पूजत नित चित लाइ हो ॥१८॥ अब साँझी पूजन कहति जैसी तुम्हरी रस रीति हो। देहु अधर खंड बीरी भटू याकें तुम सों अति प्रीति हो ॥१९॥ पुनि पुनि वदन निहारि कें प्यारी कहत रस भरी बात हो। धनि विधिना जिन तू रची सखी नख सिख कमनी गात हो ॥२०॥ ललक मिले दृग दृगन सों हो मन सों मन अरुझाय हो। दुहुँ हिय वारिध नेह कौ कछु बाढ़्यौ सहज सुभाय

हो २१ झमकि चली कुंजनि सघन अति प्रमुदित वीनत फूल हो। निकसन वीथिन साँकरी कछु खिस खिस परत दुकूल हो ॥२२॥ कुसुमित लतन नवावहीं हो सुघर सहेली श्याम हो। चुनति कली नव लाड़िली दुति मृदु करजनि अभिराम हो ॥२३॥ सौरभ लै धाये मधुप प्यारी जू मानति शंक हो। दृग तन चंचल छवि बढ़ी लागी श्याम सखी के अंक हो ।२४। हियैं पुलकि रोमांचि तन सकुचि चुरावत पीय हो। कहत प्रिया सों पाहल ही हो हौं डरपी अति जीय हो ॥२५॥ पुनि सबही चहुँ ओर कों फैलीं शोभित वनराय हो। गोदैं फूलनि सों भरी गहनें बहु रचत बनाय हो ॥२६॥ कोऊ सर वर जल पैठि कें लाईं कमल कुसुम बहु रंग हो। वासर थोरौ जानि कें जुरि आई सब इक संग हो ॥२७॥ पहिरैं भूषन फूल तन अरु तामें फूली साँझ हो। रूप जलद मानौ ऊनयौ आवै राधा सखियन माँझ हो ॥२८॥ लटकि लटकि दोउ सखी घर चलीं मंद गति गैन हो। रूप गर्व मद छाँड़ि कें पद लोटत रति युत मैन हो ॥२६॥ प्रथम पौरि महा भानु की आई जब कुँवरि किशोरि हो। चंपा रानी आरतौ तब कियौ लली कौ दौरि हो ॥३०॥ निकसत जिहिं जिहिं गोप के द्वारे ह्वै अति लड़ि आय हो। महा प्रेम भरि आरतौ सब गोपी करत बनाय हो ॥३१॥ महाराज वृषभानु के सुन्दरि जब आई ग्रेह हो। नग न्यौछावर माय ने किये पूरति परम सनेह हो ॥३२॥ श्याम सखी श्यामा लली सौरभ युत लीपी भीति हो। शशि मंडल तारा सहित दोऊ मिलि साँझी चीति हो ॥३३॥ अगर धूप बहु दीप धरि पूजा कौ रचत विधान हो। पाक विविधि मेवा सिता धर्यौ भोग

परम हित मान हो ।।२४।। आरति वारति प्रेम सों सब गावति मंगल गीति हो । बंदि परम आनंद कैं जाचैं अमित परस्पर प्रीति हो ।।२५।। देखि कुँवरि के प्रेम कौं जननी मन अति सुख पाय हो । लेत वारने मुदित ह्वै अपने कर दुहुँनि जिमाय हो ।।२६।। उघरि परी पिय चातुरी रमै तलप सुघर सर हंस हो । ललित केलि वरनी यथा मति दीनी श्री हरिवंश हो ।।२७।। नवल कुंवर वर सुख गहर में हो पैरत रति रस सूर हो । वृंदावन हित रूप बलि दोऊ कोक कलानि गरूर हो ।।३८।।४२।।

क्वार वदी ११ एकादसी कौ—साँझी (साँवरी साथिन लीला)—राग गौरी

हरे वरन के सूवटा मिठ बोला हो । करि मेरौ इक काज कीर मिठ बोला हो ।। साथिन मेरी साँवरी मिठ बोला हो । सो कित विरमी आज कीर मिठ बोला हो ।।१।। तू उड़ि वाके नगर जाहि मिठ बोला हो । कहियो वचन सुनाय कीर मिठ बोला हो ।। सुघर शिरोमणि तू सखी मिठ बोला हो । ल्यावौ संग लगाइ कीर मिठ बोला हो ।।२।। गिरि पर ऊँचौ गामरौ मिठ बोला हो । ताही के मधि वास कीर मिठ बोला हो ।। तू लै आउ मनाय कैं मिठ बोला हो । जो वह होय उदास कीर मिठ बोला हो ।।३।। साँमल वाकौ नाम है मिठ बोला हो । खोजि लीजियौ गेह कीर मिठ बोला हो ।। वरसाने पग धारियैं मिठ बोला हो । साँझी मानि सनेह कीर मिठ बोला हो ।।४।। वह भूखी है प्रीति की मिठ बोला हो । सुनत आय है दौरि कीर मिठ बोला हो ।। साँझी सुविधि सम्हारि है मिठ बोला हो । बाबा जू की पौरि कीर मिठ बोला हो ५ अज्ञा लै

सुवटा उड़्यौ मिठ बोला हो । उचरत राधा वदन कीर मिठ बोला हो ॥ सुनत भये बस प्रेम के मिठ बोला हो । प्रीतम मोहन मदन कीर मिठ बोला हो ॥६॥ धनि बड़ भागी सूवटा मिठ बोला हो । पल्यौ कौन से धाम कीर मिठ बोला हो ॥ सरबस तोपर वारनै मिठ बोला हो । दृढ़ रुचि राधा नाम कीर मिठ बोला हो ॥७॥ वह साँवल कही भांमिनी मिठ बोला हो । यह नन्दन नर भूप कीर मिठ बोला हो ॥ खग देखत कौतुक छक्यौ मिठ बोला हो । वाही कैसे रूप कीर मिठ बोला हो ॥८॥ पावन सर तट कलप तरु मिठ बोला हो । विरम्यौ ताकी डार कीर मिठ बोला हो ॥ बानआनि फिरौ निहारि कैं मिठ बोला हो । सब ही नगर मँझारि कीर मिठ बोला हो ॥९॥ कोउ नगर इहि साँवरी मिठ बोला हो । सो मोहि आदर देहु कीर मिठ बोला हो ॥ कह्यौ जु मेरी स्वामिनी मिठ बोला हो । सो सँदेश सुनि लेहु कीर मिठ बोला हो ॥१०॥ लाल समुझि जिय अर वर मिठ बोला हो । आये पलटि सिंगार कीर मिठ बोला हो ॥ सुवटा कह्यौ सँदेशरा मिठ बोला हो । गहने ताही वार कीर मिठ बोला हो ॥११॥ अनुरागी सुवटा उड़्यौ मिठ बोला हो । आयौ पुर वृषभानु कीर मिठ बोला हो ॥ लायौ सजनी साँवरी मिठ बोला हो । दैकैं बहु सनमान कीर मिठ बोला हो ॥१२॥ कर पै राखि चुगावहीं मिठ बोला हो । भूर वारने लेत कीर मिठ बोला हो ॥ तू खग मेरे प्राण सम मिठ बोला हो । करत अधिक हिय हेत कीर मिठ बोला हो ॥१३॥ आवत देखी साँवरी अनुरागिन हो । फूलनि जाके अंग मुदित श्री राधा हो " फूलन सों ओली भरें अनुरागिन

हो । खेल बढ़ावनि रंग मुदित श्री राधा हो ॥१४॥ नैननि सों नैंना मिलें अनुरागिन हो । साँझी मुदित खिलार मुदित श्री राधा हो ॥ अरी पाहुनी साँवरी अनुरागिन हो । कहाँ बिरमी सुकुँवारि मुदित श्री राधा हो ॥१५॥ आज चाह मेरी करी अनुरागिन हो । अब छिन तजौं न पास मुदित श्री राधा हो ॥ मिलि साँझी चीतन लगीं अनुरागिनि हो । हिय बढ़्यौ अधिक हुलास मुदित श्री राधा हो ॥१६॥ रजनी मुख शोभित कियौ अनुरागिन हो । गावति गीत सहेलि मुदित श्री राधा हो ॥ रचना इहिं विधि सों रची अनुरागिनि हो । विधि रचना पग पेलि मुदित श्री राधा हो ॥१७॥ सुखहिं बटोरत परस्पर अनुरागिनि हो । विधि विधान सब करत मुदित श्री राधा हो ॥ या साँझी के खेलि में अनुरागिन हो । उर वर आनँद भरत मुदित श्री राधा हो ॥१८॥ पिय अभिलाष पुजावनीं अनुरागिनि हो । कहा करौं अधिक प्रशंस मुदित श्री राधा हो ॥ अति गरुवौ रस विलसिवौ अनुरागिनि हो । लखि कृपा जु श्री हरिवंश मुदित श्री राधा हो ॥१६॥ लाल छली भोरी प्रिया अनुरागिनि हो । प्रेम जहाँ परधान मुदित श्री राधा हो ॥ नित खेलैं नित भूलहीं अनुरागिनि हो । जद्यपि कलनि निधान मुदित श्री राधा हो ॥२०॥ यह सुख अति दृग भोगता अनुरागिनि हो । बलि हित रूप विनोद मुदित श्री राधा हो ॥ वृंदावन हित जाचहीं अनुरागिनि हो । दीजै ओटत गोद मुदित श्री राधा हो ॥२१॥४३॥

क्वार सुदी १ परवा कौ—श्री हित संधि साँझी लीला—राग गौरी

ए रितु शरद सुहाई अरु साँझी शुभ वार सब के मन

भाई सुनि मेरी प्राण अधार ॥ सुनि मेरी प्राण अधार बन्यौ संजोग भल्यौ री। पुहुप वाटिका चलै राग मिलि गावति गोरी ॥ साँझी फूलन चीतियै बाबा जू के द्वार। नैननि यह सुख देखियै हो आज बड्यौ त्यौहार ॥१॥ डारो सकल सुगन्ध कुम कुमा चन्दन गारो। तासौं लीपो भीत प्रथम चलि ठौर विचारौ ॥ मन वांछित फल पाइयें जो कीजै इहि सेव। सुनौ कुंवरि वृषभानु की यह साँझी साँचो देव ॥२॥ चलि मेरी प्राण अधार अबै कछु गहर न करियै। लाय फूल रँग रंग सवेरी साँझी धरियै ॥ निकसी मिलि ब्रज सुंदरी गहवर वन की ओर। लावनि छोर मोर कटि उरसे कीनी सबहिनु झोर ॥३॥ आस पास ललितादि मध्य वृषभानु दुलारी। सखी अंश दियें बाहु चलन पर गज गति वारी ॥ अतरौटा अति फबि रह्यौ तन-सुख सारी सेत। पवन परसि अंचल उड़्यौ लखि मनमथ भयौ अचेत ॥४॥ रति रम्भा अरु शची रमा कैसें सम पावें। नख मणि ज्योति प्रकाश शशिनु के निकर लजावें ॥ रूप उजागर नागरी सकल त्रियन सिरताज। सखी वृंद मधि राजहीं मनौं उड़गन मधि उड़राज ॥५॥ आगें बैठे लाल बाल कौ भेष बनायें। धाइ चढ़े गिरि शिखर टेरत पुनि भुजा उचायें ॥ आगे आवौ भामिनी बात सुनौं चित लाय। बिछुर गई मेरी संग की मोहि लीजै साथ लगाय ॥ हरषि भानुकी कुंवरि आपने निकट बुलाई। पूछति करुणा सहित कौन तू कहाँ ते आई ॥६॥ वह देखौ गिरि शिखर पै सुवस बसौ नँद गाम। भूलि परी हौं जिय डरी कहौ तौ चलौं तुव धाम ॥७॥ बहुत करी मनुहार आपनी साथिनि कीनी। नातौ जिय में मानि प्यार करि भुज गहि

लीनी नाम कहौ वर भामिनी रहौ हमारे पास । प्रात होत घर पठै हौं जिनि जिय होहु उदास ॥८॥ श्याम सहेली नाम वाम सुनि सब कोऊ जानै । औरौ नाम अनेक प्रगट सब यही बखानै ॥ बीरी वदली परस्पर गई सघन वन कूल । निरवारति चली द्रुम लता हो तोरन लागी फूल ॥६॥ कोउ एढ़ी उच-काइ गहत ऊँची सी डरियाँ । कोउ इक काँधे चढ़ी गोद फूलन सों भरियाँ ॥ कोउ वेलिनु गहि झूलहीं कोउ विटपनि चढ़ीं धाय । नव वन अति शोभा बढ़ी वरनत बरनी न जाय ॥१०॥ श्याम सहेली सुघर कुसुम कंचुकी वनाई। अधिक हेत सों लाय कुंवरि राधे पहिराई ॥ एकनि रचि माला गुही पचरँग फूल मिलाय। एकनि गूँथी किंकिणी हो वेल चमेली लाय ॥११॥ फूलनि कवरी गुही फूल कर छरी सुहाई । काहू सुघर तरौना फूलनि रचे बनाई ॥ नख सिख भूषन फूल के फूलन गेंदुक हाथ।सांझी विरियां जानि कैं हो सवहिं भई इक साथ ॥ ॥१२॥ एकनि के कर कमल अमल फेरति वर वाला । खेलति घर कों चलीं गीत गावति जु रसाला ॥ प्राननाथ दुलरावहीं हो प्राण प्यारी भाम । हौं वलि तेहिं औसर सखी जब आई बाबा जू के धाम ॥१३॥ दिपत फटिक मणि भीत बड़े रावर की पौरी । सींची नीर गुलाव अरगजा लीपि किशोरी ॥ दुहुँ साथिनि सांझी धरी भांति भांति चित लाय । देखत भूली सारदा हो सुरपति हेरि हिराय ॥१४॥ चहुँदिसि तारे धरे मध्य में चन्दा सोहै । विधि मन संशै भयौ दुहूँ दिशि पुनि पुनि जोहै ॥ वच्छ हरण जव सुधि कियौ तव मिट्यौ हिये को सूल । देव दुंदुभी वाजहीं हो वरषन लागे फूल ॥१५॥ मूरति युगल वनाय

जटित किये मानिक मोती । पट भूषण पहिराइ लगि रहे जग मग जोती ॥ बहु मेवा पकवान धरि हित सों भोग लगाय । कुँवरि सँजोयौ आरतौ तब सब मिलि लागीं पाय ॥१६॥ माइ सहित पुर वधू सबै मिलि कौतुक आईं । साँझी रचना देखि कुँवरि की लेति बलाईं ॥ हरषि भानु की घरनि तब नेगी लिये बुलाय । डला भरे पकवान के हो दिये नँदगाम पठाय ॥१७॥ संध्या देवी पूजि भामिनिनु यह वर माँग्यौ । सुनत सुधा सम वचन सवनि कौ हिय अनुराग्यौ ॥ कुशल गोप कुल की सदा रहौ सुख संपति गेह । श्री राधा मोहन जोरी अविचल नित बाढ़ौ नव नेह ॥१८॥ बाबा जू के भवन गईं जब गोप कुमारी । कीरति दियौ पकवान सवनि कों भरि भरि थारी ॥ पहिराई रँग चूनरी साँझी पढ़ती वार । सखिन सहित भोजन कियौ हो आनँद विधि सुकुँवार ॥१९॥ पौढ़न हित अभिराम धाम गिरि ऊपर राजैं । तहाँ सुंदरि कियौ गवन संग निज सखी समाजैं ॥ ललिता मोहन जानि कै पौरी हटके जाय । सैननि पद बन्दन कियौ हो रसिक कुंवर वर राय ।२०। पलटौ जवहि सिगार तबहिं जाने नँदलाला । सकुचि दियौ पट ओट निरखि मुसिक्यानी वाला ॥ सुख संगम आनँद बढ़यौ रहे अंश भुज मेलि । श्री हरिवंश प्रताप तें हो वरनी यह रस केलि ॥२१॥ परम हितू हित रूप सहचरी रन्ध्रनि लागी । जीवनि युगल विहार कौन तिन सम बड़भागी ॥ वृन्दावन हित हिय बसौ गौर स्याम अभिराम । व्रज मण्डल सुवस बसौ हो वरसानौ नँद गाम २२ ४४

वृन्दावन फूलन सों छायौ । चलौ सखी फुलना वीनन को साँझी कौ दिन आयौ ॥ प्रेम मगन ह्वै साँझी चीतौ पचरँग रंग बनायौ । वृन्दावन हित रूप सखी तुम करिये लाल मन भायौ ॥४५॥

राग सारंग—हरि मधुकर ज्यौं मडरात हैं । गहवर वन वीथिनु रस लोभी विथकित साँवल गात हैं ॥१॥ सखिनु सहित वृषभानु नंदनी फूलनि हित जहाँ जात हैं । तहाँ रसिक नव लाल रँगीलौ कहत रस भरी बात हैं ॥२॥ को हौ फिरति रखाये बन में लगी चुरावन घात हैं । बाबा कौ बन काकी चोरी सुनि ललिता अनखात हैं ॥३॥ इहिं रस बाद महा सुख वरषत लाल नेह सरसात हैं । वृंदावन हित रूप परावधि निरषत नैंन सिरात हैं ॥४॥४६॥

हे सखि कुसमनि वीनत कुंजनि । तहँ अलि आयं गुंजत पुंजनि ॥१॥ तिनलैं हौं शंकित भई भारी । उरझी सघन लतनि मेरी सारी ॥२॥ अधिक अगवनी तू बढ़ि आई । तब मैं जिहिं तिहिं विधि सुरझाई ॥३॥ और बात तोतैं नहिं छानी । तैं सब मेरे मन की जानी ॥४॥ यौं कहि हँसि चुप ह्वै रही भामिनि । वृंदावन हित रूप अभिरामिनि ॥५॥४७॥

साँझी आगें निर्त्त साँवल गौर करति हैं । सजनी लेत वारने सबहीं, अविचल रहौ यह जोरी उर आनंद भरत हैं ॥१॥ भरि अनुराग गुनीली गावत मनहुँ भानु के भौन अमी समूह झरत हैं । अहा अहा सबके मुख सुनियत सुघर दोउ संगीत-गति नौतन जु धरंति हैं ॥२॥ व्रज सुख बढ़ौ बढ़ौ जु तात घर बढ़ौ ससुर के धाम गोप वधू उचरति हैं वर देनी

झंझा भई वानी बाढ़ौ कुँवरि सुहाग सुनि पुनि पुनि उच्चरति हैं ॥३॥ इक टक बदन निहारत सादर दोऊ अति रिझवार नहिं दृग पलक परति हैं। वृंदावन हित रूप वारने यह कौतिक रस केलि सागर रंग तरति हैं ॥४॥४८॥

भट्टू यह साँझी तेरी तू साँझी की मन क्रम बचन उपासी। मुहि विश्वास बढ़ौ है तेरौ आवै दूर तें खेल रचे सुख रासी ॥१॥ भाग्य वली दरस्यौ जु परस्पर रंचक कवहुँ न होहु उदासी वृंदावन हित रूप बढ़ी प्रभुता यौं तोकौं सवहि देहिं स्यावासी ॥२॥४६॥

प्यारी तेरी साँझी के परवी देश भयाने सवन उमाहो दीनों। यह शिशु मार चक्र मनों तीरथ रच्यौ नीकी विधि विधना हू संभ्रम कीनों ॥ नेत्र जात्री भये जु सवके फल मन वांछित लीनों। वृंदावन हित रूप साँवरी सजनी सों मिलि खेल उपायौ नवीनों ॥५०॥

अरी तू आई नवेली करि जिन ऊधम सूधें साँझी खेल। कवहूँ चोर भाँवरी सी देइ कवहू कुँवरि जू के चलति अंश भुज मेलि ॥ हम तौ लच्छन पहिचाने कुल की लज्या आई पेलि। वृंदावन हित रूप करति है बुधि वल सब सों बोलत ठेला ठेल ॥५१॥

विचच्छन लाई फूल भरि झोली। या साँवल कौं देव वरु दरसत प्यारी जू मिलि हँसि वोली ॥१॥ भूषन रचि पहिराये अंशु कर और कुसुम रचि चोली। दृगन दियौ अंजन कजरौटी बटुआ में तें खोली ॥२॥ कहति प्रीति की भूखी कोऊ सखि मुहि करौ वहनोली हँसि कें कह्यौ विसाखा री यह ढीठ बुद्धि

मे तोली। ३॥ बड़ी वार की आई बन हौं ढूँढ़ति तुमको डोली। हौं जु अपूरब क्यौं तुम सजनी करति हो बोली ठोली ॥४॥ वहुत दया करि श्यामा उर तें चौकी दई अमोली। वृंदावन हित रूप करौ मोहि साथिन ओटति ओली।५।५२।

अरी यह गोप दुरोनी ऐसी मिली बन मनु साँझी फल दीयौ। को है चतुर लोक में ऐसी वारों यापै रिझै सवन इन लीयौ॥ साँझी चित्र रचति है कर वर विधि कौ लिखन सब फीकौ कीयौ। वृंदावन हित रूप धन्य यह राधा ही के सम परच्यौ दुहुँ हीयौ ॥५३॥

अरी तू घर तजि आवति श्याम सहेली धनि साँझी खिलवार। तेरे गुनन प्रशंसत श्यामा तोमें मोहिनी विद्या कछु निरधार ॥ को भवीन वृषभानु सुता सम सो तोहि चाहत बारंबार। वृंदावन हित रूप तोकों साँझी दीयौ परचौ राखी कुंवरि तव लार ॥५४॥

झमकि चली साँझी चीतन तात महल जहँ धवल। ओली भरे कुसुम पखुरिन सों संग सहेली नवल ॥ उडगन सहित धरयौ शशि मंडल साँझी साँझ रचे कर कमल। वृंदावन हित रूप खेल कौ जाकें साँचौ अमल ॥५५॥

कहा नीकी चीतत साँझी बड़े बड़े नैनन वारी। अबकी कुंवरि जू लाईं बन तें यह जस करि है भारी॥ सब सखियन सनमान देति है वरन साँवरे लगौनी महारी। वृंदावन हित रूप की रिझौनी रिझई चतुर मणि प्यारी ॥५६॥

जा दिन तें मेरी अति लड़ राधा साँझी पूजन नेम लयौ है। ता दिन तें मंगल या वृज में होत नित नयौ अरु गिरि

देव दयाल भयौ है ॥ सासु श्रेह पगु धारे जब तें तब तें सुख
ह्याँ नित जु नयौ है । वृंदावन हित रूप कुशल पुर देश जु
करनी कुंवरिहि अचल सुहाग दयौ है ॥५७॥

इतहिं साँझी रची उतहिं फूली साँझ अधिक फूले तहाँ
सखिन के फूल टोलना । गौर अरु स्याम तन मन जु फूली
अधिक सुहथ शशि रच्यौ लै रतन निरमोलना ॥ आपु निर्मित
कियौ रीझि रही आपुही चौंप सौं हीय की चातुरी खोलना ।
वृंदावन हित रूप परस्पर मान दै अरी साथिन अरी भट्ट कहि
बोलना ॥५८॥

साँझी बड़ भागिन साँवल मागति दान दै । तू रजनी
मुख बर्द्धि सदा सुख बिनती सुनि यह कान दै ॥ हौं मन क्रम
वृष जाचत तोकौं गोरी तैं सनमान दै । वृंदावन हित रूप वढ़ै
रुचि मुरली राधा गान दै ॥५६॥

साँझी की विधि नीकी जानति परम विचच्छन श्याम
सलौनी । तैं पाई राधा सी साथिन पाक भोग धरि तो हिय
जानी प्रीति अगौनी ॥ मन सौं अराधि आरती उतारति तोसी
ऐसी भई न होनी । वृंदावन हित रूप अवधि दोउ कौतिक
रचनी धन्य धन्य कुल गोप ढुटौनी ॥६०॥

साँझी मंत्र मोहि आवत है कहै और तौ यह दुख पावै ।
को है अति उदार मति ऐसी तन मन धन दैकें अपनावै । सोरह
तिथि भरि पूजैं याकौं अचल सुहाग कंत मन भावै । वृंदावन
हित रूप साँवरी यौं कहि कै कर जोरि मनावै ॥६१॥

बृज जीवन जीवनि लाड़िली साँझी हित बीनत फूल ।
प्यारे श्याम सखी बन में लखी गुन वैस रूप सम तूल १

कल्प-वृक्ष तरु वेलि जे तिनते कुसुम लिये निवारि । गावति खेलत घर चलीं भूषन तन फूल सिंगार ॥२॥ कीरति दै आदर लइँ साँझी रचि भवन दुवार । कुलकति पुलकति प्रेम सों धरि भोग आरती वार ॥३॥ साँझी देव अराधि कैं जाँचें अमित परस्पर हेत । सखिन सहित कीरति लखी करि भोजन दृग सुख लेत ॥४॥ सैन भवन निवसित भई पिय छल उघरयौ तिहि वार । वृंदावन हित रूप वलि रजनी रस रंग विहार ।५।६२।

मेरी रूप उजागर लाड़िली भरी साँझी खेल उमंग हो । बन गहवर गिरि तरहटी बीनै फूल सखी बहु संग हो ॥१॥ यह सुनि नागर नंद कौ धरि कपट जुवति तन रूप हो । कुसुम कली ओली भरैं भेटी वेटी रावल भूप हो ॥२॥ फूल गेंद कुसुमनि छड़ी तन सजि गावति चलीं ग्रेह हो । साँझी चीती भोग धरि पुनि करि आरति भरि नेह हो ॥३॥ कीरति सवनि जिमाइ पुनि पट अभरन दै करि हेत हो । वृंदावन हित रूप वलि मिलि वर विहार सुख देत हो ॥४॥६३॥

साँझी सुख तोही तें जु प्रकास्यौ तैं साँझी फल पायौ । परम सुहाग दैन यह कहियत शुभ रजनी मुख सो नीकें दरसायौ ॥ प्रथम लाभ मिली श्याम महेली यह परचौ राधे मो मन आयौ । वृंदावन हित रूप अवधि बनी जोरी दुहुँन की लखि हिय नैन सिरायौ ॥६४॥

श्यामा जू सखियन माँझ चीतत साँझी कर वर । धरयौ शिशु मार चक्र नीकी विधि संग सहेली श्यामा दिखि दिखि मुदित परस्पर ॥१॥ शशि उर मध्य कलंक जु रेखा राखी परम प्रवीन हँसी तब साँवल हर हर कर चूँवति पुनि लेत

वलैया धनि वृषभानु कुँवारि तो सम को इहि भुव पर २ हौं रीझी तो कर लाघवता मोहू देहू सिखाय जे गुन तुम उर अंतर । औटत गोद सुघर श्यामा पै होत परम आधीन कहैं मुख वचन मनोहर ॥३॥ नगर वगर देखी वहु साँझी अस कौतुक कहुँ नाहिं जो देख्यौ मैं इहि घर । वृंदावन हित रूप अति लड़ी लई प्रेम परचाइ खेलत खेल जु डारि डर ॥४॥६५॥

अरी अरी साँझी सुघर खिलारिनि मन थिर नाहीं दृष्टि फिरत तिरछौंही । टरति न नेक दाहिनी वाइँ मैं परखी है रहति कुँवरि जू की सौं ही ॥ सवनि डरथौ सो पायौ तो मिलि मोहि लगत कछु उर उरझौंही । वृंदावन हित रूप सवादिनि रंग साँवरी फिरति आपनी गौंही ॥६६॥

वारी वारी मैं किशोरी कर लाघवता तेरी सी न निहारी। कै यह मिली भाग्य वल सजनी तन चटकीले साँझी चीतन हारी ॥ आई निपट डार की सी टूटी शोभा निकर गुनीलौ भारी । वृंदावन हित रूप धन्य विधना किहि रचि पचि जोरी यह जु सँवारी ॥६७॥

वढ़ि परयौ सांझी खेल वढ़ि सुख वेलि चली । रजनी वढ़यौ सुहाग पुनि रितु शरद भली ॥१॥ सब तन वाढ़ी ओप रची दीपन अवली । सांझी रचना देखि रीझी श्याम अली ॥२॥ हौं जु धन्य भई आज सुनि हो भानु लली । गोप सुता त्यौहार तैं करी रंग रली ॥३॥ सांझी पूजन प्रेम फैल्यौ गली गली । रंग वरसि परयौ आज सवकी आस फली ॥४॥ सांझी महिमा भूरि तेरैं उर उझली । वृंदावन हित रूप गति मति वेदली ५ ६८

-यह सुख वद्ध नि सांझी राधा ते ही पूज मनाई । लखौ फूल रच्यौ नीकी विधि वहुरि कुशल सौं आई ॥१॥ संग लेहु ललितादिक साथिन मैया वलि वलि जाई । सुखित भई ब्रज रानी तेरी सुनि सुनि कें चतुराई ॥२॥ काल्ह कहां ते नई पाहुनी संग सांवरी लाई । तेरे ही समान चीतत है मेरे हू मन भाई ॥३॥ हौं रचि हौं पकवान भोग धरि कीजै प्रीति महाई । वृन्दावन हित रूप दैन वर वढ़ै सुहाग सदाई ॥४॥६६॥

अरे घन तू जिन रीझै या सांझी पै झूमि झूमि आवै । मैं चीती है चित में ऐसी देव वधून लजावै ॥१॥ वरज सांवरी अपने कंत कूँ तेरौ वचन मन भावै । धीरज वांधि निहारि दूर तें जिन दृग नीर वहावै ॥२॥ याकौ लाड़ करन दै मोकूँ दई दया उपजावै । वृंदावन हित रूप आज यह अपनौ प्रगट दिखावै ॥३॥७०॥ श्री राधा बाल कृष्ण जी महराज कृत—सांझी

आज दोऊ सांझी मिलि खेलैं । सखी सांवल राधा प्यारी वारी फूल वीनत नित नव वन करत कलोलैं ॥ श्याम फूल वीनत है गोरी गौर फूल श्यामल भरि झोलैं ॥ ये इनकों वे विनकों चाहत, अदल वदल ह्वै रूपहि तोलैं ॥ राधा वाल हित कृष्ण रँगीलो प्रेम मगन भयौ कछु कछु तोलैं ॥७१॥

फूल यहां को वीनत है चोरी । करत प्रकाश फिरत या व्रज में, गज गामिनि तन गोरी ॥ हिये मांहि छल वल चतुराई, देखत में अति भोरी । नारायन या ठौर काहू की, चलत नहीं वर जोरी ॥७२॥

पद—फुलवा बीनत डार डार ॥ गोकुल की सकुमार चन्द्र वदन चकित वृषभानु की-लली । एरी ए सुघर नारि चलत न अंचल सम्हार, आवेगें नंदलाल देखि कें डरी ॥७३॥

इति श्री सांझी उत्सव की जै जै श्री हित हरिवंश सपूरण